

अर्खंड प्रौढपताप गौब्राह्मण प्रतिपाल नेकनामटार झालाकुलमुकुटमणि महाराणाश्री ऑनररी केप्टन सर अमरसिंहजी साहेबबहादुर के सी आई . ई.

स्व. वांकानेर.

आप नामदारनी आजानुसार आपश्रीना पूर्वजोनी कथारूप पवित्र सरिताओथी विस्तार पामेलो अने जेमां विविध व्यवहारिक तथा पारमार्थिक सद्वोधरूपी अनंत रत्नोनो संग्रह थएलो छे, एवो आ " श्री झालावंश वारिधि" (समस्त झालाकुळनो इतिहास) रूप साहि-त्यनिधि आपश्रीनेज अर्पण करी कृतकृत्य थाउं छुं ते स्वीकारी आभारी करशो.

भवदीय क्रपाभिलाषी, राजकवि नथुराम सुन्दरजी,



1 } t

ब्रह्माण्डसम्पुटकलेवरमध्यवर्ति, चैतन्यिपण्डिमवमण्डलमस्ति यस्य । आलोकितोऽपि दुरितानि निहन्ति यस्तं, मार्तण्डमादि पुरुषं प्रणमामि नित्यम् ॥

जेनुं मंदछ ब्रह्मांडसंपुटरुपी कलेवर (शरीर) ना मध्यभागमां चैतन्यपिंडनी माफक रहेलुं हो, अने जे दर्शन मात्रथी दुस्ति। (पापो) ने हणे हो, ते आदि पुरुष मार्तेड (सूर्यनारा-यण) ने हुं निरन्तर नमन करुं हुं.

सृष्टिना आरंभथी अत्यारसूधीमां अनेक राजामहाराजाओ थई गया, कोण जाणे छे ए सर्वने १ मात्र कवि तथा लेखकजनोए जेना १ इतिहास लखेला छे तेओज यशःशरीरे पोतानां उत्तम चरित्रो द्वारा भविष्यनी प्रजाने सदाचारनुं शिक्षण आपे छे.

> ते धन्यास्ते महात्मानो, तेषां लोके स्थिरं यशः। यैर्निर्वद्यानि काव्यानि, ये च काव्येषु कीर्तिताः॥

तेओज धन्य छे, तेओज महात्माओं छे अने तेओनोज यश आ लोकमां स्थिर छे के जेओए कान्योनुं वंधारण कर्युं छे अने जेओ कान्यमां गवाया छे.

चलं चित्तं चलं वित्तं, चलं जीवितयौवने; चलाचलिमदं सर्वं, कीर्ति यस्य स जीवित.

चित्त (मन), वित्त (धन) जीवित (जीवन) अने यौवन वगेरे तमाम पदार्थी च-लायमान अर्थात् नागवंत छे, तेमां जेनी कीर्ति छे एज जीवे छे अर्थात् अमर छे.

मारी जन्मभूमि वांकानेर होवाथी अने वांकानेरनरेश महाराजा राजसाहेव अमर-सिंहजी वहादुर के सी आई ई म्हारा उपर अपार भीति राखता होवाथी वखतोवखत कंडपण निवन काव्यो अगर नाटको तैयार थाय ते सांभळवा तेओ नामटार पोतानो अमूल्य समय रोकी मारा श्रमने अनुमोटन आपना, अने प्रसंगोपान प्रसन्नतापूर्वक पारितोपिक आदिथी पोतानाः—

१ इति-ए प्रमाणं, ह-स्फुट (स्पष्ट), श्रास-हतु

शीर्थं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं, युद्धे चाप्यपलायनम् । दानमीश्वरभावश्च, क्षात्रंकर्भ स्वभावजम् ॥

स्त्रभाविक शौर्य, तेज, धृति, दक्षता, युद्धमां पाछो पग न वरवो, दान अने अैश्वर्यं वगेरे क्षात्रकर्मनो परिचय करावता,

> किमत्र चित्रं यत्सन्तः परानुग्रहतत्पराः । न हि स्वदेहशैत्याय जायन्ते चन्दनद्रमाः ॥

एमां कांड आश्चर्य जेवुं नथी, सत्पुरुषो (महान पुरुषो) स्वाभाविक रीते हमेशां अन्य उपर अनुग्रह करवाने तत्परज होय छे, चन्डननां हक्षो पोताना देहने थंडक आपवा माटे नथी होतां, तेनो जन्म तो अन्यने शान्ति आपवा अर्थेज होय छे: तेमज अमारा राजसाहेव पण पोताना पुरवासीओ तथा सेवकजनो वगेरे कलाकौशल्यने प्राप्त करीने प्रसिद्धिमां केम आवे एवंज चिन्तवन कर्या करे छे.

एक समय तेओ नामदारनी " समस्त झालाकुळनो इतिहास " लखाववानी इच्छा थतां ते काम मने सांपवामां आर्च्युः

" नरेश्वरो वा परमेश्वरो वा "

मने पण मारा महाराजानी सेवानो सुअवसर प्राप्त थयो अने एज वखते में इतिहासनां साथनो एकत्र करवा मांडचां.

यन्य छे महाराजा राजमाहंबने के जेओ पाताना पूर्वजानुं गौरव प्रकाशमां लाववा राजगादी पर अभिपिक्त थया त्यारथीज तल्पी रह्या हता, राजलक्ष्मी प्राप्त थया पछी मोज- शोखमां, व्यर्थ मान मेळववामां अने विविध प्रकारनां मुखमाधनो वयारवामां राजाओने रन्या- पन्या राखनार हालना जमानामां आवी प्रदृत्ति करनार पृथ्वीपित कांट ओछा मानने पात्र नथी। केमके:—

यौवनं धनसंपत्तिः प्रभुत्वमविवेकता । एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्ट्ययम् ॥

योवन, धनसंपत्ति, प्रभुत्व अने अविवेकीपणुं ए एक महान अनर्थनां कारण हे, तो पछी ए चारे ज्यां भेळां थाय त्यां शुं वाकी रहे ? कंडज नहि.

महाराजा राजसाहेवने आदिनी त्रण चीजो प्राप्त थट, परन्तु चतुर्थ अवितेकतानों तेओंश्रीए अनाटर कर्यों, जेथी योवनादि त्रणे चीजो उचित कार्य करवामां महायभूत थट पडी.

तेओं नामटारे पोताना पूर्वजोनी वंशावळी तथा सामान्य हकीकत मस्देशान्तर्गत खेट गामना रहेवाशी झालाकुळना वडवा यारोट काळुभाटने वांकानेर वोलावी लखावी आणा ते हक्षो जेम चिरकाळ पर्यन्त अस्तित्व भोगवी शके छे तेम झालाकुळनो इतिहास पण सृष्टिनी शरुआतथी अत्यारस्थी शृंखलावद्ध लखी तेमां विविध साहित्य मेळवी एक कथाकाव्यनी पेठे

सर्वीपयोगी थाय तेम करो.

महाराजा राजसाहेवनी उक्त आज्ञाने मान्य राखी में वि. सं. १९६२ ना पोप शुटि ११ ने पवित्र टिवसे ग्रन्थ लखवानी शरुआत करी अने तेनुं नाम "श्री झाळावंश वारिधि" राख्युं. प्रसंगोपात मार्कडेय पुराण, महाभारत, श्रीमद् भागवत्, पातंजिल योगम्त्र, बृहद् वा-राहिसंहिता, राजवल्लभ, बनुर्वेटसंहिता, चरकसंहिता, तेमज केटलाएक परचुरण साहित्यग्र-न्थोमांथी भिन्न भिन्न विपयोरुपी निर्मळ नीरनो प्रवाह उक्त वारिधिमां वाळ्यो छे.

झालाओ पथम मखवान (मखवान) कहेवाता हता, एना आदि पुरुप मार्कडेय मुनि होवाथी केटलाएक तेओने मुनिवंशीय माने छे; मुनिराज मार्कडेये अग्निकुंडमांथी कुंडमालने उत्पन्न कर्या होवाथी अग्निना तेजोमय स्वभावने लड् तेने मूर्यवंशी कही जकाय. केटलाएक तेओने चन्द्रवंशना कहे छे. ए वात वीलकुल मान्य राखी शकाय तेवी नथी, केमके वडवा वारोटना चोपडामां पण झालाकुलने मूर्यवंशी लखेल छे.

क्षत्रिओना सूर्य अने चन्द्र ए वे वंश प्रसिद्ध छे. वुन्डीना स्वर्गस्थ कविराज मूर्यम् पोताना वंशभास्कर नामना ग्रन्थमां,

> " भुजभव, मनुभव, अर्कभव, सिसभव छत्रन बंस; हे चउतिम सुचिवंसहुव पंचम प्रथित प्रसंस. छत्रनके छत्तीस सब, इनतें अन्वय जात; दूजे आश्रममाँहिं जिमि, आश्रम इतर समात. "

भुजभव (ग्रुजथी उत्पन्न थएला), मनुभव (मनुथी उत्पन्न थएला), अर्कभव (मर्यथी उत्पन्न थएला), ज्ञाशिभव (चन्द्रथी उत्पन्न थएला), ए रीतना ग्रुख्य चार वंश उपरांत पांचमा अभिवंश वतावी कालक्रमे जेम गृहस्थाश्रममांथी ब्रह्मचर्य आदि वीजा आश्रमो भनीत थाय है, तेम उक्त पांच वंशमांथी क्षत्रीओना एकन्दर छत्रीश वंश थया एम जणावे है.

महात्मा टॉड साहेव पोताना "राजस्थान " नामना इतिहासमां मूर्य अने चन्द्रवंश उपरांत काळक्रमे अग्निवंशथी भारतवर्षना प्राचीन आर्य राजाओंनी उत्पत्ति थयानुं स्वीकारीने त्रणे वंशमांथी क्रमे क्रमे न्हानां न्हानां छत्रीश राजकुळ उत्पन्न थयां एम जणावे छे; जेनां नाम नीचे मुजव छे.

6

	. ##. ^ , _ , _ , _ , _ , _ , _ , _ , _ , _ ,	. ~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~
१ गिल्होट.	१४ हुण.	२५ घरवाल.
२ यदु.	१५ काठी.	२६ वीरगूजर
३ त्यार (तुंबर).	१६ बहु.	२७ सेनगड-संगर.
४ राठोड.	१७ झाला.	२८ शीकारवल (सीरकरवल).
५ कुशावह.	१८ जैत्व (जेठवा).	२९ वाइस-वेस.
६ प्रमार.	१९ गोहिल.	३० ढाहिया-देहिया.
७ चहुआण.	२० सारव्य, वा सारीयाप्य	३१ जैहा-जोहिया.
८ सोलंकी	(सत्रियसार).	३२ मोहिल.
९ प्रतिहार.	२१ सीलस्वा−सुलार₊	३३ निकुंप.
१० कान्यकुव्न.	२२ दे वी.	३४ राजपाळी-राजपाली.
११ सौर.	२३ गर.	३५ टाहिर.
१२ तक्षक.	२४ टर, वा देटा₊	३६ टाहिमा.
१३ जीत (जन).		

था सर्वथमां एक पुरातन टोहरो छै.

दश रविके दश चन्द्रके, द्वादश मुनिके जान; चार अग्नि पहिचानिये, छत्ति वंस बखान.

दश रविना, दश चन्द्रना, वार मुनिना, अने चार अग्निना एम एकन्दर क्षत्रिओना छत्रीश वंश है.

पंडित गौरीशंकर हीराचंद्र ओझाए पोताना भारतीय " अतिहासिक ग्रन्थमाला " नामना ग्रन्थमां प्राचीन आर्य राजाओनी नीचे मुजव जातिओ पुरातन ग्रन्थोमांथी ुँ, उन्हृत करेली है.

१ मौर्य (मोरी).	११ योद्धेय.	२१ चावडा .
श्रीक (यृनानी)₁	१२ वैश.	२२ राटोड.
३ ज्ञातकर्णी (आंध्रभृत्य).	१३ लिच्छवि.	२३ कछवाहा.
४ जनः	१४ मोखरी.	२४ तंबर.
५ क्षत्रप.	१८ मेत्रक.	२५ कलचुरी (हेहयवंशी)•
६ तुरुष्क.	१६ गुहिल.	२६ चंदेल.
७ अभीग	१७ मोर्छकीः	२७ यादवः
८ गुप्त-	१८ पडिहार.	२८ गुर्जर.
९ पल्लब•	१० प्रमार.	२० पाल.
१० हण.	२० चौहान.	३०[मेन.
		THE PARTY OF THE P

₹

३१ कदंव

३५ नाग.

३९ सिंद.

३२ सिलाराः

३६ निकुंभ.

४० चौल,

३३ सेन्द्रक.

३७ गंगा.

३४ काकतीयाः

३८ वाण.

कोइएक कवि क्षत्रिओना छत्रीश वंश नीचे प्रमाणे वतावे छे.

छप्पय.

रिव, शिश, जादववंश, ककुत्स्थ, परमारं तोंवर, चाहुवाण, चालुक्य, छिंद, सिलार आभीवर, दोयमत्त, मकवान, गरु अ गोहिल गहीसुत, चापोत्कट, परिहार, रावराठोड रोसजुत, देवरां, टांक, सिन्धव, अनिग, योतिग प्रतिहार दिषखट, कारटपाल, कोटपाल, हुन, हरितट, गोरकमाड जट.

दोहा.

ध्यानपालक निकुंभवर, राजपाळ अवनीरा; काळच्छरके आदि दे बरने वंश छतीस.

मरेटाओनी छत्रीश वंशमां कोइए गणना करी नथी, छतां कविराज भ्रुषणे पोताना आश्रयटाताना वंशने छत्रीशमी संख्या आपवा नीचे मुजव कवित्त रचेळुं छे.

रानी रजवारनकी दुकानी छगाइ बैठी,
तहां आय वादशा' छबार देखे छबकी।
बेटिनके यार अरु यार है छुगाइनके,
राहनके मार दावादार गये दबकी॥
एसी कीनी वात तोउ कोऊने न कीनी घात,
नादानी भई है वंस पइंतीसे अबकी।
दक्खनके नाथ एसी देख धर्यों मूछें हाथ,
सीवाजी न होत तो सुनत होत सबकी॥

आ उपरथी राजकुळनी अम्रुकज संख्या छे एम कही शकातुं नथी। सूर्य अने चन्द्रमांथी एवां अनेक राजकुळो उत्पन्न थयां छे के जेनां नाम पण अत्यारे मळवां मुक्किल छे.

खरी रीते विचारी जोतां भुज (हाथ) थी मनुष्यनी उत्पत्ति संभवेज निह, तेम मनु-वंश पण किल्पत छे, मनु सूर्यनो पुत्र होवाथी तेनो सूर्यवंशमां समावेश थड जाय छे. अग्निथी पण मनुष्यनी उत्पत्ति मानी शकाय तेम नथी, केमके ए वात मान्य राखतां ब्रह्मानी जे स्वेदज, अंडज, उदिभज् अने जरायु ए चार प्रकारनी सृष्टि छे तेमां पांचमा प्रकारनी सृष्टि दाखल करवा जतां ब्रह्माना (आदि पुरुपना) सिन्दान्तने दृषित कर्या जेवुं थाय छे. अग्निथी मनुष्य उपजे निह पण अग्निसंस्कारथी मनुष्यने शुन्दत्व प्राप्त थइ शके छे.

अमारा मत मुजव तो सूर्य अने चन्द्र सिवाय त्रीजो वंश छेज नहि. श्री वालभारतना कर्ता अमरचन्द्र पण आदि पर्वना आदि सर्गमां चन्द्रवंशनी शुश्रुषा करतां लखे छे:—

किरन्सुधां यो वसुधान्तराले, महा सहा हन्तितमां तमांसि । हुताशतीवः किमनेन साम्यं, समं समायातु सहस्ररिमः॥

आदिपर्व सर्ग १ ऋो ८

पृथ्वीतल उपर अमृत वर्षीने जे म्होटा तेजवालो अंथकारने हणे छे तेनी साथे अग्नि जेवो तीत्र मूर्य शुं साम्य पामवा योग्य छे ?

आ श्लोक पुरवार करी आपे छे के सूर्य अने चन्द्र बेज वंश छे एथीज अमरचन्द्रे ए वेनांज नाम आप्यां छे. ए वेथी इतर वंश होत तो तेनां नाम आपवा चूकत निहः आ वन्ने वंशमांथी छत्रीश निह पण अनंत शाखाओं नीकळेली छे, ए उपर मुजब महात्मा टॉड साहेबे दर्शावेल वंशो तथा तेथी भिन्न श्रीयुत गौरीशंकर ओझाए दर्शावेला प्राचीन वंशो अने कविवर भूपणे मरेटानी पण उत्तम राजकुलमां करेली गणना उपरथी साबीत थाय छे.

आ उपरथी अमे कोइनुं खंडन करवा चाहता नथी, परन्तु " रावणने दश मस्तक अने वीश भुज हता." आनो खरो अर्थ ए छे के एक माथावाळा अने वे हाथवाळा मनुष्य करतां दशगणुं पराक्रम करनार. " हजार हाथवाळो वाणामुर " एनो पण एज अर्थ छे के वे हाथवाळा मनुष्य करतां पांचसोगणुं पराक्रम करनार.

आ प्रमाणे कविओनी अलंकारिक वाणीनो अर्थ न समजतां चित्रकारोए ए प्रमाणेज चित्रो चित्री कहाड्यां; अने लेखको पण एज राहे दोरायाः एज रीते वंशनी वायतमां पण भुजवंश, मनुवंश, अग्निवंश वगेरे कल्पित छै.

जो हाथथी अने अग्नि आदिथी मनुष्यो उत्पन्न थतां होत तो पछी दश्वरने स्त्रीपुरुपनुं युग्म करवानी कंइ जरुर न हती.

खरी रीते जोतां परशुराम भगवाने एकवीश वखत पृथ्वी नक्षत्री करी ते वखत घणा क्षत्रिओ प्राण वचाववा ऋषिओना आश्रममां आश्रित वनी छुपाइ ग्हेन्टा हता, पाछळथी तेना वंशजो ऋषिओनी आज्ञानुसार ब्रह्मकर्मनी साथे क्षात्रधर्मने पाळी यज्ञादिमां विद्यम्प थता राक्षसोने हणी भिन्न भिन्न दिशामां पोताना वाहुवळवडे राज्य जमावी रह्या अने जे ने ऋषि-ओना आश्रयथी तेओ प्राणने वचावी शक्या तेमज जे जे ऋषिओना हाथथी अभिषिक्त थइ राजा तरीके प्रसिद्ध थया ते ते ऋषिओना गोत्रवाळा गणाया, शोर्य अजव वस्तु छे अने एथी सर्व कांइ प्राप्त थइ शके छे.

> सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः । शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्॥

श्रुरविर, कृतविद्य (जेणे विद्याने यथास्थित प्राप्त करी होय ते) अने जेने सेवाधर्म वरावर आवडतो होय एवो सेवक ए त्रणे सुवर्णपुष्पवाळी पृथिवीने शोधे छे. श्रुरवीरना पक्षमां सुवर्ण-द्राह्मण आढि उत्तम वर्ण, कृतविद्यना पक्षमां सुवर्ण-सारा अक्षर अने सेवकना पक्षमां सुवर्ण-सोनुं समजवुं.

को वीरस्य सनिस्वनः स्वविषयः को वा विदेशस्तथा। यं देशं श्रयते तमेव क्रुरुते बाहुप्रतापार्जितम् ॥ यदंष्ट्रानखलाङ्गुलप्रहरणः सिंहो वनं गाहते। तस्मिन्नेव हतद्विपेन्द्ररुधिरैः तृष्णा छिनस्यारमनः॥

मनस्वी एवा वीरपुरुषने पोतानो अथवा परायो कोइ देश छेज निह, जे देशनो ए आश्रय करे छे, तेनेज वाहुवळना प्रतापथी पोतानो वनावी ले छे. जेम दाह, नख अने लांगुल (पुच्छ) रुपी आयुधवाळो सिंह जे वनमां प्रवेश करे छे ते द्विपेन्द्रो (म्होटा हाथीओ) ने हणी तेनां रुधिरथी पोतानी तृष्णाने बुझावे छे.

झालाओना मृळपुरुष मुनिराज मार्केंडेये अग्निकुंडमांथी कुंडमालने उत्पन्न कर्या, ए राजिप कुंडमाले ब्रह्मधर्मनी साथे क्षात्रधर्मनो अंगीकार करी विद्रिकाश्रममां रहेनारा ऋषिओना
यज्ञयागादिमां विद्यरूप थता राक्षमो साथे प्रचंड युद्ध करी विजय मेळव्यो. उक्त कार्यथी प्रसन्न
थएला ऋषिमंडले तेओने " चमत्कारपुर " नी राजगादीपर अभिषिक्त कर्या. त्यां त्रण पेढी
पर्यन्त तेमनुं राज्य रह्यं, त्यारवाद राक्षसोना उपद्रवथी अत्यंत कंटाळेला ऋषिओनी आज्ञाथी
राजिं कुन्ते विद्रिकाश्रमनी निकटमांज " कुन्तलपुर " नामे शहेर वसाच्युं अने त्यां राजिं
कुन्तना पुत्र धवलकुमारथी आरंभी चाचंगदेव सुधी लांचा काळ पर्यन्त मखवान (मकवाणा)
नुं राज्य रह्यं, ते पछी चाचंगदेवजीना कुमार सालंगदेवजीए पूर्वमां तुंवर जातिना राजपूतोनुं
" सीकरी " नामे शहेर हतुं ते कवजे कर्यु. ए सीकरीमां सारंगदेवजीना कुमार जोमपालथी
आरंभी सारंगधर सूधी राज्य रह्यं, त्यारवाद सारंगधरजीना कुमार कृपालदेवजीए सिन्धदेशमां
मवेश करी " कीर्तिगढ " (करेंटीगढ) मां पोतानी राजधानी जमावी. ए कृपालदेवजीना
कुमार सारंगधरथी आरंभी केसरदेवजी सूधी कीर्तिगढमां मकवाणाओनी राजधानी रही, वीर-

वर केसरदेवजी सुमरा हमीर साथेना युद्धमां सप्तकुमार सहित समरशायी थतां तेमना म्होटा कुमार हरपालदेवजी गुजरातमां आव्या अने क्षत्रीने छाजे तेवा उत्तम गुणोथी "पाटडी " नी राजधानी प्राप्त करी.

ए रीते मकवाणाओं प्रथम उत्तरमां, पछी पूर्वमां अने त्यारवाद पश्चिममां सिन्धनी अंदर दाखल थइ गुजरातमां आव्या, अने गुजरातमां पाटडी, शान्तलपुर, मांडलगढ तथा कुवा (कंकावटी) वगेरे स्थळे राज्य भोगवता काढिआवाडनी अंदर शौर्थना प्रशंसनीय प्रभावे स्वतंत्र राजधानी जमावी रहा।

राज, हरपालदेवजीना वंशजोमांना हाल केटलाएक वांकानेर, धांगधा, लींवडी, वद-वाण, लखतर, चुडा, सायला वगेरे स्थळे छे, अने केटलाएक राजपुतानामां सादडी, देलवाडा, रायपर, नरवर, गोधुन्दा, कुन्हाडी, कानोड, झालोड तथा झालरापाटण वगेरे स्थळे छे. ए तमाम हकीकत इतिहासमां सविस्तर लखाएली छे.

झालाकुळनी राजधानी प्रथम चमत्कारपुरमां लखेली छे, ए तो केवळ पुराणोक्त वात छे अने कुन्तलपुरनी राजधानी पण मात्र वारोटना चोपडा सिवाय कोइ प्रकारना शिलालेख के कोइ वीजां साधनोथी सावीत थइ शके तेम नथी, तेमज सीकरी सबंधी पण जेवां जोइए तेवां मजबूत प्रमाण मळी आवतां नथी, मात्र सिन्धमां कीर्तिगढ के जे हाल करेन्टीगढ कहेवाय छे तेनां जुनां खंडेरो हज्ज पण सिन्धना अमुक प्रदेशमां छे एम संभळाय छे.

आगळना राजाओ पोतानी राजधानी वदलाया पछी तेनुं नाम कायम राखवा माटे पोते जे प्रदेशमां वसता त्यां एज नामनुं गाम वसावता हता. दाखला तरीके जेटवा राजपूतोनी मूळ राजधानी काश्मीर-श्रीनगरमां हती. काठिआवाडमां वसता जेटवाओए एज नामनुं गाम (श्रीनगर) घणा वर्षों अगाउ वसावेछुं छे, तेम झाला राजपूतोए पण गुजरातमां आव्या पछी पोतानी मूळ राजधानी कुन्तलपुरनुं नाम कायम राखवा कुन्तलपुर नामनुं गाम के जे हाल कांत्रोडी एवा नामथी ओळखाय छे ते वसावेल छे. सांभळवा प्रमाणे ए गामनी एक जूनी वावमां एक शिलालिप छे तेमां ए गामनुं नाम कुन्तलपुर लखेल छे. उत्तरमां तो कुन्तलपुर कोण जाणे क्यांए हरो.

झालाकुळनी संवतवार हकीकत तो व्यास मकवाणाना कुमार केसरदेवजीथीज मळे छे, ते पहेलांना संवत वारोटना चोपडामां कपोलकल्पित लखेला जणाय छे.

मकवाणाओ सिन्धमां राज्य करता हता त्यारथी तेना वंश मांहेना राजस्थान साथे निकटना सर्वधमां जोडाएला मालुम पडे है.

बुन्टीना कविराज मूर्यमञ्जजी पोताना वंशभास्कर द्वितीय भाग पृष्ट १४५९ मां आ प्रमाणे लखे हेः—

वि. सं. ४८१ ना अरसामां अग्निवंशीय भौमचन्द्रना कुमार अस्थिपाले पश्चिमने जीती गुजरातना सोलंकी गोभिलराजनुं मानमर्टन कर्यु, अने त्यां पोतानुं थाणुं स्थापी आगल वधतां, अधिपदेश आनर्तके, लिरिजिति रुपयलाइ।
कुमर बढ्यो इम लेतकर, नीरिधतट नियराइ॥
मकुवानपुर मोरबी, पठ्ये जब गोपाल।
देकर पय लग्गे दिरत, कुमराँह भन्नतकाल॥
पुज्बाँहि जनु निजपौत्रहित, परिचारक पठवाइ।
सुत सुतको सतकार सब, दिन्नों सिविधि सधाइ॥
कुमराँहे झल कुवेरहू, न मिलायउ निजगेह।
दायज सर्व समेत दिय, निजतनया करि नेह॥
कन्या भूप कुवेरकी, उमा नाम जस आहि।
लिलित मंकुवानी लई, कुमरानी बिधि ज्याहि॥
जनक वैरपर जुद्धकी, वेरहु झल्ल कुवेर।
समय सोधि दिन्नी सुता, सुगुन सुरूप सुवेर॥

उपरना छए दोहानुं तात्पर्य ए छे के चहुआण कुमार अस्थिपाल आनर्त (ओखा-मंडल-द्वारका आदि) स्थळे युद्ध करी विजय मेळवी कर लेता लेता अने दिरियाकिनारे चालता चालता मोरवी पहोंच्या त्यां मोरवीना मालिक झालाकुवेरे ए गोपालना पौत्रने काळ-समान भय गणी भयथी पगे लागी पोताने घेर पथराच्या अने दायजासमेत पोतानी पुत्री उमानां तेनी साथे लग्न कर्यों, जो के पोतानुं वैर वाळवा माटे युद्ध करवानो समय हतो छतां झालाकुवेरनी पुत्रीने विधिवत् परणी अस्थिपाल कच्छ तरफ चाल्या गया। ए उपरथी झाला-कुवेरे अथवा ते पहेलाना कोइ पुरुषे चहुआण अस्थिपालना पिताने पराभव पमाड्यो होय एवं अनुमान थाय छे।

वळी कविराज सूर्यमञ्जीए वंशभास्कर द्वितीय भाग पृष्ट १५६१ मां नीचे मुजव लखेलुं हे.

एसें अनेक विजय करत विक्रमके सिसंघर; सिव ११५१ सिमत संवत्सरके चैत्रके प्रथम पक्षमें चंडासिराज पृथ्वीराज १ छ ६ मास अधिक छत्तीस वर्षके वयमें कान्यकुट्ज जाइ चउसिष्ट ६४ सामंतनकों वीर तल्प पौढाइ राष्ट्रकूट राज जयचन्द्रकी सुता संयोगिता आनी.

ताही तुमुलमें सहोदर हम्मीर १७१।१ गंभीर १७१।२ के ही

गजनकाँ गिराइ कासीके नरेंद्रसे अनेक अरातिनकी विनतानकों वैधव्य देके भद्रकालिकाकों छपाइ दें २ ही कुमार वीर तल्प सोये महामानी सो जानी मंकुवानी नवश्री १७१।१ दिहमी जसोदा १७१।२ दें २ ही स्वस्व स्वामीके साथ गई वगेरे.

आमां मंडनगढना हाटा आनंदराजना कुमार हम्मीर साथे मकवाणी नवश्रीनां छम्न थयां हतां अने ते हम्मीरकुमार चहुआण पृथीराजना पक्षमां रही कन्नोजना राजा जयचन्द्र साये छटतां काम आव्या, तेनी साथे मकवाणी नवश्री सती थयां ए स्पष्ट छे.

उक्त युद्धमां पृथीराज विजय मेळवी संयुक्ताने उठावी गयो हतो एवीज रीते वीजो उछेल पण छे जुओ वंशभास्कर द्वितीय भाग पृष्ट १५३५.

अरु इतको चंडासिराज रामदास १६४ सोराष्ट्र कूटीरानी प्रेम-वती १६४।१ में राजकुमार रामचन्द्र १६५ नें जन्म लहि सर्व विद्याको संग्रह करि देवपुरके अधीश मंकुवान महिनाथकी कन्या कोकिला १६५।१ विवाहि पिताके अनन्तर पट पायो ॥

आमां चहुआण रामचन्द्र देवपुरना अधीश मकवाणा मिछनाथनी कन्या कोकिळाने परण्या इता ए स्पष्ट छे.

विक्रमना तेरमा शतकमां मकवाणा सारंगदेव अने सिंहदेव नामना वीरपुरुषोए गुज-रातना सोरुंकी राजा भोळाराय भीमनी उत्तम प्रकारे सेवा वजावी अवनिमां अमर नाम राखेर्ड छे ए नीचेना लेखथी मालुम पडे छे.

"चालुक्यराज भीम अर्बुदरा दुर्गमें मास १ दिन पंचक ५ विताय आपरा विस्वासरा वीरानूं जन्मभूमि घर राखणरी संधा भळाय अणिहि- लपुय आयो। अर चंडासिकुमाररे साथ इच्छणीशे सवंध कर्णगोचर पडतां ही प्रामारां १ चहुवाणा २ रे माथे अधम विरोध वधावणरे काज मंकुवाण राजसारंगदेवमूँ बुलाय गडनवी जावणरो निदेस लगायो.

वशभास्कर द्वितीय भाग पृष्ट १३६३

सोलंकी राज भीमनी आज्ञा मुजव मकवाणा मारंगदेव गजनवी गया अने तेणे आपेलो पत्र तथा भेट वगेरे वादशाहने आपी पत्युत्तर माटे रोकाया, ते वस्तते वादशाह बाहबुद्दीनगोरीना स्वार्थपरायण विचारो सांभळी मकवाणा सारंगदेवे शाहनो जातिस्वभाव तथा पोतानो (राजपूतोनो) उत्कर्ष जणाववा मांड्यो

या कहताँही पातसाहरी सैंन सूंवजाररो तीर मकुवाणरी छातीरे पार फूटो। सो लोह लागताँही सारंगदेवरा हायरो चन्दहासरो प्रहार छूटो॥ तिणसूँ गजनवीरा हुजावहै जमरो मस्तक चक्र होय पडियो॥

इण रीतिकेही जवतारा प्राण देहरूपकारा सदनरा वंदीवान सहाबुदीनरी सभामें सारंगदेव दूकदूक होय झडियो.

वशभास्कर द्वितीय भाग पृष्ट १३६५

मकवाणा सारंगदेवे शाहनो जातिस्वभाव वोलवानी शरुआत करी त्यांज शहाबुद्दीनना इसाराथी वजीरनुं तीर तेनी छातीमां आरपार चाल्युं गयुं ए तीर लागतांज सारंगदेवना हाथथी तलवारनो प्रहार छुट्यो अने ए प्रहारे शाहना वजीर हुजाबहैजमनुं मस्तक चाकना पिंडानी माफक उडावी अनेक यवनोनां प्राण के जे देहरुपी कारागारना वंथीवान हतां तेने छोडाव्यां ए रीते मकवाणा सारंगदेव शहाबुद्दीननी सभामां टूकडे टूकडा थया त्यांस्थी लड्या.

एज अरसामां झाला सिंहदेव सवंधी वंशभारक्र द्वितीय भाग पृष्ट १३६९ मां नीचे मुजव छप्पय छे.

> जिण झाले बळजोर, जंग आहिण जाडेचाँ, पुहुवि कच्छ १ पंचाळ २ गंजिलीधी पदु पेचाँ; अधिप भीमरे अग्ग, विजय कीधा कइवाराँ, भड सात्रव घण भेटि, किया धडपार कटाराँ.

उण सिंहदेव रण अग्रणी, ले बळ साथ चउत्थलवः गरदाय सिविर दीधो गरट, जामिक पण लीधो सजव.

जे झालाए वलजोरथी जाडेजाओ साथे जंग करी टावपेचथी कच्छ अने पंचालनी पृथ्वी कवजे करी अने पोताना अधिपति सोलंकी भीम आगल रही अनेक वखत विजय मेळन्यो तथा भडपणे घणा शञ्जओ साथे भेटी कटारथी बहने जुदां कर्यां. ए रणमां अग्रणी रहेनार (सेनापित) सिंहदेव ६०००० ना सैन्य साथे भोलाराय भीमना डेरानी आजुवाजु रात्रीने वखते पहेरो भरता हता अने युन्ह वखते पण तेओए या पोताना अंगपर झील्या हता.

आज समयमां भोळाभीमना काका सारंगदेवना पुत्रोए राणंगझाळाने मारी भीम साथे

वैर वधारी तेना डरथी दिल्हीमां जइ पृथुराजने आश्रये रह्या हता अने अंते तेओ सर्वनो पृथु-राजना काका कन्ह चौहाणना हाथथी नाश थयो.

साक्षर पंडित वलदेवमसादिमश्रकृत राजस्थान इतिहास हिन्दी अनुवाद वोल्युम १ अध्याय ४ थो पृष्ट १२५ मां लख्युं छे के ज्यारे चितोदाधीश खुमानसिंहजीने खुरासानना अधिपति मामुद (महमद) साथे आर्यधर्मना संरक्षण अर्थे युद्धमां उत्तरत्तुं पड्युं हतुं त्यारे तेमनी मददे भिन्न भिन्न हिन्दु राजाओ गया हता, तेमां पाटडीथी झाला पण उक्त रणसंग्राममां हाजर हता एम लखेल छे. चितोदाधीश खुमानसिंहजीनो राज्यकाल वि. सं. ८६८ थी ८९२ सुधीनो "टॉडराजस्थान" वगेरे ग्रन्थोथी प्रतीत थाय छे. महात्मा टॉडसाहेवे ए वात " खुमानरासा" उपरथी लीथी होय एम जणाय छे.

झाला अवटंक अने पाटडीमां राज्यनी स्थापनाना सवंयमां वारोटना चोपडा तेमज रासमाला वगेरेमां तो करणवाघेलानो समय स्पष्ट वताव्यो छे, पण तपास करतां करणवाघेलानो समय वि. सं. १३५२ छे अने हरपालटेवजीनो समय वि. सं. ११५६ छे. आ रीते मुकावलो करतां लगभग वे सैकानुं अन्तर जणाय छे. वली हिन्दराजस्थानमां करणसोलंकीना समयमां हरपालटेवजीनुं अस्तित्व जणावे छे. विचारी जोतां हरपालटेवजी अने करणसोलंकी एक सैकामां थएला छे पण कोइ इतिहासमां आनो उल्लेख मली आवतो नथी. जैनमतना पंडितोए सोलंकी कुलनी झीणी झीणी वावतोनो पण प्रवंधचिन्तामणि वगेरे ग्रन्थोमां समावेश कर्यों छे, छतां हरपालटेवजी अने शक्ति सवंधीनी महत्वनी वावत वेम भूली जाय ए पण शंका छे.

महाराणा खुमानना समयमां चितोडना जंग वखते पाटडीथो झालाओ आव्या आ जिल्लेख झालाओनुं तथा पाटडीनुं प्राचीनपणुं वताने छे, अने आगळ कहेल वंशभास्करमां कुने-रझालानुं अस्तित्व पण घणाज लांबा काळने सचवे छे. हवे आमां खरुं शुं हरो तेनो कांड निर्णय थड शकतो नथी एथी ए काम सुज्ञ इतिहासवेत्ताओना अखत्यारमांज सोंधुं छुं.

अमने तमाम इतिहासवेत्ताओना मन करतां महान् इतिहासवेत्ता श्रीयुन गीरीशंकर हीराचंद ओझानो मत श्रेष्ट जणाय छे. एमनो लेख वांचनां एमणे इतिहास सबंधी घणीज उंडी अने विस्तृत शोध करी होय एम मालुम पडे छे.

तेओ सोलंकीना पाचिन इतिहासमां सिन्ड करी आपे छे के सोलंकीओ चन्द्रवंशीज छे अने एना प्रमाणमां तेओ लखे छे के पश्चिमी सोलंकी राजा विक्रमादित्य छहाना समयना (वि. सं. ११३३ अने ११८३ नी मध्यना) शिलालेखमां लग्च्युं छे के चालुक्य (सोलंकी) वंश भगवान ब्रह्माना पुत्र अत्रिना नयनथी उत्पन्न थएल चन्द्रना वंशमां अन्तर्गत छे. आ शिलालेख मुंबई इलाकाना थारवाड जीद्धाना गडग गाममां वीरनागयणना मंदीरमां लांगेलो छे.

आ उपरथी सिद्ध थाय छे के हाल अग्निवंशना नामथी दुनियामां मिन ह थया छै ए क्षत्रियो पण सूर्यवंशी अने चन्द्रवंशीज छै. लांवा काळना आवरणने लट क्षत्रिओ पोतेन पोताना वंशने भूली गया छे अने वहवा वारोटोए कल्पी काढेली कथाओने वेद-वाक्य समजी वेटा छे.

आ ग्रन्थना न्हाना म्होटा तरंगो वाचकटन्दने आनंदनी छोळ्योथी रसवोळ वनावरो तो हुं मारा श्रमने कंइ अंशे सफळ थयो समजीश इतिहास द्रष्टिथी जोनारने आ ग्रन्थ रुचिकर थाय के नही ए वावत हुं कंइ कही शकतो नथी, पण विविध विषयोना अभिलापीओमां आ पुस्तक आदरणीय थशे एम हुं मानुं छुं।

आ ग्रन्थ लखवानी शरुआतथी समाप्ति पर्यन्त म्हारा शिष्य जामनगरनिवासी वारोट केशवलाल श्यामजीए शरीरसंपत्तिनी लेशपण दरकार राख्या विनामने पूरती सहायता आपेली छे. प्राणी मात्रने दरेक कार्यमां सहायकनी आवश्यक्ता होय छे जेमः—

असहायः समर्थोऽपि, तेजस्वी किं करिष्यतिः निवति ज्वलितोऽप्यप्तिः स्वयमेव प्रशास्यति.

निर्वात (वायु विनाना) प्रदेशमां प्रज्विलत थएलो अग्नि तेजस्वी अने समर्थ छतां पण वायुनी सहायता विना पोतानी मेळेज शान्त थइ जाय छे.

तेम मने पण म्हारा शिष्य केशव जेवा साक्षर लेखकनी सहायता न मळी होत तो झालावंशवारिधि जेवो महान ग्रन्थ हुं क्यारे अने केटला समयमां तैयार करी शकत ते कही शकतो नथी। जो के हुं तेमना कुटुंवना निर्वाह अर्थे योग्य पगार आपतो हतो तेम महाराजा राजसाहेव तरफथी पण ग्रन्थनी समाप्ति समये तेनी योग्य कदर बूझवामां आवी हती, तो पण तेना श्रम तरफ जोतां तेनो पूरेपूरो वदलो हुं आपी शक्यो छुं एम तो नहीज कही शकाय। छेवटे हुं तेने अखूट आशीर्वादरुपी धन आपुं छुं के जे भोगववा परमकुपाळ परमात्मा तेने आरोग्यतापूर्वक दीर्घायुष्य अर्थ।

आ पुस्तकमां पुरातनी डींगली भाषानां गीतो मने जेवी स्थितिमां प्राप्त थयां छे तेवांज टाखल कर्यों हे, मने ए भाषानुं पुरुं ज्ञान निह होवाथी ते अशुद्ध होय तो सुज्ञ वांचकट्टन्द क्षमा आपशे

राजकिव नथुराम सुंदरजी शुक्क.

	— 6666 —— 6666 —	— 888858
	अमारां पुस्तको.	
पुस्तकनुं नाम		किंमत रु. आ. पा.
नाटचशास्त्र-(नाटक जोनार	, भजवनार तथा लखनारने अति उत्तम सहाय	आपनार अ-
भिनयकळानो ः	अपूर्व ग्रन्थ.)	9-0-0
काव्यशास्त्र-(काव्यपयोजन,	नामलक्षणविचार, पाचीनोक्तत कान्यलक्षणो,	उपदेशमकार,
काव्यशक्तिओ,	काव्यहेतु, शब्दशक्तिओ, काव्यदोष, काव्यगुण	, रीतिओ, वृ-
त्तिओ, विस्तृत	नायकाभेद सहित रसनिरुपण अने अलकार तथा	अन्तर्भृत अल-
कारो सहित क	ाव्यना दशे अगोन्त वर्णन.)	9-0-0
सगीतशास्त्र—(गीत, नृत्य तथा	वायना तमाम भेदो सहित सगीतनो अपूर्व मा	र्गदर्शक ग्रन्थ) ५-०-०
नथुरामकृत काव्यसग्रह—(भा	क्ति, ज्ञान अने वैराग्य तेमज इश्वरी अने मान्तपी	मेमना काव्यो
तथा व्यवहारि	क परचुरण काच्यो तथा विरह काच्योथी भरपुर	र ग्रन्थ.) २-०-०
श्रगारसरोज–(रसिकजनोने	रसपद श्रगारकाव्योथी भरपुर ग्रन्थ)	?0-0
मतापमतिज्ञा-(वीर तथा भृगाररसथी भरपुर नाटक)		
श्रीकृष्ण बाळलीलासग्रह-(६	ीरुप्ण वाळलीलाओनु वर्णन) .	१-0-0
विवेकविजय काव्य-(सरलत	॥थी समजाय तेबु वेदान्तन्न पुस्तकः)	?-0-0
	अमारां नाटकोना ओपेरा.	
माधवकामकन्दला	. ०-२-० हलामण.	0-7-0
लाल्खांनी लुचाः.	०-२-० कुमुद्चन्द्र	0-7-0
हरिश्चन्द्र.	०-२-० गुमानिमह	0-7-0
राजयोगी	०-२-० सती सरोजीनी	0-7-0
कवीरविजय.	०-२-० भक्तकुटुम्ब.	0-7-0
	मळव	ाउ ठेकाणु—
		नथुराम सुन्दरजी
	वाकानेर-	—(काटिआवाइ)
अमारा पुर	तको नीचेनी जगोएथी पण मळशे	
	एन. एर	प. त्रिपाठीनी कुं.
	9	र्म एन्ड पञ्डीशर्म,
	काल	वादेवीमुत्रः
	नीम अनुस्कट	सेन आदमजी बुकसेलर्स

प्रस्थ कर्ता.



राजकवि नथुराम सुदरजी तथा तेमना पुत्र उत्तमगम

उपोद्घात.

म्हारा गुरुवर्य राजकवि नथुराम सुंदरजी तरफथी वहार पढेल "श्री झालावंदा-वारिधि " खरेखर वारिधि (समुद्र) समानज छै; कारणके वारिधि जैम रत्नाकर कहेवाय छे, तेम आमां पण अनेक रत्न जेवा राजेन्द्रोनां चरित्र द्रष्टिगोचर थाय छे. समुद्र जेम अथाह होय छे तेम आ ग्रन्थनो थाह पण वाचक एकदम छइ शके तेम नथी. सागर जेम गंभीर होय छे तेम आमां पण अनेकानेक गहन विषयोनो समावेश करवामां आव्यो छे. नीरनिधि जैम लोइकाप्टनिर्मित नावोने पार उतारे छे तेम आ ग्रन्थ पण मानवदेहने निर्मेळ नीर जेवा सदुप-देशनी सपाटीपर चलावी त्वरा वगर तारे छे. जेम वादळांओ सागरनुं जळ लइ सूर्यना किरणो द्वारा सागरनुं जळ मेळवी दृष्टिरुपे अवनिपर उपकार करे छे, तेम आ ग्रन्थना उत्तम वचना-मृतने सद्गुरु द्वारा यथास्थित अंतरमां उतारी लेख अथवा विवेचनरुपे सामान्य संस्कारीजनो पण लोकोपकार करी शकवा समर्थ वनी शके एमां जरापण संदेह जेवुं नथी; सागर जेम पोताना विशाल हृद्यमां रहेला न्हाना म्होटा जन्तुओनुं पोषण करनार छे तेम आ ग्रन्थ पण पोतामां रहेला न्हाना म्होटा वाक्योने सजीव (चैतन्यमय) वताववा सर्वथा शक्तिमान् छे. केवळ वारिधि करतां श्री झालावंशवारिधिमां विशेषता मात्र एटलीज छे,के ज्यारे तेमां शंख-शंखलां अने कोडी वगेरे निर्माल्य वस्तुओ छे त्यारे आमां मौक्तिक जेवा वीरनरोनां चरित्रोज विराजमान छे, ज्यारे समुद्रनुं जळ खारुं छे, त्यारे आ ग्रन्थमांनां दरेक वचनो माधुर्यथी भरेलां छै; सागरमां ज्यारे भरतीओट थाय छै, अर्थात् कायमने माटे एकसरखी स्थिति रहेती नथी, त्यारे आ ग्रन्थ पोतानी स्थिति एकसरखी राखी शकवा हिम्मत धरावे छे. वारिनिधि जेम दैवी अने संस्कारी न्यक्ति है, तेम आ ग्रन्थनुं स्थूल पण संस्कृत अने दैवी विषयोथीज वंधाएलुं है. सागरमां जेम अनेक सरिताओं आवीने समाय छे तेम आ ग्रन्थमां पण वेगवती विविध कथाओं दाखल थएली देखाय है; सागरमां जेम तरंगों होय है तेम आमां पण तरंगोनी रचना करवामां आवी छे. ज्यारे वारिधि विधातानी आद्यस्टिष्टि छे त्यारे श्री झालावंशवारिधि कविराजनी माध्यमिकसृष्टि लेखी शकाय छे, कारणके तेओश्रीनी आद्यसृष्टिमां कुमुदचन्द्र, कामलतास्वयंवर, हलामण जेटवो, हरिश्चन्द्र, राजयोगी, सतीसरोजीनी, लालखां, माधवका-मकन्दला, गुमानसिंह, भक्तकुटुम्व, अने कवीरविजय, वगेरे द्रव्य काव्यो (नाटको) उपरांत तस्त्रयशत्रिवेणीका, भावआशीवचन काव्य, अमरकाव्यकलाप, भावसुयशवाटिका, आदि राजपशस्तिनां; अने श्रंगारसरोज, पतापप्रतिज्ञा तथा श्रीकृष्ण वाललीला संग्रह वगेरे साहित्यना ग्रन्थोनी गणना करी सौभाग्यसुंटरी, तुकाराम, नटीनटवर, मीरांभक्तिविजय,

नागरभक्त, विल्वमंगळ उर्फे सुरदास, शहेनशाह अकव्वर, योगकन्या, पितृभक्त प्रभाकर अने महान कवि जयदेव वगेरे द्रष्योने; तेमज रणजीत राज्याभिषेक, मनहर लग्नमहोत्सव काव्य, तथा तख्तकुंवरी विवाहवर्णन कार्व्य, वगेरे राजपशस्तिना ग्रन्थोने, नाट्यशास्त्र, विवेकविजय, काव्यसंग्रह, संगीतशास्त्र अने काव्यशास्त्र नामक साहित्यग्रन्थोने माध्यमिकसृष्टि मानवा मना-ववानुं सर्व रीते योग्य लागे छे, कारणके म्हारा गुरुवर्यनुं वय पचान उपर चार पांच वर्षनुं छे, तो पण तेओनी शारीरिकसंपत्ति अने मगजशक्तिमां जरापण वृद्धत्व जणातुं नथी जेथी इजुपण तेओ वाकीनी अवस्थामां साहित्यनी तृतीयसृष्टिने जन्म आप्या वगर रहेशे निह: कार-णके तेओनी वाणी अने विचारोना वेगमां यौवन स्थिर थइ रहेळु छे, श्रंगारनां काव्योथीज तेओ प्रसिद्धिमां आन्या छे अने हजुपण तेवां कान्यो छखवा तेओ अद्भुत सामर्थ्य धरावेछे, छतां आहारविहार आदि व्यवहारमां अत्यंत नियमित छे, ए हुं मारा खास पंटर वर्षना सहवासयी मुक्तकंठे कही शकुं तेम छे. आद्यअवस्था (पहेली वीशी) मां महुकोइ श्रंगार लखे, वांचे अने अनुभवे: परन्तु म्हारा गुरुश्रीए तो उक्त अवस्थामां पण केटलांक नीतिनां काव्यो लखेलां है, वीजी अवस्थामां सहज नीति, भक्ति, अने वैराग्यनेज वळगी रहेला छे ते मुज वाचको तेमनां विवेकविजय अने काव्यसंग्रह आदि ग्रन्थो उपरथीज सिद्ध करी शके तेम छे. कहेवत छे के " जेवुं हैये तेवुं होठे " पलांडु जम्या होइए तो ओडकारमां कस्तूरीनो गंध न आवे अने कस्तूरी जम्या होइए तो ओडकारमां पलान्डुना गन्धनी प्रतीति न थाय, दुंकामां मनुष्योना विचारोज तेमना हृदयनो पृरावो आपवा पूरता छे.

म्हारे कविराज साथे गुरुशिप्यनो सवंब होवाथी हुं तेमनी पशंसा करुं अने ते मने अभिनन्दन आपे ए कांइ विशेष महत्तासूचक नथी। परन्तु सारा सारा साहित्यप्रेमी विद्वज्जनोए पण तेमनी जातने माटे तेमज तेमनां पुस्तकोने माटे अनेक उत्तम लेखो तथा काव्यो लखी मोकल्यां छे, तेमांना थोडाएक काव्यो आ जगोए वाचकट्टन्ड समक्ष रज्ज करीश तो अस्थाने नहीं गणाय।

मुप्रसिद्ध काशीनिवासी विदृद्वर्य रामभद्रशास्त्रीजी लखे है.

दोहा.

अथ रिव चन्द्र गणेश शिव, चतुराननको धाम, जवलग तवलग अमरहे जिओ सुनाथूराम ॥ "ना" नारायण "थू" घृणा, "राम" राधिका ईश; मनों चतुर ये चतुर लिव, धर्यो नाम जगदीश ॥

श्लोक-अनुप्टुप.

सिद्धिं गणपतिर्दयाद्वाक्चातुर्यं च भारती । सनायुग्लेदिजाधीशः सूरः शोर्यं स्वतेजसा ॥ कवित्त.

भूपनमें भूप किन कुशल सुकोनिद है, कला नाटकादिसों किलत कमनीय है। गीतिहूकी रीतिमंजु मंजुल सुपुञ्ज लिख, नरप अनेक सुकहत पूजनीय है॥ रामभद्र सुकिन वलाने कल्लुयामें नांहि, काची जोपें मानो पूछो मोहि कथनीय है॥ गुणिगण आगर सुसागर समान मति, वंकपूर एसो नाथूराम रमणीय है॥

नाम अभिराम मुद्धाम शुचिबाम लहि, काम सुललाम आठोजाम सु करतु है ॥ गुणिजन रंजन सुभंजन अपार भीति, रीति कमनीय उर बीच सु धरतु है ॥ सत्यमें सुधर्म कर्म आपने करत नित, चितमें हुलास प्रतिदिनहि भरतु है ॥ आली रघुवीर ? नाहीं धीर दिज नाथूराम, रामभद्र एसो गुन्यामन झरतु है ॥

जाकी धूमधाम धरामंडलमें राजत है,
जुगुनू किवन शिर सूरज अपार है ॥
पार है न गुनको गुनिनकों सुमान देत,
लेत ग्रुचि आशिष सुरिसक अधार है ॥
धार धर्म धुर है अगार है सुशीलताको,
अलि ज्यों प्रसूनको त्यों गहे सब सार है ॥
सार है न जगमें विवेकी एसो रामभद्र,
आली राम ? नांही—नाथूराम अत्युदार है ॥

अति ही प्रकाशी सावकाशी शुभ कामनमें, दीन दुःखनाशी मंजुभासी सुविलासी है॥ होत ना उदासी जहां जात सुखराशी वह, शंकर उपासी क्षमाजामें सु धरासी है॥ मंजुल सुहासी जामें कूरता जरासी नांहि, कीरत दिगनत जाकी घूमति हवासी हैं॥ रामभद्र कवितायों खडी नाथूराम आगें, जैसे भुजंगमके सुवाश्मुखी दासी है॥

अंग अंग भूखनन भूषितसु अंग अंग,
जरीदार चैलनसु अधिक सहात है ॥
मंडली ज्यों भूपनकी त्योंही तनतेरी शुभ,
विद्याधन तोहि तिन्हे रजत सुजात है ॥
भूमिपन गावत सुदानसे अनेक जन,
रामभद्र तेरो छन्द देशमें गवात है ॥
समता तु लिख भूपितन वीच नाथूराम,
कोनतें धराप कोन मोहि न लखात है ॥

कैथों चन्द्रमंडल अखंडल है कैथों यह, कैथों ये अलीक वालमीक चलि आयो है ॥ कैथों व्यास खास कैथों वरुन कुवेर कैथों, कैथों धराधीश कैथों ईश धीर धायो है ॥ कैथों पदमासनको शासन सुशीश धिर, देवनको शासन सुआसन उठायो है ॥ रामभद्र सुकवि भनत द्विज नाथूराम, उनहुको अंश लेके ब्रह्मज् बनायो है ॥ जोलों मारतंड सुप्रकाशे भुविमंडलमें, जोलों सु अखंडल सुरन विच गाजते ॥ जोलों गणाधीश धराधारक धरेश जोलों, जोलों दिगपाल दसों दिस विच राजते ॥ जोलों है मुर्कडसुत जोलों वारि वारिधिमें, जोलों ब्रह्मसुत ब्रह्मचारी पद साजते ॥ भनत सुकवि रामभद्र तोलों नाधूराम, जीवहु अमर सकुटुम्ब ससमाजतें ॥

प्रथम सो तेज शुभ आनन द्वितीय सम, बलमें तृतीय एसो चतुर सुजान है ॥ तुर्य बुद्धिसागर सुपंचम सो ज्ञानवान, षष्ठ जिमि मंत्र तंत्र जानत प्रमान है ॥ सप्त अष्ट नव सब रिपुनके मंडलमें, दुष्टनको एकादश जानत जहान है ॥ रामभद्र भनत सुकवि नाथूराम इमि, अजर अमर जीवो नांहि कल्लु आन है ॥

अयन्नाथूरामाभिध कलितकामः ग्रुभिधया, वरिवर्तुस्फीतः सुचिरमभिगीतः कविवरैः इदानीं जातानां कविवरवदातः सुयशसा, द्विजानां संघाता निजकुल विधाता किलकृती.

दोहा.

संव न उन इस पचवनो, सित फाल्युन युरु ईस; विरुदाष्टक नथुरामको, पूरि सु देहुं अशीश.

महाशय रामभद्रशास्त्री संस्कृत भाषाना उत्तम विद्वान साथे द्वजभाषाना कवि पण छे, तेओ वि. सं. १९५५ मां जुनागढ शाहजादाश्री शेरजुमाखानजी वहादुरनी शादीना शुभ प्रसंग जपर काठिआवाडमां पधारेला, मारा गुरुवर्य कवीश्वर नथुराम सुन्दरजी पण ए समये जुना-गढ राज्यना निमंत्रणने मान आपी त्यां किविओनी परीक्षकमंडलीमां निमाएला हता, तेओनी "विद्यावर्धक" नामनी नाटकमंडलीने पण उक्त लग्नना महोत्सव प्रसंगे नामदार नवावसाहेबे जुनागढ वोलावेली हती, किवराजनो स्वभाव मूल्यीज उदार होवाथी तेओ सहुकोइना भलामां भाग लेता अने हजुपण तेवीज दृत्तिथी परोपकार करवामां पछात रहेता नथी. जुनागढमां देशी विदेशी अनेक विद्वानोनो तेओने समागम थयो हतो, अने तेमांना घणाओए तेमना उत्तम स्वभावनी तारीफ करेली हती, परन्तु अति विस्तारना भयथी मात्र रामभद्रशास्त्रीनी किवताज आ स्थळे वाचक समक्ष रजु करेल छे.

शास्त्रीजीए प्रनमना दोहामां आशीर्वचन आपी, वीजा दोहामां नामनी सार्थकता वतावी छे, त्रीजा स्लोकमां फरी आशीर्वचन आपी कवित्तमां अप्टक वनाव्युं छे; प्रथम कवित्तनी अंदर राजमान्यता, नाटक आदि कलानी सुन्दरता, मनोहर गायन बनाववानी पद्धति अने वांकानेरमां निवास वगेरे गुणसमुदायमी पशंसा करेली छे. वीजा कवित्तमां मनोहर नामवाळा, आनंदमय, पवित्र आठे प्रहर उत्तम काम करवामां प्रीतिवाळा, गुणीजनोने राजी करनार, भयने इरनार, सारी रीते सत्यपरायण तेमज स्वधर्म कर्मनुं आचरण करनारा आते राम छे ? के कवीश्वर नथुराम छे ? एम कोइ मित्रनुं मित्र पत्ये कथन छे, अलंकार छेकापन्हति, त्रीजा कवित्तमां पण शास्त्रीजीए एज अलंकार कायम राखी कविराजने रामचन्द्रना गुणोथी सर-खाच्या छै: चोथा कवित्तमां अत्यंत तेजस्वी, शुभ काममां अवकाशवाळा, टीनजनोनां दुःखने दूर करनारा, उत्तम विलासना भोक्ता, उटासीने अलग करनारा, परम सुखी, शंकरना उपासक, धरा जेवी क्षमाने धरनारा, मनोहर हास्य करनारा, क्रूरताथी विरक्त अने कविता जेमना पासे दासीनी माफक वशवितनी छे वगेरे गुणानुवाद करेल छे. पांचमा कवित्तमां कविराजनी राजा साथे समता वतावी छे, राजा पासे जेम सोनुं रुपुं होय छे तेम कवीश्वर पासे विद्यारुपी अखुट धन दर्शावेछुं छे, जेम दानने लीधे अनेक लोको राजाओना गुण गाय छे तेम कविराजना छन्द पण मानपूर्वक सर्व देशमां गवाय छै; राजा पासे जेम नोकरोनो समुदाय तेम कविराज पासे पण गुणी-मित्रजनोनो समुदाय हाजरज होय छे, वगेरे वावत शास्त्रीजीए स्वानुभवथी वर्णवेली है. छहा कवित्तमां कविराज निःशंक दैवीअंश है एम वताववा शास्त्रीजीए वाल्मीकि, व्यास आदि देवी प्राणीओनी गणना करी वतावी छे, सातमा तथा आदमा कवि-त्तमां आशीर्वचन छे अने त्यारपछीना श्लोकमां जेना कुळनी अंदर कवीश्वर जेवो विधाता छे ते ब्रह्मसमाज खरेखर कृतकृत्य छै एम जाहेर करी छेल्ला दोझामां बाह्वीए काव्यरचनानो समय वतावी आशीर्वादनी दृष्टि करी छै.

२. वृजभाषानी अत्यंत सरल, कोमळ, रसवाळी अने अलंकारयुक्त कविता वनाप्रवामां किवराजनी वरोवरी करवा कोइ काठिआवाडी किव समर्थ नथी एम वताववा मोर्वीनिवासी महामहोषाध्याय शास्त्रीजी शंकरलाल माहेश्वर भट्टे निम्नलिखित श्लोक बनावी मोकलेलो छे.

व्रजवासिगिराप्रवन्धवन्धे, नथुरामो नथुराम सन्निभोऽयम् । सरसा सरला च कोमलाऽलंकृतिसारा कवि नामकंव्यनिक्त ॥

३० काशीनिवासी पंडितवर्थ श्रीकृष्णशास्त्रीजी के जेओ श्रीमद्वल्लभक्तलावतंस श्रीदेव-कीनन्दनाचार्यजी महाराज साथे रहेता हता तेओ एकवखत वांकानेरमां कविराजनुं मिलन थतां निम्नखिखित श्लोक वनावी गया छे।

श्रीनत्थुराम कविना कविनायकेन, जातेऽच से सुकृतकर्मवशात्सुसंगः। एनं विवर्धय सदागमद्रष्टिपूर्ण, सित्रागमेन सहितं सहितं विसो त्वम्।।

श्रीकृष्णशास्त्री जेवा समर्थ विद्वान पण किवराजनो समागम थतां पोताना सुकृतकर्मनी । मवलता अर्थात् सद्भाग्य समजे छे अने उत्तम मकारे आशीर्वचन आपे छे; किवराजे प्रयाण समये तेओश्रीने पुष्पमाला अर्पण करी ते वखते शास्त्रीजी नीचे मुजव वोल्या हता.

माला पुष्पवती गुणेन सहिता, प्राप्ता सयेऽयं शुभा, सत्काव्यज्ञ कला कलापकुशलाच्छ्रीनत्थुरामाभिधात् ॥ शुक्के शुक्रदिने सुहास्य नविन प्रज्ञा प्रतिष्ठायुतात्, श्रीकृष्णेन सदागमेन सहिता सर्वस्य सौख्याय या.

आमां पण सत्काठयज्ञ अने कळाकळापकुशळ आदि दरेक विशेषणो शास्त्री-जीए कविराजने भळं मनाववा निह परन्तु तेओना गुणोत्कर्षने अनुमोदन आपवा अन्तरना साचा डर्मिओ जाहेर कर्या छे.

४ अनंत नामना कविवर कविराजनी कवित्वशक्ति विषे नीचे ग्रुजव छखे छे. कवित्तः

पूर्वजनमांतरके पूरन परिश्रमसों, पाई इष्ट कृपातें अग्यानतम भानिजो। कुंभज ओ वालमिक त्योंजु वेदव्यास सास, वेस किव वाण कालिदास ध्यान आनिजो॥ सुन्दरजी नन्द सुखकन्द नथुराम धन्य, कहत अनंत या मरालपत्र मानिजो। सोही आज तेरे सुखधाममें निवासकर, करत कलोल ये अमोघ वाक वानिजो॥

दोहा.

सुरसरि ज्युं सरितानमें, सुरमें ज्युं सुरइयाम, त्यों अनंत कविराजमें, राजे कवि नथुराम ॥

५ भूप नामना कविराज कवीश्वरना विविध गुणोनुं नीचे ग्रुजव दिग्दर्शन करावे है. कवित्तः

साहित सँगीतमें प्रचीन नर देववानी, मित्रगन मंडन उदार अति मनको । महिपन पासनमें बंधी बरषासन है, सत्य मुख भाषनमें पाले विप्रपनकों ॥ किव भूप कहे जस जाहिर जगित जाको, साधत हमेश उठि पट करमनकों । वंकपुर धाम गुनगाम सुत सुंदरको, किव नथुराम है अराम गुनीजनको ॥

६ विजापुरनिवासी कविवर द्यजलालजी पण कविराजना समागमथी संदुष्ट थइ नीचे मुजव उद्गार काढे छे.

कवित्त

अविके प्रताप जस फिव रह्यो अविदिस, पविधरकोसो आज किव नयुरामको । लाजको जहाज शिरताज किवराजनको, राजे किवराज आज भावनय इयामको ॥ दामगुनरासी वांकानेरको निवासी सोई, सतत हुलासी है करैया शुभ कामको । कहे वुजलाल वंस गुक्कको है हंस सम, करूं का प्रशंस मानुं अंश देवधामको ॥

७ कविश्रेष्ट माथव विजापुरवाळा कविश्वरना बुडिवळ विषे नीचे मुजब विचार दर्शावे है।

कवित्त.

साजीकें नवीन किवताईके निबंध केक, राजी किये मित्र अरु पाजी दिये पटकी। माधव भनंत बलबुद्धिको प्रभाव जाको, खलके हृदय निसि द्योस रह्यो खटकी॥ सुजनको रंजक है सुंदर सपूत आज, इनकी छबीसों उर मेरे रही अटकी। किव नथुराम जो न हो तो किलकालमें तो, चाल चुकी जाते महिपाल क्षात्रवटकी॥

८ श्रीयुत गुंसाइजीदादा आदित्यगिरिजी महाराज के जेओ प्रतापगढ देवलीआना महाराजासाहेवना अत्यंत मानीता छे अने आर्यकुलकमलदिवाकर उदयपुरना श्रीमान महाराणा श्रीफतेहसिंहजी वहादुरना परिचयमां हरवखत आवनार छे, तेओ कविश्वरनी उदारता तथा रसइता सबंधे नीचे मुजब जणावे छे:—

कवित.

याम भावनयके सुराज किव नत्यूराम, काम रंगरीतके तमाम सुख बेते हो। गृ'स्थ किकालके समस्त महिपालनकी, मस्तता मिटायवेमें शिक्षक सचेते हो॥ दिधचसे बंदनीय बंस अउदीच बीच, आज उपकारकों अधार पद देते हो। विद्या अरविन्दको सुफूलिबो सफल आप, वित्वे मिलिन्द मकरन्दरस लेते हो॥

९ जोवपुर निवासी संतिशरोमणि भावनादासजी महाराज के जेओ रामस्नेही मंप्र-दायमां एक अग्रगण्य महात्मा छे अने जोवपुर तरफथी जेओने म्होटी जागिर मळेली छे अने जेओए "भावनी भावमाळा" वगेरे उत्तम ग्रंथो वनावेला छे तेओ जो के कविराजने कोइ वस्ति मळ्या न हता, परन्तु तेओश्रीना तस्तियशत्रिवेणिका आदि ग्रंथोमांहेनी हिन्दी कविता वांची उद्भवेला अनुरागने लीचे पत्रद्वारा वारंवार वांकानेर पथारवानी इच्छा दर्शावता हता, कवीश्वरं पोतानी पुत्रीओना लग्न पसंगे तेओने कुंकुमपत्रिका पाठवी हती, तेनो पत्युत्तर तेओ-ए नोचे मुजव काव्यमां आप्यो हतो.

॥ श्री रामो विजयते ॥

दोहा.

स्वस्ति श्री सुखमासदन, नगर सु वांकानेर; तत्रस्थित उपमाअयन, विज्ञवर्य इहि वेर ॥ प्रियवर तुमप्रिय प्रानतें, सज्जन संख्यावान; विद्यातें अनवद्य बड, उदन्वानसे आन ॥ कोविदात्र कमनीय कवि, धेर्यादिक गुणधाम, सतमति रत अतही सुहद, राज रह्यो नथुराम ॥ तिहि प्रति नित अतिहित सहित गम राम अभिधान; साधु भावनादासको, वाचहु सुकवि सुजान ॥ श्री सहाय करिकें सदा, आनँद उमगत अत्र; सुख संपतियुत सर्वदा, तेसेहि चाहिय तत्र ॥ देवराज द्विजराजवर, पंडित परम प्रवीन; तेहि दीन्हीं तव पत्रिका, लिलत सुउत्सव लीन ॥ पेखत कुंकुमपित्रका, लग्नोत्सवमय लेख; उर उमग्यो सुखतें अधिक, वननिधि ज्योंहि विसेख ॥ वरतें मम यहि वारमें, दोनों अक्षि अवद्य; यहि कारनतें आपिंहग, आना वने न अद्य ॥ मिलन हेत दल मोकल्यो, सज्जन तुम दिल साफ; लोचनतें लाचारहं, मित्र करहु अव माफ ॥ संवत् गुण ऋतु अंक शशि, माधव पक्ष वलक्ष; दशमी तिथि गुरु दिवसकों, पत्र छिख्यो प्रत्यक्ष ॥

१० महाराजश्रीना शिष्य मालिग्रामजीए पण कविगाननी कितताश्रो वांची निम्न-लिखित अभिभाय मोकलेलो छे. कवित्व•

व्यंग्यतें विलच्छना मुलच्छनातें लिच्छत है, मुरिभ मुहाय रही बरन धरनमें। चारु चटकीली नवरसतें रसीली रम्य, अधिक विराज रही आभा आभरनमें॥ सालिग मुहावनी है भाव ध्वनिहुतें भली, चातुरी दिखाई देत चरन चरनमें। कविता तिहारी कमनीय कला कामिनीसी, मुंदर मुवन बसी कविके करनमें॥

दोहा•

रिसक सुकिव नथुराम तव कृति निहारि कमनीय; भावन शिष सालिग भन्यो, भल कवित्व भवदीय ॥

कविराजने भावनगरना गुणज्ञ महाराजा महाराओल श्रीतव्तसिंहजी वहादुर तर-फयो ज्यारे राजकि नी उपाधि प्राप्त थह त्यारे तेओए पोताना अन्नदाताना गुण गावानी साथे साहित्यमां पोतानुं केटलुं उच्चतम ज्ञान छे ते वताववा खातर एक " तख्तयदात्रिवे-णिका" नामनुं उत्तम पुस्तक रच्युं अने ते सारा सारा विद्वानोने अभिप्राय अर्थे मोकल-वामां आच्युं: ए अभिप्राय मांहेना योडाएक नीचे मुजव छे.

११ जोधपुरनिवासी बृहद्विद्याभास्कर पंडितजी श्रीलालचन्द्र शर्मी लखे है.

मुहल्ला-जालोरी दरवाजा

पत्र

जोधपुर-मारवाह.

कार्तिक कृष्ण-१२ सं. १६६७

श्रीहरि

॥ श्रीमान राज्यमान राजेश्री किवराज नथुराम सुन्दरजी यो-ग्यम् लिखी. वृहत्किव विद्याभास्कर पंडित ग्रुरु लालचन्द्रशर्माके नमस्कार वंचावसी तथा आपकी निर्मित (तख्तयशित्रवेणिका) नामक पुस्तककों श्रीयुत साधुमहाराज भावनादासजीके मार्फत पायकर मुझे वडा भारी प्रमोद हुआ. आपकी काव्यशक्ति और श्रीमान् वैकुंठनिवासी वडे महा- राजा बहादुर भावनगरकी पूर्ण राजभक्तिकों देखकर मेरे चित्तके आभि-प्रायोंकों निम्न लिखित नवकिवत्तोंमें जाहिर किये हैं, आज्ञा है कि आप और आपके सज्जन मित्र इनें पढकर खुजी होंयगे, उक्त पुस्तककी यह मेरी तर्फसें समालोचना है ॥

छन्द मनोहर.

स्वस्तियुत भावनय लसत उदयपुर,
सुगुण समयमय सुकिव समाज है।
पंडित प्रवीन निज धरम अधीन भूरि,
विद्यावोध जीन सत्यशील सुखसाज है॥
लालचन्द्र कहत सुदेशके अधीश जहां,
सोहें अवधेशसे नरेश शिरताज है।
महाराज अधिराज दीनन निवाज आज,
भूप भावसिंह नरइन्द्रसे विराज है॥

नृप भाविसंहकी अनूप रूप राजसभा, शास्त्ररीति सहितके सुकवि सुजान है। राजे राजकि जहां नयुराम सुन्दरजी, शुक्क शिष्ट धर्मानिष्ट काव्य कृतिवान है॥ लालचन्द्र देत धन्यवाद हिय हेतकर, कृतिकों निहारि अति अद्भुत प्रमान है। तखत नरेश यश विदित सुरेन्द्र सम, पहत सुशर्म पर्म लहत महान है॥

प्रेमसें पठाई पूर्ण पुस्तक प्रमोद पूरी, पाई हम प्रीतियुक्त किन्युवदेणिका । भावनय भूतपूर्व भूपकी भलाई जामें, अति अधिकाई गुणगणशतश्रेणिका ॥ लालचन्द्र कहे राजकविवर नयुराम, सुन्दरजी सुन्दर बनाई बोध एणिका। कीन्ही अवलोकन अवलतें अखीर तक, धन्य धन्य धन्य भूप तखत त्रिवेणिका॥

गीति छन्द कीर्तिमय कीन्हों है उपोद्यात, नीति सत्य वर्णनमें नृप यश भीनों हैं। समर्पण पत्रिका सुवाल भावसिंहजीकी, आशिरवचन अति अधिक नवीनों है॥ तखत सुरेश्वरकों जीवनचरित्र चित्र, लसत पवित्र वर वृत्त चित्त चीनों है। लालचन्द्र कहे राज्य कविवर नथुराम, सुन्दरजी शुक्क काव्यकृतिमें प्रवीनों है॥

िख्यो है संगीत भूप तखतिनोद राग-रागिनीन तालशास्त्र रीति अनुसारी है। तख्तयशवादनी किवत्तनमें दानताको, वर्नन कियो है चित्र किवता प्रसारी है॥ लालचन्द्र कहे राज्यकिवयर नथुराम, सुन्दरजी शुक्क सारी सुमिति तिहारी है। तख्तयशको सँगीत सुमन रच्यो है तहां, रागिनी गजल ताल मोदके विहारी है॥

तखतिवरहवारी वावनी रची तें महा, दुःख उपजावनी सुने तें सवहीके है। कर्ण भोज विक्रम तें अधिक वदान्य भूप, तखत नरेश्वरके सुयशजु नीके है। लालचन्द्र कहे राज्यकिववर नयुराम, सुन्दरजी शुक्क शामधर्म निज पीके है। आश्रय सुपत्र लिख्यो आश्रय पवित्र सुधी, माननीय शिष्टनके उपकृत जीके है॥

पुस्तक पहत पायो परम प्रमोद हम,
तखतित्रवेणिका त्रिवेणीसी सुधारी है।
व्यंग धुनी व्यंजना अलंकिया सुलच्छना त्यों,
संस्कृत पराकरत वीचि विसतारी है॥
लालचन्द्र कहे राज्यकिवर नथुराम,
सुन्दरजी भगीरथ शोभा अधिकारी है॥
तखतनरेश्वरके पुण्यवारि भूमें यह,
अमर कियो है सदा आशिष हमारी है॥

महाराज अधिराज भूप भावसिंह वीर, सुग्रण समुद्र साचो लसे प्रजापाल है। दाता दिव्य दिपत व्यालु दीह दीननको, परउपकारी भारी धर्म रखवाल है॥ लालचन्द्र देत है अशीप चिरजीवो सदा, तखत नरेश्वरके प्यारे अति लाल है। राज अभिषेक लेकें सफल कियो है नृप, गुणभय नाम भावनगर भुवाल है॥

विजय सदैव भावसिंह नग्इन्द्रज्ञी, जय जय भावपुर भृप महाराज है। गुनि निज सामधर्म अनि सनमान देकें, कीनो है दिवान प्रभाशंकर स्वगज है॥ लालचन्द्र कहै राज्यकविवर नथुराम, फेल्यो यश भूपतिको भारत विराज है। शंकर कृपातें पुत्र दलपतके प्रतापी, चीप कारभारी लसे प्रजा सुखसाज है॥

> इत्यलं सुकविषु. आपका परम हितचाहक, लालचन्द्र शम्मी.

उक्त पंडितजीने जीधपुरना सर प्रतापसिंहजी वहादुरे बृहद्विद्याभास्करनो उपाधि अर्पण करेल छे, तेओ कोइपण वखते भावनगरना विद्यमान महाराजा भावसिंहजी वहादुरने मळेला नथी तो पण किवराजनी साथे तेमना अन्नदातानी पण प्रशंसा करवा चूक्या नथी; आ उपरथो सिद्ध थाय छे जे उक्तम किवओने आश्रय आपनारा नरेश्वरो वगर पैसे म्होटा महोटा पंडितो तरफथी पशंसा मेळवी शके छे.

१२ जोधपुर-मारवाडना सुप्रसिद्ध वकील अने वचवारीना जागीरदार पंडितजी देवराज पंचानन शास्त्री नीचे मुजव लखे छे.

प्रिय कविवर ! नत्थूरामजी साहिब !

भवत्त्रेरित "तख्तयशित्रवेणिका " की पुस्तक भावनादासजी
महाराजके द्वारा मुझे मिली जिसे में सहर्ष अंगीकार (स्वीकार) करता
हूं. आपके इस अनुप्रहका वर्णन में कहां तक करूं, केवल धन्यवाद देकर
परमात्मासे आपके आयुरारोग्य तथा दीर्घजीवी होनेकी प्रार्थना करता हूं.
राजालोग कवियोंकों केवल इसीलिये सन्मानपूर्वक रखते हैं कि वे
उनका यश निर्माण करे, और दीर्घकाल तक संसारमें नाम बना रहे.
हमारे मारवाडी भाषामें नाम स्थिर रहनेके दोही कारण एक प्राचीन
कहनावतमें प्रसिद्ध है. कहते है कि " नाँव रहे के गीतडां के भीतडां "
सो गीतडां तो कविता वा पुस्तक रचना (गद्यपद्ये कृतो कवेः) इसके
अनुसार और भीतडां " इमारत " वनवानेसें. वस इन दोके सिवा कोइ
उपाय नाम चिरस्थाई रहेनेका नहीं है. आपने यह पुस्तक रचकर महा-

राज तख्तसिंह वहादुरका अटल नाम करिदया. अपने लवणकी उज्वल करिदया.

मेंने इस पुस्तककों देखी तो यह पुस्तक गुर्जर भाषा और गुर्जर लिपिमें है. किवत्त नागरी भाषामें है, गुर्जर भाषामें मुझको अत्यल्प बोध है. इसिलये गद्यके विषयमें अपनी अनुमित प्रकाश नहीं कर सकता; और अभी इतना सावकाश भी नहीं कि किसी गुजरातीके पास जाकर वा बुलाकर अवण करूं, तथापि जो आपकी किवता नागरी भाषामें है उसके लिये मेरी यह अनुमित है कि आपकी किवता प्राचीन प्रनालिका अनुकरण कर्रती है और सरस किवता है. इसे पढकर चित्तकों अत्यंत हर्ष हुआ.

आपका देव.

१३ जोधपुर-मारवाड तावे गाम मथाणीआना जागीरदार वारहटकविवर्य जेवदानजी छखे छै.

कवित्त.

अलंकृत यन्थ अभिराम नयुरामकृत,
आयो इत सिहत सनेह जोधपुरमें ॥
भावनयतें पठायो पास दास भावनके,
जास किव जेत प्राप्य आनँद भो उरमें ॥
शुक्क चित्त शुक्क हित जन्मकुल शुक्क जासु,
गुकल विलास रम्य सकल भूसुरमें ॥
इतें अवलौक अविलोके बुद्धि आप और,
यम्थन गुरुत्व यन्थ त्यों गुरुत्व गुरुमें ॥

ईश भावनम्र भावसिंह अम्र शुक्क वंस, कवि नथुराम किय शुक्कद्वत्ति लेनिका ॥ दूपन रहित ग्रन भूपन सहित दिव्य, साहितके हित नित अर्ध्वगति देनिका ॥ लहर सँगीत जित लहर ललाम लेत, सुधा श्रुत देत धुनि सुन चित चेनिका ॥ भरी श्यामभक्ति रस प्रसरी प्रसक्त अस, जीवनपें जक्त तस्त सुजस त्रिवेनिका ॥

१४ अमदावादना रहेवाशी कविश्रेष्ठ हर्षदराय प्रथम वहोदरा स्टेटमां नोकर हता, परन्तु पालीताणाना महाराजाना अत्यंत आग्रहथी तेओओ त्यां राजीनामुं आपी गोहिळनरेशना राजकि तरीके आनंदमां जींदगी गुजारे छे. पोते महान् रसिक अने मस्त छे, तेओओ "तर्क्तयशिविणिका" नी समालोचना साथे केटलीओक उमदा कविताओ पत्ररूपे कवीग्वर उपर मोकलावी हती, ते तमाम वांचवा योग्य होवाथी ते समस्त पत्र अत्र दाखल करेलो छे.

ता. ११ फेब्रुक्यारी सने १९०३.

कें तत्सत्परमात्मने नमः

दोहा.

स्वस्ति श्री शुभनम् वर, वंकनेर शुभ स्थान; नत्थुराम अभिराम प्रिय, पूरन चतुर सुजान ॥ शुभ स्थळ अमदावादसों, किव हर्षद लिखितंग; हृदय स्मरण अंकुरतें, बाढ्यो अधिक उमंग ॥ वह उमंग चुम्वक सिर्स, स्थूळ देह जनु लोह; सयो विवश प्रिय मित्रको, अंचत तनकुं मोह ॥ दर्शन लाळचु नयन है, चित्त चाहत सुप्रसंग; वह प्रसंग यह पातिमें, पठवत हर्षद रंग ॥ अत्र कुशळ कल्यान है, चिन्तारहित शरीर; सज्जन दर्शन रूपकी, व्याधि करत है पीर ॥ सोई व्याधिमें मस्त किव, पेखतमस्त तरंग; प्रेसिनेषु विच मोदयुत, नौकासहित सुरंग ॥ सोइ रंग सुप्रसंगमें, लिह्यो पत्र अभिराम;
मुकुर तुल्य चित्त स्वच्छमें, किर है शब्द मुकाम ॥
ठिरिहे वृत्ति प्रमोदयुत, दोनुँ द्रगनकी ठोर;
लिलत मग्न चितद्वारको, कपाट फिरि है और ॥
नत्युराम प्रियमित्र युनि, पेहैं किवको हेतु;
तव प्रसन्न है जायगो, पायो ज्यों सुखसेतु ॥
सोइ मित्रके हृदयकी, प्रतिभा पेखिह सद्य;
तव हर्षद निजिचतिहमें, आनँदमें अनवद्य ॥

यह सिथ्या जगमें लसत, विमल प्रेमसुखधाम; जेंहि जनपावत भेद वह, सुख पावे नथुराम ॥ हमिंहें तुमहिकें स्थूलमें, अंक तत्त्व सुखकन्द; न कलु भेद व्याधि रहित, शान्तवृत्ति ज्यों चन्द्र; जो तुम्हारे चित पातिकी, असर हृदयविच आति; करि करुना मोपें लिखहु, प्रत्युत्तरकी पाति ॥ विविध उक्ति रसयुक्त रुचि, लायक रिसक पिछानि; सो यह तख्तित्रवेनि यश, सुखदायक हिय मानि ॥ सर्वेया.

देखतही यश तख्तित्रवेनि, त्रिवेनिको संगम पाय रही; जिनमें यह स्टिष्ट समस्तनकी द्युति सुंदरता दरसाय रही; कलहंसर कोकिल कीरनको, विधिना कृति ऐसी लिवाय रही, जुँ कदंवके वृन्दमें आनंदकंद, सरस्वति मानों सुहाय रही ॥ देखतही द्रगतें रचना यह, भासत है कल्लु आनंद श्रेनी; ओर अनेक विवेक विचार अलंकृत उक्ति सुधारसदेनी; जैसी त्रिवेनि त्रितापनिवारिनी, शांतमितकरनी चितचेनी, सत्य कहें हर सिद्ध सुनो, प्रिय तैसी लिखी यशतख्तित्रवेनी॥ कवित्त

काव्य रचनाकी छटारूप तट सुंदिर है, अर्थरूप अलंकृतवारी स्वच्छ सोनिका ॥ कहै हरासिख उछलत है तरंग वामें, रंग रंग रसमें अभंग रंग देनिका ॥ काव्यरस विन्दुको पिपासी जन प्यास हरे, चितमें चितोनुं चाहे सुमातिकी श्रेनिका ॥ नसुराम असी सुरमंडल अन्हाय वेकों, चली अपवर्ग यहा तल्तकी त्रिवेनिका ॥

होइकें संतुष्ट मोपें इन्द्र जू इन्द्रासन दे, कोटिक विलास युक्त आनँदके घरकी ॥ चाह रखे मोपें चन्द्रशेखर क्रुपानिधान, चितमें चितोनुं देव पदवी अमरकी ॥ परवा न रखें हम लैहेंना ग्रमानी हैंकें, मानयुक्त मेरी चित्त कहुं में अँतरकी ॥ अहंभेद दूर कर चाहें हरसिद्ध ए तो, पाती अब मिले नथुराम हस्ताक्षरकी ॥

लिखहु पाति प्रत्युत्तरकी, अंतरकी कल्लु सेन; चाहत हर्षद मुकुरसम, स्वच्छ अच्छमति सेन ॥ सवैया

कोउ रहे गिरिकन्दरमें, द्रगमूंद लगावत चंड समाधि, चाहत है हरसिद्ध कहे, निज इन्द्रियके वलकी गति साधी; दीन रहे दुःख प्यास सहे, जदिप निह जानत है इक आभि, सोई कहे हरसिद्ध सुनो प्रिय, चाहत है हम इइक उपाधि.

दोहा.

इश्क उपाधि सिन्धुमें, जो कोउ परत सुजान; नहि चाहत सुख स्वर्गको, नहि मागत कछु आन.

सोइ इक्क रंगकी उपाधि ब्रह्मभेदहुमें, मायारूप मोद मुद मंगल रचावनी ॥ हर्षद अभंग रंग आदि रंग रंगिनीसो, सवहीके अंग मध्य रंग दरसावनी ॥ जहां तहां देखी खूव खलक खुवीसे खास, भासत है भास प्रेम इक्की सुहावनी ॥ तैसे रंग रंगमें रंगाये जब नत्थुराम, पेख लेहें पाति यह चारु चित्त च्हावनी ॥ दोहा

सोइ रंगको रिसक तुम, सदा लहो आनँद; रसज्ञ होकर स्वर्गमें, पाओ सुमित सुछन्द ॥ कामकाज कल्लु अत्रकों, जो कल्लु आयसु देहु; यथाराक्तिसें प्रेमयुत, उमंगसें कर लेहु ॥

कवित्त•

वंक तलवार कटितटके प्रदेशनमें, वंक है कटारी तार्षे दच्छ भुज ल्यायों है ॥ हर्षद भयान वंक श्रकुटी कमान जैसी, वंक है त्रिविछ दीर्घ भाल विच पायों है ॥ शिरपेच पाघहुपें वंक अर्धचन्द्राकृति, चितमें निशंक धर्म अंश दरसायों है ॥ एसे वंकनेर वंक मुच्छनको वंक भूप, निकट अर्तुप नथुराम किव कहायों है ॥ उक्त कविश्वरे पण कविराज उपरना निःसीम सौहार्दने लीधे अन्तिम कवित्वथी तेमना आश्रयदाता श्रीमान महाराजा राजसाहेव अमरसिंहजी वहादुरनी कंइपण अर्थादिनी आकांक्षा विना स्तुति करेली छे.

एज रीते कविराजे पोताना तृतीय आश्रयदाता पोरवंदरना महाराणाश्री भावसिंहजी बहादुरनां प्राकृत तथा गुर्जरभाषामां अनेक काव्यो छखी "भावसुयशवाटिका " नामे पुस्तकनो प्रथम भाग वहार पाडी केटलाएक विद्वज्जनोने भेट तरीके मोकल्यो हतो, तैना अभिपायमां—

१५ मथाणीआनिवासी वारहट जैतदानजी नीचे मुजव लखे छे.

कवित्त.

निसामिन धारे हिम मन्दाकिनि तारे मर्त्य, फेर भुम्मि गौल फन धारत फनी रहे ॥ पारावार धार पय विहर बयारजोलीं, तोलों रिवकर्न धर्न तेजतें तनी रहे ॥ असें समराट जसपाट पोरबन्दरके; काव्य नथुराम सदा सुधासी सनी रहे ॥ भावजसवाटिका बिलोक जिय जैत वाट, भावसिंह भेटिबेकी भावना बनी रहे ॥

१६ मारवाड-गढोइना रहीश कविराज अचलदानजी फनीराम वारहट रतनु जे वखत पोताना वन्धुओ सहित पोरवंदर आव्या हता ते वखत खा. महाराणा श्री भावसिंहजीनी साथे कविराजनी पण तेमणे नीचे प्रमाणे कविताओं वनावी हती.

दोहा.

भावसिंह नृप भोज है, सुजस पवित्र प्रकाश; नथूराम निश्चे लख्यों, कविवर कालीदास. सवैयाः

कोप अगस्त समस्त अरिपर, द्रोन समो वरभारथमें; भाव सनेह सुहावत पूरन कृष्न चितंलग पारथमें; त्यों अचलेश कहेयश जाहिर ना दिलहें निज स्वारथमें; या जगमें द्विजराज नहीं, नथुराम जिस्तो परस्वारथमें. १ कोउक वेद पुरान पिछानत कोउ प्रवीन सुभारथमें, कोउक पायन कंचन राजित, को द्रढहै निज स्वारथमें; त्यों अचलेश किते द्रव पूरन, शस्त्र विद्या ग्रन पारथमें, या कलिमें द्विजराज नहीं नथुराम जिसो परस्वारथमें. २

कवित्व.

अवि द्रह गृह पथा मूह तम अवि तेज, गुनभार ग्रहवेकों अविसम हाम है ॥ अविकार दिल राजे अविगत सुजस है, महोद्धि अविगति सो ठहै वसुयाम है. अचल कहंत अविचारी ताकों नोदनसों, भावभूप कृषा अविरोधको विश्राम है. अविचल काव्य रचे अविकल चित्त सदा, अविअति सज्जनकों कवि नथुराम है. गुरुके गानपतिके गोविंदके गाय गुन, सुधाधार शुद्ध विद्याव।रिध विस्तारती ॥ देव नरदेव यश अमर धरावें करे, अखंडित प्रभा ओज अधम उधारती॥ वानी महारानीकों वनाय वेस रस सानी, सुनके चिकत गौरी होवे चित्त सारती॥ कोटि मूल्यके कलाम कवी नयूरामजुके, भारत कल्यानकाम भव्य जाकी भारती॥

कविराजे छखेल द्रश्यकाच्य (नाष्ट्यशास्त्र) ना अपूर्व ग्रन्थ मैवंघी नीचे ग्रुजव अभिप्रायो आवेला हे॰

१७ साक्षरवर्ष केशवलाल हर्षटगय ध्रव अमटावाटयी ता. २-२-१९०० ना रोज लखे हे जे-

" संगीतना अभिनय अंग उपर कोडपण विम्तारवाळो ग्रन्य गृजगतीयां भाजसुत्री लखायो होय, तो ते कवि नथुराम मुंदरजीनुं नाट्यशाह्य हो, एमां एमणे भरतनाट्य शास्त्र ना दुर्नोध भाग उपर संगीतरत्नाकर आदि पुस्तकोनी साहाय्यथी प्रकाश पाडवा ठीक प्रयत्न कर्यों छे, प्राचीन अभिनय कळाना जिज्ञास अने शोधक गूजरातीनो मार्ग नाट्यशास्त्रथी उक्त दिशामां सरल थशे.

१८ साक्षरोत्तम उत्तमलाल केशवलाल त्रिवेदी लखे छे जे नाट्यशास्त्र नामनो आपनो प्रन्थ ट्रंक समयमां जेटले अंशे हुं जोइ शक्यो छुं तेटला उपरथी कहुं छुं के ते प्रन्थ सारो थशे.

आपणी भाषामां नृत्यना विषय केवळ नवीन छे, ते विषयमां आपना यन्थथी घणो नृतन प्रकाश पडवा संभव छे. तेमांना केटलाक प्रकारोनो चित्रथी साक्षात्कार न करावी शकाय?

नाट्य अने अभिनय कळा उपर "वसन्त" मासिक पत्रमां केटलाक सारा निवन्धो प्रसिद्ध थया छे जेना उपर हुं आपनुं ध्यान खेंचुं छुं. हुं धारुं छुं के ते निवन्धो आप जोशो तो आपना आ ग्रन्थने आप वधारे उपयोगी बनावी शकशो.

नाट्यमां—काच्य मात्रमां कृत्रिमताने माटे अवकाश नथी ए खरी वात छे. तथापि आवा गन्थो उत्तम काच्योमां केवा ग्रुण केवी रीते स्वभावथीज आवी जाय छे ते प्रकट करे छे. अने उत्तम कविओने पोतानी कृतिओनी सारासारता समजवा समजाववा माटे सार्र सामर्थ्यवान साथन छे.

आपना ग्रन्थनो हुं सर्व प्रकारे विजय इच्छुं छुं।

ता. १५-१-९. वीरमगाम स्टेशन.

१९ जामनगर निवासी विद्वद्वर्य महाशय, शास्त्रीजी हाथीभाई लखे छे.

श्रीभरताचार्यप्रणीतं नाट्यशास्त्रं क्वीनां पद्धतिदर्शकस्य, नाट्य-काराणामुत्तमशिक्षकस्य, साहित्योपासकसहदयानां काव्यरसास्वादन रुच्युत्पादकस्य प्रयोजनं प्रसाधयन्मनुष्याणां यावद् व्यवहारोपदेशकमिति नात्र मतद्वेतम्। तादृशस्यातिमहतः शास्त्रस्य संस्कृतभाषोपनिवद्धतयाऽद्या-विष तत् संस्कृतज्ञपुरुपेरव यथाकथंचिदुपात्तठाभमासीत्। इदानीं वांका-नेरपुरिनवासिशुक्कावटाङ्कनयुरामकविवयेस्तत एव वहून् विषयानुद्धृत्य रसतरंद्गिण्यादितश्चोदाहरणादिकमुपादाय रमणीयं निवन्धनं गूर्जरभा-पायामुपिनवद्धं येन गूर्जरभाषासाहित्येऽमृत्य सम्पदुनमेपो जातः। यद्यपि गीर्वाणिगरो गूर्जरगिव सङ्क्रमणे हस्त्रदीर्घव्यत्यस्यशपसाद्वैताद्यशुद्धिलेशाः किचत्किचिदपरित्यक्तवसतयस्तथापि प्रूफशोधकस्य सावधानत्विवरह नि-वन्धनमिदं स्यादिति कलयामि। सर्वथा कविराजस्यायं प्रयत्नो गूर्जरभा-पायाः सोभाग्यवर्धक इति शिवम्॥ श्री भरताचार्यप्रणीत नाटचशास्त्र ए कविओने सारा नेतानुं, नाटच प्रयोगकारोने उत्तम शिक्षकनुं अने साहित्यना उपासक सहृदय जनोने काञ्य रसास्त्रादनी योग्य अभिकृषि उत्पन्न करी देवानुं प्रयोजन सारनार होवानी साथे मनुष्य मात्रने सर्व प्रकारनां ज्यवहारज्ञाननुं उपदेशक छे. आवी महत्तावाळुं शास्त्र संस्कृत भाषा निवद्ध होवाथी अद्यापि मात्र संस्कृत ह्र पुरुषे। ज तेनो लाभ यथाकथंचित् लेई शकता. हालमां वांकानेरिनवासी किन नथुराम मुंदरजीए नाटचशास्त्रनुं गूजराती भाषान्तर करीने छपाच्युं छे, तेथी गूजराती भाषाना साहित्यमां एक अमूल्य उमेरो थयो छे. मूल संस्कृत उपरथी लीधेला विषयने गूजराती भाषानुं रूप आपतां केटलेक स्थले हृस्व दीर्घ श प, स नी एकता आदि अशुष्टि दोपो रहेवा पाम्या छे, पण ते कोई साक्षरद्वारा पूफ शोधवानुं नहि वनवानुं परिणाम जणाय छे. सर्वथा कविराजनो आ श्रम गूजराती भाषानो सौभाग्यजनक छे.

२० सुप्रसिद्ध मोरवीनिवासी महामहोपाध्याय शीव्र किव शास्त्रीजी शंकरलाल माहेश्वर भट्ट लखे छे.

> नाट्यशास्त्रमवलोकितं मया, शुद्धगुर्जरगिरा विनिर्मितम्;। सत्कविप्रवरकीर्तिशालिना, शुक्कवर्य नयुराम शर्मणा ॥ द्रश्यकाव्यरचनाविनिर्णयः श्रीमतो भगवतो महासुनेः। उत्तमं भरतशमणी मतं, शर्मदं समनुस्रत्य निर्मितः ॥ इद्मद्य नाट्यशास्त्रं, भरतमुनेर्मतमनुत्तमं मनसाः आश्रित्य गुर्जरागेरा, रचितं शुक्केन सुन्दरं सरलम् ॥ अयमीहशः प्रवन्धः, प्रथमः सर्वोपकारकारीतिः हृष्टेव तं विपश्चित्प्रवरा आनन्दसागरे मग्नाः ॥ तत्कृतिकर्त्रे कविगणमणये नथुरामशर्मणे नितराम्; दास्यन्ति धन्यवादं, साशीर्वादोक्तियुक्तमिति मन्ये ॥ यस्मिन्नभिनयविधयश्चतुर्विधा वर्णिताः सविस्तारम, सर्वे रसाश्च सरसं सोदाहरणाः सुविस्ताराहिखिताः ॥ यद्यच नाटकानामुपयोगि प्रस्तुतं सुवस्तु मुदा; तत्तच्चवर्णितं सद्भावाद्यं तेन सत्कविना ॥ द्ईं द्ईं तदहं, परमं परितोपमासोऽस्मि; प्राप्तोतु सुप्रमारं, सत्कविकीर्त्या समंहि सर्वत्र ॥

नाट्य प्रवन्ध मुक्ता हारोऽयं हर्षदो भूयात्; श्रीशैलराजतनयाहृदयाधीशप्रसादतः सततम् ॥ श्रित शंकरलाल शर्मणः परमेशं प्रति चन्द्रशेखरम् सततं परमार्थनाऽस्ति मे, परमाहेशमहेशजन्मनः

"कीर्तिशाळी कविवर्य नधुराम सुन्दरजी शुक्ते शुद्ध गुजराती भापामां वनावेछुं नाट्यशास्त्र " में जोयुं, तेओए श्रीमान् समर्थ मुनि भरतना कल्याणकारी मतने अनुसरी द्रश्यकाव्यरचनाना निर्णयनुं निर्माण कर्यु छे, भरतमुनिना सर्वोत्कृष्ट मतनो आश्रय छई शुक्त नधुरामे गूजराती भापामां छखेछुं नाट्यशास्त्र सुन्दर अने सरछ छे, तेओनो आ प्रवंध पहेछ- वहेछोज छे अने तमामनो उपकारक छे एम जोइ विद्वज्जनो आनंदसागरमां निमग्न थया छे, अने उक्त कृतिना कर्ता कविगणमां मणिरुप शुक्त नथुराम सुन्दरजीने आशीर्वादपूर्वक धन्य-वाद आपे छे, कविराजे नाट्यशास्त्रमां चार प्रकारना अभिनयो सविस्तार वर्णव्या छे अने तमाम रसो उदाहरणपूर्वक विस्तारथी रसिक शब्दोमां छखेछा छे; तेमज जे जे नाटकोनां उपयोगी प्रस्तुत वस्तु गणाय छे ते सर्व सद्भावथी प्रशंसापात्र नीवडे एवी रीते वर्णवेछ छे के जेना पर द्रष्टिपात करी करीने हुं परम संतुष्ट थयो छुं अने एवो आशीर्वाद आपुं छुं के कवि नथुरामनी कीर्तिनी साथे तेमनी उक्त कृतिनो एण सर्वत्र प्रचार थाओ। श्री पार्वतीप्राणेश शंकरनी कृपाथी आ नाट्य प्रवंधरुपी मुक्ताहार हमेशां हर्षदाता वनो एवी परमेश्वर चन्द्रशेखर (शिव) प्रत्ये म्हारी (माहेश्वरना पुत्र गंकरलाछनी) निरंतर प्रार्थना छे.

२१. महामहोपाध्याय शीघ्रकवि शंकरलाल माहेश्वरना परीक्षकपणा नीचे उत्तीर्ण थएल पद्शास्त्रसंपन्न अत्रेनी वेदपाटशालाना शास्त्रीजी चतुर्श्वज शीवशंकर कविराजना काव्य-शास्त्रनुं अवलोकन करी नीचे प्रमाणे कविराजनो विजय इच्छे छे.

श्रीहरि:

यो नित्यं विदतां मुदं हृदि दधत् साहित्यपाथोनिधिम् बुद्धा मन्दरकन्दरिप्रवलवत्योन्मध्यमन्थोद्भवाम् । काव्यं दिव्यसुधां सुधातुरतरे पृथ्वीतले पाययन् स श्रीशत्रशुराम सुन्दरजयस्तात्तज्ञयस्सर्वदा ॥

जेओ हमेशां मंटरपर्वतनी माफक मंथन करवामां प्रवल एवी बुद्धिथी साहित्यसमुद्रनुं मंथन करी सुधाना पानमां आतुर एवा, पृथ्वीतलमां साहित्यविट् पुरुपोने मंथन करतां एत्मन्न थएल कान्यरुप दिन्यसुधानुं पान करावी तेओना हृदयने हपिन करी, श्लीरसागरनुं मंथन करी देवोने अमृतपान करावनार लक्ष्मीपति विष्णुभगवाननुं अनुकरण करे छे, एवा श्रीमान् नथुराम सुंदरजी कविराजनो सर्वदा विजय वर्ती. १.

सेदानीं च चरीकरीति सुमनस्स्वान्तं मुदा मिजतम् प्राग्भारं रसरीतिवृत्तिगुणलक्ष्मालंकृतीनां दिशन् । स्वे कार्ये सुमहत् प्रवन्धउररीकृत्यात्र साहित्यवित् ब्रह्मानन्नसुराम सुन्दरजयस्तात्तज्जयस्सर्वदा ॥

मवन्धगळित मकृष्ट वन्धवाळा ब्रह्माए पोते रवेळा कार्यात्मक आ जगतमां रस (प्रेम), रीति (धर्म), दृत्ति (जीवन), गुण (मनुष्यादिना सत्त्वादि लक्षण) अने अलंकृति (शोभा) ए जेम वताच्या छे, तेम आ कविराज नथुरामभाइ पण पोते रवेळा आ काच्यगास्त्रप मवन्धमां गृंगारादि रस, वैदभ्यादि तथा आर्भेटचादि आर्थिक रीतिओ मधु-रादि त्रण दृत्तिओ, ओजस आदि गुणो, आर्या वगेरे लक्षणो (दृत्तो), छेकानुमासादि तथा उपमादि शब्दालंकार अने अर्थालंकारोने वतावी सहृदयोनां हृदयने अत्यंत आनंदमां निमन्न करे छे. एवा ब्रह्मानुं अनुकरण करनारा कविराज नथुराम सुंदरजीनो सर्वदा विजय थाओ. २

साहित्यामरिनम्नगां शशिकलां मूर्प्वाद्धत्युत्तमाम् शक्तिं यः प्रतिभां नियच्छतिगलेऽसत्काव्यतादुर्विषम् । साहित्यारचने च यस्य तनुते साहाय्यतां पार्वती सेशानन्नथुराम सुन्दरजयस्तात्तज्जयस्तर्वदा ॥

जेओ साहित्यरूप गंगाजी अने उत्तम प्रतिभा शक्तिरूप चन्द्रकलाने मस्तक (मगज) मां धारण करो असत्काव्यरूप गरलने कंटमांज राखो साहित्यो रचवामां भगवती पार्वती-जोनी सहायता मेळवी गंगाधारी चन्द्रमीलि कालकंट, पार्वतीश एवा भगवान शंकरनुं अनु-करण करे है तेनो सर्वदा जय थाओ. ३.

> हंहो काव्यकलापकोविदजना मन्येऽत्र शास्त्रे मुदां युष्माकं करगीकृते रिसकहन्नालं हि मातुं भवेत्। यिसन् युर्जरवागभिज्ञजनताऽपि द्राक् पिपासावती साहित्यं सहदेकपेयसुरसं पातुं मुदा पारयेत्॥

हे कान्यज्ञ पुरुषो ? हुं मानुं छुं जे किवराज नथुरामभाइए रचेछुं आ कान्यज्ञास्त्र आपना हस्तमां आवशे त्यारे आपनुं रिसक हृदय आनंदनो समास करवाने पुरतुं नहींज थाय; (कारण के) जे आ कान्यजास्त्रमां गुजराती भाषानुं ज्ञान वरावनाग साहित्यरसनुं पान करवाने आतुर होय तेओ पण आ ज्ञास्त्रमां सहृदय पुरुषोधी पीवा योग्य साहित्यरसने एकदम हपैसहित पी शके.

सन्त्यस्यां भुवि भूरयः पृथगभित्रायाङ्किताः क्केशदाः प्रायः संस्कृतवागभिज्ञसुगमास्ताहित्यवाचोविदाम् ।

शास्त्रेऽस्मिस्तु मतं यथा न विदुषां पूर्वेर्मतेंभिन्नता सर्वेर्गम्यमरं प्रमोदजनकेऽपूर्वे तथा दर्शितम् ॥

आ पृथ्वीमां विवुध पुरुषोए रचेला साहित्यविषयक शास्त्रो घणा छे, पण तेमांना घणाखरा तो संस्कृत ज्ञानवाळा पुरुषोथी समजी शकाय तेवा छे. कारणके तेओमां दरेकना परस्पर जुदा जुदा मतो होवाथी वीजाओने तो होश आपनारा छे पण आ शास्त्र तो हर्ष आपनारं अने अपूर्व छे. तेमां एवो मत लीधो छे के प्राचीनोना मतथी विरुद्ध न पडे अने सौ कोइ जाणी शके.

२२. किवराजे पोताना अन्नदाता भावनगर नरेश महाराजाश्री भावसिंहजी वहादुरनां कुंवरीश्री मनहरकुंवरवाना लग्नमहोत्सव प्रसंगे हिन्दी भाषामां घणीज उमदा किवताओ वनावी "मनहरलग्नमहोत्सव" नामधी प्रसिद्ध करेल छे तेना संवंधमां मेवाडमां "वडी सादडी" नामनी झाला नरेशनी एक उत्तम रियासत छे. त्यांना पंडितजी सीतारामजी ता. ११-५-१९१३ ना पत्रमां लखे छे.

श्रीयुत कविराजाजीश्री नथ्थूरामजी सुन्दरजी शुक्क सेवामें. महाज्ञय,

में चिरकालसे आपके सद्ग्रनोंकों श्रवण करता हूं, और केही दफा पत्र प्रेषितका भी विचार हुवा, परंतुं नहीं लिख सका, आपने जो कृपाए मनहर लग्न महोत्सव काव्यकी ५ पुस्तकें पंडित वनवारीलालजीकी मार्फत प्रेषित की थी उनकी प्राप्ति सहर्ष स्वीकार करके निवेदन है कि आपने ईस काव्य निर्माणमें अतुल्य परिश्रम किया है, और ईसके अव-लोकनसें प्राचीन वा अर्वाचीन काव्ययन्थोमें आपकी पूर्ण विद्वत्ता वा चातुर्यता प्रकाशित होती है. मैं विशेष क्या प्रशंसा लिखूं आपने छोटीसी पुस्तकमें लिलत कविताके साथ सागरकों गागरमें वन्द कर दिया है.

मेंने सुना है के आप आजकल झालावंशका इतिहासमें कटिवद है ये वहें हर्षकी वात है के श्रीमान राजराना साहेव वांकानेर ईसके निर्माणमें आपकों सर्व प्रकारकी सहायता प्रदान कर रहे हैं, अपने पूर्वजो-के इतिहासकों भविष्यवत् संनानोंके लिये उपदेश वा चरितार्थ निर्माण करानेवाले वांकानेर नरेन्द्र सरीखे राजा आजकलके समयमें दुर्लभ ही नहीं किन्तु दुष्प्राप्य है. आपने ईस जगह इतिहासका नमूना भेजा था उसको मेंने भठी प्रकार सुना है. उसकी रचना वा रूपक वा अलंङ्कार वा उपक्रम वा उपसंहार सर्व सराहनीय है. ईस जगहसें सम्मित भी आपको पहोंच गई है. परन्तु फिर भी में आपको निवेदन करता हुं के इतिहासमें दो वातोंका अवश्यमेव उल्लेख होना चाहीये. एक तो ये के जो नरेन्द्रोनें शूर-वीरतासे प्रभावशाली कार्य किये है के जिनसें राज्यकी उन्नति हुइ है, द्वितीय जिन नरेन्द्रोंने कुसंगवश अथवा क्रूरता अथवा मनोराज्य कार्य किये है और उनसे राज्यमें क्षति हुइ है उनका उल्लेख अवश्य होना चाहिये. जिनसें वर्तमान वा भविष्यत् सन्तानोंकों शिक्षा प्राप्त हो सके, विशेष निवेदन क्या करं. आप स्वयं बुद्धिमान है, और इतिहास संबंधी मेरे योग्य कार्य हो तो लिखियेगा. में सुमित अनुसार सहायता दूंगा.

२३ एवीज रीते महाराजा राजसाहेवश्री अमरसिंहजी वहादुरनां क्वंवरीश्री तस्त-कुंवरबाना लग्नमहोत्सव प्रसंगे कविराजे तेवीज उमदा कविता बनावी "तस्तकुंवरी विवाह वर्णन काट्य" नामनुं पुस्तक छपायेछं छे जेना अभिप्रायमां महिअर स्टेटना राजकवि अने सरिस्तेदार नाजिर शारदाप्रसाद रसेन्द्र लखे छे.

सिद्धि श्री ५ राजमान राजकिन नयुराम सुन्दरजी ग्रुक्क. प्रणाम. आपकी "तष्तकुँवरीनिवाहवर्णनकाव्य " श्रीमान् महाराजासाहेबबहा- दुरके निकट पहुंची उसीवक्त १ प्रति मुझे पंडित बनवारीलालिमिश्रको प्रेजंट हुइ. वाह ! क्या विद्या काव्य है ? दिरियाको आपने कूजेमें बन्द किया, क्यों न हो, राजकिन तो ठहरे ? पंडितजी जैसी आपकी तारीफ दरवारमें किया करते है उससे ज्यादः पाया. में आपके दरशनको अभिलाषा करता हूं मगर राजकाजसें छुटी कहां ? वदा है तो कभी मिल्लंगा.

२४. कविराजे " विवेकविजय " नामे वेदान्तनो ग्रन्थ रचेळो छे तेना अभिप्रायमां मोरबोनिवासी महामहोध्याय शीव्रकवि शंकरळाळ माहेश्वर मट्ट स्वहस्ते छखे छे जेः—

आपे रा. रा. चकुभटजीना पुत्र रिवभाई साथे " विवेकविजयकाव्य " मने मोफ-स्रार्व्यु ते पहोंच्युं छे, तथी हुं आपनी घणो उपकार मानुं छु, मने ताव आवतो हतो तथी तरत पोंच स्रखाणी नथी तो क्षमा करसो. काव्य घणुंज उत्तम छे, जो के हनी आदिथी अंत- सुधी वंचाणुं नयी, पण जेटलुं वंचाणुं हे तेटलायी तेनी उत्तमता जणाई हे, इश्वरकृपायी, तमे चिरंजीवी रहो अने नवां नवां काच्यो लखी लोकोपकार करता रहो. तथाऽस्तु.

२५. कविराजनी साहित्यसेवा सबंधी तथा तेओश्रीए छखेछ " भावविरह " अने नाटकोना सबंधमां राणावावथी श्रीयुत मास्तर जगजीवन काछीदास छखे छे जेः—

आपनो कृपापत्र अने विरहवावनी वन्ने पहोंच्यां, कृपापत्र वांचतां आपनी गुर्जरगिरानी अविरत सेवाना समाचार जाणतां अने साहित्यनी अहोनिश उपासनाना वर्तमान
विलोकतां जे आनंद थयो छे ते अवण्य छे. साहित्यपरिपदो राजकोट के गमे त्यां गमे तेटली
भराय ने लांवां लांवां भाषणो गमे तेटलां भलेने थाय ! पण वगर वोल्ये ने वगर डोल कर्ये
मात्र एकान्तवास सेवी पोतानी कलम चलाव्ये जनार पोतानी स्वाभाविक काव्यमतिभाशी
गिराने शोभावनार ने तेम छतां पोते जाणे साहित्यनी कांइज सेवा वजावतो नथी एम मीन
रहेनार कि नथुराम ते गुजराती भाषामां एकज छे, ने तेनो प्रयास ते आवी अनेक परिषदो
करतां पण उच्चतर छे एम किवनी कोइ काळे पण गुजरात वृज करशेज एम अमार्ह मानवुं छे.
विरहवावनी वांचतां नेत्रमांथी अस्खिलत अशुप्रवाह चाल्यो छे ए आपनी हृदयंगमवाणी ने
सहृदयतानो प्रत्यक्ष पूरावो छे. वांचतां वांचतां सात आट ठेकाणे गद्गद् वनी नयनो लोवानो ने पुस्तक वंथ करी शान्त थई फरी पाछुं वांचवानो मसंग लेवो पड्यो छे एज ए वावनीनी विलहारी छे. आवां करुणरसनां जे जे काव्यो आपे प्रगट करेलां छे ते पण संग्रहित
राख्यां हशे अथवा राखशो ए मारी प्रार्थना छे.

आपनां केटलांक नाटको वांचतां मन मुग्ध थएछं छे ने वने तो बीजां पण वांचवाने अभिलापा रहे छे, पण तेम थवुं अशक्य होवाथी दृत्तिने विराम आप्या विना रस्तो नथी.

२६. सौराष्ट्रनी द्वितीय साहित्यपरिषद्ना प्रमुख साक्षरवर्थ श्रीयुत केशवलाल हर्षेद-राय ध्रुव लखे छे जे:—

" स्नेहश्च निमित्तसव्यपेक्षश्चोतिविप्रतिषिद्धमेतत्. "

रसस्वरुप भाई श्रीनथुरामभाई स्थळ वांकानेर

महाकवि भवभृतिना उपर आपेला महावावयना सत्यनो साक्षात्कार तमारा समागममां में अनुभव्यो सहवासजन्य मीति विदित छै स्वार्थना अवयथी जामतो स्नेह पण जाणवामां छै पक्षपातथी मकटती मणियताना द्रष्टांत पण शोधवा जवां पढतां नथी, पण निर्निर्मित सौहार्दनो आविर्भाव विरल छै मेमनी खातर मेमनो आस्वाद रसिक हृदय वगर कोण अन्य करावे ?

तमारी छए कृतिओ आदरपूर्वेक स्वीकारुं छुं. सहज द्रष्टिपात तो अनिवार्य कुतृहलधी एकेएकमां करी गयो छुं. परन्तु लहेजतथी चूंटडे चूंटडे रस तो अवकाशे पीश.

२७. वहोदराथी " केळवणी " मासिकना मेनेजर श्रीयुत छोटालाल नरमेराममाई स्रुते छे जे—

कविराज!

हमणां महिकांटा गेझेटमां आपनुं " किल्युगशतक " वांचीने मने अति आनंद थयों छे. गुजराती भाषामां हिन्दीभाषा तुल्य किवतारचना हुं ए कांवतामांज जोडं हुं. शब्द-माधुर्य, प्रसाद, जुस्सो, अने किवताना बीजा उत्तम गुणोथी आ किवता आकर्षक लागे छे. अथवा विशेष शुं कहुं श्रीआपनी आ किवतावडे आपनी सर्वोत्तम किवत्वमिक्त जोइ हुं बहुज प्रसम्भ थयों हुं, अने मारा मननो ते उद्गार आपने जणाव्या सिवाय मारा मनने निरांत न बळवाथी आ पत्र लख्यों छे. केटलीक वस्तुओ एटली झुंदर होय छे के ते बळात्कारे बीजाना माथाने हालवानी फरज पाडे, छे. आ किवता ते पैकीनी होवाथी मारी प्रसन्नता आपने व्यक्त करं हुं.

कविराजे भावनगरमां राजकिव तरीके नियत थया पहेलां पंदर वर्ष पर्यन्त "श्रीवि-द्यावर्धक नाटकमंडली" नी मालिकी भोगवी हती अने तेमां क्रमुदचन्द्रथी आरंभी कवीरिव-जय अने भक्तकुदुम्य पर्यन्त लगभग अग्यार नाटको पोताने हाथे लखी भजवाच्यां हतां अने तमाम जनसमाजमां प्रशंसापात्र थयां, विद्वान तथा किवलोकोने ए नाटको वगर टीकोटे बता-ववा किवराजे प्रथमधीज प्रथा राखेली हती, जेथी घणा साक्षरोए तेनो लाभ लीधो हतो। अने ए सबंधे पोताना अभिप्रायो पण जाहेर कर्या हता।

२८. विजापुरनिवासी माधवकवि लखे छेः—

कवित्त.

अनीति उखारवेको सुनीति सुधारवेको, व्यभिचार पारवेको टारवेको तंत्र है ॥ मुदित महाजनकुं सुजन समाजनकुं, राजनकुं राजनीति पढिवेको मंत्र है ॥ माधव प्रसिद्ध सिद्ध सुंदर सपूत आज, हाल कलिकालमें उदारताको अंत्र हैं ॥ कवि नयुराम नाट्यमंडली तिहारी सो तो, जगतविदित जस पाइवेको जंत्र है ॥ आर्यधर्मसागरकी सेतु है पवित्र केंधों, पुन्यकी प्रकाशक विनाशक बिरोधकी ॥ सुंदर सपूत तेरे जसको पताका केंधों, धर्मकी धरीता है सरिता है सुत्रोधकी ॥ माधव भनंत ग्रनवंत यों अनंत कहें, केंधों है कुठारी कलिकाल तह कोंधकी ॥ कवि नथुराम नाट्यमंडली तिहारी सो तो, मेरे जानिवेमें पाठशाला है प्रवोधकी ॥

२९. कविराज किसनदानजी लखे छै:-

गायनकलाको धाम नाम पर्यो नाटकही, राजा अरु रंक देख हियो हरषावे है ॥ पूरन प्रतापी शूरवीर निज वेस पुनि, सती शीलताको धर्म नीत सु निभावे है।। कहे किसनेस भक्तजनको रहावे भाव, मोद मन पावे उक्त उमदा उपावे है, नथुकवि गावे सो तो पंडित पढावे पुत्र, शोभा सरसावे रसरीत सु रखावे है॥ सुंदर सुहात अंग सुंदर मतिको श्रेष्ट, सुन्दरके नन्दकी सु कीरत सुनी सही॥ मोद मन धार वांनी आनन उचार आप, देखन कवीरको चरित्र मुखसों कही ॥ कहे किसनेस मर्खलोग स्वर्गलोग देख्यो, देखत कवीन्द्र रीत आदिकी सवी सही॥ करयो शुभ काम नयुराम इय जामहित, देखे विन दाम धाम नाटक नवीनही ॥

३०. मीर्जापुर परगणे कोरीपात पोष्ट सीखड मोजे मवईयाना मुनिराम उर्फे मुनीय चोबाजी लखे है.

पिंगल पुरान काव्यकोश अलंकार ग्रन्थ, पढे हैं अनेक शास्त्र काहूतें न दिन हैं ॥ संग ही समझ्या परिपूर्न किर देत छन्द, सारदाकी कुपातें उदय मानों रिन हैं ॥ सुन्दर साहित्य श्लेष मित्रामित्र भाव राखि, भाषि कहे मुक्तिराम दूजो कोन फिन हैं विद्याको निधान किन्छलमें तो एसो नांहि, जैसो महिमंडलमें नाथूराम किन हैं ॥

वर्नत सुजस चारु दक्षता निहारि अस. भौनमें हमेशां वेटो धनद धनी रहे ॥ कहत मुनीश धर्मशीलको निधान तैसो, सुर द्विज धेनुमँह भगति सनी रहे ॥ हातिमसी हिम्मत सखावत शहानशाहि, प्रवल प्रताप दया दिलमें घनी रहे ॥ नाथूराम कवि महिमंडलमें मंडलीसु, रावरी अनोखी कला साहिची वनी रहे ॥

३१. कानोडना रावजीसाहेव श्रीईन्द्रसिंहनी वहादुरना , अत्यंत मानीता अने रसिक-विहारीना शिष्य श्रीयुत नवलसिंहनी राव लखे छै.

कवित्त

केंधों चित्त पावे मुद चाहक चकोरें चित्त, केंधों शुभ चाही मोद लीयत ललाम है ॥ केंधों तम घोर जोर मिटि सकुचावे कंज, केंधों नसे दुर्जन विवादी मित वाम है ॥ केंधों जलसागरको उमिंग उफांन लेत, सोहत प्रसन्न केंधों भाव निज इयाम है ॥ कहत नवल कल सोरहसों काव्यकला, रेनपति कैथों कैथों कवि नथुराम है॥

उक्त कवीश्वर पोताना पत्रनो कविराज तरफथी कामकाजना अत्यंत दवाणने लई प्रत्युत्तर निह मळतां स्तेहनी अभिलाषापूर्वक उपालंभ आपे छे जेः—

> वामनकी लकुटी विराटमें विसारी नहीं, सोऊ यश आज तिहुँ लोकमें समावे ना ॥ त्योंही यदुनाथने सुदामा द्विज सख्यताई, पूरम निवाही ताको कोउ पार पावे ना ॥ नवल भनत त्योंही किव नयुराम निज, उर अवरेखो यामें रित झूंठ आवे ना ॥ पूरन क्रपालुताको हित प्रगटाय फेर, केवल विसर जैवो उचित कहावे ना ॥

३२. मथाणीआनिवासी श्रीयुत वारहट जैतदानजी जेवा कवीश्वरो कविराजना समा-गमनुं सुख मेळववा केटला इन्तेजार छे ते नीचेना कवित्तथी स्पष्ट समजाय तेम छे.

> आयो पत्र रावरो चढायो तत्र सीस तामें, सुवरन लिखायो त्युंही सुवरन लिखायो है ॥ पढत पढत जाको बढत उछाह वड, मढत सनेह चित्त महामोद छायो है ॥ प्रिय अर्पनाके कृत पानि लेख दोहा प्राप्य, झर झर हुमें सुधाझर सरसायो है ॥ औसो अभिराम नयुराम हित हेर हेर, अैवो वांकानेर वेर वेर मन भायो है ॥

३३. सने १९१७ ना एपील गासमां हुं तथा मारा गुरुवर्य लींवही दीर्घायु युवराज श्रीदिग्विजयसिंहजी साहेववहादुरना जन्ममहोत्सव प्रसंगे गयेला त्यां झालरापाटणना श्रीयुत् राजकि युरारिटानजीनुं मिलन थयुं, ए वखते श्रीझालावंशवारिधिनुं एक पुस्तक के जे प्रेस-मांधी नमृना तरीके आवेल हतुं ते एक्त किवराजे प्रेमपुरःसर वांची निम्नलिखित अभिप्राय जाहेर कर्यो.

पिंगल पुरान काव्यकोश अलंकार ग्रन्थ, पढे हैं अनेक शास्त्र काहूतें न दिब हैं॥ संग ही समझ्या परिपूर्न किर देत छन्द, सारदाकी कृपातें उदय मानों रिव है॥ सुन्दर साहित्य श्लेष मित्रामित्र भाव रास्ति, भाषि कहे मुक्तिराम दूजो कोन फिव है विद्याको निधान कविकुलमें तो एसो नांहि, जैसो महिमंडलमें नाथूराम किव है॥

वर्नत सुजस चारु दक्षता निहारि अस.
भौनमें हमेशां वेटो धनद धनी रहे ॥
कहत मुनीश धर्मशीलको निधान तैसो,
सुर द्विज धेनुमँह भगति सनी रहे ॥
हातिमसी हिम्मत सखावत शहानशाहि,
प्रबल प्रताप दया दिलमें घनी रहे ॥
नाथूराम कि महिमंडलमें मंडलीसु,
रावरी अनोखी कला साहिबी बनी रहे ॥

३१. कानोडना रावजीसाहेव श्रीईन्द्रसिंहजी वहादुरना , अत्यंत मानीता अने रसिक-विहारीना शिष्य श्रीयुत नवलसिंहजी राव लखे छे.

कवित्त

कैधों चित्त पावे मुद चाहक चकोरें चित्त, कैधों शुभ चाही मोद लीयत ललाम है ॥ कैधों तम घोर जोर मिटि सकुचावे कंज, कैधों नसे दुर्जन विवादी मित वाम है ॥ कैधों जलसागरको उमिंग उफांन लेत, सोहत प्रसन्न कैधों भाव निज इयाम है ॥ कहत नवल कल सोरहसों काव्यकला, रेनपति कैथों कैथों किन नथुराम है ॥

उक्त कवीश्वर पोताना पत्रनो कविराज तरफथी कामकाजना अत्यंत दवाणने लई मत्युत्तर निह मळतां स्तेहनी अभिलापापूर्वक उपालंभ आपे छे जे:—

> वामनकी लकुटी विराटमें विसारी नहीं, सोऊ यहा आज तिहुँ लोकमें समावे ना ॥ त्योंही यदुनाथने सुदामा द्विज सख्यताई, पूरम निवाही ताको कोउ पार पावे ना ॥ नवल भनत त्योंही किव नयुराम निज, उर अवरेखो यामें रित झूंठ आवे ना ॥ पूरन कपालुताको हित प्रगटाय फेर, केवल विसर जैवो उचित कहावे ना ॥

३२. मथाणीआनिवासी श्रीयुत वारहट जैतदानजी जेवा कवीश्वरो कविराजना समा-गमनुं छुख मेळववा केटला इन्तेजार छे ते नीचेना कवित्तथी स्पष्ट समजाय तेम छे.

> आयो पत्र रावरो चढायो तत्र सीस तामें, सुवरन लिखायो त्युंही सुवरन लिखायो है ॥ पढत पढत जाको घढत उछाह वड, मढत सनेह चित्त महामोद छायो है ॥ प्रिय अर्पनाके कृत पानि लेख दोहा प्राप्य, झर झर हुमें सुधाझर सरसायो है ॥ असो अभिरास नयुराम हित हेर हेर, अवो वांकानेर वेर बर सन भायो है ॥

३३० सने १९१७ ना एमील मासमां हुं तथा मारा गुरुवर्य लींवही दीर्घायु युवराज श्रीदिग्विजयसिंहजी साहेववहादुरना जन्ममहोत्सव प्रसंगे गयेला त्यां झालरापाटणना श्रीयुत् राजकि मुरारिदानजीनुं मिलन थयुं, ए वखते श्रीझालावंशवारिधिनुं एक पुस्तक के जे प्रेस-मांथी नम्ना तरीके आवेल हतुं ते एक किवराजे प्रेमपुरःसर वांची निम्नलिखित अभिमाय जाहेर कर्यो.

कवित्त.

सत्ता है अथाह जामें राजत अनेक रतन, जगके सुकवि मित्त आशयको जानेंगे॥ शुद्ध कविधमें स्वामीधर्मको निवाह्यो सत्य, अनंत सुवीरज् उछाह उर आनेंगे॥ कृत्य इतिहासकके रत्नसो कियो है कहुं, मिन मखवाने भूप मोद वहु मानेंगे॥ वाह कवि नायुराम झाळावंशवारिधिसो, बारिधि बनायो जाकों विबुध बखानेंगे॥

ग्रन्थना लेखक सवंधी आटलो परिचय कराव्या वाद लेख सवंधी उल्लेख करवा लेखिनीने आगळ चलाववी अनुचित निह जणाय.

श्रीझालावंशवारिधि.

ना

प्रथम तरंगमां—आदि नारायणथी आरंभी वांकानेरना विद्यमान राजराणा अमरिसंहजी सूधीनो संक्षिप्त इतिहास काव्यमां रचेलो छे; तेमां दोहा, सोरठा, रोळा, छप्प्य, हरिगीत, पद्धरी तथा मोतीदाम वगेरे मात्रामेळ; अने सम्धरा तथा तोटक वगेरे अक्षरमेळ छन्दो
के जे आजकाल सर्वत्र पचलित छे तेज दाखल कराएला छे, शब्दरचनामां ओज, प्रासाद,
अने माधुर्य ए त्रणे काव्यना गुणो स्थळे स्थळे जणाया वगर रहेता नथी, अक्षर सगाईने
बनतांसुथी अलग करवामां आवी नथी, अलंकारोने पण कोई कोई स्थळे अवकाश
आपवामां आवेलो छे. दाखला तरीके:—

तोटक.

वर वंशज श्रीहरपालतणा, नृपराय सही रणघाव घणा; पृथिवीपर चक्कर खाइ पड्या, जवरा शबयुत्थ विषे न जड्या.

एज पृष्टमां।
नवसंगर ए स्थलमां निरखी, पृथिवीपति लंगरथी परखी;
गुरु आगळ शिष्य समस्त कहे, रविने गजवी यम राहु यहे॥
हन्द १०२.

विवेकथी वेण वदे नृपराय, खरा रजपूतर्थी केम खसाय;

पृ. २१. छ. ११३.

सोरठो.

हाथी ऊपर हाथ, पडतां राय प्रतापीनो; शाहतणा दिल साथ, दिल्ही आखी डगमगी.

पृ. २२. छ. ११६.

सोरठा.

तेवामां धरी टेक, शत्रु पुरातन सज थया; आवी चढ्या अनेक, हाला देदा हळवदे. १२२. जशनामी झलराण, सुभट संग सन्मुख गया; घाटीले घमताण, उभय पक्षमां उद्भव्युं. १२३ दिल्हीने दरवार, सबळ हाथ स्थापी गया; हळवदनाथ हजार, वर्षे पण विसराय नहि. १२९

झालाकुळमां वीरवर हरपालदेवजीना वंशज रायसिंहजी पछी वेना जेवाज वहादुर दांकानेरना मूळ पुरुप राज सुरतानसिंहजी थएला हता अने तेओए वालपणथीज सहज पराक्रम बतावी ते समयना जनसमाजने आश्चर्यचिकत वनावेलो हतो जेमकेः—

सोरठा.

शूरवीर सुरतान, जामनगर जइ पहोचीआ;
मुदथी आप्युं मान, लाखेणुं लाखाजीए. १७१
कचेरीमां जन कोइ, उचयों एवं एकदिन;
हणनारों को होय, निज कर नम्न कटारपर. १७२
विलयों जेनों वाप, शुं न करे सुरनान ए;
स्थिर रही हणीं थाप, कूदी नम्न कटारपर. १७३
छण्य.

भाणेजे भय छोडों, करी इति अति अनेरी; हरस्या हदविण जाम. हाम वालकनी हेरी; व्हाल धरी वरदान, जे समे जामे दीधुं; सुरताने ए समय, क्वटिल भ्रक्कटी करी दीधुं; परघर पेट भरी हजी, दिवस दोहिला गाळीए; मळे मदद देनार तो, गइ वसुंधरा वाळीए. १७४

सरल छन्दो दाखल करवानुं प्रयोजन पण एटलुंज छे के तेनो सहुकोइ लाभ लइ शके, भाषा साव हलकी वापरवामां आवी नथी; जेथी सामान्य ज्ञानवाला मनुष्योने कदाच केटलाएक शब्दो समजवा अघरा थइ पडशे, परन्तु ग्रन्थ साये शब्दकोष पण छापेलो होवाथी एज शब्दो विशेष ज्ञाननी प्राप्ति करावनारा थशे ए निःसंदेह छै.

वीजा तरंगमां—शब्दादि विषयोथी रहित अव्यक्त परब्रह्मथी ब्रह्मांडनी उत्पत्ति शिरीते थइ ए संक्षेपथी वर्णवी सत्य, द्वापर, त्रेता अने किल्युगनुं केटलुं प्रमाण छे; अने ए प्रमाणने देवना कालथी तथा देवना कालप्रमाणने ब्रह्मना कालथी केटलो तफावत छे ते जणावी पायकरूपने अंते हाल वाराहकरूप वर्ते छे ए सिन्ड कर्युं छे. आ विषय पौराणिक होवाथी खास मननपूर्वक वांचवालायक छे, अनादि अने अनंत परब्रह्मथी अनादि अने शान्त जगतनी उत्पत्ति वतावतां महत्तत्वथी उपजेलां सात्विकादि त्रिगुणात्मक अहंकारमांना तामस् अहंकारथी शब्दादि तन्मात्राओए जन्म लइ आकाश आदि पंचमहाभूतने जन्म आप्यो तेनुं उत्तम प्रकारे विवेचन करवामां आव्युं छे. अकर्ता ब्रह्म अद्वितीय छतां मोहने लइ सात्विकादि त्रिगुणरूपे कहो के ब्रह्मा—विष्णु अने महेशरूपे सृष्टिस्थिति अने प्रलयना कार्थमां योजाइ कर्ता जेवुं जणावा लाग्युं, तेमां पण ब्रह्माना एक दिवसमां केटली उथलपाथल थइ जाय छे ते वावत तो वहुज ध्यान खेंचनारी छे.

त्रीजा तरंगमां — ब्रह्मद्वारा पुरुप अने प्रकृतिथी प्राक्ट पामेला ब्रह्माए पृथ्वी आदि पंचमहाभूत तथा देवथी आरंभी स्थावर पर्यन्त स्वेदज आदि चार प्रकारनी सृष्टि उत्पन्न करी अने तेना संरक्षण अर्थ कृषिविद्या सिन्द कर्या वाद वर्णाश्रमधर्मने स्थाप्या, तेमज ब्राह्मण आदि वर्णने केवां कर्म करवाथी केवुं स्थान प्राप्त थाय छे वगेरे लोकोपयोगी वावतो वर्णवेली छे. आमां सत्य अने द्वापर पर्यन्त वनमां के समुद्र किनारे वीतरागीपणे आनंदपूर्वक भ्रमण करनारी अने अल्प आहार विहारथी महान तृप्ति माननारी प्रजानो चितार अने ते पछी त्रेता-युगनी श्रह्मआतथी सराग थएली प्रजानी दुर्दशा अने वासनानी दृष्टि लड ममत्वनी जबरी जालमां जकहातां नगर, किल्लाओ वगेरे बनावी संसारमुखने माटे वेटवी पडती विटंबनाओनुं उमदा विवेचन करवामां आव्युं छे अने ते ब्राह्मण आदि दरेक वर्णने कर्तव्यमां एक सारा शिक्षकनी गरज सारे तेम छे.

चोया तरंगमां - ब्रह्माना ९ मानसपुत्रोमां भृगुनुं प्रथमपट भृगुथी मुकंडनी उत्पत्ति,

मृकंडथी मनस्विनी नामनी नारी विषे मार्कंडेयनो उद्भव, पुरुपना सर्वागपरत्वे साम्रद्रिकर्नु वर्णन, सामुद्रिकपरथी जणाइ आवेळुं मार्केंडेयनुं अल्पायु, पितानी आज्ञाथी परम ब्रह्मचर्यने पाळी ब्राह्मणोने नमवानो नियम राखनारा मार्कडेयने सप्तर्षिना समागमधी मळेलो दीर्घायुनो आ-शीर्वाद, जे स्थळे सप्तर्षिओए व लमार्केडेय साथे मित्रता वांधी ए तीर्थस्थाननुं "वालसख्य" एवं नाम जाहेर थवं, एज स्थळे मृकंडऋषिए भगवान ब्रह्मानी मूर्तिनं स्थापन करवं तथा मा-क्षेंडेये उत्तम गुरु पासे वेदाध्ययन करबुं वगेरं वर्णवेछं छे. आ ग्रन्थ झालाकुळना यथास्थित वृत्तान्तने प्रसिद्धिमां लाववा लखाएल होवाधी तेमज तेना आदि पुरुष मार्केडेयनी उत्पत्ति स्वायंभ्रव मन्वंतरमां थएली होवाथी आदि नारायणथी आरंभी समग्र हकीकत लखवानुं योग्य जणातां कविराजे पुराणोनुं मधन करी माखण जेवी मुलायम, शुभ्र अने मनोरंजक वावतो उद्भुत करी वाचकवर्ग माटे जे उदारता वतावी छे ते कोइथी भुली शकाय तेवी नथी। कारणके म्होटां म्होटां पुराणो वांचवा जेटलो समय हालना प्रवृत्तिमय जीवनमां मली शकवो मुक्कील होवाथी अमुक मुद्रते आ एकज ग्रन्थ वांचवाथी अगणित विषयोनं ज्ञान कराववा तेओश्रीए जे अधाह श्रम उठावेलो छे ते खरेखर प्रशंसापात्र छे. मातापितानो वाळक प्रत्ये केवो विश्रद अने निःस्वार्थ पेप होय छे ते मार्कंडेयनुं चरित्र वांचवाथी माछम पडे तेम छे; वनमां निवास करनारा ऋषिम्रुनिओ केवा पवित्र मनना अने उदारचित्त होय छै ते मार्कडेय साथे थएली ऋषिओनी मित्रतानां वावयो वांचवाथी समजी शकाय तेम छै: जो मार्कडेये पितानी आज्ञाथी ब्राह्मणोने नमवानो नियम कायम राख्यो तो अल्पायु छतां दीर्घायु थवा ते समर्थ थयो. माटे " नम्युं ते प्रभुने गम्युं. " ए कहेवत जरापण खोटी नथी. नमवाथी कंइ नीचा वापना थड जवातुं नथी: उद्धताइ प्राणीमात्रने अधम गतिए पहोंचाडनारी छे. नम्रता ए वळहीनपणुं नहि, परन्तु दैवीगुण छे. ए मार्कडेयना चरित्रथी स्पष्ट रीते जाणी शकाय तेम छे: पुरुप केवां लक्षणोथी केवा नीवडे हे ते जाणवा माटे सर्वांगपरत्वे लखाएलुं पुरुपनुं साम्रुद्रिक अवश्य वांचवा योग्य है. वेदाध्ययन करवा जतां पहेलां नैष्ठिक ब्रह्मचर्य केवी रीते पाळबं ए विषय पण उत्तम वर्ण माटे केंड् ओछो उपयोगी नथी.

पांचमा तरंगमां—पुत्रमाप्तिथी गृहस्थाश्रमनी पूर्णाहुति समजी महात्मा मृकंडऋषिए वानप्रस्थाश्रम स्वीकारवो, मार्कंडेयनो तीर्थाटन करी योग साधवानो तीव्र मनोर्थ तथा वैराग्य, याद तेणे इश्वरभजनअर्थ मातिपता पासे विदायिगिरि मागवी, परंतु मातिपताए गृहस्थाश्रमनी उत्तमता वतावी तेनो अंगीकार करवा पुत्रने कहेवुं, मार्कंडेये मातिपतानी आज्ञाने मान्य राखवी, स्त्रीओनां शुभाश्रम साम्रद्रिक छक्षण, मार्कंडेय माटे शृम्रवती नामनी शुभ छक्षणवाळी ऋषिकन्याने पसंद करवी, पुरुष तथा स्त्रीओना उद्भवनो हेतु, आट प्रकारनां छप्न, अने तेनुं विवेचन, मार्कंडेयनी साथे भूम्रवतीनां ब्राह्म्यछप्न, भूम्रवतीनुं पित प्रत्ये सद्वर्तन, ज्ञानी मार्कंडेयने सुशीछा स्त्रीना समागमधी पळेलुं संसार—सुख अने "वेदिशरा" नामना पुत्रनी प्राप्ति, पोग्य वये पहोंचेला वेदिशराने मार्कंडेय आपेला सद्वर्तन सर्वंथी वोय, वाद पोतानां धर्मप-

त्नीनी आज्ञा लड् मार्कंडेयनुं योगसाधनामां प्रवृत्त थवुं वगेरे दरेक वावतो मनुष्यजीवन उच्च बनाववाना आदर्शरूप छे, नजरे जोया वगर अथवा तो कन्याना गुणदोप तरफ द्रष्टि कर्या विना केवल जाति तथा कुल्थीज पोताने कृतकृत्य माननारा वाललग्रना हिमायतीओने वुरां परिणामथी वचवा माटे स्त्रीनां शुभाशुभ साम्रद्रिक लक्षण अने लग्नप्रकार तेमज शरीरयात्राने सफल करवा इच्छनार पाणीमात्रने सद्वर्तन सर्वधी पंक्तिओ वार्तवार मनन करवा लायक छे।

छहा तरंगमां—हिमालयनी अंदर हर्पपूर्वक म्रानिवर मार्कडेये शीत आदि संकप्टोने सही साधेला अप्टांगयोगनुं वर्णन करेलुं छे, एमां योगीओ माटे आश्रम (रहेटाण) केन्नुं होन्नुं जोइए, तेमज प्राणायामना विपयमां पूरक, कुंभक अने रेचकना नियमोने समज्या वाद ध्यान अने समाधिनी सिन्धि अर्थे मूल, जालंधर अने उद्घियान नामना त्रिवंधपुरः सर सूर्यभेटन आदि आठ प्रकारना कुंभकनुं विवेचन अने मुद्राकरणविधि योगसाधनानी अभिलापावाला उत्तम जनोने अलीकिक आनंदनी प्राप्ति कराववामां शंका वगर समर्थ थइ शके तेम छे.

सातमा तरंगमां--मार्कडेये ज्यांसूधी योगसाधना करी त्यांसूधीमां थइ गएला स्वायं-भुव आदि छ मनुओ सर्वथी सविस्तर कथा लखाएली छै; जैमां अन्तर्गत वोयक दुचकाओ एवा तो असरकारक छे के जे अनेक प्रकारनुं ज्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करवा माटे दरेक मनु-ष्यने वारंवार वांचवानी आवब्यक्ता हे. वासना प्राणीमात्रने केवी पीडा उत्पन्न करनारी है ते वरुणानदीने किनारे अरुणास्पद नामना गाममां रहेनारा विप्रना चरित्र उपरथी समजी शकाय तेम छे. पोताने घेर परम निष्टत्ति अने आनंदपूर्वक धर्मकर्मनुं आराधन करता उक्त ब्राह्मणने अतिथिनां आगमन अने समागमधी जो पृथ्वी उपरना रमणीय प्रदेशो जोवानी इच्छा उद्भवी तो तेणे पोताने त्यां आश्रित वनी आयेला अतिथिनो आश्रय लेवो पड्यो अने तेना पासेथी मंत्रप्रसादी मेळवी पगे दिव्य लेप लगावी हिमालय तरफ प्रयाण कर्युं, परन्त्र बरफमां गमन करवाथो उक्त लेप धोवाइ जतां नित्यकर्मअर्थं घेर जवा अशक्त वनी गयो, आमतेम अथडातां तेने वरुथिनि नामनी देवांगनानो मिलाप थयो, परंतु तेणीना कर्ममां काम-ष्टित्तिनुं विषम फळ अनुभववानुं लखाएल होवाथी ते ब्राह्मणने घेर जावानो उपाय नहि बता-वतां पोता साथेज भोग भोगववा आजीजी करवा लागी, धर्मनिष्ट ब्राह्मणे तेना सौन्दर्य आदिथी लेशपण चलायमान न थतां गाहेपत्य अग्निनुं स्मरण कर्युं, धर्मात्मा प्राणीपर देव सत्वर प्रसन्न थाय छे, ते दुनियाने वताववा उक्त बाह्मणना अंगमां अग्निओ प्रवेश करी तेने घेर पहोंचवानुं सामर्थ्य आप्युं, क्रोधना परिणामथी पूर्वे अपाएला शापो अने तेथी थती तपनी हानि वगेरे वोधक वावतो स्वायंभुवथी आरंभी छट्टा चाक्षुपमन्वंतर पर्यन्त छटादार शब्दोमां लखाएली छे अने तेमां शुंगार, वीर, हास्य तथा करुण वगेरे रसोनी जमावट पण जेवी जोइए तेवी करवामां आवी छे.

आठमा तर्गमां—वद्रिकाश्रममां पुष्पभद्रा नदीने किनारे दीर्घायु मुनिराज मार्कडेयना महान तपथी इन्द्रने भय, इन्द्रे तेमनुं चित्त चलायमान करवा मोकलेली अप्सराओनो काम-

चेष्टा, मुनिराजनुं अहगपणुं, नरनारायणे प्रकट थइ तेओने दर्शन देवां तथा माया वताववी, बाद् मार्केडेयने थएलो शिवपार्वतीनो समागम, विश्वपतिनुं वरप्रदान करी विदाय थवुं, राक्ष-सोना उपद्रवधी वद्रिकाश्रममां रहेला ऋषिमंडले मार्कडेय पासे जइ पोताना रक्षण अर्थे एक परा-क्रमी पुरुपनी मागणी करवी, मार्कडेये योगवळे अग्निकुंडमांथी " कुंडमाल " नामना वीरनरने मकट करी तेने ऋषिमंडलना रक्षण अर्थे सदैव सज्ज रहेवानी आज्ञा आपवी, ऋषिओनो मार्क-हैय प्रत्ये सहर्प आशीर्वाद वगेरे वावतोनो समावेश करवामां आव्यो छे तेमां मुनिवर्य मार्कडेय निष्कामृहत्तिथी तप करता इता तोपण सकाम धर्माचरणथी उच्चपदने पामेला इन्द्रने भय उत्पन्न थतां तेणे मुनिनुं मन हगाववा अनेक उपायो कर्या परन्तु ज्यां मनज नहोतुं त्यां ए हगावे कोने ? अप्सरा तो शुं पण एक कुरुपी स्त्रीना न जेवा हावभावथी हृदयमां विह्वळताने स्थान आपनारा कलिना महात्माओ दुनियानुं कल्याण शीरीते करी शके ? मनुष्यथी आरंभी देव पर्यन्त जैम जैम महत्ता प्राप्त थती जाय छे तेम तेम भय वधतो रहे छे. दुनियामां ज्यारे धनवानने निर्धन थवानो भय, रुप्पुप्टने दुवैळ थवानो भय, सुखीने दुःखी थवानो भय, सं-भावितजनोने अपयशनो भय, त्यारे अति उन्नति पामेला इन्द्रने अवनतिनो भय उद्भवे ए स्वाभाविक छे, परंतु भय ए उत्कृष्ट हृदयनी निशानी नथी, शुद्र मनवाळाओज एवा भयथी आकुळच्याकुळ वने छे. पूर्वे ऋषिओ योगवळथी नवी सृष्टि उत्पन्न करी शकता ए मार्कंडेये करेला " क्रंडमाल " ना उद्भव उपरथी सावीत थाय छे. जो ए लोकोमां एवं योगवळ न होत तो राक्षसोना उपद्रवथी तेओ कदीपण तप आदि उत्तम कर्मीनुं आचरण करी शकत नहि. आ उपरथी मनुष्ये एटलो वोध अवस्य लेवानो छे के उत्तम कर्म कर्रनाराओने दुर्जनरुपी राक्षसो कदीपण पराभव पमाडी शकता नथी, केमके सत्कर्मना करनारना वचनमां सिद्धि होय छे. ए धारे ते करी शके छे. अने तेओ मार्केंडेये मेळवेला ऋपिओना आशीर्वादनी माफक अन्य प्राणीओनी शुभेच्छाओने प्राप्त करी मानवदेहने कृतकृत्य वनाववामां सर्वीशे सफळ थइ शके छे.

नवमा तरंगमां — ऋषिओं ना यज्ञयागादि कर्मोमां विद्यरूप थता राक्षसो साथे वीरवर इंडमाले करेलं प्रचंड युद्ध, पराजय पामेला राक्षसो नुं विद्रकाश्रममांथी पलायन, शक्तिए कुंडमालने प्रसन्न थइ वरप्रदान करतुं, पोताना कुळमां जनेतारूपे अवतरवानुं शक्ति पासेथी वरदान मेळवी कुंडमालनुं चमत्कारपुर तरफ विदाय थतुं, त्यां ऋषिमंडले कुंडमालने करेलो विधिवत् राज्याभिषेक, स्त्रीनुं नखशिख वर्णन, सर्वागसुंदरी पुष्पमाला नामनी कन्या साथे कुंडमालनां लग्न, ऋषिमंडले पोताना राजा तथा राजराणीने आशीर्वाद साथे आपेलो सद्वोध, पुष्पमालानी पितभक्ति परायणता, पछीधी तेने गर्भाधान, गर्भवती स्त्रीए आचरवालायक व्यवहारनी अंगीकार करी पूर्ण मास यनां पुष्पमालाए कंदर्ष समान कान्तिवाला " कामिक " नामना पुत्रने जन्म आपवो, योग्य वये ज्ञानसंपन्न धएला पुत्र कामिकने चमत्कारपुरनी राजगादी आपी कुंडमालनुं इन्दरना आरायनमां दृहसंकल्प थनुं, वगेरे वावतोनुं वर्णन करवामां आव्युं हे आन्लाकुळना मुळपुरूप मार्केडयना पुत्र कुंडमाले राक्षसो साथे युद्ध कर्युं हतुं एम वारोटना चोपटामां

छले छुँ हतुं परन्तु ते राक्षसोनां नामठाम वगेरे कंड्पण उपछ्य निह होवाथी काल्पनिक सृष्टि रचवामां अजव कोशल्य धरावता कवीश्वरे चंडास्य, चंडाक्ष अने सिंहानन नामना देत्योने कल्पी आसुरी सैन्यनुं मायावी युद्ध वहुज उत्तम प्रकारे वताच्युं छे. झालाकुळमां राज हरपाछ- देवजी शंकरना अंशावतार हता अने तेने शक्ति वर्यों हतां ए उन्नेख अनेक अैतिहासिक प्रन्थमां अस्तित्व भोगवतो होवाथी तेनुं समर्थन करवा छुंडमालपर पिनाकपाणिए प्रसन्न यह तेना कुळमां पितारूपे अवतरवानुं तथा शक्तिए प्रसन्नतापूर्वक जनेतारूपे अवतरवानुं वरटान आपन्नुं वगेरे वीजरूप हत्तान्त श्रीझालावंशवारिधिनी वस्तुसंकलनाने एटलां तो जेव आपनारां छे के जे वांचवाथी उत्तरोत्तर रसहिद्ध जणाती रहे छे, कामी माणसनुं केवी रीते मृत्यु थाय छे ते मोहिनीरूपा शक्तिए चंडास्य अने चंडाक्ष आदि राक्षसोने माहोमांहे लडावी मारी करावेल समूल विध्वंसथी समजी शकाय तेम छे, ए उपरांत स्त्रीनुं नखिशस वर्णन, ऋपिमंडले आपेलो राजाने सद्वोध, स्त्रीपुरूपो परस्पर केवुं वर्तन राखवाथी सुखी जींदगी गाळो शके तेमज गर्भवती स्त्रीओए उत्तम संताननी प्राप्ति माटे केवा नियमोनुं पालन करवानी जरुर छे वगेरे व्याव-हारिक विपयो पण जाणवा जेवा छे.

दशमा तरंगमां—महात्मा कुंडमालजोनी वानमस्थ अवस्था, वानप्रस्थाश्रम सर्वधी संक्षिप्त विवरण, कामिकनी राजनीति, एथी कुमार ट्रपकेतुनी जन्म, ए ट्रपकेतुथी कल्याण अने कल्याणथी राजिप कुन्तनी उत्पत्ति, ऋषिओने दुःख देवा असुरोनुं फरी उद्यत थवुं, महाराजा कुन्तनी युद्धअर्थ नैयारी, विजय आपनार इन्द्रध्वजने विधिवत ग्रहण करी तेनुं पूजन करवं, धवलक्रमारसमेत विद्वकाश्रममां जइ राक्षसो साथे रोमहर्पण युद्ध करी विजय मेळववो, पछीयी ऋषिमंडलनो आग्रह थतां महाराजा कुन्ते खास विश्वकर्माने हाथे एक छुंदर शहेर वंथावी तेने " कुन्तलपुर " एवं नाम आपवं. आ जगोए शिल्पशास्त्रने आधारे किल्लाओ, शहेरो, राजम-हेलो. वगीचाओ, दिवानने रहेवानां गृहो, सेनापित वगेरेने रहेवानां गृहो, तेमज बाह्मण आदि चातुर्वण्येने रहेवानां गृहो केटला प्रकारनां होय छे अने केवाँ वांधवाथी केवं फल मळे छे. वगेरे सविस्तर वर्णवेळ छै: ए उपरांत अश्वशाळा, गजशाळा, गौशाळा, नेमज शहेरना रक्षणअर्थ अप्रमुकारना यंत्रोनी कृति पण दर्शावेली छै. कुन्तलपुर तैयार थया बाद यज्ञ करवानी इच्छा-बाळा राजिप कुन्तने ऋषिमंडले " मखवान " एवं पद आपवं के जेनो अपभ्रंश अत्यारे " मकवाणा " ए रीते थयो छै. आ तरंगमां टाखल करेला घणाखरा विषयो राजाओने अ-त्यंत उपयोगना है: कारणके युद्धनी वावत अने तेने अंगे इन्द्रव्वजना पूजननो विधि, तेमज सुंदर शहेर वांधवाने लगती केटलीएक हकीकन शिल्पशास्त्रने आधारे वहूज सारीरीते दर्शाव-वामां आवी छै: शहरना रक्षण अर्ध यंत्रोनो माप पण वनाववामां आव्यो छै, अत्यारे आंवानी गोठली वावी तुरतमां दृक्ष अने तेमां फळ लावी वतावनारने आपणे जादुगर अथवा नजर वांधी लेनार तरीके लेखी लड़ए छीए, परंतु तेवा प्रयोगो शाख्यमां लखेला है अने ते आ तरं-गमांज शहेरने अंगे वगीचा नैयार करवानी वावनमां द्रक्षमांथी लना अने लनामांथी वृक्ष कर-

वानी वातो वांचकने सत्य समजाया विना रहेशे नहिः आपणां शास्त्रोमां समग्र विद्या समा-एली हे, परंतु आलस्य अने वेदरकारीने लीधे आपणे तेने उद्भत करी उपयोगमां लइ शकता नयी, जैम गंगाकिनारे रहेनाराओने गंगाना महिमानी गम होती नथी तेम आपणे पण आपणां शास्त्रो प्रत्ये अनुद्योगमयी अथन्दा वतावी आ समये सर्वस्व गुमावी बेटा छीए, एज विद्याना प्रतापथी आजे पाश्चिमात्य प्रजा शा शा शुद्दाओं उठावी रही छे तेनो कंइक ख्याल आपणने सांप्रत युद्ध प्रसंगे आप्यो छे. जेम स्त्रीओ निर्मारय पुरुपतो त्याग करी वुद्धिमान अने वीर-नरने वरे हे तेम पूर्वनी लक्ष्मी अने सरस्वती घणा वर्ष थयां हिन्दमांथी अपसरण करी रही छै: ए वन्ने न्यक्तिओ देवी छै, तेनो प्रेम आर्यदेश उपर कंइ ओछो नथी, इजुपण पोतानी समृद्धिनो केटलोएक अंश तेओए आपणा माटे राखेल हो, ज्यारे कोइ उत्तम व्यक्तिने उत्तम गृह आश्रय न आपे त्यारे तेने अन्य स्थळे जवानी जरुर पडे छे तेम लक्ष्मी अने [सरस्वतीने पण न छटके पश्चिममां प्रवेश करवानुं पसंट करवुं पडचुं छे, इजुपण जो ए भारतने जागृत वनेल अने उद्योग आदि सद्गुणोधी मालवाळो जोशे, तो फरी पोतानां दिव्य अंगधी पूर्वने देदीप्यमान कर्या विना रहेरो निह. झालाकुळमां "मकवाणा" अवटंकथी व्यवहार थतो सांभळ-वामां आवे छे, ए व्यवहारने सावीत करवा कविराजे राजर्षि कुन्तने ऋषिमंडले आपेलुं "मख-वान '' पट अत्यंत योग्यरीते गोठवी झालाकुळ उपर महान उपकार कर्यों छे, खरीरीते विचारी जोतां यकवाणानो मूळ शब्द " मखवान " सहुकोइ सुज्ञजनो कवूल करी शके तेम छे, अने ते झालाकुळने परंपराथी प्राप्त थएल छे, छतां उक्त पदनां गौरवथो अज्ञात क्षत्रिवर्गने युक्ति-पुरःसर पोताना धर्मपरायण पूर्वजोनुं स्मरण करावी तेवां आचरणो द्वारा तेओ पोतानां कल्या-णनी साथे प्रजानुं पण कल्याण करी शके एवा हेतुथी कवी भरनी कलमे जे साहस उठाव्युं छे ते विश्वमां तेओनी शोभाने वधारनारुं वने एमां कुंड अतिशयोक्ति नथी।

अग्यारमा तरंगमां—राजिष कुन्तना स्वर्गवास पछी धवलक्कमारथी आरंभी महाराजा चाचंगदेव सूधी कुन्तलपुरमां राजधानी रहेवी, चाचंगदेव आदि चार वन्धुओ यादवना भाणेज हता अने सहुथी न्हाना मालदेवजी हिस्तनापुरीना दोहित्र हता, एक वस्तर सिहना शिकार प्रसंगे ए पांचे भाइओमां परस्पर कल्ह थयो, मालदेवजीए हिस्तनापुरनी मदद मेलवी महोटा भाइ साथे युद्ध कर्युं अने कुन्तलपुरनुं यवल्लत्र पोताने मस्तके धर्यु, न्यारे चाचंगदेवजीए पोताना कुमार सालणदेवजी सिहत त्यांथी चाली नीकली पूर्वमां तुंवरज्ञातिना राजपूरो राज्य करता हता तेन हरावी गढ सीकरीनुं राज्य स्वाधीन कर्यु अने न्यांना नस्तपर कुमार मालणदेवजीने देसाल्या आ जन्याए पुष्यम्तानविधि, सिंहासन, खर्म, हीग, मोनी तथा मणिमाणिवय वगेरेनां धुभाशुभ लक्षण साथे हीरा वगेरेनी उत्पत्ति नथा नेनी परीक्षा आदि उपयोगी चावतो सिवन्तर वर्णवेली है. दाद चोसट कलाओनुं निरुपण करी मीकरीना हेल्ला अधिपति सारंगदेवजी स्वर्धी कोण कोण अने केवा महाराजाओ थया तेनुं वयान करंल है. तेमां सिंहना शिकार प्रमंगे चाचंगदेवजी आदि पांचे भाइओमां थएलो कल्ह कल्लियुगर्ना प्रतीति कराव-

नारो छे. " आ में कर्युं " ए अभिमान कहो के अहंकार प्राणीमात्रने अनेक प्रकारना अन-थींनो कर्ता बनावे छे. मालदेवजीए शास्त्रमर्यादाने उद्घंघी महोटा भाइ विरुद्ध खंड उठाव्युं ए अहंकारनी पराकाष्टा लेखी शकाय. जो के शिकार तेमनीज वहादुरीथी थयो हतो तोपण विड-ळजनोथी विपरीत वर्तेवुं ए न्हानाओनो धर्म नथी चाचंगदेवजीने सीकरीना राज्यनी प्राप्ति थइ अने तेनो परिवार अद्यापि झाळावंशविभृतिरुपे विराजमान छे. सृष्टिना समारंभथी अत्या-रसूधी नवखंडरुपी अभिनव अवयववाळी रंगवेरंगी तृणपुष्पादि परिधानने वारनारी तेमज दश दिशाओरुपी मर्यादाने वहन करनारी वसुंधरानी विशाल गोढमां अगणित धीरवीरो क्रीडा करी करी काळने वश थइ गया. ब्राह्मण आदि चार वर्णीमांथी क्षत्रिओज तेना पति तरीके पूजाया छे, अन्य वर्णीए तो वर्सुंधराने माता तुल्यज मानेली छे; त्यारे शुं पृथ्वीना पति ए वैश्य आदि वर्णीना पिता समजवा ? हा, शास्त्रकारो चोरुखं कहे छे के राजा पिता समान छे अने प्रजा तेनां वालवचां छे. वथा क्षत्रिओ कंइ राजा वनी शकता नथी, राजपद पूर्वेपुण्योपलब्ध छै, पृथ्वीनो उपभोग अनेक राजाओ करी गया, करे छे अने करशे: तेमज वैञ्य आदि पण मातृभावे पूजन करी तेनाथी अनेक प्रकारना छाभ मेळवे छे, अने मेळवरो, छतां अन्य स्त्रीओनी माफक वसुमतीने दृद्धत्व प्राप्त थयुं नथी ए तेना अनुपम धैर्यनी निशानी छै: कार-णके तेने पुत्रना जन्मथी आनंद के मृत्युथी शोक प्राप्त थतो नथी; त्यारे अहीं एक नवीं शंकाने अवकाश मलशे के पृथ्वीना अनेक पतिओ यह गया छे, अने यशे तो पछी कुलटामां अने महावंदनीय मनाती वसुमतीमां तफावत शो ? एनो खुलासो मने तो मात्र एज जणाय छे जे पृथ्वीए कोइने पति तरीके स्वीकार्यों नथी, ए तो कायम कन्यास्वरुपेज स्थित थएली छे, तेने घणा पुरुपो पोतानी मानी गया छे, माने छे अने मानशे तो पण ए कोइनी साथे गइ नथी, जती नथी अने जरो पण निह; कुलटा स्त्रीथी कंइ उत्तम फलनी आशा राखी शकाती नथी, अने वसुंधरा तो कामधेनु समान सहुकोइने इच्छित आपवा सर्वदा सज्ज रहेली छै. झालाकुळना पूर्वजो पण ए पृथ्वीना पूर्वभाग-हिमालयथी खसता खसता सीकरी सुधी आव्या अने त्यां कुमार सालणदेवजीनो राज्याभिषेक थयो, अभिषेकना अन्य विधिओमां पुष्यस्तानविधि मह-त्वनो छे ते केवी रीते करवाथी केवां उत्तम फळनो आपनार थाय छे तेमज खास राजाओने माटे सिंहासन वनाववामां काष्ट कइ जातनुं जोइए अने तेनो माप केटलो होवो जोइए वगेरे शास्त्रीय वावतो एवी तो स्पष्ट रीते वर्णववामां आवी छे के जे आजे पण उन्नतिनी अभिलापा-वाळा अवनिपतिओने ते प्रमाणे करवामां कंइ कठिनता छेज नहि. राजाओ माटे वस्त्र तथा अलंकार केवी जातना होवा जोइए तेमज ते वस्त्र आदि क्या नक्षत्रमां धारण करवाथी शुभ फळ आपनार निवडे वगेरे कल्याणकारी विषयोने आमां स्थान आपवामां आव्युं छै; हीरा वगेरे ज्वाहिरना गुणढोप तेमज खर्इ वनाववानो विधि अने एनी वनावट समये तेमां थती विक्रियाओथी तैमन म्यानमांथी काढती वखने तेमां जणातां चिह्नो उपरथी समजवा जेवुं भविष्य राजाओने माटे एक अख्ट संपत्ति सरखुं है. तेनी साथे गायन आदि चोसट कळाओनुं

निरुपण तो द्रेक मनुष्यने उपयोगी थइ पढे तेवुं छे. दुनियामां चोसठ कळाओ छे एम घणा-खराए सांभळेछुं छे, पण ते कळाओनां नाम अने विवेचन तो ज्यारे श्रीझालावंशवारिधिनो अग्यारमो तरंग वंचाय त्यारेज ध्यानमां आवे तेम छे. जो के उक्त कळाओनो विषय शास्त्रीय छे अने अनेक विद्वज्जनो तेनुं विवेचन करी गया छे तो पण कवीश्वरे ए महान् विषयने संक्षेपे एवो सरस अने सरलताथी समजी शकाय तेवो लख्यो छे के जे वांचवाने माटे वाचकोनुं मन ललचाया वगर रहेशे निह.

वारमा तरंगमां-राज सारंगधरजीना कुमार कृपालदेवजी गढसीकरीनो त्याग करी श्रुभ शक्कन जोइ पश्चिमगां पथार्या अने त्यां तेओए कीर्तिगढ नामना शहेरनी अंदर पोतानी राजधानी स्थापी ए अैतिहासिक कथानी अंदर अनेक प्रकारनां शकुन अने तेथी थतां शुभा-शुभ फळनुं सविस्तर वर्णन करेलुं हो, त्यारवाद विजयना अभिलापी राजाओए करवा लायक अन्त, गज, तथा मनुष्यना पूजननो विधि बतावी कृपालदेवजीथी जयमलजी सूथीना महारा-जाओनुं हत्तान्त आपेल छे अने त्यार्थीज " मखवान " नो अपभूंश " मकवाणा " थयो हे, ते पछी जयमलजीना पिता नरभ्रमरे पोताना राणंगजी भादि आठ पुत्र के जे फटाया कुमारो इता तेने पोतानी इयातीमांज गरास वहेंची आपेलो होवाथी ए राणंग आदि आड भाइओथी राणंग, वापल, ऌ्णंग, वालायच, खवड, वुहा, विदृल तथा हांफा नामे मकवाणानी आठ शाखाओ प्रसिद्ध थवी, कीर्तिगढना महाराजा जयमलजीयी वागसिंहजी अने वागसिंह्यी व्यास मकवाणानो जन्म, तेओए करेली कीर्तिगढनी आवादी, वर्पाना भविष्यत् ज्ञान अर्थे गर्भधारणथी आरंभी प्रवर्षणकाळ पर्यन्तना विधियोग अने तेथी थतां शुभाशुभ फळनुं सवि-स्तर वर्णन, छेवटे मकवाणा व्यासधी कुमार केसरदेवजीनो जन्म, वगेरे वावतोनो सिन्निवेश करवामां आव्यो छे, तेमां ज्योतिःशास्त्रने आधारे शकुननो विषय अत्यंत स्पष्टतायी विस्तार-पूर्वेक लखाएलो छे, दिशाओ तथा सूर्य आदि ग्रहो कड कइ स्थितिमां केवां नाम धारण करे छे अने पशुपक्षी आदि जक्कननां प्राणीओ केवी स्थितिमां कइ दिशा तरफ गति करवाथी तथा बोलवाधी केवां पाल आपे छे ते खरेखर वांचवा लायक छे, पूर्वे राजाओ राज्यनी लगाम हायमां लीधा वाद तुरतज अमुक प्रदेशपर विजय मेळवता अने जयनी प्राप्ति अर्थे अश्व, गज तथा मनुष्य आदिनुं शास्त्रोक्त रीते पूजन करता, जो के अत्यारे ए प्रधानी तद्दन छोप थड़ गयो छै, तोपण विजयनी इच्छाधी रहित हृदय तो कोइनां नहिज होय. तेमज पोताना वहवाओए स्थापन करेली प्रथा उपर पेम नहि राखे एवा कोइपण आर्य नरेश्वरो होज नहि। मात्र आवा गृह विपयनी अज्ञानता दर करवा अर्थे आ पुरातनी पृथा सटा कायम रहे एवां कारणथी टीर्घट्टियाळा कविश्वरे जे जे उत्तम विषयो चर्च्या छे ते भविष्यमां सहुनुं श्रेय करनारा छे. मखवाननो अपभ्रंश मक-वाणा अने तेनी राणंग आदि आट शाखाओं के जेने आजे झाळाना दरेक वंशनों जाणे छे ते प्यवधार कोना नमयमां प्रचलित थयो ए जाणवा माटे आ नरंग यणोज उपयोगी है. वळी ट्नियानी रस्नितनो आधार वर्षापर रहेको है. माहित्यकारो तो वसंतनेस ऋतुरास एवं नाम

आपे छे, कारणके तेना साम्राज्यमां नयनान्द्जनक विविध द्रक्षलताओ प्रफुल्लित बनी सुगन्यि समीरद्वारा घाणेन्द्रियने तृप्त करे छे. कोकिल आदि पक्षीओनां कलरव कर्णेन्द्रियमां अमृतसमान कोइ अपूर्व रस भरे छे. आम्र आदि मधुर फलो रसेन्द्रियद्वारा ग्रहण करी सहुकोइनां हृदय दरे छे; परन्तु वर्षानो महिमा कांइ एथी उतरतो नथी. अमे तो छए ऋतुओमां प्राणरूप वर्षाने प्रमाणीए छीए, प्राण विना जेम देह शून्य छे, तेम वर्षा विना अन्य ऋतुओ आनंद-दायक बनवा समर्थ छेज निह. जो वर्षानो अमल आनंदमय उजवाय तोज शरद पोतानी शोभा बताबी शके, शिशिर दंत आदि अंगोने कंपावी शके, हिंमत संयोगीओने भावी शके अने वियोगीओने ताबी शके, तेमज बसंत पण पोतानी ज्योति त्यारेज जाहिरमां लाबी शके के ज्यारे पाष्ट्र महाराजानी प्रसादी प्राप्त थएल होय, तेनी साथे ज्यारे ग्रीष्म दुर्जननी माफक भीष्म बनी डर आपवा लागे छे त्यारे वर्षा विना तेनुं अभिमान तोडवा कोण सामर्थ्य धरावी शके तेम छे ? वस, एटलाज माटे ऋतुराज तो खरेखर वर्षाज छे के जेनाथी समग्र सृष्टि जीवनमय बनी जाय छे; ए ऋतुना भविष्यत् ज्ञान माटे गर्भधारणथी आरंभी प्रवर्षणकाल पर्यन्त रोहिणी आदि नक्षत्रोना विविध योग अने तेथी उद्भवतां शुभाशुभ फलनुं विवेचन पण अवश्य वांचवा योग्य छे.

तेरमा तरंगमां—कुमार केसरदेवजीए उत्तम गुरु पासेथी मेळवेळुं अगाथ ज्ञान अने तेओना मुख्यी अवण करेळो संपूर्ण राजधर्म, मकवाणा व्यासनो कैळासवास, तेओनी अन्तिम आज्ञा मुजव केसरदेवजीए करेळुं गाम शमीना सुमरा हमीर साथेनुं युद्ध अने तेमां तेओने मळेळो विजय वगेरे वावतनुं विवेचन कराएळुं जोवामां आवे छे.

राजाओं वीजा गमेतेटला विषयोनुं गमेतेटलुं ज्ञान मेलवे, परन्तु ज्यांसुयी राजधर्मनों विषय न जाणता होय त्यांसुयी तेनुं अन्य समस्त ज्ञान हथा छे. कारणके प्रजापालन ए राजा-ओनुं सुख्य कर्तव्य छे अने ए कर्तव्यने कीर्तिमय बनाववा राजधर्म ए एक उपयोगी वावत छे. राजाओनों धर्म ए राजधर्म, राजधर्म निह जाणनारों राजा अधर्मी कहेवाय एमां आश्चर्य नधी. इंदनीय व्यासभगवाने महाभारतमां विस्तारपूर्वक लखेला राजधर्मनुं दोहन करी अति संकोच के अति विस्तार नहीं करनां तेनुं समग्र रहस्य आमां टाखल करेलुं द्रष्टिगोचर थाय छे, अने ते दरेक राजाओए अक्षरे अक्षर याद राखवा योग्य छे. जेओ पितानी आज्ञाने मान्य राखवा प्राणोत्सर्ग जेवा विकट कार्यमां एण योजाय छे ते विजयशालीज वने छे ए केसर-देवजीए करेला सुमरा हमीर साथेना युद्धथी मावीत थाय छे.

चौटमा तरंगमां—मकवाणा केसरदेवजीनी पशंसापात्र राजनीति, तेओए सिन्धदेशनी अंदर स्थापेलां अनेक शिवालयो, भिन्न भिन्न देवमंदिरो अने प्रतिमाओ बनाववानो विधि तथा तेनाथी थतां शुभाशुभ फलो, हन्दावस्था प्राप्त थया छतां पुत्रप्राप्ति निह थवाथी केसरदे-वजीए करेलुं शंकर उपर उग्र तप, पिनाकपाणिनुं प्रसन्न थवुं, केसरदेवजीनी शंकरसमान पुत्र पामवानी आकांक्षा, शंकरे तेओने त्यां अंशुरुपे अवतरवा तथा " राज " पदवीथी प्रसिन्द

थवा आपेळुं वरदान, वाद केसरदेवजीने त्यां हरपाल आदि दश पुत्रोनो जन्म, केसरदेवजीने थएछुं एक महान ज्योतिषीनुं मिलन, ज्योतिषीना गुणदोष सवंथी विवरण, ज्योतिषीए भाखेळुं केसरदेवजीनुं अवशेष अल्पायु, रणांगणमां पाण छोडवा केसरदेवजीए करेलो संकल्प अने हमीर सुमराने मोकलावेलुं युद्धनुं आमंत्रण, उन्हाळाने लीधे घासपाणीनी तंगी होवाथी इमीरनी आनाकानी, केसरदेवजीए तेने माटे खोदावेला कुवाओ तथा ववरावेलां यवनां क्षेत्रो, आ स्थळे दकार्गल (भूमिगत जलपरीक्षा) नो विषय सविस्तर दाखल करेलो छे के जैमां कइ जगोए केटला पुरुष खोदवाथी अने केवां चिह्नो जणावाथी पाणी नीकलशे वगेरे जाणवा-लायक उपयोगी वावतोनुं विवेचन करवामां आव्युं छे. वाद हमोर सुमरा साथे केसरदेवजीनुं भयंकर युड़, अने तेमां सात कुमार सहित तेमनुं समरजायी थवुं, सहुथी न्हाना वे कुमारोनुं वायल थवं, तेमांना एकने कोळी तथा बीजाने मुसलमान उपाडी गएला होवाथी तेना वंश-जोनुं " कोलीयकवाणा तथा मोलीसलाम मकवाणा " ए रीते प्रसिद्ध थवुं अने कीर्तिगढनो कवजो सुमरा हमीरना हाथमां जवो वगेरे वावत वर्णवेली छे. तेमां कया देव माटे केवां मन्दिरो अने कया देवनी केवी प्रतिमा वनाववी ते आजकाल एक सरखां मन्दिर अने सरखी प्रतिमा वनावनारने माटे वहुज उपयोगी छे. देवनी प्रतिमा शास्त्रोक्त प्रकारे वनाववामां आवी होय अने तेनी स्थापना विधिपुरःसर करवामां आवी होय तो ते देवी चमत्कारथी भक्तजनोने अभिष्ट आपवामां समर्थे थट शके छे, परन्तु गमे ते पत्थरने गमे ते स्थळे उभी करी चन्दनादि चढावदाथी कोइपण प्रकारनो लाभ थतो नधी; उलटा व्हेम आदिथी ते हानिकारक संभव छे, माटे समज्या विना अर्थात् शास्त्रना आधार विना देवमंदिरो के प्रतिमा तैयार कर-वामां यम करतां धाड आवी पडवानो सर्वदा संभव रहे छे. आथी देवमन्दिरो न वांथवां एम बहेदानो आगय नथी, ए कार्य तो अति उत्तम छे. जो नहोत तो पूर्वना शिप्यजनो तेनो कडी पण समारंभ न करत. श्रीमद् भगवद्गीना जेवा जगत्वन्य पुम्तकमां श्रीकृष्ण परमात्माए कर्त् हे जे:-

" यद्यदाचरति श्रेष्टस्तत्तदेवेतरोजनः "

श्रेष्टपुरुषों जे जे आचरण करे छे तेनुं अनुकरण इतरजनो करे छे, तो देवमंदीर आदि कमें पण श्रेष्टपुरुषों करी गया छे ते धर्मात्मकज छे, तेनुं अनुकरण करवानी इच्छावाळा समृ- द्धिसंपन्न प्राणीओए मान्यवर मकवाणा केसदेवजीनी माफक ते सबळी क्रिया शास्त्रमां बताच्या मुजब करवा अमारी खास भलामण छे. ते उपरांत मकवाणा केमरदेवजीना उग्र तपथी प्रसन्न धएला महादेवे तेमने त्यां अंशरणे अवतरी जे भक्तवन्सलता प्रदिश्ति करी ते प्रमंग पण भारे आकर्षक छे. वळी ज्योतिपी सबंभी गुणदोप, राजाओने माटे ज्योतिपीनी आवश्यक्ता अने ज्योतिविद्याधी समजी शकातुं आयुष्य आदि सर्वनु प्रमाण ए विषय तो न्वास वांचवा लायक छे. रणांगणमां प्राणनो परित्याग करवो ए क्षत्रीओने माटे मानम्बक छे ते मकवाणा केसर-देवजीए हमीर सुमरा साथे दीजी वखन करेला युद्ध उपरथी जाणी शकाय तेम छे. दुश्मनन

युद्धनुं आमंत्रण करी, तेने अन्नपाणी वगेरे पुरुं पाडी मकवाणा केसरहेवजीए जे मननी महत्ता वतावी ते वीजा क्षत्रीवीरो वतावी शकशे के ? युद्धनो प्रसंग प्राप्त थाय त्यारे प्रतिपक्षीनां साधनोनी पायमाली केम करवी अने दुश्मने सर करती वखते पोताना देशने केवी छिन्नभिन्न स्थितिमां खाली करवो एवाज विचारवाला अनेक राजाओनां चिरत्रो अतिहासिक प्रन्थो वांचवाथी माल्म पडे छे. त्यारे मकवाणा केसरदेवजीनुं वीजी वखतना युद्धनुं हत्तांत ए सर्वथी विपरीत छतां चढती कोटिनुं अने गौरव प्रदर्शक जणाया वगर रहेतुं नथी, एज प्रसंगे कवीश्वरे गोठवेलो दकार्गलनो अर्थात् कइ जगोए केटलुं खोदवाथी अने केवां चिन्हो जणावाथी केटलुं पाणी निकलशे ए विषय अर्थात् भूमिगत जलपरीक्षा आखी दुनियाने उपयोगी बनो शके तेम छे. कारणके जीवन (जल) उपरज समग्र सृष्टिनो आधार छे. विशेषमां राज हरपालटेवजीनो जन्म, झालाओने "राज " पदनी क्यारथी प्राप्ति थइ अने "कोली मकवाणा" तथा "मोलीसलाम मकवाणा" ए वे शाखाओनो उद्भव शीरीते थयो ए पण आज तरंगमां वताववामां आव्युं छे.

पंदरमा तरंगमां - समग्र कुटुम्बना क्षयथी असह जोकने वहन करता श्रीमान हरपा-लढेवजीनो गहन वनमां प्रवेश, मार्कंडेयनुं मिलन, तेओना मुखयी राजहरपालढेवजीए सांभ-ळेलो आपद्धमे, मुनिवर्य मार्कडेयन। बोधधी आश्वासन पामेला हरपालंदेवजीनुं पाटण तरफ प्रयाण, वर्षाऋतुनुं वर्णन, पाटणना पादरमां पहोंचेला हरपालढेवे पंथना परिश्रमने लीधे विश्रान्ति लेवी, रात्रिवर्णन, प्रभातवर्णन, पुरवर्णन, हरपालढेवजीने थएलो प्रताप सोलंकीनो मिलाप, सोलंकीना आग्रह्यी हरपालदेवजीए तेमने त्यां मिजमान वनी जबुं, प्रताप सोलंकीना पुरातन गृहनुं वर्णन, सोलंकी मुता (जिक्त) ना समागमथी परस्पर उद्भवेली पूर्वानुराग, वाद राज हरपालदेवजीनुं धनुर्वेदना आचार्य तरीके महाराजा कर्णनी मुलाकाते जब, पाटणनी वजारनुं वर्णन, राजमार्गनुं वर्णन, राजद्वारनुं वर्णन, कचेरीनुं वर्णन, राज हरपालदेवजीनो त्यां प्रवेश, तेओनी शौर्यभरित मुखमुद्रा तथा चेष्टाथी महाराजा कर्णने थएलो संतोप तथा अन्य राजकीय जनोना अन्तः करणमां उपजेली इपी, महाराजा कर्णना आग्रहथी हरपालदेवजीए तेमने एकान्तमां संभळावेळो धनुर्वेद, नृतन तथा राज्यना संरक्षणमां अत्यंत सहायभूत थनारी धनुर्वेद सवंबी सविस्तर कथा श्रवण करी आश्रय पामेला नरपति कर्णे हरपालदेवजीना हाथ नीचे केटलाएक क्षत्रीओना वालकोने धनुर्वेदनुं शिक्षण अपाववुं वगेरे वावतोनो समावेश करेलो छे. एमां मूळ वावत तो एटलीज छे जे कीर्तिगढनो कवजो सुमरा हमीरना हाथमां जवाथी तेमज पिता तथा वन्धु आदिनो क्षय थवाथी हरपालडेवजी पाटण पथार्या अने महाराजा कर्णने मळी पोतानां युद्धिवळथी अत्यंत माननीय थया. हमेशां अतिहासिक वावत एवी होय छे के वांचनारने कंटाळो आव्या विना रहेज निह, अमुकना अमुक थया अने तेणे अमुक वर्ष राज्य भोगच्युं ए जाणवाधी दुनियाने शुं लाभ ? कदाच जेना क्रुळनी हकीकत होय तेने तो भावे कभावे पण वांचवानुं मन थाय, परन्तु जेओने जे नामेथी कंड मर्वंघ न होय ते पण ते

नामोनुं प्रेमपूर्वक स्मरण करे एटला माटे तेओनी वार्ताने विविध वर्णनोधी विभूषित करवामां आवे तोज तेमां रहेला रसनुं पान करवा साहित्यमेनीओ पण ललचाय; एवाज हेतुथी झालाकुळनी कथाने पण रंगवामां आवी छे अने तेथी विस्तार पण घणो थएलो जोवामां आवे छे, के जे ग्रंथना नाम प्रमाणे जरुरनो छे; नाम वारिधि अने संपत्ति सरिता जेटली होय तो लेखकने उपहासपात्र थवुं पडे अने एवीं भूल सारा लेखको कदीपण न करे. कुद्रतने चाहनाराओमां आ तरंग विविध वर्णनोने लड् अत्यंत आवकारदायक थड् शकरो ए निर्विवाद छै. राजाथी ते रंक पर्यन्त सुखदुःख, संपत्ति विपत्ति, चडती पडती तथा लाभ हानि वगेरे युग्मो एकसरखी रीते काम करी रह्यां छे; कारणके ए वस्तुओ कुदरती छे, अने कुदरतनो सर्व माथे एकसरखो काबु छे, पक्षपात वंगेरे अमानुपीय (राक्षसी) कर्नव्यने सारा माणसो पण ज्यारे आश्रय नथी आपता त्यारे कुद्रत-प्रभु के दैव जे मनुष्यथी कोटि प्रकारे उच कोटिनां छे, तेनी पासे तो तेने अवकाश क्यांथीज मळे ? आम कहेवानो हेतु मात्र एटलोज छे के आपत्तिने समये राजाओए केंबुं वर्तन राखवुं ते जाणवा माटे आ तरंगमां लखाएलो आपद्धमें जीवनने उन्नत वनाववा माटे दुःखसमुद्रमां डुवेलाओने एक सवळ आधार सरखो है, वर्षावर्णन रिसकजनोने रसवोळ वनावी अपूर्व आनंद आपनारु है, शंकरना अंशावतार राजहरपाल्देवजीनुं नथा शक्तिनुं चरित्र अने तेने अंगे रात्री, प्रभात, पुर, वजार, राजमार्ग, राजद्वार अने राजसभा आदिनां वर्णनो वारंवार वांचवाथी पण तुप्त थवाय तेम नथी.

राज हरपालदेवजी जेवा दैवी नरने डाकलाना डमडमाटथी आवेशमां आवी " हाड एकरता एक अभण भ्रुवा तरीके अने शक्ति जेवां दैवी प्राणीने दुनियामां त्रासरुप देखाती एक टाकण तरीके आदेखवामां साक्षर नंदशंकरभाइए जबरी थाप खाधी छे, मारा धारवा प्रमाणे तेमां तेओनो विलक्षल दोप नथी कारणके तेओए तो भाटचारणो पासेथी जेवी एकीकत सांभली तेवी लखी काढी, तो पण सारा लेखक माटे ए शरम जेवुं तो खरं. कोइ यह के गर्दभ जेवो कोकिल उचार करे छे, अथवा तो मनुष्य खड खाय छे तो शुं ए वात साची मानी लेवी ? एमां कंइक बुद्धिनो पण उपयोग करवो जोइए, अथम प्रकृत्ति-वेपवादला वगेरेथी उत्तम प्रकृतिनुं अनुकरण करवा उपन थाय, परन्तु उत्तम प्रकृति अथम प्रकृतिनुं अनुकरण करे ए वनवालायक छेज निह, कारण के—

" क्रियासिद्धिः सन्त्रे भवति महनां नोपकरणे "

शृं हरपालदेवजी सरला ध्रत्रीवीरमां वळ नहोतुं के ए एक हलका भ्रवा तरीके महा-राजा कर्णना मंदिरमां प्रवेश करे ? शुं एटलोए एने पोताना कुलगौरवनो ख्याल निह होय ? के शुं एटलोए एने अयम पाणी तरीके प्रसिद्ध धतां अपयशनो भय निह होय ? अमारा मगजमां तो ए वात कोइ रीते योग्यता मेळवी शके तेम नधी. कवीष्वरे धनुर्वेदना एक उत्तम आचार्य तरीके तेओनुं महाराजा कर्ण साथे जे मिलन कराव्युं छे तेज योग्य छे अने तेम कर-वापी वर्तमान अने भविष्यना राजाओना हित माटे धनुर्वेद जेवो एक गृह विषय जे बहार आन्यों छे ए ओछा आनंदनी वात नथी. आजसूबी आपणे एमज समजता हता के कवायद (लक्करी तालीम) अंग्रेजोना समयमांज जन्म पामेली छे, परन्तु धनुर्वेदनो विषय वांचवाथी माल्स पडे छे के ते आदिकालथीज अस्तित्व भोगवती आवे छे, तेमां युद्धनां दरेक अंगोनुं जैमके सेनापित अने पैदल वगेरे केवा राखवा, कोना सन्मुख केवा संयोगोमां लड्बुं के ना लट्बुं, राजाओए पोतानी आसपास रक्षको केवा राखवा वगेरे समग्र वावत स्पष्टनाथी लखाएली छे.

सोळमा तरंगमां हरपालदेवजीना शिप्योए महाराजा करणनी आकांक्षाथी करी वना-वेला धनुर्वेदना अखतराओ, प्रमन्न थएला पाटणना पतिए वधारेलो इरपालदेवजीनो दरज्जो, अन्य राज्यकीय जनोना हृदयमां प्रकटेलो विद्वेपाग्नि, कवेरीमां हरपालदेवजीना वाहुवलनी कसोटी, इरपालदेवजीना भाला साथे तणाएली जाजमपर बेठेला अमीरउमरावोना उंबा पडी ने जवाथी जामेलो हास्यरस, हरपालदेवजीनो क्रोय, करणनुं गभराबुं, पाछळथी शान्त्वन, प्रकट थएली सवंथनी पिछाण, इरपालदेवजी पत्ये करणनुं सहोदर समान वर्णन, शरद्ऋतुनुं वर्णन, हरपालदेवजीनो वैभव, सोलंकी सुतानी स्थिति, पुत्री महोटो थवाथी प्रताप सोलंकीने थती , अमाप चिन्ता, तेने शक्तिए आपेछं धैर्य, वार्षिक प्रथा प्रमाणे खंजनदर्शन (दिवाळीघोडा जोवा) अर्थे निक्रञेला महाराजा करणने राजहरपालदेवजीए संभळावेल खंजनदर्शनना वि-व विध प्रकार तथा तेनां शुभाशुभ फळ, वाद महाराजा करणे राज हरपालदेवजीने एकान्तमां कहेली पोतानी कप्टकथा, हरपालदेवजीनी हिम्मत, करणना राजमहेलमां वावरानी बुमाट, ए वावरा साथे हरपालदेवजीए करेलुं वाहुयुद्ध, अन्योन्य मर्दनवडे थती उभयनी हारजीत, शक्तिए अद्रश्यपणे राज हरपालदेवजीने आदेलुं उत्तम ओसाण, हरपालदेवनी हाक सांभळी वावरानुं हारबुं, तथा प्राण वचाववा खातर स्मरण करती वखते सेवामां हाजर थवानुं वचन आपी कायमने माटे करणना महेलमांथी विदाय थवुं, राज हरपालदेवजीए राक्षस साथे करेला युद्धना अथाह परिश्रमने लीचे धुवातुर थवुं अने महाराजा करणनी पशुकालामांथी बे घेटां मंगावी स्मशान भणी जबुं, काळीचतुर्दशीनी अंथकारमय वीहामणी रात्रीनुं वर्णन, स्मशानभ्र-मिनुं वर्णन, हरपालदेवजीनी हिम्मत जोवा अद्रव्यपणे शक्तिए करेलो साथ, चिताना अधिमाँ घे नुं मांस शेकी शेकी इरपालदेवजीए ध्रुयानुं शमन करवुं, पाछळथी शक्तिए हाथ मसारतां तेने पण उक्त मांसना कवल आपता जवुं, मांस खलास थया छतां शक्तिए हाथ लंबावयो, हरपालदेवजीए हिम्मतथी पोतानी जांच चीरी तेमांथी काढेलो मांसनो कोलीओ आपयो, शक्तिनी प्रसन्नता, वरदान, हरपालदेवजीने वरवानुं वचन आपी शक्तिनुं अद्रश्य थवुं, हरपा-लदेवजीनुं उतारे जवुं, वीजे दहाडे प्रनापसोलंकीने घेर शक्ति साथे थएलां राज हरपालदेव-जीनां तात्कालिक लग्न, लग्नक्रिया करावनार मसालीया गामना रहीश ब्राह्मणना वालकने राज इरपालदेवजीए पोताना कुळगोरनी पदवी आपत्री, पाटणनां दिवाळी अने तेनुं वर्णन, वेसता वर्षने प्रसंगे भराएलो महाराजा करणनो दरवार, हरपालदेवजीए करेला उपकारनो वदलो

आपवा करणनी इन्तेजारी, वीजुं कांइ निह लेतां एक रात्रीमां जेटलां गामने गागरवेडां तथा तोरण वंधाय तेटलां गामो पोताने अर्पण करवा हरपालदेवजीनुं करणने कहेवुं, करणे करेलो ए वाननो स्वीकार, शक्ति अने वावरानी सहायताथी हरपालदेवजीए त्रेवीशसो गामने झांपे वांधेलां गागरवेदां तथा तोरण, करणने धएछं आश्चर्य तथा तेणे पोतानुं समग्र राज्य राज हरपालदेवजीने आपवुं, हरपालदेवजीए तेमांनां पांचसो गाम करणनी राणीने व्हेन तरीके कापडानां आपी वाकीनां अढारसो गामना स्वतंत्र मालिक वनवुं, तथा शक्तिनी सलाहथी पार्टीनो अंदर राजधानी स्थापवी, शहरने सुसमृद्ध करवा तथा राजकीय वैभव वधारवा हाथी, घोडा अने गाय आदि चतुप्पद्नी खरींदी अर्थे देशावरमां मोकलवा नियत करेला माणसोने ते ते पशुओनां क्षेत्रोनी तथा शुभाशुभ लक्षणनी आपेली सविस्तर समजृति, वाढ राज्यमहेलो तथा देवमन्दिरो वंथावी राज हरपालदेवजीनुं पाटडीना एक उत्तम राजा तरीके प्रसिद्ध थवुं वगेरे वृत्तान्तनो समावेश करवामां आव्यो छे,तेमां राज हरपालदेवजीनुं अने शक्तिनुं चरित्र वांचतां ए वन्ने व्यक्ति देवीगुणोथी देदीप्यमान हती एम कबुल कर्या विना छूटको नथी: कारणके वावरा जेवा समर्थ असुरने पराभव पमाडी एकज रात्रीमां त्रेवोशसो गामने गागरबेडां तथा तोरण वांधवां ए मानवशक्तिथी न वनी शके तेवी वावत छे. वळी पाटडीमां राजधानी बसाव्या बाट हाथी, घोडा, गाय बगेरे चतुष्पद्नी खरीटी माटे विदेशमां मोकलवा नियत करेला माणसोने राज हरपालढेवजीए समजावेल ते ते पशुओनां क्षेत्रो तथा शुभाशुभ लक्षण राजाओने माटे खास उपयोगनां छे. गुणटोप जोया विना मात्र रूप उपरथीज मोहित धइ हाथी तथा हय आदिनो संग्रह करनारा राजाओ लाभने बदले हानिना भोक्ता थइ पडे छे अने एटलाज माटे पशुनां शुभाशुभ लक्षण समज्या वाट खरीदवानी सहुकोइ श्रीमानने भलामण करवी अयोग्य नहि गणाय.

सत्तरमा तरंगमां — शिवना अंदाावतार हरपाल्डेवजीनुं तथा शक्तिनुं परस्पर मशंसनीय वर्तन, पुरुष करनां स्त्रीजातिनी उत्तमता, शर्या केटला मकारनी होय छे अने ते केवी
पनाववाधी केवां फल आपे छे तेनुं संक्षिप्त विवेचन, सुभग अने दुभँग पुरुषनां लक्षण, शक्तिने
रहेलो गर्भ, श्रीमान सोहाजीनो जन्म अने त्यारवाद अनुक्रमे लींवडीना मूलपुरुष मांगुजी,
शखेराजजी तथा पुत्री उपादेनी उत्पत्ति, कुमारोनी क्रीडार्थं खरीडेला क्र्म, कुक्ट, श्रुक,
सारिका, मयूर, तथा खान आदिनां श्रुभाश्रम लक्षण, राजपार्गमां कुमारोनुं रमबुं, गजशालामांथी मदोन्मच हाथीनुं इटवुं, सर्वत्र शोरवकोर, कुमारोना अंगरक्षकोनी विद्वलतापृर्वक
दोटादोड, कुमारोनी निर्भयना, हाथीनो ए तरफ हल्लो, पराभवनी आशंकाथी गोस्तमां बेठेलां
शक्तिए पोताना रत्नजिहन कंक्णोथी अव्युत्त रमगीयताने वारण करनारा चार भुजोने पकट
करी त्रणथी त्रणे कुमारोने झाली लेवा, तथा चोथा हाथथी तेथानी साथ रमवा चारणना
बालकने टापली मारी आधे उटावी देवो अने त्यारथी मकवाणावंदानुं " झाला " एवी अवटंक्सी प्रसिद्ध थवुं, तथा राज्यना दसोटी चारणकुळनुं " टापनीआ " कहेवावुं, राज हरपा-

लदेवजीनी उपरामष्टत्ति, तेओए उत्तम ज्योतिपीना मुख्यी सांभळेली सविस्तर मृत्युपरीक्षा, दिन्य, भौम अने आन्तरिक्ष नामना अनेक उत्पातीनुं विवेचन तथा तेनां शुभाशुभ फळ, छत्रभंग करावनारा उत्पातनी उत्पत्तिथी पाटवीकुमार सोढाजीने थएली चिन्ता, शक्तिनुं राज हरपाल्देवजी तथा पुत्री उमादे सहित धामा-गामने पादर पृथ्वीमां समाइ जबुं वगेरे वावत वर्णवेली छे. संसारमां स्त्री अने पुरुष ए वन्नेना हृदयनी अन्यता होय तोज सुखनो अनुभव करी शकाय छे, एटला माटे ए वन्नेए केवुं वर्तन राखवाथी हृद्यनी अवयता जलवाइ रहे ते जाणवा माटे राज हरपालदेवजी तथा शक्तिए राखेछं परस्पर वर्तन खास वांचवा लायक छै: पुरुप करतां स्त्रीजातिनी उत्तमता आदिथीज शिष्टजनोए मान्य राखेळी छै, कारणके मानवर्-त्ननो उत्पत्ति एनाथीज थाय छे अने ते जाते उत्तम केलवणी लइ संततिने उत्तम प्रकारे केलवी शके छे अने तेना दाखलारुपे सीता, सुलोचना, अनम्रया तथा सावित्री आदि अनेक आर्य अवळाओनां चरित्रो अद्यापि विद्यमान छे, लखी वांचो समजी शके एटलुं जोइतुं ज्ञान प्राप्त करी जे कन्याओ माता पासेथी पूरती गृहकेलवणी मेळवी सासरीए सियावे ते अवन्य स्त्रीजा-तिनी उत्तमता वतावी शके छे, मात्र विद्या सवंथी केलवणोथीज स्त्रीओ पोताना पतिने के कुटुम्बीओने संतोष आपी शकती नथी, परन्तु ते साथे गृहकेलवणीनुं ज्ञान शर्करामिश्रित दृव जेवो स्वाद आपे छे. आजकाल स्पींगवाळा लोढाना पलंगो दरेक राजाओ अने धनाढ्य गृह-स्थोना शयनभुवनमां जोवामां आवे छे. गृहस्थो तो गमेतेवी शय्यापर शयन करे तेमां कहेवा जेवुं केइए नथी, परन्तु राजाओं के जेमां इश्वरनो अंश रहेलो छे तेने माटे शय्या केवी होवी जोइए अने तेनाथी केवां शुभाशुभ फलनी प्राप्ति थाय छै ते आ तर्गमां बाह्वोक्त शय्यापकार वांचवाथी प्राचीन विद्वानो जगहित अर्थे केवुं काम करी गया छै ते समजाया वगर रहेवाशे नहि केमके लाखो मनुष्योनुं हित एक राजा करी शके छै, ए राजाओनुं हित इच्छवं ए दरेक सुज़नं कर्तव्य छे, अने एवाज आज्ञयथी कवीश्वरे आवा गृह अने वारीक विपयने प्रका-शमां लाववानो प्रयत्न कर्यों छे, सुभग अने दुर्भग पुरुपनां लक्षण पण ओछां आकर्षक नथी, जैम अमृत जीवाडनार छे अने झेर मारनार छे तेम झेर जेवा दुर्भंग पुरुपनां लक्षणने दूर राखी सुधासमान सुभग पुरुपनां लक्षणोनुं अनुकरण करी मनुष्ये उन्नति मेळववा आकांक्षा राखवी जोइए. आजकाल राजाओ पोनाना राजमन्दिरमां कुकडा, जंगली काचवा, शुक, सारिका अने श्वान आदिना उपरना रुपथी अंजाइ गुणदोपनी तपास कर्या विना भेळां करे छे, पछी ते विपरीत फळने आपे तेमां नवाइ शी ? एवां विपरीत फळ हवे पछीना सुझ नरेशोने भोग-ववां न पडे एटला माटे उक्त प्राणीओना गुणदोप अने तेथी थनां शुभाशुभ फलनुं विवेचन आ तरंगमां वहु उत्तम रीते करेछुं छे. मक्त्वाणाओं " झाला " शीरीते कहेवाया अने तेना दसोंदी चारणनी " टापरोआ " एवी संज्ञा शी रीते थइ ए पण आ तरंगमांज वनाववामां आव्युं छे; ते उपरांत मृत्युपरीक्षानो विषय पण दरेक मनुष्ये मननपूर्वक वांचवायोग्य छे.

अढारमा तरंगमां - राज सोढाजीथी आरंभी शांतलजी पर्यन्त झालानरेशोनी संक्षिप्त

इकीकत, शांतलजीए " शांतलपुर " वसावी त्यां राजधानी स्थापवी, तेओना विजयपाल आदि कुमारोए पोताना मामा वाघेला ऌणकरण साथे करेला प्रचंड युद्धनुं वर्णन, ए युद्धमां राज शांतलजी तथा तेना वे कुमारोनुं काम आववुं, शांतलपुर वाघेला ल्एकरणने हाथ जवुं, राजविजयपाले पाछी पाटडीमां राजगादी स्थापवी, ते पछी राज उदयसिंहजी स्थीनुं संक्षिप्त दृत्तान्त, ए उदयसिइजीना पृथीराज तथा वेगडजी नामना वे कुमार, चित्तोडना लाखाराणानी कुंवरी साथे थएलो वेगडजीनो सर्वथ, वरातनुं चितोड जवुं, राणानी मददथी फटाया कुमारने पाटडीनी गादी प्राप्त थवी, पाटवी पृथीराजनुं राणा साथे व्हारवटुं, वेगडजीए पोताना विडल वन्ध्रने समजावी १२० गाम सहित "धळा" नी जागीर आपवी के जैना वंशजो "धळेचा" झाला कहेवाय छे. त्यारवाद राजवेगडजीधी आरंभी राजरणमलजी सुधीनुं वृत्तान्त, मरुदेशा-न्तरीत " जालिनेरकोटडा " नामना गाममां परणेला राजरणमलसिंइजीनुं साम्र वगेरेना आग्रहथी त्यां जबुं, चोपाटनी रमतमां सोनगरा राठोडो साथे थएलो झगडो, राजरणमल-सिंहजीनुं केद पकडाबुं, ए समाचार पाटडीमां पहोंचतां पाटवीकुमार छत्रसालजीनुं सैन्य सहित त्यां जइ जालिनेरकोटडाने भांगवुं तथा सोनगराओने भयभीत वनावी पिता सहित पाटढी पधार्त्वं, राजरणमलसिंहजीना स्वर्गवास पछी छत्रसालजीए गढ मांडलमां राजगादी स्थापवी, तेओने त्यां जेतसिंह आदि तेर कुमारोनो जन्म, राजजेतसिंहजीए पोताना राघवदेव आदि दार वन्धुओने आपेलो विद्वलगढनो गरास के जेना वंशजो हाल रायपुर तथा नरवर वगेरे स्थळे छे. अमदावादना वादशाह अहमदशाहना शाहजादापर राजजेतसिंहजीए करेलो एहो अने ए वरने लीधे करवो पडेलो गढ मांडलनो परित्याग, कंकावटी उर्फे कुवागढमां रथापेली राजधानी, राजजेतसिंहजीथी राजवायजी सुधीनुं संक्षिप्त द्यान्त, राजवायजीए ख्टेंछो जुनागहना नवाव वोडीआनो खजानो, नवाव साथे दुरुपनाइ, महाभारत युन्ह, माण-सनी भूलने लीथे राजवायजीए जनाना साथे करेला संकेतनुं विपरीत परिणाम, साहात्रणसो क्षात्रवाळाओतं एकीसाथे विकाल खुवामां पडी मरबं, खुवानो कर, वार हजार यवनोने मारी पांच रजार क्षात्रसभटो साथे राजवाघजीनुं समरशायी थवुं, तेओना पाटवीकुमार रायथरजीए रळददमां राजगादी स्थापवी, वेटळीएक आश्चर्यजनक कथा, फटाया कुमार राणाजीने राज-गादी यळदी, पाटवीहुमार अजाजी तथा सजाजीनुं प्रथम मारवाड नथा पछीथी मेवाटमां जवुं. अने त्यां वहादुरीधी महोटी प्रतिष्ठा मेळवी सादडी नथा देळवाडा वगेरे रियासनोना मालिय वनवुं, दसादाना मलेक दकनी साधेना धींगाणामां राजगणाजीनुं मृत्यु, तेना प्रत्र मानिसर्नं तळवदनी गादीए वेसर्डं. अमदाबादना वादशाह वहादुरवाहे म्होटी फोज मोकली रळवटने स्वाधीन कर्तुं. मानसिंहजीए कच्छमां जह " मानहुवा " नामे गाम वसापतुं, नथा पोताना निमक्दलाल नोकर शागाजीने साथे राखी दादशाहथी व्हाग्वट्टं खेटवुं. तेना पाछल परेगी दादगारी बार, मानमिंहजीपर पडेली महान आपनि, हैटलोकोए टुडिवळपूर्वक करेलो राजमानसिंहजीनो दचाव. दादमाही ग्वारोनुं चाल्या जन्नुं, दाद मरणीश्रा वनी गुद वादमा-

हने मारवानो मनोरथ करी प्रागाजी साथे राजमानसिंहजीनुं अमदावाद जवुं, मार्गमां मुजीवत, मेघली रात्रीनं वर्णन, सावरमतिने पेलेपार पहोंची किल्लानी ओथे उमेला राजमानसिंहजीए सांभळेलो वादशाह तथा वेगमनो संवाद, ए उपरथी तेओए करेली वादशाहने अरज, वाद-शाहना दिलमां प्रकटेली रहेम अने तेना तरफथी प्रभातमांज राजमानसिंहजीने इळवदनी इक़मत पाछी मळवी, इळवदमां राजमानसिंहजीनुं आगमन, राज्यनी दुर्दशा, नंदवाणाओनी नीचता, राज्यना हित अर्थे निमकहलाल प्रागाजीए रचेली युक्ति अने तेमां आपेलो आत्म-भोग, राजघेला मानथी शरु थएलो जाडेजाओ साथे दिकरीओ लेवादेवानो सवंय, राजमान-सिंहजीनो कैलासवास थतां पाटवीकुमार रायसिइजीनुं हळवदनी गादीए वेसबुं, वगेरे वृत्तान्त द्रष्टिगोचर थाय छे, तेमां मुख्यत्वे झालाकुळना कया कया नरेशोए केवा केवा संयोगोमां कये कये स्थळे राजधानी स्थापी अने तेनी शाखाओ हाल कई कई जगोए विद्यमान छे ते विस्ता-रपूर्वेक वर्णववामां आव्युं छे, "क्रवाना केर" नी हकीकत पण हृदयने कंपायमान करे तेवी छे, राजमानसिंहजीपर केवी विपत्ति पढी हती अने ए विपत्तिमां तेओए वैर्यपूर्वक शी शी चेष्टाओ करी इती ते विषय वांचतां भाविनी जेटले दरको मवळता मानीए तेटली ओछीज छे. मेघलीरात्रीनं वर्णन, वादशाह बेगमनो संवाद अने प्रागाजीनी निमकहलाली ए दरेक विषय ज्ञान साथे भिन्न भिन्न रसनुं भान करावे छे. झालाकुळनो जाडेजाओ साथे दीकरीओ लेवादेवानो सवंध क्यारनो थयो ए पण आ तरंगमां वताववामां आवेछं छे.

ओगणीशमा तरंगमां--राजरायसिंहजीना सद्गुणोनुं वर्णन, तेओए इसरवारोटने वे लाख रुपिया आपी वतावेली उदारता, वाद तेओनं पोताना मामा घोल ठाकोर जसाजीने त्यां मिजमान वनी जबुं, मामाभाणेजे जमावेली चोपाटनी रमत, दिल्हीथी द्वारिका तरफ जती नागानी जमातनुं धोळने पाद्र आवी नगारुं वगाइबुं, ठाकोर जसाजीनो क्रोध, राज-रायसिंहजीए ए क्रांथनं कारण पूछवं, पोतानी हदमां कोइने नगारुं नहि वगाडवा देवा तथा वगाडे तो फोडी नांखवानो जादव जसाजीए आपेलो जवाव, वाजीनुं वगडवुं, राजरायसिंह-जीए मामाने तैयार रहेवानुं आमंत्रण आपी हळवद जबुं अने हळवदथी सैन्य सहित पाछा श्रोळने पादर आवी इंको वजाववो, ठाकोर जसाजीनी असहनता, जाडेजाओना जवरा सैन्य साथे झालाओए करेलो मुकावलो, युन्हनुं विस्तारथी वर्णन, छेवटे मामाभाणेजनुं तमलयुन्ह, टाकोर जसाजीने रणमां प्राणरहित करी राजरायसिंहजीए मेळवेळो विजय, वसन्तऋतुन् वर्णन, होळीनी शरुआत, राजरायसिंहना दरवारमां फागनी धमाल, शंगारमां वीररसनी संभावना, कोइएक चारणना उक्केरवायी धोळना टाकोरना मरणनुं वैर लेवा आडेसरयी जाडेजा साहेवसिंहनुं नीकळबुं, राजरायमिंहजीए तेना सामे चाली टीकर मुकामे मळबुं, पर-स्पर प्रचंड युद्ध, जाडेजा साहेवसिंहजीनुं समग्र सैन्य सहित समरशायी थवुं, राजरायसिंहजीए वायल वनी अचेत अवस्थाए पृथ्वीपर पड्बुं, युद्धनी समाप्ति, इळादनां माणसोए करेली राजरायसिंहजीनी शोध, पत्तो न मळवाथी सर्वेनुं निराश थई पाछा फरवुं, द्वारिका गएळी

नागानी जमातनुं हिंगळाज परसी दिल्ही जवा माटे ए रस्ते नीकळबुं, प्रभात, रणभूमिनो भयानक देखाव, मुवर्णना छंगरथी अछंकृत चरणवाळा राजरायसिइजीपर पडेळी एक साधुनी द्रष्टि, महंतनी आज्ञाथी तेना अनुचरोए राजरायसिहजीने जमातमां उपाडी लाववा, तेओनी भयंकर स्थिति, जमातना महंते करेला उपचार, जमातनी साथे दिल्ही जड् पहोंचेला राजरा-यसिंहजीनं आरोग्य तथा सत्समागम, ग्रीप्मऋतुनं वर्णन, मठना महंत मकनभारथीने वादशाही वावनुं गीतल नल पीवानी अभिलापा, ए कार्य करवामां अन्यना असमर्थपणाने लीधे राय-सिंहजीने महंते करेलो निदेश, पोतानां प्राण वचावनार महंतनी सेवा वजाववा राजरायसिंह-जीए खेडेळुं साहस, वादशाही वागमां रात्रीने वखते तेओनो प्रवेश, वळनुं अभिमान राखनारा वादगाही वे एकाओनी वेदरकारी, वादगाही वावमां दाखल थएला रायसिंहजीनुं गुरु माटे जल भर्बुं तथा पोते पण जलपान करी पादमक्षालन कर्बुं, एथी उठेलो वावमां शब्द, वाद-शाही एकाओना कान चमकवा तथा गाळोनी दृष्टि, राजरायसिहजीए गुरुनां वचन खातर सो गाळो सहन करी वावमांथी वाहेर नीकळतांज एकापर करेलो वामवाहुनो प्रहार, ए एक एकानुं मृत्यु जोइ वीजानुं पलायन, वादशाहने धएली जाण, महंतनुं गभरानुं, प्रभातमां मटनी अंदर दाखल थएला वादशाही दृतो, राजरायसिंहजीनुं प्रत्यक्ष वल जोवा वादशाहे मुकेलो एक मदोन्मत्त हाथी, राजमार्गमां मनुष्योनी भागाभाग, राजरायसिंहजीनुं निभैयताथी सामे पगले चालनं, हाथीए करेलो तेमनापर मोरो, रायसिंहजीए हणेली हाथीने थपाड, आ-र्तनाद करी हाथीनुं दूर हठी जबुं, वादशाहने आश्चर्य, तथा पराक्रमी पुरुष उपर उद्भवेलो प्रेम, प्रसंगोपात थएली पिछाण, इलवद नरेशने दिल्हीमां वादशाह तरफथी मळेलुं अपूर्व मान, राजरायसिंहजीनुं इळवद आववुं, सर्वने आश्चर्य तथा आनंद, श्रीमान रायसिंहजीए एक ज्यो-तिपीना मुख्यी सांभळेली गृहयुद्ध सवंधी कथा, अंते घाटीला पासे हाला तथा देवाओ साथे थएली भयंकर लडाइमां तेओनुं काम आववुं, इलवटनी गाटीपर तेओना पाटवीक्रमार चन्द्रसिं-हजीनो राज्याभिषेक वगेरे हकीकत उत्तम मकारे दाखल करवामां आबी है. इसरवारोटने वे लाख रुपिया आपी चारणना पुत्रने वादशाही वन्धनथी मुक्त कराववामां क्षात्रधर्म सहित उदारता, जाहेजा जसाजी तथा साहेवसिंहजी साधेना युद्धमां अद्भुत वीरता, अने पोताने प्राणदान आपनार महंतने वादशाही वावनुं जळ लावी आपवामां कृतज्ञना वगेरे राजरायिमहजीना गुणो खरेखर प्रशंसापात्र अने दरेक राजाओए अनुकरण करवा छायक छे. साहम करवं ए मारा माणसनुं काम नधी एम '' सहसा विद्धीत न क्रियां '' इत्यादि श्लोको रची पाचीन विद्वानो पुकारी गया है, परन्तु केटलाएकनी कार्यसिद्धि साहमधीन थएली जोवामां आवे है, अन्यनी मान्यता गमे तेवी होय, परन्तु अमे साहसना विषयमां हेवटे ए निर्णय उपर आव्या छीए जे एनाथी थतो लाभ पण अनहृद है, अने हानि पण हृद वगरनी है, मादे उत्तम जनोए वह टीर्घद्रष्टिए विचार कर्या पछी साहमनो अंगीकार करवानो छै, राजराय-सिरजीए इंकानी दायनमां धोळना टाकोर साथे जे युद्ध कर्यु अने जेने परिणामे घायल बनी नागानी जमाननो आश्रय छेवो पड्यो ए नेमना माहम विना वीतुं केंट न वही शकाय, छनां

ते साहसदारा तेमनी वीरता प्रकाशमां आवी अने दिल्हीना वादशाही दरवारमां अपूर्व मान मळ्युं के जेने यशना एक मजबूत अंग तरीके छेखी शकाय, आम केटलीएक वखत साहसमां लाभ समाएलो होय छे. ए उपरान्त वसंतवर्णन, फागनी धमाल, श्रीप्मवर्णन अने गृहयुद्ध सवंधी कथा ए चार विषयोमांथी आदिना त्रण सर्वोपयोगी तथा आनंदजनक छे अने चोथो गृहयुद्धनो विषय मात्र युद्ध अर्थे प्रयाण करवा उत्सुक वनेला राजाओना हिन माटे दाखल करवामां आव्या छे.

वीशमा तरंगमां—राजचन्द्रसिंहजोनुं जोथपुर परणवा जवुं, त्यां आवेली वादशाही वराननी स्पर्धामां हळवदने मळेळुं मान तथा यज, वीजी पांच जगोए थएलां राजचन्द्रसिंह-जीनां लग्न अने तेनाथी पृथोराज आदि ९ कुमारोनी उत्पत्ति, राजचन्द्रसिंह्जीए जामना रुक्तर साथे करेली लहाइ अने तेमां मेळवेली विजय, वादशाही सूवा खान अजीजीकोका साथे थएली राजचन्द्रसिंहजीनी ग्रुलाकात, पोताना चोथा क्रमार अभेराजजीने श्रीमान राज चन्द्रसि हजीए आपेली थान तथा लखतरनी चोवीशो, वादशाही सूवा साथे अणवनाव थतां सिहाणी नरेश अदाजीनुं सहकुदुम्य हळबद आवी राजसाहेवने आश्रये रहेवुं, कुमार पृथीराजजी, अने ठाकोर अदाजी वचे उद्भवेलो कलह, शरणागतने निह सताववा राजचन्द्रसिंहजीए कुमारने आपेलो वोध, पृथीराजनुं रीसाइ बढवाण जबुं अने त्यां पोतानी स्वतंत्र राजधानी स्थापवी, पराक्रमी क्रुमार पृथीराजे छुँटेलो वाद्शाही खजानो, वाद्शाहे पृथीराजनुं मस्तक छेदी लाव-नारने म्होद्धं इनाम आपवा वावत काढेळुं जाहेरनामुं तथा वढवाणपर मोकलेळो फोज, ए फोजे प्रथम कुमार पृथीराजने विश्वास आपी चाटशाही खंडणी उचराववाने विशे तेओनी मदद मागवी, पृथीराजे ए फोजमां सामेल थइ सिंहाणीपर चढाइ करवी अने अदाजीतुं मस्तक कापी तेनी सती स्त्रीथी ञापित थवुं, वीजे मुकामे वाटशाही सूवाए पृथीराजने केट करी अमदावाद लइ जवा, वाद दगाथी नीपजेलुं तेओनुं मृत्यु, पृथीराजना अवसान सवंधी मतभेद, फटाया कुमार आशकरणजीनुं राजचन्द्रसिंहजीना स्वर्गगमन पछी हळवदनी गादीए वेसचुं, बढवाणमां पृथीराजजीना परलोक प्रयाण सर्ववी थएली जाण, सुरतानसिंहजी तथा राजाजी वगेरे कुमारोने लड् पृथीराजजीनां राणीनुं लखतर नरेश अभेराजजीने आश्रये रहेवा गढ-थान जर्नु, हळवदना राजआशकरणजीना भयथी अभयराजजीए तेओने अन्य स्थळे जवा सूचवर्यु, चोटीला आणटपरना काठी मुळुजीनी मददथी मुरतानसिइजी वगेरेनुं पोताने मो-साल जांबुडे जबुं, तेओने थएली जाम लाखाजीनी मुलाकात, कचेरीमां नागी कटारपर थाप मारी सुरतानसिंहजीए वतावेछुं शोर्थ, तेओने महाराजा जामे आपेछी मदद, महीया तथा वावरीया लोकोने मारी राज सुरतानसिंहजीए गढीआपर जमावेलो अमल, हिमंतकतुनुं वर्णन, राजसुरतानसिंहजीए जारी राखेळुं हळवदथी चळगण तथा फरी लडवा उद्यत थण्ला महीया लोकोने मारेलो मार, शिशिर ऋतुनुं वर्णन, गढीआपर रहेला वांकानेरमां वाह्यळथी मुसमृद्ध वनेला राजसुरतानसिंहजीनो राजधानी योग्य एक नवुं शहेर वसाववानो मनोरथ,

शाह्वावा वगेरे त्रण महात्माओनुं गढीआ नीचेनी स्पशानभृमिमां रात्रि निर्ममन करवा रोकावुं, राजसाहेवे जोएलो तेओनो अद्भुत चमत्कार अने तेमांना शाहवावानी सलाहथी मच्छु अने पताळीया वच्चे वसावेछुं वांकानेर, राज्यनी आवादी, राठोड राणी प्रतापवा रीसाइ पोताने पीअर गएलां होवाथी तेमने मनाववा राजसुरतानसिंहजीनुं इडर भणी प्रयाण, इलवदनी फोजे भीमगुडानां ढोर वालवां, राजसाहेवनुं वारे चढवुं, भयंकर लडाइ, राजम्रर-तानसिइजीनुं अनेक दुःमनोने मारी रणमां पडवुं अने ए स्थळनुं " सुरतानसिंहजीनुं रण " ए नामे प्रसिद्ध थवुं, उक्त समाचार सांभळी इंडरमां राटोडराणी प्रतापवानुं सती थवुं तथा तेमनी साथे सखीभावना अपूर्व स्नेह्ने लीधे श्रीमाळीवाह्मणनी पुत्री सुरजवाइनुं वळी मर्दुं, राजक्रमार मानसिंहजीनी न्हानी उम्मर होताने लीधे तेओने तख्तनशीन करी स्वर्गस्य सुर-तानसिंहजीना लघुवन्धु राजाजीए राज्यनो कार्यभार चलाववो, राजखटपटने लीधे राजाजीनुं रातीदेवळी जबुं अने त्यांथी खोडुमां राजदरवार वांधी पोताना वापदाटानी राजधानी वढ-वाणना मालिक वनवुं, राजमानसिंहजीए म्होटा थइ हळवद साथे राखेळुं वळगण, तेओने त्यां रायसिइनी आदि कुमारोनो जन्म, ऌणसरीआ भायात कलाजी तथा सवळाजीनी वहा-दुरी सर्वधी स्वरूप वयान के जेना जेवी वीरता आजसुबी जन्मेला विरला क्षात्रवीरोएज जणावेली छे. पृथीराजजीनुं इत्तान्त राजखटपटमय छतां शोर्यथी भरेलुं छे, अने तेमना पिताश्री चन्द्रसिंहजीए पाटवीक्रमारपरनो प्यार छोडी आश्रये आवी रहेला सिंहाणीनरेश अटाजी उपर वतावेलुं ममत्व प्रशंसापात्र हे. आ तरंगनी शरुआतमां एक वावत खास ध्यान खेंचनारी हे, वादशाही वरातनी स्पर्थामां इळवद जेवुं न्हानुं राज्य कोइ रीते टकी शके नहि, परन्तु लींवड शाखाना राजपृते राज्यनो उतारो छुंटावी थोडे खर्चे पोताना मालिकनी कीर्तिने फेलाववामां जे कार्यकुगळता वापरी छे ते आजकाल राजाओ पासे रहेनारा मानपात्र जनोए अनुकरण करवा लायक है अने तेमां राजाओए पण राजचन्द्रसिंहजीनी माफक म्होद्धं मन राखवानी जरुर है, थान लखतर बढवाण तथा बांकानेरनी राजधानी कोणे अने क्यारे स्थापी ए बावत पण आ तरंगमांज हे, वांकानेरना मृळपुरुप राजमुरतानसिंहजीए जाम लाखाजीना राजद्र-वारमां नागी कटारपर थाप मारी बनावेळुं शीर्थ, तेना वंशजोने माटे गौरवमुचक है, शाहबाबा वगेरे महात्माओंनी चमत्वारिक वार्ना पण वांचवा जेवी है. एवा वचनमिद्ध महान्माओं आ हळहळता पालिकालमां मळवा मुख्येल है, कलिकालना आरंभने तो त्रण हजार वर्षी उपरांत थड गयां, परंतु आज बरतां सो वर्ष पहेलांना, अने सो वर्ष करतां पांचमो वर्ष पहेलांना मन्त्यो आयुप्यमां. वलमां अने वचनिमिद्धमां घणे दरको चित्रआता हता, आज जेवुं काले निह होय, अर्थात जेग जेम जमानो बहेनो जरो नेम तेम असन्य आदि कल्टिना मुभटो प्राणीमावन विशेष प्रमाणमां पराभव प्रमाख्या विना रहेशे नहिः राजनुरतानिमहजी समस्यायी धतां तेनां इटरवाकों गणी प्रवापदा मनी धयां तेनी साथे मखीभावना अपूर्व मनेहथी श्रीमालीब्राह्मणनी धुषी पण बली सुर तो ते जाज दिवस सुधी झालाकुळमां एक देवी नगीके पूजाय छे, धन के प्रा-पनो भारत आप्या विना यस मळी सकतो नथी, जन रनेही खातर प्राण आपवाँ ए कोकथी-

ज वनी शके छे, स्नेह, छज्जा अने मननी द्रहता आदि देवी गुणोनो अत्यारे तो नद्दन लोप थएलो जोवामां आवे छे, परन्तु ए गुणो वीजरुपे तो क्यांडकज रहेला होवा जोइए. समय आव्ये ए ज्यारे प्रफुद्धित थइ सर्वने शोभायमान करशे त्यारेज दुनियाने फरी सत्ययुगनुं भान थशे.

एकवीशमा तरंगमां--राजरायसिंहजीना कुमार चन्द्रसिहजी उर्फे चांटाजीए वहादु-रीथी इळवदने हाथ करी त्यां त्रण वर्ष पर्यन्त चळावेळी स्वतंत्र सत्ता तथा वोंबना गराशीओ हरभमजीए वांकानेरीआमां प्रवेश करी लींवाळा नामनुं गाम भांगतां तेने आसोड तथा मच्छना मध्यप्रदेशमां मारेलो मार, राजचन्द्रसिंहजीना पाटवीक्रमार पृथीराजजी उर्फे सरतानजीनो गादीए वेटा वाट निःसंतान स्वर्गवास थतां न्हानाभाइ केसरीसिहजी के जेओने वणझारा नामनुं गाम गरासमां मळेळुं इतुं तेने प्राप्त थएली वांकानेरनी गादी, हुवा भाषात गजसिंहजीए वनावेला विष्णुपकाश नामना ग्रन्थ सर्वथी हकीकत, केसरीसिंहजीना कुमार राजभारोजी, तैमणे वाहुवळथी काटीओपर बेसाडेलो भय, तेओना रोटलानी चोनरफ फेलाएली तारीफ, राजकोटना टाकोर वावाजीराजनुं अभिमान उतारवा राजभाराजीए कम्मर कसवी, अने सर-धार सुथी पहोंची साजडीआली गामने भांगवुं, पाटवीकुमार राजरायसिंहजीनो राजभाराजीनी इयानीमांज स्वर्गवास थतां तेमना कुमार केसरीसिंहजीनुं दाटाना परलोक प्रयाण पछी तख्त-नशीन थवुं, ए केसरीसिहजीने त्यां कुमार चन्द्रसिहजी उर्फे डोसाजीनो जन्म, राजडोसाजीनी वहादुरी, तेओए रामपरहाथी, दसाथी तथा हालारमांथी करेलुं ताजण, माणकी तथा शींगाळी घोडीओनुं हरणः जूनागढ, जामनगर, तथा धांगधाना लक्करोनी एकीसाथे वांकानेरपर चढाइ: राजहोसांजीए लढाइमां ए त्रणे राज्यनां लक्करोने पोकरावेली तोवाह, राजहोसाजीनुं हामण, अने तेथी तूटेली कैंक काटीओनी कम्मर, जतवाडाना जतलोकोनी भोगावे भेळा थई राजडोसाजीए खेंनेली खाल, वाद भीमोरानुं भांगवुं, नाजाखाचरनुं न्हासवुं, वढवाणना टाकोर पृथीराजजी साथे अमदावाद तरफ फेरो मारवा राजडोसाजीनुं जबुं, मार्गमां वचा जमादारनां माणसो साथे थएछं धींगाणुं, अने तेमां जमादारना जमाइ इसवभाइनुं मोत, राज होसाजीना शीर्य साथे द्या आदि सद्गुणो, त्यारवाद राजवखतसिइजी अने तेओनो वहोळो परिवार, तेओए पुत्रीओ तथा पुत्रपौत्रादिकना विवाह वगेरेमां खर्चेलुं पुष्कळ द्रव्य, जनाना सहित म्होटा आइंवरधी करेली विविध यात्राओ, नागावावा सबंधी हकोकत, राजवखतसि-हजीनी धर्मपर श्रद्धा तथा देनगी, तेओना वस्त्रतमां थएछं थान साथे धींगाणुं, पाटवीकुमार जसवंतसिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेमना कुमार वनेसिंहजीए ढादाना परलोक मयाण पछी राजपदवीने धारण करवी, राजवनेसिंहजीनुं वृद्धिवळ, तेओए करेळी राज्यनी आवादी, पाड-लना धींगाणा सवंधी इकीकत, दिल्हीमां भराएला वादशाही दरवार वखते राजवनेसिंहजीने मळेली ९ तोपोनी सलामी, तेओ नामदारने प्रसंगोपात्त थएली अंग्रेज अमलदारोनी मुला-कात, विविध यात्राओंमां राजवनेसिंहजीए करेलां पुण्यटान तथा तेओंनी उत्तम कार्यकीर्तिनं वर्णन करवामां आव्युं हे, तेमां ओगणीशमी सदीना लगभग पोणा भाग स्थी मारपछाड

अने थींगाणानी वावतज जोवामां आवे छे, आगळना राजपूतीने मुखे वेसचुं गमतुं निह अने तेम वेसी शकाय तेम हतुं पण निह, कारणके वाहुवळमां एकवीजाथी चिंढआता गणावानी सहुकोइने चाहना हती, पाते स्वाधीन करेळी जमीन कोड छड़ न जाय अने वीजानी जमीनने दवाववी एज श्र्वीरानुं परम कर्नेन्य हतुं, दातारी पण ए वस्तते विशेष जोवामां आवती एनुं कारण मात्र एटछुंज हतुं के एक श्र्वीर सांज पड्ये पांच पंदर गाम मेळवी शकवा साम्धर्य धरावता हता तेने वे गाम कोडने आपी देवां ए भारे वात न हती, अत्यारे नयुं मेळवी शके एवा समय तो रह्यो नथी, अने छे तेमांथी पण साम्राज्यनी सेवा अर्थे म्होटा भागनो न्यय थतो जोवामां आवे छे, माटे हालना राजाओ उटार मटी कृपण वनी गया छे एम कहेवुं सर्वधा भूल भरेछुं छे, आ तरंगमां राज भाराजी तथा डोसाजी वगेरेनां चिरत्रो वीरतामय होवाथी खास वांचवा लायक छे, झालावंशमां उत्तम किवओ पण थएला छे ए वताववा वांकानेरना भायात गजसिंहजीए रचेला विष्णुपकाश नामना ग्रन्थ सर्वथी हकीकत आपवामां आवी छे, राजवखतसिंहजीनुं थार्मिक तथा न्यावहारिक द्यान्त अने राज वनेसिंहजीनी कारकीर्दी पण अति उत्तम प्रकारे आळेखेली जोवामां आवे छे.

वावीशमा तरंगमां—राजवनेसिंहजीने त्यां जन्म पामेल कुमार अमरिसहजी न्हानी उम्मरना होवाथी राज्यपर बेनेजमेन्ट, जुढा जुढ़ा मेनेजरो अने तेओए करेलां वांधकाम तथा सुधारावधारा, कुमारश्री अमरिमहजीनुं अभ्यास अर्थ राजकोट राजकुमार कॉलेजमां टाखल थवुं, वांकानेर स्टेटने वीननजराणे दत्तक लेवानी नामदार ब्रीटीश सरकार तरफथी मलेली सनंद, कुमारश्री अमरिमहजीनो शायपुरे थएलो नवंध, तेओश्रीए मानवंता वामासाहेव साथे करेली प्रभासपाटणनी यात्रा, कॉलेजना वेकेशनमां महावलेश्वरनी मुसाफरी, शायपुरे थएलां हथेवाले लग्न, रटेट मेनेजर गणपतराव लाह साथे करेली हिन्दुम्थाननी पहेली मुसाफरी, वॉलेजमांथी मुत्त थवुं, डावटर दीनशाह वरजोरजी साथे हिन्दुम्थाननी वीजी मुसाफरी, कुमारश्री अमरिमहजोए जोएलां उत्तम स्थलो अने तेनुं वर्णन, श्रीयुन् हेन्कोकसाहेव साथे घरेलो युगेपनो प्रवास, युरपनां मल्यात स्थलो अने तेनुं वर्णन,

त्रेवीशमा तरंगमां—विलायतनी मुसाफरीएथी पथायां वाट कुमारश्री अमरिमहत्तीने मळेली न्यतंत्र राज्यसत्ता, राजरोंट थएलां हथेवाळे लग्न, छप्पननो भयंकर दृष्काळ, रंख्यनतुं रक्षण, त्यारवाद राजमादेवश्री अमरिसहजी वहादुरनां उमदा जीवनचित्रनी अंदरवळाना
तथा मांटाना विवाहनुं दर्णन तेथी थएलां मंतानो, यात्राओं अने तेनां वर्णन, श्रीमान
राजकोट टाकोर सादेवश्री लाखाजीराज साथे माजमादेवे करेली काव्मीरनी मुमाफरी,
त्यांना दर्शनीय स्थळोनुं वर्णन, स्टेटमां थएलां वांधकाम, राज्यनी प्रावादी, अने
प्रजाने पलेलो संतोष वर्गरे अनेक वादती वर्णवी छेवटे श्रीमान राजमादेवनुं नामदार गहेनगाह वर्गर्ज । पीपयना राज्याभिषेक प्रसंगे दिल्हीदरवारमां प्यार्गुं तथा
त्यां थएली के सो आर् र ना इल्कादनी प्राप्ति पने एथी उद्भवेली प्रजा-

वर्गमां हर्ष तेमज उक्त मसंगे कवीश्वरे आपेल आशीर्वचन वगेरे वावत छे, तेमां मुख्यत्वे करी महाराजा राजसाहेवना विशुद्ध चरित्रने अंगे विस्तारपूर्वक लखाएलां युरप अने काझीरनां वर्णनो खास वांचवा लायक छे; महाराजा राजसाहेवे दरेक मुसाफरीमां शुं शुं जोयुं अने अनुभन्युं ते तमामनी तारीखवार नोंथ पोतानी हायरीमां करेली होवाथी अने ते प्रवास करवा इच्छता अन्य राजाओने उपयोगी होवाथी किवराजे तेओश्री पासेथी उक्त हकीकत मेळवी अने तेमां अन्य हिन्दी ग्रन्थोने आधारे उभेरो करी ते ते स्थळोए जवाना मार्ग तथा जवामां जोइतां साधन तथा लागनो समय वगेरे एवं तो सरलताथी विवेचन कर्युं छे के जेना वांचवाथी जाणे ते ते स्थळोनुं आपणे प्रत्यक्ष अवलोकन करता होइए एवो भास थया वगर रहेतो नथी। मारा दश वर्षना जातिअनुभवथी हुं सत्य कहुं छुं जे नामटार राजसाहेव जेवा तेजस्वी अने न्यायपरायण राजा काठिआवाडना दरेक स्टेटमां होय तो हुं नथी धारतो के प्रजाने कंइपण पुकार करवानो समय प्राप्त थाय एज तेमनी कार्यकुशळतानो सुदृह पुरावो छे।

चोवीशमा तरंगमां—राजहरपालदेवजीना दितीय पुत्र मांगुथी आरंभी विद्यमान महा-राणाश्री दोलतिसंहजी वहादुर सुधीनो सिवस्तर गद्यमां अने संक्षिप्त पद्यमां इतिहास लखवामां आन्यो है. गद्य अने पद्य वन्नेनी वाक्यरचना उत्कृष्ट है तेमज युद्ध आदिनां वर्णनो तेमां पण प्रसंगोपात्त दाखल करेलां देखाय है.

पचीशमा तरंगमां — रायपुर, नरवर अने कुन्हाडीनो, छवीशमा तरंगमां सादडी तथा देलवाडानो, सत्यावीशमा तरंगमां ध्रांगधानो, अठ्यावीशमा तरंगमां लखतरनो, ओगण- त्रीशमा तरंगमां वढवाणनो, त्रीशमा तरंगमां झालरापाटणनो, एकत्रीशमा तरंगमां सायलानो; अने वत्रीशमा तरंगमां चुडा, थला, रामपर, मेघपर, अजमेर अथवा अदेपर, अने शादुलका भायात वगेरे क्यारे क्यारे जुदा थया अने तेने क्यां वयांनो गरास मळ्यो वगेरे समस्त इकी- कत प्रथम गद्यमां अने पछी संक्षेपे पद्यमां एवी तो सरस रीते उखाएली छै के अमुक छन्दो याद करवाथी अमुक राज्य कोणे वसाव्युं अने ते पछी क्रमवार कोण कोण अने केवा पुरुषो थया ते सरलताथी समजी शकाय अने वीजाने पण समजावी शकाय.

तेत्रीशमो तरंग ग्रन्थना उपसंहारस्पे लखाएलो छै. अने ते मेहकप्लृति न्याय ग्रुजय त्रेवीशमा तरंग साथे सबंध राखनारो छे, तेमां वांकानेर नरेश राजराणाश्री अमरसिहजी वहादुरे करेली द्वारिकानी यात्रा, काठिआवाडना माजो एजन्ट हु थी गवर्नर मे. स्लेडनसाहे- चने हाथे करावेल "सर ज्यॉर्ज सीडनहाम हाइस्कुल" नुं खातग्रहूर्त, वांकानेरना माजी कारभारी नाथाभाइ अवीचलदास देशाइने नामदार ब्रीटीश सरकार तरफथी मलेलो "राव-वहादुर" नो इल्काव, राजमहेलोमां गोठवेली वीजलीनी वत्तीओ चालु करवानुं यंत्रालय कच्छना महाराओश्री खेंगारजी वहादुरने हाथे खुल्लुं ग्रुकवानी थएल किया, महाराजा राज-संहिवनुं नामदार ब्रीटीशसरकारने महायता आपवा युद्धभूमिमां जवुं, दी. ढुंबरीश्री तएनकुं-वरंवा साहेवनों मयुरभेजना महाराजासाहेव साथे थएलो सवंब, महाराजा राजसाहेवनुं कुश-

ळतापूर्वक युद्धयात्रा करी वांकानेर पथारवुं, वफादार प्रजावर्गमां व्यापेलो आनन्द, दी. ढुंब-रीसाहेवनां लग्न अने तेनुं वर्णन तथा नामदार बीटीशसरकार तरफथी वेसता वर्षने मांगलिक प्रसंगे महाराजा राजसाहेवने मळेल वे तोपनुं विशेष मान तथा ऑनररी केप्टननी महान मान-सूचक पटवी, अने सालगिरा महोत्सव प्रसंगे भराएला दरवारमां महाराजा राजसाहेवे करेली नवाजेश, अने प्रजानी प्रसन्नता साथे कवीश्वरे आपेल आशीर्वचनधी ग्रन्थने संपूर्ण करवामां आव्यो हे के जे सर्वया प्रशंसनीय है.

> ली. वारोट केशवलाल श्यामजी. स्व. जामनगरना राज्यकवि.

शुद्धिपत्र.

áā.	लीटी-	श्रशुद्ध.	्र शुद्ध-
१	u	श्रितिमननी	अति मननी
१	१०	नित्यने	नित्य ने
२	3	भाव	भावे
3	१९	बलवाळा	वलवाळा
3	२०	नर	नर
8	Ę	जशवंत	जशवंत
५	१६	लालनी	लालजी
G	8	करणने	करण ने
•	१५	मायाळु	मयाळु
6	१०	राजर्षि	राजर्षि
९	११	पुरन्दर	पुरन्दर
Q	१५	अरिमट	श्चरिमद
१०	१३	शिशुपाल.	शिशुपाल.
१७	ų	वक पुरी	वऋपुरी
२ २	v	धट्यो.	घट्यो
२३	१८	छ्रवरसाल	ञ्चत्तरसाल
२४	१०	प्रताप शाळी	प्रतापशा की
३४	१९	सवने	सर्वने
३५	18	तेम तेम	तेम
३७	۶	श्रने	एने
36	88	सर्वे	सर्वत्र
३९	२३	न	न
४१	8	वृह्तसाम	बृह न्साम
४३	6	जवानो	जवनो
४३	१२	पुर	पुर,
४३	१४	होय	होय,
88	२२	गंधवोंनु	गंघवींनुं
४५	३	मृकंडतणाजे	मृकंडनणा जे

_				
3	~~~~ 84	···········	कर्या	कर्या.
Š	४६	ų	श्रोखखाता	श्रोळखावा
} }	४७	१७	दारिध	दारिद्य
Ş	५१	3	ग्रूरवीर	शूरवीर,
Ş	५१	v	वंधाएना जत्रुवाळो,	त्रधाएता जत्रुवाळो निर्धन होय छे,
ş				उंचा जत्रुवाळो
}	५३	१९	वहु	वहु
}	५५	१५	उन्न न	उन्नत
Š	५९	२०	तियक्तुं	तिर्यक्तुं
Š	६०	१०		पिशाच प्रकृतिनो मनुष्य चंचल, मलिन
Ş				देहवाळो, वहु वकनार प्रने स्थूल
ş				अंगोधी युक्त होय छे.
ξ	६६	९	ब्रह्मचां री	न्न झ चारी
ž	र ७	8	तेनी	जेनी
ş	६७	२०	सपित	मपत्ति
Ş	ပ္	१९	कन्यान	कन्याने
Ę	७१	१८	द्वितीया	द्वितीयाना
Š	७२	२१	करवुं	करन्नु,
Š	७५	२२	कार्य किया	कार्यनी किया
ş	७५	२३	धे नुं नुं	<u> धेनु</u> नु
ş	७६	ઠ	भाव	म ल्यभाव
ł	82	લ્	वरार	वहार.
Ş	८७	१८	सहोना	गडोना
ş	66	१३	धेर	घर
}	66	ફ બ	देशी	देशो,
Ş	Sc'	Ę	किनरा	विज्ञगे,
}	९०	ઠ	पोताना	पोतानी
Ś	०,०	لإ	प्रमद	प्रमदा एके नथी एस मानुं.
ξ	0.0	१२	जायांधी	जोबाबी.
\ \	0 0	६५	प प	थपे
į	00	5 64		स्राहादगारम.
(०, ६	33	-	शतको.
•	65	٩	प्रान्द दायद	लारदरावर,

ENTER THE PROPERTY OF THE PROP

~~~~·	~~~~	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~
98	२०	पिनाकथागि	पिनाकपाणि
९५	१४	ब्रह्मवन्धुने	<b>ब्रह्मवन्धु</b> ने
९९	१४	थयो छे.	थयो छे
१००	२०	ऋलि	ञ्जलि,
१०३	Ę	अर्घ	अर्घ.
१०३	११	गग्तां	गणता
१०३	२६	चप्तला	चत्पलावत.
१०७	१३	खद	स्रेद
१०७	२५	बे	<b>8</b> ₹
१०८	Ę	पातानी	पोतानी 🖟 🧍
११०	Ę	क्यां	क्रयां
११३	v	एकसर	एक सर.
११३	6	पगुच	प्रमुच
११३	१८	पसन्न	<b>प्रस</b> ञ
११५	१०	सुमेघा	सुमेघा 💲
११६	?	बे.	<b>छे</b> ,
११६	v	कहे छे	कहे छे.
११९	G	छे.	छे
१२०	<b>?</b> Ę	क्वच	कवच
१२१	९	इदवाकुना	इत्त्वाकु.
१२३	१८	चार चार	चार
१२३	२१	पद वंदन	पदवंदन
<b>? ? ?</b>	२५	पाद प्रचालन	पादप्रचालन
१२४	१७	करता	करतो
१२४	२२	जगतन	जगतने 🗧
१२५	2 %	सार्रं	सारु {
१२५	<b>ર</b>	कृशीकार <b>ना</b>	कृपीकारनां }
१२८	5 8	<b>क्युं</b>	कयुं
१३२	<b>3</b> 8	प्रेमीश्रोना	प्रेमी श्रोना
<b>१</b> ३४	L	सिंहासनपर	मिहान <b>नपर</b>
१४६	२५	जधनवार्ळा	जघनवाळी 🗧
388	११	विद्याना	विद्याना
१५ <b>१</b>	२२	क्या	कया }
~~~~	·~~~	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

de appropries de la company de

१५८	~~~~ ૨૪		वेश्याश्रो
१५९	२३	धान्यना	धान्यनां
१६२	v	फळ, •	फळ,
	१ ५	ऋन्या द	क्रन्याद्
१६६	१०	वषा	वर्षा
१६८	१३	" नंदावर्तक "	" नंदावर्तक, "
१६९	१६	के.	के:
१७०	8	कोणमां	कोग्।मां,
१७१	१२	नाम.	नामः—
१७१	२०	वधार	वधारे
१७३	१२	जेवा	जेवां
१७६	१०	प्रयम	प्रथम
१८१	१३	पृप्य	पुप्य
१८१	१४	पुनवसु	पुनर्वेसु
१८२	११	প্সাৰ-	श्रावे
१८२	१२	दर्ग.	वर्ग
१८४	ৎ	श्रतरे	श्चंतरे रोपाय ते
१८५	२०	वोदुं	व ोबुं,
१८६	86	श्रर्थे,	श्रर्ये, तथा
१८६	26	धींचोळा	र्हां हो जा
866	१९	पहोळाइवामा	पहोळाइवाळ '
989	१५	गरे	मद्दो
१९०	११	तटली	तेटली
१९०	२ इ	काष्ट्रन	काष्ट्रने :
१९३	૪	मध्यय	मध्यम
१९२	ક્ષ્	" दात '	'' वात, ''
16=	१५	गृह्मा	गृह्मा
१९४	-	त्रोवे ह	प्यावे हे
१८६	५	चन्द्र दिवाकर	चन्द्रदिवाकर
१०६	88	करी	क्री
६०,६	' उ	एन्द	रमें
\$0,0	7	असमान	यसमान.
\$ 9.00 	. ~~~~~	मदगुर्गा नुं	मर्गुरांन <u>ं</u>

~~~~~	····	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~		~~~~~~~
१९९	१०	मणिक	माणिक	•
१९९	88	थया	थयो	*
२००	8	भीमसेना	भीमसेनना	<b>}</b>
२००	ધ	स.रंगदेवे	सारंगदेवे	<b>\$</b>
२००	83	देवपाल	देवपाल,	<b>§</b>
२००	२१	धनुधर	धनुर्धर	ķ
२०१	१४	राजर्पि		<b>,</b>
२०१	१७	श्रजयभू गल.	श्रजयभूपाल,	<b>\$</b>
२०४	१९	सालण्देवजीने.	सालणदेवजीने	Š
૨૦૫	8	शुक्र	शुक	*
२०५	१२	चैश्या	^{अ.} ' वेश्या	*
२०५	23	मूपका	मूषकोना -	<b>\</b>
<b>२</b> ०६	१७	पूरण पितृत्र्यानुं	पूर्वाताः पितृत्रोनु,	\$
	8	त्तर्था <u>यु</u> लाज	लाजा	<b>}</b>
२०७	-			<b> </b>
२०८ २०९	१ <i>०</i> <b>१</b> ५	श्रासनना करवा.	श्रसनना करवा.	Ş
२०९	<b>२</b> ४	नरथर	नरथर,	•
<b>२१३</b>	3	<b>युक्</b> ल	शुक्ल.	Zie Sei
२१४	१२	थता,	थता	\$
२१४	१३	सिक्थ	सिक्थ,	3
२१४	१६	त्रिशिश	त्रिराशि	*
<b>२१</b> ६	. ·	उत्पत्ति स्थान	उत्पत्तिस्थान	*
२१८	१	विद्व	विद्ध	\$
२१८	२०	कंकपची.	ककपत्ती,	₹
२२२	C	देव पत्न्यश्च	देवपरन्यश्च	Š
२२२	6	देव मातर	देवमातर	3
२२३	१३	कुवेर	कुचेर	•
२२४	२५	पत्र छेद्य	पत्रछेद्य	Ś
२२५	२४	कुचुमार योग	कुचुमारयोग	ţ
२२५	<b>२</b> ५	वार्वाशम <u>ी</u>	वावीशमी	a the forest services, for the cases services
२२६	લ	तेनां	तेना	} 5
२२८	<b>१</b> ६	वासठमी	वासठमी	}
२३०	<b>१</b> २	<b>श्रमृतसिंस</b> जी	थ्यमृतसिंहजी	<b>ξ</b>
····	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	~~~ ·

Every construction of the construction of the

२३०	१८	गगेववजीना	गगेवजीना
२३१	२२	उक्त,	उस्र
र्इर	દ	वन्नेना	वन्नेना
२३२	१४	जेमां	जेमा सूर्य
२३३	6	विष्टादिक	विष्टादिक
२३३	१८	कुकबुट	कुकुट
२३५	Ę	थाय हो	थाय हो.
२३५	v	पीडित	पीडिन,
२३५	५ ३	च्या स्फोदित.	ऋास्फोटित.
२३६	Ŗ	छिकर	द्धिकर,
२३८	१९	<b>चपद्रय</b>	उपद्रव.
२३९	\$	प्रो	तो
२३९	¥	छत्रथी युस्त	छत्रधी युक्त
२३९	१४	वेचाएल	वचाएल
२३९	२१	शासननुं	शाङ्चनतुं
२४६	१५	खजर	खजन
२४६	२२	कृमि	कृमि,
२४५	१०	ऐवा	एवा
२४८	१६	वोले	योले
२,५,२	१०	<b>म्मामीने</b>	स्वार्गाने
२५३	६	स्त्राभाविक	स्वाभाविक.
<b>२५३</b>	२२	बोलेतो	वाले तो
२५४	९	वन्ने	वन्ने
<b>३</b> ५५	9	नत्र	नेत्र
द्पप	१९	प्रतिष्वनी	प्रतिध्वनि
इ.५६	६१	स्यर्श	स्पर्श
<b>२५</b> ६	8 É	दात	दान
इ५्ड	88	नमधी,	त्रमधी
२५८	80	टुर्भिहिनो	दुर्भिचनो
२५०	६५	द्यप्टि	इन्हि
<b>२६०</b>	\$	नाबुध	त्रायुव,
\$ £ 5	१४	लप् ी	ल्परी
\$3\$	<b>: 8</b>	<b>ो</b> ले	द्योग

~~~~	~~~~	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	4~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~
२६३	१६	दोपन	दोपने
२ ६५	१	श्रीझालावंशवारिषि,	द्वादशतरंग,
२६५	३	स्थित.	स्थित,
२६६	१	चूचवे छे	सूचवे छे.
२६६	६	मुखयी	मुखथी
२६६	v	कृपालने देवजीने	कृपालदेवजीने
२६७	१२	शत्रु मूर्ति	शत्रुनी म्रित
२६७	१९	वधारी	वघारी
२६८	9	यौव	यौवना
२६८	१४	गोवरर्घनमिहजी	गोवर्धनसिंहजी
२६८	१७	रणजीतीसहजी	रगजीतसिंहजी
२६८	२१	सासन	शासन
२६९	६	गादी	गादीए
२६९	25	चेमराजजी	चेमराजजीए
२७१	બ	प्रसन्न होय	प्रसन्न होय,
२७४	१०	स्तिग्ध	स्निग्ध,
२७४	१६	घूळ	धूळ,
२७५	6	द्राग्रे	द्रोस
२७७	ş	नरर्थक	निरर्थक
२८३	8	वृद्धियी	वृद्धिथी
२८३	१४	वत्तनी	वृत्तनी
२८४	36	पवन	पवन
२८४	२२	वाळको	वाळको
२८५	९	धरनी	घरनी
२८९	ų	माट	माटे
२८९	१४	वर्णा	वर्गान
२९०	१६	ए,	τ
२९०	२४	स्यानोने	म्थानोने
२ ९२	११	निर्मि—	निर्मि—
२९२	ঽঽ	सभूह	म मुह
२९२	र्र	तना	तेना
२ ९२	२ ३	क्यु	कर्युं.
२९२	२३	पेहला	पहेला

BUTER OF THE THE PARTY OF THE P

BANDON OF THE PARTY OF THE PROPERTY OF THE PARTY OF THE P

२९२	२३	पिष्णु	विष्णु
२९२	२०	धमार्थ	धर्मार्थ
२९३	र्३	शकता	शकतो
२९८	२	रहनार	रहेनार.
२९८	१३	श्ररजदार,	त्र्यरजदार
२९८	१६	दुडने	दडने
२ ९ ९	१५	कुडनो	भुडनो
३००	R	राखवा.	र।सवा
३००	१४	जबु.	जवु
३०१	ц	दु:ख	हु : ख
३०१	२०	परले कनु	परले।कनु
३०१	२४	दु:ख	दुःस्व
३०३	٩५	घ्या त्	त्र्यान
३०८	१३	ला रहे,	लता रहे
३०९	8	शकते।	शकतो
३०९	१०	स्त्र मे	श्रम <u>े</u>
370	8	<i>छ</i> ,	दे
३१२	3 8	हवाथी	हवा यी
३१२	१४	क्यचवाळा	कवचत्राळा
इ१इ	7.7	<u> पृथवीपर</u>	पृ भ्वीपर
३१४	દ	पागे छे	पामे हे
इ१७	२४	सुशीवनामना	सुर्याव नामना
इच्छ	50	स्राध	सवि
\$ 7, 5	१	जळ झरण्मा	जळझर ् मा
इस्य	१८	'रेज्स्बतर	शेचस्कर
इर्ड	\$ 8	विस्तरर्ण	विम्नीर्य
इच्छ	* *	भयसोस	श्यो ए
६६८	٧	दयाच्या	दधाव्या
इंग्ट	₹ €	दर्जित्प	वजलेप
६३८	::	टनार्ग	दतावी
	र्४	च्यान्	ऋर्य:न
٥٠ <i>;</i>	÷ Ę	हवारगी	द्वारनी

३२९	१९	वनाववी	वनाववी
३२९	२१	म्रकुटिनी	भ्रकुटिनी
३३१	१	श्रमामिका नुं	श्रनामिकानु
३३३	१२	लाबु	लांबुं
३३५	२	वन प्रवेश	वनप्रवेश
३३५	१३	गुरुश्रीन	गुरुश्रीने
३३९	१२	ललाट.	ललाट,
३४० '	२१	त्र्यादिथ	त्र्यादिथी
३४३	2	छे	छे.
३४४	११	कुककुट	कुकुट
३४४	१४	दीपलच्चग्	दीपलच्तरण,
३४५	२१	कर्ण पिशाची	कर्णपिशाची
३४५	२५	पकितदूषकने	पंक्तिदूषकने
३४७	२१	वाहनो	वाहनो
३४९	१४	नि ु डी	निर्गुंडी
३५०	१५	नीवे	नीचे
३५४	१४	श्रजुनवृत्त	श्रर्जुनवृत्त
३५७	8	श्रन	श्रने
३५७	१६	শ্ব ন	श्रने
३५९	१	मधा	मघा
३६०	१४	प्रवळ	প্ৰব্ৰ
३६३	१२	धरावती	करावती
३६३	१३	कोट	कटि
३६५	६	मेळे	मेळ
३६७	१	श्रन	श्रने '
३६७	४५	हाइ	होइ
३६७	२४	शके छे	शके छे.
३६९	6	यागथी	योगयी
३६९	á 8	सभजी	समजी
३६९	१५	मळनारा	भळनारा
३६९	25	जम	जम 🧢
३७०	\$ 8	श्रापात्तिने	श्रापति

and the contract contract and the contract contract and the contract and the contract and the contract and co

३७१	የ	पंचभद्श	पचंदश
३७१	२७	उत्पा त्तथी	उत्पातधी
३७४	१०	मुखं	मूर्य
३७५	१	काचवा	काचन्रा
<i>કૃ</i> છપૂ	v	स्वाघीन	स्वाधीन
३७६	२१	ষ্পাৰ	त्र्यावे
३७५	२३	ऋरता	करता
305	` २	कार्याकार्यने	कार्याकार्य न
३७६	6	श्रभ्युत्वान	श्रभ्युत्यान
३७६	u _t	मित्र	मित्र
३७६	१५	सपनी	सर्पनी
306	Ξ.	शुक्रो	शुको
३७८	Ŷ o	पेठ	पेठे
३७८	१६	उपजाबनार	उपजावनार
ئىت. مىلاد	२३	इलती	भूनती
इद्ध	२५	ध्रम्रनी	धूम्रनी
३८१	२६	अत्रशेष	श्रवरेखी
३८२	२्२	त्राह्य	<u> </u>
3,78	१	श्चापना	प्रापना
१८४	१९	वंचावेला	यनावेला
१८४	२०	चित्र	বিশ্ব —
३८४	२२	तमजना	समजता
३⊏४	२५	भानना	भादना
284	ક બ	लाध्या	लाया
३/५	१५	जता	जता
} = U	२३	दारवल	दाग्यन
३८६	Ę	बेटेला	वंदेना
315	ર્ દ	घोबार	घोडार
506	۲,	'त्रधंदेवना	श्रथदेव्दना
£0 c	१६	दिश्चि	दक्तिए
508	5,	धनुष	धनुष
507	٤ ٧	ग्र प्रनिय	राष्ट्रीर
793	\$ 6	दि समगाए	विकासील

~~~~~	~~~~~	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~
३९२	ર ૬	वनाववुं	वनाववुं
३९२	30	काक	काक,
३९२	२२	होय	होय
३९२	२२	जाग्वु	जा <b>ण्</b> वुं
३९२	२३	शकें छे	शके छे
३९५	ε	तेनु	नेनुं नाम
306	É	नीचे जनारी,	नीचे जनारी, उपर जनारी,
३९८	२१	वाण्थी	बा <b>ग्</b> रथी
३९९	२५	कार्सिड	कार्यसिद्धि
४०१	२४	समुख	सन्मुख
४०३	6	वर	स्वर
४०५	१५	भवत्	भवत
४०६	<b>१</b> १	तमे साभळो	तमे वे सांभळो
8 c é	२१	झीप्सायाम्	वीप्सायाम्
४०६	२७	त्रूतम्	त्रूतम्
४०७	९	इस्	इण्
४०९	3	तमे पाथरो	तमे वे पाथरो
308	ş	यास्रो	साभो
४०९	ঽ	वे	
४०९	ર	जाग्रो	खाद्यो
४०९	२१	व	
४१०	१	शूशन	शूरान्
४१०	8	<b>राडगोबडे</b>	खङ्गो वडे
४११	१	<b>धोडाश्रो</b>	घोडाश्रो
४ <b>१</b> १	6	गृह्णीत	गृह्णीत
४११	१९	<b>उत्तरस्याः</b>	<b>उत्तरस्याः</b>
४११	36	पूर्वे	पूर्व
४१२	२्	शस्त्रानो	शस्त्रोनो
४१२	१५	गृह्वीत	गृहीत
४१२	११	पथी	पछी 
४१५	8	पचमदश	<b>पं</b> चदश
४१६	१०	वश्या ==	वस्या वेरे
४१९	१	वेर	4K

over over.	<b>~~</b>	~~~~~~~~	OCC 1001001 351-551-551
४२०	4	देव मन्डिरोन	देवमन्दिरोने
४२०	९	रिभाववा	रिभववा '
४२२	११	पुष्यथी	पुप्पथी
४२३	१५	कृपीवलोए	कृपीवलोए
४२६	१७	माट	माटे
४२९	ર્ષ	क्यो	कयो
४३३	१२	मास	मांस
४३३	१५	माश	मास
४३४	११	युद्ध	युद्ध
856	દ	तथा	×
४३९	६	वनावजो.	वनावजो.
८८४	?	पोदश	पोडश
४४१	90	झाई	झाइ
४४३	१	पोदश	पोडश
४४७	Ð,	श्रधम	श्रधम
288	१	हाये	होय
288	१४	होवायी	होवाधी
४४९	१२	र्वेपनी	वर्पनी
४४९	१९	सध्यमा	मध्यमेमा
४५३	٦	नथी	नेची
४५,३	ų	पेप ग्रहन्तनी	पेपग्एडन्त
868	१४	স্থাৎবা	স্থাপনা
• ५६	2 6	भारत वर्षाय	भारतवर्षीय
3,04	•	ञने धने	त्रने
<b>,</b> 80'6'	इ. ५	दगलमा	दगलमा
४६३	۷	न्हाना,	न्हाना
४६ <b>२</b>	१३	दळेलु	वळेलु
१६६	२३	जेना	<b>लेना</b>
१३६	ų	वर्षा	कर्या
६२४	₹8	विणाञिला	न्पागला
8 6 0	•	<b>ए</b> किना	र्शाहरा
१६५	٤	निवरूप,	शिदनप.
८५५	१६	Ŷ.	t

	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	<del>~~~</del> ~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	was an	·cc
४६६	२०	हाय	होय	}
४६७	१६	अ रे	त्र्यने	ş
४६७	२०	गन्थिमय	<b>यन्थि</b> मय	Ş
४६८	१५	वहिलाभ	वहिर्लोम	Š
४६८	१६	मांगतो	मागतो	ž
४६०	२१	श्राम प्रवेश	<b>श्र</b> ग्निप्रवेश	} {
४७०	6	परोच्नगा	परोच्नमा	\ \ \
४७०	60	पुरुपोना	पुरुषोनां	{
४७०	२१	पारितोपकथी	पारितोपिकथी	Ş
४७१	१३	गृह्वाटिकामाविहार	गृहवाटिकामा विहार	<b>}</b>
४७१	१४	कुमारोना	कुमारोना	ξ ₹
४७२	२४	हाहाकार	हाहाकार	3
४७४	२२	कार्यलिङ्गानुमान	कार्यलिङ्गानुमान	3
४७५	8	लिङ्गानुंमान	<b>लिङ्गानुमान</b>	{ }
४७६	v	पियासा	पिपासा	<b>}</b>
४७६	११	निमित्तानुरुप	निमित्तारूपा	Ş
४७६	१४	श्रकारण	संकारण	<b>\$</b> <b>\$</b>
४७८	१६	परीप	पुरीष	ξ
४८०	ર્	हरिन्द	हरिद्र	<b>Ş</b>
४८०	3	वाळा	वाळा	<b>}</b>
४८०	१३	मनुष्यने	मनुष्यने,	<u> </u>
४८३	<b>१</b> ३	राखे	राखे, सन्ध्या	}
४८५	<b>2</b> 3	सन्या	4	•
४८६	8	लीध इर	लींबे छे	,
828	ა <b>შ</b>	छ <b>वा</b> कुं	थ बाकु	
820	२३	^{पाञ्च} वळनी	वळनी	
४८९	<b>ζ</b> ε	रोगीना	रोगीना	
१८९	१३	जेन	जेने }	,
१८९		<b>जठा</b>	जुठा	
४८९ ४९०	<b>ર</b> ફ દ	भागवी	भोगवी	
४९४	११	मेळवव <u>व</u> ु	मेळवबु	
४८४	રે દ	प्रथक	प्रथम (	
J . J	-		The second secon	

४९७	१५	पोताना	पोतानां
४९८	Ġ,	परलाकनी	परलोकनी
५०१	२्०	दूघ	दूध
५०१	२३	वांदळांछो	वादलांस्रो
५०४	१८	<b>उत्का</b>	डल्का
५०७	ε	मेघसदृशवर्ग	मेघसदृशवर्ण
५०९	n	इयामवर्ण	श्यामवर्ण
५००	११	दिशा गा	दिशामां
५१०	१६	वकरी	वकरी
५१६	१९	जाय हे	जाय छे
५२१	१८	जनुनी	जननी
५२१	१९	<b>उप</b> जी	डपजी.
५२२	१९	केटलाएकना	केटलाएकनां
५२२	१९	क्वच	कवच
५२३	G,	धया	धया
५२५	१८	सात घामथी	सात गामथी
५२५	२३	¹¹ शंखेशर "	" शंवेसर, [?] '
५२५	२३	"कारेला '	" कारेला, "
५२५	२३	'' कटुटा "	" फटुटा, "
५२६	२	तेमा	तेमा
५२६	3 8	१४५०	१४५०
५२७	28	ચયો.	धयो,
५२८	9	हे.	हे
421	62	शादित	सहित
458	Ę	पहयो,	पहची,
५२९	ξ	लाग्या	लाग्यो,
426	55	सारेदसुबरमाए	माहेदहद्वरदाए
4,३ ०	16	न्गव्या	द्माच्यां
६,इ ६	६६	द्रवाङ्गण्यं।	रस्तज्ञाश्रो
الم تر قر	₹	<b>र</b> ता	हर्ना
५६२	v	नया	गना
६ ह ह	33	रेंद	एउँ
439	<	रटलाङ	<u>ਦੁ</u> ਰਾਵ

५३८	३	श्रने	×
५३८	१७	राजभुव मां	राजभुवनमां
५४०	३	जोइ	जोइ कछुं
५४०	१७	वे श्याहुंदो	वेश्याहुंदो
५४०	२०	ज्ञालाना	झालाना
५४०	२१	मानिंह्जीए	मानसिंहजीए
५४१	२०	वादशाइनी	वादशाहनी
५४५	ц	घिगेरे	विगेरे
५४६	२०	<b>जाळ</b>	झाळ
५४७	१५	सिंहा	सहित
486	ર	ढीला	ढीली
५४९	६	प्रराक्रमथी	पराक्रमथी
५४९	१४	सिन्धु रागने	सिन्धुररागने
५५१	6	राजरायसिंहजी	राजरायसिंहजीए
५५१	२६	श्रलकृत	<b>श्रतं</b> कृत
५५३	દ્	चोत्रेर	चोमेर
५५४	२	वसंत <b>न</b>	वसंतना
५५४	२५	कुन्द	×
<b>५</b> ५६	१६	नयनाने	नयनोने
५५९	९	हता	हतो.
५६०	6"	चुडाकर्म	चुडीकर्म
५६०	१९	योद्धश्रोनां	योद्धान्त्रोना
५६०	२०	करां	करमा
<b>५</b> ६२	१७	कमळानाज	कमळनाज
५६३	9	समी रे	समीपे
५६३	१९	नवाह्नव	नवपञ्चव
५६३	२६	तपायमन	तपायमान
५६५	8	<b>एकाए</b>	एकाए
८६८	२५	प्रलंब	प्रलंब
<b>५</b> ६६	११	रायसिंहजी रे	रायसिंहजीने
५६८	\$	कत्तागा	कत्तामा
५६८	10-	रहेली	रहेला
५६८	\$ 3	वन्ने	वन्ने

५ ७ १	१३	युद्दभूभिांज ।	<b>युद्धभूमिमा</b> ज
५७१	१४	" हरिरर काव्य "	" हरिरसकाच्य "
५७८	દ્	सूर्येसिंह्नीनां	सूर्येसिहजीनां
५७८	3.6	राजचन्द्रभिंहनी	राजचन्द्रसिंहजी
५ ७९	¥	चाुकनो	चावुकनो
प्षद	१४	স্থাপ ।	<b>त्राश्रय</b>
५८०	१०	তী	जो
५८२	२	स्वार्थवृति	स्वार्थवृत्ति
५८६	ų	निकळा	निकळी
८्द्रष	१६	ि यतमाने	प्रियतमाने
なこの	२४	विरह दुःखने	विरहृदुःखने
20%	Ę	मारयी	मारथी
५९०	<b>૧</b> ૫	उत्तप	उत्तम
पूर्	v	पता	पिता
६०५	१	वीशन् तरंग	एकविशन् तरग
६०६	१०	सतानजी	सर्तानजी
६०७	2	वीशत तरग	एकविंशन् तरग
६१७	8	ह्जार	हाध
६२२	६१	प्रशसाना	प्रशसाना
६२२	२२	राणी	राग्री
६२६	ů	दे नातो	देवातो
६२८	<i>1</i> 5*	राज्योगी	राज्योनी
६३०	11.	ह्ता	ह्वी
६३१	65	वार्साट्ववाना	दाइसाहेचवाना
६३६	بر	काठि चाबारनी	काटिप्रावाडनी
६३४	S	त्माना	त्माना
६३५	Ę	दाजटीयु	चीज्डीपु
६३५	33	दि स	दिव <b>स</b>
554	5,3	वोरासी	चोरानी
556	۷.	लासग	लगभग
536	\$ e	लगा	त्राम
ξ=¿	* 0	ददते	इसदे
6200	ۍ ډ	<b>हा</b> स	इसस

	·~~ -,.~~~	~ ~ ~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~
६४०	vo	गोपक	पोपाक
६४१	१६	वनेसिइजीना	वनेसिहजीना
६४६	4	मन	मना
६४७	१३	एफ	एक
६४८	१२	भेसरीत्रा	मेसरीत्र्या
६५१	१	ाक्रया	क्रिया
६५१	११	न गि	नवी
६५२	१४	सत्पुरुषानो	सत्पुरुषोनो
६५७	<b>२</b> २	त्र्यानद	<b>ऋानंद</b>
६६४	<b>१</b> ३	रिवारे	रविवारे
६६५	6	श्रमा	श्रमो
६्७७	१२	सेप्रेगेशन	सेप्रेगेशन
६७९	२१	शुशोभित	<b>सुरोभित</b>
६८२	२४	ग्लॅनस्टवना	ग्लॅडस्टनना
६८५	२१	एमानु	एमानुं
६८५	२२	म्युझी <b>म</b>	म्यु <b>झी</b> श्रम
६८५	२२	हिरटरी	हिस्टरी
६८७	२०	बुश्य ।	बुश्यम
६००	9	त्थाथी	त्यांथी
६९३	9	जावा	जोवा
<b>७०</b> ६	६	नेपर्न	मेसर्स
७११	६	किवताश्रो	कवितास्रो
७२ ह	ર્	वत्रके	व्रत्रके
७२६	१२	गिरमां	गिरमें
७२६	१९	श्राय	श्राये
७२७	¥	सुखभाकर	सुखमाकर
७२७	११	कहते	करतें
७२९	१०	फालको	फालको
७२९	₹3	करहे लो	कर हेलो
७२९	१४	करहे लो	कर छेले।
७३१	9	महोत्म	महोत् <b>म</b> व
७४१	१९	<b>श्रह्</b> थिश	<b>श्रह</b> िंश
७४२	११	<b>ष्ट्राशीर्वय</b> न	श्राशीर्वचन

७४२	१८	घनपांतको	वनपतिको
७४५	3	धारीने	<b>धारी</b> ने
७४९	<u> </u>	रिदे	।री <b>द्ध</b>
७५०	२्२	घरको	धरको
७५१	१५	र्कि	कि
<b>७५</b> ३	१२	मखवानकुलभान	मखवानकुलभानु
७६८	દ	मरा	मरी
Sx2	१ष	ढाळाव	ढोळाव
७६०	१४	रीत	रीत
<b>७६३</b>	१४	मनापति	सेनापति
७६३	2,3	गाइल	माइल
<b>७६</b> ४	25	लहरीनो	लह्रीनो
<b>७६</b> ६	4	पढे छे	पडे छे
<b>७६</b> ६	L	पहोचा	पहोच्या
€22	8	उंटनी	उंदनी
رد رد وم	१४	लगवाथी	लागवार्था
د دولم	१५	पांचमा	पाचमा
५७५	१६	<b>मकात</b> नी	मक्राननी
טטט	v	पंदरमां	पंदरमा
SUU	१३	राख	×
०८०	२०	पुष्पोवाळुं	पुष्पोवाळुं
220	१ १	আন্ত	স্মান্ত
575	8.8	रतशा	रतनशा
466	१९	राव्या	राल्यो
490	१५	होटा	सोरटा
७९१	\$ eq	वसुधायराधी	वसुपा यशपी
<b>७९५</b>	ů	त्त्र है	द्यात्र है
<i>40 4</i>	કૃષ	दे सी. हाइ नो	ने. सी. छाट ह रो
290	v	परन	संदर्भ
Sec		सद्गुरोधा	स्दगुरोदी
	16	फरी	दर्भ
5 ; 8	\$	धीमरजीनो	दीस <del>ली</del>

المعادية والمعادية والمعاد

			the appearance and the same approximation and
८१८	80	वरशाजीन	वरशाजीने
252	१४	" श्रीयद्मवतजीवनचरित्र "	" श्रीयशवंतजीवनचरित्र "
८१९	२	वि. स.	वि. सं
८१९	?३	त्या	त्त्यां
८२१	१५	वसत्सिद्जी	वखतसिंहजी
८२२	२३	यशवतसिंहजी	यशवंतसिंहजी
८२७	<	पच्छमममा	पच्छममां
८२८	१४	पछा	पाछा
८३१	6	साहवेने	साहेवने
<80	१९	वामलेज	घामलेल
<b>८</b> ४०	२०	वीर	घीर
८४३	२३	नापे	नामे
,८८६	९	भगीनी	भगिनी
<b>८</b> ४८	११	धचन	वचने
८४८	१६	हर्ष	वर्ष
८५०	२४	<b>उ</b> र्पक्त	उपर्युक्त
८५१	१३	नरहनदासजी	नरहरदासजी
८५६	१५	ल् <b>छमन</b> सिंहजीन	तछमनसिंहजी
८५९	१७	<b>कालावाळी</b>	<b>मालावाडी</b>
८६३	१२	चुडावतोमा	चुडावतोमा
८६३	१३	सिघाव्या.	सिधाव्या
८६४	8	करीके	क्रीने
८६६	२३	बीकावत	<b>वीकावत</b>
८६८	ર	धारी	घारी
८७०	l	माहिप	महिप
808	<	<b>ज</b>	ज <b>ई</b>
८७१	११	थयां	थया
८७१	<b>१</b> ४	गुग्शार्का	गुणशाळी
८७१	२२	<b>त्रजुंसिं</b> हजी	<b>श्र</b> जुनसिंहर्जा
८७१	२२	राखी	रास्त्रें
८७१	२३	जाळवी	जाळवी
८७४	२३	तापण्	नोपण्

SAN A MANALA ANTARAMAN WINDOWN WINDOWN

	2 2 2		
८७६	ş	<b>'</b> प्राळखी	श् <del>योळखी</del>
< 15.00 kg	3	गगा	गया
८७५	8	<b>मालावा</b>	भालामंड
उ७६	ን	कर्या	कर्या
300	१९	करवी	करवाने
668	२३	वारीनी	वारीगरनी
८८३	१७	शौर्यथी	शीर्घ
८९२	9	राजन्हि	राजचिन्ह.
८९६	११	पातानी	पोतानी
८९६	१७	मनगा	मनमा
<9.6	80	π্	एने
८९८	۶	पड हे	पडे छे
<b>९</b> ११	6	महपातिए	महिपतिए
९१२	२५	चंदनसिंहजीना	चंदनसिंहजीना
९१४	•	जननक	जननके
996	6	निमलहेडान	निमबहेडाने
996	१२	<b>लधु</b> चन्धु	लघुत्रन्धु
९१८	१७	शार्थ	साथ
९२१	5	कानोठवाळा	कानोटवाजा
९२१	२३	त्रधु	त्रपु
९२३	<b>?</b> •	धने प्रने	<del>प्</del> रने
९२४	ц	न्यायाभुव-	न्याप्रभुव-
९,२४	६६	<b>ठ</b> धु बन्धु	लघुवन्यु
९३६	8 8	भादराजनवाद्रा	भादराजनवाला
९२६	\$ 4	<b>ट्</b> ता	ह्वा
९२६	₹०	<b>ब</b> या	चर्या
5=,4	18	विरद	दिरद
९२५	६७	न्त्रीर	ची
3,79	<b>{</b> 8	रिसायन	रियामन
616		सद	सर्व
62 c	\$ 2	दात	दाट
८६२	S.	गर्द	राई
655	:	47	47 14 m 1

~~~~~	· ~~ ~~ ~~	······································		
९३३	38	त्रसीतशो	श्रामित्रणो	~
९३४	१९	धमसाग्	घमसाण	
९३४	२०	वाहिनीमा	वाहिनीमा	
९३५	ų,	झीलानी	झालानी	
९३५	<	दुःख हरण	दु:खहरण	
९३५	88	चितिपाल,	चितिपाल,	,
९३६	१०	भार्लीने	भाळींने	
९४१	6	स्वर्गवास	स्वर्भ	
९४१	२०	राखी	राखीं	1
९४२	બ	राग	गज	
९४२	ર ફ્ર	मेवाही	मेवाडी	
९४८	ø	पोताना	पोतानां	
९४९	२४	राजचन्द्रसिह्जीण	राजचन्द्रसिह्जीने	
९५१	<	तेना	तेनां	
९५५	ર્ષ	पहोंच्यो	पहोच्या	
९५७	१०	राज्यना	राज्यनो .	3
९५८	3	वाघलानी	वायेलानी	Š
९५८	१ष	राज्यन	राज्यने	3
९ ६४	२	रथळे	स्थळे	3
९६४	२२	सुरतान	सुल्तान	Ş
९६५	२४	तजी	तर्जी	} }
९७२	१७	कुवरीश्री	कुंवरीश्री	}
९७५	१०	मागर्णीयी	माग णी थी	ş
९७६	દ	नामना	नामनां	}
८ ७६	१९	कुवराने	कुवरी -	man was well as the comment of the c
९७८	१५	भालावाड वीरमगाणना,	वीरमगाम भालवाडना	{
960	२	भूमि	भूमिने माटे	}
९८१	9 ધ	मालीकानो	मार्लीकीनो ——~	}
९८७	<i>\$8</i>	चाह्न.	चाह्यी नम्र	ξ
९ ८८	74 S	नभ्र	^{गत्र} गायकवाह	********
९९६	ع 90	गायाकवाड	पृथी	3
९९९	१४	पृयोरा	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	3

Burn in more than an incompanied in the constant of the consta

·~	·~~~~	~~~~	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	
	९९९	२६	एची	एथी
	१८०२	ε	वढवाढ	वढवास्प
	१००२	२३	पयन्त	पर्यन्त
?	१८९३	6	वाइराजवानी	वाजीराजवानी
	१००८	فر	हाथ कडी	ह्।थकडी
	१००८	९	वासीपुर	वासी पुर
	१००८	१२	सॉ	मेĭ
	१०१६	२४	जीतना	जीतना
	१२१८	o,	तन	तेने
	१०१८	२२	मणाराणाए	महारागाए
,	१०२२	१६	सधी	सुघी
}	१०२२	१६	राख्या	राज्यो
Š	१०२३	१५	म्बार्थमत ज	न्त्रार्थ माटेज
}	१०२३	१८	श्रा थृनना	श्राथूनना
Ş	१०२४	१९	राजनकाज	गञ्यकाज
}	१०२४	२०	महाराज रागा	राजराखा
}	१०२५	११	एला	एल î
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	१०२७	হহ	हजीए	जीए
{	१०२९	4	विघ	विषे
}	६००६	१५	वे	कें
}	१०३०	१५	होय ?	होत
7	१०३२	G	स्वार्धासाहि	म्बार्थमिद्धि
*************	१०३३	१२	वरी	<del>र</del> ी
ş	१०२४	ξ		पानयो
Ş	१०३६	96	भारत वर्षमा	भारतद्यमा
	१०६७	₹,\$	प्रयाग पर्हा	परलोकप्रयास् पत्नं
}	•	15	नागरोस्ना	गागरोल्ला
•	·		ींना ३ हार	at at the fact of
}	_	¥ c	दरा	करी
\ {	1080	U	षातुहर	ग्रहें
	¥ C U T	: 8		
5044	2002	\$ £	न्य पुरस	नुपट्ट <b>े</b> न

१०५०	१७	सामन्त,	सामन्त.
१०५४	ર	शेषगालजी	रोपमालजी
१०५५	ş	<b>धीगा</b> सु	र्धांगासुं
१०५७	3 0	कुवरोने	कुंवरोने
१०५८	? 3	धर्म धुरंधर	धर्मधुरघर
१०५८	१७	चोपे	चोपे
१०६२	१७	थया,	थया.
?083	દ્	जुवानसिंहजी	जोरावरिमहजी ्
१०६३	१ <b>o</b>	कुवरी	कुंवरी
2083	<b>२</b> २	शामजी	शामजीने
१०६४	É	ठाकोह	ठाकोर
१०६४	१६्	चोवशी	चोवीशी
१०६६	९	भाग्यद्वीने	भाग्यदेवीने
१०६७	ર્	प्रचािजी	प्रतिपच्ची
१०६७	18	एक	एज
१०६७	१७	कपडां	काप्डां
१९६८	3	जोघोजी	जोघोजी
१०७२	ų	सुरभिनु	 सुरमिनु
१०७२	१८	श्रावीयो	<b>आवीयो</b>
१०७६	३	करी	करों
१०७६	९	द्वितीयातग्गा	द्वितीयातगा
2000	৩	ह्वा	ह्वा
१०७८	२१	सुरभितगा	<b>सुरभितर्</b> णी
१०८०	१२	नधुरामनी -	नथुरामनी
१०८१	99	उद्धि मही	उदविमहीं
१०८३	२१	ध्वात श्रारि *	^{द्} वातश्चरि
१०६६	१२	स्थलमहिं	<b>स्थलमां</b> हि
१०९१	६	मुख सुधावर	<b>मु</b> खसुधाधर
१०९६	१३	वारण वैरीमहीं	वारणवैरीमही
११०३	३	पनकी	पानकी
११०३	۹	द्याग श्रम	श्रम श्रंग
~~~~~~	~~~~~	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	remerce emberch in reservoir in the contract of the

The company with the second of the company of the company of the second of the second

			and the same of th
2 4 6 5 5 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6 6	~~~~ ? 0 ? 3 3 8 9 E	टारी वे को चटाय विप्रन के छगित हुको छस्त्राजी छापश्रान	हारीवेकी बढाब बिप्रनेके ख्रगनिहर्को इस बाजी ख्रापश्रीने
(11 1) 3) 3) 3) 3) 3/ 3/ 3/ 3/ 3/ 3/ 3/ 3/ 3/ 3/ 3/ 3/ 3/			



, additionad and additionad and additionad and additional additiona



48.	चित्रीत्रोना वाळकोने धनुर्वेदनुं शिच्तण त्र्यापवा हरपालदेवजीतु महाराजा	
	करणपासे मानपूर्वक रहेवुं.	४१५
44.	हरपालदेवजीना शिष्योए महाराजा करणनी आकाचाथी करी वतावेला	
	धनुर्विद्याना श्रखतराश्रो, प्रसन्नयएला पाटग्पपतिए वधारेलो हरपाल-	
	देवजीनो दरज्ञो, अन्य राजकीय जनोना हृदयमां प्रकटेलो विद्वेपाग्नि,	
	कचेरीमां हरपालदेवजीना वाहुवळनी कसोटी, हरपालदेवजीनां भालां-	
	साथे तणाएली जाजमपर वेठेला श्रमीर उमरावोना उंघा पडीजवाथी	
	जामेलो हास्यरस, हरपालदेवजीनो क्रोध, करणुनुं गभरावुं, पाछळथी	
	शान्त्वन, प्रकट थएली सर्वधनी पिछाण, हरपालदेवजीप्रत्ये करण्नुं	
	सहोदर समान वर्तन	४१६
44.	शारदऋतुनुं वर्णन	४२०
46.	हरपालदेवजीनो वैभव, सोलंकीसुतानी स्थिति, पुत्री म्होटी थवाथी प्रताप	
	सोलंकीने थती स्रमाप चिन्ता, तेने शक्तितए त्रापेलुं धैर्य	४२३
५८.	वार्षिक पृथा प्रमागो खंजनदर्शन (दिवाळी घोडा जोवा) ऋर्थे निकळेला	
	महाराजा कर्णने राज हरपालदेवजीए संमळावेल खंजनदर्शनना विविध	
	प्रकार तथा तेना शुभाशुभ फळ	४२४
48.	महाराजा करणे राज हरपालदेवजीने एकान्तमां कहेली कष्टकथा, हरपाल-	
	देवनी हिम्मत, करणना राजमहेलमां वावरानोबूमाट, ए वावरासाथे हर-	
	पालदेवजीए करेलु वाहुयुद्ध, श्रन्योन्य मर्दनवडे थती उभयनी हारजीत,	
	शान्तिए श्रद्रश्यपणे राज हरपालदेवजीने श्रापेलुं उत्तम श्रोसाण, हरपाल-	
	देवनी हाक सांभळी वावरानुं हारवुं तथा वचाववाखातर स्मरण करती	
	वखते सेवामा हाजर थवानुं वचन श्रापी कायमने माटे करणना महेल-	
	मांथी विदाय थवु, राज हरपालदेवजीए राज्ञसमाथे करेला युद्धना श्रथाह	
	परिश्रमनेलीधे जुधातुर थवुं श्रने महाराजा करणनी पशुशाळामाथी वे	
	घेटा मगावी स्मशानभणी जवुं, काळीचतुर्दशीनी ऋंधकारमय वीहामणी	
	रात्रिनु वर्णन, हरपालदेवजीनी हिम्मत जोवा श्राद्रश्यपणे करेलो साथ, चिताना श्राग्निमा घेटानुमास शेकी शेकी हरपालदेवजीए जुधानु शमन	
	करवं, पाछळथी शाक्तिए हाथ प्रमारतां तेने पण उक्त मासना कवल	
	श्चापता जवुं, मास खलास थया छता राक्तिए हाथ लवाववो, हरपाल-	
	देवजीए हिम्मतथी पोतानी जाघ चीरी तेमांथी काढेला मांसनो कोळीश्रो	
	आपवो, शक्तिनी प्रसन्नता, बरप्रदान.	ध्२७
_	हरपालदेवजीने वरवानु वचन श्रापी शक्तिनुं श्रद्रश्य थवुं, हरपालदेवनु	
€0	हरपालदवजान वरवानु पपन आस साराउँ अप्रस्म यु एसाल राज	
	alle dia distante di	

	हरपालदेवजीनां तात्कालिक लग्न, लग्निकचा करावनार मसालीत्रा गा-	
	मना रहीश बाब्रणना बाळकने राज हरपालदेवजीए पोताना कुळगोरनी	
	पद्वी श्रापवी	४३५
€ ₹.	पाटणमा दिवाळी घ्राने तेनुं वर्णन	४३५
ĘŖ,	पैसता वर्षने प्रसंगे भराएलो महाराजा करणनो द्वद्वाभर्यो द्रवार, हर-	
	पालदेवजीए करेला उपकारनो वदलो स्रापवा करग्रनी इन्ते जारी, वीं जुं कांइ	
	निह लेता एक रात्रीमा जेटलां गामने गागरवेडा तथा तोरण वधाय तेटला	
	गामा पोताने श्रर्पण करवा हरपालदेवजीनु करणने कहेवुं, करणे करेती	
	ए वातनो स्वीकार, शाक्ति छने वावरानी सहायताथी हरपालदेवजीए	
	प्रेवीशनो गामने झापे वाधेला गागरवेडा तथा तोरल, करलने थएतुं	
	श्राश्चर्य नथा तेगे पोतानुं समप्र राज्य राज हरपालदेवजीने श्रापवु, हर -	
	पालदेवजीए तेमाना पाचमो गाम करगानी रागानि भगिनी तरीके काप-	
	टाना छापी बाकीना छढारमो गामना स्वतत्र मात्तिक वनवुं तथा	
	राविननी सलाह्थी पाटडीनी अंदर राजधानी स्थापवी	८ १५
६१.	शांरने सुसमृद्ध करवा तथा राजकीय वैभव वधारवा हाथी, घोडा ऋने	
	गाय श्रादि चतुष्पदनी खरीदी श्रर्थे देशावरमा मोक्लवा नियन करेला	
	माणसोने राज हरपालदेवजीए ते ते पशुत्रोनां चेत्रोनी तथा शुभागुभ	
	लक्षणनी ष्टापेली सबिस्तर समज्ती, वाद राष्ट्रमहेली नपा देनमन्दिरो	
	षथावी राज हरपालदेवजीनुं पाटरीना एक इत्तम प्रजापापक नरीके	
	प्रसिद्ध थयु	४१७
₹8.	शिदना प्रमावतार एरपालवेदजीनु नथा मनितनु परम्यर प्रममनीय वर्नन,	
	पुरप करता स्थीजातिनी उत्तमना, शाया केटला प्रमारनी होय है जने	
	ते केदी बनावदायी केदा फळ भाषे हो तेतु सन्तिम विदेवन, सुभग अने	
	ट्र्यंग पुरषना सच्चा, शदिनने रहेलो गर्भ, शिसान मोहार्जीनो जनम	
	नाने त्यारवाद प्रतृतामे लीवहीना मृद्यपुरप मासुनी, मारेगाननी नथा	
	पुरी डमावेनी डत्पति	8 देख
(4.	हरारोनी पीटाचे सरीवेला वृर्ध, हक्तुट, हा कारिका, सपूर नक्ष	
	थान णादिना णुनागुम तह्रा	८ ८६

	नारा करने लंबाबी त्रणे कुमारोने झाली लेवा, तथा तेत्रोनी साथे रमता	
	चारणना वाळकने टापली मारी आघे उहाही देवो अने त्यारथीज मक-	
	षाणा वंशनुं " झाला " एवी अवटंकथी प्रसिद्ध थवुं तथा राज्यना	
	दसोंदी चारणकुळतुं " टापरीआ " कहेवावुं	802
₹10.	राज हरपालदेवजीनी उपरामवृत्ति, तेत्रोए उत्तम ज्योतिपीना मुखयी सांम-	
	ळेली सनिस्तर मृत्युपरीचा	808
₹ 5,	राज हरपालदेवनी वीतरागवृत्ति	890
3	दिव्य, भौम अने आन्तारित्त नामना अनेक उत्पातोनुं विवेचन तथा तेनां	
	श्चभाश्चभ फळ, छत्र भंग करावनारा उत्पातनी उत्पत्तिथी पाटवीकुमार	
	सोढाजीने थएली चिन्ता, शक्तिनुं राज इरपालँदेवजी तथा पुत्री उमादे	
	सिंहत धामा गामने पादर पृथ्वीमां समाइ जवुं	४९८
wo	राज सोढाजीथी आरंभी शांतलजी पर्यन्त झाला नरेशोनी सांनिप्त इकी-	
	फत, शान्तलनीए शान्तलपुर वसावी त्यां राजधानी स्थापवी .	489
• १.	तेम्बोना विजयपाल श्रादि कुमारोए पोताना मामा वाघेला लूग्णकरण साचे	
	करेला प्रचंड युद्धनुं वर्णन, ए युद्धमां राज शांतलजी तथा तेना बे कु-	
	मारोनुं काम घ्याववुं, शान्तलपुर वाघेला ल्र्णकरणने हाथ जवुं, राज	
	विजयपाले पाछी पाटडीमा गादी स्थापवी	લવ १
63.	राज उदयसिंहजीसूधीनुं संचिप्त पृत्तान्त, ए उदयसिंहना पृथीराजजी तथा	
	वेगडजी नामना वे कुमार, चित्तोडना लाखारागानी कुंवरी साथे	
	थएलो वेगडजीनो सर्वंघ, वरातनु चित्तोड जवुं, राणानी मददथी फटाया	
	कुमारने पाटडीनी गादी प्राप्त थवी.	422
4.	पाटवी पृथीराजनुं राणा साथे व्हारवदुं, वेगडजीए पोताना वडीलबन्धुने	
	समजावी १२० गाम सिहत " थळा "नी जागीर श्रापवी, के जेना	
	वंशजो थळेचा झाला कहेवाय छे. त्यारवाद राज वेगडजीथी आरंभी	
	राज रणमलजी सूधीनुं वृत्तांत, मरुदेशान्तर्गत जालिनेर कोटडा नामना	
	गाममां परऐला राज रणमलसिंहजीनुं सासु वगेरेना श्राप्रहथी त्यां जवुं,	
	चोपाटनी रमतमां सोनगरा राठोडो साथे थएलो झगडो, राज रणमलतुं	
	केद पकडावुं, ए समाचार पाटडीमा पहोंचता पाटवीकुमार छत्रसालजीनुं	
	सैन्य सिहत त्यां जइ जालिनेर कोटडाने भांगवुं तथा सोनगरास्रोने भय-	
	भीत वनावी पितासहित पाटडी पधारवुं, राज रणमलसिंहजीना स्वर्ग-	424
	वास पछी छत्रसालजीए गढमाडलमा राजगादी स्थापवी	777
wY.	तेखोने त्यां जेतसिंहजी खादि तेर कुमारोनो जन्म, राज जेतसिंहजीए पो-	

	नारा करने लंबावी त्रणे कुमारोने झाली लेवा, तथा तेस्रोनी साथे रमता	
	चारगाना वाळकने टापली मारी श्राघे उडाडी देवो श्रने त्यारथीज मक-	
	वा णा वंशनुं '' झाला " एवी अवटंकथी प्रसिद्ध थवुं तथा राज्यना	
	दसोंदी चारणकुळतुं " टापरीत्रा " कहेवातुं	802
\$10 ₌	राज हरपालदेवजीनी उपरामवृत्ति, तेत्रोए उत्तम ज्योतिधीना मुखयी सांम-	
	ळेली सविस्तर मृत्युपरीचा.	202
₹ ⊆.	राज हरपालदेवनी वीतरागवृत्ति	४९७
	_	• ,•
\$ E.	विव्य, भौम अने आन्तरित्त नामना अनेक उत्पातोनुं विवेचन तथा तेनां	
	शुभाशुभ फळ, छत्र भंग करावनारा उत्पातनी उत्पत्तियी पाटवीकुमार	
	सोढाजीने थएली चिन्ता, शक्तिनुं राज हरपालँदेवजी तथा पुत्री उमादे	
	सहित धामा गामने पादर पृथ्वीमां समाइ जवुं	४९८
W 0	राज सोढाजीथी त्यारंभी शांतलजी पर्यन्त झाला नरेशोनी सांचिप्त इकी-	
	कत, शान्तलजीए शान्तलपुर वसावी त्यां राजधानी स्थापवी	489
• १.	तेस्रोना विजयपाल आदि कुमारोए पोताना मामा वाघेला लूणकरण सामे	
	करेला प्रचंड युद्धनुं वर्णन, ए युद्धमां राज शांतलजी तथा तेना वे कु-	
	मारोतुं काम त्राववु, शान्तलपुर वाघेला लू एकरणने हाथ जवुं, राज	
	विजयपाले पाछी पाटडीमा गादी स्थापवी	428
63.	राज उदयसिंहजीसूथीतुं संचिप्त वृत्तान्त, ए उदयसिंहना पृथीराजजी तथा	
	वेगडर्जा नामना वे छुमार, चित्तोडना लाखाराणानी छुंवरी साथे	
	थएलो वेगडजीनो सर्वंध, वरातनु चित्तोड जवुं, राणानी मददथी फटाया	
	कुमारने पाटडीनी गादी प्राप्त थवी.	५ २२
⊌ ₹.	पाटवी पृथीराजनुं राखा साथे व्हारवदुं, वेगडजीए पोताना वडीलवन्धुने	
	समजावी १२० गाम सहित " थळा "नी जागीर श्रापवी, के जेना	
	वंशजो थळेचा झाला कहेवाय छे. त्यारवाद राज वेगडजीथी श्रारंभी	
	राज रणमलजी सूधीनु वृत्तांत, मरुदेशान्तर्गत जालिनेर कोटडा नामना	
	गाममां परखेला राज रखमलिसहजीनुं सामु वगेरेना श्राप्रहथी त्या जवु,	
	चोपाटनी रमतमां सोनगरा राठोडो साथे थएलो झगडो, राज रणमलनु	
	केद पकडावु, ए समाचार पाटडीमा पहोंचता पाटवीकुमार अत्रसालजीनुं	
	सैन्य सिहत त्या जद्द जालिनेर कोटडाने भागवुं तथा सोनगराश्रोने भय-	
	भीत वनावी पितासहित पाटडी पधारवुं, राज रणमलसिंहजीना स्वर्ग-	
	वास पञ्ची छत्रसालजीए गढमाडलमा राजगादी स्थापवी	424
wy.	तेखोने त्या जेतसिंहजी श्रादि तेरं कुमारोनो जन्म, राज जेतसिंहजीए पो-	

ताना राघबदेव आदि बार बन्धुत्रोने	श्रापेलो विट्ट	लगढनो	गरास	के
जेना वंशजो हाल रायपुर तथा नरवर	वगेरे स्थळे ह	ब्रे. श्रमदा	वादना	बा-
दशाह श्रहमदशाहना शाहजादापर रा	ज जेतर्सिंहजी	ए करेलो	हली '	श्रने
ए वैरने लीघे करवो पडेलो मांडलगढ	नो परित्याग,	कंकावटी	ऊर्फे वृ	ुवा-
गढमां स्थापेली राजधानी.	****	•••		•••

७५. राज जेतसिंहथी राज वाघजीसूधीनुं संचिप्त वृत्तान्त, राज वाघजीय लूंटेलो जूनागढना नवाव बोडीआनो खजानो, नवाव साथे दुश्मनाइ, महाभारतयुद्ध, माण्सनी भूलने लीधे राज वाघजीय जनाना साथे करेला संकेतनुं विपरीत परिणाम, साडात्रणसो चात्र बाळाओनुं एकी साथे विशाळ कुवामां पडीमरवुं, कुवानो केर, वारहजार यवनोने मारी पांचहजार चात्रसुभटो साथे राज वाघजीनुं समरशायी थवुं, तेश्चोना पाटवीकुमार रायधरजीय हळवदमा राजगादी स्थापवी.

७६. केटलीएक श्राश्चर्यजनक कथा, फटायाकुमार राणाजीने राजगादी मळवी, पाटवीकुमार श्चजाजी तथा सजाजीनुं प्रथम मारवाड तथा पछीथी मेवा-डमां जवुं श्चने त्यां वहादुरीथी म्होटी प्रतिष्ठा मेळवी सादडी तथा देल-वाडा वगेरे रियासतोना मालिक वनवुं, दसाडाना मलेकबकसाथेना धींगाणामां राज राणाजीनुं मृत्यु, तेना पुत्र मानसिंहजीनुं हळवदनी गादीए वेसवुं.

अमदावादना वादशाह वहादुरशाहे म्होटी फोज मोकली हळवदने स्वाधीन करवुं, मानिसहजीए कच्छमां जइ " मानिकुवा " नामे गाम वसाववुं वथा पोताना निमकहलाल नोकर प्रागजीने साथे राखी वादशाहथी ब्हार-वढुं खेडवुं, तेनी पाछळ चडेली वादशाही वार, मानिसहजीपर पडेली महान आपित्त, ढेढलोकोए बुद्धिवळपूर्वक करेलो राज मानिसहजीनो वचाव, वादशाही स्वारोनुं चाल्याजवुं, वाद मरणीआ बनी खुद वादशाह हने मारवानो मनोरथ करी प्रागाजी साथे राज मानिसहजीनुं अमदावाद जवुं, मार्गमां मुशीवत, मेघलीरात्रीनुं वर्णन, सावरमतीने पहेले पार पहोंची किल्लानी श्रोथे उमेला राज मानिसहजीए सामळेलो वादशाह तथा वेगमनो संवाद, ए उपरथी तेओए करेली वादशाहने अरज, वादशाहना दिलमा प्रगटेली रहेम, तेना तरफथी प्रभातमांज राज मानिसहजीने हळवदना राज्यनी हकुमत पाछी मेळवी, हळवदमां राज मानिसह-जीनुं आगमन.

৬<<> राज्यनी दुर्दशा, नंदवाणात्रोनी नीचता, राज्यना हित अर्थे निमकहलाल

प्रागाजीए रचेली युक्ति श्रने तेमा त्रापेलो प्राणनो उपभोग, राज घेला-	
मानथी शरु थएलो जाडेजात्रो साथे दीकरीत्रो लेवादेवानो सवंघ, राज	
मानसिंहजीनो कैलासवास थता तेत्रोना पाटवीकुमार रायसिंहजीनुं हळ-	
वदनी गादीए वेसवुं	प्रक
राज रायसिंहजीना सद्गुणोनुं वर्णन, तेश्रोए इसरवारोटने वेलाख उपी-	
श्रा श्रापी वतावेली उदारता	५४२
राज रायसिंहजीनुं पोताना मामा धोळठाकोर जसाजीने त्या मिजमान वनी	
जवुं, मामाभागोजे जमावेली चोपाटनी रमत, दिल्हीथी द्वारिक। तरफ	
जती नागानी जमातनुं घ्रोळने पादर त्रावी नगारु वगाडवु, ठाकोर जसा-	
जीनो क्रोध, राज रायसिंहजीए ए कोधनु कारण पूछ्चु, पोतानी इदमा	
कोइने नगारुं नहि वगाडवा देवा तथा वगाडे तो फोडीनाखवानो जादव	
जसाजीए स्रापेलो जवाव, वाजीनुं वगडवु	५४५
राज रायसिंहजीए मामाने तैयार रहेवानुं आमंत्रण आपी हळवद जवुं	
अने हळवदथी सैन्य सहित पाछा ध्रोळने पादर आवी डंको वजाववो,	
ठाकोर जसाजीनो कोध, जाडेजास्रोना जवरा सैन्य साथे झालास्रोए करे-	
लो मुकावलो, युद्धनुं विस्तारथी वर्णन, छेवटे मामाभागोअनुं तुमुल युद्ध,	
ठाकोर जसाजीने रणमा प्राणरहित करी राज रायसिंहजीए मेळ-	
वेलो विजय.	५४६
वसन्तऋतुनु वर्णन, होळीनी शरुश्रात, राज रायसिहभीना दरवारमा	
फागनी धमाल, शृंगारमा वीररसनी सभावना	५५२
कोइएक चारणना उरकेरावाथी बोळठाकोरना मरणनु वैर लेवा आडेसरथी	
_	
	440
·	
तथा सत्सनागम.	450
	मानथी शरु थएलो जाडेजाश्रो साथे द्विक्पेश्रो लेवादेवानो सवंध, राज मानसिंहजीनो कैलासवास थता तेश्रोना पाटवीकुमार रायसिंहजीनुं हळ-वदनी गादीए वेसवुं

श्रीष्मऋतुनुं वर्णन, मठना महंत मकनभारथीने वादशाही वावनुं शीतल **54.** जल पीवानी श्रमिलापा, ए कार्य करवामां ऋन्यना श्रसमर्थपणाने लीधे रायसिंहजीने महंते करेलो निर्देश, पोतानां प्राण बचावनार महंतनी सेवा वजाववा राज रायसिंहजीए खेडेलुं साहस, वादशाही बागमां रात्रीने वखते तेत्र्योनो प्रवेश, बळनुं अभिमान राखनारा वादशाही वे एकात्र्योनी बेद्रकारी, वादशाही वावमां दाखल थएला रायसिंहजीनुं गुरु माटे जल भरवु, तथा पोते पण जलपान करी पादप्रचालन करवुं, एथी उठेलो वावमा शब्द, वादशाही एकात्र्योना कान चमकवा, तथा गाळोनी वृष्टि, राज रायसिंहजीए गुरुना वचनखातर सो गाळो सहन करी वाव-मांथी वाहेर निकळताज एकापर करेलो वामवाहुनो प्रहार एक एकानुं मृत्यु, वीजानुं पलायन, वादशाहने जाण, महंतनुं गभराबुं. ५६१ प्रभातमां मठनी श्रंदर दाखल थएला वादशाही दूतो, राज रायसिंह-<u>ح</u>ξ. जीनुं प्रत्यत्त वळ जोवा वादशाहे छूटो मूकेली एक मदोन्मत्त हाथी, राजमार्गमां माणसोनी भागाभाग, राज रायसिंहजीतुं निर्भयताथी सामे पगले चालवुं, हाथीए करेलो तेनापर मोरो, रायसिंहजीए ह्णेली हाथीने थप्पड, श्रार्तनाद करी हाथीनुं दूर हठी जवुं, वादशाहने श्राश्चर्य तथा पराक्रमी पुरुपपर उद्भवेलो प्रेम, प्रसंगोपात थएली पिछाण, हळवद नरेशने दिल्हीमा वादशाह तरफथी मळेलुं अपूर्व मान. राज रायसिंह-जीतुं हळवद आववुं, सर्वने आश्चर्य तथा आनंद. 454 श्रीमान रायसिंहजीए एक ज्योतिषीना मुखयी सांभळेली गृह्युद्ध सवंधी **८७.** कथा, ऋंते घाटीला पासे देदा रजपूती साथे थएली भयंकर लडाइमां तेयोनु काम याववुं, हळवदनी गादीपर तेयोना पाटवी कुमार चन्द्रसिंहजी. 450 राज चन्द्रमिंहजीनुं जोधपुर परणवा जवुं, त्यां स्नावेली बादशाही वरा-55. तनी स्पर्धामा इळवदने मळेल मान तथा यश, वीजी पांच जगीए थएलां राज चन्द्रसिंहजीनां लग्न अने तेथी पृथीराज आदि ९ कुमारोनी उत्पत्ति. ५७५ राज चन्द्रसिंहजीए जामना लश्कर साथे करेली लडाइ अने तेमां मेळ-32. वेलो विजय वादशाही सूवा खान श्रजीज कोका साथे थएली राज चन्द्रसिंहजीनी मुलाकात, पोताना चोथा कुमार श्रमेराजजीने श्रीमान राज चन्द्रसिंहजीए स्रापेली थान तथा लखतरनी चोवीशी, वादशाही सूत्रा साथे अण्वनात्र थता सिंहाणी नरेश घदाजीनुं सहकुटुंच हळवद

> श्रावी राजसाहेवने श्राश्रये रहेवुं, कुमार पृथीराजजी श्रने ठाकोर श्रदाजी वसे उद्भवेलो कलह, शरणागतने नहि सताववा राज चन्द्रसिंहजीऐ

	कुमारने आपेलो वोध, पृथीराजनुं रीसाई वहवाण जबु अने त्या पोतानी	
	स्वतंत्र राजधानी स्थापवी	५७८
£0,	पराक्रमी कुमार पृथीराजे ल्रेटलो वादशाही खजानो, वादशाहे पृथीराजनुं	
	मस्तक छेदी लावनारने म्होदुं इनाम आपवा वावत काढेलु जाहेरनामुं	
	तथा वढवाणपर मोकलेली फोज, ए फोज प्रथम कुमार पृथीराजजीने	
	विश्वास त्रापी वादशाही खंडणी उघराववाने मिषे तेत्रोनी मदद मागवी	
	पृथीराजे ए फोजमा सामेल थइ सिहाखीपर चढाइ करवी अने अदा-	
	जीनुं मस्तक कापी तेनी सती स्त्रीथी शापित थनुं, वीजे मुकामे वाद-	
	शाही सूवास्रे पृथीराजने केंद्र करी अमदावाद लइ जवा, वाद दगायी	
	निपजेलुं तेत्र्योनुं मृत्यु, पृथीराजजीना मृत्यु सवंधी मतभेद, फटाया	
	कुमार त्राशकरणजीतुं राज चन्द्रसिंहजीना स्वर्गगमन पछी हळवदनी	
	गादीए वेसवु, वढवाणमा पृथीराजजीना मृत्यु सबंधी थएली जाण	५ ७९
88.	सुरतानसिंहजी आदि चार कुमारोने लइ पृथीराजजीनां राणीनुं लखतर	
	नरेश अभेराजजीने स्राक्षये रहेवा गढ थान स्रावदु, हळवदना राज	
	श्राशकरणजीनी व्हीकथी श्रमेराजजीए तेश्रोने श्रन्य स्थळे जवा सूचववुं,	
	चोटीला श्राणदपरना काठी मुळुजीनी मददथी सुरतानसिंहजी वगेरेतुं	
	पोताने मोमाळ जांबुडे जबु, ते श्रोने थएली जाम लाखानी मुलाकात	
	कचेरीमां नागी कटारपर थाप मारी सुरतानसिंहजीए वतानेलु शौर्य,	
	तेओने महाराजा जामे श्रापेली मदद, महीया तथा वावरीत्रा लोकोने	
	मारी राज सुरतानसिंहजीए गढीस्रापर स्त्रमल जमाववोः	4८३
९२.	हिमंत ऋतुनु वर्णन	५८६
९३.	राज सुरतानसिंहजीए जारी राखेलुं हळवदथी वळगण	५८६
९४.	राज सुरतानसिंहजीए फरी लडग उचत थएला महीया लोकोने मारेलो	
	मार, शिशिर ऋतुनुं वर्णन, गढीयापर रहेला वाकानेरमा बाहुबळथी	
	मुसमृद्ध वनेला राज मुरतानसिंहजीनो राजवानी योग्य एक नवु शहेर	
	वसाववाना मनोरथ, शाह्यावा वगेरे त्रण महात्मात्रोनु गढीत्रा नीचेनी	
	स्मशानभूमिमा रात्रि निर्ममन करवा रोकाबु, राजसाहेवे जोएलो तेस्रोनो	
	चमत्कार त्राने तेमाँना शाह्यावानी सलाहथी मच्छु त्राने पतालीत्रा वचे	
	वसावेलु वाकानेर, राज्यनी त्रावादी .	५९०
રુપ.	राठोड राणी प्रतापवा रीसाइ पोताने पीचार गएला होवायी तेने मना	
	वता राज सुरतानसिंहजीनु इडरभणी प्रयाण, हळवदनी फोजे भीम-	
	गुडाना ढोर वाळवा, राजसाहेवनु वारे चढवु, भयकर लडाइ, राज-	

98.

90.

९८.

सुरतानसिंहजीनुं अनेक दुश्मनोने मारी रणमां पडवुं अने ए स्थळनुं सुरतानसिह जीना रणने नामे प्रसिद्ध थवु, ए समाच।र सामळी इडरमां राठोडराणी प्रताप्रवानु सती थवुं, तथा तेनी साथे सखीभावना ऋपूर्व स्नेहथी श्रीमाळी ब्राह्मणनी दीकरी सुरजवाइनुं बळी मरवुं. 488 राजकुमार मानसिंहजीनी न्हानी उम्मर होवाने लीधे तेस्रोने तख्तनशीन करी सुरतानसिंहजीना लघुनन्धु राजाजीए राज्यनो कार्यभार चलाववो, राजखटपटने लीधे राजाजीनु रातीदेवळी जनुं अने त्याथी खोडुमां राज-द्रवार वाधी पोताना वापदादानी राजधानी वढवाणना मालिक वनवु, राज मानसिंहजीए म्होटा थइ हळवद साथे राखेलु वळगण, तेत्रोने त्यां रायसिंहजी आदि कुमारोनो जन्म, लूणसरीआ, भायात कलाजी तथा सवळाजीनी वहादुरी सबंधी स्वल्प वयान. 488 राज रायसिंहजीना कुमार चन्द्रसिंहजी उर्फे चादाजीए वहादुरीथी हळ-वदने हाथ करी त्या त्रखें वर्ष पर्यन्त चलावेली स्वतंत्र सत्ता तथा वोधना गराशीत्रा हरभमजीए वाकानेरीत्रामा प्रवेश करी लींवाळा नामनं गाम भागता तेने त्र्यासोइ तथा मच्छुना मध्य प्रदेशमा मारेलो मार, वाद राज चन्द्रसिंहजीना पाटवी कुमार पृथीराजजी उर्फे सरतानजीनो गादीए वेठा वाद निःसतान स्वर्गवास थता तेत्र्योना न्हानाभाइ केसरीसिंहजी के जेने वर्णजारा नामनुं गाम गरासमा मळेलु हुतु तेने प्राप्त थन्त्रेली वांकानरनी गादी ह्०प्ट दुवा भायात गजसिंहजीए वनावेला विष्णुप्रकाश नामना प्रन्थ सर्वधी हकीकत, केसरीसिंहजीना कुमार राज भारोजी, तेमए बाहुबळथी काठी-श्रोपर वेसाडेलो भय, तेश्रोना रोटलानी चोतरफ फेलाएली तारीफ. राजकोटना ठाकोर वावाजीराजनुं श्रभिमान उतारवा राज भाराजीए वाधेली भेंठ अने सरधारसूवी पहोंची भांगेलुं गाम साजडीआली, पाट-वीकुमार रायसिंहजीनो राज भाराजीनी ह्यातीमाज स्वर्गवास थतां तेना कुमार केसरीसिंहजीनुं दादाना परलोक प्रयाण पञ्ची तल्तनशीन थवु. ६०६ केसरीसिंहजीने त्या कुमार चन्द्रसिंहजी उर्फे डोसाजीनो जनम, राज डोसाजीनी वदादुरी, तेओए रामपरडेथी ढसेथी तथा हालारमाथी करेलुं ताज्ञण, माणकी तथा शींगाळी घोडीओनुं हरण, जूनागढ, जामनगर तथा ध्रांगध्राना लश्करोनी एकीसाथे वाकानेरपर चढाइ, राज डोसाजीए लडाइमा ए त्रणे राज्यना लश्करोने पोकरावेली तोवाह, राज डोसाजीनुं

डामण अने तथी तुटेली कैंक काठीओनी कम्मर, जतवाना जतलोकोनी

भोगावे भेळा थइ राज डोसाजीए खेंचेली खाल, वाद भीमोरानुं भांगवुं नाजाखाचरनुं न्हामवु, वढवाणना ठाकोर पृथीराजजी साथे अमदावाद तरफ फेरो मारवा राज डोराजीनुं जबु, मार्गमा वच्चा जमादारना मा- एसो साथे थएलुं धींगाणु अने तेमा जमादारना जमाइ इसवभाइनुं मोत, राज डोसाजीना शौर्य साथे दया आदि सद्गुणो अने तेमना वखत- सिंह भी आदि कुमारो.

ध्रय

१००. राज वखतिसहिनी अने तेत्रोनो वहोळो परिवार, पुत्रीत्रो तथा पुत्रपौदादिकना विवाह वगेरेमा खुल्ले हाथे खर्चेलु पुष्कळ धन, जनाना सिहत
म्होटा आडंवरथी करेली विविध यात्राओं नागावावा सर्वधी हकीकत,
राज वखतिसहिजीनी धर्मपर श्रद्धा तथा देनगी, तेत्रोना वखतमा थान
साथे थएलु धींगाणुं, पाटवी कुमार जशवतिसहिजीनो स्वर्गवास थता
तेमनां कुमार वनेसिहजीए दादाना परलोक प्रयाण पञ्जी राजपदवीने
धारण करवी

630

१०१. राज वनेसिंहजीतुं बुद्धिवळ, तेश्रोए करेली राज्यनी श्रावादी, पाडलना धींगाणा सबंधी हकीकत, दिल्हीमा भराएला वादशाही दरवार वखते राज वनेसिंहजीने मळेली ५ तोपनी सलामी, तेश्रो नामदारने प्रसगोपात थएली श्रमेज श्रमलदारोनी मुलाकात, विविध यात्राश्रोमा राज वनेसिंह- जीए करेला पुण्यदान तथा तेश्रोनी उत्तम कारकीदी.

६३८

१०२. नामदार राजसाहेवश्री अमरसिंह जीनो जन्म, तेमनी न्हानी उम्मरे तेमना पिता ना. श्री वनेसिंह जीनो थएल कैलासवास, राज्यपर मेनेजमेन्ट, जूदा जूदा स्टेट मेनेजरो आने ते आए करेलां जाहेर वांयकाम तथा सुधारा-वधारा, ना. अमरसिंह जीतु अभ्यास अर्थं राजकोट राजकुमार कॉलेजमा दाखल थतुं, वांकानेर स्टेटने विन नजराणे दत्तक लेवानी नामदार ब्रीटीश सरकार तरफथी सनद मळवी, शायपुरे थएलो सबंध, मानवता वामासाहेव साथे आपे करेली प्रभासपाटणनी यात्रा, कॉलेजना वेकेश-नमा महावलेश्वरनी मुसाफरी, शायपुरे थएलां हथेवाळे लग्न, स्टेट मेनेजर गणपतराव लाड साथे आपे करेली हिंदुस्थाननी पहेली मुसाफरी, कॉलेजमाथी मुक्त थतु, डाक्टर दीनशाह वरजोरजी साथे हिन्दुस्थाननी वीजी मुसाफरी, आपे जोएला उत्तम स्थळो तथा तेनुं वर्णन, श्रीयुत हेन्कॉक साहेव साथे यूरोपनो प्रवास, यूरोपना प्रख्यात स्थळो तथा तेनु वर्णन, विलायतनी मुसाफरीएथी प्रवार्या वाट आपने मळेली स्वतन्त राज्यमत्ता, राजकोट थएला हथेवाळे लग्न, अप्यननो भयकर दुष्काळ,

रैय्यतनुं रत्तण, त्यारवाद आज दिवस सूधीना आपना उमदा जीवन-चिरत्रनी अंदर वळाना तथा मांडाना लग्नोनु वर्णन, तथा थएलां सं-तानो, यात्राओं तथा तेना वर्णन, श्रीमान राजकोट ठाकोरसाहेव लाखा-जीराज साथे करेली काश्मीरनी मनरंजन मुसाफरी, त्यांना दर्शनीय स्थळोनुं वर्णन, स्टेटमां थएला जाहेर वांधकाम, राज्यनी आवादी, प्रजाने मळेलो संतोष वगेरे अनेक वावतो वर्णनी छेवटे आपनुं नामदार शहेश-शाह ज्यांने धी फीफ्थना राज्याभिषेक प्रसंगे दिल्ही दरबारमा पधारवुं तथा त्या थएली के. सी. आइ. इना इल्कावनी प्राप्ति अने एथी उद्-भवेलो प्रजावर्गमा हर्ष, आप नामदारनो दिन प्रतिदिन उत्कर्ष थाय एवो सालिगरा महोत्सव प्रसंगे अमारो आशिर्वाद....

१०३.	लींवडीनो गद्यमा सविस्नर इतिहास.	••••	• ••	८०२
१०४.	,, पद्यमां संदिप्त ,,	•	• • • •	८३९
१०५.	रायपुर, नरवर ऋने कुन्हाडीनो गद्यमां सविस्तर इतिह।	स.	***	ፍሄ९
१०६.	रायपुर, नरवर श्रने कुन्हाडीनो पद्यमां संनिप्त इतिहास	•	••	८६५
१०७.	सादडी तथा देलवाडानो गद्यमा सविस्तर इतिहास	**		८७ ३
१०८.	सादडी तथा देलवाडाना पद्यमां संचिप्त इतिहास.	••••	•••	९२९
१०९.	ध्रांध्रागनो गद्यमां सविस्तर इतिहास.	••••	••••	९ ४७
११०.	ध्रागध्रानो पद्यमां संचिप्त इतिहास. इ	••••	***	९६३
१११.	लखतरनो गद्यमां सविस्तर इतिहास	•••	••••	९७०
११२.	,, पद्यमा संचित्र इतिहास	****	••••	९८६
११३.	वढवाणनो गद्यमां सविम्तर इतिहास	••••	•••	९९१
११४.	,, पद्यमां सन्तिप्त इतिहास	•••	• •	१००६
११५	झालारापाटर्णनो गद्यमा सविस्तर इतिहास	••••		१०११
११६.	,, पद्यमा संचित्र इतिहास	• •	•••	१०४५
११७.	सायलानो गद्यमां सविस्तर इतिहास	•••	•	१०५३
११८.	सायलानो पद्यभा संचिप्त इतिहास	•••	•	१०५८
११९.	चूडानो गद्यमा इतिहास	• •	•••	१०६१
१२०.	थळानो गद्यमा इतिहास		••••	१०६३
१२१.	रामपर, मेघपरनो गद्यमा इतिहास	•	•	१०६४
१२२.	अजमेर अथवा अदेपरनो इतिहास		•	१०६९

१२३.	चूडानो संचित्र इतिहास पद्यमा	••••	१०७०
१२४.	थळानो सित्तिप्त इतिहास पद्यमा	••	१०७१
१२५.	रामपर-मेघपरनो सन्तिप्त इतिहास पद्यमा.		१०७२
१२६.	शादुलकु तथा अजमेर ए वन्नेनो संचिप्त इतिहास पद्यमा	• •	१०७४
१२७.	सने १९११ नी सालथी वाकीनो आपश्रीनो उपसंहार रुपे इतिहास.		१०७५





श्री झालावंश वारिधि.

प्रथम तरंग.

भूष्ट्र मंगलाचरण. 🎉

→ अं छंद स्रगधरा. अं≪

आखा ब्रह्मांड मांहे रजनीं दिवस जे, पूर्ण राजी रहे छे;
वेदोमां उप जेतुं, निरणय करतां, नेति नेति कहे छे;
नांही प्होंची शके ज्यां, गित अतिमननी वाणों पामे विशम;
प्रीतें नित्ये करुं ए, प्रणवमय परब्रह्मने हुं प्रणाम.
साधे म्होटी समाधि, तदिष मुनितणा दृन्द पामे न पार;
प्रेमे गाये पुराणों, निरवयव तथा नित्यने निर्विकार;
कछेथी सुझ कोइ, कळीं नथीं शक्ता, रंगमा इयाम राम;
पीतें नीत्यें करुं ए प्रणवमय परब्रह्मने हुं प्रणाम.

महोटा म्होटा मुमुञ्ज, श्रम सहन करे, सबदा जेनी शोधे;
ह्यानी ज्यां खाय गोथा, विमल हृदयमा विश्व करा विरोधे;
जेने जोवा तपस्वी, जप तप करीने जाय छे हारी हाम,
पीतें नित्यें करुं ए, प्रणवमय परब्रह्मने हुं प्रणाम.

जेनी सत्ता थकी आ, चर अचर सहुँ पृथ्वी माथे प्रकाशे; जे जाण्याथी जनोना, जनम मरणनी, वात सर्वे विनाशे; भाव जेने भजे छे, अनुदिन अजने, विष्णु विख्यात वाम; भीतें नित्यें करुं ए, प्रणवमय परव्रह्मने हुं प्रणाम.

दोहा.

निज कुळनी वंशावळी, सुणवा वारंवार;
अमर भूप! छे थापने, इच्छा उरें अपार— १
वीर आपना वंशजो, निर्मळ एनां नाम;
प्रथम कहूँ छुं पद्यमां, संक्षिप्तें सुख्याम— २

रोळा वृत्त.

आदि एक अठयक्त, विश्ववित नित्य निरामय;
एयी थयां उत्पन्न, पुरुषने प्रकृति प्रभामय,
थया एथीं अजदेव, चार मुखवाळा चार्ठ;
करता विविध विचार, विश्वनी वृद्धि सारु,
तेना मानस पुत्र, थया भृगु मुनि मनोहर;
थया एथीं उत्पन्न, विधाता नामे सुतवर;
तेना मुनि मृकंड, यज्ञविधि आचरनारा;
पुत्र थया प्रख्यात, धुरा धर्मनी धरनारा,
भार्कंडेय महान, थया शुभ ळक्षणवाळा;

अल्प आयुनो योग, मट्यो सप्तर्षि मळतां; अजरामर ए थया, कृपा ब्रह्मानी फळतां. शूरवीर शस्त्रज्ञ, तनुज तेहना क्कंडमाल कमनीय, अवनिमां थया यशस्वी; यज्ञकुंड माळतुं, कळित रक्षण करनाराः करी विघ्न विध्वंस, हाम अरिनी हरनारा. अतुळ ओज धरी रणे, कैक राक्षसने रोळ्या; हंडथीं मुंड उडावीं, त्वरित अभिमानो तोडयां; तेना कासिक ऋषि, छाप जेणे शुभ छापी; चृषकेतु विद्वान, तेहना पुत्र मतापी. थया एथीं कल्याण, ऋषि ऋषिना हित कारण; रात दिवस जे रह्या इता, करीं शस्त्रो धारण; क्रन्त ऋषि ते तणा, तनुज तेजस्वी गणाया; करी प्रसन्न मुनि वृन्द, भन्य मखवान भणाया। उत्तरमां अभिराम, शहेर सुखदायकॅ स्थाप्युं; कुन्तळपुर कमनीय, नाम आनंदे आप्युं; थया धवल ते तणा सदो सत तेना सारा; धीर धानिक धर्मीष्ट, भ्रष्टने भय भरनाराः वलवाळा वलधीर, इन्द्र ने गगन अनल वर, इन्द्र अडस्व स जैश, ^{पछी} यशमान मुलक नर; रयाम मान ने इन्द्र, रतन श्रीपति सुखदायक, सोम महेश महान, जवर जयमल अति लायक. १०

ए पर्छी अक्षय भान, यज्ञ युवनाश्व अनुपम, माणिक विद्वल पछी, यया शान्तल अति उत्तमः स्वराज ने द्युरतान, हडीको हमीर भारी, भाण करणना पछी, थया केसर मुखकारी। 88 कलित भूप कल्याण, भीमने विजय भणाणा, पर्छी बलदेवं मसिद्ध, जबर जशवंत जणाणाः युवनाश्व सारंग, पछी शिवराजजी रासाः देव अने बलवीर, मूळ छमतापी पूरा. १२ अक्षय पछी अजीत, अने माणिक रूप म्होटा, प्रताप भूपं पछी, कर्या खळ दळने खोटा; पहू ग्रर वलवीर, करण लखधीर लखाणा; माळदेव मुळराज, गुणी ळखधीर गणाणाः 23 सोमेश्वर रणधीर,रतन ने पृथ्वीमल राजाः विजयराज ने क्षेमराज मनहर कुळमाजा अक्षयराज शुरतान, हिम्मती हमीर एनाः धरणीधर वृप धीर गाँय गुणीओ गुण जेना. धीरसेन धृतिमान धरणीपति धर्म दुरंधरः पुष्पसेन ते पछी, संत सुराभिना सुखकर, पर्छी माणिक मकवाण, विश्वमांहे वखणाया; पद्मसेन ए पछी धर्मने पंथे धाया १५

पातलसेन प्रसिद्ध, रेन दिन रणना रागी; प्रतापभाण मतापाँ कर्मिसे वात अनुरागी; जयमल ने जशराज, पछी सुरतान सभागीः हमीर ने हरपाल मुलथीं केता युंद्ध मागी; १६ हर्ष भर्या हरराज, श्रीपाति नृपति शाणाः वाघ भूप विख्यात, महद मोजी मकवाणा. वेरासिंह वहाँदूर, भीम अरिने भय दाता; भोजराज सारंग, सदा करता सुख्याता. १७ शिवराज मुळराज पछी माणेक मनस्वी; रुपराज रणजीत तीत्र युद्धना तपस्तीः भोजराजने करण कीर्ति केसरे शसारी; भव्य अजय भूपाल, देवपालक दुःखहारी. **अक्ष**यपालने अमृतपाल पर्छी रत्नपाल नृपः देवपाल सुरपाल, जपे याचक जशना जपः विजयपाल ने सोमपाल, पर्जी चन्द्रपालजी मानपाल मकवाण, चतुर चन्द्रना लालनी १९ केख्या लक्ष्मणपाल पछी लूंणपालॅ पजापति; लाखणशी बलवीर महिम बलदेव महामति; वच्छराज रूपवीर, पछी नरभ्रमर नरेश्वरः नेतिसंह ने कर्मसिंह सम्बद सोमेश्वर

हमीर ने हुँसराज भूप इद इिम्मतवाळा; वच्छराज मुळराज, नेक नरनाथ निहाळ्या; क्षेमराज सुरतान, अक्षयराज आनंदी; पातलसेनॅ प्रताप, सदा लखधौर स्वच्छन्दी. 38 जयमळ ने पृथाँराज ,पछी पुँजराज मतापी; माणिकने युवनाश्व, महीने स्रयशे मापीः धारँगने धीरसेन पुष्पसेनाभिघ नृपति शहाभोज सोमेश ग्रुड करनारा सुकृति. शूरवीर सुरतान, वैराने विदारनाराः उत्तम अमृतसेन पछीथी मगळा प्याराः जाहिर जशवँतसेन, जन्म तेने घर पाम्याः भीमसेन गृह रतनसेन जशजोरे जाम्या. भूप भारसल कीर्तिपाल पर्छी केसर कहीँपः बुद्धिवंत वलदेव नाम संमामनु छहीए; थया नृपति नरभ्रमर, रत्नसेनाभिध राजाः श्रीपति ने शिवराज, करण राखण कुळ माजाः यज्ञधारी यद्याराज, महद मुळराज महीपतिः सोमेश्वर शान्तले,राखी ऋषि रक्षणमां राति. वाघसेन ने वैरीशाह, युवनाश्व उमंगीः चंद्रपाल ने मेघपाल, मगटमा रणांगी-२५

मूळराज ने छत्रसाल, ए पर्छो उत्साहीः उत्तम **आनँदमेरु**, जन्म पाम्या जगमांही; सोमेश्वर वह मुज्ञ, थया पर्छी तृप सार्गधर. र्योयंवान सुरतान, करणने रत्नसेन वर वद हमीरने रणमल्ल, पछी संग्राम स्रुशोभितः धीरसेनने पुष्पसेन, अवनिना आदितः पराक्रमी पृथीमञ्ज, भारमलजी, भगहारी, पद्मसेन यशवंतसेन, ए पछी अवतारी इन्द्रसेनने अजय भूप वलवीर वलाणुं, जोधपाल यशपाल, जवर जशवाळा जाणुं; मानपालने रत्नपाल, रणधीर रसीका, सुखपद सालणदेव, वढा विद्युथना वसीलाः शेषपाल क्षितिपाल, पछी शान्तल सतवादी, कित भूप लखधीर, आएँ जयमलनी यादी; युवनाश्व माणेक, पछी मुळराज मायाङ, अक्षयराज ने अमृतसेन, दिवतणा दयाछु भामसेन ने भोजराज, पर्छी पर उपकारी, पातलसेन मिख, थया पापीन महारी; नरपित श्री नरम्रमर, भीसपाले भव टाळ्यो, पृथ्वीपाले पण परम, धरम निज कुळनो पाळ्यो.

प्रतापभाणे पछी, कार्य उत्तमनां कीधां, अभयराज अवनिषे, अभयनां दानो दीयां; मेघराज मुळराज, अने शिवराज उचारं, राजा श्री रणामले, कर्यु सहु जनतुं सारुं. 38 क्षेमराज ने अक्षयराज, रूप उरना निर्मळ, अमृतसेने अधिक, वैरीने वतलान्युं वळ; भीमसेन पर्छी भोजराज जनम्या जरा घारी, भूप भारमलजीए, पृथ्वीमां कीर्ति पसारी. रसिक भूप रणजीत, ततुज रुपसिंहर्जी तेना. स्वमांगद राजिषे, गाय जन सद्गुण जेनाः राजा श्री रणधीर, पछी धारंग धरणीमां, धीरसेन ने पुष्पसेन, भगव्या सुख सीमा 33 माणिक ने सुरतान, महा मितवाळा महीपित, छत्रसाल ते पछी, थया उत्तम नृपमां अति; हिम्मतवान हमीर, करण ते तणा तनुज वर, कर्मसिंह कल्याणमछ, पर्छो मगव्या केसर. 38 बळधारी वळदेव, थया जनमी जग जाहिर, वैरिसाल रुपवरे, हण्या रिपुने इद वाहिर; शान्तलसेन मुजील, पछी संग्राम ममाणो, सोमेश्वर पृथ्वीमछ जनर सारंगधर जाणो

-BIC

सूर्यभाण पृथिराज, अवनिमां थया अटंका, पद्मसेनथी पूर्ण, पामता शत्रु शंका; अमृतसेन ने अजयभूप, आनंदीं अतुपम, जोधपाल ने भीससेन, साचवना संयम ३६ छेल्या लक्ष्मणसेन, महा दुनियामां दानी, रत्नसेन विक्रमे, इरी रैयतनी हार्निः समरसिंह सुखरुप, पछी नरभ्रमर नरेशे, मसराच्यो परिपूर्ण, सुयश शुभ देश विदेशे. थह भारमल्ल ने करणपाल नृष जगन्नाथ वर, धुलकर श्रीपतिसेन, अरिने दिलभरता हरः शत्रुसाल ने सोमपाल, पृथ्वीना पुरंदर, उदयपाल पर्छो करणपाल महीपति मुदमन्दिर. रत्नपाल पर्छी थया, धीर नृपित धरमांगदः देवचक्र झांझरे उतायों महद अरिमद जग जाहिर यज्ञेद्रा पढी युवनाश्व, अतुळवळ; जाण्या यदावंतसिंह, न्यायना निधान निर्मल. मगटया भानुप्रताप ए पछी भयहर भृपति; पातळसेने पूर्ण, राखीं सत्कर्मीमां रातिः पुष्पसेन ने भीमसेन पछी थया प्रयीसलः धीरसेनं माणेक पर्छा जनम्या जयमल भल. Sa

मूळराज ने क्षेमराज लाखणसिंह छेख्याः ळ्णकरण ळखधीर पराक्रमवाळा पेख्या; पुंजराज पृथीराज, धार धनराज धरामांः दुः खहर साळणदेव, धर्या जेणे जज्ञ जामाः 83 करमी केसरदेव, करण हरराज हिम्मती. इर जेवा हरपाल थया काव्यना किम्मती, हमीरने सुरतान, थया पछी पूरण मेमी; सूर्यपाल सोमेश. निरंतर नौतम नेमी. शाहाँभोज संग्राम शेषपाले प्रख दीयांः खुमाणसिंहे खुव, कार्य कीर्तिनां कीषां; इन्द्रसिंह ने अमृतसेन पर्छी धीर धरणीधरः अक्षयराज ने अमृतसेन वलणांया रूपवर. \$₹ पद्मसेन सारंगदेव, विश्वपान क्षितिपतिः अजयभूप पर्छो देवपाल, धरता दिनकर द्युति; भीमपाल यशपाल, यया प पर्छी अवतारी; सोमपाल ने सूर्यपाल जाणो जग्नधारी. 88 इन्द्रसेन पर्छी अक्षयपाल ने मानपाल खपः रत्नपाळ केसरे, तीत्र कीथां समरे तपः चन्द्रपाल पर्छो[,] अक्षयराज सुरतान हमीरे; **जिल्लेडोंयां अरि इक्ष, मूळ**थी शौर्य समीरे. प्रद

हरवखते हरराज, क्रूरने विनाश करता; अक्षयराज ए पछी, हानि सहु जननी हरता; अमृतसेन ने भीमसेन दलता दुश्मन दल; पुष्पस्नेन पर्छी थया, प्रकट भडभूप भारमल. 88 पृथीराज युवनाश्व, रत्नपाले रिपु रोळ्या; मूळराज माणिके, मान अरि उरनां मोड्यां; क्षेमराज क्षितिपाल, पछी जयमल्ल जणाया; लेख्या पर्छो लखधीर, भूप रणमल्ल भणायाः भोजराज ने सूर्यभाण पर्छो नृप सारँगधर; सुंदरपाल सुजाणसिंह, जगजाहिर सुखसर; विजयराय विक्रमे, मजाने मेमर्थी पाळी; यदाराजे अवतरी पापानी पंक्ति प्रजाळी. दानी वीशळदेव, महीपति आनँदमेरः ए पर्छी अमृतसेन, थया भाग्याना भेरे पुत्रो तेना पांच, जग्तमां जाहिर जाणो; चाचँग वाचकदेव, पछी शिवराज मगाणो. प्तर वच्छराज तुं नाम, सहू ए पछी उचारे; भव्य इता भाणेज, एइ यादवना चारे; मालदेवजी कॅवर, जवर पाचमा जणाये; महद जेर्नु मोसाळ. हस्तिनापुर गणाये.

मवळ पक्ष मोसाळ तणो एणे मेळवीयो वळियो चारे वन्धु साथ संग्रामे लडीयो; अग्रजनो करों अन्त, पाणीं पाछळकी पीद्यं; कुन्तळपुरनुं कलित, राज्य कवने करीं लीद्यं; ए समये चाचंगदेवनो कुमार केवळ, शुरो सालादेव, वच्यो रणमां निजने वळ;

ų१

कुन्तलपुर तर्जी संग लइ लक्कर पोतानुं.
गयो पूर्व दिशिमांहि, भव्य अवनिनो भानुं.
सीकरोंमां ए समय, राष्ट्रय करता'ता तुंवर;
युष्ट कर्श्य ए साथ,सालणे स्मरी हेतें हर;
ए लहाइमां विजय, मेळव्यो नृप मकवाणे;
कर्सु कवज सीकरी, वात जे जग सहु जाणे.

५२

दोहा.

म्चमर ! आपना पूर्वजो, सीकरी जीत्या वादः कोण थया कयां जइ वस्या, ते कहुँ विना विवादः

48

५३

छन्द हरिगात.

सितिपाल सालणदेवना स्त जोमपाल जशे भर्या, जशराज ने झालंगदेवे काम कीर्तिनां कर्या, सारंगदेव पृत्ती थया शिवराजजी शूरा थितः, वर विक्रमादित्यजी विश्वपर राखता हृदये राति. ५५ स्त एहना शुभ समरसिंह थया पृत्ती वनदेवजी. धनराज पृत्ती भिति रहा नृष देवराज सुखो सनीः,

पर्छो इन्द्रभाण उदार, उदयादित्य पनी पाछळे श्रीपति अक्षयराज पाछळ भूपश्रेणीमां भळे.

५६

पहिषाक श्री मुळराज ते पछी क्षेमराज महामति; जयमल पछी तृप इन्द्रसेने कैंक करीं उत्तम कार्ति; पछी पुष्पसेन थया मतापी, पद्मासिंह मजापति; भड भीमसिंह थया पछी दिनकर समी धारी द्युति.

पर्छों मालदेव महीप तेना करणिसंह कळानिधिः ५७

हप हमीरिसंहे हाम धारी, चळ्युं राज यथानिधिः

ते पर्छो थया पृथीराज पातलासिंह पूर्ण पराक्रमीः

पीति प्रजानी प्रतापभाणे मेळवी रणमां रमीः

प पष्नी अर्जुनसिंह योवनसिंह ने संग्रामजी; एखदाइ शान्तलसिंहना गुणी गाय गुण हर्षे हजी; नृप सुरत अजय भ्रुपाळ तेना मानपाल महीपर्ति; नरनाथ श्री नरम्त्रमर नित्ये खळतणी करता क्षति. ५९

नृष जोधपाल पछी भ्रमीपित भारमल भड नीपच्याः जशधारी जयमल सोमपाले शत्रुपर शस्त्रो सज्याः नृष हंसराज पछी महामित मानपाल महीपरे, षर वीरसिंह तणा विनयसिंह कोटि दान दींधां करे. ६० भयहरण यूपित भारमक पछी भोजराज भणाय छे,
नृप करणांसिंह पछी गणतीमा भीमांसिंह गणाय छे,
शुरसिंह ने संतोषभानु पछी उदयभानु यया,
अमृत प्रताप पछीथाँ रणमलसिंह क्रमदीपक खा. ६१

अवतारों अक्ष्मयराज ए पर्छा मूळराज मनाय छे, भिय मानिपांल पर्छी बळित रूप भोजराज केखाय छे; नृप रत्निसिंह पर्छी थया सोमेश ने गोवर्धन, गंगेवजी ने सूर्यमल सारंगधर सुखना सदन. ६२

सारंगधरना कुँवर दिव्य क्रुपालदेवे वळ घणुं,
वतकावीं सिन्ध महीं जमान्युं राज कीर्तिगढ तणुं;
तेना थया सारंगधर पछी अजयभूप उदारधी,
पछीं मानपाल महीप तेना देवपाल दयानिधि

नृप जोधपाल पछी जणाया सूर्यपाल ग्रॅरा बति एना उदयञानु थया, पछी धरणीधर धरणीपति; नृप धीरसिंह पछी थया, पातल अने पृथीराजजी, मरतां छगी मुळराज महिपें तीत्र आसने नहि तजी. ६४

श्रीइन्द्रभाण अनूप पर्छो छखधीरजीने केखीया; नृप क्षेम पाछळ वाद्यासिंह मताप वाळा पेखीया;

तेना थया दश कुँवर दानी हृदयना वहु हिम्मती, कहुँ नाम एनां कछित कीधां काम जेणे किम्मती; हरपाळ, विजय, हमीर, तेम प्रतापवान पेंचाणंजी. छाखाजीराज तणा अनुज सुखसिंध सामन्तसिंहजी; ७०

शांताजों तेमज क्षेमराज पराक्रमी परखाय छे, श्री कर्मासिंहजों, देवराज बधार्थों छघु छेखाय छे; श्रीसिन्धना सुळतानथी करीं युष्ट केसरदेवजी, स्वों सिधाच्या सप्त कुँवरों साथ श्रुभ साधन सजी.

घायळ थया वे वन्धु विजय हमीर ब्हादुरी करी, हरपाळ पाम्या पार सेनानो हणी अगणित अरि त्यांथी पधार्या तुरत पाटण महद गृह माशी तणे, करणे निकटमां राखीया वन्यु गणी आदर घणे.

98

भय पामतो वहु भूतथी प्रतिदिवस पाटणनो धणी, ए दुःखथी करीं दूर उरनी हानि हरपाछे हणी; पूरण पराक्रम पेखीं अंश उमापतिनो जाणींने, शानित वरी सिद्धि भरी आनंद उरमा आणींने

७३

शक्तिनी श्रेष्ठ सहायताथी काम करण तणां करी, बहु देश मेळवीं छेश विण हिम्मत वहा रिपुनी हरी; श्रुभ पाटढीमा राज्य स्थाप्युं हृदय करा हर्पथी, तेजस्वी त्रण कॅवरो सहित ओप्या अधिक उत्कर्पयी.

दोहा.

सोढो, मांग्रें, शेखरो, त्रय शक्ति ततु जातः, दृढ झाळा अवटंक धर्रो, परम थया मख्यातः ७५ वरसोढाना वंशजो, कहुं हवे कुळ दीपः, भासव वक्र पुरी तणा, सुणो अमर अवनीपः ७६

रोळा वृत्त.

म्रत सोढाना थया, दुरजनसाल दयाछ, पछी द्वारिकादास, महा मन तणा मयार्ड्ड; देवराज़ दुदाजों, शूरसिंह ए पर्छी शाणा, शान्तलजी पर्ली विजयपाल मधुजी मुक्ताणाः पद्मासिंहने उदयसिंह ए पर्छी अवतारी, वेगडजीने रामसिंह भड भूपति भारी; वीरसिंह रणमछ, अधिक करता आवादी, छत्रसाल छगी रही, पाटडीगढमां गादी. जेतांसिंह नृपतिए, कटक वैरीनां कापी; कुवा गाममां गादीं, शौर्यथी सत्वर स्थापी; तेना पर्छी वनवीर, भीमिसेंह वाघजी वीरे, कर्युं कुवामां राज, स्तेहधी सुखी शारीरे. 90 राज रायधरजीं ए राज इळवदमां स्थाप्युं, राणाजीए रसिक, नाम क्षितिपतिमां स्थाप्युं; सानसिंह महिपाळ, यथाक्रम पाटें आव्या,

ए पछी रायें मगटीं, तनो ज्ञानां ताव्यां.

छन्द पद्धरी.

हती राजधानी हळवद रसाळ, पाळक मसिद्ध झाळा नृपाळ; रणरागी राय गुणीमां गवाय, महिमा महान जेनो जणाय. 2? जे कोइ रायने शरण जाय, सह काम पहनां सिद्ध थाय; ए रायसिंह अतिशय उदार, चार्ने चरित्र एनां अपार. चारण चतुर ईसर अमाप, तनमांहि बाहथी पामी तापः पहोँच्या अनेक अवनीप पास, एनी न कोइए पूरी आज्ञा. 23 पछीं रायसिंहनी पास आवी, संकटनी वात एणे सुणावी: मखवान केरू मश्रहूर नाम, दीघां त्वराथीं द्वय छक्ष दाम. वळी एकवार रणधीरराय, मळवा मुदेशों मोसाळ जाय; यदुवंश्री भूप मामा जसाजी, मन थाय राय मिळनेथी राजी. पुर शेर्ते भ्रोळ धारो मसिद्ध, आनंद राय छे त्यां अविद्धः दिन एक आणीं उरमां उमंग, मातुळ सुजाण भाणेज संग. ८६ चोपाट केरी रम्मत चळावी, जवरी जमात ए समय आवी; पहीं महद दाहीं हंकानी माथ, ए धर्णेंधणाट सुणी धोळनाथ ८७

क्रोधायमान वनीने महान, कहें नकी मोड्ड नागार्तुं मान; ए समय मूछपर हाथ नांखीं, कहें राय रीत आवी हुँ राखी ? ८८ जादव जसाजी देछे जवाव, ओ रायसिंह! न करो रुवाव; मुज इद मांहि मर्याद छोडी, वागे नगारु ते नांख़ुं तोडी. वळियानी साथ भरी जसे वाथ, नवळाथी वेगळो होय नाथ: कहे रायसिंह इमणा हूँ आर्चे, वस धोळ मांहि ढंको वजाबुँ. ९० पळ माहि की खुँ इळवद प्रयांण, त्यां जइ जसाजीने की धोँ जाणः ग्रुरा अनेक सुभटोनी साथ, हर हर उचारी धरी खड़े हाथ. ९१ चाल्या जवेथी झळराण जोध, जादव जसाजी पर करी क्रोध: कसवार्ती जोडी वावन मगावी, वळ धारी घोळ इदमां वजावी ९२ ठाकोर ध्रोळनो वाद्व ठोकी, उभी अडग्ग रण राह रोकी; जाम्यो महान ए समय जंग, पाम्या पळाद उत्तम पसंग. ९३ विजयी महीप मखवान मस्त, वगडी जसानी वाजी समस्तः इळवद नरेशथी हार पामी, अन्ते उचारी साहेव स्वामी. पळमां जसाजीए छांडी प्राण, परछोक मांहि कींबुं प्रयाण, निज राजधानी भणी बळ्या राय, गुण विविध वन्दींना वन्द गाय.९५

सोरठा.

ज्यां भूपति जसवंत, साहिव कहीं सूता रणे; त्यहां वधारण तंत, चारण एक उभो हतो.





आहेस्ररमां आवीं, भेट्यो चारण भूपने; साहेंवने समजावीं लडवा कारण लड़ गयो.

90

छन्द पद्धरी.

सुणी रायसिंह ए समाचार, टीकर मुकाम रहीं आ तयार; दल उभय आखड्यां एह ठाम, आव्या अनेक ए मांहि काम. ९८ मळराण सुझींया धारीं जोर, जाहिर जमावीं वमसाण घोर; करीं रायसिंह उपर चढाइ, साहेव थया संग्राम श्वायीं. ९९

छन्द त्रोटक.

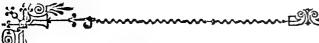
पर वंशन श्री हरपाळ तणा, नृप राय सही रण घाव घणा;
पृथिवी पर चक्कर खाइ पढ्या, जवरा शव जुत्य विषे न जड्या. १००
सहु दास जनो वहु शोध करी, तजी आश गया रणासेन्छु तरी;
निकळी हतीं जेह जमात वढी, करीं तीरथ ए पथथी ज वळी. १०१
नवसंगर ए स्थळमां निरखी, पृथिवीपित छंगस्थी परखी;
गुरु आगळ शिष्य समस्त कहे, रिवने गजवी यम राहु प्रहे. १०२
नथी प्राण हजी नीकळ्यां तनथी, अनुमान महान कर्छे मनथी;
गुरुए खरीं शिष्यनाँ वात गणी, झट मेळवीं छास महीप तणी. १०३
क्रमथी करिया उपचार अति, निरवद्य निरोगों थया न्यति;
पक्तनेश महंतनीं पामीं मया, जनपाळ जमातनीं साथ रह्या. १०४

छन्द पद्धरी.

निजधाम प्होंचोंया धर्मवंत, मठधारीं दिल्हींना ए महंत; जे संग सेंकडो साधुसंत, रटीं सांव छांडता त्वारित तंत. अतिशय विचित्र विधि अंक आंकों, हळवद नरेश निज वेप ढांकीं; अणजाण भाग्य केरा उदेशें, मठमां निवास करता मुदेशों १०६ करता महंतनुं एक काम, थइ शाह केरीं सत्वर सळाम; कचरी करेंथीं एकानीं काय, छानो रह्यों न रणधीर रायें १०७ गइ वात वेगथी शाह पास, शाहे त्वराथी करवा तपास; मठ माहि मोकल्यो हुकम खास, तिळमात्र रायने छे न त्रास. १०८

छन्द मोतीदाम.

भजी मुख पार्वतींना भरथार, तजी हर ज्ञाह तणे दरवार जवा निकळ्या जुगतें झळराण, ळई निज संग महंत सुजाण १०९ भजाण तणुं वळ जाणण काज, मतंगजने करीं मस्त दराजिं; छुटो मुकीं राहमहीं पतग्राह, अटारीं परे चढींओ धरीं चाह. ११० प्रही झट छूट गयंद छकेळ, मचावीं रह्यो मग अंदर फेळ; निहाळी द्रगें गजने नरनार, करे भय पामीं अपार पुकार १११ उपाधि अरे! जवरी अहीं जागी गया भयभीत वनी सहु भागीं; त्यहां निकळ्या तप धारीं नरेन्द्र, धस्यो सनमुख गुमानीं गजेन्द्र.११२ महंत कहे अटको अहीं आप, वृषा निह वारीं छिओं परिताप; विवेकथीं वेण वदे तथ राय, खरा रज्ञान्यीं केम खसाय ११३ स्थितिं सरखी न तमारीं अमारीं, हटुं निंह हुं किंद हिम्मत हाँरी; महंत छुपाइ गया वनीं जस्त, मतंगज आवीं चटयो मदमस्त. ११४



महीणतिए शिर थप्पड मारीं, हठयो गजराज करी किलकारीं; वदे मुख आशिखाद महंत, दींठो निह तुं सम शूर दिगंत. ११५

सोरठो.

हाथी उपर हाथ, पडतां रायं मतापाँनो श्वाह तणा दिळ साथ, दिल्ही आखीं डगमगी. ११६

छन्द मोतीदाम.

धटयो गजनो घिं मांहि घुमंड, गद्यं चगदाइ जरा स्थल गंड;
भयंकर राय तणी भुज दंड, पविसम पात विलोकों मचंड. ११७

प्रसन्न थयो पल्रमां पतशाह, सराहों सराहों वदे मुख वाह;
धरेंल हतां भगवां परिधान, नहीं नरपांल्युँ कांइ निशान. ११८

पनोहर आकृति ओज महान, निहालों करे झट शाह निदान;
न होय अतीत हने नृप कोंइ, तमाम जनाधिपनी छिव जोंइं: ११९

जणाइ गया क्षणमां झलराण, पडी पछीथी परिपूर्ण पिछाण;
मुदे बनों शाह तणा मिजमान, गया निज राज्य महीं मखवान. १२०

पजा जर पामीं ममोद अपार, महीपति राय महान खदार;
करे विण कंटक राज्य रसाल, वरी कर सुंदर धर्मनीं ढाल. १२१

सोरठा.

तेवामा धरी टेक, शत्रु पुरातन सज यया; आवी चड्या अनेक, हाला देदा हळवदे.

जञ्ञनामी झळराण, सुभट संग सन्मुख गयाः घाटीछे घमसाण, सभय पक्षमां सद्भव्युं.

१२३

छन्द मोतीदाम.

वहो नृप राय छड़्यो वहुवार, तड़ोतह तुटी रही तछवार;
परस्पर थाय प्रचंड प्रहार, छड़ीं छड़ीं कैक रह्या रणठार १२४
वहु वरछी तणीं जामीं वहार, करें वळीं केर छटाथीं कटार;
सही न शके जरीं भूतक भार, इछी फण शेपनी एक हजार १२५
वहे अति वेगथीं रक्त प्रवाह, तथापि न वीर तजे रणराह;
घटशुं वळ घायल रायनुं साव, वन्यो दुं:खदायक तुर्त वनाव १२६

सोरठा.

महद राय मखवान, उचित अप्सराने वरी;
वेगें चढी विमान, सुर पुर मांहि सिधाविया.
विध विध थाय वहाइ, इन्द्र सभामां एहनी;
सुयश रह्यो जग छाइ, रायासिंह राजा तणो.
१२८
दिल्हीने दरवार, सवळ हाथ स्थापी गया;
हळवदनाथ हजार, वर्षे पण विसराय नहि.

छन्द मोतीदाम.

हता तृप राय तणा त्रण वाल, वडा सुखदायक छत्तरसाल; सुभागों वींजा सुत चन्द्र सुजाण, तृतीय गणों भड सूरजभाण. १३०



छन्द छप्पय.

मॅच्युं युद्ध माळीए, सत्रळ मीयाणा संगे; छत्रसाळजी शूर, रॅगाया रणने रॅगे; प्रही तीक्ष्ण तळवार, कैक शत्रुने कापी; अचळ राखी अभिधान, पडया रणमांहि मतापी; एना अनुज उदारमति, दिळ अंदर धारी दया; पुर हळवदना तख्तवित, चन्द्रसिंह चाहे थया.

272

312

₹ ₹ \$

चन्द्रासिंहजी चतुर, सुखद हळवदना स्वामी;
अमित छहे आनंद, परम शान्तिने पामी;
एने त्यां अवतर्या, पुत्र नव प्रताप शाळी;
पृथीराज पाटवी, वीरतामां हदवाळी;
आशकरण, ने अमर पर्छी, अभेराज ने राजहरि
राणो, भोज पर्छी रह्या, सूरॅ प्रताप प्रभा धरी.

सूवा साथे थतां, एक समये इतराजी;
सीहाणीना इयाम, आवीया त्यहां अदाजी;
एने शुद्ध उरेथीं, भला निजवंशज भाख्या;
हर्प धारी हळवदे, राज चांदाए राख्या;
सरवर जल पावा सरस, अदो अश्व लइ आवता;
पृथीराज त्यां प्होचीचा, खासो हय खेलावता.

अदाजींना अवनी, पीठ उँपर पृथीराजे; चोटाढी चाबूक, क्रेश कींथो विण काजे; अवरेखी अपमान, आंख थइ रक्त अदानी; पराक्रमी पृथीराज, भरे निह पाछी पानी. करवा ध्वंस कुमारनो, उदये भाछुँ उठावीयुं; अन्य जनोए उभयने शान्त थवा समजावीयुं.

848

छन्द त्रोटक.

करीं क्रोध अदाजों परे जरमां, पृथीराज पधारीं गया पुरमां; झट संग्रह सैन्य तणों करता, दिळमां निथ कोइ थकी हरता. १३५ शरणागत जेपर सैन्य सजी, स्रुत केरीं चढाइ तृपे समजी; दिळ चन्द्र तणुं दिळगीर थयुं, करमी स्रुतने समजावीं कहुं. १३६ पृथीराज तजी पितुनी परवा, अभिमान अदाजी तणुं हरवा; धरीं चाह उछाइ थकी चिंडआ, पितु चन्द्र पधारीं वचे पिंडआ. १३७ बळवानथीं कांइ वन्युंज निंहीं, मननीं सघळी मनमांज रही; पिरवार समेत प्रवासीं थया, पृथीराज पिताथीं रिसाइ गया. १३८ वढवाण विषे जइ वास कर्यों, अरिना तनमां अति त्रास भर्यों; निज आधींन गाम अनेक करी, कुळ गादीं त्यहां धृति युक्त धरी. १३९

छन्द छप्पय.

वहवाणे करों वास, वीर झलराण विराजे; जबरी फोज जमावीं, पुण्यज्ञाळी पृथीराजे; अमदावादी उंट, खरे लड़ ज्ञाहीं खजानो; जूनागढथी जाय, मानीं ए समय मजानो;



शाह तणा शिरवंधीपर हिम्मतथी हल्लो कर्यो; पुत्र चन्द्रनो पाटवी, विजय पद्मजाने वर्यो.

380

छन्द पद्धरी.

सुणीं वात पादशाहे समस्त, करींओ निदेश वनीं क्रोध ग्रस्त; पृथीराज केरू जे शीश कार्यों, मुज पास छात्रशे नर पतापीं. मळशे महान एने इनाम, टळशे उपाधि तेनी तमामः जगमां जणावीं ए जाहिरात, वळीं याद आवतां अन्य वात. १४२ चाहे तयार करीया सुयोध, करवा महान श्रृती शोधः सैनिक समग्र स्वानी साथ, हाल्या उठावीं समग्रेर हाथ. १४३ पूर्यीराज केरी शाक्ति पिछाणी, पळमां स्रकार्ड सूत्रातुं पाणी: विणकपट फोजथी नहि फवाय, वनराज एम वश केम थाय. \$88 एवा विचार करीने अनेक, सूवे गुमाव्युँ मावल्य छेक; वढवाण पाठवी दूत एक, पृथीराज पास कीधा विवेक. १४५ चर्डी खुव खंडणी पादशाही, ए काज आवीयो छं हु आही; आ देशथी छूँ तदन अजाण, मुज संग आप चाछो सुजाण. १४६ पृथीराज वोळीया धारी भेम, आवे मने न इतवार एम: यवनो वर्षची होये अपार, जपस्थी प्यार मनमांहि खार. 486

सोरठो.

मन अंदर मखवान! रंच न शंका राखशो; करमां ग्रही कुरान, शपथ खाइ सुवी कहे.

188

छन्द मोतीदाम.

तमे करशो नहि जो छछ कांइ, नहीं करूँ तो हूँ प्रपंच कदाय; कयी पलमाहि परस्पर कोल, पिछाणी नहीं मन काष्ट्रनी पोल. गरीव निवाज सुळाजजहाज, पराक्रमशाळी महा पृथीराजः अदाजी गृहे करवा उतपात, मळ्या जइ शाहनी फोज संगात. सिहाणी परे चाढिआ ग्रुरवीर, तुँटयां अगाणित तणां तकदीर; अदो निज अल्प सवार समेत, छडी घाडि मांहि रह्यो रणखेत. १५१ थता मनमां सहु कारज सिद्ध, पथे शिर छेदी अदातुं प्रसिद्धः त्वराथीं टंगान्युं तर्हेवर टोंच, सिहाणीं विषे वधीओ वहु शोच. १५२ उदे नृपतिनी अभागिनी नार, करे पृथीराजनी पास पुकार; दिओ मुजने पति मस्तक देव! वळी महॅ ते सह हुं ततखेत. वद्या अवळां वचनो पृथीराज, सुणी सतीना दिल्लमां वधी दाझ; पथा ! नडज्ञे तुजने तुज पाप, दिधो सतीप अति क्रोधर्थी ज्ञाप. १५४

छन्द पद्धरी.

पृथीराज जीती ए रीत जंग, चाल्या त्यहांथी सूवानी संग; ज्या अन्य ठाम की छुं मुकाम, त्यां त्ववातुर सैनिक तमाम. १५५ छरमां अपार वनीया उदास, करीं आसपास जलनी तपास; निह कूप वापिका जोइ क्यांइ, सूवानी छातीं कंपे छ्वाइ. १५६



छन्द छप्पय.

एक जने ए समय, आवीं सूवानी आगळ, ख़ुल्छुं पाडयुं खास, राज पृथीराजतणुं छळ; अमळ कूप उपरे, तंबु पोतानो ताणी; माणे झालो मोज, फोज विण पाणी पिडाणी; तपास करवा तेइनी, गर्व सहित सूबो गयो; प्रपंच गणीं पृथींराजनो, शपय थकी छूटो थयो.

१५७

सोरठा.

सैनिकने करी साद, पकडावी पृथीराजने; वेगें अमदावाद, सूवो त्यांथी संचर्यो. १५८ जाण पडी न जराँई, श्रूरवीरनुं शुं थयुं ? दशा वनी दुंखदाइ, पाछळथी पृथीराजनी. १५९ चांदो चतुर सुजाण, समाचार ए सांभळी; पलमां छांडी माण, देवपुरे दाखळ थयो. १६० वाल्यवये वळवान, पुत्र उभय पृथीराजनाः श्रेष्ठं ज्येष्ठ सुरतान, छद्य राजोजी छेखीए. १६१ इळवदना इकदार, पुत्र हता पृथीराजनाः छतां कर्म अनुसार, गादी आज्ञाकरणे ग्रही. १६२

छन्द मोतीदाम.

जता जगमांथीं भल्नो भरथार, रडे पूथींराजनीं राणी अपार; हता हजु वालक वेंड कुमार, वळी डर दीयरनो दुःखकार. १६३

करे हरकोइ उपाय हजार, लॅंख्या विधि लेख टळें न लगार; गयां सहु ए समये गढधान, अभे नृपने गणी नीति निधान. १६४ छदास थया निरखी अभगाल, विवेक करे दरशावी वहाल; विनोदथी आप करो अहीं वास, परंतु जरो मुज गाम गरास. १६५

दोहा.

थाय कदी आ वातनी, जो इळवदमां जाण; आशकरण आवी अहीं, पलमां छे मुज माण.

१६६

छन्द छप्पय.

निश्रय वनी निराश, राज पृथीराजनी राणी; श्वाणी अति गभराणी, जुल्म दीयरनो जाणी; बन्धु राखडी वांधी, कर्यो 'तो पूर्वे काठी; प मूळूने ळखी, दशा पोतानी माठी; पुर चोटीळे पत्र छइ, सत्वर दूत सिधावींयो; संग सुभट छइ सोळशत, मूळू मददे आवींयो.

१६७

छन्द पद्धरी

चतुराइ काठोंओए चळावीं, हय मध्य वाइनो रथ हळावीं; जवधारी जांबुढे जवरजस्त, सुखरूप आवीं पहाँच्या समस्त. १६८ सुरतान केरूँ मोसाळ श्रेष्ट, लेखाय जाम लाग्वाजीं ज्येष्ट; पुर जामनप्र एतुं जदग्र, वैरी विलोकतां थाय व्यग्र. १६९ दिन एक पामी उत्तम पसंग, पुरतानसिंह निज वन्दु संग;

चाल्या वधारी हृदये सुद्दाम, श्री जाम केरी करवा सळाम.

सोरठा.

१७०

१७१

१७२

१७३

\$08

शूरवीर सुरतान, जामनगर जइ प्होचींआ; सुद्यी आप्युं मान, ळाखेणुं ळाखाजींप.

कचेरीमा जन कोइ, उचर्यो एवं एक दिन; हणनारो को होय, निज कर नम्न कटार पर.

विळियो जेनो वाप, द्युं न करे सुरतान ए; स्थिर रही हणीं थाप, क़ूदी नग्न कटारपर.

छन्द छप्पय.

भाणेजे भय छोडीं, करी कृति अति अनेरी; हरख्या हद विण जाम, हाम वालकनी हेरी; व्हाल धरी वरदान, जे समे जामे दीयुं; सुरताने ए समय, कुटिल भ्रक्तटी करीं कीयुं; पर घर पेट भरी हजी, दिवस दोहिला गाळीए; मळे मदद देनार तो, गई वसुंधरा वाळीए.

रोळा वृत.

सत्वर आपीं सहाय, जवर छाखाजी जामे; पृथीरीजना पुत्र, हालीं निकळ्या राट हारीं; धर्यु इष्ट्रनुं ध्यान, कार्यनी सिद्धि करवा; ग्रुरवीर सुरतान, फोज लइ लाग्या फरवा. १७५ इळवदपर हरवख्त, चढाइ करता चेंपि; कठिन हृदय कांपतां, शत्रुना जेने कोपे; गढिआ पर गढ इतो, सवळ वावरीआ केरो; किल्लो कवजे कथीं, घाळी सुरताने घेरी. BUS भाळांथी भरपूर, कप्ट काठीने दीघां; अधिक गाम एहनां, कोपीने कवने कीधां; छइ शाहतुं वचन, महद नदी मछू किनारे; वसाव्यु वाकानेर, पराक्रम करींने प्यारे. 800 निज काका अमरथी, युद्ध कींधुं अति भारी; अमर मेळॅब्युं नाम, शत्रु सेना संहारी; सानसिंह ते तणा, तनुज म्होटा पन वाळा; भक्तं भागव्युं राज्य, करी अरिनां मुख काळां. १७८ रायसिंह ते तणा, मतावी पुत्र मगटीयाः जेनी हिम्पत जोइ, इरामीनां दल इठियां; चंन्द्रसिंहजी थया, रायना पुत्र पतापी; इळवद कींधुं हाथ, शेंह सुवान आवी; 208 अल्प समयॅ त्यां रही, फरी आन्या निजपुर प्रतिः कुँवर केसरीसिंह, थया ए पछी गादीपतिः एना थया अनूप, राज भारोजी राजा. गो द्विज रक्षण करी, महद राखी कुळ माजा.

१८०

कोठी ने कुंदणी, तोडी काठीने मायी: छूंदयुं साजडीयाळी, हिम्मती यादव हायी; राखी कुळनी छाज, रायसिंहे रण खेळी; धरा मंडले धाक, रही'ती जेहनी फेली. १८१ थया कसरीसिंह, केसरी वालक जेवा; करता अरिमृग अन्त, कीर्ति छाखेणी छेवाः चन्द्रसिंह ए पछी, गादीए वेटा गुणीयल; करमां ग्रही कुपाण, बचुने वतावीयुं वल. वखतासिंह वर वखत, ए पछी आव्या पाटें. दुनियामा दइ दान, ठीक रूप शोभ्या ठाउँ; तेना यशावतासिंह, पाटवी स्वर्ग सिघाव्याः वनेसिंह वहाद्र ए पछी तख्तें आव्या. १८३ हृदये धारी हाम, काम अति उत्तम कीधां; पाळी गो द्विज संत, दान दीनोने दीधां; करी तीथे वृत कळित, स्वर्गमां शान्ति पाम्या; ए पर्छी असर नरेज्ञ, ! आप यश जोरें जाम्या. वर विद्या पेळवी, कदर गुणीओनी करोछो; राजनीतिए राज्य, करी कुळ धर्म धरोछो, पाळोछो निज प्रजा, पुत्र सम गणीने पीते; नित्य कवि नथुराम, गुणो गायेछे गीते. १८५



हितीय तरंग,

इरिगीत.

मुनिराज मार्कंडेय छे अमरेश पूर्वज आपना, तेना पवित्र पुराणमां छे चारु चरित अमापनां; आधार लइ ए प्रन्थनो उत्पत्ति आ ब्रह्मांडनी, आनंदथी कहुँ आपने नृप! सांभळो सावध बनी,

जगततुं आदि कारण अव्यक्त, जेने महान् ऋषिओ नित्य, सत्, अने असत् रुप सूक्ष्म प्रकृति कहे छे, निश्चळ, अक्षय, अजर, अमाप, अन्यना आश्रय विना पोताने आधारे रहेछं, ज्ञान्द, स्पर्श—रुप—रस अने गन्ध ए विषयोधी रहित, अनादि, अनंत, जगततुं मूळरुप, त्रिगुणना उत्पत्ति अने छयतुं स्थान प्राचीन तेमज अविज्ञेय ए अव्यक्त ब्रह्म प्रथम हतुं; जगत्ना प्रछय पछी पण आ सर्व तेनाथी व्याप्त हतुं.

क्षेत्रज्ञना अधिष्ठानरूप अने त्रण गुणनी समानतावाळा अव्यक्ते सृष्टि करवा मांडी त्यारे गुणनी चेष्टाओधी प्रधान महत्तत्व उत्पन्न थयुं, तेने अव्यक्ते वीटी छीयुं, जेम वीजनी पछवाडे छोडुं वीटाएलुं होय छे तेम अव्यक्तथी वीटाएलुं महत्तत्व छे. अव्यक्तमां रहेला गुण एनामां आव्या जेथी ते सात्विक, राजस, अने तामस एवा त्रण प्रकारनुं थयुं, महत्तत्वथी अहंकार थयो ते पण त्रण प्रकारनों, सात्विक, राजस, अने तामस, अव्यक्तथी जेम महत्तत्व वीटायुं तेम महत्तत्वथी अहंकार प्रमा अने तेथी शहंकार प्रणा वीटायों, त्रण प्रकारना अहंकारमांथी तामस अहंकार विकार पाम्यो अने तेथी शब्दात्मक सूक्ष्मरूप उत्पन्न थयुं, शब्द तन्मात्राथकी शब्द गुणवाळुं आकाश उत्पन्न थयुं, ए शब्द तैन्मात्रावाळा आकाशने तामस अहंकार वीटयुं, आकाशंधी स्पर्श उत्पन्न थयों अने तेथी वळवान वायु थयों तेनो स्पर्श गुण छे; वायु थकी रुपतन्मात्रा अने तेज उत्पन्न थयुं तेनो गुण रुप छे,

स्पर्श तन्मात्रावाळो वायु रूप तन्मात्रावाळा तेजने ढांके छे; तेज विकार पामीने रस तन्मात्राने उत्पन्न करे छे. ते थकी जळ उपजे छे, तेनो गुण रस छे, रस तन्मात्राने रूप तन्मात्रा वींटे छे, जळ विकार पामीने गंघ तन्मात्राने उपजावे छे ते थकी पृथ्वी पेदा थाय छे तेनो गंघ गुण छे; ते ते भूतमां तेनो जे सूक्ष्म विपय छे तेने तन्मात्रा कहे छे. ए तन्मात्राओ मात्र वाणीथी साधा-रणपणे कहेवाय छे पण तेमनुं कांइ विशेष रूप कहेवामां आवतुं नथी. एवं अविशेषपणुं तेमां छे, माटे ते शात नथी के भयानक नथी तेम मृह नथी.

सात्विक अहंकारनो सर्ग सात्विक, ते अधिक सत्ववाळा अहंकारथी तेनी साथे एकी वसते उपने छे. पांच ज्ञानेदियो अने पांच कर्मेन्द्रियो ए रजोगुणात्मक अहंकार्यी उपने छे अने तेना दश देवता सात्विक छे, अगियारमुं इन्द्रिय अने तेनो देवता ए सर्व वैकारिक कहेंवाय छे. श्रोत्र, त्वचा, चञ्च, जिह्ना अने नासिका ए पांच इन्द्रिय शब्दादि ग्रहण करवा माटे बुद्धियुक्त कहेवाय छे, चरण, गुदा, उपस्थ, इस्त अने वाक् ए पांच कर्मेन्द्रियोतुं कर्म अनुक्रमे गमन, मळ त्याग, आनंद, शिल्प अने वाक्य छे. इवे शब्द तन्मौत्रावाळुं आकाश स्पर्श तन्मात्रावाळा वायुमा भवेश करे छे. जेथी वायुमां शब्द अने स्पर्श ए वे गुण आवे छे, ए शब्द अने स्पर्श, रुपमा मळीने अग्निने शब्द, स्पर्श अने रुप ए त्रण गुणथी युक्त करे छे. रसात्मक जळमां शब्द, स्पर्शे अने रुप मळवाथी जळने रस सहित चार गुण युक्त बनावे छे; शब्द, रपर्शे, रुप अने रस ए गन्धमा प्रवेश करी तेनी साथे एकत्र यह आ पृथ्वीने वींटे छे, नांटे आ स्यूळ पृथिवी भूतोमा पांच गुणवाळी देखाय छे, अने तेमांना शब्दादिक गुण शान्त, घोर अने मृह जणाय छे माटे ते विशेष कहेवाय छे, ए गुणो परस्परमां प्रवेश करी अन्योअन्यने धारण करे छे, तेमज पृथ्वी मध्ये प्रका-ज्ञात्मक तथा अपकाज्ञात्मक, वन तथा वेद्वित आ सर्वने पण ते वारण करे छे. तेओ इन्द्रिओथी ग्राह्म अने नियमित होवायी विशेष कहेवाय छे, पूर्व भूतिनी गुण तेनी पछीनामां आवता जाय छे, ए सर्व विविध वळवाळा अने भिन्न भिन्न इता त्या सुधी एकत्र थया विना अने एक वीजामा मळ्या विना प्रजा सरजवाने समर्थ यया निह, यण वळीथी एक बीजानो आश्रय धारण करी एकठा मळी एकीभूत यया अने समग्रपणे एकरुप यया पछी अव्यक्तनी छपाथी तेमा पुरुषे निवास कर्यो त्यारे ते महत्तत्वयी पृथ्वी सुनीना अंड उत्पन्न करी ज्ञाक्या, जळना परपोटानी पेठे ते अंड भूतसमुदायथी क्रमे करी रिद्वि पाम्युं, ते अंड महान् अने जळमा शयन करनारुं इतुं, ए मकृतियी उपजेला अंडमा क्षेत्रज्ञ (जे ब्रह्म कहेवाय छे ते) वृद्धि पाम्यो, एज सृष्टिमां प्रथम

शरीर धारण करनारो थयो, अने एनेज "पुरुष " नाम अपाँय छे, ए भूत मात्रनो आदि कर्ता जे पूर्वे हतो तेनाथी आ सचर अने अचर त्रण छोक व्याप्त छे. ते महान् अंडनी पछी मेरु उत्पन्न थयो, वेष्ट्रन अने वीजा पर्वतो ते पछी उपज्या, ते अंडना जंतर भागतुं जळ ते समुद्रो छे, ते अंडमा देव, असुर अने मनुष्य सिहत आखुं जगत् द्वीपादि, पर्वतो, समुद्रो, चंद्र सूर्यादि ज्योति अने सर्व छोक समायका छे, जळ, वासु, अग्नि अने आकाश आदि भूतो वडे ते वहारथी वींटाये छुं छे ते ए रीते के अंडना करता दश्र गणी महोटो पृथिवी तेनी चारे तरफ वींटाये छी छे तेथी दश्र गणा जळ थी पृथ्वी वींटाइ छे, तेथी दश्र गणा वासुथी जळ शिंटायुं छे एम एक एकनी पाछळ दश्य दश्य गणा महान् भूत वींटाया छे. ते भूतोनी पाछळ अहंकारनुं आवरण अने अहंकारनी पाछळ महत्तत्वनुं आवरण छे ते सर्व सहित महत्तत्व अञ्यक्तथी वींटायुं छे, ए सात प्रकृतिना आवरणथी ते अंड गींटाये छुं अने ते आठ प्रकृतिओ अन्योअन्यने वींटी रहे छी छे. ए प्रकृति नित्य छें अने तेमां रहे छो पुरुष साक्षात् ब्रह्म छे.

जेम कोइ जळमां डूवेलो मतुष्य वहार नीकळती वखते जळमां कुंडाळां उत्पन्न करे छे. तेम "पुरुप" ब्रह्म अने "जळ" व्यापक प्रकृति जाणवी. अव्यक्त क्षेत्र अने ब्रह्मा तेनो क्षेत्रज्ञ छे, मेघ संयोगथी जेम विद्युत उत्पन्न थाय छे तेम तेम प्रथम अबुद्धिथी पाकृत सर्ग अर्थात् प्रकृति सृष्टि प्रकृट थइ अने क्षेत्रज्ञे तेमां निवास कर्यो.

ज्यारे आ अखिल जगत् प्रकृतिमां लय पामे छे, त्यारे पंडितो तेने पाकृत प्रलय कहे छे, ज्यक (इन्द्रियग्राह्य जगत् आदि) मात्रने पोतामां लीन कर्या पछी अने विकार मात्रने पाछो खेंची लीघा वाद प्रकृति अने पुरुष ममान वर्षनो आश्रय करी रहे छे, ते वखते तमो गुण अने सच्च गुण पण समयणे वर्ते छे, न्यूनाधिकनो त्याग करी परस्पर मिश्र थइ रहेला छे. जेम तलमां तेल अने दूधमां दी ते रीते तमोगुण अने सच्चगुणमां रजोगुण मळी रहेलो छे, ब्राम्तानी जत्य-चिथी मांडीने ज्यांगुयी तेनुं वे परार्घ आयुष्य रहे छे त्यांगुधी परमेश्वरनो दिवस छे अने ब्रह्माना लय थया पछी तेटलीज रात्री जाणवी, जगतनो आदि पुरुष, जेनो आदि काळ छेज निहे, सर्व विश्वनो हेतु, जेने विपे मन के बुद्धि पहोंची शकतां नथी तथा जेनी क्रियाओ स्वतंत्र छे एवो कोइ जगतनो पित परमेश्वर पोताना अगम्य योगथी प्रकृति अने पुरुषमां प्रवेश करी तत्काळ तेने क्षोभ पमाडे छे, जेम तरुण स्त्रीओमां मद अथवा वसंतनो वायु प्रवेश करी तेओने क्षोभ पमाडे

छे, तेम ते योगरुप मूर्तिवाळो परमेश्वर प्रकृतिपुरुपने क्षोभ पमाडे छे, प्रधान क्षोभ पाम्युं एटछे तेज देव " ब्रह्म " संज्ञा धारण करी अंडकोशमां उत्पन्न थाय छे तेज प्रथम क्षोभक छे.

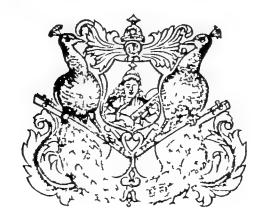
तेज प्रकृतिनो पित थइ क्षोभ पाम छे अने संकोच विकाश वडे करीने प्रधानपणामां पण तेज रह्यों छे. तेज जगत्नो हेतु निर्गुण छे तथापि आ रीते उत्पन्न थइ रजोगुणने भोगवतो ब्रक्षा-पणानो आश्रय छइ सृष्टि करवामां प्रवर्ते छे. ब्रह्मा थइ प्रजा उत्पन्न करी रह्या वाद सत्वगुणना आधिक्यवाळो ते विष्णु वनी धर्म वडे तेनुं परिपालन करे छे, पछी तमोगुणना आधिक्यवाळो ते रुद्र (शंकर) थइ त्रिळोक्तीनो संहार करी त्रिगुणात्मक पोते निर्गुण थइने अयन करे छे. जेम खेतरनो माछिक प्रथम वावनारो थइ, पछी वावेछा पदार्थनो पाळक थाय छे अने अन्नादि परिपाक पाम्पा पछी तेनो कापनारो पण पोतेज थाय छे, तेम ते निर्गुण पुरुष ब्रह्मा, विष्णु अने रुद्र एवी संज्ञा धारण करी ब्रह्मा रूपे छोकने सरजे छे, विष्णुरुपे उदासीन रही पाळे छे अने रुद्र रूपे संहारे छे, स्वयंभू परमात्मानी ए त्रणे अवस्थाओ छे, परमात्मानो रजोगुण ते ब्रह्मा, सत्वगुण ते विष्णु अने तमोगुण ते रुद्र, एज त्रण देव छे अने एज त्रण गुण छे. तेओ अन्यो-अन्य जोडां थइ वर्ते छे तथा अन्योजन्य आश्रय करी रह्या छे. क्षणवार तेनो वियोग नथी.

आ रीते जगत्नी पूर्वे जे देवनो देव इतो तेज रजोग्रणने धारण करी चतुर्भुख ब्रह्मा थइ जगत्नी उत्पत्ति करवाना कार्यमा योजायेळ छे, विचारी जोतां अनादि, हिरण्यगर्भ, ए आदि देव पृथ्वीरूप कमळनाळमां रहेळा प्रथम ब्रह्मा उत्पन्न थया.

ब्रह्मानी गणतरी प्रमाणे ते महात्मा ब्रह्मानुं एकसो वर्षतुं परम आयुष्य छे. पंदर निमेपनी एक काष्टा, त्रीश काश्चानी एक कळा, त्रीश कळातुं एक मुहूर्त त्रीश मुहूर्तनो एक मानवी रात्री दिवस, त्रीश रात्रि दिवसना वे पखवाडीयां अथवा एक मास, छ मासतुं एक अयन, ते अयन वे छे. दक्षिणायन अने उत्तरायन, वे अयनतुं एक वर्ष, एक मानवी वर्ष एटछे एक दिव्य (देवतुं) रात्रि दिन तेमां दक्षिणायन रात्रि अने उत्तरायन दिवस जाणवो, एवां वारहजार देवनां वर्ष वडे छत युगादि चार युगनी एक चोकडी थाय छे; दिव्य चारहजार वर्षनो एक छतयुग, चारसो वर्षनी तेनी संन्या अने तेटछोज संध्याश, त्रण इजार वर्षनो त्रेतायुग, त्रणसो वर्षनी तेनी संन्या अने तेटछोज संध्याश, वे इजार वर्षनो द्वापरयुग, वसो वर्षनी तेनी संन्या अने तेटछोज संध्याश, वे हजार वर्षनो द्वापरयुग, वसो वर्षनी तेनी संन्या अने तेटछोज संध्याश, वे हजार वर्षनो द्वापरयुग, वसो वर्षनी तेनी संन्या अने तेटछोज संध्याश, वे हजार वर्षनो हापरयुग, वसो वर्षनी तेनी संन्या अने तेटछोज संध्याश वर्षनो केटछो किटछोज संध्या छे, तेनां संध्या अने

संध्यां स सो सो वर्षनां छे. ए देवना वार हजार वर्षोनी विद्वानोए "युग" संज्ञा पाडी छे अने हजार गणा करीए त्यारे ब्रधानो दिवस थाय, ब्रह्माना एक दिवसमां चौद मनु थाय छे तेनां नाम—स्वायंभ्रव, स्वारोचिष, औत्तम, तामस, रैवत अने चाञ्चष ए छ मनुओ थइ गया अने हालमा सातमो वैवस्वत मन्वंतर छे, हवे पछी पाच सावंणिक, छठो रौच्य अने सातमो भौत्य. ए मन्वंतर थवाना छे एटले कुल चौद मनुओ थया, हजार चोकडीमांथी चौदमा भाग जेटली चोकडी मत्येक मनु भोगवे छे. ज्यारे मनु प्रकट थाय छे, त्यारे तेनी साथे देव, सप्तर्षि, इन्द्र अने राजाओ विगेरे उत्पन्न थाय छे, अने तेना लयनी साथे सर्वनो लय थाय छे.

एक मनु इकोतेर चोकडी अने ते उपरांत केडलांएक वधारे वर्ष (७१३) चोकडी भोग-वे छे तेने मन्वंतर कहे छे. तेनी संख्या मानुष वर्षनी गणतरीए त्रीज्ञा करोड सडसट लाख वीज्ञा हजार तथा इकोतेर उपर कहेलां वर्षो १८५१४६८४ मळीने ३०८५७१४२७४ वर्ष एक मनु भोगवें छे, दिव्य वर्षनी गणतरीए आठ लाख वावन हजार तथा ५१४२६ मळीने ८५७१४६६ वर्षनो एक मन्वंतर कहेवाय छे, ए काळने चौद गणो करवाथी ब्रह्मानो एक दिवस थाय छे, तेनी अंते ब्रह्मानी रात्री पडवाथी पलय थाय छे, तेने विद्वानो "नैमित्तिक" कहे छे, ते समये भूलोंक, भ्रवलोंक अने स्वलोंक ए त्रण नाज्ञ एमि छे अने महलोंक तेमज ते उपरना लोको रहे छे, त्रणेलोक एक समुद्ररूप थइ जवाथी ब्रह्मा रात्रे सूइ रहे छे, जेटलो ब्रह्मानो दिवस तेटलीज तेनी रात्री जाणवी, ए रात्रीनी अंते पाछी सृष्टि चालु थाय छे. ब्रह्माना आयुष्यनुं अर्थ पचास वर्षने परार्थ कहे छे ते परार्थनी अंते पाछा नामे महाकल्प थयो हतो, हाल ब्रह्मानुं द्वितीय परार्थ चाले छे तेमां प्रथम आ वाराहकल्प वर्ते छे.



[₹७]



तृतीय तरंग

A COOM

दोहा.

विधिए विधियुत जे करी, प्रजोत्पत्ति धरी प्यार; अमर! कहुं ए आपने, शोधी शास्त्रनो सार.

पाद्म करुपना अंतमां प्रकथकाळे रात्रे सूतेळा समर्थे ब्रह्मा जागृत थया अने सत्वगुणना आधिक्य सिंहत चोतरफ जोवा छाग्या तो वधा जगत्ने शुन्य जोयुं; जेथी तेओए जगत्नी उत्प-त्तिना कारणरुप, विकार रहित, ब्रह्मस्वरुप नारायण (नारां जळने कहे छे कारण के जळ ए नरनी संतित छे अने तेमा शयन करे छे माटे नारायण कहेवाय छे) नी स्तुति करी. वाद ब्रह्माए अनु-मानथी पृथ्वीने जळमां डूवेछी जाणी तेने वहार कांढवा विचार कर्यो. पूर्वे जेम करपना आदि-काळमां मत्स्यें कूमे आदि शरीर धारण कर्यो इतां तेम आ वखते पण वेद अने यद्ममय वाराइ-रुप धारण करी जळमा प्रवेश कर्यो. र्स्वना उत्पत्ति स्थान अने सर्व गृतिवाळा तेमज जनकोकमा रहेळा सिद्ध पुरुषोए चिन्तवन करास्। जगत्पतिए पृथ्वीने पाताळमांथी वाहेर काढी पाणी उपर मुकी, ते पृथ्वी जळना समूह माथे म्होरी होडीनी माफक तरवा लागी, पृथ्वीने समान करी ते उपर ब्रामाए पर्वत उत्पन्न कर्या, संवर्तकअ्ग्निए करी प्रथमनी स्टष्टि दग्ध थइ गइ ते तखते पर्वतो सर्वत्र वेराइ गया इता. त्रण लोक एकार्णवरुप थया त्यारे ए पर्वतो जळमां इब्या हता, तेमतुं जळ वायुए दूर कर्यु जेथी प्रथमनी पेठे जे जे जगोए इता त्या तेओ स्थिर थया, पछी पृथ्वीना सात द्वीपथी सुज्ञोभित भाग करी तेने आदि छइ छोकोनी पूर्वेवत ज्ञानवान ब्रह्माए कल्पना करी. जेवी सृष्टि पूर्वे कल्पना आदि काळमां हेरी तेवी सृष्टिनुं चिन्तवन करतां ब्रह्मानी पासे एनी मेळे तमोमय जड सृष्टि प्रकट थइ तेमज तम, मोइ, महामोह, तामिस्र अने अंध ए पाच प्रकारनी अविद्या प्रकट थइ; अंतरथी अने वहारथी अज्ञानवढे वींटायेली ए सृष्टिने नगात्मक अर्थात् पर्वतरुप सृष्टि जाणवी. कमके विकृतसर्गमां नथम पर्वतनी सृष्टि करी. ए पैवत सृष्टि विकृत-

·****

सर्गमां मुख्य समजवी. आ सृष्टियी ब्रह्माने संतोष थयो निह त्यारे वीजी सृष्टिनुं ध्यान करवाथी तिर्यक् सृष्टि उत्पन्न थइ, ए सृष्टिमा उत्पन्न थेयेळानुं गमन कम रहित होवाथी तिर्यक् सृष्टि कहे-वाइ. ए सृष्टिमां ज्ञानरहित, तमोगुणमधान, उन्मार्गगामी, अज्ञानमां ज्ञान माननारा अहंकार-युक्त, मानरहित, सुखदुःखादि जाणवाबाळा परंतु परस्पर सर्वध ज्ञानं विनाना पशु आदिक उत्पन्न थयां, तथी पण विधाता संतोष न पाम्यां अने ध्यानथी, त्रीजी सृष्टि उत्पन्न थइ, ते उर्ध्व-स्त्रोत कहेवाय छे. आ सृष्टि सात्विक थइ तेमां सुख अने मीतिवाळा अंतर अने वाहरथी आवरण विनाना उद्ये मवाहथी देव उपज्या. आने देव सृष्टि पण कहेछे, आथी ब्रह्मा मसन्न थया. स्वारपछी ज्ञानमार्गनुं साधन करी शके एवी उत्तम सृष्टिनुं ध्यान कर्युं, धारणा प्रमाणे तुरत अर्वाक्र्स्त्रोत मकृतिथी उत्पन्न थयो, ए सृष्टि अधोमार्गथी मकट थइ माटे अर्वाक्र्स्त्रोत कहेवाय छे, ए सृष्टिना जीवोमां ज्ञान वाहुल्य तथा रजोगुण अने तभोगुण अधिक होवाथी तेओ विशेष दुःख्वाळा, वारंवार कर्म करनारा, अंतरथी तेमज वाहेरथी मकाशवाळा तथा ज्ञाननुं साधन करी शके एवा मनुष्यो थया. ब्रह्मानी पांचमी अनुम्रह सृष्टि धह ते विपर्यय, सिद्धि, ज्ञान्ति अने तृष्टि ए चार प्रकारनी व्यवस्थावाळी छे. ते सृष्टिमां उत्पन्न थयेला युत अने वर्तमान अर्थने जाणनारा छे. भूतना अधिक अंशवाळी भूतोनी छठी मृष्टि कहेवाय छे, ए सर्व विष्टदानादिनुं ग्रहण करनारा, विभाग करवामा आसक्त, ज्ञानवान् अने आत्मशीर होय छे.

प्रथम महत्तत्वनो सर्ग थयो ते ब्रह्मानो, वीजो सर्ग तन्मात्राओनो, ते भूतर्सण कहेवाय छे, त्रीजो वैकारिक सर्ग इन्द्रियोनो ते बुद्धिरहित प्रकृतिसर्ग कहेवाय छे, चोथो मुख्य सर्ग तेमां मुख्य पर्वतोने मानेळा छे, तिर्यक् योनिथी उपजेळो तिर्यक्स्रोत पांचमो सर्ग छे, छठो उर्ध्व-स्रोतसर्ग ते देवस्टिश्चेनो छे, सातमो अर्वाक्स्रोतसर्ग मनुष्यमृष्टिनो जाणवो, आठमो अनुग्रह-सर्ग ते सात्विक तथा तामस छे. पाछळना पांच सर्ग वेक्ठत अने प्रथमना त्रण सर्ग पाकृत कहेवाय छे, अने नवमो कौमार सर्ग छे. ए नवे सर्ग (पाकृत तथा वैक्ठत) जगतना मूळ हेतुओ छे.

देवधी आरंभी स्थावर पर्यन्त चार प्रकारनी प्रजाओ पोतानां ग्रुभ अग्रुभ पूर्व कर्मनी वासनाओथी वासित थइने तेमज हुं " पुण्यवान, हुं पापी " ए रीतनी रूपीतिथी निर्मुक्त न थतां मळपकाळमां छय पामी हती. ज्यारे ब्रह्माने फरी सृष्टि करवानी इच्छा थइ त्यारे ए प्रजाओ तेना मन थकी उत्पन्न थइ. देव, असुर, पितृओ, अने मनुष्यो ए चारनी उत्पत्तिनेअथें ब्रह्माए पोताना आत्मानो जळमा योग कर्यो.

ब्रह्माना तमो भागनुं आधिक्य थताजवन मागथी प्रथम असुर उत्पन्न थया ते तमोभागवाळा देहनो त्याग कथों, त्याग करेको ते देह तत्काळ रात्री रुपे थह गयो, पछी वीजो देह
धारण कर्यों एटळे सत्वगुणना आधिक्यवाळा देवो तेना मुख्यकी निक्ळ्या. प्रजापित देवे ते
देहनो पण त्याग कर्यों एटळे सत्वगुणनी अधिकतावाळो दिवस प्रकट थयो, पछी केवळ सत्वगुणनोज देह धारण कर्यों अने तेमांथी पितृभो उत्पन्न करी ते देहनो त्याग कर्यों तेमांथी दिवस
अने रात्रिना मध्यमां रहेळी मंध्या उत्पन्न थह, पछी ते ममुए रजोगुणक्प वीजो देह धारण
कर्यों तेमांथी मनुष्य थया, मनुष्यने सरजी इश्वरे ते देहनो त्याग कर्यों तेमांथी रात्रिना अंतमां
अने दिवसना मारंभमा जे प्रकाश देखाय छे ते उत्पन्न थयो. ए रात्री, दिवस, संध्या अने प्रभात
देवना देव बुद्धिमान ब्रह्मानां शरीर छे. प्रभात, सायंकाळ तथा दिवस ए त्रण सत्वमात्रात्मक छे
अने रात्री तमोरूप छे एटळा माटे एने त्रियामा कहे छे. एज कारणथी दिवसे देवो, रात्रीए असुरो,
प्रभाते मनुष्यो अने सायंकाळे पितृओ वळवान होय छे अर्थात् तेओ पोतपोताना समय उपर
शत्रुओथी पराभव पामता नथी, उलटा समय उपर उलटी स्थिति (शत्रुओथी पराभव) पामे छे.

प्रजापित देवे रात्रे क्षुधा अने तृषायुक्त थइ रजोगुण तथा तमोगुणमय अन्य शरीर धारण कर्युं अने अंधकारमां क्षुधाथी कृश, कदरुपा तेमज दाढीवाळा जीवोने सर्ज्या तेमांथी "अमे रक्षण करीए छीए "एम जे वोल्या ते "राक्षस " कहेवाया अने " मक्षण करीए छीए "एम जे वोल्या ते "यक्षं" कहेवाया, तेमने जोइ ब्रह्मा अपमन्त थया जेथी तेओना मस्तक उपरथी वाळ खरी पड्या ते फरी टुद्धि पामी शक्या नहिः सरी पड्या माटे " सर्ष " अने फरी आरोहण न करी शक्या माटे " अहि " कहेवाया.

सर्पोने जोइ इश्वरने क्रोब थयो जेथी ते सर्पो क्रोधमय, कपिछ वर्णवाळा अने भयंकर थया, वाणीतुं ध्यान करता ब्रह्मा थकी वारोट अने गंधर्व उत्पन्न थया, वाणी सांभळतां उत्पन्न थया माटे तेओ " गंधर्व " कहेवाय छे.

ब्रह्माए ए आठ देव योनिओ उत्पन्न कर्या पछी पोताना देह थी वीजां पछ तेमज पशी सरज्या, मुखयी वोकडो, छानीथी वकरा, उदरथी गायो अने वे पासां तथा वे पग थकी घोडा, हाथी, गघेडा, ससला, हरिंग, उंट, खच्चर अने वोजी नाना प्रकारनी जातिओ उत्पन्न करी. रोम थकी फळ अने मूळवाळी औपविओ उत्पन्न थह, पछ अने औपविओ पेदा करी ब्रह्माए

कल्पना आदि काळमां यज्ञ कर्योः गाय, त्रोकडो, घोडो, गधेडो, इत्यादि ग्राम्य पशुओ अने सावज, दीपडा, हाथी, वानर विगेरे अरण्य पशु कहेवाय छेः

ब्रह्माए पोताना प्रथम (पूर्व) प्रख्यी गायत्री छंद, ऋग्वेद, तिवृत्ताम रथंतर अने अग्निष्टोम यज्ञ; दक्षिण मुख्यी त्रिष्ट्वप छंद, यज्जुर्वेद, पंचदशस्तोम, बृहतताम अने उनथ; पश्चिम मुख्यी जगती छंद, सामवेद, सप्तदशस्तोम अने अतिरात्र तेमन उत्तर मुख्यी एक जीश थ्याचीण, आपतोयीमाणयज्ञ, अनुष्ट्वप छन्द अने वैराज उत्पन्न कर्याः

भगतान् ब्रह्मदेवे कल्पना आदि काळमां विद्युत, वज, मेघ, रोहित नामे मृग विशेष, इन्द्र धतुष्य अने पक्षीओ विगेरे सर्ज्यां तेमज उत्तम अधम अनेक भूत तेना अंग थकी उत्पन्न थया. प्रथम देव, असुर, पितृओ अने मतुष्यों ए चार प्रजाओ उत्पन्न करी, पछी स्थावर जंगम भूत तेमज यक्ष, पिशाच, गंधर्व, अप्सराओना समूह, नर, किन्नर, राक्षस, पशु, सप, विकारी अने निर्विकारी जे काइ स्थिरचर छे ते सर्व उत्पन्न कर्या उत्पन्न थएल प्राणीओमां स्टिप्टिनी पहेलां जे जेना कर्मों हतां ते ते फरी तेने प्राप्त थयां. हिंसा के अहिंसा, दया के क्रूरता, धर्म के अध्रम, सल्य के असल्य ते ते कर्मनी वासनावाळा जीवो ते ते कर्मने प्राप्त थाय छे अने तेओने ते अनुकूळ आवे छे, इन्द्रियोना विषयोमां तथा उत्पन्न थएला शरीरोमां विविधता अने अरस्परसनो योग समर्थ ब्रह्मदेवे पोतेज करेलो छे. देवाहिकनां अने भूतादिकनां नाम तेमज रूप तथा तेना कुत्योनो विस्तार ब्रह्माए मृष्टि काळमां प्रथम वेदना शब्दों चडेज कर्यों हतो, ऋषिओना, देवस्टिहिनां तथा ब्रह्म रात्रीनी अंते जे कांइ एकट थयुं हतुं ते सर्वनां नामादिक पण तेज रोते आप्या हतां, जेम ऋतुमां तेनां चिह्नो विविध प्रकारना होय छे; ते ऋतु ज्यारे पाछी आवे छे त्यारे तेनां नेज चिह्नो प्रकट थाय छे एज प्रमाणे युगादिया पण सर्व वस्तुनुं समन्तुनं.

सत्य संकल्पवाळा ब्रह्माए प्रथम सृष्टि करती गत्वने एक हजार स्वीपुरुपनां जोडां मुख-थकी उत्पन्न कर्यों ते सर्व सत्वगुणवाळा तेमज स्वयं तेजस्वी जणाया, पछी छातीपांथी वीजां हजार स्वी पुरुप उत्पन्न कर्या ते सर्व रजोगुण प्रधान, वतापी तथा अमर्पवाळा थया, त्यारपाद जंघामांथी बीजा हजार युग्म उत्पन्न कर्यों ते सर्व रजोगुण तथा जारोगुणवाळा अने अभिळापा-युक्त थया, पछी एक हजार स्त्री पुरुप पगमांथी उत्पन्न कर्यों ते सर्व तमोगुण वधान, स्रोभाग्यहीन अने क्षुद्र मनना थया. ए रीते मिथुन रुपे उत्पन्न थएक नाणीओ हर्ष पामो कामातुर थइ अन्योअन्य संयोग करवा छाग्या, त्यारथी आ कल्पमां मिश्चनसृष्टि मवर्त थइ, ते वखते स्त्रीओने महिने महिने रजस्वछापणुं पाप्त थतुं नहोतुं तथी संभोग सेवन करवाथी पण स्त्रीओने मसव यतो न्होतो, परंतु आयुष्यना अंत भागमां ते एकज वार स्त्री पुरुषतुं युग्म मसवती इती, प्रत्येक प्रजावर्गने मन वहे एकवार ध्यान करवाथी शब्दादिक पांचे प्रकारना विषयो प्राप्त थता इता, प्रजापितथी उपजेळी आ मातुपी सृष्टि जाणवी. जेनी वंशपरंपराथी आ आखुं विश्व व्यापी रह्युं छे. ते युगमां उत्पन्न थएळी पजाओ नदी, सरोवर, समुद्र अने पर्वतोनुं सेवन करती हती, तेमने ज्ञीत तथा उष्णता अल्प होवाथी ते यथेच्छ फरती हती, तेने विषयोमां स्वाभाविक दृप्ति हती, तेमनामा मिलनता, द्वेष के अदेखाइ नहोता. ते कोइ जगोए घर करी निह रहेतां पर्वतोमां के समुद्र किनारे पड़ी रहेती, मनमां निरंतर आनंदयुक्त होइ मनोस्य रहित फरती इती. पिश्वाच, सर्प, राक्षसो, अदेखां मनुष्यो, पशुओ, मगर, माछछां, पेटे चाछनारां माणी आच्छादन रहित अथवा अंडज प्राणीओ ते समये अधर्मथी उपजेळी प्रजाओ इती. ए अरसामा मूळ, फळ के पुष्प नहोतां. ऋत के ऋतुना चिह्नो नहोतां, अति गरमी के अति शरदी नहोती, सदाए सुखमय समय इतो. काळकमे करी ते प्रजाने विचित्र सिद्धिओ प्राप्त थइ, दिवसना पूर्व भागमा तथा अतृति जणावाथी तृत थवानी इच्छा करतां ने अनायासे तृत थती इती. तेने जळना सूक्ष्मांशनी "रसोछसा" अने वीजी केटछीएक मनकामना पूर्ण करनारी सिद्धि पाप्त थइ, ते प्रजाओ श्रीरे औपधादि संस्कार कर्या सिवाय पण स्थिर यौवनवाळो इती तेमने संकल्प युग्मवजा उत्पन्न यती इती. तेनो जन्म साथेज थतो, रूप सर्खुं अने विना पण ज थतुं इतुं तेने परस्पर काइ अभिळाष के द्वेप नहोतो सर्व साथे समानरुव अने समान आयुष्यवाळां इतां, कोइ अवम के उत्तम नहोतुं. तेतुं आयुष्य मनुष्यना चार इनार वर्ष जेटलुं हतुं. काळ वीततो गयो तेम तेम ते मनाओ नाज्ञ पामती गइ तेनी साये सर्व सिद्धिओ पण क्रमे करी नष्ट थइ गइ. आकाञ्चमांथी रस पडवा मांड्या अने एथी कल्प्टक्ष उत्पन्न धर्या ते घरने आकारे बनी रह्या. तेनाधी प्रजाओने सर्व प्रकारना उपभोग पाप्त थवा लाग्या, त्रेतायुगना आरंभमां तेणे तेथी निर्वाह करवा मांड्यो, पछी क्रमे करी ते प्रजामा अकस्पात राग उत्पन्न ययो, स्त्रीओने महिने महिने ऋतु शप्त थवा छागी अने वारंवार गर्भनी उत्पत्ति थवा पादी; रागनी उत्पत्तिथी तेपना गृहाकारे रहेळां कल्पवृक्षो नाज्ञ पाम्यां अने तेनी जगोए चार शाखाओ वाळा दृक्षो उत्पन्न थयां तेमांथी वस्न नीकटवा माड्या अने तेना

फळोमा अलंकार पगट थवा लाग्या, ते वृक्षोमां सुगंधवाळुं, सारा वर्णतुं, सुरस तथा महीविळ आ-पनारुं मिक्काओ विना पुडाओमां मध नीपजतुं हतुं, तेथी पजा पोतानो निर्वाह चलावती, काळां-तरे ते प्रजाओं लोभयुक्त थइ अने तेमना चित्तमां ममत्त्वनो प्रवेश थयो, एटले ते वृक्षो उपर पांत-पोतातुं स्वामीत्व मानी छीधुं. ए दुराचारथी तेमनां ते वृक्षो पण विनष्ट थयां पुण्छी ज्ञीत, उष्ण, क्षुधा, तृषा इत्यादि उत्पन्न थयां, तेना निवारणने अर्थे तेणे प्रथम नगर वांधवा मांड्या अने रणना प्रदेशमां, दुर्गम्य पर्वतोमा तेयज नदीओमां हक्षोना, पर्वतोमां अने जळना दुर्ग वाधी सर्व रहेवा छाग्या. याप करवा अर्थे प्रथम तेना प्रमाण निर्माण कर्यी, सूक्ष्ममां सूक्ष्म अंशने परमाणु कहे छे, ते परमाणु त्रस--रेणु, पृथ्वीतुं रज, वाळनो अग्र भाग, छिक्षा, जू अने जवानो मध्यभाग ए सर्वे उत्तरोत्तर क्रमे करी आठ गणा जाणवा. आठ जवनो एक आंगळ, छ आंगळतुं पद, वे पदनी वेंत, वे वेंतनो हाथ, चार हाथनुं धनुष्य तेने दंड तथा नाहिकायुग पण कहे छे, वे हजार धनुष्यनो एक कोस, वे कोसनी एक गन्यूति अने चार कोसतुं योजन जाणबुं, चार प्रकारना दुर्गमांथी त्रण तो स्वाभाविक उपजेळा इता पण चोथो क्वत्रिम दुर्ग तेओए यत्नथी कर्यो. पुर खेटक, द्रोणीमुख, शाखानगर, खर्दर, द्वमी, ग्राम, घोप विन्यास तथा ते जुदा जुदा रहेवाना घर ते सर्व तैयार कर्यी. जे चो तरफ किञ्चावाळुं होय किञ्चाने फरती खाइ खोदेळी होय तथा तेनी वहार भींत वांघेळी होय, एक एक कोस उपर बुरज करेळा होय एवा आट:भागवाळुं, पूर्व के उत्तर तरफथी नमतुं अने शुद्ध वास वहे करी वहार जवाना प्रदेश युक्त होय तेने पुर कहे छे. पुरथी अरधुं ते " खेटक, " पुरनो चतुर्थीश्च ते खर्वट अने तेथी आठमे भागे नातुं ते "द्रोणीमुख, " खाइ तथा किल्ला विनाना नगरने पण " खवेट " कहे छे. ज्यां मंत्री तथा सामंतो रहेता होय ते " शाखा-नगर " कहेवाय छे, ज्यां समृद्धि युक्त खेडूत लोको रहेता होय, घणा शुद्ध जननी वस्ती होय तथा ज्यां खेडवा लायक जमीन होय तेने " ग्राम " कहें छे, कोइ कारणने लीधे नगरादिमांथी नीकळी कोइ ठेकाणे मनुष्यो वश्यां होय ते " वसित " कहेवाय छे. ज्यां खेतर वाढी न होय, घणा दुष्ट छोको रहेता होय, जे अनुनी भूमिना सीमाडापर होय, ज्या सैन्य अने राजानां निय मतुष्यो निवास करतां होय तेने " द्रमी " कहे छे. वासण कुसण गाडामां नांखी गायोनां टोळां कइ इच्छा मुजव निवास करी रहेनारा भरवाडना वासने "घोष" कहे छे; त्यां दुकानो होती नथी.

आ रं।ते ज्ञीतोष्णादितुं निवारण कर्या पछी क्षुचा अने तृपाधी व्याकुळ थती प्रजा पीटावा छागी ते वखते तेने त्रेतायुगमा सिद्धि प्राप्त थइ। तेम स्वाभाविक औपिथओ उत्पन्न यह -ESTEG

तथा पुष्कळ दृष्टि पण थइ, ते दृष्टिनुं जळ नीचाणमां भरायुं तेमा वीजुं वृष्टिनुं जळ भरावाथी प्रवाह चाल्यो अने जमीन खोदाइ नदीओ थइ, जे जळना विदुओ पृथ्वीना पृष्ट उपर पडया तेनो पृथ्वीनी साथे संयोग थवायो औषविओ उत्पन्न थइ ते खेडवा तथा वाच्या वगर थएली ग्राम्य तथा अरण्य मळीने चौद प्रहारनो हती. तेम पत्येक ऋतुमां पुष्प तथा फळ आपे एवां वृक्षो अने भोथां पण उपज्या. औषधि समूहनी आ उत्पत्ति मथम त्रेतायुगमां थइ अने प्रजाए नेथी निर्वाह चलाववा मांडयो, वळी पाछो मजामां अकस्मात् राग अने छोभ उत्पन्न खवायी नदी, रेनतर पर्वत, वृक्ष, गुल्म, औषाविओ विगेरे उपर गोतपोतानी शक्ति ममाणे स्वामीत्व स्वापवा छागी. जेयी ते औषियो नाज्ञ पामी, जेथी क्षुधाकुछ प्रजा भगवान ब्रह्माने शर्णे गड, ब्रह्माए " पृथ्वी गळी गइ छे " एम निर्णय करी मेरुने वाछरडुं करी पृथ्वीने दोही, दोह्या पछी जे ग्राम्य अन अरण्य औषधिओ पृथ्वीमा छीन थइ इती तेनां वीज पृथ्वीना पृष्ट उपर जगी नीकळ्यां; फळ पान्या पछी जे सकाइ जाय तेने " औषधि " कहे छे. तेना सत्तर भेद छे १-डांगर, २-जव ३--गहुं ४-अणु जातनी डागर ५-६-वे प्रकारनां तझ 9-कांग ८-उदार नामे धान्य ९-कोदरा १० वटाणा १२--अडद १२- मग---१३--मसूर-१४--निष्पावनामे धान्य-१५-कळथी-१६-तुवर १७-चणा. याज्ञीय औषविओ ग्राम्य तथा आरण्य मळीने चौंद मकारनी छे. डांगर, जब, गहुं अणुजातनी डांगर, तळ, काग, कळथी, सामो निवार, यन्तिळ नामे धान्य, गवेधुनामे तृण धान्य-कुरुविंद, मर्फेटक अने पासीआचोखाः आ औपिपिओ ज्यारे फरी जगी निह त्यारे तेनी वृद्धिने अर्थे स्त्रयभू ब्रह्माए कुपिविद्या तेमन इस्तिमिद्धि पण उत्पन्न करी त्यारथी औषधिओ खेडीने प्रताव-वाना आवी. खेतीनी कळा निद्ध यथा पछी सपर्य बहादेवे गुण प्रमाणे म गैदाओं स्थापन करी धर्म अने अर्थतुं पाळन करनारा सर्व वर्णना ळोकोना वर्णना तथा आश्रमना धर्मोतुं पण स्थापन कर्यु. तेमज कियापान ब्राह्मणोने अर्थे नजापितनुं स्थान, संग्राममा स्थिर रहेनारा क्षत्रीओने अर्थे इन्द्रतुं स्थान, पोताना धर्म मणाणे चाळनारा वैदयोने अर्थे देवोतुं स्थान, सेवा छत्तिए वर्तनारा शुद्रोने अर्थे गंववींतुं स्थान, गुरुक्कछमा वसनारा ब्रह्मचारीने अर्थे उर्व्वरेता अहाशी हजार ऋषि-ओतुं स्थान, वानशस्यात्रमीने अर्थे सप्तिविज्ञोतुं स्थान, गृहस्यने अर्थे मजापतितुं, संन्यासीने अर्थे ब्रह्मतुं अने योगिओने नाटे अन्नव स्थान निर्धाण कर्युः



चतुर्थ तरंग

مر وا

सर्वेया.

पूर्वज आपतणा जगजाहिर, पुत्र मुनीश मृकंडतणाजे; आयुष अटप छतां चिरजीव बनी, विचरे अवनि पर आजे; ताप जरादिकनो तजीने, सुखरूप समाधि निरंतर साजे; ते नथुराम तमाम कहुं, अमरेश ! सुणो कुळना हित काजे.

पूर्वे ध्यान करता ब्रह्माना शरीरमांथी जीवो प्रकट थया ते देवथी आरंभी स्थावर पर्यंत कहें वाइ गया. ब्रह्मानीं ए सर्व प्रजाओं ज्यारे वृद्धि न पामी त्यारे तेणे पोताना जेवा नव मानस पुत्रों उत्पन्न कर्या तेनां नाम भृगु, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, अंगिरा, मरीचि, दक्ष, अत्रि अने विशिष्ठः आ नवेने पुराणमां " ब्रह्मा " नाम आपेळ छे. पछी ब्रह्माए क्रोथमांथी रुद्रने तथा पूर्वजोना पूर्वज धर्मने अने संकल्पने उत्पन्न कर्याः

पूर्वे ज सनंदन आदि सरज्या इता ते सर्व अपेक्षा विनाना, ध्यान निण्, भविष्य--वार्ताने जाणनारा, प्रीति रहित तथा पत्सर विनाना होडने लोंकमां आसक्त थया निहं आ रीते ए सर्वने लोंकनी उत्पत्ति करवामां निरपेक्ष जोइ ब्रक्षाने महा क्रोध थयो तेमांथी एक भारे शारीरवालों जेतुं अरधुं शरीर स्त्री रूप छे, एवो सूर्यना सरखो पुरुप उत्पन्न थयो तेने " तुं पोताना विभाग कर " एम कही पोते अंतर्धान थया.

ब्रह्माथी उत्पन्न वएला ए पुरुषे पोतामायो स्त्रीपणाने अने पुरुपपणाने जुदा कर्या तथा पुरुप्ता तेणे अगियार भाग कर्या। वळो ते समर्थ देवे सौम्य, असौम्य, शांत, खेत अने इयाम एवा अनेक मकारे पुरुपना तथा स्त्रीना विभाग कर्या, पछी मजापति ब्रह्माए पोताथी मकट वएला स्वायंश्चव मनुने पोताना समान कर्या। ए स्वायंश्चव मनुए तप वडे जेना पापो नष्ट थयां छे एवो

शतरुपा नामनी स्त्रीने पोतानी पत्नी तरीके ग्रहण करी, ने पुरुपथी शतरुपाने िषयवत अने उत्तान-पाद नामे वे पुत्र तथा ऋद्धि अने मस्ति नामे वे कन्याओ उत्पन्न थइ; तेमना पिताए मस्तिने दक्षनी साथे तथा ऋद्धिने ऋचिनी साथे परणावी ऋचि मजापितने ऋद्धियी दक्षिणाए सहवर्त-मान यह नामे पुत्र थयो, ए स्त्री पुरुपनुं जोडुं हतुं; यह थकी दक्षिणाने वार पुत्र थया ते स्वायंभ्रव मन्वंतरमां " यामदेव " नामे ओखखाता तेमज तेओ महा तेजस्वी हता.

पस्तिने विशे दक्षे चोवीश कन्याओ उत्पन्न करो तेमां श्रद्धा, छक्ष्मो, यृति, तृष्टि, पुष्टि, मेघा, क्रिया, बुद्धि, ळजा, वपु, शान्ति, सिद्धि, अने कीर्ति ए तेर कन्याओने समर्थ धर्मदेवे पत्नी तरीके ग्रह म करी. श्रद्धाने काम, छक्ष्मीने दर्प, धृतिने नियम, तुष्टिने संतोष, पुष्टिने छोभ, मेयाने श्रुत, क्रियाने दंड, नय अने विनय; बुद्धिने वोध, छज्जाने दिनय, वपुने व्यवसाय, ज्ञान्तिने क्षेप, ुसिद्धिने सुख, अने कीर्तिने यश, नामे पुत्र थयो, ए सर्व धर्मना पुत्रा जाणवा दक्षनी प्रथम कहेली कन्याओथी न्हानी सुंदर नेत्रवाळी ख्याति, सती, संस्रुति, स्मृति, श्रोति, क्षमा, संतति, अनस्रया, टर्जा, स्वाहा अने स्वया ए अगियार कन्याओनी साथे अनुक्रमे भ्रापु, शिव, मरीचि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, ऋतु, बिहाष्ट्र, अत्रि अपि अने पितृओए छप्न कर्योः भृगुने ख्याति यकी धाता अने विवाता नामे वे पुत्र उत्पन्न यया तथा विष्णुपत्नी कक्ष्मीजी उत्पन्न थयां. धाता अने वियाता मेरुनी कत्या आयति अने नियति साथे अनुक्रमे परण्याः धाताने आयतिथी पाण नामे पुत्र थयो अने विवाताने नियतिवी एकंड नामे पुत्र उत्पन्न थयो. ए मुकंडऋषि मनस्विनी नामनी कन्या साथे छग्न करी चमत्कार पुरनी पासेना नंगलमां आश्रम बांधी रहेता हता. ए ऋषि चणाज शान्तात्मा होइने शास्त्रना सर्व नियमो पाळी पोताना आश्रममा तप करता हता, तेने उत्तरावस्थामा एक सारो पुत्र उलान थयो. ते पुत्र शुभ लक्षणवाळी अने चंद्र समान कातिवान थयो, तेना पिता मुकंडे विवि पूर्वक तेनुं " मार्कडेय " प्वं नाम पाड्युं. ते वाळक श्लावळ पक्षना चद्र समान वृद्धि पामवा लाग्योः मार्केडेयने पांच वर्ष थयां, ते निरंतर वाल क्रीडा करतां करता एक दिवसे पोताना पिता मुकंडना खोळामा जइ वेठा, ते वखते एक जोम जोनारो अने सारी रीते सामुद्रिक श्वास जाणनारो द्विज ऋषि पासे आव्यो ते विषे मुकंडना खोळामा वेठेळा कुमारने नखना अग्रवी ने ज्ञिखा पर्यन्त वारंवार निहाळीने विस्मयथी पोताना नेत्र उघाडी मंद हास्य ऋर्युः

आ रीतें ते ब्राह्मणनी चेष्टा अने इास्य जोइ मृकंडऋषि विनययुक्त यह कांइक मनमां क्रोध लाबी तेने पूछवा छाग्या के "महाराज " तमें मारा वाळक सामुं जोइ मुखनो चेहरी फिक्को करो छो अने हृदयमां इतो छो तथी पारा मनमां संशय रहे छे माटे जेवी वात होय तेवी कहो. " ब्राह्मणे कहुं के, " हुं ज्योतिष अने सामुद्रिक यथास्थित जाणुं छुं जेथी तारा पुत्रनी रेखाओं जोइ इश्वरनी कुदरतने हम्रुं छुं. " आवां ज्ञान्तिवाळां वचनो सांभळी महात्मा मृकंड ऋषि अति विनयथी हाथ जोडी कहेवा छाग्या के " आप प्रथम पुरुषनी श्रुभ अशुभ रेखाओं तेमज शरीरना अवयवोनुं मने वर्णन करी वतावों पछीथी आप मारा पुत्र माटे जे कांइ भविष्य कहे- वानुं होय ते कहेशों तो मने विशेष खात्रों थशे. ", आ रीते मृकंडना वचन सांजळी सामुद्रिक- शास्त्री पुरुषनां भविष्य सूचक श्रुभ अशुभ छक्षणों कहेवा छाग्या के—

" जन्मान, मान, गमन, संहति. सार, वर्ण, प्रकृति, सत्त्व (एक प्रकारनो चित्तनो धर्म जेना विद्यमानपणाथी कदी विपाद के भय उत्पन्न थतो नथी), अनूक पाद आदि दश प्रकारना क्षेत्र, मृजा ए सर्व वातोने सामुद्रिक शास्त्र जाणनारो चतुर पुरुष प्रथम जोइ मनुष्योने भूत अने भविष्य शुभाशुभ फळ कही शके छे. जेनां चरण, स्वेद रहित कोमळ तळियांथी युक्त, कमळना मध्यभाग समान कान्तिवाळा परस्पर मळेळी आंगळीओंथी युक्त, चमकदार अने ळाळ रंगना नखोथी युक्त, सुंदर एडीओवाळा उष्ण शिराओथी रहित (जेमां नाडी न देखाती होय) निगूढ गुल्फ (जेना टांकणा, युंटीओ उंचो न होय) अने कूर्मना समान उपरथी उंचा होय ते राजा समजवो. अर्थात् जे पुरुपना चरण उक्त ळक्षणवाळा होय ते राजा वने छे.

सुपडानी पेठे आगळथी पहोळा श्वेतरंगना नखीथी युक्त, वाकी नाडीओथी व्याप्तं, शुष्क अने विरस्त आंगळीओवाळा चरण होय तो दारिय अने दुःख आपे छे. मध्यथी चरण उंचा होय तो निरंतर घणो पंथ करावे छे, कपाय रंगना चरण होय तो वंशनो विच्छेद करे छे अर्थात् जे पुरुषना कपाय रंगना चरण होय तेनो वंश दृद्धि पामतो नथी, अग्निमा पकावेझी माटीना समान जेना पगना तळीयानी कान्ति होय ते पुरुष ब्रह्महत्या करे छे अने जे पुरुषना चरण पीळा रंगना होय ते अगम्या स्त्रीमा आसक्त थाय छे.

विरळ अने सुक्ष्म रोमयीयुक्त वर्तुळाकार जेनी जंवा होय, हायीनी सुंढ समान सुंदर जेना उरु होय, मासयुक्त अने रामान जेना जानु होय ते राजा थाय छे. वान अने शृगाळ जेवी जेनी जंघा होय ते धनहीन होय छे.



जेनी जंघाओना रोमकूषमां एक एक रोम होय ते राजा, जेना एक रोम कूपमां वब्वे रोम होय ते पंडित अने श्रोत्रिय तेमज जेना एक एक ुरोमकूपमा त्रण त्रण चार चार रोम होय ते निर्धन अने दु;खी थाय छे, आ रीते मस्तकना केशोनुं पण शुभ अशुभ फळ जाणी लेवुं.

जेना जानु उपर मांस न होय ते पुरुष प्रवास करतां करतांज मरण पामे छे, न्हाना जानु होय तो सौभाग्य प्राप्त थाय छे; जेनां जानुं विकट होय ते पुरुष दारिय भोगवे छे, जेनां जानुं नीचां होय ते पुरुष स्त्रीजीत होय छे, जेना जानु मांसयुक्त होय तेने राज मळे छे अने जे पुरुषनां जानु महोटां होय ते दीर्घ आयुष्य पामे छे.

जे पुरुपतुं गुह्यांग न्हानुं होय ते धनवान अने संतानहीन होय छे, स्यूल गुह्यांगवाळो पुरुप धनहीन होय छे. जे पुरुपनुं गुह्यांग हावी वाज नमतुं होय ते धन अने पुत्रहीन त्था जमणी वाज नमतु होय ते पुत्रवान थाय छे; जे पुरुपनुं गुह्यांग नीचे वहु नमतुं होय ते दिस्त्री होय छे, जेनुं गुह्यांग नाडीओथी व्याप्त होय ते थोडा पुत्रवाळा थाय छे, स्यूल ग्रन्थि युक्त गुह्यांगवाळो पुरुप मुखी होय छे. जेनुं गुह्यांग मृदु होय ते पुरुप प्रमेह आदि रोगोथी मृत्यु पामे छे.

जेतुं गुद्धांग कोश (अंडकोश) मां निगृद होय ते राजा याय छे, जेतुं गुद्धाग दीर्घ अने त्रूटेल जेतुं देखातुं होय ते पुरुप धनहीन थाय छे, जेतुं गुद्धांग सीधुं अने गोळ होय ते तथा जेतुं गुद्धाग नहातुं अने नाडीओथी व्याप्त होय ते पुरुप धनवान बने छे.

जे पुरुपने एकज रूपण होय ते जळमा इवी मरे छे, जेनां रूपण विषम होय ते पुरुप स्त्रीलंपट होय छे, जेनां वने रूपण समान होय ते राजा थाय छे, जेनां रूपण उपर लेंचायेळा होय ते अल्प आयुष्य नोगवे छे अने जेनां रूपण ळावा होय ते पुरुपनुं आयुष्य सो वर्षनुं होय छे.

पुरुपना गुह्यागना अग्रभागनुं नाम मणि छे. जे पुरुपने लाल रंगनो मणि दोय ते धन-वान थाय छे, खेत अने मलिन मणिवाळो पुरुप धनहीन होय छे.

पिशाव करती वखते शब्द थाय ते पुरुष मुखी थाय छे जेनी मूत्रधारा शब्द रहित होय ते निधन बने छे.

जेना मूत्रनी वे त्रण अथवा चार धारा थती होय अने ते धारा दक्षिणावर्तथी नीकळती होय ते पुरुप राजा धाय छे. पिशाव करती वखते जेतुं पूत्र विखेराँ इजतुं होय ते धनहीन होय छे, अने यूत्रनी एक धारा यती होय ते अने ते विछत होय तो स्वरुपवान पुत्र आपनारी थाय छे।

जे पुरुषाना मणि हिनम्ध, उंचा अने समान होय तेओ धन, स्त्री अने रत्नोना भोगवना-वाळा थाय छे.

जेनो मणि मध्य भागमां नीचो होय ते पुरुष कन्याओनो पिता वाय छे अथीत एने घेर कन्याओज जन्मे छे अने ते पुरुष निर्धन पण थाय छे. जेना मणि मध्यथी उंचा होय तेओ घणा पशुओना माळिक थाय छे, जेना मणि अत्युक्वण न होय ते धनवान बने छे.

पुरुपना गुह्यांग तथा नाभिना अंतरने वस्ति कहे छे. जेना वस्तिनो उपछो भाग निर्मास होय ते पुरुष धनहीन अने दुर्भग थाय छे.

जेतुं पुष्पना समान सुगंधवाळुं वीर्य होयं ते राजा, मध समान गंधवाळुं वीर्य होय ते वहु धनवानं, मत्स्य समान गंधवाळुं वीर्य होय ते वहु संतानवाळो, तेमां अल्प वीर्यवाळो होय ते वहु क-न्याओनो पिता थाय छे, मांसना समान गंधवाळुं वीर्य होय ते महा भोगी, मिंदरा समान गंधवाळुं वीर्य होय ते यह करवाबाळो अने खार समान गंधवाळुं वीर्य होय ते पुरुष दरिद्री थाय छे.

जे पुरुष शीघ्र मैथुन करे ते दीर्घायुष्य पामे छे अने जे पुरुष घणा वखत सुधी (धीमे धीमे) मैथुन करे ते अल्पायुष्य याय छे.

जे पुरुषना स्फिच् अति स्यूळ होय ते निर्धन थाय छे, जेनां स्फिच् सुंदर मांसयुक्त होय ते सुखी होय छे, जे पुरुषनां स्फिच् अध्यर्ध होय तेने न्यात्र मारी नांखे छे, जेनां स्फिच् मंड्रक समान होय ते पुरुष राजा थाय छे.

जे पुरुपनी कट़ि सिंहना समान होय ते राजा अने वानर तथा उंट समान जेनी कटि होय ते धनहीन थाय छे.

जेतुं उदर सम होय ते भोगी जाणवो अने जेतुं उदर यहा तुल्य अथवा हांडी समान होय ते पुरुष निर्धन धाय छे.

केडनी उपरना चार आंगळ जेटला भागने पार्श्व अने उदरना पथ्य भागने कक्ष्या करे छे. जेना पार्श्व अभिकल अर्थात् मांसथी पुष्ट होय ते पुरुष धनवाळो होय छे. समान कक्ष्यावाळो पुरुष भोगी होय छे अने नीची कक्ष्यावाळो पुरुष भोगहीन होय छे. उन्नत कक्ष्या-षाळो पुरुष राजा याय छे, विषम कक्ष्यावाळो पुरुष कठोर होय छे.

जेतुं उदर सर्पना उदंर समान बहु छांबु होय ते पुरुष दरिद्री अने बहु भोजन करेंनारो होय छे.

गोळ, उंची अने विस्तीर्ण नाभिवाळो पुरुष सुखी होय छे, न्हानी, अहत्य अने छिस्री नाभि दु:खदायक बने छे.

जनी नाभि विषम होय ते अने पेटना विक्रिनी वचमां आवती होय ते पुरुष निर्धन होयें के अने तेने शुळी जपर चढाववामा आवे छे. जेनी नाभि वामावर्त होय ते पुरुष शठ होय छे, नाभि दक्षिणावर्त होय तो बुद्धिने उत्तम बनावे छे, वन्ने तरफ छांनी नाभि आयुष्यने वधारे छे, नाभि उपरना भागमां छांबी होय तो पुरुषने अश्विययुक्त करे छे अने नीचेना भागमां छांबी होय तो घणो गायोनो माजिक बनावे छे; कमक्रना तंतु समान नाभिवाळो पुरुष राजा थाय छे.

जदरना मिंच्यमां जे रेखा होय छे तेने बिक्ठ कहे छे. जे पुरुषने एक बिक्ठ होय तेतुं शिक्षयी मृत्यु थाय छे, जे पुरुषने ने बिक्ठ होय ते पुरुष घणी स्त्रीओ साथे संभोग करनारों होय छे, त्रण बिक्ठ होय ते आचार्य थाय छे अने जे पुरुषना जदरमां चार बिक्ट होय तेने घणा पुत्र थाय छे. जेना उदरमां एक पण बळीयुं न होय ते पुरुष राजा थाय छे, जेना उदरमां विषम अंधीत् कोइ न्हानी तथा को इम्होटी बिक्ट होय ते पुरुष अगम्या स्त्रीमां गमन करे छे अने पापी होय छे, जेना उदरमा सीथी बिक्ट होय ते पुरुष सुखी तथी परस्रीयी विमुख होय छे.

जेनां पार्श्व मांसधी पुष्ट, कोमळ अने दक्षिणावते रोमोथीयुक्त द्वोय ते पुरुष राजा याय ुछे अन जेनां पार्श्व मास दीन, कठोर अने वामावर्त रोमोथी युक्त दोयें ते पुरुष निर्धन, दुःखी तथा घणा पुरुषना दास थाय छे.

स्तनना अप्र भागने चूचुक कहे छे. जेनां चूचुक अतुँदंद होय ते पुरुष भाग्यशाळी सम-'जवो, जेना चूचुक निषम अने आंबा होय ते निर्धन होय छे, जेनां चूचुक कठिन, पुष्ट अने नि-मन्न होय ते पुरुष राजा थाय छे तेमज सदा सुख भोगवे छे.

जमत, विस्तीर्ण, कंप रहित अने मांसक हृदय राजाओतुं होय छे.

निम्न, संकोचायेलुं अने दुर्वळ हृदय अधमोतुं होय छे तेमन कठोर, रुवाडांथीयुक्त अने नाढीओथी व्याप्त हृदय पण अधमोतुंज होय छे.

सम छातीवाळा पुरुष धनवान, पुष्ट अने कठोर छातीवाळा पुरुष शूरवीर न्हानी छाती वाळा पुरुष अर्किचन अधीत पुरुषार्थ रहित होय छे अने विषम आतीवाळा पुरुष निर्धन होयछे तथा तेतुं मृत्यु शस्त्रथी थाय छे.

कांधनी संधिओने जबु कहे छे. विषय जबुवाळो पुरुष, क्रूर होय छे, अस्थिओनी संधि-मां बंधाएला जबुवाळो भोगी, नीचा जबुवाळो निर्धन अने पीन जबुवाळो पुरुष धनवान होय छे.

जेनी ग्रीवा चीपटी होय ते पुरुष निर्धन होय छे, सुकायेकी अने नाडीओथी युक्त जेनी ग्रीवा होय ते पण निर्धन होय छे, जेनी ग्रीवा महिषना जेवी होय ते शूरवीर थाय छे; जेनी ग्रीवा वृप जेवी होय तेनुं मृत्यु शस्त्रथी धाय छे, शंखनी माफक त्रण रेखाओथी युक्त जेनो ग्रीवा होय ते पुरुष राजा थाय छे.

जेनो कंठ छांवो होय ते प्रभक्षण थाय छे अर्थात् संवय नथी करतो.

अभन्न अने रोम रहित पीठ धनवानोनी तेमजै भन्न अने रोमवॉळी पीठ निधेनोनी होय छै.

स्वेद रहित, पुष्ट, उन्नत, सुगंध युक्त, सम अने रोमयुक्त कक्षा धनवानोनी अने एथी वि-परीत कक्षा निधनोनी होय छे.

मास रहिन, रोमयुक्त, भग्न अने न्हाना अंसवाळा पुरुषो निर्धन होय छे, विस्तीर्ण, अभग्न अने मुश्लिष्ठ खभावाळा पुरुषो वळवान होय छे.

हाथीनी सुंढ समान गोळ, जानु पर्यत छांबी, सम अने पीन भुजा राजाओनी होयुछे; रोमयुक्त अने न्हानी भुजा अधम पुरुषोनी होय छे.

दीर्घायुपवाळा पुरुषोनी अंगुली लांवी होय छे, सीधी अंगुलीवाळा पुरुषो भाग्यशाळी होय छे, बुद्धिमान पुरुषोनी अंगुली पातळी होय छे, पारकी सेवा करवावाळा पुरुषोनी अंगुली चिपटी होय छे, म्होटी अंगुलीवाळा पुरुषो निर्धन होय छे.

जेना हाथ वांदरा जेवा हाय ते धनवान अने व्याघ्र जेवा होय ते पुरुषो पापौ होय छे. हाथना मूळने मणिबंध कहे छे. जेना मणिवंध निगृद, द्रद अने सुश्लिष्ट संधिवाळा होय ते पुरुष राजा थाय छे, जेना म-णिवंध न्हानां होय तेना हाथ कपाय छे. क्षाय अने शब्द सिहत जेना मणिवंध होय ते पुरुष नि-र्धन होय छे.

जेनी करतल निम्न होय ते पुरुष पिताना धनथी राहित होय छे, जेनी हथेळी सम, वर्तु-लाकार अने निम्न होय ते पुरुष धनवान छे एम समजवुं, उंची हथेळी वाळो पुरुष दातार होय छे, विषम हथेळी वाळो पुरुष क्रूर अने निर्धन होय छे, जेनां करतल लाक्षाना समान लाल रंगना होय ते पुरुष अश्वर्यवान होय छे, पीळा रंगनी हथेळी वाळो पुरुष अगम्या स्त्रीमां गमन करनारो होय छे अने रुखी हथेळी वाळो निर्धन होय छे.

जेना नख तुष समान रेखाओथी युक्त होय ते नपुंसक होय छै; चिपटा अने दुटित नख-वाळो पुरुप निर्धन होय छे.

जेना नखो बुरा, रंगहीन होय ते पुरुष परतर्कक अर्थात् वीजानी वातमां तर्क करवावाळो होय छे; त्रांवाना समान ळाळ रंगना नखवाळो पुरुष सेनापित थाय छे.

अंगुठाना मध्यमां जेने जब होय ते धनाढ्य होय छे अने अंगुठाना मूळमां जेने जबतुं चिद्व होय ते पुरुष पुत्रवान थाय छे.

जेनी आंगळीओना पर्व छांवा होय ते पुरुष भाग्यशाळी अने दीर्घायुष होय छे.

जेना हायनी रेखा स्निम्ध अने निम्न होय ते धनाड्य तेमज जेना हायनी रेखा रक्ष अने अनिम्न होय ते निर्धन जाणवोः

विरल आंगळीओवाळो पुरुप निर्वन अने घन आंगळीओवाळो पुरुप धननो संचय

मणिवंधथी नीकळी त्रण रेखा जेना करतळमां जाय, ते पुरुष राजा वाय छे. जेना हाथमां वे मत्स्य रेखा होय ते पुरुष नित्य सत्र आपनारो होय छे.

जेना हाथमां वज्राकार रेखा होय ते धनवान होय छे, जेना हाथमा मत्स्यना पुच्छ जेवी रेखा होय ते पुरुष विद्वान होय छे.

जेना हाथमां शंख, छत्र, पाछखी, हाथी, घोडा अने कमछना आकारनी रेखा होय ते पुरुष राजा थाय छे, जेना हाथमां कलज्ञ, मृणाल, पताका अने अंक्रज्ञाना आकारनी रेखा होय ते पुरुव निधिपाल अर्थात् भूमिमां धन दाटवावालो होय छे।

जेना हाथमां दामना आकारनी रेखा होय ते धनाट्य जाणवो; जेना हाथमां स्वस्तिक-ना आकारनी रेखा होय ते अैश्वर्य पामे छे.

जेना हाथमां चक्र, खङ्का, परशु, तोमर, शक्ति अने धतुपक्रन्तना आकारनी रेखा होय ते पुरुष सेनापित थाय छे.

जेना हाथमां उल्लख्टना समान आकारनी रेखा होय ते पुरुष चक्क करवावाळो थाय छे, जेना हाथमां मकर, ध्वज अने कोष्ठागारना आकारनी रेखा होय ते पुरुष वहु धनवान होयछे।

अंगुप्टना मूळने ब्रह्मर्तार्थ कहे छे; जेतुं ब्रप्ततीर्थ वेंदीना आकारतुं होय ते पुरुप अग्नि-होत्री छे एम समजवुं.

जेने वापी, देव मंदिर आदिना आकारवाळी तथा त्रिकोण रेखा होय ते पुरुष धर्म करे छे अर्थात् धर्मात्मा होय छे.

अंगुष्ठ मूळनी रेखाओ सन्ताननी छे एमां जेडली रेखा सूक्ष्म होय तेडली कन्या अने जेडली रेखा स्थूल होय तेडला पुत्र उत्पन्न थाय छे.

जेनी रेखा तर्जनी पर्यन्त पहोंचेळी होय ते पुरुष सो वर्षतुं आयुष्य भागवे छे, एथी न्हानी रेखा होय तो अनुमाने आयुष्य जाणी छेवुं.

जेना हाथमा दूटेली रेखा होय ते वृक्षधी पडे छे, जेना हाथमां घणी रेखा होय अथवा तो बीलकुल न होय ते पुरुष निर्धन होय छे.

वहु कृप अने लांबी दाढीबाळो पुरुष निर्धन तेमज गांसयी पुष्ट दाढीबाळो पुरुष धनवान होय छे जेनो अधर विम्बफल समान लाल रंगनो अने सीधो होय ते पुरुष राजा थाय छे.

न्हानां अधरवाळो पुरुष निधन होय छे, फूटेळां, खंडित, खराव रंगना अने रुत अधर-वाळो पुरुष पण धनहीन होय छे.

स्निग्ध, यन अने तीखी दाढोधी युक्त, समान दांत शुन समजवा.

राती, लाबी, सूक्ष्म अने समान जिहाबाळो पुरुष भोगी होय छे, श्वेत, काळी अने रखी जिदाबाळो पुरुष धनहीन होय छे. तालुनुं पण एन लक्षण छे ~~~~

सौम्य, सवृत्त, निर्मळ, सूक्ष्म अने समान वत्क राजाओतुं होय छे. एथी विपरीत अर्थात् असौम्य, असंवृत्त, अनिर्मळ, स्यूळ अने विषम वत्क क्लेश भोगवनारा पुरुषनुं होय छे. जेतुं मुख वहु फेलायेछं होय तेने हीनभागी समजवो.

स्त्री जेवां मुखवाळो पुरुष संतानहीन, गोळ मुखवाळो पुरुष श्वठ अने लांवा मुखवाळो पुरुष निर्धन होय छे. जेनुं मुख भयभीत जणाय नेने पापी समजवेत.

वूर्तजनोतुं मुख चतुष्कोण होय छे, पुत्रहीन पुरुपोतुं मुख निम्न होय छे अर्थात् निम्न मुखवाळाने पुत्रनी पाति थती नथी; रूपणतुं मुख वहु न्हातुं होय छे, संपूर्ण अने मनोहर मुखवाळा पुरुपो भोगी होय छे.

जें इमश्रुना बाळ आगळथी फाटेला न होय, स्निम्घ होय, कोमळ अने सन्नत होय ते ग्रुभ समजवी; लाल अने रुखी दाढीवाळा पुरुषी चोर होय छे.

जेना कर्ण निर्मास होय ते पुरुषतुं पाप कमिथी मृत्यु थाय छे, चिपटा कानवार्जा पुरुषो घणा भोगी होय छे, न्हाना कानवाळा पुरुषो छपण होय छे; जेना कान शंकु सभान आगळथी तीक्षण होय ते सेनापित थाय छे, जेना कान रोभथी युक्त होय ते दीर्घ आयुप पामे छे; म्होटा कानवाळा पुरुषो धनवान होय छे; जेना कान नाडीओथी व्याप्त होय ते कृर छे एम समजवुं, लावा अने मासथी पुष्ट कानवाळा पुरुषो छुखी थाय छे.

जेना क्योल उंचा होय तेने भागी जाणतो; मांसथी पुष्ट क्योलवाळो पुरुष राजानो मंत्री थाय छे.

शुक्त समान नः सिकावाळो पुरुष भोगी होय छे, शुक्त अथवा निर्मास नासिकावाळो पुरुष दीर्घ आयुष्य मोगवे छे, जेनी नासिका कापेल जेवी देखाय ते पुरुष अगम्या स्त्रीमां गमन करनारो होय छे; लांबी नासिकावाळा पुरुषने भाग्यशाळी समजवो; आकुंचित नासिकावाळो पुरुष चोर होय छे; चिपटी नासिकावाळो पुरुष स्त्रीना हाथथी गायीं जाय छे; आगळथी वांकी नासिकावाळो पुरुष धनवान होय छे; जमणी तरफ वाकी नासिकावाळो पुरुष खाउकण अने ऋर होय छे; जेनी नासिमा सीबी, न्हाना छिद्रोबी युक्त अने सुंदर पुटवाळी होय तेने संपूर्ण भाग्य राळी समजवो।

पक्तवार छीके ते धनवान, वे कणवार उपराउपर छीके ते पंडित अने हृदयना अनुनाद-सिहत युक्त ममुक्त तेमज रांहत छीके तेने दीर्घ आयुप माप्त थाय छे. कमलदल समान नेत्रवाळा तथा जेना नेत्रना छेडा लाल होय ते लक्ष्मीवान होय छे तेमज मध समान पीळा रंगना नेत्रवाळा पुरुपो वहु धनवान होय छे, विलाडी जेवा नेत्रवाळा पुरुपो पापी होय छे, हिरण समान नेत्रवाळा, गोळ नेत्रवाळा अने वांका नेत्रवाळा पुरुपो चोर होय छे; केकर नेत्रवाळो पुरुप कूर होय छे; जेनां नेत्रो हाथी तुल्य होय ते सेनापित थाय छे, गंभीर नेत्रवाळा पुरुपने अध्वर्य प्राप्त थाय छे, नील कमल समान कान्तियुक्त नेत्रवाळा पुरुपो विद्वान होय छे.

जे नेत्रोना तारा अति कृष्ण होय ते नेत्रो काढी नांखवामां आवे छे, म्होटां नेत्रवाळो पुरुष राजानो मंत्री थाय छे; इयाव रंगना नेत्रवाळो पुरुष भाग्यशाळी होय छे; दीन नेत्रोवाळो पुरुष निर्धन होय छे; स्निग्ध अने म्होटां नेत्रोवाळा पुरुषो धनवान अने भोगी होय छे.

जेनी भू मध्यथी उंची होय ते पुरुष अल्प आयुष्य भोगवे छे; म्होटी अने उंची भ्रकुटी-वाळा पुरुषो घणा सुर्खी होय छे; न्हानी म्होटी भ्रकुटीवाळा पुरुषो दिरिद्री होय छे; वाळ चन्द्रमा समान नमेळी भ्रकुटीवाळा पुरुषो धनवान होय छे; छांवी अने प्रस्पर न मळेली भ्रकुटीवाळा पुरुषो पण धनवान होय छे; दूटेली भ्रकुटीवाळा पुरुषो धनहीन होय छे; जेनी भ्रकुटी वच्चेथी नमेली होय ते पुरुष अगम्या स्त्रीमां आसक्त थाय छे.

डन्नन शंख (क्षाळनुं हाडकुं) वाळो पुरुष धनवान् होय छे, निम्न शंखवाळो पुरुष पुत्र अने धनयी हीन होय छे; जेनुं ललाट विषम होय ते निर्धन अने अर्ध चन्द्र समान ललाटवाळा पुरुषने धनवान समजवो.

जेतुं ललाट शुक्ति समान विस्तीर्ण होय ते पुरुपने आचार्यपद माप्त थाय छे; जेतुं ललाट नाडीओधी व्याप्त होय ते पुरुप अधर्म करवामां तत्पर रहे छे; जेना ललाट मध्ये उंची नाडी होय अने ते साथीआने आकारे रहेली होय ते पुरुप धनाड्य छे एम जाणवुं; जेतुं ललाट निम्न होय ते पुरुप वध अने वंबननो भागी थाय छे. तेमज ते क्रूर कर्म करवामां तत्पर रहे छे. उन्नत ललाट-वालो पुरुप सेनापित थाय छे, गोळ अने न्हाना ललाटवालो पुरुप कृपण होय छे.

दीनता अने अश्रुयी रहित स्निग्ध रुद्दन मनुष्योने श्रुभ फळ आपे छे. तेमन रुक्ष, दीन अने वहु अश्रुओयी युक्त रुद्दन पुरुपोने अञ्चभ फळ आपे छे.

हसती वखते शरीर न कपे ते शुभ समजवुं, आंखो वींची हमनारी पुरुप पापी अने वारंगर हसनारों पुरुप दोप युक्त होय छे. प्रमादी पुरुप हसी रया वाद वारंवार हमे छे. जेना ललाटमां लांबी त्रण रेखा होय ते पुरुष सो वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे; जेना लला-टमां चार रेखा होय ते राजा थाय छे अने पचाणु वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे. जेना ललाटमां वि-छिन्न रेखा होय ते अगम्या स्तीमां गमन करनारो होय छे अने नेवुं वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे. लला-टमां एके रेखा न होय ते पण नेवुं वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे.

ज्यांथी केशोनी जत्पत्ति थाय छे तेने केशांत कहे छे जेना ललाटमां केशान्त पर्यत रेखा पहाँची होय ते एंशी वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे, जेना ललाटमां पांच रेखा होय ते सीतेर वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे.

जेना ललाटमां वधी रेखाओना अग्रभाग मळेला होय तेनु आयुष्य साट वर्षनुं होय छे, जेना ललाटमां छ सात अने ते उपरांत घणी रेखा होय ते पुरुष एचाश वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे, जेना ललाटमां वांकी रेखा होय तेनुं आयुष्य चालीश वर्षनुं होय छे, जेना ललाटमी रेखा भ्रञ्जटीयी मळेली होय ते त्रीश वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे, वाम भागमां वांकी रेखा होय तेनुं आयुष्य वीश वर्षनुं होय छे; न्हानी रेखा होय तो वीश वर्षयी पण न्यून आयुष्य जाणवुं, जेना ललाटमां न्यून अर्थात् एक वे रेखा होय ते पण वीश वर्षयी न्यून आयुष्य भोगते छे. आ रेखायी ६६४ अर्थात् दोढ, अढी इत्यादि रेखा होय तो अनुमाने आयुष्य कल्पी लेनुं, जेम त्रण रेखा होय तो सो वर्षनुं अने चार रेखा होय तो पचाणु वर्षनुं आयुष्य कल्पी लेनुं, जेम त्रण रेखा होय तो साडीसचाणु वर्षनुं आयुष्य जाणवुं अर्थात् त्रण अने चार रेखानुं आयुष्य मिलावी तेनुं अर्थ करी लेनुं, ए रीते विषे समजवुं.

जेतुं माथुं गोळ होय ते घणी गायोनो मालिक थाय छे, जेतुं शिर छत्राकार उपरथी वि-स्तीर्ण होय ते पुरुष राजा थाय छे; चिषटा शिरवाळो पुरुष माताषितानो वध करे छे; करोटिना आकारतुं जेतुं शिर होय ते पुरुष घणो वात जीवे छे; जेतुं शिर घटना समान आकारवाळुं होय तेनो शब्दमां रुचि रहे छे, वे शिरवाळा पुरुष पाषी अने निर्वन होय छे, जेतुं शिर निम्न होय ते पुरुष प्रतिष्ठित छे एम जाणवुं, पण अति निम्न होय तो ते अनर्थ करनारो थाय छे.

जे पुरुपोना एक रोमक्र्पमां अकेक स्निग्व, कृष्ण, आकुंचित, अग्र भागथी निह फूटेल, कोमल अने विरल केश होय तो तेओ वणाज सुखी अथवा राजा थाय छे.

जेना शिरमां एक एक रोमकूपथी वणा केश निकळ्या होय अने ने विषम, कपिल रंगना,

अग्र भागथी भिन्न थएला, रुत, कुटिल अतिशय कठोर अने वहु घाटा होय ते पुरुष निर्धन छे एम समजवुं.

जे जे अंग रुक्ष, मांसहीन अने नाडीओथी व्याप्त होय ते ते अंग अशुभ जाणवां; स्निग्य, पुष्ट अने नाडीओथी रहित अंगो शुभ होय छे.

जेनां त्रण अंग विस्तीर्ण, त्रण अंग गंभीर, छ अंग उंचां, चार अंग हस्व, सात अंग रक्तवर्ण, पांच अंग दीर्घ अने पांच अंग सूक्ष्म होय ते पुरुष राजा थाय छे.

छाती, ललाट अने वदन ए त्रण अंग विस्तीर्ण, नाभि, शब्द अने सत्व ए त्रण गंभीर; छाती, कक्ष्या, नख, नासिका, मुख अने कृकाटिका ए छ उन्नत; गुद्यांग, पीठ, ग्रीवा, अने जंघा ए चार हस्व; नेत्रोनो पान्त, पगनां तळीयां, हाथ, तालु, अधर, जिह्वा अने नख ए सात रक्तवर्ण; दांत, आंगळीओना पर्व, केश, त्रचा अने नख ए पांच सूक्ष्म होय ते शुभ समजवां. हतु, नेत्र, थुजा, नासिका अने वले स्तनोना मन्य भाग ए पांच अंग दीर्घ राजाओविना वीजा मतुष्योनां होतां नथी अर्थात् ए पांच अंग जे पुरुषोनां दीर्घ होय ते राजा थाय छे.

लक्षण जाणवावाळा पुरुषोए मनुष्य, पशु अने पक्षीओमां शुभाशुभ फल सूचन करनारी, रत्नना घडामां रहेली दीप प्रभानी पेटे शरीरनी अंदर रहीने पण तेज गुणथी वाहेर प्रकाश कर-नारी छाया जोवी जोइए. अर्थात् ए छायाथी शुभ अशुभ फळनो विचार करवो जोइए.

जे वखते पुरुप आदि उपर भूमिनी छाया होय ते वखते एनां दांत, नख, रोम, ज्ञिर अने केश स्निम्ध अने शरीरमां सुगन्ध रहे छे, ते भूमिनी छाया तुष्टि, धननो लाभ अने अभ्युद्य आपी दिवसे दिवसे वर्ममां महत्ति करावे छे.

जळनी छाया स्निग्न, खेत, स्वच्छ अने हरित तेमज नेत्रोने विय लागे एवी होग छे. ते छाया सीमाग्य, कोमलता, युख अने अभ्युद्य आपी सर्व कार्योनी विद्धि करवापाळी थाय छे, अने मातानी माफक पुरुष आदि जीवोने शुभ फळ आपे छे.

अग्निनी छाया चंटा, अघृत्या, काल, सुवर्ण अनेअग्निना समान रंगवाळी तेमन तेन, दराक्रम अने भतापयी युक्त होय छे; ए आग्नेयी छाया माणीओने नम आपे छे अने सन्यम वाछित अर्थने सिद्ध करे छे. वायुनी छाया मिलन, रुक्ष, काळी अने दुर्गन्ययुक्त होय छे. ए छाया मरण, वंधन, रोग, अनर्थ अने धननो नाज्ञ करे छे.

आकाशनी छाया स्फटिक समान अति निर्मळ होय छे, ए छाया भाग्य युक्त, अति उदार अने कल्याणना नियानरूप होय छे.

ए रीते पंच भूतमयी शरीर छाया जाणवी. हाथी, वृष, रथसमृह, भेरी, मृदंग, सिंह अने मेवना तुल्य जेनो शब्द होय ते राजा थाय छे.

गर्दभ समान, जर्जर अने रुझ स्वर्वाळो पुरुष वन तेमज सुख्यी हीन होय छे.

तालु, ओष्ठ, दंतमांस, जिहा, नेत्रोना छेडा, पायु, हाथ अने पग रक्तवर्ण होय ते रक्तसार कहेवाय छे, ए रक्तसारवाळा पुरुषो घणुं सुख, स्त्री,धन अने पुत्रोथी युक्त थाय छे.

स्निग्ध त्वचावाळो पुरुष धनिक, कोमळ त्वचावाळो पुरुष भाग्यशाळी अने ततु त्वचा-वाळो पुरुष पंडित होय छे.

मजा अने मेदना सारवाळा पुरुषो सुंदर श्वरीरवाळा पुत्र अने वनथी युक्त होय छे.

जेना शरीरमां अस्थिसार होय तेना हाडकां म्होटां होय छे अने ते पुरुष वळवान्, विद्याना अंतने वामनारो तेमज रुपतान होय छे.

वणां अने घाटां वीर्यवाळो पुरुप वीर्यसार होय छे, अने ते भाग्यशाळी, विद्वान तेगज रुपाळो होय छे.

पुष्ट शरीरवाळो पुरुष मांससार होय छे अने ते विद्वान, धनाट्य तेमज रुपवान होय छे. अंग सन्धिओनी सुश्चिष्टताने संघात कहे छे. संघातवाळा पुरुषो सुखभोगी होय छे.

वचन, जिह्वा, दांत, नेत्र अने नख ए पांच जेनां स्निग्ध होयते पुत्र, धन तेमज सौभाग्यथी युक्त थाय छे अने जेना ए पाचे अस्तिग्य होय ते निर्धन छे एम समजद्यं।

राजाओनो गौर के दयाम गमे ते वर्ण होय परंतु ते वर्ण हिनम्ध अने कान्तिमान होय छे.

मध्यम (स्निम्घ नहीं तेमज रुक्ष पण निह्) वर्ण पुत्रवान अने धनवान पुरुपोनो तेमज रुक्ष वर्ण वनहीन पुरुपोनो होय छे. स्निग्व वर्ण ग्रुभ अने संकीर्ण वर्ण अग्रुभ छेखाय छे.

गाय, वळद, वाव, सिंह, अने गरूडना समान मुखवाळा पुरुषोनो पूर्व जन्म शुभ होय छे अने ते पुरुषो अखंड प्रौढ प्रनाप, रायुधोने जीतवावाळा राजा थाय छे. वानर, महिप, सूकर अने वकराना जेवा मुखवाळा पुरुपोनो पूर्व जन्म मन्यम होय छे अने तेओ शास्त्र, धन तेम मुखथी संपन्न होय छे.

गर्दभ अने उंट समान मुख तथा शरीरवाळा पुरुषोनो पूर्व जन्म अशुभ समजवो, तेओ निर्धन अने मुखहीन होय छे.

पोताना आंगळ प्रमाणे एकसो आठ आंगळ उंची होय ते पुरुष उत्तम, छन्तु आंगळ उंची होय ते मध्यम अने चोराशी आंगळ उंची होय ते अधम होय छे; पगना अग्र भागथी मस्त-कना मध्य भाग पर्यन्त माप करवी.

वे हजार पलनो एक भार थाय छे.

५ चणोठीनो १ मासो

१६ मासा " १ तोलो

४ तोला,, १ पल

१०० पल " १ तुला

२० तुला " १ भार

जे पुरुषतुं वजन अरधो भार होय ते सुख भोगवे छे अने एथी न्यून वजन होय ते दुःखी रहे छे. एक भार वजनवाळो पुरुष अति धनवान होय छे, जेना शरीरतुं वजन दोढ भार होय ते चक्रवर्ती राजा थाय छे.

वीरा वर्षनी अवस्थाए स्त्रीनो तेमज पचीरा वर्षनी अवस्थाए पुरुपनो माप अने तोल करवो; अथवा गणित आदिथी जेटलुं आयुप्य नक्की थयुं होय ते आयुप्यनो चोथो भाग वीती जाय ए वस्तते माप अने तोल करवो.

भूमि, जळ, अग्नि, वायु, आकाश, देव, मनुष्य, राक्षस, विशाच अने तियक्नुं सत्त्व पुरुषमां होय छे.

भूमि प्रकृतिवाळा पुरुषनो सुंदर कमल आदि पुष्पो समान गंव होय छे, ते भागी, सुगन्ध 'बासधी युक्त अने स्थिर स्वभावनो होय छे.

जल प्रकृतिवाळो पुरुष पाणी वहु पीए छे अने मीटुं वोलनारो तेमज रम भोजन करवामा रचिवाळो होय छे. अग्नि प्रकृतिवाळो पुरुष चपल, अति तीक्ष्ण तेमज ऋूर होय छे, क्षुधाने सहन करी शकतो नथी अने वहु भोजन करे छे.

वायु मक्तिनो मनुष्य चंचळ तेमज दुर्वळ होय छे अने तुरत क्रोधवश थइ जाय छे.

आकाश प्रकृतिनो मनुष्य सर्व काममां निषुण होय छे, मुख खुल्छुं राखे छे, शब्दगतिमां कुशळ होय छे अने एनां अंग सुपिरयुक्त होय छे.

देव मकृतिनो मनुष्य त्यागी, अस्प क्रोध अने मीतियुक्त होय छे.

मतुष्य प्रकृतिना पुरुपने गीत अने भूपण प्रिय होय छे. ए हमेशां संविभाग अर्थात वांयशे उपर उपकार करवावाळा अने शीलवान होय छे.

राक्षस मकृतिनो मनुष्य बहु क्रोधी, दुष्ट स्वभावनो अने पापी होय छे.

तिर्यक् मकृतिनो पुरुप भीरु, श्चधालु अने घणु खानारो होय छे.

जेनी गित शार्दूल, इंस, मस्त हाथी, वृष अने मयूर समान होय ते पुरुष राजा थाय छे; शब्द रहित मंद गितवाळा पुरुषो धनवान होय छे; शीघ्र अने देडकानी माफक देकडा मारता जे पुरुष गमन करे छे ते दिरदी होय छे.

थाकी जतां यान, भूख्या थतां भोजन, प्यास छागतां जळ आदि पान अने भयने समये रक्षण ए सर्व वात जे पुरुपने विना यत्ने प्राप्त थाय ते पुरुपने धन्य अर्थात् शुभ छक्षणवाळो समजवो। विशास प्रतिवेश भूति वच्च मन्ति देह के क्रिकेट के स्वास अर्थात् वक्त होय के

आ तमारा पुत्रना तमाम चित्रों जोतां ते कोई म्होटों योगी तेमज मतापी थाय तम छ, छता आश्चर्य ए छे के आयुष्यनी रेखा वीलकुल स्वल्प छे जेथी छ महिने तेनुं मृत्यु थदों एमा जरापण फेरफार थवानों नथीं. माटे हुं तमने चेतवुं छुं के तमारे तमारा वालकना हित माटे जे करवुं घटे ते करजों. आटछुं कही ते निम चालतों थयों.

गर्भथी आठमे वर्षे ब्राह्मणने, अग्यारमे वर्षे क्षत्रिने अने वारमे वर्षे वैश्यने यज्ञोपवीत देवुं जोइए छता मुकंड ऋषिए कंइ पण मुर्हूत के यास जोया विना अकाळे पोताना पुत्रने यज्ञोपवीत दइ दीवुं अने पोताना पुत्रने पासे वेसाडी उपदेश आपवा लाग्या के " भाइ! तारे हर जगोए भ्रमण करतां मार्गमा ज्यां ज्यां ब्राह्मण मळे त्यां तेने विनय पूर्वक अभिवंदन करतुं.

पोताना पितानां वचन अंगीकार करी मार्कटेये ब्राह्मणोने नमवानो नियम राख्यो, एम करतां छ महिनामां त्रण दिवस वाकी रह्या एटले तेना मृत्युने पण त्रण दिवस वाकी रह्या एटलामां दैवयोगथी तीर्थयात्रा करता करता मरीचि, अत्रि, पुलह, पुलस्य, क्रतु, अंगिरा, अने विशिष्ठ ए सप्तर्पिओ त्यां आव्या, तेओने आवता जोइ जेणे माळा धारण करी ब्रह्मचर्य पाळ्युं छे अने दंड ग्रहण कर्यों छ एवा मार्कडेय ते साते ऋषिना पगमां पड्या; वाळकनी आवी आस्था जोइ प्रसन्न थइने " दीर्घायुर्भव " एम प्रत्येके आज्ञीर्वाद दीघो; एटलामां विशेष्ठ ऋषिए वाळ ब्रह्मचारी मार्कडेय सामुं जोइ बीजा ऋषिओने कहुं के " आपणे वधाए आ वाल ब्रह्मचारीने " दीर्घायुभेव " आजीर्वचन आप्युं पण आ वाळक तो आजथी त्रीने दीवसे प्राण त्याग कररो एम तेनां लक्षणो उपस्थी जणाय छे; आपणे तेने ग्राभ आशित आपेल छे तो हवे पयत्न करी तेने दीर्घायुष्यवान् करवो ए आपगुं काम छे; विश्वष्ठनां वचन सांभळी ऋपिओ विचार ऋरी वोल्या के आ वाळकने जीयाडवानो उपाय ब्रह्मा विना कदी पण वनवानो नयी, माटे आ वाळ-कने लर् आपणे सर्वे ब्रह्मलोकमां जइए अने ब्रह्माना मुख्यी " दीर्घायुर्भव " एम कहेवरावीए. आ रीते सप्तर्षि एकरत यह वाल ब्रह्मचारी मार्केडेयने साथे लह तीर्थ यात्रा पडती मुकी ब्रह्मा पासे गया, त्यां जइ सप्तपिंभो ब्रह्माने साष्टांग प्रणाम करी वेदोक्त सूक्तो वडे स्तुति करी पोन-पोताने आसने वेठाः त्यार पछी पार्कडेथे ब्रह्माना चरणारविन्दमां नमन कर्यु, ब्रह्माए वाल ब्रह्म-चारीने जोइ मसन थइ " दीर्बादुर्भन " एम आज्ञीर्वाद आपी सप्तर्षिने पूछवा लाग्ण के " मुनिओ ! तमो अहीं केम अने कयांथी आव्या छो ? जरुरी कारण होय ते कहो, भारुं काइ कार्य होय ते करवा हुं तत्पर 🚎 वळी जा वाळ ब्रह्मचारी कोण छे ते पण मने कहा. "

आ रीतें ब्रह्मानां वचन सामळी सप्तिषे बोल्या के " वितायह! अयो तीर्वयात्रा करवा पृथ्वीमां फरता फरता ज्यारे चमत्कारपुरनी आसपास गया त्यारे आ वाळ ब्रह्मचारीए अमने अभिवंदन कर्यु एटळे अमे वधाए जुदो जुदो " दीर्घायुर्भव " ए आजीर्वाट आप्यो. पाछळ्गी छक्षण जोता आजधी त्रीजे दीनसे आ दाळकतुं मृत्यु छे एम जाणी अगा वणाज छित्तित यया जेथी आने साथे छइ अभो आपनी पासे आव्या न्या आपें पण दैवयोगे आ वाळकने दीर्वायुष्य थवानो आजीर्वाद आप्यो थाटे महाराज! आपणे सर्व मत्य वाणीवाळा थहण तेवो उपाय करवो जोइण; आपनी पासे आव्यानुं दारण पण आज छे.

सप्तिषिनां वचन सांभळी ब्रह्मा हसीने वोल्या के—" ऋषिओ ! आ वाळक मारा प्रसाद्यो जरा अने मृत्यु रहित तथा संपूर्ण रीते वेद विद्या जाणनार थरो एमां जरा पण संदेह राखवें। निहः; हवे आ वाळकने झट पृथ्वी उपर छइ जाओ अने एना द्यद्ध पिता पोतानां धर्मपितन सहित पुत्रना दुःखथी मृत्यु न पामे तेटला वखतमां सत्वर तेमनी पासे मुकी आवो; ब्रह्माना वचन सांभळी सप्तिषिओ ते वाळकने तेना पिताना आश्रम पासे अग्नितीर्थनी नजीक मूकी तेनी साथे वातचीत करी तीर्थाटन करवा चाली नीकळ्या.

हवे आ प्रमाणे जे अरसामां सप्तिषिओ मार्किडेयने छइ ब्रक्षकोकमां गया ते अरसामा तेना विता मृकंड ते वाळकुमारनी चोतरफ गोत करवा मंडया, पुत्रनी वणी बोब करतां *ज्यारे क्यां*ही पण पत्तों न मळ्यो त्यारे पोतानी पत्नि आगळ विछाप करवा लाग्या के '' ओ मारा व्हाला वाळक ! तुं केम देखातो नथी ? ग्रुं रमतां रमता कोइ कूवामां पडयो ? अथवा तो वनमां कोइ सीं तने डस्यों के द्युं थयुं ? मारा प्यारा पुत्र मार्कडेय ! तुं दग्य अंतःकरणवाळा मने तथा तारी माताने आखा जन्मपर्यत दुःखी करी क्या न्हासी गयो! पुत्र ! तें घशुंत अवळुं कर्युः भागिभया ! अवार नाप करनारा में मरवा वलत पण पुत्रतुं मुख न जीयुं, पूर्वे मने सामुद्रिकशास्त्र जाणनार ज्योतिपीए कहुं हतुं के तारा आ पुत्रतुं छ महिनामां मृत्यु थरो " ए वात खरी वनी, तो ए पु-त्रना शोकरुपी दावाप्रियी न वळुं एटलामा काष्ट्रनी चिता खडकी वळी मर्खुं एज ठीक छे. मृकंड ऋषिनां वचन साभळी तेमना पतिन बोल्यां जे प्राणनाथ ! मारो पण एन सिद्धान्त छे, पुत्रना मृत्यु पछी आपणे जीवी ह्युं करवुं छे ! माटे हवे झाझो वखत नहि वितावता लाकडां एकडा करो, हुं पण आपनी साथेज बळी घरीजा, पुत्रनो ज्ञोक मारायी खमातो नयी. आ रीते मुकंड अने ते-मना ज्ञी पोताना असब कप्टनी वात करे छे, एटलामां राजी थतो थतो तेमनो पुत्र मार्कडेय तेओनी पासे आबी पहें।च्यो; सामा आवता पोताना पुनने दूरथी जोइ माता अने पिता बन्नेने हर्पाश्च आबी गयां अने पुत्रने गळवा उतावळथी सामा दोडयां तथा वारंवार वाथमां घाली पूछवा लाग्या के, पुन ! घणा नखत्वी तुं क्यां भागी गयो हतो ? अमने ज्ञोक समुद्रमा हुवाबी एकदम तुं वया चाली नीकळगो हतो ? मारा व्हाला पुत्र! आज पछी कोइ दिवस आम कहा विना चाल्यो जइश नहिः मात्विताना यचन सांभरी मार्कडेन बोल्या के मात्विता ! आज मार्गमां सात ऋषिओ मय्या तेओने आपनी आज्ञा मुजव मे अभिवदन कर्यु, ते ऋषिओए पृथक् पृथक् "दीर्घायुर्भव" ए रीतने। मने अध्वीर्वाद आप्यो, पण तेमाथी एक मुनिए कह्युं के आ बाळकतुं आजयी त्रीजे

दिवसे मृत्यु छे, " आ बात सांधळी सर्वे मुनिओं विचार करी मने ब्रह्मलोकमां लइ गया, त्यां में ब्रह्माने अभिवंदन कर्यु, जेथी तेओए पण " दीघीयुर्भव " एम आशिर्वचन आप्युं, ते पछी ब्रह्माए आजे आप आंही क्यायी ? तिगरं मुनिओने पूछचुं, एटले ऋषिओए मने जे आशीर्वाद आपेल ते विपयनी सद्यली बात जाहेर करी अने कह्युं के " पितामह! आएना प्रसादवडे आ वालक दीर्घ आयुष्यवालो याय एम अमारी आपने विज्ञप्ति छे." ब्रह्माए कह्युं के " आ वालक जरा मरणथी रहित थहो. माटे आने तुरत घेर पहोचतो करो. " पितानी ए ऋषिओ मने आ ठेकाणे मुकी आ तीर्थमां स्नानार्थे उतर्या छे.

आ रीते पोताना पुत्र मार्कडेयनां वचन सांभळी मुकंड मुनि अत्यंत सानंदाश्चर्य पाम्या अने ज्यां सप्तिषिओं न्हाना गया हता त्यां दोडी पहींच्या. तेणे सर्व ऋषिओंने प्रणाम करी हाथ जोडी विनय पूर्वक कहां के " मुनीश्वरो ! आपना प्रताप्थी मारुं कुळ दृद्धि पाम्युं छे; " पूर्वना आचार्यों सत्य कही गया छे के " सत्पुरुपोनो आश्रय त्रिलोकमां प्रसिद्ध छे, साधु पुरुपनां दर्शन तीर्थथी पण विशेष छे कारण के साधु तीर्थस्वरुप कहेवाय छे, वळी तीर्थ तो अमुक काळे फळ आपे छे पण सत्समागम तो सत्वर फळे छे. " माटे आप मारे घेर अतिथि पर्धाया छो तो कृपा करी मने सेवा फरमावो.

मृकंडनां वचन सांभळी सप्तिषेओ वोल्या के "तमारो अल्य आयुष्यवान् पुत्र मृत्युनी जाळमाथी वच्यो एज अमे कोटिगणु आतिथ्य यान्युं छे. " त्यारवाद मृकंड वोल्या के "महाराज! मारा पुत्रने मृत्युना मुख्यी छोडावी आपेज मारा कुळनो उद्धार कर्यो छे, जो हुं आपनो प्रत्युपकार न करं तो महा पापी कहेवाउं, कारण के ब्रह्महत्या तथा मुरापान करनार अने ट्रतभंज-कनां प्रायिविच ब्राह्मोमां कहेळ छे परंतु कृतव्नतारुपी अधोर पापतुं प्रायिविच कर्युंज नथी; माटे कृपा करी मने कृतव्रतानो दोष प्राप्त न थाय एवी कोइ सेवा वतावो.

आ रीते मुकंडना अति आग्रह्थी सप्तिषिओ वोल्या के "तपारा अन्तः करणमां मत्युपकार करवानो खरो निक्ष्य होय तो तमे आ तीर्थनी पासे एक मंदिर चणायो अने तेमा जेनी कृपायी आ तमारो पुत्र अनरामर थयो छे ए श्री ब्रह्मदेवनी स्थापना करो तेमज आ तमारा पुत्र सिहत निरंतर ने पितामह देवनी पूजा करो, अमे पण तमारी साथे हमेद्या ब्रह्म मृतिनी पूजा करछं, यीजा ब्राह्मणो पण तेनी पूजा करहो. वळी आ तीर्थनी जगोए अमोए आ वाळक साथे पिताइ करी माटे आ तीर्थनुं नाम " वाळलख्य" एम जगतमां प्रसिद्ध यहो. अने आ तीर्थ वाळकोंने

घणुंज हितकारक थइ पडरो. बळी आ तीर्थमां जे कोइ पोताना रोगार्च, भयार्च, भूत पेतनी जडमां आवेला तथा वालग्रहनी पीडा पामता वालकने न्हवरावरों तेना रोग, भग तथा पीडा अमारां वचनथी निःसंशयपणे नष्ट थइ जरो; तेमज जे कोइ मनुष्य निष्काय वृतिथी श्रद्धावान् थइ आ तीर्थमां स्नान करशे ते अझाना प्रसादथी तथा अमारां वचनथी परम गतिने पामशे, "आदलुं कही सप्तिपिंओ तीर्थ प्रवासे चाली नीकळ्या। त्यारवाद मुकंड ऋषिए ए जगोए म्होटी धामवृमनी साथे श्रद्धावान् थइ भगवान् ब्रह्मदेवनी मूर्चि स्थापन करी।

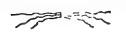
महात्मा मार्कटेय वेदाध्ययन करवा पोताना पूज्य पितानी आज्ञा छड कोइ उत्तम वेद वेता ऋषि पासे गया. गुरुनी आज्ञा मुजव नैष्ठिक ब्रह्मचर्य पाळी यथाविधि अध्ययन करवा लाग्या. जटा, वल्कल, कमंडलु, दंड, उपवीत, जपमाळा अने दभोंने धारण करवा लाग्या, धर्मनी दृद्धिने अर्थ ज्ञांत-पणाथी वने संध्यामां अग्नि, सूर्य, गुरु, ब्राह्मण अने पोताना ज्ञिरणां भगवाननुं पूजन कन्या लाग्या; सायंकाळे तेमज मातःकाळे भिक्षा लावी गुरुने समर्पण करी तेओनी आज्ञा पामी पोते मौनपणे एकमुक्त करी संतोप पामवा लाग्या. आ रीतें लांबा वखत सुधी ब्रह्मचर्य पाळी कृत्, यज्ञः साम तथा अथ्व ए वेदना पदः क्रम, शिखा, दंड, माळा, व्वज, रथ अने चन विगेरे भेदो अली रीते भण्या; वेदाध्ययन पूर्ण यइ रहा। पछी पोताना पिता पासे जवा गुरु पासे आज्ञा माणी. गुरुए बणा हपे साथे आज्ञीर्वाद आपी प्यारथी चुंवन करी ऋषिओना ज्ञिरोमणि मार्कडेयने विदाय कर्यी.

TO THE TANKS AND THE PROPERTY OF THE PROPERTY





पंचम तरंग



स्रग्धरा.

मार्कंडेये गृहस्थाश्रम निज पितुना वोधथी मान्य राखी, स्नेहे सरकर्म कीधां, निशादिन भयना भारने दूर नांखी; पुत्रोत्पत्ति थवाथी, प्रियजन तर्जोने, योगमां वृत्तिधारी, एनुं वृत्तांत व्हालें, अमर नरपति ! सांभळो श्रेयकारी.

महात्मा मृकंडऋपि भगवान् ब्रह्मानी स्थापना कर्या पछी अने मार्कडेय जेवा पुत्रनी माप्तिथी गृहस्थाश्रम पूर्ण थयुं समजी पोतानां पत्नि सहित वानमस्थ आश्रम ग्रहण करी त्यां ब्रह्म-देवालयमांज निवास करी तपट्टत आदि उत्तम साधनाओं करवा लाग्याः

महात्मा मार्कडेय वेदाध्ययन करी घर आवी पोतानी योग्य अवस्था थरायी तीर्थाटन करी योग साधवा माटे कोइ पवित्र स्थाननो आश्रय लेवा पोताना मातिपता पासे नमृतायी हाथ जोडी रजा मागवा लाग्या; मनिस्वनी माता सजळनेत्रे पोताना पुत्रने तेम निह करवा अने पोता पासे रही गृहस्थाश्रम चलाववा समजाववा लाग्यां, वैराग्यवान् मार्कडेय गृहस्थाश्रमयी यता दुःग्वोनुं वर्णन कर्या पछी अति नमृतायी नम्म करी माताने कहेवा लाग्या के ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मानी कृपायी मने अमरपणुं प्राप्त थयुं छे जेथी हवे हुं क्षणपण इत्वर भजन सिवाय व्यर्थ व्यतीन करवानी नथी।

महात्मा मृतंडऋषि पुत्रनो हठ जोइ समजाववा लाग्या के "भाइ! गृहस्थाश्रम कर्या विवाय त्यागाश्रम करीषण सुखहप थतुं नथी; तमाम आश्रमोथी गृहस्थाश्रम उत्तम छे, जे गृहस्थोना गृप्त वैभवोने अनुभव्या मिवाय स्वर्ग आदिमा श्रद्धावान वनी ज्ञारीरनो त्याग करे ते तामन सन्यामी कहेवाय छे, जे स्थान रहित भिक्षार्थे फरनार मात्र वृक्षनां मूळनोज जेने आश्रय छे ते भिक्षक्र- संन्यासी कहें नाय छे, आनंद, क्रोच अने चुगलीनो त्याग करी जे विव वेदनुं अन्ययन करे ते

त्यागी कहेवाय छे, एक वाजु गृहस्थाश्रम अने वीजी वाजु वधां आश्रम तोळीए तो अन्य सर्व आश्रमोथी गृहस्थाश्रम वजनदार गणाय छे, अन्य आश्रमोथी मात्र स्वर्गीय लाभ प्राप्त थाय छे; परंतु गृहस्थाश्रमथी तो काम तेमल स्वर्ग उभयनी प्राप्ति थाय छे; माटे महिंपओंने पण उत्तम गति आपनार गृहस्थाश्रमज छे; रागदेपने वर्जी गृहस्थाश्रम पाळनारने महान् भाग्यशाळी समजवी; कारण के पीडितने झयन, श्रमितने आसन, तृपितने जळ अने क्षुधातुरने भोजन आपन्तं ए गृहस्थोना सामान्य धर्म छे." आ रीते पितानां वचन सांभळी मार्कंडेय सविनय कहेवा लाग्या के "पृत्य! वधां आश्रमो करतां गृहस्थाश्रमने आप ज्ञा कारणथी श्रेष्ठ गणोछो? तपस्वी मृतंड वोल्या के "जेम पवनने आधारे सर्व पाणी रहेलां छे तेम तमाम आश्रमो गृहस्थाश्रमने आधारे रहेला छे, ब्रह्मचांरी, वानमस्थ अने सन्यासी ए त्रणेने गृहस्थाश्रम उच्च गणेल छे, सर्व आश्रमोनी उत्पत्ति गृहस्थाश्रममांथील छे. जेम सरिताओनी स्थिति सागरमां छे तेम अखिल आश्रमोनी स्थिति गृहस्थाश्रममांज छे. कारण के सर्वतुं पोषण गृहस्थाश्रम उच्च गणेल छे, मर्व आश्रमोनी स्थिति गृहस्थाश्रममांज छे. कारण के सर्वतुं पोषण गृहस्थाश्रम उच्च गणेल छे, मर्व आश्रमोनी स्थित गृहस्थाश्रममांज छे तो तमाम आश्रमोनी विधिवत् सन्कार कर; पुत्र पाण्ति थया पछी खुजीथी त्यागाश्रम स्वीकारले."

पितानी आज्ञातुं उछंपन निह करनार मार्कडेय मुनिए शरमने लोधे मुखथी निह वोलतां चेष्टाओथी सर्व आज्ञा स्वीकारी नमन कर्युः

ज्ञानी गुकंड ऋषिए तुरतन प्रथम मळेल सामुद्रिक शास्त्रीने वोलाव्या, क्षा मान सित्तार करी साष्टाग दंडवत् पूर्वक विज्ञिति करी के "दैवज्ञ ऋषि ! आपे मने भविष्य संभळावी मारा पुत्रने दीर्घाय कर्यों, हवे ए अगरपण पामेल पुत्रने गृहस्थाश्रमी करवा मारो विचार थयो छे तो तेना योग्य कन्या शोधतां पहेलां स्त्रीओनां ग्रुभ अग्रुभ सामुद्रिक लक्षणो सांभळवा इच्छा राखुं छुं तो कृषा करी मने संभळावशों."

महात्मा मृतंडनां वचन सांभळी सामुद्रिक शास्त्री वोल्या के " जेम क्षीरमां शर्करा मळ-नाथी विशेष स्वाद उत्पन्न थाय छे तेम उत्तम लक्षणवाळा पुरुषने उत्तम लक्षणवाळी स्त्री होय तो वन्ने सुख पामे छें; स्त्री पुरुषणांथी एक शुभ लक्षण युक्त होय अने एक लक्षणहीन होय तो तेनुं जीवन मरण तुल्य छे, कारण के जाळनी अंदर सपडाएला माछलांनी पेठे दुःख पामे छे. जेम कंचननी अंदर नंग जडवाथी शोभानी आधिक्यता थाय छे तेम स्त्री पुरुष सरलां शुभ लक्षण-वाळा होवाथी तेनी शोभामां हुद्धि जणाय छे.

जे कन्याना पग स्निग्व, उंचा, आगळथी पातळा अने लाल रंगना नखोथी युक्त होय, समान, पुष्ट, मुंदर अने निगूढ गुल्फथी युक्त होय; तेमज तेनी आंगळीओ परस्पर मळेली होय अने तळीयांनी कान्ति कमलनी कान्ति समान होय ए कन्याथी राजा वनवानी इच्छावाळा पुरुषे लग्न करवां.

जेमां मत्स्य, अंकुश्च, कमल, जब, बज्ज, हळ अने खङ्गना आकारनी रेखा होय, पसीनो वीलकुल न बळतो होय तथा जेनां तळीयां सुकोमळ होय एवां चरणो शुभ होय छे.

रोम अने नाडीओथी रहित सुंदर गोळ जंघा होय, वन्ने जानु समान होय अने तेना सिन्धओ स्थूल न होय; वन्ने उरु पुष्ट हाथीनी सुंढने आकारे रोम रहित होय, पीपळानां पान समान कोमळ अने विस्तीर्ण गुद्यांग होय; केडनी उपरनो भाग विस्तीर्ण अने कूर्मनी पीठ समान उन्नत होय तेमज मणि गृढ होय आवां लक्षणवाळी स्त्री मळतां घणा धननी प्राप्ति थाय छे.

कांची कलापने धारण करनार नितंब विस्तीर्ण, मांसथी पुष्ट अने गुरु होय तेमज नाभि गंभीर, विस्तीर्ण अने दक्षिणावर्त होय तो ते शुभ गणाय छे.

जे स्तीनो पथ्य भाग त्रिवलीथी युक्त अने रोम रहित होय; वन्ने स्तन गोळ, पुष्ट, सरखां अने कठिन होय, छाती रोम रहित अने कोमळ होय तेमज ग्रीवा शंख समान त्रण रेखाओथी युक्त होय ते स्त्री धन अने सुख आपनारी वने छे.

वंद्यजीवनां पुष्प समान अति रक्तवर्ण, मांसथी भरेलां, सुंदर, विम्व फळ तुल्य आकृति वाळा अथर होय तेमज कुंदनी कळी समान श्वेत अने सरखा दांत होय तो ते स्त्रीओने पितसुख तथा घणी संपति आपनार थाय छे.

सरलता युक्त शवता रहित कोकिल अने हंसना शब्द जेवा रम्य अने दीनता रहित जेनां वचन होय ते स्त्री दह सुखदायक वने छे; सनान पुटवाळी संदर नामिका शुम गणाय छे, नील कपलना दल समान कान्तिवाळी हिए उत्तम सनजवी.

वने अक्टी मळेळी न होय. वहु प्होळी न होय तेम लावी पण न होय पांतु वाल चंद्रमानी माफक वाकी होय तो ते ग्रुभ जाणवी.

अर्थ चंद्राकार, रोम रहित अने सम (उंचु निह तेम नीचुं पण निह) छछाट ग्रुम होय छे. वने कर्ण थोडा मांसथी युक्त, कोमळ, समान अने समाहित होय ते ग्रुम समजवा.

एक एक रोमकूपमां स्निग्ध, अति कृष्ण वर्ण कोमळ अने कुंचित एक एक केश उत्पन्न थाय ते सुखदायक होय छे. मस्तक पण सम अर्थात उंचा नीचुं न होय ते शुभ जाणवुं.

जे स्त्रीनां चरणतल अने करतलमां मंगार, आसन, घोडा, हाथी, रथ, श्रीवृक्ष, यूप, वाण, माळा, कुंडल, चामर, अंकुश, यव, पर्वत, ध्वज, तोरण, मत्स्य, स्वस्तिक, यज्ञवेदी, पंखो, श्रांख, छत्र अने कमलना आकारनी रेखा होष ते स्त्री राजानी राणी थाय छे.

जेना मणिवंध निवन कमलदछना गर्भ समान पातळी अने लांबा पर्ववाळी आंगळीओथी युक्त निगृह अर्थात् उंचा न होय ते स्त्री राजानी राणी थाय ले.

स्री अथवा पुरुपना हाथमां मणिवंधथी निकळो मध्यमा अंगुळी पर्रन्त जे रेखा जाय अथवा पादतळमां जे उर्ध्व रेखा होय ते रेखा राज्यसुख आपनारी थाय छे.

किष्ठिकानां मूळथी नीकळी तर्जनी अने मध्यमाना मध्य भागमां जे रेखा जाय ते रेखाथी आयुष्यनुं प्रमाण थाय छे. जो ए रेखा पूरी होय तो आयुष्य पूरी होय छे अने जो न्यून होय तो ए प्रमाणे आयुष्य न्यून पण जाणी लेवुं.

अंगुष्टना मूळमां संताननी रेखा होय छे, तेमां म्होटी रेखा पुत्रोनी अने न्हानी रेखा कन्याओनी होय छे, जे रेखा वच्चेथी दूटेली न होय ते दीर्घायुष्यवाळां संताननी अने जे रेखा दूटेली तेमज न्हानी होय ते अल्प आयुष्यपाळा संतानोनी जाणवी

जे स्तीना पगनी किनिष्ठिका अथवा किनिष्ठिकाना समीपनी आंगळी अनािनदा भूमिनो स्पर्श्व न वरे तेमज जेना पगनी तर्जनी अंगुठाथी अथिक छांबी होय ते स्त्री व्यभिचारिणी अने पािपणि होय छे.

जेनी जंवाओ उपर खेंचायेळी पिंडीओधी युक्त, नाडीओधी व्याप्त, शुप्त अथवा वहुं पुष्ट अने रोमश हाय; वामावर्त रोमोथी युक्त निम्न अने न्हानुं जेनुं गुर्वांग होय तेमन जेनुं पेट घटाकार होय ते स्त्री दुःख भोगवे छे.

दंकी ग्रीवा वाळी स्त्री निर्वत होय छे, बहु लावी ग्रीवा वाळी स्त्री होय तो तेना कुळनो स्रथ थाय छे. अने म्होटी ग्रीवा वाळी स्त्री कूर स्वभावनी होय छे. जे स्तीनां नेत्र केकर अथवा पिंगल होय ते तथा जेनां नेत्र ज्याव अने चंचल होय ते स्त्री व्यभिचारिणी थाच छे.

जेतुं कलाट लांबुं होय ते स्त्री देवरने मारे छे, जेतुं उदर लांबुं होय ते श्वसुरने मारे छे अने जेना स्फिच् लांबा होय ते स्त्री पितने मारे छे.

जेनो उपरनो होठ वहु रोम युक्त होय ते तथा जे वहु लांवी होय ते स्त्री पितने माटे ग्रुभ होती नथी।

जे स्त्रीनां स्तन रोमश, मिलन, अने उत्कट होय तेमज कर्ण विषम होय ते क्रेशकारी थाय छे.

जेना दांत स्थूळ, कराल अने विषम होय ते स्त्री कलेश भोगवे छे, काळा मांसवाळा जेना दांत होय ते स्त्री चोरी करे छे.

जे स्तीना हाथमां मांस खानारां गीध आदि पक्षी, टक्, काक, कंक, सर्प अने उल्लकना आकारनी रेखा होय ते तथा जेना हाथ शुष्क नाडीओथी व्याप्त अने विषम होय ते स्त्री दुःखी अने धनहीन धाय छे.

जेनो उपलो होठ उंचो अने केशना अग्र भाग रुखा होय ते स्त्री कलहिंग्या थाय छे. घणे थांगे कुरुपा स्त्रीओमां दोष अने उत्तम रुपवाळी स्त्रीओमां गुण होय छे.

पग अने गुल्फ ए पहेलो भाग, जानु चक्रो सहित जंघा बीजो भाग, गुह्याग, उरु अने वृपण त्रीजो नाग, नाभि अने किट चोथो भाग, उदर पांचमो भाग, स्तन सहित हदय छहो भाग, स्तंय अने जतु ए सातमो भाग, ओष्ठ अने ग्रीवा ए आटमो भाग, भ्र सहिन नेत्र नभ्मो भाग अने छछाट सहित शिर दशमो भाग जाणवो.

पाद आदि अंग अग्रुम लक्षणोधी युक्त होय तो एनी दशातुं एळ अग्रुम अने ग्रुम लक्षणोथी युक्त होय तो एनी दशातुं फळ ग्रुम होय छे; आतुं तात्वर्य ए छे के जन्मधी गांदीने वार वार वर्ष पाद आदि दश मागोनी दशा होय छे; एमां जो पाद आदि अंग नत, नाडी शोधी व्याप्त अने अग्रुम लक्षणोधी युक्त होय तो तेनी दशा अग्रुम तेमज जे अंग एए, नाटी शोधी रहित तथा उनम लक्षणोधी युक्त होय तेनी दशा श्रुम होय छे.

आ वार वर्षतुं दशा प्रमाण भिवष्यमां थनारी छेल्लामां छेल्ली प्रजाना एकसो वीश वर्षना आयुष्य प्रमाणे कहेल छे माटे गणितथी जेटलुं आयुष्य जणाय तेतुं दशांश प्रमाण लेवुं.

सामुद्रिक ग्रास्त्रीना मुख्यी स्त्रीओनां शुभ अशुभ लक्षणो सांभळी प्रसन्नमनयी महात्मा मुकंड ऋषि पोताना पुत्र मार्केडेय माटे योग्य कन्यानी बोधे प्रवृत्त थया. घणी कन्याओ जोया पछी धूम्रवती नामनी छलक्षणा कन्या पसंद करी, अने तेना पिता पासे मार्केडेय माटे कन्यानी याचना करी.

आ दुनियामां परमेश्वरे गर्भ धारण करवा स्त्रीओने अने गर्भाधान करवा सारु पुरुपोने पेदा कथी छे,

पुरुषे स्त्री संगाते रही सर्व सामान्य धर्म पालन करवानुं वेदमां वर्णवेखुं छे.

उद्वाइ आठ प्रकारना छे. ब्राह्म्य, दैव, आर्थ, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस अने पैशाच.

विद्वान, सदाचारशील तेमज याचना निह करनारा पुरुषने वोलावी, वरकन्याने वल्ला-भूषण धारण करावी, वरने सन्मान पूर्वक जे कन्यादान आपवामा आवे तेने ब्राह्म्य लग्न कहे छे.

ज्योतिष्ठोम आदि विस्तीर्ण यज्ञ ज्यां थतो होय त्यां तेनां कर्म करावनार ऋत्विजने वस्ना-भरणथी भूषित कन्या अर्पण करवी तेने देव लग्न कहे छे.

धर्म शास्त्रनी आज्ञा मुजव वर आगळथी एकाद वे गाय अने वळद छड् कन्यादान आप-वामां आवे तेने आप छत्र कहे छे.

कन्यादान देवा टाणे वर कन्या वजेने साथे रही धर्म पाळवानुं कहेवामा आवे तेमज वरकन्यानुं पूजन करी वरने कन्या आपवामा आवे तेने माजापत्य छग्न कहे छे.

कन्यानां मावापेने द्रव्य दइ तथा कन्यान यथाशक्ति वस्नाभरण आपी शास्त्र विरुद्ध जे छान करवामां आवे तेने आसुर छान कहे छे.

मात्र वर कन्यानी इच्छानुसारे जे सबंब जोडाय तेने गांधर्व छग्न कहे छे.

वन्याना पीयरीयानो नाज्ञ करी, रूदन करती तेमन राडो पाडती कन्याने वळात्कारे उपाडी जह ते साथ परणवुं तेने राक्षस लग्न कहे छे.

उंबी गयेली अथवा केफयी वेभान वनी गयेली कन्यांने अकान्ते भोगववी तेने पैशाच लग्द कहे ले. उपर कहेल लग्नोमांथी उत्तमोत्तम ब्राह्म लग्नियी बूझवतीना पिताए मुकंड ब्रिपराजनुं वचन मान्य राखी पोतानी पुत्रीनो मार्कडेय साथे विवाह कयों, विवाह थया पछी 'यूझवती तथा मार्कडेय वेदमा अने स्मृतिमां कहेल धर्म प्रमाणे वर्तवा लग्या अहर्निश्च परस्पेर पीति राखी ग्रह-स्थाश्रम चलाववा लग्या, कुलदेव, गाय, अतिथि अने मातिपतानी सेवा धर्णा भावथी करवा लाग्या, अने भूझवती पोताना पतिने इश्वर समजी रातिदेवस ग्रुद्ध मनथी सेवा करवा लागी.

हृदयनी अवस्थानुं सूचन कराववावाळा शरीरकम्म, रोगांच, स्वेद, अने मुल पैवण्ये आदि सात्विक भावो पितना एकान्त मिळन वखते प्रगट करवा छागी तेमज नाभि, भुजा, उरोज अने भूपणोतुं देखाडवुं, वस्नोतुं संकोचवुं, केशोने खुल्ला मूकवा, श्रक्कटी चढाववी, कंपवुं, कटाक्षयी जोवुं इत्यादि अनुरक्तानी चेष्टायी पितने प्रसन्न करवा छागी; उंचा स्वर्यी भाषण करी, हसी, शय्या समीप जइ आळस खाइ योगीराज मांकेडेयतुं मन हरण करवा छागी, मद्युर वचन बोली, पोतानुं सर्वस्व पितने अर्पण करी प्रसन्न थवा छागी, कोष्य रहित थइ पितना गुण गावा छागी, पितना मित्र वर्गने आदर अपी तना पितपित्रीओने धिकारवा छागी तेमज पित जरा दूरे जतां उदास थवा छागी.

सुशीला धूम्रवतीना आवां वर्तनथी मार्कडेय महा ज्ञानी छतां संसार सुखनी प्रशंसा करता हता.

कार्ळे छइने महात्मा मार्कडेयने सती धूम्रवतीथी एक देदीप्पमान उत्तम छक्षणपाळो पुत्र उत्पन्न थयो जेतुं उत्तम ज्योतिष शास्त्रीओ पासे जोवरावी "वेदिशारा" नाम पाडयुं. धूम्रवतीना शुभ संकल्पना उत्तम फळहप वेदिशारा दिनमितिदिन द्विनीया चन्द्रनी माफक यिद्ध पामवा छाग्यो.

महात्मा मार्कडेय वेदिशाराने योग्य वये पहोंचेल जाणी पोता पासे वोलावी कहेंवा लाग्या के-" आयुष्यमन पुत्र ! हु हवे गृहस्थाश्रमनो त्याग करवा इच्छा राखुं छुं तो तारे मारां वचन उपर विश्वास राखी मारी गेरहाजरीमा वर्तवानुं छे. आपणा पूर्वजोशी चालनो आपनो सनातन धर्म स्वीकारी पंच महायज्ञ सिहत बीजा यज्ञो करवा अने कराववा, अवर्मशी दूर रहेवुं, दान किंदि पण न लेवुं अने लेवुं तो विपत्ति काळमा लेवुं, भिन्ना मागवीज निहे, विद्या मणर्वः अने मणा- वर्षा, पेद कर्म करावी द्रव्य मेळववुं, विनाश्रम किंदिपण द्रव्य लेवुं निहे अने वेदान्ययन करना माटे

गुरुने घेर रही नैष्ठिक ब्रह्मचर्य पाळबुं; पुत्र! तने हुं सूत्ररुपे सद्दीन समजाबुं छुं ते साभळ " मनुष्यपणुं पाम्या छतां सद्दर्तनथी रहित पुरुष पशुसमान गणाय छे एटला माटे दुर्लभ मनुष्य-पणाने शोभाववा सद्वर्त्तनवान थवुं. सुरभि, विष, गुरु. दृद्ध, सिद्धपुरुष अने आचार्यनुं यथा -विधि अर्चन करवुं. सवार सांज अग्निमां हुतपदार्थ होमवा, रोगने दूर करनारी श्रेष्ठ औषाधिओने शरीर उपर धारण करवी, सांजसवार स्नान संध्या करवा चूकवुं निह, तमाम अंगोने साफ राखवां, पखनाडीयामां एकाद वखत शिरकेश, दाढी, मुछ तेमन वगलना वाळ उतरावी नखी काढी नांखवा, हमेंशां स्वच्छ अने नहि फाटेल वस्त्रों धारण करवां, अन्तःकरणने आनंदमां राखवुं, चंदनादि सुगंधि द्वयो लगाडी शरीरने सुगन्धवाळुं राखवुं, शोभतो पोशाक धारण करवो, माथाना वाळ मळ रहित राखवा. माथामां, कर्णमां, नासिकामां अने हाथ पगोमां हमेशां तैल मर्दन करवं, पयःपान करवं, हरकोइनो मिलाप थती वखते प्रथम आदर आपवानी टेन राखवी, मुख प्रसन राखवुं, आपत्तिमां सपडायेळ प्राणीने सहायता आपवी, यज्ञ करवा, विप्र अने कंगालोने दान देवुं, पांच श्रेष्ट मनुष्णेने वेसवाना स्थानने नमन करवुं, चौटामां विल मूकवां, अतिथिनुं विधिवत आतिथ्य कर्वं, पितुओने सप्रेम पिंडदान आपवं, योग्य वखते हिंत करनार यथाकार्य िषय अने सप्तयोजन वाक्य बद्वं, इन्द्रिओने स्वाधीन राखवी, धर्ममां अन्तःकरण पेर्वु, अन्यने विद्या, धन अने धर्म विगेरे पाप्त थाय तो इर्पा करवी नहि परंतु ते मेळववा यत्न करवी, चिन्ता रहित थवं, भय राखवी नहि, लोक लज्जाने स्नेह पूर्वक जाळवी राखवी, बुद्धिमान वनी क्षमाज्ञील थवं, धार्मिक अने आस्तिक थवं, जे विनय, बुद्धिः विद्या, कुलिनता अने उम्मरमां पोताथी आगळ होय तेओतुं अने म्होटा पुरुषोतुं तेपज आचार्योतुं सेवन करवुं, वाहेर फरवा जती वेळाए श्रीर उपर स्वच्छ परिधान पहेरवा, भाये पायडी, हाथमां लाकडी अने पगमां पगरखां पहेर्या सिवाय वाहेर जबुं निह, रस्ते चालतां आसपाय चार हाय द्रष्टि राखी गगन करव, मंगळ आपनार आचारोतुं यथाविधि सेवन कर्या करवुं ने स्थळे ग्लानि उत्पन्न करनार तृटेला बह्नो, अस्थि, कंटक, उतारेलां वाळ, तूप, कंकर, राख अने फूटेलां मृतिका भाजनो पडेला होय तेने नहि अडकतां दर चाळबुं, स्तान करवाने स्थाने पण विना "योजन जवुं नहि, अम जणाया पहेठांथीज व्यायाम वंब करवी, पाणी मान पत्ये वंबुभाव राखवी, क्रोधे भरायेळाओने सामयी ज्ञान्त करवा, भवभीतने चैर्य देवं, दीनोने आश्रय देवो, सत्य मतिज्ञावान थवं, शान्ति राखवी, कोड कटु वचन कहे तो क्रोच न छावनां सहन कर्त्यं, इपी रहिन थवं, राग देपना हेतुओनी विनाश करवी, कादि पण

D)Cq

असत्य उचारचुं निहः, पराइ स्त्रीनी तथा पराया धननी स्तप्ने पण स्पृहा करवी नही, कोइ साथे वैर-भाव राखवी निह, पापाचरणयी अलग रहेवुं, पापकर्ष करवानी समय प्राप्त थाय तो पण तेयी दूर रहेवुं, अवरना दुर्गुणो उचारवा नहि, कोइनी गुहाबात मकाशमां लावबी नहीं, धेर्म रहित मनुष्यो साथे, राजद्रोह करनारनी साथे, उन्मत्त मनुष्यो साथे, पापीओनी साथे, गर्भनो विन्वंस करनार स्त्रीओनी साथे, क्षुद्र आ-चरणवाळाओंनी साथे तथा दुष्ट मनुष्योंनी साथे कदिपण वेसवुं नहि, निरंकुश वाहनपर स्वारी करत्री नहि, अति उन्नत अने कठिन अत्सनपर वेसवुं नहि, निना ओछाडेल ओशीका विनानी तेमज वि-पम शब्या उपर सूबुं निह, पहाडोन, विषम शिखरो उपर अटन करवुं निह, द्वसोपर चहवुं निह, अति वेगथी वहेतां जळमां स्नान करवुं नाहि, सिरता तटे उगेला हक्षोनी छिँदी सेववी नहि, सळगी उठेल अग्निनी आसपास जबुं निह, म्होटे अवाजे अति हास्य करवुं निह, छीक अने नगा-मुं खाती वखते मुख आडो हाथ देवो, विना प्रयोजन इसवुं निह, वारंवार नासिकाने खणवी निह, दंत पंक्तिने परस्पर अथडाववी नहि, अस्थिवाळा भाग उपर कोइने ताडन कर्वं नहि, विना प्रयो-जन पृथ्वी खणवी निह, नखथी तृण तोडवुं निह, चालता मृत्तिकाना अरोडा उपर पग मुकी भांगवा नहि, अंगना कोइ पण अवयवोथी क्षुद्र चेष्टाओं करवी नहि, ग्रहोनं, अशुभ वस्तुओंने, अपवित्र चीजोने तथा अमंगळ पदार्थोने जोवा निहः शवतुं अपमान करतुं निह, गाममां सर्वथी मुख्य तरुनी, देवालयोनी, ध्वजानी, गुरुनी, पूजवा योग्यनी अने चांडालादि नहि अडकवा येग्य जातिनी छायाने उछंवी चालवुं निह, देव मंदिरमां, महोटा दक्ष नीचे, चोरा चौटामा, उयानमां, साज्ञान सुपिमां तेमज वधस्थानमां रात्रीनी वखते रहेवुं नहि, निर्जन गृहमां अने जंगलमां एकाकी जबुं नहि, सी, भित्र अने दास पापी होय तो तेनो तुर्त त्याग करवो, पोताबी महोटा साथे बैर क-रवं नहि, अधम पुरुषोनी सेवाथी अलग रहेवुं, कपटी मतुष्य सार्ग स्नेह राम्बरो नहि, अनार्य पु-रुपना आप्रयमां कदी पण रहेवुं निह, कोइने पण भय उप्तन निह करना साहम, अति उंचवं, अति जागवुं, अति नहावुं, अति पीवुं अने अति आहार इत्यादिनो परिन्याम करतो, लावो वस्वत उभे गोठणे वे वर्दु निह, हिंसक, दाढराळा अने शिंगडावाळां प्राणीओयी दूर रहेवुं, पूर्वनो पपन ताप, शरदी अने अति तीव्र वायुनुं सेवन करवुं निह, क्लेशनी शरुआन पोने कदी पण करवी नहि, गफलत राखी अग्निसेवन करवुं नहि, जम्या पढ़ी मुख प्रशालन कर्या सिवाय अग्निनी उना-सना करबी नहि, अविथी चरणतळ तपाववा नहि. अम दूर थयां पहेला स्नान करतु निह, न्हाता पहेला मुख थोवुं, वस्न रिहत वह स्नान करवुं निह, पहेरेल कपडावी माधु माफ करवुं निह, स्नान

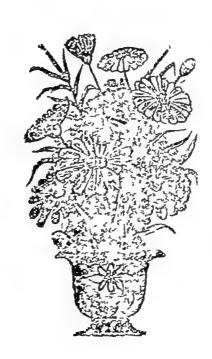
करी माथाना वाळ झाटकवा निह, न्हाया पछी पवित्र वस्त्र पहेरवां; रतन, वृत, पूजनीय टाद्भजन, मांगलिक वस्तुओ तथा पुष्पोनो स्पर्श कर्या शिवाय घर व्हार जवुं निह, वाहेर जती वेळाए पूज-वा लायक तथा मांगळिक पदार्थीने वाम भागमां राखी चालवं निह, हाथमां रत्नाभरण धारण करी न्हाइ, पवित्र परिधान पहेरी गायत्री आदि मंत्र जप करी, अग्नि देवने आहुति दइ, पितृ तर्पण करी, गुरु, अतिथि तेम आश्रिताने अन्नदान आपी, चन्दन आदि सुगन्ति पदार्थीनी कारीरे लेप करी, पुष्पमाळा पहेरी, हाथ, पग अने मुखनुं प्रशालन करी, उत्तराभिमुख वेशी आचमनथी मुख शुद्धि करी, प्रसन्न पनथी, दासजन, अभक्त, अनिच्छित वस्तु अने अशुद्धताने अछग करी क्षुधा छ।गे त्यारे ग्रुद्ध पात्रमां भेजिन करतुं; जनसमुदायमां, वलत विना अन्नने वेद विहित विधि मुजव अभिनैत्रित कयी वगर तेमन प्रतिकृळ मनुष्यनी हाजरीमां भोजन कदी पण न करवुं, दुरमनोए आपेलुं तेमन अग्रुद्ध अन जमबुं नहिः वासी अन्नने उपयोगमां लेवुं नहिः किंतु फळ, काचरी अने आदु आदि लीला शाक वासी है।य तो पण उपयोगमां लेवां, पात्रमां पीर-सेलु सर्व अन्न जमी न जतां कांइक अवशेष राखबुं, किंतु दिय, मय, लवण, साथवे। अने घृत ए चीजोपांथी जमतां जरापण अवशेष राखवुं नहिः रात्री भोजनमां दिवनो त्याग करवोः घृत अने शर्करा मेळच्या शिवाय, रात्रि भोजनमां सर्व अन जमी छीयां वाद मात्राथी विशेष अने दिवसमां वेटाणां साथवो कदी पण न खावो, साथवो जमतां मध्य जळ करवुं नहि, छींक खाता, भोजन करतां अने ज्ञायन करता शरीरने वांक वाळवुं नहि, लघुशंका तेमज दीर्घशंका थता मळमुत्रनो त्याग कर्या शिवाय अन्य कार्यमां योजावुं निह, रस्तामां विज्ञाव करवो निहे, वायु, अग्नि, जळ, चन्द्र, सूर्य, द्विज अने गुरुनी सामे धुंकवुं निह तेमज अशौच किया करवी निहे, जनसमुदायमां, जमती बखते, जप, होम अने बेदाध्ययन करती बखते, बिल आपवा टाणे तथा मंगळ कार्य करती वेजाए नाक छींकवुं नहि.

अववानुं अपनान करवुं निह तेम तेनो विश्वास पण न करवो; स्त्रीओने ग्रप्त वात कहेवी निहः; तेम तेने कोइ प्रकारनुं उपरीपणुं पण न आपवुं, सत्पुरुपनी अने गुरुनी असत्य निंदा न करवी, अपवित्रपणे देवपूजन के वेदा-प्यन करवुं निहः

वर्शकाळ सिनाय निद्युत थती होय ते वखते, दिग्दाह यनी वखते, अग्नि सळगी उठेळ होय ते वखते, भूकंप वखते, तहेवारोना दिवसीमा, उचकापात थती वखते, चन्द्र सूर्यना ग्रहणे वखते, प्रातःकाळे तथा संध्यानी संनिध वखते; चन्द्र क्षय तिथि अर्थात् अंधारी चतुर्दशी अने अपास तथा अजवाळी मदिपदाने दिवसे तेमज गुरु आगळथी पाठ लीधा शिवाय अध्ययन कर्त्युं नहिः; मध्यना अक्षर स्विलित न थाय तेम उतावळा न थतां भैर्पथी काकस्वर न करतां शुद्ध स्वर्यी, अव्ययन करवं. जन समुदाये वांथेला नियमोनो भंग न करतां सामान्य नियमोनो पण भंग न करवो. रात्रीए विना प्रयोजन वाहेर फरवुं निह, अज्ञात स्थाने गमन करवुं निह, सायंकाळे विद्याभ्यास, अदन, स्त्री संग अने उंघनो त्याग करवो, अति वाळ, अति रुद्ध, ऋपण अने पूर्व साथे मित्रता वाधवी नहि, मद्य, द्यूत अने वेदयामां आसक्त थवुं नहि, ग्रप्त वात प्रकाशमां लाववी नहि, कोइनुं अपनान न करतां निरभिमानी रहेवुं, कर्ममां कुशळता मेळावी, सदा प्रसन्न रहेवुं, अन्यना गुणोपर दोपारोपण करवुं नहि, विमनी निन्दा न करवी, सुर्भि उपर दंड उपाडवी नहि, दृद्धजन, गुरुजन, जनसमुद्द अने नृपतिओनी निन्दा कदीपण न करवी; बहु बोलवानी टेव न राखवी, वन्धुजन, पोतापर प्रेम राखनार, दुःखने टाणे सहायता देनार तथा गुप्त वात जाणनारनो तिरस्कार करवो निहः; कोइ वातमां अधैर्यतुं अवलंबन लेवुं निह, अति उद्धत मनना थवुं निह, स्त्री, पुत्र अने सेवक आदितुं पोपण करता रहेवुं; निज जनोनो अविश्वास न राखवो, एकाकीए सुखनो उपभोग न करवो; सहज आचरण, शास्त्रोक्त आचार तेमज विवेक आदि दुःखमद थाय ते रीते पाळवां निहः सर्वनो विश्वास करतां अटकवुं तेम सर्वे उपर शंका पण न लाववीः विचारग्रस्त थइ दिवसो निर्गमन न करवा, कार्य करवाना समयने हुया व्यतीत न करवी, इन्द्रिओने आयीन थवुं निहः, चंचळ चित्तने विशेष चांचल्य युक्त न कर्त्वं, रोष अने आनंदने वश थवुं निह, शोकथी अलग रहेवं, कार्य सिद्ध थता हर्ष अने कार्य मिद्ध न यतां खेद न करवो; पंच गहा भृतात्मक प्रकृति अनित्य छे एम हमेशा मनथी मनन करवुं के जेथी राग द्वेप हृदयने पराभव पमाडवा समर्थ थइ शके निह; कारण प्रमाणे कार्य उत्पन्न धाय छे ए विचार द्रद करवी, ज्यांसुधी आरंभेळ कार्य फळदाता न वने त्यांसुधी कार्य करतां अटकवुं निहा कोइपण कार्य हं करी चुकयो एम विश्वास न राखता सिद्धि पर्यन्त कार्य क्रिया जारी राखवी; पराक्रयनो परित्याग कदिपण कर्यो नहि, अपवित्रपणे धेतुंनुं घृत, चोखा, तल, दर्भ अने सर्पवनो अग्निने विषे होम न करवो, पवित्रपणे होम करी रहा बाद नीचेनां वान्योधी पोताने आशीर्वचन आखं "मारा देहमा अगिन देव स्थिर यह रहो, वायु भाणायान करो, विष्यु भगवान पराक्रम अर्पो, इन्द्र वीर्य टिद्धि करो तेमज श्रेयस्कर मलिल देवना भारा देहमा दाखर याजो," आ त्रमाणे आज्ञीर्याक्तय उचारी रवा

वाद बेद मंत्रथी मार्जन कर्या पछी आचमन करी उभय करतलथी वे वखते ओष्टने साफ करवा. जप कर्या पछी पादनुं प्रोक्षण करी नेत्र आदि इन्द्रिओने तथा आत्माहृदय अने शिरने सिललना स्पर्शाथी संत्म करवां. पुत्र! आ ममाणे वर्तन कर्याथी दुनियामां मनुष्य धर्म, अर्थ, यश अने प्रतिष्ठाने पामे छे; माटे तारे सर्दृतन पूर्वक सर्व साथे सख्य भाव राख्यो अने पोतानी संतित पण तेवीज थवा माटे शुभ इच्छा राखवी, माता प्रति पुत्रोए केम वर्तवुं ए कहेवानी काइ जरुर नथी कारण के तुं धर्म इंग्रें

आट छुं कही पोतानी स्त्रीनी आज्ञा छई महात्मा मार्केडेय योग सायना करवा पटन थया.





षष्टम तरंग.

دو وا

वसन्त तिलकाः

हर्षे हिमालय महीं द्रढता ग्रहीने, शीतादि संकट शरीर थकी सहीने; साधेल योग मुनिवर्य मुकंड पुत्रे, स्नेहें सुणावुं अमरेश नरेश सूत्रे.

महात्मा मार्केडेय पृथ्वी परिक्रमण करता अनेक नदी, पर्वतो अने वनोने उल्लंघी हिमाल-यना उत्तर भागमां पहोंची पुष्पभद्रा नदीने किनारे चित्रा नापनी शिला समीप योगीओने अनु-कूळ न्हानुं द्वारवाळुं, जाळी, झरोंखा, गोख अने नीची उंची पृथ्वी विनानुं, उंदर आदिक प्राणी-नो भय दूर करनारुं चडवा उत्तरवामां श्रम न पडे अने दृष्टिनो लय तथा विक्षेप न थाय पृदुं सुंदर गायना छाणथी लीपेलुं निर्मळ मच्छर मरकुणादि जन्तुओधी रहित मंडपज्ञाळा अने वेदीवाळुं, जलाञ्चय तेमज दक्षावलि, पुष्पावलिथी युक्त आसपासना भागवाळुं, चारे तरफ भींतोवाळुं आ-श्रम बांच्युं.

उपर कहेल आश्रममां चिन्ता रहित थइ ज्ञाननी सात भ्रमिओ सुयी पहींचेल स्वात्माराम महात्मा मार्कडेय अति आहार, अतिश्रम, अति वोल्ज्बं, अति ज्ञीतळ जळथी प्रातः म्नान, रात्री भोजन अने अन्य मनुष्योना संगयी थती चांचल्यता ए छए योग प्रतिवंत्रक्रनो त्याग करी योगाभ्यास कर्या माटे योगनो उत्कर्ष करनार उत्माह, साहस, धैर्य, तत्त्वज्ञान, निश्चय अने जनसंगपित्याग ए छनुं सेवन करवा लाग्या.

आसन, कुंभक, मुद्राकरण अने नादनुं अनुसंधान ए योगना चार अंगोमायी प्रयन देह तथा पननो चंचळतारुप रजो गुण धर्मने दूर करी स्थिरता आपनार, रोगने दूर करनार, अंगमा-थी गाँरवरुप तमोगुण धर्मने अलग करनार तथा अंगने लघुना आपी जुधा नृपानी दृद्धिनो विनाश करनार आसन साधना करवा मांडी, देमां प्रथम:—

- १ जानु अने उरुना मध्यमां वन्ने पगनां तळीयां मूकी सरस्र देहथी वटक जमावी "स्वस्तिक" आसन सिद्ध कर्युः
- २ डावी तरफ केडनी नीचे जमणा पगतुं गुल्फ राखी अने जमणी वाजु केड नीचे डावा पगतुं गुरफ राखी वेसी गोमुखनी आकृतिवाळुं "गोमुखासन" सिद्ध कर्यु.
- ३ जमणो पग डावा उर उपर अने डावो पग जमणा उरु माथे मुकी "वीरासन" सिद्ध कर्यु.
- ८ वन्ने पगनी एडीओथी मूळ द्वारने दवावी सावधान स्थित थइ "कूर्मासन" सिद्ध कर्युं.
- ५ वने उरु उपर उभय चरण स्थापन करी वने हाथ जानु अने उरुनी वचेथी पृथ्वी पर मूकी उंचा थइ "कुकुटासन" सिद्ध कर्यु.
- ६ कुकुटासनमां कीथेल रीते स्थित थइ वे वाहुयी ग्रीवाने पकडी कूर्मनी पेठे उंची दृष्टि करी "उत्तान कूर्मासन" सिद्ध कर्युः
- 9 वन्ने हाथथी वन्ने पगना अंगुठा पक**दी एक हाथ अंगुठा सिहत छां**चो करी तेमज वीजो हाथ अंगुष्ठ सिहत कान सुधी खेंची "धनुरासन" सिद्ध कर्युः
- ८ डावा उरुना मृळमां जमणो पग राखी तेना गुरुफनी उपरना भागने वांसे वाळेळा डावा हाथथी पकडी जमणा पगना जानुनी वाहेर वीटायेळ डावा पगना अंगुठा, डावा पगना जानुनी वाहेर वींटायेळ जमणा हाथथी ग्रहण करी, अंगो सहित मुख डावी तरफ परिवर्तित करी "मत्स्येन्द्रासन" सिद्ध कर्ये.
- ९. पृथ्वीपर वन्ने पग लांवा करी तेना अंगुठा हाथथी पकडी, जानु उपर ललाट राखी "पश्चिमतानासन" सिद्ध कर्युं.
- १०. प्रसारेली आंगळीओ वाळा वेड करतल भूमि उपर मृकी तेमज कोणी उपर पार्श्व ठेरवी, लाकडीनी ऐंडे अधर थई "मयूरासन" सिद्ध कर्युः
- ११. मुहदानी माफक वने हाय तथा पग लांवा राखी पृथ्वीपर पीठ मुकी उंघेळानी पेठे सुइ रही " शवासन" सिद्ध कर्युः

१२. मूळद्वार अने उपस्थना मध्य भागने योनिस्थान कहे छे ते योनिस्थानने डावा पगनी एडीथी दवावी अने जमणा पगने उपस्थना उपला भाग उपर मूकी तेमज हदयना चार आंगळ उपर चित्रक राखी, ज्वज्ञटीना मध्य भागमां द्रिष्टिने अचल करी मोक्षना कमाडने उघाडनारुं " सिद्धासन " सिद्ध कर्युः

उपस्थिथी उपरना भागमां डावा पगनी जमणी छुंटी मूँकी तेना उपर जमणा पगनी छुंटी लगावी बीजी रीतनुं "सिद्धासन" सिद्ध कर्युः

- १३. डावा उरु उपर जमणो पग राखी अन जमणा उरु उपर हावो पग राखी पीठ पाछळ वाळेला जमणा हाथे डावा उरु उपर रहेला चरणना अंगुप्ठने तथा पीठ पाछळ वाळेल डावे हाथे जमणा उरु उपर रहेला पगना अंगुप्ठने पकडी दाढीने हृदय समीप राखी नासिकाना अग्र भाग उपर दृष्टि द्रढ करी "पद्मासन" सिद्ध कर्युं वन्ने उरु उपर वेउ पग चता राखी एडी माथे प्रथम डावो पठी जमणो ए उभय हाथ उपरा उपर सीधा मूकी, दृष्टिने नासिकाना अग्रभाग उपर स्थिर करी, वेउ तरफनी दाढीना मूळमां जिह्वानुं उर्ध्व स्तंभन करी वक्षः स्थलमां चार आंगळने अंतरे दाढी राखी धीरे धीरे श्वास लड़ वीजी रीतनुं "पद्मासन" सिद्ध कर्युं.
- १४. वृपणनी नीचे सीवनीना जमणा भागमा डावा पगनी एडी स्थापन करी, जातु उपर वन्ने हाथ उंघा राखी आंगळीओ फेळावी, मुख फाडी, जीभ वाहेर काढी एकाग्रचित्ते नासिकाना अग्रभागपर द्रष्टि ठेरावी "सिंहासन" सिद्ध कर्युः
- १५. दृषणनी नीचे सीवनीना डावा भागमां डावा पगनी एडी अने जनणा भागमां जमणा पगनी एडी राखी पार्च समीप आवेळा पगोने वेज अजाओंथी नांबी ळाइ '' भद्रासन " सिद्ध कर्युं.

उपर प्रमाणे आसनो सिद्ध कर्या पर्छा योगी, जीतेन्द्रिय अने पथ्य तथा पित आहार करनार मुनि मार्कडेय पोते अनरामर छता "वायु चलायमान होय तो चित्त पण चलित याय छे अने वायु निश्चल रहेथी चित्त पण निश्चल रहे छे. वायुनो निरोध करनार योगी म्थाणुत्यने पामे छे; ज्यां सुधी देहमां वायु स्थित होय त्यां सुधीज जीवन छे अने वायु नीकर्ळा गया वाद मृत्यु थाय छे माटे यत्नधी वायुनो निरोध करवो" ए शिवना वचनोने शिरे स्थापी नेपोध बन्ता तावेल मार्ग मुजय प्राणायाम अभ्यास करवा तत्यर थया.

महात्मा मार्कडेय सारी रीते समजता हता जे मळथी व्याक्तळ नाडीओमां वायु विचळन न थवाथी तुर्योवस्थामा सुख प्राप्त थतुं नथी अने मोत रुपी कार्य सिद्धि पण थर्ना नथी; ज्यारे म-ळथी आक्तळ सर्व नाडी चक्रशुद्धि पामे छे त्यारेज योगी प्राणायाम करवा समर्थ थड शके छे. जेथी पोते पण सात्विक बुद्धिथी प्राणायाम करवा छाग्या.

गातःकाळे, मध्यान्हे, सायंकाळ अने अर्धरान ए चारे समयमां गथम पद्मासन वांबी चन्द्रयी पूरक करी यथाशक्ति कुंमक करी सूर्यथी रेचक करवा लागा. (सूर्य नाडी-दिगला द्वारा-ए घणा यत्नथी वहारना वायुने उपर ग्रहण करवो तेने पूरक कहे छे, जालंबरादिक वंबपूर्वक वा-युने रोकवो तेने कुंमक कहे छे अने धारण करेल वायुने यत्न पूर्वक बीरे धीरे छोडवो तेने रेचक कहे छे.)

सूर्यनाडीथी प्राणने खेंची मंद मंद उदरमां पूरी फरी विविवत् वंथपूर्वक कुंभक करी चन्द्र नाडीथी रेचक करवा लाग्या.

जे चन्द्रथी अथव। सूर्यथी रेचक करता हता तथीज पूरक करना छाग्या फरी जेथी पूरक कर्यों होय तथी अन्य नाडी वडे घीरे घीरे रेचक करवा छाग्या कारण के उतावळे रेचक करवाथी वळनी हानि थाय छे. अने जेथी पूरक करेछ तथी रेचक करवुं अयोग्य तेगज जेथी रेचक कर्युं होय तेथी पूरक करवुं योग्य छे एम पोते सारी रीते समजता हता.

इडाथी माणने पूरी फरी कुंभक करेल माण पिंगलाथी रेचक करवा लाग्या; तथा पिंग-लाधी पूरक करी यथाविधि कुंभक कर्या पछो इडाथो रेचक करवा लाग्या.

आदिमां प्रस्वेद युक्त वेतालीश विपल कुंभकराळुं किन्छ प्राणायाम करीने कंपयुक्त चोराशी विपल कुंभकवाळुं मध्यम प्राणायाम सिद्ध कर्यु अने छेनटे ब्रह्मरन्ध्रनी प्राप्ति पर्यन्त एकमो पचीश विपल कुंभकवाळुं उत्तम प्राणायाम करवा लाग्याः ए रीते प्राणने ब्रह्मरन्ध्रमां पचीश पल पर्यन्त स्थिर करी प्रत्याहार, पांच घडि स्थिर करी धारणा, छ घडि स्थिर करी ध्यान अने वार दिवस पर्यत स्थिर करी समानि करवा लाग्याः

महात्मा मार्कडेयतुं मन स्थिर हतुं तोषण पोते आसन अने विधिवत् प्राणायामे करी नाडी चक्र शुद्ध थवाथी सुषुम्ता नाडीनो अंदर सुखरूप प्राणवायुने स्थापी गननी अविक स्थिरता मेळवी मनोन्मनी अवस्थानी अविक सिद्धिने अर्थे सूर्य भेदन आदि आठ प्रकारना क्रंभकर्तं अनुष्ठान करवा तत्पर थया.

पूरकनी अंते कंठना आकुंचन पूर्वक चित्रकने हृदय उपर स्थापना रूप जालंधर वंग करी कुंभक अने रेचकनी अंते यत्नथी नाभि पाछळ खंबना रूप उड्डीयान वंध करवा लाग्या.

मूळ द्वारना संकोचरुप मूलवंग, कंठसंकोचनरुप जालंगर वंग अने नाभिने पृष्ठ भागे खेंचवारुप उड़ीयान वंघ ए त्रण वंघ सिद्ध करी पाणवायुने ब्रह्मनाडी पत्ये पहेंचा-डवा लाग्याः

अपान वायुने उपर खेंची कंटने संकोची वायुने कंटथी नीचे स्थापी योगीराज मार्कडेय सोळ वर्षना युवान माफक स्रोभवा काग्या.

- १. प्रथम सिद्धासन वांथी दक्षिण नाडीथी वाहर रहेला वायुने धीरे धीरे खेंची (पुरक करी), केशथी मांडी नखाग्र पर्यन्त अति प्रयत्नथी यथाविधि तेनो निरोध करी वाम नाडीथी थीरे धीरे रेचक करी "सूर्य भेदन" नामनो कुंभक सिद्ध कर्यो.
- २. मुख वंध करी कंडथी हृदय पर्यंत शब्दायमान वायुने धीरे धीर खेची इडाथी रेचक करी "डजायी" नामनो कुंभक सिद्ध कर्योः
- ३. वन्ने होटना मध्यमां जिह्या राखी सीत्कार पूर्वक मुख्यी माणगायु पूरी कुंभक करी मुख खोल्या विना वेड नासापुटथी वारंवार विजृंभिका रेचक करी, कामदेव समान कान्ति आपनार तेमज क्षुया, तृपा, निद्रा, अने आलस्यनो नाश करनार "सीत्कारी" नामनो कुंभक सिद्ध कर्यों
- ४ पक्षीनी नोचली चंचु पेठे जीभने मुखधी वाहर काढी तेनाथी वायुने राँची सूर्य भेदन प्रमाणे कुंभक करी वेउ घाण रन्ययी धीमे बीमे रेचक करी "शीनली" नाननो कुंभक सिद्ध कर्यो.
- ५. वन्ने उरु उपर वेउ पगनां तळीयां राखी पद्मामन वार्या ग्रीवा अने उद्दरने मणन राखी मुख वंध करी एटन पूर्वक नामिकाना एक रन्त्रधी कपाळ पर्यन्त हृदय अने कंडमां शन्दायमान वायुनुं रेचन करी फरी हृदय कमळ पर्यन वायुने पृरी पाठो रेचक वरी पाठो पूरी एम वारंवार छुहारनी अमण पेठे पोताना वर्गारमां रहेळ प्राणवायुने चलावी देहमां अम जणातां सूर्य नाडीधी वायुने उद्दर पूर्ति पर्यन पृरी अंगुष्ट्रधी दिल्ण नासारन्त्र तथा अनामिका अने कनिष्टिकायी वायन्त्र इट द्यावी विश्वित्र

-19 Cz

कुंभक करी चन्द्र नाडीथी रेचक करी सुषुम्ना नाडीमां उत्पन्न थयेल ब्रह्म, विष्णु अने रुद्र नामक प्रन्थिनो भेद करनार " भिल्लका " नामनो कुंभक सिद्ध कर्यों.

- ६. भ्रमरनाद समान शब्दायमान वेगथी पूरक करी तेमज भ्रमरीना नाद समान शब्दा-यमान मंद मंद रेचक करी "भ्रामरी" नामनो कुंभक सिद्ध कर्यो.
- ७. पूरकनी अंते अति गाढ जालंघर नामनो वंघ वांघी धीमे वीमे रेचक करी, मनने मुर्छित करनार सुखदायक " मुर्छी" नामनो कुंभक सिद्ध कर्यो.
- ८. शरीरनी अंदर अतिशय वायु भरी पोताना आश्रम नजीक रहेळा अगाय जला-शयमां पद्म पत्रनी पेठे तरी " ग्लाविनी " नामनो कुंभक सिद्ध कर्यो.

आ रीतें अष्ट कुंभक सिद्ध कर्या पछी महात्मा मार्कडेय मुद्रा करण विधिमां तत्पर थया.

प्रथम वाम पादथी मूळद्वार अने शिल्तुनो मध्य भाग जे योनि स्थान तेने दवाबी जमणो
पग लावो करी पृथ्वीपर एडो लगावी दंड माफक हाथनी आंगळीओ उंची करी अंगुष्ट अने
तर्जनीथी जमणा पगनो अंगुष्ट पकडी, जालंबर वंध वांधी वायुने ब्रह्म नाडीमां थारण करी, इडा
पिंगलामां प्राण वायुना अभावथी मरणावस्था अनुभवी पछीथी धीमे धीमे रेचक करी
" महा मुद्रा " सिद्ध करी.

हावा पगनी एडी योनिस्थानमां लगावी हावा पगना उरु उपर जमणो पग राखो वायुने पूरी हृदयमां चित्रक लगावी मूल वंव करी मनने ब्रांसनाडीमां प्रयुत्त करी यथाशक्ति कुंभक कर्या वाद वायुने धीमे धीमे रेचक करी वामांगमां करेल पूरक रेचकनी संख्या मुजव दक्षिणांगमां पूरक रेचक करी "महावंव" नामनी मुद्रा सिद्ध करी.

महावंध मुद्रामा स्थित योगीराज मार्कडेये एकाग्र मनथी पूरक करी जाळंधर वंधथी वायुनी गतिने रोकी, वने हाथ पृथ्वीपर सरखा राखी, बीमेबी कटि पश्चात् भागने पृथ्वी साथे अवडावी, प्राणवायुने चन्द्र सूर्य नाडीना अतिक्रमणयी ब्रह्मनाडीमा पहें।चोडी मृतक अवस्था अनुभवी वायुनुं धीरे धीरे रेचन करी विद्धि आपनार "महावेद " नामनी मुद्रा विद्ध करी.

थोरना पत्रनी तुल्प अति तीक्षण, चीकणुं अने निर्मळ शस्त्र लड्ड निह्या नीचेनी नसने रोम मात्र छेदी तेना उपर खेर अने हरडेनुं चूर्ण सात्र सवार सात दिवस छांटवुं अने आउमे दिवस अनिक छेदी पाछुं सात दिवस उपर कहेळ चूर्ण छांटवुं, वळी आउमे दिवस अधिक छेद करवो, पाछुं सात दिवस चूर्ण छांटवुं एम छ मास पर्यत करवाथी कपाल छिद्रे पहोचता जीयने अवरोध करनार स्नाउनो नाग करवो ते छेदन, हायना अंगुष्ठ अने तर्जनीथी जीयने हलावी छांवी करवी ते चालन, अने हायना अंगुष्ठा अने तर्जनीयी जीयने गायना आंचळनी पैठें खेंची खंची अकुटीना मध्य पर्यन्त पहोंचाडवी ते दोहन ए , त्रण अंगमांथी महात्मा मार्कडेथे चालन रीतिए जिह्नाने लांवी करी कपाल छिद्रमां विपरीत राखी अकुटीना मध्य भागमां दृष्टि स्थिर करी ' खेचरी " मुद्रा सिद्ध करी.

तालुना मूळमां रहेल दिव्य रूप चन्द्रमा कांइक अमृत स्रवे छे ते अमृतने नाभिमां रहेल अग्निरुप सूर्य शोपी जाय छे ते अमृतनुं शोपण न थाय एटला माटे नाभिने उर्ध्व भागमां रासी अने तालुने नीचला भागमां स्थापी " विपरीत करणी" मुद्रा सिद्ध करी.

सिचक्रण, गुद्यांगपां पेसी शके एवी चाँद आंगळनी सीसानी शळी छह ते गुग्रांगमां नाखवानो अभ्यास करवा लाग्या. पहेले दिवसे एक आंगळ, बीजे दिवसे वे आंगळ अने त्रीजे दिवसे त्रण आंगळ ए रीते बार दिवस बार आंगळ सलाक अंदर नांखी तेनी शुद्धि करी बाहेर रहेला ते सलाकानी आगळना बांका अने उंचा वे आंगळना भागमां सोनीनी अग्नि धमवानी नाळ माफक बीजी नळी चढाबी पोते फुंक मारी अंदरनो भाग तहन शुद्ध कर्या पछी जळने उपर खेंचवानो प्रयोग करी " बज्रोली" मुद्रा सिद्ध करी.

जेम कुंचीथी कपाट उघाडी शकाय छे; तेम योगी छोको कुंडिलिनीथी मोसनुं द्वार उघाडी शके छे, जे पार्मथी निरामय ब्रह्म स्थाने जवाय छे ते मार्गने परमेश्वरी छुंडिलिनी संदना उद्ये भागमां श्रपन करी ढांकी रही छे, सर्पनी पढे कुटिल आकारवाळी कुंडिलिनी शक्तिने चलायमान करवायी तंशय बिना पूर्ण योगी थइ शकाय छे, गंगा यमुना रूप इडा पिंगलानी मध्ये तपिंदिनी पालरंडा रूप छुंडिलिनी रही छे तेने वळात्कारथी रामेडी आन्तपद मेळवाय छे, एम जाणी महात्मा मार्कटिये सुतेली सापण जेवी ते कुंडिलिनीने हठवी जगाडी, मृळदारने आयोग रहेली छुंडिलिनी निद्रा तजी उंची उठी अवस्थित थइ, तेने बानःकाळ, मध्याह, मायंकाळ अने अर्थ गत्र ए चारे समय सूर्यथी पृरी परिचान युक्तियी प्रहण करी निरंतर चलिन करवा लाग्या, प्रथम बजा सन करी पन्ने हायथी पने पनने गुल्फ बदेवथी दह ग्रहण करी वर्ष का आप पन्ने मृळदारना मध्य भागमा रहेल, तेनुं स्थान महत्याना देहमां नव आगळ जेटलुं चार आगळ पही छुं अने प्रशीना

इंडां माफक कोमळ अने श्वेत होय छे) ने पीडी त्यार वाद भिक्षका करी सूर्य नाडीने संकोची वे मुहूर्त पर्यंत कुंडलिनीने चलायमान करी उंचे खेंची सुष्टम्नातुं मुख खुल्छुं थवाथी ते द्वाराए पाणवायुने तेमां स्थापी " कुंडलिनी " मुद्रा सिद्ध करी.

अन्दर आयार चक्रथी मांडी ब्रह्मरन्व्य पर्यन्त जे चक्रो तेमां पोताना अभिमत चक्रमां रहेल कक्ष्य (ब्रह्म)मां अन्तःकरणनी दृत्ति स्थापी तथा वहार देखाती द्रष्टिने निमिषान्मेष करी "शांभवी" मुद्रा सिद्ध करी.

द्रिष्टिने नासिकाना अग्र भाग उपर स्थिर कर्याथी प्रकाश उत्पन्न थाय छे. ते तेजमां द्रिष्टिने निश्चल करी, भ्रक्जटीओ कांइक उंची चढावी पूर्वे कहेल अन्तर्लक्ष्य, अने वहिर्द्रिष्टि पूर्विक " उन्मनी " मुद्रा सिद्ध करी.

महात्मा मार्कंडेय विधिवत् मुद्राओं करीने संकल्प मात्रथी प्रकृतिने दूर करी देहने परमाणु तुल्प वनाववानी "अणिमा" सिद्धि, प्रकृतिने पोतामां धारण करी आकाशादिकनी पेठे स्थूल अने महान थवानी "महिमा" सिद्धि, वहु हलका तुल आदि पदार्थोंने पर्वतादि समान गुरुता आपनारी "गरिमा" सिद्धि, पर्वतआदि गुरुतावाळाओंने तुल समान लघु वनाववानी "लिवा" सिद्धि; उभां थतां अंगुलीना अग्रभागथी चन्द्रनो स्पर्श करावनारी तेमज सर्व पदार्थ सिन्धि करनारी "प्राप्ति" सिद्धि; पाणीमां ड्वी पाछुं नीकळ्युं तेमज पृथ्मीपर द्रज्य अहज्य थवानी "प्राक्तम्य" सिद्धि; भूत भौतिकना जन्म मरणनी रचना करवामां समर्थ थवानी "इश्चता" सिद्धि अने नमाम स्थावर जंगमने पोताने आर्थान करनानी "विश्वत्व" सिद्धि पाम्या.

सिद्धासनमां स्थित थयेला योगीरान मार्कडेय एकाग्र चित्तथी शांभिनी मुद्रा करी टक्षिण कर्णद्वाराए सुषुम्ना नाडीमां थतो नाद अवण करवा लाग्याः

अंगुष्ठो तथा आंगळीओथी वे कर्ण, वे नेत्र, नासिका अने मुखने वंव करी प्राणायामने प्रयोगे सुषुम्नाना मार्गमां प्रगट थतो निर्मळ नाद सांभळ्यो।

आरंभावस्थामां ब्रह्म ग्रन्थितुं भेदन करी आनंदने आपनार, हृदयाकाशमा उत्पन्न थएल अनेक जातना आभूषणना शब्द समान अनाहत व्यनि श्रवण कर्यो.

वटावस्थामां प्राण वायु अने नादने एकत्र करी कंट स्थानीय मन्य चक्रमां स्थित थइ द्रढ आसन जमावी लावण्यताथी देव समान दीपवा लाग्या. एज अवस्थामां ब्रह्म ग्रन्थिना भेदन पछी कंटस्थ विष्णु ग्रन्थिनुं कुंभकथी भेदन करी ब्रह्मानंदनुं थान करावनार भेरी समान नाद श्रवण वर्षी.

परिचयावस्थामां भ्रजुटीनी मध्यना आक्षाश्चमां प्राणवायुने पहोंचाडी बाब समान नाद सांभळवा लाग्या.

छेवटे योगीराज मार्कडेय आज्ञा चक्रमां रहेल रुद्र ग्रन्थिनो भेद करी शिवजीतुं स्थान जे भ्रक्जटीनो मध्य भाग (ब्रह्मरन्ध्र) तेमां माणवायुने पहोंचाडी निष्यत्ति अवस्थामां नांसळी अने वीणा समान नाद अवण करवा लाग्या.





सप्तम तरंग.

eallow

शार्द्रल विक्रीडित.

ज्यांसूधी शुभ योग साधन कर्यु, ज्ञानी मृकंडात्मजे, त्यां सूधी मनुओ थया पट् महा, तेओनुं माहात्म्य जे; व्हालें वाल्मिकि आदिए अवनवुं, शास्त्रो विषे वर्णव्युं, संक्षेपे अमरेश ! ए सकल हुं, आनंद धारी कवुं.

पहेला स्वायंभ्रव मन्वंतरमां ब्रह्माथी भृगु आदि नव मानस पुत्रो उत्पन्न थया तेमां भृगुथी विवाता तेथी मृकंट अने तेथी मार्कडेय आदिनी उत्पत्ति थइ. भृगुना वीजा पुत्र धानाने पाण नाभे पुत्र थयो ते प्राणनो पुत्र द्यतिमान अने तेनो अजरा तेना पुत्र प्रपीत्र मळीने पुष्कळ विस्तार थयो मरीचिनी स्त्री संभ्रतिने पौर्णमास नामे पुत्र थयो, ते महात्माने विरंजा अने पर्वत एवा वे पुत्र थया; अंगिरानी स्त्री समृतिने सीनीवाली, कुह्र, राका अने अनुमित ए कन्याओ थइ; अतिथी अनस्याने सोम, दुर्वासा अने दत्तात्रेय योगी ए त्रण पुत्रो थया पुलस्त्यनी स्त्री प्रीतिने एक वीजो दत्त नामे पुत्र धयो ते स्वायंग्रव मन्वंतरमां पूर्व जन्मे अगस्त्य कहेवातो हतो क्जापति पुलहनी स्त्री क्षमाने कर्दम, अर्ववीर अने सहिष्णु नामे त्रण पुत्रो थया कृतु थकी सन्नतिने विज्ञो उर्ध्व रेता साट हजार वालखिल्य नामे ऋषि पुत्रो जनम्या; विश्विनी स्त्री उर्जाने रज, गात्र, उर्ध्ववाह, सवल, अन्य, सुत्रपा अने शुक्क नामे सात पुत्रो थया; ते सर्वे सप्तर्षिओ कहेवाय छे.

स्वायंभुव मनुने पोताना समान दश पुत्र हता. जेमणे आ सप्तद्दीप, पर्वन, समुद्र तथा आफरवाळी वशी पृथ्वी प्रति वर्षे व्याप्त करी तेमज स्वायंभुव मन्वंतरमां तथा त्रेतायुगना आरंभमां स्वायंभुवना पोत्र अने वियवतना पौत्रोष तमाम वसुंबरा व्याप्त करी हती.

िष्यवत्थी प्रजावतीने विषे बन्या उत्तव्य थर्, ते कन्या प्रजापित कर्दम ऋषिने आषी. वियवत राजाने दश पुत्र अने वे कन्याओ थर्, ते प्रियवतना दशे पुत्रो प्रजापित सरखा हता. तेओनां नाम आप्तिम्न, मेथातिथी, वपु मान, ज्योतिष्मान, द्युतिमान, भव्य, सप्तन, मेथा, अप्ति अने वाहुमित्र तेमां छेडा त्रण महा भाग्यशाळी अने योगपरायण हता. तेओए राज्य करवामां मन लगाड्युं नहि, पियत्रत राजाए प्रथमना सात पुत्रोने सात द्वीपना राजानो अभिवेक कर्या.

आग्निधने जंबुद्दीपनो, मेधातिथीने प्रश्नद्दीपनो, वपुष्मानने शाल्मलिद्दीपनो, ज्योतिष्मानने क्रशद्दीपनो, द्युतिमानने क्रांच द्दीपनो, भन्यने शाक द्वीपनो अने सवनने पुष्कर द्वीपनो अधिपति वनान्यो.

सवनने महावीत अने धातकी नामे वे पुत्र थया तेमने पुष्कर द्वीपना वे विभाग करी तेना पिताए वहेंची आप्या. भव्यने जलद, कुमार, सुकुमार, मनवीक, कुशोत्तर, मेयावी अने महाद्वुम नामे सात पुत्रो हता. तेमना पिताए ज्ञाक द्वीपने सात भागे वहेंची ते ते खंडनां नामो पुत्रने नामे राख्यां.

द्युतिमानना क्रशल, मनुग, उज्ज, प्राकार, अर्थकारक, मुनि, दुन्दुभि नामे सात पुत्रो हता, तेओना पिताए क्रींच द्वीपने सात भागे वहेंची पुत्रने नामे खंडोनां नाम पाड्यां.

ज्योतिष्यानने उद्भिद, वैजव, सुरथ, लंबन, धृतिमन्, प्राकार अने क पिल नामे सानपुत्रा थयाः तेओने कुज्ञ द्वीप सात भागे वहेंची आपी तेओने नामे खंडीना नाम राष्ट्राः

वपुष्पानने श्वेत, इरित, जीमूत, रोहिन, विद्युत्, मानस अने केतुमान नाम सात पुत्री थया, तेओने जाल्मिळ द्वीप सात भागे वहेंची आभी ते खंडोना नाम तेओने नामे राख्यां.

मेनातियीने ज्ञाक, जिशिर, सुग्वोदय, आनंद, शिव, क्षेप अने श्रुप नामे सात पुत्री यया तेओने एस द्वीप सात भागे वहेंची आपी तेओने नामे खंडोना नाम पाड्यां.

प्रत द्वीपथी आरंभी ज्ञाक द्वीपना अंत सुनी पांच द्वीनोमां सर्व सामान्य अस्सिक विनि-जोधी वृद्धि पांमल नित्य अने स्यामाविक वर्णाश्रमना निभागनी वर्म वर्तनो.

आग्नियने तेना पिताए जंगुद्दीप आप्यो हतो तेने प्रजापित सम्मा नन पुत्रो यया. तेमा सर्वयी महोद्वातुं नाम, नाभि, नीजो सिपुरु ।, त्रीजो हिवर्ष १, चोथो इन्हारु , पाचमो वहप् , छहो हिरण्य, सातमो क्ररु, आठमो भहास्व अने ननमो केनुमाल हतो. ते नमेने जंगुद्दीप नन मागे वहंची आपी तेओना नानभी संहोना नान राष्ट्र । दिनतंड मिना वीजा किंगुर गदि गंदमां

m-PR-mm

सुलिसिद्धि विना यत्ने पाप्त थती हती, त्यां कोड वातनो विपर्यय न हतो, जरा अने मृत्युनो भय नहोतो, ते खंडोमां धर्म, अधर्म, उत्तम, मध्यम अने अध्यम एवो भेड पण न हतो; चार युगनी जुदी जुदी स्थितिओ, नातु सर्वधी फेरफार के ऋतुओ पण न हती.

आग्नियना पुत्र नाभिने ऋपभ नामे पुत्र थयो, ऋवभने सो पुत्र थया तेमां सहुयी श्रेष्ट अने पराक्रमी भरत हतो, ऋषभे भरतने राज्याभिषेक करी पोते पुळहाअममां जइ तप कर्युं, दक्षिणनो हिम नामनो खंड ऋषभे भरतने आप्यो तेथी तेनुं "मरतखंड" नाम पड्युं, भरतने सुमित नामे महाधार्षिक पुत्र थयों, तेने राज आपी भरत पण वनमां चाल्या गया. तेमना पुत्र अने पौत्रोए तथा नियवतना पुत्रोए सात द्वीपवाळी पृथिवी स्वायं ध्रव मन्वंतरमां भोगवीं.

वरुणा नदीना किनारापर आवेला अरुणास्पद नामे नगरमां कोइ एक वित्र वसतो हतो, ए ते रुपमां अश्विनी कुमारथी चडतो हतो, स्त्रभावे कोमळ, उत्तम आचरणवाळो, वेद अने/ वेदना अंगोने पूर्णरीते जाणनारो, आश्रितने आश्रय अपनारो तथा अतिथिनो प्रेम पूर्वक आदरा सत्कार करतो हतो; अतिशय रमणीय वन अने उपवनवाळी नाना गकारनां नगरोथी सुशोभितं पृथ्वी जोवानी तेना पनमां इच्छा थइ; एक समये तेने घेर नाना प्रकारनो औष्यिना प्रभावने **पिछाणनार मंत्र विद्यामां कुराळ को**इ अतिथि आवी चढयो विषे तेतुं शद्धा पूर्वेक पसन्नचित्ते आतिथ्य करी पृथ्वी उपाना देशो। रमणीय नगरो, न्यापानी ओ अने पित्र स्थळो संमळात्रमा प्रार्थना करी, अविथिए सर्व अथ इति कही संभळी ए त्रण पुरु विस्मय पामी अतिथिने कहां के द्विजराज! तमे घणा देश जोयाछे छतां अपित जणाता नथी; एटलो बबो काळ व्यतीत थया छतां तपारामां रुद्धन्य वरतातुं नथी; तमारी युवावस्था वीती हि होय एम पण अवलोकातुं नथी. तमो स्वत्य समयमा पृथ्वीमां शी रीते फरी नळ्या? अतिथिए कहां के निप्र! मंत्र अने औपिनना मयोगथी मारी गति निर्विदन छे, हुं अर्भ दिवसमा एक हजार योजन गमन करी शकुं छु. बालण ते बुद्धिशाळी अतिथिनां दचनो उपर शुद्धा लावी आदरपूर्वक फरी पुलवा लाग्यो के ब्रह्मन्! मने आ पृथ्वी जोवानी अति अभिलापा छे. माटे आपना मंत्र प्रभावनी इसादी आपवा ऋपा करो। उदार बुद्धिवाळा अतिथिए ते बाह्मणने पो चोपडवानो छेप अप्यो तथा पोते कहेली दिशाओनं यत्नथी अभिमंत्रण कर्युः

ब्रासणे अतिबिञ्जे आपेळ छेपने पमे लमाबी नाना प्रकारना अरणाओथी वुक्त िन्वान

पर्वत जोवा प्रथम प्रयाण कर्युं, ते विवे विचार कर्यों के हुं अर्घ दिवसमां हजार योजन जङ्श अने अर्घ दिवसमां पाछो घर पहोंचीरा, हवे ते थाक्या विना हिमाल गना पृष्ट उगर पहांच्या अने ते पर्वतनी पृथ्वी उपर विचरण करवा लाग्वा; तेना पन तळे द्वाएल वरक ओनळ्यो अने तेथी पने लगावेलो परमौपिवनो लेप घोषाइ गयो, विपनी गति शिविक धर गर् अने अंहीतंश फरतो फरतो हिपालयनां अति सुंदर शिखरो जे,वा लाग्यो, केटलांएक शिखरो उपर सिद्ध अने गन्यवां, केट-छाएक उपर किन्नरो केटलाएक उपर देवादिकनां कीडा अने विहार करवानां रमगीय स्थ हो अने केटलांएक शिखरो उपर चारे तरफ भगता सुरनी अप्तराओना सेंकडो समुदाय जोइ विषनां रोम खडां थइ गयां. ए सर्व जोड़ विषनां अंतरमां तृति थइ नहीं. कोइ कोड ठे हाले झरणमांवी पडता जळना धोवनाओधी अन्तःकरणने आनंद आपनारा, बीजी तरफवी मयुरोना रमणीय स्वयी श-ब्दायमान, कोइ देकाणे कर्णनुं आकर्षण करनार महा मनोहर यारस तथा कोकि ठाना मनुर आ-लापर्था युक्त, सुमनथी सुज्ञोभित, दुर्जाना सुबासथी वासित थएल वायु वह विनोद दायक पर्वतराज हिमालयने विवे विलोक्यो. बाकीनो भाग हवे काले जोइग्रं एन वार्श गर नरफ जना तेणे निचार कर्या पण तेना पगना तळियाने। लेप घोवार् जवायी जड वनी गयेल पग वर्णा गरे उनडवा लाग्या जेथी पोते विचार कर्ये। के अरे में आ अज्ञानथी ह्युं कर्युं ? मारा पगनो लेग तो वस्फना पाणीथी 'प्रोवाइ गयो, हवे आ पर्वत महा दुर्गम छे, हुं घेरथी घंगे दूर नीक्ष्णी आव्यो छुं, हमे हुं अग्नि सेपन आदि कर्ष केवी रीते करी शकीश ? हुं कियाथी अष्ट थइस, आती महान संकृष्ट आबी पटतुं. आ पर्वतनी रमणीयता अने सोंदर्य ज्ञात वर्ष पर्यन्त जीया करं तीयण गुलि याय तेम नथी. अहा तो क्लेन्द्रियने स्वाधीन करनार किल्रोना मबुर स्वमे चारे तरफयो मंचळाय छे, बक्दिन पूर्योधी छवाइ गएलां वृक्षोनो छगन्य बाण इन्द्रियनुं आफ्रीण करे छे, वायु शरीरनो मार्ग फरी गुरा उलक करे छे, रसभरित फको रतना इन्द्रियने छळवानी रवां हे, सुरोनित सरोनरे मननं नहा-त्कारे हरण करे छे, आ बलने को (तपस्त्री मने मर्जी जाय तो मने बेर जातानो रस्तो बनाने एन विचार करती करती ते विष हिमालयमां आपवी तेन अध्न काचा छा। हो। परे लाविल औषितुं वळ नाश पानवायी ते बहु स्थाकुळ वनी गयो, नेव मा सोद्यक कुळवनी मुझ स्वत्याळी वर्धिनी नामे उत्तन अप्सराए ने नियने भवतो भाष्ट्रिन, तेने जोतांत्र ए अपनगना अन्तःसम्पना प्रेम प्रगटयो, तेवुं हृदय कामातुर दनी गयुं, वरियती विचार करवा लागि के प्रदेश पार्ति । पनोहर आहितिवाळी पुरुष कीण हवे े जो ए यागे शिम्हण न कप्ता स्तेहरी, स्वीकार करे

तो खरेखर मारो जन्त सफळ थाय; वाह! केवुं एना रुपतुं माधुप छे ने केवी सुंदर चाल छे! केवुं द्रष्टितुं गांभीर्य छे! में अनेक देव, दैत्य, सिद्ध अने गन्वर्वी जोया छे पण आ प्रभामय पुरुपना रुपनी समानता कोइपण करी शके तेत्र नथी। जेनी एना उत्तर मारी प्रीति थइ छे, तेनीन एनी पीति मारा उपर थाय तो पछी हुं जेवी भाग्यशाळी कोण? जो आ महात्मा पोताना स्नेह-भरी द्रिष्टि एक वालन मारा उपर नांखे तो पछी हुं जेवी पुण्यज्ञाळी नमदा एके नयी एम मानु आ रीते विचार करती अत्रंत मनोरम आहृतिवाळी कामपीडित देवांगना वहियनी ते विवनी द्रष्टि आगळ जइ उभी रही। पोतानी आगळ आबी उभेली रुपवती वरुथिनीने विजेकी मर्यादा पूर्वक वित्र तेनी पासे जइ कहेगा लाग्यों के! अरे कर्लीना गर्भ समान सुकीमळ कान्ता! तं कोण अने कोनी स्त्री छे? आंही शा माटे आवी अभी रही? हुं अरुणाहाद नाने नगरथी आही आव्यों छुं, ज्ञाते ब्राह्मण छुं, हुं जेना प्रभावथी आटले सुवी आव्यों ते मारा पणनो लेव वरफना पाणीयी घोवाइ गयो छे. आ सामळी वरुधिनी बोली के-हुं उत्तम क्रळमा उत्पन्न थएली वरुधिनी नामे देवांगना छुं, अने आ रमगीय नगराजवां निरंतर अटन करुं छुं. तमने जोवाथी पारुं हृदय कामातुर वनी गयुं छे तो छ।। करी मंत्र योग्य आज्ञा फरमावोः हमणा हुं तमारे आतीन छुं। वित्र बोल्यों के बरागि! हुं मारे घर जर शकुं एवी मने जगय बनान. नीई तो पारां तपाप कर्वीने नाश थशा ब्राह्मयने नित्य अने नैमित्तिक कर्पनी हानि ए सर्व करतां महान् हानि छे. साटे मोदमन्दािकनि ! आ हिमगिरिमांथी मारो छूटको करः ब्राह्मणे कोइ काळे प्रवास करवी योग्य नथीः मारा मनने पृथ्वी जीवातुं कुतूहरू उपज्युं ए बहु भुंडुं बयुं; निरतर घेर निवास करवायी श्रेष्ट बन्ह्मणने नित्य अने नैमित्तिक तनाम कर्वीनी पाष्ति याय छे, पण प्रवासीने ते। हानिज थान छे, वहु कहेवाथी ह्यं फळ? गमे तेम करी सूर्यास्त थतां पहेलां हुं मारे धेर पहेा खुं एवा मार्ग वतावता छपा कर. विषना वचनो श्राण करी वहिंथनी बोली के-महात्मन्! एवं हवे पर्जा आप बोलको निहः मने मूकी तमो बेर चाल्या जाओ एवो दिवस जोवा हुं कदिवण इन्छनी नथी; दिनराज! अपने स्प्रांन्छोक एटलो वयो आनंददायक नथी; एटला माटेन अभे सुरलोक तजी अहीं आनीने निवास करीए छीए, हदय-वरुठभ! आ मतोहर हिमगिरिमां मारी साथे रमण करी, तपारा वां ख आदिनुं स्मरण छोडी दिओ; कापने कीचे हुं तमारे बग्न थइ छुं; हुं तमोने हर, बह्माळंकार, भक्ष, भोज्य अने चंदनादि अनुलेपन तमाम आपीता. मनने मोदमद बीणा तेमन वेणुना शब्दयुक्त किनरोनुं गायन, अंगोने अहादकारक पायु, उपम अन्न, निर्मळ नीर, यथेच्छ शय्या अने मुगन्यि लेप विगरे सर्वे आपनी आज्ञा मुजव हाजर करोगः; तपारे घेर एथी शुं अतिक छे! अई। नित्रास करवाथी तमने कोइ काळे वृद्धत्व प्राप्त ध्यानुं नयी. आयौवन वळ आपनारी देवभूमि छे. इत्यादि वचनो उचारती अनुरागवाळी उत्कंठिता कमछनपनी वरुधिनी उपर ममन थाओं " एव वारंगार मद्वर वाम्यो उवारती एकाएक तेने आजिंगन करवा दोडी. आ जोइ ब्राह्मण कोथ करी वोल्यों के ओर पापिणि! मारो स्पर्श करीग निह, जे तारा जेवो होय तेनी आगळ जा, में तारी पाने मारे घेर जवा उपायनी याचना करी त्यां तुं मारी पासे कोइ विचित्र रुपेज वात करे छे; सांज सपार होमेर्छ हुतद्रव्य अक्षय लोकनी पाति करावनार छे. आ त्रणे लोक हुतद्रव्यमां रहेला छे जेयी हुं मारे घेर पहांचुं एपो उगाग वनाव, वर्रायनी चोली के बिप! शुं हुं आपने अपिय छुं ? शुं आ पर्वत रमणीय नथी ? गन्धर्व अने किसरादिनो त्याग करे। नमोने अन्य क्यो मतुष्य अभिष्ट छे ? थोडो बखत मारी साथे अरुभ्य भोग भोगवी त्यार पछी तमी तमार घर जवा शक्तिमान या शक्ताों, आ सांभळी बासण बोल्यों के गाईपत्यादि बण अग्निओं मारां घ्रमन छे, पने अग्निकुंड अति रमणीय लागे छे अने दर्भासनयुक्त वेदी पने निय छे. वरुथिनी पोलीके सद्धर्भनुं परिपालन करनारा पिप! आत्माना अप्र गुणोमां सर्वथी प्रथम दया छ, ते तमो मारा उपर केम नयी करता? तनो मन तनी देशो तो हुं जीवी हाक्यांनी जथी एटले व में तमारा उपर मारो वेग छे. आगा हुं जमा पण अपत्य बोलती नथी। माटे मारा उपर प्रसन्न याओ। आ सामळी ब्राह्मण बोल्यों के मो तुं माना दिलबी बोलनी हो अने जी पारा उपर तारी साचे साची भेग होग तो हुं मारे पेगजर आहुं नेपी उपाय प्रताप, वन्यिनी वोळी के-मारी साथे गांग गोगच्या वाद आप मुख्यी वेर जः बाहर्सा बाहरणे कर्षु के-प्रमाशनी ! ब्राह्मणीना वाचरण सीम सीमवर्गन वर्षे नभी, पांतु वा लेक्सां नपादि नदेश महन करी परलोक्तमां केना पालनी आहि अर्थे छे। यरियेनी बोली के नमारा अनुगह विचा है जीववानी नयी; भने वचाववाची आ छोडाएं दमोने सुख कोवली मानि साबे परछोद्धण पग पुष्यतुंज फड मळशे. जा रीते देव वाते न गरी अभ्युद्ध छे. जो नवी नजी देशी तो ह मधे तहत अने नमें.न पाप छागरो, बालागे कर्युं के भारा गुरुनी आज्ञा छै के " नारे स्वरते पण पण्यीनी उन्हा कर्यी नहि. " जेवी हुं तारी कदियम इच्छा नहि बार्य, नाई गो नेत्र वाओ. आ प्रमाण बोर्छा जलती स्पर्श वरी सामवान नवा पनित्र वह ने महासान ब्राह्मण गहिन्त प्रितिन प्रणाव करी स्त्रति करवा ल,ग्योः स्तुतिथी असन यह गार्टमञ्ज विनय ने झ. अणना श्रमेग्ना अमेर पर्मा, गर्दर मना

आवेशने छीधे ते मूर्तिमान् अग्निदेंचनी माफक दीपवा लाग्यो, अधिक तेज जोवाधी वरुथिनीनो तेना उपर अत्यंत अनुराग थयो; अप्नि प्रवेशना वळ्यी ते ब्राह्मण प्रथमनी माफक गतन करवा शक्तिमान थयो, जेथी तेण चालवा मांड युं. निश्वास मूकवाथी कंपित स्कंपवाळी सूक्ष्मांगी देवागनाओ दृष्टि पहोंची त्यांसुधी ते विपने जोया कर्यों अने ते घणी उनावळथी चाल्यों गयों. क्षणवारमां पोताने घर पहोची ते श्रेष्ट ब्रास्मणे कथा सुजव रायळी कियाओं करीं. पेली सर्वींग सुंदरी वरुथिनीनुं चित्त तो तेनामांज चोट्युं हतुं तथी तेण निश्वास नांखी नांखी वाकीनो दिवस अने रात्री निर्मन करीं.

ए अनुपम सुंदरी वारवार विलाप करती निश्वास मुकती हती अने पोताने अभागिणी गणी निन्दती हती. आहार विहारमां, रमणीय वनोमां अने आनंद दायक गुफामां तेनुं मन विलक्कल लागतुं नहिः; एक समये एक चक्रनाकनुं जोडं रमग करतुं हतुं ते उपर तेनी स्पृहा थइ पण ते जोड़ं ते सुंदरीने छोडी चाल्युं गयुं, ते पोतानी युवावस्थाने विकारवा लागी अने कहेवा लागी के और ! मारां दुर्भाग्ये मने आ पर्वत उपर क्या लाबी मुकी ? अने त्यां एवो पुरुप क्यांथी मारी दृष्टिए पडचे। ? जो आज ए प्रभावाळा पुरुवनी समागम नहि याय तो दुःसह कामाग्नि निःसंशय मारो क्षय करशे. अहा ! जे कोकिलाना शब्दो मने मद्धर जणाता तेज आजे दिलमां दाह उपजावे छे. आ रीते कामातुर वरुथिनी ते उत्तम विपत्तुं व्यान करता लागी अने एथी तेनी मीति विव उपर वयती गइ. मथम किल नामें कोइ एक गान्यवे तेन। उपर मीति राखतो हतो पण तेने वरुधिनीए तिरस्कार आपी तजी दीयो हतो। ते किल आज वरुधिनीने आर्था अर-स्थामां जोइ विचारचीं लाग्यों के आ निश्वासना पवनथी करमाइ गएली गजगामिनी वरुथिनी आ पर्नत उपर शामाटे स्थित थएली ले ? द्युं एने कोइ तपस्त्रीना शापनी आधात शये। ? के कोइए एतुं अपमान कर्षु हरो ? कारणके एतुं वदन अधुजळधी भी नार गयुं छे, कलिए कुतूहलधी घणो वखत निचार्य, पठी समाधिना वळवी यवार्थ वात तेना जाणगामां आवी नइ, व्यानवी पेळा ब्राह्मणनुं रुप आदि पण तेणे पिछाणी छीधुं, जेथी तेणे विचार कर्यों के-भछा ठीक थयुं, पूर्वना सद्भाग्ये मने आ प्रमंग सारो पळ्यो; एना उपर अनुसग राखी भथम मे घणीनार एनी पार्थना करी हती. तो पण एणे मारी स्त्रीकार न्होतो कर्यो। ए आजे मारे हाथ आबी जरें. जे पुरुष उपर एनो मेम छे तेनोंज वेष धारण करी एनी पासे जाउं; जरुर ए मारी साथे रमण करशे. इवे विलंब शामांटे करवो ? आ रीते विचार करी कलिए पेला बासणातुं स्व-

रुप धारण कर्यु अने ज्यां देवांगना वरुधिनी वेठी हती त्यां ते जर पहोंच्यो तेने जोइ वरुधिनीनां नयनो कांइ मफुछित थयां अने ते कोमळ कान्ता तेनी आगळ जइ वार्रवार कहेवा लागी के "इवे मारा उपर कुपादृष्टि नांखो" तमो मने तजी देशो तो निःसंशय मारो जीव जवानो तमोने क्रियालोपनो तो स्वल्प अधर्म धरो पण मनोहर हिमगिरिनी गुफाओमां हुंथी समागम करतां मारां जीवन रक्षणनो खरेखर महान् धर्म प्राप्त धरोग द्विजराज! मारुं आयुष्य हजी कांइ अवशेष रहेलुं जणाय छे. तेथीज मारा अन्तःकरणने आह्नाद आपनारा आप फरी अहा आवी मळ्या. आ रीते वरुथिनीनां विनोदवर्षक वचनो सांभळी कलिए कहुं के इवे मारे हुं करवुं? अहि व-धारे वखत रोकावाथी मारां नित्य कर्मोनी हानि थाय ए वात तुं पण स्वीकारे छे। आ महान् संकष्ट मारा माथे आवी पडयुं छे. परंतु जो मारुं कहेवुं कबुल राख तो हुं तारी साथे समागम करी शक्तं. नहितो कांइपण थनार नधी; मारी एक वातनुं तो तारे अवज्य मान राखवुंज जोशे. वरुधिनी वोली के आप कहेशो तेम करवा हुं वंधाउं हुं. मारा उपर मसन्न थाओ. मने जे आज्ञा करवी होय ते निःशंक बनी कहो. कलिए कहुं के आज संभोग वखते वनपदेशमां तारे मारा तर-फ दृष्टि करवी निह. जो तुं नयनो वींची राखे तो ज मारी साथे तारो संसर्ग वने. वरुथिनी बोली के-भले आपनी आज्ञा माथे चढावुं छुं, तमारी इच्छा प्रमाणे वर्तीज्ञा वरुथिनीनां आयां वचनो श्रवण करी किल नामनो गन्नर्व ते पर्वतना शिखरोमां, मनोरम फुल्याडीआंमां, सुशोभित सरोवरोमां, रमणीय गुफाओमां, सरिताओना तट उपर तेमन चीनां अनेक रमणीय स्थान उपर ते आनंद पूर्वक रमण करवा छाग्योः संभोग सनये वर्रायनी गाईपत्य अगिना प्रमेश वग्यते पेठा बाह्मणतुं जे तेज हतुं तेतुं आंखो बीची व्यान करवा लागी. केट दोक काळ बीत्या वाद पेळा तेजस्वी बाह्मणतुं चिन्तवन करती वर्षायेनीने ते गन्ववधी गर्भ रद्योग बाह्मणतुं हप यस्नाम गन्ववध वरुविनीने गर्भ रह्यो जाणी तेना मनतुं समायान करी जवा रजा मागी। वर्राविनीए वेमप्रैक रजा ञापी. जेथी ते गन्धर्व त्याधी चाउयो गयो. ए गर्भनो अग्नि तुह्य कान्तिपाठो देदी-प्यमान पुत्र जनस्योः तेणे सूर्य समान पोतानी कान्तियी नमान श करी मुक्यों, तेर्नुं नान " स्वरोचि " पाडवुं, ने महा भाग्यशाळी बाळक दिनीयाना चंद्र

उम्मरनी दृद्धि साथे सद्गुणोनी पण वृद्धि यवा छानी, नेने यौरन नाम याउँ ने अम-सामा तेणे चारे येद, यनुर्वेद अने ते उत्सान बेटलीएक विद्याओं मान्य करी लीकेंट एक दिवस

समान दिन भतिदिन कळाञायी वृद्धि पानवा उभ्यो.

ए उत्तम आचरणवाळो कुमार मंदरगिरिमां अटन करतो हतो तेवामां तेणे कोइ एक भयभीत कन्याने ए पर्वतनी भ्रुमि पर स्थित थएकी जोइ. कुमारने जोइ भयभीत नेत्रवाळी ते कन्या वोली के " मारुं रक्षण करो " कुमारे तेने धैर्य आपी कहुं के तुं ज्ञामाटे आटली वधी भयभीत वनी छे ? भय पामीश नहि. तुं कोण छे अने तारुं नाम शुं छे ? कन्या श्वास भराइ जवाने लीघे त्रुटित अक्षरे वोल्ली के मारुं नाम मनोरमा छे, हुं इन्दीवराक्ष नामना विद्याधरनी पुत्री छुं, मरु धन्त्रानी पुत्री मारी माता थायः मन्दार नामना विद्याधरनी पुत्री विभावरी तथा पार मनिनी पुत्री कलावती ए मारी वने साहेळीओनी साथे हुं उत्तमोत्तम कैलासतट तरफ जती हती, त्यां तपथी ग्रुष्क शरीरवाळो क्षुधायी कृप वनी गएल कंठवाळा तेज विहीन अने उंडा उतरी गएल नयन-वाळो कोइ मुनि मारा जोवामां आब्यो. तेने जोइ हुं हसी तेथी तेणे सक्रोध बनी मने शाप आप्यो. दुर्वळ देहवाळा अने कलुप कंठवाळा मुनिए अधरोष्ट फरकावी मने कतुं के-अरे! अनायें! तं मारा तरफ तिरस्कार पदर्शक हास्य कर्यु जेथी स्वरुग समयमां राक्षस तने पराभव पमाडशे. आ सांभळी मारी वने सखीओए ते मुनिनो तिरस्कार कर्यों अने वोली उठी के तारा ब्राह्मण-पणाने धिकार छे क्रोधयी तारुं तमाम तप नष्ट थयुं तारुं दारीर आट्छुं वधु श्लीण तपथी निह पण क्रोंधवी वयुं जणाय छे; ब्राह्मणवयुं क्षमातुं स्थान छे, क्रोंधने कावुमां राखवों तेनं नामज तप, मारी सर्खाओनां आयां वचनो सांभळी वधारे क्रोधयुक्त वनेला ते मुनिए ए वन्नेने शाप आप्यो. एकने कहुं के तारे शरीरे कोढ नीकळशे अने वीजीने कहुं के तने क्षय थशे. तत्काळ ते वन्ने कन्याओने ते ते रोग लागु पडया. मारी पाठळ पण माटो राक्स वेगयी दोडयो आवे छे. हनी तो ते चणे दूर छे छता तेनी घोर गर्नना अहीं सुधी संभळाय छे. आने त्रण दिवस थया छतां ए मारो केडो मुकतो नथी. हुं यथार्थ रीते तपाम अस्नविद्या जाणुं छुं. ते आज तमोने शिखबं छं. ते अस्तविद्याना मभावयी तमा राक्षसयी मने वचावी. पूर्वे ए विद्या पिनाकथाणि महादेवे स्वायंभुव मतुने अर्पण करी हती. स्वायंभुवे मुनिवर्य विश्वष्टने आपी तेणे मारी माना पिता चित्रायुधने अर्पण करी अने तेण ए अस्नविद्या मारा विताने पहेरामणीमां आपी. ते विद्या में मारा पिता पासेंथी वाल्यावस्थामां माप्त करी इती ए तमाम अस्रोनां हृदयहप शत्रुओना विनाश करनारी विद्या हुं आजयी तमोने अर्पण करुं छुं ते स्वीकारो, अने एथी अई। आवता दुष्ट राक्षसनो अन्त करो. स्वरोचिए आ वात कबुल राखी. जेथी मनोरमाए जळनो स्पर्श करी रहस्य अने प्रतिसंहार सहित ते अस्रोनो आत्मा स्वरोचिने अर्पण

कर्यों. तेवामां महाभयपद आकृतिवाळो अने घोर स्वरथी गर्जना करतो राक्षस तेनी पासे वेगथी आवी पहोंच्यो; अने बोल्यो के अरे दुरे माराधी पराभव पामेली तुं कोनुं रक्षण शोधे छे? स्वस्य थइ अहीं आव. हुं तारुं भक्षण करी जाउं. विलंब तजी दे. आवां राक्षसनां वचनो सांभळी मनोरमा मुंझाणी. स्त्ररोचिए राक्षस आगळ आवेळो जोइ विचार कर्यों के मुनितुं वचन असत्य न थवुं जोइए. एने भल्ले पकडी ले. "मने बचावों मने बचावों " ए रीते दयाजनक विलाप करती ते कन्याने राक्षसे वेगथी झडपी लीधी. पछी स्वरोचिए क्रोध करी अति प्रचंड अने भया-नक अस्त्र राक्षमनी नजरे मुकी एकी दृष्टिए तेना सामुं जोयुं ते अस्त्रथी पीडित थइ मनोरमाने मुकी दइ राक्षस केहेवा लाग्यों के कृपा करी तमारां अखने शान्त करो, मतापी पुरुप? महा घोर शापथी तमे मने मुक्त कर्यों छे. कोइ एक तीत्र स्वभाववाळा ब्रह्म वंद्युए मने आ शाप आप्यो हतो. गहा कप्टतर आ नापयी तमे मने छोडान्यो एथी हुं तमारो अति उपकार मानुंछुं. आ सांभळी स्वरोचिष पूछयुं के तमोने महात्मा ब्रासवंधुए वा माटे शाप आप्यो हतो र अने केवी रीतनो शाप आप्यो हतो? राक्षसे कतुं के-अद्मवंबु अथर्वण विप्र हतो। तेणे अप्र प्रकारना भेद सहित अने त्रयोदश अधिकार युक्त आयुर्वेदनो अभ्यास कर्यो हतो. तेमन हुं विद्याधरीना अधिपति खर्निधारी नलनाभनो पुत्र तथा आ मनोरमानो पिता इन्दीयराज नामे विद्यायर हतो। ब्रह्मयंत्रने समग्र आयुर्वेद शिखववा में प्रथम घणीवार नम्रतापूर्वक पार्थना करी छता तेणे ते निया मने न जीखर्वा, ज्यारे ए पोताना शिष्योंने अभ्यास करावतो त्यारे हुं गुष्त रीते त्यां संताइ ए आयुर्वेद विद्या शीखतो. आट मासनी अंदर समग्र विद्या में शीखी छीबी मेबी पने अति आनंद थयो. वारंवार वणुं इसवुं आवतुं. मारा हास्यथी मुनिए मने नौळमी लीतो, कोवयी तेना स्बंब बंपवा लाग्या नेण मने कहाँ के दुर्भते ! राक्षसनी माफक गुप्त रीने रही ते मारा जागळवी विद्या शीखी लीधी तेमन मारी अवज्ञा करी तुं हसे छे नेथी ना दुए! आजधी मानमे दहाडे मारा शापथी तुं राक्षस वनी जइश इत्यादि घणां कडोर वचनो संगळाट्यां. में नमस्कार आदि अनेक उपचारों वह मुनिने प्रसन्न कर्ण जेथी तेओ तुं मन तन्त्राळ वोषळ यह गयुं. नेओंग फर्मा मने वहां के-गन्धर ! मारुं वचन भिथ्या बवातुं नधी. तोषण क्हुं हुं के तुं सक्षम बया पछी फरी तने तार्छ पोतानुं हारीर माप्त यहे; प्यारे तुं स्पृति रहित बनी होवयी पोतानी मंतिनतुं भक्षण करवानी स्पृहाताळो राजम धरश त्यारे अस्तातियी परिवाप पानेछो तुं फरी महितान पनी तारा पूर्व देहने पामी गन्यर्व छोक्सां नारे स्थाने जह राक्षीरा, नतायी पुरुष ! ए परा

भयानक राक्षसपणाथी तमे मने मुक्त कर्यों माटे मारी एक मार्थना स्त्रीकारो, आ मारी पुत्री मनोरमा हुं आपने अर्पण करुंछुं तेने पत्नी तरीके ग्रहण करो. हुं ते मुनि आगळ अष्टांग आयुर्वेद शीख्यो छुं ते तमाम आपने आजथी अर्थण करुं छुं ते स्वीकारो. आ रीते पोताना पूर्व रुपने प्राप्त थएला दिव्य बस्नो, हार अने अलंकारना धारण करवायी उदार कान्तिवाळा विद्याधरे कुमार स्वरोचिने विद्या समर्थी अने त्यारवाद पोतानी कन्या आपवा तत्पर थयो। त्यारे मनोरमा पूर्व रुपने पाप्त थएला पोताना पिताने कहेवा लागी के पिता! आ भाग्यशाळी अने तेजस्त्री नरने जोवा मात्रथीज अने तेओए मारा उपर करेल उपकारथी मारो तेना उपर अति अनुराग थयो छे तो पण हनी मारे लीवे मारी बन्ने साहेलीओ अति पीडा पामे छे. जेथी आ पुरुपनी साथे हुं भोग भोगववा स्पृहा राखती नथी. पुरुष पण एवा कठोर हृडय-ना नथी होता तो पछी मारा सरखी कोवळ वाळा तो कठोर हृदयनी केम ज वने ? जे रीते मारी उभय साहेलीओ आ वखते दुःख अनुभवे छे तेवीज रीते हुं पण शोकामिथी परिताप पामती दुःख भोगवीशः आ रीते मनोरमानां वचनो सांभळी स्वरोचिए कहुं के सुंदरी आयुर्वेदना प्रभा-वधी तारी वने साहेलीओने हुं रोगथी विमुक्त करीश माटे ए संबंधी शोक छोडी दे. आ सांभळी मनोरमानुं मन शान्त थयुं. त्यारवाद मंदर गिरिमांज गंधर्वे मनोरमाना स्वरोचि साथे विधिक्ति लग कर्याः पोतानी कन्यानां मनतुं शान्त्वन करी ते गंधर्व दिव्य गतिथी पोताना नगर प्रत्ये पहों-ची गयो. स्वरोचि कुञ्चांगी मनोरमाने संगे छइ ज्यां तेनी वने साहेछोयो रोगथी पीडार्ता हती ते उपवनमां गया. अने पाताना अजीत अने व्यावि विनाशक औषघ तथा रसथी ते वन्ने वाळाओ-ने रोग रहित वनावी. व्याविथी विमुक्त थएली वन्ने वाळाओए पोतपोतानी अवर्णनीय प्रभाथी पर्वतनी तमाम दिशाओने देदीप्यमान करी मूकी। व्याधिथी विमुक्त थएछी विभावरी नामनी कन्या स्वरोचिने सहपे कहेवा लागी के प्रभु! तमे मारा उपर अति उपकार कर्यों छे. हुं तमारी दासी छुं मने आपनी पत्नी तरीके स्वीकारो. तमाम माणीओनी वोली सहेलाइथी समजी शकाय एवी विद्या मारी पासे छे ते आजधी हुं तमोने अर्पण करुं हुं. धर्मज्ञ स्वरोचिए आ वात कबुल राखी. त्यार वाद वीजी कलावती नामनी कन्या वोली के—वेद अने वेदांगने जाणनार मारा विता पार नामे ब्रह्मिप बाळ ब्रह्मचारी हता. पूर्वे एक समये कोकिलाना शब्दोथी अति रमणीय वसंत ऋतुमां पुंजिकस्थली नामनी एक सुनसिद्ध अप्सरा तेना आश्रममां आवी. तेणे पोताना सौन्दर्य वळवी ते मुनिने कामातुर वनाव्योः ए वन्नेनो संयोग थता आ गिरिरान उपर मारो

जन्म थयो. आ सर्प अने हिंसक पुराओधी ब्याप्त निर्जन वनमां मने एकली मूकी मारी माता चाली गइ. प्रारव्य योगे पोपण पामी दिन प्रतिदिन हुं म्होटी थती गइ. त्यार वाद उदारअन्तः गन्धेर्वे मारुं पुत्रीनी पेठे पालन कर्यु अने ते विताए मारुं. " कलावती " ए प्रमाणे नाम पाड्युं. त्यार वाद कोइ एक अलि नामना प्रवळ दैत्ये मारुं सौन्दर्य जोइ ते गन्धर्व आगळ मार्रा याचना करी परंतु तेणे न आपी जेथी मारी पिता गन्धर्व सूना इता त्यां आवी दैत्ये तेनो संहार कर्यो, आधी मने घणो खेद थयो अने हुं मरवा सज्ज थइ. मने सत्य प्रतिज्ञावाळी जाणी शिवजीनां स्त्री सतीए धैर्य आपी मारुं आश्वासन कर्नु अने कहा के तुं शोक तजी दे, महा प्रतापी स्वरोचि तारी स्वामी थहों, अने तेनो पुत्र स्वारोचि मतु थशे. तमाम निधिओ तारी आज्ञामां वर्तशे अने तने इच्छा मुजव धन प्राप्त थशे. तारा उपर पसन थइ हुं तने महापन्ने पूजेली पनिनी नामे विद्या आपुं छुं. आ रीते सत्य शीळ-वाळां दक्षपुत्री सतीए मारुं भविष्य संभळाव्युं. सतीनां वचनो कदी व्यर्थ थायज नहिं. तमे स्वरोचि छो अने मने व्याधिथी विमुक्त करी प्राणदान दीं ये छे तो हुं आजधी मार्च दारीर तथा विद्या आपने समर्पु छुं ते प्रसन्न थइ स्वीकारो. आ रीते स्वरोचिए विभावरी तथा कलावतीनो पोता प्रत्ये अवूर्व प्रेम जोइ ते बन्ने वाळाओ साथे पोते परण्या त्यारवाद देन सरखी युतिराळो ते स्वरोचि पोतानी सुंदर त्रणे स्त्रीओने साथे टइ मनोहर उपवन अने दारणपाळा गिरिराज उपर क्रीडा करवा लाग्या. पश्चिनी विद्याना प्रभावधी सदा वश दर्तनार निविभी तपाप उपभोगने अनु-कूळ रत्नो, मिष्ट मबु, वस्न, अलंकार, सुगन्धि लेप, अति उडवळ सुवर्णना जासनो, शरपा विगेर महात्मा स्वरोचिनी इच्छा मुजय हाजर करवा लागी. खरोचि तथा तेनी यंगे बीओ स्पर्गनी माफक ते गिरिराज उपर परस्पर कीडा करी परमानंद पामपा लाग्यां. एक समये कोइएक राजहंमी तेना तथा तेनी ख़ीओना सुख दायक संवंधमां प्रेम लावी जळमां म्यित थएली चक्रवाकीने स्वगंचिने उदेशीने कहेवा लागी के, आ पुरुप महा पुण्यशाळी अने धन्य छे. कारणके नवयीवन पामी पोतानी भियतमाओनी संगे यथेच्छ विहार करे छे. पृथ्वीमां युवान अने प्रशंसनीय अनेक पृत्यो छे प्रण तेनी पत्नीओ एटळी वधी सुंदर होती नशी. अति सुदर पति पत्नीओना जोडा विन्वमा शिरळ छे. कोइ पुरुषनो स्री उपर अति स्नेह होय छ अने कोइ अभदानो पोताना यति उक्त अति वेष होय छे, परंतु परस्पर समान स्नेह्याळां दंपनि अवनियां दणा अंद्रा छे. आ पुरुष योगानी निय-तमाओंने पहुन मिन छे अने तेनो एण पोतानी ह्यी उत्र अर्ज में छे महि एने स्वीत्र

धन्यवाद घटे छे. परस्पर पेम तो कोइ श्रेष्ठ पारव्धवाळाओनेज थाय छे. आ रीते राजहंसीनां वचन सांभळी विस्मय पांमेळी चक्रवाकी वोळी के-ए धन्य शानो ? कारण के एतुं मन ज्यारे एक स्त्री तरफ खेंचाय छे ते वखते ते अन्य स्त्रीनो उपभोग करे छे परंतु ए वातनी एने शरम छेज नहि, एकी वखते एनुं मन तमाम स्त्रीओ उपर आकर्षीय ए असंभवित छे. सखि! अन्तः-करणनो अनुराग एक स्थळमांज रही शके छे, माटे एने वधी नारीओ उपर समान स्नेहवाळो शी रीते कही शकाय ? ए स्त्रीओ एनी पियतमाओं नथी अने ए पोते स्त्रीओनो पियतम नथी. एतो अन्ये यहसेवक आदिनी माफक आनंद मात्र छे. जो स्त्रीओने ए पुरुष पियतम होय तो जे समये एक स्त्रीओना उपर अनुराग वतावे छेत्यारे ते वीजी स्त्रीने आछिंगे छे तो पेळी स्त्री प्राण-त्याग शामाटे नथी करती ? एतो विद्यारुपी मूल्पथी खरीदेला नोकर माफक वर्तन करी रह्यो छे. घणी नारीओ उपर पुरुपनो एकी वखते समान स्नेह होइ शकेंज नहि. राजहांसि ! मारा स्वामीने अने मने धन्य छे के जेनां मन अन्योन्य स्थिर थइ रहेलां छे. प्राणी मात्रनी भाषाने पिछाणनार स्वरोचिए राजहंसींनो अने चक्रवाकींनो आ रीते संवाद सांभळी सर्व सत्य गणी पोते शरमाणो. मंदरिगरिमा विहार करतां एकसो वर्ष व्यतीत धयां स्यारवाद एक वखते पोतानी वियतमाओ साथे रमण करता ए राजाए पोताना मुख पासे एक स्निग्ध अने सुञ्जोभित अवयववाळा, मृगीना समृहमां विहार करता मृगने जोयो. ते वखते नासिकाना अग्र भागने खेंची खेंची सुघती मृगी-अंने मृंगे कहुं के-तमो आम वेशरम शामाटे बनो छो ? चाली जाओ, हुं स्वरोचि समान आच-रणवाळो नयी, जे एवा निर्लंग होय तेनी पासे जाओ; एक स्त्रीनी पाछळ लागेला अनेक पुरुपा जेम दुनीयामां हास्यने पात्र थाय छे तेम अनेक अवळाओए काम दृष्टिथी जोवातो पुरुप पण हांसीने पात्र थाय छे. दिन मितदिन तेनी धर्म कियाओनी हानियाय छे अने ते पुरुष एक रमणीनी साथे रमण करतो वीजी स्त्रीओ उपर पण फ़ामयी आसक्त रहे छे. पारछोकिक पंथयी विमुख गति करनार स्वरोचि जेवा आचरणवाळो होय तेनी इच्छा करो, हुं स्वरोचि नथी, आ शते कहीं मृगे हरिणी-ओने रजा आपी. खरोचि आ सर्व वात सांभळतो हतो, तेने पोताने पतित समान गण्यो. चक्रवाकी अने मुगे निन्देलो स्वरोचि ते त्रणे स्त्रीओने तजी देवानी विचार करवा लाग्यो; परंतु पुनः प्रमदा-ओना परिचयमां आच्यो जेथी कामनी वृद्धि थइ, ते वैराग्य वार्ता वीसरी गयो अने पोतानी पत्नीओ साथे आनंद करवा अनुरक्त थयो। आपने आप वीजां छसो वर्ष वीती गयां, परंतु उदार मितवाळा स्वरोचिए पोतानां धर्म कर्मोने वाव न आवे एवी रीते तेओनी साथे रमण कर्युं.

स्वरोचिथी मनोरमाने विजय, विभावरीने मेरुनंद अने कलावतीने प्रभाव नामे पुत्र थयो. स्वरो-चिए पद्मिनी विद्याना प्रभावधी पोताना त्रणे पुत्रोने माटे त्रण नगरो निर्मित्त कर्या. सहुयी म्होटेरा पुत्र विजयने पूर्व दिशामां कामरूप गिरि माथे विजय नामनुं नगर बांधी आप्युं, बीजा पुत्र मेरुनंद माटे उत्तर दिशामां उन्नत किल्ला तेमज बुरज अने माळवाळी नंदवती नामे नगरी तैयार करावी आपी वेमज त्रीजा पुत्र प्रभावने अर्थे दक्षिण दिशामां ताल नामनुं नगर निभित कर्यु. ए रीते त्रणे पुत्रो माटे त्रण नगर निर्मित करी पाते अनुपम अने सुंदर स्थानोमां मनोरमा आदि मानिनीओनी साथे विहार करवा लाग्यो. एक समये ते स्वरोचि धनुष्य वाण धारण करी अरण्यमां मृगया करवा गयो. त्यां तेणे व्रणे दूर एक वराइने विलोकी धनुष्य खेंच्युं, तेत्रामां तेनी पासे एक हरिणी आबी वारंवार कहेवा लागी के-मारा उपर कृपा करो अने ए वाण पारा उपरज नांखी, चराहनो विनाश करवाथी तमारुं कार्य सिद्ध थवातुं नथी. मारा उपर वाण मारी मने संकष्टथी मुक्त करो। आ सांभळी स्वरोचि वोल्पो के तुं पीडित जगाती नथी. छतां प्राण त्याग करवा शामांटे इच्छे छे ? मृगीए करां के अन्य स्त्रीओमां आसक्त थएला पुरुष उपर मारो अनुराग धयो छे. जेथी आ वखते मृत्यु विना अन्य औपघ क-रवा मारो इरादो नथी. स्वरोचिए कद्युं के भीरु! तारा उपर कोण पीति न करे ? तारो कोना उपर अनुराग थयो छे. के जेनी अमाप्तिथी तुं प्राण तजवा तत्पर थइ छे? मृगीए कर्युं आपतुं शेय थाओ. हुं आपनीज अभिलापा राखुं छुं, तमे ज बारुं मन हरी लीवुं छे एवी ज हुं मरवा तत्पर थइ छुं, मारा उपर शरनो प्रहार करें। आ साभळी स्वरोचिए क्युं के-डरिणि! तुं मृग जाति अने हुं पुरुष, तारी साथे हुं सरखानो योग शी रीने यने ? मृगीए र गूं के जो तमारी मारा उ-पर बेम होय तो मने आलिंगनमा लीओ, निह तो मारी बिनाश करो. न्रांगिए दया लाबी आन लिंगन वर्धु के तुरत ते हरिणी मटी दिव्य देहवाळी सुंद्री वनी गर. स्वगंचिए विस्वय पामी तं कोण छे ? एम पृष्ठयुं. सुंदर्श वोली के-हुं वन देवता हुं; तमो माग त्रिये मतुनी उत्पत्ति करा, देवोए मारा पासे प्रार्थना करी ए माग्युं छे; हुं तमारा उपर प्रेमासक्त वनी हुं; मारे विषे पृथ्वीनुं पालन करनार मतुने पेदा करो. तुरतत्र स्वरोचिए ते सुन्दरीने विभे सर्वोचन लक्षणोयी मंयुक्त अने पोता समान कान्तियाळा पुत्रने उत्पन्न कर्योः ते बाळकतो जन्य धवांत्र देवनां वाचा वापपा लागा, गन्वर्वे गापन करवा लागा, अप्समञ्जो कृत्य करवा लगी अने नतीयन व्हानियो नवा देरगण चोनरफ्यी पुष्परृष्टि करवा लाग्नाः तेतुं तेज जोइ स्वरंतिष्ठ् ते। बाङक्तुं '' धनिमान'' ्प्युं नाम पाउथुं, कारण के तेना तेनथी दिवाओं देदीप्यनान पती गरी इती. ए स्वगेचिनी महा पळवान् धृतिमान् नामनो पुत्र स्वारोचिष अहेवायोः

~~~~~~~<del>-</del>

धन्यवाद घटे छे. परस्पर पेम तो कोइ श्रेष्ठ पारव्यवाळाओनेज थाय छे. आ रीते राजहंसीनां वचन सांभळी विस्मय पामेळी चक्रवाकी वोळी के-ए धन्य शानो ? कारण के एतुं मन ज्यारे एक स्त्री तरफ खेंचाय छे ते वखते ते अन्य स्त्रीनो उपभोग करे छे परंतु ए वातनी एने शरम छेज नहि. एकी वखते एनुं मन तमाम स्त्रीओ उपर आकर्षाय ए असंभवित छे. सखि! अन्तः-करणनो अनुराग एक स्थळमांज रही शके छे, माटे एने वधी नारीओ उपर समान स्नेहवाळो शी रीते कही शकाय ? ए स्त्रीओ एनी पियतमाओं नथी अने ए पोते स्त्रीओनो पियतम नथी. एतो अम्पेन्यहसेवक आदिनी माफक आनंद मात्र छे. जो स्त्रीओने ए पुरुप नियतम होय तो जे समये एक स्त्रीओना उपर अनुराग वतावे छेत्यारे ते वीजी स्त्रीने आछिंगे छे तो पेळी स्त्री प्राण-त्याग ज्ञामाटे नथी करती ? एतो विद्यारुपी मूल्यथी खरीदेला नोकर माफक वर्तन करी रह्यो छे. वणी नारीओ उपर पुरुपनो एकी वलते समान स्नेह होई द्याकेज नहिः राजहांसि ! मारा स्वामीने अने मने धन्य छे के जेनां मन अन्योन्य स्थिर थइ रहेलां छे. प्राणी मात्रनी भाषाने विछाणनार स्वरोचिए राजहंसीनो अने चक्रवाकीनो आ रीते संवाद सांभळी सर्व सत्य गणी पोते शरमाणो. मंदरिगरिमां विहार करतां एकसो वर्ष व्यतीत थयां। त्यारवाद एक वखते पोतानी पियतमाओ साथे रमण करता ए राजाए पोताना मुख पासे एक स्निग्ध अने सुन्नोभित अवयववाळा, मृगीना समूहमां विहार करता मृगने जोयो. ते वखते नासिकाना अग्र भागने खेंची खेची सुंघती मृगी-ओने मृगे कहुं के-तमो आम वेशरम शामाटे बनो छो ? चाली जाओ, हुं स्वरोचि समान आच-रणवाळो नथी, जे एवा निर्रुज होय तेनी पासे जाओ; एक स्त्रीनी पाछळ लागेला अनेक पुरुषे। जेन दुनीयामां हास्यने पात्र थाय छे तेम अनेक अवळाओए काम दृष्टिथी जोवातो पुरुष पण हांसीने पात्र थाय छे. दिन प्रतिदिन तेनी धर्म कियाओनी हानियाय छे अने ते पुरुष एक रमणीनी साथे रमण करतो बीजी स्त्रीओं उपर पण फ़ामयी आसक्त रहे छे. पार छोकिक पंथयी विमुख गति करनार स्वरांचि जेवा आचरणवाळो होय तेनी इच्छा करो, हुं स्वरोचि नथी, आ रीते कहीं मृगे हरिणी-ओने रजा आपी. खरोचि आ सर्व वात सांभळतो हतो, तेने पोताने पतित समान गण्यो. चक्रवाकी अने मृगे निन्देलो स्वरोचि ते त्रणे स्त्रीओने तजी देवानी विचार करवा लाग्यो; परंतु पुनः ममदा-ओना परिचयमां आद्यो जेथी कामनी वृद्धि थइ, ते वैराग्य वार्ता वीसरी गयो अने पोतानी पत्नीओं साथे आनंद करवा अनुरक्त थयोः आमने आम वीजां छसो वर्ष वीती गयां, परंतु उदार पितवाळा स्वरोचिए पोतानां धर्म कर्माने वाध न आवे एवी रीते तेओनी साथे रमण कर्युः

स्वरोचिथी मनोरमाने विजय, विभावरीने मेरुनंद अने कलावतीने प्रभाव नामे पुत्र थयो. खरो-चिए पद्मिनीं विद्याना प्रभावधी पोताना त्रणे पुत्रोने माटे त्रण नगरो निर्भित्त कर्या. सहुर्थी म्होटेरा पुत्र विजयने पूर्व दिशामां कामरुप गिरि माथे विजय नामनुं नगर वांधी आप्युं, वीजा पुत्र मेरुनंद माटे उत्तर दिशामां उन्नत किल्ला तेमज बुरज अने माळवाळी नंदवती नामे नगरी तैयार करावी आपी तेमज त्रीजा पुत्र प्रभावने अर्थे दक्षिण दिशामां ताल नामनुं नगर निर्मित कर्यु. ए रीते त्रणे पुत्रो माटे त्रण नगर निर्मित करी पोते अनुपम अने सुंदर स्थानोमां मनोरमा आदि मानिनीओनी साथे विहार करवा लाग्यो. एक समये ते स्वरोचि धनुष्य वाण धारण करी अरण्यमां मृगया करवा गयो. त्यां तेणे घ्रणे दूर एक वराहने विलोकी धनुष्य खेंच्युं, तेवामां तेनी पासे एक हरिणी आवी वारंवार कहेवा लागी के--मारा उपर कृपा करो अने ए वाण मारा उपरज नांखी, वराहनो विनाश करवाथी तमारुं कार्ये सिद्ध थवातुं नथी. मारा उपर वाण मारी मने संकष्टथी मुक्त करो. आ सांभळी स्वरोचि वोल्यो के तुं पीडित जगाती नथी, छतां प्राण त्याग करवा शामाटे इच्छे छे ? मृगीए कर्शुं के अन्य स्त्रीओमां आसक्त थएला पुरुष उपर मारो अनुराग थयो छे. जेथी आ वखते मृत्यु विना अन्य औपध क-रवा मारो इरादो नथी. स्वरोचिए कहुं के भीरु! तारा उपर कोण प्रीति न करे ? तारो कोना उपर अनुराग थयो छे. के जेनी अमाप्तिथी तुं माण तजवा तन्पर थइ छे? मृगीए कह्युं आपतुं शेय थाओ. हुं आपनीज अभिलापा राखुं छुं, तमे ज मारुं मन हरी लीघुं छे एथी ज हुं मरवा तत्पर थइ छुं, मारा उपर ज्ञारनो प्रहार करो। आ सांभळी स्वरोचिए कह्यं के-हरिणि! तुं मृग जाति अने हुं पुरुष, तारी साथे हुं सरखानो योग शी रीते बने ? मृगीए कहुं के जो तमारो मारा उ-पर प्रेम होय तो मने आलिंगनमां लीओ, निह तो मारो विनाश करो. स्वरोचिए दया लावी आ-लिंगन कर्स के तुरत ते हिरणी मटी दिव्य देहवाळी सुंदरी वनी गइ. स्वरोचिए विस्मय पामी तुं कोण छे ? एम पूछ्युं, सुंदर्श वोली के-हुं वन देवता छुं; तमो मारा विषे मनुनी जल्पति करो, देवोए मारा पासे प्रार्थना करी ए माग्युं छे; हुं तमारा उपर प्रेमासक्त वनी छुं; मारे विषे पृथ्वीतुं पालन करनार मतुने पेदा करो. तुरतज स्वरोचिए ते झन्दरीने विषे सर्वोत्तम लक्षणोथी संयुक्त अने पोता समान कान्तिवाळा पुत्रने उत्पन्न कर्योः ते वाळकनो जन्म थतांत्र देवनां वाद्यो वागवा लाग्यां, गन्वर्वो गायन करवा लाग्या, अप्सराओ नृत्य करवा लागी अने तपोधन ऋषिओ तथा देवगण चोतरफथी पुष्परृष्टि करवा छाग्या. तेनुं तेज जोइ स्वरोचिए ते वाळकनुं "द्युतिमान" एवं नाम पाडयुं. कारण के तेना तेंजथी दिशाओं देदीप्यमान वनी रही हती. ए स्वरोचिनो महा वळवान् द्युतिपान् नापनो पुत्र स्वारोचिष कहेवायो.

एक समये स्वरोचि कोइ एक कमनीय गिरिना झरण पासे विचरतो हतो ते समये तेणे ए जगे। उपर एक इंसने तेनी हृद्यब्छभा समेत जोयो. वारंबार काम क्रीडानी इच्छा प्रदर्शित करती इंसीने इंसे कहुं के-इवे तारा मनने तुं शान्त कर, घणा दिवस में तारी साथे भोग भोग-व्या. सदा काळ भोग भोगववाथी कोइनुं कल्याण थतुं नथी. इवे आपणी छेल्ली अवस्था निकट आवी छे. आ वखत आपणे वन्नेए संसारनो त्याग करवानो छे. आ सांभळी हंसी वोली के भोग भोगवताने क्यो काळ अयोग्य छे ? अखिल जगत् भोगथी भरपूर छे; जीतेन्द्रिय जनो पण भोगनी पाप्ति अर्थे यज्ञयागादि कर्ष करे छे. ज्ञात तेपज अज्ञात भोग भोगववानी अभिलापावाळा विवेकी जनो दान दिए छे. भोग ए विवेकी जनो तेमज तिर्यक् जातिना प्राणीओतुं अभिष्ट फळ छे. तो पछी जेने आत्मानी गम नथी एवां अन्य प्राणीओने इट होय एमां नवाइ ज्ञी ? आ सांभळी इंस वोल्यो के भोगमां आसक्त चित्तवाळां तेमज वांधवोना स्नेह सूत्रमां गुंथाएल हृदय-वाळां पाणीओती रित्त परमात्मामां लागती नथी। तळावना पंक रुप पयोधिमां ड्वेला वनना रुद्ध इस्ति समान विचारां प्राणीओ पुत्र, भित्र अने अंगना आदिमां आसक्त थड़ पीडा पामे छे. भद्रे ! आ स्वरोचिने तुं नथी भाळती ? ए वाळपणथीज काममां निमन्न थइ रह्यो छे. स्नेह जळना पंकमां घुंची गयो छे; जेवुं युवावस्थामां स्वरोचितुं मन स्रीओमां आसक्त इतुं तेवुंज हाल पुत्रपौत्रादिकमां निमन्न थयुं छे, अरे रे! ए शी रीते मुक्त थशे ? हुं स्वरोचि पेठे स्त्रीवश नथी वन्यो. हवे हुं भोगधी निष्टति पाम्यो छुं. आ रीते इंसनां वचनो अवण करी उद्देग पामेला स्वरोचिए पोतानी स्वीओ सहित अन्य तवीवनमां जइ महा तीव्र तप कर्यु अने तमाम पापनी विनाश थवाथी तेने उत्तम लोकनी प्राप्ति थइ. त्यार वाद खरोचिना पुत्र द्युतिमानने समर्थ प्रजापतिए मनु वनाव्यो. ते स्वरोचि मनुना वखनमां पारावत अने तुषिता नामे देवो तथा विषश्वित नामे सुपितद्ध इन्द्र अने ऊर्न स्तंव, प्राण, दत्त, अलि ऋगभ, निवार अने अवेतीर नामे सप्तपिंभो हता.

उत्तानपादने सुरुचि नामनी स्त्रीथी महा पराक्रमी, धर्मात्मा, उदार अन्तःकरणवाळी, सर्वथी श्रेष्ठ, सूर्य सरखो मतापवान उत्तम नामे पुत्र थयो हतो, ते धर्मत राजा श्राष्ट्र अने भित्र उप-र तथा पुत्र अने अन्य जनो उपर समान स्नेह राखतो हतो, ते दुछोने यम तुल्य अने सज्जनोने चन्द्र समान हतो; इन्द्र जेवो उत्तम अने धर्म युरं यर उत्तानपादनो पुत्र इन्द्राणी जेपी वभ्नुनी पुत्री बहुळा साथे परण्यो हतो। जेवो चन्द्रनो भेम रोहिणी माथे हतो तेवोज मेम उत्तम बहुळा माथे राखतो। एतुं मन कोइ दिव-

स अन्य वस्तु उपर अनुरागतुं निह, स्वप्नमां १ण उत्तमना अन्तःकरणमां वद्वलाज रमी रही हती. ए सुंदरीने जोतांज ते आलिंगन करतो अने अंगसंग थतां तहुप वनी जतो. ते स्त्रीनां कर्णकटु वचनो पण उत्तथने अति विय लागतां हतां, वहुलाए आपेल तिरस्कार ते मानरूप सम-जतो हतो. उत्तम कांइ वस्त्रालंकार आपतो तेने वहुला दूर नांखी देती हती. राजा चुंवन करतें। ते पण पीडा रूप प्रमाणती हती; जमवा टाणे उत्तम घडिवार तेणीना कर पकडी राखता त्यारे ते उ-दासीन मुद्राए थोडुं भोजन करती हती. आ रीते अनुकूळ राजाने पत्नी तदन प्रतिकूळ हती छतां उत्तम तेनापर अति प्रीति राखतो. एक समये अनेक खंडीआ राजाओनी सभा भरी पोते वेठो इतो, नायिकाओ वृत्य करती इती अने गान विद्यामां परम प्रविण गायको गायन करता इता तेवामां उत्तमे जरा मद्यपान करी ते मद्यवाळुं पात्र पकडवा पोतानी प्रमदा बहुलाने आदरथी कहुं. परंतु तेणीए अवळे मुखे फरी ते पात्र करमां ग्रहण कर्युं नहि. अनेक राजाओनी सन्मुख पो-तानो आ रीते अनादर थयो जाणी उत्तमने अति क्रोध उपज्यो; अने पोतानी परिनए अवियता-थी अवगणना कराएलो ते महा झेरी नागनी माफक निश्वास नांखी द्वारपाळने वोलावी आज्ञा करवा छाग्यों के-आ दुष्ट दिलवाळी दाराने दूर लड़ जा. अने वगर विलंबे कांइ पण विचार नहि करतां निर्जन वनमां मुकी आवः महिपालनी आज्ञा माथे चडावी वहुलाने रथमां वेसाडी द्वार-पाळ मनुष्य रहित जंगलमां मुकी आच्यो, बहुला आथी घणीज खुशी थइ, अने जाणे पतिए पोता उपर अनुग्रह कर्यों होय एम मान्युं, परन्तु उत्तमना अन्तःकरणमां मेम पीडाथी असहा दाह थवा लाग्यो. एणे वीजी स्त्री न करी. प्रजातुं यथाविवि पालन करी राज्य करतां ते निरंतर अस्वस्थ चित्ते पोतानी प्रमदा वहुलाने याद कर्या करतो हतो.

एक वखते महा दुःख पामेलो कोइ एक ब्राह्मण उत्तम राजा पासे आव्यो अने कहेवा लाग्यो के—नरपाल! हुं प्रहान संकष्टमां आवी पड़्यो छुं, मारुं रक्षण करों, आश्रितने अभय आपवुं ए राजातुं काम छे, हुं रात्रिए निद्रावश थएल हतो त्यारे मारा गृहतुं द्वार उचड्यां विना मारी स्त्रीतुं कोइ हरण करी गां छे. तो ते स्त्रीने शोधी आपो. राजाए कह्युं के—कोण अने क्यां लड़ गां ए जाण्या सिवाय हुं कोने पकडुं अने तारी स्त्रीने शी रीते शोधी आपुं श ब्राह्मण वोल्यो के महाराज! मारा गृहतुं द्वार वंध हतुं अने हुं उंधी गयो हतो जेथी मारी स्त्रीने कोण उपाडी गयुं ते मारा जाणवामां शी रीते होय ? तमें अमारुं रक्षण करो छो तेने वदले अपे तमने अमारा धर्मनो

छड़ो हिस्सो अर्पण करीए छीए. तमो रक्षक छो एथीज सर्व कोइ रात्रिए निश्चिन्त वनी उंघी जाय छे. आ सांभळी राजाए कहुं के, तारी स्त्रीने में कोइ दिवस भाळी नथी. माटे तेनी आकृति अ-वयवो, उम्मर अने आचरण आदि कही संभळाव. ब्राह्मणे कहां के ते कदमां उंची छे, कदरुपी, कटोर नयनवाळी, ढंका हाथवाळी अने पातळां मुखवाळी छे, तेना आचरण उत्तम नथी, वाणी पण कठोर छे छतां हुं तेने निन्दतो नथी. तेतुं रुप जोनारने अरुचि उत्पन्न करे एवुं छे तेनी प्रथम अवस्था वीती गइ छे. आ सांभळी राजाए कहुं के ए नारीनी चिन्ता तजी दे. तने वीजी स्त्री आपुं. कारणके सारी स्त्री सुखदायक बने छे; परन्तु आबी स्त्री तो दु:खहपज होय छे. सुखनो हेतु स्त्रीतुं सौन्दर्य नथी पण उत्तम शील छे. रुप अने शीलविहीन स्त्रीनो त्याग करवो उचित छे. ब्राह्मण बोल्पों के राजन्! स्त्री गमें तेत्री होय तो पण तेतुं रक्षण करवं, स्त्रीना रक्षणथी प्रजातुं रक्षण थाय छे, पत्नीने त्रिपे पति पोत ज जन्मे छे माटे तेनुं यत्न पूर्वक रक्षण करवुं जोइए. प्रजा-तुं रक्षण ए पोतानुंज रक्षण छे. अने एनां उपेक्षा राखताथी प्रजा वर्णसंकर थाय छे, एम में श्रेष्ट पुरुषोना मुखर्था सांभळ्युं छे. वर्णसंकर वनेली प्रजा पोताना पूर्वन पितृओने स्वर्गे जतां अ-वरोध करे छे, स्त्री विना नित्यकर्षीनो लोप थवाथी मने दिन प्रतिदिन धर्मनी हानि थाय छे. आ कारणयी मने त्रासमणपणार्था भ्रष्ट यवानो भय रहे छे. मारी ए ह्यीथी जे मजा उत्पन्न यशे. ते धर्म साधना करी आपने छहो भाग आपशे. प्रजातुं रक्षण करवा माटे ज भगपान् प्रजापतिए तमोने राजा वनाव्या छे माटे गमे तेम करी चोराइ गएली मारी स्त्रीने शोधी आयो, तमे सर्व वाते समर्थ छो. आ रीते ब्राह्मणना वचनो श्रवण करी राजाए घणो विचार कर्यो, तुरतज तमाम सा-हित्यो सहित उत्तम रथ तैयार करावी तेषां वेशी पृथ्वीषां चोतरफ तपास करवा छाग्यो, त्यां अरण्यमां कोइ एक तपस्त्रीतुं मनोहर आश्रम तेना जोवामां आव्युं. राजा उत्तम तुरतन रथ उप-रथी उतरी ते आश्रममां दाखळ थयो. त्यां तेणे द्युतियी दीप्यमान दर्भासन उपर विराजेला मु-निराजने देख्या. राजा उत्तमना आगमनयी प्रसन्न यइ मुनिए "स्वागतम्" ए रीते उचार करी आ-सन्धी उठी, योग्य आगता स्वागता करी पोताना शिष्यने अर्ध्य लाववा आहा आपी. शिष्ये धीमेथी गुरुने कहुं के-महाराज! एने हुं अर्घ देवो छे? विचारी आज्ञा करो, आज्ञा मुजब वर्तवा तैयार छुं, आत्मज्ञ मुनिए राजानुं रुत्तांत जाणी छीधुं अने आसन आपी सारी रीते तेतुं सन्मान करी मुनि वोल्या के राजन्! ज्ञा कारणथी आपतुं पधार्त्वं थयुं? आपना अन्त:कर-णमां कयुं कार्य करवानी इच्छा छे? आप उचानपादना पुत्र उत्तम अत्युत्तम छो ए अमारा जाणवामां छे.

वाद राजा वोल्यो के-ऋथिराज! एक विमना घरमांथी तेनी स्त्रीने कोइ उपाडी गयुं छे. उपाडी जनार कोण छे ए हनी क्षघो खबर पडी नथी, हुं तेनी ज्ञोध अर्थे अहीं आवेल छुं. इवे हुं आपने प्रणाप करी एक वात पुछत्रा धारुं छुं ते कृता करी कहेता ? ऋषिए कहुं के-राजन्! तमारे जे पक्ष करवुं होय ते खुशीथी करो, जो कहेवा लायक हशे तो खरेखहं कही आपीशः राजाए कर्युं के ऋपिराज ! हुं आपना आश्रममां आव्यो ते वखते आपे जे मारे माटे अर्घ तैचार करवा आपना शिष्यने आज्ञा आपी ते पाछो वंघ ज्ञामाटे राख्यो ? त्यारे ऋपिए जवाव आप्यों के -राजन्! तमोन जोतांज में उतावळथी मारा शिष्यने अर्व तैयार करवा आज्ञा आपी त्यारे तेणे मने वोध कर्यो. मारी ऋपाथी ते भूत, भविष्य अने वर्तमाननी वातो जाणवा समर्थ थयो छे. एणे मने कहुं के-गुरु ! विचारीने आज्ञा करो, एटलामां में पण तमाम हत्तांत जाणी लीहुं. जेथी तमाने विधि पूर्वेक अर्घ न आप्यो. स्वायंभ्रवना पवित्र कुळमां उत्पन्न थएला तमो अर्घने पात्र छो तोपण अमो तमोने अर्घ पात्र गणतां नथी. आ सांभळी राजाए पूछयुं महात्मन् ! मे भूलथी अथवा बुद्धि-पूर्वेक एवं शुं दुब्कर्म कर्जु छे के हुं घणे काळे आपने त्यां अतिथि वनी आव्यो छतां अर्घने योग्य न थयो ? ऋषिए जवाव आप्यो के-ज्यारथी तमोए तमारी स्त्रीने वनमां काढी मुकी छे, त्यारथीज तमो धर्म भ्रष्ट थया छो, जे मनुष्य मात्र पंदर दिवसज नित्य कर्म न करे तेनो स्वर्श करवो उचित नथी. तो पछी तमारे तो एक वर्ष थयां नित्यकर्मनी हानि थाय छे; तमोने वयारे हुं कहेवुं ? जेम गमे तेवा आचरणवाळा पुरूपनी छुद्ध मनथी सेवा करवी ए स्त्रीनो धर्म छे तेम पतिए पण गमे तेवा दुष्ट आचरणवाळी स्त्री होय तेनुं पोपण करवुं जोइए. राजन ! तमे कही छो ते विमनी स्त्री तेनाथी विमुख वर्ते छे छवां तेने कोइ उपाडी जवाथी धर्ममां अवरोब आवशे ए भयथी तेणे तमारा पासे प्रार्थना करी. आ रीतें अवर्ष राहे चालतां अन्य जनोने अटकावी धर्म मार्गे पवर्ताववा तमो प्रयत्न करों छो. परंतु तमेज ज्यारे धर्मधी विमुख थशो; त्यारे तमने कीण कहेवा आवशे े ऋपिराजनां आवां वचनो ध्यान पूर्वक सांभर्की उत्तम राजाए पोतानी तमाम भूछ कबूछ करी अने नम्रता पूर्वक कहुं के महात्मन ! आप त्रिकालदर्शी छो तो ते ज्ञासणनी स्त्रीने कोण उठावी गयुं छे अने ते हाल क्यां छे ते कृपा करी कहेशो. ऋषिए कद्यं-के अदिनो पुत्र वलाक नामनो रासस तेने उपाद्धी गयो छे अने ते उत्पलावन वनमां छे, त्यां जवाथी तपने तपाप वात जाणवामां आवरो; जर्ह्या जरू ए उत्तम ब्राह्मणनी सीने छोडावी तेने सींपी दिओ; के नेवी तमारी पेठे दिनमतिदिन ए विचारो धर्मभ्रष्ट न थाय. राजा तुरतज ऋषिराजने मणाम करी रथमां वेसी उत्पलाः

वनमां पहोंच्यो. त्यां तेणे पेला ब्राह्मणे वर्णवेल आकृतिवाळी वीलां खाती ब्राह्मणीने जोड पूछ्युं के–कल्याणि तुं विमवर्य विज्ञालना पुत्र सुज्ञामीनी पत्नी छतां आ वनमां ज्ञा कारणथी आवी छे ? ब्राह्मणी वोली के-अतिरात्र नामे वनवासी विवनी हुं पुत्री छुं अने विशालना पुत्रनी पत्नी छुं, हुं घरमां उंघी गइ हती त्यांथी वलाक नामनो दैत्य मने अही उपाडी लान्यों छे. मारा वन्यु तथा माता विगेरेनो वियोग पडावनार ए पापीनो नाश थजो. स्नेही वर्गथी वियोग पामेली हुं अहीं एकली अतिशंय दुःख अनुभवुं छुं, आ विकट वनमां ए राक्षस मने शा माटे लाव्या छे ए हुं हजी समजी शकी नथी. ए राक्षस मने खाइ जवा के भोगववा इच्छा जणावतो नथी. आ रीतें ब्राह्मणीनां वचन सांभळी राजाए कहां के--तारा पतिए मने आंही मोकल्यो छे तने मुकी ए राक्षस क्यां गयो ए तुं जाणे छे ? ब्राह्मणी बोली के ए दैत्य आ वनमांज वसे छे; जो तमने तेनो भय न छागतो होय तो जइ तपास करो. वाद ब्राह्मणीए वतावेछ मार्गे राजा चाली नीक-ळ्यो, थोडे दूर जतां तेणे सपरिवार राक्षसने त्यां वेठेलो जोयो. ते राक्षस पण दूरथी राजाने आवतो जोइ सत्वर मस्तक नमावी प्रणाम करतो तेना चरण नजीक आवी बोल्यो के-महाराज ! आपे मारा उपर महान अनुग्रह करी आपना पवित्र चरणारविन्दथी मारुं ग्रह पावन कर्यु, हुं आपना देशमां वसुं छुं तो मने शी आज्ञा करो छो ? मारा तरफथी आ अर्घ स्वीकारो, आ आपना माटे आसन तैयार छे, वे घडि विराजो; आप अमारा स्वामी अने अमो आपना सेत्रक छीए, इच्छा मुजव आज्ञा करो. राजाए कहुं के-ए तो वधुं ते आतिथ्य कर्धु, परंतु विम सुप्तमीनी स्त्रीने तुं ज्ञा माटे अहीं उठावी लाव्यों छे, जो तुं तेने पत्नी बनाववा लाव्यों हो तो ते कदरुपी छे, तेम तारे वीजी घणी स्त्रीओ छे अने जो तुं तेने खाइ जवा माटेज लाव्यो हो तो तेने खाइ केम न गयो ? आ सांभळी राक्षस वोल्यो के राजन ! अमे मनुष्यतुं भक्षण करता नथी. ए तो अन्य असरोनं काम छे, अनो तो केवळ सुकृतना फळर्थाज अमारुं गुनरान चलावीए छीए. मनु-ट्य तथा विय अनिय स्त्रीओना स्वभावनो फेरफार करी अमी तृप्ति पामीए छीए. अने पाणीतुं भक्षण करता नथी. अमे ज्यारे मनुष्यनी क्षमानी आहार करी जइए छीए त्यारे तेओ क्रोय पामे छे. अने ज्यारे तेओना दुष्ट स्वभाव खाइ जइए छीए त्यारे तेओ सद्गुणी वने छे; राजन् ! अप्तराओधी अविक रुपवाळी खींओ अमारे त्यां छे; तेम छतां मतुष्यनी खींओ उपर अमी शा माटे आसक्त थइए ? आ सांभळी राजाए कहुं के ज्यारे ए स्त्री तने उपभोग के खावाना खपमा आवे तेम नथी तो पछी तुं एने आही शा माटे उपाडी छाट्यो छे ? राक्षस दोल्यो के-राजा !

ए ब्राह्मण मंत्रज्ञ छे हुं दरेक यज्ञमां जाउं छुं त्यां रक्षोब्न मंत्र भणी मार्ह उच्चाटण करे छे. एथी मारुं कुडुंव क्षुधाथी पीडाय छे अने ए ब्राह्मण दरेक यज्ञमां ऋत्विज् होय हो तो अमारे क्यां जवुं ? जेथी आ उपाय शोधी में तेने विकळ वनाव्यो छे. कारणके स्त्री रहित पुरुष यज्ञ कर्प करवा योग्य नथी. आ सांभळी राजाने अति खेद थयो अने पोते विचार्यु के खरेखर आ दैत्य ब्राह्मणनी विकळता वतावी मारीज निन्दा करे छे. जेम प्हेला ऋषिए अर्घ माटे मने अयोग्य गण्यो तेम आ दैत्ये पण ब्राह्मणतुं चैक्रव्य कही वताव्युं. हुं पण स्त्री विनानो होवाथी महान् संकष्ट आवी पडयुं छे. आ रीतें विचार करता राजाने फरी राक्षसे कहुं के--आपना देशमां निवास करनारा आ सेवकने कृपा करी कांइ आज्ञा करो. राजाए कह्युं के--तुं मनुष्योना स्वभावने वदळावी शके छे, तो आ ब्राह्मणीनो दुष्ट स्वभाव दूर कर, जेथी ए उत्तम गुणवाळी वनी जशे अने तेने तेना पति सुशर्माने वेर मूकी आव. आ काम कर्याथी तें मारुं तमाम आतिथ्य कर्युं एम हुं मानी लड्या. राक्षसे राजानी आज्ञा माथे चडावी माया वळें ते स्त्रीना शरीरमां प्रवेश करी पोतानी शक्तिथी तेनो दुष्ट स्वभाव खावा लाग्यो. ब्राह्मणीना क्रूर तथा दुष्ट आचरणो नष्ट थवाथी ते राजाने कहेवा लागी के महाराज ! प्रारब्धने छड़ मने मारा स्वामीनो वियोग थयो तेमां आ राक्षस कारण रुप बन्यो हतो, पण तेमां तेनो विलक्कल दोष नथो, मारा पति पण निर्दोष छे, आमां मारो ज अपराध छे. कारण के करेलां कर्म अवश्य भोगववांज पडे छे. में पूर्व जन्ममां कोइने वियोग पडाच्यो इशे, जेथी आ जन्ममां तेतुं फळ शाप्त थयुं. राक्षस वोल्यो के राजन् ! आ वाइने हमणाज एना पति सुरामीने घेर मुकी आवुं छुं, ए सिवाय मने वीजी श्री आज्ञा छे ? राजाए कहुं के सत्पुरुप तें मारां तमाम काम कर्यो, वस, इवे हुं ज्यारे तने याद करुं त्यारे मारी पासे हाजर थजे. आ आज़ा माथे चडावी ते दैल्य तुरतज दुष्टपणुं दूर थवाथी ग्रुद्ध वनेली ब्राह्मणीने तेना पतिने घेर पहोंचाडी आव्यो।

ब्राह्मणीने वेर मोकलावी राजा निःश्वास मूकी विचारवा लाग्यों के हवे शुं करवाथी मारुं सारुं कहेवाय ? उदार मितवाळा मुनिए मने अर्व माटे अयोग्य लेख्यों अने दैत्ये पण ब्राह्मणने उदेशी मारामां विकळतानुं आरोपण कर्युं; में पोते मारी स्त्रीने रजा आपी, हवे केप करवुं ? ते महा ज्ञानमृत्तिं ऋपिराजने मळवाथी तमाम संशय टळशे अने वधो खुलासो मळशे. आम विचार करी रथमां वेसी राजा त्रिकाल दशीं महिपना आश्रमे गयो. रथमांथी उतरी ऋपि पासे जइ सिवन्य मणाम करी राक्षस सबंधी सर्व हकीकत कही संभळावी. ऋपिए कह्युं के राजन ! ए सर्व

दृत्तांत अने पाछुं अईां आववानुं कारण मारा जाणवामां आवी गयुं छे; उद्देगयुक्त अंतःकरण-वाळा तमे " इवे मारे द्युं करवुं " ए पूछवा धारो छो तो तेनो हुं खुलासो आपुं छुं, ते श्रवण करो. मनुष्योने धर्म, अर्थ, अने काम साधवामां पवळ सहायक स्त्री छे, ते स्त्रीनो त्याग करनार धर्मधी अष्ट थाय छे. स्त्री विनानो पुरुष ब्राह्मण, क्षत्रिय, बैश्य अने शुद्ध गर्म ते होय परंतु ते पोतानां कर्म करवाने योंग्य गणातो नथी. तमे स्त्रीने तजी दीधी ए वहुज बुरुं कर्धुं छे; स्त्रामी गमे तेवो होय तो पण स्त्रीओए तजवो न जोइए, तेग स्त्री गमे तेवी होय तो पण पुरुषे तेनो त्याग न ज करवो जोइए. राजा वोल्यो के ऋषिराज ! हुं शुं करुं ? हुं वधी रीते एनी अनुकूळता जा-ळवतो इतो छतां ते माराथी प्रतिकूळ वर्तन करती जेथी में निरुपाय वनी रजा आपी छे. तेना वियोग विह्नथी पीडित थवानो मने भय रहेतो हतो जेथी में तेनां असह्य वर्तनने पण सहन कर्युः छेवट अति थतां रजा आपवी पडी. इवे ते क्यां इशे ? ए मारा जाणवामां नथी. कांतो एने कोइ हिंसक पाणी अथवा राक्षस खाइ गएल हरो. ऋषिए कहुं के राजन ! तारी स्त्रीने कोइ खाइ गयुं नथी. ते हजी निष्कलंक रीते रसातळमां जीवे छे. तेने त्यां कोण उपाडी गयुं अने ते निष्कंलक शी रीते रही, ए महा आश्चर्य जनक वात तने हुं यथार्थ कहुं छुं ते अवण कर. पाताळमां कपोतक नामें एक अति प्रसिद्ध नाग छोकोनो राजा छे. तेणे गाढ जंगलमां भमती तारी स्त्रीने भाळी ते अति रुपवती होवाथी तेना प्रति नागराजनी पीति थइ; ते तारी स्त्रीनी तमाम वातथी वाकेफ थइ तेने पाताळमां उपाडी गयो. ते कपोतकने मनोरमा नामे स्त्री अने नन्दा नामे पुत्री इती नन्दाए तारी स्त्रीने जोड़ विचार्यु के आ अति रुपाळी होवाथी मारी माताने शोक वनी सालशे. आम धारी ते नन्दाए तारी स्त्रीने अन्तःपुरमां छुपावी राखी. त्यार वाद नागराजे पोतानी पुत्री पासे नारी स्त्रीनी मागणी करी पण तेणे कांइ जवाव आप्यो नहिः जेथी नागराजे पोतानी पुत्रीने सक्रोध शाप आप्यों के "जा तुं मुंगी वनीश." राजन् ! तारी स्त्री हजी त्यांज छे. आ सांभळी राजा खुशी थया अने ऋषिराजने पोतानां दुर्भाग्यतुं कारण जाणवा पूछ्युं के महाराज! सर्व मतुष्योनी मारा उपर अति शीति छे छनां मारी पत्नी मारा उपर नेम जा माटे निह राखती होय ? मने ए प्राणथी पण अधिक व्हाली छे छतां ए मारा प्रत्ये दुष्ट स्वभाव केम दर्शावे छे ? ए कुपा करी कहेशो. ऋषिए जनान आप्यों के राजन्! तें जे समये ए स्त्रीनुं पाणिग्रहण कर्यु ते नखते तारा उपर सूर्य, मंगळ, अने श्वनि ए त्रण ग्रहोनी दृष्टि हती. तेमन तारी स्त्री उपर शुक्र अने बृहस्पतिनी दृष्टि हती, तेनी मृर्तिमां बुध अने तारी मूर्तिमां चन्द्र हतो. ए वन्ने मतिवक्षी होवाथी नेतुं शुभ फळ

तने प्राप्त थतुं नथी. तुं तारे स्थाने जा, अने धर्म पूर्वक पृथ्वीतुं पालन तेमज स्त्री सहित धर्म क्रियाओ कर. आ सांभळी राजा उत्तम ऋषिराजने नमन करी रथमां वेसी पोताना शहेर तरफ रवाना थयो।

राजाए नगरमां आवतां विम छशमीने पोतानी छलक्षणा स्त्रीनी साथे आनंदमां जोयो। राजाने आशीर्वाद आपी ब्राह्मणे कहुं के राजन ! मारा धर्म रक्षण अर्थे तमोए मारी स्त्रीने शोधी आपी मने कृतार्थ कर्यों । राजाए कहुं के विम ! तुं तो धर्म पालनथी कृतार्थ थयो परंतु मने महा संकृष्ट छे. कारणके मारुं गृह स्त्री रहित छे.

ब्राह्मण वोल्यों के-महाराज ! एने तो हिंसक पाणीओं जंगलमां खाइ गयां हशे. आप वीजी स्त्री शामाटे परणता नथी ? क्रोधने वश थइ तमो धर्म रक्षण करी शक्या नहिं राजाए कहुं के-विष मारी पत्नीने हजी सुधी कोइए पराभव पमाडयो नथी. ए निष्कलंकपणे जीवे छे. हवे मारे ह्युं करवुं ? ब्राह्मणे कह्युं के महाराज! जो आपनां पत्नी कलंक रहित जीवतां होय तो स्त्री विना धर्म हानि शामाटे करो छो ? राजाए कहां के-एने अहीं छाववा हुं सर्व वाते समर्थे छुं, पण ए माराथी विमुख वर्ते छे जेथी निरंतर मनमां खद रह्या करे छे. ते मारा उपर विलक्कल प्रेम राखती नथी, जेथी मारुं मन दुःखाय छे. माटे महाराज ! ए स्त्री मने वश्च थाय एवी कांइ तमे यतन करो. ब्राह्मण वोल्यों के राजन्! आपने प्रसन्न करवा अन्योन्य उदास थएलां मनमां पुनः प्रेम मगट करनारी अने स्त्रीपुरुषमां स्तेहनी द्वद्धि करावनारी इष्टिनो हुं आरंभ कर् छुं. तमारां पत्नी ज्यां होय त्यांथी शोधी लावो. हवेथी ए आपना पर अति प्रेम राखशे. आ सांभळी राजाए यज्ञनो तमाम सराजाम मंगावी सुशर्माने आप्यो तेणे इष्टिनो आरंभ कर्यो उत्तम राजानी पत्नी बहुलाना मनने प्रेममय करवा तेणे उपरा उपरी सात यज्ञ कर्या. ज्यारे सुशर्मीए जाण्युं के राज पत्नीनी राजा उपर प्रेम थयो छै. त्यारे तेणे राजाने कहुं के राजन ! जेवो तमारो प्रेम छे तेवोज तमारी पत्नीना अन्तःकरणमां प्रेम प्रगटचो छे. माटे तेने प्रयत्नथी प्राप्त करी तेनी साथे भाग भागवो अने धर्म कार्य करो. आ रीते ब्राह्मणनां वचनो सांभळी विस्मय पामेला उत्तम राजाए महा पराक्रमी अने सत्य प्रतिज्ञावाळा वळाक नामना राक्षसनुं स्मरण कर्यु. तुरतज ते दैत्य राजा पासे हाजर धयो. अने भणाम करी वोल्यों के महाराज! मने शी आज्ञा छे त्यारे राजाए सर्व वृत्तांत कही संभळाट्युं. वलाक तुरतज पाताळमां पहींच्यो अने राज राणी वहुलाने लड्ड आव्यो• नागलोकमांथी आवेली

बहुला पोताना पतिने पेम पृरित नयनोथी निहाळी आनंद पूर्वक वोली के-प्रभु पसन थाओ, मारो अपराध क्षमा करो. राजा बहुछाने सप्तेम भेटी चोल्यो के-िषये! हुं तो सदा प्रसन्नज छुं. त्यारे वहुळाए कहुं के जो तमे मारा उपर प्रसन्न होतो हुं एक वस्तुनी आप पासे याचना करुं छुं ते आपवा कृपा करो. राजाए कहुं के जे तारी इच्छा होय ते सत्वर नि:शंक वनी मागी छे. तारुं अभिष्ट माराथी अपाप्य नथी. हुं खरेखर तारा कवजामां छुं. त्यारे वहुछा बोछी के-प्राणनाथ! मारे माटे नागराजे पातानी पुत्री तथा मारी नियसखी नन्दाने शाप आप्यो छे के " तुं मुंगी थइश." आथी ते विचारी मुंगी थइ छे तो तेनी वंध थएली वाणीनुं निवारण करी मारो मनोर्य पूर्ण करो. राजाए सुज्ञामीने वोलावी पूछ्युं के नागकन्यानुं मौन ज़ी रीते मटे है त्यारे ब्राह्मण वोल्यो के-दुं आपना वचनथी सरस्वती यज्ञनो समारंभ कर्ष छुं; ते नागकन्याने वाचा प्राप्त थवाथी आपनां पतनी तेना ऋणथी मुक्त थरो. राजाए कहुं के-ख़ुशीथी सरस्वती यज्ञनो आरंभ करो. सुरामीए सरस्वतीनी इष्टि शरु करी अने सरस्वतीना सुक्तनो एकाग्र मनथी जप कर्यो जेथी नाग कन्या नंदानी वाणी उघडी गइ. तेने पाताळमां गर्गे कहुं के-आ तारा उपर म्होटो उपकार तारी सखी बहुलाना पति उत्तम राजाए कयों छे. आ सांभळी नाम कन्या नन्दा उत्तम राजाना नम-रमां अति वेगथी आवी पोतानी पिय सखीने मळी अने वारंवार मंगळ वचनोथी राजानी स्तुति करवा लागी. आसने वेटा पछी नागकन्या वोली के -प्रतापी वीर ! आपे करेली महान् उपकार मारा हृदय लोइने चुंवक वनी आंहीं खेंची लाब्यो छे. आपने महा पराक्रमी पुत्र थहो ए मारुं कहेवं सत्य मानजो. ते वाळनी आखी पृथ्वीपर अमितहत आण वर्तशे अने ते तमाम अर्थ शास्त्रने जाणनार, धर्मनी धुरा धारण करनार महान् बुद्धिशाळी मन्वंतरनो अधिपति मनु थशे. आ प्रमाणे वरदान आपी पाछी पोतानी शिय सखी वहुळाने सपेम भेटी ते नागकन्या पाताळमां पहोंची; पोतानी प्रमदा साथे विनोद्यी विहार करता अने प्रेमयी प्रजानुं पालन करता ते उत्तम नामना राजाने त्यां घणा काळ वीत्या पछी पूर्ण चन्द्र समान कमनीय कान्तिवाळो पुत्र जनम्यो. मजा आनंद पामी, देवोना दुन्दुभि वागवा लाग्यां, आकाशमांथी पुष्पनी दृष्टि थइ. हर्ष मदाशित करवा आवेला ऋषिओए उत्तम रूपतिना वंशमा उत्तम समये जन्म पामेळ उत्तम अवयववाळां ते वाळकतं " औचम " एवं नाम राख्यं ते महा मख्यात मनु थयोः तेना समयमां नाम प्रमाणे गुणवाळा देवोना पांच गण हता, पहेलो स्वधामान, वीनो सत्य, त्रीनो शिव, चोथो मर्तर्दन अने पांचमा बज्ञवती. ते देवोना पांचे गणो वार वारनी संख्याना इता. शत यत्रो करी जैलोक्यनुं आ-

धिपत्य पामेलो सुशान्ति नामे इन्द्र थयो हतो. जेना नामाश्तरथी अलंकृत गाथाओ केटलोएक मन्वंतर पर्यंत भूतादि उपसर्गना विनाश अर्थे गवाती हती. ते मनुने देव सरखा सुप्रसिद्ध अने वळवान अज, परशुचि अने दिव्य नामे त्रण पुत्रो थया हता, तेओए कृत त्रेतादि एकोतेर चोकडी पर्यन्त पृथ्वीनुं पालन कर्युं. ते मन्वंतरमां तपोवळथी अधिक तेजस्वी वनेला विश्वष्ठ मुनिना साते पुत्रो सप्तिष् थया हता.

पूर्वे महा पराक्रमी, अनेक यज्ञ करनार अने युद्धमां सदा विजय मेळवनार स्वराष्ट्र नामे प्रख्यात राजा पृथ्वी पर थयो हतो, मंत्रोथी आराधेला सूर्ये तेने दीर्घ आयुष्य अर्प्यु हतुं, तेने सद्गुणथी सुशोभित स्त्रीओ हती पण ते सर्व अल्पायुपवाळी हती जेथी काळे करी ते स्त्रीओ, तेना सेवको, तथा मंत्रीओ सर्व मरण पाम्या तमामना मरण थवाथी राजाना मनमां महा खेद उत्पन्न थयो; ज्ञोक्तथी दिन प्रतिदिन तेतुं वळ ओछुं थत्रा छार्युं; वीर्य विहीन तथा सेत्रकोना समू-इथी रहित ते महा दुःखी राजाने कोइ एक विमर्द नामना पुरुषे तेने गादी परथी उठाडी मुक्यो. जेथी तेना मनमां अत्यंत उद्देग थयो, तेणे वनमां जइ वितस्ता नदीने किनारे महा उप्र तप करवा मांडयुं. ते ग्रीप्म ऋतुना दिवसोमां पंचा म तापतो, वर्षामां खुळी आंखे आकाश भणी जोइ रहेतो, अने ज्ञीतकाळमां जळ महींज पड्यो रहेतो, तेणे आहार पण तजी दीधों हतो. आ रीते द्रढ रत आचरवा लाग्यो. एक वखते चोमासामां रात्रि दिवस अविच्छित्र धाराए दृष्टि थवा लागी, वितस्ता नदीमां महान् पूर आव्युं, वादळना वन्दथी वधे अंधकार छवाइ गयो तेथी पूर्व, पश्चिम के उत्तर दक्षिणतुं पण भान न थतुं; नदीने किनारे वेठेलो स्वराष्ट्र वारिना पूरमां वहेवा लाग्यो, किनारे जवा तेणे घणो श्रम कर्यो पण व्यर्थ, ते तणातो चाल्यो तेवामां जळमां तणाती एक हरिणीतुं पूछडुं तेना हाथमां आन्युं; ते पुच्छना आश्रयथी अंधकारने लीचे पाणीमां आम तेम अथडातो काइ एक किनारे पहोंच्यो; त्यां वणोज कादव हतो, तेने उछंवी सुकी जमीनमां जवुं वणुंज कठिन थइ पड्युं, परंतु ते हरिणीनी पाछळ घसडातो घसडातो रमणीय वननी निकट पहोंच्यो. त्यां पण पृंछडे वळगी रहेला दुर्वळ अने धमणनी माफक खासोच्छीस लेता राजाने हरिणी अंधकारमां घणे दूर घसडी जवा लागी, अंवकारमां हरिणीनी पाछळ अवडाता राजाने पण मृगीना स्पर्श्यो अति आनंद उपज्यो, अनंगे तेना चित्तनुं आकर्षण कर्युं अने पोते हरिणीनी पीठ माथे हाथ फेरवना लाग्यो. हरिणी पण साभिलाप वनी वोली के-राजन ! तमो धुजते हाथे मारी पीठनो शा माटे स्पर्भ करो छो ? आ वखते तमारा मननी दृत्ति जुदीन जणाय छे; परंतु नाय ! तमारुं मन अयोग्य

·PNG

स्थाने आकर्पायुं नथी. हुं आपने गम्या छुं, पण आपना संसर्गमां मने आ छोछ विन्न उत्पन्न करे छे. आ सांभळी राजाने महान् आश्चर्य थयुं. तेणे हरिणीने कह्युं के-तुं कोण छे अने मनुष्य माफक शी रीते उच्चार करी शके छे ? तारा संगममां मने विद्न करनार लोल कोण छे ते मने कही संभळाव. मृगी वोली के राजन ! पूर्वे हुं द्रहवन्त्रानी पुत्री अने आपनी सो सीओमां हुं उत्पला-वती नामे पटराणी हती. आ सांभळी राजा आतुरताथी वोल्यो के-तुं पतिव्रता तेमज धर्मीष्ट छतां क्यां दुष्कृत्यथी आ पशु योनिमां पडी ? मृगी वोली के नाथ ! हुं वाल्यावस्थामां एक वस्तत मारी सखीओं साथे वन विहार करवा गइ हती. त्यां एक मृगीनी साथे आवता मृगने में जोयों, त्यार वाद मृगी पासे जइ में तेने कांइक पहार कर्यों जेथी ते भयभीत थइ भागी गइ, आर्थी मृगने अति क्रोध उत्पन्न थयो. अने तेणे मने कहां के दुछे! आम उन्मत्त केम वनी गइ छे? ते मारी आयान काळ निष्फळ कर्यो, तारां आवां दुष्ट वर्तनने शतकोटि धिकार छे. आ रीते ते मृगना मतुष्य जेवां वचनो अवण करी मारा अंतःकरणमां भय उपज्यो. मे तेने पूछयुं के आ मृगयोनि पामेला तमे कोण छो ? त्यारे तेणे कहां के-हुं निवृतचञ्च नामना ऋषिनो पुत्र छुं. मारुं नाम मुतपा छे; ए मृर्गाने जोइ कामातुर वनेछो हुं हरिणतुं रूप छइ तेनी पाछळ मेम वश थइ चाली निकळयो; एणे मने वनमां लइ जया अभिलापा वतावी जेथी हुं आटले दूर आव्यो छुं. ते एने भय आपी भगाडी मुकी नेथी तने हुं हमणा ज्ञाप आपुं छुं, आ सांभळी ते मृगने मे विनय पूर्वक कहुं के-अज्ञानताथी थएल गारो अवसाव क्षमा करो, मने शाप आपने ए आपने घडतुं नथी. आ सांपळी मृग रुपे रहेल ने सुतपा नामना मुनिए मने वहां के-जी तुं तारुं जारीर मने अर्पण कर तो हुं ज्ञाप न आयुं. त्यारे में कतुं के हुं वनमा फरनार मृगी नथी. तमने कोई वीजी मृगली मळी रहेशे; मारा उपर कामवृति इ.रशो नहि. आ सांभळी अति क्रोधायमान थएल ते मिन रक्तनेत्र करी, ओशने फरहाबी मने कहेवा लाग्यों के " हुं मृगी नथी. " एम हुं कहें छे मांटे हुं शाप आपुं हुं के "जा तुं मृगी यहग, " आ सामळी मने घणोज खेद थयो, त्यार वाद पोताना मयम स्वरुपने भाप्त यएळा ते युनिने में मणाम करी अत्यंत नम्रता पूर्वक कहाँ के-महाराज ! मारा उपर कृषा करो, हुं वाळक छुं, योग्य पुरुष आगळ केवी रीते वोछवुं जोइए ए दण मने आवडतुं नयी; अज्ञानताने लीने जो कांइ मारायी अवस्ति वोलाइ गयुं होय तो समा करो. मारा विता विद्यमान होवाथी हुं स्वतंत्र नथी. जे खीओ स्वतंत्र होय छे ते पोतानी मेळे वितने पसंद करी छे छे. महाराज ! हुं अपराभी यह छुं तो तेनी प्रणामपूर्वक आप पासे माफी मागुं छुं.

मारा उपर करुणा करो. आ रीते में घणा कालावाला कर्या त्यारे ते मुनि वोल्या के--" मारुं वचन कदि पण व्यर्थ थशे निह " तुं आ जन्ममां निह पण आवते जन्म मृगी थइश. ते वखते ए मृगयोनिमां सिद्धवीर्य नामना मुनिनो छोछ नामे पुत्र तारा गर्भमां आगमन करशे. तेना आगमनथी तने तारा पूर्व जन्मनी स्पृति थशे तेमन ते वखते तने मनुष्यनी वाणी प्राप्त थशे. ते गर्भनो जन्म थया बाद तारा स्त्रामीथी सन्मान पामेली तुं मृगयोनिथी निर्मुक्त थइ उत्तम लोकने पामी क्षिकी. तारो महा पराक्रमी पुत्र पोताना विताना प्रतिपक्षीओने परामव पमाडी आखी अवनिने आधीन करी मख्यात मनु थरो. आ रीते ज्ञापने लीधे मरण पाम्या वाद मृगयोनिमां मारो जन्म थयो. अने तमारा कर स्पर्शियी मारा उद्दरमां गर्भ रह्यो. एथीज मारुं मन तमारा उपर अभिलापावां व्यं छे ते तमाम रीते योग्य छे. पण आ गर्भ मध्ये रहेलो लोल आ वखते विध्न कर्ता छे. " पोतानो पुत्र वसुंबरामां विजय मेळवी मनु यशे. " आ सांभळी राजा स्वराप्ट्रने आनंदनो पार रह्यो नहिः थोडा बखतमां ते मृगीने चक्रवर्ताना शुभ लक्षणोथीयुक्त पुत्रनो प्रसव थयो. ए बाळकना जन्मथी प्राणी मात्र हर्ष पाम्यां अने मृगी शापयी मुक्त थइ उत्तम छोकने पामी; त्यां तमाम ऋषिओए आबी ते वाळकतुं भविष्य जोइ तेनी नामकरण क्रिया करी, ते ताममी योनिमां जन्मेली मातायी उत्तन्त थएलो होवायी तेमन तेना जन्म समये तमाम जगोए तम छवाइ जवाथी ऋषिओए कर्चुं के आ तामस एवा नामयी शख्यात थरो. महाराजा स्वराष्ट्रे पोताना पुत्र तामसने वनमां उछेरी म्होटो करी, ते वाळकने ज्ञान शाप्त थतां पोताना विताने कहेवा लाग्यो के तमे कोण छो? हुं तमारो पुत्र ज्ञी शिते थयो! यारी जनेना कोण छे? अने तमे। वनमां ज्ञामाटे निवास करो छो? त्यारे स्वराष्ट्रे सर्व हकीकन कही संभळावी. ते सांसळी तामसे सूर्यनी उपामना करी प्रतिसंहार सहित सर्वे दिव्य अस्त्री पाप्त कर्या, अस्त्री मेळव्या पछी तेणे प्रतिपक्षीओने पराज-य पमार्डी पोताना पिता पासे हाजर कर्या; पुत्र धर्म पाळनारा ताममे जेओने पोताना पिताए छो-डवानी आज्ञा करी ते ओने तुरत छोडी मुक्या. पुत्रनां मुखद्दीन रुपी सुखने अनुभवी देह छोड्या वाद राजा स्वराष्ट्र पोताना तप अने यज्ञ आदियी माप्त करेल उत्तम लोकने पाम्याः तामस तमा-म अवनिने स्वाधीन करी पतु वन्योः; तेना समयमां सत्य, सुरुष, सुर्या अने हरि नामना दरेक सत्यावीशनी संख्यावाळा देवना चार गण थया. ते देवोनो अविपति महा वीर्यवान् अने पराक्रमी शत यज्ञ करी प्रख्यात बनेलो शिखरीन्द्र नामे इन्द्र थयो हतो. ज्योतियीमा, पृथु, काव्य, चैत्र,

अप्ति, वळक अने पीवर नामना सप्तिर्प थया हता. ते तामस मतुना नर, क्षान्ति, ज्ञान्त, दान्त, जातु अने जंघ इत्यादि अनेक वळवान् पुत्रो राजा वन्या हता.

एक ऋतवाक् नामे महा प्रसिद्ध अने भाग्यशाळी ऋषि अपुत्र हतो, तेने रेवती नक्षत्रने अंते एक पुत्र थयो, ऋष्टिए ते बाळकनी जात कर्ष आदि तमाम क्रियाओ यथ विनि करी उपवीत संस्कार पण कर्यो; परंतु ते वाळक दृष्ट आचरणपाळो निवड्यो, ज्यारथी ए वाळकने। जन्म थयो त्यारथी तेना पिता ऋन्वाक् महा भयंकर रोगथी पीडा पामवा लाग्या अने तेनी माताने पण क्रष्ट आदि रोगनी पहा न्यथा उत्पन्न थर, न्यथित ऋत्वाक् ऋषि ए व्यथानुं कारण विचारवा लाग्या, तेत्रामां तेना दुराचरणत्राळा वाळके कोइएक मुनिपुत्रनी संमुखी नामनी स्त्रीने ग्रहण करी. आ व-नावथी अन्तःकरणमां क्वेश पामेला ऋत्वाक् ऋषि वोलवा लाग्या के-क्रपुत्र करतां मनुष्य अपुत्र रहे एज उत्तम छे. माता अने पिताना अन्तःकरणने निरंतर वाळनार कुपुत्र स्वर्गस्य पितृ-ओने अधोगति अर्पण करे छे; ते पोताना स्नेही वर्गतुं सारुं नहि करतां मातिपेताने पण आनंद पपाडतों नथी, मात्र मातापिताने दुःख देनार दुराचारी पुत्रना जन्मने शतकोटि विकार छे. जेनो पुत्र लोकमां मान मेळवे छे; परोपकार करनार शान्त स्वभावतान् अने उत्तम कर्म करवामा उत्सक पुत्रीना मातिपता धन्यवादने पात्र याय छे, जेनुं जीवित कुपुत्रने आयीन छे तेने स्वप्ने पण शान्ति प्राप्त थती नथी, कुपुत्रना मातिपतानुं जीयन परलोक्तथी थिमुख अने मंद वनी जाय छे, तेनी सद्-गति न थतां नरकमां जाय छे; पोतानां स्नेहीओने कष्ट आपनार कुपुत्र दुउमनोने राजी करे छे अने माताविताने समय बगर माप्त थएछं द्वद्धावस्थातुं दुःख देखाडे छे, आ रीते पोताना दुराचारी पु-त्रना आचरणयी पीडा पामता ऋषिए आ वात संबंदी वर्तमान गर्भने पूछ्युं के महाराज! पूर्वे मे ग्रम वृत पाळी यथाविवि वेदोनुं ग्रहम कर्यु छे अने यथाविवि तेनी समािन करी मे यहस्याश्रम र्स्वाकार्यु छे, श्रीत, स्मार्न अने वपट्कार युक्त ने कियाओ ख़ीवाळा पुरुषे करवी जोइए तेमा मे कोइ दहाडो खामी आववा दीशी नथी; में विषय बांछताथी नहि परंतु पुनामना नाकथी बचवा खातर विधिनत् गर्भाधान करी आ पुत्रनी उत्वित करी, ते पुत्र कोण जाणे पोताना के मारा दोपयी दु-राचारी वनी स्नेहीओने शोकपद अने अमीने दुःख देनार निवड्यो. आ रीतना ऋत्याक्तां वच-नो श्रमण करी गर्ग महाराज बोल्या के-ऋषिराज! आ तमारा पुत्रनो जन्म रेवतीना अंत भागमां थयों छे; ए दुछ योगमां उत्पन्न थयेल पुत्र दुःखदायक नीयडे एमां नयाइ नयी. आमा तमारी, त भारां पत्नीनो, कुळनो के ए पुत्रनो काइ पण दौप छेज निहः ते पुत्र दुराचाणी थवातुं कारण रेवतीनो अस्त समयज छे. आ सांभळी ऋतवाक् वोल्या के--मारो एकनो एक पुत्र दुराचरणी थवानुं कारण रेवतीनो अंत समय छे तो हुं कहुं छुं के तुरतमां ए रेवतीनुं पतन थाओ, ऋत्वा-क्ना आ वचननी साथेज रेवतीनो पृथ्वी उपर पात थयो; रेवती नक्षत्रने पृथ्वी उपर पडेछं जोइ तमाम छोकोने आश्रये थयुं. ए नक्षत्र कुमुद पर्वतनी उपर चोपासे पडयुं, जेथी ते पर्वतनी गुफाओ, हक्षो, झरणाओ अने वनआदि तमाम भागो। प्रकाशित थइ गया, ते दिवसथी। कुमुदादि रैवतक नामे प्रसिद्ध थयो. अने पृथ्वीना तमाम पर्वतो करतां श्रेष्ठ कहेवायो. ए नक्षत्रनी प्रभामांथी कपळनाळयुक्त एकसर उत्पन्न थयुं, तेमांथी अत्युक्तम स्वरूपवाळी एक कन्या प्रकट थइ. रेवतीनी मभाथी प्रकटेली ते कन्याने जोइ पमुच नामना मुनिए तेतुं "रेवती " नाम पाडयुं. रैवतकनी निकटमां प्रमुच मुनितुं आश्रम इतुं, पोताना आश्रमनी समीपे जन्य पामेली ते कन्याने प्रमुचे पाळीपोपी म्होटी करी; काळे लड़ रेवतीने यौवन माप्त थयुं, रेवतीनुं रुप जोइ मुनिने विचार थयों के आने इवे परणाववी क्यां ? घणों काळ वीती गयो छतां ते कन्या योग्य कोइ पण वर न मळ्यो. रेवतीनो पति कोण थरो ? ए सर्वधी अप्ति देवने पूछवानुं विचारी प्रमुच मुनि अप्रिशा-ळामां पथार्या; अग्निदेवे मुनिने कहुं के--महा पराक्रमी, वीर्यवान् , प्रियंवद अने धर्मनुं रक्षण करनार " दुर्गम " नामनो राजा रेवतीनो पति थशे. तेवामां बुद्धिशाळी राजा दुर्गम मृगया अर्थे निकळेल ते प्रमुच मुनिना आश्रममां आवी पहोंच्यो; नियत्रतना वंशमां उत्पन्न थयेल महान् विक्रमवाळा, कालिन्दीना पराकमी पुत्र दुर्गमे आश्रममां प्रवेश करतां मुनिने जोया नहिः जेथी त्यां हाजर रहेटी परम सुन्दरी रेवतीने निये ! एवं संवोधन आपी कह्यं के समर्थ मुनिराज आश्रममां केम जणाता नधी ? क्यांइ वाहेर पथार्था छे ? सुन्दरि! हुं तपोने पसन्न करवा चाहुं हुं मने सत्य वात कहो. अग्निशाळामां उभेला ममुच मुनिए राजा दुर्गमनुं आ रीतनुं भापण तथा " विये " ए संवोधन श्रवण करी सत्वर वाहेर आवी पोताना आश्रममां समग्र राज चिह्न संपन्न सविनय स्थित थएल राजा दुर्गमने जोइ शिप्य गौत्तमने आज्ञा आपी के-आ महीपति माटे तुरत अर्घ लड़ आव, महिपाल शोते एकाकी तेमज चणे दहाडे पंचार्या छे; अने वळी जमाइ, जेथी अर्घने पात्र छे.

minimum minimum partition of the minimum manimum manim

आ सांभळी राजाए विचार्य के -मने जमाइ कहेवातुं द्युं प्रयोजन हरो ? ए समजातुं नियी. जे हरो ते जणाइ आवशे. एम धारी जरा मौन रही मुनिए आपेळ अर्थ ग्रहण कर्यो. आसने वेसाड्या पछी प्रमुचे तेनो घणो आदर सत्कार करी अनेक रीते कुझळ पृछ्युं; राजा दुर्गमे कर्युं

हिंड छिए मुच्च विस्तु थीए. ते पूर्व कम्मे सिद्ध थांचे, विस्तु चार्य विस्तु विस

के-महाराज ! आपनी कृपाथी सर्व कुशळ छे, परंतु मने आश्चर्य ए थाय छे के आ जगोए मारी कइ स्त्री छे ? त्यारे मुनिराज प्रमुच वोल्या के-राजन् ! जे त्रिळोकीमां एकज सुंदर स्त्री छे ते आ उत्तम अंगवाळी रेवती आपनी अर्धीगना छे; शुं तमो तेने पिछाणता नथी ? आ सांभळी राजा दुर्गम वोल्यों के सुभद्रा, सुराष्ट्रजा, सुजाता, कदंवा, वरुथजा, विपाठा अने नन्दिानी आदि मारी स्त्रीओ छे. तेओने हुं सारी रीते ओळखुं छुं, पण आ रेवती कोण ? त्यारे मुनि वोल्या के जे मुन्दरीने हमणा आपे " पिये " ए प्रमाणे संवोधन आप्युं ए द्युं आपनी स्मृति वहार छे ? ए प्रशंसनीय प्रमदा तमारी पत्नी छे राजा बोल्यो के महाराज ! में " विये " ए प्रमाणे संबोधन आप्युं ते वान खरी, पण ए दुष्ट भावधी कहुं नहोतुं. हुं आपने सविनय कहुं छुं के कृपा करी आप मारा उपर कोप नहीं करहाो. ऋपिए कहुं के-राजन ! तमे यथार्थ कहुं छे तमारा भावने हुं दूषित गणतो नथी; अग्नि देवनी पेरणाथीज तमारा मुखमां " िषये " ए शब्द आव्यो छे. में इमणाज अधिशाळामां जइ अधिदेवने पृछ्युं के आ कन्यानो पति कोण थहो ? त्यारे ते समर्थ देवे आपनुंज नाम आप्युं; जेथी आ कन्या हुं आएनेज अर्पण करुं छुं ते स्वीकारो; तमो तेने " पिये " कही चुक्या छो तो इवे विचारवानुं प्रयोजन नथी। आ सांभळी राजा दुर्गम कांइ पण बोली शवयो नहि, कन्याना विवाह विधिनी तैयारी करवा प्रमुच मुनि तत्पर थया. ते वखते रेवती पोताना पिताने सविनय कहेवा लागी के तात ! मारो विवाह कृपा करी रेवती नक्षत्रमां करशो. ऋषिए कहुं के—कल्याणि ! इपणा रेवती नक्षत्र चन्द्रना योगवाळुं नथी, ए सिवाय तारा विवाहने योग्य अन्य अनेक नक्षत्रों छे. त्यारे कन्या वोली के-ए नक्षत्र विनानो समय मने निष्फळ जणाय छे. एवा निष्फळ काळमां मारां लग्न शी रीते थाय ? आ सांभळी ऋपि वोल्या के ऋतवाक नामना ऋषिए रेवित जपर क्रोध करी तेने पृथ्वी जपर पाडेल छे अने हुं तने राजा दुर्गमने आपवा मित्रा करी चुक्यो छु; इवे तुं आम कहे छे जेनी मनरे माथे आ महान् संकष्ट आवी पडयुं. कन्या वोली के तात ! ऋनवाक् ऋषिए एटछं वधुं शुं तप कर्युं छे अने आपे शुं नथी कर्यु ? हुं शुं कोइ अथम द्विजनी आत्मजा छुं ? आ सांभळी ऋपि वोल्या के वाले ! तुं उत्तम तथा तपस्त्री ब्राह्मणनी पुत्री छे; हुं के जे नता देवो उत्पन्न करवा समर्थ छुं तेनी तुं पुत्री छे. कत्या वोली के-आप तपस्त्री मारा तान छो तो ए नक्षत्रने फरी गगनमां स्थापी एज नक्षत्रमां मारा लग्न शा माटे करता नथी ? ऋषिए कहुं के भद्रे ! तारुं कल्याण थाओ; हुं तारी इच्छा मुजब वरुं छुं, खुशी था एम कही रेवतीने प्रमुचे पूर्ववत् तुरतज चन्द्रना योगवाछुं

कर्षे अने मंत्र योगवाळा विवाह विधियी पोतानी पुत्री प्रसन्नता पूर्वक राजा दुर्गमने परणांवी अने "हुं पहेरामणीयां आपने हुं आपुं?" एम वार्त्वार प्रमुच मुनि राजा दुर्गमने कहेवा लाग्या; वळी कहां के—राजन्! मारा महा वळतान तपना प्रभावधी दुर्लभ पदार्थ पण हुं आपने आप्वी समर्थ छुं, माटे खुर्शीथी कहों, त्यारे राजा दुर्गम वोल्यो के—ऋषिराज! मारो जन्म स्वायंभ्रव मतुना कुळमां थयो छे तो आपनी कृपाथी मन्वतरनो अधिपति थाय एवा पुत्रनी मारे इच्छा छे ऋषिए कहुं के—राजन्! तपारी इच्छा पूर्ण थक्षे; तमारो पुत्र मतु वनी तमाम पृथ्वीने भोगवनार अने महा धर्मज्ञ थक्षे. आ रीत मुनिराज प्रमुचनो आजीर्वाद पामी राजा दुर्गम परम सुन्द्री रेव-तीनी साथे पोताना हाहेर तरफ रवाना थयों, त्यां पहोंच्या पछी थोडा वखतमां रेवतीथी "रेवत" नामे मतु उत्पन्न थयो ते मानव धर्म युक्त समग्र ज्ञास्त्रना तत्वने समजनार, पेद विद्यामां अने अर्थ ज्ञास्त्रमां मेहों निपुण बन्यों. आ रेवत मतुना समयमां चाद चादनी संख्याँबाळा सुमेघा, भूपित, वैक्तंड अने अमिताभ नामे देवना चार गण थया; तेनो इन्द्र ज्ञतयज्ञनो करनार विभ्र नामे पख्यात थयो तेमज हिरण्यलोमा, वेदश्री, ऊर्ध्ववाह, वेदवाह, सुधामा, पर्जन्य, अने वेद तथा नेतन्तनों पर पोमेला विश्व ए सप्तर्षि थया, रेवत मतुना वलवन्य, महावीर्य, सुयष्ट्य अने सत्यक आदि पुत्रो थया, तेणे घणो वखत पृथ्वी भोगवी.

हते छहो चाक्षुप मनु थयो. ते पूर्व जन्मे समर्थ ब्रह्मदेवना चक्षुयो उत्पन्न थयेछो हतो जिथी वर्तमान जन्ममां पण तेनुं नाम "चाक्षुप" ए रीने प्रिसिद्ध थयुं, एनो जन्म थयो ते चलते तेनी माता तेने गोदमां छह हेत करती हती तथा प्रेमपूर्वक छानी साथे चांपता हती अने अनेत रीते हुळावती हती. पण ते वाळक तो जातिस्मर जन्मयो हतो. ते मातानी गोदमां खेळतो खेळतो हास्य करवा छाग्यो, जेथी तेनी माताए क्रोथ पूर्वक क्युं के तुं हसे छे शामांटे! मने डर छागे छे. तने अकाळ बान उपज्युं के शुं ? अयवा तने कांइ मिय वस्तुना दर्शन थयां के शुं? आ सांभळी वाळक बोल्यों के—माजी! आ तारा मुख पासे उभेळी छे. शुं हुं एने नथी भाळती? तुं पूर्ण वातसल्यताथी मारा तरफ प्रेमभरी दृष्टिए जुए छे, फरी फरी छानी माथे चांपी मारं मुख चूमे छे, स्नेहधी तारां रोम खडां थयां छे अने आंक्यां प्रेमनां आंमु वहे छे. आथी मने हमनुं आव्युं. माता! जेम तुं मारा उपर प्रेम जणावे छे तम आविलाही स्वार्थमां आमक वनी मने चाहे छे. अने आ अहत्य धड डभेली जातहारिणी पण मने उट.वी जवा इन्छे छे, तेम ए

वन्ने मात्र स्वार्थने लीधे स्नेहार्द्र अन्तःकरणथी मारा तरफ आकर्पाय छे. तेम तुं ५ण स्वार्थनी खातर मारा उपर स्नेह बतावे छे, मात्र तफावत एटलोज छे के आ मार्जारी तथा जातहारिणी तुरतमां मारो उपभोग करवा चाहे छे. अने तुं क्रमे करी मारा तरफथी फळ मेळववा चाहे छे. हुं कोण छुं ते तारा जाणवामां नथी, में तारा उपर कांइ उपकार करेल नथी. तेम तारी अने मारो समागम लांवा समयनो नथी, मात्र पांच सात दिवसनो ज छे. छतां आंखमां स्नेहजळ आणी तुं मारा उपर प्रेम वतावे छे अने "भाइ! तारुं कल्याण थाओ " एम वारंवार शुद्ध अन्तः-करणथी कहे छे आ सांभळी माताए कहुं के-पुत्र! प्रत्युपकारनी इच्छाए हुं तने हेत करती भथी छतां ए तने सारुं न लागतुं होय तो आजथी तें मने तजी दीधी एम हुं समजुं छुं; ताराथी हुं स्वार्धेनी तमाम इच्छा छोडी दुं छुं. आटलुं कही वाळकने त्यांज पडतो मुकी ते सूतिका गृहमांथी तुरतज वाहेर चाली नीकळी; माताए तजी दीधेला अने जेनी वाह्येन्द्रियो जड छे एवा ग्रुद्ध अन्तः करणवाळा ते वाळकने तुरतज त्यां उभेळी जातहारिणीए उपाडी लीघो. राजा विकान्तनी रा-णीए एक पुत्र प्रसच्यो इतो तेने स्थाने आ वाळकने मूकी ते प्रसवेला विकान्तना पुत्रने त्यांथी लड् लीधों, तेने त्रीजे घेर मृकी दीधों अने ते त्रीजाना वाळकनुं ते भक्षण करी गइ. आ रीते अति निर्देय स्वभाववाळी ते यातुधानी हमेशां त्रण जगो नदली त्रीजा घरना वाळकने खाइ जती, हत्रे चाक्षुय के जेने जातहारिणी राजा विकान्तने घेर मुकी आवी तेने राजा विकान्ते पोतानो ज पुत्र मानी उत्तम रीते क्षात्र संस्कारो कराव्या अने परम आनन्द पामी विधिपूर्वक ते कुमारनुं नाम पण "आनन्द" राख्युं. त्यारपठी तेने उपवीत संस्कार कर्यो त्यारे गुरुए कह्युं के भाइ! तारी मातानी आगळ जइ तुं प्रणाम कर. आ सांभळी कुमार हसीने बोल्यो के मारी कर माताने हुं करं? जनेताने के पालक गाताने? त्यारे गुरु वोल्या के-भाइ! जारुजनी पुत्री अने विक्रान्तनी राणी "हैिंपनी" तारी जनेता आ रही. आनन्द कुमारे कहां के-गुरुदेव! आ तो विशाळ गाममां वसनार "वीघ" नामे द्विनवरना पुत्र चैत्रनी जनेता छे; मारी जनेता जुदी छे. आ सांभळी गुरुने महा आश्चर्य लाग्युं अने तेणे पृछ्युं के भाइ आनन्द! त्यारे तुं क्यांथी आव्यो छे? अने तुं " चत्र " कहे छे ए कोण ? आ वात अमोने त्रिटंबना उत्पन्न करे छे. तारो जन्म क्यां थयो छे अने आ तुं हां करे छे ? त्यारे आनन्द कुमार बोल्बो के गुरुदेव ! हुं अनिपत्र नामना क्षत्रि-यने घेर गिरिभद्रा नामनी मानाथी उत्पन्न थयो छुं. मने त्वांथी जानहारिणी अही " हमिनी " पासे उपाटी छात्री छे तेमज " हैमिनी " ना वाळकने वोबेन बेर लट गड छे अने वोधना पुत्रनुं

LINGHON WINDOWN WINDOWN WIND WARM WARMING WARM

ए भक्षण करी गड छे; हैमिनीना पुत्रने वे।धने घेर द्विमना संस्कारो कराइ तमोए गुरु वनी आ साथ मने क्षात्र संस्कार कयी जेथी आवतुं वचन मारे माथे चडावतुं जोइए तो कृपा करी कहेज़ो के हुं कड़ माताने प्रणाम करुं ? आ सांभळी गुरुए कर्युं के-पुत्र ! अमो गहन सं-कटमां आवी पड्या, इवे शुं करवुं ? ए कांइ समज पडती नयी. मारी बुद्धि आ वखते भ्रमित वनी गइ छे. आनन्द बोल्पो के गुरुवर्ष! विश्वनी गति विचित्र छे, एमां मोह पामवातुं कांइ कारण नथी; कोइ कोइनो पुत्र के कोइ कोइनो बांधव नथी। जन्म धारण करतां एक बीनानो सबंप वंधाय छे, मृत्यु थतां पूर्वनो सबंध त्रुटी जाय छे अने फरी देहनो जन्म थता जे निवन सबंबो जोडाय छे ते पण देहना अंतनी साथे विनाश पामे छे. ए रीते यथाक्रपे काळचक चाली रहां छे, माटे संसार-मां रहेनार मातिवता के भ्राता भिगनी कोइयग कायमनां सर्वधी होतांज नथी। ज्ञा वास्ते आ-पनी बुद्धिने भ्रमजळमां भटकावो छो? मने आ देहेज वे माता अने वे पिता पाप्त थयां तो देह-नो अन्य जन्म थतां अन्य मातांविता थाय तेमां ते नबाइ शी ? आ महाराजा विकान्तनो "चेत्र" विशास गाममां छे तेने अहीं तेडो सावजी. हुं तो हवे तर करवा इन्छुं छुं माटे सर्वे आज्ञा आपो. आ सांभळी बांधव अने स्त्रीसमेत राजा विकान्त विस्मित थयो अने आनन्द कुमार उपरनी ममता मेली तेने वनमां जवा आज्ञा आपी; वोध नामना ब्राह्मणे "चैत्र "ने पुत्रवत् पाळी पोपी रहोटो क्यों हतो त्यां जइ राजा विक्रान्ते तेना चित्तने संतुष्ट करी पोताना चैत्र कुमारने ग-हेरमां लावी गादीपति बनाव्यो.

आनंद कुमारे वन गमन करी मुक्तियां विश्व करनार कर्मना नाग अर्थ नयनो मारंभ करीं, ए तप करता कुमारने ब्रह्मदेवे आवी कर्ल के वत्स! तुं आवुं उग्र तम बामाटे आचरे छे ? आनंद बोल्यो के—भगवन्! वंधनकारक कर्मनो विनाश अने आत्मनी झुद्धिने अर्थ में आ नयनो ममारंभ कर्यों छे, आ सांभळी ब्रह्मटेवे कर्ल के कुमार! तुं मुक्तिनो अभिकारी नर्था. कर्मवामनाओथी वींटायेलो छे, परंतु मनुनो अधिकार भोगव्या पठी नने मुक्ति मळने. हनु नारे छहा मनुनुं पद धारण करवानुं छे माटे जा, मारी आज्ञा प्रमाणे कर, मारां वचनर्धा नने मुक्ति भाम थहा, नय क रवानुं तजी हे, आ रीते ब्रह्मदेवनी आज्ञा थनां आनंद कुमार "अस्तु" कही नय छोटी न्यांथी कर्म करवा चाली नीवळ्णे. तपनी निष्टित बखने ब्रह्मदेवे नेने "च जुष" क्हीने बोलावेळ, नेथी ने कुमार पोताना "चान्छप" ए रीनना पोताना पूर्व नामधी शब्द्यान मनु थयो। नेने राजा उग्र-

नी विद्र्भी नामनी कन्या साथे छत्र कर्या, तेनाथी चाक्षुप मनुए घणा पराक्रमी पुत्रो प्रकट कर्या. आ चाक्षुप मनुना मन्वंतरमां यज्ञना ह्व्यनुं अदन करनार तथा प्रसिद्ध कर्मत्राळा "आर्य" नामना अष्टदेत्रोनो प्रथम गण, महा तेजस्वी तथा दुर्लभ द्र्शनत्राळा "पसूत" नामना अष्टदेत्रोनो द्वितीय गण, "भव" नामना अष्ट देत्रोनो तृतीय गण अने "यूथग" नामना अष्ट देत्रोनो चतुर्थ गण थयो. तेज मन्वंतरमां अमृत भोजन करनार "लेख" नामना देत्रोनो पांचमो गण पण हतो. यज्ञ भागनो उपभोग करनार ज्ञात्यज्ञ करी प्रसिद्ध थएलो "मनोजन" नामे तमाम देत्रोनो अवि-पित थयो; गुपेथा, विरजा, हिन्पान, उन्नत, मञ्ज, अतिनाम अने सहिष्णु नामे सप्तर्पिओ धया. तेम ए महा प्रतापी चाक्षुप मनुना उरु, पृष्ठ अने ज्ञतत्रुमान् आदि महा प्राक्रमी पुत्रो अविनना अधिपति थया हता.

विश्वकर्मानी महा भाग्यवती संज्ञा नामे पुत्री समर्थ सूर्य देवनी स्त्री हती; सूर्यथी संज्ञाने विषे महा ज्ञानी, यगस्वी अने प्रख्यात मनुनो जन्म थयो. सूर्यनुं बीजुं नाम विवस्थान् छे. अने तिथी उत्पन्न थयों माटे ते ववस्वत मनु कहेवायो; ज्यारे सूर्य संज्ञा भणी दृष्टि करता त्यारे ते आंखो वींची जती, जेथी सूर्य कोधायमान वनी कडोर वचन कहुं के-मने निहाळी तुं नयनोनो संयम करे छे माटे तने मनानो संयम करनार " यम " नामनो पुत्र थहो. आथी भयभीत वनी संज्ञा देवीए पोतानां नेप चपळ कर्याः फर्रा मूर्ये तेने चंचळ चक्षुवाळी जोइ कर्युं के-मने जोड तुं दृष्टिने चंचल करे छे, माटे ताराथी एक चंचळ पुत्री नदी जन्म पामशे त्यार वाद पतिथी शाप पामेली संजाए यम अने महा नदी यमुनाने जन्म आप्यो; संज्ञा देती सूर्यमुं तेज महा कप्रथी सहन करती. ज्यारे तेनाधी तेज सहन न थयुं त्यारे नेणे विचार कर्यों के -हवे मारे हुं करवुं ? क्यां जवाधी निष्टति मळे े मारा पितने शी रीते क्रोध न थाय ? आम अनेक रीते शोच विचार करी संज्ञा देवीए पोताने पीयर जवानुं उत्तम गण्युं अने पोतानुं खायारप अन्य शरीर उत्पन्न करी सूर्यनी स्त्री वनावी तेने सूचना करी के--आ सूर्यना गृहमां सूर्य तथा तेनी संति तरफ हुं जेवी रीते वर्त छुं तेवीज रीते तारे वर्तन करवुं, मारा जवा सर्वथी तने कोइ पृछे तो पण तारे कांइ बहेवं नहि. " हुं ज संज्ञा छुं. " ए प्रमाणे हमेजां तारे द्रह राखवुं. आ सांभळी छाया संज्ञा घोली के-देवि ! केशाकर्षण के शाप पदान ध्यां सुत्री नहि थाय त्यां सुत्री हुं तारां वचन मुजव वर्तन राग्वीश, परंतु ए वेषांथी एकनो पण प्रमंग प्राप्त थशे तो हुं तमाम इकीकत कही आपीश.

" वहु सारु " एम कही संज्ञा देवी पोताने पीयर गइ. त्यां तेणे तयना प्रभावथी निष्पाप थएला पोताना जनकने जोया विश्वकर्पाए निष्कलंक पुत्रीने निहाली अति मान आपी तेनो सत्कार कर्यो; संज्ञा देवी त्यां आनंद पूर्वक केटलाएक दहाडा रही, हजी कांइ वधारे दहाडा वीत्या न हता तेवामां भगवान् विश्वकर्पाए पोतानी पुत्रीने मान पूर्वक प्रशंसा करी कह्युं के वेटा ! अर्हा तारा आगमनथी मने वहु आनंद रहे छे, घणा दिवसो वीत्या छतां तुं आजेज आवी होय एम मने जणाय छे, पण वेटा! धर्मनी हानि थाय छे; स्त्रीओए लांबो वखत पीयरमां रहेबुं उचित्त नथी, पोताना स्वामीने घेर रहेतां पुत्रीनी प्रतिष्टा वधे छे. एम अमारी मान्यता छे; तुं त्रिलोकीना स्वामी सूर्य नारायणनी स्त्री छे; माटे आंही तारे झाझा दिचस रहेबुं योग्य नथी, तुं तारा स्त्रामीने घेर सिधात्र, हुं तारां आचरणथी अति संतुष्ट थयो छुं; पाछी इच्छा थाय त्यारे खुज्ञीथी मळी जमे. आ रीते पितानां वचन श्रवण करी पोताना जनकतुं यथाविधि अर्चन करी संज्ञादेवी उत्तरकुरु तरफ रवाना थइ; सूर्यना तापथी व्यथित वनेली अने तेना तेजथी भयभीत थएली त्यां अश्विनीनुं स्वरूप धरी तप करवा छागी; हरे त्यां सूर्यनारायणे छायाने " साक्षात संज्ञा छे " एम मानी तेने विपे वे पुत्र अने एक पुत्री उत्पन्न करी; छाया संज्ञा पोतानां वाळको उपर जेवो पेम राखती तेवो संज्ञाना वे पुत्र तथा पुत्री पर प्रेम न राखती; आ पक्षपात वैवस्वत मनुए तो सहन कर्यो, पण ते यमथी सहन न थयुं, तेणे छायाने लात हणवा क्रोधथी पग उपाड्यो, पण पाछळथी दया आवतां तेम न कर्यु, आ जोइ छायाना हृदयमां क्रोध व्याप्शे, अने तेणे आष्ट फरकावी ज्ञाप आप्ये। के हुं तारा वितानी स्त्री तारी माता थाडं तेने तुं मर्यादा गृकी पग प्रहार करवा तत्पर थयो; जथी आजेज तारो ए पग बुटी पृथ्वी पर पड़ी ज़जे. छायाना ज्ञापथी भय पामेळा यमे पोताना पिना सूर्य पासे जह प्रणाम करी कहाँ के-तान ! आजे एक अपूर्व आर्थ्यनी वात बनी हुँ , मारा उपग्नो पुत्रपेम छे।डी मारी माना मने आजे ज्ञाप आपे छे; मतुना कहेवा मुजव आ मारी माना नयी,कार-णके पुत्र दुर्गुणी होय तो पण माता तेना जेवी थती नथी; यमनां यसन सांभळी सूर्ये छायामंज्ञाने घोटाबी बहुं के--संज्ञा वयां गइ ? छायाए जवाव आप्यो के--विश्वकर्षानी पुर्वा अने आपनी स्वा हुं पोतेज संज्ञा छुं. तमोए माराथी संतानो उत्पन्न कर्या छे. सूर्ये अनेक राने पक्ष कर्या छनां छायाए सत्य बात न कर्ता न्यारे सूर्य नारायण क्रोधर्धा तेने ज्ञाप देवा तत्यर थया छ।याण तुरनम खरी त्कीकत कही आपी. छायाना मुखर्थी तमान हतान्त सांभर्छी सूर्य विश्वकर्माने न्यां गया; विश्वकर्षाए त्रिलोकीना पृच्य सूर्य नारायणनुं यथाविधि अर्चन कर्युः ज्यारे सूर्य देवे मंहाना समा-

चार पृछ्या त्यारे विश्वकर्माए कहुं के--भगवन् ! संज्ञा मारे त्यां आवेल हती, परंतु में तेने पाछी आपने त्यां मोकलेल छे. आ सांभळी सूर्ये ध्यान द्वाराए जोयुं त्यां संज्ञाने उत्तर कुरुमां घोडीने रुपे तप करती भाळी, तप करवामां संज्ञा देवीनो ए मनोरथ हतो के--" मारा पनि ज्ञान्त मूर्तिवाळा अने उत्तम आकृतिवाळा वने '' आ वात सूर्य नारायणे ध्यानथी जाणी लीधी. जेथी पोते विश्व-कपीने कहुं के--मारुं तेज ओछुं करो. आ सांभळी सुरना समुद्दे समेय स्तवन कराता विश्वकपीए वर्रना भ्रमणमां सूर्य नारायणनुं तेज ओछुं कर्युः देवताओए सूर्यनी पण अनेक प्रकारे स्तृति करी, जेथी तेजना समृह रुप अने विकार रहित सूर्यदेवे पोतानुं तेज तजी दी युं, तेना रुग्वेद रुप तेजथी पृथ्वी; यज्जेंद्र रुपयी आकाश अने साम रुपयी स्तर्ग थयुं, भगवान विश्वकर्मीए सूर्यना तेजना पंदर अंग ओछा कर्या तेमांथी तेणे महादेवनुं त्रिशूल, विष्णुनुं चक्र, वसु, शिव, अने अपिटेवनी महा भयानक शक्तिओ, कुवेरनी पालखी, अन्य देवोना जे जे दारुण अस्त्रो छे ते तथा विद्याधरनां शस्रो पण वनाव्यां, वाकी रहेल सोळमो भाग हजी सूर्य नारायणे धारण करेल छे. भगवान् विश्व-कर्माए सूर्यना तेजना पंदर भाग ओछा कर्या. बाद सूर्य अश्वनुं रुप धारण करी उत्तर कुरु तरफ चाली निकळ्या त्यां अश्विनी रूप धारण करी रहेली संज्ञाने जोड़, संज्ञा देवीए पण सूर्यने आवता जोइ पर पुरुपनी आशंकाथी पोताना पृष्ठ भागनुं रक्षण करवा माटे तेना सामुं मुख राखी चाली. वन्ने एकत्र थयां, ते वखते नासिका योग थयो, जेथी ए अश्विनीना मुखथी अश्विनी कुमार जन्म पाम्या, तेमज वीर्यमांथी ढाल, तलवार क्वच सहित वाण अने भाथा समेत अन्व उपर आरुढ थएल रेवंत नामे पुत्र जन्म्यो त्यार वाद संज्ञा देवीने सूर्य पोतानुं अनुपम खरूप बतान्युं ते जो? संज्ञा देवीए हर्ष पामी पोतानुं मूळ स्वरुप धारण कर्युः; जळनुं ज्ञोपण करनार सूर्यदेव नेमशाळी पोतानी पत्नी संज्ञा देवीने घेर लाव्या, तेनो जे म्होटो पुत्र वैवम्बत हतो ते मनु थयो, तेथी न्हानो पुत्र वर्म दृष्टिवाळो तथा मित्र शत्रु पत्ये समान भाव राखनार तेमन छायानो शाप पामेलो यम हतो. छायाए तेने " तारो पग पृथ्वीयर पडशे " एम ज्ञाप आप्यो हतो, तेने मिथ्या न करतां सूर्ये " कृमीओ दगमांथी मांस लड़ पृथ्वीपर पड़ने "एम फड़चो करी यमने यमराजनो अविकार में प्या. यहना नदीने किलन्द देशमां वरेवा आजा आपी, जेथी ते कालिन्दी कहेवाइ, अधिनी कुपारने देवोना वैद्य बनाव्या आ शते संज्ञा देवीना संतानोनी व्यवस्था करी।

minimum - BAG minimum - mi

सूर्यथी द्याया संज्ञामां जनमेलो महोटो पुत्र वैवस्वत समात होवाथी " सावणिक "

nies.

नाम पाम्यो, हवे ज्यारे विलिशना इन्द्र वनके त्यारे ते सार्वणिक मतुनी पदवी पामके; तेथी नहाना जनिश्चरने गृहोनी पंक्तिमां भेळच्चो अने तपती नामनी कत्या संवरण नामना राजाने परणावी, तेनाथी करु नामनो पुत्र जन्म्यो अने ते पृथ्वीपित थयो. आ वेवस्वतमंन्वंतरमां आदित्य. वसुओ, रुद्र, साध्यादेव, विश्वदेवा, मरुद्गण, भृगुओ अने आंगिरस ए देवताओना आठ गण छे, तेमांथी आदित्य, वसु अने रुद्र ए कञ्चपना पुत्र, साध्या, वसु अने विश्वदेवा ए त्रण गण धर्मना पुत्र, भृगुओ, भृगुना पुत्र, अने आंगिरस अंगिराना पुत्र, आ सर्व स्तृष्टि मरिचीनी गणाय छे. आ देवोनो अधिपति यज्ञना भागनो उपयोग करनार जनयज्ञ करी प्रसिद्ध थएल हाल उर्जस्वी नामे इन्द्र छे, अत्रि, विष्टु, कञ्चप, गाँतम, भरद्वाज, विश्विमित्र अने महात्मा त्रुचिकना पुत्र जमदिन्न ए सान आ मन्वंतरमां सप्तृष्टि कहेवाय छे आ वेवस्वन मनुना इक्ष्वाकुना भग, धृष्ट, इर्णित, निर्ण्यंत, नाभगोदिष्ट, कुरुप, पृष्ट अने लोक प्रसिद्ध वसुमान ए नय पुत्रो गणाय छे,



51



## अष्टम तरंग.

نصلی

शादुल.

मार्कडेय तणा महान तपथी संतुष्ट थातां अति, श्रीनारायण आवों सन्निध उभा श्रीतंथों मायापित; मार्कडेय तणो मनोरथ सुणीं माया वतावी वधी, ए वार्ती अमरेश आज कहुँ छुं, हुं सर्व संक्षेपथी.

चिरंजीय वनेळा मुनिराज मार्कडेय बद्रिकाश्रममां पुष्पभद्रा नदीने किनारे उग्र तप अने योग आदि आचरता इता तेने छ मन्वंतरो वीती गया, आ सातमा वैवस्वत मन्वंतरमां तेमना तीत्र तपर्था भयभीत थएछा इन्द्रे तेमना तपमां विद्य करवा गन्धर्व, अप्सरा, कामदेव, वसंतऋतु, मल्रय-गिरिनो वायु, मट अने लोभने तेओना आक्ष्म तरफ रवाना कर्या. मुनिराज मार्कडेयनुं अति पित्रत्र आश्रम के ज्यां विविध दृक्ष लताओ विराजी रह्यां इतां, पित्रत्र विषानां वृन्द वसतां इतां, पित्रत्र जलाग्यो निर्मल नीरथी भर्या इतां, मद्यी उन्मत्त वनेला श्रमरो गुंजारव करी रह्या इतां, कोकिल गणना कमनीय शब्दो धइ रह्या इतां, नटनी माफक मदोन्मत्त मयूरो नृत्य करता इतां, अने अन्य जातनां अनेक पक्षीओथी सर्व स्थल झाव्दायमान थइ रह्यं इतुं. त्यां कामनी दृद्धि करतार शीत जलना विदुत्रो समेत ग्रमनी ग्रांवि युक्त वायु विचरण करवा लाग्यो; संन्या समये शित्रा जलना विदुत्रो समेत ग्रमनी ग्रांवि युक्त वायु विचरण करवा लाग्यो; संन्या समये शित्रा वह्यां ग्रांवि व्याप्त थइ; इन्द्र देवना सर्व सेवकोए बिहमां होम करी नयनो वींची ध्यानस्थ थएला अने शरीरधारी अनलनी माफक अमय ओजवाला मुनिवर्य मार्कडेयने जोया, तेनी सन्मुख अप्सराओ नृत्य करवा लागी, मृदंग अने बीणा आदि वाद्योना मनोहर निनाद साथे गन्यकों गायन करवा लाग्या; समयानुमार कामदेवे पण शोपण, दीपन, संमोहन, तापन, अने उन्मादन संज्ञाना पंच मुख्यालुं अस्त पोताना धनुष्य उपर चहान्यं, आ मिवाय वसंत, मद

ie:

अते लोग विगेर इन्द्रना अखिल अनुचरो मुनिराज मार्कडेयनां चित्तने चरायमान करवा लाग्या, रिराजना वोजायी अतिजय लटकती किट्वाली पुंजिकस्थली नामनी अप्तरा गर्द्या क्रीडा करवा लागी. तेना केल पालपांथी कुलुमनी माला वारंवार सरकी जवा लागी, अने ते अप्तरा चारे वालु नयनोने नचावती दडाने ग्रहण करवा दोडे छे, तेवामां तेनी किट मेखलाना कटका धह गया, वालुए तेना झीणा चल्लने उराडी नांख्युं, आ बखते मुनिराज मार्कडेयने रवाधीन बनेला समजी पंचन्त्रारे पातानुं गर फेक्युं, परंतु माग्यहीन पुरुषनो उद्योग जेम निष्फल जाय छे तेमज काम आदि तमामनो मार्कडेयने बन करवानो उद्योग अफल थयो; मुनिनुं अबलुं करवानी इन्छा राखता इन्द्रना नमाम अनुचरो तपस्वी मार्कटेयना तेजथी तपवा लाग्या अने सूरेला स्पेने व्यस्य करी बालको जेम भग पामी भागी जाय तम सर्व त्यांथी पलायन करी गया; आ रीते इन्द्रना भृत्योए अनेक रीते उद्योग कर्यों छतां महात्मा मार्कडेयना पनमां लेश मात्र विकार न थयो। महात्माओनी महत्तामां वांड आश्चर्य होवज नहि.

निरुपाय बनी पाछा फरेन्टा कामदेव आदिना मुखर्था महात्मा मार्कडेयनो अमितहत प्रभाव श्रवण करी हन्द्र पण अति विस्मय पाम्यो.

था रीतें तीत्र तर आचरता अने जीतेन्द्रिय वनी मनने करने राखता मुनिराज मार्नडेय माथे अनुग्रह वरण त्या यगवान् नरनारायण स्त्रयं प्रगट थया. तेर्य उपनीत, नामंडलु, वंगनो दिन्य डट, क्षण्ळ काकडीनी मालिका, जीवने ह्जा न थाय तेवी रीते तेथोने अलग करनारी सृत्रनी सावरणी लिहत, दर्भमुष्टिने धारण करनार. गोर अने स्याम कानिपाळा; नृतन कष्ण तृल्य नयनवाळा, चार चार द्वज्याळा, क्टकल अने मृगचर्म रपी दमनप्राठा. पवित्रीयुक्त हायपाळा, साक्षात् तपःस्वरूप, देदीप्यमान दिलुत समान रीतवर्णसाळा, उत्तत तेषण महान् गुरगणीण नेपापळा, अवर्णनीय विष्णुना अवतार रप नर अने नारायणने निहाळी मुनिगान मार्कटेये आमन्धी खंडी आदर पूर्वेक दंडनी पापक ए हभयना पद वंडन कर्या. साक्षात् नगनागयणनां दर्भन्धी आनंदण्यत पनेलां देह, हिन्द्रिय अने मन झान्ति समुद्रमां झीलवा लग्नमां, मुनिगान मार्कडेयनां रोम खटां यह गयां तथा आंदमां स्नेह जळ भराह जतां, तेथोने पूर्णशित निहाली रण न झवया. योशिवार पर्छी मुनिए वर जोडी नरनारायणने नम्नता पूर्वक गत्न नदी नदी नमानमः ए गीने खर्चार पर्छी मुनिए वर जोडी नरनारायणने नम्नता पूर्वक गत्न नदी पर्या. चंडन, द्वा प्रने पुर्व खर्चार वर्षी; विष्णु स्तरा उभयने आमन आर्ता पाड महालन वर्षी प्रायं. चंडन, द्वा प्रने पुर्व

आदिथी यथाविधि पूजन कर्युं; आसन उपर आरुढ थएला अने अनुग्रह करवा उत्सुक वनी रहेला नरनारायणनी मुनिराज मार्केडेये अनेक प्रकारे स्तृति करी.

बुद्धिशाली महात्मा मार्कडेयनी स्तुतिथी प्रसन्न थड भगवान नारायणे कहुं के-ब्रह्मपिना समृहमां श्रेष्ट मार्केडेय ! तमे एकाग्र चित्तथी, मारी अनन्य भक्तिथी, तप, स्वाध्याय तेमज संयमथी सिद्ध वनेला छो. तमे अवर्णनीय ब्रह्मचर्य पाळ्युं छे जेथी अमो संतुष्ट थया र्छाए; अने तमोने प्रसन्नता पूर्वक वरदान देवा आव्या छीए; माटे यथेच्छ वरदान मागो. आ सांभळी मार्कडेय बोल्या के देत्राधिदेव, अगरणशरण प्रभो ! मारा उत्कर्षने प्रदर्शित करनार वरटान मागवानुं आप कहो छो परंतु मन एवी कांइ अभिलापा छेज नहि, आपे दर्शन आप्यां एज महान् वरदान मल्युं एम मानुं छुं. ब्रह्मादि देवो पण योगद्वाराए पक्व थएला मनथी आपना मनोहर चरण कमलनां दर्शन पामी पोताने कृतकृत्य माने छे. एवां आपनां अलभ्य दर्शन हं मत्यक्षपणे पाम्यो, आथी अधिक वरदान कयुं ? छतां कपलनयन ! देवाबिदेव ! जेथी लोकपाल समेन सर्वे लोको स्वरूपमां भेद समजे छे एरी आपनी माया जोवानी मने घणी अभिलापा छे; नरनारायण तथास्तु कही अदृज्य थया; मायाना द्रीनतुंज चिन्तवन करता, विह्न, सूर्य, ज्ञाज्ञि, जळ, पृथिवी, आकारा अने आत्मामां नारायणनुं ध्यान धरता मुनिराज गार्कडेय पोताना आश्रममांज निवास करी मनोमय पदार्थोथी अखिल स्थलमां इश्वरनुं न अर्चन करना हता, कोइ वखते प्रेम पूरमां निमन्न वनी पूजन पण चुकी जता हता, पोते एक दराडो संध्या समये पुष्पभद्रा नदीने किनारे विराजमान थया हता त्यां एकाएक अति प्रवळ प्रवन प्रगट थवी, प्रवननी पाछळ गाड गर्जना करता भयंकर मेत्र भारे जोरथी वरसवा छाग्यो, विद्युत्ना वेगथी वारंवार घोर क्योर करता वाढळना हन्दोथी रथनी धरी समान स्थूल धाराओ छोडवा लाग्या, वायुना वेगर्था वृद्धि पामता उन्नन अने तरल तरंगोथी अवनिने इवावी देवा इन्छना होय तेम चारे तरफ महासागरीना गंभीर शब्दो संभळात्रा लाग्या, पोता सहित जरायुन आदि चारे मकारनां जगान वारियी वारंबार चमकती विद्यन्यी अने मनळ पवनधी अन्तर्वहिर पीडातां जोइ मुनिराज मार्कडंय बहुज अयभीत वनी गया, स्तरूप समयमांज महान् तरगोर्था हृदयमां भय उपजावनार अने अखंड धाराए वरसता मेघोर्था परिपूर्ण थएल महा समुद्रोए द्वीप. खंड, अने पर्वनो समेन पृथ्वीने आच्छादिन करी नांखी; पृथ्वी, आकाश, स्वर्ग, ड्यानिर्मणो अने दियाओं समेन त्रिलोस्यने ड्वार्वा दीयुं.

www.comercial commences and the commences of the commence

तमाम हुवी जतां एक मुनिराज मार्कडेयज अवशेष रह्या. ते जटाने छूटी करी जह अने अंधनी माफक जळमां भ्रमण करवा लाग्या; भूख तथा तरसथी व्याक्तळ वनेला, मतस्य अने मगर आदिथी पीडाता, अमित अंधकारमां गोथां खाता, पवनधी प्रगट धता तरंगे प्रहार कराता मुनि आकाश के पृथ्वीने ओळखी शकता नहोता. वखते जळनी घूमरीमां घूमता, वखते मोजाओमां अथडाता, चखते जळना जंतुओ तेमतुं भक्षण करी जता, चखते शोकने, चखते मोहने, चखते दुःखने, वखते सुखने, वखते भयने, वखते मृत्युने आधीन वनी जतां. वखते रोग आदियी पीडित यता. आ रीते विष्णुनी मायाथी वीटायेला प्रलयना समुद्रोमां भ्रमण करता मुनिवर मार्कडेयने सेंकडो अने इजारो वर्ष व्यतीत थइ गयां. तेओए एक समये ए प्रलयना पयोनियिमां पृथ्वीना उन्नत भाग उपर फळ अने प्रह्मचोथी प्रकाशमान तेमज सुकोमळ एक वड जोयो. तेमज ते वडनी इशान कोणनी शाखा उपर पर्णना पडीयामां शयन करी रहेला अने द्युतिथी अधकारने दूर कर-नार एक वाळकने जोयो; ए वाळकनो इन्द्रनीलमिण समान ज्याम वर्ण हतो, मनोहर मुखारविंद; शंख समान त्रिरेखावाळो कंट, महान् वक्षःस्थल, सुंटर नासिका अने भ्रमर तथाे श्वासथी कंपाय-मान केश अति छुशोभित जणातां हतां. ते वाळकना शंखनी माफक अंदर वळेला कर्णमां रहेलां दाहिम पुष्प दीप्तिनी दृद्धि दरतां इतां. विद्रुम तुल्य ओष्टनी प्रभार्था सुधा समान स्वन्छ मंद-हास्य जरा लाल जणातुं हतुं, सरोजना गर्भ समान आंखर्ना अणीओ लाल लागती हती, तेनुं सहास निरीक्षण अति प्रशंसनीय हतुं, पीपळाना पर्ण जेवा सुकोमळ टदरमां व्वासर्था कंपायमान थती वळीओथी चंचळ अने गभीर नामि विराजती हती. ए वाळक मुज़ाभित अंगुळीओ-बाळा उभय बर्था व.मळ जेवा पोताना पगने उंचो क्री मुख्यमां नांगी धायनो हतो. आ जोट महात्मा पार्वेटेयने आश्चर्य थयुं. तेनां दर्शन धनां तमाम पिश्रम दर्शा गयो; ए बाळकर्ना अदभुन लीला जोइ रोम खडां थड़ गयां, तेमज हदयकमळ अने नेत्रकमळ बन्ने विकाश पाम्यां. मनिगन मार्व.डेय भय पामता पामता कांड मक्ष करवा सार्व ते वाळकर्ना निकटमां पहोंच्या, नेवामां वालकना 'दामनी साथे सनि मसलानी मापाक तेना देहमां दाखल थयाः ए दिल्य वालकना न्हाना उदग्मा पण प्रस्य पहेलां समग्र जगत् जे स्थितिमां हतुं तेवुंज मृनिराजना जोवामा आव्युं आर्था मृनिने मोह अने विस्मय डत्पन्न थयो अने तेण पृथ्वी. ६२मी, ब्योण नाम गण. प्रती. महा ममुद्रो, द्वाप, खंट, दिलाओ, देव, अदेव, वन, उपवन, देश, मिनाओ, नगर, आवर, दूर्शाकारमां ग्रामा, वर्गा, दर्णाक्षमनी वृत्तिओं, आध्यों, गोहुळ, पंच यहाभृत, नेथी उन्यस थे-टर अनेट पदार्थी, अपित

युग, अनेक करवोत्तं सूचन करनारों काळ, अन्य व्यावहारिक विषय के जे सर्व ए वाळकनीज सत्ताथी प्रकाशे छे ते सर्व महात्मा मार्कंडेयना जोवामां आच्युं; आ रीते मुनि सर्व वस्तुनुं निरी-क्षण करता हता तेवामां ए सुजोभित वाळकना न्वासे तेने वाहेर फेंकी दीया, जेथी मुनिराज पाछा प्रलयना सागरमां जइ पड्या. त्यां तेने पृथ्वीना उन्नत भाग उपर उगेळ वड, ए वडना पर्ण-पुटमां स्तेल वाळक नजरे पड्यो, ए वाळके पेम पूर्वक अमृत जेवा मंदहास्ययुक्त आंखर्ना अणीथी महात्मा मार्कंडेय भणी दृष्टि करी, मुनि वहुज मुंजवणमां आवी पड्या. पोताना हृदयमां विराजमान थेपेल भगवान रूप वाळकने भेटदा मुनिराज पाछा तेनी समीपे गया, तेवामां अन्तर्यामी महान् योगेन्वर साक्षात् भगवान, ऋषि आगळथी भाग्यहीन पुरुषे करेल उद्योगनी माफक सत्वर अज्य थइ गया, तेनी पाछळ वड, जळ तथा प्रलय ए सर्व निमिष मात्रमां अंतर्यान थइ गया अने मुनिराज मार्कंडेय प्रथमनी माफक पाछा पोताना आश्रममां स्थित थया.

आ रीते भगवान नारायणनी योगमायाना वैभवनो अनुभव करनार मार्कडेय वोल्या के-प्रभो ! विद्वत्तानो घुमंड राखनार मारा सरखा जनो पण ज्ञानमय जणाती आपनी मायाथी मोहित वने छे, शरणागतोने अभयदान देनार आपना चरण कमळनुं शरण हुं पण ग्रहण करुं छुं.

कोड एक दिवसे प्रमय गणायी वीटायेल पाविती समेत शंकर नन्दी उपर विराजमान थइ त्योमपंथे विहार करता हता, तेओए एकाग्रमनयाळा मानिराज मार्कडेयने जोपा, ऋपिराजने जोइ पार्वतीए सदाजिवने स्चव्युं के—स्वामीनाथ! वायु विना जेम सागरनां जळ अने मकर आदि जन्तुओ स्थिर धइ रहे छे तेम जेनां मन, इन्द्रियं अने देह आदि जिति निथळ वनेल छे एया आ दिजगाज भणी दृष्टि करो, आप सिद्धिना देनार छो तो आ मुनिना तपनुं फळ समपों, स्यारे सदाजिवे कट्युं के—सती! अनन्य भक्तियी परमात्मा पूर्ण पुरुपोत्तमनी छुपा मेळयनार आ प्रस्मिं कोड पण जातना सुम्बनी स्पृहा राम्बना नथी, एने मोक्षनी पण अभिळापा नथी, छनां आ सन्पुरुपनी साथे आपणे वार्ता विनोद करियुं, कारण के प्राणी मात्रमां सन्पुरुपनो समागम कोड अलोकिक आनंद आपनार छे, आ प्रमाणे बोळी यज्ञ स्ट्रम् अध्यिल जगन्ना उत्पर सटाशिव मुनिराज मार्कडेयनी निकटमां आवी पहोंच्या, मुनि समाबिस्त थयेला हता; अन्तःकरणनी दृनिओनों निरोप धवाथी पोताने, जगन्ने तथा आत्मन्वस्प उमामन्द्राना आगमनने पण जाणना नहोता. आ वार्तने समर्थ सदाशिवे जाणी लीवी अने ठिद्रमां वायु मवेद्य करे तेम योगवळर्था पोने मुनिराजनां

-ERG-----

हृदयान्तरिक्षमां प्रवेग कर्यो, त्रण नवनवाळा, विचुत् जेनी पीळी जटाने धारण करनार, दश हाय-वाळा, उन्नत, उद्य पामना सूर्य समान तेजवाळा, वाय चर्मतुं अवर, त्रिजूल, धनुत्य, वाण, रूपाण, ढाल, रहासमाल, इपर, कपाल जन फर्जी आदिने बारण करनार सवाशिवने अकस्मात् पोताना हद-यमां प्रकाशेला निहाळी मुनियर माफ्रेडेय अति विस्मय पास्या, तेओनी समाबि अलग थइ; अने नयन खाली निरंख है त्या सनी समेत बेलांक्यपति सदाशिवने पधारेला जोया. मृनिराजे तेओने पेम पूर्वक साष्टांग प्रणाग करी स्वागतना वचनोधी वयात्री छीता; आसन, अर्घ, पाद्य, चंदन, धृप तेमन दीप आदिधी गणो अन सनी समेन शिवजीतुं अर्चन कर्यु. अने घणे प्रकारे स्तृति करी फरी प्रणाम कयी. महात्मा यार्कडेयनी स्तृतियी प्रसन्न थयेला, निर्मळ अन्तः वरणवाळा अने रात्पुरुपाने शर-णमां स्थापनार सदाशिव एनद् हास्य प्रगट करता बोल्या के-महात्मन् ! वरं बृहि (वरदान मागो ) कारणके ब्रह्मा, विष्णु अने हुं वर आपनाराओना अविष्टाना छीए; अमारुं दर्शन कदी पण अयोघ जायज नहि, प्राणीन देशोना समायय अने सद्दोधवी मोक्ष प्राप्त धाय छे, जे निम अथवा साटु, जान्त, असंग, सपान इष्टिबाळा, बैरविहीन अने माणी मात्र उपर दया दर्शाननार अमारा साचा यक्त होय तेओने देवो पण नमन बारे छे, संवे छे अने अर्चे छे. एटलुंन निह परंतु हुं, युद्धिशाळी ब्रह्मा अने सर्वेश्वर विष्णु पण एने छे, सेवे छे. अमो आ वरदान आदि आपी अनुग्रह दारीए छीए एम समजज्ञी निह, पण तमारा सरन्वा सन्युरुपोनी सेवाज वजावीए छीए, तमारा सरखा विषो टुंमा, विष्णुमां, ब्रत्यामां, पोतामा अने प्राणीमात्रमां लेशपण भेदबुद्धि नधी राखता, एथीन अमे तमारी तेवा करीए छीए, तीयों जळवय अने देवनी मनिमाओ जट छे एम न मान्बं, तेओं। एण छाबे बखते पिताना अर्थे छे अने नमाग सरम्वा। सन्पुरुवे। तो मात्र दर्शनवील पवित्र इनावे छे. एशाम्र लित्त, तप, स्वाच्याय अने संपनवी अनाग देव स्वरपंत आगण बरनार विशेने अम पण नमन करीए छीए महा एतकी अने चाडाल आदि पण नमाग पवित्र दर्शनधी तेमन नाम स्मरणधी पाप रहित दंन छ तो। पछी तमागी सांव पार्ता विनोड करनार पादन याप एमां भी नवाह ?

धर्मना रहरपंत्री भरपृर अने वर्णाहत सवेत्वर सदानिवन रचनो अया जरी मुनिगत यार्बेटेयने हृष्ति न धर्, भगवानकी माणपी दीये जाज परंत अधित दनेत्रा अर्विन सदाशिवनी परनामृत्यी काहक गान्ति पणी पोताना नमाम बरेदा द्रम थनां नेओ बहेबा लगा है — अहा ! इश्वरनी लीला अद्भुत छे, कोइना तर्कमां आबी शकती नथी, जे लीलाने लइ जगतनो इश्वर पोते पण पोताना हाथ हेठळ वसनार किंकर समान जनोने नमन करे छे तेमज तेओनी प्रशंसा करे छे. मने तो घणे भागे एमज भासे छे के मनुष्योने धर्मनुं शिक्षण आपवा माटे धर्म वक्ताओ पोतेपण धर्मीचरण करे छे अने कोइ तेमां अनुमोदन आपी तेओनी प्रशांसा करे छे. संवेश्वर प्रभो ! स्वकीय ष्टिताओं मायामय होवाथी आप अन्य जनोने नमन आदि करो एमां आपना अर्जू मभावनी लेश पण हानि थती नथी, जेम नट वेषवदलो करी पौताना भृत्य आदिने भने छे एमां नटनी महत्ताने क्यो वाध लागतो नथी, जेम स्वमनो द्रष्टा मनथी अनेक देहने उपजावी तेओमां प्रवेश करी इन्द्रि-ओए कराती कियाओनो जाणे स्वयं कत्ती होय एम भासे छे तेत्रीज रीते आ सृष्टिने मनयी सरजी स्वकीय स्वरूपथी तेमां प्रवेश करी गुणोए कराती क्रियाओना कर्ती मनाता आपने हुं वारंवार वंदन करुं छुं; त्रिगुणात्मक छतां निर्गुण गणाता, केवळ, अद्वितीय, परब्रह्म मूर्ति प्रभो! मने आपनां सर्वोत्कृष्ट दर्शन प्राप्त ध्यां एथी अन्य क्युं उत्तम वरदान याचुं ? आपनी कृपाथीज प्राणीओना वाम सत्य अने पूर्ण धाय छे, तथापि भगवानमां, तेओना भक्तोमां अने आपमां मारी दढ भक्ति रहे ए एक वरदान आप पासे याचुं छुं. आ शीते मुनिवर मार्कडेये स्तुति करायेला सदाज्ञिव सतीनी संगतिथी बाल्या के-महर्षि ! तमारी तमाम अभिलापा पूर्ण थक्षे, तमो कल्पना अंत पर्यन्त अजरामर रही अतुल पवित्र कीर्ति पामशा, केमके तमा भगवानना अनन्य भक्त छा, ब्रह्म तेजने धारण करनार तमो विकालज्ञ वनी वराग्ययुक्त विज्ञान अने पुराणना आचार्यनुं पवित्र पद पामशो.

and the second of the second o

आ रीते मुनिवर मार्कडेयने वरदान आर्था तेमना पवित्र चारित्रनी तेमज तेमणे पूर्व जायेल मायाना विविध वैभवानी सर्ता सन्मुख वातो करता विश्वपति त्यार्था विदाय थया; अने महात्मा मार्कडेय तेज स्थाने द्रढ आसन वाळी अग्निहोत्र आदि नित्य कर्म करवा वेटा, तेरलामां ऋषि मंडले आवी तेओने सविनय दंडवन् मणाम करी विज्ञाप्त करी के-महात्मन ! आप ब्रह्मदेवनी कुंपाँथी अजरामर थया छो एटले आपने तो कोइनो भय नथी, पण अमो जे यज्ञनेज अमार्ह धन समजीए छीए ते यज्ञमां हर वखन अग्रुर गण आर्वा विद्य करे छे, तो कृपा करी आप एक एवी वीर पुरुष अमने सोंपो के जेथी अमो निश्चिन्तपणे अमार्ह कर्म करवा समर्थ थइए.

ऋषिमंडलना बचन मांभली धर्मात्मा मार्कडेये " तथाम्तु " कही तेन वरतते पोताना

महान् योगवळे अग्निकुंडमांथी सूर्य समान कान्तिवाळो, प्रचंड भुजदंडवाळो, रक्त नेत्रवाळो, सिंह सरखी विशाल छातीवाळो अने भन्न भालवाळो एक अत्री वीर उत्पन्न कर्यो. ए वीरवरने विलोकतांज ऋषि मंडलमां आनंद फेलाइ रह्यो, सर्व महात्मा मार्कडेयनी स्तृति करवा लाग्या. अत्री वीर पोताना जनक मार्कडेयना चरणारिवन्द्रमां नमन करी वोल्या के-प्रभु! श्री आज्ञा छे? मार्केडेये कर्युं के-आयुष्मन्! आ ऋषिओनी यज्ञकुंडमालाओनुं रक्षण करवा माटे में तने मगट कर्यों छे, तारुं नाम पण "कुंडमाल " ए रीते प्रसिद्ध थहो. हुं आज्ञा कर्षे छुं के तुं आ ऋषि-मंडलनी साथे जा अने असुरोनी साथे युद्धमां विजय मेळवी हर वत्वने ऋषिओनां संकट ह्यी करजे.

मुनि मार्केडेयनां आवां शुभ वचनो श्रवण करी सहपे आजीर्वाद आपता सर्व ऋषिओ वीरचर कुंडमालने साथे लड्ड त्यांथी विदाय थया.







## नवम तरंग,

ealles

दोहरो.

कुंडमाल ऋषिए कर्युं, असुर वृन्दथी युद्धः विजय मेळव्यो विश्वमां, सुणो अमरतृप शुद्धः

राक्षसोना उपद्रवयी बद्रिकाश्रमणां रहेनार ऋषिमंडल वहु गभरायेलुं हतुं, तेटलामां महा-रमा कुंडमालतुं आगमन यवाधी सर्व हर्ष पाम्या, उंचा हाथ करी प्रसन्न मनयी वेदमंत्रवडे सर्व ऋषिओं आगीर्वाद देवा लाग्या.

पहात्मा कुंडमाल ऋषिमालने साष्टांग दंडवत् प्रणाम करी कहेवा लाग्या के-''हवे मने आप शुं आज्ञा आषोछो ?"

ऋषिमंडल वेल्युं के "अन्य राक्षसोने तो आप सरलताथी जीती शकशो पण चंडाक्ष अने चंडास्य नामना व असुराने जीतवा मुझ्केल छे, कारण के ए दुष्टो जग्रतपथी शंकरने प्रसन्न करी एवं वरदान पाम्या छे के तेतुं कोइना हायथी मृत्यु थायज निहे, अने जो थाय तो ते अन्योन्य चंयुओना हायथीज थाय, आवा कारणयी आप तप करी तेओना मृत्युनो उपाय पाप्त करो.

ऋषिओनां वचना माथे चडावी महात्मा कुंडमाल पवित्र स्थान उपर स्थित यह उग्र तप आचरवा लाग्या; घणे काले तप प्रभावथी रंद्र आदि देवताओं कुंडमाल पासे आवी वरदान आपवा तत्पर थया, अन्य प्रकारना लोभ रहित कुंडमालऋषिए बीजुं कांइ निह मागतां चंडाल अने चंडास्य आदि असुरोनो विनाम करवानां सापनो माटे याचना करी, प्रसन्नपनथी इन्द्र, ब्रह्मा, वरुण, आग्ने, अने मारुन विगरे देवताओए पोतपोतानां अस्रो आपी कर्तुं के "अन्य असुरोनो आ शस्त्रोवहे तमो त्वराथी नाहा करी मक्यो पण चंडाक्ष अने चंडास्यनो नाहा करवा माटेनो उपाय तो अन्नमारद्र पामेन छे; अमो सर्व देवताओए वन्ने पापीओथी वहु पराभव पामीए छीए,

مي آراع

अमने यज्ञोमांधी मळनो भाग अटकाववा माटेज ए अछुरो ऋषिओना यज्ञमां विघ्न करे छे, माटे तमो अजरामर ऋषिराज मार्कदेयना पुत्र होड अमने आ महाभयंकर दुःखर्थी मुक्त करको एवी आकाछे.

महात्मा कुंडमाल देवताओनां वचनो माथे चढावी नमन करी वॉल्या के "आपना आर्जार्वाद्धी सर्व कांड धरो, हुं कांइ करवा हाक्तिमान नधी.

देवताओं पोनपोताने स्थाने गया बाद राजिं कुंडमाले शंकरने प्रसन्न करवा कोइथी न वनी शके तेवुं फरी उम्र तप करवा मांडयुं.

चहारय अने चंहासने आ खबर पहवाधी भय पामी पोतानी आसुरी माया बळे एक विस्मय पमाटनारें। माया प्रदेश रची तेमां छुंदर अने अवर्णनीय शहर बांध्युं अने आसपासना पोताना बबजाना तमाम अगुगेने पत्र लग्ध्याके " आपणा बेरि देवताओं ने सहायता आपवा मार्किट्यना पुत्र छुंदमाल छुत्र तप करे छे अने ते देवताओं तरफयी दिव्य अस्तो मेळवी चुक्यो छे, अमाने ग्वात्री छे के ए थोटा बग्बतमां भोळानाथने भोळवी अगुर कुळना नाशने मोटे वरदान मेळवंश, अमारें। नाश थवो एनाथी मुक्तेल छे, पग्तु आयणा अन्य स्नेहीओंनो नाश सरलताथी बग्ध्यें, मांटे तमो सर्व आ पत्र वांची पोतपोतानी सेनाओं तयार कराबी अमारा पांस हाजर थाओं। जो आ हुकानो अनादर करशो नो तमारा सर्वनो नाश अमारा हायथींन घंगे, अमारा अमीन पणाविष तमे अजाण्या नथीं। "

उपर मुजब पत्र बांची तमाम असुरो पीत पीतानी मेना महित चंटात अने चंडाम्ये निभित बरेल मायास्त देश तरपा रवाना थया, चंटात अने चंटाम्य मंग्लर्ना अंदर उन्नत आमन पर बेटा हवा तेवामा अवस्मात् अंसी चहवा लागी. अत्या वाद्रलांश्रीयी छक्षण गार्नु, अने पापाणोनी वृद्धि स्वा लागी. आ जोह चंटाध योने चहामें लाएं के बीट महान पुर्यो आसे छे. तेने हत्यान अने मन्मान आपण गाटे ते दत्ते असुरो मुन्य मुन्य रार्ग्वामोने लट किन्ना उस चर्ता जोवा लाग्या त्या देशे दिना लागेने परता पायास मार्ग्या स्वाना प्रकार मंद करना आपाट मामना अधीनी पेट सेना सहित पासनेने अत्या लोगा तेया हुन्य पुर्यो अन्य पाति भयंकर माणीओ एपर अने अन्य असुरो मासा राचित महून महून गीप आहि पात्री पात्र माना मार्ग्याम पात्र स्वाना हुन्य पात्र अवेदी होती गायी पोत्री नामी धारण वर्गा गाया पात्र हालां आही हात्र स्वाना का स्वाना हुन्य पात्र अवेदी होती गायी पोत्री नानी असुरी सादा एवं वीटाने चलवा चलता आहता हता.



## नवम तरंग.

دهلاي

दोइरो.

कुंडमाल ऋषिए कर्यु, असुर चृन्दथी युद्ध; विजय मेळव्यो विश्वमां, सुणो अमरनृप ग्रुद्ध.

राक्षसोना उपद्रवथी वद्रिकाश्रमणां रहेनार ऋषिणंडल वहु गभरायेलुं हतुं, तेटलामां महा-त्मा कुंडमालनुं आगमन थवाथी सर्व हर्ष पाम्या, उंचा हाथ करी प्रसन्न मनयी वेदमंत्रवडे सर्व ऋषिओं आग्रीवीद देवा लाग्या.

महात्मा कुंडमाल ऋषिमालने साष्टांग दंडवत् प्रणाम करी कहेवा लाग्या के-''हवे मने आप द्यं आज्ञा आपोछो ?"

ऋषिमंडल वेाल्युं के "अन्य राक्षसोने तो आप सरलताथी जीती शकशो पण चंडाक्ष अने चंडास्य नामना वे असुरोने जीतवा सुरुकेल छे, कारण के ए दुष्टो उप्रतपथी शंकरने प्रसन्न करी एवुं वरदान पाम्या छे के तेतुं कोइना हाथथी मृत्यु थायज नहि, अने जो थाय तो ते अन्यो-न्य वंयुओना हाथथीज थाय, आवा कारणयी आप तप करी तेओना मृत्युनो उपाय पाप्त करो.

ऋषिओनां वचना माथे चढावी महात्मा कुंडमाल पवित्र स्थान उपर स्थित थइ उग्र तप आचरवा लाग्या; घणे काले तप प्रभावथी इंद्र आदि देवताओं कुंडमाल पासे आवी वरदान आपवा तत्पर थया, अन्य प्रकारना लोभ रहित कुंडमालऋषिए बीजुं कांइ निह मागतां चंडास अने चंडास्य आदि असुरोनो विनाश करवानां साधनो माटे याचना करी, प्रसन्नपनथी इन्द्र, ब्रह्मा, वरुण, आग्ने, अने मारुत विगेरे देवताओए पोतपोतानां अस्तो आपी कहुं के "अन्य असुरोनो आ शस्त्रोवडे तमो त्वराथी नाश करी शक्ताे पण चंडास अने चंडास्यनो नाश करवा माटेनो उपाय तो अजन्मारुद्र पासेन छे; अमो सर्व देवताओ ए वन्ने पापीओथी वहु पराभव पामीए छीए,

अमने यज्ञोमांथी मळतो भाग अटकाववा माटेज ए असुरो ऋषिओना यज्ञमां विघ्न करे छे, माटे तमो अजरामर ऋषिराज मार्कडेयना पुत्र होइ अमने आ महाभयंकर दुःखथी मुक्त करशो एवी आशाछे.

महात्मा कुंडमाल देवताओनां वचनो माथे चहावी नमन करी वोल्या के "आपना आशीर्वादथी सर्व कांइ थरो, हुं कांइ करवा शक्तिमान नथी.

देवताओ पोतपोताने स्थाने गया वाद राजिं कुंडमाले शंकरने प्रसन्न करवाँ कोइथी न वनी शके तेवं फरी उप्र तप करवा मांडयुं.

चंडास्य अने चंडाक्षने आ खबर पडवाधी भय पामी पोतानी आसुरी माया बळे एक विस्मय पमाडनारो माया प्रदेश रची तेमां सुंदर अने अवर्णनीय शहेर बांध्युं अने आसपासना पोताना कवजाना तमाम असुरोने पत्र लख्याके " आपणा वैरि देवताओं ने सहायता आपना मार्के- हेयनो पुत्र कुंडमाल उप्र तप करे ले अने ते देवताओं तरफथी दिव्य अस्त्रों मेळवी चुक्यों ले, अमोने खात्री ले के ए थोडा बखतमां भोळानाथने भोळवी असुर कुळना नाशने माटे बरदान मेळवशे, अमारो नाश थवो एनाथी सुक्तेल ले, परंतु आपणा अन्य स्तेहीओंनो नाश सरलताथी करशे, माटे तमो सर्व आ पत्र वांची पोतपोतानी सेनाओं तैयार करावी अमारा पासे हाजर थाओं। जो आ हुकमनो अनादर करशों तो तमारा सर्वनो नाश अमारा हाथथीज थशे, अमारा अजीत- पणाविषे तमे अजाण्या नथी, "

चपर मुजव पत्र वांची तपाम अमुरो पोत पोतानी सेना सिंहत चंडाक्ष अने चंडास्ये निर्मित करेल मायाकृत देश तरफ रवाना थया, चंडाक्ष अने चंडास्य महेलनी अंदर उन्नत आसन पर वेठा हता तेवामां अकस्मात् अंधी चडवा लागी, आकाश वादळांओथी छवाइ गयुं, अने पापाणोनी वृद्धि थवा लागी, आ नोइ चंडाक्ष अने चंडास्ये जाण्युं के कोइ महान् पुरुषो आवे छे. तेने उत्थान अने सन्मान आपवा माटे ते वन्ने अमुरो मुख्य मुख्य श्रूरवीरोने लइ किल्ला उपर चंडी जोवा लाग्या त्यां देशे दिशाओंने घरता आकाश मार्गमां सूर्यना मकाशने मंद करता आपाढ मासना अभ्रोनी पेठ सेना सिंहत अमुरोने आवता जोया; तेमां मुख्य पुरुषो अजगर आदि भयं-कर प्राणीओ उपर अने अन्य अमुरो माया राचित मयूर गीध आदि पक्षीओ उपर सवार थइ, हाथमां मुशल अने त्रिशूल आदि शस्त्रो धारण करी, गळामां आमुरी माया प्रसारवाना सरंजाम- वाळी अकेकी झोळी नांखी पोतपोतानी आमुरी माया एक वीजाने वनावता चाल्या आवता हता.

ज्यारे सर्व निकट आज्या त्यारे सर्वने रात्मान पूर्वक किल्लानी अंदर दाखल कर्या; अने पोते वले वंखुओ जलत सिंहासन पर वेटा; आवेला तमाम अग्ररोए विधिवत् वलेनी पूजा करी, त्यारवाद सर्वने यथायोग्य उतारा आपवामां आज्या; तेमां अग्रणी पुरुपोने महेलनी समीप भागना वागमां राख्या; ए वाग अनेक मकारनां पुष्पोथी प्रफुल्लित, दृक्ष अने लताओना समुद्दायथी शोभायमान भ्रमरोना गुंजारवथी तेमन नाना प्रकारना पक्षीओनी महुरवाणीथी जव्दायमान हतो. तेमां जे जे स्थानो वनाववामां आज्यां हतां ते सर्व दिव्य अने रत्नोथी जहेलां हतां; अश्रीजनी आजाथी ते वागना सर्व विभागो खानपानादि पदार्थोथी अलंकृत करवामां आच्या हता. समय थतां गन्यविं-पाओने बोलावी वले वन्युओ आवेल अग्ररोनुं आतिथ्य करवा त्यां हाजर थया. वयाए उत्यान करी सन्मान आप्युं, सर्वने यथोचित आसने वेसवा आजा आपी, पोते वेच जलत आसने वेटा, सर्वने मधुर वाणीथी प्रसन्न करी सुरापाननी शरुअत करवा आजा आपी; जत्तम मायवी मद्यनां पानपात्रो आमतेम फरवा लाग्यां, सन्मुख परम सुन्दरी, मृगजावक नयनी, कोकिल कंटी, ग्रीवाने हलावती, श्रवणपूलने चमकावती, करकंजने झुलावती, कटिने लचकावती, नूपुरने वजावती तमाम अगीने फरकावती, पूंघटेन लंबावती, श्रिरनी साडीने सरकावती, गंदहास्थोथी भावोने प्रयक्त करवी हिष्यी सर्व सभासदोने निरस्तती, ग्रेमीओनां प्रेमने परस्तती अने हद्यमां हरस्तती गन्यविंणी ग्रत्यान करवा लागी;

अहिं आ प्रमाणे धामधूम थह रही छे अने विद्रकाश्रममां तप करता महात्मा कुंडमाल राजिंदी मनोवृत्ति पण श्री शंकरना चरणारिविन्दमां एकाप्र थह तपोवळथी कैलास शिखरने तृत्य करावत्रा लागी; श्री अजन्मा शंकरतुं ध्यान लूथ्युं, नंदी तैयार करी शिक्त सहित कुंडमाल पासे पधार्या, तपमां आरूढ थयेल कुंडमाल राजिंदा मस्तक उपर हाथ मृकी "वरं बृहि "ए प्रमाणे उचार कर्यों, कुंडमाल राजिंदे ध्यानथी जागृत थह शिवशिक्तना चरणकमलनो समेम स्पर्श करी अति दीनताथी स्तृति करवा लाग्या; सर्वनुं शुभ करनार शंकर वोल्या के "हुं तारा उग्र तपथी वहु प्रसन्न थयो छुं माटे वरदान माग " कुंडमाले वीजो कांइ पण उच्चार निह करतां चंडाक्ष अने चंडास्यना नाश करवा विषे वर माग्यो; शंकरे प्रसन्न वदने कहुं के "तारी इच्छा प्रमाणे थशे, तारा हाथथी ए असुरोनो नाश थवो विकट छे पण हुं आ एक तने शिक्त आंयुं छुं एनो अंत वखते उपयोग करजे, तारी हत्ता अने धैर्य जोइ हुं वहु प्रसन्न थयो छुं माटे वीजो वर माग." महात्मा कुंडमाल उभय इस्त जोडी वोल्या के "प्रमु! जो आप मारा उपर अति

मसन्न थया हो तो मारा कुळनो उत्कर्ष करवा माटे एक वखत आप मारा कुळमांज अवतार लेशो. शंकर संवेम "अस्तु" कही अदृश्य थया.

वरदान पामेल कुंडमालऋषि अंतःकरणथी ऋषिओना आश्रम तरफ चाल्या, राक्षसोने खबर पडतां म्होटा दमामधी वदिकाश्रम उपर चडी आव्या, ऋषिओ व्याकुळ अन्तःकरणधी कुंडमालने वताववा लाग्या के " जुओ! आ अग्रुरो आव्या तेनो जल्दी नाश करो. कुंडमालऋषि पोतानां शस्त्र अस्त सज्ज करी मोटा शैलराजनी पेठे हट थ**इ एक पछी एक असुरोनो नाश करवा** लाग्या, घणा असुरोनो नाज्ञ थवाथी वाकी रहेल असुरो भयभीत थइ भागी चंडाक्ष अने चंडा-स्यने शरणे गया. चंडाक्ष एक मनुष्यनुं अतुल पराक्रम सांभळी क्षीभ पाम्यो, अने हेव शुं करनुं ? एम विचार करे छे तेटलामां अकस्मात् जळ अने अग्निनी दृष्टि थवा लागी, चंडाक्षे सभासदोने कह्युं के कोइ महान पुरुष आवे छे माटे तमो तेने सामा जइ सन्मान पूर्वक बोलाबी लाबो, सभासदो सामा चाल्या, थोंडे दूर जतां भेरी विगेरे रणवाद्योना अवाजो संभळावा लाग्या अने एक सिहपर सवार थयेल, भयंकर स्वरुपवाळो मायावी असुर पोतानी म्होटी सेना साथे मायाकृत देशमां उत्तर्योः सेनाने वाहेर राखी सामा लेवा गयेल सभासदोनी साथे पोते राज्यमहेलमां प्रवेश कर्यो; चंडाक्ष अने चंडास्यने प्रणाम करी उभी रह्यों; तेओए ए मायानी असुरने सन्मान साथे आसन उपर वेसवा आज्ञा आपी; अने कुशल खवर पूछ्या वाद आववानुं प्रयोजन सांभळवा आतुरता वतावी, जेथी ते वोल्यों के आपणा दानव कुळनो नाज्ञ करवा कटिवद्ध थयेल घार्कडेयना पुत्रना समाचार मारा जाणवामां आव्या जेथी आपे नहीं वोलाव्या छतां एनी नाश करवा हुं आहीं हाजर थयो छुं, मार्टे आज्ञा आपो; चंडाक्षे समयने धन्यवाद आपी विना बोलाव्ये आवेल सिंहानन नामना असूरने कुंडमालने हरावदा माटे जवा आज्ञा आपी, अने तेनी साथे जवा पोताना कनिष्ट वंद्य चंडास्यने पण तैयार कर्यो.

चंडास्य अने सिंहानन म्होटी असुरोनी सेना साथे वदिकाश्रम तरफ जवा तैयार थया; प्रयाणनां वाचो वागवा लाग्यां; लडाइनो सामान अने आरामनां उपस्कर महान् मायाकृत वाहनो उपर लादवामां आव्यां; वधा असुरो मायाकृत नाना प्रकारना वाहनो पर सवार थइ पोत पोताना अभ्यस्न मायाना चमत्कार एक वीजाने वतावता वदिकाश्रमनी निकट पहोंच्या, ज्यां ऋषिमंडल सहित महात्मा कुंडमालजी वेटा हता त्यां अकस्मात् प्रचंड पवन चालवा लाग्यो, तेमज अकाले कालां पीळां वादळो आकाश मार्गने ढांकवा लाग्यां, अने भयंकर शब्दो थवा लाग्या, जेथी ऋषिओ जाणी गया के फरी कोइ महान् आपत्ति आवी; त्यां तो अग्नि अने पापाणोनी दृष्टि करती अग्नर सेना निकट आवी पहेंची.

महात्मा कुंडमालजी ऋषिओने धेर्य आपता पोताना शस्त्र अस्त्रो अमुर सेना पर चलाववा लाग्याः मथम सिंहानन पोतानी आसुरी मायाने प्रसारतो आकाशमां मेत्र मंडलनी उपमाने धारतो कुंडमाल उपर चडी आव्यो अने प्रचंड अग्निगोलकनो प्रयोग करी कुंडमाल तेमज ऋपि मंडलने दुःख देवा लाग्यो राजिं कुंडमाले तुरत वरुणास्त्रनो प्रयोग करी अग्निने शान्त कर्यो, ऋषि-मंडलने धैर्य आपी सिंहासनपर ब्रह्माखनों प्रयोग कर्यों जेथी सिंहानन सत्वर पंचत्वने प्राप्त थयो, असुर सेनामां " हाहाकार " थयो, अनंत उत्पातो थवा लाग्या, आ खबर चंडास्यने पडवाथी तुरत पोताना मायाकृत मयूर उपर चडी कुंडमाल सामे धसी आच्यो. उपरा उपर शस्त्र अस्त्रनो प्रयोग करवा लाग्यो। अने पोतानी आसुरी मायाथी म्होटा पहाडो कुंडमाल तेमन ऋषिओ उपर झुकाव्या, जेथी महात्मा कुंडमाल गभराया, ऋषिओए तुरत यादी आपी के गंकरनी आपेल शक्तिनो प्रयोग करो. आ सांभळी कुंडमाल राजर्षिए मनमां भोळानाथनुं व्यान वरी शक्तिनुं आवाहन कर्से अने असुर सेना तरफ फेंकी. सुसवाट करती प्रलयकाळनी विद्युत्नी पेटे शक्ति आकाश मार्गमां चाली नीकळी, अप्सरा करतां पण अधिक रुपवाळी ते शक्ति चंडास्यनी सन्मुख प्रगट थइ; ए सुन्द्रीना नयन परम शोभायमान अने कटाक्ष वाण तुल्य हतां तेमन कंचुकीमां कसेलां पीन पयोधर अति मनोहर जणातां हतां, रणभूमिमां आवी स्थिर थया वाद ते सुन्दरी युद्ध करता चंडास्यने पोतानी समीपें आवेल जोइ कहेवा लागी के " अरे चंडास्य! तारुं युद्धमा अतुल पराक्रम जोइ हुं देवांगना छतां तारा उपर मोहित थइ तने वरवा आवी छुं छनां तुं मारा सामुं पण जोतो नथी एथी हवे हुं जाउं छुं. ' आ सांभळी चंडास्थे ए सुन्दरी तरफ दृष्टि करी, जोतां वेंत तेना कटाक्ष रुरी वाणथी ते घायल थइ गयो अने सुन्दरीनी समीप चाल्यो आव्यो, त्यारे सुन्द-रीए पूछ्युं के कही दे, हवे तारी शी इच्छा छे? चंडास्ये कह्युं के " सुंदरी हुं तारा उपर मोहित थयो छुं, तारो भक्त अने दास छुं "" हुं तारे हाथे आववी विवन छुं " एम वोली सुन्दरी हाथमां धारण करेल रत्न जिंडित्र पंखाथी तेने वायु ढोळवा लागी, ए वायुथी चंडास्य उन्मत्त जेवो वनी गयो अने विरहीनी पेठे वचनो उचारवा लाग्यो, ए जोंइ सुंदरी पोताना विमानने उडाडती एक तरफ चाली त्यारे चंडास्य पुकार

करवा लाग्यों के ''ओ पापाण हृदयनी प्रमदा! मने मृत तुल्य करी द्रग वाण हणी, वोल्या विना चित्त चोरी क्यां चाली गइ. " इत्यादि घणी आधीनता पूर्वक ए सुन्दरीने पासे वोलावी पोतातुं मस्तक तेना पगो उपर मूकी एटलो वधो आसक्त थयो के युद्ध करवुं पण भूली गयो. ए वखते सुंदरी वोली के "हुं राजर्षि कुंडवालनुं ग्रुभ इच्छनारी छुं, तुं मारा भक्तनी साथे युद्ध करीश तो हुं तने वरीश नही; माटे जो तारे मारी साथे पेम जोडवो होय तो सर्व सेनाने निष्टत्त थवा आज्ञा आप अने तारी तमाम माया दूर कर." आ सांभळी चंडास्ये कांइक मंत्र भणी मायाने दूर करी अने सेनाने युद्ध वंध करवा आज्ञा आपी दीधी. माया दूर थतां कुंडमाल अने ऋपि-ओपर झुकेला पर्वतो कंकर थइ पृथ्वी उपर पड्या, अने सैन्यना तमाम योद्धाओ युद्ध छोडी चंडा-स्यनी समीप आत्या, अने सुन्दरीना मोहिनीस्वरुपने जोइ सर्व मोहित थइ गया। मोहिनीरुपा शक्तिए चंडास्यने कहुं के-" हुं तारा कार्यथी प्रसन्न थइ छुं छतां प्रेमनी विशेष कसोटी करवाने कहुं छुं के जो तुं मारो खरो प्रेमी हो तो तारुं माथुं मने विना विलंबे उतारी अर्पण कर. " आ सांभळी प्रेमांध चंडास्य पोतानी ग्रीवा उपर खड्ग राखी वोल्यो के आजना दिवसने हुं धन्यवाद आपुं छुं के मारा चित्तनी चोर सामी उभी छे अने हुं मृत्युवश थाउं छुं. " आटर्छ कही जेवुं पोतातुं शिर कापवा जाय छे तेटलामां मोहिनीरुपा शक्तिए तेनो हाथ पकडी कहुं के मरी जाइश तो आ मारा सुंदर स्वरुपनो भोक्ता कोण थशे? कारणके दुनियामां रसिक विना र-सनो भाव पूछनार कोइ नथी; इवे हुं तारा साथे पेम करवा वंधाउं छुं पण तुं तारा ज्येष्ठ वंधु चंडाक्षतुं मस्तक छेदी मारी पासे जल्दी लइ आव अने ते बारा परम भक्त कुंडमाळने भेट आप, पछी मारी साथे आनंदपूर्वक रमण करने; मोहिनी रुपा शक्तिनां वचनो सांभळतां वेंतज चंडास्य तथा तमाम असुरसेना "दोडो दोडो " ना पुकार करती पोतानो तमाम सरंजाम त्यांज छोडी मायाकृत देश तरफ चाली नीकळ्या अने पवनवेगे मायाकृत देशनी सीमा आगळ पहें।च्या; ज्यां चंडाक्षना इजारो भृत्यो चोकी उपर इता तेओए सर्वने रोक्या, जेथी मांहोमांहे महान् युद्ध मच्युं, अनंत असुरो कपाइ गर्यो। म्होटो कोलाहल थयो, अग्नि अने पत्थरोनी वर्षा थवा लागी, प्रचंड परन फुंकरा लाग्यो. आ वनावथी चंडाक्षे म्हेल उपर चडी जोयुं त्यां पोतानो कनिष्ट वंयु पे।ता-नीज सेनाने कापतो पोता तरफ आवतो देखायो, कपाळ उपर हाथ मुकी निश्वास नांखी पोतानी आसरी माया तेमज अस्त्रश्च सज्ज करी तेना सामे धस्यो, अने परस्पर दारुण युद्ध शरु थयुं, चंडाक्षे पोतानी तथा सामेनी तमाम सेनानो नाग थयो जोइ पोतानां प्राण वनाववा चंडास्य जपर मचंड सांग फेंकी; जे चंडास्यना मर्म स्थानने भेदी पाताळमां पहाँची. घाथी न्यथित थया छतां स्रवते रुधिरे अति क्रोधावेशमां चंडास्ये चंडाक्ष उपर प्रचंड त्रिशूल फेंक्युं, जे चंडाक्षना हृद्यघरने भेदी आकाशमार्गे चाली नीकळ्युं, वन्ने अपुरो पृथ्वी उपर पडी गया, आसुरीमाया नाश पामी, आकाश खन्छ धयुं, देवताओ आकाशमार्गे विमानपर वेसी युद्ध जोता हता तेओए जय जयकारना पुकारथी गगन मंडल गजावी कुंडमाल तेमज ऋषिगण उपर पुष्पष्टिष्टि करी, मोहिनीरुपा शक्ति अप्रभुजा स्वरुप धारण करी चमकतां शस्त्री अने किरीटथी भूषित थयेली कुंडमाल पासे आबी बोली के "कहे! हवे हुं तारुं शुं विय करुं?" कुंड-माल नमन करी वोल्या के मारा कुळनो उद्धार करवाने अर्थ कोइ काळे आप मारा वंशजोनी जनेता थजो. " शक्ति " अस्तु " कही अद्रुज्य थयां, सर्व ऋषिमंडले वेदमंत्रोथी कुंडमाल राज-र्षिने आज्ञीबोद आप्यो अने कहुं के आपे अमारां सर्व संकठो दूर कर्या छे अने हजी भविष्यमां आवनार संकष्टोंने दूर करवा आप शक्तिमान छो, एटला माटे आजधी आपने चमत्कारपुरतुं म्होइं राज्य अपेण करीए छीए, जेथी तमा पोताना वाहुवळथी गौबाह्मणनुं रक्षण सारी रीते करी शक्जो. आ सांभळी महात्मा कुंडमालजी बोल्या के " मने राजवैभवनी इन्छा नथी, मात्र तपवत आदि करी इन्दर भजवानीज अभिलापा छे. " आ रीते कुंडमालजीनां वचन सांभळी ऋषिओए कहाँ के जेम मद विना हाथी चोभतो नथी तेम राज विना क्षत्री ज्ञोभतो नथी, माटे तमारे अमारी आज्ञाथी राजपदवी स्वीकारवी पडरो. आ रीते ऋषिमंडळना आग्रहथी सिवनेन मस्तक नमाबी कुंडमालजी " अस्तु " कही सर्वनी आज्ञा लड्ड चमत्कारपुर तरफ रवाना थया.

चमत्कारपुरमां ऋषिमंडले वेदिविधिधी वीरवर कुंडमालनो राज्याभिषेक कर्यो; त्यारवाद वृद्ध ऋषिओए राजिष कुंडमालना वंशनी दृद्धिनो विचार करी स्त्रीओना गुण दोपने जाणनारी एक दृद्ध ऋषिपत्नीने उक्त कार्यमां योजी ए ऋषिपत्नी राजिष कुंडमाल माटे योग्य राजकन्या शोधवा लागी, घणी कन्याओ जोया वाद विवाह योग्य थयेली अने पतिनो पाणिग्रहण करवा आतुर थह रहेली पुष्पमाला नामनी राजऋषिनी कन्या पोतानी दृष्टिने पिय लागी;

१—ते कन्या मुख कमल तरफ चालेकी अलिमाला सरखी, छीनवी लीवेली मामभूपनी कृपाणस्प, अधरामृत चारवाने चढेली निवन नागिणी समान, यमुनानी धारा तुल्य, पित नयन चातकोने वर्षानी यामिनी तुल्य सुख आरनार, रूप मसालना धूमरूप, कनकपाटी रूप पीठ उपर

पडती काजळनी धारा सरखी, श्रृंगाररसनी वछरी समान विराजनारी, सुखमानी श्रेणीरुप, स्वर्गनी सीडी समान सुशोभित, जाणे मेरुना शिखरपर राहु वेठो होय नहि ग्लुं! आनन इन्दुथी नीकळेखं कळंक वेढं होय नहि ग्लुं! इत्यादि भ्लान्ति भरनार रेशम समान सुकोमळ, तमनी तरंगिणीरुप, तमालनी वछरी तुल्य, विधिए कलानिधिनं कलंक निचात्री निर्मित करेली, ओपदार कामदेवनी तोपसरखी, कंचनना कदली दल उपर स्तेली सापिणी समान, चांदनीनी पाछळ रहेला तम समृहतुल्य, नीलमणिथी बनावेली मनमथनी निसरणीरुप लांबी अने सौरभयुक्त वेणीवाळी.

२—शोक रहित शृंगारलोक समान सुंदर, कनकना केदारतुल्य कमनीय, गंगाना पित्र पुलिनस्प, सहागनी सेजरुप, चन्द्रना भाग समान चारु, सुभाग्यनी सभारुप, अनंगना आसनरुप, सौन्दर्य सरसीमां खीलेला सरितजना दल तुल्य दीितवान, सुकृतना समूहनी उत्पत्ति रुप, सुयशनी स्थली समान स्वच्छ, रसमंदिरना रमणीय अजीररुप, कल्पतरुनी छाया समान सर्व प्रकारना सुख आपनार, मोहिनीना शासनरुप, सौरभना वासणरुप, काम तुरंगने दोडवानी सपाट धरणी समान सुशोभित, कीर्तिना भंडाररुप, अनंगना अखाडारुप, शोभाना शृंगाररुप, यौवनना द्वाररुप, शरद्ना चन्द्र समान शीतलतायुक्त, सौन्दर्यना सिंहासन रुप, रसना सागररुप, पेमना पुलरुप अने काम कळा शीखवानी पाटीरुप विशाल भालवाळी.

३—निर्मल कमळ पर वेठेला उभय भ्रमर समान, प्रेम रुपी तुलानी दांडी तुल्य, हाव-भावना वकीलरुप, पितना मनने मोह पमाडनार, काम धतुष्यनी कमानरुप, आरसी उपर पांखो प्रसारी वेठेला अलिनी उपमाने धारण करनार, रुप सिन्धुमां विकासित नीलकमळ समान सुशोभित, चन्द्र मंडलमां प्रकाशेली शनिनी उभय रेखा तुल्य, रित नायकनी कुटिल कुपाणरुप, शिश मंड-लमां खेलता वालभुजंगनी भ्रान्तिने भरनार, नयन चातक पर आवी स्थिर थएली श्याम घननी घटा समान, शृंगार वेलीना उभय दल तुल्य, कमल पर वेठेली पट्पदनी पंक्ति समान, भाल रुपी कंचन भाजन पर राखेला नयनरुपी उभय दीपकथी नीकलती मेश तुल्य सुहागना यंत्ररुप, अने अनुरागना मंत्ररुप, भव्य भ्रकुटीवाली.

४—कंज, खंजन, मीन अने मृगना मदनुं गंजन करनार, आभादार, अजव, अनोखां, अणियाळां तीर समान तीक्ष्ण, चपला समान चंचळ, कर्ण पर्यन्त विजाल, काम भूपतिना उभय वाळक रुप, अवद्युख रंगवाळा जेना उपर सुंद्रतानुं जीन, काजळनुं श्रेष्ठ पाखर, लाजनी लगाम, कुटिल भ्रकुटीनी कल्गी अने चाहनी चाबुक धरेल छे एवा अने कटाक्षनी खरीवाळा मुखरुपी कंचननी थाळीमां नृत्य करता मदन महाराजाना उभय अश्वरुप, अनुराग वहुरीना अंकुरुप, आनंदना मंदिरमां पडेली माणिक्यनी कान्ति समान कमनीय, चटकदार, रसथी भरेलां, दीर्घ, विधिए स्रधाथी सुधारेलां, मणिनो मद उतारनार, पतिनुं मन रंजन करनार, काजळरुप कवच पहेरी, भ्रमरस्पी धनुष्य ताणी, वांका अने सीधां निरखन रूप वे तलवार वांधी उभेला काम पातजाहना युगल सिपाही रुप, अमलतानां अंग्रुज तुल्य, चपलतामां खंजनतुल्य, छलतामां मीनतुल्य, मेमनो नियम निभाववामां चकोरतुल्य, इसवामां भ्रमरतुल्य, रूप सागरना युगल रत्नरूप, सु-यशना केतु रुप, स्नेहथी भरेला यदन सदनना दीएकरुप, रसना प्यालारुप, स्मरना शररुप, ज्ञान अने ध्यानतुं हरण करनार, वशीकरण मंत्रनी मूर्तिरुप, कामना रमकडांरुप, अमृतना आलय रुप, लाजना जहाज रुप. स्नेहनो मेह वरसावनार, कामदेवे छविना पीजरामां पूरेला उभय खंजन समान खुवीदार काळां, कजराळां, लोहनी कटारी तुल्य ललित, राजिय समान रक्त, प्रदीप्त दीपक तुल्य, शोभाना समुद्रमां वडवानलनी आभाने धारण करनार, सुघडपणाना सदनरूप, प्रभाना पुंजरुप, लाजने वहन करनार, प्रमोदना पुरोहित, स्नेहना छडीदार, चित्तचाहना चक्रवर्ती, दयाना दिवान, पतिव्रताना प्रयान, नवरोजाना विधान रुप, मृगोना महाराजा, सफरीना शिरताज, सरोजिना साहिव, मनोजना मुसाहिवरुप, मुख सुधानिधि मंडलपां अमृतना उभय कुंडरुप, शीलना सरदार, प्रेमपथना फोजदार, लाल, श्वेत अने इयाम वर्णने धारण करनार, नट समान चत्य करनार, हाव भावना भन्य भंडारूप, प्रवीणतारुपी पुतळीना रमणीय नगीनारुप अने पति-मनना दिन्य दूतरुप, कामनी कपानरुप, कुटिल भ्रक्कटीमांथी नीकळता तीर समान तीक्ष्ण कटाक्ष-युक्त निर्मेळ नेत्रोवाळी.

५—विधिए शोभाने समेटी वनावेळी उंची वेळी समान, दीपकनी शिखा तुल्य द्युतिने धारण करना, सुगन्धथी भरेळी कल्पतरुनी कळी समान, तिळना पुष्प तुल्य, पंचशरना भाथां रूप; रूप समुद्रमां सुखनी सेतु समान सुशोभित, छविना तरंगरूप, सुगंध श्वास आदि सिद्धिओनी गुफारूप, शुक चंचु समान सुंदर, चंपक कळिथी अधिक चारु, चन्द्रना खोळामां खेळता बुध समान, रूपना निधिने दीधेळां वे कुंचीना ताळां तुल्य, सरळ, कोमळ, अने नमणी नासिकावाळी.

६—कंचनना पत्र समान कमनीय, वारिजना दल समान विराजगान, उभय छुधाधर

समान सुशोभित, ज्ञानना सुवनरुप, पित वचनना उभय अतिथिरुप, नयनना पित्र, सुख शिं में मंत्राभ्यास कराववा वेटेला सुरगुरु (बृहस्पित ) अने असुरगुरु (ब्रुक्ताचार्य ) समान, कपोल पर मुकेला सुंदर सुरहुमना सुमन तुल्य, चन्द्ररथना चक्ररुप, जेनी वरोवरी करवा हिंछीप हजारो वर्ष थयां समुद्रमां शीत सहन करे छे, तेमज संगति पण झुद्धमां झुद्ध मुक्तानी राखे छे छतां हजी सुधी समता पामी शकी नथी एवा उत्तम पित गुणना आसनरुप, सरोजना सिंहासनरुप, स्नेह रसथी भरेला उभय पात्ररुप, सत्यासत्य तोळवानी तुलारुष, कपोल पर लपटी रहेला किं सुक्ता पत्र समान, प्रेमकथा रस पीवाना उभय कंचनना प्यालारुप, पित बचनोने स्नान करवानी वावडीरुप, शोभाना समुद्ररुप, काम यंत्रनी शाळारुप, स्वरुपनी ध्वजा समान, शिं के सहोदर जाणी यळवा आवेल छीपनी छिनने धारण करनार, सुमेरुना शिखर पर चडेला शिं वजाववानी झांझरुप, रागना आलयरुप, मंत्रना भव्य भंडारुप, ज्ञानना विवररुप, श्रुतिना कमनीय कूपरुप, मनना मित्ररुप, रूप भूपना सुवनरुप, नयनना सचीव समान सुशोभित, कन-कनी कचोरी तुल्य, हिम शिखरनी गुफाना वांका द्वारुप, मन मंदिरना उभय झरोखारुप, अने पंचशरना फरकता निशान जेवा सुंदर अवणवाळी;

७—-मदन महीपनी उभय आरसी समान अमूल्य, माखणना गोळा तुल्य, चन्द्र मंडळ समान प्रकाशमान, रूप समुद्रमां तरती पृष्ट रत्ननी माछलीओ समान सुशोभित, विधिए चांदीनी कली दइ बनावेली सुवर्ण शिला समान चमकदार, पितना मनने बिना मुल्ये खरीदनार, मनोजना अभिनव आसनरूप, स्फिटिकना फरसरूप, सुखमानी सरसीरूप, केशर, चंदन अने गुलालने एकत्र करी विधिए बनावेला, नयनोरूपी नटने नाचवानी रंगभूमिरूप, अनंग वल्लरीने जगवाना शुभ्र क्षेत्ररूप, पितना मन रूपी मल्लने खेलवाना अखाडारूप, मोह मंत्र साधवाना सुंदर स्थानरूप, कपूर अने कंदनी द्युतिने मंद करनार, रूपनी रसाना उभय खंड रूप, पितना लोचन रूपी अश्वनी विद्यारस्थलीरूप, पितना मनोरधर्थने चालवानी सहकरूप, गोरा अने गोल कपोलवाळी:

८—प्रीतपनी प्रगट प्रीतिनी प्रतीतिरूप प्रभायी प्राएल, मदनना मनोहर वागनी आ-भाभरी गुलाव कळी समान, नारंगी तुल्य आम्र फळ समान, रूपना तळाव तुल्य, मध्य प्रदेशमां गहेरी, इन्दिराना मन्दिररूण, रितमुख बनाववाने विधाताए थोडो भाग लड़ लेवाथी मध्यमां खाडा पड्या होय निह शुं ? एवी भ्रान्ति भरनार, कामदेवना राजसूययज्ञना कुंड समान, चन्द्रना चरण समान चारु, कलधौत समान कमनीय अने कामरुपी रंगरेजने रंगणुं रंगवाना कुंडारुप मध्यथी उंडी अने पुष्ट चित्रुकवाली.

९—मभात अने संध्यानी अरुणता धारण करी मळेला तेरस अने द्वितीयाना युगल गिश्च समान सुशोभित, उप अने पीयूपथी अधिक मिटाशवाळा, कमल तुल्य कोमळ, विम्व फळथी अधिक अरुण, विद्वमनी लालिमाने लिज्जित करनार, सहज मुवासयुक्त, चन्द्र उपर मुकेला वंयुक्तना कुसुम तुल्य कमनीय, रसालना नवांकुर समान निर्मळ, मजीठने होडमां हरावनार, अनारनी कळी तुल्य अभिराम, अमीकूपना उभय किनारारुप, विधिए सर्व गोभाने समेटी वनावेला उज्वळ, मोहिनीसा धनुष्परुप, चन्द्रनी मध्ये सिन्द्र्यी काढेली उभय रेखा समान, वंयुजीवना वंयुरुप, रजो गुणना नायकरुप, अनुरागना प्रतिविम्बरुप, जपा, गुलाल अने इंगुम्नुं गुमान उतारनार अभिनव उभय ओष्ट्रवाळी;

१०—कपल कोशयी झरता मालतीनां पुष्प समान, पितना मनने पहेराववा माटे अगाउथी गुंथी राखेल कुसुमनी माला तुल्य मनोहर, कलानियिनी कला तुल्य, चपलानी चारताने धारण करनार, कमल कोशमां वसेली कमलाना आभूपणोनी ज्योति समान सुशोभित, पितना चित्तने फसाववाना फांसा रूप, द्र्पेणमां पडना सूर्यना प्रकाश समान प्रमामय, ऋपिराजोनी तपश्चर्याना तेजरूप, वदन हिमालयथी प्रगट थती सुरसरिता समान शुभ्र, क्षीर सागरना तरंग तुल्य, प्रमत्याना अंकुरने सींची प्रक्षित करनार, हीराना हाररूप, हंसनी पंक्ति समान, शारदानी साडी रूप, दीप मालिका समान द्युतिने धारण करनार, मीसरीनी महरताने लूंटी लेनार, खीलेली संन्या उपर पहेला सुधाकरना किरणो समान कमनीय, म्यानमांथी नीकळती सजेली तलतार तुल्य, खरता तेजस्वी तारा तुल्य, रूपेरी तार समान, पारद तुल्य प्रभावाला; चन्द्रथी चोगुणी, चन्द्रिकाथी सो गुणी अने चंचलाथी हजार गुणी चारुताने धारण करनार मंद हास्यवाली;

११—अनुरागनी ठकराणीरुप, रागनी राजधानीरुप, मयूर अने कोकिलाना अवाजने लिजित करनारी, चातुरीनी मातारुप; माधुरीनी सखीरुप, सरस्वतीना निवासरुप, मीटाइथी भरेली, आनंद आपनारी, मुख चन्द्रयी स्रवती सुधानी धारा समान सुखदायिनी, सपत्नीना दिलमां दाह उपजावनारी, इश्चरस अने पीयूष समान श्चुधाने टाळनारी, बीणा आदि वाद्योधी पण अधिक श्रेष्ठ, मुक्ता समान स्वच्छ अक्षरोनी उत्पत्तिरुप, सुधासागरनी लिलत लहरी समान जाणे

P)CI

कपलकोशमां पेसी भ्रमर गुंजारव करतो होय निह हुं है एवी भ्रान्ति भरनार, जेम स्वातिनां विन्दु ज्यालना वदनमां पड़ी विष, पपीहाना मुखमां पड़ी पीयूष, छीपना मुखमां पड़ी मोती अने कदलीना मुखमां पड़ी कपूर थाय छे तेम सपत्नीने श्रवणे पड़ी दु.ख देनारी, सख़ीने श्रवणे पड़ी सुख देनारी, अने गुरुजनने गुणतुं भान करावनारी मृदु वाणीवाळी.

१२—पट्रसना स्वादनी परीक्षा करनारी, कोककला पढवानी पोथीरुप, नव रसनी भूमिरुप, मयंक तुल्य मुख संपुटमां रहेल प्रेमनी यित्रका समान, शारदानी सेजरुप, मुखनी साहेली समान मुशोभित, मुखारिवन्दमां निवास करी रहेली विधिनी वरांगनारुप वरदायिनी, सप्त स्वर सागरनी नौतम नौका समान, मुशारस पान करवानी पतूपी रुप, आगम निगम इतिहास पुराण अने व्याकरणनां वखाण करनार विदूषी रुप, गूढ ग्रन्थोनो प्रकाश करनारी, सर्वना मननुं सत्य असत्य कही आपनारी, यशनी गायिका जाणी विधिए मुधाथी मुधारेली, नाद वेदना भेदने उचारनारी, कमल कोशमां रहेला जपाना मुमन समान मुशोभित, इंगुर अने गुलालनी प्रभुताने पायमाल करनारी, तार विनानी वीणा समान निनाद करती, उत्तम उत्तम वार्ताओनी जनेता समान, रसोनी देवी रुप, सकल मुजाणतानी मुखदायक सखी रुप अने मुवासनी शय्या समान रमणीय रसनावाली;

१३—विद्रुपना डव्यामां राखेळ निवन मुक्ताफळरुप, कमळदळना मध्यमां वेठेळी इन्द्रवधूनी पंक्ति समान, चमेळीनी कळी समान चमकदार, मिणना मुक्तरमां पडेळा सीकर समान, मयंकनी मध्ये मुधा सींची वावेळी विद्युत्नी कळागे समान मुक्तोभित, दाडिमना दाणा तुल्य दीित-वाळा, प्रकारागनी प्रभाने धारण करनार, कुन्दनी कळी तुल्य, जपाना पुष्प समान प्रफुल्लित, निर्हें वींवेळा मोती समान मनोहर, हीराओ समान हृदयने हरनार, हंसनां वच्चांओ तुल्य शुभ्न, यशना वीज रूप, तपोधनना मन समान विमळ, अमृतनी किणकाओ तुल्य, हास्य रसना रमणीय नगर रूप, चंद्र मंडळमा पडती ताराओनी झांइ तुल्य, जाणे वाणी पर प्रसन्न थड विधिए वे सरवाळो मुक्ताहार पहेराव्यो होय निह शुं १ द्विज (दात-विप्र) नी राजि द्विजराज (चन्द्रमा) नी सेवा करती होय निह शुं १ इत्यादि भ्रान्ति भरनार, मुवर्णनी रेखा समान, मंगळना वाळक तुल्य मनो-हर, जवाहिर तुल्य ज्योतिथी भरेळा, चन्द्र मंडळमां नीकळेळी हीरानी खाण समान खूवीदार, वत्रीश ळक्षणनी मृतिं रूप, शिशा मंडळमां वेटेळ सुरोनी सभा समान सुवोभित, सुंदर सोळ कळाना कटका वर्री वनावेळ वत्रीश ढांतवाळी;

१४—कमल, केतकी, चम्पक, चमेली, केसर, कपूर, कस्तृरी, अगर, गुलाव, जाइ, जुही, मालती अने मोगराथी अधिक, वारे मास भ्रमर समूहने वसंतनुं भान कराव नार मुखवासवाळी:

१५—पितना चक्षचकोरने पूर्ण चन्द्र समान आनंद आपनार, अरिवन्द्रनी आभाने अभिमान रिहत करनार, सुखमाना सदनरुप, विधाता रुपी कारीगरे कंजथी कोमळता छइ, गुलान्थी सुगंध छइ, चन्द्रथी प्रकाश छइ, रितथी रुप छइ, सुजाण्यी चातुरी छइ, नवाण्यी नीर छइ, सुजण्थी सुरंग छइ; सुधानो स्वाद छइ अने आखी वसुयानुं मुख छुंटी बनावेल; जेनी वरावरी करवाने ब्रह्मा चंद्रविम्व तैयार करी पाछुं कटके कटके तोडे छे अने कटके कटके जोडे छे छतां हजी सुधी तुल्यता करी शकतुं नथी; जाणे प्रातःकाळे सरोवरमां कपळ खील्युं होय निह छुं? सोनजुही उपर गुलावनुं पुष्प खील्युं होय निह छुं? इत्यादि म्ह्रान्ति भरनार, सप्तिपना यहोनी सिद्धिरुप, दिनेश्चथी द्विगुण अने चन्द्रथी चार गणी कान्तिने धारण करनार, दर्पणथी अधिक अमल, ज्योतिथी आखी अवनिने प्रकाशित करनार; गज मुखने वंध करनार कंज, कंज मुखने वंध करनार चंद्र अने चंद्र सुखने वंध करनार मनोहर मंदहास्ययुक्त मुखवाळी;

१६—सप्त स्वर, त्रण ग्राम, श्रुति अने मृच्छेनाना धानरुप, मुखरुपी चन्द्रमंडलना परम आधार रुप, अमित उज्बळ, शील अने शोभानी निवासभुमि, वियतमनी मीतिनी मतीति रुप, कम्बु समान कमनीय, जावकना रंगथी भरेली काचनी शीशी समान, मुखना सदन रुप, मुखकमळनी मनोहर नाळ तुल्य, कोकिला समान नाद करती, वीनना त्रण तार समान त्रण रेखा- ओने धारण करनारी अने कपोतना कंठ समान गोळ ग्रीवावाळी;

१७—दर्पण समान निर्मळ, कदलीना पत्र जेवी, पंचरारने प्रवीणता शीखवानी पाटी रुप, यौवनमंदिरनी भींत समान भव्य, यौवन महीपितना सेवक कामदेवने रहेवाना स्थान रुप अने जमावेल कदली दलना गर्भ समान सुकोमळ पीठवाळी;

१८—प्रभातमां अरुण अरविन्दनी मध्य आनंदथी वेठेल इन्द्रगोपनी पंक्ति समान सुज्ञो-भित जाणे पद्मरागनी अंदर हीराओ जडया होय निह शुं? कंज पत्रोपर सुधानां विन्दुओ पडयां होय निह शुं? अभीकुंडमां केलि करता तारा गण होय निह शुं? इत्यादि भ्रान्ति भर्रेनार दिन्य

दीप्तिना धामरुप, पदननी माळारुप, तेमज सपत्निने नखथी शिखा पर्यंत पञ्चिलत करनार निर्मळ नखोवाळी.

१९—चन्द्रक्षी करतलमां किरणोरूप वनी पितना मनक्षी चकोरने स्वाधीन करनार कामदेवना कवनाना मोहन, स्तंभन, वशीकरण, उचाटन आदि गुणोने छिनवी लेनार, चम्पानी किलकाओ समान सुशोभित, पंचशरना पांच शररूप, दिलने ललचावनार कल्पतरुनी सुंदर शाखाओ समान, सुगन्ध अने स्नेहना निवासरूप, कोमळ अने निर्मळ, दश चक्र चिह्नथी विगाजित दीपक्तनी शिखाओ समान दीप्तिने धारण करनार अने रितनी विजय लेखिनीरूप करनी अंगुलीओ वाळी.

२०—रुप सरोवरमां खीलेला सनाल कमलना पत्रो समान कमनीय, श्रावणनी संध्याए थता सूर्यना रंग तुल्य रक्त, छहागनी साहिबीना लिलत लेखयुक्त, उदय थता आदित्य समान अरुण, गुलावनो गर्व गलित करनार, रिद्धि अने सिद्धिना निवासरुप, परम प्रकाशमान, पितना चित्तने चोरनार, इंगुरतुं अभिमान उतारनार, लालिमाथी विद्यम, दाडिम, जपा अने विम्व आदिने लजावनार, विधिए फारसी असरमां लखेल पंचशरना मवंधरुप रेखाओथी रमणीय, लक्ष्मीनी खाणरुप, मनोजरुपी रंगरेजे कमलदल उपर वांधेली चूनडी समान, कंचन तुल्य कलित अने माखण समान छकोसळ करतलवाली;

२१—ह्यानी छहरी समान, तनरुपी घनमां दािमनीनी द्युनिने धारण करनार, कमछना गृणाछ नाछ समान छुकोमछ, पिना मनने फसाववाना पास रूप, सपत्नी पासेथी सुद्दाग रपी दंढ छेवा विधिए अपण करेछ उभय दंडरप, कामकेछिनी छितकारुप, मुख मयंकथी पीगूप पान पामवा दोडेछा उभय छरग समान, सुवर्णना दंढ तुल्य अखंड, सौन्दर्यथी भरेछा, तन तरुवरनी उभय शाखारुप, अति निर्मळ मूळवाळा, अन्य मानिनीओना मुखने पछिन करनार, मदन मिहिपना विजय ध्वज समान सुगोभित, केसर, कनक, जुद्दी अने चम्याना रंगने छजावनार, गरेळ अने गौर सुज दंढवाळी.

२२—कमल केशिनी वचे वेटेला भ्रमर समृह समान, कंचनना कलशपर धरेला परकत मणिना ढांकणा तुल्प, शंकरना मुखमां रहेल हालाहलनी कोथली समान, मुवर्शना वटवामां जडे-ल ज्याम मणि तुल्प, लघु तन बनी रहेला तमोगुणस्प, जाणे अमीना कुंभ उपर अनंगे छाप

學學

मारी होय निह शुं ? श्रीफळ उपर राखेली विपनी किण समान जाणे कामदेवरुपी गवैयाए तन-रुपी तंबुरनो सुंदर स्वर मेळववा रोम राजिनो तार ताणवा खुंटीओ लगावी होय निह शुं ? जाणे रितरणमां उभय सुभटोए शिर उपर लोष्टना टोप धारण कर्या होय निह शुं ? एवां ज्याम तेमज अमीथी भरेल कनकना घडापर धरेला माणिकना ढांकणा समान मुजोभित, यौवन छत्रपति उपर धरेल सुवर्ण छत्र समान, शरद्ना घनमां उद्य थती अरुणद्युति सरखां, स्फिटिकना पहाड उपर प्रसरती सन्ध्यानी कान्तिने धारण करनार, गंगामां प्रवेश करता सरस्वतीना जळ समान मुजोभित, जाणे अंतरनो राग बाहेर प्रगट थयो होय निह शुं ? एवा लाल कुचाग्रवाळी;

२३—अरुण अनार तुल्य, सुंदर नारंगी समान, डंवां घरेलां नगारां सरखां, शिफल समान कठिन, चक्रवाकना युग्म समान सुशोभित, मारना मितदाररूप, कंन कोश समान कमनीय, दोपीदार तरबूच तुल्य, हिमालयना उभय शिखर समान उन्नत, कामदेवने खेलवाना गेंद्र रूप, सुरित समुद्रमां तरी विना मयासे पार पामवा छातीए वांधेल तुंवडा तुल्य, मुवर्णना कलश समान, गेंद्र, गुंमज, गिरि अने गजना कुंभस्थलनो गर्व गाळनार, मदनना घटरूप, मितवर्ष वृद्धि पामता अनंगना अंगरूप, यौवन महीपनुं आगमन धतुं जाणी मदन फरासे ताणेला उभय तंत्ररूप, तरुणता-रूपी तरुना सुंदर फळ समान, कामदेवना महेल उपर रहेला सुवर्णना कांगरा तुल्य, मेदानमां यौ-वन नरेशे गोठवेला निशानरूप, रूपनी नदीमांथी धीमे धीमे नीकळता मस्त गयंदसमान सुशोभित, सुमनना गुच्छा समान, द्युतिना दोणारूप, सुमेरुना शिखर समान उन्नत, अनंगे उंश घरेला आ-सवना प्यालारूप, कमठनी पीठ समान पितना उरने आनंददायक उरोजवाळी

२४—तन रुपी प्रयाग तीर्थमां त्रिवली रुपी त्रिवेणीने किनारे वेणीमाधवना मंदिर समान मनोहर, दर्शन करतां पतिनां नयनोने प्रमोद आपनार, सत्व, रज, अने तम ए त्रिरेखायुक्त विराजमान हृदयवाळी;

२५—कनकनी भूमि पर आळखेळी मृगमदनी रेखा समान, उरोजरुप शैळ मन्ये नीकळेळी यमुनानी धारा तुल्य, नाभिकुंडमां जल पान करवा माटे हाथीए प्रसारेळी सुंढ सरखी, जलधरनी एक धारा रुप; उरोज रुपी वन्ने राजाओए पोतपोताना भाग वेंची लीघा वाद स्थापेली सीमा रुप; अधर रस चाखवाने नाभिस्थलथी नीकळेळी पिपीलिकानी एंकि तुल्य, यौवन रुपी वसंत ऋतुमां अफुल्लित अंग लताओने लपटी रहेला भ्रमर समान सुशोभित; जाणे पाछळ विलंबिन वेणी आगळ

प्रतिविम्वित थयेली होय निह शुं ? एवी काळी, सुकुमार, पन्नगीनुं रूप धारण करनार, कंचनना कुंभ तुल्य उरोजधी नीकळती आसवनी धारा समान; हरना नेत्र हुताश्चनधी दग्ध थयेला कामदेवे नाभि सुधा कुंडमां स्नान कर्याथी आग बूझातां उठेला धूम समूह तुल्य, अनुरागनी रेल समान, मदनरुपी मतंगने पगे वांधेली सांकळ तुल्य; यंत्र, मंत्र, अने तंत्रना तार समान रोमाविलवाळी.

२६—शरीररुपी मेरुना मध्य भागमां सुकावेल कामदेवरुपी मस्त फकीरना नील वसनरुप, कनकनी शिला पर स्तेली सापिणी समान, मटेला मुम्प्रपणानी रेखारुप; पूर्वतुं वैर विचारी
शंकरना अंग शिथिल करवा कामदेवे सज्ज करेली सांग समान, कुचरुप विहंगना शिकार माटे
ताणेली तुफंग तुल्य, यौवन सरोवरमां उगेली निवन वेली समान, पितना नयनरुपी खंजनने वायवानी रज्ज समान, काजलनी रेखा तुल्य, अन्धकारनी धारा सरखी, चिन्तामणिनी चोकी उपर
नीलमणिना किरणोनी झांइ समान; कामदेवरुपी वागवाने वावेली शृंगार लिका सरखी, उरोजरुपी हिंडोले वांधेली मखतूलनी दोरी समान, अमृतना घडा उपर चडती पिपीलिकानी पंक्ति
समान, तरल तरंगवाळी शृंगार रसनी सरिता तुल्य, सोनानी पिटेका उपर लखेल मोहिनी मंत्रनी
पित्रका समान, वाजीगरनी वाजी तुल्य; केसरनी पृथ्वी उपर कामरुपी चोपदारे धारण करेली
अवनूसनी छडी सरखी, हृदय घर छोडी भागी गयेली शिद्युताना राहरुप रोमराजिवाळी;

२७—कोमल, विमल, कामदेवरुपी राजानी रंगभूमि समान, सप्तनीने सतावनार, शोभाना समूहरुप, उदय पामता आदित्यनी आभाने धारण करनार, यदन महीपने विराजवानी वेदिकारुप, मखमल समान नरम अने कुन; मभाना पारावार समान; किरतारनी कुद्रस्तनुं भान करावनार, पितना मनरुपी मृगने विलास करवाना रमणीय प्रदेश तुल्प रोमराजियी विराजित उदरवाळी; पितना मन रुपी हंसने बेसवा माटे रुप नदीना कान्तिमान किनारारुप, यौवन महीपें विजय मेळववा वांधेल मोरचानी मर्यादारुप; अति क्षीण किट माथे कुचनो भार धारण करवा विधाताए बनावेल सुवर्णदामना बंध सरुखी; सुवर्णनी सीढी समान सुशोभिन विवलीवाळी.

२८—रुप सरितानी भ्रमरी समान, जेमां वेसी काममुनि मोहिनी मंत्रनो जाप करे छे एवी ज्ञृंगार रसनी गुफारुप; आनंद सुवनना द्वाररुप; सुवर्णभृमिमां कीटे वनावेळ छिद्र सर्खी; पितनी नेत्रवीकीओने रमवानी रंगभूमिरुप; स्वामीना मनश्रमरने रहेवाना रसभिन रन्ध्रम्प; उरोजरुप किद्यामां जवानी खडकी समान, मन्मधनी मथनीरुप, किरतारनी छेख छखवानी दुवात

~--PR-----

समान, सौन्दर्य ठगना अन्धारा क्रूप तुल्य, इयाम तमाल लताना क्यारारुप; व्यालना विवर समान; अति गंभीर सुक्षोभित कुंड सरखी; वाल्यावस्थाने छुपावाना भें।यरारुपः वत्रीज्ञा लक्ष- णनी क्षोभाना भंडार तुल्य; सौन्दर्य नगरमां काम नृष्तिए वनावेल रसक्र्य सरखी, अमृतना तळाव तुल्य, कायाकिछाना मध्यमां निर्मित करेली तोष सरखी अने पंचज्ञरना प्याला समान नाभिवाळी;

२९—सिंहनी कटिथी सुद्धम कमलनाल, तथी सुक्ष्म नागवेल, तेथी सुक्ष्म दोरो, तेथी सुक्ष्मवाळ, तेथी सुक्ष्म तार अने तेथी सुक्ष्म मकरीतार तेनाथी पण सुक्ष्म जिह्नामां रहेल वाणी समान देहमां स्थित थएली;

ब्रह्मा वीजा अवयत्रो वनात्री मध्य प्रदेश वनावत्रो भूली गयो होय निह शुं ? अयीत् अति सूक्ष्म भूतनी मीठाइ समान, साधुनी जुउाइ समान, शियाळनी व्हादुरी तुल्य, धीरा नायि-काना हास्य समान, दासीना सुल समान, शूरवीरनी शंका समान, रंकना वित्तसमान, सूमना दान समान, मूहना ज्ञान समान, अने गोरीना मान समान अदृत्य कटिवाळी;

उ०—जाणे कामदेवना मोरचाना वे बुरज होय निह शुं ? रितराजे रितरणमा विजय मेळवी उभय नगारांने उंधा वाळ्यां होय निहशुं ? गवैयाए गायन करी तंबुरने उछटा राख्या होय निहशुं ? इत्यादि आन्तिने भरनार, कामद्वारना चारु चोतरा समान, चक्रवाक तुल्य चारुताथी चित्तने चोरनार, चामीकरना चक्रवप; प्रेमरंगथी भरेला सुवर्णना घट समान, प्रभाना पुंजरुष सर्व शोभाने समेटी अमित उपमाओने छपेटी विधिए व्हालधी वनावेला, कटि पश्चात् भागवाळी;

३१—कदलीना गर्भ समान सुकोमल, रितराजने रमण करवानी सुंदर स्थलीक्प, गजराजनी सुंद समान सुशोभित, जेनी समता पामवा कदली शिर उपर जटा धरी, मौन ग्रहण करी
एक पगे उभी उभी हजी सुधी तप कर्या करे छे; रुपना अने रसना आसनक्प, स्मरना सिंहासन
रूप, सपितना गर्वने गाळनार, समान ढाळवाळां अनंगना रथनी धरी समान, कल्पतक्नी उभयशाखा तुल्य, सदा पियतमने सुख आपनार, विद्युत्थी पण विशेष द्युतिवाळां, सुधारसथी भरेल
शेरडीना सांटा समान, कामदेवना दंडस्प, पितमनना अवर्ळवनस्पः, कमलनाल तुल्य कमनीयः;
अन्य मानिनीओना मदने मुकावनार, सहज सौरभथी भरेलां, अनुरागथी फेलायेल मफुछित
सहागनी वेलीस्पः, स्मरना भाथां समानः सुवर्णना स्तंभ तुल्य सघन जधनवाळीः

PIC

३२—विधाताए घनसारनो सार छइ केसर अने कनकनां चूर्णेमां सुधा सिछछ मिछावी वनावेछी, रंभानी छिव छीनवी छेनारी, रंभाने कान्तिहीन करनारी कोमछ अने अमछ केतकीना दछ समान पीडीओवाळी;

३३—प्रवालनी प्रभाने धारण करनार, उभय सूर्य समान सुशोभित गुलावी गोरां गुल्फोवाळी;

२४—मृदु, मनोहर, गुलावदल अने मवालधी अधिक आभायुक्त दाडिमना पुष्प स-मान २क्त, सपत्नीना सालरुप, राजस रंगवाळी. आनंद आपनार, रक्त कमल कोश समान, वज्ञी-करण मंत्रनी गुटिकारुप; पतिना मननी वेडी समान एडीवाळी;

३५—जेनी उन्दळता जोइ चांदनी लज्जित यह पृथ्वीपर लोटे छे, पद्मराग अने रतन-थी जहेल कुंडमां कुमकुमना विन्दुओ समान शोभता मनने मोह पमांडनारा, दिलने वींधी आरपार जनार, दर्पण तुल्य निर्मल द्युतिवाला, कमलना दल उपर पडेला स्वातिना विन्दुओनी शोभाने ह-रनारा, चंपानी कलीपर पडेला मुनाहारनी चारुताने परास्त करनार, कमलनी कलिका माथे पडेला गंगाजलना विन्दुओनी आभाने अभिमान रहित करनार, अर्थ गुंजा तुल्य, चकोरना चक्षु समान चमकदार, चेटकना चिह्नस्य, कनकनी कणि समान अंगुलीओनी अणी उपर जडेला अमूल्य नगीना समान मुशोभितपदनखवाली;

ह६—विधिए सुधाकरनी कळाने जावकना रंगथी रंगी सुधाथी सुधारेळी होय नहि शुं ? शोभाना समुद्रमां विद्वन छता समान विराजनारी, सीधी, सुंदर, सुशोभित, कंजनी कळिकाओ तुल्य कमनीय, शुभना सरीवरस्य, पद्यंक्रजरुपी भाथामां पंचशरना वाणनी पंक्ति होय नहि शुं ? सघन, मनोहर, छांवी नहि तेम इंकी पण नहि, परम मभागय पातळी, दर्षण समान श्रुतिवाळा निर्मळ नखोने धारण करनारी, सपत्नीना शरणस्य, दश दिशाओनी देवीओस्य, जाणे दिग्याछोनी सुशोभित छडीओ होय नहि शुं ? दशं इन्द्रिओने वांधवाना यंत्रो समान, मनतुं यथन करवामां रचयास्य, कामदेवना मुद्धदना कांगरा तुल्य दिखने छोभावनार, रुपनी परिशीमा, माखण समान चींकणी अने कोमळ, पितना अनुरागने रहेवाना प्रकाशमान स्थानस्य, वर्णन करनार कविओनी मित पांगळी वनावनार पगनी आंगळीओवाळी;

~~~~

३७--मान सरोवरमां उगेलां उभय अपल कपल समान कान्तिवालां, जपा अने जाव-कनां रंगतुं अभिमान उतारनार; कल्पतरुना पछव समान विमल, भ्रम तमनो विनाग करनार भानुरुप, रतिपतिना मुकुटमां रहेल लाल मणि अने माणिक समान मुजोभित, लाखोना मनने लोभावनार, आंखोने अमित सुख आपनार, लिलत, अनुपम, लाल जावक समेत सुमनना निकेत-रुप, महेंदीना रंगथी रंगेला निर्मळ नखोने धारण करनार, विराजमान, गज अने इंसनी गतिने लजावनार, कोमलता अने निर्मलतानी रंगभूमिरुप, शोभासदनना अभिनव आंगणा रुप, अरुण दल पर कोपेला सूर्य समान रक्त, राजिव गणना रजोगुणने जीती लेनार, पळंपळॅ पतिना मनमां उद्भवेल पूर्वोतुरागने प्रगट करता; विंव अने इन्द्रववृता रंगने पराजय प्रमाडनार, स्वाभा-विक सुरंगवाळा; पृथ्वीपर विछावेल कमलनी पांखडीओ समान अरुणकान्तिवाळा; मख्रमल समान मनोहर पेज्ञमाइदार, अति अरुणताथी मुग्धवधूओने दिवसे संध्यानी भ्रान्ति भगनारः शिशिर लताना किसलयोनी कान्तिने कवने करनार; चांदनीना विल्ञाना उपर मखमलना विल्ञानानी द्यति दशीवनारः; गमन करतां आंगणाना स्फिटिकवंधने विद्वमनुख्य वनावनारः; कमनीय किसलय उपर जामेला जपा पुष्पना परागनी मभाने धारण करनार; वीडाएल वंबूकना दल समान; सुवासना सागररूप,; पटीरना पछ्च समान; उन्नत अंगुष्टवाळा; आभादार अंगुलीओवाळा; शोकना भाळरुपी सिंहासनपर स्थिर थनार; खीलेला सुहागना वागरुप; इंगुरना रंग समान रक्त अने नूपु-रना झणकारथी शब्दायमान चरणोवाळी:

३८—सर्व सद्गुणसंपन्न, शिखाथी नख पर्यन्त सर्वांग सुंदरी पुष्पमाला सर्व रीते योग्य जणातां द्वद्ध ऋषिपत्नीए ऋषिमंडलने वात करी. ऋषिमंडले तुरतज ए पुष्पमाला साथे राजिं कुंडमालनो अग्नि, सूर्य, ब्राह्मण अने वेदनी साक्षीथी विवाह कर्यों.

वर्ष ऋतुथी मयूर अने मयूरथी वर्ष ऋतु, पुष्पथी वसंत अने वसंतथी पुष्पो, राजाथी प्रजा अने प्रजाथी राजा, सुवर्णथी जवाहिर अने जनाहिरथी सुवर्ण, गीतथी कंड अने कंडथी गीत, यामिनीथी चन्द्र अने चन्द्रथी यामिनी, किवधी काव्य अने काव्यथी किव, पंकजथी तळाव अने तळावथी पंकज, विनयथी विद्या अने विद्याथी विनय; द्वारथी वंधनमाल अने वंधनमालथी द्वार, रंगोलीथी आंगणु अने आंगणाथी रंगोली, तांबुलथी मुख अने मुखयी तांबुल, जेम परस्पर उपकारक वनी शोभे छे तेम राजिष कुंडमाल तथा सती पुष्पमाला शोभवा लाग्यां.

लग्नविधि थइ रह्या पछी वर कन्या दृद्ध ऋषिओने पदबंदन करी हाथ जोडी सविनय कहेवा लाग्यां के "महात्मन्! अमोने कांइ वोध करो। "

ऋषिओं समेम हिंपत वदने आशीर्वाद आशी वोल्या के—" तमारे वलेए निरंतर अन्योन्य प्रीतिथी वर्तन करवुं, देहांत लगी अन्योन्य उत्तम भाव मचिलत राखवों, एक वीजाथी अलग थतां अन्योन्य अभावनी उत्पत्ति न थाय एवो यत्न करता रहेवुं, जे कुटुंवमां स्त्रीथी पुरुप अने पुरुपथी स्त्री प्रसन्न रहे छे ते कुटुंव कल्याण मेळवी दृद्धि पामे छे, पुरुप स्त्रीना तेम स्त्री पुरुपना सुखदुःखमां भाग लेनारी होवाथी अर्थागना कहेवाय छे, ज्यां लगी पुरुष उद्वाहित थयो नथी तथा लगी ते अर्थ गणाय छे. कारणके मात्र पुरुपथीज प्रजोत्पत्ति थती नथी, परंतु स्त्रीनो पाणिग्रहण कर्या वाद पूर्ण थड प्रजोत्पत्ति करवा शक्तिमान् थाय छे; गृह गृह नथी पण स्त्रीन गृह छे, कारणके स्त्री रहित गृह जंगल समान जणाय छे; स्त्री धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष मेळवत्रामां सहा-यभूत थनारी छे; विदेशमां विश्वासपात्र पण स्त्रीन छे; रोगार्त पुरुपने स्त्री समान एके औपध छेज निहः पुरुपने स्त्री समान आस्त्री दुनियामां अन्य कोइ साचुं सगुं नथी, एटला माटे तमा-रे धर्म, अर्थ अने काम संपादन करवामां एक अन्तःकरणथी तुल्य आचरण अने तुल्य वृत्तिथी वर्तवुं.

राजन! पुरुषे स्ती प्रत्ये केम वर्तवुं ते सांभळो. पुरुषने कांइ प्रयोजनने छई विदेश जवा-तुं धाय तो तेणे पोतानी धर्म पत्नीना पोषण अर्थे प्रथम योग्य व्यवस्था करवी. सवव गमे तेवी सद्गुणी स्त्री होय छतां खानपाननी असगवडताने छीधे अवळे रस्ते दोराय छे; जे संभाळपूर्वक स्त्रीने दुराचारने मार्गे जतां रोके छे ते पुरुष पोतानी प्रजाने निष्कलंक राखे छे तथा पोतानां प-वित्र चरिनो प्रकाशमां लावी शके छे; कुटुंवनी आवरुनी वृद्धि करे छे. तेमज प्रसन्न मनथी स्व-धर्म पाळी शके छे; द्रव्य साचववानां कार्यमां, स्त्रानविधिनां कार्यमां, धर्म संपादक कार्योनी व्यव-स्थामां, पाक विधाननां कार्यमां अने घरना किम्मती वासण तेमन वह्नाभूषण संपाळी राखवाना कार्यमां पुरुषे स्त्रीने योजवी.

आ प्रमाणे राजिष कुंडमालने शिक्षण आपी राजराणी पुष्पमाला तरफ मुख फेरवी कहेदा लाग्या के-जे स्त्री मरणपर्यत पित साथे शुद्ध प्रेम राखी रहे छे ते स्त्री रिक्णीय रूप धरी सन्कार-पात्र थह सूर्य समान द्युनिवाला स्वकीय मनभावनथी मळी उत्तम प्रजानी प्राप्ति करी हाके छे, ~~~~

स्त्रीए पतिथी जुदा यज्ञ, त्रत के उपपास आदि करवानी आवश्यकता नशी परंतु पति सेवाथीज ते अवर्णनीय स्वर्ग सुख पामे छे. स्त्रीए पति पत्थे श्रेष्ट स्वभाव तथा उत्तम आचरण राखवां, मिष्ट वचन बोलवां, प्रसन्न मुख राखी पतिमांज वित्त परोववं, पति खीने सेन्य देव छे. स्त्री तेनी से-वक छे, स्त्रीने संसारना सर्वस्वरुप परम देवत प्राणनाथज छे. पतिसेवा विना स्त्रीए जन, तप, दान, व्रत, देवदर्शन के तीर्थ करवां ए वधुं द्या छे; पतिसेवा विना श्रवण, मनन अने निद्ध्याय लेग पण कामनां नथी, पतिनां मनने संतुष्ट कर्या विना स्त्रीतुं कर्दा पण कल्याण थतुं नथी, पतिथी नि-**फ्कपट मेम** जोड्या विना स्त्रीने परलोकमां तो सुख ज्ञातुं मळे किंतु आ लोकमां पण कोइ मकार-ना छख वैभव भोगवी शकवा ते समर्थ थती नथी; वळी अति हास्य करनागी, परायां वाळकोने चुंबन करनारी, अन्य पुरुषने निरखी गमन करतां ठोकर खानारी, उच्चत अवाजे गायन करनारी, कान खंजोळनारी, कटि प्रदेशने लचकावनारी, शिर उपर बख्न निह ओढनारी, हेतु विना हसना-री, विना प्रयोजन एकथी वीजाने घेर आथडनारी, पराया पुरुवने निहाळवा स्थिर थनारी अने सुयाणी आदि इलकी स्त्रीओ साथे मातृभाव राखनारी अवळा अथम गणाय छे. तेमज स्वातंत्र्य, पिता गृहवास, जनसमुदायमां तेमज उत्सवमां एकछा जद्दं, पर पुरुपनी संगाते ग्रुप्त वार्ता करवी, कुळ मर्यादा छोडी वर्तन करवुं, पितनुं विदेशगमन, निरंतर अयम स्त्रीओनो संग, खानपाननी तंगी, स्वामीनी द्रद्धावस्था अने इच्छा मुजव अटन ए सर्व प्रमदाओने भ्रष्टताना भयानक कूपमां नांखनार छे; नळी सुरापान, दुर्जन संग, वहुभनो वियोग, यथेच्छ फरवुं, वखत विना उंगवुं तथा पराया घरमां भवेश करवो ए छ दूपणवाळी स्त्री दुष्ट गणाय छे.

पुरुप करतां स्त्रीने वमणो आहार, चार गणी लाज, छ गणुं साहस, अने आठ गणों काम होय छे. पण तेमां असत्य, विना विचार्ये कार्य करवा सत्वर तैयार थवुं, कपट, मूर्वता, रूप-णता, अपवित्रपणुं अने निद्येपणुं ए स्त्रीओना सहज द्रपणों छे.

केटलीएक अवम स्त्रीओ पितने वश करवा माटे सोमवार आदि वत, उपवास आदि तप, मिलन वखते शरीरे सुगन्धि पदार्थोनं लेपन तेमज मंत्र यंत्र आदि विधिना उपचारो करे छे पण ए सर्व व्यर्थ छे, पिततो मात्र सद्गुण अने शियलथीज वश थाय छे.

आ रीते विता करतां विशेष प्यार राखनार द्वद्ध ऋषिनां वचनो माथे चडावी सती पुष्प-माला पित प्रत्ये उत्तम वर्तन करवा लागी; खामी कुंडमाल सामे अहंकारथी के क्रोधयी किद पण

12 CH-WH

सामुं बोलती नहि, पतिनो साइ सांभळी हजार काम पडतां मेली सत्त्रर तेनी सेवामां हाजर यती, पित आंखने इसारे जे कांइ सूचना करता ते सर्व समजी तेनो उतावळथी अमल करती; स्वामीयी वधारे स्वरुपवान्, राद्गुणी, सुवेष, प्वळ अने शूरबीर पुरुपोने तुच्छ गणवा लागी, पनि करतां अमुक्त पुरुष उत्तम छे एम कदि पण मनमां न लावती, पति जग्या पहेलां कदि पण जमती नहि, स्वामीने उभा रहेला जोइ पोते पण सामे हाय जोडी उभी रहेती. स्वामी वहारथी घेर आवता त्यारे तपाय घर काम त्यागी तेनी सामे जइ आसन नांखी बेसवा सविनय विक्रिति करती, पति आसने विराज्या बाद तेओभी आगळ जलपात्र धरती, पनि आनंदमां छे के विचारमां छे के चि-तामां छे ? ते सर्वे युक्तिथी जाणी प्रसंगोपात वार्तालापथी तेने संतुष्ट करती हती, घरनां वासण कुलण तथा अन्य साहित्यो निरंतर काळजीपूर्वक साफसुक राखती; पतिनी इच्छा ममाणे हाथे रसोइ करी युक्तिथी जवाडती, धान्य आदि पदार्थी घरमां श्रेष्ट रीते संभाळ पूर्वक साचवी राखती, कोइ स्त्रीने तिरश्कारनां वचन संभळावती निह, गृहमां के गृह वहार पर्पुरुप साथे एकान्तमां कोइ दहाडो डभती नहि, कान्त विना अन्य साथे हास्य विनोद करती नहि, गमे तेवुं अगत्यतुं काम होय तो पण द्वारे हाथ लगाडी उभी रहेती नहि, कोइ वखत अति हास्य करती नहि, रोप अने क्रोधने अन्तः करणमां कदि पण स्थान आपती नहि; पतिने परमेश्वरथी अविक गणी आठे प्रहर शुद्ध मनथी सेवा करती, जे उपर स्वामीनी अरुचि होय तेने कदि पण आदर आपती नहिः, तीर्थ, दान, तप अने दृत करतां पतियक्तिने विशेष मान आपवा लागी. पति जरा दूर जतां शरीरे चंदन आदि सुगन्धि लेप के पुष्प धारण करती नहि, पति वहार जती वखते जेवो खोराक लेवानी आज्ञा करी जता ते मुजब खोराक लड्ड नीतिथी वर्तन करती, मन, कर्म अने वचनथी पतिनेज परम गतिरुप मानती, पतिनी आज्ञानुसार अलंकार तथा वस्त्र धारण करती, सासु अने ससरानी स्वप्ने पण निन्दा न करती, सामु धूम्रवती जे आज्ञा करतां ते माथे चडावी प्रेमपूर्वक तेनी सेवामां हाजर रहेती तथा तेना सामे कोइ दिवस ताणीने वोलती नहि. गृहमां दास दासीओ तेमज, तेनां नाम अने गुण तथा कोण क्या कापने योग्य छे ते सारी रीते समनती; स्वापीना आवक अने खर्चनी शी रीते व्यवस्था करवी ते तमाम वावतमां पूर्णरीते क्वशळता धरावनी हती; स्वामी वहार जती वेळाए जे जे कार्य करी राखवा आजा करी जता ते प्रथम करी पछी पोताना कार्यमां प्रदृत्त धती, स्वामीना आप्तवर्गने सारी रीते ओळखी आदर आपवा चूक्तनी नहि, पति शयन कर्या वाद पोते शयन करी तेना उट्या पहेलां हमेशां उटती तेमज कहेणी मुजव रहेणी राखती,

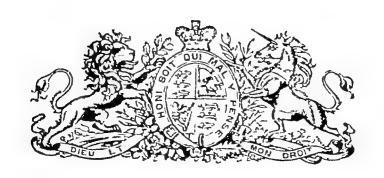
तथा स्वामीनी शुश्रूपा करी सर्व प्रकारनां सुख मेळवती; स्वामी कांड् काम सेवकने कहेता ते आ-डेथी पोते करी तेनी पियता पाप्त करती, स्त्रामीए कहेली ग्रप्त वार्ताने कदि पण प्रकाशमां लावती नहि, माता पिता, विद्यादान देनार, विदुपी स्त्री अने पति प्रत्ये हमेशां ग्रहभाव राखती. पति-मेम. पतिभक्ति, अने पतिदर्शनने अभ्यास तथा धर्म ध्यानथी अधिक मानती, दरेक प्रसंगे पतिनुं कार्य मसन्न चित्ते मथम बजावती, नित्य गृह खर्च नोंधी सांने पतिने संभळावती, आवक करतां अधिक खर्च कदि पण करती नहि, स्वामीनी गेरहाजरीमां आवेल विजमाननुं आवह जालवी घरनी ज्ञाक्ति मुजव सन्मान करती, घरमां रहेलुं धान्य वगडी के सडी न जाय तेनी पूरेपूरी संभाळ राखती, घरनां सर्व जमी रह्या वाद पोते जमती, परिधान के आभूषण वावन पतिथी रिसाइ इट के कंकाश कदि पण करती नहि, कदाच कांइ भूल थइ गई होय तो तुरत कबुल करी पोते पति पासे क्षमा याचती हती, स्वामी के गृहनो ग्रप्त भेद कोइ पासे न कहेतां कोडने तेनी खबर पण न पडवा देती; आ प्रमाणे उत्तम व्यवहारथी वर्तन करती पुष्पमाछाने गर्भ रह्यो अने ते गर्भ दिन-प्रतिदिन दृद्धि पामवा लाग्यो; सती पुष्पमाला निरंतर प्रसन्न वदने स्वथमे परायण रही अंदर अने वाहिर स्वच्छता राखी गर्भनुं संरक्षणं करवा लागी. तेमज उत्तम वस्नालंकार धारण करी जुंगार सजवा लागी; दुष्ट स्त्रीओनी संगाते वार्तालाप, सुपडानो पवन लेवो, जेनां वाळक न जीवतां होय तेवी स्त्रीओ साथे वेसवा उठवानो प्रसंग, पारके घेर भोजन करवुं, छुखो, भारे अथवा वासी खो-राक खावो, पंचमासीनी क्रिया कर्या वाद उग्र औषयो अथवा खार तेमज मैथुनतुं सेवन कर्त्रुं, भार वहन करवो, अमंगळनी वाणी वदवी, अति हास्य करवुं, मुख चढाववुं, पाणीमां सर्वे।पिध नांख्या सिवाय स्नान करवुं, द्वक्षपर तेमज किल्लापर चढवुं, सागरमां प्रयाण करवुं अने उंडी खाइ-ओतुं उर्छ्यन करवुं " विगेरे गर्भवती स्त्रीओए नहि आचरवा लायक व्यवहारनो त्याग करी आ नंदमां रहेवा लागी; पूर्ण मास थतां कंदर्प जेवा पुत्रनो जन्म थयो, ऋषिमंडलमां आनंदनो पार रह्यो निहः वाळकने नाम करण विधिथी कमनीय " कामिक " नाम आपवामां आव्यं, मातिपतानी कामनाओ पूर्ण करनार कामिक वालगणथीज उत्तम शीलवाळो जणावा लाग्यो.

महात्मा कुंडमाल जी राज्यासन उपर विराज्या पछी राजनीति प्रमाणे राज्य कारभार च-लाववा लाग्या. सौम्य स्वभाव राखी जीनेन्द्रियपणे प्रजानुं पालन करी हुद्ध, पंडित अने बुद्धि-मान् मनुष्योनी सलाह लइ सर्व काम करता हता, निग्रह अने अनुग्रह्थी उत्तम प्रकारे राज्यनी मर्यादा वांधी देश, दुर्ग, मित्र अने शत्रुओनी सेनामां पोताना दूत राखी वृद्धि अने क्षय जोता

हता; उपाय, दूत, मंत्र, पराक्रम निग्रह अने चतुराइ आदिथी सर्व प्रकारना कार्य सिद्ध करता तेमज साम, दाम, दंड अने भेद एमांथी एक अथवा सर्वथी जेम वन तेम पीताना कार्य साधनमां तत्पर रहेता, जे वात मंत्रथी सिद्ध थवानी होय तेनो विचार प्रथम ब्राह्मणोथी करता तेमज ज्यां जेवा घटे तेवा दूतो मोकलता अने राखता, जे मंत्र ग्रप्त राखवानी होय तेनो विचार स्त्री, मूढ, वालक, लोभी, नीच अने उन्मत्त मनुष्योनी हाजरीमां किंद्र पण करता निह, विद्वानो साथे मंत्र विचार करता, समर्थ मनुष्योने कार्य सोपता, हितकारी पुरुषोने हाथे नीतिनो प्रवंघ राख्यो हतो, मूखोंथी कांइ पण काम न लेता, ज्यां धर्मनुं काम होय त्यां धर्मात्माने,धननुं काम होय त्यां पंडितोने, स्त्रीओनुं काम होय त्यां नपुंसकोने अने ज्यां क्रूर कर्म करवानां होय त्यां क्रूर मनुष्योने योजता हता. तेमज तमाम काममां कार्य अकार्यना निश्चयपूर्वक शत्रुओना वल अवलने दूत अथवा लोभी पुरुपोद्वारा जाणता हता. तेमज मर्यादाहीन मनुष्योने दंड आपी शरणे आवेला उपर अनुग्रह करता हता.

आ रीते छांवा वखत सुधी राजकाज करी दिशाओना अन्त सुधी कीतिकेतु फरकावी छेवटे मोक्षनी इच्छाथी पोते राज्यकार्यभारनी उपाधिथी अळगा थइ इश्वर भजन करवा कृतनिश्चय थया; अने चमत्कारपुरनी गादी कुमार कामिकने आपी.

a-vonconnomment of the second of the second





दशम तरंग,



" कुंडलीओ "

कुन्ते राक्षसनुं कर्यु, अलग वधुं अभिमानः रक्षक ए ऋषिओ तणा, पाम्या पद मखवानः पाम्या पद मखवान, भलुं जे सहुने भाव्युः; निज नामे पुर नविन, श्रेष्ट विधियुक्त वसाव्युः; सुणो अमर ! इतिहास, खास पूर्वजनो खंतेः; मेळवी जगमां महद, कीर्ति राजर्षि कुन्ते.

महात्मा कुंडमाल राजिंधे वेदोक्त विधिवत् गृहस्थाश्रम भोगवी राज्य व्यवहार तेमज कुटुंव आदिनो संबंध छोडी दइ पुरमां तथा पुर वहार भोजन कराय छे तेनो तेमज वासणकुसण आदि तमाम संपत्तिनो त्याग करी पोतानी स्त्री सती पुष्पमाला साथे अरण्यमां एकान्तवासवाळा "वालस्एय" तीर्थमां अग्निहोत्र तेमज अग्निहोत्रमां उपयोगी यज्ञपात्रो आदि सरसामान सहित इन्द्रियोने नियममां राखी निवास करवा लाग्या, वेद अने शास्त्रोना अभ्यासमां निरंतर तत्पर रही शम, दम, पाळी श्रीत अने उप्णता सहन करी दरेक माणी उपर दया राखी उपकार करवा लाग्या, मनने नियममां राखी परमात्मातुं ध्यान धरी सर्वनो योग्य सत्कार करी कोइ आगळथी कांइ पण गृहण करता निह, वानमस्थ धर्म पाळनारा अन्य विंमो पासेथी केवळ माणाधार जेटली भिक्षा याची भोजन करता अथवा अन्य अरण्यमां निवास करी रहेला गृहस्थाश्रमी विभो पासेथी भिक्षा मागी लावता, आत्मस्वरुपनी संसिद्धि अर्थे वेद अने उपनिपद्मां कहेल अनेक रीतनी दिक्षाओं लइ आनंदथी वर्तवा लाग्या.

आम दीर्घकाळ सुधी आयुष्यना त्रीजा भाग पर्यन्त वानमस्थाश्रम पाळी अंतमां सती पुष्पमाला पासे सन्यस्त धारण करवा आज्ञा मागी। सतीधमेना रहस्यने जाणनार सती पुष्प- मालाए संसारथी विरक्त थएली पतिनी मनोवृत्तिने परखी अनुमोदन आप्युं जेथी महात्मा कुंडमालजीए चमत्कारपुरथी पुत्र कार्मिकने वोलावी तेओनी साथे पुष्पमालाने मोकली आप्यां, त्यार वाद पोते उत्तम गुरु पासे दिक्षा लड्ड पित्रत्र दंड कमंडलु धारण करी मुनिवृत स्वीकारी रहेवा लाग्या, सन्यस्त ग्रहण कर्या वाद अग्नि तेपज गृहनो परित्याग करी केवल भोजन अर्थे शहरमां के गाममां जता आवता. देहमां व्याधि आदिनी दरकार न राखतां परमात्मामां वृत्तिने स्थिर करी जीवन मरणनी इच्छा नहि राखतां निर्मित काळनीज राह जोया करता, गमन करती वखते अस्थि के जीव जन्तुनी संभाळ राखी तेथी दूर खच्छ जमीन उपर चरण धरी चालता. जीविहेंसा न थाय एटला माटे बस्त्रथी गळ्या विना जलपान करता नहि. हृदयने पवित्र राखी सत्य वचनो उचारता, योगमां कहेळ आसनपर स्थित थइ परब्रह्म प्राप्तिमांज प्रेम राखता, कोइ पण पदार्थनी अभिलापा न राखतां मात्र आत्म सहायताथीज सुखलव्यिनी अभिलापा राखी विश्वमां विचरता, शरीरना वाळ उतरावी नांखी, नख कपाथी, इमश्रु तथा मूछ उतरावी भोजन करवातुं पात्र, दंड अने कपंडलु निरंतर संगेज राखता, सदा ब्रह्मनिष्ठपणे कोइपण प्राणीने दुःख-रुप थया विना फर्या करता. नितेन्द्रिय, राग द्वेष वर्जित अने अहिंसक्षणे वर्तवा लाग्या, मनुष्य गमे ते आश्रममां स्थित होय तेमज स्वकीय आश्रमनां चिह्ने। पण धारण न करता होय छतां तेओए तमाम प्राणी उपर समद्देष्टि राखी पोताना सत्य धर्मतुं पालन करवुं, केमके सन्यस्तमां दंड, कमंडल आदि चिह्नो छे ते धर्मनां सत्य कारण लेखातां नथीः किंत शास्त्रमां कहेल धर्मनुं प्रतिपा-लन करवुं एज सत्य चिह्न छे. जेम निर्मेळीतुं फळ जळने निर्मेळ वनावे छे परंतु केवळ तेतुं नाम लेवाथी जळ निर्मळ थतुं नथी. जेम धातुओने विह्नमां तपाववाथी तेनो मेळ दूर धाय छे तेम मा-णायामनी क्रियाथी इन्द्रियोना दोषो दग्ध थइ जाय छे, एटला माटे पोते प्राणायाम पूर्वक राग्हेपादि दोपोने दूर करी धेर्यथी परब्रह्ममां चित्ततुं स्थापन करी पापनो विनाश करवा लाग्या. प्रत्याहार करी विषयादि वासनाओने अलग करी एक ध्यानथी " हुं अविनाजी परब्रह्म छुं. " एवा सजानीय ज्ञानवेगथी काम, क्रोध, छोभ आदि परब्रह्म स्वरुपने पिछाणवामां विव्ररुप थनार दोषोने दूर करी उत्तम तथा अधम प्राणीओमां अन्तरात्मानी जी गति थाय छे अने शा कारणर्था के जे अल्प मितवाळा पनुष्यो अति श्रमथी समजी शके छे ते पण ध्यानयोग-थी प्रत्यक्ष करवा लाग्या. जे मनुष्ये ब्रह्मनो सारी रीते साक्षान्कार करेल होय ते कदि पण कर्मना वंपनमां आवतो नथी, जेने उत्तम ब्रह्मज्ञान प्राप्त थतुं नथी तेओ अनंत योनियोमां आयट्या करे

छे, इत्यादि निश्चय करी पोते पाणाधार अर्थे एक वखत थिक्षा छेता, तेमां पण यथेन्छ भोजन न करता; केमके मिष्ट भोजन जमवानी टेव पडी जवाधी सन्यासी विषयोगा फंदामां फसाइ जाय छे.

विषयोगां अन्तः करणपूर्वक दोप दृष्टि करी ते उपर अभाव लावता अने उभय लोकपां अवर्णनीय अविनाशी सुख आपनार परव्रह्मनी प्राप्ति अर्थे उद्यम करी उत्तम आयुष्य आनंद्थी निर्गमन करवा लाग्या.

चमत्कारपुरना राज्यासन उपर विराज्या पछी राजिय कामिकर्जा पोताने प्राप्त थएल गृहस्थाश्रमने शोभाववा माटे राजाओने योग्य कार्योनो विचार करता इता, परम प्रतापप्रात् कुंडमाल ऋषिए राज्यना वंदोवस्त माटे जे जे योजनाओ करी इती तेमां पुष्टि थाय तेवा उपायो इन वखते विचारता इता. पोताना राज्यनी सीमानां स्थानको खंडिआ राजाओंनां राज्यो अने स्वतंत्र के जेमां पोतानीज आज्ञानुवर्ती प्रजा इती तेने कोई रीते पराभव न थाय तेटला माटे बुद्धिमान् अमान्यने साथे राखी सरस मुखद अने शान्ति आपनारां साथनो सजता इता, जेथी आखा राज्यमां सर्व कोई संपत्तिवान वनी आनंद वैभवमां विहार करवा लाग्या आ प्रमाणे लांवो वखत राज कार्यभार चलाव्या वाद पोताने एक उत्तम लक्षणवान पुत्र प्राप्त थयो, जेनुं नाम शास्त्रविधि प्रमाणे " वृषकेत् " राखवामां आव्युं.

वृषकेतु योग्य वयनो थतां तेने राज्यकारभार सापी राजिष कामिक पोताना पितृओथी चाल्यो आवतो परंपरानो धर्म पाळवा लाग्या.

वृषकेतुए लांबो वखत नीतिथी राज्य भोगव्युं अने कल्याण नामनो पुत्र राजकार्यभार चलाववाने योग्य थतां पोते पण पोताना पितानी पेठेज विश्वान्तिना आनन्दनो अनुभव करवा लाग्या.

राजिष कल्याण वहु नीतिवान अने धर्मज्ञ होतायी क्षात्र धर्मनी धुरा धारण करी देश-विदेशमां कीर्तिकेत फरकाववा लाग्या, लांवे काळे कुंत नामनो कुमार योग्य वयनो थतां तेने पो-तानां पराक्रमी पितृओनी पद्धित प्रमाणे वर्तवा वोध करी पोते वानप्रस्थाश्रम स्वीकारी एक नतवास-नो आनन्द अनुभववा लाग्या.

जे समयमां कुंत ऋषिराज पोतानो नीतियुक्त राज्यकार्यभार चलावता हता तेज समयमां मायाकृत देशमां चंडास्यना वंशमां उत्पन्न थएल वक्रदंत नामनो असुर पोताना पितृओनुं वैर लेवा आसुरी मायाना प्रयोग सिद्ध करवा रात्रि दिवस उद्योग कर्या करता हता, घणा वृद्ध असुरो तेने समजावता हता के महात्मा मार्कडेयना वंशनी स्थित छतां तारो करेल उद्योग सफळ निह थाय. आ दृद्धनां वाक्योनो तिरस्कार करी पोतानी समान वयना अने समान बुद्धिना असुर वर्गने ऋषिमत्त भंग करवानुं अनुमोदन आपी विद्विकाश्रम उपर पोताना मायावीरुपंथी चडाइ करी. घणाओ स्करनां रुप घारण करी ऋषिओने पोपण माटे मळता कंदो तेमज फळ आपनारां दृक्षोनो नाश करवा लाग्या, केटलाएक भयंकर हिंसक प्राणीनां स्वरुप धारण करी ऋषिओनी यहपेतुओनो वध करवा लाग्या, केटलाएक विष धारण करनार सप आदि प्राणीओनां स्वरुपथी ऋषिओनी पर्णक्चिमां प्रवेश करी दराववा लाग्या, केटलाएक अकाळ वर्षायी ऋषिना यहचुंडना अग्निन बुझावी नांखवा लाग्या अने केटलाएक पत्थर तेमज रुधिर मांस मज्जानी वर्षाथी ऋषिओने वहुज गभराववा लाग्या अने केटलाएक पत्थर तेमज रुधिर मांस मज्जानी वर्षाथी ऋषिओने वहुज गभराववा लाग्या विद्वाश्रममां मोटो कोलाहल थयो। आवा घणा उत्पातोना योगयी दैवज ऋषि-ओए विचार करी जोतां जाण्युं के चंडास्यना वंशमां उत्पन्न थएल वक्रदंत नामनो असुर आ सर्व पराभव करे छे अने तेना नाज्ञने माटे अजरामर मार्कडेयना वंशनी सहायता विना अन्यनुं कांइ बळ काममां आववानुं नथी, आम निश्चय करी ऋषिओमांना एक उत्तम दैवज्ञ ऋषिने चमत्कार-प्रपति रवाना कर्या.

दैवह ऋषि थोडा वखतमां चमत्कार पुर पहोंची गया, राजिष कुंते तेओने घणा मानपूर्वक आवकार आपी अर्घ पाद्यथी पूजा करी उन्नत आसन उपर वेसार्या, आगमननो हेनु पूछतां
आवेल ऋषिए विद्वकाश्रममां वनती सर्व हकीकत निवेदन करी, राजिष कुंत हकीकत सांभळी।
कोपी उठेला प्रलयना अग्निनी पेठे अग्रुरक्षी काष्ठ वनने प्रजाळवा तैयार थया. दैवह ऋषिए शानित्थी आश्वासन आषी युद्धमां पथारतां पहेलां करवा योग्य कार्यनो वोध कर्यो, जेथी राजिष कुन्त उत्तम करण, तिथि, वार, नक्षत्र अने गुहर्तमां ग्रुतारने साथे लड़ वन प्रत्ये पथार्था.

वाग, देवालय, स्मज्ञान, सर्पनी लांवी, मार्ग आदिमां उत्पन्न थएलां वृक्षोने तेमज वांका, उभां उभां सुकाइ गयेलां, कांटावालां, जेना उपर वेलीओ चढी हती एवां वृक्षोने तथा एक हक्षमां वीजुं हक्ष उत्पन्न थयुं होय तेने, जेमां घणा पक्षीओना माला होय तेमज कोटर होय तेने, पवनधी हुटी गयेलां अग्निथी वली गयेलां अने स्त्रीलिंगे नामवालां अर्थात् वद्री, सहकी आदि हक्षोनो त्याग करी इन्द्रध्वज वनाववा माटे उत्तम एवा अर्जुन, अजकर्ण, वियक, धव, अने गूलर ए पांच हक्ष हतां तेमांथी एक वृक्षनुं ग्रहण कर्यु. ·····

कृष्ण वर्णनी भूमिमां उत्पन्न थएल दक्षनी समीपे रात्री वखते रार्जापं कुंतना पुरोहिते जइ मथम एकान्तमां विधि पूर्वक तेनुं पूजन करी नीचेना मंत्रो भणी हाथयी तेनो स्पर्श कर्यो.

> यानीह वृक्षे भूतानि तेभ्यः स्वस्ति नमोऽस्तुवः उपहारं यहीत्वेमं क्रियतां वासपर्ययः ॥ पार्थिव स्त्वां वरयते, स्वस्ति तेऽस्तु नगोत्तम, ध्वजार्थं देवराजस्य पूजेयं प्रतिगृह्यनाम् ॥

प्रभात समये पूर्व तरफ मुख करी ए द्रक्षने काप्युं वृक्ष कापती वखते कुहाडानो जर्जर अग्रुभ शब्द निह थतां ग्रुभ एवो मधुर अने घाटो शब्द थयो, ते द्रक्ष राजिप कुंतनो जय पद- शिंत करतुं पडतां भांग्युं निह तेम वांक पण बळ्युं निह, उत्तर दिशा तरफ पडयुं तेमज बीजा द्रक्षनी साथे अथडायुं निह, कारणके जे द्रक्ष पडती वखते भांगी जाय, वांकु थड जाय, पूर्व तथा उत्तर सिवायनी दिशामां पढे अथवा कोइ द्रक्षना अग्र भागर्थी अथडातुं पडे तो ते इन्द्रक्ष्वज वना-ववा माटे ग्रहण न करवुं जोइए.

खपर मुजव कापेला दृक्षनी यिष्टेने चार आंगळ आगळथी अने आठ आंगळ मूळथी कापी जळमां नांख्युं, पछी जळथी वाहेर काढी मनुष्योथी उपडावी नगरना दरवाजा पासे लाव्या। ए यिष्ट गाडामां नांखीने पण लाववामां आवे छे परंतु जो गाडीना पैडानो आरो बुटी जाय तो राजानी सेनामां भंग थाय छे, पैडानी नेभी बुटी जाय तो सेनानो नावा, धरी भांगी जाय तो धननो क्षय अने धरीनां अग्र भागमां जे खीलो मारेलो होय छे ते बुटी जाय तो सुतारनो विनावा थाय छे.

भादरवा ग्रुदि अष्टमीने दिवसे जेओए उत्तम वस्तो अने आभूपण पहेर्या छे एवा नग-रना लोको, ज्योतिपी, मंत्री, कंचुकी अने ब्राह्मण आदिथीयुक्त राजिं कुंते निवन वस्तमां वींटेली पुष्पमाला अने गंध धूपथी पूजेली ते यिष्टनो लोको सिहत नगरमां प्रवेश कराज्यो, प्रवेश वस्तते शंख तुरी आदि अनेक प्रकारनां वाद्यो वागवा लाग्यां.

नगर पण सुंदर पताका तोरण अने पत्र पुष्पोनी माळाओथी शणगारवामां आन्युं हतुं. सर्व मनुष्यो प्रसन्न हतां, वधा रस्ता खच्छ अने सुशोभित करवामां आव्या हता. वैश्याओ

सुंदर वस्त्र अने अलंकारोधी विभूषित धएली हती, तमाम दुकानो सज्ज राखवामां} आवी हती, घणाज पुण्याहवाचन अने वेदना शब्दो धवा लाग्या नट लोको, चृत्य करनाराओ अने गाय-कोथी चौटा भराइ गया

नगरमां खेत अने चित्ररंगनी पताकाओ राखवामां आवी हती कारणके पीळा रंगनी प-ताका रोग उत्पन्न करे छे. अने लाल रंगनी पताकाथी शस्त्रकोप अथीत् युद्ध थाय छे.

इन्द्रध्वज अर्थे प्राप्त करेली यिष्टिने वहुज सावचेतीथी नगरमां लइ जवामां आवी, कारण के नगरमां यिष्ट प्रवेश वस्तते कोइ हाथी, मिहप आदि जीव यिष्टिने पाडी दे तो भय उत्पन्न थाय छे, वालको पोतपोताना वन्ने हाथयी ज्ञान्द करे अर्थात् ताळीओ। पाडे तो युद्ध थाय छे अने गाय आदि जीव युद्ध करे तो पण युद्ध थाय छे,

सुतारे ए यष्टिने छोली यंत्रपर चढावी अने यिटिने निमित्त दैवह ऋषिनी आहा मुजव राजिष कुंते एकादशीने रोज नगरमां जागरण करान्युं, पुरोहिते श्वेत रंगनी पायडी वांधी इन्द्र अने विष्णुनामंत्रधीहदन कर्यों तेमज राजन्योतिषीए अधिनां शुभाशुभ लक्षण जोयां; राजन्योतिषी सारी रीते जाणता हता जे इष्ट अर्थात् मनोहर वस्तुना आकारनो, सुगन्य युक्त, स्त्रिग्ध अने ज्वाळा-ओथी युक्तअपि होय तो शुभ फल आपे छे अने एथी विपरीत रुप होय तो अशुभ गणाय छे.

पूर्णाहुति आपती वखते उज्वळ ज्वालाओथी युक्त जे अग्नि स्निग्ध तेमज दक्षिण तरफ गमन करनारी ज्वालावालो होय तो ते पृथ्वी राजाने तावे करी देले.

मुवर्ण अज्ञोक पुष्प, कुरंटक पुष्पो, कपल, वैदूर्य अने नील कपल तुल्प अग्निनो वर्ण होय तो राजाना गृहमां रत्नोना किरणोथी नष्ट थएलो अंधकार अवकाश पामी शकतो नथी अथात् अग्निनो उपर रमाणे रंग होय तो राजाने वणा रत्नोनो लाभ थाय छे.

ध्वजा, घट, घोडा, हाथी अने पर्वत तुल्य अग्निनो आकार होय तो उदयाचल अने अस्ताचलने धारण करनारी तेमज हिमाचल अने विन्ध्याचलर्का स्तनवाळी भूमि राजाने वश थह जाय छे.

हाथीनो मद, भृिन, कमछ पुष्प, धान्यना फोतरां, घृत अने मध समान अग्निमां गंव आवे तो राजा ज्यां वेटेल होय तेना आगळनी भृिन प्रमान करना राजाओना मुक्कटमिना किरणोधी रंगाइ जाय छे अर्थात् अन्य सर्व राजाओ ए राजाने प्रणाम करे छे. इन्द्रध्वज उठावती वखते आ जे अग्निना रुपथी शुभ अशुभ फळ कहां ते तमाम जन्म समये यज्ञ, ग्रह्शान्ति, यात्रा अने विवाह वखते जे होमनो अग्नि होय तेनाथी पण जाणी शकाय छे.

मालपुआ अने खीरआदिथी तेमज दक्षिणाथी ब्राह्मणोनी पूजा करी श्रवण नक्षत्रयुक्त भादरवा ग्रुद द्वादशीने दिवसे इन्द्रध्वजने उभी कर्यो; श्रवण नक्षत्र न होय तोपण द्वादशीने दिवसे इन्द्रध्वजने उभी कराय छे.

मतु महाराज एम कहे छे के इन्द्रध्वजतुं विधान जाणवावाळा पुरुष सात अयवा पांच शक्र-कुमारी वनावे; तेनां नाम अने प्रमाण नीचे मुजव छे.

ध्वज जेटलो उंचो होय तेनाथी चतुर्थाश जेटली नंदा अने अर्थ जेटली उपनन्दा नामनी शक्तकुमारी बनावे; नंदाना प्रमाणमां तेना सोळमा भागथी अधिक जया अने उपनन्दाना प्रमाणमां तेना सोळमा भागथी अधिक विजया, जयाना प्रमाणथी पोडशांश अधिक एक वसुंधरा अने विजयाना प्रमाणथी षोडशांश अधिक वीजी वसुंधरा बनावे, छ तो ए थड़ अने सातमी इन्द्रमाता ते बीजी वसुंधराना प्रमाणथी अष्टमांश अधिक बनावे.

राजिं कुन्ते पण उपर मुजव सात शक्रक्वमारी वनावी. प्रथम रक्त अशोकपुष्यना रंगतुं चतुष्कोण आभूषण विश्वकर्षाए इन्द्रध्वजने आप्युं हतुं, ब्रह्मा अने शिवजीए अनेक रंगनी कांचीह्य वीजुं भूषण, इन्द्रे अष्टकोण अने नीला रंगतुं बीजुं भूषण, यमराजे काला रंगतुं अने
कान्तियुक्त मसूरक नामे चोथुं भूषण, वरुणे लाल रंगतुं पट्कोण, अने जलना तरंग
समान पांचमुं भूषण, वायुए मेघ समान नीलवर्ण अने मोरनी पांखोनुं वनावेल केयूर नामे छुटुं
आभूषण, स्वामी कार्तिकेये अनेक रंगतुं पोतानुं केयूर सातमुं भूषण, अग्निए पोतानी
ज्वालासमान रंगतुं अने गोल आठमुं आभूषण, चन्द्रमाए वैदूर्य मणितुल्य कान्तिवाछुं
ग्रैवेयक नामे नवमुं भूषण, त्वष्टानामी आदित्ये रथचक्रना आकारनुं अने प्रभायुक्त
दशमुं आभूषण, विश्वेदेवाए कमलपुष्यतुल्य उद्देश नामे अग्यारमुं आभूषण, मुनिओए नीलकमलतुल्य कान्तियुक्त निवंश नामे वारमुं भूषण आप्युं हतुं, अने बृहस्पति तथा शुक्ते कांइ नीचे
उपर वनावेलुं उपरथी विशाल तेमज लाक्षा रस तुल्य रक्तवर्णनुं तेरमुं आभूषण इन्द्रध्वजना
मस्तक उपर चढाच्युं हतुं.

पूर्वे देवताओए प्रसन्न थइ उपर मुजव जे आभूपणो इन्द्रध्वजने माटे वनाव्यां इतां ते सर्व विचित्ररुप पिटकनामे भूपण राजींप कुंते इन्द्रध्वजने धारण कराव्यां.

इन्द्रध्वजने माटे जे जे भूषण जे जे देवताओए वनाव्यां तेना अधिपति पण ते ते देवताओने जाणवा.

ध्वजप्रमाणना तृतीयांश जेटली परिधि प्रथम पिटक अर्थात् भूषणनी वनावी, प्रथम पिट-कनी परिधिना प्रमाणथी अष्टमांश न्यून करी बीजा पिटकनी परिथितुं प्रमाण सिद्ध कर्युं. ए रीते आगला आगला पिटकनी परिधिना प्रमाणथी अष्टमांश घटाडी तमाम पिटकनी परिधिनुं प्रमाण कर्युं.

शास्त्रने जाणनार राजिष कुंते अष्टमीथी चोथे दिवसे अर्थात् एकादशीने दिवसे पिटकोथी इन्द्रध्वजने पूर्ण क्यों अर्थात् सर्व भूषण इन्द्रध्वजने पहेराव्यां अने पोते नीचे मुजव मंत्रोनो पिवत्र-पणे पाठ करवा लाग्या.

हरार्क वैवस्वत शक्रसोमेर्धनेशविश्वानरपाशमृद्धिः । महर्षिसंघैः सिदिगप्सरोभिः शुक्राऽङ्गिरः स्कन्द महरूणे श्च ॥ यथा त्वमूर्जस्करनेकरूपैः समाचित स्त्वाभरणेहदारैः । तथेह तान्याभरणानि देव शुभानि संप्रीत-मना यहाण ॥ अजोऽव्ययः शाश्वत एकरूपो विष्णुर्वराहः पुरुषः पुराणः । त्वमन्तकः सर्व हरः कृशानुः सहस्र शीषी शतमन्युरीड्यः ॥ किवं सप्त-जिह्नं त्रातारिमन्द्रमिवतारं सुरेशम् । ह्वयामि शकं वृत्रहणं सुपेण मस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु ॥

आ मंत्रोनो इन्द्रध्वजने पिटको धरावती वखते, इन्द्रव्वज उठावनी वखते, नगरमां प्रवेश करावती वखते, स्नान करावती वखते, पुष्प चढावती वखने अने विसर्जन समये उपवास करी पाठ कराय छे.

छत्र, ध्वजा, दर्पण, फल, अर्धचन्द्र, अनेक प्रकारनी माळा, केळना अने इक्षुना दंह, काष्ट्रना सर्प, सिंह, पिटक अने गणक्ष अर्थात् झरोखा ए सर्व काष्ट्रनां बनावी, इन्ट्रव्वजनी आटे दिशाओमां आठ दिग्पालोनी मृति वनावी, आठे दिशाओमां आठ द्रह रज्ज वांधी तेनी सहायताथी इन्द्रध्यजने उभो कर्यों, वने तरफ आधारने माटे वहुज द्रह काष्ट्रनी वे मातृका लगावी तेमज पाद तोरणमां यंत्रना अगेलने द्रहताथी लगाव्यो अने सारवान काष्ट्रनी घडेली अखंडित शक्रकुमा- रिका वनावी. इन्द्रध्यजने वरोपर स्थित कर्यों, लोकोमां मांगलिक, आशीर्वादात्मक अने प्रणामयुक्त शब्दो थवा लाग्या, छंदर होल, मृदंग, शंख अने भेरी आदि वाद्यो नागवा लाग्यां आहाणो वेदनो पाठ करवा लाग्या ते वखन क्याइथी पण अमंगलनो शब्द संथलातो नहोतो.

फळ; दिधि, घृत, छाजा, मध अने पुष्पो हाथमां हुई शिर झुकावता तेमज स्तृति करता नगरना लोकोथी चारे तरफ घेराएला राजिं कुंते इन्द्रव्वजने उभो करी वक्रदंत आदि असरोना वधने अथें मायाकृत देश तरफ कांइक नमतो राख्यो अर्थात् इन्द्रध्वजनो अग्र भाग शत्रुना शहर तरफ झुकाच्यो.

आ किया वहुज संभाळथी करवामां आवी कारणके वहु धीरे निह तेम वहु जतावळथी पण निह अने निष्कंप इन्द्रध्वज उभी करवामां आवे अने उभी करती वखते तेनां माळा अने पिटक आदि भूषण नीकळी न पढे तो ग्रुभ थाय छे अने एथी विपरीत वने तो राजानुं अग्रुभ थाय छे. अग्रुभ फळने राज्य पुरोहित ज्ञान्तिथी निवृत्त करी शके छे.

इन्द्रध्वन उपर क्रव्याद अर्थात् मांस खावावाळा गीध आदि पक्षी तेमन उल्लक, कपोत, काक अने कंक (एक जातनुं पक्षी जेनां पींछां वाणनी पछवाडे नंखाय छे ते) वेसे तो राजाने महान् भय धाय छे, चाप पक्षी वेसे तो युवराजने भय धाय छे अने इयन इन्द्रध्वन उपर पडे तो नेत्र रोग धाय छे.

इन्द्रध्वजनुं खपरनुं छत्र तुटी जाय अथवा पडी जाय तो राजानुं मृत्यु, इन्द्रध्वजमां मध-पुढो वंधाय तो प्रजामां चोरोनो उपद्रव, इन्द्रध्वज उपर उल्का पडे तो राजाना पुरोहितनुं मृत्यु अने अज्ञानि पडे तो राजानी मुख्य राणीनुं मृत्यु थाय छे. इन्द्रध्वजनी पताका पडी जाय तो राणीनो विनाश थाय छे, पिटकना पडवाथी वर्षा थती नथी, इन्द्रध्वजनो मध्यभाग भागे तो मंत्री, अग्रभाग त्रुटे तो राजा अने मूळ भाग त्रुटे तो नगरना लोक विनाश पामे छे.

जो इन्द्रव्वजने धूम्र घेरी लीए तो मजामां अग्निनो भय थायछे, इन्द्रध्वज उपर लगा-

वेला काष्ट्रना सर्प त्रुटी जाय अथवा नीचे पडी जाय तो मंत्रीओनो क्षय थायछे, इन्द्रध्वजनी उत्तर आदि चार दिशामां कांइ उत्पात थाय तो क्रमथी व्राह्मण आदि चार वर्णीने पीडा प्राप्त थाय छे, अने शककुमारी त्रुटी जाय तो व्यभिचारिणी स्त्रीओतुं मृत्यु थाय छे.

इन्द्रन्वज उटावती वखते एना दोरडां कयांइ अटकी जाय अथवा बुटी जाय ते। वाळ-कोने पीडा थाय छे, मातृका अथात् तोरणनी पडखे रहेल काप्टनो भंग थवाथी राजानी माताने पीडा थाय छे;

इन्द्रध्वजनी समीपे वाळक अथवा चारण जेवी चेष्टा करे ते अनुसार आगळ उपर शुभाशुभ फळ थाय छे.

राजिं कुन्ते द्युभ लक्षणोथी द्युभ फळ आपनार इन्द्रध्वजने चार दिवस उभो राख्यों अने ए चारे दिवस तेतुं निरंतर पूजन करान्युं, पांचेष दिवस पण उत्तम रीते पूजन करी पोताना मंत्री आदि सर्व परिकर सिहत पोताना वळनी द्युद्धिने अर्थ ए इन्द्रध्वजनुं, विसर्जन कर्युं, त्यार-वाद कुन्तराजिं विद्विक्ताश्रम तरफ जवा उद्योग करी रह्या हता तेवामां मार्गना श्रमथी धूसरित श्वरीरवाळा तृषा अने सूर्यना तापधी सुकाइ गयेल ओष्ट्रवाळा विद्विक्ताश्रममां वसनारा घणा क्रियों सभामां प्रवेश करी आशीर्वाद आपी उभा रह्या अने हाल पूळतां कहेवा लाग्या के ''अमने सर्वने वक्रदंते यहा परिताप पमाडी विद्विक्ताश्रमथी वाहर काही मुक्या ले अने तेओ विद्विक्ताश्रमना उत्तुंग पहाड उपर पोताना माया वळथी निविन शहरे अने वाग वर्गावाओं गनावी निर्वितपणे विहार करे ले. ऋषिओनी पवित्र पर्णकुटीओलं नाम निशान रहेवा दीवुं नथी, पवित्र स्थानोमां तथा अग्निकुंडनी जगोए अनंत अथम कर्मा आचरे ले, अमने त्योधनने मार्के- देयना वंश सिवाय आ वस्ते कोहनो आधार नथी, माटे कृपा करी जलदी प्रारो अने अगुरोनो नाश वरी अभय आपो.

ऋषिओनां टीन वचन साभळतांज राजिं कुंतनां शरीरनां रोम खडां थड गयां, अवर तथा वाहु फरकवा लाग्या; तुरतज सेनापिने हुकम मळतां सेना तयार थइ, मर्भ झ्रवीरो पोनानां अस शस सजी वाहनोपर दिराजवा लाग्या, तुरगोना नीम्बा अवाजधी गगनमंडळ गाजवा लाग्युं, सेना पेदल अने स्वागे भिन्न भिन्न रीने प्रयाण करवा लाग्या; हेरा, तंबूओ तेमज युद्धनो लपयोगी सामान म्होटां म्होटां वाहनोपर लादवामां आळो; महाराजाविराज्यी कुंन राजिंप द्युम शक्त जोइ पोताना युवराजश्री धवलकुमार तेमज सर्व सभासदो सहित उत्तम रथ, गज अने अश्व आदि उपर स्वार थइ चाली निकळ्या, थोडा दिवसोमां लांबो पंथ उल्लंधी अनेक स्थानो उपर पडाव करता बद्रिकाश्रमना पहाडोनी सभीपे पहोच्या; त्यां उत्तम अने विस्तीर्ण मेटानमां तंबुओ खडा कर्या, सर्व सेना पोतपोताना योग्य स्थाने उत्तरवा लागी, खानपानादि सर्व पदा-थोंनी दुकानो तैयार करवामां आवी; भेरी, मृदंग अने नगारां आदि अनेक प्रकारनां वाद्यो सेनातुं आगमन सूचववा अर्थे वागवा लाग्यां, जे सांभली वक्रदंत आदि राक्षमोनां हृदय भयभीन थयां.

राक्षसना राजा वक्रदंते सेनाना आगमननो संदेशो श्रवण करी पोतानी आमुरी मायाथी रचेल नगरना किल्लाने मंत्रवळथी विशेष मजवृत कर्यों, तेमज किल्लाना कोटाओ माथे पीतळ अने लोहथी वनावेल शतब्नी यंत्र अर्थात तोष आदि तैयार रखावी, पोतानी सेनाने युद्ध माटे सज्ज थवा आज्ञा आपी;

राजिष कुंतमहाराजना सेनापित शौर्यसागरे पोतानो तंत्रू मायाकृत किञ्चानी सन्मुख उभी कर्यो; जेनी आसपासना मनोरम वननी शोभा घणीज मनोहर वनी रही हती, चारे तरफ पृथ्वी उपर लीली दुर्वा उगवाथी वनमां छीलुं वस्न विद्यावेखुं होय एवी भ्रान्ति थती हती; विविध मकारना पक्षीओ मीठी मीठी अने सुरीली वोलीओ वोली रह्यां हतां तेमज अने।दकनी शोध अर्थे पोतपोताना माळाओथी प्रेमधी उडता हता; चित्र विचित्र पुण्योना खीलवाथी ते वन हसतुं होय एम जणातुं हतुं; ठेकाणे ठेकाणे वृक्ष, लताओं अने म्होटी महोटी अद्भुत वेलो लागी रही हती तेमज शीत मंद अने सुगंधी वायु चाली रह्यां हतों; तेवामां विविध मकारना वाद्यो वागवा ल.ग्यां, जयजयकारना उचारथी गगनमंडळ गाजी उठयुं, सैनिको वक्रदंतनो विनाश करवा उत्साहित थइ पोतपोतानां अस्त्रास्त्रों सज्ज करवा लाग्या, अश्वरक्षक्रों मयाण तुरीना अवाजों सांभळी पोतपोताना घोहाओना शरीर मदिन करी सामान कसवा लाग्या, अहाँआ धामधूम चाली रही छे अने मायाकृत दुर्गमां वक्रदंत आनंद करी रह्यों हतो त्यां अचानक राजिथे कुन्तनुं सेना सिहत आगमन सांभळी तेणे महोटा मायाबी अवाजधी सेनापितने वोलाव्यो; सैनिकोने सज्ज थवा हुकन आप्यो; तमाम राक्षसो पोतपोताना मायाकृत उरग आदि वाहनो उपर सवार थवा लाग्या, उंट अने गर्दभ आदि मायावी वाहनो उपर सवार थवा लाग्या, वंट अने गर्दभ आदि मायावी वाहनो उपर सवार थवा लाग्या वाहनो उपर

नगारांओना निनाद थवा लाग्या; मायावी राक्षसोए रात्रिमां पोतपोताना मंत्र प्रयोगो सिष्ट कर्या. शीकुन्त महाराजनी सेना पण तैयार थइ; शंख, भेरी आदि वाद्यो वागवा लाग्यां; आखी रात वन्ने सेनाओए अनेक प्रकारे युद्धनी तैयारी करी; रात्री व्यतीत थइ, चन्द्रमा पेतानी तारा समु-इनी सेना सिहत न्हासी गया अने गगनमडळमां सूर्यनो उदय थयो, वन्ने तरफथी सैन्य चाली निकळ्यां, रणभूमिमां दाखल धतां महान् कोलाहल धवा लाग्योः ज्यारे वन्ने सेनाओ रणभूमिमां आर्ची पहेंची त्यारे न्यूह रचना थवा लागी; सेनापित न्यूहना द्वारोपर स्थित थड धनुष्यना टंकार करवा लाग्या, ए समये वंदीजनो सेनाथी निकली शूरवीरोने उत्साह आपी नाशवान् जम-त्नो बोध करी पुकारवा लाग्या के आजे सर्व पोतपोतातुं शौर्य वतावो अने शतु-ओनो संहार करी विजय मेळवी कीर्तिने वरो, उत्तम भाग्यनो उदय धवाथी आवो संयोग प्राप्त थाय छे. आ सांभळी सर्व शूरवीरो वीररसथी छलकाइ गया, कायरोना मुख मलिन थइ गयां, आ समये राक्षसनो राजा वक्रदंत पोतानां माया वळथी सपैने उडाडतो तेना प्रतिपक्षीओने पडका-रवा लाग्यो, श्री कुन्त महाराजा धतुष्य उपर वाण चढावी तेनी सन्मुख आवी उभा रहा, वक्र दंते तेओ उपर तुरतमां नारिकेल अख़नो प्रयोग कर्यो तेवामां राजिं कुन्ते महा मंत्र भणी ते अख़ने व्यर्थ करी नांख्युं, वक्रदंते मायाथी अनंत सिंहो पगट कयी तेनी क्रन्त महाराजे एक पछी एक तीक्ष्ण वाणोना प्रहारथी अंत कर्योः आथी राक्षस सेनामां खळभळाट थयो, वके सेनामां महा घोर युद्ध मन्युं; राक्षसो मायाथी अग्नि वरसाववा लाग्या, कुंत महाराजे वारुणास्त्र फेंकी अग्निने शांत कर्यों, तेवामां पापाणनी वृष्टि थवा लागी; क्षात्रसेनावाळा महा पराक्रमथी राजसो उपर अस्त शख़नो पहार करवा ल.ग्या. महा कोलाहल मची रह्यो. राक्षसो मृछित यह पडवा लाग्या. तेओना मरणथी दिशाओमां अंधकार छवाइ गयो, अंत्री चडवा लागी, मायावी अस्त्रोना मयोगो धवा लाग्या, ते तमामने मंत्र वळथी कुन्त महाराज तोडी पाडवा छाग्या; दारुण युद्ध चाळतुं हतुं तेवामां व रा-दंतनी सहायता माटे महाबळ नामनो राक्षस विमानपर वेसी पोतानी अतुल सेना सहित माया वळथी अनेक प्रकारना चमत्कार पदर्शित करते। आवी पहोंच्यो; अकस्पात् रंगवेरंगी घटा अने अग्नि तेमज पापागनी वृष्टि धवा लागी; आ स्वयर वक्रदंतने मळवाथी ते अति उत्साहमां आवी गयो अने तुरत महावळने आदी मान महिन मळचो; वक्रदंने सेनाविने हुक्म कर्यों के सेनानी च्यूह रचना नरो, क्षात्र सेनाने घेरी छीओ, जो जो, एक पण आ वस्वते जीवतो जवा न पापे; सेनापतिए आज्ञा मुजव व्यूह रचना करी महावळ आगळ वथी पडकारवा लाग्ये। के मार्ग माथे

युद्ध करवा कोनी इच्छा छे ^१ आ समये महा पराक्रमी श्री क्वन्त महाराज पोताना वंगजोनी कीर्ति वधारवा खुळी कुपाणे तेनी सन्मुख धस्या द्वन्द्व युद्ध थयुं; पृथ्वी कंपवा लागी, सूर्य विस्व मंद जणावा लाग्युं, देवगण गगन मार्गे विमानमां वेशी राजिं कुन्तनो विजय जोवा आतुर थइ रहा हता अने अनेक प्रकारना आजीवीदो आपता हता, वणी वखत द्वन्द्व युद्ध चाल्युं. अंते अमोव वळवाळा श्री कुन्त गहाराजे महावळतुं मस्तक घडशी उडावी दीवुं. राक्षस सेनामां अति हाहाकार थइ रह्यो, वक्रदंत गभरायो; अने पराभवनी शंकाथी पीडावा लाग्यो; तेणे अति क्रोवयी पृथ्वीपर हाथ पछाडी घणा गायावी राक्षसो उत्पन्न कर्या. ए समये महाराजा कुन्त अने धवल कुमार महा पराक्रमथी सिंह पेठे गर्जना करता रणांगणमां वर्च हाथमां खुळां खङ्गो लड खेळवा लाग्या. अनंत असुरोना मस्तको कापता कापता वकदंतनी समीपे पहोच्या, पाछळथी छात्र सेनाना शराओ पण राख्न अस्त्रोनी वपा करता अनंत राक्षसोने यपने द्वार पहाँचाडवा लाग्याः जेम जेम राक्षसो मरण पामवा लाग्या तेम तेम अनंत उत्पातो थवा लाग्या; कुन्त महाराज महा गंभीर गर्जना करी वोल्या के अरे ! दुष्ट वक्रदंत तैयार था, तारा अंतनो वखत आवी चुकयो, " हुं महात्मा कुंडमालनो वंशज कुंत आजे तने यमलोकमां पहें चाडया सिवाय पाछो फरवानो नथी." यहावीर कुन्तना आवा शब्दो सांभळी राक्षस सेना भयभीत थइ भागवा लागी; वकदत विद्वल थइ विचारवा लाग्यो के मायावळ अत्यार लगी कांइ काम न आन्युं. वाहुवळ सिवाय हवे वचवुं मुहिकल छे एम निश्रय करी कुन्त सामे आवी उभो रहा। अने आवेशमां आवी महा भयंकर गर्जना करी बोल्यो के " हुं बीर वक्रदंत रणमां धैर्यने छोडुं तेम नयी, मारां अति घोर बाहुबळ पासे तुं केटली वलत टके छे ए हुं जोडं छुं. " आटलुं वोली सामसामुं असि युद्ध करवा लाग्या; वने सेनामां एक पछी एक शूरवीरोए गर्नेना करी द्वन्द्व युद्ध मचान्युं, वने तरफथी शस्त्र अस्तो चालवा लाग्यां, सेनानी लटा घनघटा समान जणावा लागी, शल्लो विजळीनी माफक चमकवा लाग्यां: रंड मुंड कपावा लाग्यां, लोहीनी नदीओ चाली निकली, अन्य आदि वाहनोना कपाएलां अंगो तेमां तणावा लाग्यां; तेमज रुंड मुंड, कूर्म, मत्स्य अने मकरनी माफक जणावा लाग्यां; आवुं महा दारुण युद्ध मर्च्यु, एक पछी एकने प्रहार करी पृथ्वीपर पाडवा लाग्याः, राक्षसोए पण वळ वताववामां कचाश राखी निह, घणा क्षात्र सैनिकोने घायल करी नांख्या; कुन्त महाराज अने वक्रदंत वच्चे घणो वखत घोर युद्ध चाल्युं; ए वन्ने एक वीजाथी ओछा उतरे एम नहोता, वक्रदंते महा द्वेषथी कुंत उपर सांग फेंकी, कुंत महाराजे ते सांगने अमितम वळवान वाहुथी पकडी लीधी

अने तेज सांग अिन तीव वळ्यी वक्रदंत उपर फेंकी ते तेना भालचक्रने भेदी पृथ्वीमाँ पेसी गई; वक्रदं महा भयंकर बद्ध करी घूमी पृथ्वीपर पडी गयो, तेना अन्वकारमय हृदय घरने छोडी चितन्य चाल्युं गयुं, राक्षसी माया नष्ट थई, वचेला श्रष्टो कष्ट पामी भागी गया; क्षात्र सेनानो स्पष्ट रीते विजय थयो; व्योम स्वच्छ थयुं, आनंद मंगल्या ध्विन साथे विजय बाद्यो वागवा लाग्यां, देवांगनाओं आकाश मार्गेथी उतरी कुन्त महाराजने श्रमित जोइ रत्न जिंदत उशीरना वीजणाओंची वायु होलवा लागी, तपाम देवताओं पसन्न थया अने जय जयकारना उच्चार करता श्री कुन्त महाराजने पण अनंत मकारे आशीर्वाद आपता तेना उपर पुष्प दृष्टि करवा लाग्या. श्री कुन्त महाराजने पण पोतानो श्रम सफल थयो जाणी आनंदनो पार रह्यो निह. ऋषिगणो प्रसन्नता पूर्वक वेद मंत्रो भणी आशीर्वाद आपता लाग्या. अने महात्मा कुंडमालना वंशनी दृद्धि चाहता उन्नत स्वर्थी श्री कुन्त महाराजनो जय उचारवा लाग्या.

महात्मा कुंत वक्षदंतनो विनाश कर्या पछी चमत्कारपुर तरफ रवाना थवानी तैयारी करावता हता तेवामां तमाम ऋषिमंडले आवी आशीर्याद आपी विनित करी के महाराज! आपे अमारां महान संकष्टो दूर कर्या. आपना पूर्वजोनी माफक आप पण अमारा उपर वणी कृपा राखों छो; धर्म कर्ममां कैक विद्यो आव्यांज करे छे. जेथी आप निकटमां विराजता हो तो अमो पण निभय वनी यज्ञयागादि स्वस्थ चित्ते कर्या करीए माटे आ विजय भूमि उपर आप आपना नामथी एक उत्तम शहेर वसावी अमारा आशीर्वादथी आनंद भोगवो.

त्रुपिओनी आज्ञा माधे चडावी राजिप कुन्ते महातमा विश्वकर्मानी स्तुति करी जेथी विश्वतमी त्रुपिओनां संकष्ट दूर करनार बुन्त राजिपिनी पासे एथार्या, कुन्ते बणा मानपूर्वक अर्घ्यपाद्य करी उन्नत आसने दिराजवा विनित करी. भगवान विश्वकर्मी आसने विराज्या बाद कुन्त
महाराजे बहेर तथा विद्धा बगेरे वेटला मकारना अने केबी रीते बांग्या ते सिवनय पृछ्युं. महातमा
विश्वकर्माए प्रसन्य चित्ते कहुं के-किल्लाओ चार मकारना छे. १ भूमि दुर्ग, २ जल दुर्ग, ३ गिरि
दुर्ग अने ४ गहर दुर्ग. आ चारमांधीगिरिदुर्ग सर्वोत्तम गणाय छे. किल्लानी उंचाइ सन्यावीक्ष
गज करवी तेमांथी वे ओछो अभवा वे गज वथारे किल्लो उंचो बनाववो, माकारनी पहोळाइना अर्घ
भागमा किप्बार्ष करवा, ए किश्तीर्ष एक बीजायी आट आट आंगळ छेटे राग्यवां
जोइए. विल्लाने कोष्टक कम्बानी ए रीति छे के बनिष्ट वर्गना कोष्टकनी पहोळाइ दश

गज तथा मध्यम कोष्टकनी पहोळाइ वार गज अने ज्येष्टमानना कोष्टको चौद गज पहोळाइवाळा वनाववा जोइए. ए वन्त्रे कोष्टकोना मध्यम सागमां चोरस विद्याधरी करवी, ए विद्याधरी अने कोष्टकोमां ग्रवीरोने वेसवा माटे विविध प्रकारनां आसनी वनाववां, ए किल्लानी जंचाइ करतां वमणी पहोळी तेनी आक्षपास खाइ खोदाववी; विद्याधरी अने कोष्टकोनी वच्चे पांत्रीश वाहु (हाथनी आंगळीथी स्कंध खमानी संधि मुनी हाथ) नुं अंतर राखवुं जोइए, अथवा एथी पांच वाहु वधारे के ओल्लुं अंतर राखवुं; किल्लानी जंचाइ पंदर हाथ, मध्यमनी सत्तर हाथ अने ज्येष्टनी ओगणीश हाथ जंचाइ राखवी एम पण थाय छे; मध्यम वर्गना विल्लानी पहोळाड दश हाथ, ज्येष्टनी वार हाथ अने किल्लानी किल्लानी पहोळाड दश हाथ, ज्येष्टनी वार हाथ अने किल्लानी किल्लानी पहोळाड वश हाथ राखवी. आ तमाम जातना किल्लाओमां अन्न, घृन, जल, तेल, लवण, इन्यन, तृण, यंत्रो, दारुगोळो, वाण, शस्त्रो अने योदाओ आदि पूर्ण रीते राखवां जोडए.

चतुरस्न नगरतुं नाम "माहेन्द्र," लांवा साथे चोखंडा नगरतुं नाम "सर्वताभद्र" गोळ नगरतुं नाम "सिंहविद्धेष्ठन " लंबगोळ नगरतुं नाम "वारुण," खाली खूणावाळा नगरतुं नाम "नंद, "स्वस्तिकाकार नगरतुं नाम "नंदावर्तक" जवना आकारवाळा नगरतुं नाम "जयंत," पहाड जपर रहेला नगरतुं नाम "दिव्य," अध्दळ नगरतुं नाम "पुष्पपुर," पुरुषाकार नगरतुं नाम "पौरुष," गिरिनी कुखमां रहेल नगरतुं नाम "स्नाह," लांवा नगरतुं नाम "दंडनगर," नदीथी पूर्व दिशामां होय तेतुं नाम "शकपुर," नदीथी पश्चिम दिशामां होय तेतुं नाम "धार्मिकपुर," जेनी वन्ने वाजुए नदी होय तेतुं नाम "महाजय," अने जे नदीथी जत्तर दिशामां होय तेतुं नाम "सौम्य नगर" कहेवाय छे.

जेने एक किलो होय तेनुं नाम "श्री नगर, "वे किलाओ होय तेनुं नाम " रिपुटन नगर "अने अप्टकोण नगरनुं नाम "स्वस्तिक "कहेवाय छे.

आ रीते नगरना वीश भेद छे. आवा नगरोमां मनुष्यो निवास करे तो ते नगरना नर-पालने सुख, यश अने धननी प्राप्ति थाय छे तेमंज तेनो प्रताप दिवसे दिवसे दृद्धि पामे छे.

जे नगर त्रिकोण होय तेमां अग्निनो भय थाय छे, जे नगर पदकोण होय तेमां होश उपजे छे, जे नगर वज्राकार होय तेमां विजळीनो भय थाय छे, जे नगर शकटने आकारे होय 125

तेमां रोगनो उपद्रव थाय छे, जे नगर त्रिशूलने आकारे होय तेमां युद्धनो भय रहे छे, जे नगर वे ज्ञकटना आकारवाळुं होय तेमां चोरनो भय अने जे नगरना चोरस भागथी खूणाओं वधारे पडता होय ते नगरमां धननो क्षय थाय छे. आ सात दोष गणाय छे. उपर कहेल नगरो त्रण मकारनां छे तेमां कनिष्ठ नगर एक हजार हाथना मापनुं, मध्यम नगर पंदरसो हाथना प्रमाणनुं अने उत्तम नगर वे हजार हाथना प्रमाणनुं वांधवुं जोइए; परंतु कनिष्ठ नगर सवा अग्यारसो हाथनुं, मध्यम नगर सवा सोळसो हाथनुं अने उत्तम नगर सवा एकत्रीज्ञासो हाथनुं वनाववुं.

पूर्वोक्त उत्तम नगरमां सत्तर मार्गी, मध्यम नगरमां तेर मार्गी अने किन्छ वर्गना नगरमां नव मार्गी करवा; जे नगरमां जेटला उभा मार्ग होय तेटलाज आडा मार्ग करवा;

नगरनं अर्थ " ग्राम, " ग्रामनं अर्ध " खेटक, " खेटकनं अर्ध " कूट " अने क्टनं अर्ध " खर्वट " कहेवाय छे.

राजाने रहेवातुं नगर चार, आठ अथवा सोळ हजार गजतुं करवुं पण ते नगरोना अवां-तर भेदे एक एक हजार गज वधारवाधी दश प्रकार थाय छे.

पांच हजार गजनां, छ हजार गजनां, सात हजार गजनां, नव हजार गजनां, दश हजार गजनां, अगिआर हजार गजनां, वार हजार गजनां, तेर हजार गजनां, चौद हजार गजनां, अने पंदर हजार गजनां नगरो करवां, ए नगरोनी जेटली पहाळाइ होय तेथी लंबाइमां सवा आठमो तथा साडा आठमो साग वधारवो; आ रीने नमाम नगरोना चार चार भेद छे ते ए रीते के.

- १-- लंबाइ अने पहोळाइमां समान.
- २---पहोळाइनो अष्टमांश 🖢 लंबाडमां वधारवो.
- ३—-पहोळाइथी छंवाइमां सवा आठमो भाग _{रेष्ठ} वधारवो.
- ४—पहोळाइथी छंवाइमां कुँव वधारवं.
- आ रीते नगरनी रचना करनी.

पुरने दिपे सत्तर मार्ग, ग्रामने विषे नत्र मार्ग, ग्वेटकने विषे पांच मार्ग, कृटने विषे त्रण मार्ग अने खर्वटने विषे वे मार्ग करवा.

जे मार्ग वीज्ञ गज पहोळो होय ते ज्येष्ठ, सोळ गज पहोळो होय ते मध्यम अने वार गज पहोळो होय ते किनष्ठ मार्ग जाणवो.

महात्मा विश्वकर्माना मुखथी आ रीतें श्रवण करी श्री कुन्त महाराजे मजबूत किछावाछुं सर्वोत्तम शहेर वास्युं, जेमां तांबूळनी, फळोनी, दांतनी, अत्तर आदि सुगन्धि पदार्थोनी, पुष्पोनी अने मोती विगेरे रत्नोनी दुकानो राजद्वार पासे रचावी. शहेरनी अंदर पूर्व दिशामां ब्राह्मण, दक्षिण दिशामां क्षत्रिओ अने उत्तर दिशामां श्रद्रोने तथा वैज्योने अने अन्य व्यापारी जनोने शहेरना मध्य भागमां चित्र विचित्र गृहो वनावी वसाववा निश्चय कर्यो.

शहरना इशान कोणमां रंगकर, कुविंद अने रजकने; तथा अग्नियी पोतानी आजीविका चलावनार सोनी छहार आदिने शहरना अग्नि कोणमां अंत्यज, चर्मकार, वांझा अने कलालने दक्षिण दिशामां, नैऋत्य कोणमां वेश्याओंने अने वायच्य कोणमां पाराधि लोकोंने वसाववा नक्की कर्यु तथा पश्चिम दिशामां कूप, तलाव, वाव अने कुंड आदि जलाशयों वंधाव्यां; शहरना चार सिंहद्वार कर्या अने आठ खडकीद्वार वांध्यां, ते द्वारोंने मजबूत अगेला करी तेमज मजबूत अने सुशोभित कमाडों कर्यां, राजद्वार आगल एक कीर्तिस्तंभ उभो कराव्यो; तथा राजग्रह, देवपासाद, दुकानों अने हवेलीओ कळीचुनों छांटी उज्बल बनाववामां आबी; शहरनी पासे एक सुंदर वाग बनाव्यों ते वागमां एक जलाशय वांध्यं तेमज शहरमां अने राजमहेल आगल पण जलाशयों वंधाव्यां.

ज्ञाहेरना रक्षण माटे जल, अग्नि अने वायु वडे चलावी शकाय एवा यंत्रोने मांस मदिरातुं विलदान आपी राखवामां आव्या.

यंत्रो आठ प्रकारनां छे तेमां जेनी लंबाइ आठ हाथनी होय तेतुं नाम "भैरव," जे यंत्रनी लंबाइ नव हाथनी होय तेतुं नाम "चन्द्र," जे यंत्रनी लंबाइ दश हाथ होय तेतुं नाम "अर्क," अग्यार हाथ होय ते "भीमगज," वार हाथ होय ते "युग्म," तेर हाथ होय ते "शिखी," चौद हाथ होय ते "यमदंड," अने जे यंत्रनी लंबाइ पंदर हाथनी होय ते "महाभैरव" कहे-वाय छे. आ आठे जातनां भैरव यंत्रो तैयार करी राखवामां आच्यां.

आठ हाथना यंत्रने आठ हाथनी फणिनी वनावी तेना चाडानी पहोळाइ वार आंगळनी तथा स्तंभो वचे छ हाथनी पहोळाइ राखी, त्रण हाथनी मर्कटिका करी तथा त्रण हाथनुं पांजरुं कराच्युं. यंत्रना पाछळना भागमां वत्रीश आंगळनी यष्टि करावी ते यष्टिनी पहोळाइ तथा जाडाइ आठ आंगळ समान राखी अने ते यंत्रने जे कुंडलवेणी मुकवामां आवे छे ते अशी आंगळ वहार निकळती राखी.

यंत्रनी यष्टिमां मर्कटीने छोढाना खीलाथी द्रढ करी एक हाथतुं यंत्र करी तेने पंदर आंग-ळतुं पांजरुं करवुं एम केटलाएक आचायोंनो मत छे. श्री कुन्त महाराजे ते प्रमाणे करान्युं. अग्नि-यंत्र, जलयंत्र अने वायुयंत्र ढींकुलीथी तैयार करान्यां.

त्यार वाद भगवान विश्वकर्मानी आज्ञा मुजव एकसो आठ हाथ पहोळो उत्तम राज-महेल वंधान्यो, तेना प्रमाणथी आठ आठ हाथ घटाडी वीजां चार गृह पोताने माटे वनाव्यां; ए सर्व गृहोनी लंबाइ पहोळाइथी सवाइ राखी.

१—गृहादिको विषे आय, ऋक्ष, व्यय, तारा, अंश, चंद्र, अने राशिनी रीत वतावीए छीए. कारणके तेंओ श्रेष्ट आव्येथी धान्य, सुख अने यशनी अधिक दृद्धि थाय माटे प्रथम आय विशे कहीए छीए. तेना आठ प्रकार छे. तेओनां नाम.

ध्वज, धूम, सिंह, श्वान, दृप, गर्दभ, गज अने ध्वांक्ष छे. तेमां पहेलो, त्रीजो, पांचमो अने सातमो, एटला आय देवमंदिर विषे श्रेष्ठ छे.

देवमंदिर अने राज्यगृह विषे शास्त्रमां कहेला हाथे माप करवं तथा साधारण लोकोना घरोतं माप शिल्पीना हाथे वरवं पण घास वंडे छावातं होय अर्थात् यास, पांदडां अने एवां वीजां हणो वंडे घर छाइ रहेनारागरीव लोकोना घरतं माप घरधणीना हाथथी लेवं.

गृह बरवानी भूमिने हाथ, अंगुल अने जवधी मापी ने भूमिनुं क्षेत्रफळ कहाटी हाथ, आंगुल अने जवनी गणतरी प्रमाणे आय मेळववो पण नगर अने पुरनुं माप दंडवडे कर्वुं वधार श्रेयस्वर छे.

हाथ अने आंगुलो मार्पा तेनुं क्षेत्रफळ कहाइया पछी हाथ अने आंगुलो प्रमाणे आय कल्पवो कहाो छे. पण खाटलो अथवा पलंगनी वे इसो अने वे उनळां मळी चारने मापमां न लेतां फक्त मध्यनो गाळो भरी आय लाववो अने तेज रीते घरना वे करा, एकमोबाळ अने पछीत ए चारना ओसारने मापमां न लेतां ए चारेनां अंतरनुं अर्थात् ए चारना मध्ये रहेला गाळानुं राजाओने योग्य अनंत प्रकारनां कल्याणकारी अने समृद्धि आपनार गुशोभित गृहो वंधाववां शरु कर्यो. तेमां त्रिशाल गृहनी त्रणे दिशाओमां वन्त्रे हस्त्र, आगळना भागमां वीथि अने मध्यमां पट् दारुयुक्त प्रथम प्रकारनुं गृह वंधान्युं.

त्रिशाल घरनी चारे दिशाओए त्रण त्रण अलिन्दो वंधावी, तेने एक द्वार तथा खूणाओमां गवाक्षो रखावी द्वितीय प्रकारनुं घर तैयार कराव्युं.

त्रिज्ञाल ग्रहनां मुख आगळ माढ सहिन भद्र रखावी " श्रीधर " नामे ग्रह वंबान्युं.

पांच अने सात भूमिना गृहने जाळीओ अने वारीओ मुकावी, मंडप खुछो रखावी, चार द्वारयुक्त शत्रुनो विनाश करनार "राज्य वर्षन्य" नामे गृह तैयार कराव्युं. तेमां उंचाइ अने

माप लड़ आय लाववो, पण देवमदिर अने मंडपनी वहारनी फरकेथी अर्थात् चारे तरफनी भींतना ओसारो सहित (जमीन अने पायाओयां दवाय ते सुद्धांत मापमां लेवानुं कह्यं छे) मापमां गणी आय लाववो.

छत्र (छत्र अने तथी पण न्हाना दागीनाओ विषे गज अने आंगुलोनुं माप लेवाय निह तथी आंगुल, जब, यूका, लीख अने वाळनी अणीवडे माप लेवुं अने आय मेळववो कारणके हीरा आदि रत्नोनुं माप आंगुलेथी थाय निह.) देवमंदिर, ब्राह्मणतुं यर, वेदिका, जलाजय, क्षेत्रो (क्षेत्र एटले यह करवानी जमीन उपरांत ध्वमा, वावटा, निज्ञान ए वगेरे वह्नोनुं जे कांइ करवुं होय ते वह्मनो क्षेत्रमां समावेश थाय छे) ना विस्तार, क्षेत्रोनी उंचाइ, वह्म, आभूषण अने यज्ञाळा एटले ठेकाणे ध्वजआय श्रेष्ठ छे, तथा अग्निवडे जीवनारना घरमां अने होमना कुंड विषे धूमआय श्रेष्ठ छे अने सिंहद्वार (किल्लाना दरवज्जामां, राजाना टरवारनो दरवज्जो अने राजाना महेलनो दरवज्जो वगेरे सिंहद्वार कहेवाय छे;) मां, राजधरमां, शास्त्रोमां अने सिंहासनमां सिंहआय श्रेष्ठ छे.

चांडालना घरिवपे श्वानआयं उत्तम छे तथा विणक्ना घरिवपे, अश्वशालामां, न्यापारीनी दुकान विषे, लाकडां भरवाना गृह विषे अने भोजनशालाचिषे वृषआय श्रेष्ठ छे, तथा वादित्रोना घर विषे अने गधेडांवडे जेनी आजिविका चालती होय तेना घरमां खरआय श्रेष्ठ छे, तथा शृद्धना घर विषे, यान अथवा पालखी विषे, स्त्रीयोना घरिवषे, वाहन (रथ, गाडी, गाडां वगेरे) विषे श्रुच्या (खाटलो, पलंग के कोच) विषे, अने गजशाला विषे गजआय श्रेष्ठ छे.

नीचाणनी वरोवर संभाळ रखावी हती कारणके जे घर मध्य भागमां नीचुं अने आंगणा आगळ उच्च होय ते गृह निरंतर पुत्रनो विनाश करनार धाय छे.

यहस्तंभोनी ओळ मध्यम माननी कराबी; कारणके ए मानयी ओछी वधती पंक्ति करा-ववाथी यहस्वामीने जगत् मान्यता के लक्ष्मीनी माप्ति थती नथी.

श्री कुन्त महाराजे भगवान् विश्वक्रमीना मुख्यी सांभळ्युं हतुं जे " द्विशाल ग्रहमां शाळाना स्तंभयी वहारने पाटडे ओछो स्तंभ होवाधी वेध गणातो नधी, परंतु शाळामां न स्तंभनी एक पंक्तिमां स्तंभ ओछो के वधारे होवाधी वेष गणाय छे." माटे पोतं तमाम गृहोमां तेत्रो वेध न लावतां गृहो एक भूमिथी अग्यार भूमि सुधी कराच्यां, ते भूमिओ सम नहि करतां विपम करावी.

शिल्पीना घर विषे अने तपस्त्रीना स्थान विषे ध्वांक्षआय सुखकारी छे. ए रीते वतावेलां आहे आयोनां मुखो पोतपोताना नामो जेवां छे, पण विशेष करी ध्वांक आयनुं मुख कागडाना मुख जेवुं छे तथा धूम आयनुं मुख विलाडाना मुख जेवुं छे, अने ध्वन आयनुं मुख मनुष्यना मुख जेवुं छे; परंतु सर्व आयोना पण तो पक्षीओना पण जेवा छे, तथा तेमनां गळां सिंहनां जेवा छे अने आयोना हाथो तो मनुष्यना हाथो जेवा छे. ए आयो पूर्व, अग्नि, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, गायन्य, उत्तर अने इशान ए अनुक्रमे आहे दिशाओना स्वामी आह आयो छे. ते सृष्टि मार्गे छे एटले जे दिशानों स्वामी जे आय छे ते दिशा सामे ते आयनुं मुख छे अर्थात् ध्वननुं मुख पूर्व तरफ, धूमनुं मुख अग्नि कोणे, सिंहनुं दक्षिणे, ध्वाननुं नर्कते, हणनुं पश्चिमे, गर्दभनुं वायव्ये, गजनुं उत्तरे अने ध्वाक्षनुं मुख इशान कोण सामे छे.

पहेली कृषिमां हपआय देवो, तथा बीजी भृषिमां सिंहआय देवो अथवा गजआय देवो, अथवा ध्वजशाय देवो. आय आपनार सूत्रधारे याद राखवानुं छे के—" गजआय उपर सिंह-आय अधवा ध्वजआय देवो तेमज सिंहआय उपर ध्वजआय देवो." पण डाह्या मनुष्ये कोड पण आय उपर हप आय लाववो निह, कदाच घर विषे सिंहआय उपर गजआय अथवा वृपआय आवे तो ते मृत्यु प्राप्त करावे अने घरनुं द्वार आयना सामे होय तो ते ह्युभ छे. तेपज घरथी जमणी तरफ अथवा हावी तरफ आय आवे तो ते पण श्रेष्ठ छे.

घर करवानी जमीन अथवा धेत्रनो विस्तार अथवा पहोळाड जेटला गज होय नेटलाने क्षेत्रनी लंबाहना गजो साथे गुणवां जे पिंड आवे (क्षेत्रफळनो जेटली अंक आवे) ने पिंटने आहे राजाओने योग्य अनंत मकारनां कल्याणकारी अने समृद्धि आपनार मुक्कोभित मृहो वंधाववां शरु कर्यो. तेमां त्रिशाल महनी त्रणे दिशाओमां वन्त्रे हस्य, आगळना भागमां वीवि अने मध्यमां पट् दारुयुक्त प्रथम मकारनुं मृह वंधान्युं.

त्रिशाल घरनी चारे दिशाओए त्रण त्रण अलिन्दो वंधावी, तेने एक द्वार तथा खूणाओमां गवाक्षो रखावी द्वितीय प्रकारतुं घर तथार कराव्युं.

त्रिशाल गृहनां मुख आगळ माढ सहिन भद्र रखात्री " श्रीधर " नामे गृह वंधान्युं.

पांच अने सात भूमिना गृहने जाळीओ अने वारीओ मुकावी, मंडप खुळो रखावी, चार द्वारयुक्त शत्रुनो विनाश करनार "राज्य वर्षन्य" नामे गृह तैयार कराव्युं. तेमां उंचाइ अने

माप लड् आय लाववो, पण देवमंदिर अने मंडपनी वहारनी फरकेथी अर्थान् चारे तरफनी भींतना ओसारो सहित (जमीन अने पायाओयां दवाय ते गुद्धांत मापमां लेवानुं कह्युं छे) मापमां गणी आय लाववो।

छत्र (छत्र अने तथी पण न्हाना दागीनाओ विषे गज अने आंगुलोनुं माप लेबाय निह तथी आंगुल, जब, यूका, लीख अने वाळनी अणीवडे माप लेबुं अने आय मेळवबो कारणके हीरा आदि रत्नोनुं माप आंगुलेथी थाय निह.) देवमंदिर, ब्राह्मणनुं घर, वेदिका, जलाबय, क्षेत्रो (क्षेत्र एटले गृह करवानी जमीन उपरांत ध्वजा, वावटा, निव्चान ए वगेरे वस्त्रोनुं जे कांइ करवुं होय ते वस्त्रनो क्षेत्रमां समावेश थाय छे) ना विस्तार, क्षेत्रोनी उंचाह, वस्त्र, आभूषण अने यज्ञाळा एटले ठेकाणे ध्वजआय श्रेष्ठ छे, तथा अग्निवडे जीवनारना घरमां अने होमना कुंड विषे धूमआय श्रेष्ठ छे अने सिंहद्वार (किल्लाना दरवज्ञामां, राजाना टरवारनो दरवज्ञो अने राजाना महेलनो दरवज्जो वगेरे सिंहद्वार कहेवाय छे;) मां, राजधरमां, शास्त्रोमां अने सिंहासनमां सिंहआय श्रेष्ठ छे.

चांडालना घरविषे श्वानआयं उत्तम छे तथा विणक्ना घरविषे, अश्वज्ञालामां, न्यापारीनी दुकान विषे, लाकडां भरवाना गृह विषे अने भोजनज्ञालाविषे वृषआय श्रेष्ठ छे, तथा वादिज्ञोना घर विषे अने गधेडांवडे जेनी आजिविका चालती होय तेना घरमां खरआय श्रेष्ठ छे, तथा ज्ञाद्रना घर विषे, यान अथवा पालखी विषे, स्त्रीयोना घरविषे, वाहन (स्थ, गाडी, गाडां वगेरे) विषे ज्ञाय्या (खाटलो, पलंग के कोच) विषे, अने गज्ञ्ञाला विषे गज्ञ्ञाय श्रेष्ठ छे.

नीचाणनी वरोवर संभाळ रखावी हती कारणके जे घर मध्य भागमां नीचुं अने आंगणा आगळ उच्च होय ते गृह निरंतर पुत्रनो विनाश करनार थाय छे.

गृहस्तंभोनी ओळ मध्यम माननी करावी; कारणके ए मानथी ओछी वधती पंक्ति करा-ववाथी गृहस्वामीने जगत् मान्यता के लक्ष्मीनी माप्ति थती नथी।

श्री कुन्त महाराजे भगवान् विश्वक्रमीना मुख्यी सांभळ्युं हतुं जे "दिशाल गृहमां शाळाना स्तंभथी वहारने पाटंडे ओछो स्तंभ होवाथी वेघ गणातो नथी, परंतु शाळामांज स्तंभनी एक पंक्तिमां स्तंभ ओछो के वधारे होवाथी वेच गणाय छे." माटे पोतं तमाम गृहोमां तेवो वेघ न लावतां गृहो एक भूमिथी अग्यार भूमि सुधी कराव्यां, ते भूमिओ सम नहि करतां विषम करावी.

शिल्पीना घर विषे अने तपस्तीना स्थान विषे ध्वांक्षआय सुखकारी छे, ए रीते वतावेलां आहे आयोनां मुखो पोतपोताना नामो जेवां छे, पण विशेष करी ध्वांक्ष आयनुं मुख कागडाना मुख जेवुं छे तथा धूम आयनुं मुख विलाडाना मुख जेवुं छे, अने ध्वन आयनुं मुख मनुष्यना मुख जेवुं छे; परंतु सर्व आयोना पण तो पक्षीओना पण जेवा छे, तथा तेमनां गळां सिंहनां जेवा छे अने आयोना हाथो तो यनुष्यना हाथो जेवा छे. ए आयो पूर्व, अधि, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, गयव्य, उत्तर अने इशान. ए अनुक्रमे आहे दिशाओना स्वामी आह आयो छे. ते सृष्टि मार्गे छे एटले जे दिशानों स्वामी जे आय छे ते दिशा सामे ते आयनुं मुख छे अर्थात् ध्वननुं मुख पूर्व तरफ, धूमनुं मुख अपि कोणे, सिंहनुं दक्षिणे, श्वाननुं नैक्रते, दृषनुं पश्चिमे, गर्दभनुं वायव्ये, गजनुं उत्तरे अने ध्वांक्षनुं मुख इज्ञान कोण सामे छे.

पहेली चृिषमां हपआय देवो, तथा वीजी भूमिमां सिंहआय देवो अथवा गजआय देवो, अथवा ध्वजआय देवो. आय आपनार सूत्रधारे याद राखवानुं छे के—" गजआय उपर सिंह-आय अथवा ध्वजआय देवो तेमज सिंहआय उपर ध्वजआय देवो." पण डाह्या मनुष्ये कोइ पण आय उपर हप आय लाववो निह, कदाच घर विषे सिंहआय उपर गजआय अथवा वृपआय आवे तो ते मृत्यु प्राप्त करावे अने घरनुं द्वार आयना सामे होय तो ते शुभ छे. तेमज घरथी जमणी तरफ अथवा डावी तरफ आय आवे तो ते पण शेष्ठ छे.

घर करवानी जमीन अथवा क्षेत्रनो विस्नार अथवा पहोळाइ जेटला गज होय तेटलाने व क्षेत्रनी लंबाइना गजो साथे गुणतां जे पिंड आवे (क्षेत्रफळनो जेटलो अंक आवे) ते पिंडने आठे यहनी भूमिने साडात्रण भागे वेहेंची तेना त्रण भागमां नव कोठाओं कराव्या अने वाकीना अर्ध भागमां वे वाजुए वे भींतो वंधावी, ते गृहमां चार भींतोना मळी वार स्तंभ अने मध्य भागमां चार स्तंभ मुकाव्या गृहनी चारे दिशाओमां एक एक भद्र करावी तेमां चार चार स्तंभो मुकाव्या आ रीते कुछ वत्रीश स्तंभो मुकावी "प्रताप वर्धन" नामे गृह वंथाव्युं ।

यहना भद्रोमां बन्ते भूमिओ रखावी अने ते भूमि छपर माडो मुकावी दरेक भद्रने दश दश स्तंभो मुकावतां चार भद्रना चाळीश स्तंभो थया, यह भूमिना मथन मुजव साडात्रण भाग करावी पूर्वोक्त रीते सोळ स्तंभो मुकावी "लक्ष्मीविलास" नामे गृह तैयार कराव्युं.

गृहमां चारे भद्रोमां दश दश स्तंभो मुकावी ते गृहनी अूमिना मध्य भागना पांच विभाग

भागतां शेष जे रहे ते "ध्वजादि" आठ आय समजवा, त्यार पछी गुणेला पिंडने (क्षेत्रनी पहोळाइ साथे लंबाइने गुणतां जे अंक आठ्यो होय तेने) आठ गुणतां जे अंक आवे ते अंकने सत्यावीशे भागतां शेष जे रहे ते अश्विन्यादि" नक्षत्र जाणवुं, अने ए जे नक्षत्र आव्युं होय ते नक्षत्रनो अंक आठे भागतां शेष जे रहे ते "व्यय" जाणवो। ते व्ययनो अंक आयना अंकथी ओछो आवे तो लक्ष्मीनी प्राप्ति करावे, पण आयनो अंक अने व्ययनो अंक सम आवे अर्थात् ओछो के वधारे न आवे तो तेने पिशाच जाणवो, अने ध्वजआय विना वीजा आयोना अंकथी व्ययनो अंक वधारे आवे तो ते राक्षस समजवो।

मूळ राशिनो जे अंक होय ते अंकमां आवेला व्ययनो अंक मेळववो तेमज ध्रुवादिक घरो-मांतुं जे घर होय ते घरना नामना जेटला अक्षरो होय तेटलो अंक पण तेमांज मेळववो. ए त्रणे बावतो एकत्र करतां जे अंक अथवा जेटलो सरवाळो थाय तेटलाने त्रणे भागतां शेष जो एक वधे तो ते " इन्द्रांश " कहेवाय, तथा वे वधे तो ते " यमांश " कहेवाय अने त्रण अथवा शून्य वधे तो ते " राजांश " कहेवाय. ए त्रण अंशोमांनो इंद्रांश तो देवालय अने वेदिकामां श्रेष्ठ छे, तथा यमांश हाट विषे, नाग देवता विषे अने भैरव विषे श्रेष्ठ छे, तथा गजशालामां, अश्वशालामां, यानमां, नगरमां, राजाना घरमां अने बीजा साधारण लोकोना घरो विषे राजांश श्रेष्ठ छे.

घरधणीना जन्मनुं जे नक्षत्र होय ते नक्षत्रथी घरनुं जे नक्षत्र आव्युं होय ते नक्षत्र सूधी गणतां जेटलो अंक आवे तेटला अंकने नवे भागतां होष जे रहे तेटलामी तारा समजवी, ए ताराओमांथी त्रीजी तारा आवे तो तेने सर्व काममां डाह्या मनुष्ये त्यागवी. तेज रीते पांचमी करी तेमांथी वे भागनी भूमि मध्यमां राखी वाकीना त्रण भागोमांथी दोढ दोढ भागनी भूमि चारे वाजुए रखावी तथा ते गृहमां सोळ स्तंभो मूकाव्या. ते सोळ अने भद्रोना चाळीश स्तंभो मळी कुळ छप्पन स्तंभोवाळुं निरंतर लक्ष्मीनी हाद्धि करनार "लक्ष्मीनर्भ" नामे गृह वंधाव्युं.

गृहनी भूमिना पांच भाग करी तेमां छत्रीश स्तंभो मूकाव्या अने अर्थ भागनी भूमिमां भींतो तथा चारे तरफ चार द्वारो रखाव्यां. ते दरेक द्वारने नवपदना भद्रो मुकाव्याः ते दरेक भद्रोमां त्रण त्रण भूमिकाओ उपरांत अढार अढार स्तंभो रखाव्या एटले चार भद्रना मळी कुल वहोंतेर स्तंभो थया तेमां मध्यनी भूमिना छत्रीश स्तंभो उमेरतां कुल एकसो आठ स्तंभवाळुं साढी पांच भूमितुं "श्रीनिवास" नामे गृह वंधाव्युं.

अने सातमी तारा पण सारी नथी. अने वाकी रहेळी ताराओमां पहेळी, वीजी, चोथी, छट्टी, आठमी अने नविने एटळी ताराओमांथी गमे ते तारा आवे तो ते श्रेष्ठ छे, तेओनां नाम, शांता, मनोहरा, क्रूरा, विजया, क्रुलोद्धवा, पिंचनी, राक्षसी, वीरा अने आनंदा अनुक्रमे छे. नारचंद्र ग्रंथमां वीराने वद्छे वाळा कहेळ छे.

व्यय संवंधी एवी समजण छे के, घर करवानो आरंभ करतां पहेलां घरना काममां जे खरच करवुं धार्यु होय ते धारवा प्रमाणे न थतां वधारे अथवा ओछुं खरच थवातुं कारण आयना अंकथी व्ययनो अंक ओछो आवे तो ओछुं खरच थाय अने आयना अंकथी व्ययनो अंक वधारे आवे तो वधारे खरच थाय ए वात प्रथम वताववामां आवी छे. ते छक्षमां राखी गमे ते प्रकारे गणी व्ययनो अंक आयना अंकथी ओछो लाववो ए सारुं छे.

हवे जे अंकतुं नक्षत्र आच्युं होय (२६) ते अंकने आठे भागतां २६—८ शेष २ आवे तो ते वीजो व्यय समजवो. ते व्यय श्रेष्ठ छे. वळी अंश लाववानी एवी रीत छे के—

मूळ राशि (२६) एउले जे नक्षत्र आव्युं होय ते नक्षत्रमां व्ययनो आवेलो अंक मेळवतां (मूळ राशि २६ अने व्यय २) अहावीश याय अने भ्रुवादिक घरोमांथी जे नामनुं घर उत्पन्न थयुं होय ते घरना नामना जेटला अक्षरो होय तेटला अंक मधम थएला (२८) अंकमां मेळववा. जेमके "मनोरम" घरना चार अक्षर छे ते मेळवतां वत्रीश थाय तेने त्रणे भागतां शेप एक वधे तो इन्द्रांश थयो जाणवो, तथा वे वधे तो यमांश अने त्रण वधे अथवा पूर्ण एटले शून्य आवे तो ते राजांश थयो एम जाणवं.

गृहभूमिना त्रण भाग करी तेमां सोळ स्तंभी मुकाव्या. ए सोळ गृह भूमिना स्तंभी अने जपर मुजव चार भद्रोना वहाँतेर स्तंभी तेमां जमेरी अठ्याशी स्तंभी वंधावी, दरेक भद्रमां मंडप रचावी "श्रीनिवास" नामे वीजा प्रकारनुं गृह तैयार कराव्युं.

घरनी भृषिना सम अर्थात् आठ भागो करी तेमांथी अर्थ भागनी भींतो अने वाकीना साडासात भागनुं गृह करान्युं, तेमां सो स्तंभो मुकान्या अने चारद्वार रखान्यां, ते दरेक द्वार आगळ भद्र करान्युं अने ते भद्रना पहेला भागमां सात चोकीओनी पंक्ति करावी, वीजा भागमां पण सात चोकीओनी वीजी पंक्ति करावी, ए भद्रना प्रतिभद्रमां पांच चोकीओनी पक्ति वंवाबी अने ए प्रतिभद्रमा आगळना मुखभद्रमां त्रण चोकीओ करावी, ए रीते एक एक भद्र थयुं ते आखा

जुओ मूळ राशिनो अंक २६+२= २८+४=३२: ३-शेप वे आब्या. ए वे यमांश आवे छे एटले ते अंश सारो नधी. माटे घर करवाना आरंभ उपर वत।वेली रीतोमां प्रयम वाव-तथीज फेरफार करतां सारी रीत आवे तेम करवुं. कदाच घरनी जमीननो कांड भाग वधारवो घटाडवो पढे तो तेम करवुं. जेमके—

घर करवानी जमीन ओगणचाळीश गज अने अगिआर तसुओ लांबी छे एम मानो अने तेना आंगळो करो एटले नवसेंने सुडतालीश आंगळो थशे तथा ते जमीननो विस्तार नवगज अने पांच आंगळ छे तेना आंगळ करों एटले वसेंने एकवीश थशे. ए लंबाइ अने पहो-ळाइनी वन्ने रकपोने (९४७ अने २२१) ने गुणतां वे लाख नव हजार वसें अने सताशी आंगळ क्षेत्रफळ आन्युं. ए क्षेत्रफळने २०९२८७ आठे भागतां २०९२७७—८ शेप सात रहेशे भाटे समजबुं के सातमी गज आय आवी. त्यार पछी नक्षत्र लाववानी एवी रीत छे के:—

जमीननी छंवाइ अने पहोळाइना आंगळोने गणतां ज पिंड आन्यो छे, ते २०९२८७ ने आठे गुणतां ज अंक आवे ते अंकने सत्यावीको भागतां शेष जे रहे तेटलामुं नक्षत्र आवे एम जाणवुं, जुओ २०९२८७×८=१६७४२९६, आ सोळ छाख चौंओतेर हजार वसोने छन्तुने सत्यावीको भागतां १६७४२९६—२७—शेष २६ छवीक्ष रहेको माटे समजवुं के छवीक्षमुं नक्षत्र आन्धुं, ए नक्षत्र अध्वन्यादिथी गणवुं एटले उत्तराभाद्रपदा नामनुं ते नक्षत्र थयुं, ए रीते आय, न्यय अने नक्षत्रादि गणी लाववुं.

भद्रना सर्व मळी चोत्रीश स्तंभो थया. ए रीते चारे भद्रना कुल एकसो छत्रीश स्तंभो थया. तेमां गृहना सो स्तंभो भेळवतां कुल वसो छत्रीश स्तंभोवाछुं "कमलोज्जव" नामे गृह वंधान्युं.

राजगृहनी उंचाइना नव भाग करी ते भागमांथी एक भागनी कुंभी, पोणा भागतुं भर-णुं, पोणा भागतुं शरुं, सवा भागनो पाटहो अने सवापांच भागना स्तंभो मुकाव्या. ते स्तंभोनो गोळ करावी, पाटहानो पोणो भाग सादो रखावी उपरना अर्घ भागमां तंत्रक कराव्यो अने ते तं-त्रक उपर जयंतिका रखावी.

गृहनी उंचाइना दश भागो करी तेमांथी त्रण भागोनी वेदी तथा वे भागोनुं कक्षासन कराव्युं अने ते कक्षासननो कंठ त्रीजा भागे नमेलो रखाव्यो, आ रीते गृहनी उंचाइना अर्थ भागमां पोताने वेसवा माटे पीठ तैयार कराव्युं.

कृत्तिकादिथी सात नक्षत्रो पूर्व दिशामां स्थापन करवां अथवा कल्पवां; तथा मघादि सात नक्षत्रो दक्षिणमां तथा अनुराधादि सात नक्षत्रो पश्चिममां, अने धनिष्ठादि सात नक्षत्रो उत्तर दिशामां स्थापवां अथवा कल्पवां ए रीते दिशाओनो अनुक्रम लड़ नक्षत्रोना अनुक्रमे दरेक दिशामां भागे सात नक्षत्रो स्थापन करतां घरनुं उत्पन्न थएलुं नक्षत्र जे दिशामां आवे ते दिशामां चंद्र छे एम समजवुं पण ते चंद्र घरनी पाछळ आवे तो हानि करे; तथा घरना सामे आवे तो घरना आयुपनो क्षय करे, अने घरनी जमणी तरफ अथवा डावी तरफ आवे तो ते श्रेष्ठ छे देवमंदिर अने राजाना घरनी सामे चंद्र आवे तो ते सारो छे.

घरधणीनी राशिथी घरनी राशि सातमी आवे तो ते प्रीति करे, तथा दशमी अथवा चोथी राशि आवे तो ते पण सारी छे, अगिआरमी अथवा त्रीजी राशि आवे तो ते पण सारी छे, परंतु घरधणीनी राशिथी घरनी वीजी अथवा वारमी राशि आवे तो ते टरिद्री करे, तथा छट्टी अथवा आउमी राशि आवे तो ते मरण प्राप्त करावे अने घरधणीनी राशिथी घरनी राशि पांचमी अथवा नवमी आवे तो ते हेश उत्पन्न करावे.

उपर कहेली गांशिओनी गणतरी एवी रीते छे के—आर्थन्यादि त्रण नक्षत्रो घरनां आवे तो तेनी मेपराशि धाय, मयादि त्रण नक्षत्रो घरनां आवे तो ते सिंह राशि धाय, मूळादि त्रण नक्षत्रो घरनां आवे तो ते सिंह राशि धाय, मूळादि त्रण नक्षत्रो घरनां आवे तो ते धनराशि धाय अने वाकी रहेली नव राशिओ जे छे, ते दरेक राशि बच्चे नक्षत्रोनी छे; पण ज्योतिप शास्त्रना मन प्रमाणे तो नक्षत्रना नवचरणनी एक राशि धाय छे. ते राशिओ घर विषे लेवा ती नथी पण उपर वताच्या प्रमाणे ज्योतिपना मत प्रमाणे चरधणीनी राशि लेवी.

राजमहेलना पाटडा उपरनी छातनी जाडाइ दरेक हाथे वे जव प्रमाणे रखावी ते छात पापाणनी कराववामां आवी हती.

ईंटो चोटाडवाना काममां चुनामां कांकरी रहेवा देता निहः; परंतु कांकरीवाळो चुनो भूमि-तलमां चोक विगेरे वांधवाना काममां वपराच्यो, कारण के कांकरायुक्त चुनाथी तेवा कामनी मजबूती थाय छे.

तमाम गृहोमां होलो, गीध, वानर अने काक आदि भय आपनार पत्नीओने वरजी ते सिवायना पत्नीओना सुंदर चित्रो चितराव्यां.

नक्षत्रना नव चरणनी समज़ती एवी छे के—एक नक्षत्रना चार भागो मानी, ते चारमांथी एक अथवा पा भाग छइ वे नक्षत्रो साथे मेळवों ए वे आखा नक्षत्रोंना आठ भाग अने एक नक्ष्रत्रनो एक भाग मळी नव थाय, ते भागने चरण अथवा पद कहेवामां आवे छे. ते नवचरणमां सवा वे नक्षत्रों थाय एम ज्योतिषनों मत छे, पण शिल्पशास्त्रना मत प्रमाणे तो एक राशि वे नक्षत्रनी गणाय छे अने ज्योतिष प्रमाणे सवा वे नक्षत्रनी एक राशि गणाय छे.

वृश्चिक अने मेपनो स्वामी मंगळ छे, दृप अने तुलानो स्वामी शुक्र छे, मिथुन अने कन्यानो स्वामी बुध छे, कर्कनो स्वामी चंद्रमा छे, सिंहनो स्वामी सूर्य छे, मीन अने घननो स्वामी बृहस्पति छे अने सकर अने कुंभनो स्वामी शनैश्वर छे.

ए रीते राशिना स्वामी कहा छे, सूर्य, मंगळ, चंद्र अने बृहस्थित ए चारे परस्परमां मित्रो समजवा, तथा बुध, शुक्र, शनैश्वर अने राहु ए चारे प्रथमना चारना (सूर्य, मंगळ, चंद्र अने बृहस्पितना) वैरी छे. पण कोण कोनो मित्र छे अने कोण कोनो शत्रु छे ए विषे ज्योतिष शास्त्रनो नीचे प्रमाणे आधार छे.

मंगळ, वृहस्पित अने चंद्र ए त्रणे सूर्यना िमत्रो छे तथा ग्रुक्त अने शनि ए वने सूर्यना शतु छे; अने बुध सूर्यने सम छे अर्थात् शतु निह तेमज िमत्र पण निह. " बुध अने सूर्य ए वने चंद्रने िमत्र छे. " पण चंद्रनो शत्रु कोइ नथी। वळी वाकीना जे मंगळ, गुरु, ग्रुक्त अने शनैश्वर ए चार चंद्रने सम छे तथा चंद्र, बृहस्पित अने सूर्य ए त्रणे मंगळना िमत्र छे; पण बुध तो मंगळनो शत्रु छे. शुक्र अने शनैश्वर ए वे मंगळने सम छे अने शुक्र तथा सूर्य ए वे बुधना िमत्र छे.

आ सिवाय भगवान् विश्वकर्माएं श्री कुन्तमहाराजने राजमहेळना वीजा छ भेद तथा छाद्यना छ प्रकार वताव्या ते ए के—

- १ जे प्रासादने अलिन्दो होय ते अलिन्दोनी सर्व भूमिओ वरंडी युक्त होय तेतुं नाम "शुद्ध " प्रासाद-
- २ जे प्रासाद कक्षासन सहित होय अने ते प्रासादना विस्तारथी अर्ध उंचाइ राखी जेमां छ। य वाळवामां आवे तेतुं नाम " माड " प्रासाद.
- ३ जे प्रासादना भद्रोनी चोकीओ माडधी आच्छादित होय तथा तेनी मध्य भूमिना विस्तार जेटलीज उंचाइ करी माथे शृंग करवुं अथवा मध्य भूमिना ज्यास करतां सवागणुं उंचुं शृंग

बुधनो शत्रु चन्द्र छे अने गुरु, शतैश्वर अने मंगळ ए त्रण बुधने सम छे, तथा सूर्य, मंगळ अने चन्द्र त्रणे वृहस्पतिना मित्र छे, पण बुध अने शुक्र ए वे वृहस्पतिना शत्रु छे. तथा शनिश्वर तो वृहस्पतिने सम छे. बुध अने शनैश्वर ए वे शुक्रना िमत्र छे पण सूर्य अने चन्द्र ए वे शुक्रना शत्रु छे, तथा मंगळ अने वृहस्पति ए वे शुक्रने सम छे. तथा शुक्र अने बुध ए वे शनैश्वरना मित्र छे. पण चंद्र, सूर्य अने मंगळ ए त्रणे शनैश्वरना शत्रु छे अने वृहस्पति तो शनैश्वरने सम छे.

हवे विचारवातुं थहो के ग्रंथकत्तीए बुधने चंद्रनो िमत्र बतान्यो छे. अने बीजी वखत बु-धनो हात्रु चंद्र छे एम कहेवामां आन्युं छे पण ए विरुद्धनातुं कारण ए छे के बुध चंद्रनो पुत्र छे एटले पिता सामे पुत्र वैर राखे पण पुत्र सामे पिता वैर राखे नहि.

श्रवण, पुष्य, अन्विनी, मृगशिर, अनुराया, स्वाति, रेवती, इस्त अने पुनर्वसु ए नव न-क्षत्रो देवगणनां छे, तथा गरणी, रोहिणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वापादा, पूर्वाभाद्रंपदा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तरापादा, उत्तराभाद्रपदा अने आद्री ए नव नक्षत्रो मनुष्यगणनां जाणवां तथा मृळ, विशाखा, कृतिका, मधा, चित्रा, धिनष्ठा, जतिभेषा, ज्येष्ठा अने अश्लेषा ए नव नक्षत्रो राक्षसगणनां छे माटे चरनुं नक्षत्र जो देत्य अथवा राक्षसगणनुं होय अने चर्यणीनुं नक्षत्र मनुष्यगणनुं होय, अथवा चरनुं नक्षत्र मनुष्यगणनुं होय अने चर्यणीनुं नक्षत्र राक्षसगणनुं होय तो ते घर्यणी-नुं मृत्यु करे (मनुष्य अने राक्षस वेमां परस्पर विरोधभाव छे माटे) तथा घरनुं नक्षत्र देवगणनुं PNG-

करवुं पण ते शृंगनुं रुप खीलेला कमळनी कळी समान आकृतिवाळुं होय तेनुं नाम "मौड " प्रासाद.

- ४ जपर मुजव प्रासाद बनाववो परंतु तेमां शृंग मुकवानुं कहेल छे. ते न मुकतां तेने वदले देव मंदिर जपर जेवुं शिखर होय तेवीज आकृतिनुं शिखर करवुं तेनुं नाम " शेखर " प्रासाद.
- ५ मासादने लागेला भद्रो पासे जे खूणो नीकले छे तेनुं नाम तवंग छे, ते तवंगो उपर घंटाओ अने कलको होय तो तेनुं नाम " तुंगार " प्रासाद.
- ६ प्रासादना भद्रोना खूणाओने गोळ करवा ते ए रीते के प्रासादना जे भद्रो होय ते भद्रोने मथाळे खूणाओने गोळ करवा तेतुं नाम " सिंह कर्ण " प्रासाद.

होय अने घरधणीतुं नक्षत्र राक्षसगणतुं होय अथवा घरतुं नक्षत्र राक्षसगणतुं होय अने घर-धणीतुं नक्षत्र देवगणतुं होय, तो ते क्षेत्र करे माटे एवां परस्पर विरोधी दक्षत्रोंनो सर्वथा त्याग करवो.

घरतुं नक्षत्र देवगणतुं होय अने घरधणीतुं नक्षत्र मतुष्यगणतुं होय अथवा घरतुं नक्षत्र मतुष्यगणतुं अने घरधणीतुं नक्षत्र देवगणतुं होय तेमज घरतुं अने घरधणीतुं ए वने नक्षत्रो देव-गणनां होय अथवा ए वनेनां नक्षत्रो मतुष्यगणनां होय तो ते श्रेष्ठ छे.

उत्तरा फाल्गुनी अने अश्विनी ए वज्ञे नक्षत्रोने परस्परमां वैर छे, स्वाति अने भरणी ए वे नक्षत्रोने वैर छे, रोहिणी अने उत्तरापादा ए वे नक्षत्रोमां वैर छे, अवण अने पुनर्वस ए वे नक्षत्रोने वैर छे, चित्रा अने हस्त ए वे नक्षत्रोमां वैर छे, तेमज पुष्य अने अश्लेपा वच्चे, अने ज्येष्टा अने विशाखा वच्चे वैर छे माटे प्रासाद, घर, आसन अने श्रव्या विषे उपर वतावेलां नक्षत्र-वैर तजवां.

कर्क, मीन अने दृश्चिक ए त्रण राशिनो ब्राह्मण वर्ण जाणवो, सिंह, मेष अने धन ए त्रण राशिनो क्षत्रिय वर्ण जाणवो, कन्या, मकर अने दृष ए त्रण राशिनो वैद्य वर्ण जाणवो, मि-प्थन, क्वंभ अने तुलो ए त्रण राशिनो ब्राह्म वर्ण जाणवो.

जेम स्वामीनी राशिना वर्गथी स्त्रीनी राशिनो वर्ण उत्तम होय तो तेवी स्त्रीने स्वामीए परण-वी निह, तेमज घरधणीनी राशिना वर्णथी घरनी राशिना उत्तम वर्णवाळुं घर करवुं निह, पण १ छाद्य तृणतुं. २ पर्णतुं. ३ पाटीयातुं. ४ वांसना खेपेडा अथवा ट्हातुं, ५ मृत्तिकातुं ६ पथ्थरनी शिलातुं.

महाराजा कुन्ते उपर मुजव प्रासादो तथा छाद्यो पण बंधाव्यां अने राज्यमहेलनी डावी तथा जमणी वाजु क्रीडा करवा माटे उत्तम वाग वनाव्या; ते वागना भगवान् विश्वकर्माए उत्तम, मध्यम, अने किनष्ठ ए रीते त्रण प्रकार वताव्या; सो दंडनो किनष्ठ, वसो दंडनो मध्यम अने त्रणसो दंडनो उत्तम. श्री कुन्त राजर्षिए त्रणसो त्रणसो दंडना उपेष्ठमानना वाग वनावी तेमां मंडप रचाव्या अने ते मंडपमां जलवंत्र तैयार कराव्या. ते ए रीते के प्रथम फुहारा करवाना क्षेत्रना सात सात कोठाओं कर्या ते ओगणपचाश कोठाओं मांथी चारे दिशाओं तरफ त्रण त्रण

राशिना ब्राह्मण वर्णवाळाने मीनराशितुं घर करवुं, तथा राशिना क्षत्रिय वर्णवाळाने धन राशितु घर करवुं, राशिना वैश्यवर्णवाळाए कन्याराशितुं घर करवुं अने राशिना शृद्ध वर्णवाळाए मिथुन राशितुं घर करवुं.

अित्ती, अने शतिभा ए वन्ने नक्षत्रोनी अश्वयोनि, भरणी अने रेवती ए वे नक्षत्रोनी इस्तीयोनि. कृत्तिका अने पूर्य ए वे नक्षत्रोनी छागयोनि, रोहिणी अने मृगशिर ए वे नक्षत्रोनी सर्पयोनि, मूळ अने आद्री ए वे नक्षत्रोनी श्वानयोनि, अश्लेषा अने पुनवसु ए वे नक्षत्रोनी मार्जार-योनि, अने पूर्वाफाल्युनी अने मद्या ए वे नक्षत्रोनी उंदिर योनि छे एम समजबुं.

उत्तराभाद्रपदा अने उत्तराफाल्गुनी ए वे नक्षत्रोनी गायनी, स्वाति अने इस्त, ए वे नक्ष-त्रोनी महिषी योनि, चित्रा अने विज्ञाखा ए वे नक्षत्रोनी वाघनी योनि, ज्येष्ठा अने अनुराधा ए वे नक्षत्रोनी हरणयोनि, पूर्वाषाढा अने अवण ए वे नक्षत्रोनी वानरनी योनि, उत्तरापाढा अने अभिजीत ए वे नक्षत्रोनी नक्कळयोनि, पूर्वाभाद्रपद अने धनिष्ठा ए वे नक्षत्रोनी सिंहनी योनि छे. ए रीते नक्षत्रनी योनिथी उत्पन्न थएछं वैर जो घरनी जोडे घरना धणीने छोक बहेवारे छागु पहतुं होय तो ते तज्रबुं.

आयनो अंक, नक्षत्रनो, तारानो, न्ययनो अने अंशकनो ए सर्व अंकोने एकठा करतां जेटलो अंक धाय ते अंकने पंदर भागे भागतां शेप जे रहे ते घरनी तिथि छे एम समजबुं, तथा तेज अंकने (सर्व अंकोने एकटा करवे एकंदरे जे अंक थयो होय तेने) साते भागतां शेप जे रहे ते चार जाणवां अने वर्ळा तेज अंकने वारे भागतां शेप जे रहे ते लग्न जाणवां.

[769]

कोठाओना भद्रो कराव्यां वाकी मध्यमां रहेला पचीश कोठाओनी चारे वाजुना कोठाओमां पाणी भराव्युं तेने फरतो होज वंधाव्योः पूर्वोक्त ओगणपचाश कोठाओं मध्यना एक कोठामां वेदिका अर्थात् वेसवानो चोतरो कराव्योः ए वेदिकानी आसपास आठ कोठाओना भागमां द्वादश स्तंभो वंधाव्या; ए फुहारा वहारना अर्थात् छेछा चार तरफना चार खूणाओ माथेना कोठाओं उपर स्वरुपवान कोइना हाथमां मृदंग, कोइना हाथमां पिचकारी, कोइ नृत्य भाव वतावती एवी तरहवार पुतळीओ तैयार करावी स्थपावी.

महाराजा कुन्ते आ रीते वाग तैयार कराव्या पर्छा तेमां हक्षो तथा लताओ वाववा अने तेने उछेरवा माटे एक वृक्षायुर्वेद जाणनार माळीने योलावी वृक्षो कइ कड़ ऋनुमां शी रीते

घरनी छंचाइ साथे पहोळाइने गुणतां जे अंक आवे ते अंकने घरनी उंचाइना अंक साथे मेळवी सरवाळो करतां, जेटलो अंक आव तेटला अंकने आठे भागतां जेप जे रहे ते घरनो अधि-पति वर्ग जाणवो. ते आठ वर्गोमांथी वीजो, चोथो, छहो अने आठमो वर्ग. ए चारमांथी कोइ पण वर्ग आवे तो ते श्रेष्ठ समजवो, पण पहेलों, त्रीजों, पांचमो अने सातमो ए चारमांथी कोइ पण वर्ग आवे तो ते श्रुप्त गणातो नथी.

गरुड, विलाडो, सिंह, श्वान, सर्प, मूपक, मृग अने मेंडो ए आठ वर्गो पूर्व दिशाथी अ-नुक्रमे सृष्टि मार्गे दिशाओं अने विदिशाओं मळी आठना स्वामी छे; माटे ते घरनी आठ दिशा-ओना आठ स्वामी समजवा अने हवे पाठांतरथी घरना धणीना वर्गो समजवाना छे. ते एवी रीत के:—

"आ" "इ" "उ" "ए" चार अक्षरोमांथी गमे ते अक्षर घरधणीना नामना आद्यमां होय तो तेनो रारुड वर्ग, "क" "ख" "ग" "घ" "घ" "ड" ए पांच अक्षरोगांथी गमे ते अक्षर घरधणीना नामना आद्ये होय तो तेनो "विडाल उन्ने छे, "च" "छ" "ज" "झ" "अ" ए पांच अक्षरोमांथी गमे ते अक्षर घरधणीनानामना आद्ये होय तो तेनो "सिंह" वर्ग, "ट" "ठ" "ड" "ढ" "ण" ए पांच अक्षरमांथी गमे ते अक्षर नामना आद्ये होय तो तेनो "श्वान" वर्ग छे, "त" "थ" "द" "घ" "प" "प" ए पांच अक्षरमांथी गमे ते अक्षर नामना आद्ये होय तो तेनो "स्पूर्ण वर्ग छे, "प"

वाववाथी सारां फळे छे; तथा जमीनने केवी रीते खेडवी विगेरे प्रश्न कयों. महाराजनी आज्ञा माथे चडावी माळीए जवाव आप्यों के-सर्व वृक्षोंने माटे कोमळ भूमि उत्तम गणाय छे; जे जगोए वाग वनाववों होय त्यां प्रथम तळ वाववा. ते तळ फूल्या वाद तेतुं मईन करी नांखवुं, त्यार पछी तेमां निम्ब, अशोक, पुत्राग, शिरीप अने पियंगु ए शुभ हक्षों प्रथम वाववां जोइए.

पनस, अशोक, केळ, जांबु, लक्कच, दाडिम, द्राक्षा, पालीवन, वीजपूर अने अतिमुक्तक ए हक्षोंनी कलम लड़ तेना उपर गोमय लेप करी तेमज वीजां हक्षोंने मूळथी अथवा डाळथी कापी तेना उपर गोमय लगावी वाववां जोड़ए.

जेने शाखा उगी न होय एवां हक्षोतुं एक स्थानथी उठावी वीजे स्थाने पोतपोतानी दिशा मध्ये शिशिर ऋतुमां स्थापन कराय छे; जेने शाखा उगी गइ होय तेने हेमंत ऋतुमां अने उत्तम उत्तम शाखादाळां हक्षोतुं वर्षो ऋतुमां रोपण करवुं जोइए.

"फ" "च" "स" "स" ए पांच अक्षरमांथी गमे ते अक्षर नामना आद्ये होय तो तेनो "सूषक " वर्ग छे, "य" "र" "ठ" "च" ए चार अक्षरोमांथी गमे ते अक्षर नामना आद्ये होय तो तेनो "सूग" वर्ग छे, अने "रा" "ष" "स" "ह" ए चार अक्षरो-मांथी गमे ते अक्षर चरधणीना नामना आद्यमां होय तो तेनो "मेष्ण" नो वर्ग छे. पण घरधणीना वर्गथी घरनो पांचमो वर्ग आवे नो ते शब्र होवाथी तेने तजवो.

सर्पना आकारे त्रण नाडी हुं चक्र करी तेयां अश्वन्यादि सतावी हा नहात्रों वेध करवां, (सर्पना नव भागों करी ते दरेक भागमां त्रण नहात्रों विधवां) ए नहात्रों एवी रीते वींधवां के— सर्पाहाति चक्रमां एक नाडीमां वर अने कन्यानां नहात्रों आवे तो ते मृत्यु करे माटे ते सारां निह, तेथी ते नहात्रोंना अंग तजवा. पण स्वामी अने सेवकने, मित्रिमत्रने, घरने अने घरना स्वामीने तेमज नगरने अने राजाने एटलाओंना नहात्रोंनो एक नाडीमां वेध थाय तो सारों छे. वळी पथमता भागमां घरो विषे आयादि नव मकार जोवा. पण तेमां विशेषे करीने त्रण मकार जोवा अथवा पांच, सात, के नव मकार जोइ घर करे तो घर करनार मुखी थाय छे.

जैमां घणा गुणो अने थोडा दोषो रहेला होय एवं घर अने देवमंदिरादि करवामां कांड् हरकत नथी. जेमके घणा तापवाळो अग्नि पाभीना झीणा विंदुवडे बुझाय निह तेज शिते जे वस्तुमा घणा गुणो रहेला होय ते पदार्थन थोडा दोष वडे कांड् हानि थाय निह. घृत, उज्ञीर, तिल क्षौद्र, विडंग, क्षीर, अने गोमय ए सर्वने पीसी मूलथी ज्ञाखा पर्यन्त इक्षोने लेप करवो अने पछी तेने एक स्थानथी उठावी वीजे स्थाने रोपवां.

पवित्रपणे स्नान अने अनुलेपनथी दृक्षानी पूजा करी तेने नीजे स्थाने रोपवामां आवे तो ते दृक्षा एनां ए पत्रोथी उगी निकले छे अर्थात् सुकातुं नथी।

रोपेलां द्रक्षोने ग्रीष्म ऋनुमां सांज सवार वन्ने वखत जळनुं सिंचन करवुं जोइए, शीत-काळमां एक दिवसने अंतरे अने वर्षा ऋनुमां जमीन सुकाइ गया वाद पाणी पावुं जोडए.

जांबु, वेतस, वानीर, कदंव, गूलर, अर्जुन, वीजपूर, द्राधा, कालकुच, दाडिम, वंजुल, नक्तमाल, तिलक, पनस, तिमिर अने आम्रातक ए सोळ दृशो घणा जळवाळा देशमां धाय छे.

एक दृक्षयी वीश हाथने अंतरे वीज़ं दृक्ष रोपाय ते उत्तम, सोळ हायने अंतरे मध्यम अने वार हाथने अंतरे रोपाय ते कनिष्ठ गणाय छे.

जे दृक्षो अति समीप उगे अने परस्पर स्पर्श करे तथा तेओनी जड एक बीजाथी मळी जाय तो ते पीडित थाय छे अने ए कारणथी ते दृक्षो सारी रीते फळतां नथी.

वहु शीत, पवन अने आतपथी दृशोंने रोग थाय छे, तेना पत्रो पीळां पडी जाय छे, अंकुर दृद्धि पामतां नथी, शाखाओ सुकाइ जाय छे अने रस टपकवा लागे छे.

रोगी वृक्षानी एवी रीते चिकित्सा करवी जोइए के प्रथम तेनां जे अंगमां सडो होय अ-थवा झुष्कता आदि देखाय तेने शस्त्रथी कापी तेना उपर वावडींग, घृत अने पंकने िमलावी चोप-डवां, पछी दूध अने जळ मिलावी ते उपर सिंचवुं.

वृक्षमां फळ न लागतां होय तो कुलत्थ, माप, मुद्र, तिल अने यव ए सर्वने दुधमां नांखी ते दूधने गरम करवं. खूव उकाळ्या वाद ठंड करी तेनाथी फळ अने पुष्योंनी दृद्धि माटे वृक्षाने सिंचन करवं.

अविका अने वकरीनी लींडीओतुं चूर्ण वे आढक, एक आढक तल, एक प्रस्थ सक्तु, एक द्रोण जळ अने एक तुला गोगांस ए सर्वने एक पात्रमां नांखी सात रात्रि पर्यन्त राखवां, आठमे दिवस तेनाथी दृक्षा, वेल, गुल्म अने लताओने फळ अने पुष्पोनी दृद्धि अर्थे सिंचन करवुं.

सोळ पलनो एक मस्य, चार मस्थनो एक आढक, चार आढकनो एक द्रोण अने सो पलनी एक तुला थाय छे. आठ रतिनो एक मासो गणीए तो चाळीश मासानो एक पल थाय छे.

गमे ते वीजने घृतथी चीकणो हाथ करी चोपडवो, पछी ते वीजने दूधमां नांखवुं; ए रीते द्रश दिवस पर्यन्त हमेशां प्रयोग करी तेने गोमयथी घणो वखत रुखुं करबुं, ए वीजने सृकर अने हिरणना मांसनो धूप देवों, त्यारवाद मांस अने सूकरनी चरवी सहित ते वीजने तल वावी ग्रुद्ध करेली भूमिमा वाववुं, ते उपर दूधयुक्त जळतुं सिंचन करवाथी ते वीजमांथी उत्पन्न थनार दृक्ष पुष्पो सहित उमे छे.

अति कठोर आंवलीनां वीजने ब्रीहि, अडद, अने तलतुं चूर्ण तथा सक्तु अने सडेलुं मांस ए सर्दथी सिंचन करी तेने हलदरनो धूप देवाथी ते वीजमां नवां अंकुर निकली आवे छे तो पछी वीज जामे एमां संदेह हो। ?

किरियनां बीजियी दछरी करवानी इच्छा थाय तो आस्फोत, धात्री, धव, वासिक, पत्रो सिहत देतस तथा सूर्यवछी, त्रयामा अने अतिमुक्तक ए आठेनी जड अने वेतसनां पांदडां छइ दूथमां नांखवां, ए दूधने खूव उकाळवुं पछी तेने टंड करी तेमां किरियनुं वीज नांखवुं, वन्ने हाथथी सो ताल वजावीए एटला समय पर्यन्त दूधनी अंदर राख्या वाद पाछुं तेमांथी कहाडी तड़के सुकाववुं. ए रीते एक महिना पर्यन्त हमेशां प्रयोग करवो; एक हाथ लांबो तथा एक हाथ पहोळो अने वे हाथ उंडो खाडो खोदी तेने दूधयुक्त जळथी भरी देवो. ज्यारे ए जळ सुकाइ जाय त्यारे ते खाडाने अग्नियी वाळी देवो अने मध, छूत तथा भस्म मिलावी तेने लींपवो, त्यारवाद प्रथम चार आंगळ माटी भरी ते उपर अडद, तल अने यवनां चूर्णथी ते खाडो पूरी देवो, परी मत्त्य मांसयुक्त जळथी ते किटन थाय त्यां सुवी तेने ठोकवो, पछीयी ते खाडामां चार आंगळ नीचे प्रथम सिद्ध करेल किप्तथनुं वीज बोवुं तेने मत्त्य, जळ अने मांस जळनुं सिंचन करवाधी तुरतज उत्तम पत्रोयुक्त बळी वनी जाय छे अने मंडपने ढांकी दे छे, जे जोवाथी सर्वना मनमां आश्चर्य उत्तन थाय छे.

अंकोलना फळनां कलकथी, अंकोल पळनां तेलथी अथवा श्लेप्मानकनां फलथी अथीत् तेना कल्कथी अथवा नेलथी गमे ते वृक्षना वीजने सो वार सींचवा, पछी तेने वरसादमां पडता कराथी भीजाएली मृतिकामां वात्रवाधी तेन वखते वीज जामी फलोना भारथी झुकती लना वनी जाय छे. एमां कांइ पण आश्चर्य नथी.

श्लेष्मातकनां वीज लड़ तेनी छाल उनारवी अने अंकोल फलनी अंदरनां जलयी ते वीजोने छायामां सान वसत सीचवां अर्थात् जलयी सीची सीची छायामां सुकावना जवुं, पछी तेने भेंसना छाणमां घसी पाछा तेनाज सुकेला गोमयना ढगलामा राखी मुकवां. ज्यारे करा पडे अने माटी भींजाय त्यारे ते माटीमां पूर्वोक्त वीजोने वोवायी एकज दिवसमां वृज वनी फलवा लागे छे.

आ रीते द्वक्षायुर्वेद जाणनार माळीना मुखर्यी सर्व अवण करी महाराजा कुन्त पूर्णरीत प्रसन्न थया अने माळीने पोताना वागवान तरीके नीमी तेना हाथर्यी पोते तैयार करावेळ वागमा चंपो, कुंद, जाइ, पुण्याळी वेळीओ, निर्मालिका, सुवर्ण सरखां पीळां पुण्यावळी जाइ, केनकी, धोळी पाडळ, नारंगीनां दृक्षो, लाल कणेर, वसन्तलिका, लाल पुण्यावाळां अनेक दृक्षो तेमज वीजी अनेक प्रकारनी वेळीओ, जंबीर, वोरडी, सोपारीनां दृक्षो, महुडां, जांद्य, आम्र, मालूर, कदली, चंदन, वड, पींपळा, हरहे, आंवळी, आंवली, आसोपालव, कदंव, निम्बद्रक्ष, खजूरी, दाडमी, कपूर, अगर, खाखरा, श्वेत कणेर, पुनाग, अनेक प्रकारनां लीडुनां दृक्षो, नागरवेळ, वीजोरानां दृक्षो, तिन्दूकी, नाळीएरीओ, द्राक्षलताओ, इलायचीना रोपो, वोलसरी, धत्रा, कपूर-काचली, सादह, ताल, तमालदृक्षा, हंगोरी, मन्दार, पारिजातक अने ए सिवाय अनेक प्रकारनां श्रेष्ठ अने तरेहवार जातिनां पुण्यो उत्पन्न थाय पवां दृक्षो रोपाच्यां; उक्त वागनी अंदर वाला, मध्या अने मौढा ए त्रणे जातिनी स्त्रीओने मनोहर गान करवा अथे, तेओने हीचवा अथे हीचोळा वंधाच्या तेमज ग्रीष्म अने शरद क्त्तुना दिवसोमां शीत जळमां क्रीडा करवा माटे श्रेष्ठ मंडपवाळा होजोमां पाणी भरावी राख्यां.

राजमहेलथी डाबी तरफ चोसठ हाथ लांबी ज्येष्ठमाननी अश्वशाळा बंधावी; तेनी पहो-लाइ पंदर हाथ राखवामां आवी, भींतोनो ओसार एक गज पहोळो अने उंचाइ साडापांच हाथ रखावी.

जे अश्वशाळा पचाश हाथ लांवी, तेर हाथ विस्तारवाळी, भींतना एक गज पहोळा ओ-सारवाळी अने पांच हाथ उंचाइवाळी होय ते मध्यम, तथा जे चाळीश हाथ लांवी, अगियार हाथ पहोळी, भीतोना एक गज पहोळा ओसारवाळी अने चार हाथ उंची होय ते कनिष्ठ गणाय छे.

पूर्वोक्त अन्वज्ञालामां घोडाओना मुख आगल तेने खावातुं घास राखवा माटे ओदन-कोष्टकपण वे हाथ उंचो वंधावी तेना उपर कलश करान्या अने ते पणना पायाथी ज्ञालानी उं-चाइ सुधी सात हाथ उंचुं तोरण करान्युं.

पूर्वोक्त पट् प्रकारना राजमहेलने पंदर हाथ उंचा अने आठ हाथ पहोला ज्येष्ठमानना दरवाजाओ वंधाल्याः

जे तेर हाथ उंचो अने सात हाथ पहोळो होय ते मध्यम तथा अगियार हाथ उंचो अने छ हाथ पहोळो होय ते किनष्ठ कहेवाय छे.

महाराजा कुन्ते ज्येष्टमानना सिंहद्वारना मुख आगळनी शाखाना स्तंभने मथाळे कोइ राजमहेलमां त्रण, क्यांइ वे अने क्यांइ एक मदळ गोठवाच्यां अने ते मदळोना रक्षण माटे तेना नीचे तुल्य अर्थात् पहोळाइ अने जाडाइमां समान टोडांओ मुकाच्यां. क्यांइ सवायां तेमज क्यांइ दोढां रखाच्यां.

सिंहद्वारथी जमणी वाजुए मजवूत अने उंची एक हस्तिज्ञाळा वंधावी अने तेना उपर कळश तथा घंटाओ मुकावी सुशोभित करी ने हस्तिशाळा सिंहद्वारथी डावी वाजुए पण वंधा-वी शकाय छे.

हस्तिशाळातुं मुख वने वाजुए सरखुं राखी गभें द्वार मुकाच्युं तेमज अश्वशाळाना वत्री-श थाग करी गभेथी डावी तरफ एक थाग वयारे राखी द्वार मुकाच्युं.

सेनापितने माटे चोसट हाथ पहोळुं उत्तम गृह तैयार करावी ए गृहना प्रमाणथी छ छ हाथ घटाडी बीजां चार गृह बनाव्यां. जे जे गृहनी जेटली पहोळाइ कही बतावी ते पहोळाइनो छटो भाग तेम। उमेरी ते ते गृहनी लंबाइ राखवामां आवी.

मंत्रीने माटे साठ हाथ पहोछं उत्तम गृह तैयार कराव्युं. ते गृहना प्रमाणथी चार चार हाथ घटाडी वीजां चार गृह वंशाव्यां ते तमाम गृहोमां जे जे गृहनी जेटली पहोळाड कही ते पहोळाइनो अष्टमांग तेमां उमेरी ते ते गृहोनी लंबाड राखी. आ पांच गृहोती लंबाड पहोळाडथी अर्थ प्रमाण तुल्य लांबा पहोळां पांच गृहो राजराणी माटे तयार कराव्यां.

युवराज माटे अंजी हाँय पहोळाइवाळुं उत्तम गृह वंधाव्युं. ते गृहना प्रमाणयी छ छ हाथ घटाडी वीजां चार गृह तैयार कराव्यां; ते तमाम गृहोमां जे जे गृहनी जेटली पहोळाइ कही ते पहोळाइनो तृतीयांश तेमां उमेरी ते ते गृहोनी लंबाइ राखी, आ युवराजना पांच गृहना मापथी अर्ध प्रमाणनां पांच गृहो युवराजना न्हाना भाइने निवास करवा बंधाव्याः

पोताना अने मंत्रीना पांच गृहोना अंतर प्रमाणे लंबाइ पहोळाइबाळां पांच गृह प्रधान पुरुषो माटे वंधाव्यां; मांडलिक राजा माटे पण आतां पांच गृह बनाववामां आवेछे. पोताना अने युवराजना पांच गृहोना अंतर तुल्य लंबाइ पहोळाइबाळां पांच गृह वेज्या, कंचुकी अने कलाको-विद पुरुषो माटे वंधाव्यां.

पोताना अने सेनापितना गृहनी लंबाइ पहोलाइनां अंतर तुल्य लंनाइ पहोलाइबाळां कोश अने रितगृह वंबाच्यां; ते कोश अने रित गृहना सरखां अश्वशाला गजशाला आदिना अध्यक्ष तेमज कार्याधिकारीओनां गृहो तैयार कराच्यां.

युवराजना अने मंत्रीना गृहनी लंबाइ पहोळाइना अंतर तुख्य कर्मशालाव्यक्ष अने द्तोना गृहोनी लंबाइ तथा पहोळाइ राखी.

दैवज्ञ, पुरोहित अने वैद्य माटे चाळीज्ञा हाथ पहोळाः वाळां उत्तम गृह वंधाव्यां, ते गृहना प्रमाणथी चार चार हाथ घटाडी बीजां चार गृहो तैयार कराव्यां. जे जे गृहोनी जेटली पहोळाइ कही ते पहोळाइनो पष्टमांज्ञा तेमां उमेरी ते ते गृहनी लंबाइ राखवामां आवी.

चार शाळावाळा गृहोनी उंचाइ तेनी पहोळाइ गमाणेज अने एक शाळावाळा गृहोनी उंचाइ तेनी पहोळाइथी वमणी रखावी.

ब्राह्मण माटे वत्रीज्ञा हाथ पहोळाइवामां मधानगृह वंथावी ते गृहना प्रमाणथी चार चार हाथ घटाडी वीजां चार गृहो तैयार कराव्यां, क्षत्रीय माटे अठ्यावीज्ञा हाथनी पहोळाइवाळां प्रधानगृह वंधावी तेना प्रमाणथी चार चार हाथ घटाडी वीजां चार गृहो तैयार कराव्यां; वैज्यने माटे चोवीज्ञा हाथ पहोळाइवाळां प्रधानगृह वंधावी ते प्रमाणथी चार चार हाथ घटाडी वीजां वे गृहो तैयार कराव्यां अने शृहने माटे वीजा हाथ पहोळाइवाळां प्रधानगृह वंधावी ते प्रमाणथी चार हाथ घटाडी वीजां वार हाथ घटाडी वीजां वार हाथ घटाडी वीजां एक एक गृह तैयार कराव्यां. आ रीते सोळ हाथनी पहोळाइ पर्यन्त गृहो वंयाव्यां

अने अत्यंत नीच जातिनां गृहो एथी पण ओछी पहोळाइवाळां बंधाव्यां; ब्राह्मणना गृहनी पहोळाइमां तेनो दशांश, क्षित्रयना गृहनी पहोळाइमां तेनो अष्टमांश, वैश्यना गृहनी पहोळाइमां तेनो पष्टमांश अने शूद्रना गृहनी पहोळाइमां तेनो चतुर्थोश उमेरी ते ते वर्णना गृहोनी लंबाइ राखवामां आवी.

सेनापित अने ब्राह्मणना प्रथम गृहना अंतर प्रमाणे ब्राह्मण राजपुरुपनां गृह; सेनापितनुं वीजुं गृह अने क्षत्रियना प्रथम गृहोना अंतर तुल्य क्षत्रिय राजपुरुपनां गृह; सेनापितनुं त्रीजुं गृह अने वैश्यना प्रथम गृहना अन्तर प्रमाणे वैज्य राजपुरुपनां गृह अने सेनापितनुं चतुर्थ गृह तथा श्रुद्धना प्रधान गृहना अन्तर प्रमाणे शृद्ध राजपुरुपनां गृहो वंधाव्यां.

व्राह्मणथी शृद्धा स्त्रीमां जे उत्पन्न थाय तेने पारशव कहे छे एवीज रीते वीजा पण अम्ब-ष्ठ आदि वर्णसंकरोना घरनी लंबाइ तथा पहोळाइ तेना मातिपताना जे वर्ण होय तेना गृहनी लं-वाइ पहोळाइने एकत्र करी तेनाथी अर्थ प्रमाण रखावी अर्थात् ब्राह्मण अने शृद्धना गृह प्रमाणनो सरवाळो करी तेनाथी अर्थ मापनो लंबाइ पहोळाइवाळां पारशव आदिना गृहो वंधाच्यां; मापनुं वरावर ध्यान रखाव्युं हतुं कारणके शास्त्रोक्त प्रमाणथी हीन अथवा अविक मापनां गृहो अशुभ गणाय छे.

पशुओंने माटे अने सन्यासी आदि आश्रमीओंने माटे पोतानी इच्छा मुजब रमणीय गृहों वंधाव्यां कारणके तेतुं प्रमाण क्यांइ कहें लगी. आ रीते धान्य, श्रह्म अने रितना गृहों पण इच्छा मुजब तैयार कराव्यां; दरेक गृहोनी उंचाइ सो हाथनी अंदर रखावी हती कारणके एयी वधारे उंचाइ करवानी भगवान विश्वकर्मीए ना कही हती.

सेनापितगृह अने राजगृहनी पहोळाइमां सीत्तेर हाथ उमेरी तेना वे विभाग करी, तेमांना एक विभागने चोदे भागवाथी वाकी रहेल हाथ अने अंगुल प्रमाण जाळाओं तैयार करावी; अने वीजा विभागने पांत्रीशे भागवाथी वाकी रहेल हाथ अने अंगुल प्रमाणे अलिन्द वंधाव्यां; शाळानी भींत वाहेर जाळीथी घेराएली आंगणा सामेनी खडकीने अलिन्द कहे ले.

वत्रीय हाथ आदि ने ब्राह्मण आदि वर्णोनां गृहनां प्रमाण क्यां तेनी ब्राह्मां प्रमाण नीचे मुन्त रखाव्यां; ब्राह्मणना प्रधान गृहमां ब्राह्मां त्रण हायने पद्देश आंगळ, चीजा गृहमां चार हाथने त्रण आंगळ, बीजा गृहमां व्रण हायने पद्देर आंगळ, चोधा

गृहमां त्रण हाथते तेर आंगळ अने पांचमां गृहनी ज्ञाळानुं प्रमाण त्रण हाथने चार आंगळ; व्राह्मणनां वीजां गृहो तुल्य क्षत्रियनुं प्रधानग्रह, क्षत्रियना वीजा गृह तुल्य वैज्यनुं प्रधान गृह, अने वैज्यनां वीजां गृह तुल्य ग्रहनुं आ रीते सर्व प्रयानगृह वर्णना गृहोमां ज्ञाळानुं प्रमाण निर्मित कर्युः व्राह्मणना प्रधान ग्रहमां अलिन्दनुं प्रमाण त्रण हाथने ओगणीश आंगळ, वीजा गृहमां त्रण हाथने आठ आंगळ, त्रीजा ग्रहमां वे हाथने वीशा आंगळ, चोथा ग्रहमां वे हाथने अढार आंगळ अने व्राह्मणना पांचमां ग्रहमां वे हाथने वीशा आंगळ, चोथा ग्रहमां वे हाथने अढार आंगळ अने व्राह्मणना पांचमां ग्रहमां अलिन्दनुं प्रमाण वे हाथने त्रण आंगळ रखान्युं शाळाना तृतीयांश तुल्य ग्रहनी वाहेर वीथी वनावी ते वीथिमांथी केटलीएक वास्तुनी आगळना भागमां राखी तेनुं नाम "सोष्णीश " केटलीएक पाछली तरफ राखी तेनुं नाम "सापाश्रय," केटलीएक जमणी वाज्य राखी तेनुं नाम "सावप्रम्भ" अने केटलीएक वास्तुनी चोतरफ वनावी ते "सुस्थित" वास्तु कहेवाय छे, अने ए चारे ग्रुप्भ लेखाय छे.

गृहनी पहोळाइना प्रमाणने सोळे भागतां वाकी रहेल प्रमाणमां चार हाथ उमेरी तेंटली उंचाइवाळा ते ते गृहमां प्रथम खंड वंधाव्या, प्रथम खंडनी उंचाइना प्रमाणयी द्वादशांश घटाडी त्रीजा चोथा आदि खंडनी उंचाइ रखावी.

सर्वे गृहोनी भींतोतुं प्रमाण ते ते गृहोनी पहोळाइ करतां पोडगांश रखाव्युं; आ प्रमाण पाकी इंटोना घरमां राखवातुं छे. काष्ट्रना गृहमां भींत, पहोळाइ, लंबाड के चंबाइ आदिनो कांइ नियम नथी.

राजा अने सेनापितना गृहनी पहोळाश्मां तेनो अग्यारमो भाग उमेरी तेमां वीजां सत्तर नांखतां जे अंक थयो तेटला आंगळ तेना गृहद्वारनी उंचाइ अने ए उंचाश्थी अर्थद्वारनी पहोळाइ रखावी.

ब्राह्मण आदि वर्णीना गृहनी पहोळाइनो पंचमांश लइ तेटला अंगुल मानी तेमां अढार आंगळ उमेर्या. फरी एनुं अष्टमांश तेमां उमेरतां जेटला आंगळ थया तेटली ते ते गृहद्वारनी पहोळाइ अने तेथी त्रण गणी द्वारनी उंचाइ रखावी.

द्वारना चोगठांनी वन्ने भुजाओने शाखा उपर नीचेना काष्ट्रने शिरधर अने उंबराने उदु-म्बर कहे छे. द्वार जेटला हाथ उंचां बनाव्यां होय तेटला आंगळ शाखाओनी उंचाइ अने शाखा-ओथी दोढी उदुम्बरनी उंचाइ रखाबी. ए उंचाइने सातथी गुणी अँशीथी भागतां जें बाकी रह्यं तेटला आंगळ ए सर्वनी पहोळाइ राखी; स्तंभनी उंचाइने नवधी गुणी अंशीधी भागतां जे वाकी रहुं तेटली स्तंभ मूळनी उंचाइ रखावी अने तेमांधी तेतुं दशांश घटाडी स्तंभना अग्रभागनी उंचाइ निर्मित करी.

जे स्तम्भ मध्य भागमां चतुरस्न होय ते "रुचक," अष्टास्न होय ते "वज्र," पोडशास्त्र होय ते "द्विवज्रक," मध्यमां वत्रीश कोणनो होय ते "प्रलीनक" अने जे वचेथी गोळ होय ते "दृत्त" कहेवाय छे.

स्तंभना सरखा नव भाग करी सर्वथी नीचेना भागतुं वहन तैयार करान्युं, भूमिपर जेना उपर स्तंभ रहे छे तेने वहन कहे छे. वहननी उपरना एक भागमां गृह, तेथी उपरना भाग-मां कमल, अने तेनी उपरना भागमां उत्तरोष्ठ बनावी वाकीना पांच भागोने चतुरस्र आदि बना-ज्यां; शोभाने माटे जेमां अनेक प्रकारनां चित्र बनाववामां आवे छे तेने उत्तरोष्ठ कहे छे.

स्तंभ उपर ने आडुं लाकडुं राखवामां आवे छे तेने भार तुला कहे छे अने भार तुलाना उपर उपरना भागमां ने काष्ट्रो लगाववामां आवे छे तेनी "तुलोपतुल" एवी संज्ञा छे; भार तुलानी उंचाइ स्तंभनी उंचाइ तुल्य राखवामां आवी अने तुलोपतुलनी उंचाइ उत्तरोत्तर चतुर्थीश घटाडी निर्मित करी.

चारे तरफ अल्निद्वाळां, चार द्वारोधी युक्त " सर्वतोभद्र " नामे गृहो देवसमुह तथा पोताने माटे वनाव्यां.

शालानी भींतथी लड़ प्रदक्षिण क्रमवाळा अलिन्दयुक्त "नंद्यावर्त" नामे गृहो वंधाव्यां तेमां पश्चिम दिशा सिराय वाकीनी त्रणे दिशाओमां त्रण द्वार रखाव्यां.

प्रधान गृहना द्वारनुं अलिन्द अन्तर्गत अर्थात् दक्षिणोत्तर शालाधी संलग्न, वीजां ग्रुभ अलिन्द प्रदक्षिण अने एक अलिन्द छेडे रखावी दक्षिण दिशा सिवाय वाकीनी त्रण दिशा- ओमां द्वार निर्मित करी "वर्धमान" नामे गृहो वंधाव्यां; पश्चिम दिशाना अलिन्द दक्षिणोत्तर शाला संलग्न वंधावी तेथी उत्पन्न वीजा वे अलिन्द पूर्व दिशानी शालाने लगता वंधावी ते वन्नेना मध्यमां चोथो अलिन्द तैयार करावी "खास्तक" नामे गृह वंधाव्यां तेमां पूर्व दिशानो त्याग करी वाकीनी त्रणे दिशाओमां द्वारो रखाव्यां.

पूर्व पिंधमना वे अलिन्द दिसणोत्तर शालार्था अने दिसणोत्तरना वे अलिन्द पूर्व पिंधम-

शालाथी संलग्न वंधावी "रुचक" नामे गृहो तैयार कराव्यां ते गृहोमां उत्तरना द्वार अञ्चभ गणाय छे एटला माटे तेनो त्याग करी वाकीनी त्रणे दिशाओमां द्वारो रखाव्यां.

नंद्यावर्त अने वर्धमान नामनां गृहो सर्व वर्णीने माटे श्रेष्ठ कह्यां छे, स्वस्तिक अने रुचक नामनां गृहो मध्यय गणाय छे अने सर्वतोभद्र केवळ राजा अथवा राजगंत्रीने माटे ह्युभ लेखाय छे.

भगवान विश्वकर्माए कुन्तमहाराजने कहां के जे गृहमां उत्तर सिवाय वीजी दिशाओमां शाला होय ते त्रिशाल "हिरण्यनाभ "नामनुं गृह श्रुभ गणाय छे, जेमां पूर्व शिवाय वीजी त्रणे दिशाओमां शाला होय ते त्रिशाल "क्षेत्र" नामनुं गृह धन अने पुत्र आदिनी द्राद्धि करे छे, जेमां दक्षिण सिवाय वीजी त्रणे दिशाओमां शाला होय ते त्रिशाल "चुली" नामनुं गृह धननो नाश करे छे अने जेमां पश्चिम सिवायनी दिशाओमां शाला होय ते त्रिशाल "पक्षध्न" नामनुं गृह पुत्रनाश अने वैर करावे छे.

जे गृहमां पश्चिम अने दक्षिणमां वे शाला होय ते " सिद्धार्थ ", पश्चिम अने उत्तरमा शाला होय ते " यमसूर्य ", उत्तरमां अने पूर्वमा शाला होय ते " दंड ", पूर्व अने दक्षिणमां शाला होय ते " वात " पूर्व पश्चिममां वे शाला होय ते " गृहचुछी " अने जे गृहमां दक्षिणो- त्तर वे शाला होय ते द्विशाल गृहने " काचक " कहे छे. सिद्धार्थ नामना द्विशाल गृहमा धननी प्राप्ति, यमसूर्यमां गृहस्वामीनुं मृत्यु, दंडनामना द्विशाल गृहमां दंड तथा वथ, वातनामना गृहमां सदा कलह तथा उद्देग, गृह चुल्लीमां धननो नाश अने काचनामना द्विशाल गृहमां वंयुओंथी विरोध थाय छे.

उपर कहेल त्रिशाल अने द्विशाल गृहोमांथी जे शुभ लक्षणवाळां हतां ते गृहो चारे वर्णीना निवास अर्थे महाराज कुंते वंधावी तैयार कराव्यां.

ते तमाम गृहोनी अंदर वळेलां रक्ष, पोतानी मेळे उभा उभा सुकाइ गयेलां, पाक्षिओना माळावाळां, देवालय पासेनां, भूत पेतादिना निवासवाळां, क्षीरवाळां, पवनना झपाटाथी पढी गयेलां, आंवलीना अने व्हेडांनां रक्षोनो त्याग करी साग, शाळ, महुडो, सर्ज, खेर अने वियानां काष्ट उपयोगमां लीधां, तथा सरल,

पनस, श्रीपणिका, शीशम, इळदरवो, चंदन, सुरतरु, पद्माक अने टींवरण एटलां हक्षीमांथी अकेक जातिना काष्ट तमाम गृहमां वपराच्यां कारण के उपरनां वर्गा काष्ट्रो एक घरमा वापरवां अञ्चभ गणाय छे.

उत्तम माप प्रमाणे कराओ तैयार थतां तमाम गृहोनां छ प्रकारे छापरां ढंकाव्यां ते एवी रीते के केटलांएक गृहोमां काकनां पक्षने आकारे छापरांना भाग ढंकाव्यां, केटलांएक गृहोनां क मजनी पांखडीने आकारे छापरां वंधाव्यां, केंग्रलाएकने सुपडाने आकारे वधारे ढाळवाळां चोरशीवंध वंधाव्याः, केटलांएक छापरांपर नळीयां नंखाव्यां, केटलांएक छापरांपर वंधाव्या अने केटलांएक गृहोने पत्थरवडे ढंकाव्यां अथीत् घर उपरनी छातो पत्थरवंघ करावी; त्यारवाद पहेली " नंदा ", वीजी " भद्रा ", त्रीजी " जवा ", चोथी " पूर्णी ", पांचमी " दिव्या ", छटी " रक्षी ", सातमी " रत्नोट्भवा " अने आठमी " उत्पला" ए आठ मकारनी राजसभाओं तैयार करावी. ते ए रीते के प्रथम सभा करवाना क्षेत्रनी एक वाजुए चार विभाग करी ए चारे विभागना पाछा चार चार भाग करवाथी सोळ विभाग थया, ते सोळ मध्येना चार विभागनो एक भाग करी सभा आगळ एक अलिन्द वंबावी "नंदा" नामे सभा स्थापी, ते नंदानी आगळ एक भद्र मुकावी "भद्रा", चारे तरफ भद्रो मुकावी "जयदा" अने चार वाजु लघु रखावी " पूर्णा " नामे सभा वंधावी; फक्त नव भागनी " दिव्या ", ते दिव्यानी चारे तरफ एक एक भद्र मुकावी " यक्षी ", तेज दिन्यानी चारे तरफ त्रण त्रण पदनां चार भद्रो मुकावी " रत्नोद्भवा " अने रत्नोद्भवाना दरेक भद्रो आगळ अकेक प्रतिभद्र मुकावी " डत्पला " नामे सभातुं स्थापन कर्युः, ते सर्व सभाओमां स्तभो, तोरण, मदळो, नर्जु अने छाच कराध्यां, ते छाच विषे छुंबो कराबी तथा सभानी अंदर हस्ति, घोडा, सिंहनी छुज़ो-भित प्रतिमाओ अने चृत्य करती होय एवा मावनी पुनळीओ तैयार करावी तथा ते सभा आगळ रत्नो अने रपाटिकोवडे जडेली रंगभृनि वंधावी तथा ते रंगभुमि आगळ क्रीडा करवा माटे मंडप वंशाव्यो अने सभानी जमणी तरफना भद्रमां सुशोभित वेदिका करावी. छेत्रटे शहर तथा ज्ञहरनी वाहेर चार प्रकारनी वावडीओ, दश प्रकारना कृप, चार प्रकारना कुंडो तथा छ प्रकारना तळावो वंधान्यां; चार हाध पद्दोळाइवाळो " श्रीमुख", पांच हाथ पद्दोळी " वंजय," छ हाय पहोळो " प्रात. " सात हाय पहोळो " दुन्दुाभ, " आठ हाय पहोळो " मनोहर, " नव हाय परोळो "चूडापणि," दश हाथ परोळो "डिग्भद्र," अगियार हाथ परोळो " जय ", बार

हाथ पहोळो "नंद " अने तेर हाथ पहोळाइवाळो " ज्ञांकर " नामे कूप खोदाव्यो; चार हाथथी ओछी पहोळाइवाळी केटलीएक कुइओ पण खोदावी.

एक मुख अने त्रण कूट (वावडीमां खंडो आवेछ तेना उपर स्तंभो मुकी शिखरवंध देिस्यो करवामां आवेछे ते) वाळी "नन्दा," वे मुख अने छ कूटवाळी "भद्रा," त्रण मुख अने नदकूटवाळी "जया" तथा चार मुख अने वार कूटवाळी "विजया" नामे वावडी वंधावी.

अर्धचंद्राकारनुं "अर्धचंद्र", चारे तरफ वंधवाळुं "महासर", गोळ " दृत्त ", चार खूणावाळुं "चतुष्कोण ", एक भद्रवाळुं " भद्र " अने चार तरफ चार भद्रावाळुं " समुद्र" नामे तळाव वंधाच्युं; ते तळावोने क्यांइ एक अने क्यांइ वे परिघ (परिधि—तळावमां उपर पहोळा पटवाळा चोतरा जेवो आकार होय छे तें]) वंधाच्या तेमज वचेना भागमां वकस्थलो (वगला आदि पक्षीओने रहेवा माटे माटीनो वेट-टींवो) पण कराच्यां;

एक हजार दंडतुं तथा पांचसो हाथ उंची पाळवाळुं ज्येष्ठमानतुं, पांचसो दंडतुं तथा अढीसो हाथ उंची पाळवाळुं मध्यममानतुं अने अढीसो दंडतुं तथा सत्रासो हाथ उंची पाळवाळुं किनिष्टमानतुं तळाव बंधाव्युं.

"भद्र" नामे चोरसकुंड, "सुभद्र" नामे भद्रसिहतकुंड, "नन्द" नामे प्रातिभद्र सिहत कुंड अने "पिरिघ" नामे मध्य भागमां भिद्दवाळो कुंड तैयार कराच्यो ते कुंडो आठ हायथी मांडी सो हाथ पर्यन्त मापना वनाच्या तेमां चारे तरफथी उतरवा माटे चार द्वारो तैयार कराच्यां ते द्वारोमां दिशाओना भागमां गोखळाओ रखाव्या तेमज कुंडना खूणाओमां चोकीओ तथा पद्दशाळाओं वंधावी

कुंडमां रहेला भिट्ट (एक प्रकारनो थर छे ते भिट्टमां गोखलाओ आवेछे नेमां मुर्तिओ स्थापन कराय छे) विषे गंगा आदि नदीओनी प्रतिमाओ, वार सूर्यनी प्रतिमाओ तथा वीजा अनेक देवोनी प्रतिमाओ तैयार करावी; अने कुंडद्वारना परथार उपर श्रीधर नामे मंडप वंधाच्यो.

ते जगोए यथाविधि उत्तम शहर वांधी तेनुं पोताना नामथी "कुन्तलपुर " नाम राख्युं। थोडो समय व्यतीत थतां श्री कुन्त महाराजने यज्ञ करवानो विचार थयो अने तमाम ऋ-विओने तेडावी पोतानी यज्ञ करवानी इच्छा प्रदिश्चित करी। ऋषिओए पसचता पूर्वक कहुं के महा-राज! महात्मा कुंडमालथी आरंभी आज दिवस पर्यन्त यज्ञयागोनी आप रक्षा करता आच्या छो,

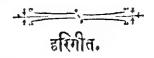
अने हजी एण आपथी तेमज आपना वंशजोयी ए उत्तम कर्मोतुं रक्षण थशे ए अमीने पूर्ण खात्री छे; आपे आवो श्रम उठाववानी आवज्यकता नथी; अमी सर्व अमारा यज्ञयागादिनां फळ आपने अपेण करीए छीए तेमज आजथी आपना वंशने "मखवान" पद प्रेमपूर्वक आपीए छीए. वीजा भले गमे तेवा यज्ञयागादि आचरशे, तो पण "मखवान" कहेवाशे निह, पण आपनो वंश याव-चन्द्र दिवाकर " मखवान् " ए रीते आजथी प्रसिद्ध थशे; परमात्मा आपनी तथा आपना वंशजोनी निरंतर दृद्धि करे एम अमो सर्व शुद्ध मनथी अने प्रसन्न चित्तथी आशीर्वाद आपीए छीए.

ऋषिमंडलनो आशीर्वाद माथे चडावी श्री कुन्त महाराज वोल्या के "अस्तु". तमारां यज्ञकर्मोमां आवता विष्ननो विनाश करवो ए अमारो परंपरानो धर्म छे ते अमो कदिपण चूकशुं नहिः शिर जतां पण ऋषिगणने पराभव थवा देशुं नहिः ए खाते निश्चित रही तमारां श्रुभ कर्मो आनंदथी कर्यो करोः महाराज कुन्तना मुखथी आवां उत्तम वचनो श्रवण करी धन्यवाद आपता अने जयजयनो पुकार करना अनेक आशीर्वादो आपी ऋषिओ पोतपोताने स्थाने विदाय थयाः राजिष कुन्ते आनंदपूर्वक इश्वरना आराधन साथे मजानुं पालन करी योग्य वये स्वर्गवास कर्योः





एकादश तरंग.



आरंभी धवल कुमारथी, चाचंगदेव सुधी सुखे, पालक थया कुन्तलपुरीना, कदि दवाया निह हुँ:खे; नृप शूर सालणदेवजी, गढ सीकरीने सर करी, सारंगधर सूधी रह्या, अमरेश! उत्तमता धरी.

महाराजा कुन्तना पुत्र राजिं धवलकुमारे पिताना स्वर्गवास पछी कुन्तलपुरना तव्तपर पाय धारण कर्यो त्यारवाद धर्म अने नीतिथी प्रजानुं पालन करी महान् यंग मेळव्यो. तेने सदा-शिव नामे कुमार थया, ते वाळवयथीज सिंहना वाळकनी पेठे वैरिरुपी करिवृन्दने विदारवानुं सा-मध्ये धरता इता. तेणे तमाम शस्त्रविद्याने साध्य करी युवावस्थामां उत्तम गुणोने मेळवी विनाना परलोक प्रयाण पछी कुन्तलपुरनी प्रजानुं शासन कर्यु, तेने धानिक नामे कुमार थया ते महा धर्म-धुरंधर हता, विता सदाशिवना स्वर्गगमन पछी कुमार धानिके राजविंनी पदवी करी ऋषिगणना संरक्षणनी साथे चारे वर्णनी चाहना मेळवी हती, तेने वळधीर नामे थया. तेणे वळ अने धैर्यथी पोताना नामने सार्थक करी पितानी गेरहाजरीमां अरि वर्गने उग्रताथी आधीन करी समग्र प्रजामां संतोप फेलाव्यो, तेने आनंदमूर्ति नामे कुमार थया; पिता चळधीरना स्वर्गवास पछी सुजोभित खेत छत्रने धारण करीने राजिं इन्दे कुन्तलपुरने अमरावतीथी अधिक समृद्धिवान वनावी अवर्णनीय वैभवोधी सुरेन्द्रने शरमान्यो हतो, तेने गुणभंडार गगन नामे कुमार थया, तेणे कान्तिथी कामदेवने लज्जित करी सुख शान्तिमां दिवसो गुजार्या, तेना अन्छ नामे कुपार थया, तेमहान् बुद्धिशाळी अने वळ-वान् हता, तेणे आग्निसमान ओजधी शत्रुक्षी तृण समूहने समूळ सळगाची विताना मृत्यु पछी कुन्तलपुरना पाटपर वेसी प्रजानी अपार प्रीति मेळवी, ते पछी तेना पुत्र राजिं इन्द्र दया अने दानथी विश्वमां विख्यात थया. तेना पुत्र अहरूचे पोताना गलंव भुज दंडथी अनेक दुरुमनोने दंड

दइ नवे खंडमां नामना मेळवी. त्यार पछी तेना पुत्र राजिं जिञ्जा कुन्तलपुरनी गादीए वेडा, तेन असमान नामे कुमार थया ते अस्त्रिचामां असमान इता अर्थात् तेना समान कोइपण नहोता, तेणे निर्मळ सुयशना निधान भरी पोताना कुमार मुलकने उत्तमरीते विद्याभ्यास कराव्योः महि-मंडलमां महान मान मेळवी असमान स्वर्गस्थ थतां राजिं सुलके कुन्तलपुरना तख्तने दीपान्युं. तेन इयास नामे पुत्र थया. धर्यना धामरुप राजिप इयासे पिता सुलकनी महायात्रा पछी कीर्तिवाळां काम करी कुंतलपुरनी गादी भोगवी, तेन मान नामे कुमार थया; तेणे राजर्पियद धारण कर्या पछी दान अने सन्मानथी विद्वान् जनोने संतुष्ट कर्या इता, तेना पुत्र राजिं इन्द्रे वाप दादाओना विरद्ने पाळी प्रजावागतुं माळी पेठे संरक्षण कर्यु, तेना पुत्र राजिं र्तन थया, तेणे सप-त्नना समुदायने पराजय आपी पोताना प्रयत्नने सफळ कर्यो इतो, तेने श्रीपत नामे कुमार थया, तेणे पोताना क्वळनी पत राखवा माटे गत पूर्वजोना गुणोतुं स्मरण करी शरणागततुं श्रेष्ठ रीते संरक्षण कर्यु, तेना पुत्र राजिं सोसना रोम रोममां क्षात्रियोने उचित वीरता विलसी रही इती, तेना कुमार राजिं सहेहो कुन्तलपुरनी गादी उपर वेसी अनेकरीते प्रजानी आवादी करी कुपार ज्ञयस्तळने जन्म आप्योः पिता महेशना मृत्यु पछी राजिं ज्ञयस्ळे शत्रुवर्गनो क्षय करी प्रजाना भय दूर कर्या, ते पछी तेना पुत्र अक्षय राजिष थया, तेणे नय तथा विनय आदि उत्तम गुणोथी कुन्तळपुरनी प्रजाने आनंद आप्यो हतो. तेना पुत्र राजर्षि भाण थया. ते वाणविद्यामां विषेश वखणाया, तेना कुमार राजिष यज्ञे केटलांएक वर्ष कुन्तलपुरनो राजवैभव भोगवी कुमार युव-नाश्चने जन्म आपी स्वर्गवास कर्योः राजपि युवनाश्व अध्वविद्यामां अद्वितीय हता, तेना पुत्र राजपि माणिके प्रमाणिकपणे प्रजाने पाळी तमाम उपाविओ टाळी हती. तेना कुमार राजपि चिट्ठल थया, तेणे प्रजापालन साथे विविध विद्याविनोदमां जींदगी गुजारी हती, तेना राजिष ज्ञान्तले शान्त चित्ते कमलाकान्तनुं आराधन करी मुक्ति मेळवी, तेना कुमार राजपि स्वराज (शिवराज) कुन्तलपुरनी गादीए वेठा, तेणे ताज धारण कर्या पछी वाजनी माफक प्रति-पक्षीरुपी पक्षीओनां प्राण हर्यो, तेने शूरतान नामे कुमार धया, ते पिना शिवराजना स्वर्गवास पछी राजा वन्या, तेना पुत्र राजिष हमीरे पितानुं पाट मेळवी वीरताथी वरीओना वृन्दने विदार्या, ते पड़ी तेना कुषार राजिष भाण गौत्राह्मणोतुं परित्राण करी विशेष वन्वाणने पात्र

थया, तेना पुत्र करण राजर्पिए मरण पर्यन्त शरणे आवेलाओतुं संरक्षण कर्युः, ते पछी तेना कुमार केशरे राजर्षिपद धारण करी कुन्तलपुरनं आधिपत्य उत्तम मकारे भोगव्युं, तेना पुत्र कुल्याण रा-जर्षिए सुयशना अश्वो दिगन्त पर्यन्त दोडान्या, ते पछी तेना कुमार राजर्पि भीमे असीम भुज-वळथी ऋषिओना यज्ञयागादि सत्कर्षनुं पष्टांश फल प्राप्त कर्युः तेना कुमार राजिपं विजये जीवित पर्यन्त क्षात्रधर्मनी धुरा वहन करी, त्यारवाद तेना पुत्र वलदेव राजिंप वन्या, देवनी अनुकम्पायी दृढ वळवाळा राजिप वळदेवे कविकोविदोनी कामनाओ पूर्ण करी हजारो आस्रितोनी हानिओ हरी हती, तेने यञ्चतंत नामे कुमारथया, तेणे पितातुं पाटपाम्या पछी पोतातुं सुयश गानार भाट चारणोने अपार वित्त आप्युं हतुं; तेना पुत्र युवनाश्च राजिंप थया तेणे पट्शास्त्रमां पारंगत क्रमार सारंगने जन्म आप्यो, कुमार सारंगे राजिपदने पामी स्वामी धर्मधी सेवकजनोने अद्वितीय सुख आप्चां, त्यारपछी तेना कुमार शिवराज राजिप थया, तेणे कुळनी मर्यादा यथास्थित निभावी, तेना पुत्र देव राजर्षिए पुण्यनी पवळ पाज वांधी निर्विघ्ने राज कर्यु, ते पछी तेना कुमार राजर्षि बळवीर थया, तेणे न्याय अन्याय रुपी क्षीरनीरने भिन्न करी इंसनी विलक्षणताने हरी हती। तेना पुत्र मूळ राजर्षिए कुळधर्म प्रमाणे कुन्तलपुरनं प्रतिपालन कर्यु, तेने अक्ष्य नामे कुमार थया, राजिष पद धारण कर्या पछी ए अक्ष्य कुमारे पापीओनो प्रलय करी, आर्यमतने अनुसरी कुमार अजीतनो जन्म थया वाद योग्य वये स्वर्गवास कर्यो; राजपि अजीते युवावस्थातुं अवलंबन करी भ्रष्ट जनोने भयभीत वनावी अनेक रीते कष्ट आपी नष्ट कर्यो अने उत्तम जनोना अन्तः-करणमां अपूर्व आनंद फोलाच्यो, तेना पुत्र माणिक राजापिए पण पिता अजीतनी पेठे सद्गुणोतुं संपादन करी प्रजासमूहमां भीति प्रसरात्री हती, तेना कुमार प्रताप राजिं महान् प्रतापी थया, तेणे बाहुवळथी आखी येदिनीने मापी, अरिगणने उथापी सर्व स्थळे कीत्तिने स्थापी हती, तेना कुमार बळवीर राजर्पिए पिता प्रतापना स्वर्गवास पछी कुन्तलपुरनो राजवैभव भोगव्यो, तेने करण नामें क्रमार थया, तेणे राजर्षिपद धर्या पछी राजनीतिथी मीति पूर्वक उत्तम काज कर्यो, तेना कुमार लख्डीर राजिए लाखोनी लक्ष्मी दानमां लुंटावी महान् कीर्ति मेळवी. ते पछी मालदेव, मूळराज अने झूरतान, सोमेश्वर, रणधीर अने रत्न राजर्षिए क्रम पूर्वक कुन्तल-पुरतुं राज भोगव्या वाद पराक्रमी पृथ्वीमल राजर्षिए राज तस्तपर पाय धारण कर्यों, तेना वैभवनी

वरावरी करी शके तेवो कोइपण ते वखते पृथ्वीपर नहोतो, तेना कुमार विजयराज वालवय व्यतीत क्यों वाद राजकाजमां निपुणता मेळवी पिता पृथ्वीमलना परलोक गमन पछी कुन्तलपुरनी गादीए वेडा, तेना क्रमार क्षेसराज थया, तेणे भेमथी हजारो मुद्राओना दान कर्यी, तेना पुत्र अक्षयराज पण दाग्चिरुपी दरियामां डूबता दीनजनोना जहाज रुप हता, तेना कुमार झूरतान म्होटा म्होटा महीपालोना मान खंडन करी मखवान कुलना मंडनमणि वन्या, तेना पुत्र हमीर क्षीरसागर समान शुभ्र यश्यी अवनिने आच्छादित करी हठीला शतुओंने हराव्या हता, तेना कुमार धरणीधरे उत्तम करणीथी धरणीतुं धणीपणुं धारी विश्वमां कीर्तिने विस्तारी; तेने धीरसेन नामे क्रमार थया, तेणे गादीपति बन्या पछी गुणवानोने पोता पासे राखी आखी जींदगी आनंदमां वितावी- देना पुत्र पुष्पस्नेने प्रजापालनुं पद धारण करी सर्व स्थळे प्रशंसनीय सुवास प्रसरावी; तेना कुमार स्िक्सिमहीपाले कुळनी परंपरा प्रमाणे वर्तन करी धरातलमां विमलयश विस्तायों, तेने पद्मसेन नामे पुत्र थया, तेणे छबने छेदी प्रचंड वाहुवळथी शत्रुओनां सब स्वाधीन कर्या. तेना पुत्र पात-लसेने वणां शत्रुओनी वात करी भातभातना वैभवो भोगन्या तेने प्रतायभानु नामे पुत्र थया, तेणे अधमरुपी उल्लंकेन भय आपी भानुसमान प्रताप धारण कर्यो, तेना कुमार कर्मासिंहे सिंहसमान कर्मधी शतुरुपी मृगसमुदायने जेर करी जयमल नामना कुमारने जन्म आप्यो. ए जयसके युक्ति प्रयुक्तिथी प्रजानां पन रंजन करी भक्तिभावयी पहामूळी मुक्ति मेळवी. तेना क्रमार यद्वाराज महान् यगस्वी थया, राजगादीए वेठा पछी ए यशराजे अर्छाकिक रीते प्रजानी प्रीति संपादन करी, तेने शूरतान नामे पुत्र थया. तेणे पोताना गुणोनुं गान करनार गुणवान लोकोने अनुल दान आप्यां, तेना कुमार हमीरिसिंहे दानवीर वनी असंख्य रंक जनोने अमीर वनाच्या हता, तेने हरपालसिंह नामे पुत्र थया, ते वालपणधीन उत्तम ख्यालतुं अवलंबन करनारा होवाथी तेण यौवनमां धर्मनी ढाल धारण करी इक्सीओने करालकष्ट आपी पायमाल कयी, तेना कुमार हर-राजे राजगादीए बेटा पछी हरहमेशां निडरपणे शत्रुओनां स्थान शुन्य करी प्रजावर्गमां प्रमोद प्र-सराच्यो तेने श्रीपति नामे सुपुत्र थयाः तेणे अतिहाय रिनधी रिनधितनी क्षति करनार सतीपतिनुं आग-

धन करी अववाधने भस्म कर्यों हतो; तेना कुमार वाघराज श्लावनीय वाव जेवी वीरताथी विश्व विख्यात थया; तेना पुत्र वैरासिंहे तख्तनशीन थया पछी दीनजनोनां दुःखोने दूर करी महान् प्रतिष्ठा मेळवी, तेने भीसरोत् नामे कुमार थया, तेणे प्रचंड सुजदंडना पराक्रमथी धरामंडलमां धाक फेलाबी हती, ए भीससेना कुमार भोजराज राजगादीए बेसी कुळनी लाज प्रमाणे उत्तम काज करी सद्गतिने पाम्या, तेना कुमार सारंगढेवे सारासारना विचारथी प्रजानो पूर्ण प्यार मे-ळच्यो हतो, तेने शिवराज नामे कुमार थया, तेणे व्यवहारमां कुशळता मेळवी कुन्तळपुरनी प्रजा-ने उत्तम रीते केळवी हती. तेना पुत्र मूळराज सत्कर्मथी कुळनो उद्धार करवायाळा थया, ए मूळराजना पुत्र माणिके पवळताथी सर्व शतुओने पोतानां सत्ता सूत्रमां परान्याः तेने रुपराज नामे कुमार थया, भूप पदवीने पाम्या पछी ए रुपराजे शीतवृपने सहन करी प्रजा पालनरुपी विमल धर्मनुं वहन कर्यु हतुं; तेने रणजीतनामे पुत्र थया, तेणे कविकोविद्योनां काज पूर्ण करी स्नेहीओना समाज साथे मुखपूर्वक राज कर्यु, तेना पुत्र भोजराज थया, तेणे अनुल ओजथी अरिओने अंध वनावी निर्विष्नतायी राजवैभवनो उपभोग कर्यो. ते पछी हपानिवि करण, करमी केशरदेव, आनंदी अजयभूपाल, दानी देवपाल पराक्रमी अक्षयपाल मतापी अमृतपाल, रणरागी रत्नपाल, दयाछ देवपाल, सद्गुणी झूरपाल, विद्या-विनोदी विजयपाल, स्रविसन्य सोमपाल, चतुर चन्द्रपाल, मस्त मानपाल, रहेरी लक्ष्मणपाल, लायक लूणपाल, लोभराहेत लाखणशी, वहादूर वळवीर, बुद्धिशाळी बळदेव, विवेकी वत्सराज, न्यायी नरभ्रमर, निलनाक्ष नेतिसिंह, करणाळ कमीसिंह, समर्थ सोमेश्वर, हिम्मती हमीर, हर्पनिधि हंसराज, वीरवर वत्सराज, माननीय मूळ-राज, लड्गधारी क्षेमराज, स्रशील शूरतान, उद्धत अक्षयराज, परोपकारी पातल-सेन, मिस प्रतापमानु, भेषेषुरंथर लखधीर, जगजाहिर जयमल, मशंसनीय पृथ्वी-राज, प्रमाणिक पुंजराज, मेधावी माणिकराज, योगवित घोवनाश्व, धनुर्धर धारंग, धर्मरक्षक धीरसेन, पंडितराज पुष्पसेन, श्रद्धाळ शहाभोज, सत्यवादी सोमेश्वर, धृत

शिरोमणि ज्ञूरतान, उदार अमृतसेन, यशनामी यज्ञावंतसेन, भाग्यशाळी श्रीमसेन रसज्ञ रत्नसेन, भयहरण भारमल, कान्यकोविद कीर्तिपाल, कार्यक्रशल केशरदेव, वाणावळी वळदेव, सर्वोत्कृष्ट संग्रामसिंह, नमन योग्य नरभ्रमर, सहृदय रतनसेन, श्रीमान् श्रीपति, शंक्तिवान् शिवराज, कामावतार करण, युद्धवीर यहाराज, अने त्यार-पछी मूळराज, सोमेश्वर, शान्तलसेन, वाघसेन, वैरिशाह, युवनाश्न, चन्द्र-पाल, मेघ गल, मूळराज, छत्रसाल, आंनदमेरु, सोमेश्वर, सारंगधर, द्रारतान, करण, रत्नसेन, हमीर, रणमलसिंह, संग्रामसिंह, धीरसेन, पुष्पसेन, पृथ्वी-मल, भारसल. पद्मसेन, यशवंतसेन, इन्द्रसेन, अजयभूपाल, वलवीर, जोध-पाल, यशपाल, मानपाल, रत्नपाल, रणधीर, सालणदेव, शेषपाल, शान्त-लसेन, लखधीर, जयमल, युवनाश्व, माणिकराज, मूळराज, अक्षयराज, अमृ-तसेन, भीमसेन, भोजराज, पातलसेन, नरभ्रमर, शीमपाल, पृथ्वीपाल, प्रतापभानु, अभयराज, मेघराज, मूळराज, शिवराज, रणमल, क्षेमराज, अक्षयराज, अमृतसेन, भीमसेन, भोजराज, भारमल, रणजीत, रूपसिंह, रुक्मांगद, राजिषे, रणधीर, धारंग, धीरसेन, पुष्पसेन, माणिकराज शूरतान, छत्रसाल, हमीर, करण, कर्मसिंह, कल्याणमल, केसरदेव, वलदेव, वैरिसाल, शान्तलसेन, संग्रामसिंह, सोमेश्वर, पृथ्वीमल. शार्ङ्गधर, सूरजभाण, पृथ्वीराज, पद्मसेन, अमृतसेन, अजयभूपाल जोध पाल, भीमसेन, लक्ष्मणसेन, रत्नसेन, विक्रमसिंह, संमरसिंह, नरभ्रमर, भारमल, करणपाल, जगन्नाथ, श्रीपतिसेन, शत्रुसाल, सोमपाल, उदय-पाल, करणपाल, रत्नपाल, धर्मागत, देवचक्र, झांझरसिंह, यज्ञेदा, युवनाश्व, यशवंतसिंह, प्रतापभानु, पातलसेन, पुप्पसेन, भीमसेन, पृथ्वीमल, धीरसेन,

माणिकराज, जयमळ, मूळराज, क्षेमराज, ळाखणसिंह, लूणकरण, लख-र्धार, पुंजराज. पृथ्वीराज, धनराज, लालणदेव, केसरदेव, करण, हरराज, हरपालिसंह, हमीर, शूरतान, सूर्यपाल, सोमेश्वर, ज्ञाहभोज, संग्रामिसंह, रोषपाल, खुमाणसिंह, इन्द्रसिंह, अमृतसेन, धरणीधर, अक्षयराज, अमृत-सेन, पद्मसेन, शाईदेव, शिशुपाल, अजयभूपाल, देवपाल, भीमपाल, यश-पाल, सोमपाल, सूर्यपाल, इन्द्रसेन, अक्षयपाल, मानपाल, रत्नपाल, केशर-देव, चन्द्रपाल, अक्षयराज, शूरतान, हमीरसिंह, हरराज, अक्षयराज, अपृतसेन, भीमसेन, पुष्पसेन, भारमल,पृथ्वीराज, युवनाश्व, रत्नपाल, मूळ-राज, साणिकराज, क्षेमराज, जयमल, लखधीर, रणमल, भोजराज, सूरज-भाण, शार्क्मधर, सुन्दरपाल, सुजाणसिंह, विजयराज, विक्रमसिंह, यशराज, दीशळदेव, आनंदमेर अने अमृतसेन ए सर्व क्रमपूर्वक कुन्तलपुरना राजाओ थया. अपृतसेनजीने पांच कुमार थया तेमां चाचंगदेवजी, वाचकदेवजी, भाणेज अने वत्सराजजी ए चार यादवना हता कुमार अमृतसेननो मालदेवजीतुं मोसाळ हतुं. पिता हस्तिनापुरमां पाटवीकुमार चाचंगदेवजी कुन्तलपुरनी गादीए वेठा, तेणे पोताना चारे भाइओने मखवान राजाओ क्षात्र-घणाज मान साथे अंगरक्षक तरीके पासेज राख्या; आगळना धर्मनी साथे बाह्य कर्म पण करता जेथी तेओनी द्वति सात्विक मधान राजस हती, परंतु अमृत-सेनजी पछीथी केवळ राजस इत्तिनान राजाओ थया जेथी मृगयानी पृथा अने अंदर अंदर कलह करवानी टेव प्रगट थइ. ए पाचे भाइओ योग्य उम्मरना थतां एक दिवस साथे सिंहनो शिकार खेलवा निकळ्या; अश्वोन हारवंध हांकी आनंदनी वातो करता अने पोतपोताना पराक्रमने प्रदर्शित करवा वारंवार भुजदंड पर नजर खेंचता जंगलमां घणे दूर जइ पहोंच्या गीच झाडीनी अंदर प्रवेश करी पांचे भाइओ जुदा जुदा विखराइ वनराजनी शोध करवा लाग्या. घोडाओनो हणहणाट सांभळी असहनताथी गंभीर गर्जना करता मद्दोन्मत्त मृगराजने कुमार माल्देवजीए

दूरथी निहाळी पोताना चारे वन्युओने एकत्र करी सन्मुख जइ सिंहने सावचेत कर्यो, मनुप्यनो अवाज काने पड़नां वनराज उन्मत्तपणे भयंकर फाळ भरी, विकाळ वदन करी अश्वो उपर धसी आव्यो, नाहरने निकटमां आवेलो निरखी पांचे भाइओए एक साथे वाण फेंक्या. वनराजनुं वक्ष:-स्थळ वींधाइ जवाधी ते जरा पाछो हट्यो तेवामां तुरतज कुमार मालदेवजीए घोडा उपरथी कुदी करमां कटार लड़ मृगराजना मस्तकपर प्रवळ प्रहार करी तेने पृथ्वीपर पाडची, मर्भस्थळ भेदाइ जवाथी पंचानन तुरतज पांण रहित थयो। राज चाचंगदेव आदि चारे वन्धुओए निकटमां आवी क्रपार मालदेवजीने कहुं के न्हाना भाइ! हवे न्यर्थ वहादुरी वताववी रहेवा दो; अमारा चार वाण एकी साथे उरःस्थलमां लागवाथी आनां पाण तो निकली चुक्यां इतां. तमारी कटारे कांइ काम कर्युं होय एम धारी फुलाइ जशोमां. विडल वन्युओनां आवां अन्याय भरेलां वचनो सांभकी महान् क्रोधावेशमां मालदेवजी वोल्या के मारी कटार ह्युं काम करे छे ते हवे पछी खबर पडरो. छती आंखे जोया छतां मारा पराक्रमने वखोडो छो तो हवे हुं जोइश तमो क्रन्तलपुरमां राज्य शी रीते करो छो ? राज चाचंगदेवजीए त्रणे सहोदर सहित अवळां वचनो उचारी न्हाना थाइ याळदेवजीना क्रोधानियां घृतनी आहुति आपी, तेज वखते वे पक्ष पड्या, एक रस्ते राजा आदि चारे भाइओ चाली नीकळ्या अने वीजी बाजु येरुसगान अडग मनवाळा कुपार मालदेवजी रवाना थया, सन्व्या समये बहेरमां आवी पोतानां मातुश्रीने मळी वडिल वन्युओनी साथे शिकारे जतां वनेली वधी हकीकर कही संभळावी, क्रोधमां ने क्रोधमां रात्री निर्गमन करी. प्रभात थतां मालदेवजी पोताना मातुश्री तथा माणसो सहित राज चाचंगदेवजीनी रजा लीधा सिवाय हस्ति-नापुर तरफ रवाना थयाः त्यां पहोंच्यावाद पोताना मामाने मळी वन्युओना पक्षपातनी वधी वात ङ्ग्यार माल्देवजीए कही संभळावी. इस्तिनापुरपतिए पृरती रीते मदद आपवानुं वचन दइ सेनाने सज्ज थवा फरमान कर्युं, अने युद्ध करवा तैयार थवा माटे दूतने कुन्तलपुर मोकली आप्यो. राज चाचंगदेवजीए इस्तिनापुरथी आवेल युद्धनुं आमंत्रण स्वीकारी पोताना मोसाल प्रसना यादवाने जाण करवा पत्र छग्वी मोकल्यो. अने सॅनिकोने संग्रामनी सामग्री सज्ज आज्ञा आपी; पोता पासे हाथी तथा घोडाओनो पुष्कळ जत्थो होवा छनां पण हिन-नापुरनी समृद्धिवान फोज साथे टक्कर छेवा विशेष वाहनोनी अपेक्षा यतां मोसाळ पक्ष-माथी मगावया माणनो मोकली आप्यां. कुमार मालदेवजीए हस्तिनापुरनी महोटी फोज साथे कुन्तलपुरने सवजे करवा युद्धयात्रा शरु करी; राज चाचंगदेवजीए पण सहायताए आवी पहें{-

चेल यादवरीन्य तथा पोताना सैनिको सहित सन्मुख प्रयाण कर्यु, गार्गनां वन्ने फोजतुं मिलन थतां लडाइ शरु थइ, भयंकर युद्धमां वने पक्षना केटलाएक शूर्त्रीरी कपाइ मुना, अन्वपर आरुढ थएला कुमार मालदेवजीए हाथीपर वेठेला वडिल वन्धुने विह्वल करवा गरतुं अनुसंधान करी म्हा-वतनुं ममस्थळ वींधी नांख्युं, म्हावत नीचे पडता हाथी भाग्यो जेयी राजाने युद्धमांथी अलग थता जोइ क्वन्तलपुरतुं सेन्य भयभीत वनी भाग्युं वाचकदेव, शिवराज तथा वत्सराज ए त्रणे स-होदरे वेगथी वाणनी वृष्टि करी हस्तिनापुरना अनेक सुभटोने संहार्या, दाराउँ यजीए महान् विष-वाळा त्रण वाणोथी त्रणे भाइओना अन्वनो अन्त करी देवल वनात्र्या अने नुरत तेओने असि-युद्धमां घायल कर्या. हाथीपरथी कूदी अश्व उपर आरुढ यह राज चाचंगदेवजी यादवर्मन्य साथे प्रतिपक्षीओंने प्रहार करवा लाग्या, मालदेवजीए वडिल वंधुना वाहन उपर वाण फेंकी वाहुवल वतान्युं. वाहन विनाना राज चाचंगदेवे मालदेवजी उपर हल्लो कर्यो, मालदेवजीए तुरतज कटार काढी विडल वन्धुना प्रहारथी वची तेनापर सिंह पेटे तराप मारी कहुं के-म्होटा भाइ! तमारा उपर प्रहार करतां मारो हाथ अचकाय छे, परंतु आ कटारने जोड ल्योग राज चाचंगदेवजी शर-माइ गया, अने पोतानी हार स्वीकारी पाछा फर्या. कुमार माल्डेवजीए कुन्तलपुर जइ विजयनां दुन्दुभि वगडावी शहेरमां पोतानी आण फेरवी. राज चाचंगदेवजी पोताना पुत्र सालणदेवजी सहित निकळी जवा तत्पर थया ते वखते मालदेवजीए नेने पूरती मदद आशी पूर्व तरफ मोक-ल्या. ते वखते पूर्व दिशामां "तुवर" जातना रजपुतो राज्य करता इता. तेओनी साथे कुमार सालणदेवे युद्ध करी "सीकरी" तुं राज्य स्वाधीन कर्यु. राज चाचंगदेवजी महान् विद्वान् हता, तेणे पोताना दीर्घदर्शी अमात्य, राज्य ज्योतिषी अने राज्यपुरोहितने वोलावी उत्तम दिवसे विधि-पूर्वक कुमार सालणदेवजीने राजगादीए वेसाडवानो निश्रय कर्यो.

राजपुरोहिते कुमार सालणदेवजीने राजाओने अत्यन्त श्रेय आपनार, सुख, यश, धन, आयुष्य अने संताननी दृद्धि करनार सर्वोकृष्ट प्रथम पुष्य रनान कराववा पोतानो विचार जाहेर कर्यो, कारणके प्रजारुपी दृक्षनुं मूळ राजा छे, राजाना अशुभथी प्रजानुं अशुभ अने राजाना शुभथी प्रजानुं शुभ थाय छे जेथी राजाना शुभ मादे यत्न करवो जोहए. आम धारी राज्यमां कोइ जातनो उत्पात थतां, महामारी आदि उपद्रव थनां, गृहण वखते, धूम्रकेतुनो उदय थतां तथा ग्रह्युद्ध थतां राज्यनी अने पुत्रनी इच्छावाळा राजाए पोषमासनी पूर्णिमा अने पुष्य

नक्षत्रमां राज्यनी लगाम हाथमां लेता पहेलां करवा लायक पुष्यस्तान कराववा तमामे निश्चय कर्यो.

श्लोष्म, वहेडां, सकंटक, कट अने तिक्त हसोधी रहित, उल्लक तथा गीध आदि अशुभ पक्षीओथी राहित नविन द्वक्ष, गुल्म, बङ्घी अने लताओना विस्तारथी वींटायेल, निरुपद्रव, कोमल पत्रो तेमज रसभरित मिष्टफळवाळां दृक्षोधी युक्त वनमां, अयवा कुकुट, जीव, जीवक, शुक्र, मयूर, शतपत्र, चाप, हारीत, क्रकर, चकोर, कपिंजल, वंजुल, पारावत आदि पक्षीओना मधुर शब्दोथी मनोहर अने पुष्पोना रसपानथी मदोन्मत्त थएला भ्रमरो तेमज कोकिल आदि पक्षीओथी शन्दायमान वननी समीपे अथवा क्षेत्र अर्थात् पुण्यस्थानमां रहेला घरनी मध्ये, अथवा नदीरुपी नारीओना अति मनोहर जलपक्षीओना नखक्षातथी युक्त नेत्र अने मनने आनंद आपनार तीररुपी जवन स्थलमां; अथवा कारंडव, कुरर अने सारसरुपी गवैया जेनी पासे गायन करे छे, उदता इंसरुपी जेना उपर छत्र छे तेमज प्रफुल्लित नीलकपलो जेनां नेत्र छे एवा इन्द्रनी उपमाने धारण करनार सरोवरना किनारा उपर; अथवा प्रफुल्लित कमलरूप मुखवाळी, हंसना मधुर शन्दो-रुप, वार्तालापवाळी अने उन्नत कमलनी कलिकाओरूप कुचवाळी पुष्करिणी रुपी वैदया होय त्यां; अथवा ज्यां धेतुना रोमंथना फीण पड्यां होय, तेतुं छाण अने खरीनां चिद्र होय अने न्हाना न्हाना वाछडाओं आनंद पूर्वक कूदता हुंकार शद्ध करता होय एवा गोष्ठ अर्थात् गायोना स्थानमां अथवा ज्यां कुशळता पूर्वेक पहोंचेळां तेमज रत्नोथी भरेळां वहाणोनी भीड मची रही होय अने जेनो आसपासनो भाग वहु घाटां वेतस हक्षोना मूळमां वेठेला जलजंतु तेमज श्वेत पक्षीओथी चित्रित होय एवा समुद्रना किनारा उपर; अथवा ज्यां हरिणी सिंहनो तिरस्कार करे छतां सिंह क्रोध न करे एवा क्षामाथी भरेला पक्षी अने मृग शावकोनां अभयरुप मुनिओना आश्रमोगां; अथवा काञ्ची कलाप, नूपुर अने सघन जवनना धारण करवाथी मंद गतियुक्त चरणोवाळी, मृगनयनी अने कोकि-लाना ग्रह्मसमान मधुर वचनदाळी स्त्रीओधी सुज्ञोभित तेमज लक्ष्मीयुक्त गृहमां; अथवा पवित्र देवालय, तीर्थ अने मनोहर स्थानमां; अथवा पूर्व अने उत्तरनी तरफ प्लव अर्थात् निम्न तेमज जेमां जळ दक्षिण तरफ व्हेतुं होय एवी भूमिमां; अथवा राख, कोयला, अस्थि, क्षार, तुप, केश, टींबा टेकरा, कर्कटा-वास, ज्याहुडी तेमज मृषका दर अने सर्पनी राफडीओ रहिने भृषिमां अने जे भृषि घन अर्थात अन्तःसार, सुगन्धगुक्त, स्निग्ध, मधुर अने सम होय त्यां पुष्यस्नान बराय छे.

उपर कहेल पुष्यस्नान करवानां स्थानोमांथी उत्तमोत्तम राज्यमहेलमां राजिपं सालण-

देवजीने पुष्यस्तान कराववा तमाम तैयारीओ करवा मांडी; राज्य ज्योतिपी, राज्यमंत्री अने राज्य पुरोहित ए त्रणेए रात्रीनी वखते नगर वाहरे इज्ञान कोणमां विल आप्युं, पुरोहिते लाज, अक्षत, दिध अने पुष्पोधी पिवत्रपणे नमृतापूर्वक देवो विगरेने नीचेना मंत्रधी आमंत्रण कर्युं, "आगच्छन्तु सुराः सर्वे, येऽत्र पूजाभिलापिणः । दिशोनागाद्विजाश्चेव, येचान्येऽप्यंशभागिनः "

आ रीते आवाहन करी पुरोहिते सर्वे देवोने विज्ञप्ति करी के "आप सर्व प्रातःकाळनी पूजा ग्रहण करी राजा कामिकने कल्याण आपी खुर्आधी पधारजो, आवाहित देवोतुं पूजन करी उपर कहेल त्रणे जणे शुभाशुभ स्वप्न जांवाने माटे त्यांज रात्री निर्णमन कर्यु;

वीजे दिवस प्रभातमां विल स्थाने जइ यथायोग्य सामग्री भेळी करी; उक्त स्थानमां मंडल रची अनेक समुद्रो सिहत सूमि अने ए भूमिमां अनेक प्रकारना स्थानोनी कल्पना करी; फरी पुरोहिते यथास्थान नाग, यक्ष, देवता, पितृ, गन्धर्व, अप्सरा, मृनि अने सिद्धनुं तेमज नक्षत्रो अने ग्रहमात्काओं सिहत रुद्ध, स्कन्द, विष्णु, विशाख, लोकपाल अने इन्द्राणी आदि देवांगनाओं स्थापन कर्युं; मनोहर अने सुगन्ध युक्त अनेक प्रकारना रंगोथी ए सर्वनां स्वरुप बनावी गन्ध, माल्य अने अनुलेपनथी तेमज मोदक आदि अनेक प्रकारनां भक्ष्य, फल, मूल, मांस जातजातनां उक्तम सुरा, दुग्ध अने आसव आदि पानथी यथाक्रम पूजन कर्युं.

मांस, भात अने मद्यथी पिशाच, दैत्य अने दानवोनुं अभ्यंजन अर्थात् शरीरे लेपन करवा लायक तिले तुं तैल आदि, अंगन, तिल, मांस अने भातथी पितृओ तुं साम, यजुः अने ऋग्वेदथी तेमज गंध, धूप अने पुष्पमालाओथी मुनिओ तुंः श्लेपकवर्ण अर्थात् जेमां वहु रंगोनो योग न होय एवा पदार्थोथी तेमज घृत, मय अने खांडथी नागो तुः धूप, घृननी आहुति, माला, रत्न, स्तुति अने प्रणामोथी देवताओ तुं, सुन्दर सुगन्धयुक्त गंध अने मालाओथी गन्धव तेमज अप्सराओ तुं, अने बाकी रहेला देवताओ तुं सर्व वर्णना विले ओथी पूजन कर्युं तथा मौलि, वस्न, ध्वज, भूषण अने यहो पवीत मंडलमां स्थापेल सर्व देवताओ ने चढा च्यां, अने त्यारवाद ग्रहपूजा करी.

मंहलना पश्चिम अने दक्षिण भागमां वेदी वनावी तेना उपर अग्निनुं स्थापन कर्युं, सर्व सामग्री एकठी करी लांवा तथा गर्भ रहित क्रज्ञ पण त्यां लावी राख्याः हाज, घृत, अक्षत, दिंघ, मद्य, श्वेत सर्पप, गन्य, पुष्प घूप, गोरोचन, अंजन, तिल, चालती ऋनुमां उत्पन्न धयेलां मीटां फळ अने घृत सिहत खीरयी भरेलां सकोरां ए सर्वधी पुण्य स्नाननी पिश्चिम वेदीमां पूजन कर्यु, ए वेदीने चारे खूणे रत्नजिंडित्र कलकोने केंटे द्रढ श्वेत स्वृत्र वींटी अंदर जल भरी क्षीरप्रक्षना कोमल पर्ण तथा श्रीफळयी ढांकी तेमां मालकांकणा, त्रायमाण, हरडे, अरराजीता, जीना, विश्वेश्वरी, पाठा, समंगा, विजया, सहा, सहदेवी, पूर्णकोशा, शतावरी, अरिष्ठिका, शिवा अने भद्रा ए सर्व औषिओं तेमज ब्राह्मी, क्षेमा, अजा, सर्व प्रकारनां वीज, कांचनी, अक्षत, पुष्प आदि मांगलिक वस्नु जेटली मळे तेटली सर्वेापि, तमाम मद्यर लवण आदि रस, रत्न, सुगन्ध द्रव्य, विल्व, विकंकत प्रक्षतुं फळ, उत्तम नामनी वनस्पतिओं जेवी के जयापुत्र, जीवा, पुनर्नवा इत्यादि औषि, सुत्रणी, गोरोचन, श्वेत सर्पप, अने दुर्वी आदि मंगल वस्तुओं नांखी स्थापन कर्या. पुष्य नक्षत्रपर आवेल चंद्रमा तथा ग्रुम मुहूर्त जोइ उत्तम लक्षणोयुक्त दृद्ध थइ मृत्यु पामेल वळदनुं चर्म लड्ड प्रथम वेदीपर विछान्युं अने ते चर्मनी ग्रीवा पूर्व तरफ राखी तेना उपर योध हृपनुं लाल रंगनुं अखंडित चर्म, तेना उपर सिंहनुं चर्म अने तेना उपर न्याव्रनुं चर्म विछान्थुं.

सोतुं, चांदी, त्रांबु अने गुलर आदि क्षीर दृक्षना काष्टतुं भद्रासन थाय छे; तेमज असन, स्पंदन, चंदन, देवदारु, हरिद्र, तिन्दुकी, ज्ञाल, काइमरी, अंजन, पद्मक, ज्ञाक अने सीसम ए दृक्षोतुं काष्ट आसन वनाववा माटे ग्रुभ गणाय छे;

वीजकी, जळ, पवन अथवा हाथीओए पाडेलां मधपुडा अने पक्षीओना माळावाळां, चेत्य, स्मशानभूमि अने मार्गमां डगेलां, डभा डभा मुकाइ गयेलां, जेना उपर लताओ लपटी रही होय ते कांटाओधीयुक्त तेमज महा नदीओना संगम उपर तथा देवमंदिरीमां डगेलां अने जे काप्या पछी पश्चिम अथवा दक्षिण तरफ पडे ते हक्षो आसन वनाववामां अग्रुभ गणाय छे; आ अश्चभ हक्षोना काष्ट्रथी वनावेल आसन उपर वेसवाथी कुळनो विनाश, रोगनो भय, धननो व्यय, कल्ड अने अनेक जातना अनर्थ धाय छे.

जो काष्ट प्रथमथीज कापेछं होय तो आसन बनावता पहेलां तेनी परीक्षा करवी, ए काष्ट्र उपर कोइ वाळक चढे तो ते शुभ समजबं अने ए काष्ट्रथी बनाबेल आमन उपर बेमवार्था पुत्र अने पशुओनी प्राप्ति धाय छे. आसन वनाववाना आरंभमां श्वेत पुष्प, मदोन्मत्त हाथी, दिध, अक्षत, पूर्ण कलश, रत्न अने दुर्वी आदि मंगल द्रव्य नजरे चडे तो ते शुभ गणाय छे.

श्रीपणीं दृक्षना काष्टुनुं वनावेल आसन धन आपनार थाय छे, असनना काष्टुनुं वनावेल आसन रोग हरे छे; देंशुरणीना कण्छुनुं वनावेल आसन धन दे छे; केवल सीसमना काष्टुनुं वनावेल आसन शत्रुओं हो; शाल अने सागना काष्टुनुं वनावेल आसन शत्रुओं विनाश करी धर्म, यश अने दीर्घ आयुष्य औं छे; शाल अने सागना काष्टुनुं वनावेल आसन कल्याणकारी थाय छे; चंदनना काष्टुनुं आसन वनावी हेने सुवर्णथी मही तेमां अनेक प्रकारनां रत्न जडी ते उपर वेसनार राजानुं देवताओ पण पूजन करे छे.

टेंसुरणी अने सीसमनी साथे वीजं काष्ट मिलावी वनावेल आसन अग्रुभ गणाय छे, केवळ टेंसुरणीना अथवा केवळ सीसमना काष्ट्रयी आसन वनाववां; ए रीते आयन वनाववामां श्रीपणीं, देवदार अने आसनना काष्ट्रनी साथे पण बीजं काष्ट्र न मिलाववं; साग अने सालना काष्ट्रने मिलावी आसन वनाववा इच्छा थाय तो ते वेमांथी एकनाज काष्ट्रनं आसन वनाववं शुभ अने उत्तम गणाय छे. एज रीते हरिद्र अने कदंव दक्षना काष्ट्रने मिलावी आसन वनावा इच्छा थाय तो ते वेमांथी एकनाज काष्ट्रनं वनावेल आसन श्रेयस्कर थाय छे, एकला स्पंदनना काष्ट्रनं वनावेल आसन अग्रुभ गणाय छे अने तेना पर वेसनार विनाश पामे छे, ए रीते आम्र दक्षना काष्ट्रनं वनावेल आसन पण वेसनारनो प्राण हरे छे; असन दक्षना काष्ट्रनी साथे अन्य दक्षनं काष्ट्र मिलावी वनावेल आसन तुरतज हानिकारक थाय छे.

उपर कहेल वृक्षोना काष्टमां हाथीदांतनो योग होय तो शुभ गणाय छे एटला माटे उत्तम हाथी दांतना वेळ अने बूटा काष्टमां जडी आसनने अलंकृत करवं.

हाथीदांतना यूळमां जेटलो फेलावो होय तेथी वमणो मूळ तरफनो भाग छोडी शेप दांत काममां लेवो, अनूपदेश (जलपाय) ना हाथीदांतनो एथीं पण अधिक भाग छोडवो अने पर्वतमां फरनार हाथीओना दांतमां मूळना फेलावानी द्विगुणताथी कांड्क न्यून भाग छोडी वाकीनो दांत उपयोगमां लेवो.

हाथीनो दांत कापती वखते तेमां विल्वहस, वर्धमान, छत्र, ध्वन अथवा चामरना आका-रतुं चिह्न देखाय तो ते आरोग्य, विजय, धन, दृद्धि अने सुखदायक थाय छे; शस्त्रना आकारतुं चिह्न होय तो युद्धमां जय, नद्यावर्त नामक प्रासादना आमारतुं चिह्न होय तो नष्ट थयेल राज्यनी फरी माप्ति; लोष्टना आकारतुं चिह्न होय तो पहेलां माप्त थएल अने पाछा हाथथी छूटी गयेल देशनी संपाप्ति; स्त्रीना आकारतुं चिह्न होय तो घोडाओनो विनाश; भृंगारना आकारतुं चिह्न होय तो पुत्रनी उत्पत्ति; कलशना आकारतुं चिह्न होय तो निधिनो छाभ अने दंडना आकारतुं चिह्न होय तो यात्रामां विद्य थाय छे, तेमज कुकलास, किप अने सर्पना आकारतुं चिह्न होय तो दुर्भिस अने व्याधिपूर्वक शत्रुने वश थतुं पडे छे; गीध, उल्लक, काक अने अयेनना आकारतुं चिह्न होय तो मतुष्योमां मरकीनो उपद्रव धाय छे, अने पाश अथवा कवन्धना आकारतुं चिह्न होय तो राजातुं मृत्यु थाय छे.

कापती वखते हाथीना दांतथी रुधिर टपके तो मनुष्यो उपर आपत्ति आवे छे. छेदनुं स्थान कृष्ण वर्ण, रुक्ष अने दुर्गन्धयुक्त होय तो ते अग्रुभ गणाय छे.

राजा माटे उत्तम सिंहासन साठ आंगळतुं, मध्यम सिंहासन पचाश आंगळतुं अने किनिष्ठ सिंहासन चाळीश आंगळतुं करतुं, परंतु तेनी लंबाइथी पहोळाइमां एक दशांश कि ओछुं करतुं अथवा लंबाइथी पहोळाइमां एक अष्टमांश कि ओछुं करतुं अने तेवा सिंहासनोनी लंबाइना अर्थ भागनी किंचाइ करवी जोइए.

सिंहासननी पहोळाइना सात भाग करवा अने ते सात भागोमांथी त्रण भागोनुं भद्र करवुं, बच्चे भागोना कोण करवा. अथवा सिंहासननी पहोळाडना पांच भाग करवा, ते पांच भागोमाथी वे भागोनुं भद्र बनाववुं अने दोढ दोढ भागना कोण राखवा, एवा सिंहासनना उदयना छाजी (८६) भागो करवा तेमांथी आठ भागोनुं पीठ अथवा जाडंचे। करी पांच भागोनी कणी करवी तथा सात भागोनी ग्रासपट्टी, अगियार भागोनो गजधर, नव भागोनो अव्यथर, सात भागोनो नरथर, चौद भागोनी वेदी, छ भागोनुं छाद्य अने पंदर भागोनुं कक्षासन अथवा कठेडो करवी; एवा सिंहासनने चारे स्तंभो करवा तेने तोरण करवुं, उंचा प्रकारना रत्नो जडवां, राजाओने निय आ रीतनुं ज्येष्टमाननुं सिंहासन बनाववुं.

जे सिंहासनने गजधर, सिंहथर, नरथर अने कञ्चासन होय एवं सिंहासन कीर्तिनी हुद्धि करे छे;

त्रीजा प्रकारनुं मिहासन नरधर वेदी, छाद्य, छुखामन अने नोरण महिन वनावनुं; चोधा प्रकारनां सिंहासनमां प्रधम कथा प्रमाणेज पीट, नेना उपर कुंभोनो धर, ते उपर कल्डगोनो थर, ते उपर कपोतालीनो धर अने तेना उपर छात्र वनात्रदुं; ए " उत्तुंग " नामनुं सिंहासन कहे-वाय छे. पांचमा प्रकारना सिंहासनमां पीठ, गजधर, सिंहथर, त्रेदिका अने छात्र होय तो तेनुं नाम " सुयश " छे तेमज छटा प्रकारनुं सिंहासन गजधर, मात्रिकाथर, त्रेदिका, आसन अने

छाद्ययुक्त होय तो तेनुं नाम " दीपचित्र " कहेवाय छे.

पूर्वोक्त आसनोमांथी उत्तमोत्तम मुवर्णथी महेल तथा रत्नोथी जडेल चंदन काष्ठना सिंहा-सननी वच्चे सुवर्ण राखी तेना उपर प्रसन्न चित्तपूर्वक मंत्री, आप्त मनुज्यो, पुरोहित ज्योतिपी अने मांगलिक नामवाळा नगरना लोकोथी वींटाएल राज सालणदेवजीन वेसाड्या, वंदीजनो विरद वोलवा लाग्या, नगरना लोक अने ब्राह्मणो उंचे स्वरे पुण्याहवाचन अने वेदना उचार करवा लाग्या. मृदंग, शंख अने तुर्थ आदि मंगलवाद्यो वागवा लाग्यां.

अभिपेक माटे आठ, अठ्यावीश अने एकसोआठ कलश स्थापन करवानो सामान्य विधि शास्त्रमां कहेल छे तथी अधिक कलशोनुं स्थापन कर्याथी अधिक ग्रुभ फळ मात्ते थाय छे. एटला माटे राजिष कामिकना अभिषेक अर्थे वसें सोळ कलशोनुं स्थापन कर्यु हुनुं.

निवन वस्त्रनां नव भाग करतां खूणाना चार भागमां देवता, पाद्यांत अने दशांतना वे भागमां मनुष्य अने मध्यना त्रण भागमां राक्षसनो वास होय छे; वस्त्रना मूळने पाद्यांत अने अग्र-भागने दशांत कहे छे.

निवन वस्न, रयाही, छाण अथवा पंकथी लिप्त थाय, कपाइ जाय, वळी जाय, अथवा फाटी जाय तो अति अश्चम फळ आपे छे; पुरातन वस्ननी उपर मुजव दशा थाय तो थोडं अशु- भ अने अति पुराणा वस्ननी उपर मुजव दशा थाय तो घणुंज थोडं अशुभ फळ आपे छे.

वस्त्रना राक्षस भागमां छेद आदि होय तो तेनो पहेरनार रोग अथवा मृत्यु पामे छे, मनुष्य भागमां छेद आदि होय तो पहेरनारने कान्ति तथा पुत्र प्राप्ति थाय छे, देवताओना भागमां
छेद आदि होय तो विलासनी दृद्धि थाय छे, सर्व भागने छेडे छेद आदि होय तो तेनुं फळ अनिष्ट समजवं.

वस्नना देव भागमां कंकपक्षी, देडकुं, उल्लक, कपोत, काक, मांसभक्षक गीध आदि पक्षी, जंबुक, गर्दभ, उंट अने सर्पना आकारनो छेद होय तो तेना पहेरनारने मृत्यु ुँसमान भय आपे छे, एवा छेद वीजा भागमां होय तो शुंज कहेवुं.

वस्त्रना राक्षस भागमां छत्र, ध्वज, स्वस्तिक, वर्धमान, विल्व हुस, कल्रश, कमल अने तोरण आदिना आकारनो छेद होय तो तेना पहेरनारने तुरत लक्ष्मी प्राप्त थाय छे, जो एवा छेद वीजा भागोमां होय तो तो शुंज कहेवुं.

निवन वस्त अश्विनी नक्षत्रमां पहेरवाथी घणां वस्तो मळे छे, भरणी नक्षत्रमां पहेरवाथी वस्तोनी हानि थाय छे; कृतिकामां पहेरवाथी वस्तो वळी जाय छे, रोहिणी नक्षत्रमां पहेरवाथी धन प्राप्ति धाय छे, ग्रगिरमां पहेरवाथी दस्त्रने म्पक्रनो भय रहे छे, आद्रीमां निवन वस्त्र पहेरवाथी मृत्युज थाय छे, पुनर्वस्रमां धनगाप्ति अने पुण्यमां धनलाभ थाय छे, अश्लेष्टामां पहेरवाथी चस्त्र नष्ट यह जाय छे, मयामां पहेरवाथी मृत्यु थाय छे, पूर्वा फालगुनीमां पहेरवाथी राजाथी भय धाय छे, उत्तरा फालगुनीमां पहेरवाथी धन मळे छे, हस्त नक्षत्रमां निवन वस्त्र धारण करवाथी कार्य सिद्ध थाय छे, चित्रामां पहेरवाथी श्रुभनी प्राप्ति थाय छे, स्वाित नक्षत्रमां पहेरवाथी उत्तम भोजन मळे छे, विज्ञास्तामां पहेरवाथी वस्त्रनो क्षय थाय छे, मूळ नक्षत्रमां पहेरवाथी नित्र समाग्तम धाय छे, च्वीपादामां पहेरवाथी वस्त्रनो क्षय थाय छे, च्वत्रपादामां पहेरवाथी मिष्ट भोजन मळे छे, अवण नक्षत्रमां पहेरवाथी नेत्ररोग थाय छे, धनिष्ठामां पहेरवाथी अन्ननो लाभ थाय छे, श्वतिभिपक्षमां पहेरवाथी विपनो भय रहे छे, पूर्वी भाद्रपदामां पहेरवाथी जळथी भय थाय छे, एत्तिभपक्षमां पहेरवाथी विपनो भय रहे छे, पूर्वी भाद्रपदामां पहेरवाथी जळथी भय थाय छे, एत्तरा भाद्रपदामां पहेरवाथी पुत्रमान्ति थाय छे अने रेवती नक्षत्रमां जे पुरुप निवन वस्त्र धारण करे तेने रत्ननो लाभ थाय छे.

ब्राह्मणनी आज्ञाथी खराव नक्षत्रमां ५ण निवन वस्त्र धारण करवाथी शुभ फळ मळे छे, राजाए आपेल अने विवाहमां मळेल वस्त्र खराव नक्षत्रमां पहेरवाथी पण शुभ फळ आपे छे.

पुरोहिते उपर मुजव विचार करी उत्तम लक्षणयुक्त नविन वस्त्रो उत्तम नक्षत्रमां राजिपं सालणदेवजीने धारण कराव्यां.

राजानो मुकुट मध्य भागमां आठ आंगळ विस्तीर्ण श्रुभ गणाय छे, राजानी मुख्य राणीनो मुकुट मध्य भागमा सात आंगळ विस्तीर्ण अने युवराजनो मुकुट मध्य भागमां छ आंगळ विस्तीर्ण करवो जोइए; सेनापितनो मुकुट चार आंगळ विस्तीर्ण अने प्रमाद्यट अर्थात् राजा प्रमन्न यह कोइ पोताना सेवक आदिने मुकुट आप ते मध्यभागमां वे अंगुळ विस्तीर्ण बनावनो. सर्व मुकुट तेनी विस्तीर्णताथी वमणा लांवा करवा जोड्ए, जेम राजानो मुकुट मध्यभागमां आट अंगुल विस्तीर्ण कहेल छे तो ते सोळ आंगळ लांवो वनाववो अने मध्यभागना प्रमाणधी अर्घ वेड वाज चोडो राखवो। जेम राजानो मुकुट मध्यभागमां आट अंगुल चोडो कहेल छे तेम ते मध्यभागनी वन्ने वाजुए चार चार आंगळ चोडो करवो जोड्ए। उपरना सर्व मुकुट क्षुड मुवर्णना वनाववाथी कल्याणनी टुद्धि थाय छे;

राजानो मुकुट पांच शिखाओथी युक्त, राणी अने युवराजनो मुकुट त्रण शिखाओथी युक्त, सेनापतिनो मुकुट एक शिखायुक्त अने प्रसाटपट्ट शिखा रहित वनाववी अर्थात्एमां एकपण शिखा न राखवी.

मुक्कट घडती वखते तेना मध्यमां जो छिद्र पडे तो राजानो अने राज्यनो विनाश थायछे, मध्यमां फाटेला मुक्कटने तजी देवो तेमज मध्यना पार्श्व भागमां फाटेल होयतो गज्यमां विघन उत्पन्न थायछे माटे तेनो पण त्याग करवो.

राजिं सालणदेवजीने अगाउथी वनावी राखेल उत्तम लक्षणयुक्त सुवर्णनो पांच शिखा-वाळो मुक्कट पुरोहिते धारण कराव्यो।

वज्र, इन्द्रनील, मरकत, करेकतन, पद्मराग, रुधिर, वैदूर्य, पुलक, विमलक, राजमणि, स्फाटिक, चन्द्रकान्त, सौगन्धिक, गोमेदक, शंख, महानील, पुष्पराज, ब्रह्ममणि, ज्योतिरस, रस्यक, मोती अने प्रवाल ए सर्व रत्न कहेवाय छे.

वेणा नदीने किनारे शुद्ध अर्थात् श्वेतरंगना, कोशल देशमां शिरीपना पुष्प समान लीला रंगना, सुराष्ट्र देशमां आताम्र रंगना, सुपरिक देशमां कृष्णवर्ण, हिमालय पर्वतमां आताम्र, मातंग देशमां वल्लना पुष्प समान थोडा पांड्रर रंगना, कलिंग देशमां पीळा रंगना अने पौड़ देशमां श्याम वर्णना हीरा उत्पन्न थायले.

जे हीरा पद्कोण अने श्वेतवर्ण होय तेना देवता इन्द्र, जे सर्पना मुखने आकारे कृष्ण-वर्ण होय तेना देवता यम, जे कदलीकांडना समान अर्थात् लीला अने पीळा मिश्रित रंगना गमे ते आकारना होय तेना देवता विष्णु, जे स्त्रीना गुह्यांगने आकारे कर्णिकारना पुष्प समान पीत-वर्ण होय तेना देवता वरुण, जे सिंगोडाने आकारे वाघना नेत्र समान वर्णना होय तेना देवता अग्नि अने जे जवने आकारे अज्ञोकना पुष्प समान रक्तवर्ण होय तेना देवता वायु होयछे. नदी आदिनो प्रवाह, खाण अने प्रकीर्ण अर्थात् कोइ कोइ सूमि उपर विखराएल ए त्रण स्थानमां हीरा मळेले.

रक्तवर्ण अने पितवर्णना हीरा क्षत्रीओने, शुकलवर्णना हीरा ब्राह्मणाने, शिरीपना पुष्प समान लीलावर्णना वैद्योने अने खर्क समान नीलवर्णना हीरा शुद्रोने माटे शुभ गणाय छे.

पुत्रनी इच्छावाळी स्त्रीओए हीरो धारण करवो नाहि, पण किंद इच्छा थायतो शृंगाटक, त्रिपुट, धान्यक अने श्रोणीना आकारनो हीरो तेओने माटे शुभ गणाय छे.

अग्रुभ लक्षणवाळो हीरो धारण करनार पुरुवना वंद्य, अैश्वर्य तथा आयुपनो क्षय करेछे अने ग्रुभ लक्षणवाळो हीरो राजाओने विद्युत्, विप अने. शत्रुओना भयथी निष्टक्त करे छे.

हाथी, सर्प, छीप, शंख, दादळां, वांस, मत्स्य, अने स्कर ए सर्वथी मोती उत्पन्न थाय छे; परंतु ए सर्वमां छीपना मोती घणां अने उत्तम थाय छे.

सिंहलद्वीप, पारलौकिक देश, सौराष्ट्र देश, ताम्रपर्ण नदी, पारशव देश, काँवेर देश, पांड्यवाटक देश, अने हिमवान पर्वत ए आठ स्थान मोती उत्पन्न थवाना आकर छे.

सिंहलद्वीपमां उत्पन्न थयेलां मोती घणा आकारना, स्निग्य, हंस तुल्य शुक्लवर्ण अने स्थूल होय छे, ताझपणीं नदीनां मोती धोडां घणां ताझ, खेत अने निर्मल होय छे; पारलौकिक देशनां मोती काळां, खेत अने पीळां तेमज कंकरयुक्त तथा विषम होय छे; साराप्ट देशनां मोती निह रहोटां के निह न्हानां, नवनीत तुल्य खेत रंगना होय छे; पारशव देशनां मोती तेमदार, खेतवर्ण, वजनदार अने म्होटां उत्तम गुणयुक्त होय छे; हिमवान पर्वतनां मोती हलकां, जर्भर दिववर्ण अने वे आकारनां होय छे, कांदेर देशनां मोती विषम, कृष्णवर्ण, खेत, हलकां अने तेमदार होय छे; तेमज पांड्यवाट देशमा उत्पन्न थयेलां मोती निम्च फळने आकारे त्रण पुटयुक्त, धान्यक समान अने चूर्ण होय छे.

अतसीना पुष्प समान ज्यामवर्ण मोतीना देव विष्णु, चन्द्राकार मोतीना देव इन्द्र, हरि-ताल तुल्य वर्णना मोतीना देव वरणः कृष्णवर्ण मोतीना देव यम, पाकेन्य दाडियना दाणा तुल्य अथवा गुंजा तुल्य ताम्रवर्ण मोतीना देव वायः, तेमज निर्मूम अग्नि अथवा कमन्य पुष्प ममान जेनी मभा होय ते मोतीना देव अग्नि होय छे.

पाच रिततो एक मामो, सोळ मामानो एक कर्प अने चार कर्पनो एक पळ थाय छ,

पलना दशमा भागने धरण कहे छे.

जो सारां पाणीवाळां तेर मोती तोलमां एक धरण थाय तो तेनुं मूल्य त्रणसो पवीश रुपिआ, सोळ मोती एक धरणमां चडे तो तेनुं मूल्य वसो रुपिआ, वीश मोती एक धरणमां चडे तो तेनुं मूल्य एक सो सीचेर रुपिआ, पवीश मोती एक धरण भार थाय तो तेनुं मूल्य एकसो त्रीश रुपिआ, त्रीश मोती एक धरण भार थाय तो तेनुं मूल्य पालीश मोती एक धरण भार थाय तो तेनुं मूल्य चाळीश रुपिआ, अंशी मोती एक धरण भार थाय तो तेनुं मूल्य चाळीश रुपिआ, अंशी मोती एक धरण भार थाय तो तेनी किम्मत त्रीश रुपिआ, सो मोती एक धरण भार थाय तो तेनुं मूल्य पचीश रुपिआ, वसो मोती एक धरण भार थाय तो तेनी किम्मत वार रुपिआ, त्रणसो मोती एक धरण भार थाय तो तेनी किम्मत वार रुपिआ, त्रणसो मोती एक धरण भार थाय तो तेनी किम्मत छ रुपिआ, अने चारसों मोती एक धरण भार थाय तो तेनुं मूल्य पांच रुपिआ अने एक धरण तोलमां पांचमो मोती तळे तो ते सर्वनुं मूल्य त्रण रुपिआ होय छे.

एक धरण भारोभार थता, तेर मोतीने पिका, सोळ मोतीने पिच्चा, वीश मोतीने अर्थ, पचीश मोतीने अर्थ, त्रीहा मोतीने रवक, चाळीश मोतीने सिक्थ पचावन मोतीने निगर, अने एथी आगळ ऐंशी आदि मोतीने चूर्ण कहेंछे; एज आजकाल बूका मोती कहेंवाय छे.

खपर प्रमाणे उत्तम गुणयुक्त एक धरणभार मोतीओतुं मूल्य कहुं तेनी वच्चेना मोतीतुं मूल्य त्रिशाशि करी जाणी छेतुं, जेम एक धरणभार तेर मोतीनी किम्मत त्रणसो पचीश रुपिआ अने एक धरणभार सोळ मोतीनी किम्मत वसो रुपिआ कहीछे तो तेनी वच्चे चौद मोती अथवा पंदर मोती एक धरणमां तळे तो तेनुं मूल्य त्रिराशि करी समजी छेतुं.

गुणहीन मोतीओनी किम्मत ओछी जाणवी.

जे मोती काळां, श्वेत, पीळां अथवा ताम्चवर्ण तेमज विषम होय तेनुं मूल्य पूर्वोक्त रीतिथी जे नकी थाय तेनो तृतीयांश घटाडी वाकीनी रकम जाणवी. जे मोती रंगे सारुं होय परंतु विषम होय तो तेनुं मूल्य पूर्वोक्त रीतिथी पष्टांशहीन समजवुं अने वहुज पीळां मोतीनुं मूल्य पूर्वोक्त रीतिथी अरघुं समजी लेवुं.

अरावत हाथीना वंशमां जे हाथी उत्पन्न थाय छे अने भद्र जातिना हाथी पुष्प अने अवण नक्षत्रमां सोमवार अथवा रविवारे उत्तरायणमां सूर्य चन्द्रना ग्रहण वखते उत्पन्न थाय तेना

P

कुंभस्थळमां अने दंतकोशमां म्होटां म्होटां अनेक आकारनां तेमज प्रभायक्त मोती नीकळे छे, ए मोती घणाज तेजदार होय छे माटे एनी किम्मत आंकशी निह तेमज तेमां छिद्र पण न पाडवुं, ए मोती महा एवित्र होय छे, जे राजा ए मोती धारण करे छे तेने पुत्र, विजय, अने आरोग्य प्राप्त थाय छे.

स्करोनी दादमां चन्द्रनी कान्ति समान कान्तिवाळां अने घणा गुणयुक्त मोती निक्रळेछे. मरस्यथी उत्पन्न थयेल मोती तेना नेत्र समान महा पित्रत्र अने उत्तम गुणयुक्त होय छे.

मेयमां उपलनी पेठे मोती उत्पन्न थाय छे ते सप्तम वायु स्कन्धथी पडे छे परंतु तेने देव-ताओं आकाशाधीज हरी छे छे, ते मेयथी उत्पन्न थएल मोती विजलीनी माफक चमकदार होय छे.

जे तसक अने वासिक नागना कुळमां उत्पन्न थयेल स्वेच्छाचारी सर्प छे तेनी फणना अग्रभागमां स्निग्ध अने नील कान्तिवाळां मोती थाय छे; ए मोती प्रशस्त सूमिमां चांदीना पात्र वन्चे राखवाथी अकस्मात् दृष्टि थाय छे.

राजा विना मूल्य ए सर्पना मोतीने धारण करे तो विप, अलक्ष्मी अने शत्रुओना क्षय- पूर्वक अपार यश अने विजय पामे छे.

यांसमां उत्पन्न थएलां मोती कपूर अथवा स्फटिक समान श्वेत, चिपटा अने विपम तेमज शंखथी उत्पन्न थएलां मोती चन्द्रनी माफक कान्तियुक्त गोळ, चमकदार अने सुन्दर होय छे.

शंख, मत्स्य, वांस, हाथी, स्कर, सर्प अने मेघथी उत्पन्न थएल मोतीओमां छिद्र न पाडवुं कारण के ए सर्वना घणा उत्तम गुण छे एटला माटे एनुं मृत्य पण क्यांइ कहेल नथी. ए अमृत्य मोती पुत्र, धन, सौभाग्य तेमज यहा आपनार धाय छे, रोग तथा शोकनो नाश करे छे अने राजाओने मनवाछित फळ आपे छे.

जे मोतीओनो हार चार हाथ छांबो अने एक हजार आठ छरनो होय ते देवनाओनं आभूएण बने छे तेनुं नाम इन्द्रच्छन्द छे; एथी अर्ध अर्थात् वे हाथ छांबो अने पांचसो चार छरनो विजयच्छन्द कहेवाय छे, एकसो आठ छरनो अने वे हाथ छांबो हार तेमज एक्याझी छरनो अने वे हाथ छांबो देवच्छन्द कहेवाय छे; चोसठ छरनो अर्थ हार, चोपन छरनो रिध्मिक्छाप, वत्रीश छरनो गुच्छ, वीश छरनो अर्थ गुच्छ, सोछ छरनो माणवक, बार छरनो अर्थ माणवक, आठ छरनो मनदर अने पांच छरनो हार फरुक बहेवाय छे. ए सर्व वे वे हाथ छांबा

~~ENG-~~

होय छे; एक हाथ लांबी सत्याबीश मोतीओनी नक्षत्रमाला कहेबाय छे, ए एक लरनी बच्चे वच्चे मोतीओनी साथे मणि अथवा युवर्णना टाणा परोव्या होय तो तेने मिणसोपान कहे छे; ए पिसोपान मध्य भागमां तेजदार मिणयी युक्त होय तो चाडकारक कहेबाय छे; हारनी बच्चे जो महान गिण होय तो तेने तरलक कहे छे, एक हाथ लांबी गमे तेटली लरनी होय अने एनी बच्चे मिण न होय तो ते एकावली कहेबाय छे. अने जो एना मध्य भागमां मिण होय तो तेने यिष्ट कहे छे.

सौगन्धिक, कुरुविंद्क अने स्फटिक ए त्रण पापाणो पद्मरागनां उत्पत्ति स्थान छे.

सौगन्धिकथी उत्पन्न थयेल पद्मराग भ्रमर, अंजन, मेव अथवा जंबुफलना रसतुल्य कान्तिवालों कुरुविन्दथी उत्पन्न थएल पद्मराग जवल अर्थात् न्वेत, कृष्ण आदि अनेक रंगथी मिश्रित, मंदकान्ति अने मृत्तिका आदि धातुओना दागवालों नेमज स्फटिकथी उत्पन्न थएल पद्मराग कान्तियुक्त, अनेक रंगना अने निर्मेळ होय छे.

स्निग्ध, पोतानी प्रभाथी अन्यने लेपनार, निर्मल, कान्तियुक्त, वजनदार, मुन्दर आहु-तिवान, अन्तःप्रभायुक्त अने वहु रंगदार ए सर्व पद्मरागमिण अने रत्नोना गुण छे अर्थात् ए गुण जेमां होय ते उत्तम गणाय छे;

अनिर्मळ, मंद कान्ति, रेखाओथी व्याप्त, मृत्तिकाआदि धातुओथी युक्त, फाटेल, दुविंद्र अथवा सारी रीते नहि वींघेला, चित्तने आह्नाद नहि आपनार अने कंकरयुक्त इत्यादि दोपवाळा मणि अञ्चभ जाणवा.

सर्पोना मस्तक उपर भ्रमर अथवा मयूरना कंठ तुल्य रंगदार अने दीपकनी शिखा तुल्य कान्तियुक्त जे मिण थाय छे ते अमूल्य होय छे; जे राजा ए सर्पनो मिण धारण करे तेने विप के रोगधी कदिपण भय थतो नथी, तेना राज्यमां नित्य दृष्टि थाय छे अने ए मिणना प्रभावयी राजा पोताना श्रञ्जनो निश्चे विनाश करे छे.

जे पद्मराग एक पछ अर्थात् चार कर्ष तोलमां होय तेनी किम्मत छन्त्रीश हजार रुपिआ, त्रण कर्ष होय तों वीश हजार, वे कर्ष होय तो वार हजार, एक कर्ष होय तो छ हजार, अर्थ कर्ष अर्थात् आठ मासा तोलमां होय तो त्रण हजार, चार मासा होय तो एक हजार अने वे मासा होय तो पांचशो रुपिआ। वाकीनानुं त्रिराशिथी मृत्य कल्पी लेवुं; गुणहीन अने अधिक गुणनां मूर्य तेमज हानि अने हिद्ध एक समजी खेवी.

जे पश्रराग रंगमां म्यून होय तेतुं मूल्य पूर्वोक्त रीतिथी अर्ध अने जे तेजहीन होय तेतुं मूल्य अष्टमांच जाणवुं

जे पद्मरागमां गुण थोडा अने दोप बधारे होय तेतुं मूल्य पूर्वोक्त रीतिथी वीशमें अंदो राखवुं

जे पद्मराग जरा घूम्रवर्ण, वहु व्रणयुक्त अने अल्पगुण होय तेतुं मूल्य पूर्वोक्त रीतिथी इसोमे भागे समजी छेतुं.

जे राजा अथवा मतुष्य शुक, वांसतुं पर्ण, कदली अथवा शिरीवना पुष्प समान स्रीला रंगनो अने उत्तम गुणोथीयुक्त मरकत देवकार्य अने पितृकार्यमां धारण करे तो अतिश्वय शुभ फळ आपे छे.

उपर बतावेल जवाहीरो उत्तम अने निर्दोष जोइ तेना शास्त्रोक्त विधिए अगाउथी बनावी राखेल, आयुष्य अने तेजनी दृद्धि करनार तेमज निवन अने राजस्योध आदि छ ऋचाओथी अभिमंत्रित अनेक जातनां अमृल्य आभूषणो राजिष सालणदेवजीए अंगे धारण कर्यो।

हंस, कुकुट, मयूर अने सारस पक्षीना पीछांओथी वनावेल, निवन वस्त्रथी चारे तरफ ढांकेल, सफेद मोतीओथी व्याप्त, चारे तरफ लटकती मोतीओनी माळाओथीयुक्त, रत्न जिंदत अने उन्नत छत्र राजाने कल्याणकारी तथा विजय आपनार थाय छे. छ हाथ छांचो एक काष्टनो दंढ छुवर्णथी महावी नव अथवा सात पर्वोथीयुक्त ते छत्रमां लगाववो अने छत्रनो व्यास त्रण हाथ राखवो तेमज ते छत्रना संधि छिश्छिष्ट होवा जोइए.

युवराज, राजानी राणी, सेनापित अने दंडनायकना छत्रनो दंड साडाचार द्दाय छांबो अने अटी हाथ व्यास राखवो जोइए.

पूर्वोक्त रीते बनावेछुं छत्र सिंहासन उपर स्थापत्रामां आन्युं तेनुं राजर्षि कामिके यथा-विधि पूजन कर्युं.

देवताओए चामरोने माटे हिमालय पर्वतनी कन्दराओमां चमरी गायो उत्यन्न कोल है तेना पुच्छना बाळ पीळा, बाळा अने खेत होय हो.

जे चामरोना वाळ स्निग्ध, कोमळ, घाटा अने विशद होय नथा परस्पर धुंचायेला न

mm-ER-mm

होय तेमज तेओनी वन्चे हट्टी न्हानी अने ग्रुभ्न वाजधी युक्त होय ते ग्रुभ तेमज विद्व, न्हाना अने लुप्त होय ते अग्रुभ गणाय छे.

राजाओ पाटे चापरनो दंड उत्तप काप्टनो वनावी तेने मुवर्ण अथवा चांदीथी मही उपर रत्नो जडी तेनी छंवाइ दोढ हाथ, एक हाथ अथवा-रत्नि जेटळी राखवाथी ग्रुभ फळ आपे छे.

यष्टि, छत्र, अंकुत्रा, वेत्र, धतुप, वितान, कुंत, ध्वन अने चामर ए सर्वना दंड पीळा अने लाल रंग मळेला क्षत्रीओने माटे शुग गणाय छे; ए दंड ने पर्वनो होय तो मातानो क्षय, चार पर्वनो होय तो भूमिक्षय, छ पर्वनो होय तो धनअय, आउ पर्वनो होय तो कुळक्षय, दश्य पर्वनो होय तो रोगोत्पत्ति अने वार पर्वनो होय तो मृत्यु करे छे. तेपन जण पर्वनो होय तो यात्रामां विजय, पांच पर्वनो होय तो शत्रुओनो विनाश, सात पर्वनो होय तो यणो लाभ, नव पर्वनो होय तो भूमिलाभ, अन्यार पर्वनो होय तो पशुओनी दृद्धि अने तेर पर्वनो होय तो अभिष्ट वस्तुनो लाभ आपनार थाय छे.

पूर्वोक्तरीते राजाने योग्य वनावेल चापरोना झपाटाथी राजिप सालगढेवजी सर्वोत्कृष्ट शोभवा लाग्या.

sonoresses consoners consoners are all the consoners are all the consoners are an interest and the consoners are all the consoners a

पचारा आंगळ लांबु खर्झ उत्तम गणाय छे, तथी ओछुं अने पचीश आंगळथी अधिक लंबाइबाछुं खर्झ मध्यम गणाय छे; खर्झनी लंबाइमां विषम अंगुल अभीत् पहेला त्रीता अने पांचमा आदि आंगळमां व्रण होय तो ते अशुभ अने सम अंगुल अभीत् वीजा, चोया, अने छटा आदि आंगळमां व्रण होय तो ते शुभ लेखाय छे.

खर्मनी वच्चे विल्वष्टक्ष, शराव, छत्र, शिवलिंग, कुंडल अने कमलना आकारतुं तेमज ध्वज, खर्म आदि शस्त्र अने स्वस्तिकना आकारतुं त्रण होय तो ते शुभ समजवुं.

कुकलास, काक, कंकपक्षी. मांसमक्षक गीघ आदि पक्षी, कवंघ अने दृश्चिकना आकारतुं व्रण खड्ममां अग्रुभ गणाय छे; वंश अर्थात् खड्मनी मध्यना उंचा भागमां जो व्रण होय तो ते पण अग्रुभ लेखाय छे; भले उत्तम आकृतिना होय तोपण झाझा व्रण अग्रुभज गणाय छे.

फाटेलुं, न्हानुं, कुंट अर्थात् जेनी धार तीखी न होय ते, वंशपदेशमां टूटेलुं देखातुं होय ते, द्रष्टि अने मनने प्रिय न लागे तेवुं अने अस्वन अर्थात् जेना उपर अंगुलीतुं ताडन करतां अवाज न थाय ते खर्म अशुभ जाणवुं; एथी विपरीत अर्थात् निह फाटेलुं लांबु, तीक्ष्ण धारवार्लुं, वंज्ञमदेशमां निर्दोप, नेत्र तथा पनने िषय लागनारुं अने अंगुलीना ताडनथी शब्दायमान स्वर्मे शुभ गणाय छे.

खर्ममां पोतानी मेळे अवाज थाय तो स्वामीनुं मृत्यु थाय छे, युद्धनी वन्चे खर्म काढतां स्यानमांथी न नीक्क तो पराजय थाय छे, रार्म पोतानी मेळे स्वानमांथी वाहेर निक्की आवे तो युद्ध थाय छे, युद्धनी वन्चने खर्ममाथी ज्वार्का नीक्क तो विजय मळे छे.

विना कारण तलबारने स्थानमांथी बाहेर काढ़वी निह, कोइ वस्तु साथे अथडाववी निह, खर्झमां मुख जोवं निह, खर्झें मूल्य कहेंचं निह, खर्झें अमुक देशतुं वनेल छे एम पण मिसद्ध न करवं; अंगुली आदिथी खर्झनो माप पण न करवो तेम राजाए अपावित्रपणे खर्झनो कदी स्पर्भ करवो निह.

गायनी जीभ, नीलकपलनुं दल, वांसनुं पत्र, कणरनुं पत्र, अने जूल समान जेनो अप्र-भाग तीक्षण अथवा गोळ होय ने खन्न उत्तम गणाय छे.

घडती वखते खर्म वधारे छांबु यइ जाय तो तेने कापवं निह पण ुरेतीथी घसी प्रमाण सुजद राखवं; खर्म ने पृळधी कापतां स्वामीनं अने अग्रभागथी कापतां स्वामीनी मातानं मृत्यु थाय छे.

जेम र्खाओना मुख उपर निल्न जोइ एना गुग्रस्थानमां पण निल्न जाणी जाकाय छे तेम न्वतनी चोटी जे मृटनी अदर रहे छे तेना मृल, मन्य अने अग्रभागमां त्रण जोइ न्वतना पण मृल, मध्य अने अग्रभागमां रहेल वण पारग्वी शकाय छे.

खर्म धारण करनार पुरुष खर्मना द्रण एडे तो ने पुरुष ने अंगनो स्पर्म करे ते नाणी तेने अनुसार स्थानमां रहेल खर्मनां त्रण कही जकाय छे.

मान बरती चन्दने जे लग्न होय तेना केन्द्रमां जो पाप ग्रह होय ता नकी स्वज्ञमां व्रण होय हे.

मश्च बरनार पोताना शिरनो रपर्य करे तो खरूना मृळमां पहेले आंगळ त्रण छे एम जाणी लेंबुं, एवीज रीते ललाट, श्रृमन्य, नेत्र, नामिका, ओप्ट, क्योल, इनु, कर्ण, ग्रीवा, अंम, लाती, बास, स्तन, हदय, पेट. बुक्ति, नाभि, नाभिमन्य, बटि, गुरा, उर, उरमन्य, जानु, जंपा, जंपामन्य, गुल्फा, एडी, पग, अने पगनी आगळी एकाथी गमे ने अंगनो स्पर्श करे तो क्रमर्पक वीजा आंगळथी त्रीशमा आंगळ पर्यन्त खर्झमां व्रण कही शकाय छे.

खन्नमां पहेले आंगळ वर्ण होय तो तेना मालिकना पुत्रनुं मृत्यु, बीजे आंगळ वर्ण होय तो धनमाप्ति, त्रीजे आंगळ वर्ण होय तो धनहानि, चोये आंगळ वर्ण होय तो संपत्तिनुं आगम्मन, पांचमे आंगळ वर्ण होय तो वन्धन, छहे आंगळ वर्ण होय तो पुत्र लाम, सातमे आंगळ वर्ण होय तो क्लह, आठमे आंगळ वर्ण होय तो हिस्त लाभ, नवमे आंगळ वर्ण होय तो पुत्र मरण, दशमे आंगळ वर्ण होय तो धनमाप्ति, अग्यारमे आंगळ वर्ण होय तो मरण, वारमे आंगळ वर्ण होय तो धनमाप्ति, अग्यारमे आंगळ वर्ण होय तो मरण, वारमे आंगळ वर्ण होय तो स्त्रीमाप्ति, तेरमे आंगळ वर्ण होय तो चित्तमां दुःल, चीदमे आंगळ वर्ण होय तो लाभ, पंदरमे आंगळ वर्ण होय तो हानि, सोळमे आंगळ वर्ण होय तो स्त्रीलाभ, सत्तरमे आंगळ वर्ण होय तो मृत्यु, वीशमे आंगळ वर्ण होय तो परितोष, एकवीशमे आंगळ वर्ण होय तो धनहानि, वावीशमे आंगळ वर्ण होय तो धनमाप्ति, पचीशमे आंगळ वर्ण होय तो निधन, छन्वीशमे आंगळ वर्ण होय तो संपदागमन, सत्याचीशमे आंगळ वर्ण होय तो दारिय, अठ्याचीशमे आंगळ वर्ण होय तो अंथर्य, ओ गणजी- सत्याचीशमे आंगळ वर्ण होय तो दारिय, अठ्याचीशमे आंगळ वर्ण होय तो राज्यमाप्ति धाय छे.

खड़ मां त्रीरा आंगळथी उपरना भागमां त्रण होय तो तेतुं कांइ विरोष फळ नथी, परंतु सामान्य फळ ए छे के ते त्रण एकत्रीरा तेत्रीरा तेमज पांत्रीरा आदि विषम अंगुलपर होंय तो अशुभ अने वत्रीरा, चोत्रीरा तेमज छत्रीरा अंगुलपर होय ते शुभ गणाय छे.

त्रीश आंगळथी आगळ खड़ाना अग्र भांग पर्यन्त जे व्रण होय ते निष्फळ छे अर्थात् तेतुं कांइ शुभाशुभ फळ नथी एम केटलाएक मुनिओनो मत छे.

जे खर्जिमां कणेरतुं पुष्प, नीलकमल, हाथीनो मद, घृत, केसर, कुन्दपुष्प अने चंपाना पुष्प समान गंध होय ते शुभ तथा गोमूत्र, पंक अने मेद समान गंध होय ते अशुभ गणाय छे.

जे खर्जिमां कूर्म, वसा, रुधिर अने खार समान गंध होय ते भय अने दुःखदायक थाय छे. जे खर्जिनी प्रभा वैदूर्य, सुवर्ण अने विजळी समान होय ते आरोग्य अने आभेद्रद्धि आपे छे.

देदीप्यमान लक्ष्मीनी चाहनावाळा पुरुषे शस्त्रने रुधिरथी पाणी चढाववुं अर्थात् शस्त्रने अग्निमां तपावी रुधिरमां बुझाववुं, गुणवान पुत्रनी इच्छावाळा पुरुषे घृतथी, अक्षयधननी इच्छा- वाळा पुरुषे जळधी अने पापथी अर्थसाधन करवा इच्छता पुरुषे घोडी, उंटणी अने हाथणीना दुधयी पाणी चढाववुं.

जे पुरुष खर्निथी हाथीनी सुंढ कापना चाहतो होय तेणे खर्निने मन्छीतुं पित्तं, हरिणी, घोडी अने दकरीतुं दुष ए सर्नमां हरताल अयना तालहबनो गर्भ मिलानी तेथी पाणी चढानतुं.

शस्त्रने तिल्तुं तेल चोपडी तेना उपर आकडातुं दुध, मेहाना वालेल सींगडानी स्याही, क्युतरनी चरक अने उंदरनी लीडी, ए सर्वने पीकी लेप करी पूर्वोक्त रीते पाणी पाइ धाराने साण उपर चढावे तो पत्पर माथे प्रहार करतां पण शस्त्रनी धार त्रूटती नथी।

केळाना खारमां मधेलुं दहीं मिलाबी एक दिवस अने रात्रि राखी मुकबुं पर्छा लोढाने तेनाथी पाणी पाइ सारी धार कढावबी, ते धार पत्थर मारवाधी पण दूटती नथी अने बीजा लोढा एपर प्रहार करवायी पण कुंटित धती नथी.

राजिप वालगदेवजी माटे अभिषेक पहेलांज उत्तम लक्षणोधी युक्त सर्वेतिकृष्ट पचाश आंगळ लांबुं रुद्धि निकासारमांची लावी तैयार राखवामां आन्युं हतुं; छत्र पूजन पछी राज साल-णदेवजीए ययाविधि रुद्धिं पूजन करी ग्रहण कर्युः

राज सालप्रदेवजीना राथथी विल अपावी तेमज पूजन करावी उननां वस दुशाला आदिथी तेओने आन्छादित कर्रा पुरोहिते पृत्वी भरेला कलशोथी यथाविधि अभिषेक कर्यो.

घृताभिषेक मंत्र.

आज्यं तेजः समुदिष्टमाज्यं पापहरं परम्। आज्यं सुराणामाहार आज्ये लोकाः प्रतिप्टिनाः॥ भौमान्तरिक्षं दिव्यं वा यत्ते किल्विपमागतम्। सर्वे तदाज्य संस्पर्शास्त्रणाश सुपगच्छनु॥

पुतानिपेल वर्षा दाद राजा सालणदेवजी उपर्या उर्ण (उननां । वल उनार्ग पुराहिने फळ नण पुणो निहत पुष्प स्नानता उच्यद्वना जळवी यथादिति अभिदेव कर्यो.

जलाभिषेक संत्र.

सुरास्त्वा मिसिषिञ्चन्तु, ये च सिद्धाः पुरातनाः । ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च, साध्याश्च समरुद्गणाः ॥ आदित्या वसवो रुद्रा, अश्विनौचिभपग्वरौ । अदितिईंव माता च, रवाहा सिद्धिः सरस्वती ॥ र्कार्तिर्रुक्मी धृतिः श्रीश्र, सिनीवाली कुहुस्तथा । दनुश्च सुरसाचेव, विनता कद्रु रेव च ॥ देव पत्न्यश्च यानोक्ता, देव मातर एव च। सर्वास्त्वा मभिषिञ्चन्तु, दिव्याश्चाप्सरसांगणाः ॥ नक्षत्राणि सुहूर्ताश्च, पक्षाहो रात्रि संघयः । संवत्सरा दिनेशाश्च, कलाः काष्टाः क्षणालवाः॥ सर्वे त्वामिभिषिञ्चन्तु, कालस्यादयवाः ग्रुसाः । वैसानिकाः सुरगणा मनवः सागरैः सह ॥ सरितश्च महाभागा नागाः किं पुरुषास्तथा। वैखानसा महाभागा द्विजा वैहायसाश्च ये ॥ सप्तर्षयः सदाचारा ध्रुदस्थानानि पानि च। मरीचि रत्रिः पुलहः पुलस्त्यः ऋतुरंगिराः॥ भृगुः सनत्कुमारश्च, सनकोऽथ सनन्दनः । सनातनश्च दक्षश्च, जैगीषव्यो भलन्दनः॥ एकतश्च द्वितश्चेव, त्रितौजावालिकश्यपौ। दुर्वासा दुर्विनीतश्च, कण्वः कात्यायनस्तथा ॥ मार्कंडेयो दीर्घतपाः शुनः शेफो विदूरथः।

THE TAXABLE STATES OF THE PROPERTY OF THE PARTY OF THE PA

च्योर्वः संवर्तकश्चेव च्यवनोऽत्रिः पराहारः ॥

छेपायनो यवक्रीतो, देवराज सहानुजः ।

एते चान्ये च मुनयो, वेदत्रतपरायणाः ॥

सिशिष्या स्तेऽभिषिश्चन्तु, सदाराश्च तपोधनाः ।

पर्वता स्तरवो वल्यः पुण्यान्यायतनानिच ॥

प्रजापति दिति चेव, गावो विश्वस्य मातरः ।

दाहनानि च दिव्यानि, सर्वे लोकाश्चराचराः ॥

अन्तयः पितर स्तारा जीमूताः खं दिशो जलं ।

एते चान्ये च वहवः पुण्यसंकीर्तनाः शुभाः

तोचे स्त्वासभिषिश्चन्तु, सर्वोत्यातनिवर्हणेः ।

यथाक्षिपक्तो स्ववाने ते मुदितमानसेः ॥

आ शिवाय अथर्दण कल्पमा कहेला अन्य मंत्रोधी एकादश अनुवाकना रुद्रथी, छ अनु वाकना कॉप्साटिकपी, परा रोहिण तथा क्वेस हृद्यमंत्रधी अने समृद्धि अर्थात् ऋचाथी सालण-देवजीने अभिषेक कर्योः

त्यारणद "आपोहिष्ठा" आदि यण ऋचा अने "हिर्णयवण्डि" आदि चार-अवाओची अभिमंत्रित करेल दे सूत्रतुं वस्त्र राज मालणदेवजीने चारण कराव्युं; पुण्यात्याचन अने शंखना गव्दीए सत्वर्तमान सालणदेवजीए आचमन कर्ग देव, गुरु, ब्राह्मणो अने दृष्ट देवतुं पूजन वर्यु.

र्धानी देदीमा मधम छूपतुं तेना उपर विळाटातुं तेना उपर क नामना मृगतुं तेना उपर पूपन नामना मृगतुं तेना उपर भिंहतुं अने तेना उपर व्याघतुं चर्न विळाव्युं हतुं, त्या जह म चर्म उपर राजिए सालमहेटजी विराजमान थया.

मुख्य स्थान अर्थात दक्षिण देशीयां पुरोहिते स्पिष्यः निष्ठ अने पृत आदियां न्द्र, इन्द्र, सुरम्पतिः विष्णु अने वायुनी अवाओं भणी अपि मध्ये इवन कर्युः

सर्व कार्य समाप्त करी पुरोहिन नीचे मुजव विसर्जन मंत्र वोल्या, यान्तु देवगणाः सर्वे, पूजामादाय पार्थिवात् । सिद्धिंदरवा तु विपुलां, पुनरागमनाय च ॥

संपूर्ण रीते पोतानो राज्याभिषेक थया बाद राज सालणदेवजीए ज्योतिषी तथा पुगे-हितनुं घणा द्रव्यथी पूजन कर्युं तेमज अन्य श्रोत्रिय ब्राह्मणोंने योग्य दक्षिणाओं आपी.

गढ सीकरीतुं छत्र घारण कर्या पछी राज सालणदेवर्जा नीतिथी प्रजाने पाळवा लाग्या. एक दिवसे पोते मात्र पंडितोनीज सभा भरी चोसट कळाओ जाणवानी अपेक्षा वनावी तेज वखने कोइ एक महान पंडितराजे उभा थड़ आशीर्वादयुक्त राजा आगळ चोसट कळाओतं कथन कर-वानो प्रारंभ कर्यों, राजा विगेरे तमाम विद्वानोए प्रसन्नता पूर्वक ए पंडितराज तरफ व्यान आप्युं. पंडितराज वोल्यों के—राजन् ! पहेली कळा गायननी छे तेना स्वरगाल्य, पदगाल्य, लयगाल्य, तथा चेतोविधानग ए रीते चार भेद छे, तेमां स्वरथी गवातुं वेद आदि स्वर गाख्य, पद (मुबन्त अने तिङन्त) थी गवातुं पदगारूय, "सा,रि,ग,म, "आदि ल्यथी गवातुं लय गारूय, अने " डि ड डा डा " आदि चित्तमां छुपी रीते गवातुं गान चेतोवथानग कहेवाय छे. एतुं सविस्तर वर्णन " संगीत रत्नाकर " नामना ग्रन्थमां आपेल छे. वीजी कळा वाद्य वजाववानी छे, तेना पण आनद्भ, तत, सुपिर तथा घन नामना चार भेद छे; तेमां चर्मथी मढेलां मृदंग आदिने " आनद्ध, " वीणा आदि तारवाळां वाद्योने " तत, " वंसी तथा शंख आदि फुंकथी वगाडानां वाद्योंने " सुिषर " अने झांझ तथा घंटा आदि कांसानां वाद्योंने " घन " कहे छे रस, अं गहार अने विभावने आदि लड़ छ भेदवाळी नाचवानी त्रीजी कळा छे, परंतु गान्धर्व वेदमां उपर कहेल त्रण भेदोनोज विस्तार छे. चोथी कळा आलेख्यनी छे. तेना छ भेद छे, तेमा प्रथम भेद रुप, तेना श्वेत, नील, पीत, रक्त, हरित, धूसर, तथा चित्रविचित्र एवा सात भेद छे; वीजो भेद प्रमाण तेना न्हानुं, लांबु, म्होटुं, पातळुं, चोखंडु तथा गोळ एवा छ प्रकार छे; त्रीजो भेद लावण्य; चोथो भेर आशय लावनो अर्थात् भाव वतावनो, पांचमो भेर वर्णिकाभंग अर्थात् नील आदि रंगोना भेदोने जाणी इयाही बनावत्री; अन छहा भेद साम्य छे ते ए छे के जेतुं चित्र बनाववामां आवे ते असल वस्तु प्रमाणेज थवुं जोइए एने माटे शिल्पशास्त्रमां विशेष विवेचन आपेलुं छे. पांचमी कळा पत्र छेद्य नामनी छे के जे कागळ अथवा केळ आदिना पत्तां उपर कातरी पशु पक्षी

तथा पुष्प आदिना सुन्दर चित्रो वनाववामां आवे छे, तेना छ भेद छे ते पण शिल्पशास्त्रमां वतावेल छे अथवा भोजपत्र आदिनी भात भातनी कातरेली टीकडीओ ललाट उपर लगाववी ते छट्टी कळा पुप्पतंडुलवलिविकार नामनी छे, जेमां भीत आदि उपर रंगेला चोखाओथी पुष्प विगेरे चित्रो बनाववामां आवे छे. सातमी कळानुं नाम पुष्पस्तरण छे. जेमां पुष्पना विछानाथी अनेक चित्रोवाळी सुन्दर शय्या वनाववामां आवे छे. आटमी कळा टंतपटवपुराग नामनी छे, ते मिस्ती आदिथी दात रंगवा, वस्त्र रंगवां, शरीरने रंगवुं अर्थात् महेंदी आदि चोपडवां के जे स्त्रीओने अति िय छे, नवमी कळा मणिभूमिकर्म नामनी छे ते भींतो उपर मणिओ जडवाना चित्रामधी थाय छे. दशमी कळा तल्परचन नामनी छे ते देश अने काळने अनुसरी शय्यानी वस्तुना स्थापन करवाथी थाय छे. ए वहु आनन्ददायक होय छे. अग्यारमी कळा जलवाद्य नामनी छे. ते मृदंग आदि वाद्य समान श्रेष्ट वाद्य जळमां छुपेलुं छे अर्थात् चीनी अथवा कांसाना कटो-रामां जल भरी ए कटोराओंने वजाववाधी राग निकळे छे, अथवा तळाव आदिना जळमां राथना आयातथी मृदंग आदिनी माफक वाच वजाववां ते. वारमी कळातुं नाम जलोपयात छे ते द्दार अथवा यंत्र द्वारा जलयी ताढन करवुं ते. तेरमी कळातुं नाम चित्रयोग छे, जेमां विरुप विल (बृद्धावस्थामां शरीरनी चामढीमां वळीयुं पढी जाय छे तेवी वळीयुं पाडवी ते) अने वेशने श्वेत करवा इत्यादि क्रिया थाय छे. चौदमी कळा माल्यप्रथन नामनी छे, जेमां पुष्योनी माळा, गुन्छा तथा अूरण आदि वनाववामां आवे छे, अने ते शृंगार साधक छे. पंदरमी कळा आपीटहोग्वरयोजना नामनी छे, जेमां माथुं गुंबबुं तथा करुगी अने मुकुट आटि बनावपानां काम थाय छे. सोळभी कळा नेपध्ययोग नामनी छे, ते वस्त्राभूपण धारण करवानी चतुराइथी शरीर शणगारवानी है. सत्तरमी कळानुं नाम कर्णपत्रभंग हे, जेमां शंख तथा हाथीदांत अ.-दिथी कर्णाभरण दनाववानी चतुराइ छे; अने तेने स्त्रीओ वपारे चाहे छे. अहार्सी कळानुं नाम गन्धयुक्ति छे, नेथी अत्तर आदि गन्ध द्रव्य खेंचवामां आवे छे; ओगणीशर्मा कळा भृषण योजना नामनी छे, तेना वे भेड छे, तेमां एक तो हार आदिमां माणिओने परोववा तथा बीजो भेड कडां आदि दनाववां. वीशमी वळा इन्ट्रजाल नामनी छे के जे जोवावाळा अनेक माणमोने आश्चर्य उपनावे छे. एकवीदामी कुचुमार योग नामनी सुन्दर बळा छे, नेथी वर्द्यावरण अने मुभगवर्ण आदि याप छे. दावीहामी कळा रस्तलायव नामनी छे तेथी सर्व कार्योमां हायनी पुर्ग्नायी योदे रवर्षे कार्यमिद्धि थाय छे. त्रेवीक्षमी बळानो विस्तार नीचे मुजद छे, रम, राग, पान, गृप, अक्ष्य

सर्व कार्य समाप्त करी पुरोहित नीचे मुजव विसर्जन मंत्र वोल्या. यान्तु देवगणाः सर्वे, पूजामादाय पार्थिवात् । सिद्धिंदरवा तु विपुलां, पुनरागमनाय च ॥

संपूर्ण रीते पोतानो राज्याभिषेक यथा वाद राज सालणदेवजीए ज्योतिषी तथा पुरो-हितनुं घणा द्रव्यथी पूजन कर्युं तेमज अन्य श्रोत्रिय ब्राह्मणोंने योग्य दक्षिणाओ आपी.

गढ सीकरीतुं छत्र घारण कर्या पछी राज सालणदेवर्जा नीतिथी प्रजाने पाळवा लाग्या. एक दिवसे पोते मात्र पंडितोनीज सभा भरी चोसट कळाओ जाणवानी अपेक्षा वनावी तेज वखने कोइ एक महान पंडितराजे उभा थइ आशीर्वादयुक्त राजा आगळ चोसट कळाओतं कथन कर-वानो प्रारंभ कर्यो, राजा विगेरे तमाम विद्वानोए प्रसन्नता पूर्वक ए पडितराज तरफ व्यान आप्युं. पंडितराज बोर्ल्यो के-राजन् ! पहेली कळा गायननी छे तेना स्वरगाल्य, पदगाल्य, लयगाल्य, तथा चेतोविधानग ए रीते चार भेद छे, तेमां स्वरंधी गवातुं वेद आदि स्वरं गारुय, पद (मुबन्त भने तिङन्त) थी गवातुं पदगारूय, "सा,रि,ग,म, " आदि छयथी गवातुं छय गारूय, अने " डि ड डा डा " आदि चित्तमां छुपी रीते गवातुं गान चेतोवधानग कहेवाय छे. एतुं सविस्तर वर्णन " संगीत रत्नाकर " नामना ग्रन्थमां आपेल छे. वीजी कळा वाद्य वजाववानी छे. तेना पण आनद्भ, तत, सुविर तथा घन नामना चार भेद छे; तेमां चर्मथी महेलां मृदंग आदिने " आनद्ध, " बीणा आदि तारवाळां वाद्योने " तत, " वंसी तथा शंख आदि फुंकथी वगाडातां वाद्योंने " सुिषर " अने झांझ तथा घंटा आदि कांसानां वाद्योंने " घन " कहे छे रस, अं गहार अने विभावने आदि लड़ छ भेदवाळी नाचवानी त्रीजी कळा छे, परंतु गान्धर्व वेटमां उपर कहेल त्रण भेदोनोज विस्तार छे. चोथी कळा आलेख्यनी छे. तेना छ भेद छे, तेमा प्रथम भेद रुप, तेना श्वेत, नील, पीत, रक्त, हरित, धूसर, तथा चित्रविचित्र एवा सात भेद छे; वीजो भेद प्रमाण तेना न्हानुं, लांबु, म्होटुं, पातळुं, चोखंडु तथा गोळ एवा छ प्रकार छे; त्रीजो भेद लावण्य; चोथों भेर आशय लाववों अथीत भाव वताववों, पांचमों भेर विणिकाभंग अथीत नील आदि रंगोना भेटोने जाणी इयाही बनावत्री; अन छहा भेद साम्य छे ते ए छे के जेतुं चित्र बनाववामां आवे ते असल वस्तु प्रमाणेज थवुं जोइए एने माटे शिल्पशास्त्रमां विशेष विवेचन आपेछुं छे. पांचमी कळा पत्र छेद्य नामनी छे के जे कागळ अथवा केळ आदिना पत्तां उपर कातरी पशु पक्षी

तथा पुष्प आदिना सुन्दर चित्रो वनाववामां आवे छे, तेना छ भेद छे ते पण शिल्पशास्त्रमां वतावेल छे अथवा भोजपत्र आदिनी भात भातनी कातरेली टीकडीओ ललाट उपर लगाववी ते छही कळा पुष्पतंडुलवलिविकार नामनी छे, जेमां भीत आदि उपर रंगेला चोखाओथी पुष्प विगेरे चित्रो वनाववामां आवे छे. सातमी कळानुं नाम पुष्पस्तरण छे. जेमां पुष्पना विछानाथी अनेक चित्रोवाळी सुन्दर शय्या वनाववामां आवे छे. आठमी कळा दंतपटवपुराग नामनी छे, ते मिस्सी आदिथी दांत रंगवा, वस्त्र रंगवां, शरीरने रंगवुं अर्थात महेंदी आदि चोपडवां के जे स्त्रीओने अति विय छे, नवमी कळा मणिभूमिकर्म नामनी छे ते भींतो उपर मणिओ जडवाना चित्रामधी थाय छे. दशमी कळा तल्परचन नामनी छे ते देश अने काळने अनुसरी शय्यानी वस्तुना स्थापन करवाथी थाय छे. ए वहु आनन्ददायक होय छे. अग्यारमी कळा जलवाद्य नामनी छे. ते मृदंग आदि वाद्य समान श्रेष्ठ वाद्य जळमां छुपेलुं छे अर्थात चीनी अथवा कांसाना कटो-रामां जल भरी ए कटोराओंने वजाववाथी राग निकळे छे, अथवा तळाव आदिना जळमां हाथना आघातथी मृदंग आदिनी माफक वाद्य वजाववां ते. वारमी कळातुं नाम जलोपघात छे ते हाथ अथवा यंत्र द्वारा जलयी ताडन करवुं ते. तेरमी कळातुं नाम चित्रयोग छे, जेमां विरुप शरीरनी चामहीमां वळीयुं पही जाय छे तेवी वळीयुं पाडवी ते) विल (बृद्धावस्थामां अने केशने श्वेत करवा इत्यादि क्रिया थाय छे. चौद्मी कळा माल्यग्रथन नामनी छे, जेमां पुष्योनी माळा, गुच्छा तथा अूषण आदि वनाववामां आवे छे, अने ते शृंगार साधक छे. पंदरमी कळा आपीडशेखरयोजना नामनी छे, जेमां माथुं गुंथवुं तथा कलगी अने मुकुट आदि वनाववानां काम थाय छे. सोळभी कळा नेपथ्ययोग नामनी छे, ते वस्त्राभूषण धारण करवानी चतुराइथी शरीर शणगारवानी छे. सत्तरमी कळातुं नाम कर्णपत्रभंग छे, जेमां शंख तथा हाथीदांत अ.-दिथी कर्णाभरण वनाववानी चतुराइ छे; अने तेने स्त्रीओ वधारे चाहे छे. अढारभी कळातुं नाम गन्धयुक्ति छे, जेथी अत्तर आदि गन्ध द्रत्र्य खेंचवामां आवे छे; ओगणीशमी कळा भूषण योजना नामनी छे, तेना वे भेद छे, तेमां एक तो हार आदिमां माणिओने परोववा तथा बीजो भेद कडां आदि वनाववां. वीशमी कळा इन्द्रजाल नामनी छे के जे जोवावाळा अनेक माणसोने आश्चर्य उपजावे छे. एकवीशामी कुचुमार योग नामनी सुन्दर कळा छे, जेथी वशीकरण अने सुभगकरण आदि याय छे. वात्रीशमी कळा इस्तलाघत नामनी छे तथी सर्व कार्योमां हाथनी फ़रतीथी थोहे खर्चे कार्यसिद्धि थाय छे. त्रेवीश्वमी कळानो विस्तार नीचे मुजव छे, रस, राग, पान, यूष, अध्य

AN MANAGEMENT TO THE TOTAL PROPERTY OF THE PARTY OF THE P

अने शाक ए सहुना अनेक पकारना प्रयोग छे; तेना भक्ष्य, भोज्य, लेहा, पेय तथा चेल्य एवा पांच भेद छे; तेमां दांताथी कटका करी चावीने खावा योग्य पदार्थने " भक्ष्य " कहे छे. इलवी, भात तथा शाकने आदिलइ रांधेला पदार्थोंने भोज्य कहे छे. फल, कांड पुष्प, पर्ण, मूल, करीर, त्वक्, मस्डक, अग्र अने कांटा ए शाकना दश भेद उपर कहेल भेदोथी जरा जुदा प्रकारना छे. आयुर्वेद आदि ग्रन्थोमां तेनां अनेक भेदो छे. अई। राग शब्द लेख पदार्थनो वाचक छे जेने पाक वनाववावाळा चतुर लोको पोतपोताना नामने अनुरुप द्रव, लेब अने चूर्ण ए रीते त्रण प्रकारनो कहें छे; पानना संधेय तथा असंधेय ए रीते वे भेद छे, तेमां असन्धयेना अनेक प्रकार छे; तेनुं ए एकज रुक्षण के जेमां पेय पदार्थतुं सिद्धत्व छे अथवा कृत्रिम निह परंतु स्वाभाविक छे. जेम दूध आदि सन्धेयना द्रावित तथा अद्रावित एवा वे भेद छे, तेमां अद्रावित तो असन्धेयना सग्खुंज छे, द्रावितमां रस (स्वरस), यूप, पानक (पणा, अमररस, गुड, आंवलवाणुं आदि) तथा आसवनो समावेश थाय छे. चोवीशमी कळा स्चिकासन्यान नामनी छे, तेना सीवन, वि-रचन तथा भूनयन एवा त्रण भेद छे तेमां चोला आदि शीववाने "सीवन", हाथीनी झूल आदि वनाववाने "विरचन" अने फाटेलां अथवा बुटी गएलां वस्त्रोने थीगडी लगाडी अथवा तूनी न-विन बनाववाने "भूनयन" कहे छे. पचीशमी कळा सूत्रक्रीडन नामनी छे ते पण प्राणी मात्रने विस्मय उत्पन्न करनारी छे; कारण के ए कळाथी जादूगर लोको कपडांने चीरी पाछुं साजुं करी दे छे अने वस्त्रने वाळी फरीथी जेवुं ने तेवुं नजरे वतावे छे. एज रीते वन्ने हाथोमां वे नळीओ लइ तेमां छिद्र करी वन्ने सूत्रोने एकनी माफक वतावी दे छे, ए वया जाद्इ खेल छे. छन्वीशमी कळा बीणा डमरु वजाववानी छे. ते प्रथम कहेल वाद्य वजाववानी कळाथी भिन्न छे; तेमां कंड ्वगर पण कुशळताथी श्रुति, जाति अने रागनो उपदेश थाय छे. सत्यावीशमी कळा पहेली नामनी छे, जेमां छुपायेलो आशय मळी शके छे. अठ्यावीशमी कळा प्रतिमालिका नामनी छे. जेमां एक पद्मना अंत्य अक्षरथी बीजा पद्मनो मारंभ कराय छे. ओगणत्रीशमी कळा दुर्वाचक योग नामनी छे जेमां शब्दोनी वच्चे पद गुप्त रहेलां होय छे अर्थात् सन्धिआदिना छुपाववाथी पद जाणवामां आवतां नथी. त्रीशमी कळा पुस्तकवाचन नामनी छे जेथी कोइ दिवस निह जोएलां पुस्तकोने पण जोएलांनी माफक वांची शकाय छे. एकत्रीशमी कळा आख्यायिका जेनी आदिमां छे एवा नाटक सिहत नाटकारूपायिका नामनी छे जेथी नाटक (ग्रन्थ विशेष) अने आरूपायिका (प्राचीन कथा अर्थात् वार्ता मळी जाय ते उपर गद्यात्मक ग्रन्थ रचवो ते) वनाववामां आवे छे.

वत्रीशमी कळा कवितामां समझ्या पूर्तिनी छे ते पूछवावाळाना कथनपर आधार राखे छे. पिट्टका-वेत्रत्राणनामनी तेत्रीशमी कळा छे, तेतुं वेत्रत्राणपृष्टिका एवुं पण नाम छे, ते कळा नेतर्थी खुरशी तथा कोंच आदि भरवानी छे, चोत्रीशमी कळा तक्षकर्म नामनी छे जेमां शाण अने भ्रमिथी अंगहीन वस्तुओंने सुधारी शकाय छे, पांत्रीशमी कळा तच्छन नामनी छे ते खातीना कामनी कुशळता सबंधी छे. छत्रीशमी कळा वास्तुवेदन नामनी छे, ते शिल्पवेदनी रचनारां कुशळता सवंधी छे जेने मकान वनाववानी कळा कहे छे. साडत्रीशमी कळा सोतुं, चांदी तथा जवाहिर आदिनी परीक्षा करवानी छे. आडत्रीशमी कळा धातुवाद नामनी छे, जेथी धातु, रस तथा मणि आदिने फूंकवानुं तथा वाळवानुं वनी शके छे. ओगणचाळीशमी कळा मणिराग-आकरज्ञान नामनी छे तेथी मणि उपर रंग चडाववानुं तथा खाणो तपासवानुं कार्य थइ शके छे. चाळीशमी कळा के जेमां वगीचा वनाववा विगरे क्रिया थाय छे तेनो विस्तार सोमनृप आदि अने वराह मिहिर आदिना ग्रन्थोमां घणोए छे. एकतालीशमी कळा मेंढा, मुरगा तथा लवा आदि पशु पक्षी-ओने लडाववानी छे. वेतालीशमी कळा पोपट तथा मेनाने पढाववानी छे. त्रेतालीशमी कळा उत्सा-दन, संवाहन अने केशमर्दन ए रीते त्रण प्रकारनी छे; तेमां प्राथी शरीर दवाववुं ते उत्सादन, हायोधी शरीरने दवावतुं ते संवाहन अने केशतुं मर्दन कर्वं ते केशमर्दन. चम्माछीशमी कळा अक्षरमृष्टिकाकथननामनी छे, तेना साभाविका तथा नाभाविका नामे वे भेद छे; तेमां आदिनो अक्षर सांभळतां पूरो शब्द जाणी लेवो ते साभाविका अने आंगळीओना इशाराथी शब्दोने जाणी आशय समजी जवो ते नाभाषिका. पीस्तालीशमी कळा म्लेच्छितविकलप नामनी छे तेथी उलटा मुलटा अक्षरोधी प्रसिद्ध वातने छुपावी व्यवहार करी शकाय छे. सर्व देशोनी भाषाओं जाणवानी छेतालीगमी कळा छे. सडतालीशमी पुष्पशकरी नामनी कळा छे, जेथी पुष्पना चिन्त्वन मात्रथी अभिप्रायना अक्षरोतुं ज्ञान करावी शकाय छे. अडतालीशमी कळातुं नाम निमित्त-शक्तन, स्वरोदय, तथा अंग फरकवां आदिनुं वर्णन छे. ज्ञान छे तेमां संपूर्ण वर्णन वसन्तराज आदि शक्कनशास्त्रमां लखेल छे. ओगणपचाशमी कळा यंत्रमातृका ना-मनी छे, जेथी वन्दूक आदि यंत्रो वनाववामां आवे छे. पचाशमी कळातुं नाम धारणमात्का छे. ते एकवार सांभळेली वातने.फरी भूली न जवा संबंधी छे. तोळवानी कळाने पण धारणमातृका कहे छे एम केटलाएकनो मत छे. एकावनभी कळा संपाठच नामनी छे, तेथी पूर्वे कोइ वख्त निह सांभळेला छन्दो मात्र एक वलत सांभळवायी वोलनारनी साथे वोली शकाय छे. वावनभी

~~~

कळातुं नाम मानसी छे, जेमां स्वरोने व्यंजन तथा व्यंजनोने म्वर वनावी कविता रचवामां आवे छे एने इच्छालिपि पण कहे छे. त्रेपनमी कळा कविता वनाववानी छे ते भरतकारिका आदि साहि-त्यना ग्रन्थोमां आपेल छे. चोपनमी कला अभिधान नामनी छे नेथी कोशतुं ज्ञान थड् जाय छे, एने पण कळा मानेल छे; छन्दोज्ञान नामनी पचावनमी कळा छे, जेथी वैदिक छन्दो सिवाय छै। किक छन्दोनुं ज्ञान थाय छे, छप्पनमी कळा क्रियाविकर्ष नामनी छे, नेथी काव्यना अलंका-रोनी परीक्षा अथवा काव्य अने आभूषणोनी परीक्षा थाय छे. केटलाएकनो एवो मत छे के तैयार करेल भोजन आदि सिद्ध पदार्थोनी परीक्षामां पण आ छप्पनमी कळानो प्रयोग यह शके छे. सत्तावनमी कळानुं नाम छिलतादि योग छे, के जेथी वेश वादलो करी वीजाने टगी शकाय छे. वस्त्रगोपन नामनी अट्टावनमी कळा छे, ते त्रण प्रकारनी छे, तेमां एक तो कान्तिथी शुद्ध वस्त्रने धारण करवां, वीजुं फाटेलां वस्नोने एवी चतुराइयी पहेरवां के जे नवांज देखाय अथवा मोटां वस्नने पण एवी रीते संकोची पहेरवुं के जे खराव न देखाय अने त्रीजुं वस्नने समेटी इस्री आदि दइ एवी रीते पहेरवां के जेथी कान्तिनी टुद्धि थाय. ओगणसाठमी कळा दाव छगावी जुगार रमवानी छे, जेमां शतरंज आदिनी रमत रमाय छे. साठमी कळा आकर्पकीडन नामनी छे, जेथी पोताना मनमां पासाना यथार्थ ज्ञानथी बुद्धिमान साथे आनंद लड्ड शकाय छे अर्थात् लागना पासा फेंकाय छे, ए कळानौ केंटलाएक मह्युद्धमां पण प्रयोग करे छे, वालक्रीडन नामनी एक-सठमी कळाथी दडो फेंकवो तथा पुतळी आदिनी रचना विगरे करी शकाय छे. वासडमी कळा वैनियकी नामनी छे, ते नम्ताथी यश मेळववानी छे, एतुं विशेष वर्णन धर्मशास्त्रमां छे. त्रेसरुमी कळा वैजयिकी नामनी छे जे हाथी, घोडा तथा आयुघ आदिना करावनारी छे. चोसठमी कळा व्यायामिकी नामनी छे ते शिकार महान फलने आपवानाळी छे. आ रीते पंडितराजना मुखर्थी राज सालणदेवजी-ए चोसठ कळाओनुं निरुपण सांभळी सानंदाश्चर्य पंडितराजने पूछ्युं के-आ वखते ए चोसंठ कळाओने जाणनार कोइ पुरुष हशे के नहि त्यारे पंडितगज बोल्या के चोसंठ कळाने संपूर्णरीते जाणनार एक ममार राजा विक्रम हतो. ते पछी एवो कळाकोविद आज पर्यन्त कोइ थयो नथी, परंतु ए तमाम कळाओने जाणनार जुदा मनुष्यो विश्वमां विद्यमान छै. सालणदेवजीए पंडितराजने एक छक्ष रुपीआ वक्षीश आपी अने बीजा एक छक्ष रुपीआ आपी देशविदेशमांथी तेवा कळाकोविद पुरुषोने एकठा करवा पोतानी इच्छा प्रदर्शित करी. राजानी आज्ञा पामी

पंडितराज उक्त कार्यमां प्रदृत्त थया, अने धननी सहायताथी स्त्रत्य समयमां कसोटी करेला कळा-कोविदने शोधी पाछा सीकरी आवी राज सालणदेवजीने जाण करी। राज सालणदेवजीए ते तमाम मनुष्योने आनंद पूर्वक सीकरीमां रहेवा उत्तम मकानो वंधावी आष्यां अने सर्वने म्होटा माननी साथे पुण्कळ द्रव्य आपी पोतानी पजा तरीके राख्या, दिवसे दिवसे दीर्घ दृष्टिथी राज्यनी आवादी करी, गढ सीकरीनो घणोज विस्तार कर्यो, अने तेमां पांच लाख घर वसाव्यां, एक लक्ष उत्तम प्रकारना अश्वो एकटा कर्या, पांच हजार मदझर हाथीओथी बाहेरनी बोभामां अलौकिक ष्टिद्धि करी अने सात लाखनुं सैन्य जमान्युं. ए सालणदेवजीना स्वर्गवास पछी तेना कुमार जोम पालजी सीकरीनी गादीए वेठा, त्यारवाद जशराजजी, झालंगदेवजी, सारंगदे-वजी अने शिवराजजी ए क्रमपूर्वक राजाओ थया. शिवराजजीना कुमार विजयराजजी कुमारपदे गुजरी जता तेना कुमार विक्रमादित्य राजा थया ते पछी समरसिंहजी, वन-देवजी, धनराजजी अने देवराजजी क्रमपूर्वक सीकरीना तख्तपति थया. देवराजजी-ना पुत्र अक्षयराजजी कुंवरपदे स्वर्गवासी थतां, तेना पुत्र इन्द्रभाणजी गादीए वेटा, ते पाछळ उदयादित्य तथा श्रीपतसेन क्रमपूर्वक सीकरीना स्वामी थया. श्रीपतिना पुत्र सोमेश्वरजी कुंवरपदे गुजरी जतां तेना कुमार अक्षयराजजी गादीए वेठा. त्यारवाद मू-ळराजजी, क्षेमराजजी, अने जयमलजी ए त्रण राजाओ क्रमपूर्वक थया. जयमल-जीना पुत्र लखधीरजी कुंवरपदे स्वर्गवासी थतां तेना पुत्र इन्द्रसेनजी सीकरीना अन धिपति थया. ते पछी पुष्पसेनजी, पद्मसिंहजी, अने भीमसिंहजी नामे त्रण राजा-ओ थया. भीमसिंहजीना कुमार रत्निसिंहजी कुंवरपदे स्वर्गस्थ थतां तेना पुत्र माल-देवजी गादीए वेटा. त्यारवाद करणिसंहजी तथा हमीरिसंहजी राजाओ थया. इमीरसिंहजीना पुत्र सुरतानिसिंहजी कुंवरपदे गुजरी जतां तेना कुमार पृथ्वीराजजी तल्तपित थया. ते पछी पातलिसिंहजी अने प्रतापभाणजीए क्रमपूर्वक सीकरीनी प्रजातुं शासन कर्यु. प्रतापभाणजीना कुमार इन्द्रश्यामजी स्वर्गवासीयतां, तेना पुत्र अर्जुनिसिंह गादीए वेटा. त्यारवाद यौवनिसिंह, संग्रामिसिंह

शात रुसिंह, अने सुरतपालजी ए क्रमपूर्वक राजाओ थया. सुरतपालजीना पुत्र भारमलजी कुंवरपदे गुजरी जतां तेना कुमार अजयभूपाल सीकरीना पाटपर वेटा, ते पछी मानपाल, नरभ्रमर तथा जोधपालजी ए त्रण क्रमपूर्वक नरपति थया, जोधपालजीना क्रमार लखधीरजी कुंवरपदे स्वर्गवासी थतां तेना पुत्र भारम्लजी गादीए वेठा, त्यारवाद जयमळजी, सोमपाळजी, हंसराजजी अन मानपावजी ए चार क्रमपूर्वक सीकरीना स्वामी वन्या. मानपालजीना पुत्र लाखणसिंहजी कुंवरपटे गुजरी जतां तेना कुमार वीर-सिंहजी राजा थया. ते पछी विनयसिंहजी, भारमलजी अने भोजराजजी ए त्रण राजाओ यथाक्रम थया, भोजराजजीना पुत्र केंसरदेवजी कुंवरपदे स्वर्गवासी थतां तेना कुमार करणिसंहजी राजगादीए वेटा, ते पछी भीमसिंहजी राजा वन्या. भीमसिंहजीना पुत्र इन्द्रसिंहजी कुंत्रपदे गुजरी जतां तेना पुत्र सूरसिंहजीए सीकरीना राजतत्वतपर पाय धारण कर्यो, न्यारवाद संतीषभानु, उदयभानु अने अ-मृतसिंसजी ए त्रण क्रमपूर्वक राजाओ थया, अमृतसिंहजीना क्रमार पातलसेनजी कुं-वरपदे स्वर्गवासी थतां तेना पुत्र प्रतापभानु गादीए वेटा, ते पछी रणमलजी, अक्षय-राजजी अने मूळराजजी यथाक्रम सीक्रीना स्वामी वन्या. मूळराजजीना कुमार क्षेमराजजी कुंवरपदे गुजरी जतां तेना पुत्र सानपालजी गादीए वेटा, त्यारवाद भो-जराजजी, रत्निसंहजी अने सोमेश्वर ए त्रण राजाओ यथाक्रम थया. सोमेश्वरना पुत्र केसरीसिंहजी कुंवरपदे स्वर्गवासी थतां तेना कुमार गोवर्धनसिंह राजगादी पर आव्या. ते पछी गंगेवजी राजा थया. गंगेववजीना पुत्र समरसिंहजी कुंवरपदे गुजरी जतां तेना कुमार सूर्यमलजी सीकरीना अधिपति थया, ते पछी राजसारंगधरजीए प्रतिपक्षीओना पराक्रमने तोडी पाडी सीकरीना राजवैभवनो अन्तिम उपभोग कर्यो.





## हाद्दा तरंग.



कुंडळीओ.

त्यागी गढ सीकरी तणो, महा भाग्य मकवाण, कृपालदेव नृपे कर्यु, पश्चिम मांहि प्रयाण; पश्चिम मांहि प्रयाण; पश्चिम मांहि प्रयाण, लाभ करनारं लेखी, कीर्ति गढमां गया, स्थान उत्तम अवरेखी; विन्न रहित द्वां वस्या, व्यास लिंगे सर्व सुभागी, कहुं असर ! ए कथा, यथामित विलंब त्यागी.

राज सारंगधरजीना कुमार कृषालदेवजीए पोतानो घणोखरो मुलक प्रवळ प्रतिपक्षीओना पराक्रमथी भेळाइ गयेलो जोइ लक्ष्मरेन वयारवा मांडयुं तथा राजच्योतिपने वोलावी पोतानी जन्मपत्रिका वतावी ग्रहदशा विषे पूल्युं. राजज्योतिषीए जन्मपत्रिका तथा ग्रह विगेर तपासी कशुं के कुपानाथ! आ धरतीथी आपनी लेणादेणी पूर्ण यह छे, हवे आपे वीजो काइ विचार निह करतां पिश्रममां जइ पराक्रम वताववातुं छे. पिश्रमधरामां आपतुं पराक्रम सफळ थशे एम ग्रह टपरथी जणाय छे. राजज्योतिषीनां वचनोने मान्य राखी कुमार कृपालदेवजीए उत्तम शक्त जोइ पिश्रमनी धरा तरफ प्रयाण करवा निश्रय करी तुरतमां शक्त- नक्ष्मास्त्रीने पोता पासे वोलाच्या. पंडिते आवी आज्ञीवचन आप्या पछी कृपालदेवजीए कहुं के पंडितराज! अमारे पिश्रमधराना विजयार्थे प्रयाण करवुं छे तो प्रयाण करतां पहेलां शुभाशुभ शक्तन आपना मुखधी सांमळवा मारी इच्छा छे जेथी ते सविस्तर कही संभळावो. कृपालदेवजीनी आज्ञाने माथे चढावी पंडितराज मुक्तकंठे वोल्या के पूर्व जन्ममां मनुष्योए जे शुभाशुभ कर्म कर्या होय तेना फळनुं प्रयाण समये शक्तन सूचन करे छे. ग्राम, वन, जळ, भूमि अने आकाञ्चमां रहेवा- वाळा जीव, दिवसमां अने रात्रीमां तेमज दिवस रात्रि वचेमां विचरवावाळा जीव शब्द, गमन, इसण अने उक्त, स्ती, पुरुप अथवा नपुंसक जणाइ आवे छे अर्थात् शक्तन समये ए जीवोना शब्द आदिथी स्ती छे के पुरुप छे के नपुंसक छे ए स्पष्ट जणाय छे; शक्तन समये स्ती

आदिनां दर्शन अने शब्द आदि थाय तेथी पण शक्तन देवावाळा जीवने स्त्री, पुरुष अथवा नपुंसक समजी लेवां. पृथक् जातिनी अनवस्थिाति हावान लीधे ए जीवोना स्वरुपमां स्त्री आदिनो भेद जाणी शकातो नथी, सामान्य लक्षणना उद्देशमां ए छे के जे पुष्ट, उंचा, विस्तीर्ण कांथवाळा, म्होटी ग्रीवावाळा, सुन्दर छातीवाळा, स्वल्प अने गंभीर शब्दवाळा तथा स्थिर पराक्रमवाळा जीव होय ते पुरुष, जेनां छाती, मस्तक तथा ग्रीवा न्हानां होय, मुख, पग अने पराक्रम छघु होय अने जे निरंतर शब्द वोले ते स्त्री; अने जे जीवोमां स्त्री तेमज पुरुप वन्नेना लक्षण मळतां होय तेने नपुंसक जाणवा. आ शक्तनना जीव क्या गाममां अने क्या अरण्यमां रहे छे ते लोकोथी जाणी लेवुं. मार्गमां पोता उपर शक्कनतुं फळ जोवुं, सेनामां राजाना उद्देशथी शक्कनतुं फळ जाणवुं, नगरमां देवताने शक्तनतुं फळ प्राप्त थाय छे, घणा मनुष्योनी साथे जे प्रधान मनुष्य हाय तेने शक्तनतुं फळ मळे छे, जो एमां कोइ पण मुख्य न होय अने सर्व सरखा होय तो जातिथी, विद्यार्थी तेमज अवस्थायी जे म्हे।टो होय तेने ते फळ पाप्त थाय छे. सूर्योद्ययी आरंभी एक पहर दिन चढया पर्यन्त इशानी दिशा मुक्तसूर्या, पूर्व दिशा पाप्तसूर्या अने आग्नेयी दिशा ऐष्यत्सूर्या हाय छै; ए रीते आठे प्रहरमां सूर्योदयथी आरंभी एक एक पहर पूर्व आदि दिशाओमां घूमे छे; सूर्य जे दिशाने छोडी आव्यो होय ते मुक्तसूर्या दिशा अंगारिणी, जेमां स्थित होय ते प्राप्तसूर्या दिशा दीप्ता अने जेमां सूर्य जवावाळो होय ते ऐष्चत्सूर्या दिशा धूमिता कहेवाय छे; वाकीनी पांच दिशाओ शान्ता होय छे. मुक्तसूर्यामां अशकुन थयुं होय तो तेतुं फळ मथग थइ गयेलुं जाणवुं, माप्तसूर्यामां अशकुन थाय तो तेनुं फळ तेज दिवसे मळे छे अने जो ऐप्यत्सूर्यामां अशकुन थाय तो तेनुं फळ आगळ उपर मळशे एम जाणवं.

अंगारिता आदि दिशाओथी पांचमी दिशानुं शुभ फळ त्रणे काळे सरखुं समनवुं अथित अंगारिताथी पांचमी दिशामां अशकुन थाय तो तेनुं फळ भूत, दीप्ताथी पांचमी दिशामां शुभ शकुन थाय तो तेनुं फळ वर्तमान अने धूमिताथी पांचमी दिशामां शुभ शकुन थाय तो तेनुं फळ भविष्य अर्थात् आगळ उपर मळशे एम जाणवुं. वाकीनी वे दिशाओना शुभाशुभ फळ समीप दिशाने अनुसार समजी छेवां.

जे शक्कन समीप अने नीम्न अर्थात् नीचा स्थानभां थाच तेतुं फळ शीघ्र तेमज जे शक्कन टूर अने उंचा स्थान पर थाय तेतुं फळ विलंवथी मळे छे, ए प्रमाणे स्थाननी दृद्धि अने उपघातथी पण फळ कही शकाय छे. अर्थात् जे द्वस आदि स्थान उपर ते शक्कन स्थित होय तेनी जो नित्य दृद्धिथती होच तो शक्कनतुं फळ ग्रुभ अने ते स्थाननो नित्य उपघात थतो होय तो शक्कनतुं फळ अशुभ समजवुं.

मुहूर्तदीप्त, नक्षत्रदीप्त, तिथिदीप्त, पवनदीप्त, अने सूर्यदीप्त, ए पांच प्रकारनां दीप्त शकु-न देवदीप्त कहेवाय छे तेमज ए पांचे उत्तरोत्तर वळवान छे. गमन, स्थिति, भाव, स्वर, अने चेष्ठा एना दीप्त थवाथी क्रियादीप्त थाय छे, ए दश प्रकारनां दीप्त शकुन छे.

ए रीतें शांत शक्चन पण मुहूर्त तिथि आदिना भेदथी दश प्रकारतुं थाय छे, जो ए शक्चन तृण अथवा फळ खानार होय तो सौम्य, मांस अने विष्ठादिक अग्रुचि पदार्थ खानार होय तो रौंद्र अने अन्न खानार होय तो मिश्र अर्थात् न सौम्च तेम न रौद्र (सामान्य ) समजवुं.

जे शक्कन हर्म्य, देवता आदिना महेल, ब्राह्मण अने गाय आदिनां मंगळ स्थान तेमज सुन्दर स्थानोमां स्थित होय, तेमज अमयुर क्षीरयुक्त अने फळ तथा पुष्प युक्त द्वक्षोपर स्थित होय ते शुभ जाणवां.

दिवाचर जीव दिवसे पर्वन उपर स्थित होय अने रात्रिचर जीव रात्रिमां जळनी समीपे स्थित होय तो वळवान समजवां, तेमज ए जीवोमां नपुंसकथी स्त्री अने स्त्रीथी पुरुष वळवान होय छे.

जे शक्तन देवावाळा जीव वेग, जाति, वळ, स्थान, हर्ष, सत्व अने स्वरथी युक्त पोतानी भूमिमां अनुलोम थइ स्थित होय ते वळवान अने वेग आदिथी हीन होय ते निर्वळ जाणवां.

कुककुट, हाथी, परिली मयूर, वंजुल, छिकर, सिंहनाद, कूटपूरी ए सर्व पूर्व दिशामां; शृगाल, उल्लक, हारीत, काक, चक्रवाक, रींछ, पिंगल ए सर्व जीव तेमज रोदन, आक्रंदन अने क्रूरशब्द दक्षिण दिशामां, गाय, शश, क्री।चपशी, लोमांश, हंस, उत्क्रांश, कार्पजल अने माजीर आदिजीव तेमज विवाह आदि जत्सव, वाजां, गीत अने हास्य पश्चिममां; शतपत्र, हरिण, मूपक, मृग, घोडा आदि एक खरी वाळां जीव; कोकिल, चाप, अने शल्यक ए सर्व जीव तेमज पुण्याह शब्द, घंटा अने शंखनो शब्द उत्तर दिशामां वळवान होय छे.

गाममां रहेवा वाळां शक्कन वनमां अने वनमां रहेवा वाळां शक्कन गाममां तेमज दिवसे विचरवा वाळा जीव रात्रिमां अने रात्रिए विचरवा वाळा दिवसमां होय ते। तेने स्वीकारवां न जोइए. जे शक्कनना जीव दृन्द्व अर्थात् स्त्रीपुरुपनां जोडां, रोगपीटित, भययुक्त, कलह करवानी इच्छा वाळा, मांसनी स्पृहावाळा अने नदीना सामा किनारा उपर स्थित होय तेमज ऋतुने वश थइ मस्त थइ रह्या होय तेनां शक्कन कयांइ पण लेवां नहि.

रे।हित, घोडा, वकरा, गर्द्भ, हरिण, उंट, मृग अने ससलां ए सर्व शिशिर ऋनुमां मस्त होवाथी ते दिवसोमां तेनां शक्कन निष्फळ थाय छे तेमज वसन्त ऋनुमां काक अने कोकिलानां शक्कन पण निष्फळ जाणवां.

भाद्रपदमां सूकर, श्वान अने द्वक आदिना, शरद्कर्नुमां जलजंतुओतुं भक्षण करनारा वक आदि गाय अने क्रौंच पक्षीनां तेपज श्रावण मासमां हाथी अने चातकनां शक्तन ग्रहण करवां नहि.

हेमन्त ऋतुमां व्याघ्न, रींछ, वांदरा, चित्ता, महिप, विलमां रहेवा वाळां नक्कल आदि अने वाळको विनाना मनुष्यो तेमज सर्व वाळकोनां शक्कन निष्फळ थाय छे.

पूर्व अने अग्नि कोणना मध्यना त्रणभागमां मदक्षिण क्रमथी कोशाध्यक्ष, अग्निजीवी अर्थात् सोनी तथा छहार आदि, अने तपस्त्री ए त्रण स्थित छे.

अग्नि कोण अने दक्षिण मध्यना त्रण भागमां क्रमथी शिल्पी, भिञ्चक अने नग्न स्त्री स्थित छे.

दक्षिण अने नैर्श्वत्य वच्चेना त्रण भागमां हाथी, गोवाळ अने धर्मना आश्रित पुरुष स्थित छे.

नैक्स्त्य अने पश्चिम वच्चेना त्रणभागमां क्रमथी उत्तम स्त्री, मस्ता स्त्री अने चोर स्थित छे. वायव्य अने पश्चिम वच्चेना त्रणभागमां क्रमथी शोंडिक, शाकुन अने हिंसक स्थित छे.

वायव्य अने उत्तर वच्चेना त्रणभागमां क्रमथी विषयातक, गायोना स्वामी अने इन्द्र- जाळ जाणवावाळा स्थित छे.

उत्तर अने इशान वच्चेना त्रणभागमां धनवान, दैवज्ञ अने माळी स्थित छे;

इशान अने पूर्वनी वच्चेना त्रण भागमां क्रमथी वैष्णव, चरक अने अश्वरक्षक स्थित छे; चोवीश भेद तो आ थया अने पूर्व आदि आठ दिशाओना आठ भेद मळवाथी कुल वत्रीश भेद थाय छे; राजा, राजकुमार, सेनावित, दूत, श्रेष्ठी, चर, ब्राह्मण अने हाथीओना अध्यक्ष ए पूर्व आदि आठ दिशाओमां क्रमथी स्थित छे अने पूर्व आदि चार दिशाओमां क्रमथी क्षत्रिय, वैज्य, शूद्र अने ब्राह्मण स्थित छे एम समजवुं.

चालता अथवा स्थित थएँला पुरुपने पूर्वोक्त वत्रीश दिग्विभागोमां जे दिग्विभागनी वच्चे रहेल शक्तनमो जीव शब्द करे ते दिवसे ते दिशामां जे प्रथम कोशाध्यक्ष आदि कहां तेनाथी समागम थाय छे

जे जीवोना स्वर भिन्न, भयंकर, दीन, पीढित. रुखा, क्षाम अने जर्जर होय ते अशुभ गणाय छे अने जे सहर्ष जीवोना स्वर शान्त होय ते शुभ जाणवाः

शिवा, ज्यामा, रला, छछुंदर, गृहिंगोधिका, सुकरी, कोकिला अने जे पक्षी पुरुष नामे होय ते सर्व प्रयाण करनार पुरुषनी डावी वाजुए होय तो ग्रुम जाणवां.

स्त्रीसंज्ञकपक्षी, भारतपक्षी, भवक, किप, श्रीकर्णपक्षी, छिक्कर, मयूर, श्रीकंडपक्षी, पिप्पीक पक्षी, रुरुमूग अने उपेन ए सर्व जमणी वाजुए होय तो शुभ छेखाय छे।

क्ष्वेद्या, आ स्फोटित, पुण्याहवाचननो ध्वनि, गीत, शंखनो शब्द, जळनो शब्द, तुरी ना-मना वाद्यनो ध्वनि, अने वेदपाटनो शब्द ए सर्व ढावी वाजु अने ते सिवायना शब्दो जमणी वाजु शुभ जाणवा, प्रयाण वखते मध्यम, षड्ज अने गांधार ए त्रण ग्राम तेमज पङ्ज, मध्यम, गांधार अने ऋषभ ए चार स्वर शुभ गणाय छे.

प्रयाण वखते भारद्वाज पक्षी, अज, मयूर, नकुछ अने चाष पक्षी ए सर्वना शब्द, नाम-ग्रहण तेमज दर्शन शुभ अने शरट आगळ आवे तो अशुभ फळ आपे छे.

प्रयाण समये जाहक, सर्प, शश, सूकर अने घो ए वधानां नाम लेवां शुभ छे, परंतु शब्द के दर्शन शुभ नथी; किप अने शिंछना शब्द तेपन दर्शन शुभ परंतु नाम लेवां ए शुभ नथी.

मृग, नकुल अने पक्षी एक त्रण तथा पांच आदि विषय होय अने डावी तरफणी आ-गळ थइ जमणी वाज़ आवे तो शुभ अने नकुल साहित चापपक्षी जमणी वाजुथी डावी वाज़ आवे तो शुभ लेखाय छे; केटलाएकनो एम मत छे के चाप अने नकुल अपरान्हमां डावी वाज़ आवे तो शुभ थाय छे, परंतु पूर्वाह्ममां अशुभ गणाय छे. छिक्कर कूटपुरी अने पिरली ए दिवसे दक्षिण तरफ आवे तो शुभ लेखाय छे. दाढवाळा श्वान शृगाल आदि तेपज विलमां रहेनारा ज्याहुडी अने नकुल आदि वाम-

भागमां आवेतो शुभ होय छे.

घोडा अने श्वेत रंगना पदार्थ पूर्वमां, ज्ञाव अने मांस दक्षिणमां, कन्या अने दिध पित्र-ममां तेमज गौ,ब्राह्मण अने साधु उत्तरमां ग्रुभ गणतां.

जे जाळथी पक्षी अने मत्स्य आदि पकडे अने श्वानथी मृग आदिने मारे ए वन्ने पुरुष पूर्वमां, शस्त्र अने घातकी पुरुष दक्षिणमां, मद्य अने नपुंसक पश्चिममां तेमज दुष्ठ पुरुष, आसन अने इळ उत्तरमां अशुभ लेखाय छे.

कम, कोइ वंधुआदिथी समागम, युद्ध, गृहमवेश, खोवाएली वस्तुने गोतवी अने वधी वातोमां यात्राथी उलटां शक्कन लेवां जोइए अथीत् यात्रामां जे वाम शक्कन शुभ कहां ते आ कार्योमां दक्षिण लेवां इत्यादि. आमां जे कांइ विशेष छे ते पण हुं कहुं छुं.

दिवस वखते हरिण, रुरुषृग, अने किपनां शक्कन प्रयाणनी माफकज ग्रहण करवां जोइए अर्थात् विपरीत ग्रहण न करवां, दिवसना प्रथम भागमां चाप, वंज्ञल अने कुक्कुटनां शक्कन यात्रा तुल्प लेवां, रात्रीना पाछला भागमां नष्ट्रक, उल्ह्रक अने पिंगलानां शक्कन पण यात्रा समानज जोवां, सर्व स्त्रीओनोज साथ होय तो शक्कन उलटां जोवां जोइए.

राजाना दर्शन माटे राजगृहमां प्रवेश करती वखते प्रयाण तुल्यन शक्तन जोवां, पर्वत अने वनमां प्रवेश करती वखते तेमन नदी उत्तरतां यात्रामां जे शक्तन हावा जमणा कह्यां छे ते अग्र भागमां अने पृष्टभागमां क्रमथी होय तो शुभ फळ आपे छे,

प्रयाण करनार पुरुषने वे शकुन परिधसंज्ञक होय अर्थात् वन्ने तरफ स्थित होय अने पूर्वोक्त रीतिथी क्रियादीत होय तो यात्रा करवा वाळानो नाश करनार नीवडे छे, अने एज वेड शकुन जो यथाभाग अर्थात् वामभागनां वामभागे अने दक्षिण भागना दक्षिण भागे स्थित होच तेमज ए शकुन शान्त शब्द अने चेष्टाथी युक्त होय तो प्रयाण करनार पुरुषनां सर्व कार्य सिद्ध करे छे.

एक जातिनां वे शकुन शांत शब्द अने चेष्ठाथी युक्त थइ चात्रा करवावाळानी वन्ने तरफ स्थित होयतों शकुनद्वार थाय छे. एक राकुन तो यात्रानी आङ्गा आपे अने वीजुंशकुन प्रयाण करतां रोके अर्थात् अराभ होयतो ते यात्रा करवावाळाने माटे विरोध संज्ञक शकुन अराभ लेखाय छे; अथवा ए वैमां जे वळवान होय तेतुं ग्रहण करवुं जोइए.

पथम शक्कन प्राविशिक अर्थात् प्रवेश समये जेवुं शुभ शक्कन कहुं छे तेवुं होय अने प-छीथी तेज शक्कन प्रास्थानिक अर्थात् प्रयाण वखते जेवुं शुभ कहुं छे तेवुं थइ जायतो यात्रा कर-वावाळाना तमाम कार्यनी सुखयी सिद्धि करे छे, प्रवेश वखते एथी विपरीत होय तो पण कार्य-सिद्धि थाय छे.

प्रयाण समये जे शक्कन प्रथम शुभ होय ते फरी अशुभ थइ जाय तो प्रयाण करनार पुरुषतुं शत्रुना हाथथी मृत्यु, शस्त्रकलह अने रोग थाय ए उक्त शक्कन सूचने छे.

जे शकुन अमदक्षिण अने दीप्त होय ते भयतुं सूचन करे छे, जे कार्यना आरंभमां दीप्त अकुन होय ने कार्यमां आखुं वर्ष भय रहा करे छे.

स्थानदीन इष्टनो अने चेष्टादीप्त शक्कन कर्मनो भय उपजाने छे.

मेयोना शब्दथी दीप्त शक्कन थाय तो पवनथी भय उपजे छे अने वृत्रे संध्याओमां दीप्त शक्कन थाय तो ते शस्त्रथी भय करनार वने छे.

चिता, केश अने कपाल उपर शक्कन स्थित होय तो क्रमथी मृत्यु, बंधन अने अने वध करे छे, कांटावाळां दक्ष, काष्ठ अने भस्म उपर रहेल शक्कन क्रमथी कलह, परिश्रम अने दुःख आपे छे, निःसार अर्थात् सार वगरना पापाण उपर रहेल अप्रसिद्धि अथवा भय करे छे आ फळ दीप्त शक्कनोतुं छे, परंतु ए स्थानोमां शान्त शक्कन स्थित होयतो याप्य अर्थात् स्वल्य फळ आपे छे.

विष्ठा करतुं शक्कन कार्यसिद्धि नथी करतुं अने भोजन करतुं शकुन कार्यनी सिद्धि करे छे, शक्कन ज्यां वेदुं होय त्यांथी शब्द करतुं गमन करे तो प्रयाणनी अनुमित आपे छे एम सम-जबुं अने छोटी फरी एज स्थान पर आबी जाय तो कोइनुं आगमन सूचवे छे.

स्वरथी दीप्त शक्तन होय तो कलह अने स्थानथी दीप्त शक्तन होय तो विग्रह थाय छे, शक्तन मथम उंचा स्वरथी वोलो पाछळथी नीचे स्वरे वोले तो प्रयाण करनारने चोरी थाय छे. दीप्त शक्कन निरंतर एक स्थाने वोलतुं रहे तो सात दिवसमां ग्रापनो विनाश थाय छे, वे महिनामां नगरनो, त्रण महिनामां देशनो अने वार महिनामां राजानो नाश करे छे.

सपे, मूपक, मार्जार अने मत्स्योने छोडी वीजा तमाम जीव जो पोतानी जातिना जीवतुं मांस भक्षण करे तो दुष्काळ पडे छे.

सर्व जीव अन्य जातिनी योनिमां मैथुन करे तो देशना नाग थाय छे ते खबरनी उप्ततिन ने तथा मनुष्योनां अन्य योनिमां मैथुनने छोडीने अर्थात् खबारनी उप्तत्तिने माटे घोडीथी गर्दभनुं मैथुन थाय छे अने मनुष्य पण कामपीडित थइ क्वचित् घोडी आदिथी मैथुन करे छे ए उत्पात छेखातो नथी.

शक्तन पगनी समीपे आबी जाय तो बंधन, उरुओनी समीपे आबी जाय तो बात अने मस्तकतुं अतिक्रमण करे तो भय थाय छे, जलपान करतुं शक्तन दिखाय तो चोरी, मांसखातुं शक्तन शरीरमां क्षत अने अन्नखातुं शक्तन द्रष्टिए पडे तो गृह अथीत् कोइ बंधुथी समागम थाय छे.

जो शकुन दीप्त दिशामां स्थित होय तो कोइ क्रूरनी साथे मनुष्यनुं आगमन, धूमिता दिशामां स्थित होय तो तीव्रतर दोषथी दुष्ट पुरुष सहित आगमन, शान्ता दिशामां स्थित होयतो प्रधान राजानुं हत्तांत कहेवावाळा सहित पुरुषनुं आगमन अने जो अंगारिता दिशामां शकुन स्थित होय तो दीर्घ काळ सहित पुरुषनुं आगमन थाय छे.

जो शकुन कांइ भक्ष्य आदि द्रव्ययुक्त अने वळवान होयतो ते दिवसे द्रव्य सहित मतु-ज्यनुं आगमन थाय छे; सौम्य शकुन पण जो नीचे द्रष्टि करी रह्युं होयतो अति दारुण द्रतानत म-गटे छे अर्थात् गमे ते उपद्रय करे छे.

दीप्त शकुन विदिशामां स्थित होय अने डावी वाजु रहेछुं वीजुं शकुन तेनी पाछळ शब्द करेतो ते दिशामां प्रसिद्ध जन्मवाळा पुरुषथी स्त्रीनी प्राप्ति थाय छे.

शान्त शकुनथी पांचमी दिशामां स्थित दीप्त शकुन तेनी पाछळ शब्द करतुं होयतो विजय अथवा ते दिशाना मनुष्यनुं आगमन अने एथी विपरीत होयतो दोष करे छे.

मध्यनुं शकुन वाम भागमां रहेला शकुनथी विरुत अर्थात् वाम भागनुं शकुन एनी पाछळ वोलेतो पोताना पक्षथी अने मध्यनुं शकुन दक्षिण भागना शकुनथी विरुत होयतो श्रृतथी भय थाय छे. जो ए त्रणे एकी वखते शब्द करे तो मरणने सूचवे छे एम जाणवुं.

हसना अग्र, मध्य अने मूळमां शकुन स्थित होय तो क्रमथी हाथीपर, घोडापर अने स्थ उपर चढेला मतुष्पनं, लांबी वस्तुपर शकुन स्थित होयतो मतुष्य उपर चडेला मतुष्पनं; कमलआद्रि उपर शकुन स्थित होयतो नावपर चढेला मतुष्यतं; अने जेनो अग्रभाग कापेल होय एवी वस्तु-पर शकुन स्थित होय तो पालखी उपर चढेला मतुष्यतं आगमन थाय छे.

शकुन उंचा स्थान पर स्थित होय तो शकर उपर चढेला मनुष्यनुं, छायामां वेठेल होय तो छत्रथीयुस्त मनुष्यनुं आगमन थाय छे; पूर्व दिशामां शकुन स्थित होवाथी शुभाशुभ फळ जे कोइनुं आगमन अथवा कोइथी संयोग कहाो ते सर्व एक दिवसमां थाय छे, शकुन दिश-णमां स्थित होय तो तेनुं फळ त्रण दिवसे, पश्चिममां होय तो पांच दिवसे अने उत्तरमां स्थित होय तो सात दिवसमां एनुं फळ जणाय छे; एवी ज रीते अग्नि आदि चारे कोणमां स्थित शकु-ननां फळपण क्रमथी एक त्रण पांच अने सात दिवसमां थाय छे.

पूर्व आदि आठे दिशाओना क्रमथी इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, सोम अने शिव ए आठ स्वामी छे; पूर्व आदि चार दिशा पुरुष अने आग्नेची आदि चारविदिशा स्त्री छे.

वत्रीश भागे वेचायेल दिक्चक्रमां शक्चन होय तो क्रमथी तरु आदि उपर कार्योनों लेख थाय छे अर्थात् पूर्वना भागमां शक्चन स्थित होय तो हक्षनी त्वचा अथवा पत्र उपर, अग्नि-कोणमां होय तो तालपत्र उपर, दक्षिणमां होय तो वांसनी त्वचा आदि उपर, नैऋत्यमां होय तो वस्त्र उपर, पश्चिममां होय तो जळथी उत्पन्न थएला कमल आदिना पत्र उपर, वायच्य कोणमां होय तो शरकांड उपर, उत्तरमां चर्म उपर अने इशान कोणमां शक्चन स्थित होयं तो पट्ट उपर कार्यनो शुभाशुभ लेख थाय छे;

पूर्वमां जे शक्तन होय तेनुं शुभाशुभ फळ व्यायामना स्थानमां, अग्निकोणना शकुननुं फळ अग्निनी समीपे, दक्षिणना शकुननुं फळ निक्क्तित अर्थात् कोइनो शब्द सांभळीए तेनी समीपे, नेऋत्यना शकुननुं फळ कल्हना स्थानमां, पश्चिमना शक्तननुं फळ जळनी समीपे, वायच्य कोणमां शक्तननुं फळ निगडनी समीपे, उत्तरना शक्तननुं फळ वेदपाठना स्थानमां अने इशान कोणना शक्तननुं फळ ज्यां गायाना शब्द थता होय ते स्थानमां थाय छे;

रक्त, पीत, कृष्ण अने श्वेत ए पूर्व आदि चार दिश्वाओना तथा रक्तपीत, पीतकृष्ण,

कृष्णश्वेत अने श्वेतरक्त मळी आययी आदि चार विदिशाओना रंग छे.

ध्वन, अग्निधी दम्ध, स्मशान, गुफा, जळ, पर्वत, यज्ञस्थान अने घोष ए आठ पूर्व आदि दिशाओनां चिन्ह छे; पूर्व आदि दिशाओमां शकुन थवाधी ए स्थानोमां संयोग अथवा भय थाय छे, बीजी पण स्थान वश्यी कल्पना करी लेबी अर्थात् शुभ शकुननुं फळ शुभ स्थानमां अने अशुभ शकुननुं फळ अशुभ स्थानमां थाय छे.

ईशान कोणमां म्हाटी स्त्री अने कुमारी, अग्नि कोणमां अंगहीन स्त्री अने दुर्गन्य युक्त स्त्री, नैर्ऋत्य कोणमां लीलां वस्त्रो वाळी स्त्री अने खराव स्त्री, तेमज वायव्य कोणमां लांबी स्त्री अने विधवा स्त्री छे, जे दिशामां शकुन होय ते दिशानी स्त्रीथी संयोग थाय छे अथवा ते स्त्री चिन्ता उत्पन्न करे छे.

मश्र समये शकुन पूर्व आदि दिशाओमां स्थित होय तो क्रवथी चांदी, मुवर्ण, रोगी, स्त्री, पान करवानो पदार्थ, वाहन, यह अने गायोना समुहनी पश्च करवावाळा पुरुपने चिन्ता थाय छे; तेमल वह, रक्त वर्णतुं द्रक्ष, लोधनुं द्रक्ष, कीचक, आम्र, खदिरनुं हुक्ष, विश्व द्रक्ष अने अर्जुन द्रक्ष ए आठ द्रक्ष आठ दिशाओना छे अर्थात् जे दिशामां शकुन होय ते द्रक्षनी नीचे चांदी सुवर्ण आदिनो लाभ अथवा हानि शकुनने अनुसार थाय छे.

शान्त पूर्व दिशामां शब्द करतुं शक्तन राजाना आश्रित पुरुषनुं आगमन तथा पूजा अने मणि,रत्न तेमज सुवर्ण आदि द्रव्यनी माप्ति कहे छे; शुभ शक्तन होय तो पूर्ण फळ, मध्यम होय तो मध्यम फळ अने अशुभ होय तो किंचित फळ करे छे.

पूर्व दिशाना त्रण भागोमां आ मथम भागतुं फळ कहुं, हवे वीजा भागमां शकुन होय तो सुर्वणनी प्राप्ति अने वांच्छित कार्यनी सिद्धि तेमज त्रीजा भागमां शकुन होय तो शक्ष, धन अने सुपारीनी प्राप्ति थाय छे, चेथा भागमां शकुन होय तो पोताने िय ब्राह्मणनां अने अग्नि होत्रीनां दर्शन थाय; अग्नि कोणमां शकुन होय तो पोताना अनुजीवी सेवेक आदि अने भिश्चक द्रिष्टिए पढे तथा सुवर्णनी अने लोहनी प्राप्ति थाय.

दक्षिण दिशाना मथम भागमां शकुन होयतो राजपुत्रनुं दर्शन, कार्य सिद्धि अने इष्ट वस्तुनी प्राप्ति; बीजा भागमां शकुन होयतो स्त्री अने धर्मनी प्राप्ति तथा सरसव अने जवनो लाभ थाय छे. कोणयी चोथा खंडमां शक्कन होय तो प्रथम नष्ट थयेल द्रव्यनी फरी प्राप्ति थाय छे अने प्रयाण करनार पुरुपेन थोडां घणां फळ मळे छे.

सम दक्षिण भागमां शक्कन होय तो चात्रानी सिद्धि तेमज मयूर, महिप अने कुक्कुटनी प्राप्ति थाय छे; दक्षिणधी वीजा भागमां शक्कन होय तो चारणोनो संग, शुभ अने प्रीति थाय छे; त्रीजा भागमां शक्कन होय तो कार्यसिद्धि, कैवर्तथी समागम अने मच्छी तेमज तेतर आदिनी प्राप्ति थाय; चोथा भागमां शक्कन होय तो सन्यासीनुं दर्शन तथा पकवान अने फळनो लाभ थाय छे;

नैर्ऋत्य कोणमां शकुन होय तो स्त्रीनो लाभ तेमज घोडा, भूपण, दूत अने लेखनी माप्ति धाय छे; नैर्ऋत्यना आगला भागमां शकुन होयतो चर्म अने चमारनां दर्शन अने चाम- डाथी वनेल वस्तुनो लाभ थाय छे; नैर्ऋत्यथी त्रीजा भागमां शकुन होयतो किप, भिक्षुक अने अमणतुं दर्शन तथा नैर्ऋत्य कोणथी चोथा भागमां शकुन होयतो फल, पुष्प अने हाथी दांतथी महेली वस्तुनी प्राप्ति थाय छे.

पश्चिममां शकुन होयतो समुद्रथी उत्पन्न थयेछां रतन, वैदूर्य, अने मणिमय पदार्थोनो छाम थाय छे; पश्चिमथी आगला भागमां शकुन होयतो भील, व्याध अने चोरनो संग तेमज मां-सनो लाभ थाय छे; तेनाथी आगला भागमां शकुन होयतो बातनी व्याधिवाळानां दर्शन तेमज चंदन अने अगरनी प्राप्ति थाय छे; एनाथी पण आगळना भागमां शकुन होयतो शस्त्र अने पु-स्तकनो लाभ तेमज शस्त्र अने पुस्तकद्वित्त करवावाळाथी समागम थाय छे.

वायन्यमां शकुन होयते। समुद्रफीण, चामर अने तेना वस्त्रोनी प्राप्ति तथा कायस्थनां दर्शन थाय छे,

वायन्यथी आगला भागमां शक्तन होयतो मृत्तिकाथी वनेली वस्तुनो लाभ तेमज वैतालि क अने डिंडिभांडनां दर्शन थाय छे; जेमां पटह, मृदंग अने करारनामे वाद्य एक साथे वजाव-वामां आवे ते वाद्यने डिंडिभांड कहे छे.

वायन्य कोणना त्रीजा भागमां शक्तन होयतो मित्रथी समागम अने धननी प्राप्ति थाय छे; एथी आगला भागमां शक्तन होयतो वस्त्र अने अश्वनी प्राप्ति तेमज इष्ट मित्रथी समागम थाय छे. उत्तर दिशामां शकुन होयतो दिध, अक्षत अने लाजानो लाभ तेमज ब्राह्मणनां द्रीन थाय छे, उत्तरथी पहेला भागमां शकुन होचतो धननी प्राप्ति अने सार्थवाहनां दर्शन थाय छे. एथी आगला भागमां शकुन होयतो वेग्या, वालक अने दासथी समागम तेमज सुकायेलां पुष्प अने फलनो लाभ थाय छे; एथी पण आगला भागमां शकुन होयतो चित्र वनाववावालानां दर्शन अने चित्रवस्त्रनी प्राप्ति थाय छे;

इशान कोणमां शक्कन होयतो देवलनो समागम तेमज धान्य, रत्न अने पशुनो लाभ थाय छे.

पूर्व दिशाना पहेला भागमां शक्तन होयता वस्त्रनी प्राप्ति अने व्यभिचारिणि स्त्रीथी समान् गम थाय छे, एथी पण आगला भागमां शक्तन होयतो रजकथी समागम अने जलधी उत्पन्न ध-एला द्रव्योने। लाभ थाय छे; एथी पण आगला भागमां शक्तन होयतो हाथीथी आजीविका च-लावनारनो समागम तेमज हाथी अने घोडानो लाभ थाय छे.

दिग्चक्रना वत्रीश भाग कह्या तेनी वच्चे आठ अर अने एक नाभि कल्पी तेना मध्यमां रहेलां शक्कननां फळ नव प्रकारथी विचारवां जोड्ए.

शकुन नाभिमां स्थित होय तो वन्यु अने मित्रोथी समागम तेमज उत्तम तृष्टि, पूर्व भागना अर उपर शकुन स्थित होयतो लाल रेशमना वस्त्रनी प्राप्ति अने राजायी समागम थाय छे;

अग्नि कोणना अर उपर शकुत होयतो कौछिक ,तसा, पारिकम, अन्न अने सूतनो समागम तेमज कौछिक आदिनां वनावेछ वस्त्र आदिनो अथवा अन्वनो छाभ थाय छे.

नेमि भाग अने नाभिभागने समजी दक्षिणना अर उपर शक्तन होयतो धर्मात्मा मनुष्या-थी समागम अने धर्मनो लाभ थाय छे;

नैर्ऋत्यमां शकुन होवायी वळदथी क्रीडा करवावाळा अने कापालिकथी समागम तेमज वळदनो लाभ थाय छे अने अडद, कळथी आदिनुं भोजन मळे छे;

पश्चिम दिशाना अर उपर शक्चन स्थित होयतो खेडूतथी समागम तेमज समुद्रधी उत्पन्न थएल द्रव्यनसार, काचफल अने मधनो लाभ थाय छे.

वायव्य कोणना अर उपर शक्कन होयतो भार उठाववानाळा, तक्षा अने भिश्चकनो समा-गम तेमज तिलकदृक्षनां पुष्प, नागपुष्प अने पुनागपुष्पनो लाभ थाच छे. शान्त उत्तर दिशाना अर उपर शकुन होयतो धननो छाभ तेमन वैष्णव साथे अने पीळा रंगनां वस्त्रो साथे समागम थाय छे.

इशान कोणना अर उपर शकुन होयतो व्रतवाळी स्त्री नजरे पडे छे अने लोह, काळां वस्त्र अने वजाववानी घंटानो लाभ थाय छे.

दक्षिण दिशाना अष्टमांशमां, पश्चिममां, नैर्ऋत्य कोणथी आरंभी वीजा, छटा, त्रीजा सातमा अने आठमा अप्टमांशमां तेमज उत्तरमां वीजां अप्टमांशमां शांत शकुन होयते। द्विंगंत्रों मध्यम फळ देनारी थाय छे अथात यात्रा ग्रुभ थती नथी तेम अशुभ पण थती नथीः अने शेप भागोमां शकुन होयतो यात्रा घणीज शुभ थाय छे; मध्यमां नाभिना छअरा उपर शकुन होयतो शुभ फळ देनारी अने वायच्य तेमज नैर्ऋत्य कोणमां अर उपर शकुन होयतो होश देवावाळी यात्रा थाय छे; आ फळ शान्त दिशाओनुं कहुं, हवे दीप्त दिशाओनुं कहुं छुं ते अवण करो.

पूर्व दिशामा शकुन होयतो राजाधी भय अने शत्रुं आधी समागम थाय छे; पूर्वना आगला भागमां शकुन होयतो सुवर्णनो नाश अने सोनीधी भय; तेमज त्रीजा भागमां शकुन होयतो सन्ने क्षय, कलह अने शक्तनो कोप थाय छे; पूर्वना चोषा भागमां शकुन होयतो अग्निनो भय, अग्नि कोणमां शकुन होयतो चोरोधी भय अने अग्निकोणना वीजा भागमां शकुन होय तो धननो क्षय तेमज राजपुत्रतुं मृत्यु थाय छे; अग्नि कोणना त्रीजा भागमां शकुन होयतो स्त्रीना गर्भनो नाश, चोषा भागमां होयतो हैरण्यक आदि अने कारुकनो नाश तेमज शक्तकोप, पांचमा भागमां शकुन होयतो राजाधी भय अने कोलेरा आदिधी मरण पामेला पुरुषतुं दर्शन; छहा भागमां शकुन होयतो गांधर्व अने ढोम्ब लोकोधी भच; सातमा भागमां दीप्त शकुन होयतो ढीमर अने शाकुनिकथी भय तेमज आठमा भागमां शकुन होयतो भोजननो नाश अने निर्ग्रन्थधी भय धाय छे;

निऋत्य कोणमां शक्चन थाय तो कलह, रुधिरस्नाव अने संप्राम थाय छे;

पश्चिमना प्रथम भागमां शक्चन होय तो चामडाथी वनेली वस्तुनो नाश अने चमारोथी भय; वीजा भागमां शक्चन होय तो सन्यासी अने श्रमणयो भय अने एथी आगला भागमां होय तो उप वासथी भय थाय छे. पश्चिममां शक्चन होय तो वर्षानो भय, एथी आगलना भागमां शक्चन होय तो खान अने चोर लोकोनो भच, एथी आगला भागमां शक्चन होयतो वातन्याविधी पीडाता पुरुपनो नाश अने एथी पण आगला भागमां शक्तन होयतो शस्त्र तेमज पुस्तकथी आजीविका चलावनारांओथी भय थाय छे.

वायव्य कोणमां शक्कन होय तो पुस्तकनो नाग, वीजा भागमां शक्कन होय तो विष अने एथी वायुनो भय, एथी आगला भागमां शक्कन होय तो धननो नाग अने मित्रोथी कलह अने एथी वीजा भागमां शक्कन होय तो अश्वनुं मृत्यु अने पुरोहितनो भय थाय छे.

उत्तरमां शकुन होय तो गायोतुं हरण अने शक्षथी घात, एथी बीजा भागमां शकुन होय तो सार्थ अने धननो नाश, एथी समीपना भागमां शकुन होय तो खानथी १ अने ब्रात्य, दिज, दास तथा वेजचाथी पण भय थाय छे; जे ब्राह्मणने उपनयनादि संस्कार है येथो होय तेने ब्रात्य कहे छे.

इशान कोणनी समीपे शकुन होय तो चित्र वस्त्रो अने चित्रकारयी भय याय छै; उशान कोणमां शकुन होय तो अग्निनो भय अने जत्तम स्त्रीओने दूपण लागे;

पूर्व दिशामां इशान कोणनी समीपे शकुन होय तो दुःखर्ना उत्पत्ति अ ने स्नीतुं मृत्युः एथी आगला भागमां शकुन होय तो धोवी अने काच्छिकथी भय थाय छेः

वत्रीश थागमां वेचाएल दिग्चक्रनी समाप्ति उपर शकुन होय तो हाथीवा हार्थी भय अने हाथीनुं मृत्यु थाय छे.

मध्यमां पूर्वना अर उपर दी हा शकुन होय तो भार्यातुं मृत्यु निपजे है

अग्निकोणना अर उपर दीप्त शकुन होय तो शक्तकोप अने अग्निकोप ते न अश्वतुं मरण अने कारीगरोथी भय थाय छे, दक्षिणमां शकुन होय तो धर्मनो नाश, नैर्ऋल नोणमां शकुन होय तो आग्न, अवस्कंद, चोर अने धूर्तथी मृत्यु; पश्चिमभागना अर उपर दीप्त शकुन होय तो काम करवावाळाओधी भय, वायव्य कोणना अर उपर शकुन होय तो गर्दभ अने उंटोतुं मृत्यु, अने एज कोणमां शकुन होवाथी मनुष्योने विपृचिका अने विपथी (भय; उत्तर दिशामां शकुन होय तो धननो नाश अने बाह्मणोने पीडा, इशान कोणमां शकुन होय तो मनने संताप तेमज ग्रामीण अने गोवाळोथी पीडा अने नाभि उपर दीप्त शकुन होय तो यात्रा करवावाळातुं ज मृत्यु थाय छे.

पोतकी, क्येन, शहान्न, वंजुल, मयूर, श्रीकर्ण, चक्रवाक, चाप, अंडीरक, खंजन, शुक, काक,

## प्रचोदयाम्यहं यत्त्वां तन्मेव्याख्यातुमहिसि । स्वचेष्टितेन कल्याणि, यथा वेद्यि निराकुलस् ॥

आ मंत्रो एवा स्वरथी भणवा जोइए के जे पिंगला श्रवण करे, मंत्रो भणी रहा वाद हुस उपर रहेळ पिंगला जो " विरित्विरिल्ज " एवो ज्ञाब्द करे तो कार्यतिष्ठि, " दिशिकार " अथवा "कुचाकुच " एवो ज्ञाब्द बोले तो अति व्याकुळता अने जो कांइ पण ज्ञाब्द न बोले अर्थात् मौन रहेतो अभिष्ट कार्यनी सिद्धि थाय छे; वीजां विशेष फळ पूर्वोक्त वत्रीज्ञ दिग्विभागो अनुसार जाणवां; पिंगला उत्तम ज्ञाखा उपर वेठी होय तो उत्तम फळ, रध्यम ज्ञाखा उपर वेठी होय तो नीच फळ करे छे.

गृहगोधिकातुं फळ वत्रीश भागोगां वेचायेला दिक्चिक अने मध्य भागना अनुसार जाणवुं अथीत् जो शांत दिशामां स्थित गरोळी मधुर शब्द वोले तो शुभ अने दीप्त दिशामां स्थित थइ दीप्त शब्द करेतो अशुभ लेखाच छे; छछुंदर जो चिच्चिड एवो शब्द वोले तो दीप्त अने तित्तिड एवो शब्द वोले तो पूर्ण अर्थात् शुभ होय छे.

मतुष्य, हाथी, घोडा, घट, पर्याण, वड आदि शीरयुक्त दृक्ष, इंटोनो ढगलो, छत्र, शय्या, आसन, सांवेल्ल, ध्वन, चामर, लीली दुर्वायुक्त स्थल अथवा पुष्पोथी युक्त स्थान एमांथी गमें तेना उपर पिशाव करी खान प्रयाण करवावाळा पुरुषनी आगळ चाले तो कार्यसिद्धि थाय छे. तेमज लीला छाण उपर पिशाव करी चाले तो मिष्ट भोजन अने सुकेलां छाण उपर पिशाव करी खाने लो सिद्ध भोजन अने सुकेलां छाण उपर पिशाव करी खाने यात्रालु में छे.

जो श्वान विषद्वक्ष, कांटावाळां द्वक्ष, काष्ट्र, पापाण, शुष्कद्वक्ष, हाडकुं अने स्मशान एमांथी हरकोइ स्थान उपर पिशाव करी अथवा एने पगोथी ताडन करी यात्राळु पुरुषनी आगळ चाले तो अशुभ सूचवे छे; शय्या अने कुंभार आदिनां वनावेलां निवन अने निह फूटेलां पात्रो उपर पिशाव करे तो कन्याने तथा पुरातन पात्रोपर पिशाव करे तो यात्राळु पुरुपनी स्त्रीने दूपित करे छे; पगरखांनुं पण एन फळ छे. अर्थात् निवन जोडापर पिशाव करे तो कन्याने अने जुना जोडापर पिशाव करे तो यात्राळुनी पत्नीने दृषित वनावे छे.

जो गायना उपर पिशाव करी श्वान यात्राछनी आगळ चाले तो वर्णसंकरनी उत्पत्ति करे छे. मुखमां पगरखुं उपाडी आकाश भणी मुख राखी श्वान यात्राछनी समीपे स्थित होय तो कार्यसिद्धि थाय छे;

जो श्वान यात्राळु पुरुपनी समीपे मुखमां मांस भरी स्थित थाय तो धननी प्राप्ति, लीछुं हाड कुं मुखमां लड़ आवे तो शुभ, वेंळ नुं लाक हुं मुखमां लड़ आवे तो यात्राळु कुं मृत्यु; बुझावेछुं वळे छो का हुं मुखमां लड़ आवे तो उपद्रव, पुरुपना हाथपग आदि अंग मुखमां उठावी लावे तो भूमिनो लाभ अने वस्त अथवा वस्त्रनो कडको आदि मुखमां लड़ आवे तो विपत्ति थाय छे.

केटलाएकनो एम मत छे के जो श्वान मुख्यमां वस्त्र लड आवे तो शुभ, मुकुं हाडकुं लड घरमां प्रवेश करे तो ते घरमां प्रधान मनुष्यनुं मृत्यु अने लोडानी सांकल, मूर्की वेल तेमज वरत्रा आदि मुख्यमां लड् श्वान यात्राळुनी समीपे आवे छे तो बंधन थाय छे.

जो श्वान यात्राळुना पग चाटे अथवा कान फफडावतो उपर आवे तो ते यात्राळुने विघ्न थाय छे, श्वान मार्ग रोकी वेसे अथवा पोतानुं अंग खंजोळे तोंपण यात्राळुने विरोध करे छे, जो श्वान पग उंचो करे तो सदा दोपरुप समजवो.

एक अथवा घणा श्वान एकटा छइ सूर्ये।दय समये ग्रामनी वच्चे सूर्य तरफ मुख राखी रुदन करे तो तुरतज ग्रामनो स्वामी वीजो थाय छे.

अग्नि कोणमां स्थित श्वान सूर्यनी तरफ मुख राखी रुदन करे तो तुरतज चोरोथी अथवा अग्निथी भय उपने छे; मध्याह समये सूर्य भणी मुख करी श्वान रुदन करे तो अग्निनो भय अने मृत्यु सूचवे छे; मध्यान्ह पछी सूर्य भणी मुख राखी रुदन करे तो नेमां रुधिर वहे एवं युद्ध थाय छे.

सूर्यास्त समये सूर्य भणी मुख करी श्वान रुदन करेतो तुरतज खेती करवावाळाओने भय आपे छे; प्रदोष समये अग्निकोण तरफ मुख राखी श्वान रुदन करे तो पवनथी अने चोरथी भय थाय छे.

अर्ध रात्रिने वखते उत्तर तरफ मुख राखी श्वान रुदन करे तो ब्राह्मणोने पीडा अने गायोनुं हरण सूचवे छे; रात्रिनी समाप्ति वखते इशान कोण तरफ मुख राखी रुदन करे तो कन्याने दूपण, अग्निनो भय अने स्त्रीओनो गर्भपात थाय छे.

तृणोना ढगला उपर, प्रासाद उपर अशवा उत्तम घर उपर वेसी श्वान उंचा स्वर्थी

वर्षाऋतुमां वोले तो प्रचंड वर्षा थवातुं सूचवे छे. जो वर्षाऋतुने छोडी वीजी ऋतुमां उपर प्रमाणे शब्द करे तो मृत्यु, अग्नि अने रोगधी भय थाय छे.

वर्शऋतुमां वर्शनो अभाव थइ रह्यो होय ए वरतते श्वान जळनी वच्चे प्रवेश करी वारं-वार परपावर्त रेचकोथी युक्त जणाय अथवा जळने कंपावता जळपान करे तो वार दिवसनी अंदर वर्षा थाय छे; एक पार्श्वने वदलाबी फरी व्यत्ययथी एज पार्श्वपर आववुं तेने प्रत्यावर्त रेचक कहे छे.

नरना द्वारनी डेळी उपर पोतातुं शिर अने वाहेर श्वरीर राखी श्वान घरना स्वामीनी भागी तरफ द्विष्टि करी रुदन करे तो तेने रोग थाय छे तेपज घरनी अंदर श्वरीर अने वाहेर मुख राखी रुदन करे तो ते स्त्री व्यभिचारिणी छे एम सूचन करे छे;

श्वान घरनी भींतने खोदे तो खानिक भय, गोष्ठने खोदे तो गायोतं हरण अने ज्यां धान्य धाय ते भूमिने खोदे तो धान्यनो लाभ थाय छे.

श्वाननी एक आंख आंसुथी भरी होय, द्रष्टि दीन होय अने ते थोड़ं भे।जन करे तो जे घरमां ए रहेतो होय ते घरमां दु:ख उपजावे छे.

म्वान गायोंनी साथे क्रीडा करे तो सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य अने हर्वने सूचवे छे;

श्वान वाम जानुने छुंचे तो धननो लाभ, दक्षिण जानुने छुंचे तो स्त्रीओनी साथे कल्रह, वाम उरुने छुंचे तो इन्द्रियोना विषयोनो उपभोग अने जो दक्षिण उरुने छुंचे तो इष्ट पित्रोथी विरोध थाय छे;

जो धान यात्रा करवावाळा मतुष्यना पगोने सुंघे तो एम सूचवे छे के तुं यात्रा करमां, अहिंज मन मान्युं धन मळशे; अने स्थानमां रहेल पुरुषना पगरखांने सुंघे तो तुरत यात्रानी सूचना करे छे.

श्वान वन्ने भुजाओने सुंघे तो ज्ञात्रु अने चोरथी समागम थाय, जो भक्षण करवाना पदार्थ अपूर आदि, मास अने हाडकांओने भरममां छुपावे तो तुरतज अग्निनो भय थाय छे;

श्वान प्रथम ग्राममां शब्द करी पछी वाहेर स्मज्ञानमां जड़ ज्ञब्द करे तो ग्राममां उत्तम पुरुषोतुं मृत्यु धाय छे अने यात्रा करवावाळानी सन्मुख रुद्दन करे तो यात्राने रोके छे. जो श्वान स्वाभाविक "ऊ" एवो शब्द करे अने यात्रा करवावाळाना वामभागमां "ओ" एवो शब्द करे तो अर्थिसिद्धि थाय छे. "ओ" एवो शब्द करे तो व्याकुळता अने यात्रा करनारनी पाछळ श्वानना सर्व प्रकारना शब्द यात्रानो निषेध सूचवे छे;

जो श्वान उंचा स्वर्थी " खंख " एवी शब्द करे तो जाणे एने कोइ लाकडीथी मारे छे, अने मंडलने आकारे दोडे तो ते नगर आदिने शृन्य करी मृत्युनो भय उत्पन्न करे छे;

जो श्वान दांत काढी पोतानी सिक्किणीने चाट तो मीटां भोजननी प्राप्ति थाय छै; जो सुखनेज चाटे अने सिक्किणीने न चाटे तो लिद्ध भोजनमां पण विध्न करे छै; अर्थात् भोजन मळतुं नथी.

ग्राम अथवा नगरनी वच्चे घणा श्वान भेळा थइ वारंवार शब्द करे तो ते ए ग्रामना अथवा नगरना स्मामीने क्वेश सूचवे छे;

जंगलमां स्थित श्वानना फळ मृगनां फळ तुल्य जाणवां; जो श्वान द्वक्षनी समीपे झव्द करे तो वर्षा, द्वारना अगेलनी समीपे शब्द करे तो राजाना मंत्रीने पीडा, घरनी वचे वायु कोणमां शब्द करे तो खेतीनो भय, नगरना द्वारमां शब्द करे तो नगरनेज पीडा, शब्या उपर शब्द करे तो शब्याना स्वामीओने भय अने प्रयाण वखते पाछळथी शब्द करे तो यात्रा करवाबाळाने भय थाय छे; मनुष्योनी समीपे वामभागमां शब्द करता श्वान शत्रुओनो भय सूचवे छे;

शृगालोनां फळ श्वाननी समानज छे, परंतु एमां विशेषता एटली छे के शिशिर ऋतुमां शृगाल मस्त होय छे अर्थात् ते ऋतुमां तेना शब्द आदि निष्फळ होय छे, शृगाल " हू हू " एवो शब्द वोली पछीथी " टा टा " एवो शब्द वोले तो ते पूर्ण अने वीजा शब्द दीप्त जाणवा.

लोमाशिकानो स्वाभाविक "कनव " एवो शब्द पूर्ण अने ते शिवायना तमाम शद्ध कृत्रिम एटलाज माटे दीप्त कहेवाय छे;

पूर्व अने उत्तर दिशामां शिवा शुभ फळ आपे छे, शान्त स्वर वोले तो ते सर्व दिशाओ-मां शुभ छे, जो धूमिता दिशानी तरफ मुख करी दीप्त स्वर वोले तो ते दिशाना स्वामीओनो नाश करे छे; दीप्त शिवा सर्व दिशाओमां अशुभ छे; जो ते दिवसे वोले तो विशेष करी अशु-भज लेखाय छे; P9(20

जो शिवा नगरना अथवा सेनाना दक्षिण भागमां स्थित थइ सूर्यनी तरफ मुख राखी शब्द करेतो अशुभ फळनुं सूचन करे छे; "याहि" एवो शब्द वोछे तो अग्निनो भय, "टाटा" एवो शब्द वोछे तो कोइ वन्धु आदिनुं मरण, अने "धिग् धिग्" एवो शब्द वोछे तो दुष्कृत ज णावे छे, वोछती वखते एना मुखथी अग्निनी ज्वाळा निकळती होयतो देशनो विनाझ थाय छे; केटलाएक आचार्यो ज्वाला सहित शिवाने दारुण कहेता नथी, तेओ कहे छे के सूर्य आदिमां जे रीते अग्नि जेवो प्रकाश देखाय छे ते रीते तेना मुखनी स्वाभाकिक लालाशने लीधे अग्नि जेवं जणाय छे माटे ए दारुण नथी।

जो शिवा दक्षिण दिशामां शब्द करे अने एनी पाछळ वीजी शिवा वोले तो फांसीए लटकावेला मृतक मतुष्यतुं सूचन करे छे; दक्षिण दिशामां एक शिवा शब्द करे अने तेनी पाछळ वीजी पश्चिम दिशामां वोलेतो ते जळमां डूवी मरेल मतुष्यने सूचवे छे;

शिवा एक वार वोली चुप रही जाय तो अक्षोभ, वे वार वोलेतो सारी वार्तानुं श्रवण, त्रणवार वोलेतो धननी प्राप्ति, चारवार वोलेतो प्रियनुं आगमन, पांचवार वोलेतो क्षोभ, छवार वोलेतो प्रधान पुरुषोमां भेद अने सातवार वोलेतो वाहनोनी संपत्ति सूचवे छे; सातथी उपरांत जेटलीवार शिवा शब्द करे ते तमाम निष्फळ होय छे;

जो शिवा दक्षिण दिशामां स्थित थइ शब्द करेतो छठा अने पांचमा फळ शिवाय वाकी-नां तमाम फळ विपरीत थइ जाय छे.

जे शिवाना वोलवाथी मनुष्योने रोमांच यइ जाय, अन्व, मूत्र अने विष्ठा करे अने त्रास उप्तत्र याच ते शिवा कल्याण करती नथी.

भयम शिवा वोले अने तेनी पाछळ पनुष्य, हाथी अथवा घोडो शब्द करे तेमज शिवा फरी नहि वोलतां मौन रही जायतो ते सेनामां अने नगरमा कल्याणकारी थाय छे;

जो शिवा "में मे" एवो शब्द वो छेतो भय, "मो भो" एवो शब्द वो छेतो विपत्ति "फिफे" एवो शब्द वो छेतो मृत्यु अने वंधन, तेमज "हू हू" एवो शब्द वो छेतो सांभळनार मतु-प्यतुं हित करे छे; शात दिशामां स्थित थइ शान्त स्वर्थी "अ" एवो शब्द करी "ओ" एवो शब्द करे अथवा "टा टां" एवो उद्भट शब्द करे अथवा प्रथम "टे टे" एवो शब्द करी पाछ-छद्यी "थे थे" एवो शब्द करे ए शब्दो शिवानी प्रसन्नताना छे अर्थात् ए प्रसन्न होय छे त्यारे- ज एवा शब्द वोले छे एटला माटे ए शब्दो शुभ छे;

जो शिवा प्रथम उंचा स्वरथी भयंकर अक्षरनो उचार करी पाछळथी शृगाल तुल्य शब्द करवा लागे तो शिवा क्षेम अने धननो लाभ अयवा विदेशमां गएला प्रियथी समागम सूचवे छे;

वनना मृग ग्रामनी सीमामां दीप्त थइ शब्द करता स्थित थायतो एज वखते भयतुं स्-चन करे छे, जता होयतो व्यतीत भय अने आवता होय तो आगळ उपर प्राप्त धनार भयने सूच-वे छे; अने ग्राम आदिनी चारे तरफ घूमेतो तेने शून्य करी दे छे;

ग्रामनी सीमामां स्थित ए दीप्त मृगोना शब्दनी पाछळ ग्रामना जीव शब्द करेतो भय उप्तन थाय छे, वननाज जीव एनी पाछळ शब्द करेतो नगर आदिने श्रृत्रओ घेरे छे, तेमज वन-ना अने ग्रामना वन्ने जीव तेनी पाछळ शब्द करे तो ते नगरथी मृतुष्योने केंद्र करी शृत्रुओं कह जाय छे;

वननो जीव नगरना द्वार जपर जभो रहेतो नगरने शत्रु घेरे, नगरनी अंदर प्रवेश करे-तो नगरनो नाश, जो तेने प्रसव थइ जायतो मृत्यु; ने वननो जीव नगरमां आवी मरण पामे तो भय अने घरमां प्रवेश करेतो ते घरना स्वामीनुं वंधन सूचवे छे.

गाय दीन होय तो राजानुं अग्रुभ अने पोताना पगयी भूमि उपर ताडन करे तो रोग थाय छे; गायोना म्होटां म्होटां नेत्र अश्रुआयी भर्यी रहे तो ते स्वामीनु मृत्यु सूचवे छे अने गाय भयभीत थइ म्होटो शब्द करे तो चोर आवे छे.

जो गाय दिवसे बोले तो अनर्थ अने रात्रिए बोले तो भय थाय छे. वळद रात्रिने समये बोले तो अशुभ समजवो अने गायोनो धणी माखीओ तेमज श्वान घेरे तो तुरतज वर्षा थाय छे.

जी गाँय "हेर्म्बा" एवा शब्द वोलती घरमां आवे अने घरतुं सेवन करे तो ते गायोना गोष्टनी दृद्धि करें छे; जो गायोना अंग जळथी भींजायेला रोमांचयुक्त होय अने मसन्न होय तो ते ग्रुभ लेखाय छे; आज रीते महिषीनां फळ जाणवां.

अश्वना पर्याण स्थानधी पश्चिम भागमां ज्वलन होय तो सामान्यधी अञ्चाभ अने वाम भागमां पण ज्वलन होय तो अवश्य अञ्चाभ लेखाय छे, एघी अन्य जगोए अर्थात् पर्याण हिस्था-नना पूर्वमां अथवा दक्षिण भागमां ज्वलन होयतो ज्ञुभ, अश्वना सर्व अंगोमां ज्वलन होय हुतेमज

•~~F)[G

वे वर्ष पर्यंत तेना शरीरथी अग्नि कण अथवा धूम्र निकळे तो पण क्षय करे छे. उत्पातने छीधे अश्वना अंगोथी अग्नि ज्वाळानी माफक निकळतो देखाय ते ज्वलन कहेवाय छे.

घोडानुं गुह्यांग प्रदीप्त होय अर्थात् एमां ज्वलन होय तो राजाना अन्तःपुरनो नाश, पेट प्रदीप्त होय तो कोशनो क्षय, मूळ द्वार अने पुच्छ प्रदीप्त होय तो युद्धमां पराजय तेमज अन्दनां मुख अने शिर ज्वलन युक्त होय तो युद्धमां जय प्राप्त थाय छे;

स्तंध अर्थात् ग्रीवानां वन्ने पार्श्व, आसन अने अंस अश्वनां ए अंगोथी ज्वलन निकळतो होय तो जय अने पाछला पगनो ज्वलन होय तो स्वामीनुं बंधन सूचवे छे; ललाट, छाती, नेत्र अने भुजाथी धूम्र निकळे तो विजय थाय छे;

नासिकानां छिद्र, प्रोथ, मस्तक, अश्रुपात अने नत्रे ए अंगोमां रात्रिने समये ज्वलन थाय तो जय सूचवे छे; पलाशवर्ण, ताम्रवर्ण, कृष्णवर्ण, कर्बुर, श्रुक्रवर्ण अने श्वेतवर्ण अश्वोना अंगोमां ज्वलन थाय तो ते निरंतर श्रुभ लेखाय छे.

घास अने जळथी देप, पतन, कारण विना प्रस्वेद आववो अथवा कंपवुं, मुख्यी छोही पहतुं अथवा धुमाडो निकळवो, रात्रिए उंघ न आववी, परस्पर छडवुं, दिवसे निद्रायी आछस्य युक्त तेमज चिन्ता युक्त थवुं, साद अने नीचे मुख राखवुं ए सर्व चेष्टा अश्वोनी अग्रुभ गणाय छे;

पर्याण आदि युक्त अर्थात् कसेछा अश्व जपर अन्य अश्व चढे तो ते अने निरंतर जेना जपर स्वारी करता होइए ते अश्व आरोग्यता युक्त होय अने तेने अकस्मात् रोग आदि कांइ विपत्ति आवी जाय तो ते पण अग्रुभ छेखाय छे;

जा अश्व क्रैं। चपक्षी पेठ शब्द करे, ग्रीवाने स्थिर राखी मुख उंचुं उठावी शब्द करे, मधुर उंचा प्रतिध्वनी युक्त श्रद्ध करे तेमज प्रसन्नता पूर्वक मुखमां ग्रास भरी शद्ध करे तो शत्रुओथी जय मळवातुं सूचवे छे;

ज समये अश्व शब्द करे ते समये तेनी समीपे पूर्ण पात्र, दिध, ब्राह्मण, देवता, गन्ध, पुष्प, फळ अने सुवर्ण आदि अथवा वीजां कांइ सर्षप, गोरोचन आदि मंगळ द्रव्य होय तो अवज्य जय थाय छे.

जे भक्षण करवानां द्रव्य, पीवानां द्रव्य अने छगामने प्रसन्न यह ग्रहण करे अथवा स्वा-मीने जे वात रुचती होय तेतुं आनंदथी ग्रहण करे अने जेनी द्रष्टि दक्षिण पार्श्व तरफ होय एवा



-PIC

अर्था अभिष्ट फळ आपे छे.

जो अश्व पोताना वाम चरणोथी भूमिनुं ताडन करे तो स्वामीनुं विदेशमां प्रयाण अने संध्याने वखते दीप्त दिशा तरफ मृख राखी जव्द करे तो स्वामीनो वंधनपूर्वक पराजय थाय छे.

अश्वो घणाज शब्द करे, पुच्छना वाळोने फेलावे अने शयन करे तो प्रयाणने सूचवे छे, जो रुवाडां खेरे, दीन अने रुखा शब्द करे तेमज धूळतुं भक्षण करे तो स्वामीने भय थवातुं सूचन करे छे.

जो अश्व जातुने भेळा करी संपुटने आकारे जमणे पडखे जयन करे अने जमणो पग उंचो करी उभा रहे तो स्वामीनो जय सूचवे छे; आ फळ वीजां वाहनोमां पण यथासंभव जाणी लेवुं.

जे समये राजा अन्व उपर चढवा तैयार याय, ते समये अन्व विनचर्या नम्न थड जाय, अने जे दिशा तरफ प्रयाण करवानुं होय, ते दिशा तरफ चाले तेमज वीजा घोडानो गन्द सांभ-की शन्द करे, अथवा पोताना जमणा पडखांनो स्पर्भ करे, तो नुम्तज पोताना स्वामीनी लक्ष्मीने वधारे छे;

जे अन्व वारंवार लाद अने पिशाव करे, प्रहार करवाथी पण सीयो न चाले, विना कारण चमके तेमज जेना नेत्र आंसुओथी भर्या होय एवा अन्व पोताना स्वामीनुं शुभ करता नथी.

हाथीना दात गळी जाय अथवा विवर्ण थइ जाय तो तेनां फळ दांतना तुटवा सरखांज छे;

हाथीना दांतना मूळ, मध्य अने अग्रभागमां देवता, दैत्य अने मनुष्य स्थित छे; ए भागोमां जो छेद आदि होय तो क्रमथी, पूर्ण, मध्यम अने स्वरूप फळ, शीघ्र, मध्यकाळ अने विलंबधी थाय छे.

हाथीनो जमणो दांत मूळ, मध्य अने अग्रथी त्रुटे तो क्रमथी राजाने, देशने अने सेनाने पलायन करत्तुं पढे छे, अर्थात् शत्रुना भयथी भागतुं पढे छे; तथा वामदंत मूळ, मध्य अने अग्रथी त्रुटे तो क्रमथी राजपुत्र, पुरोहित अने हस्तिओना स्वामीनो तेमज आटविक, राजानी राणी अने प्रधान पुरुषोनो पण क्षय थाय छे;

जो हाथीना वने दांत त्रुटी जाय तो ते राजाना सर्व कुळनो क्षय थवानुं सूचवे छे;

PRA

सौम्य ग्रहनां लग्न, सौम्य तिथि अने सौम्य नक्षत्र आदिमां दंत भंग थाय तो ते शुभ फळनी रुद्धि थाय छे, अने क्रूर लग्न आदिमां दंत भंग थाय तो अशुभ फळ सूचवे छे;

क्षीरद्वस तथा फळ अने पुष्पयुक्त दृक्षोना उखेडवाथी अथवा नदी किनाराना विघटनथी जो हाषीना वामदांतना मध्य भागनो भंग अथवा खंडन थाय तो शत्रुनो विनाश सूचवे छे अने एथी विपरित होय तो शत्रुनी दृद्धि करे छे;

जे हाथी विना कारण चालतां ठोकर खाय, जेना कर्ण हालता वंध थाय, जे अति दीन होय, धीरे धीरे लांवा श्वास लीए, सुंढने भूमि उपर टेकावे, जेना नेत्र चिकत अने मुकुलित होय, जे वहु उंघे, जे तरफ लड़ जवो होय ते तरफ न जाय, न खावाना पदार्थो खावा लागे, अंगथी वारंवार रुधिर टपकावे अने विष्टा करे ते हाथी पोताना स्वामीने भय उपजावे छे;

जे हाथी पोतानी इच्छाथी वल्मीकस्थाणु, गुल्मक्षुप अने तरुओनुं मर्दन करें, जेनी द्रिष्टि मसन्न होय, जे तरफ जवानुं होय ते तरफज उंचुं मस्तक उठावी शीघ्र गतिथी गमन करे, माथे होहो नांखती वखते मुंदथी वारंवार जळना विन्दुओ उडावे अथवा गर्जना करे अथवा एज वखते मद्युक्त थइ जाय अने जे मुंदथी पोताना जमणा दांतने छपेटे ते हाथी पोताना स्त्रामीनो जय सूचवे छे;

जो ग्राह हाथीने पकडी जळनी अंदर छइ जाय तो राजानुं मृत्यु, अने हाथी जळनी अंदरथी ग्राहने पकडी वाहेर आवे तो राजानीटुद्धि थाय छे.

पूर्व देशमां रहेवावाळा मनुष्योने काक जमणी वाज अने करायिका डावी वाज होय तो शुभ लेखाय छे; वीजी दिशाओना देशोमां काक डावी वाज अने करायिका जमणी वाज होय तो शुभ थाय छे;

वैशाख महिनामां निरुपद्रव दृक्ष उपर काकनो माळो होय तो सुभिक्ष अने कल्याण, तथा ज्यां निन्दिन काष्टोथी युक्त अने सुकां दृक्ष उपर काकनो माळो होय, तो ते देशमां दुर्भिक्ष अने भय थाय छ.

वृक्षमां पूर्व दिशानी शाखा उपर काकनो माळो होय, तो आधिन अने कार्तिकमां, पश्चिम शाखा उपर होय तो श्रावण अने भाद्रपदमां, दक्षिण अथवा उत्तरनी शाखा उपर होय तो भाद्रपद अने आधिनमां, तेमज दक्षनी उपर मुख्य शाखामां काकनो माळो होय तो चारे महिना वर्षा थाय छे; अग्निकोणनी ज्ञाखा उपर होय तो खंड दृष्टि थाय छे, नैर्क्ट्रिय कोणनी शाखा उपर होय तो शरदऋतुनी खेती सारी पाके छे, तेमज वायव्य अने इशान कोणनी शाखा उपर काकनो माळो होय तो सुभिक्ष, तथा वायव्य कोणमां होय तो उंदर घणाज थाय छे.

ख्यां शर, क्रम, गुल्म, वेल, धान्य, देवप्रासाद, गृह अने खाडामां काकनो मालो होय ते देश चोर, अनावृष्टि अने रोगोथी पीडा पामी पामी शून्य थह जाय छे.

काकने वे अथवा त्रण दच्चां थाय तो सुभिक्ष, अने पांच वच्चां थाय तो वीजी राजा वने छे. काक पोतानां इंडांने फेंकी दिए, एकज इंडु मूके अथवा प्रसवहीन होय तो अशुभ गणाय छे.

कार्किनां वच्चां चोर नामक गंधद्रव्यना समान रंगनां होय तो चोरधी भय, चित्रवर्ण होय तो मृत्यु, श्वेतवर्ण होय तो अग्नि भय अने अंग हीन होय तो दुर्भिक्षिनो भय सूचवे छे।

कागढाओं विना कारण ग्रामनी वच्चे भेळा थइ शब्द करे तो दुर्भिक्षयी भय थाय छे, चक्रने आकारे स्थित होय तो ग्रामने शत्रुओं घेरी छे छे अने केटलेक टेकाणे काक टोळे वळी बेसे तो उपद्रव थाय छे.

काक निर्भय थइ पोतानी चांचथी, पगोधी अने पंजाओना महारघी मतुष्योनो पराभव करे तो ज्ञातुओनी दृद्धि षाय छे; जो काक रात्रिने समये विचरे तो मतुष्योनो विनाज सूचवे छे.

आकाशमां दक्षिण क्रमथी अथीत पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर ए रीते काक भ्रमण करे तो पोताथीज अने वामक्रमथी भ्रमण करे तो शत्रुधी भय उपजे छे. तेमज काक घणी ज्याकुळता पूर्वक आकाशमां भ्रमण करेतो अनव स्थिति थाय छे;

काक उंचु मुख करी पांखोने हलावतो होय तो मार्गमां भय, अन्नने चोरी लड़ जाय तो दुर्भिक्ष; सेनाना अंगोपर वेसेतो युद्ध अने तेनी पांखो कोकिल तुल्य अति कृष्ण वर्ण होय तो चोरी थाय छे;

कागडो शय्या उपर भस्म, हाडकुं, केश अथवा पांदडा लड्आवी राखे तो शय्याना स्वा-मीतुं मृत्यु. मिण, पुष्प अने फळ आदिथी शय्याने ताडन करे तो पुत्र जन्म, अनें वीजी कोड् व-स्तुथी ताडन करे तो कन्यानो जन्म थाय छे;

जो काक रेती, धान्य, लीली मृतिका, पुष्प अने फळ आदिथी मुख भरी आवे तो धन-

नो काभ अने मनुष्योनी समीपेथी कांइ वस्तु उठावी लइ जाय तो भय थाय छे;

वाहन, श्रस्न, जोंडा, छत्र, शरीरनी छाया अने अंगनुं कुट्टन करे तो मृत्यु अने एनी पूर्ण जा करे अर्थात् एना उपर पुष्प आदि नांखे अथवा चरके तो अन्ननो काभ्र थाय छे;

काक जे द्रव्य लड़ आवे तेनो लाभ अने जे द्रव्य उपाडी जाय तेनो नाश थाय छे; पीत वस्तुथी सुवर्ण, कपासथी वस्त्र अने श्वेतव्स्तुथी चांदी आदिनो लाभ तेमज हानि जाणवी;

जो काक वर्षाऋतुमां क्षीरद्वक्ष, अर्जुन द्वक्ष, अशोक द्वक्ष अथवा नदीना वन्ने तरफना किनारा उपर वेसी शब्द करेतो वर्षा थवातुं सूचवे छे, अने अन्य ऋतुमां सब्द करेतो वादळां थाय छे; एज रीते धूळथी अथवा जळथी स्नान करेतो वर्षा ऋतुमां वर्षा अने अन्य ऋतुमां दुंदिन थाय छे;

जो कागहो वृक्षना कोटरमां वेसी क्रूर शब्द वोळे तो महा भयतुं सूचन करे छे अने जळने जोइ शब्द करे अथवा वादळ गरजी रह्या वाद वोळे तो वर्षा थाय छे, छतामंडप उपर वेसी सूर्य भणी मुख राखी दुःखित थइ, चांचथी क्टतो पांखो हळावे तेमन छाछ रंगनी वस्तु, बळेळी वस्तु, तृण अथवा काष्ट्रने ळइआवी घरमां राखे तो ए अग्निनो भय सूचवे छे.

जो काक घरमां सूर्य सामे मुख राखी पूर्व आदि चारे दिशाओं तरफ द्रष्टि करतो शब्द करे तो घरना धणीने क्रमधी राजभय, चोरभय, वंधन अने कल्रह तेमज चारे विदिशाओं तरफ द्रष्टि करी बोले तो पशुओंने भय प्राप्त धाय छे;

शान्त पूर्व दिशा तरफ द्रष्टि करतो काक शब्द करे तो राजपुरुप अने मित्रनुं आगमन, सुवर्णनो लाभ तेमन शाळनो भात अने गोळ युक्त भोजन मळवानुं सूचवे छे; शान्त अग्निकोण तरफ द्रष्टि करतो काक शब्द करे तो अग्निथी आजीविका चलावनार सोनी आदि अने युवान स्त्रीथी समागम तेमन उत्तम धातुनो लाभ थाय छे; शांत दक्षिण दिशा तरफ द्रष्टि करतो काक वोले तो अहद अने कुलत्थनुं भोजन मळे छे, तथा गावावाळाओथी समागम थाय छे; शान्त नैर्ऋत्य कोण तरफ द्रष्टि करतो काक शब्द करे तो दृत, अश्वनां उपकरण दिश, तेल, मांस अने भोजन करवाना पदार्थानो लाभ थाय छे; शान्त पश्चिम दिशा तरफ द्रष्टि करतो काक वोले तो मांस, मद्य, आसव, धान्य अने समुद्रोमां उत्पन्न थएल। रत्नोनी प्राप्ति थाय छे; शान्त वायव्य

कोण तरफ द्रष्टि करतो काक शब्द करे तो, लोह, आयुध सरोवरमां उत्तन थयेलां द्रव्य, वेलनां फल अने भोजननी प्राप्ति थाय छे; शान्त उत्तर दिशा तरफ द्रष्टि करतो काक शब्द करे तो घतथी भींजाएलं भोजन अने एक वलदनो पण लाभ थाय छे. आ सर्व फल घर उपर वेसी काक वोले त्यारे ते घरना स्वामीने थाय छे.

प्रयाण समचे प्रयाण करवावाळा पुरुषना काननी वरोवर थड़ काक उडी जाय तो कल्याण करे छे, कार्यसिद्धि धती नथी अने शब्द करतो काक यात्रा करवावाळानी सन्मुख आवे तो प्रयाणथी पाछो वाळे छे.

जो काक यात्रा करवावाळाना वाम भागमां प्रथम शब्द करी पछीधी दक्षिण भागमां शब्द करे तो धनने हरे छे अने प्रथम दक्षिणभागमां शब्द करी पछीथी वामभागमां बोले तो धननो लाभ थाय छे; केवळ वामभागमांज शब्द करी अनुलोम गति करे अर्थात् यात्राछनी साथे चाले तो धननो लाभ करे छे;

ं पूर्व दिशामां रहेवावाळा मतुष्योने काक दक्षिण तरफ शब्द करे अने अनुलोम गति थाय तो धननो लाभ सूचवे छे;

यात्राळुना वाम भागमां शब्द करतो काग प्रतिलोम गति थाय अर्थात् तेनी सन्मुख आ-वेतो प्रयाणमां विघ्न करे छे. ते काक एम सूचवे छे, के यात्रा करवाथी जे फळनी चाइना छे ते घर बेठांज मळशे.

यात्राळुना दक्षिण भागमां शब्द करी जो कागडों वाम भागमां शब्द करेतो कार्यनी मन-मानी सिद्धि थाय छे. यात्राळुनी पाछळ शब्द करी जो शीघ्र गतिथी आगळ चाल्यो जाय तो प्र-याण करनारने आगळ उपर घणु धन मळे छे;

जो कागडो यात्राळुनी पाछळ शब्द करी दक्षिणतरफ थइ तुरत चाल्यो जाय तो यात्राळुन ना श्रारीरथी रुधिर निकळे छे अने जो एक पगे उमो रही सूर्य भणी द्रष्टि राखी शब्द करेतो पण यात्राळुना शरीरथी आगळ उपर रुधिर वहे छे; तेमज सूर्य तरफ जोइ एक पगे उमो रही चांचथी पोतानी पांखोने खणे तो आगळ उपर कोइ प्रधान पुरुपना वधने सूचवे छे.

खेतीयुक्त खेतरमां काक शान्त थइ शब्द करे तो खेती सहित भूमिनो लाभ अने ग्रामनी सीमाने छेडे स्थित थइ ब्याकुळता पूर्वक शब्द करेतो यात्रा करवावाळाने कलेश थाय छे; जो काक मुन्दर तथा स्निग्न हुझ उपर, पत्र परुत्र, पुष्प अने फळोथी झुकेलां हुसो उपर तेमज सुगंधयुक्त मधुर फळोवाळा, क्षीरयुक्त, व्रण रहिन, सारी रीते स्थित थेयेला अने म-नोहर हुसो उपर वेटेल होयतो अर्थसिद्धि सूचवे छे.

पाकेली खेती, लीली दुर्वायुक्त स्थल, गृह, देवपासाद, हर्म्य, लीला वर्गना स्थान, धन्यस्थान, उन्नतस्थान, अने मंगळस्थान एमांथी गमे ते स्थान उरा वेसी काक शब्द करे तो धननी प्राप्ति थाय छे.

गायतुं पुच्छ अथवा वर्गीक उपर वेशी कागडो वोलेतो सर्पनां दर्शन थाय छे अने महिप उपर वेसी काक शब्द करेतो तेज दिवसे ज्वर चडे छे; गुरुन उपर वेसी कागडां वोलेतो शुभा-शुभ फल स्वरूप जाणवुं.

यात्रा करवाचाळाना वाम भागमा तृणोना ढगला उपर अथवा जळ उपर वेसी काक शब्द करेतो कार्यनो नाज अने उपरना भागमां अग्निथी वळेलां अथवा विजळीयी हणाचेलां दक्ष पर वेसी काक वोलेतो मृत्यु थाय छे.

कांटावाळां दृक्षोथी युक्त उत्तम दृक्ष उपर काक वेठो होया। कार्यक्षिद्धि अने कछह सूच-वे छे; कांटावाळां दृक्षपर काक वेठो होयतो हैग अने जे दृक्षने वेछ छपी रही होत्र तेना उपर वेसी काक शब्द करेतो वंधन थाय छे.

जो काक उपस्थी कर्पायलां द्वस उपर वेटो होयतो यात्राळुतुं अंग कपाय, शुष्क द्वसपर वेटो होय तो कल्ह अने चात्रा कावावालानी आगळ अयदा पाछळ छ,ण उपर वेटो होयतो धननी प्राप्ति थाच छे.

मृतक पुरुषना शरीर उपर अथवा हाथ पा आदि कोई अवयवो उपर वेसी काक यात्राछुनी सन्मुख शब्द करेतो मृत्युनो भय सूचवे छे; चांचथी हाडकांने तोहतो शब्द करेतो यात्रा करवा चाळातुं हाडकुं बुटे छे.

जो कागडो रस्सी, हादकुं, काष्ट्र, कांटावाळी वस्तु, अने केश मुखमां लड़ शब्द कर तो यात्राद्धने ऋमधी सपनो, रोगनो, दादवाळा जीवनो, चोरनो, शस्त्रनो अने अग्निनो भय थात्र छे.



श्वेत पुष्प, विष्ठा आदि अभेष्य वस्तु अथवा मांस मुखमां लड काक शब्द करे तो प्रमाण करवावाळानां कार्यनी मनमानी सिद्धि सृचवे छे अने उंचुं मुख करी पांखोने हलावतो वारंवार वोले तो यात्रामां विष्न करे छे.

सांकळ, वरत्रा अयवा वेलतुं ग्रहण करी काक वोले तो यात्राछुने वंधन, अने पापाण उपर वेसी ज्ञन्द कर तो भय, तेमन कलेग युक्त अने अपूर्व पान्ययी समागम याय छे.

वे काक परस्पर मुखमां भोजन आपे तो यात्रा करवावाळाने उत्तम संतोप, तेमज स्त्री अने पुरुप बन्ने काक भेळाज शब्द करे तो यात्राळुने स्त्रीनो लाभ थाय छे.

स्त्रीना शिरमाये जळयी भरेला घडा उपर वेसी काक जन्द करे तो स्त्री अने धनना लाभ सूचवे छे; घटने चांचथी हणे तो पुत्र मरण अने घट उपर विष्ठा करे तो अन्ननो लाभ थाय छे.

winds wind the minimum winds the winds winds with the winds winds with the winds with the winds winds with the winds with the

स्कंधानार आदिना प्रवेश वखते पांखो हलावते। काक शब्द करे तो बीजा स्थान उपर जइ रहेदानुं अने पांखो हलाव्या शिवाय शब्द करे तो केवल भयनुं सूचन करे छे.

सेना, नगर तेमज ग्रामआदिमां गीध तथा कंक स्थीओ सहित मांस ग्रहण कर्या विना कागडो प्रवेश कर अने आपसमां विरोध न करे तो शत्रुनी साथे स्नेह वंघाय अने ते काक आदिपक्षी परस्पर विरोध करे तो शत्रुथी युद्ध थाय छे.

जो काक स्कर उपर वेठो होय तो यात्रा करवावाळाने वंधन, कर्दमिलिप्त स्कर उपर वेठो होय तो धननो लाभ अने गर्दभ अथवा उंट उपर वेठो होय तो कल्याण थाय छे; केटलाएक आचार्योतुं एम कहेवुं छे के काक गर्दभ उपर वेठो होय तो प्रचाण करनारतुं मृत्यु धाय छे।

काक अश्व उपर वेसी शब्द करे तो ते अश्वआदि वाहनोनो लाभ सूचवे छे; प्रयाण करनारनी पाछळ गमन करतो काक शब्द करे अथवा बीजां कोइपण पश्ची गमन करे तो रुधिरपात थाय छे.

दिशाओना वत्रीश विभाग करी जे फळ जेवी रीते प्रथम कह्यां छे ते शुभाशुभ फळ तेबीजरीते यात्रा करवावाळाओए समजवां जोइए.

पोताना माळामां वेसी कागडो "का" एवो झब्द वोले तो ते झब्द निष्फळ अने "कव"

एवो शब्द वोले तो ते पोतानी फीतिने अधे थाय छे; "क" एवो शब्द वोलेतो िषय मित्रनी प्राप्ति, "का" एवो शब्ध वोलेनो कल "कुरु कुरु" एवो शब्द वोलेतो हिंद, "कटकट" एवो शब्द वोलेतो हिंद, "कटकट" एवो शब्द वोलेतो हिंद भातना भोजननी पाप्ति अने "केकव" अथवा "कुरु" एवो शब्द वोलेतो प्रयाण करनारने धननो लाभ स्त्ववे छे; "खरेखो" एवो शब्द वोलेतो विदेशमां गर्चेल पिकन्तुं आगमन, "कखाख" एवो शब्द वोलेतो प्रयाण करनारनुं मृत्यु, "आ" एम उच्चार करेतो चात्रामां विध्न अने "खलखल" एवो शब्द करेतो तेज दिवसे वर्षा थाय छे; "काका" एवो शब्द वोलेतो यात्रास्तुनो विनाश अने "काकटी" एवो शब्द वोले तो भोजनमां विप आदि मलेलुं छे एम सूचवे छे; "कवकव" एवो शब्द करेतो कोइनी साथ प्रीति अने "कगाकु" एवो शब्द वोलेतो प्रयाण करनारनुं वंधन थाय छे; "करकी" एवो शब्द वोलेतो नर्षा, "गुद्द एवो शब्द वोलेतो भय, "वड",एवो शब्द वोलेतो वस्तो लाभ अने "कलप" एवो शब्द वोलेतो गूद्रनो न्नासण्यो समागम चाय छे, "कट्द योलेतो वस्तो लाभ अने "कलप" एवो शब्द वोलेतो गूद्रनो न्नासण्यो समागम चाय छे, "कट्द योलेतो मचाण करनारा उपर महार, "स्त्री" एवो शब्द करेतो स्त्रीनो लाभ, "गड्द एवो शब्द वोलेतो मचाण करनारा उपर महार, "स्त्री" एवो शब्द करेतो स्त्रीनो लाभ, "गड्द " एवो शब्द वोलेतो मचाण करनारा उपर महार, "स्त्री" एवो शब्द करेतो स्त्रीनो लाभ, "गड्द " एवो शब्द वोलेतो तो सुप्तेनो लाभ अने " पुट " एवो शब्द वोले तो पुप्तेनो लाभ, " टाकुशकु " एवो शब्द वोले तो सुप्तेनो लाभ करेते एवे शब्द वोले तो अग्निनो स्राप्त " करेते ये शब्द वाले तो सल्द वोले तो कल्द थाय छे.

mine more properties of more or more more more

जो काक "टाकुलि, चिंटिचि, केंक्के अने पुरं ए शब्दो वोले तो ते केंबळ दोपेन माटेन छे.

आ एक काकनां कहां ए प्रमाणिज वे काकनां शब्द तेमज चेष्टा आदिनां फळ छे; वीजा पक्षीओनां फळ पण काक तुल्य जाणवां.

वनमां रहेनारा जीव अने उपरना भागमां जेने दाह होय छे एवा सुकर आदि जीव ए सर्वनां फळ खान तुल्य समजी स्टेवां.

वर्षा ऋनुमां स्थलचर अने जलचर जीवोनो व्यत्यय थाय अर्थात् स्थलपर रहेवावाला वकरा आदि जीव जलमां भवेश करे अने जलमां रहेवावाला मत्स्य आदि जीव स्थल उपर आने वे तो घणीज वृष्टि थाय छे; वर्षा ऋनु विना अन्य ऋनुमां आवो व्यत्यय थाय तो भय उपने छे.

जे घरमां मधमाखी मधपुडो वांधे ते घर तुरतज शुन्य थड् जाय छे अने जेना शिर उपर लीली माखी वेसे तेनुं मृत्यु थाच छे.

जो कीडी पोतानां इंडाओने पाणीमां नांखे तो वर्षा रेकाय छे अने नीचा स्थानथी रक्ष उपर अथवा उंचा स्थान उपर उपाडी एड जाय तो वर्षा थाय छे;

यात्रामां कार्य मूळ शकुनने आवीन छे अर्थात् शुभ शकुन होय तो सफळ यात्रा अने अशुभ शकुन होय तो प्रयाण निष्फळ याय छे; प्रवेक्ति रीतिथी अंतर शकुन होय तो निश्चय करी तेनुं फळ तेजदिवसे जाणबं अने सर्व शकुन कार्यना प्रारंभमां, प्रयाण वखते अने प्रवेश समने जीवा जोइए; छीक थतां कोइ कार्यन करवं कारणके छीक कोड पण कार्यमा शुभ गणाती नथी.

जे राजा शक्तनोने माने तेने ते शक्तन शुभ, दशानुं फळ, निर्दिष्यपणे कार्यासिद्धि, मूळ स्थाननी रक्षा, सहायता करवावाळाओनो समागम, अभिष्ट कार्यनी सिद्धि अने आरोग्यनुं सूचन करे छे.

MANNESS MANNESS CHIMMING MANNESS MANNE

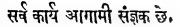
केटलाएक आचार्योंनो एवो मत छे के पोताना स्थानथी एक कोश चाल्या गया वाद शक्तननो शब्द थाय तो ते निष्फळ गणाय छे अर्थात कोशनी अंदर शक्तन होय तो सफळ थाय छे.

जो पहेलुं शक्तन अग्रुभ हे।य तो अग्यार प्राणायाम करी राजाए प्रयाण करवुं, वीर्जु शक्तन अग्रुभ होय तो सोळ प्राणायाम करी प्रयाण करवुं, त्रीर्जुं शक्तन पण अग्रुभ होच तो पोताना गृह तरफ पाछुं फरी आववुं; अर्थात् त्रण अशक्तन होय तो प्रचाण न करवुं.

पूर्व आदि दिशा, स्थान, जीवनी चेष्टा, दीप्त अथवा शांत स्वर, वार, नक्षत्र, मूहूर्त, होरा, करण, लग्न, नवांश, द्रेष्काणआदि अंश, चर, स्थिर अने द्विस्वभाव आदि राशिओनां वल अवल ए सर्वनो विचार करी शक्तनोना शब्दने जाणवावाळा तेनां फळ कही शके छे.

एक स्थानमां रहेळा पुरुषोने शक्कन वे प्रकारे कार्योनुं सूचन करे छे तेमां एक आगामी अर्थात् आगळ उपर थनारा अने बीजां स्थिर अथवा वर्तमान छे.

राजा, दूत अने चरथी उपजेलां कार्य अभिवात तथा वन्युजन आदिथी समागम ए



उद्बद्ध अर्थात् गमन आगमन रहित त्यांज स्थितः कोइनी साथे संयोग, भोजन, चोर, अग्नि, वर्षा, उत्सन्न, पुत्रजन्म, मृत्यु, कलह अने भय ए कार्योनो समूह स्थिर कहेवाय छेः स्थिर राशि लग्न होय एमां चन्द्र वेठो होय तेमज ए लग्नमां शक्जन होयतो स्थिर कार्य अने चन्द्रयुक्त चर लग्नमां शक्जन होयतो चर कार्य जाणवुंः

पत्थर, मन्दिर अने देवालय आदि निश्चल स्थान उपर अथवा भूमि अने जलनी समीपे शक्तन होयतो शुभ अशुभ स्थिर कार्य अने चल स्थान आदिमां शक्तन स्थित होचतो चर कार्योतुं आगमन सूचवे छे.

जलचर राशि लग्न, जलनक्षत्र, जलमुहूर्त, जलदिशा अने जलयुक्त स्थानमां स्थित शकुन तथा अमाबास्या अने पूर्णिमाने दिवस स्थित थएलां शक्तन दीप्त थइ शब्द करेतो ते सर्व व-पीतुं सूचन करे छे अने जलमां रहेवा वालां शक्तन शांत होय ते।पण वर्षा सूचने छे.

अग्निदिशा, अग्निलग्न, अग्निमुहूर्त अने अग्निस्थानमां सूर्यपदीप्त शकुन शब्द करे तो अग्निनो भय उत्पन्न थाय छे.

विष्टिमां, मकर तथा कुंभ लग्नमां, कांटावाळां वृक्ष उपर अने पत्रहीन वरलशे उपर वेसी शक्तन शब्द करे तो चोशी थाय छे.

गाममा रहेवावाळां शकुन स्वर अने चेष्टाधी दीप्त तथा तीत्र थइ शब्द करता कांट।वाळां वृक्ष उपर वेसी मेप अने वृक्षिक लग्नमां वोले तेमज दक्षिणवाम नजरे पढे तो होश उपजावे छे.

कर्क लग्नमां, ग्रुक्रना नवांशमां अथवा विदिशामां स्थित शक्तन नीचुं मुख राखी शब्द करे अने ते दीप्त होय तो ते विदिशामां प्रथम जे स्त्रीनी उत्पत्ति कही गया ते स्त्रीनी साथे संयोग थाय छे.

पुरुष राशि लग्नमां, प्रतिषदा तेमज तृतीया अदि विषम तिथिमां अने चारे दिशाओमांधी गम ते दिशामां स्थित पुरुषशक्तन दीप्त थड वोले तो पुरुषोधी संयोग तेमज पुरुष राशिआदि मिश्र होय तो नपुंसकथी समागम थाय छे; एवीज रीते सूर्यनी राशिनुं नवांश अथवा लग्न होय अथवा सूर्य पोतेज लग्नमा वेटो होय ए समये दीप्त शक्तन शब्द करे तो ते मुख्य पुरुषनुं

आगमन चूचवे छे.

जे लग्नमां कार्यनो आरंभ करवो होय ते लग्न पर्यंत सूर्यनी राशिथी संपत् विपत् ए क्रमथी गणतरी करवी अथीत् जे राशि उपर सूर्य होय ते स्थाने संपत्, वीजी राशि उपर विपत् त्रीजी उपर संपत् ए रीते लग्न पर्यंत् गणवाथी लग्ननी राशि उपर ए वेमांथी जे आवे ते पस्तुत कार्यमां संपत्ति अथवा विपति जाणवी;

आ रीते शाकुनक शास्त्रीना मुखयी ग्रुभाग्रुभ शकुनोनुं श्रवण करी कृपालदेवजीए तेनी विद्वत्ता उपर प्रसन्न थइ पचीश हजार मुद्रानुं पारितोषिक आप्युं, पंडिते कुमार कृपालनेदेवजीने विनित करी के, वर्षाऋतु व्यतीत थइ शरदऋतुनो समारंभ थड चुक्यो छे. शास्त्रमां कहाँ छे के विजयाधी राजाओए आश्विन अथवा कार्तिक मासना ग्रुक्टपक्षमां द्वादशी, पूर्णिमाने दिवसे अन्व, गज अने मतुष्योतुं विधिवत् पूजन करी प्रयाण कर्वुं के जेथी निसंशय जय प्राप्त थाच. कुमारकुपालदेवजीए ते वात कबुल राखी पंडितजीनी सलाह प्रमाणे गढ सीकरीथी इशानकोणमां उत्तम भूमिना मध्य भागमां श्रेष्ट काष्ट्रतुं सोळ हाथ उंचुं अने दश हाथ पहोळुं एक तोरण तैयार करान्युं; सर्ज वृक्ष, गूलर अने अर्जुन वृक्षना काप्टतुं शान्ति-गृह बनावी तेमां कुशना ढगलाओं कराव्या अने वांसना मत्स्य, ध्वज तथा चक्रो बनावी ज्ञान्ति-गृहतुं द्वार सुशोभित कर्युं, कार्तिक द्युदि ८ ने दिवसे घोडाओतुं शान्तिगृहमां स्थापन कर्युं, तेओनी पुष्टिने माटे भिलामी, शाळ, कटोळ अने श्वेतसरसव पीळी दोरीवाळी पोटलीओमां नांखी ते पोटलीओ तेओने गळे वांधी. ए रीते सूर्य, वरुण, विश्वेदेवा, ब्रह्मा, इन्द्र अने विष्णाना मंत्रोथी शान्तिगृहनी वच्चे सात दिवस पर्यन्त अश्वोनी शान्ति करी, पूजन कराएला अश्वोने अनुचित वचनो निह कहेतां, ताडन कया वगर पुण्याहवाचनना शब्द, शंख तुरीना नाद अने गीत आदिथी निर्भय कर्या. आठमे दिवस तोरणनी दक्षिण दिशामां उत्तराभिमुख कुश अने वृक्षोनी छालथी ढांकेछुं एक आश्रम बनाव्युं तथा तेनी सन्मुख वेदी बनावी ते उपर अग्नितुं स्थापन कर्युः; चंदन, कुष्ठ, मजीठ, हरताल, मनः शिला, पियंगु, वचदंती, गिलोय, अमृतांजन, हळदर, सुवर्णपुष्प, अग्निमन्य, श्वेता, पूर्णकोज्ञा, कुटकी, त्रायमाण, सहदेवी, नागकेसर, कौंचशतावरी अने सोमवल्ली ए सर्व वस्तुओने एकत्र करी कळशोनी अंदर नांखी तथा मध, खीर अने यावक आदि अनेक प्रकारना भक्ष्य पदार्थीयी सारी रीते विल आप्युं. खदिर, पलाञ्च,

गूलर काञ्मरी अने पीपळना काष्ट्रना समिध वनान्यां. श्रीमान कृपालदेवजी अश्वेवेद्य, तथा ज्योतिपीने आगळ राखी अग्निनी समीपे पूर्व तरफ मुख राखी वायना चर्म जपर विराजमान थया, उत्तम लक्षणोथी युक्त हाथी तथा घोडाने दीक्षा दइ, स्नान करावी निवन वस्त्र ओहाडी पुष्प-माळा, गन्ध तथा भूप आदिथी तेतुं पूजन करी, मिष्ट वचनोधी शान्त्वन आपी तेओने धीरे धीरे अनेक प्रकारनां वाद्य, शंख अने पुण्याह्वाचनना शब्दोथी दिगंतने गजावता आश्रमना तोरण पासे लड़ आव्या. तोरण समीपे आवेला हाथी तथा घोडाए पोतपोतानी मेले जमणा पग उंचो करी उभा रही कुपारकृपालदेवजीनो विना यत्न शीघ्र विजय सूचव्योः पुरोहिते अभिमंत्रण करी एक पिंड अन्वना मुख आगळ धर्यों ते पिंडनुं तुरत घोडाए भक्षण करी मखवानना जय प्रदर्शित क्यों; प्रथम स्थापन करेला कलशोना जळमां गुलरनी डाळ आर्द्र करी शान्तिक अने पौष्टिक मंत्र भणता पुरोहिते ते डाळीथी घोडाओनो, राजानो अने हाथीओ सहित सैन्यनो स्पर्श कर्यो. राज्य-नी वृद्धिने माटे फरी पण सर्वेतुं पूजन करी अथर्वण वेदमां कहेला अभिचार मंत्रोथी राज्य पुरो-हिते माटीथी शत्रु मूर्ति वनावी तेनी छातीमां वरछीनो प्रहार कर्याः पुरोहिते अभिमंत्रण करी छगा-मने घोडाना मुख्यमां चढावी, त्यारवाद नीराजन कराएला कृपालदेवजी ते अश्व लपर आरुढ घड पोतानी सेना सहित उत्तम शक्कन जोड़ प्रथम इज्ञानकोण तरफ रवाना थया. मृदंग अने शंखना ध्वनिओ, हपित हाथी अने मनुष्योथी घेराएला कुमार कृपालदेवजीए सीकरीतुं राज्य छोडी पोता-नी प्रजा सहित पश्चिममां पधारी सिन्युदेशनी अन्दर निर्विध्ने कीर्तिगढमां राजधानी जमावी.

कृपालदेवजीए विधिवत् कीर्तिगढना तस्तपर पाय धारण कर्या पर्छा प्रजाने पुत्रवत् पाळी अनेक रीते राज्यनी आवादी करी; किव पंडितोने मानपुर:सर दान आपी मखवान कुळनी महान प्रतिष्टा वद्यारी, पद्शास्त्र सपंत्र विद्वज्जनोने पोताना सलाहकारक तरीके राख्या; प्रजाहित अर्थे केटलांषक विद्यालयो अने जलाशयो वंधाव्यां, प्रजा पण पोतपोताना वर्णाश्रम धर्म प्रमाणे वर्तन करी सुखशान्तिमां दिवसो गुजारवा लागी, कृपालदेवजीना स्वर्गवास पछी तेना कुमार सारंगधरजी कीर्तिगढनी गाटीए वेटा. तेओए पण पोताना पितानी माफक राजधर्मनुं अवलंबन करी प्रजानो प्यार मेळ्यो, तेना कुमार विजयपालजी कुंबर पदे गुजरी जतां तेना कुमार अजयभूपाले दादाना स्वर्गवास पछी कीर्तिगढनो राजवंभव भोगव्योः लारवाट मानपालजी देवपालजी, अने जोधपालजी क्रमपूर्वक गढ करेन्टीनी गादीए वेटा. जोधपालजीना पुत्र

चंन्द्रपालजी कुंवर पदे स्वर्गवासी थतां तेना कुमार सूर्यपालजी कीर्तिगढना अधिपति थया. ते पछी उदयभानु, धरणीधर अने धीरसिंहजी ए त्रण क्रमपूर्वक राजाओ थया, धीरसिंहजीना कुमार धारसिंहजी कुंवर पढे गुजरी जतां तेना पुत्र पातालसिंहजी करेन्टीना प्रजापति घया. त्यारवाद पृथीराज तथा मूळराजजी ए वे क्रमपूर्वक मूळराजजीना <sub>कुमार</sub> अक्षयराजजी कुंवर पदे र्स्वगवासी थतां तेना इंजनाणजी कीर्तिगढनी गादीए वेटा. ते पछी लखधीरजीए खेनछत्र धारण करी कीर्ति-गढनी प्रजातुं उत्तमरीने पालन कर्युं. लखधीरजीना पुत्र रणमलसिंह्जी कुंवर पदे गुजरी जतां तेना कुमार क्षेमराजजी गादीपित यंगा. त्यारवाद वागसिंहजी अने जयमझजी-ए क्रमपूर्वेक कीर्तिगढनुं आधिपत्य स्वीकारी विश्वमां कीर्ति वधारी. जयमलजीना कुपार यौत्र-श्वजी कुंबर पदे गुजरी जतां तेना पुत्र इन्द्रसिंहजी गाडीए वेटा. ते पछी वनवीर-सिंहजी, विक्रमसिंहजी अने हमीरसिंहजी क्रमपूर्वक कीतिगढना अर्थाश थया. ह-मीरसिंहना कुमार करणसिंहजी कुंवर पदे स्वर्गवासी यतां तेना पुत्र प्रतापसिंहजी राजा वन्या, त्यारवाद सूर्यसिंहजी, सुंदरसिंहजी, सुरतानसिंहजी, गंगेवजी, अने गोवरधनसिंहजी ए पांच राजाओ क्रम पूर्वक कीर्तिगढना अधिपति थचा, गोवर्धनासिंह-जीना पुत्र श्रीपतर्जी कुंवर पदे गुजरी जतां तेना कुमार धनराजजी गाडीए वेडा, ते पछी, धीरसिंहजी, धरणीधरजीं अने रत्नसिंहजी ए त्रण क्रम पूर्वक राजाओ थया. रत्नसिंहजीना पुत्ररणजीतींसहजी कुंवरपदे स्वर्गवासी थतां तेना कुमार वेरीसाझजीए कीर्तिगढना राजतरूतपर पावधारण कर्योः त्यारवाद जारमलजी, भोजराजजी अने धीरसिंहजीए, क्रमपूर्वक मजानुं पालन कर्यु धीरसिंहजीना कुमार पुष्पसिंहजी क्वंवर पदे गुजरी जतां तेना पुत्र देवराजजी राजा थया. ते पछी पृथ्वीराजजीए प्रजापालपद धारण करी गढ करेन्टीनी प्रजानुं सासन कर्युं. ए पृथ्वीराजजीना कुमार सालणदेवजी कुंबर पदे स्वर्गवासी थतां तेना पुत्र सूर्यभाणजी गादीपति वन्या. ते पछी सोमेश्वरजी अने ज्ञातलजी ए वे क्रमपूर्वक राजाओ थया. शातझजीना पुत्र सुंदरसिंहजी कुंवर

पदे गुजरी जतां तेना कुमार लखधीरजी गादीए वेठा, ते पछी सुरतानसिंहजीए गढ करेन्टीनो राजवैभव भोगव्यो , तेना कुमार हमीरसिंहजी कुंवर पदे स्वर्गवासी थतां नरपित नरभ्रमरजी ए कीर्तिगढना राजतख्तपर पाय धारण करी प्रजापालनमां यश प्राप्त कर्यो. तेओने जयमलजी, राणंगजी, वैरीसालजी, लुणंगजी, वापलजी, क्षेमराजजी, विक्रमासिंहजी, विष्ठलजी अने हांफाजी नामे नव कुमार थया, तेमां पाटवी कुमार जयमलजी कीर्तिगढ़नी गादी वेठा. ते समये मखवान शब्दनी अपभ्रंश "मकवाणा" ए प्रमाणे थतां राजिष कुंडसालजीना वंशजो " मकवाणा " पदने धारण करवावळा थचा. नरपति नरस्रमरजीए पोतानी ह्यातीमांज राणंगजी आदि आठे भाइओने चाळीश गाम समभागे वहेंची आप्यां हतां, तेमां राणंगजीए राणंगपर वसान्युं तेना वंशजो राणंग मकवाणा, वैरीसालजीए गढ बीलोर वसाववाथी तेना वंशजो वापल मकवाणा, छुणंगजी ए छुणंगपुर वसान्युं जेथी तेना वंशजे। छुणंग मकवाणा, वापलजीए गढ वालायच वसाव-वाथी तेना वंशजो वालायच मकवाणा, क्षेमराजजी गढखोड वसाववाथी तेना वंशजो खवड मक्वाणा (जेओ हाल छुदामहा, सेजक्रपर अने धांधलपर तालुकदार काठीओं छे ते ), विक्रमिसिंहजी ए बुहापुर वसान्युं जेथी तेना वंशजो बुहा पकवाणा, विष्ठलजीए विदृळपुर वसान्युं जेथी तेना वंगजो विद्रुल मकवाणा अने हांफाजीए हांफानेर वसा-च्युं जेथी तेना वंशजो हांका मकवाणा कहेवाया. ए रीते आठे भाइओ विताए आपेल गरास-मांथी पोत पोताने नामे नवां गामो वसावी त्यां आनंद पूर्वक रहा। कीर्तिगढना अविपति मकवा-णा जयमलजीने वाघसिंहजी नामे कुमार थया पिता जयमलजीना स्वर्गवास पछी तेओ-ए कीर्तिगढनी गादीए वेसी महान कीर्ति मेळवी. तेओने सूर्य समान तेजस्वी वैरीआश (व्यास) नामे घणाज भाग्यशाळी अने बुद्धिमान कुमार थया. वालपणथीज उत्तम गुण मेळववामां उत्सुक व्यासजीए युवावस्थानो आरंभ थतां राजनीति उपर विशेष छक्ष आप्युं, विना वार्घासंहजीनो स्वर्गेत्रास थवाथी गढ करेन्टीनी गादीए वेसी ए व्यास मकवाणाए पोताना बुद्धिवळथी गज्यने विशेष आवाद कर्यु वीजी तमाम रीते पोतानी प्रजा सुख वभवमां दिवसो निर्ममन करती हती, ५रंतु जगत्ना प्राण अन छे अर्थात् अन्नविना कोइथी प्राण धारण करी शकातां नथी, ए अन्न

वर्षाऋतुने आधीन होवाथी वर्षाऋतुनुं यत्न पूर्वक भित्रष्य जाणवा साक्षर ज्योतिपीओने वोळावी पोते प्रश्न कर्युं; आज्ञा श्रवण करतांज तेमांना दीर्घदर्शी एक देवज्ञे कर्युं के—मागशर महिनानी शुक्र प्रतिपदा पछी ज्यारे चंद्रमा पूर्वीपाढा नक्षत्रपर स्थित थाय छे त्यारथी गर्भनी शरुआत थाय छे, ते गर्भनां शुभाशुभ छक्षण कहुं छुं ते श्रवण करों;—

जे नक्षत्रपर चन्द्रपा स्थित थतां गर्भ वंघाय ते गर्भना एकसो पचाणु दिवसे अर्थात् चन्द्रमा पाछो एज नक्षत्रपर आवतां पसव थाय छे.

शुक्क पक्षमां वंधाएला गर्भा साडा छ महिना पत्नी कृष्णपक्षमां मसने छे, एन रीते कृष्ण-पक्षमां वंधाएला गर्भो शुक्कपक्षमां मसन पामे छे, दिवसे वंधाएला रात्रीए अने रात्रीए वंबाएला गर्भो दिवसे मसने छे, संध्या काळना गर्भोनो संध्या काळेन मसन थाय छे परंतु मातः संध्यामां वंधाएला गर्भो सायंसंध्याए अने सायंसंध्याना मातःसंध्याए मसन थाय छे.

मागशर महिनानी पहें अर्थात् शुक्त पक्षमां तेमन पोप महिनाना अजवाळीयामां उप्तन्न थएल गर्भो मन्द फळ आपे छे अर्थात् थोडा वरसे छे; आ गर्भ लक्षणमां पुणिमाधी महिनाओनी गणतरी करवी; पोष महिनाना कृष्ण पक्षमां वंवायेला गर्भो श्रावण मासना शुक्त पक्षमां वरसे छे, माघना शुक्त पक्षमां वंवाएला गर्भो भादरवा शुद्रमां वरसे छे, फागणना शुक्त पक्षना गर्भो भादरवा वदमां एम उत्तरे।त्तर गर्भथी साडा छ मासने अंतरे मसव थाय छे।

गर्भ वस्तते जो मेध पूर्व दिशामां होय तो प्रसव वस्तते पश्चिमे वरसे छे अने जो गर्भ वस्तते पश्चिमे होय तो प्रसव वस्तते पूर्वमां थइ वरसे छे तेमज वायुनो पण विपर्यय थाय छे अर्थात् गर्भ वस्तते पूर्वनो वायु चालतो होय तो प्रसव वस्तते पश्चिमनो वायु चाले छे, अन्य दिशामां पण एवी- ज रीते विपर्यय समजी लेवो.

गर्भ वसते आह्नादकारक मंद मंद पवन उत्तर, इशान अथवा पूर्व दिशाना चालतो होय, आकाश निर्मळ होय, चन्द्र तथा सूर्य स्निन्ध, शुक्तवर्ण अने म्हाटा परिवेप अर्थात् कुंडाळाथी घेराएला होय, म्हाटा तेमज अति स्निन्ध वादळांओथी युक्त आकाश होय, मेघसूचि धाय अथवा क्षुरक अर्थात् सूचि समान लाल रंगना वादळांओथी व्याप्त आकाश होय, आकाशनो अति नील वर्ण होय, मेचक समान आकाशनो रंग होय, चन्द्रमा अने नक्षत्र निर्मळ ुंहोय; इन्द्रधर्तुर्हेंचें, मेघनी गंन्

भीर गर्जना, विजळीनुं चमक्बुं, प्रतिसूची अर्थात् वीजा सूर्यनुं देखाबुं ए वधा लक्षण संध्यामां थाय तो ते संध्या ग्रुभ होय छे. पक्षी अने मृगोना समूह उत्तर, इशान अने पृवे दिशामां स्थित थइ सूर्य तरफ मुख राखी मधुर स्वरथी उचार करे, ग्रहविंव म्होटां देखाइ नक्षत्रोनी उत्तर तरफ थइ गमन करे, अने तेनां किरणो निर्मळ, अने उप्तात रहित होय, हक्षो पण निरुपद्रव अंकुरोथी युक्त होय, मनुष्यो अने पशुशो पसन्न होय गर्भोनी पृष्टि करनारा आ सर्व लक्षण मागशर महिनानी शुक्त प्रतिपदाथी आरंभी वैशाखनी समाप्ति पर्यन्त जोवां जोइए.

मागशर अने पोषमां सन्ध्यानो रंग लाल, पिरवेष सिंहत मेघ, मागशरमां वहु शीत न पड़े अने पोपमां वहु हिम न पड़े तो ते शुभ गणाय छे. माघमां प्रचंड पवन फुंके, सूर्य अने चन्द्रमानी कान्ति तुपारथी मिलन रहे, टाट वहु पड़े, तेमज वादळांथी टंकाएल सूर्यनो उदय अने अस्त थाय तो ते शुभ जाणवां. फागणमां प्रचंड अने रुखो पवन फुंके, आकाशमां स्निग्ध मेघ उदय पामे, सूर्यचन्द्रना परिवेष खंडित होय, सूर्य किवल वर्ण अथवा ताम्रवर्ण होय तो ते शुभ लेखाय छे. चेत्र महिनाना गर्भ पवन, मेघवर्षा अने परिवेषथी युक्त होय तो शुभ समजवा, वैशाखमां मेघ, पवन, वर्षा, विजळी अने वादळाओनी गर्जनाथी युक्त गर्भ होय ते शुभ गणाय छे.

जे गर्भ समये अति शुक्कैवर्ण होय अथवा अति कृष्णवर्ण होय तेमन जेनी आकृति मत्स्य, मकर, कूर्म अने शिशुमार आदि जलजंतुओ समान होय ते मेघ प्रसव समये घणुं जळ वरसे छे.

जे मेघ गर्भ समये सूर्यना प्रचंड किरणोथी तपता होय अने ए वखते थोडो थोडो पदन चालतो होय तो ते मेघ प्रसव टाणे क्रोधथी अर्थात् म्होटी धाराओथी जळ वरसे छे.

Hammannon and the second and the sec

गर्भ वखते उन्हापात थार्य, विजळी पहे, घूळनी दृष्टि, दिग्दाह अथवा भूकंप थाय, गन्धवेनगर देखाय, सूर्य मंडळमां कीलक जणाय, घूमकेतुना उदच थाय, ग्रहयुद्ध तथा निर्धातना निनाद धाय, रुधिर आदिनी विकृत वर्षा थाय, परिघ अर्थात् उदय वखते सूर्य उपर वांकी मेघनी रेखा होय, इन्द्र धतुप देखाय, ग्रहण थाय इत्यादि उत्पातो अने वीजा दिव्य, आन्तरिक्ष अने भाम ए त्रण मकारना उत्पातो थवाथी गर्भ नष्ट थइ जाय छ अर्थात् प्रसव टाणे मेघ वरसतो नथी.

उपर कहेल सामान्य लक्षणोथी युक्त पोताना ऋतुस्वभावधी अर्थात् मागशर अने पोपमां वंधाएला गर्भोनी दृद्धि षाय छे अने एथी विपरीत जे गर्भ वंधाय तेनी हानि थाय छे.

पूर्वाभाद्रपदा, उत्तरा भाद्रपदा, 'उत्तरापाढा, पृर्वापाढा अने रोहिणी ए पांच नक्षत्रोमां पूर्वीक्त लक्षणोथी युक्त गमे ते ऋनुमां गर्भ वंधाय तेनी दृद्धि थाय छे अर्थात् ते वहु वरसे छे.

शत भिषक, आश्रेत्रपा, आद्री, स्वाति, अने मया ए पांच नक्षत्रोमां गर्भ वंधाय ते शुभ होय छे अने घणा दिवस पर्यन्त पूर्वांक्त रुक्षणोथी पुष्टि पामे छे. दिन्य, भाम अने आन्तरिक्ष ए त्रण प्रकारना उत्पातोथी हणाएला गर्भी नष्ट थाय छे अथीत जेंग्ला दिवस उत्पानोथी गर्भहत थाय तेंग्ला दिवस सुधी दृष्टि थती नथी.

पूर्वोक्त पूर्वाभाद्रपदा आदि नक्षत्रोमां अने मागशर आदि महिनाओमां जे गर्भ दृद्धि पामे छे तेना वरसवाना दिवसोनी संख्या नीचे मुजब समजवी.

मागशरमां दृद्धि पामेको गर्भ साडा छ महिना पछी आठ दिवम सुनी वरसे छे, पोष महिनानो गर्भ छ दिवस, माधनो सोळ दिवस, फागणनो चोवीश दिवस, चैत्रनो बीश दिवस अने वैशाख मासमां पूर्वोक्त नक्षत्रोनी वच्चे ने गर्भ पुष्ट थयेल होय ते प्रसव टाणे त्रण दिवस पर्यन्त वरसे छे, आ रीते शतिमषक् आदि जे एांच नक्षत्रो कह्यां एमांथी गने ते एक नक्षत्रमां गर्भनी दृद्धि थाय तो वरसवाना दिवसोनी संख्या उपर मुजव जाणी लेवी.

जे नक्षत्रमां गर्भ बंधाय ते नक्षत्र क्रूर ग्रहयुक्त होय तो वरसती वखने करा तेमज बीजळी पढ़े अने जळनी साथे मत्ह्य वरसे, एज नक्षत्रपर चन्द्रमा अथवा सूर्य वेठेल होय अने शुभ ग्रहयुक्त होय अथवा शुभ ग्रहोनी द्रष्टि पडती होय तो घणीज दृष्टि थाम छे.

गर्भ समये जो विना कारण अति दृष्टि थइ जाय तो गर्भनो नाश थाय छे.

द्रोण एटले वसी पल तेनो अप्टमांश अर्थात् पचीश पलथी अधिक वर्षा थाय तो गर्भ-स्नाव यह जाय छे.

गर्भ वस्तते जो गर्भ पुष्ट होच अने मसव समये भौम आदि ग्रहोना रोहिणी श्रवण आदि नक्षत्रपर रहेवाथी अथवा बीजा कोइ जुत्पात आदि निमित्तथी वरसवा न पामे तो ते फरी बीजा गर्भ ग्रहण वस्तते करा सहित जळ वरसे छे.

जेम गायनुं दूध घणो वखत रहेवाथी किन थई जाय छे तेम जल पण वरसवाने समये निह वरसवाथी किन थई करा वनी ज.य छे.

पवन, जळ, विजळी, गर्जना अने मेघ ए पांच निमित्त छे. गर्भ समये ए पांचे निमित्त होय तो प्रसव टाणे ते मेघ सो योजन पर्यन्त वरसे छे, चार निमित्त होय तो पचाश योजन, प्रण निमित्त होय तो पचीश योजन, वे निमित्त होय तो साडावार योजन अने एकन निमित्त होय तो ते मेघ पांच योजन पर्यन्त वरसे छे.

एक हाथ लांबो अने एक हाथ पहोळो कुंड बनावी दृष्टिनो आरंभ थतांज वर्षा वच्चे राखी देवो, वर्षा थइ रह्या बाद एमां जेटलुं जळ भराय तेनो तोल करी जळतुं प्रमाण जाणवुं.

गर्भ समये पूर्वोक्त पांच निमित्त होय तो प्रसव टाणे एक द्रीण अर्थात् वसोपल जल वरसे छे अर्थात् उपर कहेल कुंडमां द्रोण परिमाण जल एकटुं थाय छे, गर्भ समये पवन होय तो त्रण आढक अर्थात् दोढसो पल जल वरसे छे, गर्भ वखते विजली थती होय तो छ आढक, में धयुक्त गर्भ होय तो नव आढक अने गर्भ समये मेच गरजे तो प्रसव टाणे वार आढक जल वरसे छे.

पचाज्ञ पलनो एक आढक अने चार आढकनो एक द्रोण थाय छे.

जे गर्भ पवन, जळ, वीजळी, गर्जना अने मेच ए पांच रुवाथी युक्त होय तो घणुं जळ वरसे छे. परंतु एवो गर्भ जो गर्भ समयेज वहु वरसी जाय तो प्रसव टाणे घणीज थोडी इष्टि धाय छे.

जयेष्ट महिनाना शुक्त पक्षमां अष्टमीयी आरंभी चार दिवस पर्यन्त वायु धारण काळ छे अथवा वायुथी गर्भ धारण धाय छे, मसत्र चतो नथी ए चारे दिवसोमां मंद अने उत्तम पवन होय तेमज आकाश स्निग्ध मेघोयी ढांकयु रहे तो शुभ गणाय छे.

जयेष्ट मिहनामां शुक्क पक्षमांन स्वाति आदि चार नक्षत्रोमां वर्षा धवाथी श्रावण आदि चार मिहना धारणा पिस्तित धइ गि अर्थात् दृष्टि निह धाय एम क्रमर्था जाणी हेर्नुं, आतुं रहस्य ए छे के जयेष्ट शुक्क पक्षान्तर्गत स्वाति नक्षत्रमां वर्षा धाय तो श्रावणमां धती नथी, विज्ञास्त्रामां वर्षा थाच तो भादरवामां धनी नथीं, एवीं न रीते अनुराधा अने जयेष्टामां वर्षा धाय तो क्रमथी आश्विन अने कार्तिक मासमां दृष्टि यती नथी.

ए चारे धारणा अर्थात् अप्टमी आदि चारे दिवसो एक सरखा वीती जाय तो शुभ गणाय छे, अने ए चार दिवसोमां मो कांड्क न्यूनाधिक थाय तो ते अशुभ लेखाच छे अने चोरथी भय थाय छे.

विजळी, जळना विन्दुओ, घूळ उडाडतो पवन अने सूर्य चन्द्रतुं वादळाओमां ढंकाइ रहेवुं ए सर्व वात होय तो धारणा ग्रुभ लेखाय छे. जो उत्तम विजळी ग्रुभ दिशा अर्थात् उत्तर, इशान अने पूर्वमां चमके तोपण खेतीओनी वृद्धि थाय छे.

उपर कहेल चार दिवसोमां धूळ उडे, जळ दृष्टि थाय, बाळको शुभ खेल ग्वेले, पक्षीओ मधुर बोल बोलता धूळ अने जळ आदिमां क्रीडा करे, सूर्य चन्द्रने हिनग्ध अने रमणीय परिवेष होय, तोपण खेतीनी दृद्धि करनार दृष्टि थशे एम समजी लेवें ए चारे दिवसोमां हिनग्ध सुश्लिष्ट अने प्रदक्षिण गमन करनारा बादळां होय अर्थात् पूर्वमां थड दक्षिण तरफ जाय, दक्षिणथी पश्चिममां, पश्चिमथी उत्तरमां अने उत्तरथी पूर्वमां गमन करे तो सर्व खेतीओने सिद्ध करनारी घणी दृष्टि थाय छे.

हवे जयेष्ठ मासनी पूर्णिमा पछी पूर्वापाढा आदि कोइ नक्षत्रमां पहेली वर्षा थाय तेनां शुभाशुभ फळ अने जळनो तोल आदि कहुं छुं ते श्रवण करो।

जे वर्षाथी भूमि उपर मुद्रा थाय अथीत घूळ दवाइ जाय अथवा तृणोना अग्र भाग उपर जळना विन्दुओं स्थिर थाय ए पूर्वोषाढा आदि नभ्षत्रमां थएली पहेली वर्षाथी जळतुं प्रमाण कही शकाय छे.

प्रवर्षण काळमां गमे तेवी वर्षा थाय तोषण आगळ वर्षा काळमां उत्तम दृष्टि थाय छे.

केटलाएक एम कहे छे के प्रवर्षण काळमां गमे त्यां दश योजनना मंडळ्मां दृष्टि थाय तो वर्षा काळमां सारी रीते वर्षा थाय छे, केटलाएकनो एम मत छे के प्रवर्षण काळमां बार योजनना मंडळमां दृष्टि थाय तो आगळ वर्षा काळमां घणीज उत्तम धर्षा थाय छे एथी न्यून वरसवाथी आगळ उत्तम दृष्टि थती नथी.

प्रवर्षण काळमां पूर्वीपाढा आदि जे जे नक्षत्रमां वर्षा थाय ते ते नक्षत्रमां आगळ प्रसव

काळे घणे भागे फरी दृष्टि थाय छे, जो ज्येष्ठ मासनी पूर्णिमा पछी पूर्वापाढा आदि सत्यावीशे नक्षत्रीमां वर्षा न थाय तो आगळ प्रसव काळे पण दृष्टि वीलकुल थती नथी.

हस्त, पूर्वापाढा, मृगिहार, चित्रा, रेवती अने धिनष्ठा ए नक्षत्रोमांथी प्रवर्षण काळे गमे ते नक्षत्रमां दृष्टि थाय तो प्रसव काळे सोळ द्रोण जळ वरसे छे अधीत् पूर्वे कह्या प्रमाण वनावी राखे- छ कुंडमां सोळ द्रोण जळ एकढुं थाय छे.

शतिभवक्, ज्येष्ठा अने स्वातिमां वरसवाधी चारद्रोण, कृत्तिकामां वरसवाधी दशद्रोण, श्रवण, मघा, अनुराधा, भरणी अने मूळमां वृष्टि थवाधी चौद द्रोण, पूर्वा फाल्गुनीभां वरसवाधी पचीश द्रोण, पुनर्वसुमां वीश द्रोण, विशाखा अने उत्तरापाढामां वृष्टि थवाधी पण वीश द्रोण, आश्केपामां तेर द्रोण; उत्तराभाद्रपदा, उत्तराफाल्गुनी अने रोहिणीमां वरसवाधी पचीश द्रोण, पूर्वा भाद्रपदा अने पुष्यमां वृष्टि थवाधी पंदर द्रोण, अश्विनीमां वार द्रोण अने आद्री नक्षत्रमां प्रवर्षण काळे वर्षा थाय तो प्रसव काळे अढार द्रोण जळ वरसे छे परंतु प्रवर्षण काळे जे नक्षत्रोमां वृष्टि थाय ते नक्षत्र निरुपद्रव अर्थात् कोड प्रकारना उत्पात आदिधी पीडित न होय तो आ जळ परिमाण सारी रीते मळे छे, अने एथी वर्षाकाळे वर्षानी न्यूनता तेमन अधिकतानुं ज्ञान थाय छे.

प्रवर्षण काळतुं नक्षत्र सूर्य, ज्ञानि अने केतुथी पीडित होय अधीत् ए एना उपर वेटा होय, मंगळधी अभिद्यातित होय अधीत् मंगळे वक्ष अति वक्षयोग तारकाभेदन आदि ए नक्षत्र पर करेल होय अथवा दिव्य, भौम अने आन्तरिक्ष उत्पातोथी पीडित होय तो अग्रुभ गणाय छे, अने प्रसव काळे वर्षा वीलक्कलधती नथी. जो उपर कहेल नक्षत्र ग्रुक, वृहस्पति, ब्रध अने पूर्ण चन्द्रथी युक्त होय तेमज कोइ प्रकारना उत्पातथी पीडित न होय तो ग्रुभ लेखाय छे अने वर्षा उत्तम थायछे.

मागशरथी वंशाख पर्यन्त गर्भ तपासे, ज्येष्ठ मासना शुक्त पक्षमां अष्टमी आदि चार दिवस वायु धारण निरखे, ज्येष्ठना शुक्त पक्ष पछी पूर्वापाढा आदि सत्यावीश नक्षत्रे।मां प्रवर्षण अने जळ परिमाण तपासे तेमज बीजा पण तमाम उत्पातो उपर नजर राखे त्यारे श्रावण आदिधी कार्तिक पर्यन्त वर्षानुं ठीक ठीक झान थाय छे.

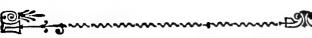
आपाढ महिनाना कृष्णपक्षमां रोहिणी नक्षत्रने चन्द्रमानी साथे संयुक्त जोइ तेथी थता शुभाशुभ चोग जाणवा माटे नगरथी उत्तर अथवा पूर्व दिशामां जे उत्तम स्थळ होय त्यां ब्राह्मण अथीत् ज्योतिषी जइ त्रण दिवस रहे अने हवन करे, अधिनी आदि नक्षत्रो सहित सूर्य आदि नव ग्रह आळेखी धूप दीप अने विलिधी एओा पुजन करे, पछी पत्रराग आदि रतन जल अने अनेक मकारनी औपिधओ युक्त आम्र आदि हक्षोना कोमल पत्रोथी ढांकेलां चंदन असत आदि-धी पृजित अने अकाल मूल अधीत जेना तळीयां काळां न होय एवा कलशोधी चारे दिशाओ-मां सुशोभित अने जेना उपर दर्भ विलावेल होय एवा स्थंडिल माथे ज्योतिपी रात्रीने वस्ते शयन करे.

सर्व प्रकारना बीजोने महाव्रत नागना मंत्रथी अभिमंत्रण करी कलज्ञामां नांखी तेना उपर सुवर्ण अने कुशयुक्त जळ छांटी वायु, वरुण अने चंद्रमाना मंत्रथी होम करे.

प्रथम आठे दिशा आदिनी साधन रीतिथी साधना करी बार हाथ उंचा वांस उपर चार हाथ छांची सूक्ष्म बह्ननी बाळा रंगनी ध्वजा छगावी मध्यमां उभी करे, फरी ज्यारे रोहीणी उपर चन्दमा आवे ए दखते ए ध्वजाथी पवनने जोवे के कड दिशा तरफर्या पवन आवे छे अने कइ दिशा तरफ जाय छे.

ए रोहिणीयोगमां वर्षानुं ज्ञान थवा माटे प्रहरोथी अर्धमास अर्थात् पखवाडीयाओनो विचार करे, आतुं तात्पर्य ए छे के जे अहोरात्रमां रोहिणीथी चन्द्रना योग थाय ते दिवसे सुर्योन्द्रयथी आरंभी दरेक पहोरे जोया करवुं. जो पहेला प्रहरमां शुभ पवन होय तो श्रावणना प्रथम पक्षमां सारी वर्षा थाय छे अने अशुभ पवन होय तो ए पक्षमां वर्षा थती नथीं. वीजा पहरना शुभ पवनथी श्रावणना वीजा पक्षनी वर्षा जाणे. ए रीते दिवस अने रात्रीना आठ पहोरना पवन उपरथी श्रावणथी कार्तिक पर्यन्त चार महिनाओना आठ पखवाडीयानी वर्षा जाणे तेमज महरना विभाग करी पक्षना पंदर दिवसनी वर्षानुं ज्ञान मेळवे अर्थात अर्थ पहरना पवनथी पक्षनुं अर्थ साडासात दिवसनी वर्षानो विचार करे. ए रीते वीजा विभागो करी प्रत्येक दिवसनी वर्षा जाणी लीए, क्यांइ एम पण लखेल छे के रोहिणी योगवाळा दिवसना चार प्रहरना पवनथी श्रावण आदि चार महिनाओनी वर्षा जाणवी अने एक प्रहरना त्रीश विभाग करी महिनाना त्रीशे दिवन्से।नी वर्षा समजवी.

प्रदक्षिण अर्थात् पूर्वेथी दक्षिण अने दक्षिणथी पश्चिम इत्यादि गमन करनार पवन शुभ गणाय छे. वायु जे दिशामां घणो काळ चाल्या करे तेने वळवान समजवो अर्थात् ए वायुथी ज्योतिषी शुभाशुभ विचार करे, जे वायु एकज वखत कोइ दिशा तरफ चाल्यो गयो होय तेनो



विचार करवो नरर्थक छे.

रोहिणी योग समाप्त थया वाद कुंभमां प्रथम राखेलां बीज तपासवां, एमां जे जे बीज अंकुरित थयां होय तेज धान्य ए वर्षमां थाय छे, जे बीजमां अंकुर न निक्कयां होय तेनी उत्प-त्ति थती नथी. ए बीजमां पण जे भाग अंकुरित थयों होय तेज भाग दृद्धि पामे छे.

रोहिणीनो चन्द्रथी योग थाय ते वखते ज्ञांत अथीत सूर्य तरफ मुख कर्या शिवाय पक्षी अने मृग मधुर शब्द करे, ए शब्दोथी दिशा शब्दायमान थह रही होय, आकाश निर्मळ होय अने पवन उत्तम चालतो होय तो शुभ फळ प्राप्त थाय छे.

एवा महोटा महोटा मेघोधी आकाश न्याप्त होय के जेओ कगांइ खेत अने कृष्ण, कचांड केवळ खेत अने कपांइ केवळ कृष्णवर्ण होय, विनजी चमकी रही होय, जे मेघोनो वर्ण झुद्ध होय, जेना समीपनो भाग सूर्यना किरणोधी रक्तवर्ण थएळो होय तेमन विद्युत्युक्त कृष्णवर्णना मेघोथी न्याप्त, अने इन्द्रधनुपथी युक्त आकाश देखाय तथा जे मेघो अंननसमान अति कृष्णवर्णना सर्व आकाशने घेरी दिशाओमां पण लडकी जाय ते मेघ दुनिया उपर वहु वरसे छे.

पूर्वोक्त मेघथी त्रण दिवत, वे दिवस अथवा एक न दिवस आकाश घराएछं रहे तो सुभिक्ष घाय छे, भूमि उपर मनुष्यो प्रसन्न रहेछे अने जळ पण घणो वखत रहेछे. जे मेप आका- शमां रुखा, अट्य पवनधी उडाडेळा अने मूक अथवा गर्नना हीन होय ने अग्रुभ होय छे अने वर्षी पण थती नथी.

मेय रहित आकाशमां सूर्य प्रचंड किरणोधी तपे तो वर्षा थाय छे अथवा प्रफुछित कुमु-दोथी सुशोभित सरोवर माफक रात्रीने वखते अति निर्मळ ताराओधी युक्त आकाश होय तोषण उत्तम वर्षा थाय छे.

मेच पूर्व दिशानो होय तो खेती उत्तम थाय छे, अग्नि कोणनो होय तो आग्निकोप धाय छे अर्थात् वहु आग लागे छे, दक्षिणना मेचोधी खेतीनो नाग थाय छे, मेच नैऋत्य कोणमां होय तो अर्ध खेतीनो क्षय थाय छे, पश्चिमनो होय तो हिए उत्तम थाय छे, वायत्र्य कोणनो होय तो क्यांह क्यांह पवन युक्त वर्षा धाय छे, उत्तर दिशानो होय तो चणी वर्षा थाय छे, हजान कोणनो होय तो खेती वहु सारी थाय छे, ए वखते जे दिशानो पवन चाले तेतुं फळ उपर प्रमाणे जाणी लेवुं. उत्तर आदि दिशामां स्थापेला चार कलशनां प्रदक्षिण क्रमथी श्रात्रण मास आदि नाम राखतां अशीत उत्तर दिशानो कलश श्रात्रण, पूर्वनो भाद्रपद, दक्षिणनो आश्विन अने पश्चिमनो कार्तिक मास. जे महिनानो कलश जलथी भरेलो रहे ते महिनामां उत्तम वर्षा थाय छे. चारे कलश जलथी भरेला रहे तो चारे महिना वर्षा थाय छे. जे कलशानुं जल टपकी जाय ते महिनामां वर्षा थती नथी. जेटलुं जल न्यून थाय तेटली वर्षा पण न्यून जाणती. तीजा पण घणा कलशो राजाओना अने देशोना नामथी स्थापन करी वीने दिवसे जोवा जोइए कलश पृटी जाय, एनुं जल टपकी जाय, न्यून जल थइ जाय अथवा कलश जलथी पूर्ण रहे ते अनुसार ए राजाओना अने देशोना भाग्य जाणवां जोइए जेना नामनो कलश पूर्ण रहे तेने श्रुभफल प्राप्त थाय छे, पूटी जाय तो नाश थाय छे, वशुंजल निकली जाय तो उपद्रव थाय छे अने थोडुं जल निकली जवाथी मध्यम फल थाय छे.

दक्षिणनी तरफ दूर अथवा समीपे स्थित थड़ गमे ते मकारे रोहिणी नक्षत्रशी चंद्रमा योग करे तो जगत्ने वधी रीते कष्ट पेदा थाय छे अर्थात् रोहिणीनी दक्षिणे चन्द्र रहे तो दुर्भिक्ष अने मरकी आदि रोगोथी प्राणीओ कष्ट पामे छे.

MINISTER CONTRACTION CONTRACTION OF THE CONTRACTION

रोहिणीने स्पर्श करतो चन्द्र जो उत्तरनी तरफ थइ गमन करेतो अनेक उपद्रवो सिहत सारी वर्षा थाय छे, जो चंद्र रोहिणीनो स्पर्श कर्या विना तेनी उत्तर तरफ गमन करे तो घणी वर्षा थाय अने जगतुमां सब प्रकारे कल्याण रहे.

आकाशमां जे रोहिणी नक्षत्रना शकटने आकारे पांच तारा छे तेने रोहिणीशकट कहे छे. जो चंद्रमा रोहिणी शकटना मध्य भागमां स्थित थाय तो सर्व मनुष्य शरणहीन थइ पोतानो देश छोडी क्यांइक चाल्या जाय, तेनां भुख्यां बाळको तेओनी पासे भोजन मागे छे अर्थात् अन्न दुर्लभ थइ जाय छे अने ए सर्व तपेल। घडामां थोडां रहेलां जळनुं पान करे छे. अथात् जळ पण दुर्लभ थाय छे.

प्रथम चन्द्रनो उदय थाय अने पछीथी रोहिणी उदय पामी चंद्रनी पाछळ पाछळ गमन करे तो शुभ फळ प्राप्त थाय छे अने सर्व स्त्रीओ कामातुर थइ पुरुषोने वश रहे छे.

जे रीते कामी पुरुष पोतानी मिया पाछळ चाले छे ते रीते मथम रोहिणी उदय पामे

अने तेनी पाछल चन्द्रमा उदय पामी गमन करे तो कामदेवना वाणोथी वींधाएला पुरुषो नारी-

रोहिणी नक्षत्रथी अग्नि कोणमां चन्द्र रहे तो महान जपद्रव थाय छे, नैऋत्य कोणमां चन्द्र रहे तो अति दृष्टि अनावृष्टि आदि जपद्रवने पामेली खेती नष्ट थाय छे, वायव्य कोणमां चंद्र होय तो खेतीनो चय अथात संग्रह मध्यम थाय छे अने रोहिणी नक्षत्रथी चंद्र इशान कोणमां होय तो खेती, धन, अने वर्षा आदि घणा लाभ थाय छे.

नक्षत्रोना सर्व ताराओमां जे तारा वहु तेज युक्त होय तेने गोगतारा कहे छे. जो रोहि-णीना योगताराने चंद्रमा ताडन करें अर्थात् पोताना गुंगथी योगतारानो स्पर्श करे अथवा पोता-ना शरीरथी चंद्रमा ए योगताराने ढांकी दीए तो ताडन करवाथी प्रजामां दारुण भय अने ढांक-वाथी स्त्रीना हायथी राजानुं मृत्यु थाय छे.

सायंक्ताळे गाय वनवी चरी आवे अने गामगां प्रवेश करे ते वखते एनी आगळ वळद होय अयवा काळा रंगना पशु वकरां आदि एनी आगळ आगळ चाले तो घणी वर्षा थाय तेमज श्वेत अने कृष्ण ए वन्ने रंगना पशु आगळ चाले तो मध्यम वर्षा धाय छे, शुक्क वर्णना पशु आ-गळ चालेतो वर्षा वीलकुल धती नथी. ए रीते वीजा रंगना पशुओमां पण कल्पना करी लेवी अ-धात ए पशुमां शुक्क वर्षा अधिक होयतो न्यून वर्षा अने कृष्णवर्ण अधिक होयतो घणी वर्षा थाय छे.

जो मेघथी घेराएला आकाशमां रोहिणीयुक्त चंद्र न देखाय तो बहु भारी रोगनो भय भाप्त थाय छे अने भृमि घणु जळ अने खेतीथी शुक्त वने छे.

रोहिणीथी चन्द्रना योगतुं जे फळ कहुं ते सर्व फळ आषाढ मासना शुक्क पक्षमां स्वाति अने उत्तरापाढाथी ज्यारे चन्द्रमा योग करे ते वखते पण समजी लेवुं.

जे रात्रीमां चन्द्रनो स्वातिधी योग थाय ते रात्रीना त्रण विभाग करी फळ जो बुं. जो म-यम भागमां वर्षा थायतो सर्व खेतीनी दृद्धि समजवी, वीजा भागमां वर्षा थायतो तिळ, मग अने अडदनी वर्णा पेदाश थाय छे अने त्रीजा भागमां वर्षा थायतो ग्रीप्म ऋनुनां अन्न जव, घउं ते-मज शरद ऋनुनां अन्न वाजरो, जुवार, अडद अने मग आदि थतां नथी. ए रीते दिवसना पहे-ला भागमां वर्षा थायतो आगळ उत्तम वर्षा थाय छे, बीजा भागमां वर्षा थाय तो पण आगळ सारी दृष्टि थाय छे, परंतु ते कीडा अने सर्पो आदि जन्तुओं युक्त होय छे, अने दिवस रात नि-रंतर दृष्टि थया करेतो आगळ उपर तमाम उपद्रवोधी रहित घणी सारी वर्षा थाय छे.

चित्रा नक्षत्रना समसूत्र उत्तरमां अपांवत्स ए नामने। नारो छे, जो चन्द्र ए तारानी स-मीपे स्थित थाय तो स्वातिथी चंन्द्रनो योग ग्रुभ होय छे.

माय महिनाना कृष्णाक्षमां सप्तमीन दिवस स्वातियोगमां वरफ पडे अथवा मचंड पवन चाले, जलयुक्त मेन वारंवार गरमे, आकाश वीजलीओनी पंक्तियी व्याकुल थाय अथवा वीजली वहु चमके तेमज चन्द्र, सूर्य अने ताग न देग्वाय अर्थात् वादलांओधी ढांकया रहे तो वर्षा ऋतु उत्तम लेखाय छे. सर्व देश आनंदमां रहे छे अने वर्या स्वेती वर्षा सारी थाय छे.

आ रीते फाल्गुन, चैत्र अने वैज्ञाखना कृष्ण पक्षमां स्वाति योगनी विचार करवो तेमां पण विज्ञेषे करी आपादमां स्वातियोग जोवो.

उत्तरापाढा नक्षत्र युक्त आपाढ मासनी पृणिमाने दित्रम पण स्वाति योगर्ना माफक सर्व विचार करवो, एमां विशेष कृत्य ए छे के सर्व बीजोनो बरावर तोल करी अने मंत्रथी अभिमंत्रण करी एक रात्री पर्यन्त राखी मुक्तवां; फरी बीजे दिवम एनो तोल करवो, जे बीज तोलमां वरे तेनी ए वर्षामां दृद्धि थाय छे. अने जे बीज तोलमां घटी जाय ते ए वर्षमां उत्पन्न धता नथी. नीचेना मंत्रोथी तुलानुं अभिमंत्रण करवुं.

> स्तोतव्या मंत्रयोगेन सत्यादेवी सरस्वतीः दर्शियण्यिस यत्सत्यं, सत्ये सत्यावताह्यसि ॥ येन सत्येन चन्द्राकीं, प्रहाज्योतिर्गणास्तथा । उत्तिष्ठन्तीह पूर्वेण, पश्चादस्तं वजन्ति च ॥ यत्सत्यं सर्वदेवेषु, यत्सत्यं ब्रह्मवादिषुः, यत्सत्यं त्रिषु लोकेषु, तत्सत्यिमह दश्यताम् ॥ ब्रह्मणो दुहिताऽसित्वमादित्येति प्रकीर्तिता । कार्यपी गोत्रतश्चैव नामतो विश्रुता तुला ॥

ए त्राजवाना वने छावडां अलसीना कपडानां अने चार सूत्रथी वाघेलां वनाववां, ए चारे सूत्रोनुं प्रमाण दश दश आंगळतुं राखवुं अने वन्ने छावडां वच्चेनी कक्षा अर्थात् जे दोरी पकडी त्राजवुं उपाडाय छे ते दोरी छ आंगळ लांबी वनाववी.

सोतुं तोळवुं होय तो दक्षिण अर्थात जमणी वाजुना छावडामां राखी तोळवुं अने वाकीनी बधी वस्तु तेमज जळ उत्तर अर्थात् डावी वाजुना छावडामां राखी ताळवुं जोइए. कुवातुं जळ
तोलमां वधे तो थोडी वर्षा, झरणातुं जळ वधे तो मध्यम वर्षा, सरोवरतुं जळ वधे तो उत्तम वर्षा
अने सर्व जळ वधे तो घणीज वर्षा धाय छे. कोइ पण जळ तोलमां न वधे तो वर्षा वीलकुल
थती नथी, हाचीदांतना तोलथी, हाथीना स्वाडांना तोलथी, गाय घोडा आदि पशु तेमज सुवर्णना
तोलधी राजा, मीणना तोलथी ब्राह्मण आदि वर्ण वर्ष महिना अने आटे दिशा तेमज वाकीनी
वस्तुओतुं पोत पोताना तोलथी वधघट जाणी लेवुं; ए रीते सर्व वस्तुओनी हानि अने वृद्धि तोलधी समजी शकाय छे.

सोनानी तुला उत्तम अने चांदीनी तुला मध्यम होय छे, जो ए वेड न वनी शकेतो खिदरना काष्ट्रनी तुला बनाववी अथवा जे वाणथी कोइ मनुष्य वींघाएल होय ते वाणभी तुला बनाववी. तुलानी ढांडीनी लंबाइ एक वितस्ति अर्थात वार आंगळ राखवी जोइए.

जे वस्तु तोळमां घटे तेनो नाश अने जे वधे तेनी दृद्धि थाय छे, तथा जे चीज वघे निह तेम घटे निह तेनी हानि के वृद्धि थती नथी। आ तुला कोशनुं रहस्य रोहिणी योगमां पण मनुष्ये करी जोबुं.

स्वाति, उत्तरापादा अने रोहिणी ए त्रण नक्षत्रोथी चन्द्रनो योग थाय ते वखते उक्त नक्षत्रो उपर भीम, शनि, राहु अने केतु ए पापग्रह वेटा होय तो ते अग्रुभ गणाय छे, परंतु बुध, ग्रुक अने बृहस्पित ए ग्रुभ ग्रह वेटा होय तो श्रेष्ठ लेखाय छे. जो अधिकमास थवाधी वे आपाद धइ जाय तो उपवास राखी वन्ने महिनाओमां पृवेक्ति योगोनो विचार करवो अर्थात् अधिक मासमां पण पूर्वोक्त रीतिथी योग जोवा.

जो रोहिणीयोग, स्वातियोग अने आपाढीयोग ए त्रणे फळमां सरम्वा आवे अर्थात् त्रणेतुं फळ शुभ अथवा अशुभ आवे तो निःसंदेहपणे शुभाशुभ फळ समनी लेवुं. जो त्रणेना फळमां भिन्नता रहे तो रोहिणीयोगनुं जे फळ होय ते विशेषे करी सिद्ध थाय छे.

आपाढी पूर्णिमा पछी कृष्णपक्षनी चतुर्थांने दिवस उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्रमां वर्षा थड् जाय तो आगळ उपर वर्षाऋतु उत्तम थाय छे, जो ए दिवस वृष्टि न थाय तो सारुं खतुं नथी.

आपाढी पृर्णिमाने दिवस सूर्यास्त समये जो इशान कोणनो पवन चाले तो खेती घणीज सारी थाय छे, एज वखते पूर्व समुद्रोना तरंगोना अग्रभागने ताइन करवाथी घूमतो तेमज सूर्य चन्द्रना किरणसमूहथी मिश्रित आकाशयी पूर्व दिशानो पवन चालेतो घणा नीलवर्णना मेय समूहोथी युक्त शरद ऋतुनी खेतीथी समृद्दिवान् अने वसन्त ऋतुनी उत्तम खेतीथी भूपित सर्व भूमि सुशोभित थाय छे.

जो जिस समये आकाशमां अखंडित अग्नि कोणनो पत्रन चाले तो पृथ्वी उपर अग्निनो घणोज उपद्रत थाय छे; दक्षिण दिशानो पत्रन चाले अने एज योगमां बहुरुखो पत्रननो शब्द थान्य तो कृषण मनुष्यनी माफक मेत्र पण थोडा थोडा जळना बुन्द वरसे छे; समुद्रने किनारे इलायची, लबली अने लवंग लनाओना समूहोने हलावतो नैऋत्य कोणनो पत्रन चालेतो छुधा तृपाथी मरेलां मनुष्योनी हड्डीओना डकडाना समृह रुपी जेणे वस्त ओढेल छे एवी भूमि भयंकर अने चंचल मदोनमत्त भेतवधू जेवी जोवामां आवे छे.

पश्चिम दिशानो पवन चालेतो भूमि खेतीथी सुशोभित रहे छे अने प्रयान मतुष्योना स-मूहोर्सु ठेकाणे ठेकाणे युद्ध थाय छे तेमज वसा, मांस अने रुधिरथी वसुंबरा न्याप्त रहे छे.

वेगवाळो प्रचंड वायव्य कोणने। पवन चालेते। जळनी धाराधी खेतीनी दृद्धि रुपी उत्तम चिद्रवाळी भूमि घणी सुख समृद्धिथी सद्भाग्यनी सेना समान जोवामां आवे छे.

उत्तरनो पवन चाले तो विजळीतुं भ्रमण अने संपूर्ण कांतितुं जे आकारज्ञान तेमां उद्यम युक्त मेघ उन्मन थइ जेमां चंद्र किरणो वादळाओथी ढंकाएल छे एवी भूमिने जळथी पूर्ण करी दे छे.

प्रचंड शब्द करतो इशान केाणनो पवन चाले तो जेमां पूर्ण जळतुं यौवन छे एवी पृथ्वी परिपक थएली खेतीथी भराइ जाय छे तेमज शत्रुओ जेने नमेला छे एवा धर्मात्मा राजाओ ब्राह्मण आदि चारे वर्णोनी रक्षा करे छे.

रुक्षोना फळ अने पुष्पोनी रुद्धियी सर्व वस्तुओनी सुस्रभता अने खेतीनी निष्पत्ति जाणवी जोइए. शाल दसना फळ अने पुष्पानी दृद्धिथी कल्पशालिनी, रक्त अशोकथी रक्तशालिनी क्षीरिकाणी पांड्कनी अने नील अशोकथी सूकरकनी दृद्धि थाय छे; कलपशालि, रक्तशालि, पां- इक अने सूकरक ए वधा धान्यना भेद छे; बड़नी दृद्धिथी यक्क अने तेन्दुकनी दृद्धिथी पिष्टक थाय छे ए पण वेड धान्यनी जाति छे, जांबुनी दृद्धिथी तल अने अडदनी, सिरसनी दृद्धिथी कांगनी, महुडानी वृद्धिथी घडंनी अने सप्तपणे दृक्षनी वृद्धिथी यवनी वृद्धि थाय छे.

अति मुक्तक अने कुन्द ए वन्ने पुष्पवृक्ष छे तेनी वृद्धिथी कपासनी वृद्धि थाय छे, असन इसनी दृद्धिथी सर्पवनी, वोरडीनी वृद्धिथी कुल्ल्थनी अने चिरविल्व नामना दृक्षनी दृ-द्धिथी मननी वृद्धि थाय छे.

वेतस वसना पुष्पोनी वृद्धिथी अळसीनी, पलाशना पुष्पोनी वृद्धिथी कोद्रवनी, ति-लक्त वृसनी वृद्धिथी शंख, मोती अने चांदीनी तेपज इंगुदी वृक्षनी वृद्धिथी शणनी वृद्धि थाय छे; हस्तिकण दसनी दृद्धियी हाथीओनी, अश्वकण दृसनी दृद्धिथी घोडाओनी, पाटला दृसनी दृद्धि-धी गायोनी अने केळोनी दृद्धिथी वक्तरी तथा विकनी वृद्धि थाय छे.

चम्पक पुष्योनी वृद्धिथी सुवर्णनी, वन्युजीवना पुष्योनी वृद्धियी मगनी, कुरवक वक्षनी वृद्धिथी हीराओनी अने निन्दिकावर्त पुष्योनी वृद्धियी वैदुर्य रत्नोनी वृद्धि थाय छे।

सिन्दुवार वृक्षनी दृद्धियी मोतीनी, क्रसंभवृक्षनी वृद्धियी कारुक अथवा शिल्प जा-णवावाळाञोनी, रक्तकपलनी वृद्धियी राजाओनी अने नील कपलनी वृद्धियी राजाओना मंत्री-ओनी वृद्धि थाय छे.

मुवर्ण पुष्पोनी वृद्धिथी श्रेष्ठ पुरुषोनी, कमलनी वृद्धिथी ब्राह्मणोनी, कुमुदोनी वृद्धिथी राजपुरोहितोनी, साँगन्धिक पुष्पनी वृद्धिथी सेनापितनी अने आकडानी वृद्धिथी सुवर्णनी वृद्धि थाय छे.

आम्रनी वृद्धिथी करुपाण, भिलामानी वृद्धिथी भय, पीछुनी वृद्धिथी आरोग्य, खेर अने शमी वृक्षनी वृद्धिथी दुर्भिक्ष अने अर्जुनवृक्षनी वृद्धिथी उत्तम वर्षा थाय छे; निम्व अने नागकेसरना पुष्पनी वृद्धियी गुभिक्ष थाय छे, किपत्थनी वृद्धिथी पवन चाले छे, निचुल वृक्षनी वृद्धिथी वर्षा न थवाथी भय उपने छे अने कुटन वृक्षनी वृद्धिथी रोगनो भय पेदा थाय छे. दुर्वा अने कुशना पुष्पोनी वृद्धिथी इक्षनी वृद्धि थाय है, कोविदार वृक्षनी वृद्धिथी वहु आग लागे छे अने स्थामलतानी वृद्धिथी व्यभिचारिणी स्त्रीओनी वृद्धि थाय छे.

जे वर्षमां वृक्ष गुल्म अने लता सिचक्रण तेमज छिद्र रहित पत्रोथी युक्त होय ते वर्षमां उत्तम वृष्टि थाय छे अने जो एनां पत्रो रुखा अने छिद्र युक्त होय तो स्वल्प वर्षा थाय छे.

कृष्णपक्षमां कोइ वर्षानुं पश्च करे ए वखते जलचर राशि अर्थात् कर्क, मकर अथवा मीनमां वेसी चन्द्रमा लग्नमां पडे अने शुक्लपक्षमां जलचर राशिमां वेसी चन्द्रमा कोड केन्द्रमां पडे अने वर्षाऋतु होय तो तुरतज वृष्टि थाय छे, चन्द्रमाने शुभ ग्रह जोता होय तो वहु वर्षा अने पापग्रह जोतां होय तो छोडी वर्षा थाय छे, चन्द्रनी माफक शुक्रधी पण वर्षानो विचार करवो, वर्षानुं पश्च करनार पुरुप आई द्रव्यनो, जलनो अथवा जल तुल्य जेनुं नाम होय पत्नी वस्तुनो स्पर्श करे, जलनी समीपे छभो होय अथवा जल सबंबी कार्य करवामां तत्पर होय तो निःसंदेह घणीज त्वराथी वर्षा थशे एम समजी लेनुं अथवा मक्ष वखते जल एवो गव्द कोइ तरफथी संभलाय तोपण अवन्य सद्योवृष्टि थाय छे.

वर्षाऋतुमां जे दिवसे सूर्य उदयाचल पर्वत उपर उदय वखते दीष्नियी दुर्निरीक्ष्य अर्थात् जेनी सन्मुख नजर न करी शकाय एवे। होय ते दिवसे वृष्टि थाय छे, अथवा आकाशना मध्य भागमां प्राप्त थइ सूर्य अति तीक्ष्ण तपे तोपण वर्षा थाय छे.

जळनो स्वाद जतो रहे, गायना नेत्र समान आकाशनो रंग होय, दिशा निर्मळ होय, छवणमां विकार थाय अर्थात् पात्रमां राखेछं लवण ओगळवा लागे, आकाशनो रंग काकना इंडा जेवो होय, पवन चालतो वंध थइ जाय, माछलां पाणीमांथी उछळी किनारा उपर पडे, वारंवार देडका वोले ए सर्व लक्षण वर्षानां छे अर्थात् एमां कोइपण लक्षण विद्यमान होय तो वर्षा तुरत थाय छे.

विलाहीओ पोताना नखोथी वारंवार भूमिने कोतरे, लोढांना शस्त्र अने पात्रमा काट लागे, के जेमां काची दुर्गन्थ आवे तेमज गलीओनी वच्चे वाळको वंध वांधे ए सर्व लक्षणोणी तुरत वृष्टि थाय छे.

पर्वतो अति नीलवर्ण होय, पर्वतोनी कंदरा वाष्पयी भराइ जाय अने चन्द्रनुं कुंडाछं अति रक्तवर्ण होय तो शीघ्रवर्ण थाय छे. कोइ पण जातना उपद्रव विना कीडी पोताना इंडाओने एकस्थानथी उठावी वीजे स्थाने लड़ जाय, सपों मैंयुन करे तेमज हक्षो उपर चढे अने गायो कूदे ए सर्व शीघ्र हृष्टि थवानां कारण छे.

काकीडो दृक्षना अग्रभाग उपर स्थित थइ आकाश तरफ द्रिष्ट करे अने गायो उंचे सूर्य तरफ द्रिष्ट योजे तो घणीज उतावळे वर्षा थाय छे.

गाय भेस आदि पशु घरनी वाहेर जवा न इच्छे, कान अने खरीओने यूणावे अर्थात् कंपावे एवीज रीते श्वान पण घर वाहेर निकळवा न चाहे तेमज कान अने पगने हलावे तो वर्ष तुरत थाय छे.

घरनी छतो उपर वेसी आकाशनी तरफ मुख करी श्वानो वहु रुद्दन करे, दिवसे इशान कोणनी विजळी चमके तो पृथ्वी जळथी परिपूर्ण थइ जाय अर्थात् अति दृष्टि थाय छे.

चन्द्रमानो लाल रंग होय अथवा आकाशमां वीजो चंद्र देखाइ आवे तो पण आकाशथी तुरत जळ वरसे छे.

रात्रीए वादळां गर्जना करे, दिवसे अति रक्त वर्णवाळी विजळी दंडनी माफक सीधी देखाय, पूर्व दिशानो शीतळ पवन चाले, वछरीना पत्रो आकाश तरफ उंचां थइ जाय, पक्षीओं जळ अथवा धूळथी स्नान करे अने सर्प आदि कीडाओं खडना अग्रभाग उपर चडी वेसे तो तुरत-ज दृष्टि थाय छे.

दिविध रंगना तथा विविध आकृतिवाळा जेमां उपर नीचे घणा पुट होय एवा संव्याकाळना मेघ शीघ्र दृष्टि करे छे.

जे मेघ चारे तरफ शुह्रत्रणे होय अने मध्यमां अति ज्याम होय, स्तिरत अनेक पुटेश्यी युक्त होय, विन्दुओने टपकता सोपान अर्थात् पगधीयांनी माफक वनी रह्यां होय, पूर्व दिशामां उपन थइ पश्चिम तरफ जता होय अने पश्चिममां उपन थड पूर्व तरफ जता होय ते भूमि उपर तुरत वरसे छे.

सूर्यना उदय अथवा अस्त समये इन्द्रधनुष, परिच, रोहित वीजो सूर्य, विजळी अने सूर्य चद्रना कुंडाळां ए सर्व लक्षण होय तो तुरतज घणी वर्षा थाय छे.

दिवसे सूर्योदय समय अने रात्रीए सूर्यास्त समये जो आकाश तेतरनी पांच समान होय

अर्थात् मेघना पातळा पातळा अने न्हाना न्हाना टुकडाओथी भरेलुं होय तेमज पक्षीओ प्रसन्न थइ शब्द करता होयतो ज्ञीघ दृष्टिथाय छे.

सूर्यना अमोघ नामना किरणो एवा देखाय के जाणे अस्ताचळना हाथन उपर उंचा थइ रह्या छे अने वादळां भूमि पर्यन्त झुकी रहेतो ए घणी वर्षा धवानुं लक्षण छे.

वर्षा ऋतुमां शुक्रनी सप्तम राशि उपर चन्द्रमा होय अने एना उपर शुभ ग्रहनी दृष्टि पडती होय अथवा श्वनिश्वरथी नवमे पांचमे अथवा सातमे चन्द्रमा होय अने एना उपर शुभ ग्रहनी दृष्टि पडती होच तो वर्षा थाय छे.

सूर्यना उदच तेमन अस्त काळमां समागम अधीन चन्द्रनी साथे मंगळ आदि प्रहोनो योग थवा वखते अने भरणी आदि नक्षत्रोना जे छ मंडळ शुक्रचारमां कहां तेना प्रवेशमां अधीत प्रह एक मंडळथी निकळी बीना मंडळमां प्रवेश करे ए सर्व समय उपर, अमावास्या अने पूर्णिमाना अंतमां, दक्षिणायन अने उत्तरायणनी समाप्तिमां घणे भागे वर्षा धाय छेः सूर्य आदी नक्षत्र पर आवे त्यारे तो अवस्य दृष्टि थाय छे.

बुध अने शुक्रनो, बुध अने बृहस्पतिनो अथवा वृहस्पति अने शुक्रनो समागम होय तो वर्षा थाय छे. मंगळ अने शनिश्वरनो समागम होय तेमज तेनी साथे शुभ ग्रह न होय अने एना उपर शुभ ग्रहनी द्रष्टि पण न पडती होय तो पवन अने अग्निनो भय थाय छे.

सूर्यावलंबी अर्थात् अस्त् धवानी इच्छावाळा ग्रह सूर्यथी आगळ अथवा पाउळ होय अर्थात् सूर्यथी पहेलां अथवा पछीथी अस्त पाने तो भूमिने जळमय करी दे छे; मन्द ग्रह सूर्यथी आगळ अने शीघ्र ग्रह सूर्यथी पाछळ अस्त थाय छे.

राजिष विशासजीए उपर प्रमाणे देवज्ञना मुख्यी परम संतोषकारक वर्षाज्ञान श्रवण करी तेनी आज्ञा प्रमाणे उत्तम सत्य वक्ता अने उद्योगमां द्रढ एवा ब्राह्मगोने भविष्यनी वर्षाना ज्ञान माटे यथायोग्य स्थाने योज्याः तेमज हरवखत पोते जाते पण ए संबंधी विचार करवा लाग्या, थोडा कालमां पोतानी प्रजा उत्तम स्थितिने प्राप्त थइ.

तेओने उत्तरावस्थामां महान् प्रतापी केसरेदवजी नामे कुमार थया, जेथी कीर्ति-गढमां अपूर्व आनंद फेलाइ रहाो.



## त्रयोदश तरंग.

" छप्पय "

केसरदेव कुमार, योग्य वय पाम्या ज्यारे; राजधर्मनी रोत, स्नेहथी शोख्या त्यारे; अति उत्तम अभ्यास, सर्व शास्त्रनो करीने; युरु आगळथी ज्ञान, मेळ्व्युं मोद धरीने; कीर्तिगढनी गादीओ, छापी अलोकिक छापने; चरित चारु नथुराम ए, अमर ! कहुं छुं आपने.

सक्तवाणा व्यासजीए कुमार केसरदेवजी योग्य वयना थतां तेओने उत्तम गुरु पासे विद्याभ्यास करवा वेसाड्या. स्वरंग समयमां तीक्ष्ण बुद्धिवाळा कुमार केसरदेव व्याकरण, न्याय अने मीमांसा आदि अघरा ग्रन्थोन समजवामां शक्तिमान थया. व्यास सकवाणा जाते महा विद्वान हता. तेओए एक दिवसे कुमारश्रीने पोता पासे वोळावी भिन्न भिन्न शास्त्रोनां पश्च कर्या. केसरदेवजीए यथास्थित प्रत्युत्तर आपी विताश्रीने पसन्न कर्या, परंतु ज्यारे राजधर्म सवंधी प्रश्नो विता तरफथी पृछवामां आव्या त्यारे कुमारश्रीए ए विषयमां पोतानी माहिती नथी एम प्रदर्शित कर्यु, त्यारे व्यासजीए कृष्य के आपणे राजाओने तो मुख्य राजधर्म जाणवानीज जरुर छे, कारणके अन्य शास्त्रो भणी आपणे कोइ साथे शास्त्रार्थ करवो नथी, तेमज कोष्ट पासेथी पारितोपिक मेळववातुं नथी, तेतो केवळ आपणा आनंदने माटेज छे, परंतु राजधर्मथी तो आपणेन अपूर्व मुग्यश प्राप्त छे के जे मुग्य मनुष्यमात्रतुं जीवन छे. तमारो अन्य अन्यास अति उत्तम छे, माटे हेवे गुरुने प्रसन्न कर्रा राजधर्मतुं ज्ञान मेळवो के जेथी आपणी प्रजा साथे आवी मृष्टि आपणेन माननी नजर्या निहाळे. पिताना उपदेशने माथे चढार्वा वीजेज दहांडे कुमार केसरदेवज्ञिए गुरुर्जाने प्रणाम पूर्वक नमृतार्था विनित कर्रा के कृपाछु! आजर्या मने राजा-

ओना धर्म शीखवो, तेमां प्रथम आ पृथ्वी उपर राजा शब्द पचलित थइ रह्यो छे तेनो हेतु हुं छे ? अने ते शब्द शार्था जप्तन थयो ते कृपा करी समजावो, कारण के सामान्य मनुष्य अने राजानां भुजा, ग्रीवा, बुद्धि, प्राण, आत्मा, गुख, दु:ख, मुख, पीट अने उदर आदि समान छे; वीर्य, मांस, अस्थि, रुधिर, श्वासनुं आववं जवं अने जन्म मरण एक सरग्वांज छे, छतां एक पुरुष कया कारणथी अनेक पुरुषोने आजा करी शके छे ? अने एकाकी छतां कड रीते ग्रुखीर अने श्रेष्ठ पुरुषोथी व्याप्त थड सृष्टिनुं संरक्षण करे छे तेपज संसारनी पसन्नता चाहे छे ? ए एकना प्रसन्न थयाथी तमाम मनुष्य प्रसन्न थाय छे, अने ए एकने व्याकुळ जोइ सर्व व्याकुळ वने छे,तथा तमाम मनुष्या देव समान तेने पूजे छे तेनुं कारण शुं छे ? गुरुए कधुं के कुमार ! पूर्व भीष्म पिता-महे जे राजधर्म युधिष्टिरने सविस्तर समजाव्यो हतो, ते हुं संक्षेपर्था तमोने कहुं हुं, सांभळा राजा शब्द सत्ययुगना पारंभमां उप्तन्न थयो छे, ते समये कोड राजा के राज्य न हतां तेमज दंड के दंड देवावाळा नहता. परंतु संसारी लोको पग्स्पर धर्मधीज सुरक्षित हता. ज्यारे धर्मरक्षकोमां अन्योन्य वैमनस्य उप्तन थयुं त्यारे छोकोमां अज्ञानता प्रगट थइ अने ए अज्ञानताना प्रावल्यथी ज्ञाननो छोप थयो. तेनी साथे धर्म पण नाश पाम्यो. उत्तम ज्ञाननो अस्त थवाथी मोहने वश थएळा मतुष्योमां लोभ प्रदृत्त थयो, त्यारंबाद मनुष्यो असंभवित वातोनो विचार करवावाळा थचा अने काम नामनी वीजी इच्छाए स-र्वने स्वाधीन कर्याः कामने वश थएला मनुष्योने रागे दवान्या, ए रागमां प्रदत्त थएलां मनुष्योए कार्योमां योग्यायोग्यनां विचार तजी दीधो, अगम्या स्त्रीमां गमन, अभोज्यनुं भोजन अने अक-थतुं कथन करवा मांडयुं, गुणतुं ग्रहण न करतां दुनियां दोषमां दवाइ गइ, ज्यारे लोको उक्त दशाने आधीन वन्या त्यारे वेद विद्युप्त थया अने धर्म नष्ट थयो। तेम धवाथी देवताओमां भय फेलायो, भयभीत देवताओ ब्रह्माने शरणे गया अने महा व्यथित थर हाथ जोडी ब्रह्माने प्रसन करी कहेवा लाग्या के-भगवन्! लोभ तथा मोह आदिनी उत्पित्यी नर लोकमां सनातन वेद अने धर्मनो विनाश थवाथी अमो सर्व भयभीत बन्या छीए. अमारी स्थिति पण नर्छोक निवा-सी समान थइ गइ छे; कारण के स्वाहा आदिना अभावथी अमो भूखे मरीए छीए. जो के अमे नरलोकमां दृष्टि करीए छीए, परंतु ते दृष्टि करवावाळा मनुष्योज छे, तेओनी किया नष्ट थवाधी अमारा पन संज्ञायसिन्धुमां निमग्न थयां छे माटे आप कल्याणकारी कर्मोनो वोध करो जेथी आ अमारो निवन भय नाज्ञ पामे. ब्राह्माजीए देवताओंने संतोषकारक जवाव आपी विदाय कर्या. त्यारवाद तेओए पोतानां बुद्धिवळथी एक लाख अध्याय वनाव्या, जेमां धर्म अर्थ तथा कापतुं

वर्णन कर्युं. ए त्रिवर्णयी पोतानां फळ अने साधनने भिन्न दर्शावनार चोथो मोक्ष छे. ते मोक्षनो त्रिकी जुड़ी छे, इच्छाफळ रहित ए मोक्षतुं पण तेमां वर्णन करी बनान्युं, धर्म आदिना वैपरीत्यतुं कारण सत्वगुण, रजोगुण अने तमोगुण. धतुवती व्यापारीओनो मार्गमां निवास, तपस्त्रीओनी द्रद्धि अने चोरोनो नाश ए दंडयी उत्तत्र थनारो त्रिवर्ग तेपन वित, देश, काछ, साधन, कप अने सुहृद आदिने सुधारवा माट नीतिथी उप्तत्र थनारी पड्वर्ग पण तेमां वर्गन्यो. अभित् नीतिना वळधी प्रजानी व्याक्कळता मटे छे, कुदेश पण सुदेश घाय छे अने किछुग पण सत्य-युग सरखो देखाय छे. कर्मकांड, ज्ञानकांड, वार्ता अभीत खेती नी बिका, त्यापार आदि कांड, दंडनी-ति अर्थात् प्रजातुं पोपण करवानी विद्या अने महाविद्या ए लाख अध्यायनी अंदर ब्रह्मानीए वताच्युं. मंत्री लोकोनी रक्षा अने तेओना उपर एवो गुप्त दूत नियत करत्रो के जे नाना प्रकार-नो युक्तिओंने जाणदावाळो होय अर्थात् ब्रह्मचारी आदिनां रुप धारण करी शके तेत्रो होंय. भिन्न भिन्न वेश पहेरवावाळा एवा त्रण त्रण दूत दरेक स्यळे यो नत्रा. ए सर्वे हकी कत तया राज हुमारनां लक्षण पण तेनां सारी रीते वर्णव्यां. साम, दाम, दंड, भेर, अने पांचमी उ-दासीनता पण तेमां संपूर्ण रीते वर्णबी. एवीज रीते भेदने माटे सलाइने मिथ्या करवी तेमज मंत्रती सिद्धि अते असिद्धितुं जे फड छे तेतुं पग तेनां वर्णा कर्री. वजी तेनां भग, लेख तथा धनथी सर्वत राखतो सन्ति अवम, मध्यम अने उत्तम ए रीते त्रम महारतो छे अधीत् भयवी थनार सन्धि अधम, लेखयी थनार सन्धि मध्यम अने धनयी थनार सन्धि उत्तर गणाय छे. पाताना मित्रोनी दृद्धि, भरपूर खजानो, शत्रुना मित्रोनो नाश अने शत्रुना खनानानी शुष्कता ए चार यात्राना सनय छे. विजय त्रण प्रकारनो छे. धर्नविजय, अधिवत्रय अरे आञ्चरीविजय. मंत्री देश, गढ, सेना अने खनानो ए पंच वर्ग गणाय छे. अखन्त, साबारग अने न्यून ए त्रम पकार छे. सेनाना प्रकाशित अने अवसाशित एवा वे प्रकार छे. तेमा प्रकाशित सेना आट प्रकारनी छे, अने अमकाशित सेना पहा विस्तारवाळी छे. रथ, हाथी, घोडा, पैइल, भारक न, नाका, दूत अने उपदेशक गुरु ए सेनाना आठ अंग छे. विंडी आदियी उत्मन थनारुं विप जंगम, चूर्णमां मळवावाद्धं विष स्थावर, वस्त्र आदिना स्पर्शमां अने खानपाननी वस्तुओमां विष मेळवंद्वं तथा मारण आदि प्रयोग ए त्रण प्रकारनो विषमेळ दंडरुप कहेल छे; दात्र, पित्र अने उदासीन; गृह नक्षत्र आदि मार्गोना गुण, एवीज रीते पृथ्वीना गुण, मंत्र यंत्र आदियो भवभीतनी रक्षा करवी, रवआदिनां कारखानां जोवां तेमज मनुष्य, हाथी, घोडा नथा रथने निरोगी अने पराक्रमी बनावना

वाळी अनेक प्रकारनी युक्तिओ, घणी जातना व्यूह अने विचित्र युद्धनुं विज्ञान पण वर्णव्युं. उप्तात अने निपात अर्थात् ग्रहोने विरोध अने पृथ्वीतुं कंपन, उल्कापात, उत्तम युद्ध, भागतुं, शस्त्रोने तीव करवां, सेनातुं दुःख तेमज सैन्यने पसन्न करवुं तथा पीडा अने आपत्तिना समयतुं ज्ञान पण तेमां वर्णवी वताव्युं. एवीज रीते वाजांओना शब्द सांभळी चडाइ आदिनी चेष्टा सम-जी काम करवातुं, योग्य संचार, पताका अने मंत्र आदिनां श्रवण अथवा दर्शनथी मोह उपजा-ववो; चोर, जग्ररूप अने वनवासी मनुष्योनी सेनाथी शत्रुना देशने पीडा करवी विगेरे सर्व तेमां वतान्युं. आग लगाववावाळा, विष देवावाळा, मूर्ति वनाववावाळा अने सेनाना प्रधानोने पो-ताना पक्षमां मेळववा तेम खेती आदिने कापत्री, हाथीओनो वध करवो, संदेह पकट करवो, नो-करोने पगार आपवा, विश्वास उत्पन्न करी प्रतिपक्षीना देशने पीडवो नेमज सात अंगवाळां राज्यनो नाश, दृद्धि अने समानता तथा दूतना उद्योगधी पोताना देशनी दृद्धितुं सविस्तर वर्णन कर्युं. श्रु, भित्र अने मध्यस्थोने केवी रीते फोडवा ते पण वताव्युं छे, एवीज रीते पराक्रमीओने पी-डवा अथवा मारवा इत्यादि सूक्ष्म व्यवहार तेमज कांटाने उखेडवा अर्थात दुष्टोने मारवा, मल्लकी-डा, व्यायाम, श्रत्न च न्याव यानी अभ्यास, धननी संचय, आजीविका विनाना पुरुपोतुं पालन करवं, सेवकोनी संभाळ राखवी, समय उपर धनतुं दान करवं, तथा व्यसनोमां प्रवृत्त न थवुं वि-गेरे सर्वतुं वर्णन कर्यु. एवीज रीते राजगुण अर्थात् चडाइ अ।दि सेनापितना गुण, त्रिवर्गनो हेतु अने गुण दोष तमाम वर्णव्या. नाकरानी अनेक प्रकारनी वदचाल तथा उत्तम चाल ए, सर्वमा सं-देह करवो, भूलने तजवी, अमाप्तनी माप्ति करवी अने माप्त वस्तुनी दृद्धि करवी, फरी ते सुपात्रो-ने दानमां आपवी ए सर्व वावत तेमां वतावी. धर्म, अर्थ, काम अने मोक्षने माटे धनने खर्चर्ड. एवीज रीते आपत्तिने दूर करवा माटे चेायुं दान तेमां वर्णव्युं छे. ब्रह्माए ए लक्ष अध्यायमां क्रोध अने कामथी उप्तन धवाबाळां दश व्यतनो वर्णव्यां, अने आचार्योए शिकारवाजी, पासा, मद्यपान अने स्त्री ए चार व्यसन कामशी उत्पन्न थनानाळां कहां छे, क्रोधथी उत्पन्न थनारां कडोर वचन, जप्रता, दंडपारुष्य, देहने घायल करवो, देहनो त्याग करवो अने धनतुं निरर्थक खर्च कर बुं ए छ व्यानन वताव्यां. नाना प्रकारनां यन्त्र अने तेनी क्रिया पण वर्णवी. शत्रुनी सेना-थी देश आदिनी पीडा तेमन घायल थर्डु, रयानोने तोडवां, सीमाना व्ह्लोने उखेडवां, राज्यनी आमदानीने अक्तावत्री, शहा आदि सामान वनाववानी रीतिः, पणवानक, शंख अने भेरि आदि वाजांओं तेपज मणि, पृथ्वी, प्र्यु, बस्न, दामी अने दास ए छ द्रव्योने पण संग्रह करवातुं

वर्णन करी वतान्युं. स्वाधीन धनारने शान्त करवा, सत्युरुषोत्तुं पूजन करवुं, पंडितोने यज्ञ प्रसंगे दान आपर्वु तथा होमना विधितुं ज्ञान इत्यादि वावतो वर्णत्री. मांगलिक वस्तुः सुवर्ण आदिनो स्पर्श करवो, देहने शृंगारवो, भोजन करवुं, निरंतर इश्वरने मानवा, एकलां चढाइ करवानी रीति, सत्पता, मीटुं वोलबुं, उत्सव, समाजोनी किया अने एवीज रीते ध्वजा तथा धन आदितुं वर्णन करी वतान्युं. चोतरा आदि वेसवानां स्थान, मनुष्योनां ग्रप्त अने प्रगट हत्ता-न्तो तथा व्यवहारोने हमेशां जोवा, विजातियधी तथा गुणोधी उत्पन्न थनारी प्रतिष्ठा, पुरवासी-ओनी रक्षा, देशनी आवादी करवी अने वार राजाओथी सर्वध राखवावाळा मंडळमां जे स्थिर चिन्ता छे तेतुं पण वर्णन कर्युं अर्थात् विजयने चाहवावाळा चारे तरफ चार शत्रु, चार मित्र अने चार उदासीन ए मंडलना वार राजाओ कहेवाय छे. वहाँतेर प्रकारना संस्कार, देह, देश, जाति अने कुळना धर्म उत्तम रीते वर्णव्या. धर्म, अर्थ, काम अने मोक्षनी युक्तिओ तथा अनेक प्रकारनी इच्छा अने धन आदि तेमां कहां. मूलकर्म अधीत् मालना पवन्यनी रीति, माया, योग, नदी अने नियत प्रदेशोने दोषित करवातुं वर्णव्युं. जे जे रीत आ संसारथी अविरुद्ध मालुप पडी ते तमामतुं नीतिशास्त्रमां वर्णन कर्युः ए रीते ब्रह्माजी उत्तम शास्त्र वनावी देवताओं के जेमां इन्द्र विद्यमान इता तेओने कहेवा लाग्या के संसारनी टुद्धि तथा धर्म, अर्थ अने कामने नियत क-रवा माटे आ सरस्वतीनो सार प्रगट कर्यो छे. ते लोकनी रक्षा करवावाळुं दंड अने इनामधी युक्त आ नीतिशास्त्र सदंड वनी विश्वमां विख्यात थशे. आ संसार दंडथी आधीन थाय छे अने दंटन पामे छे. आ शास्त्र दंडनीति नामधी त्रिलोकीमां व्याप्त थके. अने पड् गुणधी भरपुर उक्त शास्त्र महात्माओनी आगळ नियत धशे.

त्यारवाद विशालाक उमापित शंकरे संमारी जीवोर्त अन्य आयुण जाणा ब्रह्माए वना-वेल ए लक्ष अध्यायतुं रहस्य दशहजार अन्यायमां युक्तियां दाखल कर्यु. ए विशालाक्षनामना सारनो उन्द्रे पांच रजार अन्यायमां आशय लड़ लीवो अने ते शाख्तुं नाम वाहुउन्तक राल्युं. त्यारवाद योगाचार्य शुक्रजीए एक हजार अन्यायमाज तेतुं संक्षेपयी वर्णन कर्यु. ए क्रमधी महींपे-आए अवस्थानी न्यूनता जोड़ संक्षेप कर्यों. ने पठी देवनाओए प्रजापित विष्णुने प्रार्थना करीके संसारी पुरुषोमाधी राज्यतुं शासन करी शके एवो एक योग्य पुरुष आयों. त्योंग नारायण विचार करी रजोगुण रहित नेजम् नामनो मानसी पुत्र उप्तत्न कर्यों. पंत्रु ने दिरंजन महान्माए पृथ्वीपर राज्य करवानी इच्छा न करी, परंतु सन्यस्त धारण करवानी स्पृद्या वतावी तेना पुत्र की-र्तिमान पण जीवनमुक्त थया. ए कीर्तिमानना पुत्र कर्दमजी पण महातपस्त्री वन्या. परंतु तेनो पुत्र अनंग साधुरक्षक अने दंडनीतिमां प्रवीण थयो. अनंगना पुत्र महानीतिज्ञ पराक्रभीए महान राज्यने पाप्त कर्युं. तेनो पुत्र मानसी सुनेथा नामे त्रणे लोकमां प्रसिद्ध थयो, तेनो पुत्र वेणु राग-द्वेपने वश वनी प्रजा उपर अवर्ष करवावाळो थयो तेने ब्रह्मवादी ऋषिओए अभिमंत्रित कुशाओथी मार्यो अने तेनी डावी जांघने मंत्रोंथी मथी त्यारे ते जंबाथी एक एवा पुरुष उप्तन थयों के जे ठींगणा, कर्षा, कोयला समान काळा रंगनो, लाल नेत्रवाळो अने काळा केशवाळो हतो, तेने जोइ ऋषिओए वेसी जवानुं कहुं, तेनाथी संकडो निपाद उप्तन थया के जेओ निर्देश मनवाळा थइ वनमां अने पर्वतोमां निवास करी रहे छे. तेमज विन्ध्याचलवासी वीजा प्रकारना म्लेच्छ छे ते पण तेनाथीज उप्तन्न थया। फरी उक्त महर्षिओए नेगुनी जमणी जंघातुं मथन कर्युं, तेथी एक एवो पुरुष उप्तन्न थयो के जे रुपमां वीजो इन्द्र जणातो हतो, तेनां वस्त्रो सुवर्ण निर्भि-त इतां. हाथमां खर्के तथा धनुषवाणने धारण करनार, वेदवेदांगने जाणनार अने धनुर्वेदमां पंढित हता. दंडनीति सर्व तेने आधीन थइ. ए वेणुना पुत्रे ऋपिओने हाथ नाडी कहुं के धर्म अने अर्थने जाणवावाळी महा सूक्ष्म बुद्धि मारामां उत्पन्न थइ छे, ए बुद्धिने अनुसरी मारे हुं। करवं योग्य छे ते कहेवा कृपा करो. आप अर्थयुक्त जे काम कहेशो ते हुं करीश एमां कंइ पण संदेह राखशो नहिः त्यारे देव अने महर्षिओ बोल्या के जेमां वरावर निश्रय पूर्वक धर्म होय तेवां कृत्य करो, सर्व जीवोमां समद्रष्टि राखी विय अविचनो त्याग करी काम, क्रोध अने लोभने दूरथी तजी एवां कार्य करो के लोकमां जे कोइ मनुष्य धर्मभ्रष्ट थाय ते आपथी दंड पामे. मन, वाणी, अने कमेथी एवा शपथ लीओ के " हुं निरंतर दंडनीतिशास्त्रथी सवं । राखता धर्मने पाळीश, किंद पण इन्द्रिओने वश निह बतुं " तेनी साथे समग्र संसारतुं रक्षण करवानी पण प्रतिज्ञा लिओ. वे-णुना पुत्र पृथुए ते प्रमाणे प्रतिज्ञा लीघी त्यारवाद वेदना भंडाररुप शुक्रजी ए पृथुना पुरोहित थया, वालखिल्य ऋषिओनो सभूह अने सारस्वत ब्राह्मणो तना मंत्री वन्या नथा गर्गमुनिए ज्योतिषीतुंपद धारणक्यु ए रीते पेहला षिष्णु, वीजा विरज, त्रीजा कीर्तिमान, चोथा कर्दम पां-चमा अनंग, छहा अवतल, सातमा वेणु अने आठमा पृयु थया. पृयुने सूत्र अने मागध नामे वे पुत्र थया ते बंन्ने उपर प्रसन्न थयला पृयुए सूतने अनूपदेश अने मागधने मागधदेश आप्यो. ते समये पृथ्वी असम हती तेने सरखी करावी. सर्व मन्वंतरमां पृथ्वी असम थइ जाय छे. पृयुए

धतुषनी कोटिथी चारे वाजुओनी शिलाओना समूहने उठात्रों जेथी पर्वतो म्होटा थया. पृथ्वीए पुष्कळ रत्नोथी पृथुनी सेवा करी. नदीओना स्वामी समुद्रे, पर्वतोना पति हिमाचले अने इन्द्रेर-वनाए पृथुने असंख्य धन आप्युं. सुत्रर्णमय पर्वनोए सुत्रर्ण दीवुं तेमज यक्ष अने राक्षप्तीना अधिपति कुदेरे पण अक्षय धन अर्रण कर्रु. जेशी धर्म, अर्थ अने काम सिद्ध यया. पृथुए ध्यान मात्रधी घोडा, रथ, हाथी अने करोडो मनुष्यो उत्पन्न कर्या. ए समरे कोइने दृद्धपणुं, देहरोग के दुभिक्ष आदि कोइ प्रकारनो ज्याधिन हतो. पृथुनी उत्तम रक्षाथी सप के चोर आदिनो लेशपात्र भय नहोतो, तेनी यात्रा समये समुद्रना जळ अने पर्वतोए मार्ग आप्यो. कोइ चखत तेतुं ध्त्रजापतन थयुं नहि, तेणे अने नाग आदि सहित पृथ्वीतुं दोहन कर्युं अने सत्तर प्रकारनी खेतीओ प्रगट करी. जे जेतुं अभीष्ट हतुं ते पण महात्मा पृथुए धर्मपूर्वक पूर्ग करी सर्व प्रजाने राजी करी जेथी "राजा" शब्द उत्पन्न थयो. ब्राह्मणीना क्षतनी रक्षाथी " क्षत्री " शब्द अने अतुल धर्मथी आ भूमि प्रख्यात थइ अने तेणे " पृथ्वी " एवं नाम धारण कर्यु. भगवान् विष्णुए तमाम मर्यादा नियत करी अने "ताराथी कोइ विरुद्ध काम नहि करे " एम पृथुने कही तेना देहमां योगद्वाराए प्रवेश कर्यों. एथी ते नरदेव समान गणाय छे. एथीज जगत आखुं राजाने प्रणाम करे छे अने एथीज राजा दंडनीति पूर्वक राज्यतुं संरक्षण करवाने योग्य छे. देशनी दशाने जीनार अने तेतुं पोपण करनार राजाने कोइ पण पराजय आपी शकता नथी। आ लोकमां समदर्शी राजानां चित्त अने कर्पथी उत्तम कार्य अने उत्तम फळनी करपना करी शकाय छे. देवगण शिवाय सर्व लोको राजाने वज्ञ थाय छे एतुं कारण ए छे के प्रथम विष्णुना मस्तकमां सुवर्णतुं कमल उत्पन्न थयुं, अने तेनाथी बुद्धिमान धर्मनी रक्षा करवावाळा रुक्ष्मी देवी उत्पन्न धयां. ए रुक्ष्मीयी धर्मद्वारा अर्थ उत्पन्न धयो. ए रीत धमार्थ मगट थयां. ज्यारे लक्ष्मी राज्यमां नियत थाय छे त्यारे स्वर्गथी आवी दंडनीतिमां क्रवाळ बुद्धिवाळो राजा उत्पन्न थाय छे, ते मनुष्य विष्णुना महात्म्यने जाणवावाळो बुद्धिमान वनी प्रतिष्टा मैळवे छे. देवताओए अभिपेक कराएल राजानुं उल्लंघन करी कोइपण पनुष्य कर्म करी शकता नधी. आ संनार एक राजानेज आधीन थाय छे ते विना आ जगन कर्ष करवा समर्थ पर शकतं नधी. राजा शुभ फळ माटे शुभ कर्म करे छे. विश्व आखुं ए एकनी आजाने अनुसरे छे. जे मतुष्य तेना सीम्य मुखतुं दर्शन करे छे, ते तुरतज तेने आधीन थड जाय छे. एटलाज माटे तेने सर्व लोको " राजा " कहे छे.

P) Ca

राजाए निरंतर उद्योग अने विचार करवो जोइए, कारण के स्त्री समान अविचारी राजानी पशंसा थती नथी. जेम विलमां रहेनारा जीवोने सर्प गळी जाय छे, तेम पृथ्वी पण शिक्षायोग्य पुरुषोने शिक्षा निह आपनारा राजानुं, त्रेदाध्ययन अर्थे विदेश निह जनारा विषनुं अने अटन नहि करतां एक स्थाने स्थिर थइ रहेनारा सन्यासीनुं भक्षण करी जाय छे। एटला माटे राजाए सलाह करवा योग्य पुरुषथी सलाह करवी अने दंडने योग्य पुरुषोने दंड आपवो. ने पुरुष <sup>९</sup>सात अंगवाळा राज्यथी विपरीत काम करे, ते गुरु होय के मित्र होय तोपण मारवाने योग्य छे. कारण के पाचीन समये कर्तव्य अने अकर्तव्यना योग्य कर्पने निह जाणनारा गुरुने दंड देवाया छे. पूर्वे बाहुना पुत्र सगरराजाए नगरवासीओनी दृद्धिने निषित्त पोताना वडा पुत्र असमंजसनो परित्याग कर्यो हतें। अर्थात् ज्यारे असमंजसे पुरवामी ओना वाळकोने सर्यू नदीमां इवाज्या त्यारे सगर-राजाए क्रोधायमान थइ तेने देशनिकाल कर्या, तेत्रीज रीते उदालक ऋषिए पण पोतानो प्यारी पुत्र महा तपस्वी श्वेतकेतु के ज बाह्मणायी मिथ्या न्यवहार कातो हतो, तेने सत्वर तजी दीयो. आ लोकमां राजाओंनो सनातन धर्म ए छे के संसारनी प्रसन्नता अने रक्षा पूर्वक सन्य बोलवं. व्यवहारमां यथार्थ वर्तन करनार, वीजा आगळथी धन लड़ ते धन पाछुं समय उपर योग्य पुरुषोने आपनार, पराक्रमी, क्षमावान् अने सत्यवक्ता राजा सुमार्गयी कदिवण ज्रष्ट थतो नथी. विक्तना क्रोधने रोकनार, शास्त्रार्थमां निपुण तेमज धर्म, अर्थ अने काममां मतृत्त अर्थात् दिवसना पूर्वः भागमां धर्मनुं, मध्याह काळे अर्थनुं, रात्रीए कामनुं अने प्रभाते योगनुं कार्य करनार तथा विचारने ग्रप्त राखनार राजा राज्यने योग्य छे. गुप्त रक्षा अने सारा माणसनी सलाहयीज राजा उन्नि मेळवी शके छे. राजाए चारे वर्णना धर्मोनी रक्षा करी, उत्तम पुरुषोनी विश्वास करवी, परंतु इद उपरांत कोइनो विश्वास न राखवो; निरंतर बुद्धियी छ गुणा गुण दोपने तपासवा, तेमां वळी शतुना दोषो तो खास दीर्घ द्रष्टिएथी जोवा; धर्म, अर्थ, अने कामने जाणनार दूतोद्वारा केटलुं-एक काम करावर्त्तु, तेमज गुप्त रीते धन आपी शत्रुओना मंत्रीओने पोताना पक्षमां मेळववा; निरा-मनुष्योने आजीविका अत्पी नोकरी उपर चडावी मंदहास्य पूर्वक तेओनी धार साथे वार्तालाप करी सर्वने संतोष आपवो. वृद्धिने सन्मान आपनार, आळस रहित, सर्व पुरुषोनां वर्त्तन उगर बुद्धिने निर्लोभ, स्थिर करनार,

१-राजा, अमात्य, मित्र, कोशाध्यक्ष, प्रजामांहेना मुख्य पुरुषो, किल्लादार अने सेनापति ए राज्यनी सात प्रकृति अथवा राज्यना सात अंग कहेवाय छे.

अने भनोहर मूर्तिवाळा राजा कोड दहाडां सत्पुरुपोने दंडता नथी, परंतु नीच ळांकोने ढंडी तेओ पासेथी छीधेछं धन सत्पुरुपोने समर्पण करे छे. राजाए वस्ते छेनारा, वस्ते ढेनारा, शान्त चित्तवाळा, सुन्दर साधनोने सजनारा, उत्तम भोगोनो उपभोग करनारा, ग्रुद्ध आचारवाळा, शूर्रवीर, भक्त, धन छइ अत्रुगा पक्षमां निह भळनारा, कुळवान, अन्यतुं अपमान निह करनार, विद्वान, सार असारने समजनार, धर्मज, उत्तम बुद्धिवाळा अने पर्वत समान अडग मनवाळा उत्तम जनोने पोताना सहायक बनाववा. पोताना तमाम माणसोने संदेह रिहत नजरथी निहाळवा, कारण के सर्व उपर संदेह राखनारो राजा पोताना माणसोने हाथेज मायों जाय छे. संसारना चित्तने स्वाधीन करवानी इच्छावाळा राजाओ शत्रुथी निह दवातां दिनपतिदिन अभ्युदयने पामे छे अने चारे तरफ पोतानी आजाने द्रह करवा समर्थ वने छे. क्रोध तथा व्यसन रहित जितेन्द्रिय राजाओ हिमालयसमान प्राणीमात्रना विश्वासपात्र थाय छे.

ज्ञानी, त्यागी, शतुओना छिद्रो जोवामां तत्पर, सुन्दर दर्शनवाळा, सर्व वर्णनी नीति अने अनीतिने समजनारा, क्रोधने शीघताथी जीतवावाळा, सुगमताथी प्रसन्न थनारा, महा साह- सिक, अहंकार रहित क्रिया करनारा अने पोताने मुखे पोताने निह वखाणनारा राजाओ प्रजानो प्यार मेळवी शके छे. जेम पिनाना घरमां पुत्र स्वच्छन्दताथी आनंद करे तेम तेवा राजाओना राज्यमां पण प्रजा निर्भयपणे विचरे छे. जे राजानां कर्म प्रारंभथीन उत्तम अने नीतियुक्त होय ते राजसमुदायमां विशेष वखणाय छे. राजाए परोपकारपरायण वनी पंडितोनो सत्कार करवो अने सत्पुरुषोए मान्य राखेळा मार्गने अनुसरी पोतानो प्रजापाळन धर्म पूर्ण प्रयत्नथी प्रचलित राखवो, नारण के दरेफ मनुष्यो उपदेश निह आपनारा आचार्यने, वेदविद्यार्थी रहित करिवजने, रक्षण निह करनारा राजाने, अभिय वोळनारी नारीने, गाममां रहेवानी इच्छावाळा गोवाळने अने वनमां वसवानी वांछनावाळा वाणंदने तुटी गएळां वहाणनी माफक संसार समुद्रमां तर्जा दे छे.

राजाए पोताना प्रदेशमा चारने नियत करवा अने तेओने प्रसन्नता पूर्वक मासिक पगार आपवा, युक्तिपूर्वक राजभाग लड सत्पुरुपोनो संग्रह करवो; शाँर्य, चातुर्य अने सत्यतायी प्रजातं अभीष्ट करवां, छल विद्यार्था प्रनिपक्षीओने शिधिल करवा, जीर्ण थएलां स्थानोनो उत्हार करवो, साधु संतने संतोपवा अने कुर्लान जनोना पोपणपूर्वक अनुआदिनो मंग्रह करवो. हानी ओनी सेवा करनारा, मन्यने प्रसन्न राग्वनारा, प्रजानी पीडा हरनारा, संसारी कर्मामां

me Pama

खेद निह माननारा, खजानानी अभिवृद्धि करनारा, वैरीओने विश्वास रहित दृष्टिथी विलोकनारा, श्रातुओए व्यापार आदि छळथी वर्ण करेला पुरवासीओने स्वाधीन करवामां कुशळ अने शत्रुनी साथे वसनार पोताना मित्रवर्गने बुद्धिवळथी तपासनार राजा कोड दिवस दुःखी थता नथी. नीति अने धर्मने अनुसरी उद्योग करवो ए दरेक राजानी फरज छे, कारण के उद्योगथीज इन्द्रे अमृत मेळवी असुरोने हण्या तेमज नरलोक अने सुरलोक बन्नेमां मतिष्टा प्राप्त करी. जे पुरुप उद्योग करवामां निपुण छे, ते वाग्वीर पंडितथी पण प्रभुत्वने पामे छे. उद्योगी पंडित वीरोने प्रसन्न करी, तेओनी आराधना करे छे. उद्योग रहित राजा शत्रुवी पराजय पामे एमां नवाइ नथी, कारण के विपवाळो सप सवळ होय तोपण उद्योग विना शत्रुने मारी शकतो नथी। उद्योगथी अल्प अग्नि आर्खा दुनियाने वाळी भरम करी शके छे. थोडुं बेर घणानो संहार करवानी शक्ति धरावे छे. उद्योगी सेनाना एक अंगधी पण शत्रुनो गढ तोडी म्होटां सैन्यथी सुसपृद्धै देशने पराभव आपी शकाय छे। केवळ कोमळताधी के केवळ कडोरताथी राजतंत्र चाळी शकतो नथी, परंतु सत्य अने धर्मधीज उद्योगी राजा विजय मेळववा समर्थ बने छे.

राजाए प्रथम प्रजानी प्रसन्नता अर्थे देव अने ब्राह्मणोतुं प्जन करतुं जोइए, तेम करवाथी राजा धर्मना ऋणयी मुक्त बनी विश्वमां बंदनीय थाय छे. राजाए उद्योगनी साथे कर्म करवां
उद्योग विना प्रारम्थ्यी अभीष्टनी सिद्धि यती नथी. राजाओने कार्यसिद्धिने
किनारे पहोंचाडनार सत्यता शिवाय कोइ साधन नधी. सत्यनो स्नेही राजा
आ छोक अने परछोक बन्नेमां प्रसन्न रहेछे. सत्यता एज ऋषिओतुं उत्तम द्रव्य छे,
सत्यता शिवाय राजाओ उपर विश्वास उत्यन्न करावनार बीजुं एके कर्म नथी. गुणवान, सदाचारी, स्थिर स्वभाववाळो, द्याछ, धर्मपरायण, जितेन्द्रिय, सावधान, अत्यंत दानी, प्रसन्न मुखवाळो अने सत्युक्षोने शरणे जनारो राजा कदि पण नाश पामतो नथी. पोताना दोप, शत्रुना
दोपनो निश्चय अने उद्योगनो पारंभ ए त्रणे कर्म राजाए ग्रप्त राखवां तेनी साथे सलाहने
पण ग्रप्त राखवी. अति कोमळ प्रकृतिवाळा राजानी आज्ञाने कोइ आदर आपतुं नथी तेम अति
तीत्र प्रकृतिवाळा राजाथी प्रजा व्याकुळ रहे छे ए.ळा माटे अति तीत्रता के अति
कोमळता न राखवी.

मरुदेश, जल, पृथ्वी, वन, पहाड अने मतुष्य ए छ किञ्चाओमांथी मतुष्योनो किञ्चो दुर्गम अने अजेय छे. बुद्धिमान् राजाए चारे वर्णो उपर कृपा राखवी जोइए. जे राजा धर्मात्मा अने सत्यवक्ता होय ते प्रजाने प्रसन्न करी शके छे. दयाळ राजाए पण शिक्षायोग्य पुरुपने शिक्षा आपती वखते दया न करवी जोइए, केमके हाथी समान क्षमाशील राजा नीच अने धर्मनो विरोधी याय छे. नीच मनुष्यो क्षमाशील राजानी प्रतिष्ठामां खलेल पहोचाडे छे. एटला माटे राजाए वसन्त ऋतुना सूर्य माफक अति शीतळता के अति तीवता न राखवी. पोताना तथा परायां मनुष्योनी परीक्षा प्रत्यक्ष प्रमाणधी करबी. शिकार खेलवी, द्युत रमबुं, दिवसे सूबुं, निन्दा, स्त्रीसंग, भांग पीची, वाद्य वगाडवां तथा मद्यपान इत्यादि कर्मोथी उत्पन्न धनारां व्यसनोनो त्याग करवो. तेमां पण कठिन वचन, व्यर्थ धन छेवं अने व्यर्थ दंड छेवों ९ त्रण व्यसनो कठिन गणाय छे. ए कठिन व्यसनोवाळो राजा पोतानी प्रतिष्ठा गुमावे छे. राजाए निरंतर पोतानी परणेली राणी उपर मीति राखवी. अन्य पियवार्ताओनो परित्याग करी, जेमां संसारनो उपकार रहेलो होय एवी वानो उपर प्रथम लक्ष आपवं, धैर्यनो कदि पण त्याग करवो नहिः नोकरोनी साथे कदि पण टहा महकरी करवी निह, कारण के एमां दोप छे. वहु हास्य आदि करवाथी सेवक टोको मालिकतं अपमान करे छे. पोताना अधिकारनी फरज वरावर वजावता नधी. आज्ञानो एण भंग करे छे, करवा योंग्य कर्मोम; संदेह उपजावे छे, गुप्त विचार वीजाने जणावी दे छे, अयोग्य वस्तुनी याचना करे छे, मालिके खावा योग्य वस्तु पोते खाइ जाय छे, होध करी मालिकनी छाती उपर चडी वेसे छे, छळयुक्त वातोथी सांसारिक कार्यने वगाडी दे छे, पोते परभारा हुकम आपी मालिकना देशने निर्वळ वनावे छे, स्त्रीओना रक्षकोथी मर्ळा जाय छे, मालिकना सरखो पोशाक पहेरवा लागे छे. मालिकनी सन्मुख थुंकाधुंक करे छे अने मालिके करें ही गुप्त वातो निर्हन बनी मिसिद्धिमां छांव छे. राजानो कोमळ स्वभाव होवाथी तथा तेओनी साथे पोतानुं मन मळी गयेलुं होवाथी नोकर लोको देनुं अपमान करी तेओना घोडा, हाथी अने रप आदि सवारीओपर स्वार धाय छे, जे जोइ सभामा वेडेला मुहज्जनो अति खेट पामे छे. मोहे चढावेला माणसो मालिकतुं काम वगडवाधी इसे छे इनाम आदिया मसन थता नथी, परस्पर टहामश्तरी करें छे, मालिकनी आज्ञाने रमन अने अपमान पूर्वक उठावे छे, भय रिहा त्र निर्रुज बनी जाय हे. पोताना अधिकारनी तुन्छना बनाबी मुख बगाडी नांखे हे, पगार्या संवोप पामता नयी, राज्यनां धनने चोरी जाय छ अने मालिकनी साथ

815

monument and the particular and the property of the property of the particular and the pa

चाहे छे अने तेओ बीजा माणसो पासे कहे छे के राजा तो अमारा गुलाम छे. आवां कारणोधी राजाए विशेष कोमळता न राखवी. तेपज हजुरमां रहनार माणसो साथे हद उपरांत हास्यिवनोद न करवो.

प्रथम तो राजाए पोताना चित्तने वरा करवुं, त्यारवाद राजुओनो विजय करी राकाय छे, चित्तने वरा कर्या शिवाय राजा किद्पण शतुओने वरा करी राकतो नथी। पांचे इन्द्रिओने स्वाधीन राखवी एज चित्तनुं वरा करवुं कहेवाय छे, जितेन्द्रिय राजा प्रतिपक्षीओने पीडी राके छे. गुल्म अर्थात् रक्षा करवावाळी सेनाने गढ, देरा, नगर, वन अने उपवन आदि स्थानोमां राजाए नियत करवी। राजमहें छ आदि स्थळोपर पहेरागीरोने राखवा। मनुष्योना मनने जाणवावाळा, बुद्धिमान्, भूखतृपाना परिश्रमने सहन करनार तेमज अज्ञान, अन्य अने विधरना रुपने धारण करी शके तेवा जासूसोने वातमी मेळववा सर्व स्थळे योजवा। जे काममां पोतानी बुद्धि न पहोंचे ते काममां मंत्रीनी सलाह छेवी, पराक्रमी राजायी सान्धि करवो। जे राजा महान उत्साही, धर्मज्ञ अने सज्जन होय तेनी साथे राजाए सदा संपधी वर्तवुं, पोतानी प्रजा पासेथी छट्टो भाग छह ते धन तेनी रक्षा निमित्ते वापरवुं, अरजदार, प्रजावर्गने न्याय आपवा माटे बुद्धिमान् अने सत्यज्ञीक मनुष्योने योजवा। कारण के तेमां राज्यनुं हित समाएछुं छे. सोनानी खाण, निमकनुं स्थान, अनाजनी वजार अने नदीना पृष्ठ आदि स्थानोपर आवक जावकनो विचार करवा वास्त दीर्घदशीं अधिकारीओने नियत करवा। निरंतर उत्तम मकारना दुंने धारण करवावाळो राजा धर्मात्मा गणाय छे. जे राजा वेदवेदांगने जाणनार पंडित, तपस्वी तथा दान अने यज्ञनो अभ्यासी होंचा छतां व्यवहार कुशळ न होय तो तेने यश के सुक्नी प्राप्ति थती नथी.

राजाए पोतानुं वळ स्वल्प होय अने सामा पक्षवाळो मवळ होच तो तुरतज तेनी साथे सिन्ध करवो. वळवाळो मितपक्षी कृपण होय तो तेने धन आपी ज्ञान्त करवो. पैसा आपी पंडितोने पोताना पक्षमां मेळववा, पोताना वळवान समयमां दया ळावी छोडी मुकेळा दुष्ट ज्ञानुने निवेळता माप्त थया पहेलां मारी नांखवो अथवा मारवानी ज्ञाक्ति न होय तो तेनी उपेक्षा करवी. द्त द्वाराए सामा पक्षवाळाओने जीती शक्वाना समाचार मळे तो तुरतज गुप्त रीते सैन्य लड़ तेओना उपर चढाइ करवी. चढाइ कर्या पहेलां पोताना तथा सामावाळाना वळनी तुलना करी श्व-हरना संरक्षण माटे वरावर बंदोवस्त राखवो. वखते सामा पक्षवाळो मवळ होय तो पोताना देशनी

कइ वस्तुओ तेना देशमां नहि पहोंचवाथी ते वळरहित वनशे तेनो पुरतो तपास करी किंवी वस्तुओनो निकास थवा देवो नहिः प्रतिपक्षीना राज्यने पराभव आपवा माटे अग्नि आदि तपाम साधनाना उपयोग करवो तथा तेओना मंत्रीओने लालच मित्र वनाववाः पराक्रमी मितपक्षी पीडा करशे एवं मालूम पडे तो तुरतन कुदुम्व तथा मित्र वर्ग सहित कोइ एक मजबूत किल्लानो आश्रय लेवो अने तेमां साम, दाम, भेद अने दंड आदिनो विचार करवो. एवा संकटना समयमां सवळ शत्रु पोताना गामडांओमां उपद्रव फेलावतो होर्य तो तेवां गामडाओने उज्जड करी कोकोने शहरनी समीपे वसाववा. धनाडय प्रजाने किह्यामां राखी तेओने निरंतर धीरज आपवी पोताना प्रदेशमां निपजनं तमाम धान्य किञ्जामां स्वाधीन राखवं, जे स्थानेथी अन्न छावी सकाय तेम न होय ते स्थानने युक्तियी सळगावी देवं, परंत् प्रतिपक्षीओने हाथ प्राप्त थवा न देवं. कदाच तेवां खेतरोनी अंदर जड़ शकाय तेम न होय तो शतुनां माणसोने खुटाडी आग लगावी देवी. जेम ते धान्य पोताने हाथे न आवे तेम शबुने हाथ पण न जाय. एवा विकट वखतमां नदीना पुछोने तोडी पडाववा. तळावोने जल रहित करवां, कुवा तथा वावोंना पाणीनी अंदर विष नखाववुं, शत्रुना शत्रु साथें मैत्री करी तेनी सहायता मेळववी- शत्रुनी निवेळता मालूम पडे के तुरत तेनो विध्वंस करवो. दृशोना कुंडनो न्हानो सरखो दुर्ग होय अने ते शत्रुने हाथ जवा संभव होय अने ते दुर्ग तेना आश्रय-रुप यह पटे तेम जणाय तो तुरतज ते दुर्गने कापी नांखवी, परंतु तेवा म्होटा दुर्गने तथा टेव-इक्षोने कापवां नहि गजाए पोताने रहेवाना दुर्गनी चारे दिशाए उत्तम प्रकारना बुरजो वंधाववा, तेमां गोळाओने वहार फेंकवा माटे छिद्रो रखाववां, आसपास जळणी भरेली खाइ तैयार कराववी, श्वास लेवा माटे न्हानां न्हानां द्वार रखाववां अने त्यां पहेरागीरोने नियत करवा, द्वारो उपर महोटी म्होटी तोषो तयार राखवी, कुवाओ खोदाववा, प्रथम तैयार करावेटा कुवाओने साफ कराववा. पासथी वांधेलां छापरांओने मृत्तिका आदिथी लींपाववां, काप्टनो संग्रह करी राखवोः तेवा सम-यमां चैत्र के वैशाख मास होय तो दिवसे पण अग्निन कोइ प्रज्वित न करे तेवी चोकसी राखवी. सन्यने खावानी वस्तुओ रात्रीए पकाववी, अग्निहोत्र शिवाय दिवसे अग्नि सळगाववा देवो नहि, छतार आदिनी दुकानोमां अग्निनी पूरती संभाळ राखवी, घरोमां अग्निने राखमां दुवावी राखवी, जो कोइ दिवसे घरमां अग्नि मञ्बलित करे तेने पृश्ती शिक्षा आपनी. भिक्षुक, कुंभार, नपुंसक, ममत्त अने कुर्कील इत्यादि पुरुषोने वादेर गजा आपी देवी, काग्णके वखते तेओ हानिकारक

paparonia de la compania del la compania de la compania del la compania de la compania del la compania de la compania del la compania del



Language of the second of the

राजाए अमात्यथी आरंभी जंगकखाताना अधिकारी पर्यन्त अहार अमल्द्रारो योजवा. अने तेओनी तपास राखनारा वीजा गुप्त अढार माणसोन राखवा जोड्ए. शहेरना रस्ताओ पहोळा रखाववा. तेमज घोडार, हाथीखातुं, तोपखातुं, तोपाखातुं अने लडवैयाओने रहेवानां स्थान अवज्य राखवां. जोइए. किल्लानी अंदर कोइ न जाणी शके तेवा गुप्त रस्ताओ राखवा. दुर्गमां द्रव्यनो संग्रह करवों काष्ट्र, घास, तैल, घृत, मध, चरवी, तमाम जातनी औपधिओ, कोयला, डाभडानो जत्यों. खाखरानां पर्ण, जव, विषयी भरेकां वाणो, धतुप आदि शस्त्रो, शक्ति, वे धारवाकी तळवारो, वखतरो, फळ, मूळ, चार पकारना वैद्य (विपवैद्य, रोगवैद्य, शर्ख़वद्य अने मंत्रवैद्य ) नट, नर्तक, मल्ळ, अने मायाची आदि मनुष्यो ए सर्वर्था किल्लाने सुसमृद्ध करवोः राजाए पोतानो देह, मंत्री, खजानो, मित्र, दंड, देश, अने पुर ए सात रक्षा करवा योग्य छे, कारण के ते साते राजानां अंग गणाय छे. जे राजा षाड्गुण्य अने त्रिवर्गने जाणे छे ते पृथ्वीने भोगर्वा शके छे. सन्धि करवो, चढाइ करवी, शत्रुता करी सन्मुख उभा रहेवुं, शत्रुने भयभीत करवा माटे चढाइ करी छे एवं वतावी पोताना स्थान उपरज स्थिर रहेवुं. वन्ने तरफथी सन्धि करवो अने एवीज रीते किल्छा आदिमां निवास करवो अथवा वीजा कोइ महान राजाने शरणे जबुं. ए पाइगुण्यः, तथा आमदानी, स्वर्च अने खजानानी दृद्धि तेमज धर्म, अर्थ, अने काम ए श्रेष्ट त्रिवर्ग कहेवाय छे. धर्मपूर्वक राज्य करवावाळो राजा छांवा वखत सुधी पृथ्वीनो उपभोग करे छे. राजाए तप के यज्ञ आदि करवातं कांइ प्रयोजन नथी, फक्त धर्मथी प्रजातं पालन करनारो राजा धर्मे गणाय छे. दंड नीति चारे वर्णीने पोतपोताना धर्ममां मद्यत्त करे छे. अने दंडनीतिने जारी राखनार राजानी प्रजा निर्भयपणे उद्योग करी सर्व पकारनां सुख पामे छे. राजानो हेतु काछ अने काछनो हेतु राजा छे. ज्यारे राजा दंडनीतिथी परिपूर्ण कर्म करे छे त्यारे सत्ययुग नामनो काल उत्पन्न थाय छे, धर्म दृद्धि पामे छे, अधर्म नष्ट थाय छे, कोइ वर्णनुं दिल अधर्ममां दोरातुं नथी, तमाम गुण दृद्धिने अनुसरे छे, सर्व सुख अने ऋतुओ निर्विध्न वने छे, मनुष्योना सर्व वर्ण अने चिन ग्रद्ध थाय छे, रोग के अरुप अवस्था होती नथी, स्त्रीओमां कुपात्रता देखाती नथी, कोइ कृपण होतुं नथी, परिश्रम विना पृथ्वीमां अन्न आदि घणांज उपजे छे अने औषधि, फळ, फूल, त्वचा अने मूळ आदि महान सत्व वाळां थाय छे. ज्यारे राजा दंडनीतिनो चोथो भाग तजी त्रण

भागने ग्रहण करे छे त्यारे त्रेता युग प्रवत्त धाय छे, ए त्रण भागनी सामे अधमेनो चोथो भाग आवी उभी रहे छे, तेमां खेती सफळ थाय छे अने औषिधिओ पण उपने छे. ज्यारे राजा दंड नीतिना अर्घ भागने छोडी दे छे त्यारे द्वापर नामनो युग पत्रतें छे, ते समये अधर्मनो अर्घ भाग सन्मुख प्राप्त थाय छे; ए युगमां फळ, अजा तथा औषधि आदि अरधां निपने छे; ज्यारे राजा समग्र दंडनीतिनो त्याग करी वगर विचार्ये प्रजाने छःख आपे छे त्यारे कलियुग नामनो काळ व्याप्त थाय छे, ए कलियुनामां घणा अधर्मीओ उप्तन्न थवाथी धर्मनी मर्यादा रहेती नथी, तमाम वर्णोंनां चित्त पोतपाताना धर्मथी पृथक् धइ जाय छे, शुद्रो भिक्षाधी अने ब्राह्मणा सेवाधी पोतानी आजीविका चळावे छे, धननी प्राप्ति अने तेतुं रक्षण ए वन्ने नाज्ञ पामे छे, वैदिक कर्भ निष्फळ थाय छे, सर्व ऋतुओं सुख रहित अने रोगोथी घेराय छे, मतुष्योना देह, स्वर अने चित्त मिलन वनी जाय छे: रोगोने लीधे मनुष्यानां अकाल मरण थाय छे, स्त्रीओ पाप बुद्धिथी खगव चाल चाले छे, निर्देय प्रजानी उप्तत्ति याय छे, खंड दृष्टि अधीत् कोइ कोइ जगो ए नयो फळती. ज्यारे राजाओ दंडनीतिची सादधान घइ प्रजातुं पोपण नधी करता त्यारे तमाम रसो विनाश पामे छे, राजाज सत्य, त्रेता, द्वापर अने कलियुगना कारणरुप छे. सत्ययुगने प्रष्टत्त करनारो राजा अक्षय स्त्री सुख भोगदे छे, त्रेताने प्रदर्शादनारो राजा अल्पकाळ स्वर्गनो उपभोग करी शके छे, द्वापरने उपजाव-नारों राजा भाग्य मुजब स्वर्ग भोगवे छे अने किछेयुगने उप्तत्र करनारों राजा महान पापोनो भोक्ता थाय छे अर्थात् घणा समय सुधी नर्कमां निवास करी रहे छे, अने मजाना पानोमां डूवी अत्पंत अपचराने पाप्त थाय छे. एटलामाटे क्षत्रीलोकोए पूर्ण दंडनीतिथी अपाप्तने पाप्त अने पाप्त-नी रक्षा करवी. उत्तम मकारे पवर्तावेळी दंडनीति मातापिता समान संसारनी स्थिति अने दृद्धि करवावाळी मर्यादारुप थइ पडे छे.

राजाए रागदेय रिहत थवुं, आस्तिक वनवुं, तमाम धर्म टपर प्रीति राखवी, परलं कतुं वि-नतवन करवुं, लोभ न करवो, दया युक्त घड धनने भेळुं करवुं, धर्म अर्थ युक्त इन्द्रिओने प्रसन्न राखवी, उदारता पूर्वक प्यारां वचनो बोल्डवां, आत्मश्लाचा रिहत पात्र कुपात्रनो िचार कर्म पात्रने दान देवुं, नीच मनुष्पोधी स्नेह न करवो, उिछ पूर्वक वान्यवोधी द्वेप न बांच्यो, अल्प आ-जीविका आपी इनोने रम्बडावचा निह तेम तेओने छुःच देवुं निह, हलका लोको आगळ पोनाना गुण के प्रयोजन कहेवां निह, सन्पुरुषो पासेधी धन लेवुं निह, अपन लोकोनुं रक्षण करवुं निह, तपास कर्या शिवाय कोइने शिक्षा करवी निह, विचारने गुप्त गम्बवा, लोभीने पन आपवुं निह, कृतन्नी लोकोनो विश्वास न करवो. इर्पा न राखवी, स्त्रीओनी रक्षा करवी, शुद्ध रहेवुं, दया राखवी, घणी स्त्रीओनुं सेवन करवुं निह, स्वच्छ भोजन करवुं, क्रियावान पुरुपोने प्जवा, गायोनुं पूजन निश्चलपणे करवुं, यज्ञआदि धर्मीथी देवताओने प्रसन्न करवा, उत्तम लक्ष्मीनी चाहना राखवी, नमृता पूर्वक इश्वरनी सेवा करवी, बुद्धिशाली वनवुं, समयने समजवो, अपराय जाण्या विना वैरीने पण दंडवो निह, अपराथी शत्रुओने यारवामां विचार न करवो, विना कारण कोध करवो निह अने कृतव्नीओ सामे नमृता वताववी निह. ए रीते छत्रीश प्रकारना सद्गुणोथी संपन्न राजा आ लोकमां अनेक अक्ष्यपनो उपभोग करी स्वर्गमां सारी प्रतिष्टा पामे छे.

राजाए पोताना पुरोहित आदिने दान दक्षिणा दृ राज्यनां कामो करवां, ग्रुद्ध भा-वथी धेर्यने धारण करी राजभाग लेवो, मूर्ख के लोभीने कांड़ काम सोंपवं नहिः बुद्धिमान् अने लोभरहित पुरुषोने अविकार सोंपवा; खेतीनो पवित्र पष्टांश, अपराविश्रोनो दंड अने खंडीआ राजाओं पासेथी खंडणी शास्त्रनी रीते लड धननी दृद्धि चाहवी, परंत ज्यारे अन आदिनो छहो भाग छेतां प्रजाना वार्षिक खर्चिमां वांघो आवे एम होय तो राजनीति प्रमाणे महेसूल आदि माफ करवां अने प्रजानी आजीविका तथा रक्षानो प्रथम विचार करवो के जिथी प्रजा पण एवा धर्मात्मा अने दानी राजाने अनेक प्रकारे आनंद आपे छे. राजाए अधर्भ के छोभथी धननी इच्छा न करवी, शास्त्रथी विरुद्ध वर्तनार राजाना धर्म अने अर्थ वने नष्ट थाय छे, धननी इच्छा राखनारो राजा शास्त्र उपर द्रष्टि राखी शकतो नथी अने भूलथी मजाने पीडे छे, जेथी ते पोताने हाथेज पोतानुं मृत्यु उपजाने छे. जेम दूधनी इच्छानाळा पुरुष-ने गायोना थान कापवाथी दूध मळी शकतुं नथी, परंतु गायनी उपासना करे तो ते निरंतर दू-धने प्राप्त करी शके छे; तवीज रीते राजा पण देशने पीडवा मांडे तो सारुं फळ मळतुं नथी, प-रंतु विचार पूर्वक देशने भोगववाथी तेने उत्तम फळनी प्राप्ति थाय छे. रैटयत पण आवाइ वने-छ अने तीजोरी पण तर थाय छे. सुरक्षित पृथ्वी राजाने तेमज मजाने अन्न, सुवर्ण अने रत्न आदि आपे छे; जेम माळी उत्तम दुसने उछेरे छे अने हानिकारक दुसोने उखेडी फॅकी दे छे तेवीज रीते राजाए पण प्रजानुं पालन करवुं जोइए. धर्मपूर्वक प्रजानुं पालन करनार राजा कदि पण शोकने आधिन थता नथी. तमाम धर्मी करतां मजापालन धर्म उत्तम गणाय छे. भयथी प्रजानुं रक्षण निह करनारो राजा एक दिवसमां जे पाप करे छे, ते पापमांथी इजार वर्षे पण मुक्त थइ शकते। नथी अने धर्मपूर्वक प्रजाने पाळनारो राजा एक दिवसमां जे पुण्य करे छे ते

पुण्य दशहजार वर्ष पर्यन्त तेने स्वर्गमां आनंद आपे छे. राजाए वहुश्रुत, महानुभाव अने धर्म अर्थने जाणनार ब्राह्म गने पुरोहित बनाववो, तथा धार्मिक पुरुषोतुं दानपूर्वक सन्मान करवुं, राजा जे धर्मने मान्य राखे छे ते धर्म सर्व स्थळे मनाय छे, राजा जे जे कर्म करे छे ते कर्मने प्रजा सुखदाइ समजे छे. राजाए शत्रुओ माथे मृत्युसमान दंड धारण करवो, चोर आदिने मारवा अने अपराधिने समा न आपवी. रक्षण कराए छी प्रजा जे धर्म करे छे तेनो चतुर्याश राजाने मळे छे. तेम प्रजाए करेल दान, यज्ञ, ब्रत अने वेदपाट आदि कर्मोमांथी पण राजाने चतुर्याश प्राप्त थाय छे. अरक्षित प्रजा जे पाप करे छे तेनो पण चतुर्याश राजाने मळे छे. निर्दय अने मिथ्यावादी मतुष्यो जे कर्म करे छे तेनो संपूर्ण अथवा अर्व भाग राजाने प्राप्त थाय छे. राजाए कोइने दानयी, कोइने पराक्रमथी अने कोइने सत्य वचनोथी स्वाधीन करवा.

राजाना मंत्री चार प्रकारना होच छे. एकता समान प्रयोजनवाळा, वीजा प्राचीन, त्रीजा सवन्धी अने चोथा वनावेल, धर्मात्मा नित्र पण पांचमा मंत्री गणाय छे. ते मंत्रीओ पक्षपात रहित होवा जोइए, वन्ने पक्ष तरफथी ग्रप्त घन छेनारा कपटी न होय, धर्ममां स्थिति करनारा हाय पोतानी उदासीन अवस्यामां पण धर्मने तजनारा न होय, तेत्रीज रीते कार्यक्रशळ अने दीर्घद्रिट-वाळा होवा जोहए. ए चारे मंत्रिओमांथी मध्यना वे अयात् प्राचीन अने सर्वंधी श्रेष्ट गणाय छे, समान प्रयोजनवाळा अने नवा बनावेल मंत्री सदा संदिग्ध अने वाकीना वधा शंकाने योग्य छे. मंत्रीओए वधां काम पोतानी आंखे जोइ, करवां अने निश्चित मंत्रो राजाने जणाववामां विछंव न बरवो, कारण के असावधान राजानुं तमाम छोको अपमान करे छे, असाधु साधु वनी जाय छे अने साबु पुरुषो भय टपजावनारा धाय छ, शत्रु पित्र वने छे अने पित्र शत्रुता करे छे, कारण के मनुष्पनी बुद्धि निरंतर एक सरखी रहेती नथी; एटला माटे कोना उपर विश्वास राखवे। ए कांडद्रढ करी शकातुं नथी. राजाए उत्तम कर्मी पोतानी द्वाजरीमां करवां अने कराववां, अन्यंत विश्वास करनार राजाना धर्म अने अर्थ नष्ट थाय छे, परंतु सर्व स्थळे अविश्वास राखत्रो ए मृत्युवी पण अधिक छे; विश्वास अकाल मृत्यु छे, विश्वासधी काम लेनार बखने आपत्तिमां पडे छे, राजा जेनो विश्वास करे छे तेनी इच्छाधी ने जीवी शके छे, माटे राजाए केटलाएक उपर विभ्वास राग्ववो अने केटलाएक उपर संदिस्य रहेवु, सनातन नीतिनी रीति समजवा जेवी छे. राजाए पोताना मृत्यु पछी जे राज्यनो वाग्म थवानो होय नेनो विश्वास करवे। नहि कारणके ज्ञानी छै।-

कोए तेने शत्रु कहेल छे. वीजाना क्षेत्रना जलनी गति पोताना क्षेत्र तरफ थती होय तेनो विश्वास न करवो, कारणके ते वंध तोडी पाणीना अधिक प्रवाहने चलावे तो वखते देशने वर्षवाद करे छे. पोतानी सीमा समीपे रहेनारा राजानो पण विश्वास करवो निह, कारणके ज्यां सुधी ते सीमा उपर प्रवंध न राखे त्यां सुधी पोताना देशमां व्यापार आदि उत्तम प्रकारे चाले ले. परंतु विपरीत-पणाने धारण करे तो हानिकारक थइ पडे छे. मित्रनी बृद्धिथी संतुष्ट न द्याय अने हानिथी महान् दुःखी थाय ते मित्र गणाय छे, जे एम माने के मारा नागथी मित्रनो नाग थगे एवा मित्र उपर निश्रय पूर्वेक पिता समान विश्वास राखवो उक्त लक्षणवाळा राजाने धर्म कर्मीमां विवन नडतां नथी. राजाए व्यसनोथी निरंतर भयभीत रहेनार अने पोताना राज्यनी बृद्धि माटे शबुता नहि करनार राजाने आत्मिक मित्र गणवो; तेमजरुप, वर्ण, अने स्वर्थी संपन्न, क्षमावान, गुणमां दोषनी करपना नहिकरनार अने कुछीन पुरुषने प्रधान बनाववी आसीतुं स्मरण राखनार, बुद्धिनी स्वामी, याददास्तवाळो, चतुर, स्वभावे दयाळु, पोतानी प्रतिष्टा रहे के न रहे तो कदापि हृदयमां शत्रुताने स्थान नहि आपनार ऋत्विज, आचार्य अथवा वलाणवा छा-यक मित्रने मंत्रीतुं स्थान आपवुं योग्य छे. एवा मंत्रीओ उपर पूर्ण विश्वास राखवो तथा तेओने विता माफक पूज्य गणी तेना महान मंत्रने मान आपनं एक काम उपर वे अथवा त्रण अधिकारी कदि पण योजवा नहि, एक काम उपर एकज अधिका-रीने नियत करवो, कारण के जीवोमां हमेशां विपरीतता थाय छे. एक काम जपर झाझा अधिकारीओ योजवाधी तेओमां परस्पर क्लेश उत्पन्न थवा संभव रहे छे तेमां पण जेओ धर्मज्ञ अने मर्यादापूर्वक वर्तन करनारा होय छे तेओ समर्थ मनुष्यो साथे शत्रुता कर-ता नथी अने इच्छा, भय, लोभ तथा क्रोध आदिने लीधे धर्मने छोडता नथी. चतुराइथी सर्वतुं प्रिय बोलनारा, कुलीन, श्रेष्ट स्वभाववाळा, दयाळ, पोतानी प्रशंसा नहि करनार, शूरवीर, बुद्धि-शाळी, कार्याकोर्यनो विचार करवावाळा, सत्पुरुषोनी सोवत करनार अने उत्तम कर्मोमां भीति राखनार पुरुषो राजाना मंत्री थवाने योग्य छे, एवा पुरुषोज प्रजातुं कल्याण करी हाके छे.

राजाए पोताना सजातीय पुरुषोनी अभ्युत्त्थान आदिथी प्रतिष्ठा वधारवी तथा तेओने उत्तम वचनोथी आनंद आपवो. जे पुरुष धननो रक्षक होय तेनी रक्षा राजाए करवी जोइए. कोइ दास अथवा नोकर मंत्रीए जप्त करेला अथवा नष्ट करेला खजानानी वात करे तो ते वात राजाए एकान्तमां सांभळवी अने एवा मंत्रीथी खजानानी रक्षा करवी. चोरी करनारा मंत्रीओ घणाओने

मारे छे. राज्यना खजानाने गुप्त रीते चेंरनारा तमाम नोकरों भेळा थइ वखते खजानाना रक्षकने पीडे छे जेथी अरिक्षत खजानो नष्ट थाय छे. राजाना सेवकोनी ए आजीविका पापरुन गणाय छे. एवा नोकरों अस्तर्य चित्तवाळा राजाने वखते भूळथाप खबरावी दे छे, माटे राजाए सर्व दशामां स्वस्थ रही भूळ करवी निह. नोकरोनी गफळाधी राजा हानिना भोका धाय छे अने हानिने प्राप्त धनार राजामां जीवन टकी शकतुं नथी. जेम देदीप्यमान अग्निमां जीव वळीने भस्म थाय छे तेम राजाने शिक्षा करवानी इच्छावाळा मनुष्य पण नाश पामे छे. अप्रिय वचन, फोकटनी उठवेश, यात्रा आदि इंगित अने देहना आंगिक कर्मोधी शंका करवावाळा मनुष्य जीवननी आशा तनी निरंतर युक्ति पूर्वक राजानी सेवा करवी. प्रसन्न थएळ राजा देवताओ समान इच्छित आपे छे अने क्रोश्रायमान थतां ते वैश्वानर अग्नि समान मूळ सहित वाळी भस्म करे छे.

जे पुरुष छज्जावान, जितेन्द्रिय, सत्यवक्ता, सन्मार्गगामी अने न्याय अन्याय समजवामां समर्थ होय तेज राजाना सभासद यवाने योग्य छे. राजाए महा शुरवीर, शास्त्रज्ञ, संतोषी अने श्रेष्ट कर्म-वाळा मंत्रीओने सहायक बनावी आपितमां तेओनी सलाइ छेवी. ए मंत्रीओ कुलीन अने राजमान्य हो-वाधी पोताना सामर्थ्यने छुपावता नथी. तेओ प्रसन्न, अप्रसन्न, पीडित अने घायल आदि घणां मनुष्योने राजकाजमां प्रवृत्त करे छे. राजाए कुळवान, देशी, रुपवान, झानी, घणां शास्त्रने जाणनार बुद्धिशाळी अने स्वामीभक्त पुरुषेंने नोकर राखवा. कुछीन छतां छोभी, निर्देश अने निर्छन नोकरो ज्यां-सुधी पोताना हाथ छीला रहे त्यां सुधीन राजानी सेवा करे छे. कुळवान, आनंदी मनवाळा, आंख आदिना इशाराने ओळखनार, कोमळ स्त्रभावबाळा, देश कालनी रीतने जाणनारा अने राजानी उन्नति चाहनारा मंत्रीओने गजाए उत्तम अधिकार आपत्रा तथा तेओने न्हाना मोटा उपभोगयी सुखी राखवा ज्ञानी, गुरुपूजन करनारा, नेक चलनवाळा, विविध वृत्त आचरनारा, सत्यवादी, अने निरंतर चाहनारा मंत्रीओ आपत्तिना वखनमां पण राजानी त्याग करता नथी. जे नीच, बुद्धिरहित, धर्माधर्मने नहि जाणनार अने मर्याटा रहिन मनुष्यो होय तेनायी राजाए वचता रहेवुं. समुदायने छोडी एक उपर बधारे बीति वताववी नहि. कदाच समुदायमांथी एक न स्वीकारवा योग्य होयतो तेवी अवस्थामां घणा मंत्रीओ करतां एकन राज्यनुं कल्याण करनारी थइ पड़े छे. मंत्री हमेशां द्रढ मनवाळा होवा जोइए, कारणके अस्थिर मनना माणमो काम पूर्ण करवाने समर्थ थइ शकता नयी. निष्कपटी मनुष्य मीटां वचनयी प्राणीमात्रनो प्रीतिपात्र थइ महान् कीर्ति मेळवे छे अने भ्रक्कटी चढावी कढवुं वोक्रनारो माणस मीटा रहित भोजननी माफक, अरुचिकर थइ पढे छे. दंढधारी राजाए पण मिष्ट वचन वोळवां के जेथी राज्यनी दृद्धि-थाय. सर्वे सद्गुण संपन्न पुरुष विरला होय छे, आ दुनियामां एक स्वभावना मतुष्यो महा महे-नतथी पण मळी शकतां नथी. राजाए पचाश वर्षनी अवस्थाए पहेंचिला, बुद्धिशाळी, निलें। भ, तथा निर्व्यसनी पुरुषने मंत्रीओमां मधानपद आपवं न्यायखातामां पण धर्माधर्म-ने समजनारा प्रवीण पुरुषोने याजवा, कारण के न्यायाधीश्च राज्यने अवर्षथी उगारे छे. अधि-कार पामी उत्तम कर्म निहीं करनारा नोकरो पोतानी साथे राजाने पण अयोगितए पहींचाढे छे. संसारनो रक्षक राजा पराक्रमीओना वळथो घायछ थएका तथा दुःखो अनायोनो नायके. न्याया-धीशे वादी प्रतिवादीना अवराधने साक्षीयी साबीत करी अवराध मुजव शिक्षा आपवी तथा वकील वगरना मुकदमा उपर विशेष ध्यान आपतुं. धनवान पासेथी दंड छेत्रो अने निर्धनोने केद आदिनी शिक्षा करवी. राजाए दुराचारी राजाओने पण चढाइ आदिथी भयभीत करवा. श्रेष्ट पुरुषोतुं मीठां वचन अने इनाम आदिथी पोषण करवं. जे पुरुष राजाने मारवानी इच्छावाळे<sup>।</sup> होय, आग लगाडनारो होय अने वर्णसंकर करनारो होय तेनो अनेक मकारे नाझ करवो. उत्तम प्रकारनी दंडनीति धरनारो अने शास्त्रानुसार कर्म करनारो राजा कदि पण अधर्मने प्राप्त थतो नथी। अज्ञानी राजा इच्छातुसार प्रजाने दंहे छे. जेथी ते आ छोकमां अपयशनो भागी थइ अन्ते नर्कमां निवास करे छे. राजाए अपराधीनेज दंदवो अथवा पिताना अपराधयी पुत्रने शिक्षा न करवी. आप-त्तिना वखतमां पण दूतने न मारवो, दूतने मारनारो राजा मंत्रीओ समेत अघोगतिने पामे छे, क्षमाधर्म उपर प्रीति राखनारा अने सन्मार्गगामी राजाए कोइपंण अवस्थामां दूतनो वध न करवो. कुळवान वहोळा कुदंबवाळा, वियवक्ता, चतुर, पोताना मास्त्रीकना कह्या मुजव वार्ता करनार, स्म-रण शक्तिवाळा अने रक्षण करनार पुरुषोने किल्ला तथा नगर आदिना दरवज्ञापर नियत करवा अर्थात् उपरना सात गुणोथी संपन्न पुरुषोने दरवाननी जगो आपवी. सन्धि अने विग्रहनो विचार करनारा मंत्री धर्मशास्त्रने समजता होवायी मंत्रोने ग्रप्त राखे छे. कुछीन सत्व-गुणी अने पवित्र मंत्री प्रशंसापात्र थाय छे, राजाए व्यूह, यंत्र अने आयुध आदि कळामां कुश-ळ, तत्वज्ञ, पराक्रमी, शीत धूप तथा वर्षा वायुने सहन करनार, शत्रुना दोषने जाणनार, शत्रुने विश्वास आपनार परंतु पोते कोइनो विश्वास नहि करनार जे पुरुष होय तेने सेनापतिनुं स्थान आपदुं.

राजाओए उत्तम मकारना किल्लाओ तथा शहेरो तैयार कराववां जाइए. किल्लाओ छ मकारना छे.

१ जे ठेकाणे पाणी योडं होवाधी शत्रु हेरान थाय एवा निर्जळ देशमां किल्लो बनावेलो होय ते "धन्वदुर्ग" २—जमीन उपर किल्लो वांधेल होयते "महीदुर्ग " ३—पर्वतनी टोच उपर किल्लो वांधेल होयते "गिरिदुर्ग " ४—मनुष्योनो महान समूह ज्यां रहेतो होयते " नरदुर्ग " ५—प्र्ळनों किल्लो होयते " मृत्तिकादुर्ग " अने ६—घाटां हक्षो वाळुं जंगल होंयते, " वनदुर्ग " कहेवाय छे.

ए पट्दुगमांथी कोइ एक दुर्गवाळा नगरमां पोताना कुडम्व कवीला साथे निवास करवो। उक्त दुर्गमां थन, धान्य, शस्त्र, हाथी, घोडा, रयो, विद्वानो, शिल्पक्क, अनेक प्रकारना पदायों अने धार्मिक मनुष्योनो संग्रह करवो तेमज रस्ताओने रमणीय वनाववा, देवमंदिरो वंधावी तेमां कायमने माटे पूजारीओं राखवा, श्रीमन्तोने वसाववा, सुशोभित मकानो वंधाववां अने प्रधान तया सेना-पितने स्वाधीन राखी खजानो, फाज अने ित्र आदिनी दृद्धि करवी. शस्त्र, यंग अने मंत्रना स्थानोने वधारवां किल्लानी अंदर कायमने माटे काष्ट, ले.ष्ठ, दारु, फोतरां, कोल्लसा, शुंग, अस्थि, वांस, वसा धाजा, तेल, मध, छूत, पण, औषध, राळ, आयुध, वाण, चमे, तांत, नेतर, मुंज, व्वळवज्ञ, विविध प्रकारनां वाद्य, जलाश्वाय, अने दुधवाळां वृक्षोतुं संरक्षण करवुं, तथा आचार्य, ऋत्विज्, पुरोदित, धनुर्धर, कारीगर, ज्योतिपी, वैद्य, बुद्धिमान, विद्वान, चतुर, डाह्या, जीतेन्द्रिय श्रूरवीर, कुळवान, बहुश्रुत धेर्थवान अने तमाम काममां सावधान रहेनारा मनुष्योनो सारी रीते सत्कार करता रहेवं. धर्मक्षने पूजवा, अधर्माओने दंडवा, तमाम वर्णाश्रमीओने योग्य कर्मोमां योजवा, दूत अथवा छुपी पोलीस द्वाराए पोताना तथा पराया नगर अने देशनी वार्ताथी वार्कफ थतां रहेवं.

१ हाडकांओ उपर जामेटी चरवी तथा हाडनी अंदर रहेटी चरवी तेमन हाडकां छडाइ चरते पायल थएलाओंने पाटा पींडी करवामां तथा तुटेलां हाडकांओने सांधवामां उपयोगी थइपडे छे.

२ नदीने किनारे छांवा पर्णवाळी पानो थाय छे तेनी अंदर वाजराना कणसर्खां जेवां कणसर्खा होय छे तेने केटछाएक छोको रामबाण कहे छे. ए रामवाणना रेझाओ साधारण अस वटे कपाएल अंगमां भरवाथी तुरत या मळी जाय छे.

त्यारवाद योग्य उपायोनी रचना करवी. दूतोनी, मंत्रीओना मंत्रोनी, खजानानी अने दंड नीति-नी संभाळ हमेशां राजाए जाते लेका जोइए. नगर अने देशमां योजेला द्तो पासेथी सामान्य शत्रु अने मित्रना अभिप्रायो जाण्या वाद तुरतमां वंदोवस्त करवो, राज्यभक्तोनो सत्कार करी राज्यद्रोहीओने, उचित शिक्षा आपत्री, यक्त तथा दान आदि कार्य करवाने विशे कोइने पीडवां नहि, तेमज धर्मने वाध न लागे तेवी रीते वर्तन करी अनाय, हद्ध, विधवा अने गरीव लोकोने आ-जीविका आदियी आश्रय आपवो.

राजा जेवी रीते एक गामनो मधान राखे छे, तेवी रीते तेणे दश, वीश, सो अने हजार गामना प्रधान जुदा जुदा राखवा जोइए. एक गामनो प्रधान पीताने हस्तक सींपाएका देशना लोकोना गुण दोषनो निश्रय करी ए सघळी इकीकत दश गामना प्रधानने जणावे. ए दश गामा-नो प्रधान बीश गामना प्रधानने, बीश गामनो प्रधान सो गामना प्रधानने अने सो गामनो प्रधान हजार गामना प्रधानने तमाम इकीकतथी वाकेफ करता रहे तेमज थएली उपज एक गामवाळो दश गाम वाळाने अने दश गामवाळो वीश गामवाळाने एम उपर उपरना अधिकारीओ द्वाराए मोक-ला रहे. सो गामनी उपज तथा खर्चने संभाळनारों निर्दोष प्रधान एक गामनी उपज मोगववाने योग्य गणाय छे, अने हजार गामनी व्यवस्था करनारो तथा राजाथी सत्कार पामेले। प्रधान एक परगणांनी उपजने भागववा अधिकारी छे. ए प्रधान राजानो नायव थइ हाके छे अने ते पोतानुं परगणुं अनाज अने धन अदिना उपभोगधी प्रजानुं पोषण करवा सामर्थ्य धरावे छे. उपर कहेला मधानोतुं काम जो युद्धतुं होय तो तेओ गामधी सबंध राखनारा, धर्मज्ञ अने सावधान वनी पोत पोताने सोंपाएला गामोनी चर्चा जोनारा अने दरेक वातनो विचार करनारा होवा जोइए. नगरनो स्वामी भयानक स्वरुप धारण करी उन्नत आसन उपर विराजमान थइ पोताना प्रतापथी चन्द्रमा जेम नक्षत्रोतुं तेज दवावी दे छे तेम उक्त सभासदोने आच्छादित करे. पोताना देशमां नियत करेला दूता द्वारा सर्व प्रधानोनां वृत्तांत जाणवां. कदाच कोइ अधिकारी रुपी राक्षस मारवानी इच्छावाळो, पापात्मा, मूर्ख अने अन्यना धननुं हरण करनारो होय तो तेना खर्च तथा कारखा-नाओं उपर वारंवार तपास राखवी, न्यापारी अने कारीगरो उपर भारे न पढे तेवा कर नांखवा, पोताना देश रुपी मूळने कापवानी इच्छा न राखवी; तेम लोभथी वीजानी आजीविकारुप खेतीने अवरोध न करवो. जे राजा प्रजा पासेथी वधारे पडता वेरा आदि लेखे तेना साथे सर्व लोको रात्रुता करे छे. प्रजाए रात्रु समान गणेला राजा कोइ दिवस कल्याणने पाप्त **यतो नयी. सावधान** 

बुष्टिवाळा राजाए बाक्टदानी माफक देशतुं दोहन करतुं जोइए. नोकर अने वास्रहो जो दुज्जत करे तो ते पीडा पामे छे. दुःखदायक वत्सने तेनी माता द्व आपती नयी जेयी ते वत्स कार्प करवा शक्तिमान वह बकतो नथी, तेम अत्यन्त दोइन कराएलो देश पण महान् कर्म करी अकताो नथी. जे राजा जाते देशनी रक्षा करे छे ते उत्तम मकारनां फळने पाम छे. देश एक खजानो छे. जेम खजानानी रक्षा महेकोमां थाय छे तेत्रीज रीते राजाए पुरवा-सी, देशवासी, सर्वे श्वरणागत अने अल्प पराक्रमवाळां मतुष्योतुं महेरवानी साथे रक्षण करवं अने तेओंने चोर आदिना उपद्रवधी बचाववा. नीतिज्ञ राजा उपर प्रजा निरंतर प्रसन्न रहे छे. ज्यारे पैसानी बहुज जरुर पडे त्यारे समयने सपजनारा राजाए आज्ञापत्रद्वारा प्रजाने जणा-वर्दुं के " अमुक शत्रुनी सेनानो भय महा आपित्तरप छे, जेम वांसना द्रक्षमां फळनी उत्पत्ति थती नथी तेम आवी पडेली आपत्तिने पण अने देशना विनाशनुं कारण समजीए छीए, शत्रु चोर छो-कोनी साथे मळी आपणा देशने दुःख देवा उद्योग करी रहा छे, आ घोर आपत्तिमां असहा भय होवायी तमारा रक्षणने माटे तमारा पासेथी धन लेवानी इच्छा छे. जो थोडा वखतमां भय दूर थइ जहों तो तमारुं घन तमोने पाछुं आपवामां आवशे, जो शतु छोको धन छइ जहो तो ते पाछुं मळ-वातुं नथी अने उलटा प्राण गुमावशो, तमारी वफादारीथी हुं प्रसन्न छुं, पुत्रना उदयथी जेम पि-ताने आर्न्द थाय तेम तमारी सारी स्थिति जोइ हुं ख़ुशी धाउं छुं, सामर्थ्य अनुमार देशनी साथे तमारी पण हुं रक्षा करीश, जेम उत्तम वेल भार खेंचे छे तेम आ आपित्तना वखतमां तमारे पण खर्चनो वोजो उठाववो जोइए " इत्यादि निष्ट वचनो पूर्वक युक्ति प्रयुक्तिथी धन प्राप्त करवुं ए रीते धन माप्त कर्या पछी नोकर आदिना पोपणतुं खर्च, युद्ध सवंधी भय, मनोरथनी सिद्धि अने मजानी रक्षानो उत्तम मकारे विचार करवो जोइए. वैश्योमां अति कोमळताथी काम करवुं अने तेओने मिए वचनो, दान, मान तथा आध्वासन आपना रहेवुं, के जेथी तेओ देशमां व्यापार अने खेती आदिनी दृद्धि करे राजाए दारुडीआ, व्यभिचारी, जुगारी, कुटणी स्त्री अने नीच स्वभावधी धर्मने नष्ट करनारा पुरुषोने अवस्य शिक्षा आपवी जोडण, कारण के तेवा लोको देशमां वधवाथी कल्याणस्य मजाने पीडा उत्पन्न करे छे. आपत्ति विना कोट कोटना पासे मागवाने योग्य नथी. राजाए पापी लोकोने अक्टय जिला आपवी, नया खेनी, व्यापार, गाय अने ए रीतना दीजा उत्तम कर्में नुं घणा अविकारी ओद्वाग रक्षण करना रहे नुं, धनपान लें।-कोने खावा पीवानी वस्तु नथा वस्त्र आदिथी प्रमन्त्र राखवा, कारण के धनवान मनुष्यो राज्यनुं

म्होंडं अंग गणाय छे. राजाए सर्व जीवोतुं प्रीति, अक्रोध, दया, अने मित्रताथी पालन करतुं जोइए. सत्यमां प्रवृत्ति राखनारा राजाओ मित्र, खनानों अने पराक्रमी सेनाथी पृथ्वीने छांना वखत सुधी भोगवी शके छे. राजाए निरंतर तपाम प्रजाने ओळखबी जोइए. पोताना माणसोथी वीजानी अने वीजाना माणसोथी पोताना माणसतुं रक्षण करतुं अने तेओना उपर पण अमुक रक्षक नीमवो, पोते सुरक्षित थइ पृथ्वीनी रक्षा करवी, मारो प्रतिवन्धक कोण छे ? व्यसनी लोको साथे हुं शा माटे स्नेह राखुं छुं ? मायी वगरनो शतु कोण छ ? अने मने कइ वातथी कलंक लागे छे ? ए सर्व वावतनो हमेशां विचार करता रहेतुं. दूत लोको वरावर खवर आपे छे के निह ? तेमज देश अने राज्यमां पोतानी कीर्त्ति गवाय छे के निह ? धर्महा, धर्मवान् तथा सुद्धमां पीठ निह वतावनारा क्षत्रीओ देशमां सुख पूर्वक गुजारो करे छे के निह ? ए तमाम हक्तीकतथी वाकेफ थता रहेतुं. नोकर, मंत्री अने मध्यस्थ मनुष्योमां प्रशंसापात्र यवा प्रयत्न करवो. तमाम लोकोना मनने प्रसन्न करत्तुं ए काम कठिन छे, कारण के सर्व जीवोमां शत्रु, मित्र अने उदासीन ए त्रिपु-टीए निवास करेलो होय छे.

चेष्ठा करनारा जीवो स्थिर जीवोन खाइ जाय छे. दाढ राखवावाळा वगर दाढवाळां प्राणीने खाय छे अने क्रोययुक्त थएळो विषयर नाग वीजा सर्पोतुं भक्षण करी जाय छे मांटे तेवी प्रकृतिना पुरुषोथी अने श्रृतुओथी राजाए हमेशां सावधान रहेवुं, वळी करनी दृद्धि करवाथी पीडाएळा न्यापारी भयभीत तो नथी थता ? वनवासी मतुष्यो अन्य धन आपी वधारे वस्तुओ तो नथी छइ जता ? अने अत्यंत पीडाथी रुदन करनारा मतुष्यो देशनो त्याग करी चाल्या तो नथी जता ? ए वधी वावतनो हमेशां तपास कर्यो करवो. इच्छापूर्वक कर्म करवाने मांटे नहि परंतु धर्मने अर्थेज राजा उत्यन्न थाय छे. ज्यारे जीव धर्ममां नियत थाय छे त्यारे धर्म राजामां स्थिति करे छे. ज्यां सुधी अधर्मने अटकाववामां आवतो नथी त्यां सुधी भय पण मटतो नथी. अहंकारनो त्याग करी सत्यपूर्वक धर्मनुं सेवन करनार राजा सुखी थाय छे. राजाए मद्यथी प्रमत्त थएला पुरुषथी, पाखंडी लोकोना संगथी, केद करेला मंत्रीथी तेमज स्त्री, पहाड, कुटिल मांग, अगमगस्थान, हाथी, घोडा अने सर्व आदिथी सदा सचेत रहेवुं. रात्रीए फरवुं नहि, लोभ, अहंकार, कपट अने क्रोधनो ल्याग करे तेवा वंदोवस्त राखवो, कार- एके तेम स्वतंत्र लोको पराइ स्त्रीथी अथवा कन्याथी संभोग न करे तेवा वंदोवस्त राखवो, कार- एके तेम थवाथी प्रजा नपुंसक, अंगहीन अने वर्णसंकर थाय छे, तेनो दोष राजाने लागे छे, अधर्म

of many commencer considerations and considerations with the consideration of the consideration of the consideration of the consideration of the constant of t

वर्षे हे, ऋतुओमां विवरीतपणुं दाखल थाय छे, अनेक मकारना रोगो देखाव देखे, दृष्टि धृती नथी अने अनेक जातना उत्पात देशमां व्याप्त थाय छे. राजाए निर्वळने कदिपण पीडवा नहि, बळात्कारथी गरीव लोकोना धनतुं इरण करवं नहिः ज्यारे राज्यनां माणसे। उत्तम धर्मतुं अवर्ल-बन करी कार्य करे छे, त्यारेज राजानो अभ्युदय धाय छे. दीर्घदर्शी मंत्रीओनी सलाइयी काम करनारा राजा विजय मेळवे छे. मंत्रीओतुं अपमान नहि करनार अने अहंकारी तथा पराक्रमीने पराभव आपनार राजा धर्मज्ञ गणाय छे. प्रजानां अश्रुने साफ करनार तथा अतिथिने आदर आपनार, निर्येक विवादने तजनार अने माग्या विना भलाइ थापरनार राजाने प्रजा प्राण समान प्यारा गणे छे राजाए इच्छा, क्रोध, के शत्रुता आदिथी धर्मनो कदि पण त्याग न करवो कोइ प्रश्न करे तेने न्याय विरुद्ध उत्तर न आपवो. न कहेवा लायक वातने प्रकाशमां लाववी नहि, कोइ कार्यमां उताबळ न करवी, गुणे।मां दोप लगाडवो नहि, मित्रनी साथे प्रसन्नता अने शत्रुनी साथे क्रोध वतावी प्रजानी रुद्धि चारवी. जे राजा पोताना नोकर आदि माणसो उपर पोताना गुणथी भलाइ वारेर छे तेनां सर्व काम सिद्ध थाय छे. राजाए अस्त्रस्थ चित्तवाळा, छोभी, दुराचारी, मूर्ल, कपटी, दारुढीआ, जुगारी तथा शिकारमां प्रदत्ति राखनार माणसाने कदि पण महोटा अधि-कार सोंपवा निह, कदाच पराक्रमी राजा साथे शत्रुता वंधाइ गइ तो पछी तेनो एकदम विश्वास निह करतां निरंतर सावधान रहेवुं, कारण के तेओ दूर छतां वाजनी पेठे दुःखदायक वने छे. किल्ला आदि वनाववा, युद्ध करवुं, धर्मनो उपदेश कराववो, सलाह करवी, अने समय उपर सुल आपवुं ए पांच मकारथी देशनी आबादी थाय छे. वखत विना विचारी व्यय नहि करनार, शत्रु उपर श्रीध के मित्र माधे अति प्रसन्नता नहि वतावनार तथा देहनां मुखदायक कर्ममां महत्त राजाए एमेशां राजाओना समृहमां क्यो राजा शीति करवा लायक छे, कोण भयर्था शरणे आव्या अने कोण उदासीन धइ दोप राखवावाटा छे इत्यादि वावतनो विचार करवो. जे पापात्मा मनुष्य सर्व सद्गुणसंपन्न तथा नीटां वचन वोलनार स्वामीयी शत्रुता करे है, ते मनुष्य उपर राजाए कोइ दिवस विश्वास न राखवो. युष्ट विना विजय मेळववे। ए उत्तम अने युद्धशी विजय मेळववे। प मध्यम गणाय छे. राज्यनां मूळ द्रढ न होय तो अशाप्तनी कदी पण इच्छा न गखनी, कारण के निर्देळ मूळवाळो राजा लाभ मेळ्वी शकवा समर्थ धः शकतो नथी. जेनो देश धनादय अने भसन मंत्रीओणी युक्त होय ते राजानुं मूळ इट गणाय छे. जेना योद्धाओं मंतुष्ट अने प्याग वच-नोधी मसन थएटा होय ते राजा अत्य दंडयी प्रव्यीनो विजय करी शके है. जेना पुरवामी नवा

देश्वेंगसीओ धनवान, अनाजनो संग्रह करनारा अने प्राणी मात्र उपर दया राखनारा होय ते राजानां मूळ द्रष्ट छे एम समजवुं.

क्षत्री राजाए क्षत्री राजानी साथे युद्ध करती वखते जेणे क्वच आदि धारण न कर्या होय तेनी साथे युद्ध न कर्वं, एके एकनी साथेज लड्वं, जो सामा माणसे कच धारण कर्यं होय तो पोते पण क्वच पहेरी युद्ध कर्वं, जो ते सैन्य सिंहत सामे आवे तो पोते पण सैन्य साथे राख्वं, ए छळ कपटथी युद्ध करे तो पोते पण छळ कपटथी लड्वं, जो ए धमेयी युद्ध करे तो पोते पण धमेथी युद्ध कर्वं, घोडेस्वार थइ रथवाळानी सन्मुख न जवं, रथवाळाए रथवाळानी साथेज युद्ध कर्वं, कोइ आपत्तिमां होय अथवा भवभीत थयेल होय अने वश यइ गयेला होय तेना लपर किंद पण शस्त्र महार न करवो. धमेथी विजय मेळववानी चाहना राखवी, अर्थिय विजय मेळववारा नीच अने पापात्मा गणाय छे. धमेथी मर्वं ए श्रेष्ठ छे, परंतु अवर्मथी विजय मेळववारा नीच अने पापात्मा गणाय छे. धमेथी मर्वं ए श्रेष्ठ छे, परंतु अवर्मथी विजय मेळववा ए लत्तम नथी. हवाथी भरेल चामडानी मशक जेवो महान देह जो शुभ कर्ममां प्रवृत्त न थाय तो ते नदी किनारे रहेलां दक्षनी माफक मूळ सिहत विनाश पामे छे अने पाछळथी सर्व लोको निन्दा करे छे.

राजाए तुटी गएल क्वचवाळा, " हुं तमारे आधीन छुं " एवा वचनो कहेनारा, हाथ जोडी सामा उभेला अने शक्षनो त्याग करनारा श्रृतने पक्षडी तेना उपर प्रहार करवो निहे, राजा राजानी साथेज युद्ध करवा योग्य छे, राजा शिवाय कोइ पण वर्ण राजा सामे शक्ष चलाववा योग्य नथी, जेनो देश दृद्धियुक्त, धनवान अने आज्ञाकारी होय तेमज जेना मंत्री अने नोकर आदि प्रसन्न होय ते राजा सुखपूर्वक राज्य भोगवी शके छे, राजा लोको पापीओने दंडवाथी, पुण्यशाळीओन्छं पोषण करवाथी तथा यज्ञ अने दान आदिथी पवित्र तेमज निर्मळ थाय छे, विजयनी इच्छावाळा राजा जीवोने पीडे छे अने पाछा विजय मेळवी प्रजानी अभिदृद्धि करे छे, तेमज दान, यज्ञ अने तप आदिना वळथी थएल पापनुं निवारण करी शके छे, युद्धमां जेटलां शस्त्र क्षत्रीना देह चर्मने छेदे छे ते छेदो तेने तेटलां उत्तम फळो आपे छे, युद्धमां क्षत्रीना देहथी जे रुथिर निक्रळे छे ते तेनां तमाम पापोने धोइ नांखे छे, युद्धमां संतप्त थएला क्षत्री जे कष्ट सहन करे छे ते वदले तेने महान तपनुं फळ मळे छे, युद्धमां वीजाने आगळ निह करतां पोतेज आनळ रहेनुं ए महा पुण्य छे, फोजनी चढाइ थती वखते समान पुरुषोमां पण महान तफावत पडी

जाय छे अर्थात् कोइ आगळ धाय छे अने कोइ नयी थता, श्रावीर पुरुषो स्वर्गनी चाइनायी शत्रु सन्मुख उभा रहे छे अने भयभीत माणको भागे छे, माटे राजाए एपा अपन मनुष्योने आगळ
न करवा के जेओ साथीओने छांडी कुशळता पूर्वक घरभेळा धइ जाय. युद्ध समये जे पोताना
माणनी रक्षा करवा चाहे तेने काष्ट्र पापाण आदिशी मारवा अथवा नुणना अग्नियी भस्म
करवा जोडण.

ने क्षत्री कफ मूत्रनो त्याग करतो तेमज दुःख्यी विलाप करतो शय्या उपर मरण पामे ते अधमा गणाय छे. श्रूरवीर अने अभिमान राखनारा क्षत्रीनो घरमां मरवाथी प्रशंना थती नथी, परंतु युद्धमां शत्रुओनो नाश करी सजातीयथी घराएल अने शक्षोथी पीडित शरीरे पाण तजे तेज कीर्त्तिना पात्र धाय छे कठिन युद्ध करनार अने शक्षोना तीक्ष्ण प्रहारथी अलंकृत अंगवालो क्षत्री रणभूमिमांज स्थन करे तो ते इन्द्रनी वरावरी करवा शक्तिमान थइ शके छे. शत्रुओधी घराएल ने घायल क्षत्री दुःख नथी मानता ते अक्षय लोकने प्राप्त धाय छे.

क्षत्रीओ युद्ध ह्पी यज्ञयी परम कल्याणने पामे छे. अर्थात् कच पहेरी शक्ष धारण करी युद्ध करवानी दीक्षा लेनारा क्षत्री सैन्यमां अग्रेमर यह युद्ध ह्पी यज्ञना अधिकारमां योजाय छे. युद्ध ह्पी यज्ञमां हाथी, ऋत्विज्, घोडा, अध्वर्ध, शत्रुओनुं मांस, ह्यिण्य अने क्यिर घृत कहेवाय छे; शृगाल, गिद्ध अने कारोल आदि पक्षी सदस्य के नेओ यज्ञगां अवश्चेत्र रहेला घृत अने ह्यिण्य (क्यिर—मांम) नुं भोजन करे छे; प्रकाशित अने तीक्षण विषमां युद्धावेल प्राप्त, तामा, खड़ा, शिक्त अने परशी ए युद्ध यज्ञनां श्चच नामे पात्र गणाय छे; िष्पमां युत्रावेल, नेगयुक्त, लांवा, परोलां, परकायाने भेदनारां, सीधां अने वाकां वाणो महान् श्चुत्त लेखाय छे; हार्थाना चर्मयी महेल, हाधीशांतनी मृटवालां अने हाधीनो सुढ कापनार खर्ने युद्ध यज्ञना स्किण् गणाय छे; चक्तचित लोहमय तीक्षण प्राप्त, शक्ति, वे धारवाला कर्ने अने फरशीना प्रहार ए युद्ध यज्ञनां द्रव्य छे, युद्धमां समय विना हिद्ध पापनार अने क्रिलीना देहथी उत्यन्न थनार ने घणुंन क्यिर शीघनताथी पृथवीपर पहे छे ते सर्व मनोरथने पूर्ण करनारी पृण्यं द्वित्रा छे; सन्यनी आगल "वापो छेदो " एवा जे शब्दो संभळाय छे तेने सामग ब्राह्मण पत्रना साम मंत्रीयी यमलोकमा गाय छे; शत्रुओनुं सेनामुख ए यहनुं हित्रीन अर्थान् साकल्य राख्वानुं पात्र गणाय छे, युद्धमां अनेकने मारी हो कादन्य हे छे ते प्रह्मां अर्थनिच नामनो अपि लेखाय छे, युद्धमां अनेकने मारी के कदन्य हहे छे तेन खदिरनो अष्ट कोण यहस्वीम क्षेत्र के वचनर्या बोला-

वेला अने अंकुश्रथी चलावेला हाथी वपट्काररुप तलनादथी पुकार करे छे, युद्धमां " ब्राह्मणतुं धन चौराइ जतां प्यारा देहने तजवामां आवे छे " ए शब्द जे गवाय छे तेज त्रिसामा नामनो दुन्दु-भि छे. देहरुपी स्तंभने छोडी ते यज्ञ अत्यंत दक्षिणावाळो गणाय छे, जे शूरवीर स्वामी निमित्ते आगळ थइ पराक्रम करे छे अने भयथी पाछुं मुख फेरवता नथी ते उत्तम लोकने पाप्त थाय छे. लीलां चर्मथी महेलां खर्झ तथा परिच नामनां अस्रो समान जुजाओथी युद्धयज्ञनी वेदी रचनार अने सहायकनी इच्छा निह राखतां सेना वन्ने स्थित थइ युद्ध करनार इन्द्र लोकने पापे छे. युष्टमां जे लडवैयाओना रुधिररुपी जलने वहन करनारी भेरीरुप दादुर अने काचवाथी संयुक्त, हाडरुपी कंकरवाळी, उल्लंघन न करी शकाय तेवी, मांसरुपी किच्चडथी भरेली, खर्ब तथा ढालरुपी नौकावाळी, भयानक, कपाएळां मस्तकरुपी शेवाळवाळी, मरेळा घोडा तथा बुटेळ रथ पताका अने ध्वजारुपी दृक्ष तथा वेतस्वाळी, मृतक हाथीरुपी मगरमच्छवाळी, परलोक तरफ गमन करनारी, गिद्धआदि पक्षीओरुपी तरंगवाळी अने भयभीतने मूछा प्रदान करनारी नदी चाले छे ते युद्धयज्ञतुं अवभूथ स्नान छे. जे क्षत्री युद्धयज्ञनी वेदी शत्रुओना शिरनी अयवा हायी घोडानी कन्यरानी वनावे छे ते इन्द्रलोकने पाप्त याय छे. जेने शत्रुओतुं सेनामुख स्त्रीओथी भरेलों महेल छे एवी क्षात्रसेना युद्धयज्ञतुं हविधीन अर्थात् साकल्यपात्र कहेवाय छे. युद्धकर्ता सदस्योनी दक्षिणा छे, उत्तर दिशा तेनो आग्निध्र छे, ज्यारे शत्रुसेनामां सर्व लोक स्थित थाय त्यारे व्युहमां वन्ने तरफणी आकाश राखवामां आवे छे तेज ए युद्ध यज्ञनी वेदी अने तेमां त्रण वेद त्रण अग्निरुप छे. भय-जीत तथा मुख मरडी युष्ट करनार जे क्षत्री शत्रुने हाथे मार्यो जाय ते प्रचिष्टा रहित वनी निः-संदेह नर्कमां निवास करे छे. जेना रुधिरनी अधिकताथी युद्ध यज्ञनी वेदी हूवी जाय तथा कपा-एलां शिर, हाड अने मांसथी भराइ जाय ते परम गतिने पामे छे. जे लडवैयो सेनापतिने मारी तेना वाहन उपर सवार थाय तेन विष्णु समान पूज्य गणवो. जे योद्धो सेनापतिने अथवा तेना पुत्रने अथवा तेवाज कोइ शत्रु सैन्यना मुख्य पुरुषने जीवते। पक्तडी लावे छे ते अवश्य इन्द्रलोकने प्राप्त थाय छे. युद्धमां मरवावाळा शूरवीरे कोइ पण अवस्थामां शोच न करवो. शोच रहित शूर-वीर सर्व लोकमां प्रतिष्ठा मेळवे छे, तेवा ज्ञूरवीरोने वरवा माटे हजारों अप्तराओ अधीरी वनी दोड-वा लागे छे, माटे एज तपनुं पुण्य अने एज सनातन धर्म छे एम समजनुं, जे नीति अनुसार युद्ध करे तेणे दृद्ध, वालक, स्त्री, मुख फेरवनार, मुखगां तृण राखनार अने " हुं तमारो हुं " ए वचन कहेनारने कदि पण मारवो नहि. क्षत्रीए ज्ञात्रुओने जीतवा परंतु प्रतिष्ठा रहित थड् नर्कमां निवास

न करवी. शूरवीरे स्वर्गीय सुख भोगववा माटे देहना स्नेहने तनी देवो. ज्ञानी पुरुषे खुद्धमां सदा आगळ रहेबुं. हाथीओना मध्यमां रथोने, रथोना मध्यमां घोडेस्वारोने अने घोडेस्वारोना मध्यमां कचधारी तथा पेदलोने राखवा, ए रीते ब्यूह रचनारो राजा शत्रुओने जीती शक्ते छे. जे योद्धाओ युद्धमां क्रोधयुक्त थइ शुभ कर्म करवानी चाहना राखे छे तेओ जेम सागरने मगर दोलायमान करे छे तेम शत्रुसैन्यने क्षोभ पमाडे छे. लडवेयाओए परस्पर व्याक्तळ थएलाओने मसन्न करवा, जीतेली पृथ्वीनुं रक्षण करवुं, परस्त घएलानी पाउळ धवुं निह, शूरवीरे भागेला उपर घा करवो न जोइए, शूरवीर त्रण लोकमां प्रतिष्टापात्र थाय छे.

राजाए ज्ञाता वनी कुटिकोनो संग न करवो, आवेला माणसने ओळखवों शत्रु लोको भेद कराववा राजा पासे घुमे छे माटे राजाए तुरतज तेने शिक्षा आपवी. हाथी, वळद, अजग-रोना चामडां, सिछी वाण, तोमर, कंटक, सर्वे धातु, कच, घोळां नथा पीळां रंगनां वस्न, पीळां तथा छाळ वखतर, पताका, ध्वना, विविध, रंगोधी रंगेळ वे धारवाळां खङ्गो, तीक्ष्ण फरशी अने हाल आदि युद्धनो सामान सज्ज राखवो, ते उपरांत युद्धने वखते काम लागे तेवां शस्त्र तथा योद्धाअंने मुकरर करवा. चैत्र के मागशर महिनामां सेनानी चढाइ उत्तम गणाय छे, कारण के ते वरवते अधिक गरमी के अधिक शरदी होती नधी. पृथ्वी पाकेल धान्यवाली तेमन जलथी परिपूर्ण होय छे. ए समये अथवा शत्रु व्यसनमां चळुंव्या होय ते वखते चढाइ करवी. जे मार्ग यु-द्धिमान अने चनवासी दूतो द्वारा उत्तम रीतें जाणेला होय तेमन आसपास जळ अने गृणथी मंयुक्त होय ते मार्ग सेनाए गमन करवा लायक गणाय छे. विजयनी इन्छाबाळा राजाए बनवामी छोबोनी सेनामां भरती करवी, कुलीन अने सामध्येवाळा पॅडलोनी सेना पण व गरबी. सेनाने रहेवानुं रधान जळयुक्त, अगम्प अने एकन मार्गवाद्धं श्रेष्ट गणाय छे. एथी मामा आवेळा शतु-ओने रोंकी शकाय छे. सेनानो निवास मेदान करतां वनमां अविक लाभकारक घट पडे छे. ज्यां युद्धकुशळ घणा गुणी पुरुषों होय त्यां सेनानो निवास सनीपेन राखवो. सेनाए निवास स्थानथी सन्मुख इतर्त्रुं, पायदळने गुप्त राखवा अने समीपे आवेला शत्रु उपर वा करवो, रक्षा स्थान आ-पत्तिने माटे छे, सप्तापिंओ तरफ पीट राखी पर्वत समान निश्चल थह युद्ध कर्न्बुं, ए रीते युद्ध क-रनार कटिनताथी पण विजय मेळवी शके छे, जे तरफ हवा अने सूर्य होय ने दिशामांज निजय रहेलो तोष छे. युद्ध कुछळ मनुष्ये कीचड. जळ, हाळ अने पुत्र आदियी गहित पृथ्वी ये,टेम्बा-रना युद्धमां: कीचड अने ग्वाडा म्वदडा रहित पृथ्वी स्थम्थना गुद्धनां; न्हाना वृत अने जळ-

वाळी पृथ्वी हाथीनी सत्रारीना चुद्धमां अने घणा गढ, जंगल, वांस तथा नेतर्यी परिपूर्ण पहाड-बाळी सजळ पृथ्वी पायरळोना युद्धमां शेष्ठ समजवी. घगा पायदळवाळी सेना द्रह गणाय छे, घगा रथ अने अध्वयाळी सेना वर्षा रहित सूका दिवमोमां उत्तम लेखाय छे अने घणा पायदळ तथा हाथीताळी सेना वर्षा ऋतुमां मशंसापात्र निवडे वधी वावतनो उत्तम रीते विचार करनार तथा देशकाळने समजनार राजा उत्तम पकारनी चढाइथी विजा मेळवे छे. स्तेला, प्यासा, ज्ञान्त चित्तवाळा अने युद्धथी जदा पडेलाओने मारवा निहः शह रहित, रुइन करता, भागेला अने भोजन करता छ-डवैयाओ उपर पण महार न करवो; व्याकुळ, अचेत, वायल, अग्रान्त, कर्मनो मारंभ करनार गुप्त सुरंग अथवा अन्य युक्तिओथी तपेला, घास आदि लेवाने माटे घुमता, डेराओना रक्षक, पहेरागीरो अने निरंतर मकान उपा रहेनारा माणसोने मारवा नहि, जे लडवैयो जबूना सैन्यने परास्त करी पोतानी सेनाने नियत करे ते वमणा पगारने लायक छे. दश दश योद्धाओमां एक एक उपरी राखवो, सो सो लडवैयाओ उपा एक अधिपति अने महान पराक्रमी होय तेने हजार योद्धानो नियन्ता बनावत्रो. सर्वे अधिकारीओए एकटा थइ राजाने कहेर्चु जोडए के "अमे लोको प्रतिज्ञा पूर्वेक शपथ छइए छीए के विजयने माटे परस्पर जुदा पड़ी युद्धनो त्याग नहीं करीए." जे भयभीत होय तेने रस्तामांथीज रजा आपी देवी. जे माणस पोताना उपर नीमाएला अधिका-रीने मारी नांखे तेणे युद्धमां भागेला पोताना माणसोने कदिपण मारवा नहि, कारणके युद्धमां पोतानी रक्षाने चाहतो ते माणस पोताना पक्षनेज हणे छे. भागवामां धननो अने मरण ए वन्नेनी साथे अपकीर्ति मळे छे. भागनारने दुःखदायी अने अघटित वचनो सांभळवां पडे छे. शत्रुओमां विषरीत दशावाळो, होट उपर दांत राखनारो अने हथि-आर छोडी देनारो जे माणस शक्षोथी घेराएलो होय तेने निरंतर धन हानि अने मृत्यु थाय छे. युद्धमां मुख फेरवनार नीच मनुष्यनो जन्म निर्धिक गणाय छे, ते आ लोक अने परलो-क वनेथी भ्रष्ट थाय छे. प्रसन्न वित्तवाळो शत्रु भागनार्नी सन्मुख दोडे छे, तथा विजयी मनुष्य नमस्कार अने प्रशंसायी चित्तमां प्रसन्न थइ शत्रुनी पाछळ थाय छे. युद्धमां वर्तमान शत्रु जेनी वदवो करे छे ते दुःख मरवा करतां पण अिक असहा छे. विजय सर्व धर्म अने सुखतुं मूळ गणा-छे. मृत्युनी सन्मुख श्रूरवीर पुरुषोज जाय छे. युद्धमां जीवननी आशा छोडी स्वर्गने चाहनारा विजयी अथवा मृतक मनुष्यो सिद्ध गतिने पामे छे. भय वगरना वीर पुरुषो शत्रुनी सेना वच्चे

स्थिर रहे छे अने भयानक शब्दो करता पराक्रमी शत्रुओने पीडे छे. सेनानी आगळ चालनारा मनुष्ये सिंहनाद तथा कलकलाकचक, गोविपाण, भेरी, मृदंग, पणव अने आनक आदि वाद्यो वगाडवां.

गंधार, सिन्य अने सौवीर देशना लोको तीक्ष्ण भालांथी युद्ध करनारा, निर्भय अने महा पराक्रमी होय छे. एवा शूरवीरोनी सेना विजय मेळववा समर्थ थइ शके छे, त्यांना क्षत्रीओ शख्र-विद्यामां निषुण अने पराक्रमी होय छे. पूर्व देशना लोको हाथीओना युद्धमां प्रवीण अने मायाथी लंडनारा होय छे. यदन, काबोज अने मधुरा देशना लोको चाहुयुद्धमां महा पवल होय छे अने दाक्षिणात्य लोको तरवार चलाववामां कुशळ गणाय छे. जेओनां वचन अने चाल सिंह समान तथा नेत्र क्वतर अने सर्प समान होय तेवा शुरवीर शतुओतुं मथन करी शके छे. मृग समान स्वर-वाळा, हाथी समान नेत्रवाळा, निरभिमानी, प्रमादी, मुख उपर क्रोध राखनार, अल्प बुद्धिवाळा किंकिणी अने मेघ समान नाद्वाळा उंट समान वांकी डोक, नासिका अने जिहाबाळा, घणे दूर मुधी पाछळ थनारा, विलाडा समान कुवडा देहवाळा, मृतक्कने खानारा, सूक्ष्म केश अने त्वचा-वाळा, जतावळे गति करनारा अने चपलतायुक्त होय तेवा लोको कठिनतायी अर्थात् महा महेनते जीती शकाय छे. केटलाएक नीची आंखवाळा, कोमळ प्रकृतिवाळा, घोडा समान गति करनारा अने शब्दवाळा होय छे तेवा माणसो विजयी निवहे छे. जे मनुष्यो अत्यंत मजबूत शरीरवाळा, उन्नत काधवाळा, पहोळी छातीवाळा अने स्थिर स्वभावना होय छे तेओ वाय वागनांन क्रोधयुक्त बनी जाय छे अने प्रसन्न मनधी युद्ध करे छे. जे मनुष्यो गंभीर, नोळीआ समान वहार निकळतां पीत नेत्रवाळां, भ्रह्यदीयुक्त, देहनी प्रीति विनाना, शूरवीर, उन्नत ललाटवाळा, मांम रहित दाही-आंगळीओ वज्र चक्रनं तथा उपर दुवेळ अने हाडना माळारुप होप छे तेओ युद्ध ग्ररु थतां तीवनाथी करें छे; तेमज हाथी समान मदोन्मत्त पुरुषो वटिननाथी कवने थाय छे. घउंटो देदीप्त अथवा शान्त होय, जेनां गाछ, डन्नन होय, गईन मोटी होय, रप होय, बन्धरा विकट स्पृत होय तेमन जेओ डन्नत अने सुंद्र सुग्रीवनामनो अभ्व नया गम्डनी पेटे ळता होच, बक्र शिरवाळा, रूपभ समान मुख अने दांनवाळा. उप्र स्वरवाळा, जो रयुक्त, युद्धमां नाद करनारा, अधर्मी, क्रूर अने भवंकर होय ने पुरुषो देहनी शीनि विनाना होय छे, माटे ने त्रोने

सेनाना अग्र भागमां स्थापवा तेवा लोको ज्यारे पोतानी इन्छा विरुद्ध कांइ पण जुए छे त्यारे शत्रुओंने मारे छे. ए अधर्मी अने दुराचारी पुरुषो मात्र मीठां वचनोथीज वश थाय छे. तेओ वखते राजा उपर पण एवीज रीते कोधायमान थाय छे. जे सैन्यमां योद्धाओ अने वाहनो अत्यंत साह-सिक होय ते निश्चे विजय माप्त करी हाके छे. जेना पाछळना भागमां वायु गति करतो होय तेपज इन्द्रधतुप, सूर्यनां किरणे। तथा वादळां पण पीठ तरफ होय अने गुगाल, काग तथा गिद्ध ए सर्व अनुकूल यह जे सेनानुं पूजन करे ते उत्तम प्रकारनी मिद्धि मेळवे छे. ज्यारे उपरना भागमां प्रकाशमान ज्वाला तथा दक्षिणावर्त शिखाने धारण करनार अग्नि आहुतिओना पवित्र मुगन्धयुक्त थाय त्यारे ते थनार विजयने सूचवे छे. ज्यां गंभीर अने महान शब्दवाळां वाद्यो वांगे तेमज युद्धाभिलाषी जनो अनुकूल होय त्यां पण विजय अशे एम समजवं मांगलिक पशुओ यात्रानी इच्छावाळा युद्धाभिलापी जनोने चालती वखते पाछळ अथवा डावी वाजुथी जमणी वाजु तरफ जतां नजरे पडे तो तेओनी अवज्य सिद्धि थाय छे. उक्त पशुओ जो सामे आवतां होय तो युद्धनो निषेध समजवो, ज्यारे हंस, कौंच, शतपत्र अने चाव नामनां पक्षी मांगलिक शब्द करे त्यारे प्रसन्न अने पराक्रमी योष्टाओनो विजय थशे एम मानवुं. जे सैन्यना योद्धाओनां अस्त्रास यन्त्र, इच, ध्वजा अने मुख एवां प्रकाशित तथा प्रफुछित होय के जेने सामो माणस मुक्तेली-थी जोइ शके तेओ पण अवस्य शत्रुओने परास्त करे छे. जे योद्धाओ हन्द्रोनी सेवा करनारा, निर्भिमानी, परस्पर मित्रभावने धारण करनारा, अन्तर वाहिरधी अवयतावाळा होय ते पण विजय मेळवे छे. ज्यां मनने रुचे तेवा शब्द, स्पर्श अने गन्ध विद्यमान होय तेमज योद्धाओनां धैर्य वर्तमान होय त्यां विजयमुख समजवुं. युद्धमां प्रवेश करनार लडवैयाने डावी तरफनो काक श्रेयस्कर थाय छे, दक्षिणनो काक फलदायी गणाय छे, पाछळनो काक मनोरथने सिद्ध करे छे, अने आगळ थनारो काक गुद्धनो निपंध करे छे एम समजबुं.

चतुरंगिणी सेनाने पारितोषिक आदिथी पसन्न करी प्रथमतो साम नामनी नीतिथी काम करतुं. त्यारवाद युष्टानो उद्योग करवो कारण के युष्ट छे ए साधारण विजय छे. युष्टामां विज-यनो सिद्धान्त इश्वर शिवाय कोइ जाणी शकतुं नथी. जलनो महावेग अने भयभीत वेनला पृग समूहनी माफक पराजय पामेली म्होटी सेना महा मुश्केलीथी रोकी शकाय छे. केटलाएक परा- ऋमी ऋ ऋ नामना मृग समूहनी माफक महान् सेनानो पराजय सांभळी बुष्टिमान लडवैयाओ पण जुदा थइ जाय छे. परस्वर ऐक्यतावाळा, प्रसन्न वित्तवाळा, प्राणनी परवा निर्दे राखनारा

अने युद्धमां दृढ संकल्पवाळा पचाश शुरवीरो पण शत्रुसेनाने संहारे छे. आ पृथ्वीमां पूजाएला कुलीन, हिम्मती अने अक्यता युक्त अहार योद्धाओं पण उत्तम प्रकारे शत्रुओंने जीती शके छे. शत्रु समर्थ होय तो तेनी साथे कोई पण अवस्थामां युद्धनो स्वीकार न करवो जोइए, जे पुरुप साम, दाम ने भेदने अनुसरे छे, तेनुं युद्ध सर्वोत्तम गणाय छे. सेनाने जोतांज भयभीत मनुष्योने महादुःख उप्तत्र थाय छे. युद्धने समीपमां आवेल जाणी जे पुरुषो सन्मुख जाय छे ते योद्धाओनां विजय करनारां अंगो फरके छे ते समये स्थावर जंगम जीवो समेत समग्र देश पीडायमान वने छे अने अस्त्रानी उप्णताथी मनुष्योना देइनी मज्जा पीडा पामे छे. शत्रुओ पासे वारं-वार युद्ध संयुक्त सामना खबर पहींचाडवा जोइए. शत्रुओथी अत्यंत पीडाचमान थएला सर्व लोको सन्धिनी इच्छा राखे छे. शतुओना मित्र आगळ भेदने अर्थे दुतोने मोकलवा. जे राजा पोताथी समर्थ होय तेनी साथे तो सन्धि करवो एज अत्युत्तम छे. खरेखर सत्पु-रुपोमां क्षमा अने धर्म होय छे, असाधुमां ए वन्नेनो असंभव छे. राजाए धर्म अने अर्धेयेनां प्रयोजन समजवां जोइए. विजय मेळवी धैर्यने धारण करनारा राजानी कीर्त्ति अत्यन्त दृद्धि पामे छे. उग्र स्वभाववाळो राजा सर्वनो शत्रु धाय छे, अने कोमळ प्रकृतिना रा-जातुं वधा अपयान करे छे एटटा माटे राजाए उग्रता अने मृद्गता ए उभयने उपयोगमां हेवां. दरेक अवस्थामां मीढुं बोलनार, धर्मज अने निर्भय राजा अजावर्गमां मीतिपात्र थाय छे, तमाम लोको तेनो विश्वास करे छे, लांबो वखत पृथ्वीने भोगववानी इच्छावाळा राजाए कपट रहित वनी प्राणी मात्रने विश्वास आपी सर्वनी रही रीते रक्षा करवी. शत्रुने पण युद्धर्थी स्वाधीन न करवा जोइए, कारण के ते काम तो क्रोधी, अधीर अने अज्ञानीओ हुं छे. शबुने साववान करवो ए अयोग्य गणाय छे. क्रोध, भय अने प्रसन्नताने हृदयमां छुपावी विश्वास रहित छनां विश्वासुनी माफक शत्रुतुं सेवन करवुं. निरंतर प्यारां वचनो कहेवां, कोइ अविय वान न करवी, निर्यक शत्रुतायी अलग रहेवुं अने अविय वचनोनो एवी रीने त्याग करवो के जेम पाराबि छोको पर्साओ जेवी बोर्टी वोर्टी तेओने वश करे छे, ए रीते राजाए झडुओने स्वाबीन करी मारवा, कारणके शत्रुओने परास्त वर्रा सुखर्धा शयन यह शकतुं नथी। दृष्टात्मा शत्रुओ निरंतर शंकर नामना अग्निनी मापान जागृत रहे छे. अल्प विजयने माटे युद्ध न करवुं जोडए. मनोर्यनी मिद्धि डन्छनारा राजाए विश्वास आपी शबुने स्वाधीन करवा अने समय प्राप्त थनां तेनो नाश करवो. आदि, मध्य अने अन्तने जाणनार राजाए शत्रुताने गुन्न गग्वनी. पोताना सन्यनी

~~<del>L</del>Q.~~

संख्या जाणी शत्रु सैन्यमां भेद कराववी. ए रीते भेद, दान अने विष आदि औषिविओथी प्रयोज्जनी सिद्धि करवी. शत्रुओथी सन्धि करवानी इच्छा नृ होय तो घणा वस्त सुधी मौन रही मोका उपर तेओने मारवा. सत्पुरुषोए कहेळां कर्मनो अंगीकार करी पराक्रमी थवं, करेळी मित्रता अन्त सूधी निभाववी; काम, क्रोध अने अहंकारनो त्याग करवो, वारंवार वैरीओना दोषणी वाकेफ थता रहेवं. दंडमां मृदुता, सुस्ती, भूळ अने उत्तम प्रकारे नियत करेळी माया मर्ख तथा अज्ञानीओने पीडा आपे छे, माटे ए चारेने दूर करी निष्कपट वनेळी नरेन्द्र विचार कर्या विना शत्रुओने संहारवा समर्थ थइ शके छे. जे शत्रु दूर होय तेना उपर पुरोहितद्वारा ब्रह्म दंडनो प्रयोग कराववी अने सन्मुख आवे तेना उपर चतुरंगिणीसेना मोकळवी. राजाए वस्त्रतो वस्त्रत ते ते शत्रुओं उपर सामआदि युक्तिओं अजमाववी. प्रथम भेद करी फरी सामने उपयोगमां छेवो, वळवान शत्रुनी आज्ञा स्वीकारी छेवी अने पोते सावधान कर्ममां प्रवत्त थड असावधान वनेळा ते शत्रुने मारी नांखवी. प्रणाम, दान तथा मानपूर्वक पिष्ट वचनोथी वार्ताळाप करी शित्रुने सेवन कर्युं. तेना हृदयमां कोइ पण वस्त्रते शंका उसच थृत्रा देवी नहि, राजाए शंकावाळा शत्रुनां स्थानोने निरंतर तजी देवां अथीत् ते स्थळनो विश्वास न करवां, कारणके एथी विकट कर्म एके नथी. एकी वस्त्रते एक करतां वधारे शत्रुओ साथे युद्ध न करवुं, परंतु तेवा समयमां भेद करावी शत्रुओंने परस्पर छडावी मारवा अने वाकीनाने युक्तिथी आधीन करवा.

लोभ अने क्रोध ए बंने समूह, गृहस्य अने राजाओमां शत्रुता वधारनारा छे. राजा एकलो लोभ करे छे, त्यारे समूह तेना उपर क्रोधायमान थाय छे जेथी ते वने भ्रष्टताथी नष्ट- ताने प्राप्त थाय छे. आजीविका पूरी निह मळवाथी राजा उपर गुस्ते यह शत्रुनी साथे भळी जाय छे जेथी शत्रुओ तेने सुगमताथी परास्त करी शके छे, माटे समूहना लोकोए तेम निह करतां अ-क्यताथी उद्योग करवो, कारण के एकत्र थएला समूहना पराक्रम अने उद्योगथी सर्व मनोरथ सिद्ध थाय छे. सर्व साथे मळी आजीविका माप्त करनारनी संगे दूर देशनां मतुष्यो मित्रता करे छे जानी पुरुषे परस्पर पीति राखनारनी मशंसा करे छे अने व्यवहार आदिमां एकमतवाळो समूह आनन्द पूर्वक दृद्धि पामे छे. शास्त्रने अनुसरी धर्मसंयुक्त व्यवहारोने नियत करनार, पुत्र अने भ्राताओनं शासन तथा शिक्षापूर्वक पोषण करनार तेमज दृत अने सलाहना विषयनो विचार करी खजानानी दृद्धिमां प्रवृत्त थएलो समूह चारे तरफथी अभ्युद्दयने अनुभवे छे. महान उत्साही अने स्वकर्मिनष्ट समूहने बुद्धिमान खोको वखाणे छे. जो ए समूहमां क्रोध, विरोध, भय, दंड,

पीडा के घात आदि पोतानुं पत्रळ जणाते तो तुरतज ते समूहने अतुओ स्त्राधीन करी शक्ते छे. परस्पर विरोध करी केवळ पोतानाज सामर्थ्यची कर्म करनार समूहनो धन आदि अर्थ नष्ट थाय छे, अने ते अनर्थनुं मृळ गणाय छे. कुळमां उत्पन्न धनार उपद्रवने कुळना वृद्ध जनो शान्त न करे तो आखो वंश विनाश पामे छे. माटे पंडित छोकोण, अनर्थ करनार समूहने तुरत टाको आपी उचित मार्गने अनुसरवा आजा आपत्री जोइए. समूहमां परस्पर मतभेद थाय एन विरोधनुं कारण समज्जुं. ए विरोध रुपी दोप अति हानिक्ती छे जेम वने तेम समूहनी रक्षा कर्वी ए राजाओंनो मुख्य धर्म छे. राजाए बुद्धियी काम कर्वुं ए उत्तम, वीरताथी काम कर्वुं ए मध्यम अने समूहनी सहायताथी कार्यसिद्धि कर्वी ए निकृष्ट गणाय छे. बुद्धिमान अने जितेन्द्रिय राजा पोताना राज्यने दृढ करी अके छे. ज्यारे वळवान राजाना सैन्यनो वेग असब होय त्यारे विद्दान नरपतिए नेतरनी माफक नमी जबुंयोग्य छे; कारण के अकड रहेवाथी नदी किनारे रहेन्छां हक्षोनी माफक सैन्यना वेगमां तणाइ अंते विनाश माप्त थाय छे.

बुद्धिमान राजाए सत्यता, पित्रता, स्वरुप, शास्त्रता, चलन, रीति, क्रिलीनता, शान्त-पण्णं, दया, पराक्रम, प्रभाव, प्रीति अने क्षमा आदि तमाम गुणोनो तपास करी नोकरने योग्य अ-धिकार आपवो अने तेनी ज्ञम प्रकारे रक्षा करवी. परीक्षा कर्या शिवाय मंत्रीने पण अथिकार-पर योजवो निह, निरपराधी कुळवान नोकरने दंडनार राजा पापी गणाय छे. चगलग अथवा गु-शामतयी दरज्ञे चढेला साधारण मनुष्यो पोतानुं मनधार्यु न थतां तुरतज शत्रुताने धाग्ण करे छे. माटे राजाए जे सुशिक्षित, बुर्लान, बुद्धिशाळी, ज्ञान विज्ञानमां पूर्ण, सर्व शास्त्रोने जाणनार, क्षमावान, देशी, कृतज्ञ, वळवान, शान्त चित्त, नम्न, मुशील, निलंभी, मळना मासिकथी संतोप माननार, जीवोने प्रसन्न करनार, निरंतर पोताना काममां प्रवृत्त, शुभिचिन्तक, निरालस्य, सटा-चारी, देशना संघि विग्रह आदि विषयमां निषुण नेमज शहेरवामी अने देशवासीओनो पीति-पात्र होय तेने मंत्री वनाववो.

जे पुरुष शहुनी सेनाने जिल्लाभित्र करनार, न्यृहोर्ना मुख्यताने जाणनार, मन्यने प्रमन्त प्रमन्त प्रमान प्रदेश, देह अने अगोर्ना चेष्टाने समजनार, यात्रा कुझळ हाथीओंन जिल्ला आप-वामां सह, वेदने अनुसरी कर्म करनार, जिलेन्ट्रिय, पराक्रमी, योग्याये ग्य क्रमने ओळखनार, शुद्ध मनुष्योनी सोवल करनार, नीतिह अने प्रसन्न मुख तथा नेत्रवाळो होय तेन राजाए मेना-थिएतिनो अधिशार आपनो जोहए.

जे राजा ज्ञीघ्र कर्मी, सूक्ष्म आज्ञयने समजनार, शुद्ध, मृदुभाषी, पंडित, शूर, धनवान अने देश काळने जाणनार मंत्रीने नियत करी तेनी प्रतिष्ठा वधारे छे ते राजानुं राज्य चन्द्रना किरणो समान दृद्धि पामे छे. पंडित, पवित्र, द्याळु, सेवक धर्मने सारी रीते जाणनार, शास्त्रोतुं श्रवण करनार, उत्तर प्रत्युत्तर तथा खंडन पंडनमां कुज्ञळ, शास्त्रनुं स्मरण राखनार, धारण बु-द्धिवाळा, न्यायने अनुसरी वार्तालाप करनार, जितेन्द्रिय, पिंग वोलनार, शत्रुओ उपर पण क्षमार वान, श्राद्वाळ, उदार, पीडितने सुख आपनार अने स्वामीना हितमां प्रीतियुक्त अमात्य जेम लोकिनय थाय छे; तेम कार्यमां सावधान, अहंकार रित्त, सत्संगी, राज्योनां कामोने जोनार, मंत्रीओनां उत्तर कार्योथी पसन्न थइ इनाम देनार, सेवक लोकोना प्यार पात्र, मनुष्योने शिष्टा-चार शिखवनार, स्थिर चित्तवाळा, पसन्न मुखवाळा, निरंतर नोकरोने चाइनार, क्रोध रहित, महा साहसी, योग्य दंडने धारण करनार, दूत रुपी नेत्रवाळा, प्रजानां हत्तान्तने जाणनार, धर्म अर्थमां कुशळ अने सेंकडो सद्गुणोथी भरेल राजा पण मनुष्य मात्रने निय थड पडे छे. राजाए राज्यना पोषणमां सहायभूत उत्तम गुणोथी युक्त लडवैया तथा श्रेष्ट मनुष्योने एकटा करवा अने निरंतर तेओनी वृद्धि चाहवी, तेओनुं कदि पण अपमान करवुं नहि, जे राजाना लडवैया-ओ युद्धमां अहंकारी, कृतज्ञ, शास्त्रमां प्रवीण, धर्मज्ञ, निर्भय, हाथी अने रथनी सवारीमां कुशळ तेमज वाण अने अस्त्र विद्यामां पूर्ण होय छे ते राजानीज आ पृथ्वी छे. सर्वने प्रसन्न अने स्वा-धीन राखवामां प्रवृत्त, उद्योग आदिनो अभ्यास राखनार तथा नित्र मंडळथी विटायेल राजा राजा आखी पृथ्वीनो आज्ञानुवर्ती एक हजार घोडेस्वारवाळो सर्वेत्कृष्ट गणाय छे. विजय करी शके छे.

MANAMANA WASHINGTON WASHINGTON TO THE TONOR WASHINGTON TO THE WASHINGTON TH

राजाए सिंहने सिंहना स्थान उपर, व्याघ्रने व्याघ्रना स्थान उपर, हाथीने हाथीना स्थान उपर, अश्वने अश्वना स्थान उपर अने श्वानने श्वानना स्थान उपर नियत करवा. जो एमां वगर तपास्ये निपरीत अधिकार आपवामां आवे तो तुरतज प्रजा पोतानी अपसन्नता प्रदर्शित करे छे.

जेवी रीते मयूर चित्रविचित्र पांखोंने धारण करे छे तेवीज रीते राजाए पण अनेक प्रकारनां रूप धारण करवां जोइए. तीव्रता, कुटिलता, सत्यता अने सरलतानी साथे न्याय अने बुष्टिव-लमां प्रवत्त थनार राजा छुख भोगवी शके छे. जे प्रयोजनमां जे रुपथी मनोरथनी सिद्धि जणाय ते वर्ण अने रूप राजाए वताववुं. वहु रूप वतावनार राजाना सूक्ष्म अर्थ पण अवरोधने पामता नथी. शरद् ऋतुमां मौन रहेता मयूरनी माफक राजाए ग्रुप्त वार्तावुं रक्षण करवुं. वर्षाथी उत्पन्न

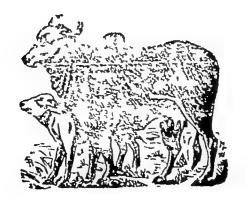
थनार पर्वतो परनां जळ झरणमां वर्तमान थड जेवां निर्मळ जणाय छे तेवीज रीते श्रीमान् राजाए वचन अने देहने शुद्ध राखवां जोडए. शरणे आवेला सत्पुरुषोतुं संरक्षण करवुं. दंडमां धर्मने ध्वजारुप बनावी अर्थने प्राप्त करवो. सावधानीथी लोकोनां आवक अने खर्च तपासी महान् दृक्षपाळां वनने निचोवबुं अयीत् धनरुषी रस मेळववी, पोताना समुदायमां शुद्ध मनयी वर्तन करवं. शत्रुना क्षेत्रोतुं अन्व आदिना पगलांथी निकंदन करवं, पोताना पक्षनी वरावर संभाल राखनी, जञ्जना मित्रोने चाहना वतावत्री, शिकार खेळवाने वहाने खूव भ्रमण करतां प्रतिपक्षीओने वननां पुष्पोनी पेठे प्रकंषित करवा, उन्नत अने वृद्धि पामता वेरिओनो तुरतमां विनाश करवो, अजाण्या स्थानमां प्रवेश करी गुप्त युद्ध करवुं, जेम वर्षाऋतुमां सायंकाले मयूर निर्जन स्थानमां गुप्त निवास करे छे तेम जनाना साथे महेलमां निवास करवो, परंतु कचने। त्याग करवो निह, पोते पोतानी रक्षा करवी, अव्हा चालनार, झेरीला अने क्रोधी मतुष्योने मारवा, शत्रु सैन्यना पक्षमा भळनारनो अंत आणशे अने द्रह मूळवाळा मंत्री तथा ऋर छोकोने राज्यमां नियत करी पोते मयूरनी माफक इच्छानुसार उत्तम कर्षा करवां. जेम टीडनो समूह बनोमां प्रवेश करी तमाम हक्षाने पर्ण रहित बनावी दे छे तेम शत्रुओनो संहार करवो; न्याय बुद्धि धारण करवी, पोतानी बुद्धियी चित्तने वश करवुं, वीजानी बुद्धियी निश्रयने द्रढ करवो, शत्रुने मीठां वचनोथी विश्वास आपवो अने पोतातुं वळ तपासवुं, तथा कार्याकार्यनो विचार करवो इन्यादि सद्गुणसंपन्न राजाने उपदेशकनी जरुर होती नधी.

जेम अमर क्रमपूर्विक रसनुं पान करे छे, ते रीते राजाए धननो संचय करवा, नियम्थी अधिक धन माप्त धाय ते धम कर्ममां खरची नाम्बनुं, शास्त्र अने बुद्धिमान राजाए यजानामांथी कोहते धन आपनुं नित. अल्प धननुं अने शहुना मागसोनुं अपमान करनुं निह, बुद्धियां आस्माने ओळखनो, मूर्ख छोकोनो विश्वास न करनो, ध्रेय राम्बनुं, चातुर्य बनावनुं, जितेन्द्रिय थनुं; बुद्धि, देह, पृथ्वी, पराक्रम अने देशकाळमा अताववान न ग्हेनुं, ए बनी वावन धननी बुद्धि कर्मार छे. धृतनुं सिचन करनाधी स्वल्म अग्नि पण अभिवृद्धि पाम छे अने एक बीजमांथी हजागे बीज एत्एन धाय छे. एटला माटे महान आवक्त अने स्वर्च जोड अल्प यननो अनादर करनो निह. दाळक, तरण अथवा बुद्ध शब्दु असावधान पुरुषने मारवा ममर्थ थड चक्ते छे. श्रेयने इन्छना राजाए शब्ने कहथी उसेहवो जोडए.

आ लोकमा लोभी पुरुष दोषधीन भरेला होय छ माट गजाए तेवा पुरुषोने अविकार-

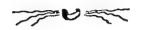
पर योजवा निह, प्रजाने दुःख आपनार युक्तिओनो त्याग करवो. तमाम मतनो निश्चय करी पुरुष जे जो शास्त्रो वांचे छे तेने तेवुं ज्ञान प्राप्त थाय छे, अज्ञानताथी आलस्य प्रगट थाय छे अने ज्ञानथी उद्योगनी सिद्धि थाय छे. ए युक्ति महान् अैश्वर्यने उत्पन्न करनारी छे, खनानो खाली यवाथी सेनानो अभाव थाय छे एटला माटे राजाए जेम झरणांथी जल एकढुं थाय छे, तेम धनने पेदा करवुं अने ते धनथी प्रजानुं पोषण करवुं.

ए रीते कुमार केसरदेवजी स्वस्थता पूर्वक गुरुना मुखर्या राजधर्मनुं संक्षेपे श्रवण करी अत्यंत प्रसन्न थया. पोतानो अन्तसमय भाप्त थतां मकवाणा व्यासर्जाए कुमार केसरदेवजी पराक्रमी छे के निह ते जाणवा तेओने वोलावी कहुं के सिन्य देशनी अंदर शमी नामना शहरमां मारो शत्रु हमीर सुमरो रहे छे तेनी साथे युद्ध करी कवने करेला तेना अश्वो मार्रा उत्तर क्रियामां ब्राह्मणोने दानमां आपवानी प्रतिज्ञा करो तो मारो जीव सद्गति पाम. तुरतन कुमार केसरदेवजीए ए विकय् प्रतिज्ञा लड्ड पोतानी पितृभक्ति प्रगट करी. वि. सं. ११०५ मां व्यास मकवाणानो स्वर्गवास थतां केसरदेवजी कीर्तिगढनी गादीए वेटा के तुरतज तेओए दश हजारना सन्य सहित हमीर सुमरा उपर चढाइ करी, युद्धमां सुमराओने हरावी छुंटी लीयेला तेना अश्वो कीर्तिगढमां लड्ड आवी पितानी उत्तरिक्रया वखते भाट चारणोने वक्षीस आपी दीया, त्यारवाद वे चार वखत युद्धमां हमीरने हरावी केसरदेवजीए पोतानुं पराक्रम वताव्युं हतुं, एथी हमीरना हटयमां हमेशां भय रह्या करतो. केसरदेवजी यथास्थित राजधर्मने धारण करी निर्विद्ये प्रजापालन करवा लाग्या.





## चतुर्दश तरंग.



" कुंडळिओ "

मंदिर नीतिना महद, केसरदेव कृपाळ, वेराआश करतां विद्युध, निवडया श्रेष्ट नृपाल, निवडया श्रेष्ट नृपाल, शेह सुमराने आपी; सिन्धमांहि शिवतणी, श्रेष्ट प्रतिमाओ स्थापी; सुणो अमर सुखधाम, सकझ नृपगणमां सुंदर. हर सरखा हरपाळ, अवतर्या एने मंदिर.

मकवाणा केसरदेवजीए गढ करेंटीना तरूनपर पाय धारण कर्या पर्छा बुद्धि अने पराक्रमथी पोतानां राज्यनी अपूर्व आवादी करी, उत्तम गुणवाळा पुरुपोने यथायोग्य अधिकार उपर योज्ण, महान बुद्धिणाळी अने बुद्धिन मंत्रीओनी सल्यहर्या राज्यनंत्र चलायी उत्तम प्रकारनी दंढ नीतिथी खजानानी अभिवृद्धि करी, प्रजाना मंरक्षण माटे पुष्कळ संन्यती जमावट बरी, समग्र देशनी रिधित जाणवा माटे सर्व स्थळे दृतोने नियन कर्या. पोने उत्तम गुरु पासेथी शिक्षण छीखुं एतुं तेमज तमाम शास्त्रोनो अभ्यास कर्यो हतो जेथी नेओने विद्याविनोद उपर विशेष रचि हती, तेओ पंडितोनुं सारु सन्मान करना. पोनाने भिवण्यमां शंकरना अंशावनार दरणाळ देवजी नामे बुन्मार धवाना हता; जेथी शिव उपर नेओनी अनन्य भिक्त धड अने एक उत्तम्मोत्तम शिवमन्दिर बनाववानी अभिरुचि थनां पोनाना विद्यागुरुने वोल्यानी विनित्त करी के देवमन्दिरो बेटला प्रकारनां होय छे अने ने क्रये स्थळे करवाथी श्रेयम्कार गणाय छे ने स्था करी समजावो. केमरदेवर्जाना आवा उत्तम विचार्या गुरुने दर्पने पार रयो निह, नेओए नुरुनं वर्ण के आगुष्मन् प्रमान जलाश्त्य नेयार करावर्जुं नेना नट उपर वर्णीचो वनावी ने स्थळे देवमंदिर करवृं.

मन्दिर करवाथी यश अने धर्मनी पाप्ति थाय छे. यज्ञ आदि करवुं ए इष्ट तथा वाव, क्रवा अने तळाव खोदाववां ए पूर्त कहेवाय छे, के जे उत्तम लोकोने आपनारां छे, देवालय वनावनार पुरु-पने इष्ट तथा पूर्त ए वन्नेनां फळ मळे छे. कोइए तैयार करावेल अथवा स्वभाविक जळ अने उपवनथी युक्त स्थान होय त्यां देव निवास करे छे. जेमां कमलम्पी छत्रथी सूर्यनां किरणो दूर करातां होय, इंस पक्षीओनी पांखोथी पेरित श्वेत कपल रुपी मार्गमां निर्मेळ जळ भरेलां होय, हंस, कारंडव, क्रोंच अने चक्रवाक आदि पश्चीओ कल्लोल करतां होय अने किनारे रहेलां हक्षोनी छायामां जळ जन्तुओ विश्रान्ति लेतां होय एवा सरोवरमां देवता सदा विहार करे छे. क्रीच-पक्षीरुपी कांची कलापवाळी, इंसोना मधुर स्वरुपी शब्दोवाळी, जळरुपी वस्नुवाळी, मतस्य-रुपी मेखलावाळी, किनारापर प्रफुद्धित थएलां द्वलारुपी कर्णाभरणवाळी, वे नदीओना संगमरुपी श्रोणिमंडळवाळी, तीरना उच्च प्रदेशरुपी स्तनवाळी अने इंसरुप हास्यवाळी निर्मळ नदी होय त्यां देवता रमण करे छे; तेपज वन प्रदेशमां, नदी, पर्वत अने झरणांनी समीपे तथा उपवनयुक्त नगरोमां पण देव विहार करे छे. देवमंदिरमां चोसट करवुं जोइए अने तेमां मध्यम द्वार समदिशामां राखवुं ए श्रेष्ट गणाय छे. देवमन्दि-रनो जेटलो विस्तार होय तेथी वमणी तेनी उंचाइ होवी जोइए अने ए उंचाइना त्रीजा भागनी कटि वनाववी, सीडी उपर ज्यांथी देवगृहनो प्रारंभ थाय छे तेने कटि कहे छे विस्तारनो अर्ध गर्भ कहेवाय छे, ए गर्भ सिवायना अर्ध विस्तारमां चारे तरफनी भीत वनाववामां आवे छे. गर्भना चोथा भाग जेटलो द्वारनो विस्तार राखवो जोइए, द्वारनी उंचाइ तेना विस्तारथी वमणी होवी जोइए, द्वारनी उंचाइथी चाथा भाग जेटली शाखा अने उंवराना चोकठ उपरना काप्टनी पहोळाइ राखवी जोइए. ए रीतनी ज्ञाखानी पहोळाइ वच्चे त्रण, चार, पांच, सात अथवा नव ज्ञाखा होय तो द्वार श्रेष्ठ कहेवाय छे. वत्रे शाखाओनी नीचेना चोथा भागमां देवताओना वे प्रतिहा-रोनी मूर्ति कोतराववी अने वाकीना त्रण भागमां दरेक स्थळ हंस आदि मांगलिक पक्षी, श्री दक्ष स्वित्तक, कलश, पिथुन, पत्रलता अने गण आदिथी सुशोभित करवां. अर्थात तेओनां चित्र कोत-राववां. द्वारनी उंचाइना प्रमाणमां तेनो अष्टमांश घटाडी जे शेष रहे ते पिंडिका अर्थात् देवताने स्यापन करवानी पीठ कहेवाच छे, ए पीठ सहित देवनितमानी उंचाइनुं ममाण थाय छे अर्थात् देव मन्दिरमां पीठ सहित तेटली उंची प्रतिमा स्थापत्री जोइए, पीठ सहित प्रतिमानी उंचाइना त्रण भाग करी वे भाग जेटली उंची प्रतिमा अने एक भाग जेटली उंची पिंडिका वनावत्री जोइए.

तमाम जातना देवमंदिरमां ए रीते करवुं जोइए. देवमंदिरना मेरु, मंदर, कैलास, विमानच्छन्द, नन्दन, समुद्रक, पद्म, गरुड, निन्दिवर्धन, कुंजर, गुहराज, दृष, हंस, सर्वतोभद्र, घट, सिंह, रुत्त, चनुष्कोण, पोडशाश्रय अने अष्टाश्रय ए रीते वीश नाम छे. तेमां ने पासाद पदकोण, वार खंडवाळो, अनेक प्रकारना कुहर अधीत अंदरना गवाक्षोथी युक्त, चारे दिशाओमां चार द्वारवाळो, वत्रीश हाथना विस्तारवाळो अने चोसट हाथ उंचों होय ते मेरु, पदकोण, त्रीश हाथ विस्तृत, दश खंडोथी युक्त अने शिखरवाळो होय ते मंद्र; जिखरवाळो अठयावीश हाथ विस्तृत, आठ खंडोथी यक्त अने पदकोण होय ते केलास: जाळी जरोखाधी युक्त, एकवीश हाथ विस्तीर्ण, आट खंड-वाळो अने पदकोण होय ते विमानच्छन्द; पदकोण छ खंडवाळो, वत्रीश हाथ विस्तीर्ण अने सोळ इंडांथी युक्त होय ते नन्दन, गोळ होय ते समुद्गक, कमळने आकारे आठ दल युक्त होय ते पद्म, ए वन्ने पासाद आठ हाय पहोळा, एक अंड युक्त अने वे खंडवाळा होय छे; गरुडने आकार पक्ष अने पुच्छ युक्त होय ते गरुड तथा पक्ष अने पुच्छ रहित गरुडने आकारे होय ते निन्दिवर्धन, ए वने प्रासादो चोवीश हाथ विस्तीणी, सात खंडवाळा खंटथी खुशोभित करवा जोइए. हाथीनी पीठ समान आकारवाळी, मूळथी चारे वाजु सोळ द्दाथ दिरतरण होय ते कुंजर; सोळ द्दाध विस्तीण गुहने आकारे होय ते गुहराज, ए वने पासा-दोनी वर्ल्या त्रण त्रण चन्द्रशाळाओधी युक्त होय छे; वार हाय विस्तीर्ण, चारे तरफयी वर्तुलाका-र, एक खंट अने एक झंगथी युक्त होंय ते बूप; इंस पर्शाने आकारे चांच, पक्ष, तथा पुच्छ युक्त बार हाथ एक बिम्तरीर्ण, एक भृमिका अने एक शृंग युक्त हो ग ते हंस; कलश समान आकाग्वाळो, आट हाथ विरतीर्ण, अने खंट अने एक अंड युक्त होय ने घट; चारे दिशाओमां चार द्वारोधी युक्त, यणा शिखरोधी सुशोभित, सुन्दर चन्द्रशाळाओथी भृषित, छन्त्रीग्न हाय विम्तीर्ण चतुरस्य अने पाच खंटथी युक्त तोय ते सर्वतोभद्रः मिहनी प्रतिमायी मुशोभिन, पार म्रूणा वाळो अने पाट हाथ विरतीर्ण होय ते सिंह मासाद कहेवाय छे. दार्वाना इच चतुष्कोण, पोटमाश्रय अने अष्टा-भ्यञोए चार प्रासादो पोनपोताना नाम समान आदारवाळा होय छे, ए चार अंतन मप छे अर्थात् नेनी अंदर अंधकार रहे छे, दाहिरयी प्रकाश आवी दक्ती नर्था, काग्ण के ए चारे मासादोमा चारे तरफ भींत दनावी पिंदम तरफ दाहेरतुं वारणुं मुक्तवामां आवे छे. अने ते भीती उपरना भागमां वधारी मामादर्घा मेळ्वी देवामां आवे छे जेथी ने मामादथी हुई। जणानी नथी, ए मासादोतुं मुख्य द्वार पूर्वमा राम्बईं, दाहिस्ता पिंदम द्वार्या प्रदेश वर्ग प्रामादना वाम भागयी

आवी मुख्य पूर्व द्वारे उभी देवनां दर्शन करवां. ए अंधकारवाळा प्रासादोमां मणिमय प्रतिमातुं स्थापन करवं जोइए, के जेनी कान्तिथी अन्दरना भागमां प्रकाश रहे. ए चारे पासादो एक खंड अने एक अंडयुक्त करवा जोइए; चतुरस्र पासादने पांच शिखरथी सुशोभित करवी तमाम मासादोमां एकसो आठ आंगळना दरेक खंड होवा जोइए, तेमज वाहेर निकळती कपोतपाछि पण बनाववी जोड्ए. आ रीते गुरुना मुख्थी भासादना लक्षण १ वण करी मकवाणा केसरदेव-जीए कैल्वस नामनुं उत्तम देवालय कीर्तिगढथी त्रण कोश छेट तैयार करान्युं. अने तेनी आजु-वाज्य केटलाएक देवालयो वंधाव्यां, मासादो तैयार थड रहा। पछी गुरुए केसर देवजीने कर्षुं के-तिन्दुकना काचां फळ, कैथनां काचां फळ, शाल्मिल दूधनां पुष्प, सरलकी दूधनां वीज, वंधन वृक्षनी छाल अने वच ए सर्वनो एक द्रोण परिमाण जलमां काथ करी ज्यारे अप्टमांश शेप रहे त्यारे नीचे उतारी तेमां श्रीवाम, रस, गुगळ, भिलामी, कुंदरु, राल, अलसी अने वळदुतुं छाण ए सर्वे द्रव्यो मेळवी घुंटवाथी वज्र लेप नामनो करक थाय छे, ए वज्रलेप देव प्राप्ताद. हर्म्य, वलमी, शिवलिंग देवपितमा, भींत अने कुवाओमां गरम करी लगाववाथी अर्थात तेनो लेप करवाथी करोड वर्ष पर्यन्त कायम रहे छे. लाख, कुन्दरु, गुगळ, गृहधूम, किंपत्थनां फळ, वळद्तुं छाण, नागवलानां फळ, तिन्दुकनां फळ, मेनफळ, मधूकना फळ, मजीठ, राळ, रस अने आमळां ए सर्व चीजने प्रथमनी माफक सिद्ध करेला द्रोण परिमाण जलमां मेळववाथी वीजो वजलेप सिद्ध थाय छे, एमां पण प्रथमना वर्ज्जलेप जेवोज गुण रहेलो छे. गाय, भेंम अने वक्तरांनां सीगडां, गर्दभ, महिप अने गाय ए त्रणेनां चर्म, निम्बफल, कपित्यफळ अने रस ए तमाम द्रव्यथी प्रथमनी माफक त्रीजो करक सिद्ध थाय छे, तेतुं नाम वज्रतर छे. आठ भाग सीसुं, वे नाग कांसु अने एक भाग पीतळ ए सर्वने एकढुं गळाववाथी वज्रसंघात नामे करक तैयार थाय छे. आ युक्ति सांभळी प्रसन्न थञेला केसरदेवजीए तमाम देवालयोमां वज्रलंग कराव्यो। त्यारवाद दरेक देवालयोगां प्रतिमाओं स्थापवा माटे प्रथम प्रतिमाओनां लक्षण सांभळवा गुरु आगळ उत्सकता बनावी. गुरुए कहाँ के-जाळीनी वच्चे सूर्यनो प्रकाश आवे छे तेमां जे सूक्ष्म-तररज देखाय छे ते परमाणु कहेवाय छे अने ए परमाणु तमाम प्रमाणोमां प्रथम पद धारण करे छे अथात सर्व प्रमाणीनो आरंभ परमाणुथी धाय छे. ए आठ परमाणुनुं रज, आठ रजनो वालाग्र, आउँ वाळाग्रनी लिक्षा, आठ लिक्षानी यूका, आठ यूकाना घव अने आठ यवनो एक अंगुल लेखाच छे. देव मंदिरना द्ववारनी उंचाइँनो अष्टमांश घटाडी जे शेप रहे तेनो त्रीजो भाग

MANAGEMENT PROPERTY OF THE PRO

पिंडिका अर्थात् मूर्तिनी पीठ वनाववानुं प्रमाण छे, मतलव अेटली उंची पिंडिका वनाववी अने देव प्रतिमा एथी वमणी उंची होवी जोइए. प्रतिमानी जेटली उंचाइ होय तेना वार भाग करी ए दरेकना फरी नव नव भाग करवाथी एक अंगुल थाय छे, कारणके सर्व प्रतिमा पोतपोताना अंगुल प्रमाणयी एक सो अ.ट आंगळनी होय छे. प्रतिमानुं मुख पोताना अंगुल प्रमाणयी वार आंगळ पहों छुं अने चाद आंगळ छां हु राख्वुं एम नग्नजिन् आचार्ये कहेल छे अने ते प्रमाण द्रविड देशतुं छे. प्रतिपानां नासिका, ललाट, चित्रुक, ग्रीवा अने कर्ण पोताना अंगुल प्रमाणधी चार चार आंगळ लांवा वनाववां जोइए. हजु वब्वे आंगळ लांबुं तेमज चिब्रुकनी चोडाइ पण वे आंगळ राखवी जोइए, छलाट आठ आगळ पहोळुं वनाववुं अने तेनी वने वाजु ववे आंगळना शंख राखवा, ते शंखनी छंबाइ चार चार आंगळ होवी जोडए, कान ववे आंगळ पहोळा वना-ववा. कर्णनो उपान्त अर्थात् अग्र भाग नेत्रांतथी लड् भ्रकुटियी समसूत्र करी साडाचार आंग-ळना वनाववो जोटए. कर्णस्रोत अधीत् कानतुं छिद्र अने मुकुमारक अधीत् कर्णस्रोत्नी समीपनो चन्नत भाग एक आगळ राखवी जोइए. नेत्र अने कर्णान्तनी अन्तर चार आंगळ राखवी जोइए, अबरोष्ट एक आंगळ अने उपग्नो ओष्ट अर्घ आंगळ राखवो, गोच्छानो विस्तार अर्घ आंगळ बरवो, मुख चार आंगळ छांबु अने दोढ आंगळ पहोटुं राखवुं जोडए अने नृसिंह आदिनुं फेला-एहुं मुख त्रण आंगळ पहोद्धं वनाववुं, नामिकाना वन्ने पुट बब्वे आंगळना करवा अने पुटोनाअग्रयी नासिका पण ववे आगळ राखवी, नामिकानी उंचाइ वे आंगळ गाव्यी, अने बन्ने नेत्रो वन्त्रे चार आगळनो अन्तर राख्यो, वे अंगुळनो नेत्रकोश वनाप्यो, वने नेत्र ववे अंगुलनां करवा, नेत्रना त्रीजा भाग समान नामा अर्थान नेत्रना मध्यनो कृष्ण भाग राखवे। अने ताराना पंचनाश तुरुष द्रक् अर्थात् नेत्रनी वनीनिका बनात्र्या तथा नेत्रनी परोळाइ एक आगळ राग्वरी। एक भ्रक्कटिना अन्तरी बीजी भ्रक्कटीना अन्त पर्यन्त दश आंगळ राखवा जोहए अक्टिनी परीटाइ अर्घ आगळ अने नेनो भन्य भाग वे आंगळ अने एक एक भ्रकृटीनी लंबार बार बार आंगळनी करबी जांडण. लटाट उपर बेडारेग्या भृबन्य तुल्य अर्थात् दश आगळ विर्तार्ण अने अर्थ अंगुल पहोळी राख्यी. नेत्रने छेटे एक आगळनो वस्वीरक वनाववी. मृतिंतु तिर वत्रीय आगळ लाबु अने चैंद आगळ परेछुं बनावतुं जोरण, बार जागळना शिरवाहुं चित्र सर्व जोह हाके छे. अने बीर आएउना ग्रिग्बाहुं चित्र पाठरी वरपा ररेगां माणमो जोर शक्तां नधी देशरेग्दा मन्ति मृप्दनी विम्तार मोछ

...... <del>- P. - .....</del>

गळनो करवो एम केटलाएकतुं कहेवुं छे. ग्रीवानो विस्तार दश आंगळ अने एकवीश आंगळनी करवी जोइए, कंटना अर्घ भागयी हृद्य पर्यन्त वार आंगळनी अंतर राखवी. हृदयथी नाभि पर्यन्त अने नाभिना मध्यथी लिंगना मध्य पर्यन्त वार वार आंगळनो अंतर राख-वों जोइए. उरु अने जंघा चोवीश चोवीश आंगळ लांवां करवां जोइए. जातु किपत्थ चार आगळ अने पग पण चार आंगळना करवा अर्थात टांकणानी नीचेंनो भाग चार आंगळनो राखवो. वने पग वार आंगळ लांवा अने छ आंगळ पहोळा करवा. पगना अंगृटा त्रण आंगळ पहोळा अने पांच आंगळ लांबा बनावश तथा प्रदेशिनी त्रण आंगळ लांबी राखबी वाकीनी त्रण आंगळीओ परेशिनी करतां उत्तरोत्तर अष्टमांश घटाडी क्रमथी वनाववी, अंगुष्टनी उंचाइ सवा आंगळ राखवी ए प्रमाणे वीजी आंगळीओनी पण उंचाइ जाणी लेवी. अंगुठाना नखनी लंबाइ पोणो आंगळ अने वाकीनी आंगळीओना नखोनी लंबाड अर्थ अर्थ आगळनी करबी अ-थवा क्रमथी कांइ कांइ एवी न्यूनता होवी जोइए के जेथी आंगळीओ अने नखो सुंदर जणाय. जंघाना अग्रभागनी पहोळाइ चौद आंगळ अने विस्तार पाच आंगळ राखवो तथा जंघाना मध्य भागनो विस्तार सात आंगळ अने पहोळाइ एकवीश आंगळ करवी जोइए. जातुना मध्यनो वि-स्तार आठ आंगळ अने पहोळाइ चोवीस आगळनी होय छे. ऊरुना मध्य भागनो विस्तार चौद आंगळ अने परिधि अठ्यावीरा आंगळने। करवी. कटिनो विस्तार अढार आंगळ अने घेर चमा-लीज्ञ आंगळनो राखवो. नाभिनो विस्तार अने वेथ एक एक आंगळना प्रमाणथी करवां. ना-भिने वचमां लइ मध्य भागनो घेर वेंतालीश आंगळ राखवो. वन्ने स्तन वचे सोळ आंगळतुं अ-न्तर राखी तेना उपर साडा छ छ आंगळने प्रमाणे कक्षा होय छे. ग्रीवाथी आरंभी अंसनी छं-वाइ आठ आंगळ राखवी जोइए, अने वार वार आंगळ छांवा वाहु अने मवाहु वनाववा. वाहु-नो विस्तार छ आंगळ अने पवाहुनो विस्तार चार आंगळ राखवो जोइए, खभाथी कोणी पर्यन्त वाहु अने कोणीथी नीचेनो भाग प्रवाहु कहेवाय छे. वाहुना मूळनो घेर सोळ आंगळ, अग्रहस्त अर्थात प्रकोष्ट्रनी समीपनो घेर वार आंगळ अने हथेळीनी पहोळाइ छ आंगळ तथा लंबाइ सात आंगळनी राखवी जोइए. अंगुप्टनी समीपे रहेली आंगळी प्रदेशिनी, तेना आगळनी मध्यमा, तेना आगळनी अनामिका अने तेना अंगुली कनिष्टिका आगळनी एक आंगळीमां त्रण त्रण पर्व होय छे. मध्यमां पांच आंगळ रवी, तेना वचलां पर्वनो अर्ध भाग घटाडवाथी पदेशिनीनी लंबाइ सिद्ध

अनामिका पण प्रदेशिनी वरावर राखवी, अमामिकातं एक पर्व घटाडी कनिष्टिकानी रुंबाइ बनावबी. अंगुटाना वे पर्व अने वाकीनी आगळीओना त्रण त्रण पर्व करवां जोईए, तमाम आंगळीओना नखनी छंबाइ ते ते आंगळीना पर्वना अर्थ प्रमाणयी करवी. प्रति-मानां भूपण, वेष, अलंकार अने जारीर पातपोताना देश रिवाज प्रमाण करवां. लक्षण युक्त प्रति-मामां देवतुं सानिध्य होय छे एटलान माटे मूर्ति वनावनारनी सर्व प्रकारे अभिदृद्धि थाय छे, दशरयना पुत्र श्री रामचन्द्रजीनी अने विरोचनना पुत्र बिलनी प्रतिमा एकसो वीश आंगळ लावी वनाववी. तपाप प्रतिपाओमां ने प्रतिपा एकसो आठ आंगळ लांवी होय ते उत्तम, छन्तु आंगळ लावी होय ते मध्यम अने चोराजी आंगळ लावी हाय ते निरुष्ट गणाय छे. प्रथम ने अंगोनुं प्रमाण क्तुं ते एकसो आट आगळ लांबी प्रतिमानुं सपजवुं. बीजी प्रतिमाओनुं अंग प्रमाण त्रिराशिथी सिद्ध थइ शके छे. विष्णु भगवाननी प्रतिपा अष्टग्रुन, चतुर्भुन अथवा द्विभुन वनाववी. ए प्रति-माना वक्षः रथलने श्रीवत्तनामक चिन्हथी अने कास्तुभ मणियी मुहोभित करवुं. तेनो रंग अ-ळसीना पुष्प समान बनावबो, पीळां बस्न पहेराबबां, प्रतिमातुं मुख प्रसन्न होबुं जोईए, तेने कुंडल अने किरीटधी अलंकृत करवुं. ए प्रतिमानां कंट, छाती, अंस अने भुजा पुष्ट बनाववां. अष्टभुज प्रतिमाना जमणा त्रण हाथमां खट्ग, गदा अने वाण धारण कराववां तेमन चोथा हाथने अभय मुद्राथी युक्त बनाववो. टावी वाजुना चारे हाथमां धनुप, ढाल, चक्र अने शंख धारण करावगां. चतुर्भुज मृतिंना जमणा एक हाथने ज्ञान्तिषद मुद्राधी गुज्ञाभित करतो अने बीजा हाथमां गदा आपवी तेपज हावा वे हाथमां शंख अने चक्र धारण कराववां. द्विसूत्र मृतिना जमणा हायने अभयमुद्रायुक्त बनाववो अने डावा ताथमां शंख धारण करावत्रो.

वलदेवजीनी, प्रतिमाना त्यमा तळ धारण कराववुं. नेत्र मद्यी वृणित वनावमां तथा प्रतिमानो वर्ण शंख, चन्द्रमा अथवा मृणाल समान धेन करवो.

वलदेव अने श्रीकृष्णनी प्रतिमा बच्चे एकानंशा देवीनी मृति बनावर्वा, ए देवीनो टागे हाथ कि एक राग्ववे। अने जमणा हाथमा कमळ बारण करावर्त्तुं, जो एकानंशानी मृति चतुर्भुत बनावर्वा होय तो वले वाम हस्तोमा पुस्तक तथा कमळ अने जमणा वले हाथमां वग्मुद्रा तथा गाळा धारण कगववा, ए देवीनी मृति अष्टभूज दनावर्वा होय तो हार्वा वानुना चारे हाथमां कम्पट्ट, धतुप, कमल तथा पुस्तक अने जमणा चारे हाथमां वान, दर्गन तथा अतम् गारण कराववा.

साम्बनी प्रतिमाने गदा अने 'प्रद्यम्ननी प्रतिमाने धनुप तथा वाण धारण कराववां, ए वन्ने मूर्ति द्विभुज अने सुरुपवाळी वनाववी. साम्ब अने प्रद्यम्ननी सीओनी प्रतिमा खङ्ग अने खेटक युक्त करवी.

कमलरुपी आसनपर वेडेली ब्रह्मानी प्रतिमा वनावर्वा, तेना चार मुख करवां अने एक हाथमां कमंडल धारण करावर्द्धं, मयूर्थी युक्त, ध्वजाने धारण करनार, शक्तिथी ग्रुशोभित हस्त-वाली कार्तिकेयनी प्रतिमा वालक रूप वनाववी.

इन्द्रना हाथी ऐरावतनी प्रतिमा शुक्कवर्ण अने चार दांतोथी युक्त करवी. इन्द्रनी प्रतिमाना हाथमां वज्र धारण कराववुं अने ललाटनी वन्चे आइं त्रीजुं नेत्र बनाववुं, कारणके ए उक्त प्रतिमानुं चिन्ह छे.

शंकरनी प्रतिमानुं मस्तक चन्द्रकलाथी चिन्हित करवुं, ध्वजामां हपनुं चिन्ह वनाववुं,लला-टमां उन्नुं तृतीय लोचन करवुं, एक हाथमां त्रिशूल अने वीजा हाथमां पिनाक नामनुं धनुष्य धारण कराववुं. अथवा शिवनी प्रतिमाना वामार्थ भागमां पार्वतीजीनो वामार्थ भाग वनाववो अर्थात् अर्धनारी श्वरनी प्रतिमा वनाववी.

बुद्ध भगवान्नी प्रतिमाना हाथ पग कमळनी रेखाओथी चिन्हित करवां. जगत्ना साक्षात् पिता समान पद्मासन उपर वेठेळी ते मूर्चि अत्यन्त प्रसन्न बनाववी अने तेना केश नीचे पडता राखवा, अईतदेवनी प्रतिमाना भुज जानुपर्यन्त लांचा करवा अने ते मूर्चि श्रीवत्स नामना चिन्हथी सुशोभित, शान्तस्वरूप, दिगम्बर, तरुण अने उत्तम रुपवाळी बनाववी.

सूर्यनी प्रतिमानां नासिका, छलाट, जंघा, उरु, कपोल अने उरःस्थल उन्नत बनाववां. उत्तर दिशामां रहेनार मनुष्योना वेष जेवो सूर्यनी प्रतिमानो वेष करवो, पगयी छाती पर्यन्त प्रतिमा वस्त्रथी ग्रप्त राखवी, बन्ने हाथमां नखो सहित वे कमंडल धारण कराववां, शिरपर मुक्तट पहेराववो, मुखने कुंडलोथी मंडित करवुं, गळामां लांवो हार पहेराववो, किट उपर कमरवंध वींटवो. मृणाल समान शुम्र मुखनो वर्ण बनाववो, आखी प्रतिमाने वस्त्रयी आच्छादित राखवी, मन्द हास्य युक्त प्रसन्न मुखवाळी अने रत्न समान देदीप्यमान कान्तिवाळी सूर्यनी प्रतिमा बनाविने, सूर्यनी प्रतिमा एक हाथ उंची होयतो शुभ करे छे, वे हाथ उंची होय तो धन आपे छे, त्रण हाथ उंची होय तो क्षेम करे छे अने चार हाथ उंची होय तो सुभिक्ष करे छे. अधिक

अंगवाळी प्रतिमा राजायी भय प्रगटावे छे. हीन अंगवाळी प्रतिमा वनावनार निरंतर रोगी रहे छे, कृश उदरवाळी प्रतिमा धुधायी भय उपजावे छे, कृश अंगवाळी प्रतिमा वनाववायी धननो नाश धाय छे, क्षतयुक्त प्रतिमा वनावनारनुं शक्षधी मृत्यु निपने छे, डावी तरफ झुकेळी प्रतिमा वनावनारनं नारनी पत्नी नाश पामे छे अने जमणी तरफ झुकेळी प्रतिमा वनावनारनुं आयुप क्षीण धाय छे, जो प्रतिमानी दृष्टि उन्नत वनावी होय तो कर्ता आंधळो धइ जाय छे अने नीची वनावी होय तो कर्ताने चिन्ता रह्या करे छे, तमाम प्रतिमाओ ए प्रमाणे शुभाशुभ फळ आपनारी होय छे.

लिइनी वृत्तरुप परिधिने छंबाइमां सूत्रधी मापी ते सूत्रना त्रण भाग करवा अने ए भाग सरखा छिंगना पण त्रण भाग करवा, त्यारवाद छिंगना नीचला हतीयांशने चतुरस्न, मध्यना तृतीयांशने अष्टास्त्र अने उपरना तृतीयांशने वर्तृल बनाववो, लिंगनो चतुरस्न भाग पृथ्वीमां नांखी मध्यनो अष्टास्त्र भाग पिंडिकाना मध्य भागमां राखवो अने वाक्तीनो वर्तृल त्रीजो भाग उपर राखवो, ए वर्तृल भागनी उंचाइ तृत्य भमाणधी लिंगनी चारे वाज्ञ पिंडिका बनाववी, जे शिवलिंग पात्र अने लाग्र होय ते देशनो नांश करे छे, वने तरफथी हीन होय ते नगरनो नांश करे छे अने ले लिंगना मस्तक उपर क्षत होय ते स्वामीनो क्षय करे छे.

इन्द्र तुल्य इन्द्राणी तथा ब्रह्मा तुल्य ब्रह्माणी इत्यादि मात्राण थाय छे. परंतु तेनां स्तन आदि अंग पण बनाववां के जेथी स्त्री रूपनी शोभा जणाय. मृगया रोलनार पिकरवाली अने अध्यर आरूढ थएली रेवन्तनी प्रतिमा बनाववीं महिपार चढेल अने हाथमां दंडयुक्त यमनी प्रतिमा करवी, इंसपर चढेल अने हाथमां पाशयुक्त वरणनी प्रतिमा बनाववी; वाम मागमां मुकुटयुक्त, महान उदरवाली अने मनुष्य उपर चढेली क्वेचानी प्रतिमा करवी, गणपितनी प्रतिमा तुं मुख हाथी सार्खं अने पेट ल.खं बनाववं, हाथमां कुटार धारण कराववो, गणपितनी मृति मृत्यावन्द तथा नीलडलक्दने यारण करनारी अने एक दंनवाली पण थट हाके छे.

प्रतिमाओ बनावनार कारीगरने प्रतिमा बनावना अर्थे क्षण्ट लेवा अनुकृळ दिवने अथपा ह्योतिषीए बतावेल दिवने ह्युभ सुदूर्त होय न्यारे मांगलिक हाङ्चन होट वन प्रवेश करावर्गे। स्मन्धान, मार्ग, देवालय, वल्मीक ह्यान, नपस्त्रीओना आश्रम, चैत्य अने नदीओनां संगम टन्यादि स्थां हन्यन घण्ला हस्त, घटजार्थी सींचाएला हस्त, जुवटा हुन, साथे उपकेलां उभय हुन, वल्लोधी पीटिन हस्त अर्थान् जेना हपर घणी लताओं लप्ही रही होय एवा हुन, जेना उपर वीजन

की पडी होय एवां द्रक्ष, पवनथी तूटी पडेलां द्रक्ष, पोतानी मेळे पडी गएलां द्रक्ष, हाथीओए तोडेलां द्रक्ष, ग्रुप्क वृक्ष, अधिथी दग्ध थएलां द्रक्ष अने महानिलय अर्थात् लेमां मधपुडा लागेला होय एवां वृक्षोनो त्याग करवो, कारणके ए काष्ट मितमा वनाववामां अग्रुभ गणाय छे. जेनां पर्ण, फूल अने फळ स्निग्ध होय तेज द्रक्ष ग्रुभ लेखाय छे. वनमां रहेलां एवां ग्रुभ वृक्षनी समीपे जइ विल्व अने पुष्पोथी तेतुं पूजन करवुं. मितमा वनावनार ब्राह्मणने माटे देवदार, चंदन, ग्रामी अने मध्क ए चार वृक्षना काष्ट ग्रुभ गगाय छे. अरिष्ठ (लीवडो), पीपर, खेर अने विल्व ए चार वृक्ष क्षत्रीओनी वृद्धि करनार छे. जीवक, खदिर, सिन्दुक अने स्यन्दन ए चार द्रक्ष वैग्योतं ग्रुभ करनार छे तेमज तिन्दुक, नागकेसर, सर्ज, अर्जुन, आम्र अने साल ए छ द्रक्षोमितमा वनावनार श्रुद्धोने माटे ग्रुभ लेखाय छे. लिंग अथवा मितमातुं हक्षोनी दिशा अनुसार स्थापन करवुं अर्थात् द्रक्षनो जे पूर्व आदि भाग होये तेज मितमा अथवा लिंगनो पण पूर्व आदि भाग होयो जोइए. एबीज रीते वृक्षना उपरना भागमां मितमातुं शिर अने नीचली जडना भागमां मितमाना पग वनाववा जोइए, एटला माटे कापतां पहेलां द्रक्षमां चारे दिशाओनां अने उर्ध्व भाग तथा अयोभागनां चिह्न करी लेखां जोइए. खीर, लाडु, भात, दिभ, मांस अने उल्लोपिका आदि भक्ष्य तथा मद्य, पुष्प, भूप अने गन्ध्यी वृक्षनी पूजा करवी तेमज रात्रीने समये देवता, पित्, पिशाच, राक्षस, नाग, अग्रुर अने गण आदिनी पूजा करी वृक्षनो स्पर्श करवी. वृक्षनो स्पर्श करती वखते—

"अर्चार्थममुकस्यत्वं, देवस्य परिकल्पितः। नमस्ते वृक्ष पूजेयं, विधिवत् संप्रग्रद्धताम्॥ यानीह जूतानि वसन्ति तानि, वार्ले गृहीत्वा विधिवत् प्रयुक्तमः; अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु, क्षमन्तु तान्यद्य नमोस्तुतेभ्यः।

आ मंत्र बोलवो "अमुकस्य" ने वदले जे देवनी प्रतिमा वनाववी होय तेतुं पष्टियन्त नाम बोलवुं, प्रभात समये ए इसने जळथी सींची कुठारने मध तथा घृत चोपडी तेनाथी प्रथम ईशान कोणमां कापवुं अने पछीधी प्रदक्षिण क्रमथी वाकीतुं इस कापी लेवुं, कपाएलुं इस जो पूर्व, ईशान कोण अथवा उत्तर दिशामां पडेतो हिद्ध करनार धाय छे अने अधिकोण आवि पांच दिशाओमां पडे तो क्रमधी अग्निदाह, रोग, रोग, रोग अने अश्वोनो नाश थाय छे.

आवुं उत्तम हत्तान्त गुरुना मुखयी सांभळी पसन्न घएला मकवाणा केसरदेवजीए ज्योतिषी आ-गळ उत्तम मुहूर जोवरावी, सारां शक्कन लड, कारीगरोने वन प्रवेश करावी, विधिवत शुभ ह-क्षनां काष्टो कपाये हुदी हुदी देव प्रतिमाओं तैयार करावी; तेमां केटलीएक देव प्रतिमाओं का-प्टनी, केटलीएक मृतिकानी, केटलीएक मणिनी, केटलीएक सुवर्णनी, केटलीएक चांदीनी, केट-र्छीएक तावानी अन केटलीएक जिला अधवा पापाणनी वनाववा आज्ञा आपी; कारणके काष्ट अने मृतिकानी देव प्रतिमा आयुप, छक्ष्मी, वळ तथा जय आपे छे; मणिमय देवप्रतिमा लोको-नुं हित करे छे. सुदर्णनी प्रतिमा गरीरे पुष्टि अपें छे, चांदीनी प्रतिमा सुयज्ञाने वधारे छे, तां-वानी प्रतिमा संताननी वृद्धि करे छ अने पापांणथी वनावेल देवप्रतिमा अथवा शिवलिंग घणी भृमिनो छाभ करावे छे. केसरदेवजीने गुरए क्युं हतुं के जंकुघी उपहत अर्घात् जेना कोई५ण अंगमा खीला जेवो खाडो रही जाय ए प्रतिमा मुख्य पुरुपनो अधवा वंशनो नाश करनारी नि-दटे छे अने जेमां गहा रही जाय ते असाध्य रोग अने अनेक प्रवारना उपद्रव पेदा करे छे ए-टला माटे जाते देखरेख राखी तमाम रीते निर्दोप अने गुन्दर प्रतिमाओ तैयार करावीः स्थारवाद पोते रुरश्रीन पृछ्युं के प्रतिमाओनी प्रतिष्ठा क्यारे थाय अने क्या माणसो क्या क्या देवनी प्रतिष्ठा करवाने गणाय ते विधिषुरासर मने दही संभळावो. श्रद्धाळ केसरदेवजीनां श्रेष्ठ वचनो श्रवण वारी गुरु बोल्या वे-ज्यारे उत्तरायण तोय, शुक्तपक्ष तोय, चन्द्रमा बृहस्पतिना पड वर्गमां रिथत होय, स्थिर छन्न तथा स्थिर नवांश होय, सौम्य ग्रह पांचमे, नवमे, चौथे, सातमे अथवा दशमें रथाने होय; पाष्य्रह त्रीजा, छहा, दशमा अथवा अन्यारमा स्थानमां होय; त्रणे उत्तरा, रोहिणी, मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा, १ वण, पुष्प अथवा स्वानि नक्षत्र होय अने मंगळ विवायनो बार होय तेमज प्रतिष्ठा करनारनो विवय अनुकृत होय अर्थान नेने चन्द्र अने नागनी द्युद्धि होय ए समये प्रतिमानुं प्रतिष्टापन द्युभ गणाय छे प्रतिष्टा वरनाग विद्वान उत्तर दिशामां अथवा पूर्व दिशामा मतिमाना संस्वारने माटे अविवायन नामनी मंडप बनाववी जोडण, ने मंदपन चारे दिशाओमा चार तोरणोधी युक्त करवी अने उत्तम हक्षीना कीमळ पर्णाधी हाई। देवी, प् मटपनी पूर्व दिशासा चित्र विचित्र दर्णनी, अन्तिकोणमा लाल रगनी, दक्षिण त्या नेक्स्यवोणमा बुप्णवर्णनी, पित्रमा भेत रंगनी, वादच्यकोणमा पाइक उत्तरमां चित्रवर्ण अने उज्ञानकोणमा हो। साने साटे पीटा रगनी पुष्पमाला अने पताला लगावर्त लेखन, ए अविवासन संदर्शी वर्षे र शहर दनाजी हेने गोमय आदियी लीपी हेना उस मिला अने हेना उस हुझ विटावी ने उसर

प्रतिमाने शयन कराववुं, प्रतिमातुं शिर भद्रासन उपर राखवुं अने पग उपधान उपर राखवा, अश्वत्थ, उदुम्बर, शिरीप अने बट ए वृक्षोना त्यारवाद रलक्ष. कषाय जल; कुशने आदि एइ मंगळ नामवाळी जया, पुनर्नवा आदि औषि, हाथी अने द्रपभे खोदेली मृत्तिका, कमल युक्त सरीवरनी मृत्तिका, नदीना संगम तटनी मृतिका, पर्वतनी मृत्तिका, वल्मीकनी मृत्तिका, पंचगव्यसहित तीर्थोनां जळ, सुवर्ण अने रत्नयुक्त जल तथा सुगन्धयुक्त जल, ए सर्व द्रव्यथी प्रतिमाने स्नान करावी तेना शिर्तं पूर्व तरफ स्थापन करवं, ए समये विविध प्रकारना तुरीआदि वाद्यो वगडाववां, ब्राह्मणोने मुखे पु-एयाह वाचन अने वेदघोप कराववां. उत्तम ब्राह्मणो पासे पूर्व दिश्वामां इन्द्रना अने अग्निकोणमां अग्निना मंत्र जपाववा तथा तेओनुं दक्षिणा पुरःसर पूजन करवुं, प्रतिष्ठा करनार ब्राह्मणे जे देवनी प्रतिष्ठा करवी होय तेना मंत्रोधी अग्निमां हवन करवुं, जो हवन समये अग्नि धूमथी आकुल होण, अपसव्य होय अर्थात् तेनी ज्वाळा डावी तरफ फेलाती होय, "मृहुमुहु" एवी जञ्द करती होय अने तेमां स्फुलिंग उडता होय तो ते अशुभ गणाय छे. जो हवन करनारनो स्मृतिलोप घट जाय अर्थात् तेने मंत्र आदिनुं स्मरण न रहे अथवा तेनुं प्रसर्पण थाय अर्थात् प्रथम ज्यां हवन क-रवा वेठो होय त्यांथी खसी जाय तो पण अशुभ लेखाय छे. प्रतिमाने स्नान करावी, नवां वस्न पहेरावी, भूषण आदिषी अळंकृत करी, पुष्प अने गंधथी तेतुं पूजन करतुं; त्यारवाद उत्तम प्रकारे विछावे-ली शय्या उपर ते प्रतिमानुं प्रतिप्ठा करनार पुरुषे स्थापन करवुं. ए रीते प्रतिमाने शयन करावी नृत्य तथा गीत सहित जागरणोथी तेतुं उत्तम प्रकारे अधिवासन करी ज्योतिपीए शुभ मुहूर्तमां स्थापना करवी. ते प्रतिमानुं पुष्प, वस्त्र अने चन्दन आदि अनुलेप-नोथी पूजन करी अधिवासन मंडपथी उत्थापन करी प्रासादथी प्रदक्षिण थइ तेने प्र-यत्न पूर्वक गर्भग्रहमां लइ जवी. ए समये शंख, तुरी आदि वाद्यो वगडाववां, त्यां गया वाद सारी रीते विष्ठप्रदान करी ब्राह्मण अने सभ्य अर्थात् सभासदोनुं वस्त्र तथा दक्षिणा आदिथी अर्चन करी पिंडिकाना खाडामां सुवर्ण खंड नांखी तेना उपर मितमानुं स्थापन करवुं, यजमाने स्थापक ज्योतिषी, ब्राह्मण, सभ्य अने स्थपित ए सर्वतुं विशेषताथी पूजन करवुं. ए रीते प्रतिष्टा करना-रो पुरुष आ लोकमां कल्याणने भोगवी परलोकमां स्वर्गीय सुख पामे छे. विष्णुनी प्रतिष्टा वैष्ण-व, सूर्येनी प्रतिष्ठा भग, शिवनी प्रतिष्ठा भस्मधारी ब्राह्मण, ब्राह्मी आदि मातृकाओनी प्रतिष्ठा मं-हलक्रम अर्थात् तेनां पूजन विधानने जाणनार ब्राह्मण, बुद्धनी प्रतिष्टा शान्त चित्त शाक्य अने

जिननी प्रतिष्टा नमने हाथे कराववी ए योग्य गणाय छे. अथवा ने मतुष्य ने देवतानो उत्तम भक्त होय ते ते देवनी प्रतिष्टा आदि सर्व किया पोतपोताना करोक्त विधानयी करी शके छे. गुरुना मुख्यी आवी उत्तम ह्कीकन सांभळी मकवाणा केसरदेवजी अत्यंत ख़ुशी थया अने तेओए यथो॰ चित विद्वान ब्राह्मणोने हाथे म्होटी धामधृपधी शंकर आदि देवमतिमाओनी विधिवत् मतिष्ठा क-रावी तथा बाह्मणीने अने इ प्रकारनां ढान अने दक्षिणायी संतुष्ट कयी; तेमन तमाम कारीगरीने इनामो अष्या. अभिनव उपवन अने जलाज्ञाय आदिथी अलंकृत उक्त स्थे हे हमेगां पोतं जाते पधारी प्रेमपुरःसर विनाक्तपाणिनुं पूजन करवा लाग्या. ए रीते शिवभक्तिमां अपूर्व स्नेह राखी प्रजापालन करनारा केसरदेवजीनी उम्पर चालीश वर्षनी थड छतां तेओने कांई संतान प्राप्त न थयुं. कोईएक दिवसे पञ्चातमा जागृत धई पोते राजमहेलना अरुखामां डोकीयुं कर्यु, ते समये मार्गने साफ करती चाडालिनीनी दृष्टि अजाणताथी ए तरफ खेचाणी, तुरतज ते पीट फेरबी उभी रही, आधी कैसरदेवजीना मनमां अचंबी उप्तन्न थयो, तेओए तुरतज वहार पवारी चांडा-लिनीने अभय आपी पृछ्युं के ते मने जोई मुख शा माटे फेरच्युं ? त्यारे चांडालिनी बोली के अनदाता ! मारी अपराध क्षमा करजो, अपुत्र मुख प्रभानमां जीवाथी अनिष्ट थाय छे एटला माटेज में मुख फेरच्युं, बीज़ कांइ कारण नथी. आ साभन्ती केमम्देवजीने राजवैभव छतां प-रितापना पार रहा। निह, परंतु ए बात मनमां राग्वी नित्यकर्ममायी फराकत थई पोतानी स्वा-रीना घोटाने सज्ज बरवा अनुचरने आज्ञाआपी, अश्व टाजर धना पाने एक्ला समार थर्ट चाली निवल्या, हमेशा सापंकाले स्वारी सहित शकरना दक्षन करवा प्रयाग्ना परंतु ते दिवसे सवारमां अने वळी एकळा जना जोई अमात्य विगेरेना मनमा आवर्ष नेतुं छाग्तुं. पग्तु कोई कोर्र कोशी शवया निह, मकवाणा केसरदेवजीए महादेवना मंदिरमां प्रवेद्य प्रशं विचार्त के अपूत्र रहेयां क रतां शकर उपर कमळवृजा खाई मरणने शरण धर्व एज उनम छे, नाग्ण के प्राथमा अपम लोबो पण मारं मुख जोबामां दोष समजे छे तो हदे इनियाने मुख देखाहाँ जिल्ला नहि. एप इह निध्य वर्श अध्वेन एक टाजुना धाभला साधे दादी वरमां नर नल्यार लड प्रतिमा पासे उर्ड पहोत्त्या अने हृद्यमा अनन्य आस्था रान्दी अटगपणे अतुल वैर्यनी पोताना वीदा नत्य वीत्रता डनारी ईप्टरेब डमापितना लिंग इनर चटाच्या तथा तलवारनी पेलाना किर इनर प्रहार बरना उत्यत पया तेश्लामा अंद्रधी "नाकार" नो गंभीर उद्दार धरो, एथी रन्ध्य यहरा देवरदेवलील विचार वयो के आ हां है एके नेवकने साथे साब्यों सभी देमक दमान पुकारी केने परा पुरसी रहेवा

हुकम कर्यों छे छतां आ " माकार" नो उच्चार कोणे कर्यो ? कदाच कोई माणस तो अहीं नहि आवी चड्युं हाय ? शंकानुं समाधान करवा पोते देवालयना दरेक गृहो तपास्यां छतां कयां-इ माणस जोवामां न आन्यं, छेवटे मन्दिरना शिखर पर चढी दीर्घ द्रष्टियी जोता आज वाज एक पक्षी सरखुं पण न जणायुं, जेथी पोताने खात्री थड़ के नव नाडी अने वहोंतेर कोठामांथी जीव जतां आवो व्यर्थ वहेम उद्भवेलो हशे. एम विचारी वगर विकेव बीजी वार तलवारथी शिरच्छेर करवा तत्पर थया तेवामां तुरतज आशुतोप उमापतिए प्रगट यह तेञाना हाथ पकडी राख्यो अ-ने मबुर वाणीथी कहुं के राजन ! वरं ब्रहि, वरं ब्रहि. मकवाणा केसरदेवजी पोताना इष्ट देवहं साक्षात्वस्वरूप थोडीवार सुधी अनिमेप आंखे जोइ रह्या, त्यारवाद ढंडवत् प्रणाम करी प्रेमाथु-लावी वोल्या कें कुपानाथ! आपना जेवा प्रतापी पुत्रनी मने आकांक्षा छे, पिनाकपाणिए म-सन्नवदने कहुं के -राजन! ए वरदानतो पूर्वे तारा पूर्वज कुंडमालजीने हुं आपी चुकयो छुं अनेते समयपण प्राप्त थयो छे, जा मारुं वचन छे के तारे त्यां दश पुत्रो थशे. तेमां ज्येष्ट पुत्र हरपालदेवजीमां हुं मारो दशमो अंश अपेण करीश, ते वाळक महा पराक्रमी अने प्रतापी तेमज तेना कुंवरो टिकायत वनी " राज " पदवीथी प्रसिद्ध थरो. हरपाछदेवनो संवंघ तमो क्यांड करशो नहि, कारणके एना माटे कन्या पण में तैयार करी राखेल छै अने ए कन्याने हरपालदेव पोतानी मेळे परणरो. एटलुं कही जमानाथ अद्द्र्य थड् गया. केसरमकवाणाए शिवजीनां एवां स्तुत्य वचनो श्रवण करी अपूर्व हपीवेशमां अश्वपर आरूढ थइ पाछुं कीर्तिगढ तरफ प्रयाण कर्धुं, थोडा समयमांज तेओने त्यां भिन्न भिन्न राणीओना उदरथी क्रमपूर्वेक हरपाछदेवजी, वजेपालजी, हमीरजी, पचाणजी, लाखाजी, सामंतसिंहजी, क्षेमराजजी, कर्मसिंहजी, शान्तसिंहजी अने देव-राजजी नामे दश पुत्रो जन्म पाम्या. कीर्तिगढमां अवर्णनीय आनंद फेलाइ रह्यो, प्रजा पण पोताना अपुत्र राजाने त्यां उपरा उपर दश कुमारनो जन्म जोइ इश्वरनो आभार मानवा लागी. केंसर-देवजीए ब्राह्मण, भाट तथा चारणोने सोना रुपाना दानथी संतुष्ट कर्या. दश्चे क्रमारो दिनमति-दिन रुद्धि पामवा लाग्या। तेओए विद्याभ्यासनी साथे युद्धकळातुं पण सारी रीते शिक्षण लीधुं, तमाम क्रमारोमां हरपालदेवजी हिम्मत, पराक्रम अने तेजमां विशेष वखाणवा लायक थया. महा-राजा केसरदेंवजीए कुळ बारोट झाझणसिंहजीने वोळावी पोतानी पवित्र वंशावळी सांभळ्या वाद दशे कुमारोनां नाम तेना चोपडामां नोंधावी छाख पसाव आप्या. कोइ एक समये केसरदेवजी राजकीय मनुष्योनी सभा भरी वार्ताविनोद करी रह्या हता. त्यां कोइ एक विदेशी ब्राह्मण आवी

चडणे, ते कांइ पण आशीर्वाट आप्या विना सन्मुख उभो रह्यों, तेनी भव्य मुखमुद्रा जोइ प्रसन्न यएला केसरदेवजीए पृद्धयुं के-महाराज ! तमे कोण छो ? अने आंही शा माटे आन्या छो ? त्यारे विदेशी विषे उत्तर आप्यो के राजन्! हुं ज्योतिषी छुं, राजाओने ज्योतिषीओ अति िषय होय छे एम धारी आप पासे आव्यो छुं; बीजा भिक्षुक ब्राह्मणोनी पेठे हुं आज्ञीर्वाद आपवा आन्यों नथीं, मारे धननी स्पृहा नथीं, आप राजा छो। अने वळी विद्वान छो। एवं सांभळी म करेला अभ्यासनी आप आगळ परीक्षा आपवा इच्छुं छुं. केमरदेवजीए कहुं के-जो तमो ज्यो-तिपी हो तो कहो जोइए के केवां छक्षण अने केटलां ज्ञानधी ज्योतिपी थइ शकाय छे तथा ते लंको राजाने शा कारणधी विय थड पढे छे ते पण समनावी. विदेशी ब्राह्मणे उत्तर आप्यो के--राजन ! ज्योतिः शास्त्रमा निपुण ज्योतिपी एवा होवा जोडए के जे कुछीन होय, जेने जोवाथी चित्त प्रसन्न थाय, जे उचट्टो वेष न राखतो होय, सत्यवादी होय, अन्यना गुणोमां दोषोनुं आरो-पण न करतो होय, रागद्वेप रहित होय, जेना हाथ पग आदिनो बांधो मुस्लिप्ट अने पुष्ट होय, जे अंगर्रान न रोय, जेना हाथ, पग, नख, नेत्र, दार्द्धा, दांत, कान, ललाट. भ्रक्कटी अने शिर छुन्दर अर्थात् उत्तम लक्षणार्थायुक्त होय; जेतुं शरीर गुंदर होय, गंभीर अने उद्भट अर्थात् मेप तथा मृदंगना ध्वनि समान जेनो शब्द होय, जे शुचि अर्थात् शास्त्रमां कहेळ शांचतुं अनुष्ठान पर्थन अने देवधन आदिमां अहुन्य, चतुर, सभामां बोल्याने स-बरनारी होय. अनुसरी बात करनार, प्रतिभानवान अर्थान प्रक्ष करतां शासनी षीपर विचार करी उत्तर आपनार, देश नथा काळने जाणनार, निर्मळ चित्तपाळो, सभामां नि-भेय रहेनार, साथे भणनारा विद्याधींओधी विवादमा पराभव नहि पामनार, कुजाळ, गीत ह-त्य तथा पृत आदि व्यसनोमा अनासक्त, शान्तिक तथा पाष्ट्रिक अभिचार अने पुष्य म्नान आदि विद्याने जाणनार, देवएजन, चान्द्रायण आदि हत्त अने एकाददी आदि उपवासमा तन्यर, पो-ताना रचेला तथा आर्थव उपजावनार स्वयंबह आदि जनेक यंत्र अथवा स्वतंत्र ग्रह गणितमां आवर्ष उपजावनार गृहयुद्ध मुद्गोन्नति अने गृहण आदिने प्रथमयी करी पृथ्वीमां पानाना उन्कप भगट बरनार, मक्षनो जदाव देनार, अनेक भक्षारना उत्पादीर्था ने अञ्चभ थाय नेन देवात्यव बारे छे ए देवात्यय विना तेना निदारणने माटे एउटा दगर पण ज्ञान्ति आदि बहेनार; प्रत्म-णित, पंचितद्वानिका आदि महिता बृहत्मंहिता आदि होरा अने बृहत्वातक आदि ग्रन्थ नथा तेना अर्थने जाणनार रोप नेमज जे प्रह गणितयां एनिया मिद्धान, रोमरा मिद्धान, बिराष्ट्र मिद्रांन,

सूर्यसिद्धान्त अने ब्राम सिद्धान्त ए पांचे सिद्धान्तोंने जाणतो होय; युग वर्ष, अयन, ऋत, मास, पक्ष, दिन, रात्रि, पहर, मुहूर्त, घडि, पल, त्रुटि, अने त्रुटिना अवयवरुप कालने जाणतो होय ते उपरांत विकला, कला, अंग, राशि अने भगणरुप जे क्षेत्र तेतुं पण ज्ञान धरावतो होय, क्षेत्र विभाग अने कालविभाग ए वन्ने सरखा छे. सीर, सावन, नाक्षत्र अने चान्द्र ए चार प्रका-रनां मानने तेमज अधिमास अने अवम संभव अर्थात क्षय दिनना कारणने पण जा-णतो होयः सौर आदि मानोनुं सद्दशत्व प्रतिपादन करवामां प्रवीण होय अर्थात् सौर वर्ष ३६५ सावन दिन, १५ घडि, ३१ पल अने २२ विपलनुं थाय छे; सावन वर्ष ३६० मावन दिननुं थाय छे, एवीज रीते चान्द्र वर्ष अने नाक्षत्र वर्षतुं पण भिन्न भिन्न प्रमाण छे. ए सार आदि मानोतुं असदशत्व छे अर्थात् एकतुं मान वीजा तुल्य नथी. ए चार प्रकारनां वर्ष पोतपोतानां मानथी ३६० दिवसनां थाय छे, जेमके सौर वर्ष ३६० सौर दिवसनुं, चान्द्र वर्ष ३६० चान्द्र दिवसनुं इ० ए रीतें मानोनुं सद्दशत्व अर्थात् एक मान वीजा मान तुल्य अयुं. जेवी रीते सौर-मान युग, वर्ष, अयन, ऋतु अने दिनतुं प्रमाण करवामां योग्य अने स्थानमा अयोग्य छे तेवीज रीते चान्द्र आदि मानोनुं पण योग्यायोग्यपणुं जाणतो होय ते ज्योतिर्पा कहेवाय छे. पौछिश आदि सिद्धान्तना गणित भेदनुं प्रतिपादन करवामां कुशळ, ग्रहण तथा ग्रह्युद्ध आदिमा पण **प्रवीण, दक्षिणायन अने उत्तरायणनी निष्टत्तितुं** प्रतिपादन करवामां निपुण अर्थात अमुक सिद्धा-न्तनी रीतिथी अमुक घडि उपर अयन निवृत्ति आवे छे अने मत्यक्षमां अमुक घडि उपर अयन निष्टत्ति थइ तेनो अन्तर वरावर वतावी शके तेवो, पोताना देशमां जे सममंडलरेखा अर्थात विषुवृत्त रेखा तेना ग्रहोनो जे संपयोग अर्थात् संप्रवेश त्यां उदित थएल जे अंश अर्थात् पोताना अहोरात्र दृत्त सर्वंधी दिन भाग अर्थात् दिन गत घटि अने शेष घटि तेना प्रतिपादनमां चतुरः सर्वे भिद्धान्त भेद आदि पदार्थोनुं शंकुनी तात्कालिक छायायी; चक्रचाप, तुरीय. गोल, यष्टि शंक अने घटी आदि यंत्रोथी तथा द्रगणित साम्य अगीत गणितथी ज्ञात होय एक वेष आदिथ देखाइ आवे तेनाथी प्रतिपादन करवामां कुशळ; गणिनथी जे ग्रह स्रष्ट आदि आवे तेने शंकु-च्छाया अथवा यंत्रवेधथी पत्यक्ष वताववामां प्रवीण, सूरी आदि ग्रहोनी ज्ञीत्र मंद गति अर्थात् कयो ग्रह कया ग्रहने लीधे मंद गतिवाळो छे तथा कयो ग्रह जीघ्र गतिवाळो छे अने मंद जीघ्र गतिनुं हुं कारण छे ए जाणनार एवीज रीते ग्रहोनी दक्षिणोत्तर अने उच्च नीच गतिने पण ओळख-नार, सूर्य अने चन्द्रमाना ग्रहणमां ग्रहणादि काल अर्थात् स्पर्शकाल तथा मोक्षकाल, दिशा अर्थात्

अमुक्त दिशायी ग्रहणनो प्रारंभ यस्ने तथा अमुक्त दिशामां मध्य ग्रहण थशे इत्यादि, प्रमाण अयीत् केटला विम्वनो प्राप्त थर्गे, विमर्द अर्थात् सम्मीलन तया उन्मीलननो मध्यकाल, वर्ण अर्थात् ग्रहण समये सूर्य चन्द्रनो घृष्ठ, कृष्ण अने ताम्र इत्यादि रंग विगरे आदेशने कही आपनार; अनागत अधीत् पाप्त निह पण्ल ग्रह समागम अने ग्रहयुद्धतुं वर्णन करनार, चन्द्रमानी साथे भोम आदि ग्रह एक राशिमां होय तेने समागम कहे छे अने भौम आदि ग्रहो परस्वर एकज रागि अंग्रमां एकटा थाय तेने युद्ध कहे छे, ए समागम तथा युद्धने अगाउथी कही आपे अर्थात् अमुक दिवसे ग्रह समागम अने अमुक दिवसे ग्रह युद्ध थरो ए वधुं समय आव्ये आकागमां वतावी देनार होय ते ज्योतिषी कहेवाय छे, जे सूर्य आदि मत्येक ग्रहतुं च्रमण योजन अर्थात् पृथ्वीथी कयो ग्रह केटला यो-जनने अंतरे फर छे अर्थात् ग्रहोना योजनात्मक कर्णग्रहोनी कक्षाओनां प्रमाण अने प्रत्येक दे-घोना योजन अर्थात् अमुक देश अमुक देशधी आख्छा योजन छे अने ए योजनोने आ रीते जाणी शकाय छे ए सर्व वाताने जाणवामां चतुर होय, भूमि अने नक्षत्र गणना भ्रमण तथा सं-रथान अर्थात् स्थितिने जाणतो होयः अक्षांग, अवलंबांग, दिवसना अहोरात्र, दृत्तनो व्यास. चरदलकाल अर्थात् चर खंडोधी मिद्ध थएले। काल, मेप आदि राशिओना लंकोद्दय अने स्व-देशोदय, छाया, नाडी, करण अर्थात् शंक्तनी छाया ए सर्वने सपनी तेनायी दिनगत घटी अ-थवा दिनशेष घटी करवी इत्यादि तमाम विषयमां अभिन्न होय, क्षेत्र, काल, करण अर्थान क्षेत्रथी काल अने कालथी क्षेत्र करवामा कुशल रोय, इष्ट घटी पटधी गाँग अंश आदि लग करतां ए बालथी क्षेत्रवारण अने राशि आदि लयथी इष्ट घटी पट जागवा ए कालथी क्षेत्रकाण करेवाय छे. भगण, राहा, अंश, बाटा नया विश्वाटा आदिने क्षेत्र अने वर्ष, गाम, दिन, बाटी, पड, नाम विषल आदिने काल करे छे। बार गशिना एक भगण धाय छे। अनेक प्रकारनां नायतुं निष्णीत मितपादन दारी तदी बारवी. कोइ दाहे दे बन्याना सुदेशी दक्षिम दिल्ला वसे जे अति मकालमान तारी देखाय है। ते पूर्व के अने उत्तरमा जे सुध्य नागे है वे अगस्य है ए नीय करेगाय है, बारण के ए विपरीत बात है, खरी रीते उत्तरनी तरकती तारी अब अने दलियती अगन्य है ए गोलनी रीतियी लिख वर्श शके नेने ब्योतियी जायबी पूर्वी रीते अज्ञास प्रयंते जायस माटे जे बदन ने मक्ष बहेबाय है। जे लाला महणना नीय अने वकी ना बेहरी उपर्यंत्र अर्थात पादीन होता होय अने शिष्य अवित होता होता प्राप्त होते दीन दीन प्रतिसम्पर्दन उत्तर प्राप्त भी मलरणाति । शह वर्षा निषव, संताद अने असिनिया अविश्व राज्यस्य निया होग्र । गुणीति

सूर्यसिद्धान्त अने ब्राम सिद्धान्त ए पांचे सिद्धान्तोने जाणतो होय; युग वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, दिन, रात्रि, पहर, मुहूर्त, घडि, पल, बुटि, अने बुटिना अवयवरुप काळने जाणतो होय ते उपरांत विकला, कला, अंश, राशि अने भगणरुप जे क्षेत्र तेतुं पण ज्ञान धरावतो। होय, क्षेत्र विभाग अने कालविभाग ए बन्ने सरखा छे. सार, सावन, नाक्षत्र अने चान्द्र ए चार प्रका-रनां मानने तेमज अधिपास अने अवम संभव अथीत् क्षय दिनना कारणने पण जा-णतो होय; सौर आदि मानोनुं सहशत्व प्रतिपादन करवामां प्रवीण होय अर्थात् सौर वर्ष ३६५ सावन दिन, १५ घडि, ३१ पल अने २२ विपलतुं थाय छे; सावन वर्ष ३६० सावन दिनतुं थाय छे, एवीज रीते चान्द्र वर्ष अने नाक्षत्र वर्षनुं पण भिन्न भिन्न प्रमाण छे. ए सौर आदि मानोतुं असदशत्व छे अर्थात् एकतुं मान वीजा तुल्य नथी. ए चार प्रकारनां वर्ष पोतपोतानां मानथी ३६० दिवसनां थाय छे, जेमके सौर वर्ष ३६० सौर दिवसनुं, चान्द्र वर्ष ३६० चान्द्र दिवसनुं इ० ए रीतें मानोनुं सद्दशत्व अर्थात् एक मान वीजा मान तृत्व थयुं. जेवी रीते सौर-मान युग, वर्ष, अयन, ऋतु अने दिननुं प्रमाण करवामां योग्य अने स्वातमां अयोग्य छे तेवीन रीते चान्द्र आदि मानोतुं पण योग्यायोग्यपणुं जाणतो होय ते ज्योतियी कहेवाय छे. पौलिश आदि सिद्धान्तना गणित भेदनुं प्रतिपादन करवामां कुशळ, ग्रहण तथा ग्रहयुद्ध आदिमां पण मत्रीण, दक्षिणायन अने उत्तरायणनी निष्टत्तिनुं प्रतिपादन करवामां निपुण अर्थात अमुक सिद्धा-न्तनी रीतिथी अमुक घडि उपर अयन निवृत्ति आवे छे अने प्रत्यक्षमां अमुक चडि उपर अयन निष्टत्ति थइ तेनो अन्तर वरावर वतावी शके तेवो, पोताना देशमां जे सममंडलरेखा अर्थात विषुवृत्त रेखा तेना ग्रहोनो जे संपयोग अर्थात् संपवेश त्यां उदित थएल जे अंश अर्थात् पोताना अहोरात्र दृत्त सर्वधी दिन भाग अर्थात् दिन गत घटि अने शेप घटि तेना भतिपादनमां चतुरः सर्व मिद्धान्त भेद आदि पदार्थोंनुं शंकुनी तात्कालिक छायायी; चक्रचाप, तुरीय, गोल, यष्टि शंकु अने घटी आदि यंत्रोथी तथा द्रगणित साम्य अर्थात् गणितथी ज्ञात होय एक वेर आदिथ देखाइ आवे तेनाथी प्रतिपादन करवामां क्रशळ; गणिनथी जे ग्रह स्रष्ट आदि आवे तेने शंक-च्छाया अथवा यंत्रवेषथी मत्यक्ष वताववामां मवीण, सूरी आदि ग्रहोनी ज्ञांत्र मंद गति अर्थात् कयो ग्रह कया ग्रहने लीधे मंद गतिवाळो छे तथा कयो ग्रह ज्ञीघ्र गतिवाळो छे अने मंद ज्ञीघ्र गतिनुं शुं कारण छे ए जाणनार एवीज रीते ग्रहोनी दक्षिणोत्तर अने उच्च नीच गतिने पण ओळख-नार, सूर्य अने चन्द्रमाना ग्रहणमां ग्रहणादि काल अर्थात् स्पर्शकाल तथा मोक्षकाल, दिशा अर्थात्

अमुक्त दिशायी ग्रहणनो प्रारंभ यन्ने तथा अमुक दिशामां मध्य ग्रहण यशे इत्यादि, प्रमाण अयीत् केटला विम्वनो प्रास थशे, विमर्द अर्थात् सम्मीलन तथा उन्मीलननो मध्यकाल, वंर्ण अर्थात् ग्रहण समये सूर्य चन्द्रनो घूम्र, कृष्ण अने ताम्र इत्यादि रंग विगरे आदेशने कही आपनार; अनागत अधीत प्राप्त निह धएल ग्रह समागम अने ग्रहयुद्धतुं वर्णन करनार, चन्द्रमानी साथे भौम आदि ग्रह एक राशिमां होय तेने समागम कहे छे अने भौम आदि ग्रहो परस्पर एकज राशि अंग्रमां एकटा थाय तेने युद्ध कहे छे, ए समागम तथा युद्धने अगाउथी कही आपे अर्थात् अमुक दिवसे ग्रह समागम अने अमुक दिवसे ग्रह युद्ध थरो ए वधुं समय आव्ये आकाशमां वतावी देनार होय ते ज्योतिषी कहेवाय छे, जे सूर्य आदि मत्येक ग्रहतुं ज्ञमण योजन अर्थात् पृथ्तीथी कयो ग्रह केटला यो-जनने अंतरे फरे छे अर्थात ग्रहोना योजनात्मक कर्णग्रहोनी कक्षाओनां प्रमाण अने पत्येक दे-शोना योजन अर्थात् अमुक देश अमुक देशथी आटळा योजन छे अने ए योजनोने आ रीते जाणी शकाय छे ए सर्वे वातोने जाणवामां चतुर होय, भूमि अने नक्षत्र गणना भ्रमण तथा सं-स्थान अर्थात् स्थितिने जाणतो होयः अक्षांश, अवलंबांश, दिवसना अहोरात्र, वृत्तनो व्यास, चरदलकाल अर्थात चर खंडोथी सिद्ध थएलो काल, मेप आदि राशिओना लंकोद्य अने स्व-देशोदय, छाया, नाडी, करण अथीत शंक्रनी छाया ए सर्वने समनी तेनाथी दिनगत घटी अ-थवा दिनशेष घटी करवी इत्यादि तमाम विषयमां अभिज्ञ होय, क्षेत्र, काळ, करण अर्थात क्षेत्रथी काल अने कालथी क्षेत्र करवामां कुशल होय, इष्ट घटी पलथी राशि अंश आदि लग्न करवां ए कालथी क्षेत्रकरण अने राशि आदि लग्नथी इष्ट घटी पछ जाणवां ए कालथी क्षेत्रकरण कहेवाय छे. भगण, राशि, अंश, कटा तथा विकटा आदिने क्षेत्र अने वर्ष, मास, दिन, घटी, पछ, तथा विपल आदिने काल कहे छे. बार राशिनो एक भगण थाय छे. अनेक प्रकारनां नो युनुं विपरीत प्रतिपादन करी तर्क करवो. कोइ कहे के कन्याना सूर्यमां दक्षिण दिशा वचे जे अति प्रकाशमान तारों देखाय है, ते ध्रुव छे अने उत्तरमां जे सूक्ष्य तागे छे ते अगस्य छे ए नोग कहेबाय छे, कारण के ए विपरीन वात छे, खरी रीते उत्तरनी नरफनो तारो धुव अने दक्षिणनो अगम्ब छे ए गोळनी रीनिधी मिद्ध करी शके तेने ज्योतिपी जाणवो. एवी रीने अजाण्या, अर्थने जाणया माटे जे वचन ते प्रश्न करेवाय छे. जे नाना प्रकारना नोय अने प्रश्नोना भेदनी उपलिय अर्थात् बादीए करेल नोच अने शिष्य आदिए करेल प्रश्नोनो टीक टीक पिहारपूर्वक उत्तर आपवाथी न्तृत्वत्तति शह वर्रा निषकः संताप अने अभिनिवेश आदियी अत्यन्त निर्पळ कोन्छ मुद्यर्णनी

सूर्यसिद्धान्त अने ब्रास सिद्धान्त ए पांचे सिद्धान्तोने जाणतो होय; युग वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, दिन, रात्रि, महर, मुहूर्त, घडि, पल, त्रुटि, अने त्रुटिना अवयवरुप कालने जाणतो होय ते उपरांत विकला, कला, अंग, राशि अने भगणरुप जे क्षेत्र तेतुं पण ज्ञान घरावतो होय, क्षेत्र विभाग अने कालविभाग ए वन्ने सरखां छे. सौर, सावन, नाक्षत्र अने चान्द्र ए चार प्रका-रनां मानने तेमज अधिपास अने अवम संभव अशीत क्षय दिनना कारणने पण जा-णतो होय; सौर आदि मानोतुं सहगत्व प्रतिपादन करवामां प्रवीण होय अर्थात् सौर वर्ष ३६५ सावन दिन, १५ घडि, ३१ पल अने २२ विपलतुं थाय छे; सावन वर्ष ३६० सावन दिनतुं थाय छे, एवीज रीते चान्द्र वर्ष अने नाक्षत्र वर्षनुं पण भिन्न भिन्न प्रमाण छे. ए सौर आदि मानोतुं असदशत्व छे अर्थात् एकतुं मान वीजा तुल्य नथी. ए चार प्रकारनां वर्ष पोतपोतानां मानथी ३६० दिवसनां थाय छे, जेमके सौर वर्ष ३६० सौर दिवसनुं, चान्द्र वर्ष ३६० चान्द्र दिवसनुं इ० ए रीतें मानोनुं सद्दशत्व अर्थात् एक मान वीजा मान तुल्य अयुं. जेवी रीते सौर-मान युग, वर्ष, अयन, ऋतु अने दिनतुं प्रमाण करवामां योग्य अने स्थानमां अयोग्य छे तेवीज रीते चान्द्र आदि मानोनुं पण योग्यायोग्यपणुं जाणतो होय ते ज्योतिपी कहेवाय छे. पौछिश आदि सिद्धान्तना गणित भेदनुं प्रतिपादन करवामां कुशळ, ग्रहण तथा ग्रहयुद्ध आदिमां पण पत्रीण, दक्षिणायन अने उत्तरायणनी निष्टत्तिनुं प्रतिपादन करवामां निपुण अर्थात् अमुक सिद्धा-न्तनी रीतिथी अमुक घडि उपर अयन निवृत्ति आवे छे अने मत्यक्षमां अमुक घडि उपर अयन निष्टत्ति थइ तेनो अन्तर वरावर वतावी शके तेवो, पोताना देशमां जे सममंडलरेखा अर्थात विषुवृत्त रेखा तेना ग्रहोनो जे संपयोग अर्थात् संपवेश त्यां उदित थएल जे अंश अर्थात् पोताना अहोरात्र दृत्त सर्वधी दिन भाग अर्थात् दिन गत घटि अने शेप घटि तेना भतिपादनमां सर्वे विद्धान्त भेद आदि पदार्थीनुं शंकुनी तात्कालिक छायायी; चक्रचाप, तुरीय, गोल, यष्टि शंकु अने घटी आदि यंत्रोथी तथा द्रगणित साम्य अर्थात् गणितथी ज्ञात होय एक वेय आदिथ देखाइ आवे तेनाथी प्रतिपादन करवामां कुशळ; गणितथी जे ग्रह स्वष्ट आदि आवे तेने शंकु-च्छाया अथवा यंत्रवेधथी प्रत्यक्ष वताववामां प्रवीण, सूरी आदि ग्रहोनी ज्ञीत्र मंद गति अर्थात् कयो ग्रह कया ग्रहने लीधे मंद गतिवाळो छे तथा कयो ग्रह शीघ्र गतिवाळो छे अने मंद शीघ्र गतिनुं शुं कारण छे ए जाणनार एवीज रीते ग्रहोनी दक्षिणोत्तर अने उच्च नीच गतिने पण ओळख-नार, सूर्य अने चन्द्रमाना ग्रहणमां ग्रहणादि काल अर्थात् स्पर्शकाल तथा मोक्षकाल, दिशा अर्थात्

अमुक्त दिशायी ग्रहणनो पारंभ यन्ने तथा अमुक दिशामां मध्य ग्रहण यशे इत्यादि, प्रमाण अर्थात् केटला विम्वनो ग्रास थशे, विमर्द अर्थात् सम्मीलन तथा उन्मीलननो मध्यकाल, वंर्ण अर्थात् ग्रहण समये सूर्य चन्द्रनो घूम्र, कृष्ण अने ताम्र इत्यादि रंग विगेरे आदेशने कही आपनार; अनागत अधीत् प्राप्त निह थएल ग्रह समागम अने ग्रहयुद्धतुं वर्णन करनार, चन्द्रमानी साथे भौम आदि ग्रह एक राशिमां होय तेने समागम कहे छे अने भौम आदि ग्रहो परस्पर एकज राशि अंग्रमां एकटा थाय तेने युद्ध कहे छे, ए समागम तथा युद्धने अगाउथी कही आपे अर्थात् अमुक दिवसे ग्रह समागम अने अमुक दिवसे ग्रह युद्ध थरो ए वधुं समय आव्ये आकाशमां वतावी देनार होय ते ज्योतिषी कहेवाय छे, जे सूर्य आदि मत्येक ग्रहतुं च्रमण योजन अर्थात् पृथ्वीथी कयो ग्रह केटला यो-जनने अंतरे फरे छे अर्थात् ग्रहोना योजनात्मक कर्णग्रहोनी कक्षाओनां प्रमाण अने प्रत्येक दे-शोना योजन अर्थात् अमुक देश अमुक देशथी आटळा योजन छे अने ए योजनोने आ रीते जाणी शकाय छे ए सर्वे वातोने जाणवामां चतुर होय, भूमि अने नक्षत्र गणना भ्रमण तथा सं-स्थान अर्थात् स्थितिने जाणतो होयः अक्षांश, अवलंबांश, दिवसना अहोरात्र, वृत्तनो व्यास, चरदलकाल अर्थात् चर खंडोथी सिद्ध थएलो काल, मेष आदि राशिओना लंकोदय अने स्व-देशोदय, छाया, नाडी, करण अर्थात् शंकुनी छाया ए सर्वने समनी तेनाथी दिनगत घटी अ-थवा दिनशेष घटी करवी इत्यादि तमाम विषयमां अभिज्ञ होय, क्षेत्र, काळ, करण अर्थात क्षेत्रथी काल अने कालथी क्षेत्र करवामां कुशल होय, इष्ट घटी पलथी राशि अंश आदि लग्न करवां ए कालथी क्षेत्रकरण अने राशि आदि लग्नथी इष्ट घटी पल जाणवां ए कालथी क्षेत्रकरण कहेवाय छे. भगण, राशि, अंश, कछा तथा विकला आदिने क्षेत्र अने वर्ष, मास, दिन, घटी, पल, तथा विपल आदिने काल कहे छे. वार राशिनो एक भगण थाय छे. अनेक प्रकारनां नो द्युतं विपरीत मितपादन करी तर्क करवो. कोइ कहे के कन्याना सूर्यमां दक्षिण दिशा वचे जे अति मकाशमान तारों देखाय छे, ते ध्रुव छे अने उत्तरमां जे सूक्ष्म तारों छे ते अमस्त्य छे ए नोच कहेवाय छे, कारण के ए विपरीत वात छे, खरी रीते उत्तरनी तरफनो तारो ध्रुव अने दक्षिणनो अगस्त्य छे ए गोळनी रीनिथी सिद्ध करी शके तेने ज्योतिपी जाणवो. एवी रीते अजाण्या अर्थने जाणवा माटे जे वचन ते पक्ष कहेवाय छे. जे नाना प्रकारना नोद्य अने प्रश्लोना भेदनी उपलब्धि अर्थात् वादीए करेल नोच अने शिष्य आदिए करेल प्रश्नोनो ठीक ठीक परिहारपूर्वक उत्तर आपवाथी वक्तृत्वज्ञक्ति प्राप्त करी निपक, संताप अने अभिनिवेश आदियी अत्यन्त निर्मेळ करेळ मुचर्णनी

माफक निषक, संताप अने अभिनिवेश आदिथी निःसंदेह करेला ज्योतिःशास्त्रतुं प्रतिपादन करनारो तथा तंत्रज्ञ अर्थात् गणितने जाणनार होय ते ज्योतिषी कहेवाय छे. महर्षि गर्गे कहुं छे के—जे पुरुष शास्त्रनिवद्ध अर्थतुं प्रतिपादन न करे, संदेहनी निष्टत्ति माटे शिष्ये पूछेला एक प्रश्ननो पण जत्तर न आपे अने विद्यार्थीओने भणावे पण निह तेने शास्त्रज्ञ शी रीते समजवो ? अर्थात् एवा पुरुषने पंडित नहीं परंतु मूर्विज सम जवे। जोईपि.

जे पुरुष ग्रन्थमां आचार्यनो आश्य कांइ होय अने तेनो अर्थ कांइनो कांइ करे तेमज गणितमां गुणाकार भागाँकार विगेरे पण होय कांइ अने करे कांइ अर्थात् ग्रन्थनो आशय समज्या विना अर्थ करवा मंदी जाय अने गणित कर्मनुं तात्पर्य जाण्या विना गणित करवा लागे ते मूर्व पुरु-षनुं उक्त साहम अत्यंत अनुचित अने हास्यजनक छे.

गणितस्कन्ध सारी रीते समज्या वाद जेणे तात्कालिक लग्ननो पण शंकुच्छाया, जल्म घटी अथवा अन्य कोइ यंत्रथी निश्चय करेलो होय अने जेना हदयमां जातक आस्त्रनो अर्थ पण द्रह थइ रह्यो होय ते आदेष्टा दैवज्ञनी वाणी कदिपण मिथ्या थती नथी। आचार्य विष्णुगुप्ते पण कहुं छे के — वस्त्रते तस्तो पुरुष पवनना वेगने लइ समुद्रनो पार पामी शक्ते छे, परंतु आ कालपुरुष (ज्योतिः शास्त्र) नामना महा समुद्रनो पार ऋषि शिवाय वीजो पुरुष मनयी पण कोइ दिवस पामी शकतो नथी, केवल ऋषिओज एनो पार पाम्या छे.

होराशास्त्र जातकशास्त्रनो एक भेद छे तेमां पण राशि स्वरूप होंरा तथा राशिनो अर्थ द्रेष्काण अर्थात् राशिनों तृतीयांश, नवांश, द्रादशांश, तिशांश, राशिओतुं बळावळ, ग्रहोना दिक्स्थान, काळ तथा चेष्टाथी अनेक मकारना वळनो विचार, ग्रहोनी वात पित्त आदि मकृति, रस रुधिर आदि सप्तथातु, द्रव्य, जाति, तथा चेष्टा आदि शब्दथी ग्रहोनी वात पित्त आदि गुण रस स्थान तथा वस्त्र ए संवेतुं ग्रहण, गर्भाधान समय अने जन्म समयना आश्चर्य जनक मत्ययनुं कथन अर्थात् गर्भाधान अथवा जन्म समय दीपक अमुक दिशामां हतो, एथी ए घरनुं द्वार अमुक दिशामां छे, शय्या अमुक रीते हती, प्रसव समय पिता समीपे हतो के निह विशेरे चमत्कारिक चिन्हों कही आपवां. सद्योमरण, आयुद्धिंय, दशा, अन्तर्दशा, अष्टक वर्ग, राजयोग, चन्द्रयोग, द्विग्रहादि रोग तथा नामसयोग आदिनां फळ; आश्रयभाव अने द्रष्टिनां फळ, निर्याण अर्थात् मरणनिमित्त, मरण पछी श्रुभाशुभ गति, अनूक अर्थात् पूर्व जन्म, तात्काळिक प्रश्नक्यनां श्रुभाशुन

भ फळ, शुभ अशुभनुं सूचन करनारां निमित्त, तेमज विवाह, यज्ञोपवीत अने चौळ आदि क-मींतुं करवुं ए सर्व भेद ज्योतिःशास्त्रना वीजा स्कन्ध (होरा शास्त्र) मां होय छे यात्रा सास्त्रना भेद ए द्वितीय स्कन्धान्तर्गत छे.

यात्राशास्त्रमां नन्दा आदि तिथि, सूर्य आदि वार, वव आदि करण, अश्विनी आदि नक्षत्र तथा शिव आदि त्रीश मुहूर्त ए सर्वनां फळ; छग्न अने योग, देह फरकवानां फळ, स्वप्न- नां ग्रुभाग्रुभ फळ, विजय आपनार स्नानतुं विधान, ग्रहयइ, गणयाग अर्थात् ग्रुह्यक पूजन, हवन समये ग्रुभाग्रुभ सूचक अग्निनां चिह्न, हाथी अने घोडाओनी चेष्टा, सैनिकोनो प्रवाद अर्थात् पर-स्परनी वातचीत, सैनिकोनी चेष्टा अर्थात् जत्साह तथा अतुत्साह, ग्रहोना वळावळथी संधि, विग्र- ह, यान, आसन, द्वेध अने आश्रय ए छ गुणोनी तथा साम, दाम, दंड अने भेद ए चार जपा- योनी सिद्धि अने असिद्धिनो विचार; यात्रा वखते ग्रुभाग्रुभ सूचक शक्तन, सेनाना रहेठाण माटे ग्रुभ अग्रुभ सूमितुं कथन, यात्रा समये ग्रुभाग्रुभ सूचक हवनाग्निना रंग, मंत्री, चर अने आटिवक अर्थात् वनमां वसनारा भील आदि अभोने यथाकाल अर्थात् पोतपोताना समयपर कार्यमां योज- वा अने शत्रुना दुगे लेवाना उपाय विगेरे सर्व वावतो वर्णवेली छे.

आचार्योप कहुं छे के नेतुं शास्त्र नाणे गणितस्कन्ध सहित संपूर्ण नगत्मां प्रसरेल, बु-द्भिमां आळखेल अने हृदयमां स्थापेल होय निहि शुं ? एवा दैवझतुं कथन कदापि निष्फळ थतुं नथी. अथीत् त्रण स्कन्ध युक्त ज्योतिःशास्त्रने नाणनारनी वाणी मुनिओनी वाणी माफक सत्य होय छे. संहितानो पारगामी अर्थात् संहिताना पदार्थोने सारी रीते समजनारो पुरुष दैवचिन्तक होय छे अर्थात् पूर्व जन्मकृत शुभाशुभ कर्मोनां फळ नाणी शके छे.

LANN LANNON CONTROL CO

संहितामां वर्णवेळ सूर्य आदि ग्रहोना चार, ए चारेनी वच्चे ग्रहोना स्वभाव, विकार, विम्वनां प्रमाण, शुक्त आदि वर्ण, किरण, कान्ति, आकार, अस्तोदय, दक्षिण, उत्तर तथा मध्य-मार्ग, मार्गमध्य, वक्रमार्ग, नक्षत्रोनी साथे ग्रहोनो संयोग अने नक्षत्रोमां ग्रहोनी स्थित इत्यादिथी फळतुं कथन; नक्षत्रकर्म विभागयी अर्थात् सत्यावीश नक्षत्रोनो भारतवर्षना नवखंडोमां विभाग करी देशोना शुभाशुभ फळतुं कथन, अगस्त्यचार, सप्तार्पचार, ग्रहभिक्त अर्थात् ग्रहोनां देश, द्रव्य तथा जीवोपर आधिपत्य, नक्षत्रव्यूह अथवा देशद्रव्य आदिपर नक्षत्रोतुं स्वामीत्व, ग्रहशृंगाटक अर्थात् भामआदि पाच ग्रहोशृंगाटक आदिर्प स्थित थवाथी शुभाशुभद्दान, ग्रहयुद्ध, ग्रहसमागम,

ग्रहवर्षफळ मेघना गर्भकक्षण, रोहिणी, स्वाती अने अपाढीयोग अर्थात् रोहिणी स्वाती अने पूर्वापा-ढानी साथे चन्द्रना समागमयी थतां शुभाशुभनो विचार सद्योहि छिल्ला, क्रसुमलताललण अर्थात द्यक्षोनां फळ तथा पुष्प जोइ जगत्नां ग्रुभाग्नुभनुं ज्ञानः परिघि, परिवेप, परिघ, पवन, उल्कापात, दिग्दाह, भूकंप, संध्याराग, गन्पर्वनगर, पांसुबृष्टि अने निर्घात आदिनां लक्षण तथा शुभाशुभ फळ; अर्धकांड अर्थात् अन्नआदिना भावनुं ज्ञान, सस्यजन्म अर्थात् ग्रहोथी खेतीना ग्रुभाग्रुभनुं ज्ञान, इन्द्र-ध्वजपूजा, इन्द्रधनुष्यनुं छक्षण, वास्तुविद्या, अंगविद्या अर्थात् अंगस्पर्शायी थतुं शुभाशुभ ज्ञान, वाय-सविद्या अर्थात् काकनी चेष्टाथी यतां फळ, अन्तर चक्र शक्तनमां मृगचक्र, अन्वचक्र अर्थात् मृग अने अश्वोनी चेष्टानां फळ, वातचक्र अर्थात् आठे दिशाओना पत्रनतुं फळ, प्रासादलक्षण, प्रति-मालक्षण, प्रतिष्ठापन, रक्षायुर्वेद अर्थात् रक्षोनी चिकित्सा, उदकार्गल अर्थात् भूमिमां जळतुं ज्ञान, नीराजनशान्ति, खंजनपक्षीनांलक्षण तथा फळ, उत्पातशान्ति, मयूरचित्रक, वृतक्तम्बल अर्थात् पुप्य-स्नान, खङ्गलक्षण, राजाओना मुकुटनुं लक्षण, कुककुट, कूर्म, गौ, अजा, अव, हस्ती, पुरुष अने स्त्री ए सर्वनां ग्राभाग्राभलक्षणः अन्तःपुरचिन्ता अर्थात् राजाना अन्तःपुरमां अतुरक्त स्त्रीओनी चेष्टा, पिटकलक्षण, उपानच्छेद अने वस्तच्छेद अथीत पगरखां अने वस्त्रना कपावा आदियी यतां शुभा-शुभफळ; चामर, दंड, शय्या अने आसननां लक्षण, हीरा आदि रत्नोनी परीक्षा, दीपलक्षण दंत-काष्ट्र अर्थात् दातणना शुभाशुभ फळ आदि, शब्द उपरथी कर्ताना शुभाशुभ फळ के जे जगतना सर्व मतुष्योने माटे सामान्य छे तेमज सेनापति आदि प्रत्येक पुरुषमां तथा राजामां जे शुराशुभ-फळ होय छे ते तमामनो प्रतिक्षण एकाग्र चित्तथी ज्योतिषीए विचार करवो जोइए. उक्त निर्मित्तोने एकज ज्योतिषी रात्रि दिवस जोइ शक्तो नथी एटला माटे राजाए पुष्कळ द्रव्य आपी पोषण करा-एला मुख्य ज्योतिषीए पोताना हाथ नीचे घरनो पगार आपी वीजा चार ज्योतिपीओ राखवा जोइए; ए चारमांथी एक ज्योतिषी पूर्वदिशा अने अग्निकोणमां, वीजो दक्षिणदिशा अने नैस्त्य-कोणमां, त्रीजो पश्चिमदिशा अने वायव्यकोणमां तथा चोथो ज्योतिषी उत्तरदिशा अने इशानको-णमां सावधानीथी तपास करतो रहे, कारणके जलकापात आदि निमित्त प्रगट थइ एकदम अद्भाग थइ जाय छे, ए निमित्तोनां फळनो विचार, आकार, वर्ण, स्निग्यता तथा ममाण आदियी ग्रह तथा नक्षत्रोना अभिघात आदिथी थइ शके छे, एटला माटे ए तमाम वावतो ज्योतिषीए सावधा-नीयी जाणवी जोइए.

गर्ग महर्पिए कहुं छे के ज्योतिः शास्त्रनां अंग अने उपांगमां कुशळ तथा जातक शास्त्र

अने गणितमां निष्ठावाळा ज्योतिषीनो जे राजा सत्कार नथी करतो ते नष्ट थाय छे. ग्रंह, नस्त्र तथा राशि आदिनो जे विचार ते ज्योतिःशास्त्रनां अंग अने स्त्री पुरुष लक्षण, वस्त्रच्छेद तथा दीप-लक्षण विगेरे सर्व उपांग कहेवाय छे.

निष्परिग्रह अने निरहंकार तपस्वी वनमां रहें छे तो पण ज्यातिषीने पूछे छे तो पछी संसारी मतुष्यो ज्ञा माटे न पूछे ? दीपक विनानी रात्रि अने सूर्य विनाना आकाशनी माफक ज्योतिषी विनानो राजा शोभतों नथी. ज्योतिषी रहित पुरुष पोतानां कार्योमां संशययुक्त थइ अंधनी पेठे मार्गमां भ्रमण कर्या करें छे. जो ज्योतिषी न होय तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु तथा अयन आदि सर्व आकुछ यइ जाय अर्थात् ज्योतिषी विना ए सर्व टेकाणे पडतां नथीं; एटछा माटे जय, यश, छक्ष्मी, भोग अने कल्याणने चाहवाबाळा राजाए सर्व कार्य विद्वान् मुख्य ज्योतिषीनी सम्मतिथी करवां जोइए. जे देशमां ज्योतिषी न होय ते देशमां संपत्तिनी इन्छावाळा पुरुषे निवास न करवो. जे देशमां नेत्रनी माफक तमाम पदार्थोंने मत्यक्ष वतावनारों ज्योतिषी रहेतो होय त्यां पाप रही शकतुं नथी. ज्योतिः शास्त्रने भणनारो पुरुष नरकमां जतो नथी; परंतु ते देवचिन्तक ब्रह्मछोकमां मितिष्ठा अर्थात् स्थिति पामे छे. जे ब्राह्मण संपूर्ण ज्योतिःशास्त्रनो पाठ अने अर्थ जाणतो होय ते शाद्धमां अग्रभुक् अर्थात् सर्वथी पहेलां जमाडवा योग्य छे अने ते पूजित ब्राह्मण पंक्तिपावन होय छे अर्थात् जे पंक्तिमां वेसे ते पंक्तिने पवित्र करी शके छे.

यवनाचार्य आदि म्लेच्छ होवा छतां पण विश्वष्ठ, पराज्ञर अने मयास्त्रर आदि पासेथी यथास्थित ज्योतिः ज्ञास्त्रनो अभ्यास करी ऋषिओं समान पूज्य गणाया तो पछी दैवज्ञ ब्राह्मण ज्योतिःज्ञास्त्रने जाणता होय तो केम न पूजाय ?

जे कुहक अर्थात इन्द्रजाल आदिथी फळ कहे, भूत आदिना आवेश्वथी अर्थात् धुणीने शुभाशुभ कहे, पिहित अर्थात् कोइ जगोए छुपाइ वातचीत सांभळी लिए अने फरी ते सभामां जइ कही वतावे, कर्णोपश्चित अर्थात कर्ण पिशाची आदिना मंत्रणी अथवा पोताना वाळकने सभामां मोकली तमाम हकीकतथी वाकेफ थइ सभामां जइ सर्वनो आश्चय मेळवी आपे अने हेतु अर्थात् तर्क पूछनारनो अभिमाय समजी जे प्रश्न कहे तेने कदिपण पूछ्वं नहि, कारणके ते लोको ज्योतिषी नहि पण ठगारा छे एम समजवं.

ज्योतिः शास्त्रने भण्या शिवाय जे ज्योतिपी वनी वेसे ते पापी अने पैकितदूपकने नक्षत्र-



सूचक जाणवों जोइए, जेना वेसवाथी पंक्ति अपिवत्र थइ जाय ते पंक्तिदूषक कहेवाय छे नक्षत्र सूचकना कहेवाथी जे पुरुष एकादशी आदि उपवास करे ते नक्षत्रसूचक सहित अंधतामिल्ल ना-मना नरकमां पड़े छे. जेम पत्थरनी प्रार्थना वखते सत्य थाय छे अर्थात् फळ आपनारी निवढे छे एमां पत्थरनी महत्ता निह परंतु इश्वरनी महत्ता समजवी. तेवीज रीते मूर्खोए कहेलो फलादेश वखते साचा जेवो जणाय छे, परंतु बुद्धिमान पुरुष किद पण एम निह समजे के शास्त्र भण्या शिवाय फलादेश सत्य थाय, सत्य फलादेश तो एज कही शके छे के जे त्रिस्कन्य ज्योतिः—शास्त्रने सारी रीते भण्यो होय.

जे ज्योतिषी संपत्तिने लड़ योजितादेश होय अर्थात् कोइ राजसेवक आदि पुरुषने धन दह पोताना पक्षमां मेळवी राखे अने तेने, साक्षी वनावी कहेके में प्रथमधीज आ माणसने कर्षु हतुं के अमुक पुरुषने अैश्वर्य प्राप्त यशे अथवा अमुकने पुत्रप्राप्ति थशे त्यारे राजसेवक आदि पुरुष कहेके हा, ज्योतिषी महाराजे प्रथमधी मने कर्षुं हतुं. आ शिवाय जेने ज्योतिःशास्त्र शिवायनी कथा पिय होय, ज्योतिः शास्त्रनी चर्ची सारी न लागे तेमज जे शास्त्रतुं मात्र एकज प्रकरण भणी अहंकारथी उभराइ गयो होय तेवा ज्योतिषीनो राजाए त्याग करवोः गणित, होरा अने संहिता ए त्रण स्कन्धोवाळा ज्योतिः शास्त्रने सारी रीते समजतो होय एवा ज्योतिषीने जयनी इच्छावाळा राजाए पूजवो ( सत्कारथी संतुष्ट करवो ). राजानुं जे कार्य हजार हाथी अने चार हजार अश्व नथी करी शकता ए कार्य देश काळने जाणनारो एक ज्योतिषी करी शक्ते छे.

खराव स्वप्न आव्युं होय, बुरी वातनुं चिन्त्वन कर्युं होय, अमंगलनुं दर्शन थयुं होय अने दुष्ट कम करायुं होय ए सर्व चन्द्रमानों नक्षत्रसंवाद सांभळवाची नष्ट थाय छे, अर्थात् तिथि-वार तथा नक्षत्र आदिनुं श्रवण करवाथी दुःस्वप्न आदिनुं फळ थतुं नथी.

पोताना यशनी दृद्धि माटे सेना सहित राजानुं कल्याण जेवुं शास्त्रना तत्वने जाणनार ज्योतिषी चाहे छे, तेवुं तेना माता पिता, वंधुजन के मित्र पण चाहता नथी। एटळा माटे पोताना कल्याण अर्थे राजाए सदा उत्तम ज्योतिषीने सत्कार पूर्वक पोतानी पासे राखवो अने एना कहेवा-पर चाळवुं; कारणके राजानो शुभिन्तक ज्योतिषी उपरांत वीजो कोइ नथी.

आ रीतें ज्योतिष संवंधी सूक्ष्म अने अगत्यनी इकीकत सांभळी पसन्न थएला केसरदेवजीए ते पंडित ब्राह्मणने घणा सन्मान पूर्वक पोताना शहेरमां ुराख्या, फरी कोइ एक

दिवसे ते पंडितने एकान्त भ्रुवनमां वोलावी पोतानी जन्मपत्रिका वतावी पूछयुं के—महाराज ! मारुं मृत्यु क्यारे थशे ए कहो. पंडिते ग्रह विगेरे जोया वाद कह्युं के राजन् ! मृत्युनी वात को**इ**ने मोढे कहेंचा शास्त्रकारोए ना कहेळी छे. परंतु आप धैर्यस्वरूप अने द्रढ मनना छो जेथी आ जन्म पत्रिका उपरथी भविष्य जणाबुंछं के आजधी एक वर्ष पछी अधीत आवता ज्येष्ठ मासमां आपतुं मृत्यु थरो. माटे जे कांइ करवातुं होय ते एक वर्षनी अंदर करी लेतुं. केसरदेवजीए पंडितने पा-रितोषिक आपी स्वस्थाने विदाय कर्या वाद विचार्यु के—साधारण मनुष्यनी माफक घरमां प्राण त्याग करवो ए क्षत्रीओने जाजती वात नथी, परंतु रणसंग्राममां सामे पगले चाली युष्ट यज्ञमां प्राणनी आहति आपवी एज उत्तम छे. हमीर छमरो हालमां शान्त थर वेटो छे. परंतु पाछळथी मारा सन्तानोने निर्वेळ जाणी सिन्धमां सुखथी रहेवा न आपे ए संभवित छे. माटे महान् शत्रुने निर्मूळ करवा तेनी साथे प्रचंड युद्ध करवुं, जो तेमां विजय मळशे तो पुत पौत्रादिक कीर्तिगढनुं राज्य निष्कंटक आनंदथी भोगवशे अने कदाच तेम करतां प्राण जशे तोपण अक्षय कीर्ति प्राप्त थरों. आ रीते द्रढ निश्रय करी मकवाणा केसरदेवजी सैन्यने सज्ज करवा छाग्या, पोते जाणता हता के भयभीत हमीर कहेवराव्यां छतां सन्मुख आवे एवा संभव नथी, पण एवा प्रसंग मळे के तेने लडवा आववुंज पहे, तो कार्यसिष्टि थाय, एम अनेक प्रकारे निरंतर तर्क वितर्क करता हता, तेवामां हूते खवर आप्या के हमीरनी सांढोतुं म्होटुं टोळुं आपणी सीमनी आसपास चरे छे। ए सांभळी केसरदैवजी तुरतंज सी घोडेस्वार सहित त्यां जह पहेंचिया अने तमांम सांहोने कीर्ति-गढमां लड़ आव्या. ए बात हमीरे जाण्या छता केसरदेवजी साथे होड़ा करवा होम भीडी नहिः फरी कोइ एक समये हमीरना कुडम्बनी आशरे सवासो सुमरीओ समुद्र (सिन्ध्र) किनारे पर्वणी स्नान अर्थे आव्यानां खवर मळतां पांच हजार स्वारोने साथे छइ केसरदेवजीए ते तरफ प्रयाण कर्धे. त्यां हमीरना जमाना साथे आवेळा माणसोने प्रहारथी भयभीत करी भगाड्या अने तमाम सम-रीओने वाहनो सहित पोताना शहरमां दाखल करी दीधी, आ हकीकत हमीरना सांभळवामां आवतां ते अत्यंत क्रोधायमान थयो, तेणे सलाह माटे केटलाएक रुद्ध लोकोने कीर्तिगढ मोकली केसर मकवाणाने कहेवराव्युं के आपे वारंवार आवी उपाधि करवातुं कारण ग्रुं छे ? जों आपने विशेष देशनी इच्छा होयतो ते आपवा हुं तैयार छुं; मारा जनानाने आवेछ माणसो साथे मोक-लावी आपशो. केसरदेवजीए जवाव आप्यो के तारी सुमरीओने में आंही सत्कार पूर्वक सारी रीते राखेल छे, तेना उपर कोइ जातनो जुल्म गुजारवा मारी इच्छा नथी, मारेतो फक्त तारी

साथे युद्ध करतें छे, युद्ध करी ख़ुशीथी तारी स्तीओने तुं लड़ जा. ए शिवाच सोंपवामां निह आवे. आवेला माणसोए शमीजह हमीरने सर्व समाचार आप्या. त्यारे हमीरे फरी कहेवरान्युं के—जो आपनी एमज इच्छा छे तो मले, परंतु उनाळानो समय होवाथी, अमोने घणी हरकत आवशे, माटे चोमासामां युद्धतुं मुकरर करो तो सारं. त्यारे केसरदेवजीए कहुं के—हुं तमारा माटे खोराक पाणीनो पूरतो वंदोवस्त राखीज, तमोने मारा मिजमान समजी युद्ध शिवाय वीजी कोइ वावतमां दुःखी निह थवा दृष्टं. आ रीते केसरदेवजीनो अत्यंत आग्रह जोह हमीरने "हा" कह्या शिवाय एके रस्तो न सूज्यों. केसरदेवजीए युद्ध अर्थे आवनार अतिथिओना आतिथ्य माटे पाणी तथा जवनी जरुर होवाथी कह कइ जगोए खोदवाथी पाणी निकळके ते जाणवा माटे पेला ज्योतिर्विद पांडितने वोलावी पूछ्युं त्यारे पंडिते कह्युं के—मनुष्योना अंगमां जे रीते नाडीओ रहेली छे ते रीते पृथ्वीमां पण केटलीक उंची अने केटलीएक नीची नाडीओ छे. वर्षा काळमां आकाशमांथी सर्व जळ एकज रंगनुं एकज स्वादनुं पड़े छे, ते जळ भूमिना संयोगथो अनेक रंग अने अनेक स्वादवाछुं थाय छे, एनी परीक्षा पृथ्वी प्रमाणे करवी जोहए. अर्थात् जवी पृथ्वी तेवुं जळ होय छे.

इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, सोम अने इशान ए आठ देवताओं क्रमपूर्वक पूर्व आदि आठ दिशाओंना स्वामी छे. ए आठ दिशाओंना स्वामीओंना नामथी आठ शिरा प्रसिद्ध छे, जेमके अन्द्री, आग्नेयी, याम्या इत्यादिः तेमज वचमां एक म्होटी नाडी "महाशिरा" ए नामथी प्रसिद्ध छे, एथी अधिक वीजी पण सेंकडो शिराओं निकळेली छे अने ते पोतपोताना नामथी प्रसिद्ध छे.

जे शिरा पातालधी सीधी उपरना भागमां नीकळती होय ते तथा पूर्व आदि चारे दिशा-ओमां जे शिरा होय ते शुभ अने अग्नि कोण आदि चारे कोणमां जे शिरा होय ते अशुभ जाणकी.

जो जलहीन देशमां वेतसनां दृक्ष होय तो तेनी पश्चिमे त्रण हाथ उपर दोढ पुरुष नीचे जळ होय छे अने त्यां पश्चिम शिरा वह छे मनुष्य पोताना हाथ उंचा करी उमा रहे एटली छंबाइने एक पुरुष कहे छे अने ते एकसो बीश आंगळ होय छे ते जगोंए नीचे मुजब चिन्ह होय छे. अर्थ पुरुष जेटलुं खोदतां पांडु रंगनुं देहकुं तेमज पीळा रंगनी माटी नीकळे छे पछीं पुरुमेद पथ्थर नीकळे छे अने एना नीचे पाणी होय छे.

निर्नळ देशमां जो जांबुनुं झाड होय तो तेनी उत्तरे त्रण हाथ उपर वे पुरुप नीचे पूर्व शिरा वहे छे, त्यां खोदवाथी छोढाना गंधवाळी माटी नीकळे छे, ते नीचे पांडर रंगनी माटी नीकळे छे अने एक पुरुष नीचे खोदतां देडकुं नीकळे छे. जांबुना झाडथी पूर्व दिशामां समीप सपेनो राफडो होय तो ते दृक्षथी दक्षिणे त्रण हाथ उपर वे पुरुप नीचे खोदतां मीढुं जळ भीकळे छे, ते जगोए अर्घ पुरुप खोदतां माछछुं अने कश्चतरना जेवा रंगवाळो पत्थर नीकळे छे, त्यां नीछी माटी होय छे, अने पाणी घणुं नीकळे छे तेमज ते छांवा वखत सुधी रहे छे.

निर्जळ देशमां उदम्बरतुं दृक्ष होय तो तेनी पश्चिमेत्रण हाथ उपर अही पुरुप नीचे शिरा होय छे, एक पुरुप नीचे खोदतां खेत सर्प नीकळे छे. पछी अंजन समान अति काळा रंगनो पत्थर नीकळे छे. एनी नीचे सुंदर जळवाळी शिरा होय छे.

अर्जुनना दूसनी उत्तरे जो राफडो होय तो ते दूसनी पश्चिम त्रण हाय उपर साडा त्रण पुरुष नीचे जळ होय छे. अर्थ पुरुष जेटलुं खोदतां श्वेत रंगनी घो नीकळे छे. एक पुरुष नीचे भुखरा रंगनी अने ते नीचे काळी पीळी तेमज श्वेत रेतीथी विश्वित थएली माटी नीकळेछे. एनी नीचे घणुं जळ होय छे.

राफडावाळुं निर्िंडी दृक्ष होय तो तेनाथी दक्षिणे त्रण हाथ उपर सवा वे पुरुष नीचे मीठुं अने कोइ दिवस न सुकाय एटछुं जळ होय छे. अर्थ पुरुष खोदतां रोहित मत्स्य नीकळे छे अने ते नीचे अनुक्रमे, किपल तेमज पांडुरंगनी माटी नीकळे छे अने पत्थरना सृक्ष्म कणोथी युक्त रेती नीकळे छे. ए नीचे पुष्कळ जळ होय छे.

वोरडीना झाडथी पूर्वे जो राफडो होय तो ए दृक्षथी पिश्वमे त्रण हाथ छेटे त्रण पुरुव नीचे जळ नीकळे छे, तेर्नु चिन्ह प्रथम अर्घ पुरुष नीचे खोदतां श्वेनरंगनी छिपकळी नीकळे छे.

निर्जेळ देशमां पलाशना द्रसयुक्त वोरडीनुं द्रस होय, तो तेनी पश्चिमे त्रण हाथ उपर सवा त्रण पुरुप नीचे जळ होय छे. तेनुं चिन्ह एक पुरुप खोदतां डुंडुभ अर्थात् एक प्रकारनो निर्विप-सर्प नीकळे छे.

ज्यां वीली तथा उपरातुं झाड साथे होय तेनाथी दक्षिणे त्रण हाथ उपर त्रण पुरुष नीचे पाणी होय छे. तेतुं सिन्ह अर्थ पुरुष खोदतां काळां रंगतुं देडकुं नीकळे छे. काकोदम्बरिकाना द्रक्षनी अति समीपे राफडो होय तो ए राफडानी नीचे सवा त्रण पुरुष खो स्वाथी पश्चिम दिशामां बहेनारी शिरा नीकळे छे, ते जगोए पांड अने पीळा रंगनी मृत्तिका नीकळे छे, गोरस समान श्वेत रंगनो पत्थर नीकळे छे, अने अध पुरुष नीचे कुमुदपुष्पसमान श्वेत रंगनो पुषक देखात्र दे छे.

निर्नेठ देशमां किन्छित छल जोवामां आवे तो ते छल्थी पूर्वे त्रण हाथ उपर सवात्रण पुरुप नीचे दक्षिण जिरा वहे छे. तेतुं चिह्न प्रथम नीलकमण्ड जेश रंगनी मृत्तिका नीकळे छे. पछी कपोत जेवा रंगनी मृत्तिका जोवामां आवे छे, अने एक हाथ नीचे मन्छी नीकळे छे. जेमां वकराना जेवो दुर्गिथ होय छे, त्यां थोडुं खाराशवाळुं जळ नीकळे छे.

निर्नेळ देशमां ज्योनाक एस जोवामां अवि तो तेनाधी वायत्र्य कोणमां वे हाथ उपर खोदतां त्रण पुरुष नीचे शिरा नीकळे छे, ए शिरातुं नाम क्रमुदा छे.

विभीतकना वृक्ष समीप दक्षिण तरफ राफडो होय तो ए युक्षयी वे हार्य पूर्वे दोढ पुरुष नीचे शिरा होय छे.

वेहेडाना द्वस्थी पश्चिम दिशामां राफडो होय तो ए द्वस्थी एक हाथ उत्तरे साडाचार पुरुष नीचे शिरा होय छे. तेनां चिह्न प्रथम एक पुरुष खोंदवायी खेत रंगनो विश्वंभरक जोवामां आवे छे. फरी केसरीरंगनो पत्थर नीकळे छे, एती नीचे पश्चिम दिशानी शिरा नीकळे छे, परंतु त्रण वर्ष पछी ए शिरा नष्ट थइ जाय छे.

कोविदार इसना इसान खुगामां क्रिसथी युक्त श्वेन रंगनी माटीनो राफडी होय त्यां ते इस अने राफडानी मध्यमां साडाचार पुरुष नीचे पुष्कळ जळ होय छे, तेतुं चिन्ह प्रथम एक पुरुष खोदतां कमळपुष्पना मध्य भाग समान रंगनो सप नीकळे छे, लालरंगनी भूमि देखाय छे, अने पछी कुरुविदनामनो पत्थर नीकळे छे.

निर्जिल देशमा राफडाराळुं सप्तर्भागुं हुस होय तो तेनाथी एक हाथ उत्तरमां पांच पुरुष नीचे जल होवुं जोइए. तेनां चिह्न मथम अर्थ पुरुप खोदतां लीछुं देडकुं नीकले छे, पछी हिताल-ना जेवी पीला रंगनी पृथ्शी देखाय छे, फरी मेघ समान काला रंगनो पत्थर निकले छे, ए सर्वनी नीचे मीठां जलने वहन करनारी उत्तर शिरा होय छे. चोहे ते हुसनी नीचे देडको वेठेल जोवामां आवे तो ए वृक्षयी एक हाथ उत्तरमां साडा चार पुरुष नीचे जल होय छे. तेनुं चिह्न एक पुरुष नीचे खोदतां नकुल नीकळे छे, पछी क्रमयी नीली, पीळी अने खेत माटी नीकळे छे, तेमज देडका समान रंगनो पत्थर नीकळे छे.

जो करंज द्वसनी दक्षिणमां राफडो जोवामां आवे तो ए द्वसथी वे हाथ दक्षिण दिशामां साडात्रण पुरुष निचे शिरा होय छे, तेनुं चिद्र अधे पुरुष खोदतां काचवे। नीकळे छे, अने पछी पूर्वनी शिरायी मथम जळ नीकळे छे, अने वीजी स्वादिष्ट जळवाळी उत्तर शिरा वहे छे. मथम नीला रंगनो पत्यर नीकळे छे, अने तेनी नीचे जळ होय छे.

मधुक दृक्षथी उत्तरमां राफडो होय तो ते वृक्षथी पश्चिममां पांच हाथ पछी साडासात पुरुप नीचे जळ होय छे. तेनुं चिन्ह प्रथम एक पुरुप खोदवाथी म्होटो सप देखाय छे, धूम्र वर्णनी पृथ्वी नीकळे छे, फरी कळथी जेवा रंगनो पत्थर नीकळे छे. त्यारवाद जेमां निरंतर फीणवाळुं पाणी वहे छे एवी पूर्व शिरा निकळे छे.

तिलक्ष्मृक्षयी दक्षिण दिशामां क्षश अने दुर्वाथी युक्त स्निग्ध वरमीक होय तो ते वृक्षथी पांच हाथ पश्चिमे पांच पुरुष नीचे जळ होय छे, त्यां पूर्व शिरा वहे छे.

कदंव द्वक्षथी पश्चिममां राफडो होय तो ते द्वक्षथी त्रण हाय दक्षिणमां पोणाछ पुरुष नीचे जळ होय छे त्यां उत्तर शिरा वहे छे, जळ घणुं नीकळे छे, परंतु एमां लोहना समान गन्ध आवे छे.तेनुं चिह्न एक पुरुष जेटलुं खोदवाथी सुवर्ण जेवा रंगवाळो देडको अने पीळी माटी नीकळेछे,

राफडाथी चेराएल ताल अथवा नाळीएरतुं वृक्ष होय तो तेनाथी छ हाथ पश्चिममां चार पुरुप नीचे दक्षिण शिरा होय छे.

किपत्थ वृक्षयी दक्षिणमां राफडो होय तो ते वृक्षयी सात हाथ उत्तरे खोदवाथी पांच पुरुष नीचे जळ नीकळे छे. तेनुं चिद्र एक पुरुष नीचे चित्रवर्णनो स्री अने काळी माटी तथा सांबीओ पत्यर नीकळे छे. फरी खेन मृत्तिका निकळ्या पछी उत्तरशिरा नीकळे छे.

अवमंतक हक्षयी डावी तरफ वोरडीनुं झाड अथवा राफडी है।य तो ते हक्षणी छ हाथ उत्तर दिशामां साडात्रण पुरुप नीचे जळ होय छे, तेनुं चिह्न प्रथम एक पुरुप खोदवाथी काचवो नीकळे छे, फरी धूसर वर्णनो पत्थर अने रेतीथी मिश्रित थएछी माटी नीकळे छे ते पछी दक्षिण शिरा निकळ्या वाद इशोंन कोणनी शिरा निकळे छे.

हरिद्रना दृक्षथी डावी वाजुए राफडो होय तो ते दृक्षथी त्रण हाथ पूर्वे एक तृतीयांश सहित पांच पुरुप नीचे जळ होय छे. तेनुं चिद्र एक पुरुप नीचे नीलो सर्प नीकले छे. फरी पीळी माटी, लीला रंगनो पत्थर अने काली भूमि निक्ल्या पछी प्रथम पश्चिम शिरा अने पछी दिक्षण शिरा नीकले छे.

निर्जळ देशमां ज्यां घणा जळवाळा देश जेवां चिह्नो जीवामां आवे अने ज्यां वीरण तथा दुवी अति कोमळ होय त्यां एक पुरुष नीचे जळ होय छे.

भागीं, त्रिवृता, दन्ती, स्करपादी, लक्ष्मणा, नवमालिका ए औपिव ज्यां होय त्यांथी वे हाथ दक्षिणे कण पुरुप नीचे जळ होय छे.

ज्यां स्निग्ध अने लांवी ज्ञाखाओथी युक्त वामन अर्थात् न्हानां न्हाना अने फेलाएलां वृक्ष होय त्यां जळ समीपें होय छे, अने ज्यां छिद्रवाळां भांग्यां दुट्यां पणवाळां सुकाइ गएलां वृक्ष होय त्यां पाणी वीलकुल होतुं नथी.

ज्यां तिलक, आम्रातक, वरुणक, भरलातक, विरुव, तिन्दुक, अंकोल पिंडार शिरीप, अंजन, परूपक, अवंजुल अने अतिवला ए हसो वहु स्निग्य राफडाओथी वीटाएलां होय त्यां ए हसोथी त्रणें हाथ उत्तरमां साहाचार पुरुष नीचे जल होय छे.

जे भूमिमां वीजे कोइ टेकाणे तृग न होय अने फक्त वचमां तृणयुक्त देखाय अथवा सर्व भूमिमां तृण होय परंतु फक्त एक स्थान तृणहीन होय तो ते जगोए साडाचार पुरुष नीचे शिरा होय छे, अथवा त्यां धन दाटेलुं होय छे.

ज्यां कांटावाळा वृक्षोमां एक कांटा वगरतुं वृक्ष होय अथवा कांटा विनाना वृक्षोमां एक वृक्ष कांटावाळुं होय ते। ए दृक्षयी त्रण हाथ पश्चिमे एक तृतीयांशयुक्त त्रण पुरुष खोदवाणी जळ अथवा धन नीकळे छे.

ज्यां पगना प्रहारथी पृथ्वीमां गंभीर शब्द थाय त्यां साहात्रण पुरुष नीचे जळ होय छै, अने उत्तरिशरा नीकळे छे,

वृक्षनी एक शाखा पृथ्वी तरफ झुकी रही होय अथवा पीळी पडी गइ होय तो ते शाखा-नी नीचे त्रण पुरुप खोदवाथी जळ नीकळे छे. जे दक्षनां फळ तथा फूलमां विकार न होय अर्थात् कोइ जुदीज तरेहनां होय ए वृक्षथी त्रण हाथ पूर्वे चार पुरुष नीचे शिरा होय छे.नीचे पत्थर नीकळे छे अने भूमि पीळा रंगनी होयछे.

ज्यां कंटकारिका कांटाथी रहित अने श्वेत पुष्पोथी युक्त देखाय त्यां तेना नीचे साडा त्रण पुरुष खोदवाथी जळ नीकळे छे.

निर्जळ देशमां जो वे माथावाळुं खजूरीनुं द्वक्ष होय तो ते द्वक्षथी वे हाथ पश्चिमे त्रण पुरुष नीचे जळ होनुं जोइए.

श्वेत पुष्पयुक्त कार्णिकार दृक्ष अथवा पलाश दृक्ष होय तो ते वृक्षथी वे हाथ दिक्षणे त्रण पुरुष नीचे जळ होय छे.

भूमिमां ज्यां गरमी अथवा धुंवाडो नीकळतो देखाय त्यां वे पुरुष नीचे घणुं जल वहन करनारी शिरा होवी जोइए.

जे स्वेतरमां स्वेती उत्पन्न थइ नष्ट थइ जाय अथवा वहु स्निग्ध स्वेती होय तेमज स्वेती उत्पन्न थइ पीळी पढी जाय त्यां वे पुरुष नीचे महा शिरा होय छे, अर्थात घणुं जळ नीकळे छे.

तइन निर्जेळ देशमां उंटनी ग्रीवा माफक भूमिमां नीची उंची शिरा वहे छे.

पीछुद्दक्षना इशान खूणामां जो राफडो होय तो ते राफडाथी साडाचार हाथ पश्चिमे पांच पुरुष नीचे उत्तर दिश्चा तरफ वहेनारी शिरा होय छे त्यां खोदवाथी एक पुरुष नीचे देडकुं नीकळे छे, फरी किपल अने लीला रंगनी माटी तेमज पत्थर नीकळे छे, ए वधां चिह्न हेठे जळ होय छे.

पीद्धवृक्षयी पूर्वे राफडो होय तो ते वृक्षयी साडाचार हाथ दक्षिणे सात पुरुष नीचे जळ होवुं जोइए, त्यां एक पुरुष नीचे खोदतां श्वेत अने काळा रंगनो एक हाथ छांवो सर्ष नीकळे छे. ते नीचे घणुंज खारुं जळ वहन करनारी दक्षिण शिरा नीकळे छे.

करीर वृक्षथी उत्तर दिशामां राफडो होय तो ते वृक्षथी साडाचार हाथ दिश्लणे दश पुरुष नीचे मीद्धं जळ होवुं जोइए, त्यां एक पुरुष खोदवाथी पीळा रंगनुं देडकुं नीकळे छे.

रोहितक दृक्षनी पश्चिमे जो राफडो होय तो ते वृक्षथी त्रण हाथ दक्षिणे वार पुरुप नीचे खोदतां खारुं जळ वहन करनारी पश्चिमशिरा नीकळे छे.

इन्द्रतरुनी र्वे जो राफडो देखाय तो ए वृक्षथी एक हाथ पश्चिमे चौद पुरुष खोदवाथी शिरा नीकळे छे, त्यां एक पुरुष खोदतां किपलरंगनी घो जोवामां आवे छे.

जो सुवर्णवृक्षनी डावी वाजुए राफडो होय तो ए वृक्षथी वे हाथ दक्षिणे पंदर पुरुष नीचे खारुं जळ होय छे, अर्ध पुरुष नीचे नक्कल नीकले छे, त्रांवाना रंगनो पत्थर नीकल्या वाद लाल रंगनी भूमि नीकले छे, अने ते नीचे दक्षिणशिरा वहे छे.

वोरडी अथवा रोहिडा ए वे द्रक्ष राफडा विना पण जो भेळा देखाय तो ए वृक्षोथी त्रण हाथ पश्चिमे सोळ पुरुष नीचे घणुंज मीठुं पाणी नीकळे छे, पहेलां दक्षिण शिरा अने पछी उत्तर शिरा वहे छे,लोटना समान श्वेत रंगनो पत्थर तथा तेत्रीज माटी नीकळे छे, अने अर्थ पुरुष नीचे बींछी देखाय छे.

जो केरडाना द्वक्ष सिहत वेरिडीनुं झाड होय तो ते द्वक्षोथी त्रण हाथ पश्चिमे अदार पुरुष खोदवाथी जळ नीकळें छे, त्यां घणुं जळ वहन करनारी इंशानिशरा होय छे.

पीछ्वृक्षयुक्त वोरहीतुं झाड होय तो ते वृक्षोथी त्रण हाथ पूर्वे वीश पुरुप नीचे खारुं जळ होय छे, जे कदी पण सुकातुं नथी.

ज्यां अर्जुनवृक्ष अने करीरवृक्ष अथवा अर्जुनवृक्ष अने विल्व वृक्ष वन्ने एकत्र होच तो ते वृक्षोथी वे हाथ पश्चिमे पचोश पुरुष नीचे जळ होय छे.

जो राफडानी उपर दुवी अने श्वेतरंगनो कुश होय तो ते राफडानी मध्यमां कूप खोद-वाथी एकवीश पुरुष नीचे जळ नीकळे छे,

ज्यां कदंवना झाडयुक्त भूमि होय अने राफडा उपर दुवी देखाती होय तो त्यां ए कदंव वृक्षथी वे हाथ दक्षिणे पचीश पुरुष नीचे जळ नीकळे छे.

त्रण राफडानी वचमां त्रण प्रकारना त्रण वृक्षो सहित रोहिडानुं द्रक्ष होय तो त्यां जळ होवुं जोइए. मध्यमां रहेळ रोहीडाना वृक्षथी चार हाभ अने सोळ आंगळ उत्तरे चाळीश पुरुष खोदवाथी पत्थर नीकळे छे अने एनी नीचे शिरा वहे छे.

ज्यां घणी गांठोवाळुं शमीवृक्ष होय एनी उत्तर दिशामां राफडो होय तो ते वृक्षथी पांच हाथ पश्चिम पचाश पुरुष नीचे जळ होय छे.

पांच राफडा एक ठेकाणे होय अने तनी मध्यना राफडो श्वेत होय तो ते श्वेत राफडानी वच्चे पंचावन पुरुष खोदवाथी जळनी शिरा नीकळे छे.

ज्यां पलाशवृक्षयुक्त शमीवृक्ष होय त्यां ए हक्षोथी पांच हाथ पश्चिम साठ पुरुष नीचे जळ होय छे. प्रथम अर्घ पुरुप खोदतां सर्प नीकळे छे, अने पछी रेतीधी मळेली पीळी माटी नीकले छे.

ज्यां राफहाथी घेराएछं श्वेतरंगनुं रोंहीडानुं वृक्षा होय त्यां ते वृक्षाथी एक हाथ पूर्वे सतर पुरुष नीचे जळ होय छे.

ज्यां वहु कांटाथी युक्त शमीवृक्ष होय त्यां ते वृक्षाथी एक हाथ दिक्षाणे पच्चोतेर पुरुष नीचे जळ होंय छे, अने अधेपुरुष खोदतां सर्प नीकळे छे.

मरुदेशमां जलज्ञाननां जे चिह्नो कह्यां ते चिन्होथी जांगल देशमां पाणी होतुं नथी,जांबु, वेतस आदि वृक्ष्गोनां चिन्होथी प्रथम जे जलज्ञान कह्युं ते चिन्हो जो मरुदेशमां देखाय तो निजल देशमां जेटका पुरुपतुं प्रमाण कहुं तेथी मरुदेशमां वमणा पुरुष खोदवाथी पाणी नीकळे छे.

जे देशमां पाणी घणुं होय ते अतुप, ज्यां जळनो अभाव होय ते मरुस्थल अने ज्यां वहु झाझुं निह नेम वहु थोडुं पण नहीं अर्थात सामान्य जळ होय तेने जांगल देश कहे छे. ए रीते त्रण प्रकारना देश छे.

जांबु, नेत नसोतर, मूर्वा शारिवा, शिवा, श्यामा, वाराही, ज्योतिष्मती, गरुडवेगा, स्रकरिका, मापपणीं अने व्याघ्रपदा ए औपिधेओ जो राफडा उपर होय तो ते राफडाथी त्रण हाथ उत्तरे त्रण पुरुप नीचे जळ होय छे; आ प्रमाण अनुपदेशमां जाणवुं, जांगळ देशमां उपर कहेळां चिन्हों देखाय तो पांच पुरुप नीचे अने मरु देशमां देखाय तो सात पुरुप नीचे जळ होयछे.

भूमि एक रंगनी होय अने ज्यां तृण, वृक्षा, वल्मीक के गुल्म न हाय एवी भूमिमां जो विकार अर्थात् अन्य प्रकारनी भूमि देखाय तो त्यां पांच पुरुष नीचे जळ होय छे. भूमिमां एकज मूळथी घणी शाखाओनो समुह उत्पन्न थाय तेने गुल्म कहे छे.

ज्यां स्निग्ध अने नीचाणमां रेतीवाळी अथवा पग राखवाथी शब्दायमान धती पृथ्वी होय त्यां साडाचार अथा। पांच पुरुष नीचे जळ होंय छे.

ज्यां घणां स्निग्ध वृक्षो होय त्यां ए वृक्षोथी दक्षिणे चार पुरुष नीचे वहु जळ होय छे, तेमज घणा वृक्षोमां एक दृक्ष विकारवाळुं होय अर्थात् एनां फळ अने पुष्प जुदी तरहनां होय तो ते वृक्षाथी दक्षिणमां पण चार पुरुष नीचे जळ नीकळे छे.

जांगल अथवा अनुपदेशमां ज्यां पग मूकवाथी भूमि दवाइ जाय, त्यां दोढ पुरुष नीचे जळ होय छे तेमज ज्यां घणां कीट देखाय अने तेओने रहेवानुं क्यांड विल न होय त्यां पण दोढ पुरुष नीचे जळ होतुं जोडण.

ज्यां वधी भूमि उप्ण होय अने एक भागमां शीतल होय तथा ज्यां वधी भूमि शीतल होय अने एक भागमां उष्ण होय त्यां साडात्रण पुरुष नीचे जळ होय छे.

जांगल अने अनुप देशमां ज्यां इन्द्रधनुप, मत्स्य अथवा वल्मीक जोवामां आवे त्यां चार हाथ नीचे जळ होय छे.

जांगल अथवा अतुपदेशमां ज्यां घणा राफडाओनी पंक्ति होय अने ते राफडाओमां एक राफडो सर्वथी उंचो होय ते उंचा वल्मीक नीचे चार हाथ खोदवाथी शिरा नीकळे छे. तेमज ज्यां खेती उत्पन्न थइ सुकाइ जाय अथवा उत्पन्न थायज निह त्यां पण चार हाथ नीचे जळ होयछे.

वड, खाखरो अने उमरो ए त्रण ज्यां एकत्र उमेलां होय त्यां ए वृक्षोनी नीचे त्रण हाथ खोदवाधी जळ नीकळे छे, तेमन ज्यां वड अने पीपळो वन्ने साथे होय त्यां पण ते वृक्ष नीचे त्रण हाथ खोदवाथी जळ नीकळे छे. उपरना वन्ने स्थानमां उत्तरिशरा वहें छे.

जे भूमिमां वृक्ष, गुलम अने लताओं स्निग्ध तेमज छिद्रहीन पर्णोधी युक्त होय त्यां त्रण पुरुष नीचे शिरा होय छे, स्थलपद्म, क्षुर, उन्नीर, कुलगुन्द्र, काश, कुश, नालिका अने नल ए तृणों तेमज खजूरी, जांबुडी, अर्जुन अने वेतस ए हक्षों होय त्यां अथवा जेमांथी दूध नीकळतुं होय तेवां हक्षा, गुलम के लताओं ज्यां होय त्यां तेमज छत्रा, इभ, नाग, शतपत्र, नीप, नक्ष-माल, सिन्दुवार, विभीतक अने पदयन्तिका ज्यां होय त्यां त्रण पुरुष नीचे जळ होय छे. ज्यां एक पर्वत उपर वीजो पर्वत होय त्यां पण ए उपला पर्वतना मूळमां त्रण पुरुष नीचे जळ होय छे.

जे भूमि मौजिक अने दर्भथी युक्त होय तेमज ज्यां पत्यरनी कणिकाओथी मळेली नीली मोटी होय त्यां घणुंज मीटुं जळ होय छे. ज्यां काळी अथवा लाल माटी होय त्यां पण वहु मधुर जळ होय छे. पत्थरना कणोधी मळेली त्रांवाना रंग जर्जा भृमि होय तो तेमां (कपाय) कसाएला स्वादतुं, किपलरंगनी त्रुमि होय तो खारुं, पांहुरंगनी भूमि होय तो लवणना स्वादतुं अने नीला रंगनी भूमिमां मीठुं जल होय छे. ज्यां शाक, अश्वक्रणे, अर्जुन, विल्वसर्ज, श्रीपणीं, अरिष्ठ अने ए वधां छिद्रवाळां पणींथी युक्त होय अन ज्या हक्ष, गुल्म अने लताओ पण छिद्रवाळा पणोंथी युक्त तेमन रुक्ष होय त्यां जळ घणेज दूर होय छे.

जे भूमि सूर्य, अग्नि, भस्स, उंट अने गदर्भना रंग समान होय ते भूमि निर्जळ होय छे. जो लाल रंगनी भूमिमां लाल रंगना अंक्ररोथी युक्त करीरनां दृक्ष होय अने ए दृक्षोमांथी दूध नीकळतुं होय तो त्यां पत्था नीचे जळ होय छे.

जे शिका वैदूर्यमणि, मुद्ग अने मेघ समान कृष्ण वर्णनी अथवा पाकेल गूलरना फळ समान रंगनी होय अने जेने तोडवाथी अंजन समान अति कृष्ण वर्ण नीकळे अथवा किपलवर्ण जणाय तो ते शिलानी समीपमांज घणुं जळ होय छे.

जे शिला पारावत, क्षौद्र, घृत, रेशमी कपडुं अथवा सोमवल्लीना समान रंगनी होय ते शिला पण तुरतमां जळने अक्षय वनावे छे.

जे शिला त्रांवाना रंगना विन्दु अथवा विचित्र विन्दुओथी युक्त होय, पांडु रंगनी होय, भस्म, उंट, गर्दभ अने भ्रमरना समान रंगनी होय; अंगुष्ठिक दक्षना पुष्प समान नीली अन लाल होय अथवा अग्नि समान रंगनी होय ते शिला निर्िळ जाणवी.

जे शिला चन्द्रनी चांदनी, स्फाटिक, मोतो, सुवर्ण अने इन्द्रनील मिणना समान वर्णनी होय, हिंगळा समान वहु लाल, अथवा अंजन समान वहु कृष्ण वर्ण होय, उदय थता सूर्यना किरणो समान वहु लाल अने चमकदार होय अथवा हरितालना समान पीळा रंगनी होय तेशिला श्रम होय छे.

शुभ शिला कही ते सर्व अभेद्य छे अर्थात् एने तोडवी नहि. ए शिलाने हमेशां यक्षो अने नागो सेवे छे, जे राजाओना राज्यमां एवी शिला होय त्यां कदिवण अदृष्टि थती नथी.

कूप आदि खोदती वखते शिला नीकळी आवे अने जो ए न बूटती होय तो तेना उपर

पळाश अने तिन्दुकनां काष्ट्र सळगावी तेने लाल करवी फरी ए उपर कळी चुनाथी मळेलुं जळ छांटवाथी तुरत तुटी जाय छे.

मोक्षकनी भस्म मेळवी पाणीने उकाळवुं. पछी एमां शरनो खार मिळाव्या पछी तपावेछी शिळा उपर सातवार छांटवाथी बुटी जाय छे.

तक्र, कांजी, मद्य, कळथी अने वोरां ए सर्वने एक पात्रमां सात रात्री पर्यन्त राखवां, पछी ए उपर कह्या प्रमाणे तपावेली शिला उपर वारंवार छांटवाथी फाटी जाय है.

लींबडाना पर्ण तथा छाल, नलनुं नाल, अपामार्ग, टेंसुरणीनां फळ, गुड्ची ए सर्वनी भस्मने गौमुत्रथी गळीनें, पत्थरने तपावी तेना उपर छ वखन छांटवार्था ते त्रुटी जाय छे.

पूर्व पश्चिम लांबा सरोवरमां जर्ळ घणा समय मुधी रहे छे अने दक्षिण उत्तर लांबा स-रोवरमां पाणी रहेतुं नथी, कारणके पवनथी उत्पन्न थएला म्होटा तरंगोथी बुटी जाय छे.

जो दक्षिण अने उत्तरमां लांबु चतुष्कोण सरोवर वनावबुं होय तो जळनी चाटयी वचा-वया माटे किनाराओने मजवूत काष्ट्रथी वांधवा अथवा पत्थर अगर इंटोशी चणी लेवा. ए चणती वखते तेनी पाळनी माटीना भागने घोडा अने हाथी आदिना पगशी कचराववा जेथी माटी दवाइ जाय अने जळना धकाथी दूटे नहीं.

ते वापीना किनारा उपर ककुभवट, आम्र, प्टक्ष, कदंव, निचुल, जांबु, वेतस, नीप, क्रुरवक, ताल, अशोक, मधूक अने वक्कल इत्यादि हक्षो वाववां.

ते वापीयांनुं वधारानुं जळ नीकळी जवा माटे एक तरफ मार्ग राखवो, ए मार्गने पत्थरो-थी पाको करवो, अने छिद्र रहित काष्ट्रना कपाटथी वंच करी उपर माटीथी दवाववुं.

कुदरनर्था थएला पद्मयुक्त अगाध जलाशयने पद्माकर अने तडाग कहेवां, कृत्रिय जला-श्चयने कासार, सरसी अने सर कहेवां. जेमां थोडुं पाणी होय तेने वेरांत, पत्वल अने अल्पसर कहेवा तेमज वेड तरफ लांवां जलाशयने वापी नाम आपवृं.

अंजन, मुस्ता, उशीर, राजकोशातक, आमळां, अने निर्मळी ए सर्वतुं चूर्ण करी कुवामां नांखवाथी मेळुं, कडवुं, खारुं स्वादरहित अथवा दुर्गन्ध युक्त पाणी होय ते निर्मळ, मीठुं सुगन्ध-दार अने उत्तम गुणवाळुं धइ जाय छे.

हस्त, मधा, अनुराधा, पुष्य, धनिष्टा, त्रण उत्तरा अने शतभिषक्, ए नक्षत्रो कूपा-रंभमां श्रेष्ठ छे.

वरुणने विलदान आपी वड अथवा नेतरना लाकडानी खीलीतुं गन्ध, पुष्प, भूप आदिथी पूजन करी ते खीली शिराना स्थानमां नांखवी.

आ रीतें सिवस्तर जलपरीक्षा जाण्या पछी मकताणा केसरदेवजीए हानुसैन्यने आव-वाना मार्गमां छ छ गाउने छेटे निर्मेळ अने पुष्कळ जळवाळां नवाणो खोदान्यां अने हानुओना अश्व विगेरेने चारो पुरो पाडदा मांट नवाणोनी आसपास यवना जवरां क्षेत्रो वबरान्यां. राजधर्ममां कहुं छे के हानुओने युष्कतुं आमंत्रण आप्या पछी क्षणमात्र विलंब करवो निह, छतां मकवाणा केसरदे-वजीने भाविए एवो भूलावो खबडान्यों के ज हानुना नगर पर पोताने चढाइ करी जबुं जोइए,तेने पोताना नगर पर चढी आववानी तक आपी, धान्य वगेरेथी भूमि सुसमृष्क होय तोपण हानुना आगमन पहेलां एक तणखलुं पण एमां न रहेवा देवुं जोइए तेने वदले पोते हानुना सैन्यने पाणी तेमज चारो पूरो पाडवानी पंचातमां पड्या. शस्त्र अस्तने सज्ज करी सैन्यनी जमावट करवी जोइए तेने वदले कथा वार्ताना श्रदण मननमां केटलोक वस्तत विनाववा लाग्या. जाणे केम कोठ अंगित स्नेहीओ आववाना होय अने तेने सरभराथी संतुष्ट करवाना होय! मकवाणा केसरदेवजी राजनी-तिमां परम प्रदीण छतां गफलतमां ने गफलतमां रह्या. एनुं कारण मात्र ''भावि" जे काळे जे वनवानुं होय छे ए वन्या विना रहेतुंज नथी. भावि आगळ म्होटा महोटा महात्माओ पण भूल खाइ गया छे. तो पछी केसरदेवजीनुं द्युं कहेवुं ?

> "अवर्यं सावि भावानां, प्रतीकारो भवेद्यदिः तदा दुःखे ने लिप्येरन्नलरामयुाधिष्टिराः॥"

जे दात अवज्य वनवानी छे, तेनो उपाय जो आगळथी सूजतो होत तो नळ, राम अने युविधिर जेवा महात्माओ कदी पण दु:खथी छेपात नहीं; वळी—

" नथी खरो आ मृग आसुरी छे, हण्यानी इच्छा मनमां करी छे; वने फरे राम गुमावी नार, थनार ते थाय न ना थनार."

ए नियमानुसार यक्तवाणा केसरदेवजी पण शत्रुने युद्धनुं आमंत्रण आपी क्ववाओ खोदा-ववामां तेमज यवनां क्षेत्रो ववराववामां रोकाया तेटला समयमा हमीरे पोतानी निर्वल सेनाने सवल वनावी लीधी, चारामां काम आवे एवडा यव थतां केसरदेवजीए फरी शत्रुने कहेवराव्युं के तमो वगर विलंबे युद्ध करवा आवो, तमारी दरेक मजलमां जोइए तेथी विशेष जळवाळां नवाणे। तैयार करावी राख्यां छे. तेमन अश्व आदिना चाराने माटे पण पृरतो वंदोवस्त कर्यो छे. आ समाचार सांभळी सैन्यना जमावथी हिम्मतमां आवेळा हमीर मुमराए कीर्तिगढ तरफ मयाण कर्यु. मकवाणाओना मनमां एम हतुं के शार्य रहित सुमराओं आपणने छं करवाना छे ? मजल दर मजल मकवाणा केसरदेवजीनी मिजमानीनो लाभ छेतुं सुमराओतुं सैन्य कीर्तिगढ नजीक आवी पहोच्यं. क्षत्री वीरोए गढ उपर चढी दृष्टि करी त्यां असंख्य योद्धाओए वर्षा ऋतुमां वादळांओए घेरेला आकाशनी माफक कीर्तिगढने चोमरथी घेरेलुं जोयुं. पराक्रमी केसरदेवजीए गढनी अंदर रही तोपोथी युद्ध शरु करवा सैनिकोने आजा आपी, सामसामुं यन्त्रयुद्ध शरु थयुं, विद्युत् समान वेगवाळा गोळाओ छुटवा लाग्या, परस्पर योष्टाओना अंगो तुटवा लाग्या, अन्योन्य आयु-पना खजानाओं खुटवा लाग्या, कीर्तिगढना किल्लानों केटलोएक भाग तोपोना तीव्र माराथी जर्ज-रित थइ पडवा लाग्यो तेमतेम वीर पुरुपोना नेत्रोमां शौर्यनो रंग चडवा लाग्यो,ए रीते सात दिवस पर्यंत किह्यानी अंदर रही मकवाणा केसरदेवजीए सुमराओ साथे युद्ध कर्यु. अंते कीर्तिगढनो किल्लो तहन तुटी गयो अने दारुगोळो पण खुटी गयो छतां शत्रु सैन्यतुं पवळ जोड विचार्यु के इवे पाछा इठवुं ए क्षत्रीओनो धर्म नथी. कांतो मरवुं अने कांतो मारवुं आम इढ निश्चय करी बस्लोने केसरीआ रंगमां वोळी पोताना तमाम सुभटो तथा कन्हेया जेवा कुमारो सहित खुल्ली कृपाणे शत्रुसैन्यमां कूदी पड्या, परस्पर कापाकापी चाली, दिशाओ अंधकारघी व्याप्त थइ गइ, भिन्नभिन्न जातनां रणवाद्यो वागवां छाग्यां, जोरमां आवेला शूरवीरो जागवा लाग्या, भय पामेला कायर पुरुषो भागवा ळाग्या, कोइना हाथ, कोइना पग, कोइनां शिर, अने कोइनां घड पृथ्वी पर पडवा लाग्यां, रुधिरनी धाराओथी अलंकृत अंगवाळा योद्धाओ तलवार, कटार, अने वरछी आदि आयुघोथी भय रहित वनी छडवा लाग्याः परस्पर अयडाती असिओमांथी अग्निना अंगार नीक-ळवा लाग्या, अक्षयधामनी यात्राए जवा जारवीरो सामसामा महा आनंदयी मळवा लाग्या; गवै-याओं सिन्दु राग ललकारवा लाग्या, लडवैयाओं शत्रुओंने संहारवा लाग्या, पोतपोताना पूर्वजोने तारवा छाग्याः गीध आदि पक्षीओ मनगमता मांसने पामी न्योम मार्गे विनोदथी विचरवा छाग्याः भयंकर महारोधी पगट थएली रक्तनी नदीमां कपाएलां कवन्धो तरवा लाग्यां, कालिका आनंद-युक्त बनी रक्त पान करवा लागी, जोगणीओ पोतपोतानां खप्परो भरवा लागी, आकाशमार्गे

युद्ध जोवा आवेळी अप्सराओ एक एकथी चडता वीरवरोंने मनथी वरवा लागी, प्रेतिपशाचनी पंक्ति रणांगणमां फांवे तेम फरवा लागी, डािकनीओ गमन करतां असंख्य शव आडा आवतां मार्गनी विकटताने लीधे दिल्लमां डरवा लागी, अगिणत मुंडमालाओ प्राप्त थवाथी भूतपितना हृदयमां भारे हर्ष फेलायो, अधे राित्र पर्यन्त प्रचंड युद्ध जारी रहां, मकवाणा केसरदेवजी सात कुमार तथा अनेक उमरावो सहित काम आव्या, हमीर सुमराना अनंत योद्धाओ युद्धयज्ञमां स्वाहा थइ गया कीतिंगढना सैन्यमांथी फक्त केसरदेवजीना ज्येष्ठ कुमार हरपालदेवजी घा रहित शारीरे शत्रु सैन्यनो पार पाम्या, तेओना न्हाना भाइ वजेसिंहजी तथा हमीरजी घायल थइ रणभूमिमां पच्चा हता, तेमां विजयसिंहजीने कोली लोको लङ्ग गया तेना वंशजो "कोली मकवाणा" कहेवाया, जेओ हाल कटोसण अने पनार गाममां रहे छे; अने हमीरजीने मुसलमान लोकोए लइ जइ सारवार करी साजा कथी। तेना वंशजो "मोली सलाम मकवाणा" कहेवाया, जेओ हाल सटोसण अने पनार गाममां रहे छे;

वि. सं ११४५मां केसरदेवजी विगेरे युद्धमां काम आन्याना खवर प्रभातमांज कीर्तिगढ पहोंची गया ते वखते आशरे सातसोएक क्षत्राणीओ पोतपोताना पति पाछळ सतीओ थइ; अने कीर्तिगढनो कवजो सुमरा हमीरना हाथमां गयो .





## पंचदश तरंग.

मनहर.

युद्धमां वचेला हरअंश हरपाझदेव,
गहन बनोमां पगे गमन करी गया;
पूर्वजना दर्श पामी सुण्यो धर्म आपदनो,
दिव्य पुत्रमाथे करी मुनिए खरीं दया;
सुणो अमरेश वक्रपुरना नरेश आवुं
केसरना पुत्र विना संकट सहे कया !
पाटण पधार्या मळ्या करणने मोदधारी,
धनुर्वेदना प्रभावें माननीय त्या थया.

राज हरपालदेवजीए पोताना तमाम कुटुम्बना क्षचथी उदय पामला ज्ञोकरुपी सूर्यने हिम्मतना महान अज्ञोथी आच्छादित करी एकाकी गहन बनमां प्रवेश कर्यों, तेओना देवी देह-रुपी क्षेत्रमां पौवनना अंकुरे पुट्या हता, अंग प्रत्यंगरुपी क्याराओ पराक्रमरुपी पाणीथी परिपूर्ण भरेला हता, तेमां कुविचार कंटकतरुने प्रथमथीज स्थान मळ्युं न हतुं, बुद्धिना हळथी खेडाएलुं ए क्षेत्र आगळ उपर उत्तम फळने आपनारुं जणाइ आवतुं हतुं; शत्रुनुं शरण स्वीकार करतां मरणने उत्तम माननारा हरपालदेवजीनी प्रताप बिह्मथी विद्युद्ध थएली कुन्दन सरखी काया मायाना महत्र्वने चरणमां राखी बनदेवीना आभरणरुप थइ पडी. रिव समान रुपवाळा, सोमसमान क्षात्र-धेमरुपी औपिधनी द्यद्धि करनारा, मंगळ समान रक्त नेत्रवाळा, बुधसमान बुद्धिवाळा, गुरुसमान गौरववाळा, द्युक्रसमान दुश्मनरुपी दानवोने नमावनारा अने शनिसमान शत्रुओना सुखने हरनारा हिम्मती हरपालदेवजी कुळना कल्याण माटे वार्यार विचार करवा लाग्या. हवे द्युं करबुं ? विगेरं तर्क वितर्क करतां पोताने याद आव्युं के मारा पूर्वज मार्कदेयजी अजरामर छे. तेमज योगवळथी

सर्व स्थळे गति करी शके छे, जो तेओ प्रत्यक्ष दर्शन दइ कांइ रस्ता वतावे तोज जीवितनी साथ उदयनी अभिलापा राखी ज्ञाकाय, ए ज्ञिवाय अन्य उपाय नथी, मोटे आ घोर वनमां निराहार वनी ए योगीराजनुं आराधन करुं, एम निश्रय करी तेओ कोइएक शिला उपर द्रढताथी आसन लगावी मुनिवर मार्केडेयना ध्यानमां लीन थया, त्रण दिवस पर्यन्त पाणी पण पीधं नहि अजरापर वनी अवानिमां अटन करता मार्केंडेये योगवळथी पोताना वंशन हरपालदेवजीतुं अतुल धैर्य तथा प्रशंसनीय भक्ति जोइ तेओने संकटलागरमांथी तारवा संकल्प कर्यो, तरतज पोते ते स्थळे प्रथायी: ते ऋषिराजनुं तेजोमय शरीर आसपासना अंधकारने अलग करतुं हतुं, शिर उपर पिंगळी जटा सुवर्णना तंतुओ समान शेश्मी रही हती, ब्रह्मचर्यने लीधे भन्यताथी भरेछं विशाल भाल सूर्यना किरणोनी सरखामणी करतं हतं, पुण्यना अस्खिलत प्रवाहवाळी तेमज दयाना तरंगथी डोलती निर्मेळ नदी समान दीर्घ दृष्टि स्पर्शमात्रथीज पाप पंकथी मिलन घएला हृद्यपटने स्वच्छ करवातुं सा-मध्ये धरावती हती: गौर ग्रीवामां धारण करेल स्फाटिकनी माळा उदय पामता अर्क आगळ स्थि-त थएली नक्षत्र पंक्तितुं भान धरावती हती; त्रिलोकीना मनतुं आकर्षण करनार त्रितंतु युक्त उप-वीतथी स्कंध, हृदय तथा कोट पदेश कोइ अपूर्व कान्तितुं विश्रान्ति स्थान जणातुं हुनुं, उत्तरिय वस्त्रथी उभय अंस आच्छादित हता, कटिए वींटेखं पीत वस्त्र भेक्षकनी आंखने आनंद आपनारुं हतुं अने चरण पादुकारो शब्द कर्णिविय थइ पडे तेवो हतो. ए रीते करमां दंडकमंडलुने धारण करी पधारेला मुनिराज मार्केंडेये ध्यानमां निमग्न थएला राज हरपाळदेवजीना मस्तकपर हाथ मुक्यों। कर स्पर्शेथी जागृत थएला इरपालदेवजीए नमन करी पूछयुं के आप कोण छो ? मा-र्कडेय आर्शीवाद आपी वोल्या के भाइ ! हुं ब्रह्मचारी छुं. संसारनो त्याग करी निरंतर निर्जन स्थानमां रही इश्वरतुं आराधन करुं छुं. परंतु तुं कोण छे ? आ अधोर वनमां शा माटे आब्यो छे? तारुं नाम शुं ? मुखमुद्रा जोतां तुं कोइ राजकुमार होय एम जणाय छे. हरपालदेवजीए सविनय उत्तर आप्यो के महाराज ! मारुं नाम हरपाल, मारा पिता मकवाणा केसरदेवजी सिन्धना राजा इमीर सुमरा साथेना युद्धमां सपरिवार काम आव्या. मात्र हुं एकज शक्ति प्रमाणे शत्रुओनो संहार करी आ तरफ निकळी आव्यो छुं, इवे शुं करवुं ए कांइ सूजतुं नथी, मारा पूर्वज मार्कडे-यने मळवा माटे तेओ तुं ध्यान धरी आज त्रण दिवस थयां निर्मळ अने निराहार उपवास करी अहीं वेठो छूं. ज्यांसुधी ते महात्मा मने नहि मेळ त्यां सुधी हुं आज स्थितिमां रहेवानो छूं. प्राण जाय तेनी मने परवा नथी. जो पोतानो वंश राखवो हशे तो महात्मा मार्कंडेय अवश्य मळशे



## पंचद्दा तरंग.

मनहर,

युद्धमां वचेला हरअंश हरपाझदेव, गहन बनोमां परेगमन करी गया; पूर्वजना दर्श पामी सुण्यो धर्म आपदनो, दिव्य पुत्रमाथे करी मुनिए खरीं दया; सुणो अमरेश वक्रपुरना नरेश आवुं केसरना पुत्र विना संकट सहे कया ! पाटण पधार्या मळ्या करणने मोदधारी, धनुर्वेदना प्रभावें माननीय त्या थया.

राज हरपालदेवजीए पोताना तमाम कुटुम्बना क्षयथी उदय पामला शोकरपी सूर्यने हिम्मतना महान अञ्चोथी आच्छादित करी एकाकी गहन बनमां मवेश कर्यों, तेओना देवी देह-रुपी क्षेत्रमां पोवनना अंकुरो फुट्या हता, अंग मत्यंगरुपी क्याराओ पराक्रमरुपी पाणीथी परिपूर्ण भरेला हता, तेमां कुविचार कंटकतरुने मथमथीज स्थान मळ्युं न हतुं, बुद्धिना हळथी खेडाएलुं ए क्षेत्र आगळ उपर उत्तम फळने आपनारुं जणाइ आवतुं हतुं; शत्रुनुं शरण स्वीकार करतां मरणने उत्तम माननारा हरपालदेवजीनी मताप बिह्मथी विद्युद्ध थएली कुन्दन सरखी काया मायाना महत्त्वेन चरणमां राखी बनदेवीना आभरणरुप थइ पडी. रिव समान रुपवाळा, सोमसमान क्षात्र-धिमरपी औपियनी दृद्धि करनारा, मंगळ समान रक्त नेत्रवाळा, बुधसमान बुद्धिवाळा, गुरुसमान गौरववाळा, द्युक्रसमान दुक्रमनरुपी दानवोने नमावनारा अने शनिसमान शत्रुओना सुखने हरनारा हिम्मती हरपालदेवजी कुळना कल्याण माटे वार्यार विचार करवा लाग्या. हवे द्युं करवुं ? विगेरं तर्क वितर्क करतां पोताने याद आव्युं के मारा पूर्वज मार्कदेवजी अजरामर छे. तेमज योगवळथी

सर्व स्थळे गति करी शके छे, जो तेओ पत्यक्ष दर्शन दइ कांइ रस्ता वतावे तोज जीवितनी साथ उदयनी अभिलापा राखी शकाय, ए शिवाय अन्य उपाय नथी. माटे आ घोर वनमां निराहार वनी ए योगीराजनुं आराधन करुं, एम निश्चय करी तेओ कोइएक शिला उपर द्रढताथी आसन लगावी मुनिवर मांकेडियना ध्यानमां लीन थया, त्रण दिवस पर्यन्त पाणी पण पीछुं निह,अजरामर वनी अवानिमां अटन करता मार्केडेये योगवळथी पोताना वंशन हरपालदेवजीतुं अतुल धैर्य तथा प्रशंसनीय भक्ति जोइ तेओने संकटसागरमांथी तारवा संकल्प कर्यो, तुरतज पोते ते स्थळे प्रथायी; ते ऋषिराजनुं तेजोमय शरीर आसपासना अंधकारने अलग करतुं हतुं, शिर उपर पिंगळी जटा सुवर्णना तंतुओं समान शाभी रही हती, ब्रह्मचर्यने लीधे भन्यताथी भरेलुं विशाल भाल सूर्यना किरणोनी सरखामणी करतुं हतुं, पुण्यना अस्खिलत पवाहवाळी तेमज दयाना तरंगथी डोछती निर्मळ नदी समान दीर्घ दृष्टि स्पर्शमात्रथीज पाप पंकथी मिलन घएला हृदयपटने स्वच्छ करवातुं सा-मध्ये धरावती हती: गौर ग्रीवामां धारण करेल स्फाटिकनी माळा उदय पामता अर्क आगळ स्थि-त थएछी नक्षत्र पंक्तितुं भान धरावती हती; त्रिलोकीना मनतुं आकर्षण करनार त्रितंतु युक्त उप-वीतथी स्कंध, हृदय तथा कोट प्रदेश कोइ अपूर्व कान्तितुं विश्वान्ति स्थान जणातुं हुनुं, उत्तरिय वस्त्रथी उभय अंस आच्छादित हता, कटिए वींटेलुं पीत वस्त्र भेक्षकनी आंखने आनंद आपनारुं हुतं अने चरण पादुकारो शब्द कर्णिपिय थइ पडे तेवो हतो. ए रीते करमां दंडकमंडछने धारण करी पधारेला मुनिराज मार्कडेये ध्यानमां निमग्न थएला राज हरपाळदेवजीना मस्तकपर मुक्यो. कर स्पर्शथी जागृत थएला हरपालदेवजीए नमन करी पूछ्युं के-आप कोण छो ? र्कडेय आर्शीवाद आपी वोल्या के भाइ ! हुं ब्रह्मचारी छुं. संसारनो त्याग करी निरंतर निर्जन स्थानमा रही इश्वरतुं आराधन करुं छुं. परंतु तुं कोण छे ? आ अघोर वनमां शा माटे आच्यो छे? तारुं नाम शुं ? मुखमुद्रा जीतां तुं कोइ राजकुमार होय एम जणाय छे. हरपालदेवजीए सविनय उत्तर आप्यो के महाराज! मारुं नाम हरपाल, मारा पिता मकवाणा केसरदेवजी सिन्धना राजा इमीर सुमरा साथेंना युद्धमां सपिरवार काम आव्या. मात्र हुं एकज शक्ति प्रमाणे शत्रुओनो संहार करी आ तरफ निकळी आव्यो छुं, हवे ह्युं करवुं ए कांइ सूजतुं नथी, मारा पूर्वज मार्कड-यन मळवा माटे तेओनुं ध्यान धरी आज त्रण दिवस थयां निर्नळ अने निराहार उपवास करी अहीं वेठो छुं. ज्यांसुधी ते महात्मा मने निह मेळ त्यां सुधी हुं आज स्थितिमां रहेवानो छुं. प्राण जाय तेनी मने परवा नथी. जो पोतानो वंश राखवे। हशे तो महात्मा मार्केडेय अवश्य मळशे

ए जे रस्तो वतावशे ते रस्ते वंशराढि करीश अने वाहुवळथी राज्यलक्ष्मीने वरीश. आ सामली मार्केडेय वोल्या के-राजकुमार ! हठ छोडी दे, मार्केडेयनुं मिलन तने टुर्लभ छे, कारणके एवा देवकोटिना ऋषि मुनिओ मर्त्य लोकना मनुष्योने मळी शकता नथी. जो फलाहारनी इन्छा होय तो लावी आपुं, जलपान करी कोड शहेर तरफ चाल्या जाओ तो सारुं, हरपालदेव बोल्या के−छीथेली प्रतिज्ञा अपूर्ण राखवी एक्षात्रिओनो धर्म नथी,जल केफलनी मारे कांइ जरुर नथी, अने मार्केडेयना दर्शन कयी विना आंहीथी जवाना पण नथी. आ रीते पाताना वंगन हरपालदेवजीनी उत्तम टेक जोइ प्रसन्न थएला मुनिराज मार्कडेये कहाँ के भाइ! हुं पोतेज मार्कडेय छुं. तमारी हहता जोवा माटेज में आटला वखत सुधी प्रश्लोत्तर कर्याः इरपालदेवजीए तुरतज हाथ पग जोडी दंड-वत् प्रणाम कर्या, अने पूछयुं के-कृपाळु! आवा आपत्तिना समयमां इवे मारे द्युं करवुं, ते समजावो आजे आपना दर्शनथी हुं कृतार्थ थयो छुं त्यारे मार्कडेय वोल्या के-कुमार ! तमो अ-हींथी गुजरात देशमां अगहिलपुरपाटण नामे शहेर छे त्यां जाओ, त्यांना राजा सोलंकी करण वाघेलों तमारो माज्ञीआइ भाइ छे तेने जइ मळो. हरपालदेवजीए कहुं के-हुं क्षत्री उटी कोइने शरणे जाउं ए दुनियामां केंबुं हलकुं देखाय तेनो आपज तोल करो. हरपालदेवजीना अग्वा उत्तम विचारो सांभळी धन्यवाद आपता मार्कडेय वोल्या के-कुगार ! राजाओ उपर अनेक प्रकारनी आपत्तिओं आवे छे तेमां कइ आपत्तिमां कइ रीते वर्तेबुं ए समजाववा माटे भीष्पजीए युविष्ठिरने करेलो आपद्धर्म संबंधी उपदेश हुं तमोने संक्षेप कहुं छुं ते श्रवण करो.

जो चढाइ करनारो राजा धर्म अर्थमां कुज्ञळ अने विजयनी इच्छावाळो होय तो तुरतज तेनी साथ सन्धि करी छेत्रो, जो ज्ञानुए पोताना पाचीन पुरुषोना ग्राम तथा नगरो जीती छीयां होय तो तेने सामनीतिथी छोडाववां अने जे अधर्मथी विजय करवानी इच्छावाळो पराक्रमी अने पापात्मा होय तेने पोतानां थोडां घणां ग्राम दइ तेनी साथे सन्धि करवो अथवा राजधानीनो त्याग करी धन द्वाराए आपत्तिथी वचवुं, फरी आयुर्वळने धारण करी राजगुणोंथी संयुक्त धननो संग्रह करवो. जो धन अने सेनाना त्यागथी आपत्ति दूर थती होय तो धर्म अर्थने जाणनार एवो क्यों पुरुष छे के जे धनने माटे पोताना पाण गुमावे? अर्थात् एवा समयमां धन आदिनो त्याग करी पोतपोताना प्राणनी रक्षा करवी एन उचित छे, भछे खजाना तथा राजमहेळ आदि ज्ञानुने हाथ जाय परंतु पोते समर्थ वनी ज्ञानुना पंजामां सपडावुं नहीं. मंत्री आदि क्रोधयुक्त थवाथी देश गढ आदि ज्ञानुने आधीन थवाथी, खजानो नष्ट थवाथी अने ग्रुत मंत्रो प्रश्व यह जवाथी जो मंत्री आदि धर्मज्ञ

होय तो तुरतज सन्धिनी इच्छा करवी अथवा सत्वर पराक्रम वतावर्वु, तेम करवाथी शत्रुओ शीघ्र हठी जाय छे अथवा धर्मयुद्ध करी मरवाथी पण परलोकनी प्राप्ति थाय छे, तमाम पृथ्वीनो रक्षक राजा शौर्य भरेल स्वल्प सैन्यथी पए पृथ्वीनो विजय करी शके छे. जे युद्धमां भीतियुक्त अने प्रसन्न चित्त होय ते मरी स्वर्गमां जाय छे अथवा शत्रुओने मारी विजय मेळवे छे. मृदुतानो गुण प्राप्त करवा माटे लोक प्रसिद्ध शास्त्रने बुद्धिथी प्रकट करी विश्वासधी विश्वासने मेळववो. जो मंत्रिओना क्रोधथी साम थवानो असंभव होय अधीत मेळ थवो कठिन होय तो किल्लामांथी भागी जवानी इच्छा, करवी अने थोडा दिवस देशने छोडी उत्तम सलाहद्वारा फरी पराक्रम वतावर्डु. ज्यारे सर्वोपकारी उत्कृष्ट राजधीम नष्ट थइ जाय, तमाम पृथ्वीनी आजीविका चार छोकोने आधीन थाय अने एवा अथम समयने छीधे ब्राह्मण छोको स्नेहथी पोताना पुत्र पौत्रादिनो त्याग न करे तेवी दशा प्राप्त घतां विज्ञानना पराक्रममां नियत थइ निर्वाह करवो, कारणके सर्व संसारी वस्तुओ साधुओंने माटे छे, असाधुओंने माटे कांइपण नथी. जे नीच लोको पासेथी धन लइ सत्पुरुपोने आपे छे एज आपद्धर्मने जाणवावाळो छे एम समजवुं. संसारना रक्षकतुं धन छे, एटला माटे "आ मारुंज छे." एम विचारी पोताने अर्थे धनने नहि चाहनार अने पाछन धर्ममां तत्पर राजाए आ-प्या सिवाय पण धनने लड़ लेवुं. जे पूर्ण बुद्धिवाळा, वळथी पवित्र अने निन्दित कर्मोमां पण प्रष्टत्त धनारा मनुष्यो छ ते आजीविकानी प्राप्तिमां पूर्ण बुद्धिशाळी अने विद्वान् होय छे, जेथी तेनी निन्दा कोइपण करी शकता नधी जेनी आजिवीका वळथी उत्पन्न थनारी छे, तेने वीजी आ-जीविका उत्तम जणाती नथी। वळवान मनुष्य पोताना वळथी सन्मुख थइ जाय छे। पोतानो अ-थवा शतुनो कोइ पण माणस दंडने योग्य होय तो तेना पासेथी धन छेतुं जोइए. राजाए आपत्ति काळमां पण शुभक्तभीं ऋत्विज् , पुरोहित अने आचार्य विगेरे पूज्य ब्राह्मणोने खंडणी आदि शिवाय मारवा नहि, कारणके तेओने मारवामां दोष गणाय छे. ए बोकमर्यादा अने सनातन नेत्र छे एटला माटे मर्शीदान माननार तेओने देशोगां फेरवे, चाहे ते उत्तम होय अथवा अनुत्तम होय; चणा ग्रामवासीओं परस्पर क्रोधयुक्त थइ कांइ कहे तो राजाए वचनाथी तेओनी अमतिष्ठा न करवी तेम मारवा पण नहि. गुरु आदिनी निन्दा न करवी जोइए तेम कोइ दशामां सांभळवी पण नहि, एवा स्थळ उपर वने कान आंगळीओथी वंध करी देवा एज योग्य छे. निन्दा करवी ए नीच छोकोनोज स्वभाव छे, संतजनो सत्पुरुपोना गुणोनेज गाय छे. जेवी रीते सुन्दर बोळनार. सीधा, मुशिक्षित, अने उत्तम स्रोकोने स्वार करनारा वे वेस्र घोंसरी उठावी लइ चाले छे तेवीज

रीते राजाए कर्म करवां, जेमजेम तेने सहायको वधता जाय छे, तेमतेम बीजां मतुष्यो राजाना धर्मरुप आचारनी दृष्टि थएकी माने छे.

पोताना अथवा पराया देशमांथी धन पेदा करवुं, कारणके धनथीन धर्म थड शके छे. अने राज्यनी पण धनथीज हदता थाय छे. एटला माटे धनने एकढुं करवुं अने तेनी उत्तम प्रकारे रक्षा करवी, फरी तेने सारा काममां वापरवुं ए सनातन धर्म छे. पवित्र तथा शौच क्रियावाळायी अथवा निर्देय मतुष्यथी धन भेळुं थतुं नथी. साधारण स्थानपर नियत षइ धनने एकत्र करवुं; परा-क्रम विना धन प्राप्त थतुं नथी. धन विना सैन्य, सैन्य विना राज्य अने राज्य विना राज लक्ष्मी मळी शकेज निह. आचारवाळा पुरुष आगळ कक्ष्मी न होय ए मरण वरावर छे, एटला माटे राजाए खजानानी, सैन्यनी अने पित्रोनी उत्तम प्रकारे दृद्धि करवी. खाळी खजानावाळा रा नातुं अपमान थाय छे, नोकर चाकर थोडा पगारथी भन्न चित्त थइ उत्साहपूर्वक काम पण करता नथी, कक्ष्मीनी सहायताथी राजाओ घणी सत्क्रिया करी शके छे, जेम बस्न खीओनां गुप्त अंगोने ढांके छे, तेम ते ते सित्कयाओ राजानां पापोने ढांकी दे छे, भथम अपमान कराएळां मनुष्या जेना अैश्वर्यने जोइ दु:खी थाय छे अने श्वान आदिनी पेठे जेने मारवा तत्पर घर रह्यां होय छे एवा राजाने सुख क्यांथी मळी ज्ञाके ? राजाए उद्योग करवो, सुस्ती न राखवी, कारणके युक्ति पूर्वक ज्ञम करवो ए पाणी मात्रनो धर्म छे. असमर्थ अवस्थामां अथवा पडतीमां भागी जवुं, परंतु कोइ-नी साथे निकृष्ट कर्म न करवां, वनमां जइ मृगना टोळांओनी साथे घूमवुं अथवा मयीदा छोडी चोरोनी साथे फरवं, दृष्ट कर्मीमां चोरोनी सेना सुगमताथी प्राप्त थइ शके छे, अतुल वेमर्यादाथी तमाम मनुष्यो व्याक्तळ वने छे, अने निर्दय कर्म करनारा चोर पण शंका करे छे.एटका माटे प्राणी मात्रना चित्तने प्रसन्न करनारी मर्यादाने नियत करवी, ए मर्यादा आ छोकना न्ह्राना अर्थोमां पण पूजाय छे. प्राकृत पुरुषोनो ए निश्चय छे के नथी आ छोक के नथी परछोक, परंतु नास्तिक अने भयभीत छोकोने एवो विश्वास थवो कठिन छे, जेम सत्प्रक्षोने चोरोनो विश्वास होतो नथी। जेवी रीते चोरोनी मर्यादायी सर्व पाणी पसन्न थाय छे तेवीज रीते युद्ध न करनारने मारवो, वीजानी स्त्रीना धणी थवुं, उपकारने भूळी जवा, सर्वस्व हरी छेतुं, कन्याने चोरी जवी, गायोने स्वाधीन करी तेना स्वामी वनी जबुं अने पराइ स्त्रीथी संभोग करवों ए तमाम निन्दनीय टेव चोरोमां होय छे, चोरोए एवी कुटेवनो त्याग करवो जोइए. जे मनुष्य विश्वासने अर्थे चोरनी साथे

मळे छे, ते मतुष्यना हृदयमां विश्वास बेसाड्या वाद चोर तेनां स्थान, धन, अने वालबच्चां आ-दिनो विनाश करे छे एवो निश्रय करी स्वाधीन थएका चोरोने जीवता न जवा देवा जोइए. पोताने पराक्रमी समजी जो तेओने छोडी देवामां आवे तो ते अवशेप रहेला चोरो नाशकर्तानो विनाश क्यो शिवाय रहेना नथी. उत्तम बुद्धिवाळा क्षत्रियने धर्म तथा अर्थ दृष्टिगोचर थाय छे,माटे एवा स्थान उपर आ धर्म छे के आ अधर्म के एवा विचार न करवी, कारणके मेंदीना पुच्छ माफक धर्मनो उपदेश ग्रप्त फळवाळो छे. कोइ माणसे क्यांइ पण धर्म अधर्मनां फळने जोयं नथी, जेथी पराक्रमनेज प्राप्त करवानी इच्छा राखवी. आ समग्र संसार पराक्रमीनेज आधीन छ ए वात निःसंशय छे. आ कोकमां पराऋमी राजा हाक्ष्मी, सैन्य तथा मंत्रिओने मेळवी शके छे. जे धन रहित होय ते पतित गणाय छे अथीत धन विना धर्म कर्म थइ शकतां नथी जेषी पतित दक्का प्राप्त थाय छे, एनाथी पण अस्प होय ते उच्छिष्ट समान केखाय छे, क्रमार्गगामी पराक्रमी कोड-नो भय टाळी शकतो नथी. पराक्रम अने धर्म ए वन्ने साचा अधिकार उपर नियत थइ महान् भयथी सर्वतुं रक्षण करे छे. धर्मथी पराकम अधिक छे, कारणके पराक्रमधीज धर्मनी स्थिति छे. जेम भूमाहो हवाने आधीन छे, तेम पृथ्वीमां चेष्टा करनारा जीवोना धर्म पराक्रममां वर्तमान छे. पराक्रमीने कोइ वस्तु अवाप्य नथी, एनी आगळ तमाम पवित्र छे. क्रमार्गी अने निर्वळनी रक्षा होइ शकती नथी, कारणके तेनाथी सर्व व्याकुळ घाय छे. अपमान पामेछो अने राज्यथी भ्रष्ट थएलो मतुष्य दुःखरुप जीवनने भोगवे छे. निन्दित जीवन परण समान छे. कोइ एम कहे के पाप्धी अथवा वदमासीने लीधे फलाणाने। वान्धवोंए त्याग कर्यो एथी वीजुं कष्ट वयुं होय ? एवां वचनरुपी भालांथी घायल थएकाने पापथी निष्टत्त थवानो एज उपाय छे के तेणे त्रणे वेदनो पाठ करवो, ब्राह्मणानी उपासना करवी, नेत्र, वचन अने की आदिथी सर्वने प्रसन्न करवा, महान् उदारपणुं प्रकट करी उत्कृष्ट कुळमां परणवुं, पोतानी हीनता अने वीजानी पशंसा करवी अथवा स्नान, जप, तथा स्तोत्र आदिथी प्रसन्न चित्त, पवित्र अने कोमळ स्वभावयुक्त वनी अन्यने प्रसन्न करवा; कोइनुं बुरुं न करवुं, पोते महा कठिन काम कर्युं होय अने ते संबंधी छोकोए कराती मशंसा सांभळी,न सांभळता होइए तेवुं वताववुं तेमज ब्राह्मण अने क्षत्रीओनी वच्चे निवास करवो. एवी रीतनां आचरणोथी पाप रहित थएलो पुरुप सर्वने निय थइ शके छे अपूर्व सुखने भोगवतो गुणवान राजा परोपकारथी आ लोकमां प्रतिष्ठापात्र थाय छे, अने परलोकमां पण उत्तमोत्तम

D9 (27

फळनो भोक्ता वने छे. मर्यादा युक्त चोर पण नरकमां जतो नथी. शिकार करनार, बुद्धिमान, श्रास्त्रीर, शास्त्र थइ शास्त्रनी रीति प्रमाणे हिंसा करनार अने वेद ब्राह्मण तथा आश्रम धमें हुं रक्षण करें नारों क्षत्रिय कदाच आपत्तिने छीध चोरोमां भछे तो तेणे देश काळने जाणी भयभीत स्त्रीने, वाळकने, तपस्वीने अने सामे इथिआर छोडी देनारने मारवा निह, स्त्रीओ पराक्रमयी किंद पण पकडवा योग्य नथी, तमाम दशायां जीवोनी मध्ये स्त्रीओ अवध्य छे. सत्यनो किंदिपण त्याग न करवो जोइए, कोइना विवाह आदि कार्यमां विघ्न न करवं, कारणके तेमां देवता, अतिथि अने पित्तओं पूजन करवामां आवे छे, जो व्यापारी छोको धन न आपे तो तेओने कहें के अमे चोरीने तमारुं धन छइ छे छुं, कारणके ए दंड खजानानी दृद्धिने माटे निह, परंतु कुकर्मीओना नाश्तेन माटे नियत करेछ छे. जे श्रेष्ट छोकोने पीडे छे तेओने मारवा एं नामज दंड छे, जे कोइ देशना नाश्यी पोतानी दृष्टि करे छे ते मुडदानी साथे वळी मरता कीडाओनी माफक नष्ट थाय छे, जे चोर धर्मशास्त्रने अनुसरी कर्म करनारो होय ते तुरतज चोर जातिमां पण सिद्धिने पामे छे.

राजाए यह करनाराओं तुं तेमज देवताओं दुं धन किंद पण न हरवुं जोइए. क्षत्रिय राजा चोरोतुं अने यह न करनाराओं दुं धन हरी हाके छे, कारणके ए प्रजा अने राज्यभोग क्षत्रीओंनाज छे, धन पण क्षत्रीओं हुं छे, वीजा कोइतुं निह, ते धन तेना पराक्रमने माटे, सैन्यने माटे अने यहाने अर्थे होय छे. जे पुरुष हविष्यात्रथी देव, पितृ अने मतुष्यो तुं पूजन नथी करतो, तेना धनने धर्मह पुरुषोए निष्फळ मानेल छे. जे धर्मह राजा मथम धनतुं हरण करे छे अने त्यारवाद लोकोने मसन्न करे छे, ते शोकने मास थता नथी. जे पुरुष पोताना देहने सेतु बनावी असाधुओं आगळथी धन लड़ साधुओंने ओप छे एज सर्व धर्मोंनो हाता छे; अर्ने तेणे जेम कीही आदि जन्तुओं धीरेधीरे घणे दूर चाल्या जाय छे तेम संसारनो विजय करवो. जेम डांस अने मच्छर आदि जन्तुओंनां इंडां पोतपोतानी मेळे उत्पन्न थाय छे तेम यह न करनारा पुरुषो पण वारंवार पेदा थाय छे. जेम डांस आदि जीवोने पद्य अलग करे छे तेम यह न करनारा पुरुषो पण त्याग करवो जोइए.जेम वहु पीसावाथी पृथ्वीनी रेणु झीणी थइ जाय छे तेम धर्म पण सूक्ष्मतर वनी जायछे. जे मतुष्य मिविष्य वातने मथमयी करवावाळो होइ समय माप्त थतां बुद्धि अनुसार कर्म करे छे ते सुखपूर्वक दुद्धिने पामे छे अने दीर्घसूत्री होय ते नष्ट थाय छे.आपत्ति उत्पन्न थतां वीजो अवरोध

न आवी पड़े तेटला वखतमा अन्य स्थाने चाल्या जबुं एज उत्तम छे. जे पुरुष सन्मुख आवेली हरकोइ आपित्तने श्रेष्ठ नीतिथी निष्टत करे ते संशयरित थाय छे. सन्मुख आवेला समयने निह जाणनार दीर्घसूत्री शीघ्र मृत्यु पामे छे अने जे पोताने बुद्धिमान समजी प्रारंभमां निजनुं कल्या- ण नथी करतो ते पाछळथी महान् संदेहमां पड़े छे. काष्ट्रा, कला, मुहूर्त, दिन, रात, मास, पक्ष, पह्कत्तु, कल्प, चार प्रकारनां वर्ष, पृथ्वी, देश अने काल, ए सर्व समयना विभाग छे, एनी स्क्ष्मता दृष्टिगोचर थती नथी। देश अने काळ चित्तना रोचक छे अने तेनाथीज फळनी प्राप्ति थाय छे.

कार्यना सामर्थ्य योगधी शत्रु मित्र अने मित्र शत्रु थाय छे, ए रीत परंपराथी चाली आवे छे, एटला माटे देश काळने जाणी योग्यायोग्य कर्मनो निश्रय करवामा विश्वास राखवो जोइए. बुद्धिमान् अने ग्रुभिनन्तक छोकोथी निरंतर मिलाप अने स्नेह राखवीं, शत्रुओथी पण सन्धि करवो, कारणके पोताना प्राणनी रक्षा करवी ए कर्तव्य घणुं अगत्यतुं छे.जे मूर्ख शत्रुओथी हमेशने माटे पिळाप नथी राखतो ते कोइ प्रकारना अध के फळने पामी शकतो नथी. जे पुरुष पोताना अधने सभजी शत्रुथी सन्धि करे अने मित्रथी शत्रुता करे ते ,अत्यंत महान फळने प्राप्त धाय छे, जे मित्र भयकारी समान मळनारा अने भयथी हित करनारा होय तेनाथी विचारीने कार्य करवं. जे पुरुष पराक्रमी लोकोथी मिलाप करी पोतानी रक्षा नथी करतो तेनी वात भोजन करेल कुपध्यनी माफक प्रयोजन सिद्धि करवामां समर्थ थइ शकती नथी. कोड कोइना मित्र के कोइ कोइना ग्रुभ चिन्तक नथी, मात्र प्रयोजनथी पित्र अने ग्रुभचिन्तक वने छे. जेम हाथीओ द्वारा जंगळी हाथीओ वंधाय छे, तेम प्रयोजनथी प्रयोजनने वांधी शकाय छे. कार्य पूर्ण थया वाद कोइपण उपकारने ध्यानमां राखता नथी. नित्र शत्रुरुप छे अने शत्रु मित्ररुप छे. तेओ काम क्रोधथी संयुक्त छतां ओळखी शकाता नथी. पत्यक्षमां कोइ शत्रुए नथी अने मित्र पण नथी.ज्यां सुधी पोताना प्रयोजनने माटे जेनी पासे दुःख रहित जीवन गुजारनामां आवे छे, त्यांसुधी वित्रता वनी रहे छे, ज्यारे जरापण तेमां विपरीतपणुं जणाय छे, त्यारे तेज जञ्जतातुं रूप धारण करे छे. पित्रता स्थिर नथी तेम शत्रुता पण अविनाशी नथी, पित्र अने शत्रु सर्व अर्थ युक्तिओथी उत्पन्न थाय छे. कोइ समयनी विपरीततामां मित्र शत्रु अने शत्रु मित्र वनी जाय छे. पोतातुं प्रयोजन महा वळवान छे. जे पित्रो पर विश्वास अने शत्रुओ पर अविश्वास राखे छे, तेमज अर्थ युक्तिने जाण्या सिवाय जे भीति करनारा उपर भीति दशीवे छे, तेनी बुद्धि शत्रु अथवा पित्र वर्गमां अवश्य

चलायमान थाय छे. अविश्वासु लोको उपर अधिक विश्वास न राखवो. विश्वासथी उत्पन्न थनारो भय समूळ जच्छेदन करे छे. अर्थयुक्तिथीज माता, पिता, पुत्र, मामा, भाणेज अने वान्धव आ-दि संबंधीनी उत्पत्ति छे. पतित थयेला पुत्रने माता पिता पण तजी दे छे. समग्र संसार प्रथम आ-त्मानी रक्षा करे छे. आ जीवलोक स्वार्थपरायण छे. कोइ कोइना प्यारो नथी. सगाभाइ अने स्त्री पुरुषोमां पण स्वार्थने लीधेज परस्पर मीति प्रचलित रहे छे. आ दुनियामां कोड धनथी, कोड मिष्ट वचनोधी, कोइ मंत्रधी, कोइ होमथी अने कोड जप आदिथी प्रसन्न थाय छे. तमाम मतुत्य कार्यवज्ञात प्रीति करे छे. सन्धि अने विग्रहमां स्थिर स्वभाव धारण करी प्रयोजनना मित्रयी अ-लग रहेवुं. वादलनी पेठे क्षणक्षणमां स्वरूपने वदलावनार मित्र अने शत्रुथी सावचेत रहेवुं. तमाम वस्तु जायतो भल्ने पण शत्रुने हाथ आत्मा न सोंपवो, कारणके आत्मा होइने संतान, राज्य, रतन अने धन आदि छे, माटे तमाम धननो त्याग करीने पण बुद्धि अनुसार शरीरनुं संरक्षण करबुं. धन अने रत्नोना अैश्वर्यने पामी पित्रनी पासे रहेवुं तथा धननी प्राप्ति अनुसार पोताना जीवननो निर्वाह करवो. धन अने रत्ना समान देहने आपी देवानी कोइपण इच्छा करता नथी. धनथी पण अधिक आत्मानी रक्षा करवी, जे पुरुष आत्मरक्षणमां प्रष्टत्त थइ उत्तम परीक्षा पूर्वक कम करे छे. तेने पेताना दोपथी पाप्त थएली आपात्तेने कदि पण वाध करती नथी. जे निर्वळ पोताना परा-क्रमी शत्रुने सारी रीते ओळखे छे, तेनी बुद्धि चलायमान थती नथी. पित्र थी शत्रुता करवी ए महा निन्दित कम छे. शत्रुनो कदिपण विश्वास न करवो, ज्ञानी पुरुषे विना प्रयोजन शत्रुने आ-धीन न थवुं, साधारण वैरवाळा पराक्रमीनी साथे मिलाप करी युक्ति पूर्वक सावधानीथी कर्म करवां अने मनोरथ सिद्ध थया पछी फरो तेनो विश्वास न करवो. अविश्वासीनो विश्वास अने विश्वा-सीनो अधिक विश्वास न करवो. निरंतर वीजाने पोतानो विश्वास आपवा, परंतु पोते कोइनो वि-श्वास न करवी. दरेक दशामां आत्मानुं संरक्षण करवुं, कारणके आत्माथीज धन अने पुत्र आ-दिनी उत्पत्ति छे. अविश्वास एन नीतिशास्त्रनो उत्तम आशय छे, कोइनो विश्वास न करवो एन पोतानं महान् हित छ, विश्वास निह करनारा निर्वेळ पण पराक्रमीने हाथे हणातो नथी अने वि-म्बासने वज्ञा थएलो पराक्रमी पण निर्वळने हाथ मार्थे। जाय छे. एटला माटे निर्भयसमान भयभीत न अने विश्वास समान विश्वास नर्ि करनार साववान पुरुष वनतां सुधी चळायमान थतो नथी अने ज्यारे ते चलायमान थाय छे त्यारे विनाश पामे छे. वखते शत्रुथी सन्धि अने मित्रथी विरोध पण करवो जोइए. शास्त्रार्थना निश्रय पूर्वक कर्ममां प्रवत्त तथा प्रसन्नचित्त थइ भयथी पहेलांज भय-

and the second s

भीतनी माफक कमे करवां, कारणके भयपूर्वक सावधानीथी उद्योग करनारो पुरुष बुद्धिमान ग-णाय छे. सन्मुख न आवेळा भयमां भयभीत थनारो पुरुप भयने पाप्त थतो नथी. विश्वास युक्त निर्भचथी पण वखते वहु भारी भच उपने छे. राजाओमां मिलाप के पीति होती नथी, राजा लोको कारणने लीधे मीठां वचना वोली दमदिलासा आप्या करे छे अने पोतानो मनोरथ सिद्ध थया वाद तजी दे छे, कोइ रीतना उपकारने नहि जाणनार अने अकृतज्ञ राजाओनो विश्वास न करवे। जोइए. प्रथम बुराइ करी पाछळथी दिलासो देनार होय तेनाथी हमेशां दूर रहेवुं, परस्पर शतुता करनारना पुत्रपौत्रादि परण पामे छे. अने पुत्रपौत्रादिना मृत्युथी परलोक्तनी कदि पण प्राप्ति थती नथी. शत्रु उपर अविश्वास राखवो एज तमाम रीते सुखकारी छे. विश्वासवातीनो तेमज अपमा-णिकनो कदि पण विश्वास न करवो. प्रमाणिकनो पण वधारे विश्वास न करवो. वांधव वर्गमां माता अने पिता सर्वथी श्रेष्ठ छे तेमज स्त्री वीर्थ गृहण करनारी अने पुत्र वीर्थ रुप होवाथी श्रेष्ठ गणाय छे. भाइ शत्रु छे कारण के तेने धनथी प्रसन्न करवी पडे छे. आ संसारमां एकलो आ-त्माज मित्र थइ सुख दुःखने भोगवनार छे. परस्पर शत्रुता करनारनो स्नेह शुद्ध होतो नथी. प्रथम बुराइ करनार प्राणीतुं चित्त हमेशां विश्वास रहित होय छे. जे स्थळे प्रथम प्रतिष्ठां होय अने पा-छळथी अपमान थयुं होय ते स्थळे बुद्धिमान पुरुषे फरी गमे तेटली प्रतिष्ठा प्राप्त थाय तो पण कदी न रहेवुं शत्रुता पांच प्रकारे उत्पन्न थाय छे. एक स्त्रीने माटे, वीजी पृथ्वीने माटे, त्रीजी कुवचनोथी, चोथी स्वभावथी अने पांचपी अपराधयी. शत्रुताना स्थान उपर वल अने अवलना दोपने जाणी विशेषे करी क्षत्रिय तरफथी प्रकट अथवा अपकट वांछित वस्तु आपनार मतुष्य मारवा योग्य नथी. आ लोकमां शत्रुता करनार मित्रनो पण विश्वास न करवो जोइए. जेम लाक-हीमा पण अग्नि गुप्त रीते रहेली होय छे तेम शतुता पण गुप्त रहेली होय छे. धन आपवाथी अगर कठोर के मीटां वचनोधी कोधािय शांत थतो नथी परंतु शास्त्रथीज शान्त धाय छे. शत्र-ताथी प्रकट थएल अग्नि अने अपराध्यी उत्पन्न थएलां कर्मो पण शत्रुनो नाश कर्या सिवाय शान्त थतां नथी. करवा योग्य तेमज न करवा योग्य अनेक कार्थी काळने छइ कराय छे. आलोकमां कोइ कोइनो अपराध करता नथी. जन्म अने मृत्यु वने वरावर वर्तमान छे. उत्पत्ति अने अंत काळज करे छे. केट-लाएक लोको एकी वखते परस्पर मार्था जाय छे अने केटलाएक भिन्न भिन्न वखते मरण पामे हे. जेम अग्नि काष्ट्रने भस्म करे छे तेन काळ पण सर्वने भस्म करे छे. काळज संसारना छुख दुःखने उत्पन्न करनार छे. वेदवेत्ताओए दुःखने मृत्युना उत्पात्तथी उत्पन्न यनारुं कहुं छे. प्राण अने पुत्र सर्वने

पिय छे, दु:खथी तमाम छोको डरे छे अने सुखथी संतुष्ट थाय छे. बुढापो आववो अने हाथथी धन जबुं ए पण दुः ल छे. अपियनी साथे निवास करवो अने हेतु तथा वान्धवोंथी दूर रहेर्बुं ए पण दुःख छे, घात अने वंधनथी उत्पन्न थनारुं दुःख छे. स्त्रीथी संवंध राखनारुं दुःख छे अने एवी रीते देहथी उत्पन्न थनारुं पण दु:ख ज छे तेमज विरोधी पुत्रथी निरं-तर दुःख छे. एवा एवा दुःखोने जाण्या छतां पण तेमां प्रवृत्त थयेला अज्ञानी लोको बीजाना दुःखने दुःख नथी मानता. जे दुःखने नथी जाणता तेज मोटा मनुष्योथी वाद करे छे. जे मनुष्य सर्व दुःखोना स्थानरूप पोताना देहने जाणे छे ते वीजा साथे कदीपण तेम करतो नथी. तुटेल माटीनुं पात जेम संघातुं नथी तेम शत्रुता थया पछी मित्रता धाती नथी. जे जीव शत्रुओना सत्यवचन तथा विध्यावचन उपर श्रद्धा राखे छे ते अवज्य विनाशपामेछे. सामा माणसनुं अपमान करी फरी तेनों विश्वास करवो ते दुःखनी निज्ञानी छे. जेना वन्ने पग-मां फोल्ला पड़्या होय ते चालतां पीडा पामे छे. रोगवाळी आंखथी पवन तरफ जोनार पुरुप पी-ढा पामे छे. जे पुरुष कुमार्गमां पाप्त थइ पोताना पराक्रमना अभिमानथी पाछे। वळतो नथी तेतुं जीवन ते मार्गमांज समाप्त थाय छे. दृष्टि निह थाय एम जाण्या छतां जे खेतर वावे छे तेने कदापि फळनी उपलब्धि थती नथी. जे पुरुष तिक्त, कपाय अने मधुरादि रसोने विचार पूर्वक पथ्यनी रीते खाय छ ते निरागी थाय छे. अने ने पथ्य भोजननो त्याग करी परिणामने जाण्या छतां अ-ज्ञानताथी क्रवध्य करे छे ते मृत्यु पामे छे. पारव्य अने उद्योग परस्पर एकवीजानी रक्षामां वर्त-मान छे. महान् साहसिक पुरुषों कर्मने श्रेष्ठ गणे छे अने नपुंसक लोको रात्री दिवस प्रारब्धने ज रोया करे छे. सर्व जनोए पोतानी दृद्धि करनारां कर्मो करवां जोइए. चाहेते सुगम है।य या कठिन होय, कारणके नकामो निर्धन मनुष्य निरंतर अनर्थीथी ग्रसित थाय छे. एटला माटे सर्वनो त्याग करी पराक्रम करवुं एज योग्य छे. मनुष्ये पाताना हितनी खातर तमाम धननो पण त्याग करवो जोड़ए. विद्या, शुरता, विज्ञता, वैराग्य अने धैर्य ए सर्व देहनी साथे उत्पन्न थनारा मित्र गणाय छे. अर्थात् आ लोकमां उक्त गुणोद्वारा गुणवान् गणाइ शकायके. सुवर्ण, रत्न, छत्र, स्त्री अनेसुहु ज्ञनो ए सर्व हितकारी छे. मनुष्यने ए सर्व स्थळे मळी शके छे. तेवा पुरुषने कोइए डरावी शकतुं नथी अने कदाच कोइ डरावे छे तो पण भयने प्राप्त थतो नथी. बुद्धिमाननुं थोडुं धन पण दृद्धिने पामे छे अने असावधान पुरुषोना कर्म अचेतपणाथी अटकी जाय छे. गीतिमां वंधाएला मुखें मनुष्योना मांसने खोटी स्त्रीओ पोताना अपराधोयी पीडा उपजाने छे अर्थात् शुष्क वनावी दे छे.

अमुक घर, क्षेत्र, पित्र अने देशना ममत्वथी मनुष्य पीढायमान थाय छे, कारणके रोग अने दुर्भिक्षने लीघे पोताना देशने छोडी वीजे स्थळे रहेवा जबुं पढे छे अने त्यां रक्षण पण मळे छे. जूठी भार्या, कुपात्र पुत्र, अन्यायी राजा, जूठी मित्रता, जूठो नातो, अने जूठो देश ए सर्वनो दूरथीज त्याग करवो. कारणके कुपात्र पुत्र विश्वास लायक होता नथी.कुभार्यामां रतिहोती नथी, खोटा राज्यमां आजिविकानो अभाव छे, निरंतर निर्मूळ मित्रतावाळा कृत्रिम मित्रमां मिलाप होतो नथी. धननो नाश थवाथी जूठी नातादारीमां अपमान प्राप्त थाय छे. जे प्यारां वचनो कहे तेज भायी, जेनाथी सुख मळे तेज पुत्र, जेमां विश्वास होय, एज मित्र अने जेमा जित्रन होय एज देश कहेवाय छे. जे देशमां अन्याय अने भय नधी, तेमज कठिन आज्ञा आपनार राजा निर्धनोतुं रक्षण करवानी इच्छा राखे छे एवा गुणवान अने धर्मज्ञ राजाने भाषी, देश, मित्र, पुत्र, स्नेही अने वान्धव प्राप्त थाय छे. अधर्मी राजाना दंहथी प्रजा नष्ट थाय छे, कारणके धर्म अर्थ अने कामनुं मूळ राजा छे एटला माटे अति सावधान यह तेणे प्रजानुं रक्षण करवुं जोहए. जे प्रजा-नी रक्षा न करे ते राजा नहीं पण चेार गणाय छे. जे राजा पोते पोतानी निर्भयताने प्रकट करी धनना लोभथी उक्त वातनं प्रमाण नधी करतो, ते अधर्मी सर्व प्रकारना लोभथी पापी वनी नर-कमां जाय छे; अने जे राजा पोतानी निर्भयता पकट करी प्रमाण पूर्वक धर्मथी प्रजातं परिपाछन करे छे ते राजा सर्वने सुख आपनारी नीवहे छे. माता, विता, रक्षक, गुरु, अग्नि अने क्ववेर ए वधाना गुण राजामां होवा जोइए. प्रजा उपर पितानी पेठे कृपा करवी, मातानी माफक तेनी टुद्धि चाहवी तेमज पीडिततुं पोपण करवं. अग्नि माफक शतुओंने एवा भस्म करवा के जेम यमराजा पापीओने दंड आपे छे. कुवेरनी माफक मित्रोने जरथी तर करवा, गुरुनी माफक प्रजाना सर्व मनोरथ पूर्ण करी धर्मनो उपदेश करवो अने रक्षक वनी चारे तरफथी रैयतनुं रक्षण करवुं. जे राजा पोताना गुणोथी पुरवासी अने देशवासीओने प्रसन्न करे छे तेमज देशना संरक्षणथी जेनी मना दुःखी थती नथी, ते राजा लोकिपय थइ आ लोक अने परलोकिमां अवर्णनीय आनंद भोगवे छे. जेनी प्रजा प्रतिदिन दृद्धि पापता करोथी पीडित थइ भयभीत वनी अनर्थने लीधे नष्ट थाय छे, ते राजा पण विनास पामे छे. वळवानथी कदी पण विरोध करवो नहीं. कारणके तेम थवाथी राज्य अने मुख एक साथे नष्ट थाय छे. दंडधारी राजाए उद्योग करवो. दोपथी दूर रहेवं अने शतुओना दोपो देखी तेओने कवजे करवा जोइए. सदैव दंडने जारी राखनार राजाना मनुष्य अत्यंत भयभीत थाय छे. एटळा माटे तमाम जीवोने दंढथी स्वाधीन करवा. मुख्यताने जोनारा

पंडित लोको दंडनीज पशंसा करे छे, जेम दृक्षनुं वीज नष्ट थवाथी शाखा तथा फळ आदिनी आशा राखी शकाती नथी, तेम देशनुं पूळ कपावानी साथे तेमां रहेळां प्राणीमात्रनुं जीवन नष्ट थाय छे.बुद्धिमान् राजाए पथमज शत्रुपक्षनी जड कापी नांखवी. त्यारवाद तेना सहायकोने मारवा अने तेना मूळने स्वाधीन करतुं. आपितकाळ प्राप्त थतां नेक-सलाह अने सुंदर कराक्रम साथे युद्ध करी वखत मळ्ये कांइपण विचार कर्या सिवाय युक्तिथी भागी छूटवुं. वातो तो कोमळता पूर्वक करवी; परंतु हृद्यमां छरा समान तीव्रता राखवी. सफाइदार वातीलाप करवो अने काम, क्रोधने तजी पोतानुं कार्य शत्रुने आधीन थइ जता तेनी साथे विश्वासयुक्त वनी संधि न करतां बुद्धिवळथी पोतानुं काम सिद्ध करी तुरतज तेनाथी जुदा थइ जवुं. मित्रोनी माफक मीटा वचनो थी शत्रुने विश्वासयुक्त करी सर्पयुक्त घरनी पेटे तेनाथी निरंतर वीता रहेवुं. शत्रुओनो बुद्धि अनुसार विजय करवो अने तेओने व्यतित हत्तान्तोथी हढता कराववी. मुर्ख लोकोने भविष्यमां थनारा हत्तान्तोथी विश्वासयुक्तं करवा अने पंढि तोने समयानुकुल वचनोथी धीरज आपवी, हाथ

जोडवा, श्रुपथ खावा, मीठां वचन वोलवा अने शिर झूकावी नमन पण करवुं. आपत्तिमां अैश्वर्यने

इच्छवाबाळाए रात्रुना सामे अश्रुपात करवो; ज्यांसुधी समय अनुकूळ न होय त्यांसुधी रात्रुने

पोतानी कांघ उपर उपाडी चालवामां पण कशी अयोग्यता नथी.

नातुक् संपर्धे प्राप्त थतां ए शतुने एवी रीते मारवी के जेम घडाने पत्थरपर पंछेंग्डी हुकड़े हुकड़ा करी नाखवामां आवे छे. घणा मनोरथोने संपूर्ण करवानी इच्छावाळा पुरुषोए कृतद्मी मतुष्योथी सर्वंध न करवो. राजाए कोकिला, सुकर, पर्वत, खाली मकान, नट अने भक्त मित्रनी माफक कल्याणकारी कर्म करवां अर्थात् कोकिला जेम पोताना वालवच्चांओतुं पोषण वीजा पासे करावे छे तेम राजाए पण रक्षा आदि कर्म प्रजायी कराववुं. वराह जेम जडने खोे छे, तेम राजाए पण शत्रुनी जड उलेडी नांखवी. मेरु पर्वतमां जेम हटता अने गौरव छे, तेम राजाए पण शत्रुनी जड उलेडी नांखवी. मेरु पर्वतमां जेम हटता अने गौरव छे, तेम राजाए पण पोतानी दुद्धिने दृढ राखी, गौरवनो त्याग न करवी. खाली मकानना जेम भाढां उपजाववामां आवे छे तेम धननी आवक वधारवी. नटनी माफक घणां रुप धारण करवां, अने भक्त- मित्र जेम पोताना मालीकनो उदय चाहे छे, तेम राजाए पण पोतानी प्रजानो उदय करवो.मेळाप करवानी इच्छावाळा पुरुषे निरंतर उठी उठी शत्रुना धरमां जइ तेने क्षेम कुश्चळ पूछवा. कदाच ते अकुश्चळ होय तोपण तेम पूछवामां फायदोज छे. सुस्त, नपुंसक, वीकण, अने प्रारब्धजनोज भरोंसो राखनार मतुष्योना मनोरध किंद पण सिद्ध थता नथी. राजाए पोताना दोपने ग्रुप्त राखी

शत्रुना दोषोथी वाकेफ थता रहेवुं. काचवा समान अंगोने छुपावी पोतानी रक्षा करवी. वगला समान अर्थोनो विचार करतां रहेर्वुं सिंहनी समान पराक्रम कर्र्वु अने वरुनी माफक वैरीने विदारी ससला माफक भागी जबुं. मद्यपान, पासा, स्त्रीसंग, शिकार अने गीतवाद्य आदिनुं सेवन युक्ति-पूर्वक करवं. वखते देखता, वखते आंधळा अने वखते व्हेरा पण वनी जवुं अने बुष्टिवळथी देश-काळने अनुकूळ जाणी पराक्रम वतावर्युः कारणके देशकाळ पतिकूळ होय तो पराक्रम निष्फल निवंडे छे; एटला मांटे पोतानुं वळ अवळ, देशकाळ अने परस्परना वळनी तुझना करी कर्ममां प्रवृत्त थवं. जे राजा दंडद्वारा झुकेला शत्रुने स्वाघीन नथी करतो ते गधेडीना गर्भ समान पोतातुं मृत्यु प्राप्त करे छे. सुंदर रीते पुष्पित थइ अफळ धवुं तेमज फळत्रान् थर कठिनताथी चडवा योग्य थवुं ए रीते काचा पाका आम्रनी छवि धारण करवी. परंतु कोइ दिवस शुष्क थवुं नहि. आशाने समय उपर पूर्ण थनारी समजवी अने तेने विघ्नमां न नांखवी. विघ्नतुं निमित्तद्वारा अने निमित्ततुं हेतद्वारा वर्णन करवुं. ज्यांसुधी भय सन्मुख न आवे, त्यांसुधी भयभीत समान कर्म करवां अने भयने सन्मुख आवेल जोइ निर्भय समान तेने दूर करवा. संशयने अनुभव्या सिताय मनुष्य कल्याणने प्राप्त थतो नथी.ज्यारे संशच उपर चढी सजीवन रहे छे,त्यारेज कल्याणने जोइ शके छे.सन्मुखमां वर्तमान सुखनो त्याग करी पाछळथी तेनी आज्ञा राखनी ए बुद्धिज्ञाळीतुं काम नथी. शत्रुनी साथे मिलाप करी विश्वासपूर्वक स्रुख सुइ रहेवुं ए द्रक्षानो सर्वे।परी टोंच उपरथी सूता पडी सावधान थवा जेवुं छे. क्षेम वने तेम कोमळ अने कटोर कर्मद्वारा पोताना दीन आत्मातुं रक्षण करवं अने समर्थ वनी धर्ममां प्रदत्त थर्बु शाहुओना शहुनी साथे स्नेह वांधवो अने शहुए नियत करेला दूतोथी तेमज पोताना जामुसोथी हरघडी वाकेफ थता रहेवुं ए अगत्यतुं छे.पोताना जामुसोने शत्रु न जाणे तेम गुप्त रीते नियत करवा जोइए. पाखंडी तपस्वीओने शत्रुओना देशमां दाखळ कराववा. उद्यान, विहारस्थान, प्यावा आदि जळपानना स्थान, प्रवेशस्थान, तिथस्थान अने सभा आदि स्थानोमां मारण आदि कमरुप धर्मने धारण करनारा महा पापी अने संसारना कंटकरुप एवा मनुष्यो आव छे तेने ओळखी ओळखी स्वाधीन करवा अथवा प्राणरहित करवा. परीक्षा कर्या सिवाय कोइनो पण विश्वास करता भय प्राप्त थाय छें. सिद्धांतरूप कारणथी शत्रुने विश्वासयुक्त करी फरी कोइ समये राज्य चलायमान थतां तेने टार करवो. असंदिग्धमां पण संदेह करवो अने संदिग्ध मनुष्य उपर तो सदाय संदेहवाळा रहेवुं. असंदिग्धधी पण उत्पन्न धनारो भय समूळ उच्छेदन करी शके छे. सावधानी, मौनता, काशाय वस्त्र, जटा अने मृगचर्म आदिथी शतुओना हृदयमां

विश्वास वेसाडी वरुनी पेठे तेओनो घात करवो. प्रयोजनमां हानि पहोंचाडनार पुत्र, भ्राता, पिता, अने मित्र आदिने पण अश्वर्यने चाहनारो राजा मारे तो ए अयोग्य नथी. अहंकारी, कार्याकार्यने जाणनार, अने कुमार्गगामी गुरु पण दंडने योग्य छे. तिक्ष्ण चांचवाळा पक्षीनी पेठे अन्युत्वान नमस्कार अथवा कांइ आपीने पण शत्रुना फळ फूलोनो नाश करवो. शत्रुना मर्मस्थानने न कापतां तेमज अन्य भयकारी कर्म न करतां मच्छीमारनी माफक जाळमां पकडी तेओनो जीव लेवो. ए सिवाय उत्तम लक्ष्मीनी उपलब्धि थती नथी. शत्रु अने मित्र जन्मथी निह परंतु केवल सामर्थ्यथीज उत्पन्न थाय छेः शत्रु कदाच शोकयुक्त वचनो वोलतो होय तोपण ते छोडवा योग्य नथी. अपराधीने मारवामां लेश पण दुःख न मानवुं अने वीजाना गुणोमां दोषतुं आरोपणन कर-नारा मनुष्योने एकटां करी तेओना उपर कृपा करवी जोइए. अैश्वर्यने इच्छनारी राजा तेओने युक्तिपुर्वक दंड पण आपी शके छे. हारेला शत्रुने कदि पण छोडवो नहि, कारणके ते ध्यान दीघा सिवाय वधवा आपेला रोगनी माफक महान् भय उपजावे छे. सारी रीते नहीं काढेलो कांटो पण घणा वस्वत पर्यन्त पीडा करे छे. विपरीत रीतिथी कर्म कदिपण न करवां.मनु व्योने मारवा, मार्गोने वगाडवा अने स्थानोने तोडवा आदिथी शत्रुना देशने नष्ट न करवो; परंतु गीध समान दीर्घ दृष्टि, वगला समान चेष्टा रहित ध्यान, श्वान समान जागृति, चोर समान विज्ञान, अने सिंह समान पराक्रमने धारण करी, काग समान वीजाओनी अंगचेष्टाओने जाणी सपनी माफक अकस्मात् शत्रुना गढ विगेरेमां प्रवेश करवो. शूरवीरने हाथ जोडवाथी अथवा भेदयी अने लोभीने धनथी पीताना पक्षमां मेळववा. वडीआ साथे युद्ध कर्त्युं योग्य छे. विद्वाननी साथे विरोध करी एम न समजवं के हुं दूर छुं, कारणके बुद्धिमाननी वन्ने भुजाओ लांवी होय छे ते घायल छतां पण वन्ने भूजाओथी प्रहार करी शके छे जेनो पार पामवो कठिन छे तेने तरवानी कदिपण इच्छा न करवी. जेतुं वीजो हरण करी जाय तेने पोते न लेवुं. जेनी जड उखेडवामां न आवे तेने न खोदवं अने जेनो शिरच्छेर करवामां न आवे तेना उपर प्रहार न करवो. आपत्तिमां पेडळा राजाए शत्रु तरफथी युष्टतुं आमंत्रण आवतां अवदय ए ममाणे कर्त् जोइए.

आपित्तना समयमां प्राणीनी प्रथम रक्षा करवी, मृत्यु करतां जीवन उत्तम गणाय छे, कारणके जीवनथीज धर्म थइ शके छे. राजाए अनेक शास्त्रोद्रारा घणुं ज्ञान मेळववुं जोइए, आ लोकयात्रा एक देशीय धर्मथी जारी रहेती नथी. महात्मा लोकों दुएता करनारनी सामे शत्रुता प्रकट करता नथी, परंतु धीरेधीरे पोताना पुरुषार्थ वतावे छे. बुद्धिरहित मनुष्ये बुद्धिथी जीवन

करनार मनुष्य साथे शत्रुता न करवी, कारणके बक्त वर्त्तन घासमां अग्नि नांखी सामे पवने सूवा जेवुं छे. जे पुरुष हानि अथवा लाभमां शोक के हर्षने माप्त यतो नयी, तेमज ममता अने अहंकार रहित समदर्शी छे ते दढ पराक्रमीने हानि, लाभ, सुखदु:ख, पिय अपिय अने जीवन मरण न्याकुळ करी शकतां नथी. आटलुं कही मार्केडेये घडिभर मौन धारण कर्यु. मुनिराज मा-र्केंडेयना वचनामृततुं पान करी भूख तृपाने भूली गएला हरपालदेवजीना हृदयमां हिम्मते निवा-स कर्यो, चिन्ता दूर धइ, उत्साहधी तेओना तमाम अंगा फूली गयां. चरणो चालवा माटे. वाह्वळ बताबवा माटे, मुख ऋषिराज आगळथी अणहिलपुर पाटण जवानी आज्ञा मागवा माटे, वक्षःस्थळ करणवापेळाने भेटवा माटे, नेत्र मुनिराजनी निर्मळ छवि निरखवा माटे अने श्रवण मार्केडेयना मुख्यी आशीर्वचन श्रवण करवा माटे एक साथ आतुर थएल होय एम जणायुं. योगनी पराका-श्राए पहेंचिला महात्मा मार्केडेये तुरतज तेओना आन्तरिक विचारो जाणी मधुर वाणीथी कहां के पुत्र इरपाल ! तुं तारा स्वरूपने ओळख, साधारण मनुष्योनी माफक तुं आ संसारमां अवतर्यो नथी; तुं साक्षात् शंकरनो अञ्चावतार छे, तारा उपर परमात्मानो पूर्ण प्यार छे, तने सहायता आपवा माटे ने इरवखत तैयार छे, तारे कोइनी मदद निह छेवी पडे. तुं सर्व कोइने आश्रय आपीश कारणके पूर्वे मसन्न थएका पिनाकपाणिए कुंडमालने वरमदान करेंक्र के के-"हुं तारा कुळमां अवतरीश, हरपाळ नाम धारण करीश अने शक्तिने वरीश. " माटे वीरपुत्र ! तुं सत्वर पाटण सिधाव अने सर्व स्थळे तारी वहादुरी वताव. त्यां गया वाद शक्ति तने वरशे अने अनेक प्रकारे आपणा कुळतुं कल्याण कम्को. आ रीते विदेल मार्केडेयना वचनो सांभळी हपीवेशमां आवेला इरपालदेवजी ऋषिराजने दंडवत मणाम करी वोल्या के मभु ! जवा तैयार छुं, मात्र आपना मुखधी आशीर्वाद मळे एटलाज विलम्ब छे. "अविनाशी अजन्मा सतीपतिना आशी-र्वाद तने मळी चुक्यो छे. ते उपरांत हुं पण आश्चीर्वाद आपुं छुं के तारा सर्व मनोरथ सिद्ध थहा अने तारी सिंह सरखी गंभीर गर्जना सांभळी गमे तेवो वळवान हहा ते पण वळरहित वनी जहो." आटलुं वोली मुनिवर मार्केडेय अदृश्य थया अने राज हरपाळदेवजीए अणिहलपुर पाटण तरफ प्रयाण कर्यु.

ए वसते ग्रीप्मना गौरवने गाळी महाराणी वर्षाए अखिल अवनिमां पोतानो अमल जमान्यो हतो गलीचा समान सुकोमळ लीलां घासथी भूमंडल ख्वाइ रह्यं हतुं. िमय द्शनियी हर्षेचेला वनेला मचूरो मद्युर ध्वनियी सर्व स्थळने शब्दायमान करी रह्या हता, अवरने निह याच- वानी टेकने माण साटे पाळनारा चातको " पीयु पीयु " करता च्यामपथमां विनोदर्थी विचरता हता, करिष्टन्दना कुंभस्थळमांथी निकळता मुक्तानी शोभोन धारण करनार इयामवनयी स्रवता जल विन्दुओ जूमिना भूषणरूप थता इता,चन्द्रहासनी माफक चोर कोर चपला चमकी रही हती, शीतक समीरनी लहरीओथी वनवेद्यीओ झूली रही हती, झिल्लीना झणकार, कोकिलाओना कळरव, ज्युनूनी ज्योति अने सुखदायक सौरभथी वसुधा विविध प्रकारे विल्लंश रही हती. रमणीय ऋतुराजना आनंदपद आगपनथी कोकिछाओं कूकवा छागी, भ्रपरगण भय रहित वनी गुंजवा लाग्चा, दशे दिशाओषां सुगन्धी समीर प्रसरी रह्यो, लवंग आदि लताओ प्रफुल्लित थइ, कदम्व आदि द्रक्षोनी ढाळीओ ढोळवा लागी, ग्रुको मनोरंजक श्लोर करवा लाग्या, शन्दा-यमान सारिकाओं आनंद उपजाववा लागी तेमज गुलावनी चटक, पंकजनी लटक अने मरालनी खटक कामदेवना कटकनी पेठ विरहीजनोने व्याधिना वारिधिमां डुवाववा लागी, गगनमंडलमां रयाम घनघटा नीचे छटाथी गपन कर्नी वक्तपंक्ति नीलमना पहाड पर पडेलास्काटिकनी शोभा-ने धारण करती हती. पतिने मळषा आतुर थएछी पेमी प्रमदाओनी पेठे नीरथी छलकाती नदी-ओ पोताना स्वामी समुद्रने भेटवा अति उत्कंटा पूर्वक त्वराथी गति करवा लागी. टामटाम दादु-रना मनोहर स्वर संभळावा लाग्या, पथिकजन विद्वळ वनी पोतपोताने स्थाने विदाय थवा लाग्याः पृथ्वीना भाग्यनी महत्ता प्रदर्शित करनार, संयोगीओने स्रुख आपनार, विरही जनोना तनमां ताप उपजावनारु, कंजना पुंजनुं गंजन करनार, रिसक जनोने रंजन करनार अने मानिनीओना मानतुं भंजन करनार अंजन समान वर्णवाळां वादळोथी छवाएछ आकाश तरफ दृष्टि करतां सुनि-ओनां मन पण डोलवा लाग्यां. जगत् आखुं जलमय वनी गयुं,मन्दमन्द गर्जना करता वारिधरथी च्योमपथ च्याप्त घतां अवनिमां अतुङ अन्धकार फेलायो; घनमां विद्युत, विरहीना मनमां च्याक्त-ळता अने वन उपवन तेमज पर्वतनी टोच उपर मधूरो एकी साथे नृत्य करवा छाग्यां. संसारमां स्नेह छवाइ रह्यो, जीवननी दृद्धिथी जल जन्तुओं कल्लोल करवा लाग्या, उत्तंगगिरिशृंगथी पहता जलना अभंग प्रवाह अनंगना अंगनुं अस्तित्व जणावी रिसक लोकोना हृदयनै रंगवा ला-ग्या, हर जगोए हरियाली जोइ हर्षित वनेला प्रेमी जनो हजारी कोशथी दोडी आवी पोतपीता-नी निया पासे हाजर थवा लाग्या, मात्र पत्थर समान छातीवाळा पुरुषोज परदेशमां पड्या रह्या. घरोघर मलारनी धुन मची रही, कोइ कोइ ममदाओं गाजवीजथी गमएइ वियतमने गळे लपटा-वा लागी, कोइ झूलवा लागी, कोइ मूलाववा लागी, कोइ गावा लागी अने कोइ रमणीओं रस-

भरी वातो करवा लागी; शहेरमां रहेनारा स्त्री पुरुषो समी सांजमां व्याळु करी मेवळी रात्रीमां वाहेर नहि निकळतां गृहना द्वार वंध करी अमलचेन उडाववा लाग्यां. महीमंडलनी मलिनता द्र थइ, रस्ताओ स्वच्छ वनी गया, छमछम पडता विन्द्रओथी तमाम मतुष्योना कर्णपुट तप्त थवा द्धारया. विविध प्रकारना विनेदिन आपनारी वर्षाऋतुमां केटलीएक सुभागिणी स्त्रीओ भेमधी आर्द्र थएला पतिना हृदयमां रसवीज बोबा लागी अने केटलीएक अभागिणी विरहिणी बामाओ लांबे रागे रोवा लागी, केटलीएक सुभागिणी ज्यामाओं मेहेंदीने पीसी कर कमळने विशेष रक्त करना लागी अने केंटलीएक अभागिणी अंगनाओ विरहनी महा व्यथाथी करने परस्पर मसळवा लागी, केटलीएक सुभानिणी सुंदरीओ हृदय वल्लभना हृदयथी हृदय लगावी वर्षानी यामिनीमां अपूर्व मुख अनुभववा लागी अने केटलीएक अभागिणी युवतिओ विदेशमां वळुंधी रहेला कान्त प्रत्ये कटोर वचनो कववा लागी. पवनरुपी वजीर, दादुरुपी दाूरवीर सिपाही, पावसरुपी मुसाहिव, इयामघनरुपी द्विरद, गर्जनारुपी रणवाद्य, विद्युतरुपी निशान, इन्द्रधनुष्यरुपी कृपाण, मयूररुपी स्वार अने वकनी पंक्तिरुपी पैदलवाळुं सैन्य सज्ज करी जल रहित वनेला श्वेत पयोदरुपी तंबु-ओने ताणतो तेमज कोकिलारुपी वन्दीजनोए विरदोवेलो कामदेवरुपी राजा, स्वामी विनाना सूना घरमां विरह व्यधित वामाओने विशेष व्याकुळ करवा तत्पर थयो होय तेम जणावा लाग्युं. ज्याम शरीरे विद्युतरुपी पीताम्बर पहेरी इन्द्र धनुपरुपी वनमाळाने धारण करनार मन्द गर्जनारुपी मीठा शब्द संभळावनार, वक्तनी पंक्तिरुपी मोतीओनी माळाओथी मनोहर जणाता, मोरना शोर-रपी वंसी वजावता अने जृगुनूरुपी हीराओन। हारथी आसपास प्रकाश फेलावता आकाशमां रहेला अम्बुद कृष्ण कन्हैयातुं स्वरुप धरी शोभवा लाग्या; एज वारिधरो विपळ वायुरुपी दृपभना वाहनवाळा, विशद वक्तना समृहरुपी शेपहारने धारण करनारा, शुभ्र अभ्ररुपी विभूतिथी विरा-जित अंगवाळा, दादुरना उमंग भरेला व्वनिरुपी डमरुने वजावनारा, ज्यामघटारुपी गजचर्मवाळा जलधारारुपी विशाल जरावाळा अने विद्युत्नी छरारुपी त्रिशूळने धरनारा विश्वपति शंकरने स्वरुपे विराजवा लाग्या. क्यांइ सीधा, क्यांइ वांका, क्यांइ गोळ, क्यांइ ळांवा, क्यांइ त्रिकोण, अने क्यांइ चोखंडा मेघो गर्जनारुपी नोवत वजावी, दामिनीरुपी दिवाओ करी, जलविन्दुरुपी सुमन-नो समृह तथा इन्द्रधनुपरुषी विशाळ माळा लइ, अभिनव अम्बुना चोजाथी झ्कवारुप प्रणाम-पूर्वक मोरना ज्ञोररुपी स्तृति वोकी तेमज पवनना अकोररुपी आसपास चमर ढोळी अपूर्व मीतिनी रीतिथी पूजन करता परमेश्वरना दासनी माफक दीपवा लाग्या. क्यांइ डोलता, क्यांइ झुकी प-

P

हता अने क्यांइ धूमीधूमी जूमिथी अथहाता, वार्त्वार गर्जना करता, मूसळघारारुपी मद जळथी मने। इर जणाता वक पंक्तिरुपी दंताशळथी रमणीयताने धरता अने समीरुपी अंकु-श्रने नहि गणकारता इयामवर्णना सघनघन मदोन्मत्त मत्तंग जेवा जणावा छाग्या सांज सवार नदी नाळाञामां नीर निर्मरना झणझणाट अंतःकरणमां अवर्णनीय आनंद उपजाववा लाग्या. झिल्ली गणरुवी झांझ घुरवाना ध्वनिरुपी मृदंग, विद्युत्रुपी मसाल, सारिकाना शब्द्रुपी सारंगी तथा दादुरना नादरुपी डफ विगेरे समयानुकूळ साजने सज्ज करी मयूररुपी गोपगणने नचावतो वर्षा-रुपी रासधारी रसिकजनोना हृदयने रिझाववा लाग्यो। घनयी दामिनीनो संयोग जोइ कामिनीओ पोतपोताना मनमोहनने आठे प्रहरभावथी भजवा लागी. सागर साथे सत्वर समागम करती नदी-ओने निहाळी असंख्य युवतीओ अधीरी वनी पोतपोताना मनभावनने भेटवा छागी: केटछांएक आनंदी जोडलां हरियाली भूमिमां पुष्पना भारथी नमी गएल वृक्षनी डाळीओ उपर हींचका वांधी शीत, मन्द अने सुगन्धी समीरनी लहेरों छेता हींचवा छाग्यां, तेमज केटलाएक वनी वरसादथी भींजाता वस्त्रोनी दरकार निह राखतां विनोदथी वन विहार करवा छाग्या. जे स्त्रीओना पति परदेशमां इता तेओने पश्चात्तापनो पार रहो। नहिः विरहिणी स्त्रीओना धैर्यरुपी गढेन तोडवा माटे महाराजा रतिपतिए वकना समूहरुपी निज्ञानने फरकावता चपछारुपी कृपाणने चमकावता, गर्ननारुपी इंखनाद करता, अने शीतक बुन्दरुपी वाणोने वरसावता पावसने पृथ्वी पर पठान्यो होय एवं अनुमान थवा लाग्युं. क्यांइ काळां, क्यांइ रातां, क्यांइ पीळां, क्यांइ श्वेत, क्यांइ रंगवेरंगी अने क्यांइ धूपस जेवां वर्णनां चादळांओ परोपकारीपणाना प्रवल प्रभावथी दिनकरनी द्युतिने द्वावता आमेतम दोडादोड करतां दृष्टिगोचर थता इता आवा उत्तम अवसरमां केटलीएक फूलवेली माफक फूळेली नवेली तथा अलवेली अंगनाओ सुखदायक किकणीओनी शोर फेलावती, उरने उछाळती, वक्र दृष्टियी भुजवन्धने भाळती अने लंकने छचकावती, विपरीत रतिनी शैळी शीखवा माटे हर्पथी हिंडोळे हीचवा लागो. प्रेमना रंगयी रंगाएली रसभरी रमणी-ओ पोतपोतानी साहेलीओ संगे निर्मळ नखोमां मनोहर महेंदीनो रंग लगावी उमंगथी झलाओ उपर ज़ूलती हती. ते समये तेओना मनमां मार, हृदयपर हार अनेअणिआळी आंखोमां भाविक भरथार झुळवा लाग्या. केटलाएक रिसेक जनो कुंजवनमां मनोभवना मदयी मस्त वनेला अने मलारना मधुर आलाप करता पोतपोतानी पमदाओने झ्लाववा लाग्या, परस्पर आसवना प्याळा भरी पीवा ळाग्या. मुखयी मुख विलावी मन्दहास्य करवा लाग्या. तेमज स्नेह-

सागरमां निमग्न थइस्रुखना भंडारो भरवा लाग्या आ रीते वर्षाऋतुनी विविध वहार क्षितिमंडलमां छवाइ रही हती. परंतु राज हरपालदेवजीना हृदयमां तो ग्रीष्मनोज वासों हतो. विधिनो तमासो विचित्र छे, अगणित अनुचरोए आश्वासन कराएल राजपुत्र आने एकाकी प्रवास करवा प्रदृत थएल छे, विविध प्रकारनां अपूल्य वाहनो पर विराजनारो वीरनर आजे पैदलनी स्थिति अनुभवे छे, श्वेत छत्रने शिरपर धारण करेनारो धीर पुरुष आजे जलधाराथी भींनातो चाल्यो जाय छ, ज़दीज़दी जातना जरकसी जामाओने पहरेनारो प्रतापी पृथ्वीपति आजे अन्य परिघानने अभावे आई वस्त्रोने हाथे नीचोवी वायुना वेगमां सूकवे छे; मनोहर महेलोमां निवास करनारी महीपति आजे वनवासी वनी वखत वितावे छे, दासी दासधी वींटाएलो दिव्य पुरुष आजे उदासीमां गरकाव वनी आमतेम गोधां खाय छे, हजारो हथिआरवं ययोद्धाओए सुरक्षित शूरवीर आज मात्र ढाल तलवारने सहायक बनाबी धैर्यने धारण करी रहेल छे, भातभातनां भोजन करनारो भूपति मारव्यथी प्राप्त थतां कन्द्रमूळ अथवा फूलना आहारथी क्षुधाने शान्त करे छे, सुन्दर मखमलना विछानापर शयन करनारो श्रेष्ट पुरुष आवा आपत्तिना समयमां पृथ्वीरुपी पर्छंग माथे करतं शीर्षक वनावी अध वींचायली आंखे रात्रि निर्गमन करी प्रभातमां मार्गनी मापणी शरु करे छे, जेणे पोतानी जींदगीमां जरापण तकलीफ न्होती उठावी, ते तेजस्वी नर दैवे दीधेला दुःखमय दिवसी अविच्छिन्नगमनमां गाळे छे, खाडा खवडा, नदी नाळां, अने वन पर्वत आदिना विकटरस्ताओंने ओळंगता तेमज चिन्तारुपी सूर्येना तीत्र तापथी परितृप्त थएला राज इरपालदेवजी वर्पामां ग्रीष्मने अतुभववा लाग्या, मार्गने आच्छादित करी रहेला लीलां तृणो तेओने कंटक समान संकट उपजा-वनार निवड्यां, धूम्र वर्णनां वादळां उडेला धूलि समूह समान धेर्प तनावनार वन्यां. मयुरना मध्र अवाज कानना कोलाहल पेठे कणेकट जणावा लाग्या, चातकना चेष्टितथी राजहरपालदेव-जीना ह्रदयमां विशेष व्याक्कळता व्याप्त थइ, तेओ जल विन्दुओने जोइ प्रस्वेदना प्रवाहनी कल्प-ना करवा लाग्या, अने चपलाना चमकाराथी सूर्यना किरणोनी संभावना करता आगळ सुसमृद्ध वनवेलीओने विलोकी तेओने स्वकीय राजसमृष्टितुं स्मरण थवा लाग्युं, दशे दिशाओमां दृष्टिगोचर थता जलसमृहने तेओ झांझवानुं पाणीज समझता हता, शीनल समीर तेओना शाकतप्त शरीरनो स्पर्श करी उप्णनाने धारण करतो हतो, जुगुनूनी ज्योति तेओने ज्वाला समान जणाती हतो, भ्रमरना पुंज श्रृम्ननी भ्रान्ति भरता हता, दृष्टि वंय थया वाद व्रक्षोर्थी जलिन्दुओं स्वरतां हतां ते जाणे उक्त राजकुमारने आपित्तमां अवशेष अश्रुपात करतां होय एम जणातुं हतुं, वन-

वेळीओ वायुथी नहि पण दुःखथी डोळती होय एम देखातुं हतुं, राज हरपाळदेवजी तो एमज मानता हता के नारी आवी स्थिति जोइ विचारी कोकिलाओ आर्त स्वरे रुदन करे छे,दादुर आदि जलजन्तुओ दयाई हृदयथी पुकार करता मने आश्वासन आपे छे, वकनी पंक्तिओ पाटणमां मारा समाचार पहोंचाडवा आकाशमार्गे उडी जाय छे, शुक सारिका आदि पक्षीओ मने आजीर्वचन संभळावे छे, हरपालदेवजीतुं मन संज्ञमथी घेराएलुं हतुं, जो के साक्षात मार्केडेये दर्शन दइ तेओने बोध अ'प्यो हतो, छतां पोताने शक्ति वरशे, ए वात तेओ दृढताथी साची मानी शक्या निह, एन तो एटळे सुधी शंका उपनी के ए मार्केडेयन नहि, मार्केडेयने वेशे कोइ ब्राह्मण आपत्तिमां वर्षे आपवा आवेल हुशे एवा तर्कतरंगमां घडिभर तणाया, वळी घडिमां एवा निश्चय उपर आव्या के ए मुनि मार्कडेयज, वीज़ं कोइ निह, ब्राह्मणने शी गरज के अघोर जंगलमां आवी मने आश्वासन आपे ? वस, एज अजरामर योगीराज. जे योगवळथी परकाया प्रवेश करवा शक्तिमान छे, ते हर-जगोए हाजर थइ शके एमां नवाइ शी? आम शंका अने समाधान करता मजल दर मजल नवा नवा शैळो, सर, सरिताओ, कूप, वापी अने दृक्षोंनी घटाओंने विलोकता केटलाएक दिवसे परम मुख़ पद गुर्जर देशमां आवी पहें च्या सायंकाळनो समय होवाथी देवमन्दिरोमां थता झालरोना झणझणाट अने मनुष्योनो महान् कोलाहल सांभळी, पोताने खात्री थइ के हुं कोइ शहेरनी समीपे आबी पहें च्यो छुं, तेओ तुरतज हिम्मतमां आबी गया, दीर्घ पंथना परिश्रमने छीथे बहुज थाकी गएला होवाथी वे घडी विश्रान्ति लेवा एक दृक्षनी नीचे आसन लगावी वेटा, तेओना संकटने साथे लड़ सूर्यनारायण अस्त पाम्या अने चन्द्ररुपी मुखवाळी झिल्ली गणना नादरुपी मधुर उच्चार-वाळी, ताराओरुपी मन्द हास्यवाळी, चार प्रहरुपी उत्तम अंगवाळी अने चांदनीरुपी श्वत साडीयी सुशोभित शरीरवाळी, रमणीय रात्री दासीनी माफक राज हरपाळदेवजीनी सेवामां हाजर थर, दैव सानुकूळ थतां सर्व कोइ मुखदायक वने छे, जे निद्रादेवी उपासना कयी छतां पण आटला दिवस अलग रहेती हती। ते आजे विना आमंत्रणे हरपालदेवजीना नयनद्वारमां दाखळ थइ. अवि-चिउन उंघथी पूरतो आराम लइ, बाह्य मुहूर्चमां जागृत थएला हरपालदेनजी स्नान सन्ध्या आदि नित्यक्तमें करी फराकत थया तेवामां पुण्यमय प्रभात प्रगटयुं, सूर्यनारायण असंख्य किरणोरुपी कर्थी दुनियाने कल्याणतुं दान देता होय तेम रक्त स्वरुपे उदयाचळपर आरूढ थया, मित्रनो उदय जोइ कमळकोश विकसवा लाग्या, ब्राह्मणो वेद मंत्र भणी, पुरना परमाणुओने पावन करवा लाग्या, पक्षीओ पोतपोताना माळाओमांथी कल्लोल करतां आजीविका अर्थ उडवा लाग्यां, चारे

वर्ण पोतपोताना कार्यमां प्रदृत्त थया, देवालयोमां आरतिना मृत्युर अवाज थवा द्वाग्या, सुभागि-णी स्त्रीओ गृहांगणने रंगोलीथी शुंगारवा लागी, केटलीएक सुंदरीओ अवनवा शुंगार सजी, शिरपर त्रांवा पितळना चक्कचिकत वेडांओ लइ समान वयनी साहेलीओ साथ जल भरवा माटे गजगित-थी गमन करवा लागी, व्यापारी लोको पोतपोतानी दुकानो खोली लक्ष्मी देवीनी आराधना करवा लाग्या, अने खेडु लोको वळहद समेत खेतीनी आवादी माटे कृपिना साधनोने सङ्ज करी पोत-पोताना क्षेत्र भणी चाली निकळ्या, असंख्य जनोने आवागमन करता जोइ हरपालदेवजीनुं हृदय प्रफुल्लित थयुं. पूछपरछ करतां तेओने पूर्ण खात्री थइ के नयनोने शान्ति सागरमां निमन्न ए परम सुशोभित शहर अणिहलपुरपाटणज छे, दूरथी द्रष्टि करतां फरकती ध्वजाने धारण कर-नारां उन्नत देवालयो जाणे आकाशमां अद्रश्य रहेल अमरगणने धर्मनी उन्नतिना समाचार संभ ळावतां होय एम जणातुं हतुं, हवनाग्निना धूमथी अग्नि होमी विधोनां गृह सहजमां ओळखी शकाय तेम हतुं, राजमन्दिर अने धनाड्यनां भ्रुवना पण भारे ठाठमाठथी शोभी रह्यां हतां, पहेरे-गीरो पण पोतपोताना पहेरा उपर नियत थइ, प्रजावर्गने समय सूचववा माटे घंटानाद करवा लाग्या. राज हरपालदेवजीए विचार कर्यों के हवे शी रीते शहेरमां दाखल थवुं अने कोने त्यां वनी उतारो करवो. तेवामां कोइएक दृद्ध पुरुवने हाथमां होको लइ पोता तरफ आवतो जोयो, जो के ए द्रद्धजन कटिमदेशथी वांको वळी गयो हतो, तोपण तेनी गति जुवान जेवी जणाती इती, तेना नेत्रो अमझना केफथी नीचां नमी गएलां इतां. तोपण तेमां शौर्यनो रंग तेवोने तेवोज मकाशी रहा हता, दाही, मूछ अने ज्रकुटीना वाळ सफेद वनी गया हता, तोपण तेनो चहेरो कीइ वहादुर रजपूततुं भान करावतो हतो. दांत पढी जवाथी गाळ वेसी गया हता तोपण दाढी अने मूछनी जटाथी तेतुं मुख विशाल अने मनोहर जणातुं हतुं. पाघढीना पेच ढीला पडी गया हता तोषण तेनी करडाइमां कांइ न्यूनता जणाती न्होती, शरीरनो वर्ण क्वाम हतो, तोषण तेनी कान्ति अवाध हती, पासावंघ अंगरखापर जरा मेल चडेलो हतो, तोपण तेतुं गौरव हदयने रुचे तेवं हतं, पहोळा पायजामा रपर पछेडी अने तेना उपर भेट वांधी कोइ खानदान अमीरनी खूवी जणावतो ए दृद्धजन जेम जेम आगळ चाल्यो आवतो हतो तेम तेम हरपालदेवजीना हृद्यमां " ए कोण हम्ने ? शा माटे आवता हथे ? " विगेरे तर्कवितर्क थवा लाग्या. मीट अवस्थाए पहेंचिला पंचानन नी पेठे गंभीरताथी गमन करती ए दृद्ध पुरुष ज्यारे अति निकटमां आत्यो, त्यारे इरपालदेवजी आसनपरथी उठी चार ढगलां सांभे चाल्या, परस्पर रामराम करी उभा रह्या, आवेल हुद्ध पुरुषे

हरपाछदेवजीने हाथ जोडी विनति करी के आजे मारा धनभाग्य के आपना दर्शन थयां, आप ग्रुष्ट रजवूत छो, मारे घेर पथारा, हुं आपने तेंडवा माटेन आंही आव्यो छुं. " आप कोण ? मने क्यांथी ओळखो ? " हरपाळदेवजीए अ।श्रर्यथी पृछयुं "अने हुं रजपूत छुं ए तमोए शा उपस्थी जाण्युं ?'' त्यारे ते दृद्धजने तुरतज जवाव आप्यो के-मारी दीकरीना कहेवा उपस्थी, तेणीए गइ काले मने कहुं हतुं के प्रभातमां आपणे त्यां अतिथि आवनार छे, जाते रजपूत छे, माटे तमो सामा जइ मानपूर्वक तें ओने आपणे घर बोळाबी ळावजो. मारी दीकरीना वचन उपर मने पूर्ण श्रद्धा छे, ए जे जे वखते जे जे भविष्य कहे छे, ते साचुंज पढे छे. हुं सोलंको जातनो रजपूत छुं अने मारुं नाम प्रतापसिंह छे. दृद्ध पुरुषनी आवी विवेकभरेली वाणी श्रवण करी राज-हरपालदेवजीने मुनिराज मार्केडेयना वचनातुं स्मरण थवा लाग्युं, ए भविष्यने जाणनारी वाला शक्ति तो न होय ? जे हशे ते देखांश; अत्यारे विशेष चर्चा चलाववानो वखत नथी. चालो आपने त्यां आववा हुं तैयार छुं, " हरपालदेवनीए दृद्ध क्षत्रीना वचननुं मान राखी, तेना मिजमान वनवानी कबुलात आपी. " वन्ने जण त्यांथी शहेर तरफ चाली निकळ्या. थोडा समयमां पाटणना दरवाजामां प्रवेश करी, सोलंकी प्रताप घेर पहोंची गया वर्तमान समयमां तो ए मकाननी स्थिति कांइ विलक्षण जणाइ, परंतु विचार करतां पूर्वे ए कोइ भव्य राजदरवार होय एम भान थतुं हतुं, जो के डेलीनां कमाड जर्निरेत थइ गयां हतां, तोपण तेतुं किम्पती काष्ट्र पूर्वनी उत्तम स्थितिने पद्शित करतुं हतुं, छापरां खपरनी वळीओ विगेरे छिन्नभिन्न धइ गयां हतां, तोपण तेनी नमूनादार वांधणी नेत्रने आनंद आपती हती; वारी, वारणां, जाळी तथा झरोखा विगेरे जीर्ण बनी गएल इतां, तोपण तेमां करेलुं कोतरणीनुं काम भूतकाळनी श्रेष्ट समृद्धिन सूचवतं इतं. मकाननी आसपास खाली पडेलां विशाळ खंडो पूर्वे अश्वशाळा अने गौशाळा अर्थ वंवावेला होय एम अनुमान थतं हतं, भींतोमां कोइ कोइ जगोए खाडा पडी गएला हता, तोपण ते उपरतं चित्र काम मनोरंजक जणातुं हतुं, डेलीनी अंदर वने वाज सोसो माणसो सुखेथी वेसी शके तेवा विज्ञाल छोवंध औटाओ वाधेला हता. भोजननो सगय थवाथी हरपालदेवजी एम जमजता हता के रजपूतनी रीति प्रमाणे थाळी पीरसाइ डेळीए आवशे, परंतु तेम न थयुं, अंदरना ओरडामां तमाम तैयारीओं करवामां आवी. सोलंकी सुताए इच्छित अतिथि माटे अपार उत्साहथी भात-भातना भोजन वनाव्यां हतां, सर्व सामग्री सिद्ध थतां अंदरथी जमवानुं आमंत्रण आव्युं, वृद्ध सोलंकी राज हरपालदेवजीने ओरडामां छइ गया त्यां सामनामा भरत भरेल मखमलना व

चाकळाओ अगाउथी नांखी राखेळ हता, अने वच्चे मनोहर वाजोठ मुकेळो हतो. घणा वर्षी पहेंळां तैचार करावेळा चाकळाओमां चोर कोर छिद्र पढी गएलां हतां अने वाजोठ पण पोतानी पुरातन अवस्थाने पगट करतो इतो, सोलंकी सुता विविध प्रकारनां व्यंजन अने शाक पाक आ-दि पीरसवा लागी, हरपालदेवजीनी शुद्ध दृष्टि तेनी मनोहर मूर्ति तरफ खेंचाणी, लज्जानो अपार भार लाध्या छतां पण तेना निर्मळ नेत्रो नावनी माफक रूप समुद्रमां सुखमय सफर करतां इतां, परम पवित्र कर्णपुट इरपालदेवजीनी सुधामय वाणी श्रवण करवा माटे आतुर वनी रह्यां होय एम जणातुं हतुं, निष्कंछक वदनचन्द्रनी ज्योति आसपासना अंधकारने अलग करती हती, पृथ्वीनो स्पर्श निह करता तेजस्वी चरणतळ दैवी ततुनी प्रतीति करावता हता, संक्षेपमां ते वाळानी तमाम अंगचेष्टाओ अमातुषीय होवाधी हरपाळदेवजीतुं हृदय मुनिराज मार्कंडेयना वचनो पर दृढ विश्वासवाळुं थयुं. तेओ आनंदथी जभी उठ्या अने दृद्ध सोळंकीनी साथे पाछा ढेळीए पथार्या, त्यां सोपारी खाइ होका पाणी पीधा पछी प्रतापिसहें हरपाळदेवजीने पूछयुं के आपे मारी दीकरीने केवा स्वरुपमां जोइ? " स्त्रीना स्वरुपमां " इरपाळदेवजीए खात्रीथी जवाव आप्यो. पण आम पूछवातुं प्रयोजन शुं ? त्यारे प्रतापे खुछासो कर्यो के मारां दीकरी छायक उ-म्मरनां धनां घणा रजपूतो तेना सगपण माटे मागुं करवा आववा छाग्या, परंतु सर्व कोइ तेनुं सिंहण जेवुं विक्राळ स्वरुप जोइ भयभीत वनी भागी जतां, ए वात पवनवेगे आखा पाटणमां पसरी, क्षत्री तो हुं पण हरकोइ मनुष्य मारी डेकीए आवता वंध थया, आखुं गाम मारुं दुइमन वनी वेहं, आ कौतकनी कहाणीथी कोइ माणसे करण राजाना कान भंभेयी जेथी तेण क्रोधाय-मान बनी मारा गिरासनां चार गाम हतां ते पडाबी लीधां अने गुजरान माटे जुज स्कमनो दर-माया वांधी आप्यो, आधी हुं महान संकटमां आवी पड्यो, मारां स्त्री आठ वर्ष अगाउ स्वर्गवासी थयां, पूर्वनां पापने लीधे पुत्र माप्ति तो न थइ, परंतु परमात्माए पुत्री आपी ते पण आवी भय उपजावनार निवडी; एक दिवस में मारी पुत्रीने पुछयुं के वेटा ! आपणा रजपूतानी जातिमां एवो रिवाज नथी, तमो योग्य उम्मरनां थयां जेथी मने वहु चिन्ता थाय छे, त्यारे तेणे कहां के-तमो चिन्ता नहि करशो, रजपूर्तोमां ए नवो रिवाज दाखळ करवा माटेज आपने त्यां मारो जन्म थयो छे, जे पुरुष मने स्त्रीना स्वरुपमा जोशे एज मारो पित छे, एम आपे समजी छेबुं. मारी दीकरीए भाखेटुं ए भविष्य आजे आपना आगमनथी हुं साचुं मातुं छुं, वस, आपन मारी पुत्रीना पति, दृष्ट सोळंकीनां आवा वचनो सांभळी हरपालदेवजीना विचारो धणवारमां वदलाइ गया, तेने तो

एमज थयुं के आ डोसो मारे गले पडवा मांग छे, तेनी कन्या म्होटी थवाथी अने सर्व कोइ तेना सवंधनों अस्वीकार करता होवाथी तेने मारी साथे परणाववा धारे छे, वेशक ए वाळा मने तो दैवीरुप गुणथी संपन्न देखाय छे, परंतु वीजां माणसा तेने सिंहणने स्वरुधे निहाळे ए केवं कीतुक? अने केटलुं वधुं भय भरेलुं ? आवी आफतमां पडवातुं आपणने ग्रुं पयोजन छे. हुं रजपूत हुं ए तो आकृति उपरथी पण जाणी शकाय, विशेष चमत्कार जोया विना ए शक्ति छे एम शी रीते सावीत थाय ? आंही हरपालदेवजी आ प्रमाणे तर्कवितर्क करे छे अने अंदरना ओरडामां वेठेला शक्ति ज्यारथी मिजमान जमी उठ्या त्यारथी तेना मने।विचार जाणी मंदद्दास्य र्वेक विचारवा छाग्यां के-हरपालदेवजी अवस्य आग्रुतोपना अंशावतार छे, परंतु तेनी तमाम चेष्टाओ मानुपी छे, इजी ए मारा स्वरुपने ओळखी शक्या नथी, जेम ए मारो चमत्कार जोवानी इच्छा राखे छे तेम हुं पण तेनो चमत्कार जोया पछी तेओने मारा वियतम वनावीश. हरपालदेवजीने वे घडी आराम लेवा अर्थे डोसाए डेलीमां रंगित ढोलीया उपर रेशमी गादछं नांखी आप्युं, जेना उपर जरा वार लेटी उठेला राज इरपालदेवजीने प्रताप सीलंकीए नम्रताथी पूछ्यं के-आप क्यांना रहीश अने आपना पितानुं नाम शुं ? त्यारे हरपालदेवजीए उत्तर आप्यो के जेणे " हुं रजपूत छुं " एवं भविष्य आपने संभळाव्युं ए अन्य इकीकतथी पण आपने वाकेफ करशे; परंतु मारे आंदीना महाराजा करणने मळवा विचार छे तो कचेरी क्यारे भराय छे ? अने विदेशी माणसने तेओनी मुलाकात लेबी होय तो ज्ञी रीते लड़ ज्ञाकाय छे? ते आपना जाणवामां हरोज. "हा वद्यंए मारा जाणवामां छे " सोलंकीए गंभीरताथी पत्युत्तर आप्यो. आही इमेशां रात्रीए रोसनी टाणे भभकादार दरवार भराय छे अने एज वखते महाराजा करण, कवि, पंडित, गवैया विगेरे गुणी-जनो अने कळाकुशळ पुरुषोनी मुळाकात ले छे. मात्र वे घडि दोढिए वेसी चोपदार साथे अंदर खवर आपवा जोहो. सार्यकाळनो समय थवा आव्यो हतो, राज हरपाछदेवजी पोझाक पहेरी केडे ळांवी तलवार लटकावी हाथमां वरछी लइ शुभ शाकुन जोइ कचेरीमां जवा रवाना थया; मार्गमां अगणित जनोनी आवजा थइ रही हती, रमणीय अश्वरयोगां वेसी वाग वगीचामां फरवा गएला गृहस्थ लोको पोतपोताना घर भणी जता इता, केउलाएक अमीर उमरावो पालखी तेमन तावदान आदि यान पर आरूढ थइ दमामथी राजदरवारनो रस्तो लेता इता, सर्व स्थळे रोशनी थवा लागी, वजारनी वहार कांइ ओरज हती; अनाज, कापड, सोतुं अने चांदी निगेरेनी खरीदी धम-घोकार चाली रही हती, मकानोनी वांघणी मनोरंजक जणाती हती, दरेंक व्यापारीओ भिन्नभिन्न

वस्तुओनो संग्रह करी खरीदनार पासेथी मन मान्या दाम मेळवता हता, आसपासना गामडांओ-मांघी हटाएं करवा आवेला हजारे। माणसो सायंकाळनो समय थइ जवाधी अति उतावळ दर्शा-वता उन्नत स्वरे एक वीजाने एकत्र करवा शोर वकोर मचावी रह्या हता, गवली लोको दूधनो विक्रय करवा माटे चौटामां हारदोर वेसी गया हता,ज्यां ग्राहको वगर वोलाव्ये आत्री पोतपोतानी इच्छातुसार पयःपाप्ति करी पाछा फरता हता, केटछाएक भाविक जनो प्रभुना दशन अर्थे देव-मन्दिरो भणी दोडादोड करी रह्या इता अने केटलाएक लोको चौटा वच्चें दृढ आसन लगावी परस्पर मुखदुः खनी वातो संभळावी रह्या इता. राज इरपालदेवजी अति उत्मुकताथी छटादार पाटण शहेरनी प्रभाने जोता जोता राजमन्दिरनी समीपे आवी पहींच्या, त्यां विशाळ दरवाजा आगळ हजारो हथिआरवंध योद्धाओ, माल मलीदा खाइ मची गएला मल लोको अने भाट चारणो विगेरेनी भीड मची रही इती, अमीर उमरावो तथा दरवारी नोकरो दमामथी अंदर दाखल थता हता, नोवतना नाद अने शरणाइना मधुर स्वर्थी श्रोताओना मनमां प्रसन्नता छ-वाइ रही हती. दीप मालिकानी द्युतिथी रात्रि छतां दिवसनी प्रतीति थती हती, मसाळची छोको सोना रुपानी मसाको सळगावी उतावळी गतिथी गमन करता इता, वन्दीजनो उन्नत स्वरे महा-राजा करणनां गुणपान करी रह्या इता. राज इरपालदेवजीए विचार कर्यो के इवे कोना साथे महाराजाने संदेशो कहेवराववो तेवामां अंदरथी अंसपर सुवर्णनी सुशोभित छडीने धारण करनार एक दृद्ध जनने वाहर आवतो जोयो, ए छडीदारे पोताना नियम प्रमाणे द्वार आगळ उभा रही "कोइ विदेशी माणस महाराजानी मुलाकात लेवा इच्छा राखे छे ? " एम उन्नत स्वेर पूकार कर्या, राज हरपालदेवजीए तेओनी समीपे जइ कहुं के हुं महाराजाने मळवानी इच्छा राखुं छुं, छडीदारे पूछयुं के तमे जाते कीण छो अने शुं हुनर जाणे। छो ? हरपालदेवजीए जवाव आप्यो के हुं जाते रजपूत छुं अने धर्तुर्विया के जे आजकाछ सर्व जनोथी अज्ञात छे ते उत्तम रीते जाणुं छुं, छडीदारे तुरतज अंदर जर महाराजा करणने जाहेर कर्युं, जेथी करणवाघेलाए अति उत्कंटा-पूर्वेक इरपालदेवजीने कचेरीमां दाखल करवानी आज्ञा आपी; छडीदार सत्वर वाहेर आन्यो अने विदेशी रजपूतने अपूर्व आदर सिहत अंदर लड़ गयो. कचेरीमां रोशनीनो झाकझमाक थड़ रह्यो हतो, आज्ञवाज्ञ गादी तकीयानी वेठको गोठवेली हती तेना उपर अमीर उपरावो तेमज दुरवारी जनो पोतपोताना दरज्जा प्रमाणे एक पछी एक वेठेला इता अने मध्य भागमां एक रत्नजडित **उन्नत सिंहासन पर महाराजा करण वासवनी पे**ठे विराजी रह्यो हतो, पाछळना भागमां सेवकजनो

चामर ढोळता इता, तेनी सामे किस्नत अने नाजुक अंगवाळी कंचनी नखराथी वृत्य करती इती तेमज गर्वेयाओ कल्याण रागनो मधुर आळाप करी रह्या हता; सिंहासनना अग्री भागमां उभेका छडीदारो " महाराजा करणेन घणी खम्मा " उंचा स्त्ररथी उच्चार् करी कचेरीनी शोभामां अ-भिष्टिष्टि करता हता, समृद्धिनो सागर छल्यो होय तेवो देखाव जोइ राज हरपाळदेवजी प्रसन्न थया अने महाराजा करणनी सन्धुख जइ अनमीपण उभा रह्या, तेओनी क्षात्र तेजथी छवाएकी भव्य मुखमुद्रा जोइ वाघेळा करणतुं अन्तःकरण आकर्षायुं, ते अति प्रेमपूर्वक वोल्यो के-आजकाळ लय पामेल धनुर्विद्यानी सजीवन स्थिति वताववा आवेळ वहादुर रजपूत वेसो. महाराजा करण-नी आज्ञाने मान्य राखी राज इरपाछदेवजी आसनपर वेठा, ते वखते तेओए पोताना दक्षिण भ्र-जमां रहेकी वरछी भूमिमां भोंकी, जेथी जाजमनी अंदर छिद्र पडयुं, विदेशी रजपूतनी आरंभमांज आवी वर्तणुक जोइ तमाम अमीर उमरावा क्रोधायमान वनी गया अने तेनी छाया महाराजा करणना मुख माथे कांइक पढी. परंतु तेने तो अमाप्य धनुर्विद्यानुं विवेचन सांभळवानी अभिकाषा होवाथी हरपाळदेवजीना उक्त अपराधमां तेणे गुणनी कल्पना करी, शौर्यथी भरेला शुद्ध रजपूतो हमेशां वेदरकार होय छे, वळरुपी समृद्धिवाळा वहादुर पुरुषो इन्द्रने पण तुच्छ गणे छे तो पछी राजा महाराजाओथी निंहर रहे एमां शी नवाइ ? एवा शुरवीरोनी सहायताथी "राजा" एवं नाम धारण करी शकाय छे. आवा वीर जनो जे कांइ कर्ष करे छे ते उद्धताइ नहि परंतु पोतानुं वाहु-वळज वतावे छे. घडिभर आवा उत्तम विचारो करी महाराजा करणे धतुर्विद्या सांभळवानी उत्सु-कता वतावी, त्यारे हरपालदेवजीए कहुं के-महाराजा! धनुर्विद्यानो विषय कांइ न्हानो सुनो नथी के हं आपने घडि अधघडिमां संभळावी दुउं, एमां वधारे वखतनी जरुर छे; ए विद्या गुप्त अने समजवा जेवी छे, राजाओंने माटे तो ते अखूट समृद्धिनो खनानो छे. आटला वधा मनुष्योनी हाजरीमां ए वंदनीय विद्यातुं विवेचन कर्त्वुं ए घणुंज अयोग्य गणाय, आप तथा आपना अंग-रक्षकोनी सन्मुख कहेवामां मने कशी हरकत नथी। महाराजा करणने पण ए वात उचित जणातां तेण तुरतज कचेरी वरखास्त करावी, मात्र पोताना अंगरक्षकोने पासे राख्या. आथी दरवारी लोकोना मनमां विश्लेष माठुं लाग्युं, परंतु महाराजा करणतुं मन धतुर्विद्यानो निवन विषय अवण करवाने एटछुं वधुं आतुर वनी रहुं हतुं के तेणे तुरतज अति सन्मान पूर्वक राज हरपालदेवजीने सिंहासननी समीपना आसन पर वेसवा आज्ञा अपी. स्वस्थ वनेला हरपालदेवजीए सद्गुरुतं ध्यान धरी वोळवानी शरु शत करी के-महाराजा करण! पसन्न थएळा महादेवजीए परशुरामने कहेली विशष्ट गुरुए विजयनी इच्छावाळा राजिं विश्वामित्रने कहेली अने मारा गुरुए मने कहेली यजुर्वेद अने अर्थवेदना रहस्यवाळी धनुर्विद्या हुं आप आगळ संक्षेपथी कही संभठावुं छुं, धनु-र्वेदना चार पाद छे, तेमां प्रथम पादनी अंदर धर्नुर्वेदनो दिक्षा विधि, वीजा पादमां अज्यास कर-वानो विधि, त्रीजा पादमां प्रक्षेपण आदि विधि अने चतुर्थ पादमां अस्न सन्यान आदि प्रयोगनो विधि छे. धनुर्वेदनो अभ्यास कराववामां गुरुपदने लायक ब्राह्मण छे, धनुर्वेदथी युद्ध करवानो अधिकार तो क्षत्रिय तथा बैश्य ए वें वर्णनेज छ अने शूद्रोने पोतपोतानी इच्छातु नार शिकार आदि करवानो अधिकार छे. मुक्त अधीत् चक्र आदि जे हाथधी फेंकी शकाय तेने अस्त्र कहे छे. खद्ग आदि अमुक्त, वरछी आदि मुक्तामुक्त अने रार तथा गोळी आदि यन्त्र मुक्त एचार प्रका-रनां आयुध गणाय छे; दुष्ट लोको, डाकू अने चोर आदिथी उत्तम पुरुपोनी रक्षा करवी तथा धर्मथी प्रजातुं पालन करवुं, एज धतुर्वेदनो हेतु छे. जे जहरमां सुप्रसिष्ट एक पण धतुर्घारी होय ते शहेरयी शत्रुओ हमेशां दूर रहे छे, धतुर्विद्या उत्तम रीते परीक्षा कराएला ब्राह्मणनेज अर्पण करवातुं शास्त्रमा कहेल छे; लोभी, धूर्त, अने आपेल विद्यानो उपकार नहि माननारा पुरुपने तेमज मन्द बुद्धिना मनुष्यने कदिपण धनुर्विद्यानुं दान देवुं निह. ब्राह्मणने धनुपयी, क्षत्रियने तलवारथी, चैश्यने भालाथी अने शूद्रेन गदाथी युद्ध करतां शिखडाववुं, धनुव, चक्र, भाझां, खङ्क, छरी, गदा अने हाथोधी महायुद्ध ए रीतें सात मकारनां युद्ध प्रसिद्ध छे. जे सात प्रकारना युद्ध जाणतो होय ते आचार्य, चार मकारनां युष्ट जाणतो होय ते भार्गव, वे मकारना युद्ध जाणतो होय ते योध अने एक प्रकारतुं युद्ध जाणतो होय ते गण एवी संज्ञायी ओळखाय छे. हस्त, पुन-र्वसु, पुष्य, रोहिणी, त्रण उत्तरा, अनुराधा, अश्विनी अने रेवती ए दश नक्षत्रो धनुर्विद्या शीख-वाना मुहूर्त छे, चन्द्रमा पहेले , त्रीजे. छहे, सातमे, दशमे तथा अग्यारमे होय त्यारे आचार्य धनु-विद्याना शुभ कार्यमां शिष्यने पवर्तावे छ, धनुविद्या शीखवाना पारंभमां तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, द्वादशी अने त्रयोदशी ए तिथिओ तेमज रवि, शुक्र अने गुरु ए त्रण वार शुभ गणाय छे, ए दिवसोमां टान अने होम पूर्वक देवताओने तुप्त करी गुरु शिष्यने शस्त्र आपे, ते वस्त्रते त्या अनेक ब्राह्मण अने बत्याओने भोजन कराववुं जोइए तेमज ते दिवसे शिवभक्त योगीजनोनुं प्रेम-थी पूजन करवातुं पण शास्त्रमां केहल छे, त्यारवाद गन्य, माला, अन्न आदि,वस्न अने आभूपण विगेरेथी गुरुने चूपिन करी तेओनी पूजा करवी. कृतोपवाम जिप्ये मृगचर्म थारण करी हाथ जोडी गुरु आगळ धतुपनी याचना करवी, त्यारवाद आचार्य ज्ञिप्यनी कार्यमिद्धि अर्थे दिवजीए

कहेलो पाप अने विघ्नोनो विध्वंस करनार अङ्गन्यास करे. शिखाना स्थानपर ज्यां ब्रह्मरन्त्र छे त्यां शंकरतुं, वने वाहुओ पर भगवानतुं, नाभिना मध्य भागमां ब्रह्मातुं अने जंघाओ उपर श्री गणेशजीतुं स्थापन करतुं, त्यारपछी " ॐ हों शिखास्थाने शंकराय नमः । ॐ हों वाह्वोः केशवाय नमः। ॐ हों नाभि सध्ये ब्रह्मणे नमः ॐ हों जंघयो-र्गणपतये नमः ॥ ए चार मंत्रोथी चारे देवताओना ध्यान पूर्वक शिखा आदिने करयी स्पर्श करता जवुं, आ रीते अंगन्यास करनार तथा करावनार वन्नेतुं कल्याण धाय छे अने तेओने मारण आदि दुष्ट मंत्रो पराभव करी शकता नथी. गुरुए शिष्यने "काण्डात् काण्डात् प्र-रोहिन्ति परुषः परुषः परि " ए वेदमंत्रथी वेद विधिपूर्वक मानुष धनुष अभिमंत्रित करी आपनुं, त्यारवाद प्रथम फळ रहित वाणथी पुष्पवेध कराववी, पछी फळ तहित वाणथी मत्स्यनुं छेदन करात्रवुं, अने छेवट मांसवेध सिद्ध कराववो, ए रीते त्रण प्रकारना वेध सिद्ध थतां वाण सर्व साधक वने छे अथीत तमाम निज्ञानोने वींधी शके छे. मांसनो वेय करती वखते वेध न थतां जो वाण पूर्विदिशामां जइ पडे तो ते योष्टाने विजय अने सुख प्राप्त थाय छे, दणिझ दिशामां पडे तो बहुज क्लेश अने परदेशगमन थाय छे, पश्चिममां पडे तो धन अने धान्य मळे छे, उत्तरमां पड़े तो सर्व कार्यनी उत्तम प्रकारे सिद्धि थाय छे, इशान कोणमां वाण पडे तो पवन प्रचंडताने धारण करे छे अने नैऋत्य, वायत्र्य, तथा अग्निकोणमां पहे तो आनंदनी साथे श्रेष्ठ फळनी समुपल्लिय थाय छे. शंख अने दुन्दुभिना शब्दनी साथे त्रण वेघ सिद्ध करी, धनुष अने वाण प्रणाम पूर्वेक गुरु आगळ राखी देवां अने गुरु दक्षिणा आप्या वाद पाछां ग्रहण करवां. प्रथम अभ्यास करवाने माटे योगिक धनुष के जेनाथी वाहुवळ वंधाय अथीत् प्रथम साधारण धनुष्यी निज्ञान पाडतां ज्ञीखर्वुं, अने त्यारवाद ज्ञींगडानुं धनुष पोनाना वाहुवळनो तोल करी तेनाथी कांइक न्हानुं धारण करवुं. धनुर्धारी पुरुष राजाने प्राणयी पण प्यारो थइ पडे छे, प्राणथी अधि-क धतुप नथी एटला माटे एवा वजनतुं धतुप धारण करवुं के जेथी सुखपूर्वक वाण फेंकी शकाय, एवं कठिन, वळवान के वजनदार धनुष धारण न करवं के जेथी छाती फाटी जाय, कारणके धनु-पथी पीडित थएलो धनुर्धारी सरलताथी निशानने ताकी शकतो नथी; धनुप खेंचवानी अने तेनो वोजो उठाववानो चिन्ताथीज स्तब्ध वनी हार पामे छे. पोताना वळथी न्यून वळवाळुं चाप हमेशां श्रेयस्कर छे. साडा पांच हाथदुं धतुप श्रेष्ठ अने दिन्य गणाय छे अने ते देवताओने माटे 😇 के

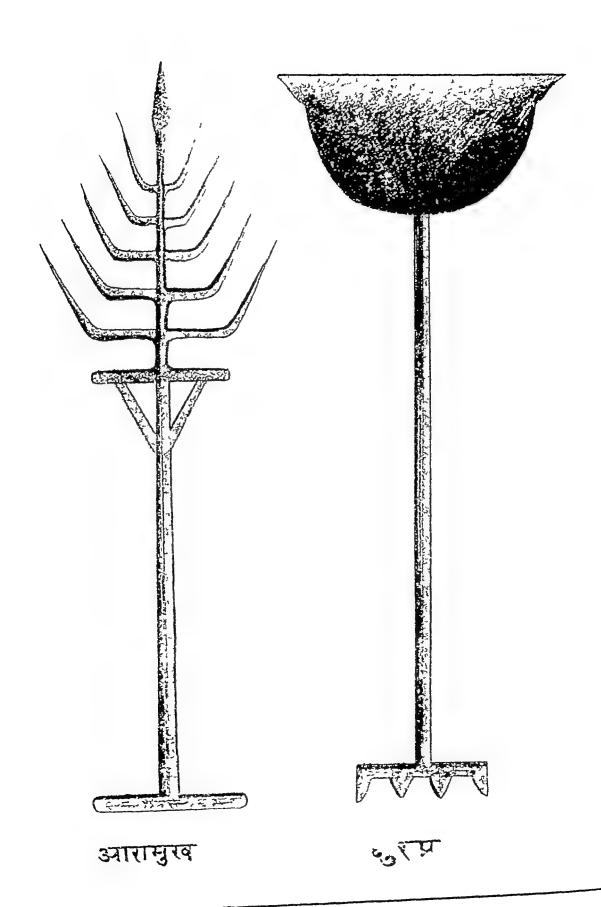
D)C

जे प्रथम महादेवे धारण कर्युं हतुं; चोवीश आंगळनो एक हाथ अने वैचार हाथनुं धनुष कहेवाय छे, उत्तम ळक्षणोथी युक्त एज धतुप मतुष्ये धारण करवुं जोइए. त्रण, पांच, सात अथवा नव पर्वतुं धतुष सर्वदा ग्राभ करनारुं छे अने चार, छ अथवा आठ पर्वतुं प्रतुप वर्नित गणाय छे. केटलाएकनो एवो मत छे के नव वितस्तिनुं पण धनुष थाय छे. अति जीर्ण, काचुं, वांसनी जा-तिथी विरहित, वळेछुं, छेदवाछुं, वीधाएछुं, जेना खेंचवाथी हाथ वहिर्ेचाल्यो जाय अथवा अंदर रही जाय, गुण रहित अने गुणयी आच्छादित अर्थात् म्हाटा अने पहोळा गुणयी ढंकाएँछं, कांड-दोपथी युक्त अर्थात् उत्तम स्थानमां उत्पन्न थएल वांसतुं वनावेल न होय, तथा नेना गळामां तेमज तळीए गांठ होय ते धतुष वर्जित गणाय छे. अरम्ब वांस अथवा शींगडानुं, सुवैर्णतुं, चांदीतुं, त्रांवातं अने लोष्ट आदितं धतुप इटी जाय छे, जो धतुपनी प्रथम अनमीयश हैन करी होय तो तेनो भंग थाय छ, अति जीर्ण धतुप कठिनताने धारण करे छे, जे धतुप जातिना वांसतुं वना-वेळ न होय ते युद्ध समये उद्देग उत्पन्न करे छे अर्थात् मननें भ्रमित बनावी दे छे अने बन्युजनो-नी साथे लडावी मारे छे, दग्ध धतुपने धारण करवाथी घर वळी जाय छे, सिछेद्र धतुपथी युद्ध-नोज नाश थाय छे, कारणके मनमां एवी चिन्ता रहे छे के कदापि ए दृटी तो नहीं जाय ? युद्ध समये अन्य चिंता थवाथी उतावळे वाण फेंकी शकातां नथी अने एयी पराजय प्राप्त थाय छे,धतु-पनी बाहेर हाथ चाल्याे जवायाे निज्ञान पर दृष्टि पडती नथी, एवीज रीते हाथ अंदर रही जाय तोपण निशान जोइ शकातुं नथी, जो वाणने ओछुं चढाववामां आवे तो संग्राममां भंग पडे अने जो वाण प्रत्यचा साथे चोटी जाय तो ते दढ रुक्ष्यमां सिद्ध थतुं नथी तेमज गरुप्रन्यि तथा तलग्रन्थिवाळुं धतुष हमेशां हानिकारक छे, एटला माटे उक्त दोषोथी रहित उत्तम धतुष कार्यसि-द्धि करावी शके छेः विष्णु भगवाननुं परम दिन्य आयुध शार्ङ नामनुं धनुप विश्वकमाए वितस्तिनुं वनान्युं हतुं. ते धनुष विष्णु भगवान सिवाय स्वर्ग, पाताळ के पृथ्वीपर कोइने होथ चहयुं नथी अने कोइने बरा थतुं नथी. ए धतुष अति उत्तम अने घलुंज पुरातन गणाय छे. छ वितस्ति उपरांत छ आंगळतुं वनावेल धतुप अर्थसिद्धिमां उपकारक थाय छे. घणे भागे ज्ञाई धतुप हाथी अने घोडा उपर स्वार धनार पुरुषोए धारण करवा योग्य छे. रथी अने पैदल लोकोए तो वासतुंज धतुप धारण करवुं. लेहि, जुंग अने काष्ट ए त्रण द्रव्यथीज घतुप वने ले; लोहमां सुवर्ण, चांदी, त्रांख, अने ज्याम लोष्टना समावेश धाय छे. ज्ञांगमां महिप, द्वारम अने रोहित (मृगनी एक जाति छे, तेने चार उपर अने चार नीचे मळी कुल आठ पग होय छे, तेनां ग्रृंग विद्याळ होय

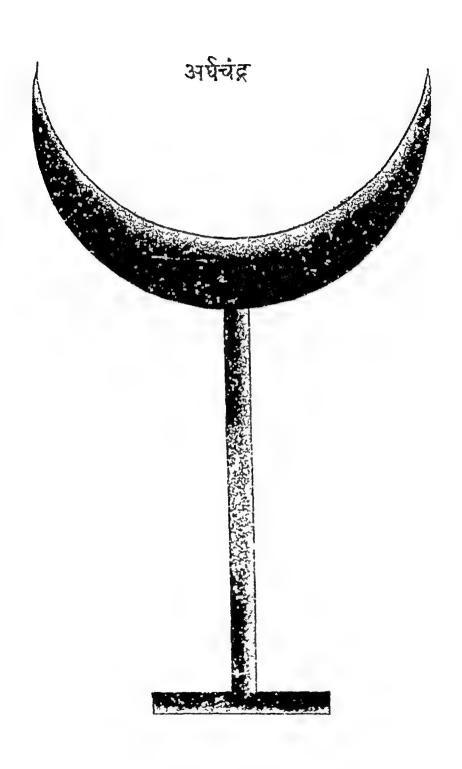
छे, ते उंट समान उंचा थाय छे, निरंतर वनमां रहे छे अने कब्रमीर देशमां रहेनारा मनुष्यो तेने जाण छे ) ना जूंगतुं ग्रहण थाय छे, तथा काष्टमां चन्दन, वितस धान्वन, ज्ञाल, ज्ञालमिल, ज्ञाक, ककुभ, वांस अने अंजनदक्ष एटलाओनो समावेश थाय छे. धनुपनी पत्यंचा रेशमना दोरानी वना-ववी. न्हानी आंगळी जेवी जाडी धतुपना प्रमाणमां शोभे तेवी स्वच्छ करेछा दोराने वेवडो वणी चिक्तणी वनावेली प्रत्यंचा युद्धमां विजय आपे छे, तेने गमे तेटला वळथी ताणीए तोपण ने तुटनी नयी. जो रेशमनो दोरो न मळे तो हरिणना स्नायुनी तांत, महिपना आंतरडाओनो तांत अथवा तुरतमा मारेला वकरानां आंतरहांओनी मत्यंचा वहु उत्तम वने छे. रोम रहित तांतनी अथवा पाँकला वांसनी छालनी पत्यंचा पण मजबूत होय छे परंतु रेशमना दोरानी पत्यंचा युद्धमां सर्वोत्कृष्ट गणाय छे. भाद्रपद मास प्राप्त थतां आकडानी त्वचा पण प्रत्यंचा वनाववामां उपयोगी थड पडे छे, तेना उपर फक्त मजबूत दोरो बीटबो जोइए. क्षत्रीओए कपास, मुंज, भंग, स्नायु अने अर्कनी प्रत्यंचा वनाववी. स्यूल नहि तेम सूक्ष्म पण नहि, पक्व अने उत्तम भूपिमां उत्पन्न थएलां वाणोने ग्रहण करवां. हीन ग्रन्थिवाळुं अने फाटी गएछुं शर कदिवण उपयोगमां न लेबुं, पूर्ण ग्रन्थिवाळुं, श्रेष्ठ, पक्त अने पीळां रंगतुं वाण अतुकूळ समेथ प्राप्त करवुं. शरदऋतु समेथे अर्थात् मार्गिरीर्ध मासमां दृक्षिक राशिना सूर्य होय त्यारे वाण वनाववा माटे शरनो वांस लइ आववो. कठिन, गोळ, अने श्रेष्ट भूमिमा उत्पन्न थएको ज्ञारवंश लावी एक वाण वे हाथ लाबु अथवा वे हाथमां एक मृष्टि ओछा प्रयाणतुं वनाववुं अने तेनी जाडाइ फक्त कनिष्टिका जेटली राखवी,एवा वाण वनाव्यः वाद यंत्र अर्थात् धतुपपर चढाववां. काक हंस, पारावत, वक, क्रीच पक्षी. मयूर, गृष्ठ, अने क्ररर उपर शरतुं अनुसंधान श्रेष्ट गणाय छे, सामान्य वाणमां छ आंगळना प्रमाणथी पक्षच्छेद करवे। अने शार्ङ धतुपपर चढाववाना वाणमां दश आंगळना प्रमाणधी पश्च छेद करवी, दरेक वाणना चार चार खाडा स्नायुना तन्तुथी वांधवा जोइए. स्त्री, पुरुष, अने नपुंसक ए रीते त्रण प्रकारना वाण होय छे. जे अप्र भागमां स्थूल होय ते स्त्री वाण, पाछला भागमा स्थूल होय ते पुरुप वाण अने सम होय तेने नपुंसक वाण जाणवुं, ए नपुंसक वाण मात्र निशान राखवाने माटेज छे, स्त्री वाण आगळथी वजनदार होय छे जेथी ते दूर जह पहार करी शकें छे अने पुरुष वाण गमे तेवा दृढ पढाधेतुं पण छेदन करे छे. वाणना फळानां मुख्य दश भेद छे. आरा समान मुखवाळुं, खरपा जेवुं, गायना पुच्छ समान आकारवाळुं, अर्धचन्द्राकार, सूची समान मुखवाळुं, वरछी समान आ-कारवाळुं, वत्सना दांत जेवुं, वे भालावाळुं, कर्णिक अथवा पुष्पनी पांखडी नेवुं, अने काकनी चंचु

समान आकारवाळुं फर्ल होय छे. आ दश भेद उपरांत बीजा अनेक प्रकारना आकार थइ गर्के छे. ए फर्लाओ लोष्टनां तोब्र धारवालां बनाववां.

ढालनं छेटन करवामां आराम्रख, हाथ कापवामां क्षरप्र, निजान मारवामां गोपुच्छ, शिर, गरदन, धनुप तथा वाणने कापवामां अर्वचन्द्र, कच तोडवामां सूचीमृख, हृदय वींधवामां भह्न, बन्पनी दोरी कापवामां वत्सःत, वाण रोकवामां द्विभक्क, लोष्ट्रनुं वाण कापवामां कर्णिक अने अन्य वेधनमां काकतुंड नामना जरनो उपयोग करवोः गोपुच्छ वाण शुद्ध काष्ट्रनुं वनावेछ होवुं जोइए, अने तेना अग्र भाग उपर त्रण आंगळनो वींधेळ लोढानो कांटो राखवो जोइए. वाणना फलक स्थान उपर साही कांटो लगाववाथी गोपुच्छ वाण वने छे. तेनाथी वाण फेकवानो अने निज्ञान ताकवानो अभ्यास करवो जोइए. वाणना फळां उपर जरवंशनी जडनो लेप करवाथी चाव असाध्य वने छे अर्थात् ते शरना महारथी थएलो चाव कोडपण औपचिथी रुझातो नथी, ए शरवंशनी ओळखाण मात्र एटलीज छे के, जेना समृहपर स्वातिना बुन्दो पडतां वेत पीळां वनी जाय, तेनी जहमां विष उत्पन्न थाय छे, ए जहने उपयोगमां लेवी. सर्व स्थळे पवन वंय होय तो पण जे निरंतर कंप्या करे ते शरवंश हे एम समजवुं, दिन्य औपधिओथी हेपन कराएलां फलां-ओ कोइपण प्रकारे निह कपातां कवचोने हक्षोना पर्णोनी पेठे छिन्नभिन्न करी नांखे छे. पीपळ, सैन्थव अने कुष्ट ए त्रणेने गोस्त्रमां ख्वपीसी तेनाथी शक्षने छेप करवो अने पछीथी ए शक्सने मोरनी डोक समान नी छं थइ जाय त्यां छुत्री अग्निमां तपान्वं, ज्यारे ते तमाम औपित्रने शोपी जाय, त्यारे स्वन्छ जलमां तेने बुझावी नांखबुं. जे वाण आखा लोढाना बनावेल होय, ते नाराच कहेवाय छे, ते पांच महान पश्चयुक्त होय तो कोडने हाथे सिन्ड धइ शके छे. जे नलयन्त्रधी फॅक-वामां आवे हैं ने लघु अर्थात् नहानां वाग कहेवाय है, तेनुं नाम नालीक है अर्थान् गोलीनुं नाम नालीक वाण है, अने नल्पंत्र नाम वन्द्कनुं है ते घणे उंचे अने दूर फेंकवामां तथा गट-





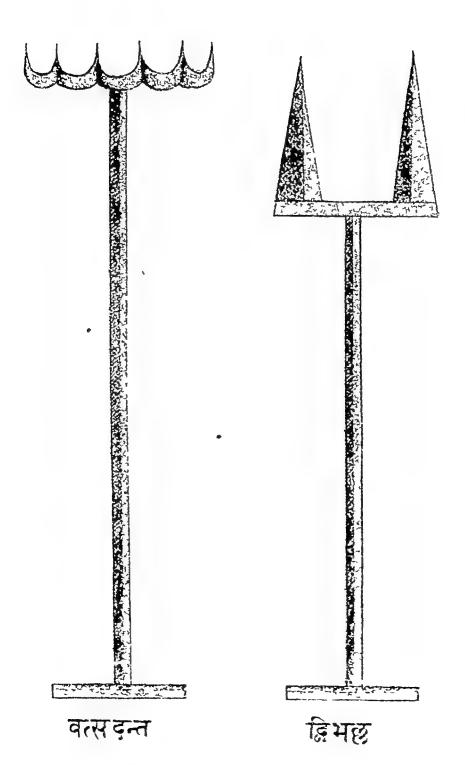


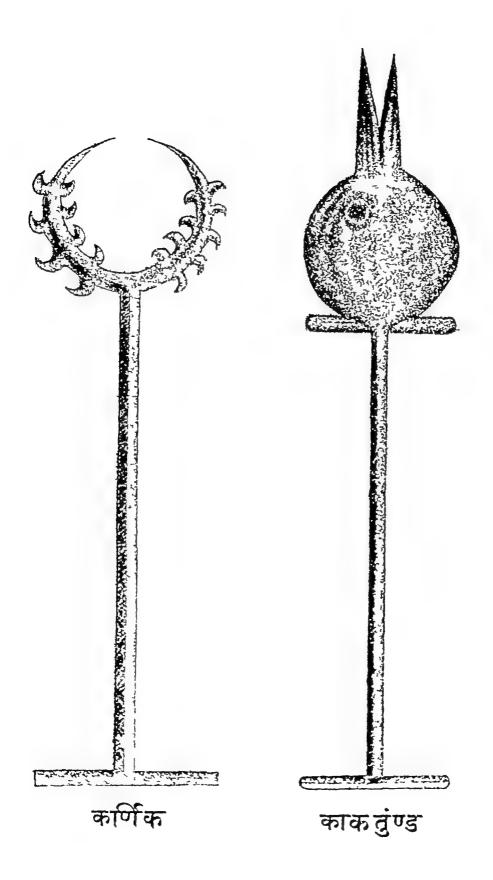


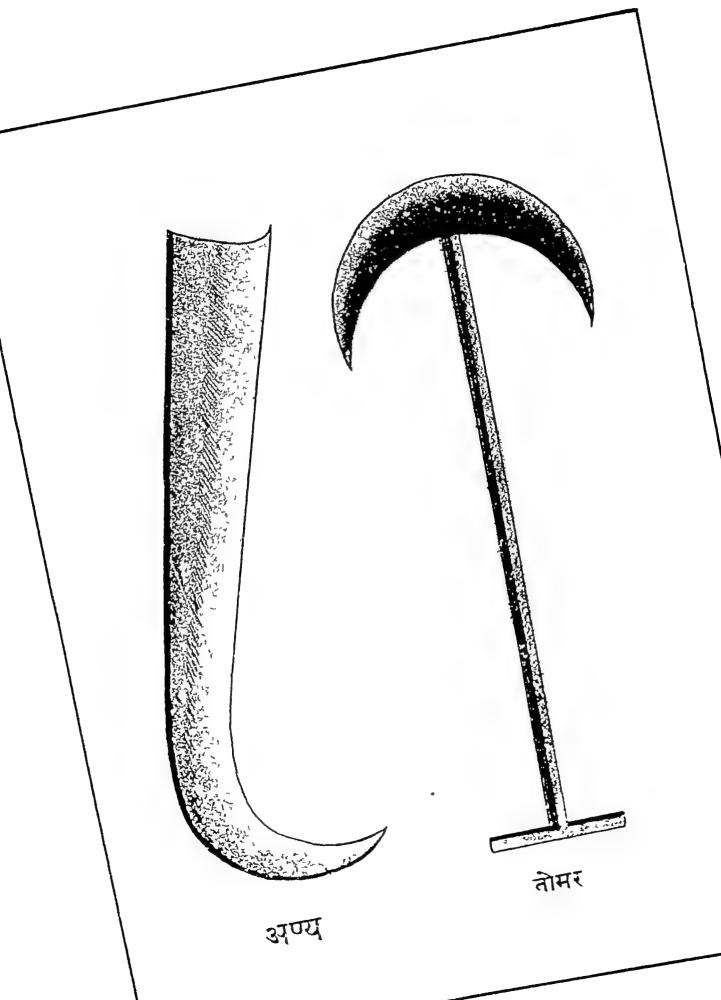


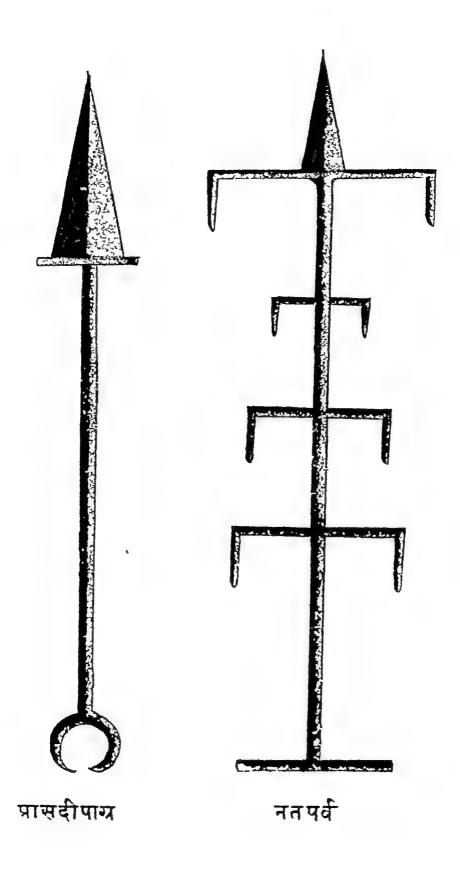
भट्ट

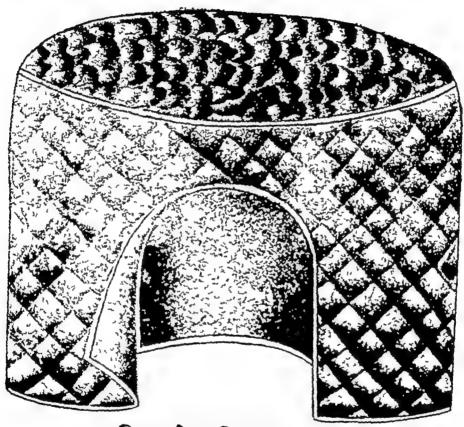












झिल्लमटोप-शिरस्त्राण



युद्धमां काम आवे छे. सिंहासनना संरक्षण माटे गढमां शतध्नीनुं स्थापन करतुं जोइए. अने दारु गोळानो समृह पण राखनो जोइए. जुदाजुदा कार्यमां वाणना प्रयोग करवा माटे आठ प्रकारमां स्थान, पांच प्रकारनी मृष्टि अने पांच प्रकारनां व्याय धनुर्वेदमां कहेल छे. तेमां डानो पग आगळ अने जमणो पग पाछळ खंचनो. ते वे हाथनी प्रत्मालीह गित कहेनाय छे. आलीह गितमां धनुर्घारी डानो पग संकोची तथा जभणो पग आगळ राखी वाण फेंके तो घणे दूर जाय, पगना विस्तार जेटलोज हाथ लंबाने तेनुं विशाख गित छे, तेनो उपयोग कूट लक्ष्यने वीधवामां थाय छे; कंप रहित उभय चरणने सरखा तेमज मुस्लिष्ट राखी वाण फेकवामां आने ते समगति अने डावा पगने एक हाथ आगळना भागमां राखी नत शरीरे वाण फेकवामां आने ते असमगति कहेनाय छे. ज्यां वने उस्कने आर्कुचिन करी जानुओने धरणीपर टेकाववामां आने ते असमगति कहेनाय छे. ज्यां वने उस्कने आर्कुचिन करी जानुओने धरणीपर टेकाववामां आने तेनुं नाम दर्दुर क्रम छे. इह लक्ष्यवेधनमां ए स्थान उत्तम गणाय छे; डानो पग जानु पर्यन्त पृथ्वीपर राखी जमणाने संकोचवामां आने ते गरुडकम कहेनाय छे, पद्मासन मिसद्ध छे, तेनो जे क्रम छे ते प्रमाणे नेटक करी द्याग मारतुं तेने ग्रुभ लक्षण नामनुं स्थान कहे छे.

पताका, वज्रमृष्टि, सिंहकर्ण, मत्सरी अने काकतुंडी ए प्रमाण गुणमृष्टिना पांच प्रकार छे. ज्या तर्जनीने छंत्रादी अंगुष्टना मूळ पांस राखवामां आवे ते पताका नामनी मृष्टि कहेवाय छे, तेनाथी निल्हा नामतुं वाण के जेमां रंजक अने छोहकण भरेछा होय तेने दूर फेकी शकाय छे; तर्जनी अने मध्यमानी वन्चे अंगुष्टनो प्रवेश धाय ते वज्रमृष्टि, म्होटां छोहनां वाण फेकवामां एनो छपयोग कराय छे. अंगुष्टनी वच्चे तर्जनीनो अप्रभाग राखवामां आवे तेतुं नाम सिंहकर्ण,हट छक्ष्यने भदवामां ए सिंहकर्ण सहायक थह पडे छे; अंगुष्टना नखनी जहमां तर्जनीनो अप्रभाग राखनां मत्सरी वामनी मृष्टि पाय छे अने तेनो उपयोग वित्र छक्ष्येवधनमां कराय छे; ज्यां तर्जनीनो अप्रभाग अंगुष्टनी आगळ राखवामा आवे ते काकतुंडी नामनी मृष्टि कहेवाय छे अने ते सृद्धम छक्ष्येन वीधवामां छपयोगी थाय छे. संधान त्रण प्रवारनां छे. अधःसन्यान,उर्वसंयान अने समसन्यान.ए त्रणने यथा- क्रम त्रण प्रकार योजवान वाणने दूर फेकवामा अयःसन्यान,अचछ वस्तु पर फेकवामां सममन्यान अने वीजी वस्तुओना वेधनमां उर्व्व सन्यान करवुं. किश्चक शर केशोना मूळ पर्यन्त, मात्विक शर हांगूर्णवन्त,वरसर्वण वानपर्यन्त, भरतर्यावापर्यन्त अने स्कन्य जन्वरा पर्यन्त, पात्विक शर हांगूर्णवन्त,वरसर्वण वानपर्यन्त, भरतर्यावापर्यन्त अने स्कन्य जन्वरा पर्यन्त,ए राने व्याप अथवा वाण खेंचवाना पांच प्रवार छे चित्रयुद्धमां किश्वक, अथोछक्ष्यमां मान्विक नथा वत्सकर्ण, गृहभेदन तथा

दृढ भेदनमां भरत अने दूर प्रक्षेपणमां स्कन्ध नामना व्यायनो उपयोग करवो. स्थिर, चल अने द्वय चल ए रीते लक्ष्य चार प्रकारनां छे, तेनो क्रमपूर्वक वेध करवो. जे बुद्धिशाळी पुरुष पोताना शरीरने स्थिर राखी त्रण प्रकारना सन्धानधी छक्ष्यने बीवे छे, ते स्थिरवेधी कहे-वाय छे. चलायमान वस्तुने पोताना स्थानपर वेसी वींधनार पुरुष चल लक्ष्यवेधी कहेवाय छे. ज्यां लक्ष्य स्थिर होय अने धतुर्धारी चलायमान होय ते चलाचल, ए लक्ष्य अपमेय अने अचि-न्तित होय छे; ज्यां धनुर्धारी तथा छक्ष्य वन्ने चलायमान होय ते द्वयचल कहेवाय छे अने ते महा महेनते सिष्ट थइ राके छे. श्रमथी छोडेछुं निशान अति दूरनुं भेदन अने महेनत करी मर्यादा पूर्वक खेंचेछुं वाण शीघ्र संधानने प्राप्त थाय छे. श्रमणीज चित्रयोधापणुं अने जय मळे छे एटला माटे सुज्ञ जने गुरुनी समक्षमांज परिश्रम करवो जोइए. जे मनुष्य प्रथम डावा हाथयी परिश्रम करे ते तुरतज धतुषनी कार्यसिद्धिने किनारे पहोंची शके छे. वामहस्त सिद्ध थया पछी दक्षिण करथी श्रम करवो अने पछी वन्ने हाथथी नाराच तथा वाणो फेंकवां, रथीए कैशिक नामना व्यायथी वैशाख गति अने असमपाद गतिमां स्थित थइ,दक्षिण हस्त सिष्ट थइ गया वाद वामहस्तयीज अम करवो. सूर्योदय थया पछी वे प्रहर पर्यन्त पश्चिम दिशामां अने अपराह वखते पूर्व दिशामां छक्ष्य साधन कर्बुं, अवज्य अवरोधक लक्ष्य होय तेने उत्तर दिशायी सदा सिष्ट कर्बुं, युद्धना प्रसंग शित्राय दक्षिण दिशामां कदिपण लक्ष्यतुं स्थापन करवुं नहि, मतलव ए के वाण फेंकती वखते सूर्य पीठ तरफ अथवा जमणी वाजुए रहेवो जोइए.धनुपने माटे साठ वाण राखवां ते ज्येष्टलक्ष्य, चाळीश वाण राखवां ते मध्यम लक्ष्य अने वीश वाण राखवां ते किनए लक्ष्य कहेवाय छे. चाळीश,त्रीश अने सोळ नाराचोने राखनार पुरुप क्रमथी उत्तम,मध्यम,अने किनष्ट कहेवाय छे.सूर्योदय समये अथवा सूर्यास्त समय जे चारसो वाणाथी लक्ष्य फेंके ते धनुर्धारीओमां म्होटो गणाय छे.त्रणसोथी मध्यम अने वसो वाणोथी लक्ष्य फेंकनार मनुष्य कनिष्ट कहेंवाय छे.जर्व अर्थात् शिरनो भेद करनार ज्येष्ट, नाभिनो भेद करनार मध्यम अने पादनो भेद करनार धन्त्री कनिष्ट गणाय छे, धनुर्विद्यानो अभ्यास करवामां अप्टमी, अमावास्या अने चतुर्दशी ए त्रण तिथिओ वर्जित छे अर्थात् ए त्रण दिवसपर्यन्त अभ्यास वंध राखवो जोइए. पूर्णिमानो अर्ध दिवस तमाम कामने माटे निषिद्ध छे. समय वगर मेधनी गर्जना थाय, वादळांओथी आकाश छवाइ जाय अने पहेलुं ज वाण लक्ष्य पर न लागे तो ते दिवसे अनध्याय पाळवो. अनुराधा नक्षत्रथी आरंभी सोळ नक्षत्रीमां सूर्य विचरण करे त्यांसुघी धर्तुविद्यानो अभ्यास न करवो,कारणके दृक्षिक राशिना सूर्यथी आरंभी ज्येष्ट मास पर्यन्त

असमय कहेवाय छे. आपाढ, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन अने कार्तिक ए पांच मास धर्नुर्विद्याना अभ्यास माटे तथा पठन पाठन माटे उत्तम गणाय छे. जे दिवसे पातःकाळ लाल वादळांओथी व्याप्त होय अने ते वादळांओ सूर्योदय थतां गर्जना करे तो ते दिवसे पण अनध्याय पाळवो. प्रथम अभ्यासनो प्रारंभ करतां जो संप देखाय, धतुष भांगी जाय, अथवा पहेलाज शरतं अतु-सन्धान करतां पत्यंचा ह्रटी जाय तो बुद्धिमान धनुर्धारीए शिष्यने धनुपनो के कोइ अन्य शास्त्रनो अभ्यास कराववी नहि. प्रथम धतुपतुं आरोपण कर्त्वं अने पत्री चुलिका वांयत्री, त्यारवाद यथा-योग्य स्थान उपर स्थित घइ वाण माथे हाथ राखवो, धतुपनो तोल डावे हाथे करवो. वजनतुं अनुमान करी बाद तेना उपर शरानुसंधान करवुं. प्रथम चढावेला धनुपथी पृथ्वीनो वेध न करवो. महादेवने, गुरुने, धतुपने अने वाणोने नमस्कार करवा, त्यारवाद गुरु आगळ वाण खेंच-वानी आज्ञा मागवी. पाणवायुने पयत्नथी प्राणनी साथे पूरक करवी अने ते पछी कुंभक करी तेने हुंकारथी रेचक करवो; सिद्धि चाइनार धनुर्धारीए ए रीते अन्यासनी क्रिया करवी जोइए. छ महिनामां मुष्टि अने एक वर्षमां वाणसिद्ध थइ शके छे, जेना उपर परम कृपाछ महादेवजी पसन होय एज नाराचने सिद्ध करवा समर्थ वने छे. जे पुरुषने सिद्धिनी स्पृहा होय तेणे वाणेन पुष्पनी माफक धारण करवुं, धतुपने सर्पनी पेठे पीडवुं अने लक्ष्यनुं धननी माफक चिन्त्वन करतुं. आचार्य कियानी, भागेव वाण दूर जवानी, राजाओ दृढ वस्तुना छेदननी अने सामान्य जने। लक्ष्य उपर सारी रीते शर लागवानी इच्छा करें छे. जे शरथी लक्ष्यपात थतां मनुष्यानां मन प्रसन्न थाय तेथी पण न्हाना वाणधी लक्ष्यने वींधवुं ए उत्तम गणाय छे. कारणके लघुशरथी रुध्पतुं वेधन सारं थाय छे. विशाख स्थानेन वर्जी, समप्तन्थान करी गोपुच्छ मुख बाणने सिंह-कर्ण मुष्टिथी अने केशिक नामना व्यायधी खेंचनार, शिखाने पण नहि हळावनार, पूर्वापर सम रहेनार, वन्ने अंसने वरावर राखनार, उभय करने अडग राखी, चशुने लेशपण चलित निंह कर-नार, दृष्टिने निज्ञान पर स्थापनार अने लक्ष्यने ढांकी मृष्टिने वाणना अग्रभाग पर योजनार धनु-र्धारी निशान पर दृढ थएली द्रष्टिमां मनने स्थिर करी जो वाण फेंके तो ते कदिवण व्यर्थ जाय निहः, कारणके उक्त लक्षणराळा पुरुषे भयत्नथी लक्ष्यने जीनी लीधेलुं होय छे. भाथामांथी वाण लइ संधान करवं, खेंचवं अने तुरतन फेंकवं एवी रीते निरंतर अज्यामधी मनुष्य जीव्र संघान करी शके छे. पताका नामनी मुष्टिधी स्त्री चिह्नवाळां वाणने फेंक्कवामां आवे तो ते दूर पढे छे. प्रत्याबीह स्थान पर स्थित यइ अवःमंबान करवाथी, दर्दुर स्थानपर म्थिन थड उर्छ्व मंत्रान

करवाथी, स्कन्ध न्यायथी वज्रमुष्टि अने पुरुष वाणना समसन्धानथी घणी सारी रीते हाथोने हह भेदननी ज्ञक्ति पाप्त थाय छे. वाणोनी सूचीमुख, मीनपुच्छ अंने भ्रमरी ए त्रण गति प्रश्नंसा-योग्य छे. जे वाण पक्षवाळुं अथवा पक्षरिहत होय, तेनी गति सूचीमुख थाय छे; जे वाणतुं धतुप कठिन होय अने ते हीनमृष्टिथी रेंबचवामां आवे तो तेनी गति मत्स्यपुच्छा थाय छे अने जे वाण फेंकता वक्रगमन करे, ते ज्ञमरी गतितुं कहेवाय छे, ए वाण तिर्यग्गत छक्षवेधनमां श्रेष्ठ गणाय छे. श्री महादेवजीए वाणोना स्वलन माटे डावी वाजु जनारी, जमणी तरफ जनारी अने नीचे जनारी ए रीते चार गति कही छे. जो पत्यंचानी मुष्टि वाणना पृष्ठयी कंपायमान थाय अने धतुपनी मुष्टि सन्मुख थाय तो वाण सीधुं जइ छक्षमां छागतुं नथी, परंतु ते डावी तरफ गति करे छे, एउछा माटे प्रत्यंचानी मुष्टिने कंपवा देवी नहि. जे वाण शिथिलताथी ग्रहण कराएल होय अने ऋजुत्वथी रहित होय ते निःसंदेह जपणी वाजु चाल्युं जाय छे. धनुष्यनी मुष्टि ऊर्ध्व भागमां होय तो वाण लक्ष्येन छोडी उपरना भागमां चाल्युं जाय छे. जो वाण फेंकती वखते धनुपनी मुष्टि निशानथी नीचे होय अने प्रत्यंचानी मुष्टि उपर होय तो वाणनी गति अयोभागमां थाय छे. ज्यारे चापमुष्टि अने प्रत्यंचामुष्टि एकी साथे लक्ष्यने ढांकी लीए त्यारेज लक्ष्यभेद यह शके छे, अन्यया श्रम निष्फळ निवडे छे. लक्ष्य, वाणनो अग्रभाग अने दृष्टि ए त्रण ज्यारे एकत्र थाय त्यारे फेंकेलुं वाण अवश्य लक्ष्यपात करे छे. दोष रहित, शब्दहीन अने प्रत्यंचा तथा धनुष ए बन्नेनी समद्वियी फें-केळुं शर कठिन वस्तुओनुं पण विदारण करी शके छे. जे वाण सारी रीते खेंचेळुं, जित, द्युद्ध, सद्भपक्ष अने गाढ मुष्टियी फोंकेट्टां होय ते धनुष्य, हाथी अने अश्वोना अंगमां रही शकतुं नथी; अर्थात् तेओने वींधी आरपार चाहवुं जाय छे.जेने शरो तृण समान, धतुप इन्धन समान अने मत्यंचा माण समान होय ते धनुर्धारी सर्वोत्कृष्ट गणाय छे. जे वाण लोह, चर्म, घट अने मृतिकाना विंडतुं भेदन करे छे ते वाणने वज्र पण कापी शकतुं नथी. दोढ आंगळ प्रमाणना जाडां छोहपत्र करावी तेने एक वाणथी वींधनार पुरुष दढवाती थाय छे. जे मनुष्य एक वाणथी चोवीश चर्म एक साथे भेदे, तेतुं वाण महान मदोन्मत्त हाथीना शरीरने वींधी आरपार चाल्युं जाय छे.पाणीमां घूमतो घट, कुंभकारना चक्रपर फरतो मृत्तिकानो पिंड अने एवीज भ्रमणशील अन्य वस्तुओने वींधनार पुरुष द्रहभेदी कहेवाय छे. छोहनी वस्तुनो काकतुंडथी, ढाछनो आरामुखथी अने मृत्तिकाना विंडनो तथा घटनो सूचिमुख नामना शरथी वेध करवो. जे पुरुप वाणने तोडवानो विधि, काष्ठ-च्छेदन तथा विन्दुक अने वे गोळाओने वींधवानुं जाणतो होय ते शत्रुँसैन्यनो विजय करी शके छेः

जे पुरुष छक्ष्य स्थानपर मेरित वाणनो सामेथी आवतां आवतां वचमांज विच्छेद करी नांखे, कांइक णेतानी मुष्ठिवाळी तिर्यक् थइ जाय, वे फळवाळां वाणधी अथवा अर्धचन्द्रधी शत्रुना शिरतुं मध्य भागथी छेदन करें, सन्मुख आवता वाण सामे तिर्यग् वाण न चलावे, परंतु पोतेज तिर्यग् धइ जाय अने वाणयी वाणने कापे ते वाणच्छेदी कहेवाय छे. जे पुरुष लाकडीए घोडानें। वाळ वींटी तेमां ल्टकावेली भ्रमणशील कोडीने वाणधी पाडी दे तेने साचो धनुर्धारी समजवो. जे निशाननी जगोए लीली लाकडीने काळी बनाबी राखे अने तेनुं क्षरप नामना वाणधी छेदन करे ते पुरुष तमाम काष्ट्रने कापनारो बनी काष्ट्रछेदीना पदने माप्त करे छे, जे पुरुष छक्ष्यनी जगोए क्रन्दना पुष्प समान बनाबी राखेळ बेत बिन्दुनो वेध करे ते चित्रयोधा कहेवाय छे. काष्ट्रना वे गोळाओन शीव्रताची आकाशमां उहाही ते पृथ्वी पर न पढे तेटला वखतमां ते वन्नेनी पीठने शीघ्र संधानना योगपूर्वक गोपुच्छमुख नामना वे वाणधी वींधी नांखे तेने उत्तम धनुधीरी जाणवी, दरेक राजा-ए तेवा पुरुषोनो सत्कार करवो जोइए. स्थस्थ, गजस्थ, इयस्थ तथा पैदळ पुरुषे दोडतां छक्ष्यने पाडवानो प्रयत्न करवो ने निज्ञान डावा हाथ तरफथी आवी जमणी वाजु तरफ दोडयुं जतुं होय, तेने धतुप खेंची जनणा हाधयीज मार्युं, एवीज रीते दक्षिण तरफयी आवतां लक्ष्यने आलीढ क्रमथी भेदबुं अने वाम अथवा दक्षिण तरफ गति करता वायुनुं वळ पण तपासबुं. वाम वाजुथी वायु विचरण करतो होय तो धनुपने दक्षिण तरफ झुकावी देवुं अने दक्षिणनो वायु होय तो वाणने डावी वाजु फेंक्क्टं; जेना पृष्ठ तरफ अथवा दक्षिण भाग तरफ वायुनी गति होय ते अवस्य विजय पामे छे अने जेनी सामे अथवा वाम भागमां वायु गति करतो होय तेनो पराजय थाय छे, कारणके ए चिह्न सुभटोना भंगतुं सूचन करनारुं छे. निज्ञानना म्थानमां कांसातुं पात्र वे हाथन अंतरे राखी तेना उपर रेतीनी कांकरीओधी नाडन करतां शब्द उत्पन्न थाय छ, ए उत्पन्न थएला अवाजने सारी रीते ध्यानमां राखी कर्णेन्द्रिय अने मनना यागधी निशाननो निश्रय करी शरानु-सन्यान बर्रातुं; ज्यारे वे हाथने अंतरे धता शब्दने सांमळी लक्ष्यिनिष्टिनो अभ्यास संपूर्ण थाय, त्यारे ते कांस्यपात्रने जरा दूर राखबुं एम दिनमितिदेन बनारे दूर मुकी शब्दनेवन शीखबुं. शब्दवेधननो अन्यास अंधकारवाळा प्रदेशमां करवो. दुष्कर शब्दवेपनने कोड भाग्यशाळीज सिद्ध करी शके छे, जेमां रंजकनी निल्काओं लागी होयं एवं खग नामनं बाण वायुनी सन्मुख पेंचतां ते कांर्रिसिद्ध करी पाछुं आवे छे। इयांगुरी मिड धाय त्यांगुरी श्रम जांगी राखवा, त्यारवाद वर्षाऋतुमा धतुपने धारण करतुं नहि. पूर्वे करेली अन्याम मृली न जवाय एटला माटे

वे महिना पर्यन्त परिश्रम करवो; दरेक वर्षे शरदऋतुमां अथवा आश्विन ग्रुदी नवमीने दिवसे इश्वरी चंडिका, गुरु, **द**थिआर अने अश्वोनी राजाए अथवा अभ्यासी पुरुषे पूजा करवी,ब्राह्मणोने दक्षिणा देवी, कन्याओने भोजन करावबुं, देवीने अर्थे पशुनुं विह्यान आपबुं अने मांगिहिक वायो-ना निनाद साथे वेदोक्त अथवा शास्त्रोक्त अस्त्रोनी कर्मसिद्धि माटे जप अने होमना, विधियी मंत्र साधन करवुं. ब्राह्मय, नारायण, देशव, अन्द्र, वायव्य, वारुण, आग्नेय अने गुरुए आपेल अस्त्रोने साधवां. पवित्र पुरुषे मन, वाणी अने कर्पथी अनुभव करवो. अस्त्रोने मेळवी जे तेना प्रयोग तथा उपसंहारने जाणे तेज ते धनुर्धर कहेवाय छे. सामान्य कार्यसिद्धि माटे बुद्धिमान् पुरुषे अस्त्रोनो प्रयोग न करवो. पहें छं ब्रह्मास्न, बीजुं ब्रह्मदंड. त्रीजुं ब्रह्मशिर, चोर्थुं पाशुपतास्त्र, पांचमुं वाय-च्यास्त्र, छड्डं आग्नेयास्त्र अने सातमुं नारसिंह ए सर्वेने उपसंहारनी साथ जाणवां जोइए. तमाम अल्लोने गायत्री मंत्रथी ग्रहण करवां अथवा दीप्यमान वनाववां. ब्रह्माल्लनो प्रयोग एवो छे के प्रथम ''द"ने आदि लइ ''द" ना अन्त पर्यन्त सावित्रिनो विपरीत जप करवो, ए रीते विधिपूर्वक एक निखर्व मंत्रजापथी अभिमंत्रित शर शीघ शतुओ उपर फेंकतां वाळक, द्रद्ध, गर्भस्य अने जे कोइ युद्ध करवा सन्मुख आवेल होय तें सर्व नष्ट थाय छे. ब्रह्मदंडना प्रयोगमां प्रथम प्रणव(ॐ)नो उच्चार करवो, ते पछी प्रचोदयात् पछी नौ योधियो एम क्रमपूर्वक धींमाहि देवस्य भर्गोवरेण्यं सवितुः तेनी साथ अमुक शत्रुतं नाम जोही, छेक्ट हन हन हुंफद् ए वोल्बुं. एवा वे लक्ष मंत्रजपथी अभिमंत्रित वाण शतुओ उपर फेंकतां कदाच तेओ यमराज जेवा वळवान् होय तो पण विनाश पामे छे; ए ब्रह्मदंडनो उपसंहार करवी होय त्यारे उक्त मंत्रनो विपरीत जप करवो. ब्रह्मिशर अस्त्रना प्रयोगमां प्रथम प्रणवतुं उच्चारण करी तत्सावितुर्वरेण्यं-शत्रनमे हन हन हुंफद् एवा त्रण लक्ष मंत्रना पवित्रता पूर्वक पुरश्वरणधी अभिमंत्रित वाण फेंकता देव के असुर गमे तें शत्रु होय ते सर्व नाश पामे छे; ए ब्रह्मशिरनो उपसंहार करवी होय त्यारे कथित मंत्रनो विपरीत जप करवो. पाशुपतास्त्रना प्रयोगमां "द" ने आदि छइ "द"ना अन्त पर्यन्त मणवनो उच्चार करी रलीं पद्युं हुंफट अमुक रात्रून् इन हन हुंफट् एवा वे लक्ष मंत्रथी अभिमंत्रित शर फेंकतां समस्त शत्रुओनो संहार थाय छे, तेनो उपसंहार करवो होय त्यारे विपरीत मंत्रजप करवो. आ पाशुपतास्त्र सर्व शस्त्रोना निवारणने माटे छे.वैरीओना विध्वंसने माटे वायव्यास्त्रनो प्रयोग करवो होय त्यारे ॐ वायव्यया व।यव्ययान्योर्वाय-

व्यया अमुक शत्रून् हन हन हुंफट् एवा वे छक्ष मंत्रथी अभिमंत्रित शर शत्रुओना सं-हार अर्थे फेंकवुं अने एज मंत्रथी उपसंहार करवो.वायव्यास्त्र देवताओने पण हठावी दे छे.शत्रुओ-थी उत्पन्न थनार भयने वाळी भस्म करनार अग्न्यास्त्रना प्रयोगमां ॐ अग्निस्त्यता हृद् भूंच शिवंवनाश्वाविणिच हगादशरूपनः सदवेति हादतितोयति राममसो हि वावान सुसेदवेदया अमुक शत्रून् हनहन हुंफट् एवा वे लक्षमंत्रजपयी अभिमं-त्रित वाण शत्रुओ उपर फेंकवुं अने उक्त मंत्रना विपरीत जपथी तेनो उपसंहार करवो. नारसिंहा-स्त्रना प्रयोगमां अग्न्यास्त्रना एक लक्ष मंत्रनो जप करवो अने उपसंहार पण एज मंत्रना विपरीत जिंपयी करवो. नारसिंह वाण सिंहतुं स्वरूप धारण करी शत्रुरुपी वनमां दाखल थइ सर्वने छिन्न-भिन्न करी नांखे छे. इस्त नक्षत्रमां रविवारन दिवसे जळ पीपळने। कन्द छइ तेनो शरीरे छेप करनार कायर पुरुष पण रणभृतिमां शूरवीरना अभिमानने उतारी शके छे. पुष्यनक्षत्र, रिवनार अने सिद्धियोगमां अपामार्गनी जड लइ राखवी, जे दिवसे कोइनी साथ युद्ध करवानुं वने ते दिवसे तेनो छेप करवाथी अंग उपर शस्त्रना घाव लागता नथी। अधःपुष्पी, शंखपुष्पी, लज्जालु, गिरिकर्णिका, निलेनी, सहदेवी अने विष्णुकान्ता ए सर्वनी जड तथा मुंज अने आकडाना पर्ण रविवार लड़ हाथे वांधवाधी अथवा तेनो ज्ञारीरे लेप करवायी सर्व प्रकारना ज्ञास्त्रो दूर रहे छे, सर्प तेपज व्याघ्र आदि हिंसक पाणी कांड वाध करी शकतां नधी अने अष्टपाताओ रक्षक वनी रहेछे. इस्त नक्षत्रमां छछुंदरधी उत्पन्न थएछुं चूर्ण ग्रहण करवुं, तेना प्रभावधी मनुष्यनी सामे हाथी आबी शकतो नथी. सिंहतुं मांस लइ अश्वेन चालवाना रस्तापर गर्खा दीवुं होय तो ते रस्ते ताडन वर्षा छता पण अश्व आवता नयी. छड्डन्दर अने श्रीफळना पुषातुं चूर्ण शरीरे लगाडवार्था सिंहना शरीरनो यन्य सुंघ्यानी माफक मनुष्यना शरीरनो यन्य सुंबी मटोन्यत्त हाथी मटनो परित्याग करे छे. श्वेत विष्णुकान्तानी जड हाथमां राखनार मनुष्यधी हाथी हमेग्रा दूर रहे छे, श्वेत कंटारिका व्याघ्र आदिता भयने हरे छे. पुष्पनक्षत्रमां रिववोर पाटानी जड उत्वर्डी मुख्यमां राज्यवायी नीव तलबार अथवा चक्रनी धारधी शरीर फाटनुं नधी गावागितुं उत्तरमूळ मुख्यां होय तो स मुख आदना शखना समूरने हटावी दे छे, ए गाधारोतुं उत्तरमूळ विविवन अर्थान् उपवास करी पुरा-नस्त्रमा रविवारे लाववुं. ध्वेत शर्षुंखानी जह अथवा नीलीनी जटा, हाथ, शिर प्रथवा मुखमां राखवाथी सर्व शस्त्रोतुं निवारण करे छे. तेमज राजा, चार अने सर्पना भयने दूर करे छे; ए जड तथा जूटा पण पुष्पनक्षत्र अने रिववार होय त्यारे छाववी जोइए.

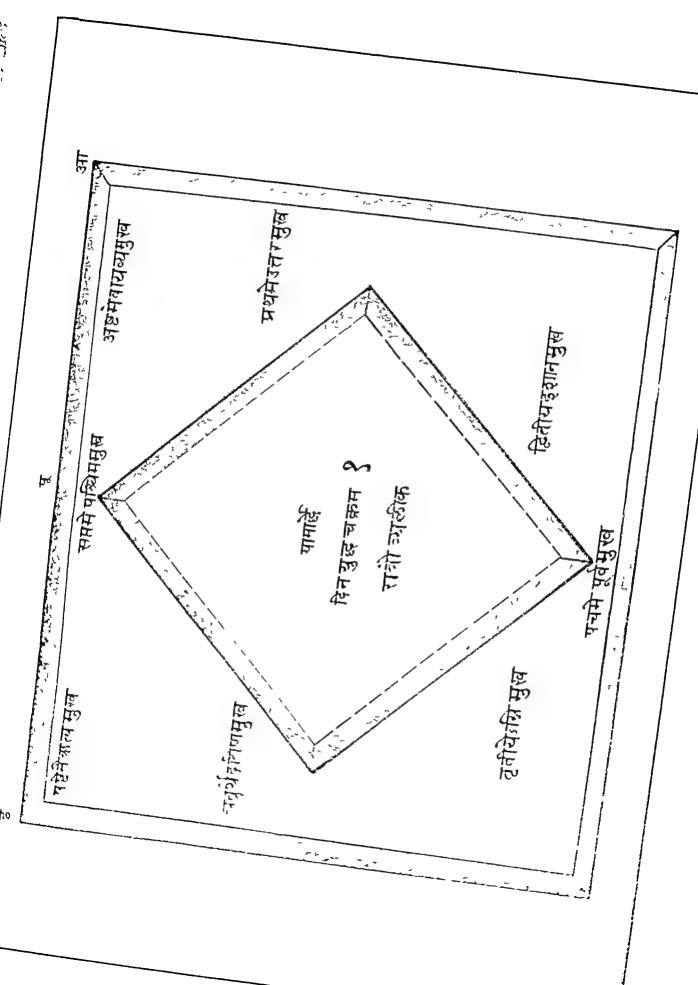
शरुआतमां शत्रुना सैन्य सन्मुख उभा रही मुद्र। करवी अने त्यारवाद युद्धनी पारंभ करवो, जे प्रथम सर्पमुद्रा करे ते अवस्य विजय पामे छे. प्रथम रुद्रनुं ध्यान धरी गायत्री मंत्रनों जप करवो अने त्यारवाद भगवती हैमवतीतुं प्रणाम पूर्वक ध्यान करी युद्धनो आरंभ करवे। " ॐ हीं श्रीं हैमवतीश्वरीं हीं स्वाहा । ॐ हीं वज्रयोगिन्ये स्वाहा " आ मंत्रतुं उच्चारण करी वज्रयोगिनी देवीतुं ध्यान करतुं, अने सिंह्पर आरूढ थएल रुद्राणीतुं पण व्यान धरवुं, अपूर्ण स्वरमां शत्रुनी सामग्री होय अने पूर्णमां पोतानी सेनाने सत्वथी परिपूर्ण करी स्थित थएलो एकन योद्धो आखी दुनियाने जीती शके छे.जेना पृष्ठ भागमां तेमन दक्षिण वाजुए राहु सहित योगिनी होय ते एकलो छक्ष शत्रुओनो संहार करे छे. एवीज रीते सूर्य पाछळ अथवा जमणी वाजुए होय तथा रात्रिए चन्द्रमा सन्मुख अथवा वाम भागमां होय अने वायु जमणी वाजु-ए होय अथवा पृष्ट भागमां गति करतो होय तो लडवैयो तत्काळ वैरीओने विनष्ट करे छे. अंगमां जे नाडी वहेती होय अने तेनो अथिदैव सन्मुख होय तो ते अधिदैवनी दिशा सामे मुखराखवाथी सर्वे कार्य सफळ थाय छे, जेना देहमां जे दिशानी वायु गति करतो होय ते दिशामां युष्ट प्राप्त थाय तो ते पुरुष निःसंदेह सामे इन्द्र आन्यो होय तोपण तेने जीती शक्ते छे.जो सूर्यस्वर चालतो होय तो पूर्व तथा उत्तरमां अने चन्द्रस्वर चालतो होय तो पश्चिम तथा दक्षिण दिशामां सेनापतिए रें न्यने आदर साथे युद्ध अर्थ जवा आज्ञा आपवी. जे नाडीमां वायु विचरण करतो होय एज अं-गमां प्राणनी स्थिति होय छे, ए प्राणने कर्णवर्यन्त खेची चालनारा पुरुव इन्द्रने पण पराजय आपे छे. जे प्रतिपक्षना प्रहारोथी पूर्ण अंगोनी रक्षा करे छे, ते वळवान् शत्रुओथी पण हणातो नथी युद सप्ये अंगुष्ट अने तर्जनीना वंशमा तेमज पगना अंगुष्टमां व्वनि करनार पुरुष एक छन्न योद्धाओने हरावे छे. ज्यारे पृथ्वीतुं तत्व होय त्यारे जास्त्रनी चोट उदरमां लागे छे, एउला माटे भूतत्व समये ढाल आदिथी उदरतुं रक्षण करवुं; जलतत्व होय त्यारे चरणतुं, विहतत्व होय त्यारे उरूतुं, वायु-तत्व होय त्यारे करनुं अने व्योमतत्व होय त्यारे शिरनुं संरक्षण करनार सुभट निरंतर विजयी निवंडे छे. सूर्य स्वर होय त्यारे पूर्व तथा उत्तरमां अने चन्द्र स्वर होय त्यारे दक्षिण तथा पश्चिममां मुख राखनाथी विजय मेळे छे. छावा वखत सुधी युष्ट करवुं होय तो चन्द्रस्वर अने सन्वर युद्ध

करवुं होय तो सूर्य स्वर श्रेष्ट गणाय छे. दूरना युद्धमां चन्द्रस्वर अने समीपना युद्धमां सूर्यस्वर विजय आपनारो होय छे. पाणवायुने खेंची अर्थात कुंभक करी वाहनपर आरूढ थनार वीरनर रेचक करतो पृथ्वीपर पग मुके तो तेनां सर्वे कार्य सिद्ध थाय छे. शून्य स्वरमां स्थित क्रूर स्वभावना काळ, सर्प, शस्त्र, शत्रु, व्याधि, अने चोर आदि नाग करवाने समर्थ थड् शकता नयी जे पुरुपनो दक्षिण स्वर उत्तरायणसूर्यनीतिथि, सूर्यस्वर अग्नितत्व अथवा वायुतत्व युक्त थड कदाच पोतानी मेळे चाले तो ते स्वर्ना स्वंपन मात्रयी ते पुरुष शत्रु सन्यने जीती शके छे, अने तेने विष्णुलोक-मा पण विष्न प्राप्त थतुं नथी। स्वर्धीज शख़ने वांधे, स्वर्धीज भाथामांथी वांहर कांढे अने स्वर्धी-ज फेंके तो युद्धमां सदा विजय मळे छे. ज्यारे वाम वर चालतो होय त्यारे चन्द्रमाने वामभागमां अथवा सन्मुख राखवो जोडए तेपज सूर्यस्वर चालतो होय त्यारे सूर्यने पृष्ट भागमां अथवा दक्षिण तरफ राख्वो. क्रूर कार्ययां पर तरफ सदा नाडीने निर्जाव अने ज्ञान्त कर्ममां सजीव वताववाथी कार्य सिद्ध थाय छे तत्वज्ञान तो महा कठिन छे, ए तो कोड़ विरलानेज थाय छे, परंतु ए तत्व-वळधी नाडीवळ अधिक छे ए वान जटाजूटने धारण करनारा शिवजीए परझुराम पासे कही हती. रदरनी गतिने सारी रीते जाणी कार्यमां परुत्त धएले। पुरुष महा निपुण मतिवाळी गणाय छे. आ धनुर्विद्या करने. कुनुद्धिनाळाने, अशान्तने, गुरुद्रोहीने तेमज अभक्तने कदिपण आपनी नहि, परंतु तेतुं दान ब्रह्मचारीने, धर्भथी प्रजातुं पालन करनारने, दृष्ट पुरुषाने दंडनारेन अन जनोतुं संरक्षण करनारने देवुं एन महादेवजीतुं महा वाक्य छे. प्रतिपदा अने नवमीने दिवसे प्रथमना अर्थ प्रहरमां राहु महित योगिनी पूर्व दिशामा स्थित थाय छे. दितीया अने दशमीने दहाडे पांचमा अर्ध महरमा पश्चिमे उदय धाय छे, तृतीया अने एकादशीने दिवमे त्रीजा अर्धपहरमां दक्षिणे घृते छे, चतुर्धी अने द्वादशीने दिवसे मातना अपनहरमा उत्तर दिशाए जो छे, पंचमी अने त्रयोदशीने दहांडे अ.टमा अधिमहरमां वीजा नैक्स्न्य कोणमां ग्हे छे. पष्टी अने चतुर्दशीने दिवसे बीजा अर्थमहरमां वायुक्ताणमां चान्हे छे, सप्तमी अने पूर्णिमाना चोथा अर्थमहरमां इज्ञान कोणमां अटन करे छे तथा अष्टमी अने अमावास्याना छट्टा अर्रमहरमां राहु महित योगिनी अ-ग्निकोणमा देखाव दे छे.

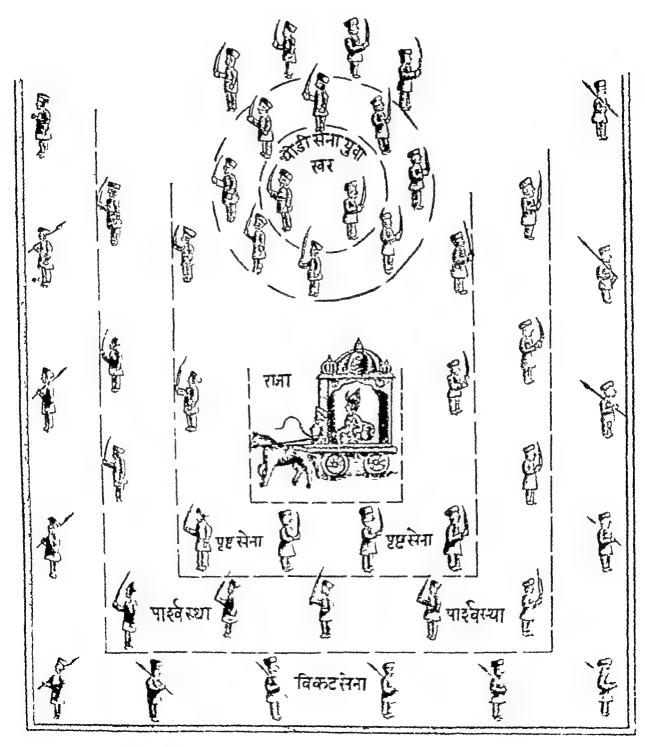
राजाए राजपुत्र, सामन्त, आप्तजन अने शुद्ध बुद्धिना सेवकजनोने पोनानी आजुवाजु रक्षा अर्थे राज्यवाः जे योडाओ परस्पर मेम राज्यनारा, शार्ट धनुपने वारण करनारा, युद्धनी रीति- ने जाणनारा अने रथपर आरूढ थएला होय, तेओ झत्रुओने रणमां जीती बके छे. सैन्यमां एक पण कायर अने भागेडु होय तो महान् सैन्य छतां पराजय प्राप्त थाय छे अने एवा भागी जनार कायर पुरुषने जोइ म्होटा शूरवीरो पण भयभीत वनी भागे छे. एटला माटे राजाए कायर सेना-पति अथवा पदाति आदि नोकरोनी सेनामां भरती करवी नहि. योगयुक्त सन्यासी अने संग्राममां सामे पगले मरनार ए वन्ने महात्माओं सूर्यमंडलने भेदनारा थाय छ अर्थात तेओ सर्यथी उपरना लोकमां जाय छे. ज्यां ज्यां इप्राचीर शत्रुओथी घेराएळी स्थितिमां मरण पामे, ते अक्षयले। कने भागवनारो थाय छे. युद्धमां हीन वचन वोलवां नहि, जे शत्रु मूर्शवश होय गभराइ गएले। होय, शस्त्र रहित होय, वीजा साथे लढाइ करी रह्यो होय, भागी निकलेलो होय अने शरण आ-वेल होय तेना उपर कदिपण प्रहार न करवो वळवान पुरुषे भागेला झत्र पाछळ थंडु नहि कारणके ते मरणीओ वनी वखते मारी दे छे. एटला माटे पलायित शत्रुनी शोध अर्थे परिश्रम लेबो नहि. घणा सैन्येन एकत्र करी चतुरंगिणी अर्थात् हाथी, रथी, घोडेस्वार अने पैदलनी सेनायी न्यूह रचना करवी. विजयनी इच्छावाळा राजाए शूरवीरोने सर्वेथी आगळ राखवा. वायुतं विचरण, सूर्यनो उदय, पक्षीओतं उढवं अने दृष्टि जे सैन्यनां पृष्ट भागमां थतां होय ते युद्धमां जय मेळवेछे. अपूर्ण स्वरमां रहेला शत्रुओ मरता नधी अने पूर्ण स्वरमां प्राप्त थएला प्रतिपक्षीओ जीवी शकता नथी एटला माटे धैर्य धारण करी शहुसैन्यनी संहार करवी. युद्धमां विजय मळे ता छक्ष्मी प्राप्त थाय अने मृत्यु थाय तो स्वर्ग मळे तथा पृथ्वीपर यहा गवाय ए वन्ने लाभनो विचार करी भैर्य-पूर्वक वैरीओनो विध्वंस करवो जोइए. रोगी वनी घरमा मरबुं ए क्षत्रीओने माटे घणुंज शरम भरेलुं अने अधर्म मृत्यु गणाय छे, कारणके रणभूमिमां प्राणनो परित्याग करवो ए क्षत्रीओनो सनातन धर्म छे. युवास्वरवाळी मध्य सेना भ्रमण करती सामे उपस्थित थएका शत्रुओ साथे युद करे, वे सेना पड़खाना भागमां तथा एक सेना पृष्ठ भागमां रक्षा माटे नियत करवी अने विकट-सेना दूर सावधपणाथी फर्या करे एवी गोजना करवी जोइए.

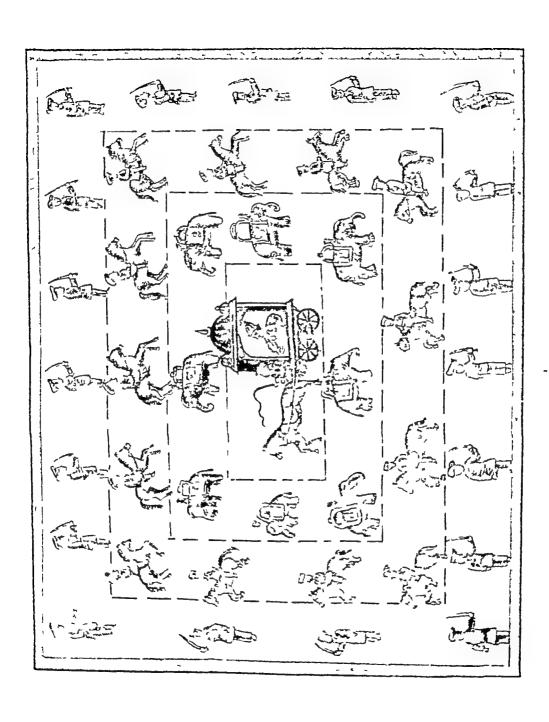
## प्रथमारंभव्यूह.

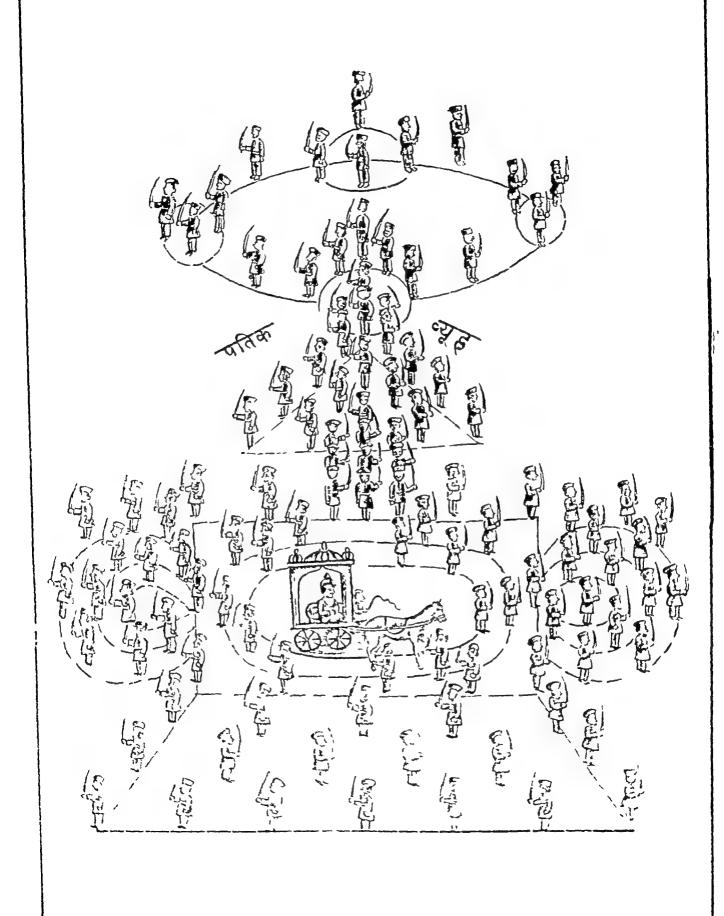
दंडने आकारे होय ते दंड न्यूह, शकटने आकारे होय ते शकट न्यूह, वराहने आकारे होय ते वराह न्यूह, मत्स्यने आकारे होय ते मत्स्य न्यूह, सोइने आकारे होय ते सूचीन्यूह, गरुड पक्षीने आकारे होय ते गरुडन्यूह, तथा कपल्लेन आकारे कमलन्यूह इत्यादि न्यूहोनी रचना करी सेनापतिए गति करवी अने वलाध्यक्षने सर्व दिशामां योजी देवा.

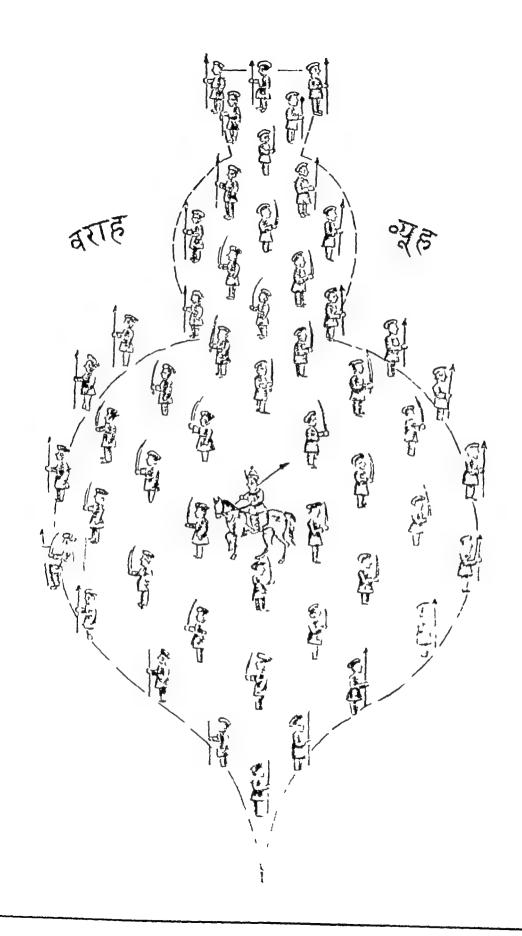


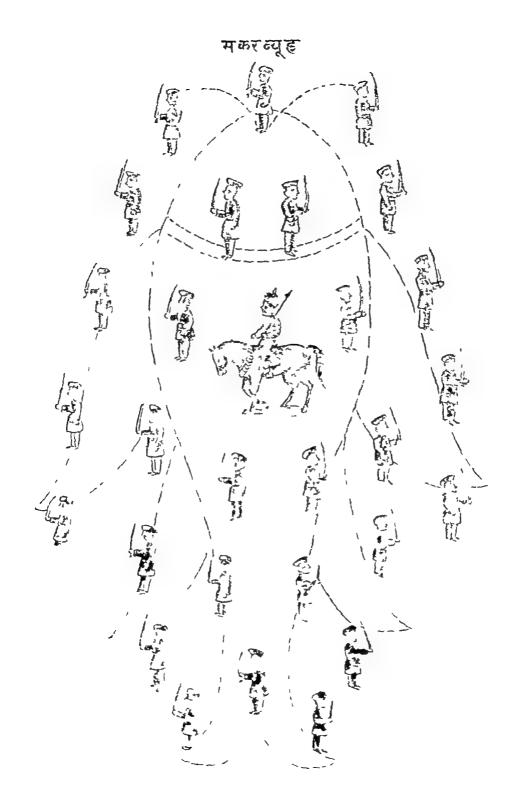
प्रथमारम्भ व्यूह





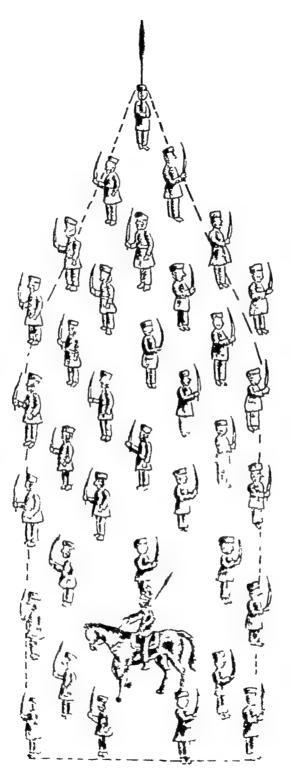


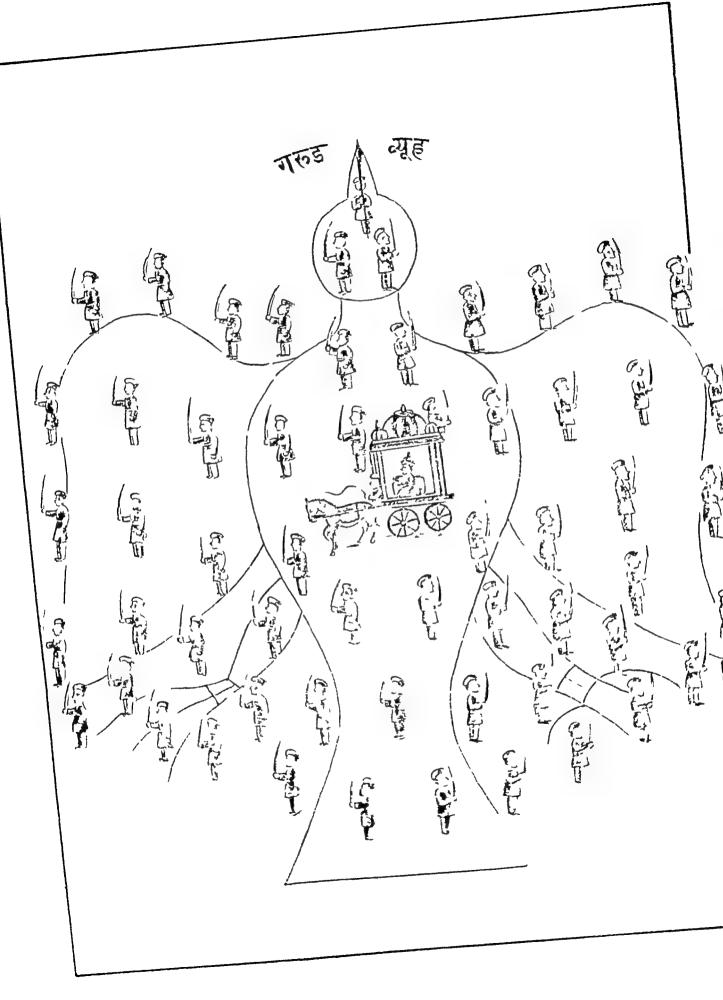




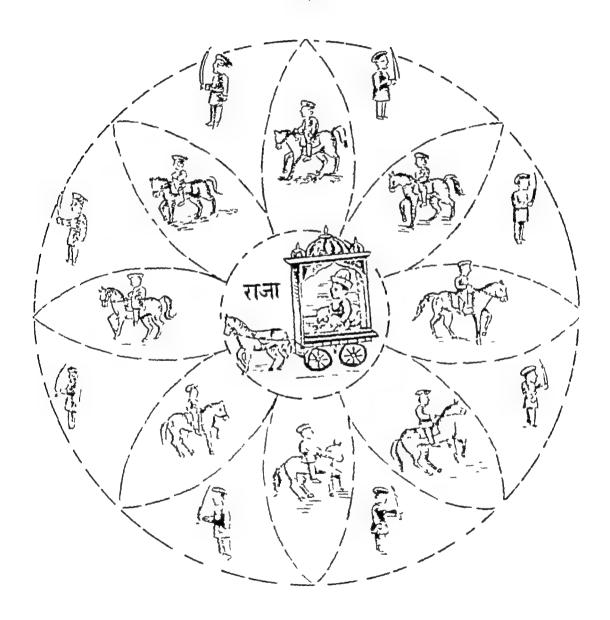


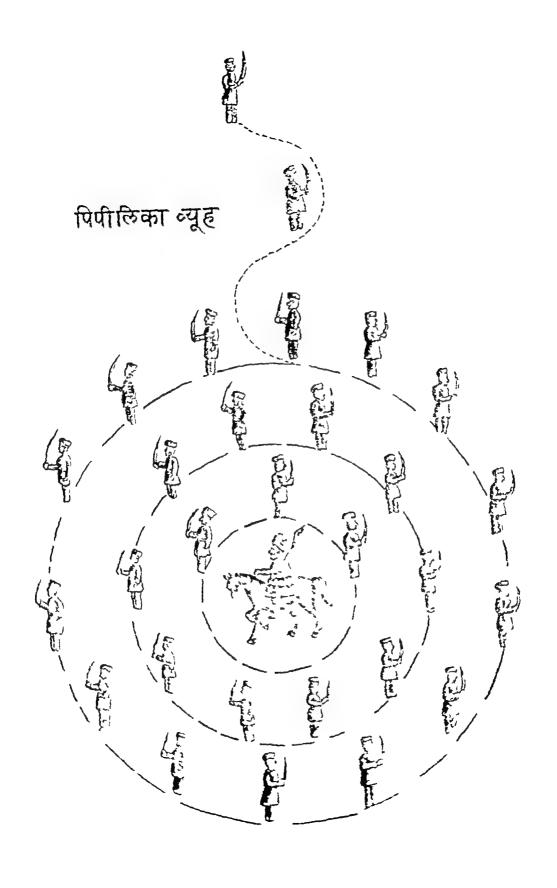
स्चीव्यूह

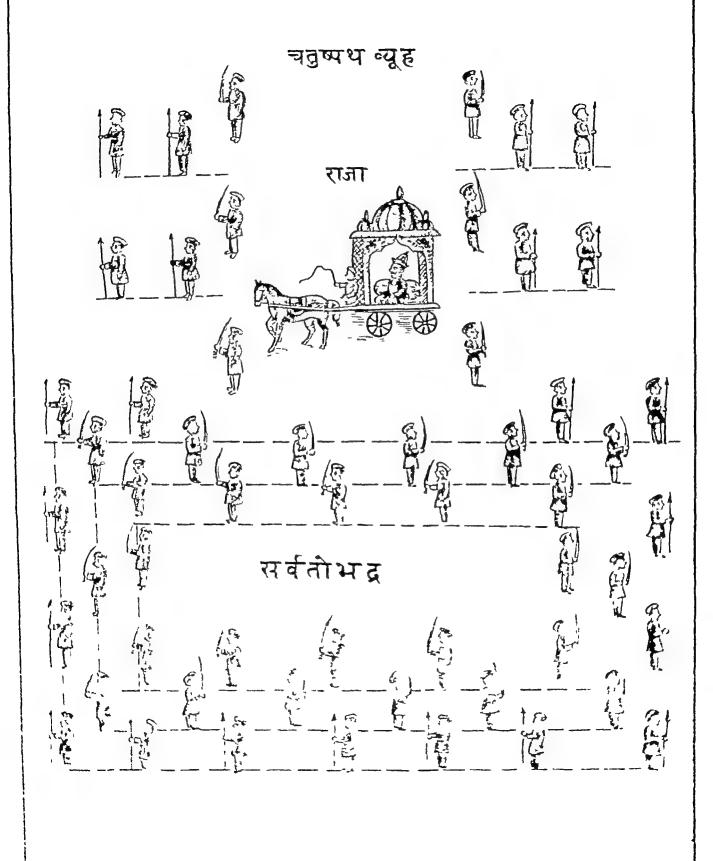




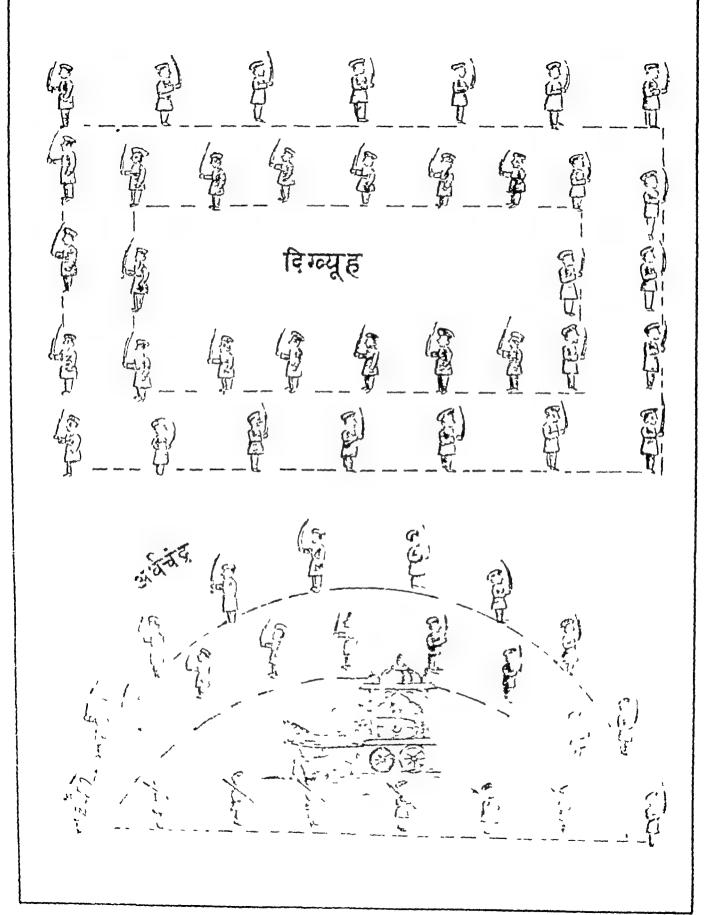
पद्म न्यूह

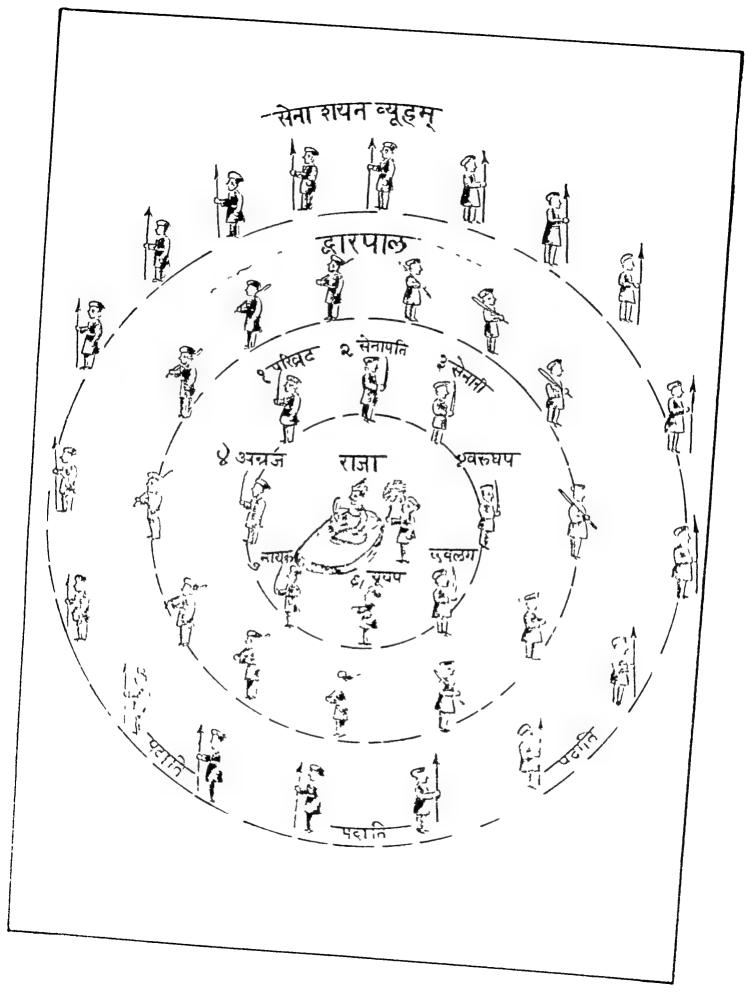






| _ |  |   |
|---|--|---|
|   |  |   |
|   |  | • |
|   |  |   |
|   |  |   |





स्वस्य सेना कहती रहे अने विपुल सैन्य चारे तरफ फरतुं रहे. समान भूमिमां अध्वारोए युद्ध करवुं. पाणीमां हायी, तुंबी, मसक अथवा नावपर चही लड़ाइ करवी; पदाित लड़करे हा- यमां बन्दूक अथवा धतुप लड़ बनमां हक्षोनी ओधे अथवा तेना उपर चही युद्ध करवुं अने उंची नीची पृथ्वी होय त्यां तो ढाल, तलवार, भालां तेमन वरली आदियी लड़ाइ करवी; युद्धमां अहंकारी लोकोने आगळ स्थान आपी अन्यने पाल्ल राखवा. राजाए व्याकरणनो अभ्यास अवत्य करवो लोहए, नव लकारनां रूपोने लोडी केवळ लोदलकारनां रूपोने कार्यनी सिद्धि अर्थे कंटाप्र करवां जोहए, ले सेनापतिए लोदलकारनां मध्यम पुरुपनांज रूपो याद कर्यो होय तेनो कोइ एण पराभव करी शकतुं नथी. मन्यम पुरुपना वहु वचननो प्रयोगन सर्वः सिद्धि आपनार छे अने एथील न्हाना न्हाना हुदेदारो राजानी अथवा पोतानी आहातुं पालन करे छे.

# कवायद्ने माटे,



### अयोदाहरण सहितो धातुपाठः

- १ भूसत्तायां (भू धातुनो अर्ध यवं रोवं ) भव-तुंगा, भवतम्-तमे वे धाओ. भवत्-तमे धाओ.
- २ चल्-चरने (चल एटले चाल्बुं.) चल-तुं चार. चल-म्-तमे वे चालो. चलत-तमे चालो.
- २ ष्टा गतिनिहताँ (प्टा-डभा रहेंचुं).
  तिष्ट-तुं डभो रहे.
  तिष्टतम्-तमे वे डभा रहो.
  तिष्टतम्-तमे डभा रहो.

- ४ दा दाने (दा-आपतुं).
  देहि-तुं भाप.
  दत्तम्-तमे वे आपो.
  दत्त-तमे आपो.
- ५ पत्र पत्ने (पत्व=पड्युं) पत-नुं पट. पत्तम्-तमे वे पडो. पत्त-तमे पडो.
- ६ दृतुष् करणे (तृ-कर्तृं, हरु-तृं कर. हरुत्यू-त्रे वे करो. हरूत्य-त्रे करो.

- चित्ती संज्ञाने (चित्-जाणवं चेतवं)
   चेत-तं जाण, चेत.
   चेततम्-तमे वे जाणो, चेतो.
   चेतत-तमे जाणो, चेतो.
- ८ गम्छृ गतौ (गम्-जर्बु) गच्छ-तुं जाः गच्छतम्-तमे वे जाओः गच्छत-तमे जाओः
- ९ श्रु श्रवणे (श्रु-सांभळवुं). शृणु-तुं सांभळ. शृणुतम्-तमे सांभळो. शृणुत-तमे सांभळो.
- १० हिशर् पेक्षणे (हश्र—जोवुं) परय—तुं जो. पश्यतम्—तमे वे जुओ. पश्यत—तमे जुओ.
- ११ ग्रह उपादाने (ग्रह-ग्रहण करवं).
  ग्रहाण-तुं ग्रहण कर.
  ग्रहीतम्-तिमे वे ग्रहण करो.
  ग्रहीत-तमे ग्रहण करो.
- १२ पृच्छ ज्ञीप्सायाम् (पृच्छ पूछ्वं), पृच्छ-तुं पूछ, पृच्छतम्-तमे वे पूछो, पृच्छत-तमे पृछो,
- १३ ब्र्व् व्यक्तायां वाचि (ब्र्–वोस्रबुं) ब्र्हि–तुं वोस्रः ब्र्तम्–तमे वे वोस्रोः ब्रत–तमे वोस्रोः

- १४ भक्ष भक्षणे (भक्ष्—खातं)। भक्षय—तं खाः भक्षयतम्—तमे वे खाओ। भक्षयत—तमे खाओ।
- १५ पा पाने (पा-पीवृं), पित्र-तुं पी. पित्रतम्-तमे वे पीओ. पित्रत-तमे पीओ.
- १६ इषु इच्छायाम् (इप्-इच्छवुं). इच्छ-तुं इच्छा कर. इच्छतम्-तमे वे इच्छा करो. इच्छत-तमे इच्छो.
- १७ हा अवबोधने ( ज्ञा-जाणवुं. )
  जानीहि-तुं जाणः
  जानीतम्-तमे वे जाणोः
  जानीत-तमे जांणोः
- १८ आप्छ च्याप्तौ (आप्-पामनुं, मेळबरुं.) आप्नुहि-तुं पामः आप्नुतम्-तमे वे पामोः आप्नुत-तमे पामोः
- १९ क्रिथि हिंसायाम् (क्रथ्-मारवं.) क्रन्थ-तं मार. क्रन्थतम्-तमे वे मारो. क्रन्थत-तमे मारो.
- २० त्यज् त्यागे (त्यज्—तजवुं.)
  त्यज—तुं तजी दे.
  त्यजतम्—तमे वे तजी दो.
  त्यजतम्

- २१ इन् हिंसा गत्योः ( हन्-हणवं.)
  जिह-तं हण.
  हतम्-तमे वे हणो.
  इत-तमे हणो.
- २२ शास्त्र अनुशिष्टो ( शाम्-शासन कर्त्वं हुकम चकाववोः ) शाधि-नुं शासन करः

शायन्तु साराग पारः शिष्ठम्-तमे वे शासन करोः शिष्ठ-तमे शासन वारोः

- २१ इण गती (इण्-जन्नं.) इहि—तुं जाः इतम्-तमे वे जाजोः इत—तमे जाओः
- २४ विद् झाने (विद्—जाणवं.) विद्धि--तं जाण. वित्तम्—तमे वे जाणो. वित्त--तमे जाणो.
- २५ अस्-सृषि ( अस्-धर्डं, रोहं.)
  एथि-तं हो, था.
  रतम्-तमे चे हो, थाओ.
  रत-तमे हो, थाओ.
- २६ रिध रावरणे (रुध्-रुंधवुं, रोकवुं.) रन्धि-तु रोक. रन्द्रम्-तमे वे रोको. रन्द्र-तमे रोको.
- २७ शीर् स्वप्ते (शी-सुई) शेष्य-नुं सर जाः इयाथाम्-तमे वे सुर जाङोः

- शेध्वम्-तमे मुइ जाओ।
- २८ अजगती क्षेपणेच ( अज्-जन्नं, फॅक्त्नं.) अज-तुं जा, फॅक. अजतम्-तमे वे जाओ, फॅको. अजत-तम जाओ, फॅको.
- २९ व्रज् गती (व्रज-जर्नु.)
  व्रज-तुं जाः
  व्रजतम्-तमे वे जाओः
  व्रजत-तमे जाओः
- ३० क्रमुपाद विक्षेपे (क्रम्-चाळवुं, पगछुं भरवुं.) क्राम्य--तुं चाल, पगलां भर क्राम्यतम्--तपे वे चालो, पगळां भरो. क्राम्यत-तपे चाळो, पगळां भरो.
- ३१ दर् भस्मी करणे (दर्-वाळवं.) दर-नं वाळ. दरतम्-तमे वे वाळो. दरत-तमे वाळो.
- ३२ पिट मेचने (पिट-मीचवुं, छांटवुं.) पेट-तुं छांट, पेहनम्-तपे वे छाटो. पेहन-तपे खांटो.
- श्रीज प्रापण ( नी-लट जबु. ) नय-तुं लड जा. नयतम्-तवे वे लड जाओ. नयत-तवे लट लाओ.
- ३४ ते शक्ते (ग्री-लर्डु.) ग्राप-हं ग्रापन कर.

- ७ चित्ती संज्ञाने (चित्—जाणवं चेतवं) चेत—तं जाण, चेत. चेततम्—तमे वे जाणो, चेतो. चेतत—तमे जाणो, चेतो.
- ८ गम्छृ गतौ (गम्-जर्बु) गच्छ-तुं जाः गच्छतम्-तमे वे जाओः गच्छत-तमे जाओः
- ९ श्रु श्रवणे (श्रु—सांभळवुं). श्रुणु—तुं सांभळ. श्रुणुतम्—तमे सांभळो. श्रुणुत—तमे सांभळो.
- १० हिशर् मेक्षणे (हश्र—जोवुं) परय—तुं जो. पश्यतम्—तमे वे जुओ पश्यत—तमे जुओ.
- ११ ग्रह उपादाने ( ग्रह-ग्रहण करवुं ).
  ग्रहाण-तुं ग्रहण कर.
  ग्रहीतम्-तमे वे ग्रहण करो.
  ग्रहीत-तमे ग्रहण करो.
- १२ पृच्छ ज्ञीप्तायाम् (पृच्छ पूछ्वं), पृच्छ-तं पृछ, पृच्छतम्-तमे वे पृछो, पृच्छत-तमे पृछो,
- १३ व्र्व् व्यक्तायां वाचि (व्र्-वोळवुं)
  वृहि—तुं वोळ.
  वृत्प्-तमे वे बोलो.
  वृत्त-तमे वोलो.

- १४ भक्ष भक्षणे (भक्ष्—खावुं)।
  भक्षय—तुं खाः
  भक्षयतम्—तमे वे खाओः
  भक्षयत—तमे खाओः
- १५ पा पाने (पा-पीट्टं). पिव-तुं पी. पिवतम्-तमे वे पीओ. पिवत-तमे पीओ.
- १६ इषु इच्छायाम् (इप्-इच्छन्तं). इच्छ-तुं इच्छा कर. इच्छतम्-तमे वे इच्छा करो. इच्छत-तमे इच्छो.
- १७ ज्ञा अववोघने (ज्ञा-जाणवुं.)
  जानीहि-तुं जाणः
  जानीतम्-तमे वे जाणोः
  जानीत-तमे जांणोः
- १८ आप्तृ व्याप्ती (आप्-पामबुं, मेळबढुं.) आप्तुहि-तुं पामः आप्तुतम्-तमे वे पामोः आप्तुत-तमे पामोः
- १९ क्विंग हिंसायाम् ( कुय्-मारवं. ) कुन्थ-तं मार. कुन्थतम्-तमे वे मारो. कुन्थत-तमे मारो.
- २० त्यज् त्यागे (त्यज्—तजवुं.)

  त्यज—तुं तजी दे.

  त्यजतम्—तमे वे तजी दो.

  त्यजत—तमे तजी दो.

- २१ इन् हिंसा गत्योः ( इन्-हणवं.)
  जहि-तं हण.
  इतम्-तमे वे हणो.
  इत-तमे हणो.
- २२ शास्र अनुशिष्ठौ (शास्-शासन करवं हुकम चळाववो.)

शाधि-तुं शासन करें शिष्टम्-तमे वे शासन करों शिष्ट-तमे शासन करों

- २३ इण गती (इण्-जवं.) इहि-तुं जा। इतम्-तमे वे जाओ। इत-तमे जाओ।
- २४ विद् ज्ञाने (विद्—जाणवं.) विद्धि-तुं जाण. वित्तम्-तमे वे जाणो. वित्त-तमे जाणो.
- २५ अस्-भुवि ( अस्-धवुं, होवुं.) एषि-तुं हो, था. स्तम्-तमे वे हो, थाओ.

स्त -तमे हो, याओ

- २६ रुधि रावरणे (रुध्-रुंधवुं, रोकवुं.) रुन्धि-तुं रोकः रुन्द्रम्-तमे वे रोकोः रुन्द्रम्-तमे रोकोः
- २७ शीङ् स्वप्ने ( शी-सुवृं ) शेष्व-तुं सुइ जाः भ्रयाधाम्-तमे वे सुइ जाओः

होध्वम्-तमे सुइ जाओ.

- २८ अजगती क्षेपणेच ( अज्—जवं, फेंकवं.) अज—तुं जा, फेंक. अजतम्—तमे वे जाओ, फेंको. अजत—तम जाओ, फेंको.
- २९ व्रज् गतौ (व्रज-जवुं.)
  व्रज-तुं जाः
  व्रजतम्-तमे वे जाओः
  व्रजत-तमे जाओः
- ३० क्रमुपाद विक्षेपे (क्रम्—चाळवुं, पगछुं भरवुं.) क्राम्य--तुं चाल, पगलां भर. क्राम्यतम्--तमे वे चालो, पगळां भरो.

क्राम्यत-तमे चाळो, पगळां भरो.

- ३१ दह् भस्मी करणे (दह्-वाळवुं.) दह-तुं वाळ. दहतम्-तमे वे वाळो. दहत-तमे वाळो.
- ३२ मिंह सेचंने ( मिंह-सींचर्नु, छांटर्नुं. ) मेह-तुं छांट, मेहतम्-तमे वे छांटो. मेहत-तमे छांटो.
- ३३ णीज प्रापणे ( नी-लइ जवुं. ) नय-तुं लड़ जा. नयतम्-तमे वे लड़ जाओ. नयत-तमे लड़ जाओ.
- ३४ गै शब्दे (गै-गार्नुः) गाय-तुं गायन कर.

गायतभ्–तमे वे गायन करो. गायत–तमे गाओ.

३५ जिजये (जि-जीतवुं.) जय-तुं जीत. जयतम्-तमे वे जीतो. जयत-तमे जीतो.

३६ क्रप्-विलेखने (क्रप्-खेंचवुं, खेडवुं.) क्रप-तुं खेंच. क्रपतम्-तमे वे खेंचो.
क्रपत-तमे खेंचो.

३७ मुच्छ मोचने ( मुच्-मूकवुं. )
मुश्च-तुं मूक.
मुश्चतम्-तमे वे मूको.
मुश्चत-तमे मूको.

३८ सिश्च सिश्चने (सिश्च—सींचवुं, छांटवुं.) सिश्च—तुं छांट. सिश्चतम्—तमे वे छांटी. सिश्चत—तमे छांटी.

३९ कुन्त कर्तने (कुन्त-कापवं.) कुन्त-तुं काप. कुन्ततम्-तमे वे कापो. कुन्तत-तमे कापो.

४० क्षिप् पेरणे (क्षिप्-फेंकवुं)
क्षिप्-तुं फेंक.
क्षिपतम्-तमे वे फेंको,
क्षिपत-तमे फेंको.

४१ कृ विकिरणे (कृ--विखेरवुं.) किर--तुं विखेर. किरतम्-तमे वे विखेरो. किरत-तमे विखेरो.

र्थश्च मिल मिल्नने (मिल्र--मळवुं, भेटवुं. भिल्र-तुं मळ. मिल्नतम्-तमे वे मळो. मिल्रत-तमे मळो.

४३ लिख हिखने (लिख्--छखबुं.) िछख-तुं लखः लिखतम्-तमे वे कखोः िछखत--तमे लखोः

४४ मनुज्ञाने ( मन्-मानवुं, जाणवुं. ) मन्यस्त--तुं मान. मन्येथाम्-तमे वे मानो. मन्येथ्वम्-तमे मानो.

४५ व्यध्वेधने (व्यध्-वींधवुं, ) विध्य-तुं वींध. विध्यतम्-तमे वे वींधो. विध्यत-तमे वींधो.

४६ रच्रचने (रच्-रचवुं.)
रचय-तुं रच.
रचयतम्-तमे वे रचो.
रचयत-तमे रचो.

४९ गण--संख्याने (गण्-गणवुं.)
गणय-तुं गण.
गणयतम्-तमे वे गणो.
गणयत-तमे गणो.

४८ तनु विस्तारे (तन्-पाथरनुं, ) तनु-तुं पायर तनुतम्-तमे पाथरोः तनुत--तमे वे पाथरोः

४९ भुज पालनाभ्यवहारयोः ( भुज्--भोग-ववुं, खावुं.) भुङ्धि-तुं भोगवः भुङ्कम्-तमे वे भोगवोः भुङ्क-तमे भोगवोः

५० भिदिर् विदारणे (भिद्--फाडवुं, चीरवुं) भिन्ध--तुं फाड. भिन्तम्--तमे वे फाडो. भिन्त--तमे वे फाडो.

५१ या प्रापणे (या -जर्बुः)
याहि-तुं जाः
यातम्-तमे वे जाओः
यात-तमे जाओः

५२ अद्- भक्षणे ( अद्--लावुं.) अद्धि-तुं लाः अत्तम्-तमे वे थाओ. अत्त-तमे जाओ.

५३ जागृ निद्राक्षये (जागृ-जागवं )
जागृहि-तं जागः
जागृतम्-तमे वे जागोः
जागृत-तमे जागोः

५४ विज्ञ प्रवेज्ञाने (विज्ञ-प्रवेज्ञ करवो, पेसबुं.)

> विश्व-तुं भवेश करः विश्वतम्—तमे वे भवेश करोः विश्वत--तमे भवेश करोः विश्व धातुनी पूर्वे उपसर्ग आववाथी भने वेश करवानो अर्थ जतो रहे छे अने "वेसवुं" एवो अर्थ थाय छेः उपविश्व-तुं वेसः, उपविश्वत तमे वे वेसोः, उपविश्वत तमे वेसोः

#### इति धातुपाठ.



हवे ते धातुओना उदाहरणानोनो क्रम वतावे छे.

[ ४०९ ]

कोटं वेष्ट्यत-तमे कोट (किञ्चा) ने वींटो कोटं प्रविज्ञत तमे कोटमां प्रवेश करो. कोटमुपरियात-तमे कोटनी उपर जाओ. अम्बानुपर्यारोहत-तमे अम्बोपर चडो. अम्बान्यत-तमेअम्बोने चारो खबरावो अम्बान् जलं पाययत -तमे अम्बोने जलपाओ. अम्बपतयो महोनेववाटिकाभोजनं पाचयत जलं पिवत--हे घोडे स्वारा तमे भाला वडेज वाटीतुं भोजन रांथो अने जळ पीओ द्विजातय श्रणकान्नं चचयत, तथा जलं पिवत -हे ब्राह्मणो तमे चणा रुप अन्नने खाओ अ ने पाणी पीओ.

जलाऽभावे शीतली कुरुत--जलने अभावे शी-तल (थंडा) करो.

अश्वानारुह्य धावत--घोडापर चडीने तमेदोडो पदातयः समीकं परवाहिनीं यात--हे पत्ति-ओ, तमे शत्रुनी सेना समीप जाओ.

खङ्गैः कृन्तत भङ्कै विध्यत-खडगोवडे कापी, भाला वडे वींधो.

रंजकं दत्त शितं च इत-रंजक आपो अने ठं-डोने हणो.

कपाटे कुन्तै स्त्रोडयत- तमे भाळा वहे कपाडने तोडो.

विद्या आयान्ति निपतत--वादिका (गोळी) आवे छे. (माटे) पडी जाओ.

दुष्टान् क्रन्थत-दुष्टोने हणे।

डमरुं वाद्यत--डमरु वगाडो.

गीतं गायत-गीत गाओ.

वामपार्थे अयत-डावी वाजु जाओा.

दक्षिण पार्थे इत-जमणी वाजु जाओ.

सपदि व्रजत-जलदी जाओ, जलदी चालो.

शन त्रजत-धीमे धीमे जाओ.

अनुवजत- पाछळ जाओ.

अग्रे व्रजत -आगळ जाओ.

तूरणीं भवत--मुंगा रहो.

भीरं रत्यजत- वीकणने छोडी दो.

शूशन् विध्यत--शूरवीरोने वींघो. चर्मणा वटिकां रुन्ध—चर्मवडे वटिकाने रोको. रंजकंदत्त--रंजक आपो.

उपागच्छत--पासे आवो.

दूरंगच्छत--दूर जाओ.

शेध्वम्-सूइ जाओ.

जाग्रत--जागी.

वस्त्राणि परिधारयत--वस्त्रो पहेरो.

कटिंवध्नीत-केड वांधा.

शस्त्राणि धारयत -शस्त्रो धारण करा.

मधनार्थ गच्छत--युद्धने माटे जाओ.

पदातयोऽग्रे-पत्तिओ आगळ चालोः

अन्वपतयः पश्चात्-घोडेस्वारो पाछळ जाओ

गजारुढा स्तदनु--तेनी पाछळ हाथीना स्वारी

चालो.

रथिनोऽन्तिमस्था--छेह्या रथिको चालोः पदातयस्तिष्ठत समीके-पत्तिओ समीकमां रहो अश्ववाराः प्राच्यामित-घोडेस्वारा पूर्व दिशामां जाओः

गजपाः पश्चिमे चलत--हाथीना स्वारो पश्चिममां जाओ

#### धीवत प्रकारः

अश्वेषु पल्याणमारोपयत--धोढाओपर पर्याण नांखो.

मगइं प्रतिहत--चोकदुं खेंचो.

त्रंक्करोन हस्तिनं रुन्ध--अंकुशवडे हाथीने रुन्धो-रोको.

अम्बेश्वारोहयत--घोडाओपर आरुढ थाओ. इस्तिपका ध्वजान् गृहणीत--हाथीना रक्षको

ध्वजाओ ग्रहण करो.

अन्वपतयो युध्यत--घोडेस्वारो युद्ध करो।
अनन्दैभीरं वहत--खबरोवडे भार वहन करो।
उष्ट्रैभीरोद्दहनं विद्धत--उंटोवडे भार वहन करो।
उष्ट्रिभीरोद्दहनं विद्धत--उंटना रक्षको उंटोने लइ
जाओ।

अध्वपा मेहत--अध्वना रक्षको छांटो.

सार्थिनः शकटेषु वस्तूनि स्थापयत-सार्थीओ गाडामां वस्तुओ नांखो

वृषभान् योजयत-वळदो जोहो.

चळत-चालो.

दासाः कवंधान् दोलासु क्षिपत-चाकरो मडदांने डोळीयोमां नांखोः

व्रणसहितानियायळ थञेलाने पण डोळी-योमा नांखोः

सूर्यपृष्ठगाञ्चलत-सूर्यनी पाछळ चालो.

सूर्यदक्षिणगाश्रञ्ज-सूर्यनी जमगी वाजु चालोः

वायुपृष्ठगाश्रकत-वायुनी पाछळ चालो। वायुद्धिणगाश्रलत-वायुनी जमणी वाजु चालो चन्द्राभिमुखाश्रलत-चन्द्रनी सन्मुख चालो।

चन्द्रवामगाश्रलत-चंद्रनी डावी वाजु चालो.

#### अन्यश्च.

ऋ नदः संप्रयात आलीहम्, प्रत्यालीहम्, चलत, तिष्ठत, प्राङमुखाः, प्रत्यङमुखाः, अवाङमुखाः उतरास्याः-पूर्वे तरफ मुख राखीने, पश्चिन तरफ मुख राखीने, दक्षिण तरफ मुख राखीने, उत्तर तरफ मुख राखीने सीधा चालो, वांका चालो, सन्मुख डभा रहोः

आग्नेय्याम्, वायव्याम्, नेक्रित्चाम्, ऐझान्याम्— अग्निख्णामां, वायव्यमा, नैक्कत्यमां, इज्ञानमां एकस्य प्रत्यक् एको गच्छतु पूर्ववत्—एकनी सन्मुख एक जाओ, वाकी पूर्वनी जेम. कमलाकाराः—कमलने आकारे. व्यलीक कमलाकाराः—खोटा कमलने आकारे. धनुरारोपणम्—धनुष्य धारण करो. तोलनं लस्तकं गृहाण--तोलन अने लस्तकने ग्रहण करो. प्रहारम्—पहार करो. प्रहारम्—पहार करो. अवहारम्—खेंची लो. भृशुष्टी लक्ष्यम्—भृशुंडीनं लक्ष्य करो.

अस्त्राघातम्-शस्त्रनो घा करो. संहरास्त्रम्-शस्त्रानो संहार (करो ) तृपाभिमुखाःप्रणम्यगच्छतस्वस्व शिविरम्-रा-जानी सन्मुख प्रणाम करीने पोतपोताना निवासस्थानमां जाओः सन्ध्याकाळो जातो युद्धेताळम्-संध्यासमय थयो े छे, माटे युद्ध वंध करोः



#### अन्यः

धनुराकाराः--धनुपना आकारवाळा. उत्तिष्ठत-तमे उठो. निपतत-तमे पहो. मारयत-तमे मारों. भवत-तमे थाओ. क्रुकत-तमे करो, गच्छत-तमे जाओ. तिष्ठत-तमे उभा रहो. पश्यत-तमे जुओ. गहीत-तमे गृहण करो. व्रत-तमे वोलो. पिवत-तमे पीओ. जानीग-तमे जाणो. कुन्थत-तमे मारो. इत-तमे हणा. इत-तमे जाओ. चलत-तमे चालो. धावत-तमे दोडो शेध्वम्-तमे सृइ जाओ. पतत-तमे पड़ी. चेतत-तमे चेतो.

अयत-तमे जाओ. शृणुत-तमे सांभळो. दत्त-तमे आपो. पृच्छत-तमे पूछे।. भक्षयत-तमे खाओ. इच्छत-तमे इच्छो. आप्नुत-तमे मेळवो. त्यजत-तमे तजो. शिष्ट-तमे शासन करो. वित्त-तमे जाणाः स्त-तमे थाओ. दत्त-तमे आपो. रुन्ध-तमे रुंधो. अजत-तमे जाओ. व्रजत-तमे जाओः क्राम्यत-तमे चालो. दहत-तमे वाळो. मेहत--तमे छांटो. नयत-तमे लड़ जाओ. मारयत -तमे मारो क्रीडत- तमे क्रीडा करो. जयत--तमे जय पामोः
कृषत--तमे खेंचोः
मुञ्जत--तमे मूकोः
सिञ्जत--तमे छांटोः
कृन्तत--तमे कापोः
सिपथ--तमे फेंकोः
किरत--तमे विखेरोः
मिळत--तमे करवोः
छिखत--तमे करवोः
मन्यध्यम्--तमे मानोः
विध्यत--तमे वींधोः

रचयत—तमे रचोः
गणयत—तमे गणोः
तनुत—तमे विस्तारोः
भुङ्क—तमे भोगवोः
भिन्त—तमे भेदोः
यात—तमे जाओः
अत्त—तमे खाओः
जागृत—तमे जागोः
रोहत—तमे चडोः
उपविश्वत—तमे वेसोः

### इति सेनानी पाठः

#### अथावश्यकाव्ययानांपाठः

आइ-मयीदा, हद, जलडं.

मा-नहीं.
नो-नहीं.
आम्-ठीक.
वाडम्-वहु सारं.
अद्य-आज.
सायम्-सांजे.
मति-नरफ.
मः-आवती काले.
द्यः-गइ काले.
परमः-परम दिवसे

अन्येद्यः-कोइ दिवसः

अभ्येद्यः-वन्ने दिवसः

युवाम्-तमे वेः

अहम्-हुंः

वयम्-अमे

सः-तेः

ते-तेओः

सपदि-तत्काळः

उपरि-उपरः

अ-कोमळताना अर्थमांः
अनु-पाछळः

त्वम्-तुं. यूयम्-तमे. आवाम्-अमे वे. संज्ञा-नाम. तौ-ते वे.

अस्रम्-परिपूर्ण.
तूर्णम्-जन्नदी.
अधः-नीचे.
म-आगळ.
उप-पासे.

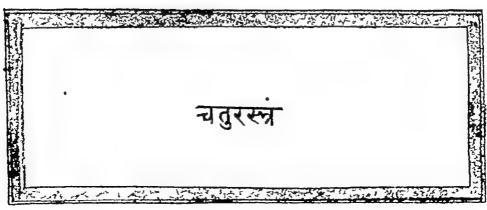
जे पदाति उंचाइमां एक सरखा होय, छांबा उंका न होय अने कूदवामां तथा दोडवामां समान होय तेओ कार्यसाधक बने छे, तेओन पश्चाद्गमन अने स्थिरीकरण अर्थात् पाछा ह- ठवातुं अने स्थिर रहेवातुं शीखाडवुं तेमज सूबुं, भागवुं अने शत्रुनी सेनामां चाछवुं विगेरे पार्श्व दिशामां कराववुं.

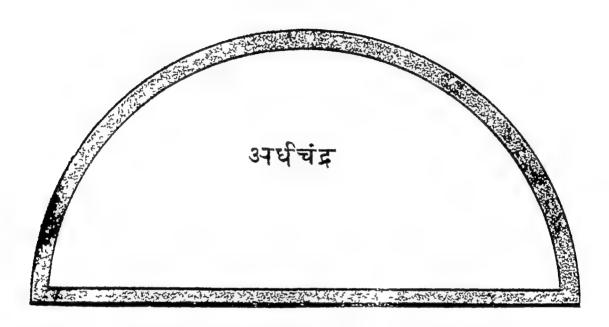
जेना छट्टा स्थानमां कृर (रिव—मंगळ) अने पाप (ज्ञानि—राहु—केतु) ब्रह प-ड्या होय ते वीर युद्धमां छेड, वाकीना कार्यसाधक नीवडता नथी। अथवातो प्रथम व. भ. ध. इ. छ अने क ए व्यंजन डावी तरफ छत्वी तेमां स्वर वर्ण मेळववो अने ते पथी यथाक्रमे व्यंजनो योजवाथी जे नाम थाय तेने युद्धमां स्थापित करवा। जे सेनानो युवा स्वर होय, ते प्रथम युद्ध शरु करे. जेमके विवस्तान, भरत, धन्युमार, हित्थ, छत्रपति अने कुक्षि एवा नामना योद्धाओ युवास्वरमां युद्धनो आरंभ करे तो जय मेळवे. सैनिकोनां वस्त्र पीळां तेमज ध्वजा पण पीळी राखवी अने एवीज रीते युद्ध यज्ञने म्होटी अने चतुरस्त चिक्काळी ध्वजा ड्यां उभी करवामां आवे, त्यां सैन्ये स्थिति करवी। जय, लाभ अने सुखनी इच्छावाळा राजाए खेत, रक्त, हरित्र, कृष्ण अने पीत वर्णवाळी पांच सेना सज्ज करवी जोइए. ब्रह्मा, विष्णु, महेज्ञ, चन्द्र अने सूर्य ए पांचे देवो पांच सेनाओना स्वामी छे. महादेवना वळथी ब्रह्मा, चन्द्रिना वळथी विष्णु, सूर्यना वळथी महादेव, ब्रह्माना वळथी चन्द्र अने विष्णुतुं वळ पामी सूर्य नारायण विजय मेळवे छे. युद्ध-शास्त्रमां चतुर राजाओए हमेज्ञां अ ने ब्रह्मा, इ ने विष्णु, उ ने इंकर, ए ने चंद्र तथा ओ ने सूर्य समजी छेता. पूर्वोक्त सेना जो पोतपोतानुं वळ मेळवी युद्धमां जाय तो अर्ध क्षणमांज अतुओनो संहार करी शके छे.

मंडळ, चतुरस्न, गोमूत्र, अर्धचन्द्र अने नागपाश्च ए अश्वक्रमनी पांच गतिओ छे.

आ पांच गतिओवी जे अश्वने फेरवे ( कवायद करावे ) तेनो अश्व क्यांइ पण अटकतो नथीः

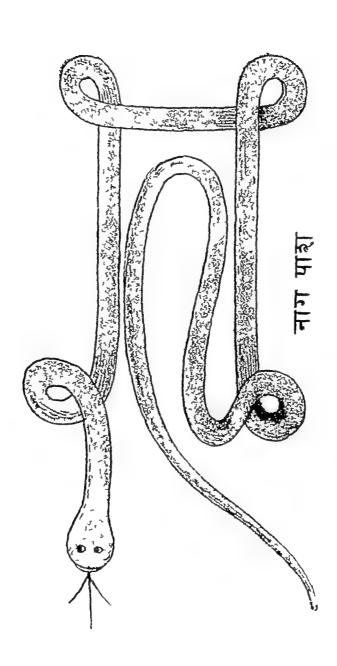


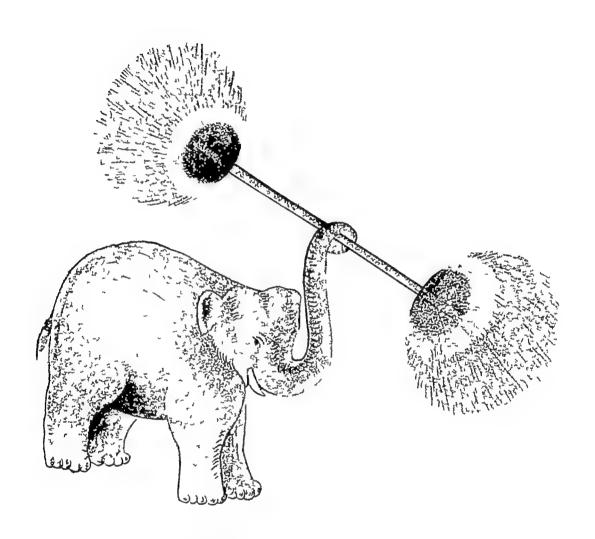




### गोमुत्राकार







अलात चक्र रुपम्

हाथीओने पहाडो पर चढाववा, जळमां फेरववा, दोडाववा, उठाडवा, तथा वेसाडवा तेमज अळात्चक्र आदिथी निर्भय वनतां शीखवर्तुः

रथना अश्वोने सम आदि स्थळमां साधवा अर्थात् गतिनो अभ्यास कराववो.

जे सर्व सैन्यने समदृष्टियी जोनार, पदाित आदिने तेओना परिश्रम ममाणे अधिकार आपनार, न्यूह रचनामां अति चतुर तेमज आकार, विद्या अने वळथी युक्त क्षत्रिय होय तेने से-नापित बनाववो जोइए.

मथम तो क्षात्रकोश व्याकरण सूत्रनो अभ्यास करवो अने त्यारपछी मनुस्मृतिना सातमे। तथा आठमे। ए वे अध्याय, व्यवहाराध्याय, पिताक्षरा, धर्मशास्त्र, ज्याणव, विष्णुयामळ, विजया- ख्यतंत्र अने स्वरशास्त्र भणी सरहस्य धनुर्वेदना अभ्यासनो आरंभ करवो जोइए.

धर्मात्मा पुरुषे सृतेलाने, गाडनिद्रामां पडेलाने, नशाथी उन्मत्त थएलाने, कच्छ रहितेन, जेनी पासे शस्त्र न होय तेने, वाळकने अर्थात् वार वर्षथी न्हानी अवस्थावाळाने, स्त्रीने, दीन वचन वोल्लनारने तेमज रणभूमि छोडी भागेलाने कदिएण मारवा नहि. धर्मने अर्थे जे प्राणनो पिरित्याग करे छे, तेने तीर्थ के व्रत करवानी कांइ जरुर नथी, ते तो स्वर्गनो अधिकारी थाय छे तेमज जे वीर पुरुष ब्राह्मण, गाय, स्त्री अने वाळकने अर्थे प्राण अर्थे छे ते पण मोक्ष पामे छे.

आ रीते राज्यनी उन्नितना मूळरुष यथास्थित धनुवेंद्रनुं श्रवण करी आश्चर्य चिकत थएका करणवाघेळाए राजहरपाळदेवजीने पोताना दरवारमां रहेवा गोठवण करावी आपी अने पोताना भायात वर्गना तेमज अन्य क्षत्रिय वाळकोना गुरु वनी तेओने धनुवेंद्दनो अभ्यास कराः ववा विनित करी त्यारे हरपाळदेवजीए कशुं के बाह्मण सिवाय गुरुपद धारण करवाने कोई योग्य नधी, तो पण आपनी ईच्छा छे तो ते वाळकोने मारा मित्र तरीके शस्त्रविद्या शीखडावीक्षः अस्त्रविद्यानो अभ्यास अति कठिन छे अने आ किलकाळमां तेनो मचार करवा मारा गुरुए मेन ना कहेळी छे जेथी ए शिवायनी युद्धकळा विगेरेनो अभ्यास हुं सारी रीते करावीज्ञः रात्री वधारे व्यतीत धवायी महाराजा करण भोजनअर्थे राजभुवनमां पधार्या; अने हरपाळदेवजी पण रजा कई पोताना उतारा तरफ विदाय थयाः





## षोडशतरंग,

" मनहर **"** 

पाटणना भूपपासे मेळवी प्रतिष्ठा पूर्ण, प्रवल प्रभावतणी स्पष्ट छाप छापीने; राखी कुळलाज रूडी, राज हरपालदेवे, बांध्यो बाबराने कष्ट करणनां कापीने शिक्तने वरीने करी स्वाधीन वसुंधराने अभयनां दान केंक आश्रितने आपीने पूर्वज पराक्रमी ए आपना अमर नृप ! वहालें पाटडीमां वश्या श्रेष्ठ राज्य स्थापीने.

अणहिलपुरना महाराजा करण वायेलाए उत्तम प्रकारना मासिकथी राज हरपाळदे-वजीने जे कार्यपर नियत कर्या ते कार्य तेओए अति उत्साह पूर्वक वजाववा मांडयुं, क्षत्रियना वा-ळकोने ब्राह्य मुहूर्तमां स्नान, सन्ध्या आदि नित्य कर्म करावी हमेशां पुरथी जरा दूरना प्रदेशमां लड़ जता अने त्यां क्रमपूर्वक अचल, चल, चलाचल अने द्वयचल, ए चारे प्रकारनां लक्ष्य केम पाडवां ते प्रथम जाते करी वतावी प्रशिधी वालकोने हाथे लक्ष्य वेध करावता; धनुपने शी रीते धारण करवुं, वाणने केवी रीते फेंकवा तथा प्रत्यंचाने केम खेंचवी विगेरे वावतो शीखववामां ध-णो श्रम लेवा लाग्या; ज्यारे क्षत्रीपुत्रो चारे लक्ष्यवेधमां चतुर थया त्यारे राज हरपालदेवजीए तेओने शह्यवेध शीखववानो समारंभ कर्यो. स्वल्प समयमां ए विकट प्रयोग पण क्षत्रिओना वाल-कोए सिद्ध कर्यो. एक दिवसे आनंदमां वेठेला महाराजा करणे राज हरपालदेवजीने पृल्युं के- तमारा शिष्यो धनुर्विद्यामां केटलेक सुधी पहोंच्या ? त्यारे हरपाळदेवजीए कहां के शब्दवेध सुधीनी सिद्धिः सर्वने प्राप्त थर्ड चुकी छै. हवे गो मात्र युद्धमां विजयी थवा माटे न्यूहरचना विगेरे शीखववातुं अवशेष रह्यं छे, आ सांभळी करण अत्यंत खुशी थयो अ-ने तेणे शब्देवधना प्रयोग जीवानी उत्स्रक्ता वतावी, समय मुकरर करवामां आव्यो, सांकेतिक स्थानपर जइ राज हरपालेदेवजीना शिष्योए करेळ शब्देवध जोई पूर्ण प्रसन्न थएला महाराजा करणनी प्रीति हरपालदेवजी उपर दिन प्रतिदिन वधवा लागी, तेओनो दरज्जो वधारवामां आव्यो; आयी जुना अधिकारीओ इपोरुपी अग्निषी सळगी उठ्या, ताजेतर आवेली विदेशी रजपूत म-हाराजानी साथे हरे फरे अने महाराजा तेनी सळाह छइ सर्व काम करे ए कोईथी सहन थयुं नहि. जेथी तमाम मंडळे एकत्र थइ अमीर उमरावीन पण उइकेयी, तेओ महाराजा करण पासे जइ कहेवा छाग्या के एक अजाण्या माणस उपर आप आटलो वधो विश्वास राखो छो ए परिणा-में दुःखदायक निवडहो. जुना अने अनुभवी अधिकारीओं जेवुं आपतुं हित इच्छशे एवं अजा-ण्यो पुरुष कदि पण नही इच्छे. अमीरोना आवां वचनो सांभळी महाराजा करणने घणोज कंटा-ळो उपज्यो, राज हरपालदेवजी जेवा वाहोश सरदारने दूर करवा ए तेओने कोई रीते उचित जणायुं निह. महाराजाने मौन रहेला जोई अमीरोए वातने आगळ चलावी के अन्नदाता ! आप भले एना वळ उपर मोहित थया, परंतु आम जंगलीपणे हमेशां नवी नवी जाजमनें भालो भोंकी चीरे ए केटला वखत सुधी जोयुं जाय. अपिमां भालुं खोडवुं एथी कांइ वळनी परीक्षा थती नथी जो आपनी इच्छा होय तो आजे कचेरी वखते जे जगोए ए विदेशी रजपूत हमेशां भाछुं खोडे छे ते स्थळे जाजम नीचे लोढाना केटलाक पतरां रखावीए, पछी एना वळनी परीक्षा यहो, जो भाछं तवाने नही चींने तो ए शरमनो मार्थी वगर कहो विदाय थइ जर्शे. अमीरोना आवा विचा-रोधी महाराजा करणतुं मन अत्यंत खिन्न थयुं, तोपण हरपालदेवजीना वळनी विशेष परीक्षा करवा माटे ते वात तेणे कबुल करी के तुरतज अमीरोए पोतानी योजना पार पाडी, वीजे दिवसे राज हरपालदेवजी कचेरीमां पथार्था अने नित्यना नियम मुजव भालाने जमीनमां भोंकयुं, परंतु नीचे लोहानी पाट होवाधी अवाजनी साथे भाछुं उंचे आव्युं के तुरतज पगनां अंगुष्ठ तथा तर्ज-नीनी भींस मारी लोएने भेदी नांख्युं अने भालुं एक हाथ पृथ्वीमां पेसी गयुं. राज हरपालदेव-जीतुं आवुं वेहद वळ जोई अमीर उमरावो तेमज खटपटमां सामेल थनार राजकीय पुरुपोना मु-ख ज्याम थइ गयां. महाराजा करणनुं हृदय जो के हर्पथी छत्राई गयुं, तोपण सृतेला सिंहने छछे-



## षोडशतरंग.

" मनहर "

पाटणना भूपपासे मेळवी प्रतिष्ठा पूर्ण, प्रवल प्रभावतणी स्पष्ट छाप छापीने; राखी कुळलाज रूडी, राज हरपालदेवे, वांध्यो बाबराने कष्ट करणनां कापीने शिक्तने वरीने करी स्वाधीन वसुंधराने अभयनां दान केंक आश्रितने आपींने पूर्वज पराक्रमी ए आपना अमर नृप ! वहालें पाटडीमां वश्या श्रेष्ठ राज्य स्थापीने.

अणिहलपुरना महाराजा करण वाघेलाए उत्तम प्रकारना मासिकथी राज हरपाळदे-वजीने जे कार्यपर नियत कर्या ते कार्य तेओए अति उत्साह पूर्वक वजाववा मांडयुं, क्षित्रियना वा-ळकोंने ब्राह्म मुहूर्तमां स्नान, सन्ध्या आदि नित्य कर्म करावी हमेशां पुरथी जरा दूरना प्रदेशमां लड़ जता अने त्यां क्रमपूर्वक अचल, चल, चलाचल अने द्वयचल, ए चारे प्रकारनां लक्ष्य केम पाडवां ते प्रथम जाते करी वतावी पछीथी वालकोंने हाथे लक्ष्य वेध करावता; धतुपने शी रीते धारण करवुं, वाणने केवी रीते फेंकवा तथा प्रत्यंचाने केम खेंचवी विगेरे वावतो शीखववामां ध-णो श्रम लेवा लाग्या; ज्यारे क्षत्रीपुत्रो चारे लक्ष्यवेधमां चतुर थया त्यारे राज हरपालदेवजीए तेओने शद्धवेध शीखववानो समारंभ कर्यो. स्वल्प समयमां ए विकट प्रयोग पण क्षत्रिओना वाल-कोए सिद्ध कर्यों. एक दिवसे आनंदमां वेटेला महाराजा करणे राज हरपालदेवजीने पूल्युं के— -PR--

तमारा शिष्यो धनुर्विद्यामां केटलेक सुधी पहोंच्या <sup>१</sup> त्यारे हरपालदेवजीए कहुं के शब्दवेध सुधीनी सिद्धिः सर्वने प्राप्त थर्ड चुकी छै. हवे गो मात्र युद्धमां विजयी थवा माटे च्यूहरचना विगेरे शीखववानुं अवशेष रह्यं छे, आ सांभळी करण अत्यंत खुशी थयो अ-ने तेणे शब्देवधना प्रयोग जीवानी उत्मुक्ता वतावी, समय मुकरर करवामां आव्यो, सांकेतिक स्थानपर जइ राज हरपालेंद्रवजीना शिष्योए करेल शब्देवध जोई पूर्ण प्रसन्न थएला महाराजा करणनी शीति हरपालदेवजी उपर दिन मतिदिन वधवा लागी, तेओनो दरज्जो वधारवामां आव्योः आयी जुना अधिकारीओ इपोरुपी अग्निष्टी सळगी उठ्या, तानेतर अविले विदेशी रजपूत म-हाराजानी साथे हरे फोर अने महाराजा तेनी सळाइ लड़ सर्व काम करे ए कोईथी सहन थयं नहि, जेथी तमाम मंडळे एकत्र यह अमीर उमराबोन पण उनकेयी, तेओं। महाराजा करण पासे जड़ कहेबा लाग्या के एक अजाण्या माणस उपर आप आदलो वयो विश्वास राखो छो ए परिणा-में दुःखदायक निवडशे. जुना अने अनुभवी अविकारीओं जेवुं आपतुं हित इच्छशे एवं अजा-ण्यो पुरुष कदि पण नही इच्छे. अपीरोना आवां वचनो सांभळी महाराजा करणने घणोज कंटा-को उपज्यो, राज हरपालदेवजी जेवा वाहोश सरदारने दूर करवा ए तेओने कोई रीते उचित जणायुं निह. महाराजाने मौन रहेला जोई अमीगेए वातने आगळ चलावी के अनदाता! आप भस्रे एना वळ उपर मोहित घया, परंतु आम जंगलीपणे हमेशां नवी नवी जाजमनें भालो भोंकी चीरे ए केटला वखत सुधी जोयुं जाय. अूमिमां भालुं खोडवुं एथी कांइ वळनी परीक्षा थती नथी जो आपनी इच्छा होय तो आजे कचेरी वखते जे जगोए ए विदेशी रजपूत हमेशां भाछुं खोडे छे ते स्थळे जाजम नीचे छोढाना केटलाक पतरां रखावीए, पछी एना वळनी परीक्षा थरो, जो भालुं तवाने नहीं वींये तो ए शरमनो मार्थी वगर कही विदाय थड़ जर्शे. अमीरोना आवा विचा-रोथी महाराजा करणतुं मन अत्यंत खिन्न थयुं, तोपण हरपाल्रदेवजीना वळनी विशेष परीक्षा करवा माटे ते वात तेणे कबुल करी के तुरतज अमीरोए पोतानी योजना पार पाडी, वीजे दिवसे राज हरपालदेवजी कचेरीमां पथार्था अने नित्यना नियम मुजव भालाने जमीनमां भोंकयुं, परंतु नीचे लोढानी पाट होवाधी अवाजनी साथे भाछुं उंचे आव्युं के तुरतज पगनां अंगुष्ट तथा तर्ज-नीनी भींस मारी छोष्टने भेदी नांख्युं अने भालुं एक हाथ पृथ्वीमां पेसी गयुं, राज हरपाछदेव-जीतुं आवुं वेहद वळ जोई अमीर जमरावो तेमज खटपटमां सामेळ थनार राजकीय पुरुपोना मु-ख क्याम थइ गयां. महाराजा करणतुं हृदय जो के हर्पथी छवाई गयुं, तोपण सृतेला सिंहने छंछे-

105

डवा रुपी साहसथी तेना मुखरूपी सूर्यपर भयरूपी राहुनी छाया पढी, केटछाएक दरवारीओ राज हरपालदेवजीनां रक्त नेत्र जोई थरथर ध्रुजवा लाग्या, केटलाएकनां हाजां गगडी गयां अने केटलाएक उमरावोने तो एमज थइ गयुं के जे पुरुषे पगनां अंगुष्ट मात्रथी आबुं असीम वळ प्रद-र्शित कर्यु तेना वाहुमां केटलुं वळ होवुं जोईए ? खरेखर आ कोई दैवी पुरुष छे, मनुष्य नथी. तेवामां राज हरपाळदेवजी श्रकुटी चढावी वाहु टोकी वोल्याके—महाराजा ! रजपूतोना पारखां आम न लेवाय, जड वस्तुनो वेध करवामां जोर वताववुं ए व्यर्ध छे, परंतु ज्यारे दुइमनोनुं दळ आपादना अभ्ननी माफक चोमेरथी चढी आवे त्यारेज वाहुवळनी खरी परीक्षा थाय; तमारा जेवा वेकदर राजा पासे रही मोज शोख उडाडवा करतां गरीवीमां दिवसो गुजारवा एज उत्तम छे, आटलुं कही राज हरपालदेवजी जमीनमांथी भालांने खेंची एकदम छभा धया, जेथी आखी जाजम पण तनी साथे तणाइ, गादी तकीयापर वेटेला अमीर जमरावोना पग जंचा अने शिर नीचे थेंड गयां तेमज जे लोको उभा हता तेओ पृथ्वीपर पछडाया, आ हास्यजनक बनाव जोई महाराजा करणना अन्तः करणमां हर्षे अने खेद वन्ने एकी साथे उप्तन थयां. राज हरपालदेवजी जवा तत्पर थया के तुरतज महाराजा करण सिंहासन उपरथी उतरी तेओने घणी आजीजी साधे जतां अटकावी मधुर वचनोधी शान्त्वन करता अंदरना ओरडामां छइ गया. अने अमीर उमरावो विगेरे दरवारी जनानुं मंडल पोते करेला साहस सर्वधी पश्चाताप करतुं सह सहने स्थाने विदाय थयुं. जरा स्वस्थ थया पछी महाराजा करणे हरपाल देवजीने कहुं के —हुं तो तमारा वळथी प-रिपूर्ण वाकेफ हता, परंतु अन्यजनों एथी अज्ञात होवाने लीधे तथा तमारा उपर दिन प्रतिदिन मारी मीति वधती जवाने लीधे दरेक दरवारीओना दिलमां इपी उत्पन्न थरु, ए इपीने निर्मूळ करवा माटे तथा तमारा पराक्रम विशे सर्वने जे कांइ संदेह हतो ते दूर करवा माटे माराथी आ साहस थइ गयुं छे, तो क्षमा करशो; इवे तमारी खरी इकीकतयी अज्ञात रहेवा हुं इच्छतो नथी, तमारा मात पिताना पितत्र नाम सांभळता मारा श्रवण आतुर थइ रहा छे, तमारुं कुळ पण उत्तम होवुं जोईए. कहो, कहे। वीरनर ! सत्वर कहो। हरपालदेवजीए विचार्युं के हवे सत्य वातने छपाववाथी कशो लाभ नथी, तेओ तुरतज कहेवा लाग्या के महाराजा! हुं कीर्तिगढना राजा केसरदेवजीनो पाटवी पुत्र छुं, मारुं नाम हरपाल्देव छे, अमारी " मखवान " अवटंक मशहूर छ, आप मार्ग मासीआइ माई थाओ छो. आटछुं सांभळतांज करण अधीर वनी वोली उठ्यो के:-हा, हा, मारा मातुश्रीए मने वह्युं इतुं के तमारां एक मासी सिंधमां कीर्तिगढ नामनुं शहेर छे त्यांना महाराजा

केसरदेवजी वेर वरावेळां छे, ए वात मने वरावर याद छे. मारा व्हाला वन्यु ! आटला वखत सुवी तमोए मने शा कारणयी जाहेर न कर्यु ? आवो, आवो, आपणे पेंमणी भेटीए. राज हर-पालदेवजी तथा करण वाघेलो उभा थड परस्पर भावणी भेट्या, आ वखते वन्नेनां नयनोमां मे-माश्च भराइ आव्यां. निकटनो संवं र होवा छतां दूर देशना निवासने लीधे आटला दिवस एक वीजा अपरिचित हता; एकतो हरपाझदेवजी जाते अत्यंत वहादूर अने वळी पे।ताना संबंधी नि-कळ्या जेथी महाराजा करणने अवर्णनीय आनंद थयो, तेणे राज हरपाळदेवजीने आपे मने प्रथमथीज ओळखाण आपी होत तो हुं आपने केहिंपण कार्यमा नहि योजता मुकुटना मणि माफक राखत; पण रेवर, जे काळे जे वनवातुं होय ते वने छे, कीतिगढमा सर्व कुशळतो छे नां ? हरपालदेवजीए व्यथित हृदयथी जवाव आप्यो के-जो कीर्तिगढमां कुगळता होयतो हुं आटले दूर ज्ञा माटे आवं ? आथी करणने वधारे संदेह उत्पन्न थयो. तेणे पूछपुं के—्रां त्यारे कोई शत्रुओ तरफयी भय उपज्यो छे ? अने आप अमारी मदद लेवा अत्रे पधार्या छो ? हरपाल-देवजी वोल्याके—कोईनी मदद मेळवी विजयनी अभिलापा राखवी ए रिवाज अमारा मखवान कुळमां प्रथमथी ज नथी. मारा निताश्रीनी इच्छा थई के रणभूमिमां प्राण तथाग करवो, जेथी सिं-धना राजा हमीर सुमरा साथे युद्धनी मागणी करी, भयंकर युद्ध थयुं. अने तेमां मारा पिताश्री तथा वन्युओ तिगेरे आखा कुटुम्बनो अन्त थयो, शत्रुओनो संहार थवामां पण कांइ कचाश न रही; तोपण तेना सन्यनी संख्या अधिक होवाथी जय मळवो अशक्य जाणी हुं आ तरफ चा-च्यो आन्यो. आवा रेवदजनक समाचार सांभळी करणतुं अन्तःकरण अति न्याकुळ वनी गयुं. तेणे फरी हरपाळदेवजीने कहुं के मारो अपराध क्षमा करजो हुं आपनी योग्यता प्रमाणे कांड़ सन्मान करी शक्यो नथी त्यारे हरपालेदवनीए जवाव आप्यो के-सर्वधर्थी प्राप्त थता सन्मा-नने हुं श्रष्ट नधी गणतो, एटला माटेज गुणथी आपना मनने प्रसन्न करी आ स्थितिए पहोंच्यो छुं. संबंधधी तो सर्वकोई सन्मान मेळवे छ पण गुणधी सन्मान मेळवर्वुं एमांन मनुष्यनी महत्ता छे; केटलोएक वलत विविध वार्तालाप करी महाराजा करणे थाळी मंगावी अने राज हरपाल-देवजीनी साथे एक पात्रमां भोजन कर्युं, तेमज ते दिवसथी तेओने माटे पोताना सहोद्रने घटे तेवा सन्माननी योजना करावी। हाथी, घोडा, गाडीओ तथा केटलाएक परिजनो राज हरपालदे-वजीनी सेवामां सुभीत कर्या; तेओने हमेशां पोतानी साथे गाडीमां वेसाडी फरवा लड़ जवानो नि-

यम राख्यो तथा कायमने माटे जमवातुं पण पोतानी साथेज राख्युं; जेथी राज हरपालंदेवजी अमलचेनमां दिवसो गुजारवा लाग्या.

वर्षीकाळ व्यतीत थतां शरद्ऋतुए पृथ्तीमां शीतलता प्रसरावी, आकाश स्वन्छ थयुं, चन्द्रनी ज्योति वधवा छागी, नदीओना तरंगोए निर्मळता धारण करी, अगस्त्यनो उदय थयो, वारिना भवाहो मन्द मन्द वहेवा लाग्या, ज्यां त्यां पथिक लोको प्रयाणनी तैयारी करवा लाग्या, सखीओनी साथे हास्चिविनोदमां दिवसने सरलताची वितावनारी प्रोपित रात्रिना चार याम चार जुग जेवा जणावा छाग्या, देवदीवाळीना दिवसो छ-आवी पहोंचवाथी सर्व मनुष्यो दीपमालिकाथी देव मन्दिरोने देवीप्त ळाग्या, दंपति चूत खेळी हृदयमां हरखावा ळाग्यां, वेज्याना चन्द रसिक जनोने रिझाववा माटे शरीरने शुंगारी मंन्द हास्य पूर्वक अनुरागने वरसाववा छाग्या; वाट, घाट, गृह अने अटारीओ पर रसीली रोशनी छवाइ रही, पति विनानी प्रमदाओ द्विजराजने पापी कही दिवाळीनी रात्रीने अराति समान गणवा लागी, शीत काळमां पतिनुं परदेशगमन सांभळी केटलीएक स्त्रीओ रुदन करवा लागी, अने कोइपण रीते पति घेर रोकाय एटला माटे देवताओ दुं पूजन करी तेओनी स्तुति करवा लागी, वीजो एके खपाय न सूजतां सज्ज थड वीन वजाववा लागी अने मधुर स्वरे मेघ मलारनो आलाप करी गावा लागी; चोतरफ कांस प्रफुह्वित थयां, कादवनी कचांइ पण नि-शानी न रही, कमलना दल उपर में ब्रिकरो गुंजवा लाग्या, वर्षाऋतुमां वहाभना वियोगथी जेनां श्रीर पीळां हळदर जेवां थइ गयां हतां ते स्त्रीओ शरद्नी चांदनी जोइ वधारे व्यथा पामवा लागी. चन्द्ररुपी मुखथी चन्द्रिका रुपी मन्द हास्य करी सर्व स्थळने उज्बळ बनावतो, कुन्दनी कळीओ रुपी निर्मळ दंत्त पंक्तिने धारण करतो, खंजन रुपी मनरंजन नयनवाळो, कमनीय कंज रुपी करने डोलावतो, पर्पदना गुंजनरुप मधुर शब्दवालो अने इंस गतिथी गमन करनार नन्द-लालनी शोभा धरी आवेलो शरद काल विरहिणी दाराओना दरदने वधारवा लाग्यो. अंगो-अंगमां तारागण रुपी आभूपणने धारण करनारी, चन्द्रना मयूखरुपी वसनथी विभूपित थएकी, कुमुद्रुपा दुन्तनी चपकथी चित्तने चे।रनारी चन्द्रुरुपा मुखवाळी अने मालतीना सुगन्यरुपी अतरथी तरवतर वनेली शरदनी रात्रि विरहिणी स्त्रीओने सपतनीनी माफक सालवा लागी। गगन रुपी मार्गमां गमन करनारा, मौन द्यत धरी अहींथी तहीं फरनारा, श्यामतारुपी तमोगुणने तजी श्वेतपणारुपी सत्व गुणने धरनारा, द्विजने जीवन देनारा अने विद्युत् रुपी स्त्रीना संगयी

PSIC

अलग थएला शरद्ना अंबुढो जाणे यतिने वेपे देश देशमां दरदी दाराओने योगना उपदेश आ-पता होय एम जणावा लाग्युं. चन्द्रना मकाशमां, चन्द्रमुखीना हास्यमां, आकाशमां, कासमां, सरमां, सरिताओंगा, पहाडोगां, वनना प्रदेशोगां, चंचरीकना समूहमां, कदंवनी डाळीओमा, माल-तीना कयाराओमां, फूलेली फूलवाडीओमां, खूबीदार खेतीओमा अने नदीओनी रेतीओमां रमणीय शरदऋतु समाइ रही, चन्द्रथी रात्रि, काश तृणोथी पृथ्ती, हंसोथी नदीओनां नीर, क्मळना समृहथी सर, सातवणना पुष्पेथी वन प्रदेश अने मनाहर मालतीना प्रफुल्लितपणाथी वागवगीचाओं धवल वनी गया; क्यांड शंखसमान श्वेतपणाने धारण करनारा अने क्यांइ मृणाल माफक गौर वनो मंद मद विचरण करता पाणी वगरना पयोद आकाशरुपी राजा आगळ अनु-चरनी पेठे अनुसर्वा लाग्या; जळनो उन्माद दूर थयो, पण विरहिणी स्त्रीओनो उन्माद अलग थयो नहिः आकाशमां चन्द्र निर्मळ थयो, पण विरहीणी स्त्रीनो मुखचन्द्र विपळ थयो नहिः चातके "पियुपियु" उन्चारने परहर्या, परंतु पोषित पतिकाओए ते उच्चारने तज्यो निहः आ-काशमां मेघ निरुत्त थया, पण विरहीणी वामाओनां नयनोनी जलवाराओ निरुत्त न थइ. घुंटेला अंजन समान सुज्ञोभित आकाञ्च, वन्युक्तना पुष्पोधी छवाएला पृथ्वीना प्रदेशो अने परिपक्व धान्यथी प्रसन्तताने पदिशत करतां क्षेत्रो कामनुं उदीपन करवामा कांइ न्यून वळवाळां न हता, मंद प्रभंजनथी डोलती डाळीओ, पुष्पना भारधी प्रकंपित धतां पुष्पो अने मधुपानथी मस्त व-नेला मधुकरो विरहव्यधित युवतीओना उरमां क्वेश उपनाववा लाग्या काकचंचुथी खंडित थए-ला तरंगवाली, हारवंध वेठेला हंसोथी प्रकाशमान पुलिनवाली अने चातरफ फेलाता पद्मना परागपुंजथी सौरभ युक्त वनेली सरिताओं सर्व कोइतुं मन हरवा लागी. कणना भारथी नमन शील सांटाओंने कंपावता सुमनना गुच्छ समेत शाखाओंने झुकावतो अने प्रफुल्लित धएला पद्मना पुंजने नचावतो शरद्नो समीर विरहिणी स्त्रीओने विह्वळ वनाववा वेगथी गति करवा छाग्यो. सुधाकरना स्वच्छ किरणाथी जगत् वधाने श्वेत वनावती, कुमुदिनीना वृन्देने विकसावती, चाहक चकेारना हृदयमां हर्ष उपजावती तथा विरहो जनोना धैर्यने तजावती ग्ररद्नी रात्रि संयोगीओने अवर्णनीय आनंद आपवा लागी. मरालदंपितनी रितक्रीडाथी रमणीय जणातां विकाश पामेला वारिजद्यन्दथी विराजमान अने प्रभातना पवनथी तरल वनेल तरंगोने धारण करनारां तळावे। विरहिणी तारुणीओना तनमां त्रास उपजाववा लाग्यां. इन्द्रधतु अदृज्य थयुं, चपळानो चळकाट

यम राख्यो तथा कायमने माटे जमवानुं पण पोतानी साथेज राख्युं; जेथी राज हरपाछेदवजी अमलचेनमां दिवसो गुजारवा लाग्या.

वर्षीकाळ व्यतीत थतां शरद्ऋतुए पृथ्वीमां शीतलता मसरावी, आकाश स्वच्छ थयुं, चन्द्रनी ज्योति वधवा छागी, नदीओना तरंगोए निर्मळता धारण करी, अगस्त्यनो उदय वारिना प्रवाहो मन्द मन्द वहेवा लाग्या, ज्यां त्यां पथिक लोको प्रयाणनी तैयारी करवा लाग्या, सखीओनी साथे हास्चिवनोदमां दिवसने सरलताची वितावनारी प्रोपित रात्रिना जुग जेवा जणावा छाग्या, देवदीवाळीना चार याम चार आवी पहोंचवाथी सर्व मनुष्यो दीपमालिकाथी देव मन्दिरोने देवीप्त ळाग्या, दंपति चूत खेळी हृदयमां हरखावा ळाग्यां, वेज्याना वृन्द रसिक जनोने रिझाववा माटे शरीरने श्रंगारी मंन्द हास्य पूर्वक अनुरागने वरसावत्रा छाग्या; वाट, घाट, ग्रह अने अटारीओ पर रसीली रोशनी छवाइ रही, पति विनानी प्रमदाओं द्विजराजने पापी कही दिवाळीनी रात्रीने अराति समान गणवा लागी, शीत काळमां पतिनुं परदेशगमन सांभळी केटलीएक स्त्रीओ रुदन करवा लागी, अने कोइपण रीते पति घेर रोकाय एटला माटे देवताओ तुं पूजन करी तेओ नी स्तुति करवा लागी, वीजो एके उपाय न सूजतां सज्ज थड वीन वजाववा लागी अने मधुर स्वरे मेघ मलारनो आळाप करी गावा लागी; चोतरफ कांस प्रफुह्वित थयां, कादवनी कचांइ पण नि-शानी न रही, कमलना दल उपर मॅंब्रिकरो गुंजवा लाग्या, वर्षाऋतुमां वह्यभना वियोगथी जेनां श्रारीर पीळां हळदर जेवां थइ गयां हतां ते स्त्रीओ शरद्नी चांदनी जोइ वधारे व्यथा पामवा लागी. चन्द्ररुपी मुखथी चन्द्रिका रुपी मन्द हास्य करी सर्व स्थळने उज्बळ वनावतो, कुन्द्नी कळीओ रुपी निर्मळ दंच पंक्तिने धारण करतो, खंजन रुपी मनरंजन नयनवाळो, कमनीय कंज रुपी करने डोलावतो, पट्पदना गुंजनरुप मधुर शब्दवाळो अने इंस गतिथी गमन करनार नन्द-लालनी शोभा धरी आवेलो शरद काल विरहिणी दाराओना दरदने वधारवा लाग्यो. अंगो-अंगमां तारागण रुपी आभूपणने धारण करनारी, चन्द्रना मयूखरुपी वसनथी विभूपित थएळी, कुमुद्रुपा दन्तनी चनकथी चित्तने चेरिनारी चन्द्रुरुपा मुखवाळी अने मालतीना सुगन्धरुपी अतर्थी तरवतर वनेली शरदनी रात्रि विरहिणी स्त्रीओने सपत्नीनी माफक सालवा लागी। गगन रुपी मार्गमां गमन करनारा, मौन दृत धरी अहींथी तहीं फरनारा, व्यामतारुपी तमोगुणने तजी श्वेतपणारुपी सत्व गुणने धरनारा, द्विजने जीवन देनारा अने विद्युत् रुपी स्त्रीना संगथी

अलग थएला शरद्ना अंबुढो जाणे यतिने वेषे देश देशमां दरदी दाराओने योगना उपदेश आ-पता होय एम जणावा लाग्युं. चन्द्रना प्रकाशमां, चन्द्रमुखीना हास्यमां, आकाशमां, कासमां, सरमां, सरिताओंगा, पहाडोगां, वनना पढेशोगां, चंचरीकना समूहमां, कदंवनी डाळोओामा, माल-तीना कयाराओमां, फूलेली फूलवाडीओमां, खूबीदार खेतीओमा अने नदीओनी रेतीओमां रमणीय शरद्ऋतु समाइ रही, चन्द्रथी रात्रि, काश तृणोथी पृथ्त्री, हंसोथी नदीओनां नीर, क्मळना समृहथी सर, सातवणना पुष्पेथी वन प्रदेश अने मनाहर मालतीना प्रफुल्लितपणाथी वागवगीचाओं धवल वनी गया; क्यांइ शंखसमान वितपणाने धारण करनारा अने क्यांइ मृणाल माफक गौर वनी मंद मंद विचरण करता पाणी वगरना पयोद आकाशरुपी राजा आगळ अतु-चरनी पेटे अनुसर्वा लाग्याः जळनो उन्माद दूर थयो, पण विरहिणी स्तीओनो उन्माद अलग थयो नहिः आकाशमा चन्द्र निर्मळ थयो, पण विरहीणी स्त्रीनो मुखचन्द्र विमळ थयो नहिः चातके "वियुवियु" उन्चारने परहर्यो, परंतु प्रोवित पतिकाओए ते उच्चारने तज्यो निहः आ-काशमां मेघ निरुत्त थया, पण विरहीणी वामाओनां नयनोनी जलधाराओ निरुत्त न थइ. छुंटेला अंजन समान सुशोभित आकाश, वन्युकना पुष्पोधी छवाएला पृथ्वीना प्रदेशो अने परिपक्व धान्यथी प्रसन्तताने प्रदर्शित करतां क्षेत्रो कामनुं उदीपन करवामा कांइ न्यून वळवाळां न हता, मंद प्रभंजनथी डोलती डाळीओ, पुष्पना भारथी प्रकंपित थतां पुष्पो अने मधुपानथी मस्त व-नेला मधुकरो विरहव्यथित युवतीओना उरमां क्षेत्र उपनाववा लाग्या काकचंचुथी खंडित थए-ला तरंगवाळी, हारवंध वेटेला हंसोथी प्रकाशमान पुलिनवाळी अने चोतरफ फेलाता पद्मना परागपुंजथी सौरभ युक्त वनेली सरिताओं सर्व कोइट्ट मन हरवा लागी. कणना भारथी नमन शील सांटाओंने कंपावती सुमनना गुच्छ समेत शाखाओंने झुकावती अने प्रफुल्लित धएला पद्मना पुंजने नचावतो शरद्नो समीर विरहिणी स्त्रीओने विह्वळ वनाववा वेगथी गति करवा छाज्यो. सुधाकरनां स्वच्छ किरणायी जगत् वधाने खेत वनावती, कुमुदिनीना वृन्दने विकसावती, चाहक चकारना हृदयमां हर्ष उपजावती तथा विरहो जनोना धैर्यने तजावती श्ररह्नी रात्रि संयोगीओने अवर्णनीय आनंद आपवा लागी. मरालदंपितनी रितकीडाथी रमणीय जणातां विकाश पामेला वारिजवृन्दथी विराजमान अने प्रभातना पवनथी तरल वनेल तरंगोने धारण करनारां तळावे। विरहिणी तारुणीओना तनमां त्रास उपजाववा छाग्यां. इन्द्रधतु अदृज्य थयुं, चपळानो चळकाट

चाल्यो गयो. मोरना ज्ञोर वंध थया. तेमज आकाज्ञने पक्षवायुथी प्रकंषित करता वको पण वळ रहित वनी छुपाइ वेटा; सोळ कळाथी सुद्योभित ज्ञाञ्चिनो आकाश्चमां उदय थवाथी सोळ वर्षनी सुंदरीओं सोळे शृंगार सजी दीपपाळाञोंथी देदीप्त वनेळा देवपन्दिरोमां वीणा सपान मधुर स्वरथी गीता गावा लागी; नृत्ये मयूरनो संग मूकी मरालना आश्रय लीघो अने प्रफुल्लितपणानी प्रभाए कुटन, अर्जुन, सर्ने तथा नीप आदिनो त्याग करी साछत्रणोनी साथे अनुराग जोडयो. तमाम विलासी जनो रतिपूर्वक रासनी तैयारीओ करवा लाग्या, सारभथी छ्वाएला मालती अने मल्लिकाना मनोहर लतामंडपमां रहेरी लालाओ छलित ललनाओ साथे विविध विहार करता फरवा छाग्या, अनंगने आधीन थएली केटलीक अंगनाओं अंगे अत्तर लगावी अभिसार करवा लागी, केटलाएक दंपीत अन्येत्य आलिंगन वखते हीराओना हारमां प्रतिविम्वित थवा लाग्यां। शेफालिकाना स्रमनयी सुंदर जणाता वनोनी अंदर विहंगना दृन्दो कल्लेख करवा लाग्या; चतुर जनो चोकपर चातुर्यथी चांदनी वांधी गृहने शोभाववा लाग्या. श्वेत विज्ञात, पुष्यथी आच्छादित पलंगो, हीराओना हार, रेशमी वस्त्र अने चन्द्रमुखीनां मुखो शरद्नी चांदनी साथे एकमेक थइ विरहीजनोने व्याधि खपजाववां छाग्यां. कल्हार तथा कंजना कुछुमेन हछावतो, मन्दगतिथी परागने प्रसरावतो अने पत्र पर पडेलां हिमवारिने विखेरी नांखतो वायु विलासी जनोना विनो-दमां वृद्धि करवा छाग्यो. केटछाएक शोखीन छोकोए अवरखयी छीपेछां उज्वळ आगारने विचित्र चित्रोथी चित्रित वनान्यां, छजांपर छवाएल मालतीनी; लताओथी भभकी उठतां सुगन्धवडे विहार-भुवना भराइ गयां. रासमंडलमां रमणीओना करकंकणना खणखणाट, गायनना निर्दोप घोष अने गृहमरालना मनोहर उच्चारथी पहता प्रतिध्वनि श्रवणेन्द्रियने तप्त करवा लाग्याः आकाशः अविन, अंबु, आलय, विटप अने अचल आदि कोइथी न परखी शकाय एवी रीते एकरूप वनी गयां: अवरखथी पण अधिक प्रकाशने धारण करनारी दशे दिशाओं भेवत बनी गइ, चन्द्रनी प्रभाशी चमकता चन्द्रकान्त विरहोजनोनां चित्तने चमकाववा लाग्याः विश्वकर्माए धरामंडलने धवल वनाववा माटे तेनापर चांदीना वरकने। लेप करवा शरट्रुपी कळा क्रशळ कामिनीने मनुष्य लोक-मां मोकली होय एम अनुमान थवा लाग्युं प्रशंसनीय प्रमदाओनी गतिने हंसोए हरी लीधी, मनइरणी मानिनीओना मुखतुं माधुर्य पद्म समूहे पडावी लीधुं, मद्यपानथी मत्त वनेलां लोचनोतुं लांकत्य राजिवगणे स्वाधीन करी लीधुं,श्रक्कटिना विलासनी भन्यता जलना तरंगोए जीती लीधी,

कलापीओं ए उच्चारमा कृपणता धारण करी, चातके। प्रमादरुपी रे।गना भोगी थया, पृथ्वीमां पंक्रनी अंक न रहाो, नदीओए उत्मत्त गतिना त्याग कर्याः जळ, स्थळ तेमज उज्बळ अटारीओ-पर चांदी समान चमकती शरद्नी चांदनी जोइ पवासीजना गृहवासी वन्या. रसिक पुरुपानी साथे भ्रमरना समृह पण राजिवना रस छुंटवा लाग्या, कुंजमां मालतीना पुंजथी मकरंदना प्रवाह छूटवा लाग्या, खंजनना दृन्द आनंद पाम्या अने मनरंजन मयूरोतुं उन्मत्तपणुं अलगुं थयुं. चकोरना चित्तने प्रमोदथी प्रफुल्छित करनारो, अन्धकारने हरनारो, दिगन्तने श्वेत वनावी कुमु-दरुपी संतसमृहने कर प्रसारी भावणी भेटनारो, त्रेलोक्यना सौन्दर्यने समेटनारो, वारिधिना वारिमां वृद्धि करनारे। अने कोकना उरमां शोक भरनारो शरद्ने। चन्द्र त्रिरह व्यथित इयामाओना शरी-रमां ग्रीष्मना सूर्य समान ताप उपजाववा लाग्यो. जाणे समग्र भूमंडल पारदथी भर्धु होय तेम स्वेत जणावा लाग्युं; दरेक पर्वतो हिमालय जेवा वनी गया, तमाम तरुओ तूलनी तुलना करवा लाग्या, नीर क्षीर समान वनी गयुं अने कुमुद्रनी प्रफाल्छत कळीओथी चकोरनां चित्त अत्यंत प्रसन्न थयां. वादळ विनातुं व्योम चन्द्र अने तारागणना सुखपद समागमथी अमित सुखमाने वहन करवा छाग्युं, कुमुद्नां कुरुम अने मरालना रहेटाणथी जलाशयो रमणीय जणावा लाग्यां, वारि रहित वनेल वादळांओ वळने हारी वेटां, नदीओनां नीर घटवा लाग्यां, प्रवासी पुरुपोने पीडवा माटे कुसुमायुध कटिवद्ध थयो. कृतीवलोए क्षेत्रमां तैयार करेळा धान्यना ढगळाओथी निश्चितपेण चोतरफ तुर्णने चरता गोकुलथी तथा सारस अने हंसना मधुर शब्दोथी समग्र शहेरना सीमाडाओ शोभवा लाग्या, अंगथी रंगवेरंगी वादळरुपी बस्नोने उतारी, झिल्लीना नादरुपी झाझर, कोकिला अने कलापीना शब्दरुपी करकंकण, दामिनीरुपी देहनी द्यति तथा घनगजनरुपी मद्रभरी वाणीनो त्याग करी शान्तपणे मौनव्रतने धरनारी वर्षा विरह्याथित रागिणी दाराओनी दशा जोइ वैरा-ग्यथी जोगण वनी होय एम जणावा लाग्युं. आवा शरद्रऋतुना रमणीय समयमां राज हरपाल-देवजी राजमहेलनी उन्नत अटारीओ पर गान तान आदि गम्पनमां रात्रि निर्गमन कर्वा लाग्या, तेओने हमेशां कमल दर्शनथी सोलंकी सुतानां नयनोनी यादी आवती, हंसोना स्वर सांभळी वलयनाद्तुं स्मरण थतुं अने वंद्युक पुष्पने जोतां तेना अभिनव ओप्टनी लालिमा याद आवती हती. पाटणमां प्रवेश करती वखते पोते पथम जेना मिजमान थया हता ते सोलंकीने घेर महाराजा करणनी मुलाकात थया पछी कोइकोड वखते जना, परंतु जेम जेम राज तरफथी मान वधतुं गयुं तेम

तेम पोतानी प्रतिष्टा जाळवश माटे तेओए त्यां जबुं बंध कर्यु आधी दृद्ध सोलंकीना मनमां तेम तेम पोतानी पुत्रीए भाखेला भविष्य माटे शंका उत्पन्न थइ, शक्ति पण पोतानी देवी साहेलीओ साथे मतापिसंहना पुरातन भुवननी अटारी पर अदृश्यपणे शरद्नी चांदनीमां विविध प्रकारना विहार करतां इतां. कोकिलना कंटने लिजित करनार गरवी अने रासडाओना मबुर स्वरनी धुन मची रही हती, करकंकणना खणणाट अने झांझरना झणकार आजुवाजुना प्रदेशमां आश्चर्यने प्रसराव-वता हता, जाणे शरद्ऋतु पोतेज सोलंकी सुतानुं सुरूप घरी आनंद उडावती होय एम अनुमान थतुं इतुं. दीकरीने दिन प्रतिदिन म्होटी थती जोइ वृद्ध सोलंकी विद्वल वनी गया तेणे एक दिवस पोतानी पुत्रीने कहुं के बेटा ! तमोए भाखेळ भविष्य प्रमाणे जे रजपूत आपणे घेर अतिथि वनी आच्या हता तेतो महाराजा करणने अत्यंत ियय यह पड्या छे अने राजमां हाझ कर्ता हतो पण एज छे. आटले मोटे दरज्जे चढ्या पछी ए आपणने विसरी गया होय एम जणाय छे, तमारा सबंध माटे ह्युं करवुं ए मने समजावो, इवे तो इद थाय छे, लोको न वोलवानुं वोले छे. धन तो गयुं, परंतु धर्म पण तेनी साथे जवा वेठो छे. आ रीते विह्वळ वनेला पोताना रुद्ध पिताने शान्त्वन आपवा शक्तिए कहुंके-पिताश्री! आप जरा धीरज राखो, वखत वखततुं काम कथी करे छे, एज रजपुत के ज मने स्त्रीना स्वरुपमां जोइ गयेल छे ते पोतानी मेळे थोडा वखतमां आपणे त्यां आवशे; आं घरतुं स्मरण तेना हृदयमां तेवुं ने तेवुं ताजुं छे, ए अचानक आवी डेलीनां कमाड खखडावशे अने आपने सूता जगाडशे एज वखते सगाइ अने लग्न वन्ने साथे यह जरेा. माटे आप गफलतमां नहि रहेतां विवाह वखने जोइती चीज वस्तुओ आजथी धीरे धीरे एकठी करो। पुत्रीनां आवां वचन सांभळी दृद्ध सोलंकीए धैर्यनुं अवलंवन कर्युं. राज हरपालदेवनीनी हिम्मत वहादुरी अने विद्वता उपर महाराजा करण एटला वधा आसक्त थया हता के तेओने घडिभर पोतानी आंखर्थी अलग न राखता, खंजन द्रीननो समय प्राप्त थतां अनुचर अने अमीर उमरावाना स्वरुप समुदाय साथे अणहिलपुरना अविपतिए पुर वाहेर प्रयाण करी खंजन दर्शन कर्या अने त्यांथी पाछा फरी शहेरनी अति समीपे रहेला एक उपवनमां सर्व वे वडी वेटा, त्यां महाराजा करणे उमरावो तरफ दृष्टि करी पुछ्युं के आ दिवाळी घोडा जोवा जवातुं हुं। प्रयोजन हुशे ? त्यारे एक द्रद्ध उपरावे जवाव आप्यो के पूर्वे राजा महाराजाओ शरद ऋतुमां मोटी स्वारी सजी खंजन द्रीन अर्थे निकळता अने विद्वान् ब्राह्मणो तेओने खंजन द्रीनथी उद्भवतुं शुभाशुभ भविष्य

संभळावता, परंतु आजकाल ए बातनुं विस्मरण थतां मात्र खंजन द्शेननोज रिवाज रही गयो छे. आ वात सांभळी वाघेळा करणे एज उमरावने पुछयुं के त्यारे आ वखते करेळ खंजन दर्शन भविष्यमां केवं फळ आपशे ? वृद्ध उमरावे प्रत्युत्तर आप्यो के ए अमे न जाणीए, कोइ ब्राह्मणना जाणवामां होय तो भले अथवा आ हरपालदेवजी वधी विद्यामां भवीण छे. एनाथी कांइ अजा-ण्यं निह होय. महाराजा करणनी दृष्टि पोता तरफ खेंचातां राजहरपाळदेवजी बोल्या के माराथी कांई अजाण्युं नथी, आ वखतनुं खंजन दर्शन महाराजाना आन्तरिक भयने दूर करहा. आ सां-भळी तमाम जमरावो एकी साथे वोली जट्याके-तहन जूठी वात, जे वस्तुनी स्थिति होय तेनो अभाव थाय, परंतु महाराजाने भय छेत्र निह तो ते दूर थवानी वात साची शी रीते मनाय ? असंख्य राजाओ जेना चरणकपळमां मुकुट नमावे छे, जेनी आज्ञानुं कोडपण नथी, जेनी कुपादृष्टि सृष्टिएां अमृत दृष्टिनी उपमाने धारण करे छे, जेना क्रोधयी सबळ श्रुओ पण कंपी उठे छे; जेना अनुग्रहनी सर्व कोइ श्लाघा करे छे, जेनी धर्मपरायण वृत्तिने विद्वज्जनो वलाणे छे, जेनो प्रताप जग जाहिर छे, जेनी युद्धि अगाध छ तेमज जेनुं सूर्यसमान तेज अने वायु सरखुं वळ छे ए महाराजा करणने कोनो भय होय? राजहरपालदेवजीए कहुं के-भय छे के नहि ए वावतमां महाराजानुं अन्तः करण साक्षी पृरतुं हशे, वीजाने द्युं खवर पडे. आधी महा-राजा करण राजहरपाळदेवजी जपर विशेष श्रद्धावान थया अने तेओने एकांतमां पोताना आन्तरिक भयनी वात कहेवा एज वखते संकल्प कर्यों, तेणे तुरतज हरपालदेवजीने पूछयुं के खंजन दर्शननो शुं माहिमा छे, ते मने संभळावो. त्यारे हरपालेदवजीए कंह्ये के मने मारा गुरुश्रीए संहिनानो सारी रीते अभ्यास कराव्यो छे, तेमां खंजन दर्शननी वावत पण आवेल छे. गर्भआदि सुनिओना मत प्रमाणे श्रावण आदि चार महिनामां जे खंजन देखाय तेने प्रथम दर्शन कहे छ. जे खंजनपक्षी स्थुल, उन्नत कंटवाळुं तथा कृष्णवर्ण होय, तेने भद्र कहे छे अने ते कल्याण करे छे. मुख्यी कंटपर्यन्त जेनो वर्ण काळो होय ते खंजन संपूर्ण कहेवाय छे अने ते आज्ञाने पूर्ण करे छे. जे खंजन पक्षीना कपोल श्वेत होय तथा गळामां कृष्णवर्णतुं विनद् होय ते रिक्त कहेवाय छे अने तेना दर्शनथी सर्व फळ शून्य थर जायछे, पीळा रंगना खंजनने गोपीत कहे छे अने तेनां दर्श-नथी क्रेश उपने छे. जेमा फळ तथा पुष्प लाग्यां होय एवा मबुर अने सुगन्धयुक्त दक्षोपर, पवित्र जलाशय, वाव तथा तळाव आदिपर; हाथी, अश्व तथा सर्पना मस्तऋपर; प्रासाद अथवा देवमन्दिर अथवा राजमन्दिरपर, वाग उपर, हर्म्य अर्थात् घनाट्य मनुष्ये।नां चर उपर; सुरभिने

107

mm.p. Den.

रहेवानां स्थान, सत्पुरुषोनो समागम, यज्ञ, उत्सव, राजा अने ब्राह्मणनी समीपे; हस्तिज्ञाला, अश्वशाला, छत्र अने चामर आदि उपर; सुवर्णनी समीपे; श्वेतवस्त्र, कमल, उत्पल, पूजित अने उपलिप्त अर्थात् गोमय आदिथी कीपेला स्थानमां; दहींना पात्र उपर तेमज धान्यना हगला उपर वेंडेल खंजनपक्षी देखाव देतो लक्ष्मी प्राप्त थाय छे. दर्शन वखते खंजनपक्षी पंकपर वेटुं होय तो उत्तम भोजन मळे छे, गोमयपर वेटुं होय तो गोरसनी रायत्तिमां दृद्धि थाय छे, लीली दुर्वापर वेडं होय तो वस्ननी पाप्ति थाय छे, गाडीपर वेडं होय तो देशनो नाश थाय छे, घरनी छतपर वेढुं होय तो धनना नाज्ञ थाय छे, वध्र अथीत चामडानी वाधरीपर वेढुं होय तो वन्धन थाय छे, अपवित्र स्थानमां वेद्वं होय तो रोगने जन्म आपे छे, वकरी अथवा गाडरनी पीटपर वेद्वं होय तो नियनो समागम थाय छे. महिष, उष्ट्र, गर्दभ, अस्थि, स्मञ्चान, घरना खुणा, कंकर, पर्वत, प्राकार, अर्थात नगर आदिनो किल्लो, भरम अने केश उपर वेठेटुं खंजन देखाव देतो ते अग्रुभ गणाय छे अने रोग तथा भयने उत्पन्न करे छे. वन्ने पांखाने हलावतं खंजनपन्नी देखाय तो अञ्चभ अने नदीने किनारे वेसी जळ पीतुं होय तो ग्रुभ गणाय छे; खंजनदर्शन सूर्योदय समये ग्रभ अने सूर्योस्त समये अग्रुभ छेखाय छे. नीराजन थइ रह्या वाद राजा खंजनपक्षीने जे दिशामा जतुं जुए ते दिशावडे चढाइ करवाथी शत्रुओंने शीघ्रताथी वश करी शके छे खंजन जे स्थळे मैथून करे ते स्थळ नीचे निधि अर्थात दाटेलु धन होय छे, जे स्थळे वमन करे ते स्थळ नीचे काच होय छे अने जे स्थळे विष्टा करे ते स्थळ नीचे अंगार होय छे एम कइयप आदि मुनिओनी मान्यता छे, ए आश्चर्यनी निष्टत्ति माट भूमि खोदी तपासी जोवुं, मरेल, विकळ, घायल अथवा रोगी खंजन पक्षी प्रेक्षकने पोताना शरीर तुल्य फळ आपे छे अने जोतां जोतां ते पोताना माळामां प्रवेश करे तो धननी प्राप्ति थाय छे. आकाशमां उडतं खंजन पेक्षकने वन्युना समागम करावे छे. राजाए शुभखंगनने शुभ स्थानमां जोई भूमि पर गन्ध, पुष्प अने धूप युक्त अर्घ आपना, ए रीते अभिनंदित शुभ फळ रुद्धिने पामे छे. कराच अशुभ फळ आप-नार खंजन द्रष्टिए पढे तो पण राजा सात दिवस पर्यन्त मांस खाधा शिवाय जो ब्राह्मण, गुरु, साधु अने देवताओना पूजनमां तप्तर थाय तो अग्रुभ फळ माप्त थतुं नथी. खंजनना मथम दर्श-नतुं फळ एक वर्षनी अंदर मळे छे अने प्रतिदिन खंजन दर्शनतुं फळ ते दिवसनी समाप्ति पर्यन्त प्राप्त थाय छे. दिशा, स्थान, शरीर, लग्न, नक्षत्र, शान्तदिशा अने दीप्त दिशा इत्यादि सर्वे वाव-तोनो विचार करी खंजन दर्शनथी थतुं शुभाशुभ जाणी शकाय छे आ रीते उपवनमां थोडो

वखत वार्ताविनोद करी सर्व शहरमां दाखळ थया. अमीर उमरावो पोतपोताने घेर गया पठी महाराजा करणे राज हरपाळदेवजीने एकान्तना ओरडामां ळई जई कखुं के भाई! मने एक महान भय छे ते तमारा शिवाय दूर करवाने कोड शक्तिमान नथी, हुं थोडा समय पहेळां धांझेमर तळाजाना राजानीकुंवरी फुळादेना रुप तथा गुण उपर मोहित घई तेने परण्यो छुं, ए तमारां भाभीने भयंकर वावरो भूत वळगेळ छे, ज्यारे ज्यारे हुं तेओन ओरडे जाउं छुं त्यारे ए पापात्मा न होय त्यांथी आवी पहोंचे छे अने तुरतज मने वाथमां घाळी घणे दूर फिंकीदे छे, तेमज राणीने रंजाडवामां कांई वाकी राखतो नथी, आज दिवस मुत्री ए सद्गुणी मुंदरीना समागम मुखनो लाम छेवा हुं भाग्यशाळी थनो नथी, अनेक भुवा भराडाओने आमंत्रण करी मंतरजंतर तथा दोराथागा करा-च्या, बाह्मणोने चंडीपाठ करना वेमाडया अने असंख्य जादुगरी आवी पोत पोतानी विद्यान अ-

१ श्री झालावंशना चडवा भाट काळुभाइना चे।पडामां एवी हकीकत छे के करणेने प्रथ-मनी सोळ राणीओ हती, छतां सतरमी वखत शिरोहीमा तेओतुं सगपण थयुं अने त्यां तेओ हयेवाळे परणवा पथार्या हता, पोतानां वाइ उपर राजानी श्रीति रहे एटला माटे ए वाइना माणसोए आबु उपर रहेनारा कोइ एक यतीने तेडावी वे तोला अत्तरने मंत्रावी वे शीशीओमां भर्धु, अत्तर लगा-हतांज राजा आधीन घइ जशे एवा यतीना वचन पर विश्वास राखी वाइए रथमां वेसती वखते ए वने ज्ञीशीओ पोत। आगळ राखी. ज्यारे वरात गढ शिरोहीथी पाछी फरी अणहिळपुर तरफ आवती हती त्यारे शिरोहीथी चोवीश माइल चालतां भाभरा नामे गाम आब्यं. त्यां वपोरा गाळवा वरात रोकाणी, रस्तामा जे स्थळे वावरो भूत रहेतो हतो, ते स्थळे चालतां राणीनो रथ उंधो पडयो जेथी अत्तरनी शीशीओ फुटी गइ अने ते अत्तर वावराना मस्तक पर ढोळायुं एटझे तुरतज ते वाइने आधीन वनी गयोः वरात चाली त्यारे वावरो पण राणीना रथनी साथेज अणहिलपुर आव्यो अने ज्यारे करण ए राणीने ओरडे जतो त्यारे तेना हाथ पग हीरनी दोरीए वांधी दूर फेंकी देतो. आवुं दुःख करणने घणा वखत पर्यन्त रह्यं हतुं. अंते राजहरपालदेवनीए वावराने हण्यो अने करणतुं कष्ट कार्प्युं. आ उपरांत उक्त वारोटनीना चोंपडामां राजहरपालदेवजी करण वाघेळाना भाणेज हता एवं छखेळ छे अने "करणयेळो " आदि इतिहासोमां वने मासीआइ भाइ हता एवो छेख छे, ए वेगांथी सत्य ह्युं छे? ए प्रमाणीना अभावथी समजी शक्तुं अशक्य छे, अमे पण राजहरपाळदेवजी करण वाघेळानी मासीना दीकरा भाइ हता एम ळखेळ छे सत्या-सत्यनुं निराकरण करवुं ए शोधकना कवजामां छे.

जमावी गया, परंतु कोई उपाय काम न छाग्या, आज सुधी आ वात कोई द्रवारी माणस आगळ में कही नथी. कारणके ए भय मारी सेनाथी के प्रधान आदिथी निवृत्त थड़ शके तेम नथी. सं-क्षेपमां ए भूत आगळ मनुष्यनुं वळ नकामुं छे, देवी वळ विना कार्य सिद्धि यवी कठिन छे एम धारी आपने विनित करुं छुं के आ मारी उपाधि अलग करो. आपनी सहायता विना मारो भय मटवानो नथी. महाराजा करणने धैर्य आपी राजहरपालदेवजीए कहां के आजे काळीचतुर्दशी छे तो आप नवां राणीजीने ओरडे पधारो, हुं आपनी साथे आवीहा, पछी ए पापी केवी रीते पराभव करे छे ए हुं जोइ लड्झा. राजहरपालदेवजीना हिम्मत भरेलां वाकयोथी करणने कांइक शांन्तिनी आशा तो उपजी, परतुं वावरानो भय तेना हृदयथी एकदम निकळी शके तेम नहोतुं. सूर्यनो अस्त थयो, काळसमान काळी रात्रीए सृष्टितुं सौन्दर्य हरी लीयुं, जाणे आकाराधी अंजननी दृष्टि थती होय तेम सर्वत्र ज्यामता छवाइ रही, हाथे हाथ न सूजे एवा अन्धकारे आंखवाळाओने पण आंधळाओनी दशानो अतुभव कराव्यो, केटळाएक छोको समी-सांजमांज भूतपेतना भयथी पोतपोताना भ्रवनोमां भराइ वेटा हता, शियाळ भयंकर शोर संभळावा लाग्या, केटलाएक भुवाओं मंत्र साधनाअर्थे भूतोने आपवाना विळदान सहित करमां खुल्ली कृपाण लड़ स्मशान भणी जवा लाग्या. राजमहेलमां हमेशना करतां विशेष दीवाओं करवामां आव्या हता. रात्रीना वारेक वाग्या सुधी राज हरपाछदेवजीनी साथे विविध वार्तालाप करी महाराजा करणे नवां राणीजीने ओरडे जवा विचार कर्यो, तेना मुखनी कान्ति मिलन जणावा लागी, चरण चैतन्य विनाना वनी गया, छाती थडकवा लागी, घणी महेनते पोते उभा तो थया, परंतु जाणे टामटाम वावराने जोता होय तेम भयभीत आंखोने आमतेम फेरववा लाग्या. पाटणना थणीनी आवी दशा जोइ राजहरपालदेवजीने दया उपजी, तेओए करणने कहुं के महाराजा! गभराओछो शा माटे? ज्यांसुधी हरपालदेव हयात छे, त्यांसुधी तमने भय निशंक वनी पधारी, हुं आपनी आपनार त्रिलोकीमां कोइपण नथी। आप पाछळ चाह्यो आवंछं, आ वखते राज हरपाछदेवजीए पोताना हमेशना नियम प्रमाणे भेंठमां जमैया, केडे तलवार अने हाथमां वरछी धारण करी हती, तेने हथिआरनी कशी जरुर नहोती, कारण के तेना वाहु एटला वधा मजबूत हता के ते सिंह जेंवा विकाल प्राणीने मच्छरनी माफक मुठीमां ममली नांखताः, तेओनां विशाल नेत्र ज्यारे क्रोधथी रक्त थतां त्यारे म्हे।टाम्होटा शुरवीरो पण तेना सामुं जोवानी हिमत घरी शकता नहीं, तेओनी

हाकलमां एटलुं वधुं सामध्ये हतुं के सांभळनारनो देह तुरतन श्वास रहिंग वनी जतो, तेनी कर-णने पण पूरेपूरी खात्री हती. जेथी तेणे फुलाराणीना अवास भणी जवा पग मुक्यो, परंतु वेड पग जाणे पाछळ पडता होय तेम वारंवार भयथी तेनी गति अटकवा लागी, तो पण धीरेधीरे हरपाळदेवजीनो हाथ पकडी राणीना ओरडा नजीक आत्री पहोंच्या. हरपाळदेवजीए ओरडा आगळना चोकमां उभा रही करणने कहुं के-आप सुखेथी अंटर पधारो अने ज्यारे वावरो आवी कांड्यण हरकत करे त्यारे उंचे स्वरे बूम पाड जो एटले हुं तुरत हाजर थड ए हरभीने हाथ वता-वीश. करण उपर एक करतां वधारे वखत वीती चूकी हती, छता तेणे अंदर जवा हाम भीडी, परंतु पग आगळ चालवानी अशक्ति वनावता होय तेम स्थिर थइ रह्या, तेवामां ओरडानी अंदर पर्छंगपर पछडाटीआं खाती राणीनो आर्तस्वर संभळायो, आथी आरंभमांज करणना अन्तःकर-णमां विशेष भय व्याप्यो, तेना हाथ पग कंपवा लाग्या, शरीर संकोचावा लाग्युं, छाती ध्रुजवा लागी, तमाम अंगो मस्त्रेदथी आर्द्र थइ गयां, कंडे शोप पडवा लाग्यो तेमज रोम खडां थइ गयां, जाणे हमणां पूर्वमांथी, पश्चिममांथी, उत्तरमांथी के दक्षिणमांथी वावरो मगट थइ पोताने पराभव करहो एवी शंकाथी तेनां नयनो चोतरफ चंचळताथी गति करवा लाग्यां त्यारे राज हरपाळदेवजी वोल्या के-भाइ! रजपूत वनी आम काचा हृदयना केम थाओं छो? जाओ अंदर, हुं अहीं सावध थइने आपनी सहायतामां उभो छुं. करणे ओरडामां प्रवेश कर्यों, अने प्र-कंपित अंगे राणीना पलंग पासे जइ पूछ्युं के-तमारी तवीयत केम छे? राणीए कांड पण ज्वाव न आप्यो, परंतु तेनां सजळ नेत्रोए अगाध व्याधितुं निवेदन कर्युं करणे विचार कर्यों के, कांतो आजे काळीचतुर्दशी होवाथी वावरो वळिदान लेवा स्मशान भृतिमां गयो हशे, माटे वे घडी रो-काई राणीनी आश्वासना करुं, एम धारी ज्यां परुंगपर वेसवा जाय छे तेवामां अचानक ओरडाना एक खुणामां विजळी जेवो प्रकाश तेना जोवामां आव्यो, तुरतज फुलाराणीए पडखुं फेरवी चीश पाडी अने करण सामी आंखो काढी पलंगपर कूदवा लागी, मरणनी दशाने प्राप्त थएला करणनो कंठ वंध थइ गयो, राड पाडवानी शक्ति तेनामां न रही, वावराए हीरनी दोरी वढे तेना हाथ पग बांधी एक वाजुए रेडवी मूक्णा आ वखते करणना मुखमांथी महा महेनते फक्त "राम राम राम" एवो उचार निकळ्यो. अने ते राजहरपाळदेवजीना सांभळवामां आव्यो, जेथी तेओ-ए क्रोधना आवेश साथे गंभीर गर्जना करी के आ अर्ध रात्रिने समये क्यो अधम महा-राजा करणना महेलमां तोफान मचावी रह्यो छे ? त्यारे वावराए अभिमानथी

**४२९** ।

आप्यो के-ए तो हुं वावरो, अहीं इमेशां आवुं छुं, पण तमो नवा सवा आजे क्यांथी आव्या अने कोण छो? हरपालदेवजीए हिम्मतथी जवान आप्यो के, हुं मक-वाणा केसरदेवजीनो कुंवर इरपालदेव कीर्तिगढथी तारी साथे युद्ध करवा आव्यो छुं. अधम! मारा सन्मुख आव, छुपीने उभा रहेवुं ए कायरतुं काम छे. हरपालदेवजीनां आवां, तिरस्कारयुक्त वचना सांभळी वावरो अत्यंत क्रोधायमान थयो अने विक्राळ स्वरुप धारण करी वाहेर आच्यो, तेना वाळ वाका तथा पीळा हता, आंखना डोळाओ गोळ तथा वाहेर निकळी जता होय तेवा भयंकर जणाता इता, ते दारीरे अत्यंत द्याम इतो, तेनो च्हेरो अने चेष्टा आदि जोइ साधारण मतुष्यो वही मरे एमां नवाइ जेवुं न हतुं. राजहर राखदेव नी ए काळ स्यरुप वावरानी साथे बाथ भीडवा सज्ज थया. ए वस्तते सोलंकी स्रुता शंकरना अंशावतार अने पोताना भविष्यत् पियतमनुं दळ जीवा माटे अदृश्यपणे आवी एक वाजु उभां रह्यां, जे समयनी पोते राइ जोइ रह्यां इतां ते समय प्राप्त थवाथी तेओने अति आनंद थयो. वावराए हरपालदेवजीने ऋहुं के-तमो तमारां हथि-यार हेटां मुकी दिओ अने मारी साथे वाहु युद्ध करो। राज हरपालदेवजीए ए वात कबुल राखी हथिआरने एक वाजु मूक्यां के तुरतज वळना घुमंडथी ब्रह्माने डोलाक्वाना मिथ्याभिमा-नथी यस्त वनेळा वावराए पोताना प्रलंब वाहुथी जेम हाथी सुंढ वडे द्रक्षनी शाखाने प्रकंपित करे तेम हरपाळदेवजीना वन्ने वाहुने पकडी हचवचाव्या, हरपाळदेवजीए जेम पर्वतपर वज्र पडे तेम वावरानी छातीमां मार्थुं मारी हाथ छोडाच्या अने ए पापीनी मातेळा महिष जेवी पुष्ट कन्धरापर मुष्टिनो प्रहार क्यों, जेथी ते वे डगलां पाछो हठी विचारवा लाग्यो के-आ कोइ दैवी पाणी छे, मनुष्यमां आटलुं वधुं सामध्ये न होय, फरी तेणे असह चोटथी हरपाळदेवजीना चरण पकडया, छतां लेश पण चलायमान निह थतां जेम निर्देय वनी जळोने निचोवे तेम करनी दशे आंगळी-ओथी वाबराना कंठने एवो दाव्यों के तेना श्वासनुं रुन्धन थइ गयुं, तेणे तुरतज हरपाछदेवजीना चरण छोडी दीधा, ए जोइ शक्ति अत्यंत मसन्न थयां. क्रोधावियी पज्वित थएला अने क्रूर स्वभाववाळा वावराए एकदम कूदी हरपालदेवजीने कटि मदेशयी पकडी अद्धर उपाडी पृथ्वीपर पछाड्या, आ समये जाणे धरतीकंप थयो होय तेम आखो राजमहेल ध्रुजी उठ्यो, राजहरपालदेव-ीने जो के जबरी पछडाट लागी तो पण तेओ उत्साहपूर्वक उभा यह असुरतुं दमन करवा आ-गळ धस्या, अनेक दावपेच अजमाच्या छतां वावरो वश न थयो, एक महर पर्यन्त वाहुं युद्धनी अविच्छित्र झपाझपी चाळी ओरडाना अग्रभागमां वंधीवान वनी महद भयथी मूर्छित दशाने प्राप्त

थएला महाराजा करण तथा अति दीन तेमज दयाजनक स्थितिमां पलंगपर युद्धनुं अवछोकन करतां इतां; वावराए अचानक हरपाळदेवजी फुला राणी पण उपर इल्लो कर्यों अने तेओने हेटे पाडी छातीपर चढी प्रचंड वळथी पीडवा छाग्यो, हरपाळदेवजीए ए दुष्ट दानवने दूर करवा अमाप वळनो उपयोग कर्या छतां पहाडनी माफक वावरानो देह जरापण डग्यो नहि, आथी शक्तिनुं हृदय शंकित थयुं, तेणे सत्वर गुप्तरीते हरपालदेवजीना कानमां कहुं के हाकल मारो एटले असुर आयो खसी जशे. आ वखते राज हरपालदेवजीने पोताना पूर्वज मार्ऋडेयना वचनतुं स्मरण थयुं तेमन शक्ति पण सहायताए आवी पहोंच्यां एम खात्री थवाथी तेओए वमणा उत्साहथी गिभेणी स्त्रीओना गर्भने गलिन करनार अस्वलित अवाजे म्होटी हाकल मारी, जेथी वावरो वारहाथ छेटे उडी पडयो अने बेहोश स्थितिमां जमीन पर छोटवा छाग्यो, हरपाछदेवजी तलवार छई तेनी छाती पर गोठण मुकी शिरच्छेद करवा सज्ज थया, त्यारे वावराए आर्तस्वरे अरज गुजारी के, प्रतापी पुरुष ! कुपा करी मने जीवितदान आपो, ईप्टना शपथ र्ल्ड कहुं हुं के हवेथी हुं कोई वखत अहीं आवीश नहि. तमो मने प्राणदान आपशो ए उपकारना वदलामां ने ने वखने मने याद करशो ते तमाम दखते आपनी सेवामां हाजर धईश अने गमे तेवां विकट काम सोंपशो ते अति उत्साहथी करी आपीशः राज इरपालदेवजीए रजपूतनी रीति प्रमाणे वहुज दीनता वतावता वावराने अभयदान आप्युं, जेथी ते हरपालदेवजीने नमन करी तुरतज त्यांथी विदाय थइ गयो। आसुरी कळानी दृद्धि करनारी रात्रि लगभग न्यतीत थवा आवी हती, दैवी प्रभाने पुष्टि आपनार प्रभातनां चिही प्रगट थइ चूक्यां, अरुणोद्य थवाने मात्र एक प्रहरनी ढील इती. युद्धना अमित श्रमधी स्वेद-युक्त शरीरवाळा राजहरपाळदेवजीए महाराजा करणने वंबनथी मुक्त कर्या, अने कहुं के आजथी आपनो भय निर्मृळ थयो, वावरो कदि पण आपना महेलनी अंदर आवरो नहि, पण मने श्लुधा वहु व्यापी छे, जेथी जगवानो वंदोवस्त तुरत थवो जोइए. महाराजा करणे छमा थइ राज हर-पालदेवजीना चरणमां मस्तक नमान्युं अने राणीने धैर्य आपी तुरतज तेओ पोतानां दरवारमां आव्या, त्यां हाजर रहेला हजुरीआओमांथी एकने आज्ञा आपी के-हरपालदेवजी माटे कोठारमांथी भातभातनां पकवानोनी थाळी पीरसी एकदम अहीं छड़ आवो. आ वखते राज हरपाछदेवजीए करणना कानमां कहुं के-अत्यारे राक्षस साथे युद्ध कर्युं छे, माटे आसुरी खोराक जोईए, पकवा-नोथी पेट न भराय, अश्वशाळामांथी वे घेटा मंगावी आपो, करणे तुरतज तेओनी इच्छा मुजव

वे घेटा मंगावी आप्या. ए घेटाओने लड़ राज हरपालदेवजी एकला नदीने किनारे स्मज्ञान भणी जवा विदाय थया, जतां जतां मार्गमां पोताने शंका थइ के ह्युं वावरानी साथे युद्ध करतां मने हाकल मारवानी यादी आपनार सोलंकी स्रता हरो ? ना, ना, ए राजमहेलनी अंदर शी रीते आबी शके ? ए तो रात दिवस मने तेतुं स्मरण थया करे छे, जेथी ए वखते पण भणकारामां में तेनी कल्पना करी लीधी, परंतु तेमां एक रीते लाभ थयो, मला एव्हाने मने मारा पूर्वजनां वचनोनी स्मृति थइ आवी अने एथीज वावरा जेवा भयंकर भूत साथेना युद्धमां हुं विजय मेळवी शक्यो, आ वखते शक्तिपण अदृश्यपणे तेओनी साथेज गमन करतां हतां, रात्रिना पहेळा महरमां लोकोए ठामठाम असंख्य कुंडाळांओं काढी भूत मेतादि अर्थे वळिदाननां कुंडांत्रो मुकेळां हतां, कोइमां मांस, कोइमां लाडु, कोइमां साकरकोळं अने कोइमां लाफसी विगेरे पदार्थी दृष्टिगोचर इता, राजहरपालदेवजी नदीना तीर निकट जइ पहींच्या, रात्रिना त्रीजा प्रहरनो अमल जरा अव-शेष इतो, गवैयानी माफक तीत्र स्वरथी गायन करता तमरांओ जाणे नदीरुपी महाराणीने रीझ-वता होय तेम जणातुं हतुं, रात्रिनी इयामताने पुष्टि आपनार वृक्षोनी घटाओथी नदीना किनारा रमणीय छतां भयपद भासता इता, शियाळना शोरनुं जोर जरा पण नरम नहोतुं पडयुं, उल्लकना वीहामणा अवाजो वंध नहोता पड्या, जळ अने स्थळनो वर्ण एक थइ जवाथी मात्र खळखळ वहेतो प्रवाहज आपगानी ओळखाण आपतो हतो, जरा द्र सळगता चिताना विद्यि स्मशान-भूमितं भान थतुं हतुं, भयरुपी दूतने आगळ करी राक्षसी जेवी रात्रिए दशे दिशाओने स्वाधीन करी हती, राजहरपालदेवजी शिवाय आवी काळ समान काळी रात्रिमां वहार निकळवानी कोण हिम्मत करे ? तेओ मृत्युथी विलक्कल डरता निह, तेओतुं मन केटलुं वधुं द्रढ अने निडर हतुं, तेनी खात्री करवा माटे एक काळी चतुर्दशीनी रात्रितुं चरित्र ज वस छे; डभय घेटाओंनो अन्तकाळ नजीक आव्यो, राजहरपालदेवजीए परम पवित्र अने निर्मळ सरस्वतीना जळथी स्नान सन्ध्या करी तीक्ष्णधारवाळा छरा वडे घेटांओनां शिर धडथी जुदां कर्या, त्यारवाद त्वचाने उखेडी मांसने जळथी घोयुं तथा सार विनानां अस्यिओने एक वाजु स्मशान तरफ चाली निकळ्या, बक्तिए तेनो संग छोडयो नहि, तेओ जेम जेम स्मज्ञान नजीक जवा लाग्या, तेम तेम भूत पिशाच आदि निशाचरोनी भयंकर कीकी-याटीओ संभळावा लागी, केटलीएक डाकिनीओ अर्घदग्य शवनां आंतरडांओ काढी आनंद पूर्वक आमतेम दोडादोड करी रही हती, केटलीएक पिशाचिनीओ चितामांथी शवना हाथ पग

खेंची तेना नीचे मुडदाओनां मस्तक चोडी आंतरडांओनां तार वनावी तंबूरनी माफक तुनतुन करती विचित्र हावभाव साथे नाचती हती, जाणे यमराजाओ स्मशानरुपी यज्ञभूमिमां चितारुपी अग्निकुंड विषे मनुष्यनी आहृति आपवा महान यज्ञ कर्यो होय अने ते यज्ञमां दक्षिणा लेवा माटे भूत विशाच आदिनी भीड मची होय एवा भास थता हता, अत्यंत अवार अने भयानक स्थळमां माप्त थया छतां पण राजहरपालदेवजीनुं हृदय वज्र सरखी दृढताने मदाशित करतुं हतुं, तेओए एक प्रज्वलित चिता पासे जइ छरानी अणीथी मांसने शेकवा मांडयुं अने प्रथम मुकयो के तुरत पाछळथी सुवर्णनी चुडीवंडे सुशोभित तेमज सुकोमळ उभयकर अग्र भागमां वर्तमान थइ कांइ याचना करता होय तेम नेओना जोवामां आन्युं, छतां पाछळ कोण छे अने ए कोना हाथ छे तेनी छेश पण दरकार निह करतां पोतानी पेठे कोइ श्चधार्त पाणी हशे एम धारी तेने पण मांसना परिपक्व कवल आपवा मांडया. ए रीते केटलाओक कोळीया पोते खाधा अने केटलाएक ग्रास पृष्ट भागमां अद्रश्यपणे वेठेलां शक्तिना करकमलमां समर्प्यी, थोडी वारमां वेड घेटाओनं मास खलास थयं, छतां शक्तिए पोताना कमनीय करने आगळ प्रसायी, राजहरपालदे-वजीनी प्रकृति एवी उदार हती के तेओं कोंड्ने " ना " कही शकता निह; तेणे तुरतज पोतानी जांच चीरी मांसनो लोचो काढयो, रुधिरनी धारा जोशवंध वहेवा लागी, छतां ए जखम तरफ निह जोतां मांशने शेकी आनंद पूर्वक शक्तिना हाथमां आप्युं, आथी वेहद प्रसन्न थएलां शक्ति वोल्यां के-वीरनर ! वरंबृहि, वरंबृहि (माग, माग ). त्यारे राजहरपाछदेवजीए जवाव आप्यो के-हं एवी रीते वरदान लेवानी इच्छा राखता नथी, मारी सामे आवी जे कहेर्बु होय ते कहा, आ वखते शक्ति अलौकिक अवाजनी साथे राजहरपालदेवजीनी सन्मुख सोळ वर्षनी सुन्दरीने स्वरुपे मगट थणा, तेनां अद्वितीय लावण्यतुं वर्णन करवा शेषनाग सरस्वतिना शब्द निधिनो सहस्त्र मुखे उपयोग करे अने गणपिन आठे महर अविच्छिन्नपणे छख्या करे तोपण अन्ते शब्दनी अमाप्ति अथवा गजाननना करनो कलम जाहिर थया विना रहे नहि, राजहरपालदेवजीनुं मन तेना रुप माधुर्य माथे मोहित थयुं, फरी शक्तिए " माग माग " ए प्रमाणे वहुं त्यारे तेओ बोल्या के-तमे कोण छो ए जाण्या शिवाय हुं कांइपम मागी शक्वं निहः शक्तिए कहुं के हुं तारा वंशनं श्रेय करनारी शक्ति छुं अने तारी वीरता विलोकी बहुज प्रसन्न थइ छुं पाटे जे जोइए ते माग. पूर्वे मुनिराय मार्कडेये पोताने कहुं हतुं के पाटण गया पछी शक्ति तने वरशे ए वाक्यनी सफळतानी समय समजी राजहरपाळदेवजीए मागणी की के तमो मने वरो; तमारी आञ्चाथी आज दिवस

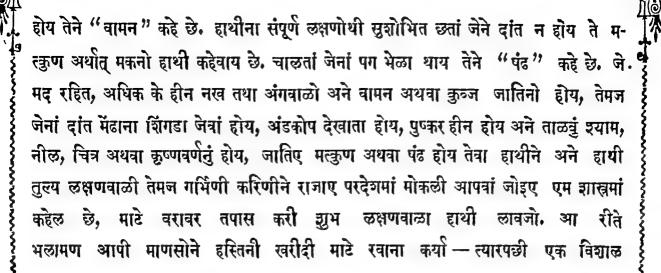
स्रुधी में कोइनी साथे उद्दाह कर्यें। नथी शक्तिए कह्युं के आ दैवीदेहे वरी शक्तुं तेम नथी, परंतु तमो मभातमां प्रतापसोलंकीने घेर जाजो एटले तमारी मनकापना पूर्ण थहो. राजहरपालदेवजीए आश्व-र्यथी पूछयुं के ए प्रताप कोण ? " वस एटली वारमां भूली गया ? पाटणमां प्रवेश करती वस्वते जेने त्यां तमो प्रथम भिजमान वनी मान पाम्या हता ए प्रताप सोलंकी अने जेणे तमने भातभातना भोजन जमाडयां हतां ए हुं पाते " आटछुं कही शक्ति अद्रुग्य थयां. राजहरपाल्डेवजी उतावळथी शहरमां आव्या अने तेओने शंकरनो अंशावतार समजी सन्मान आपवा आवेळी भूतवेतनो समाज पण सहु सहुने स्थाने विदाय थयो. संयोगिणी स्त्रीओना सुखने सहन र्नाह करनारी पूर्वदिशा सपत्नीनी माफक लालचोळ वनी गइ. अन्यकारने लीधे अद्रुग्य थएली दिग्देवीओ प्रकाशमां आवी, शियाळने शैथिल्य, उल्लंकने अन्धत्व अने तस्करने त्रास आपनार आदित्यनो उदय थयों. दिवाळीनो मांगलिक दिवस होवाथी वधा मतुष्या महोत्सवनी तैयारीओ करवा लाग्या. राजहरपाल-देवजी वह परिवर्तन करी रात्रिना जागरण पूर्वक राक्षस साथेना युद्धमां श्रीमत थया छतां प्रमन्न वद्ने महाराज करणने मळवा पधार्यो. भयना भारथी निष्टत्त थयेला करणे तेओने पोतातुं अर्थ आसन आपी यतुकिंचित उपकारनो वदलो वाळवानी श्रुरुआत करी. आ वखते राजहरपालदेवजीतुं मन प्रताप सोलंकीने घेर सत्वर पहोंचवा माटे अधीर वनी रहाँ हतुँ, तेओए महाराजा करणने कहुँ के—आजे भोजन समये आप मारी राह न जोता. कारण के जरुरी काम प्रसंगे हुं जरा वाहेर जवानो छुं, आवती काले आपने मळीश. करणनो एवो नियम हतो के ते राजहरपालदेवजी-नी रुचिमां अवरोयरुप वचननो कदि पण उच्चार करतो निहि. तेणे कहुं के वहु सारुं, जेवी आपनी इच्छा, हरपाळदेवजी त्यांथी विदाय थया. जो तेओए पोताना लग्न संबंधी वात करणने कही होत तो करण पुष्कळ धन सिरची तेओनां छप्न म्होटी धामधूम साथे करत, परंतु ए वात अत्यंत ग्रप्त राखवा जेवी हती. राज हरपाछदेवजीए प्रभात समये प्रताप सोळंकीनी डेळोनां कपाड खखडाव्या. प्रनापसिंहे एकदम कमाड उघाड्यां, हरपालदेवजीने जोइ तेने हर्पनो पार रह्या निह. वन्ने राम राम करी वेठा, शक्तिए आगली रात्रिए पोताना वृद्ध पिताने सवळी सूचना करी राखी इती. राज-हरपालदेवजीए कहुं के-हुं आपना पुत्री साथे उद्वाह करवानी इच्छा राखुं छुं. आ वचन मताप सोलंकोने अमृतनी माफक आनंद आपनारा वन्यां. जे जीवनने पोते निष्कळ अने कलंकित स-मनी व्याधिना वारिविमां डनकां मारना हना तेज जीवनने आजे सक्तळ अने निष्कलंक लेखी जाणे पुनर्जन्म पाम्या होय, तेवुं मनथी मानवा लाग्या, तेणे तुरतज वणी खुशीथी हा कही. हर-

पालदेवजीने विनति करी के हवे मात्र मुहूर्त जोवरावीए एटलोज विलंब छे. राजहरपालदेवजी वोल्या के मुहूर्त जोवराववानी कशी जरुर नथी। मात्र कोइ एक ब्राह्मणने वोलावी तेनी, अग्निनी अने सूर्यनी साक्षिथी लग्नविधि करवानो छे. कोइ जातनो आडंवर करी दुनियाने देखाडवातुं नथी. वृद्ध सोलंकीए जेने पूर्वे महाराजा मूळराज तरफथी मसालीयुं गाम दानमां मळेखं हतुं, एवा मसालीआ रावळनी अवटंकवाळा ब्राह्मणने वोलाच्यो. ते नित्य कर्ममां निपुण अने धर्मीष्ट होय एवं तेनी मुखमुद्रा जोतां जणातुं हुनं. डेलीमां आशीर्वाद आपी उभा रहेला ए विमने सोलंकी मतापसिंहे तथा हरपाल-देवजीए प्रणाम करी आसन आप्युं, शक्तिए मायाथी उत्पन्न करेली स्त्रीओ मंगलगीत गावा लागी; देवनाओए प्रस्तृत कार्यमां पोतानो आनंद पटिशत करवा माटे पुष्पनी दृष्टि करी. प्रतापसिंहे प्रेम-पुरःसर कन्यादान दी दुं. नात्कालिक शुभ मुहूर्त जोइ लग्ननो समारंभ कर्यो. विथिवत् विवाह थइ रह्या वाद राजहरपालदेवजीए मसालीआ रावळने पुष्कळ दक्षिणा आपी, अने तेना पग धोइ ते दिवसथी पोताना कुळगोरनी पदवी आपी. त्यारवाद तेओ शक्तिने साथे लइ पोताने महेल पथार्था. सायंकाळनो समय समाप्त थतां रात्रिनो समारंभ थइ चुक्यो हतो। दिवाळीनो दिवस होवाथी आखा शहरमां हमेशना करतां विशेष दीवाओ करवामां आव्या हता. ठाम ठाम लक्ष्मीवृजन अर्थे धूप, दीप अने नैवेचनी तैयारीओ थती हती, दक्षिणा लेवा माटे ब्राह्मणो आम तेम दोडादोड करी रहा हता. राजहरपालदेवजीए केटलीक अगत्यनी वावतमां शक्तिनी सलाह लीधा पछी पू-छ्युं के आपनी सहायताथी हुं महाराजा करणना महान् संकष्टने दूर करी शक्यो छुं, जेथी ते अव-इय ए उपकारनो वदलो वाळवा कांइ पर्ण मागवानुं कहेरो, त्यारे मारे छुं मागवुं ? शक्तिए कहुं के-मात्र एटछुंज मागवुं के-एक रात्रिमां जेटलां गाममां गागर वेडां अने तोरण वांधीए तेटला गाम अमारां, आ मागणी कांइ करणना मनने विशेष छागशे नहि, ए कबुछात आप के तुरत तमो वा-वराने याद करी वो छावजो, हुं पण तेनी मदद्धां रहीश अने एक रात्रिमां पाटण तावाना तमाम गामडाओमां गागर वेडां तथा तोरण वांधी दइशा आ वात राजहरपालदेवजीने उत्तम लागी. वीजे दिवसे वेसतुं वर्ष होवाथी परंपराना नियम प्रमाणे चडते प्होरे भारे ठाठमाठथी दरवार भर्यो। महाराजा करणे राजहरपालदेवजीने म्होटा मान साथे बोलावा केटलाएक अमीर उमरावेनि अगाउथी मोकल्या हता, तेओ वधाए वखतसर दरवारमां आवी पोतपोनानां स्थानने अछंकृत कर्याः कविओनी कविताओ, गायकोनां गान तथा नर्तकीओनां तृत्य विगेरे थइ रह्या वाद करणे राजहरपालदेवजीने कह्युं के−वन्धु !ंआपे मारा उपर एक म्होटो उपकार कर्यो छे, तेनो यत्किं-

चित् वदलो वाळवा आप कहो ते आपवा तैयार छुं; राजहरपालदेवजी वोल्या के-जो आपनी एमज इच्छा छे तो एक रात्रिनी अंदर हुं जेटलां गामोने गागर वेडां तथा तोरण वांधुं तेटलां गामो मारां. करणने आ मागणी कांइ विशेष न लागी, एक रात्रिमां वधारेमां वधारे दश वार गामने गागर वेडां तथा तोरण वांधी शकशे एवा विचार करी तेणे तुरतज ते वातनो स्वीकार करों. राजहरपालदेवजीए उतारे आवी शक्तिने सघळी हकीकतथी वाकेफ कर्या अने वावराने याद कर्यों जेथी ते सत्वर आवी हरपालदेवजीनी सेवामां हाजर थयो, शक्तिए वादराने कहुं के तुं मारी साथे चाल, आजनी रात्रिमां सूर्योदय थतां पहेलां करणवायेलाना कवजामां केटलां गामो है, तेटळां तमामने झांपे गागर वेडां अने तोरण वांधवाना छे. राजहरपाळदेवजीए वावराने सूचना करी के कोइ गाम वाकी रहेवुं न जोइए, वावराए राक्षसी मायातुं अवलंबन करी एक क्षणमां असंख्य गागरवेडां एकत्र कर्यो अने शक्तिए पण आशुपाल्ळवना संख्यावंध तोरणो तैयार करी पोतानो दैवी चमत्कार वावराने वताच्यो. देव अने दानव वन्ने राजहरपालदेवजीना हितमां प्रवृत्त थया वावराए दुरेक गामने आंपे त्वराथी गागर वेडां तथा तोरण वांधवा मांडयां अने शक्तिए ते ते गामना मुखीने स्वप्नामां दर्शन दइ सूचना करी के तमो प्रभातमां महाराजा पासे पहोंची खबर आपजो के राजहरपालदेवजी अमारा मामने झापे गागर वेडां तथा तोरण वांधी गया छे. दरेक गामना पटेलीयाओ नविन प्रकारना स्वप्नथी झवकी उठया अने आश्चर्यने एकदम आंखो चोळता गामने झांपे दोडचा गचा, त्यां वहुज रगणीय गागर वेडां अने तोरण वांघेळ जोइ स्वप्नने साचुं मानी आ अजव कौतुकनी कहाणीथी महाराजा करणने वाकेफ करवा उतावळा अणहिलपुर भणी रवाना थया ए शक्तिए तथा वावराए मळी एक रात्रिमां त्रेवीशसो गामने गागरवेडां अने तोरण वांध्यां, आ वात प्रभातमांज महाराजा करणेन काने पडी राज हरपाळदेवजीए करेला उपकारना बद्छामां कदाच ते पोतानुं सर्वस्व अर्पण करीदिए तो पण कांई विशेष नहतुं; छतां एक पछी एक दरेक गामना पटेलीआओ आवी जेम जेम उक्त वातने जाहेर करता गया, तेम तेम मनमां आश्चर्य वधतुं गयुं, तेणे राजहरपाछदवजीने वोलावी पोतानुं समग्र राज्य समप्ण कर्युः आ वखते राजहरपाछदेवजीए भालनां पांचसो गाम पोतानां भाभी फुलाराणीने काप-तरीके आपवा ईच्छा वतानी जेथी करणे तेनो स्वीकार कर्यो त्यारवाद

१हरपालदेवजीए शक्तिनी सलाह लड़ वि. सं ११५६ ना अरसामां पाटडीनी अंदर पोतानी राज-धानी स्थापी अने वावराने हाथे ए शहेर फरतो मजबूत गढ वंबाव्यो. प्रजावर्गतुं पुत्रवन् परिपालन करता राजहरपालदेवजीने केटलाएक हाथी, घोडा अने गाय आदि चतुष्पदनी दृद्धियी राज्यने मुसमृद्ध करवानो विचार थयो. पशुओनां शुभाशुभ लक्षणने पोते सारी रीते समजता इता, जेथी प्रथम हाथीनी खरीदी माटे जे विश्वासपात्र माणसोने मोकलवाना इता तेओने पोता पासे वोलावी सूचना करी के-हाथी चार प्रकारना होय छे. भद्र, मंद्र, मृग अने संकीर्ण; तेमां जेना दांत मा-क्षिक रंगना होय, अवयव सुविभक्त होय, जे अति जाडा के अति पातळा न होय, क्षम होय, स-मान अंगवाळा होय अने जेनी पीठ धतुप जेवी तथा जंघा वराह जेवी होय ते "भद्र," जेनी छाती तथा कक्षाविक ढीली होय, उदर लांबुं होय, चामडी, गळुं, कुक्षि तथा पुच्छमूळ स्थूळ होय अने दृष्टि सिंह जेवी होय ते " मंद "; जेनां अधर, वाळ, गुह्य, कंट, दांत, सुंढ तथा कर्ण लघु अने नेत्र म्होटां होय ते " मृग "; तेमज उपरनां चिद्रो जेनामां मिश्रित होय ते "संकीर्ण " जातना हाथी कहेवाय छे. " मृग " नी उंचाइ पांच हाथ, पुच्छनां मूळथी कुंभस्थळ सुधी लंबाइ सात हाथ अने मध्यभागनी उंचाइ आठ हाथ होय छे; तेमां एक हाथनुं प्रमाण वधारवाथी " मंद " अने वें हाथतुं प्रमाण वधारवाथी " भद्र " जातिना गनने ओळाली शकाय छै। " संकीर्ण " ना प्रमाणनो कांइपण नियम होतो नथी. " भद्र " नो मद वर्णनो, "मंद " नो मद इळदर जेवो अने "मृग " नो मद कृष्ण वर्णनो होय छे, "संकीर्ण" नो मद भिन्न भिन्न वर्णनो होय छे. जेनां ताळवुं तथा वदन त्रांवा जेवां होय, नेत्र चकछी जेवां होय, दांतना अग्रभाग स्निग्ध अने उन्नत होय, मुख विस्तीर्ण अने लांबुं होय, धतुपनी माफक उन्नत पीठ निगूढ अने निमन्न होय, कुंभस्थल कूर्म समान होय; कर्ण, नाभि, छलाट तथा गुद्य विस्तीर्ण होय, कूर्म जेवा उन्नत अढार के वीश नख होय, त्रिरेखा युक्त गोळ सुंढ होय अने जेना मदथी सुंढना झपाटानो पवन सुगन्यित थतो होय ते हाथी उत्तम गणा-य छे. जेनां उरःस्थल अने जघन संकुचित होय, पीठ उन्नत होय, प्रमाणहीन होय अने नाभि **उंची होय ते "कुव्म" कहेवाय छे. छंवाइ तथा परिमाणमां वरावर छतां जेनी उंचाइ अति अल्प** 

<sup>्</sup>श्री झालावंशना वहवा भाटनी पोथीमां लखेल छे के हरपालदेवजी पारकरना सोढामां परण्या इता अर्थात् तेओने वे राणी इतां. सोढी राणीने काइ संतित थइ होय एम जोवामां आवतुं नथी.



— राजपुतानामां खेतडी नामनुं गाम छे, त्यांना रहीश मीटुमीयां इलाहीबल्श के जेओ हाल वांकानेरमां दश अग्यार वर्ष थयां हाथीना फोजदारनी जगोपर छे के जेओ वंशपरंपरायी हाथीना डाक्तर तरीके घणुंज डमदा काम करे छे. तेओनी पासे एक "सुखदर्शन" नामनुं प्राचीन पुस्तक छे, ते पुस्तकनी अंदर हाथी सबंधी पुष्कळ हकीकत छे, के जे कोइपण स्थळे आज सुधी प्रसिद्ध थएल नथी, फोजदार मीटुमीयांए अमारी मागणी उपरथी ते ब्रन्थ अमोने बताव्यो, तेमांथी हाथी सबंधी केटलीक जाणवाजोग बीना मळी छे, ते नीचे मुजव छे.

हस्तिओनां क्षेत्रफल प्र६ छे; तेमांथी वार क्षेत्र दक्षिणनां अने वार क्षेत्र पूर्वनां कहैवाय छे, तथा वे क्षेत्र एथी भिन्न छे, तेनां नाम—

#### दक्षिणमां.

| क्षेत्र.         |      |     |       | उपक्षेत्र.             |                 |  |
|------------------|------|-----|-------|------------------------|-----------------|--|
| १ सीलहट.         |      | ••• |       | १ वेकिय                | <b>₹7.</b>      |  |
| इ रीख-           |      |     |       | ्रह्म १ मगभ            | ार              |  |
| ३ मलवार.         |      | •   | • • • | क्षेत्र ३ भंवरा        | भा <b>र</b> ्रि |  |
| <b>४ मोरंग</b> . | •••• | ••• | ••••  | क्राह्म ४ कोकड<br>व च  | हा हें .        |  |
| ५ सेलान          | •••• |     | ••    | शहक २ सम्<br>साः ३ सम् |                 |  |
| ६ धनाश्री.       |      |     | •     | महायां है से साम       | •••             |  |
|                  |      |     |       |                        |                 |  |

अश्वशाळा वंधाववा पोतानो विचार थयो. पाटहीमां एक न्हानी सरखी पुरातन अश्व-ग्नाळा हती, परंतु ते राज हरपाळदेवजीने पसंद न पहवाथी तेओए तुरत कारीगरोने वोळावी कह्युं के—जे स्थळे विशेष रेती, कांकरा के ठंडक न होय, तेमज जे स्थळ स्वच्छ तथा कीडा, मच्छर विगेरे जन्तुओथी रहित होय त्यां एक एवी उत्तम अने विशाळ अश्वशाळा वनावों के जेमां पूरतो हवा प्रकाश आवी शके अने ए हवा प्रकाश आववा माटे मकाननी चारे वाजुए द्वार राखजो तथा तेनी अंदर अश्वने रहेवा माटे तथा न्हाना न्हाना विभाग वनावजो. ए विभागनी

# पूर्वमां.

क्षेत्र.
१ जटाजूट
१ पींगा
१ पींगा
१ पींगा
१ पींगा
१ पुंगा
१ मुखजोड
१ मुहार
१ मुहार
१ मुंगा
५ पनीयारी
६ क्रेभींडीया
६ भींडीया

दरेक क्षेत्र नंवरवार उपक्षेत्रथी मळतां होय छे अर्थात् एकवीजानी जोड गणाय छे.

आ उपरांत पचीशमुं क्षेत्र "दिरयाई" अने छन्त्रीशमुं "दिरयाई गीडा" नामे प्रसिद्ध छे. जे क्षेत्रमां इस्ति उप्तन्न थयो होय, ते क्षेत्रनां नामथी ज ते ओळखाय छे.

## हस्तिओनी १६ जातिनां लक्षण.

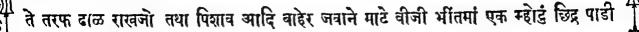
- ? सीछहट-सीछहट क्षेत्रमां उप्तन्न थएको हाथी ओछामां ओछो पोणा सात, सामान्य सात अने वधारेमां वधारे सवा सात हाथ उंचो होय छे तथा तेनी छंवाइ ओछामां ओछी पोणा छ सामान्य छ अने वधारेमां वधारे सवा छ हाथनी होय छे तेना पगतुं तळीयुं पहोछुं, शिर म्होडुं अने मन प्रफुद्धित होय छे.
- र रीख-रीखक्षेत्रमां उपन थएको हाथी ओछामां ओछो सवा छ, सांमीन्य साहा छ अने

~~+P

अंदर अश्वनी वगलथी कांइक उंची भींत चणजो, दरेक विभागनी उपर एक कवयलानी टोकरी लटकावजो के जे दश पंदर दिवसने अंतरे यदलावी शकाय. जे तरफ अश्वना पाछला पग रहे

वधारेमां वधारे पोणा सात हाथ उंचो होय छे तथा तेनी छंवाई ओछामां ओछी पांच, सामान्य सवा पांच अने वधारेमां वधारे साडा पांच हायनी होय छे, तेना दांत पातळा, माथं छांबं अने वदनमां धोळी घोळी चितरी होय छे.

- ३ मलवार—क्षेत्रमां उप्तन थएले हाथी ओछामां ओछा पोणा आठ, सामान्य आठ अने वधारेमां वधारे सवा आठ हाथ उंचो होय छे. तथा तेनी लंबाई ओछामां ओछी पोणा सात अने वधारेमां वधारे सवा सात हाथनी होय छे; तेना मोरानो भाग मृगनी माफक उन्नत होय छे अने दांत वह जाडा होय छे.
- ४ मोरंग-मोरंग क्षेत्रमां उत्पन्न थएला हाथी साडा पांच हाथ उंचा होय छे तथा तेनी छंवाइ ओछामां ओछी पांच, सामान्य साडापांच अने वधारेमां वधारे पोणाछ हाथनी होय छे; तेना मुख उपर चित्र होय छे, माथानो भाग उन्नत, सुंद लांबी अने मोरानो भाग पण मृगनी माफक उन्नत होय छे तथा पुच्छ सावज जेवुं अने कान न्हाना होय छे.
- 4 सेळान -सेळान क्षेत्रमां उत्पन्न थएळो हाथी ओछामां ओछो पोणाछ, सामान्य छ अने वधारेमां वधारे सवा छ हाथ उंचो होय छे तथा तेनी छंबाइ ओछामां ओछी सवा पांच, सामान्य साडा पांच अने वधारेमां वधारे पोणा छ हाथनी होय छे; ते हमेशां विमार जेवो रहे छे, रात्रिए वहु उंमे छे, तेना पेटनो भाग दुर्वळ देखाय छे; तेना अवयवो पैकी पुच्छ सुरागाय जेवुं, पगना गृहा जाडा, पंजा पातळा अने पीत वच्चे रेखा होय छे.
- ६ धनाश्री-धनाश्री क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो साडा पांच, सामान्य पोणा छ अने वधारेमां वधारे सवा छ हाथ उंचो होय छे तथा तेनी छंवाइ ओछामां ओछी पांच अने वधारेमां वधारे साडा पांच हाथनी होय छे; तेनी सुंद न्हानी अने पुच्छ उपर घणा वाळ होय छे.
- ७ बेलिया-बेलिया क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो पोणा सात, सामान्य सना सात अने वधारेमां वधारे साडा पात हाथ उंचो होय छे, तथा तेनी लंबाइ ओछामां ओछी सवा छ,



सामान्य साहा छ अने वधारेमां वधारे पोणा सात हाथनी होय छे; तेना कान म्होटां यदन कावरचित्रुं, सुंढ जाही, कदम लांवा अने पुच्छ उपर घणा वाळ होय छे.

- ८ मगभार-मगभार क्षेत्रमां उत्पन्न थएलो हाथी ओछामां ओछो छ, सामान्य सवा छ अने वधारेमां वधारे साडा छ हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंबाइ ओछामां ओछी पांच, सामान्य सवा पांच अने वधारेमां वधारे साडा पांच हाथनी होय छे; ते रात्रिए असन्न रहे छे अने निद्रामां गरमी लागतां चमकी उठे छे, तेनो स्वभाव तेज, शरीर शुष्क, दांत पातळा अने गंडस्थळ चोखंड होय छे; ते हाथणीथी अत्यंत प्रसन्न रहे छे.
- ९ भँवरमाल भँवरमाल क्षेत्रमां उप्तत्र थएले। हाथी ओछामां ओछो साडासान, सामान्य पोणा आठ अने वधारेमां वधारे आठ हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंबाई ओछामां ओछी सवा छ, सामान्य साडा छ अने वधारेमां वधारे पोणा सात हाथनी होय छे, तेनुं वदन काळुं अने पातळुं, मुंढ पण पातळी, नख अढार तथा ताळु इयाम होय छे.
- १० क्रोकला—क्रोकला क्षेत्रमां उप्तत्र थएको हाथी ओछामां ओछो सवा पांच, सामान्य साहा पांच अने वधारेमां वधारे पोणा छ हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंबाई ओछामां ओछी पांच, सामान्य सवा पांच अने वधारेमां वधारे साहा पांच हाथनी होय छे; ते झाडथी वधारे पीति राखनार, अमीरनी माफक धीरे धीरे खानार तृषातुरनी माफक घणुं पाणी पीनार अने रात्रिए छुई रहेनार होय छे; तेमज तेना मस्तकनो भाग उन्नत अने वदनमांथी लाल झाई नीकळती होय छे.
- ११ कछाड—कछाड क्षेत्रमां उप्तत्र थएलो हाथी ओछामां ओछो साडा पांच, सामान्य पोणा छ अने वधारेमां वधारे छ हाथ उंचो होय छे तथा तेनी छंवाई ओछामां ओछी सवा पांच अने वधारेमां वधारे साडा पांच हाथनी होय छे, तेनी छातीनो भाग पहोळो, कुख मांसथी भरेल, मोढुं कावरचित्रुं तेमज तेना ज्ञारीरमां पण कोई कोई जगोए कावर चित्रो रंग होय छे, चारे पग गोळ, तळीयां न्हानां अने पुच्छ दंकुं होय छे तथा ते चालती वखते पुच्छने चमरनी माफक हलावे छे.

[ ૪૪૧ ]

- १२ रंगा—रंगा क्षेत्रमां उप्तन थएले। हाथी ओछामां ओछो सवा पांच, सामान्य साहा पांच अने वधारेमां वधारे पोणा छ हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंबाई ओछामां ओछी पोणा पांच अने वधारेमां वधारे सवा पांच हाथनी होय छे, तेनुं जहबुं छांबुं, पेट म्होडं गंडस्थळ चोखंडुं, दांत पातळा, वांदरानी माफक उभा कान, आकृति सुवर जेवी अने श्रिरे वाळ घणा होय छे; ते तीव अथवा खारा स्वभाववाळो होय छे, रात्रिए वहु उंघे छे, वळात्कारे जगाडीए त्यारे जागे छे अने घूळ खावानी ईच्छा कर्या करे छे. आ जातिना हाथीओमांथी हजारे एक सारो निकळे छे, घणे भागे ते गांडा होय छे.
- १३ जटाजूट—जटाजूट क्षेत्रमां उत्पन्न थएको हाथी ओछामां ओछो साडा पांच, सामान्य पोणा छ अने वधारेमां वधारे सवा छ हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंबाई ओछामां ओछी पांच अने वधारेमां वधारे सवा पांच हाथनी होय छे, तेना दांत ळांबा तथा सीधा, पगना गट्टा जाडा तथा डंका अने अंग उपर घणा वाळ होय छे, तेनी चाल भ्रमर जेंबी होय छे अने ते चालती वखते सावजनी माफक पुच्छने अधर राखे छे.
- १४ पोंगा-पोंगा क्षेत्रमां उप्तत्न थएको हाथी ओछामां ओछो सवाछ अने वधारेमां वधारे पोणा-सात हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंबाइ ओछामां ओछी पोणापांच अने वधारेमां व-धारे सवापांच हाथनी होय छे; तेतुं पीत उन्नत, पेट जाडुं अने पग पातळा होय छे.
- १५ तीपरा—तीपरा क्षेत्रगां उप्तत्र थएलो हाथी ओछामां ओछो सवाछ, सामान्य सात अने वधा-रेमां वधारे सवासात उंचो होय छे तथा तेनी लंबाइ ओछामां ओछी पोणाछ, सामान्य छ अने वधारेमां वधारे सवाछ हाथनी होय छे; तेनां पग बहु मजबूत, कान लांबा, पीत वेटेलुं अने मोढा उपर काबरचित्रो रंग होय छे, तथा ते स्वभावे बहु खराब होय छे.
  - १६ गीडा-गीडा क्षेत्रमां उप्तन थएको हाथी साडापांच हाथ उंचो होय छे, तथा तेनी छंबाइ ओछामां ओछी पोणापांच, सामान्य पांच अने वधारेमां वधारे सवापांच हाथनी होय छे; वखते आथी न्यूनाधिक मापनो पण थाय छे; तेतुं शरीर मजबूत, कान म्होटा, फळ जाहुं अने चाल लांबी तथा मधुरी होय छे.



एक वाजु अश्वज्ञाळा तैयार कराववा मांडी अने वीजी वाजु अनेक प्रकारना उत्तम अश्वोनी

- १७ मनीयारी-मिणयारी क्षेत्रमां उप्तत्र थएको हाथी ओछामां ओछो साडाछ, सामान्य पोणा-सात अने वधारेमा वधारे सवासात हाथ उंचो होय छे, तथा तेनी छंवाइ ओछामां ओछी पोणाछ, सामान्य छ अने वधारेमां वधारे सवाछ हाथनी होय छे; ते अति उन्नत, दुवळो निह तेम जाडो पण निह. प्रथमधी शान्त स्वभाववाळो अने पाछळथी क्रोधी धाय छे, तथा तेनी कमर सांढीआ जेवी होय छे.
- १८ कुर्भोहीआ—कुर्भोहीआ क्षेत्रमां उप्तत्र थएळो हाथी ओछामां ओछो पोणापांच, सामान्य पांच अने वधारेमां वधारे सवापांच हाथ उंचो होय छे तथा तेनी छंत्राइ ओछामां ओछी पोणापांच अने वधारेमां वधारे पांच हाथनी होय छे; तेनी गरदन नीची, पग जाहा तथा आंख गुलावी अने कोधी होय छे.
- १९ पींगा-पींगा क्षेत्रमां उप्तत्न थएको हाथी ओछामां ओछो सवापांच, सामान्य साहापांच अने वधारेमां वधारे पोणाछ हाथनो होय छे तथा तेनी लंबाइ ओछामां ओछी पोणापांच, सामान्य पांच अने वधारेमां वधारे सवापांच हाथनी होय छे; तेनां कदम न्हाना, गुद्ध जाडुं, दांत पातळा, कान म्होटा, स्वभाव तीत्र अने अंग उपर घणा वाळ होय छे. आ जातना हाथीमां कोई कोईने विलक्कल दांत होता नथी.
- अने मुखनोड—मुखनोड क्षेत्रमां उप्तन थएको हाथी ओछामां ओछो पोणाछ, सामान्य छ अने वधारेमां वधारे सवाछ हाथ उंचो होय छे, तथा तेनी लंबाइ ओछामां ओछी पोणापांच, सामान्य पांच अने वधारेमां वधारे सवापांच हाथनी होय छे; तेनो उपरनो भाग (पेट आदि) जाहो अने नीचेनो भाग (पग आदि) पातळो होय छे; ते स्वारने छइ एकदम दोडे छे, तेनुं पीत मध्यमां रेखावाळुं तथा उनत होय छे; ते स्वती वखते कदिपण चमकतो नथी, हमेशां शान्तिथी शयन करे छे.
- 2१ मुहार-मुहार क्षेत्रमां उप्तत्न थएलो हाथी ओछामां ओछो साहाछ, सामान्य पोणासात अने वधारेमां वधारे सात हाथ उंचो होय छे. तेनी आंख क्रोधी, जडबुं जाडुं, अंग स्यूल, गृहा जाहा अने म्होडानो भाग कावरचित्रा रंगनो होय छे; ते कदम लांचो भरे छे छतां ज-

खरीदी शरु करी। राजहरपाळदेवजी सारी रीते समजता इता के जे अश्वोना, अंगो पैकी प्रिवा

मीन थोडी कापी शके छे, तोफान बहु करे छे अने चालवामां हायणीनी माफक दोडे छे.

22 मुंगा—मुंगा क्षेत्रमां उपत्र थएलो हाथी ओछामां ओछो सवापांच अने वधारेमां वधारे साहापांच हाथ उंचो होय छे तथा तेनी लंबाइ ओछामां ओछी पोणापांच अने वधारेमां वधारे साहापांच हाथनी होय छे; तेना चक्क अल्प तेजवाळां, छंटी रेखायुक्त, पंजा जाडा
अने चारे पग कावरचित्रा होय छे; ते कोई कोई वखते रात्रि दिवस निद्रावश रहे
छे अने उंघमां चमकी चमकी पाछो सुइ जाय छे.

- इव्हाळ-तब्बाळ क्षेत्रमां उप्तत्न थएळो हाथी ओछामां ओछो साडाछ, सामान्य सात अने व-धारेमां वधारे साडासात हाथ उंचो होय छे तथा तेनी ळंबाइ ओछामां ओछी पोणाछ, सामान्य छ अने वधारेमां वधारे सवाछ हाथनी होय छे; तेनी सुंढ वहु लांबी तथा सुंढ-नी अणी पण लांबी होय छे, ते शारीरे दुवळ होय छे, अने सांकळथी ताणीने वांधतां तेतुं मांस दृद्धि पामे छे.
  - इ४ भींडीया-भींडोया क्षेत्रमां उप्तत्र थएलो हाथी पांच अथवा सवापांच हाथ उंचो होय छे अने तेनी लंबाइ पोणापांच हाथनी होय छे; तेना गट्टा न्हाना, पेट म्होडं, गुह्य दीर्घ अने गरदन नीचेना भागमां झुकती रहे छे. आ जातना हाथी घणा काळ सुधी मस्तीमां रहे छे.
- ३५ दरियाइ—दिरयाइ क्षेत्रमां उप्तन्न थएको हाथी मात्र दर्शनीय होय छे, स्वारीने लायक होता नथी, तेना कान म्होटा अने मकरी छुधी पहोंचे तेटला लांचा होय छे; तेनी पीठतुं हाड- कुं वचेथी वेठेलुं अने सुंढ अत्यंत लांची होय छे; तेना आगळ कोई जइ शकतुं नथी, कारणके ते निरंतर मस्तीमां रहे छे.
- २६ दिर्याईगीडा-दिरयाईगीडा जातिनां हस्ति शिकारना कार्यमां उपयोगी वने छे, तेओ वहु तोफानी हांवाथी अन्य कार्यमां उपयोगी थता नथी।

दक्षिणना क्षेत्रोमां उत्पन्न थएली मादा त्यांना नर करतां सवा हाथ नीची अने पूर्वना क्षेत्रोमां उत्पन्न थएली मादा त्यांना नर करतां दोढ हाथ नीची होय छे.

तथा अक्षिक्ट दीर्घ होय, कटिभाग तथा हृदय पर विस्तीर्ण होय, तालु, जीह्वा अने ओष्ठ ताम्रतुल्य

आ छच्चीश जाति उपरांत अर्घ जाति गेंडानी कहेवाय छे, कारण के तेना केटलाक अव-यवो हाथीने मळता होय छे.

#### शुभ गजनां लक्षण.

लाल निद्वावालों, कृष्णतालु (ताळबुं काळुं छतां तेमां गुलावी छांटा होय ते), अढार नखवाळों, गुलावी आंखवाळों, वहु वाल युक्त अंगवाळों, छत्र भंग, दोपरहित घुंटी पर्यन्त लांवा पुच्छवाळों, गुलेमानी रंगना उभय चक्षुने धारण करनारों, आसन सिद्ध (वेसवानी जगोए अथवा गरदन उपर चक्र न होय ते), चक्रवाळां उभय नेत्रथी अलंकृत, रुक्ष शरीरवाळों अने वाळथी विशेपताथी मुशोभित शिरवाळो हाथी शुभ गणाय छे.

#### अशुभ गजनां लक्षण.

काळी जिह्नावाळो, इयाम तालुवाळो, सोळ नखवाळो, आंखमां " छत्रभंग " दोपवाळो ( जेनी एक/आंखमां चक्र होय अने वीजी आंख लाल होय ते ), ठोकर खाइ वेसनारो तथा जेना पुच्छनी अणी लचकणी होय अने तेनो छेहो सर्पना मुख जेवो होय अगर ते सावरणीनी माफक पृथ्वीने अडकतुं जतुं होय तथा तेमां एक अथवा त्रण ग्रन्थि होय ते अग्रुभ लेखाय छे; तेमज जेना तालवामां पानना आकार जेवो काळो डाघ होय अने आसन अर्थात् गरदन उपर चक्र होय ते हाथी पण अग्रुभ गणाय छे.

## क्रोधी गजनुं लक्षण.

म्होटा पेटवाळो, सुवर जेवी आकृतिवाळो, किप जेवा कर्णवाळो, उन्नत पीतवाळो, चो-खंडा गंडस्थलवाळो, अति उंघनारो, कांकरीना प्रहारने पण सहन निह करनारो अने जेना पगना गृहा न्हाना होय ते हाथी क्रोधी छे एम समजवुं.

### हस्ति संगम तथा वयोज्ञान.

ज्यारे हाथणी अढार वरसनी अवस्थाए पहोंचे छे, त्यारे तेने विविध प्रकारना जंगळी



रक्त होय; त्वचा अने केशवाळी सूक्ष्म होय, गति तथा मुख सुंदर होय, कर्ण, पुच्छ अने ओष्ट

मेवा खावाथी गरमी वधे छे अने ऋतु प्राप्त थाय छे, ते वखते तेतुं गुह्यांग उपरना भागमां रखेंचाइ आवे छे अने ते मदोन्मत्त हाथी पासे जइ नीचाणना भागमां उभी रहे छे, तेनी साथे हस्ति अश्वनी माफक संगम करे छे; ए संगम एक घटिका पर्यन्त रहे छे. हाथणीने गर्भ रहा बाद नव के दश महिना पछी प्रसव थाय छे. जन्म वखते हाथीना दांत विलक्कल वहार देखाता नथी, परंतु ज्यारे ते अही अथवा त्रण वर्षनो थाय छे त्यारे तेनी दंतली वाहेर ए दंतली ज्यारे जरा जाडी थाय त्यारे तेनी अवस्था सात अथवा आठ वर्षनी; नखोनी खोळ उतरे तथा पुच्छना वाळ खरी फरी जाडा वाळ उगे त्यारे तेर वर्षनी; शरीर उपर सळ पडे अने चहेरा उपर सफाइ तथा गफरी आवे त्यारे अढार वर्षनी; दांत वधारे जाडा तथा कापवा लायक थाय अने कर्णनी छोळ वळी जाय तेमज जरा जरा मद निकळवा छागे अने गंडस्थ-लमां खाडा पढी जाय त्यारे त्रीश वर्षनी अवस्था जाणवी; हाथी त्रीश वर्षनो छतां जो मद न झरे तो ते कपटी छे एम समजबुं, ज्यारे हाथी चाळीश वर्षनो थाय छे त्यारे तेना दांत अत्यंत जाढा थई जाय छे, गलोफां वेसी जाय छं,—अने शरीर भारे तथा सखत वने छे. पचास वर्षनी अवस्थाए पहोंचेछो हाथी मदविनानो होय त्यार धीरे चाले छे, अने मद झरती वखते उतावळो कदम उठावे छे तथा ते निरोगी छतां तेना आगला पगना सांधा वे वर्षनी अंदर उपरा उपर वंधाई जाय छे; ज्यारे आंखोतुं तेज ओळं थाय. काननी लोळ कठिन छतां वळी जाय तथा नख उपर पीळां चाठां पडे त्यारे तेनी अवस्था साठ वर्षनी; ज्यारे समग्र शारीर ढीछं पडी जाय अर्थात् खळखळी जाय, नशाखोरनी माफक नयनो नीचां ढळी जाय अने पुच्छना वाळ ववता वंघ थाय त्यारे सीतेर वर्षनी, चाळ विलक्कल मन्द थई जाय अने वारंबार रोगनो उपद्रव थवा लागे त्यारे अंशी वर्षनी, चालतां अति श्वास चढे, चारो वरावर चरी न शके तेमज तमाम दाढो पडी जाय त्यारे नेवुं वर्षनी अने ज्यारे मद तद्दन नष्ट थाय, नेत्र अने शरीर विल्रक्कल क्षीण वनी जाय तथा पाचनशक्ति जरा पण न रहे त्यारे तेनी अवस्था शतवर्षनी थई छे एम समजवुं. शतवर्ष उपरनी अवस्थाए पहेंचिला हाथीतुं शरीर तमाम जर्नर वनी जाय छे, ते दाणा के चाराने चावी शकतो नथी, तेनामां तोफान-नुं तो नाम पण रहेतुं नथी. ते अनंत प्रकारना व्याधिथी घेराय छे, वधारे व्याकुळताथी तथा

हस्व होय; जंघा, जातु अने उरु गोळ होय; दांत सम अने श्वेत होय तथा जे आकार अने रुपथी सर्वीग सुंदर होय ते अन्व उत्तम गणाय छे. घणे भागे अन्व वे प्रकारना होय छे. उत्तम अने अवम. तेमां गति आदिने सहजमां शीखी जनारा, नम्र स्वभाव वाळा तथा सारी रीते काम करी शके तेवा अन्व उत्तम अने वाकीना अधम अर्थात खराव होय छे, तेओ महा महेनते वश थाय छे, स्वभावे घणाज नीच होय छे अने काम टाणे अवळाइ करे छे. जे अश्वना वन्ने ओष्ठ ताम्र वर्ण होय, त्वचा कोमळ, जीभ छाछ, दांत घणा वेठेछा तेमज जोवामां सुंदर अने उंचाइमां वरावर होय, तालु लाल, नाक लाल, शरीर सारा डोळवाळुं अर्थात अति जाडुं नहि तेम अति पातळुं पण निह, आंख पहोळी नथा लाल, सुंदर कीकीओ, सुशोभित शिर, केशवाळी लांबी, कोमळ अने घाटी; कान न्हाना, रोम सक्ष्म, न्हानां अने चीकणां; ग्रीवा न्हानी नहि तेम मोटी पण निह, वक्षः स्थळ प्रशस्त, जातु म्होटा, खुर द्रढ अने म्होटा, पीठ लांबी निह तेम दंकी पण नहि, आकृति जरा वाकी अने कटिगोळ होय ते अश्वने ग्रुभ लक्षण वाळो समजवो वार वानी-वाळो अन्व पण उत्तम लेखाय छे. उत्साहथी भरंल उरवाळा, युद्ध भूमिना आभूषण रूप अने शरीरना उत्तम रंगथी सुशोभित जे अश्वनां कनोटी, कम्मर, जाली तथा गाळा ए चार अंग न्हानां; गरदन, पगना नळा, केशवाळी तथा चश्चें ए चार अंग छांवा अने ख़र, छाती, पेशानी तथा पीठ ए चार अंग पहाळां होय अर्थात् वार वानीमां चार न्हानी, चार छांबी अने चार पहोळी होय ते अश्वने उत्तम जाणवो केशवाळीना शेष भागथी पृष्टनी सामेना भागने करूद् अर्थात् डील कहे छे, जो ए डीलपर आवर्त अर्थात् भगरी (अश्वने) " ककूदी " कहे छे, जे अश्वनी जीभ काळा रंगनी होय ते " कृष्ण जिहा " जेतं ताळवं काळा रंगतुं होय ते " कृष्ण ताळुक, " जेना दांत विषम अने भिन्न भिन्न होय ते " क

कांई चेन न पहवाथी अंते प्राणने तजे छे. हस्तिनुं परम आयुष शत वर्षनुं अंकाय छे. जन्म पाम्या पछी दांतवाळो हाथी छ वर्ष पर्यंत धावे छे. अथीत् माताना पयनुं पान करे छे अने मकना हाथी दांतवाळा हाथी करतां चार वर्ष वधारे अर्थात् जन्म्या पछी दश वर्ष पर्यंत धावे छे.

" मुख दर्शन " नामना ग्रन्थमां आ विषय वहु विस्तारथी आपेलो छे अने ते पुस्तक हिन्दी भाषामां हस्तिलिखित छे, जो ए ग्रन्थ छपावी वहार पाडवामां आवे तो राजा महाराजाओने अति उपयोगी थई पडे ए निःसंदेह छे. रास्री, " जेना छेदन दन्त चार अथवा पांच होय ते " हीन दन्त " अने सात अथवा आठ होय ते "अधिक दन्त, " जेना पग तथा गामचीमां भिन्न भिन्न रंगनी रेखा होय ते " मार्जीरपाद, " जेना काननी पासे आवर्त होय ते " ज़ृंगी ", जेनुं आखुं ज्ञरीर एक रंगनुं होय अने फक्त ज्ञिर काळुं होय ते " त्रीसरी ", जेना अंडनी वे वाजुमां वे स्तन होय ते स्तनी, जेनुं तमाम वदन एक रंगतुं अने फक्त एक पग वीजा रंगनो होय ते " मुसली ", जेनो एक पग श्वेत अने वीजा त्रण पग अन्य रंगना होय ते " आर्जिल " कहेवाय छे, कक़्दीथी आरंभी आर्जिल पर्यन्तना अन्वो अग्रुभ रुक्षणवाळा छेखाय छे; चालती वखते पुछडाने हलावनारो तथा मारती वखते वन्ने पग उपादी एकाएक कूदनारो अन्त अधम गणाय छे; जेनी एक आंखनी पुतळी काळी अने बीजी आंखनी पुतळी पिंगळी होय ते अधम जातिनो अन्व " तास्त्री " कहे-वाय छे; जे अश्वना ख़ुर सफेद होय ते पण अधम गणाय छे, कारणके सफेद ख़ुर बहुज नरम होयं छे. अने जे अश्वना जातुमां व्रण होय ते पण अकर्मण्य अर्थात् काममां निरुपयागी ळेखाय छे, जेनो अवाज कटोर होय, तथा जेना पगनी धुंटीमां कांईपण नुकज्ञान न होय ते अन्व अधम गणाय छे. घणे भागे आवर्त जोईने अन्वना ग्रुभाग्रुभ सक्षण जाणी शकाय छे, जे जगोए आवर्त होवायी पाचीन पंडित लोको शुभ जाणता ते शुभावर्त अने जे जगाए आवर्तनी स्थित जोई अद्युभ जाणता ते अद्युभावते. नासिकाना अग्रभागमां एक, ओष्ट-ना वे मान्तमां वे अने ललाटमां एक अथवा वे, तेमज त्रण अथवा चार आवर्त होय तो द्याभ गणाय छे. कदाच ते स्थळे वरावर नीचेथी उपरनी तरफ त्रण आवेते होय तो तेने " निश्रेनी " कहे छे. जे अश्वना शिर तथा केशवाळीना शेप स्थानमां, हृद्य तथा कंडनालीना संयोग स्थानथी कांईक ते उपरना भागमां अने कंटनी नीचे एक एक आवर्त होय ते "देवमणि" तथा कंटना उपर आवर्त होय ते " कंडमणि " कहवाय छे. कर्णमूळमां वे, केशवाळीना अन्त भागमां एक, मस्तकमां एक, वक्षःस्थलमां चार, स्कन्धना पार्श्वमां वे तथा नितम्वमां पण वे आवर्त होय अने आवर्त दृश्चिकनी माफक घूमी गएला रोग के जेने शुक्ति कहे छे तेमां होय तो शुभ गणाय छे, कोई कोई वखते रोम लाठीनी माफक घूमी जाय छे, अने तेने दंडावर्त कहे छे, ए दंडावर्त अम्बनी जमणी वाजुए होवाथी शुभ लेखाय छे. अम्बना प्रपान, कंड, कर्ण, पीठिका, मध्यभाग नेत्र, ओष्ठ, सायळ, जुज, कुक्षि, पार्श्व अने ललाटमां एक एक अने रन्ध्र, उपरन्ध्र, मस्तक तथा छातीमां ववे मळी कुल दश आवर्त अश्वना शरीर उपर अवस्य होय छे.

वने रन्ध्रनी वचे, नासिकाना केंद्र उपर, गंडस्थळ तथा आंखना खूणामां भोहंबी वे आंगळ दूर, वन्ने अक्कटि पर, दक्षिण ग्रीवा, कसद्य, इटु, चितुक, कर्नद्रय अने हृदयमां जो आपर्त होय तो ते अशुभ गणाय छे अने तेने " हृदावाल " कहे छे. हृदय तथा कंउनालीना संयोग स्थानमां आवर्त होय तो " बाळक " अने क्रोड, ककुरू, जंबा, नामि, पुच्छ मृत, खुर तथा आसनमां आवर्त होय तो " छत्र भंग " कहेवाय छे अने ते वने अशुभ छेखाय छे, अथनी दंत पंक्तिमां वे दाह वनेना छ दांत तेनी अवस्थानुं सूचन करे छे. जो वने दंत पंक्तिमां श्वेतवर्णना चक्त छ दांत होय तो एक वर्षनो वछेरो अने दांत कपाय रंगना होय तो वे वर्षनो वछेरो छे एम जाणवुं. वन्ने दंत पंक्तिना वचला वे वे सरखा दांतने " संदंश " कहे छ, ते संदंशनी दन्ने वाजुना एक एक दांत " मध्यम " अने मध्यम पासेना एक एक दांत " अन्त्य " कहेवाय छे; जो संदंश पढी जइ फरी उने तो चार वर्षनी, अंत्य पढी फरी उने तो पांच वर्षनी; संदंश उपर कृष्ण विन्दु होय तो छ वर्षनी, मध्यम उपर कृष्ण विन्दु होय तो सात र्वपनी, अन्त्य उपर कृष्ण विनदु होय तो आठ वर्षनी; संदंश उपर पीत विनदु होय तो नव वर्षनी, मध्यम उपर पीत विन्दु होय तो अग्यार वर्षनी; संदंश उपर शुक्र विन्दु होय तो वार वर्षनी, मध्यम उपर ग्रुक्त विनदु होय तो तेर वर्षनी, अन्त्य उपर ग्रुक्त विनदु होय तो चौद वर्षनी; संदंश उपर काचना रंग जेवुं विन्दु होय तो पंदर वर्षनी, मध्यम उपर तेवुं विन्दु होय तो सोळ वर्षनी, अन्त्य उपर तेवुं विनदु होय तो सत्तर वर्षनी, संदंश उपर माक्षिक रंगनां विनदु होय तो अहार वर्षनी, मध्यम उपर तेवां विन्दु होय तो ओगणीश वर्षनी, अन्त्य उपर तेवां बिन्दु होय तो वीज्ञा वर्षनी; संदंज्ञा उपर जांख जेवां विन्दु होय तो एकवीज्ञा वर्षनी, मध्यम उपर तेवां विन्दु होय तो वावीश वर्षनी; संदंशमां छिद्र होय तो चोवीश, मध्यमां छिद्र होय तो पचीश, अन्त्यमां छिद्र होय तो छवीशः संदंश हगतो होय तो सत्यावीश, मध्यम हगतो होय तो अठ्यावीश, अन्त्य हगतो होय तो ओगणत्रीज्ञा; संदंज्ञ पही गया होय तो त्रीज्ञा, मध्यम पडी गया होय तो एकत्रीज्ञ अने अन्त्य पडी गया होय तो वत्रीश वर्षनी अवस्थावाळो अन्व लेखाय छे. अन्वतं परम आयुष वत्रीज्ञा वर्षतुं गणाय छे. जेना मुख पर मांस थोडुं होय, केशवाळीना वाळ सूक्ष्म अने घाटा होय, ग्रन्थि अर्थात् अंगना संयोग स्थान द्रढ होय, खुर गोळ होय, पगना गाळा पातळा होय अने कर्ण सीघा तथा न्हाना होय ते अन्व वळवाळो होय छे. संस्कृत भाषामां भिन्न भिन्न वर्णने छीधे अश्वनां नाम पण भिन्न भिन्न छे जेमकेः—

113

- ? कोकाइ-धित वर्णनो होय ते.
- २ कियाह-रक्त वर्णनो होय ते.
- ३ खुगाह-कृष्ण वर्णनो होय ते.
- ४ हरिय-पीळा रंगनो होय ते.
- ५ कयाह-पाकेला ताडना रंगनी पाफक जेनो रंग होय ते.
- ६ हालक-पीत अने हरित वर्णथी विश्रित होय ते.
- ७ उकनाइ-पीतरक्त अथवा कृष्णरक्त वर्णथी विश्रित होय ते.
- ८ इलाइ-चित्रित होय ते.
- ९ सारंग-विविध वर्णना मिश्रणथी मनोहर जणातो होय ते.
- १० नीलक-लीला रंगनो होय ते.
- ११ सुरूहक-गर्दभ समान जेनो वर्ण होय ते.
- १२ पिशंग-पिंगल वर्णनो होय ते.
- १३ शिलह-वादळ जेवा वर्णनी होय ते.
- १४ स्तुवालिय-पांडु रंगनी केशवाळी युक्त होय ते.
- १५ वेहहान-पाटल रंगना होय ते.

www.www.www.www.www.mw.

- १६ कुलाह-शरीर पीछुं, जानु पर्यन्त चार पग काळा अने मुखथी पीठ सुधी काळी रेखा होय ते.
- १७ दुक्कलाइ-लाल अने पीळा वर्णधी मिश्रित होय ते.
- १८ चक्रवाक-जेतुं वदन पीछुं अने पग श्वेत रंगना होय ते.
- १९ मिल्लका-जे अश्वनी वरौनी काळी होय ते.
- २० अष्टमंगळ-ने अश्वना चार पग, पुच्छ, मुख, वक्षःस्थळ तथा केशवाळीनो रंग सफेद होय अने वदननो रंग वीजो होय ते.
- २१ पंचकल्याण-जेना चार पग अने मुख सफेद होय तथा शरीरनो रंग जुदो होय ते.
- २२ इयामकर्ण-जेतुं शरीर श्वेत परंतु कान काळा रंगना होय ते.
- २३ उराह-जेतुं तमाम वदन पांडु रंगतुं अने चार जातु काळा रंगना होय ते. यावनी भाषामां पण रंगना भेदयी अश्वना जुदां जुदां नामो पडेलां छे. जेमके:---

१ नोकरा-जेना तमाम अवयवो सफेद होय ते.

- २ बुज-जेनी त्वचा तथा आंखना वाळ काळा अने तमाम वदनना रोम सफेद होयते.
- ३ नीलाकबुद-जेनी त्वचा काळी अने रोम वधा खेत होय ते.
- ४ तालिया सुरंग-जेना वधा अवयवो लाल अने काळा होय ते.
- ५ काखी सुरंग-जेना वधा अवयवो लाल अने खेत होय ते.
- ६ गरी-जेना अवयवो श्वेत छाल वर्णथी मिश्रित होय ते.
- ७ सन्दली-श्वेत चन्दन समान जेनो रंग होय ते.
- ८ माक्सी-जेना तमाम वदननो रंग एक साखो होय, परंतु न्हानी न्हानी आंखो जुदा रंग-नी होय ते.
- ९ रवनक-जेनो रंग पीळो होय ते.

wassers of the contraction of th

- १० अवलक-जेनो रंग अनेक प्रकारनो होय ते.
- ? रे सब्ज-जेना वदननो रंग श्वेत अने इयाम होय ते.
- १२ गोलदार-जेना समग्र शरीरनो रंग एक होय अने म्होटी म्होटी आंखो जुदा रंगनी होय ते.
- १३ तालिया कुमेद-जेर्नु श्ररीर लाल अने काळा रंगथी मिश्रित होय, परंतु चारे पग अयाल अने पुच्छ काळा रंगतुं होय ते.
- १४ लाखी क्रमेद-जेनुं शरीर लाल, परंतु पुच्छ अने जानु पर्यन्त पग काळा होय ते.
- १५ जातुयाक्तमेद-जेतुं तमाम वदन लाल होय परंतु चारे पगमां खुरथी जातु पर्यन्त एक एक काली रेखा होय ते.
- १६ जवजिक्कमेद-जेनो रंग तालियाक्कमेदना जेवो होय, परंतु केशवाळीना छोडथी आरंभी समग्र पीठमां पुच्छ पर्यन्त लाल अने काळा रंगणी मिश्रित एक रेखा होय छे.
- १७ सिरगा-जेतुं समग्र शरीर काळुं होय, परंतु केशवाळी अने पुच्छ खेत होय ते.
- १८ सरखा-जेना रोप श्वेतपणामां अधिक अने क्यामतामां अल्प होय ते.
- ?९ समंद—जेतुं आखुं शरीर श्वेन होय, परंतु केशवाळीथी आरंभी पुच्छ पर्यन्त पीटपर एक काळी रेखा होय ते.
- ३० कुमेद पंच कल्याण-जेना चार पग जानु सुधी श्वेत हो। अने शिरथी नासिका पर्यन्त एक श्वेत रेखा होय ते.

- ध्र सुरंग पंच कल्याण-जेतुं छलाट तथा चार पग खेत होय ते.
- **११** सिया-जेनो रंग अत्यंत काळो होय ते.
- 23 मुस्की-मृगनी नाभि माफक जेनो रंग काळो होय ते. संस्कृत भाषामां अश्वनी गति पांच प्रकारनी छखेछ छे.
  - ? आस्कंदित-क्रोधित व्यक्तिनी माफक चारे पगने उंचा उछाळी चाछवुं ते,
  - ३ धौरितक-आ गति चार श्रेणीओमां विभक्त छे.
    - ? नकुछनी माफक गति करवी ते-धौरितक,
    - इ कौवारी पक्षीनी माफक गति करवी ते-धौर्य.
    - ३ मयूरनी माफक गति करवी ते-धोरण.
    - ४ वराइनी माफक गति करवी ते-धोरित.
  - ३ वाल्गित-मुख उंचुं राखी रीर दवावीने चाळवुं ते.
  - ४ प्छत-हरिणनी माफक गति करवी ते.

THE SECOND PROPERTY OF THE PRO

- रेचित-वहु तेज निह तेम वहु सुस्त पण निह अर्थात् सामान्य रीते गित करवी ते.
   यावनी भाषामां पण अश्वनी गित पांच प्रकारनी छली छे:—
- ? रपट-उछळीने वहु जोरथी गति करवी ते.
- २ छारतक-उछळीने थोडा जोरथी गति करवी ते.
- ३ दुलकी--आखं शरीर हलावीने गति करवी ते.
- ४ कूदना-आगळना वे पग उंचा उछाळी चालवुं ते.
- ५ कदम-कदमना चार मकार छे.
  - ? कोई मनुष्य प्रथमथी हाथमां पाणी रुई स्वार थयो होय अने अन्व चाले छे छतां तेना हाथनुं पाणी नीचे न पडे तेवा करमने " सागाम " कहे छे.
  - इ गळुं उंचु करी आगळना पगने घुमात्री गति करवी तेनं " ईवृगा " कहे छे.
  - ३ गळुं अने ज्ञिर एवं उंचुं राखीने चाले के स्वारनी पावडी पण न देखाय. एवा कदमने " आविया" कहे छे.
  - ४ एकी वखते चारे पगने उपाडी पाछा एकी वखते फेंकवा तेने रहीवाल कहे छे.

घोडीने गर्भ धारण कर्या पछी अग्यारमे महीने प्रसव थाय छे. वच्चांनो जन्म थतांज तेने ख़ुरथी जानु पर्यन्त मापतां जेटली उंचाइ जणाय, तथी त्रण गुणी उंचाइ तेनी युवावस्थामां थाय छे. वछेरानी अथवा वछेरीनो जन्म थती वखते तेना मुखनी सामेना भागमां एक दांत होतो नथी, परंत जडवाने वन्ने किनारे वे दाढ अने वीजा वे मळी कुछ चार पेपण दन्त निकळे छे तेमां एकने प्रथम पेषणदन्तनी अने वीजाने द्वितीय पेषणदन्त कहें छे, अन्व वालनी अवस्था एक अठ वाडीआनी थतां तेना मुखाग्र भागमां उपरना वे तथा नीचेना वे मळी कुळ चार छेदन दन्त उगे छे अने पांच अठवाडीआ वाद अर्थात् सवा महीना पछी मुखना अप्र भागमां वीजा वे छेदन दन्त अने त्रीजो पेपण दन्त निकळे छे. आठमा महिना सुधीमां एज स्थळें वीजा वे छेदन दन्त डोंगे छे. ए सर्व दांत अत्यंत श्वेत अने चोरुखा होय छे अने तेना उपर एक न्हानो सरखो काळो खाडे। पण होय छे. एक वर्ष पूर्ण थतां चोथो पेषण दन्त, वीजा वर्षमां पांचमो अने त्यारवाद स्वलप समयमांज छहो पेपण दन्त निकळे छे; ज्यारे वे वर्ष उपर आठ अथवा नव महिनानी अ-वस्था थाय त्यारे वचेनी वे खीळी पडी तेनी जगोए वीजा वे स्थायी दांत निकळे छे, ते खेत अने उपर खाडावाळा होय छे; छ महिना पछी तेनी पासेना वे दांत पढी वीना वे महोटा स्थायी दांत उगे छे अने चार वर्ष उपरांत छ महिनानी अवस्था थतां वाकीना वे दांत पडी जाय छे अने ते स्थळे वीजा वे म्होटा दांत निकळे छे अने एज अरसामां नेश उपर तथा नीचे अर्थात वन्ने जडवामां जो छे. जो नेश न निकळे, तो दरेक जडवामां अढार अने नेश निकळे तो वीश दांत होय छ. आ हक्षणथी जन्मथी आरंभी पांच वर्ष पर्यन्तनी अवस्था वतावी शकाय छे; छट्टे वर्षे वचला वे स्थायी लेदन दन्त उपरना खाडामां भराइ आवे ले अने तेनो काळो रंग नाश पामे ले. सातमा वर्षमां तेनी वाजुना वीजा वे स्थायी छेदन दन्त उपरना खाडा भराइ जाय छे अने तेनी काळाश तहन नष्ट थइ जाय छे. आठमा वर्षमां वाकीना छेदन दन्तनी एज स्थिति थाय छे. नवमे वर्षे वधा दांत पीळा थवा मांडे छे ते अग्यार वर्ष सुधी साव पीळा वनी जाय छे, फरी ते चौदमा वर्षथी खेत थवा छागे छे अने सोळ वर्ष सुधीमां तमाम शीशानी माफक सफेद बनी जाय छे; सत्तरमा वर्षथी मिक्सका जेवो रंग थवा मांडे छे अने वीशमा वर्षमां शंखनी माफक शुम्र वनी जाय छे. अश्वना स्थायी दांत निकळ्या पछी दर वर्षे जरा जरा दृद्धि पामता जाय छे अने ते जेवीश वर्षनी अवस्थाए वहु मोटा जणाई आवे छे; छवीशमा वर्ष पछी

अम्बना दांत डगवा लागे छे. अने ओगणत्रीशमे वर्षे तमाम दांत पडी जाय छे. \* केटलाएक पंडित लोको चाळीश वर्ष पर्यन्त अश्वतुं परम आयुप कहे छे. जन्मथी चार वर्ष पर्यन्त अश्वनी वाल्यावस्था गणाय छे, माटे त्यांसुधी तेने कोईपण कार्यमां योजवा निह, कारण के वाल्यावस्थामां काम कराववाथी ते युवावस्थामां सार्च काम करी जकता नथी अने तुरतज निर्देळ वनी जाय छे. अश्वने वाल्यावस्थामां मात्र मुखमां लगाम आपवानो अभ्यास कराववो जोईए, पांचथी आठ वर्ष पर्यन्त तेनी युवावस्था गणाय छे, पांच वर्षनो अन्त थाय के तुरत तेने काम शीखडाववानी शरुआत करवी जोईए. नवथी वीश वर्ष पर्यन्त तेनी मौढ अवस्था लेखाय छे अने त्यारवाद तेने रुद्धा अवस्था प्राप्त थाय छे. जो युवावस्थामां अन्व पासेथी हद उपरांत काम न लेतां तेनी सारी रीते सेवा करी होय तो ते चौट पंदर वर्षनी अवस्थाए पण यौवननी माफक काम करी शके छे. सूईं घास अश्वने माटे उत्तम खोराक छे. अने हरहमेशां तेने एज आपवामां आवे छे. प्रथम घासने पाणीमां घोई सुकावी पछीथी अश्वने खावा आपबुं जोईए. अश्वना उदरमां वहु झाझी जगो होती नथी अने एथीज ते एकदम वयारे खाई शकतो नथी; एटला माटे एकदम वधारे घास निह आपतां थोडा थोडा समयने अन्तरे थोडुं थोडुं घास आपवुं एज लाभकारक छे. कोई कोई वखते तेन थोडां गाजर आपवा ए पण उत्तम छे, परंतु वधारे न आपवा. कारण के वधारे गाजर खावाधी अश्वतुं उदर फुळी जाय छे. हमेशां अश्वने वे वखत दाणा देवा, दरेक दाणाओमां चणा सर्वोत्तग छे, परंतु तेनी साथे जव अथवा र्जंड मेळवी खावा अपाय छे. वीजा दाणानी साथे जरा निमक आपवं ए श्रेयस्कर छे. अश्वने स्वच्छ पाणी पार्व जोईए. कदाच ते तळाव आदि जळाशय उपर तेनी ख़ुशीथी पाणी न पिए तो तेने दिवसमां त्रण अथवा चार वखत वासणमां पाणी भरी पावुं जोईए अने पाणी पाया वाद थोडा वखत सुधी आम तेम फेरववो. दररोज सांज सवार वन्ने वखत अश्वने खुळी इवा खवराववा माटे अमुक वखत पर्यन्त फेरववो जोईए. जो आखो दिवस तेने छायामां वांधी राखवामां आवे तो जोखम विगेरे थई आवे छे, कोई कोई वखते देने तापमां पण टेलाववो जोईए. अश्वने राखवो ए लाभकारक लेखाय छे. सदैव सन्ध्या समये तापमां

अश्व पच्चीशाधी त्रीश वर्ष पर्यन्तनुं वधारेमां वधारे आयुष्य भोगवे छे एम केटला-एक अंग्रेज लोकोनी मान्यता छे.

अने सूकां घासनी शय्या वनावी देवी, ते शय्या आठ अथवा नव म्हाटी होवी जोईए, एमां कांईपण कठिन द्रव्य रहेवा न देवं, फरी मभातमां ते शय्याने उपाडी लेवी. रातमां पिशाव अने लादथी जेटलुं घास वगडयुं होय, तेटलुं वदलावी वीजे दि-वसे नवी शय्या निर्मित करवी. शीतकालमां टाढथी वचाववा माटे अश्वने कामल अथवा एवा कोइ गरम कपडांथी ढांकी छेवो जोइए अने वर्पाना दिवसोमां पण मच्छर आदिथी वचा-ववा, तेना वदनने कोइ महीन वस्त्रथी ढांकवुं जोइए. अश्वना चारे पगमां नाल लगाववी, ख़रनी नीचेना कठिन स्थानने छरीथी छोली नाल वांधवी, जो नरम स्थानमां खीलो वेसी जाय, तो तेने लंगडापणुं प्राप्त थाय छे. अश्वना रारीरमांथी प्रस्वेद वहे छे, कदाच तेमां घूळ अथवा कादव चोटी जाय अने जो तेने साफ करवामां न आवे तो अवज्य हानि उपने छे: एटला माटे हमेशां सांज सवार खरेरो अने पीछी लड़ तेना शरीरने साफ करवुं जोड़ए; खरेरो लगावतां पहेलां मु-खमां छगाम दइ गरदनने जरा खेंची राखवी, कदाच ते अश्व दुष्ट अर्थात् वदमाज्ञ होय तो छ-गामने ताणी पुच्छनी साथे वांधी देवी. प्रथम गरदनने अने त्यारवाद अन्य अवयवोने खरेराथी साफ करवा, खरेराने जोरथी न चलाववो, खरेरो जमणा हाथमां राखवो जोइए, शरीर जरा स्वच्छ थाय के तुरतज खरेराने पण पीछीथी साफ करी लेवो, खरेराथी शरीर साफ कर्या वाद पीछी पण फेरववी, त्यारवाद स्वच्छ बस्नथी शारीरने लुइ नांखवुं अने पञीथी तेना जपर गादी फेरवी केशवाळी तथा पुच्छने कंघीयी साफ करवां जोइए. वर्षमां वे वखत अर्थात कार्तिक अने फाल्ग-न मासमां अन्य रोमने वदलावे छे, एटला माटे ए वे मास लगी तेना शारीरपर खरेरो फेरवबो नहि. जो अश्वपर दररोज स्वारी न थती होय तो तेने खुळा मेदानमां चार अथवा पांच घटिका पर्यन्त वरावर परिश्रम कराववो, कारणके त्रण चार दिवस वांध्यो रहेवाथी तेने ज्वर अथवा एवो कोइ अन्य व्याधि लागु पढे छे. त्रण चार दिवस वांधी राखेला अश्वने पांचमे दिवस वधारे परि-श्रम आपवाथी तेना वदन, पग अने फेफसांमां व्याधिनी उत्पत्ति थाय छे. परिश्रमयी अधना शरीरमां वळ वधे छे. दोडादोडना अने शिकारना अश्वोने पूर्ण परिश्रम छेतां शीखवबुं जोइए. निरंतर महेनत करनारो अन्व कोइ कोइ वखते वधारे परिश्रमवाछुं काम पण सारी रीते करी झके छे. अम्बने व्यायाम वखत मथम धीरे धीरे चलाववी, अने पछी जोरथी जवा देवी, त्यारवाद तेने एकदम निह रोकतां धीरे धीरे रोकवो. अश्व आगळ धीरे धीरे काम कराववाथी सहेलाइथी वधुं शीखी शके छे; तेन जम्या वाद आराम नहि आप्यायी, विमारीनी हाळतमां वांध्यो राखवाथी,

AND THE PROPERTY OF THE PROPER

वरसाद वरसती वस्तते विशेष गरमीमां काम कराववाथी अने थाकेळाने एकाएक पाणी पावाथी किन पीडा उत्पन्न थाय छे, एटछुंज निह परंतु वस्तते ते मरी पण जाय छे. महेनत कराव्या वाद अश्वने एकाएक अश्वशाळामां छइ जइ वांधवो निह, परंतु छवणना पाणीथी अथवा स्वच्छ पाणीथी मुखना फीण, अंड अने तेनी आसपासना फीण धोइ टेळाववो जोइए, पसीनो दूर थया वाद अश्वशाळामां छावी पयाछ घासथी तेना शरीरने साफ करी पाणीथी घोइ नांखवुं अने वस्त्रथी कोई करी गादी फेरववी, त्यारवाद तेने खावापीवा आपवं, जेथी तेनं कर नर थाय छे.

मतुष्यनी माफक जन्मभूमिना भेदथी अश्वो पण भिन्न भिन्न नामथी प्रसिद्ध छे. जे देशमां ते उत्पन्न थाय छे, ते देशतुं नाम तेने आपवामां आवे छे. जेमके " अर्व्वी, दक्षिणी " इत्यादि. अरव देशमां उत्पन्न थवाथी अरव्वी कहेवाय छे, तेनां वार क्षेत्र प्रसिद्ध छे.

- १ नजदी. २ खेलान ३ अनीजा ४ वद्ध, ५ एराकी, ६ गल्फ.
- ७ सिकलावी ८ मेफाकी ९ सावी. १० त्रेदी ११ मनाकी १२ साहुदी

असल अरब्वी हिंदुस्थानमां वहु योडा आवे छे, घणे भागे इरानी अने अरब्वी ए वन्नेथी मिश्रित वर्णसंकर अश्वो हिंदुस्थानमां आवे छे, कारणके असल अरब्वी उक्त स्थळे आव्या वाद घणे भागे थोडा जीवे छे, अरब्वीना वंशमां ईरानी, काबुली अने वार्च पण गणाय छे. ईरानी अश्व घणा सारा होय छे अने ते ईरानमां उप्तन्न थाय छे, काबुल्यी पण सोदागर लोको काबुली अश्वने वेचवा लावे छे, प्राचीन समयथी अरव, ईरान अने काबुल्यी अश्वनी सोदागरी चाली आवे छे, भारत वर्षीय अश्वोनां पण अनेक क्षेत्र अने नाम छे, काठीआवाडथी काठीआवाडी अश्वो आवे छे अने ते अगीयार प्रकारना होय छे, जेमके—

? वादरियाः इ माणिकयाः ३ मांगिलियाः ४ ताजिणयाः ५ रेडियाः ६ लखिमयाः ७ रेशिमयाः ८ केशिरयाः ९ हरिणयाः १० वोदिलियाः ११ मोटिरियाः

मारवाडथी मारवाडी अश्वो आवे छे, अने तेना चार क्षेत्र मिद्ध छे. १ गडहाः ६ रा-जघडाः ३ वालोवडाः ४ तलवाडाः

दक्षिणमांथी जे अश्वो आवे छे ते दक्षिणी कहेवाय छे, परंतु ते वर्णसंकर अर्थात् अरब्वी अने काठियावाडी ए वेनो मिळाप थतां उत्पन्न थएला होय छे; तेमां "भीमरा" "मकुन्दासी" "छन्दासी" अने "नागपुरी" ए चार उत्तम क्षेत्रना गणाय छे.

सिन्ध देशना अश्वो "सिन्धी" कहेवाय छे.

पंजावना अश्वो पंजावी कहेवाय छे, परंतु सिन्धी अने पंजावी वन्ने वर्णसंकर होय छे, कारणके तेओ इरानी अने हिंदुस्थानी अश्वोधी उत्पन्न थाय छे, तेनां पण चार क्षेत्र छे. १ धन्नी, २ धेप, ३ सायबू, अने ४ भढंडा.

मालव देशना अश्वो " मालवी " कहेवाय छे. परंतु ते स्थळे घणे भागे मारवाडी, का-ठित्रावाडी अने भिन्न भिन्न प्रकारना अश्वो रहेता होवाथी घणा वर्णसंकर अश्वो उत्पन्न थाय छे.

नाजुक अने सुन्दर अश्वोने "टांघन " कहे छे, ते छ प्रकारना होय छे.

- ? " वर्मापेगू " घणे भागे वर्माथी आवे छे.
- २ " मनीपुरी टांघन " मणीपुरथी आवे छे.
- ३ " काफरीगुट " भूटानथी आवे छे.
- ४ " नेपालीटांघन" नेपालथी आवे छे. नेपालमां "दैवीपाटन" नामतुं क्षेत्र प्रसिद्ध छे.
- ५ " तुर्कीटांघन " तुर्कस्थानथी आवे छे.
- ६ " यारकन्दी टांघन " यारकन्दथी आवे छे. कुदींस्तानथी " कुदीं " अश्वो आवे छे.

अवधमां " टेढी " नामथी एक प्रकारना अश्वोतुं क्षेत्र प्रसिद्ध छे, ते टेढी नदीनी आस-पास उत्पन्न थाय छे अने वहराइचना मेळामां वेचावाडुआवे छे.

पटनानी आसपास " जंगली " नामना अश्वो मळे छे.

भिन्न भिन्न देशोमां अश्वोनां भिन्न भिन्न क्षेत्र छे, जेम आफ्रिकामां मोरकी अने वर्वे-रिया देशमां " वार्व " जातिना अश्वो मळे छे, तुर्कस्तानमां "तुर्की " अने तातारमा " तातारी ", परंतु खास वंग देशमां अश्वनुं कोइ प्रसिद्ध क्षेत्र नथी अने त्यांना अश्वो सारा होता नथी, परंतु ते स्थळे पण अनेक देशी अश्वो विद्यमान होय छे. ×

<sup>×</sup> आजकाल हिन्दुस्थानमां अंग्रेजी राज्य होवाथी "वेलर" आदि घणा विलायती घोडाओ जोवामां आवे छे, अंग्रेज लोकोए हिन्दुस्थानमां अंग्रेजी अने अरब्बी अन्वोथी "स्यडब्यूड " नामनी निवन जाति उत्पन्न करी छे. हिन्दुस्थानमां प्राचीन समयथी पशुआंना विक्रय अर्थे अनेक

पाटडी शहरमां उत्तम प्रकारनी अश्वशाळा तैयार थतां राज हरपाळदेवजीए जे माणसोने अश्वनी खरीदी अर्थे मोकलवा निश्रय कयों हतो; तेओने पोता पासे वोलावी सूचना आपी के—अश्वनी परीक्षा मात्र वाळ अने आवर्त उपर ध्यान आपवायीज थती नथी, परंतु तेना हाथ, प्रा अने गोठण विगेरे अवयवो तपासवा; कारणके तेमां एव होवाथी अश्व दूपित गणाय छे. अश्वना सोदागर तमोने ठमे निह एटला माटे मारे कहेवुं जोइए के तमारामांथी कोइ पण अश्व खरीद करवा तवेलामां जाय त्यारे पोते एकलाए अश्व आगळ जॅमां रही तेना गुणदोप तपासवा, जो अश्वनो मालीक अथवा तेनो कोइ पण माणस साथे होय तो ते अवश्य पोताना अश्वना दोष छुपाववानी चेष्टा कयी विना रहेशे निह. ज्यारे अश्वने तवेलामांथी बाहर काठवामां आवे त्यारे खरीदनारे सर्वथी पाछळ रहेवुं, कारणके सोदागरनी एक एवी प्रधा होय छे के तेओ अश्वने पाछळथी कोइ न जाणे तेची रीते चमकावे छे अने तेथी अश्व घणो तेज मालूम पडे छे, परंतु खरी रीते जोतां ते निरुपयोगी निवडे छे. अश्वनी केशवाळीपर पण वरावर ध्यान आपवुं जोइए. जेनी गरदन पर झाझा वाळ होय ते सुस्त अने स्वल्प वाळ होय ते तेजदार छे एम समजवुं. जो गरदनना वाळ खरी पडता होय अथवा वाळ विल्कुल नज होय तो एम जाणवुं के ते अश्वनी गरदनमां कीडा अथवा खारिस्त होवा जोइए. एक तन्दुरस्त अने उत्तम प्रकारना अश्वनी ओळ-

स्थळे मेळाओ भराय छे अने ए मेळाओमां तमाम जातना पशुओ वेचावा आवे छे. हाल हिन्दु-स्थानमां जे जे महिनामां पशुना विकय अर्थे मेळा भराय छे, तेनां नाम नीचे मुजव छे.

| स्थळतुं नामः    | महिना.            | स्थळनुं नामः  | महिना.   |
|-----------------|-------------------|---------------|----------|
| पोखर.           | कार्तिक.          | तलवारे.       | फाल्गुन. |
| नेकमद.          | वैशाख.            | हरिहरक्षेत्र. | कार्तिक  |
| वटेश्वर.        | फाल्गुन.          | भृगुआश्रम.    | कार्तिक. |
| इरद्वार.        | वैशाख.            | दैवीपाटन.     | फाल्गुन. |
| तिकया महमद्शाह. | माध्य वैशाख.      | सीतामढी.      | वैशाख.   |
| वहिराइच.        | ज्येष्ठ•          | मकनपुर•       | फाल्गुन. |
| अमृतसर•         | आश्विन कार्तिकः   | ददरीक्षेत्र.  | कार्तिक. |
| चन्द्रशेखर.     | फाल् <b>गुन</b> • | ब्रह्मपुत्र,  | कार्तिक. |

खाण ए छे के जेना पृष्ठनी रीर पहोळी अने सीधी होय, पांसळीओ सुंदर अने वाहेर निकळेळी होय, पुठनो भाग सीधो, मजबूत, मांसळ अने अने पहोळो होवो जोइए, उदरनो भाग लटकतो होय परंतु ते पांसळीओथी आच्छादित होवो जोइए. जेना अंडकोप फूलेला न होय ते अश्व उत्तम गणाय छे. चक्षुनी पण परीक्षा करवी. जेना चक्षुनी श्वेतता नीचेनी तरफ लाल अथवीं खुष्कपणेना रंग समान देखाय ते अश्वेन कदिवण खरीदवो नहि, जेनां नेत्र गोळ, म्होटां काळां अने चमकदार होय ते अन्व उत्तम लेखाय छे; भेनने वदले अत्यन्त इयाम नेत्रवाळो अन्व पण उत्तम होय छे. जेनी आंलगांथी पाणी वहेतुं होय ते अश्वने खरीदवानी इच्छा करवी निहः, नेत्रना खूणामां नख जेवो पडदो गाल्रम पडे, तोपण वर्ज्य गणवा. उत्तम अश्वनी आंखो वहु सुन्दर होय छे अर्थात् वहु म्होटी के वहु न्हानी होती नथी, तेनां रयाम चक्षु अत्यंत निर्मळ होवां जोइए, जे अश्वनी आगळनी जांच सुडौळ अने मांसयुक्त होय ते वळवान निवडे छे. जेनो एक पग महोटो अने जाहो होय तथा वीजो पग न्हानो अने पातळो होय ते अश्वमां कांइ एव छे एम समजवं अथवा वने पग म्होटा होय तो तेने वातनो व्याधि छे एम जाणबुं; जेना पगमां घावनां चिन्ह होय ते अवदय चालतां ठोकर खाय छे. जेनी छाती पहोळी तथा बाहरना भागमां फूळेली होय अने तेमां अनेक मकारनां चित्र देखातां होय तो जाणवुं के ते अध्व वळवान् छे, जेतुं उरः स्थल अलप पहोळाइवाळुं होय ते वळहीन छे एम समजबुं अने एवो अध्व चालतां अवस्य ठोकर ले छे. जेनी नातिकानां छिद्र खुल्ळां, शुष्क, पहोळां अने म्होटां होय; मुख न्हादुं होय अने ओष्ट मळेला होय ते अन्वने निरोगी जाणवो, परंतु सीधारन्त्रवाळो अने म्होटा मुखवाळो अन्व सुस्त होय छे. जे अन्वना मुखनो घेर अरुप होय अने तेमां जे सुगमताथी लगाम न लड् शकतो होय तेमज जेना अधरोष्ठ उपरना ओष्ठथी अलग रहेतो होय ते अन्व दृद्ध थर गयो छे अने सत्वर मृत्युवश थशे एम समजवुं, तेज, उभा, अने निरंतर चल्लायमान कर्णवाळो अश्व उत्तम गणाय छे: परंतु जेना कर्ण म्होटा, पहोळा अने निश्चल होय ते अश्व सुरत निवहे छे, जेनुं ललाट पातळुं, वाहेरनी तरफ फूलेछं अने म्होटा तथा सुन्दर चिह्नयुक्त होय ते अन्व उत्तम लेखाय छे. जाडा अने मिलन चहेरापर न्हाना चिह्नेन धारण करनारो अन्व निन्दनीय गणाय छे. काळां, चिकणां, कठिन, चपटां अने गहेरां सुमवाळो अश्व प्रशंसनीय होय छे. अश्वतुं शिर गरदननी साथे सुहोळ छे के नहि ते तपासवा माटे तेनी एक वगलमां उभा रही द्रष्टि करवी अने ते वखते अश्वने पण मेदा-नमां उभो राखवो. अन्वनी गरदन न्हानी तेषन लांवा, कोमळ अने अंग्ठीदार केशयुक्त होय

तो श्रेष्ठ गणाय छे. कार्य करवामां समर्थ अश्वने चालीश दांत होवा जाइए, जेमांना सोळ दांत उपरथी तेनी अवस्था जाणी शकाय छे, अश्विनीने कुछ छत्रीश दांत होय छे. ज्यारे अश्वनी युवावस्था होय छे, त्यारे तेना दांत सीधा अने एक वीजायी मळेळा होय छे. परंत जेम जेम ते वृष्ट थतो जाय छे तेम तेम तेना दांत वहारनी तरफ वांका वळी निकळी जाय छे. यौवनवाळा अश्वतुं मुख मांसथी भरेलुं अने ओष्ठ कठिन होय छे, परंतु ज्यारे वृद्ध थाय छे त्यारे तेतुं मुख शुष्क ( मांस रहित-पातळुं ) अने ओष्ठ कोमळ वनी जाय छे. आ उपरांत अध लंगडों छे के निह ते तपासवा माटे तेने मधुरी दुलकी चालथी मेदानमां दोडावी जोवो. आ रीते बरावर समजावी अश्वनी खरीदी अर्थे माणसोने रवाना कर्याः राजहरपालदेवजी गौत्राह्मण प्रतिपाल होवाथी तेओने ब्राह्मण अने गाय उपर विशेष श्रद्धा हती, तथा तमाम जा-तिना पशुओंने पाळवानो पूर्ण शोख हतो, तेमां १ण गाय के जे पशुओमां परम पूज्य गणाय छे, तेनी पोते जाते कोइ कोइ वखते गौशाळामां जइ सेवा करता अने उत्तम मकारनां भोज्य तैयार करावी स्वहस्ते सुरभिवृत्दना मुख्यमां आपता. एक दिवसे तेओए सुरभि आदि चतुष्पद समूहना अखिल रक्षकोने एकत्र करी कहुं के तमीए पुरती काळजीथी निरंतर पशुओनुं पोपण करवुं, हा-लमां केटलीएक गाय, भेंस तेमज रथमां जोडवा माटे थोडा घणा वळदोने खरीदवानी जरुर छे. धेतु आदिनो जेटळो जोइए तेटळो जत्थो आपणा पासे नहि होवाथी तेनी वृद्धि करवा मारो वि-चार थयो छे अने ए कार्यमां तमीनेज योजवानो छुं, माटे तमारे जाणवुं जोइए के गायो तो हमेशां द्युभज गणाय छे. परंतु केटलाएक शास्त्रकारोना कहेवा प्रमाणे सर्व सुरभिओ ह्युभ लक्षणवाळी होती नयी. अश्रुथी भरेल, उंडां, रुक्ष अने मूपक समान नेत्रवाळी, चळायमान अने चिपटां गुंग-वाळी; करट अने गर्दभ जेवा रंगवाळी; दश, सात अथवा चार दांतवाळी; लांवा मुखवाळी, गूं-गोथी रहित शिरवाळी, नमेळी पीठवाळी, सामान्य ग्रीवावाळी, यव तुल्य अर्थात् वच्चेथी म्होटा मध्य भागवाळी, अत्यंत फाटेला खुरवाळी, वहु नाना अथवा वहु म्होटा गुरुफवाळी, उन्नत ककुद् वाळी, दुर्वेळ देहवाळी अने न्यून अथवा अत्रिक अंगवाळी घेतु अञ्चाभ गणाय छे. गाय तथा भेंस वने एक सरखां पाणी छे, अने तेओ घणे भागे वीश वर्षनुं आयुप भोगने छे. गाय तथा भेंस आदि गुंगवाळां पशुओना दांत वे प्रकारना होय छे. १ छेदन दन्त, २ पेपण दन्त; तेमां छेदन दन्त कापवामां अने पेपण दन्त चाववामां सहायक वने छे; धेतु आदिना उपरना जडवामां छेदन दन्त विलक्कल निकळता नथी, मात्र नीचेना जडवामां आठ छेदन दन्त उगे छे, एथी न्यूनाधिक छेदन

दन्त निकळे तो ते अगुभ गणाय छे. गृंगीओने कुल वत्रीश दांत होय छे; तेमां चोवीश पेषण दन्त के जे पड़या पछी फरी जगता नथी, अने वाकीना आठ छेदनदन्त पड़या पछी पण पुनः मगट घाय छे. ते ए रीते के अढी वर्षनी अवस्थाए पढ़या पछी त्रीज वर्षे वे, त्रीजा अने चोघा वर्षमां वे, पांचमे वर्षे वीजा वे अने छठे वर्षे वाकीना वे दांत पड़ी फरी जगे छे. गाय अथवा भेंसनी युवावस्थानो घणे भागे छट्टा वर्षथी आरंभ थाय छे. तेनी निशानी ए के नवा निकळेछा दांत पूर्वना अर्थात पड़ी गएला दांतथी महोटा अने कठिन होय छे, अने तेथी सहजमां तेनी अवस्था जाणी शकाय छे. हद्धपणुं प्राप्त थतां तमाम दांत घसाइ जाय छे अने छेवटे पड़ी पण जाय छे. चार दांत पड़या पछी फरी उगे त्यारे घणे भागे गाय गर्भने धारण करे छे, परंतु कोइ कोइ वखते ए पहेलां पण गर्भवती थाय छे. तेना पेटमां वच्चुं नव महिना उपरांत दश दिवस रहे छे, तेमां वखते वे चार दिवसनो फेर पण पढ़े छे. वच्चुं एक वर्षनुं थाय त्यारे तेने ग्रुंग नीकळे छे, त्यार घाइ दर वर्षे फाटगुन अथवा चैत्रमां से ग्रुंग उपर गोळ चिह्न देखाइ आवे छे, बाल्यावस्थामां जेको व्यवहार शिखल छोय, तेनो सेनो स्वभाव थाय छे.

जेतुं मस्तक मोडं, रोम झीणा, छाती तथा किंट पहोळी, पेट म्होडं, त्वचा कोमळ, लांगु-ल छांबु अने स्तन इहोटां होय ते गाय दुम्धवती अर्थात् घणुं दूव आपनारी होय, काळी गायने पण केटस्राएक दुम्धवती कहे छे.

अत्यंत म्होटा यस्तकवाळी, पश्चिम देशमां जन्म पामेळी अरुप रोमयुक्त देहवाळी तथा जेनां स्तन गायना स्तनथी म्होटां, वक्षःस्थळ अने कटि विस्तृत, त्वचा कोमळ अने छांगुळ छांबु होय ते भेंस अवश्य अधिक दूध आपे छे.

नागोर, हांसी, हरियाना अने क्षौर इत्यादि देशनी गायो सर्वोत्तम गणाय छे. नागोरनी गाय सर्वथी उंची अने वळवान होय छे, हांसी अने हरियानानी गाय अधिक दूब आपवामां प्र-सिद्ध छे. तथा मधुरा-हन्दावननी धेनु जोतायां सुन्दर तेमज दुम्बवती होय छे.

अशुभ धेनुना लक्षणसमान लक्षणवाळो ह्र १ पण अशुभ गणाय छे. जेना ह्र १ण इंयूल अने अत्यंत दीर्घ होय, क्रोह अर्थात् आगला वहे पगनो भाग नाहीओथी व्याप्त होय अने कपोल एण स्थूल शिराओथी छवाएला होय तथा जेना त्रिस्थानमांथी पाणी वहेतुं होय, नयनो मार्जार जेवां होय अने अंगनो रंग करट अथवा किपल होय ते ह्र १म तमाम मनुष्ये त्यागवा लायक छे. जेना ओष्ठ, तालु अने जिहा कृष्ण वर्ण होय तथा जे त्रसन अर्थात् हरकणो होय ते ह्र १म

वखते समुदायनो संहार करनारो निवहे छे. जेना अगूंग, मणि अने गामय स्थूल होय; उदर वित अने शरीरनो वर्ण कृष्ण तथा खेत रंगथी विश्वित होय ते द्वपम गृहे जन्म पाम्यी होय तो पण तेने तजी देवो, कारण के ते पण यूथनाशक कहेवाय छे. जेना बरीरमां काळां फूळ पडी गयां होय, जेनो वर्ण भस्मारुण होय अने नेत्र मार्जीर जेवां होय ते द्रपम चारे वर्णने माटे अशुभ लेखाय छे. रथ अथवा भार विगेरे खेंचवामां योजेलो जे दृषम पोताना चरणने पंकमां धुंची गयेला पगनी माफक महा महेनतथी उठावे, जेनी ग्रीवा दुर्वळ, पीठ न्हानी अथवा दवाञेली अने आंखो काचर होय ते भार खेंचवामां समर्थ होतो नथी. जेना ओष्ठ कोमळ, मळेळा अने तांवाना रंग जेवा होय, स्फिक् न्हाना, होय, ताछ अने जिह्ना ताम्र वर्ण होय, कर्ण न्हाना, पातळा अने उंचा होय, पेट सुंदर होय, जंघा सीधी होय, खुर ताम्रवर्ण अने सुश्चिष्ट होय, वक्ष:-स्थल दृढ होय, ककुद् म्होटी होय, त्वचा अने रोम स्तिग्य, कोमळ अने मुक्षी होय, शारीर अने गुंग ताम्रवर्ण होय, पुच्छ पातळुं अने भूमिने स्पर्श करनार्ह होय, नेत्रना छेडा लाल होय, स्कंध सिंह जेवाह होय, कंवल पातळी अने न्हानी होय, गति सुन्दर हाय अने जे दीर्घ श्वांस लेनारो होय ते ट्रपभ उत्तम गणाय छे. जेना वाम भागमां डावी वाज वळेलुं आवर्त होय अने दक्षिण भागमां जमणी वाज़ वळेल आवर्त होय तथा जेनी जांच मेढानी जंबा समान मांसथी पूर्ण होय ते हप्यने शुभ समजवो. जेनां नेत्र वैदृर्य मणितुल्य, मिलकाना पुष्प जेवां अथवा जल बुद् बुद् जेवां तेमज स्थूल होय, ज्ञारीर पण स्थूल होय अने जेना खुरनो पाछलो भाग सुश्लिष्ट होय ते तमाम ट्रपभ सारी रीते भार खेंची रोके छे. जेनी नासिकामां विल पडती होय, जेनुं मुख मार्जार जेनुं जेना देहनो दक्षिण भाग श्वेत होय; कमल, नीलकमल अथवा लाक्षा समान जेनी कान्ति होय, जेना द्युण लांवा, गति अन्व जेवी, पुच्छ सुन्दर, पेट मंहा जेवुं, वंअण तथा क्रोड संकुचित होय ते दृषभ भार खेंचवामां अने मार्ग कापवामां समर्थ गणाय छे; जेनी गति अश्व जेवी होय तेवा दृ-पम हमेशां शुभन होय छे; जे हपभनो वर्ण श्वेत होय, जेना नेत्र पिंगल अने ताम्रवर्ण होय, जुंग पण ताम्त्रवर्ण होय अने मुख म्होदं होय तेने "हंस" कहे छे; ते शुभ होय छे अने जे यूथमां रहे छे तेनी दृद्धि करे छे. जेतुं पुच्छ जमीनने अडकतुं होय, जेना गूंग ताम्रवर्ण होय, नेत्र लाल होय, जे कक्कबी अर्थात् कोढवाळो होय अने जेनो वर्ण कल्पाप अर्थात् श्वेत, रक्त, पीत अने काळा रंगथी मिश्रित होय ते द्वपभ पोताना स्वामीने स्वरूप समयमां लक्ष्मीपति बनावी दे छे. द्वपभ गमे ते रंगनो होय, परंतु जेना चार् पुण खेत होय ते शुभ गणाय छे; जो केवळ शुभ ळक्षणवाळी

द्यम न मळे तो मिश्र फल अर्थात् जेमां कोई लक्षण ग्रुम अने कोई अग्रुम होय तो तेने खरीद-वामां कशी हरकत होती नथी, परंतु अग्रुम लक्षण करतां ग्रुम लक्षण विशेष होवां जोइए.

आ प्रमाणे धेतु विगेरेना रक्षकोने जे वखते राज हरपालदेवजी वोध आपता हता, ते वखते अजापालक पण त्यां आवी उभेला हता. तेना तरफ दृष्टि करी हरपालदेवजी के कहुं के,-जेम आ लोकोने गाय विगेरेनां ग्राभाग्रभ लक्षण अने अवस्थाज्ञानथी में वाकेफ कर्यों तेम तमारे पण जाणवानी जरुर छे के-जेने नव, दश अथवा आठ दांत होय ते छाग ग्राभ अने जेने सात दांत होय ते अग्रभ गणाय छे. जे छागनो वर्ण श्वेत होय अने तेना दक्षिण पार्श्वमां काळा रंगतुं मंडल होय ते शुभ तथा जे छागनो वर्ण ऋष्यमृगनी माफक कालो अथवा लाल होय अने तेना दक्षिण पार्श्वमां खेत मंडल होय ते पण ग्रभ लेखाय छे. छागना कंटमां जे स्तननी माफक लटके के तेने मिण कहे छे. जेने एक मिण होय ते छाग ग्रभ फळने आपे छे तथा जेने वे अथवा त्रण मणि होय तेने तो अति उत्तम जाणवा जे शृंग रहित शिरवाळा होंय, जेतुं आखुं शरीर धोळुं अथवा काळुं होय, अथवा अर्ध शरीर काळुं अने अर्ध खेत होय, अथवा अर्ध काळुं अने अर्ध कपिल वर्ण होय ते छाग ग्राभ लेखाय छे. जे पोताना यूथमां आगळ चाके अने सर्वथी पहेलां पाणीमां प्रवेश करे, ते छाग पण ग्रुभ गणाय छे. जेतुं शिर श्वेत होय अथवा जेना शिरमां कृत्तिका नक्षत्रनी माफक छ विन्दु होय ते " कुट्टक " कहेवाय छे. जेना कंट तथा शिरमां अन्य रंगनां विन्दु होय अने वाकीना अंगनो रंग श्वेत तथा पीत वर्णथी मिश्रित होय अने जेनां नेत्र ताम्रनी माफक लाल होय ते छागने अभ लेखवा: जेना अरीरनो रंग श्वेत होय अने चारे चरण काळा होय अथवा जेतुं शरीर काळुं होय अने चारे पग खेत होय ते छाग " क्रुटिल " क्रेहवाय छे. जेना शरीरनो वर्ण खेत अने द्वपण ज्याम होय तथा मध्य भागमां काळा पट्टा होय ते छाग पण शुभ छे एम समजवुं; जे धीरे धीरे चरे अने चरती वखते जब्द थाय ते छाग " जटिल " कहेवाय छे. जेना शिरोरुह अने पग ऋष्य मृगना रंग संमान ऋष्ण वर्ण होय तथा जेनो अग्र भाग पांडर अने पाछळनो भाग नील वर्ण होय ते छाग " वामन " कहेवाय छे. ज्यां कुट्टक, कुटिल, जटिल अने वामन जातिना छाग रहे त्यां लक्ष्मीनो निवास होय छे. जे छागतुं ज्ञारीर विवर्ण होय, पुन्छ भदीप्त अर्थात वांकुं होय अथवा वहु उष्ण होय, नख खराव होय, कान क'॥अला होय, जिर हाथी सरखं होय, ताळ तथा जिहा कृष्ण वर्ण होय, अने जेनो शब्द गर्दभना जेवो होय ते छाग अशुभ गणाय छे.

आ प्रमाणे यथोचित वोध आपी सर्व ने पोतपोताने स्थाने विदाय कर्या. राज्यसमृद्धिनी दृद्धिमां छक्ष्य आपवानी साथे प्रजाना हितमां प्रदृत्त रहेनारा राजहरपाछदेनजीनो यश दिनमृति-दिन दृद्धि पामवा छाग्यो. तेओए स्वल्प समयमां पुष्कळ द्रव्य खरची केटळाएक महेलो, देव-मिदरो, बाग वगीचात्रो, अने उत्तम जलाशयो आदिथी शहेरने अनेक प्रकारे छुशोधित कर्युं. पोतानुं राज्य नहानुं छतां सर्वोत्छृष्ट समृद्धिथी महोटां यहोटां राज्याने शरमावनारा राजहरपाछदेव-जीथी ए अरसामां कोइ पण राजा विरुद्ध थइ युद्ध करवा तत्पर थाय तेवा संजोगो न हता तो—पण तेओए राज्यनां संरक्षण माटे परंपराना नियम म्माणे सारा सारा सैनिकोने एकत्र कर्या. पाट-दीनी प्रजा आनंद वैभवमां दिवसो ग्रुजारवा छागी अने राजहरपाछदेवजी एक उत्तम राजकर्या तरीके पृथ्वीमां प्रख्यात थया.





## सप्तद्श तरंग.

<sup>44</sup> छरपय <sup>17</sup>

सोढो मांग्र शखराज, ज्ञक्तिना जाया; मुद मन्दिर मखवान, किलत झाला कहेवाया. सोढाजीने राज्य, सोंपी राच्या उपरामे; शक्ति अने शिवरूष, सुता सह गयां स्वधामे. असर आपना वंशनो, महिमा महद जणाय छे; हाम धरी नयुराम किन, गुण झालाना गाय छे.

राज हरपालदेवजीने स्त्रीओमां सर्वोत्कृष्ट साक्षात् शक्ति वर्या हतां, जेथी तेओनां आनंद वेभव के मुख्यमां कोइपण मकारनी न्यूनता न हती, शक्ति पण पोताना पराक्रमी पितनां उत्तम आचरणथी सर्वदा संतुष्ट रहेतां, स्त्रीनुं मान केवी रीते जाळवन्नुं ते राज हरपालदेवजो सारी रीते समजता हता, कारणके तेओए उत्तम गुरु पासेथी संहिता वंगरे शास्त्रोनुं श्रेष्ट रीते शिक्षण लोधेलुं हतुं, तेओनी निरंगर एवीन मान्यता हती के संपूर्ण पृथ्वीनो विजय कर्या वाद तेमां पोतानी राजवानीनुं शहेरज सारुष्ठ छे. ए शहेरमां पण पोतानो महेल अने महेलमां पण पोताने रहेवानुं एक मुख्य स्थान अने तेमां पण सारुष्य श्रया अने ऐ श्रया उपर पण रत्नोथी अन

१ आसन वनाववामां ने ने काष्ठ अने ने ने प्रकारनी हाथीदांत शुभ गणाय छे, ते शय्या वनाववामां पण शुभ लेखाय छे. तुप रहित आठ नवनो मध्य भाग वरावर मेळवी राग्वतां एक कर्मागुल थाय छे, राजाओन माटे एकसो आंगळ लांवी शय्या विजय आपनारी निवहे छे. नेवु आंगळ लांवी शय्या राजपुत्रनी, चोराशी आंगळ लांवी शय्या राजाना मंत्रीनी, अल्लोतेर आंगळ लांवी शय्या सेनापितनी अने वहोंतेर आंगळ लांगी शय्या राजाना पुरोहितनी

लंकृत उत्तम स्त्री साररूप छे. दीर्घदृष्टियी विचारतां राज्यसुखमां एटलोज सार छे. वाकीना स-घळा पदार्थो निःसार छे. रत्नोने स्त्री सुशोभित करे छे, परंतु रत्ननी कान्ति स्त्रीने विभूपित कर-वामां कारणभूत नथी, कारणके स्त्रीओ तो रत्नोने धारण कर्या विना पण हृदयने हरी ले छे, परंतु रत्नो स्त्रीओना अंगनो संग कर्या विना चित्तने हरी शकतां नथी. हर्प तथा शोक आदिना आ-कारने छुपावनारा, शत्रुना सैन्यने जीतवा माटे कटिवद्ध थएला, करेला तथा नहि करेला सेंकडां व्यवहारोनी शाखाओथी व्याकुळ राजतंत्रनुं चिन्त्वन करनारा मंत्रीओए कहेल नीतिपर चालनारा

वन!ववी जोइए. शय्यानी लंबाइना अर्ध भागनो अष्टमांश घटाडी वाकी जेटलुं प्रमाण रहे तेटली तेनी पहोळाइ राखवी अने आयामना तृतीयांश तुल्य पायानी उंचाइ क्विक्षि अने शिर सहित राखवी. श्रीपणीं वृक्षना काष्ट्रनो वनावेल पर्यक धन आपनार थाय छे, असनना काष्ट्रनो वनावेल पर्यंक रोग हरे छे, टेंभुरणीना काष्ट्रनो बनावेळ पर्यंक धन दे छे, केवळ सीसमना काष्ट्रनो बनावेळ पर्यंक अनेक प्रकारनी उन्नति आपे छे, चंदनना काष्ट्रनो वनावेल पर्यंक शत्रुओनो विनाश करी धर्म, यज्ञा अने दीर्घायु आपे छे; शास्त्र अने सागना काष्ट्रनो वनावेस्त्र पर्येक कल्याणकारी थाय छे. चंदनना काष्ट्रनो पलंग वनावी तेने सुवर्णथी मढी तेमां अनेक प्रकारनां रत्नो जडी तेना पर शयन करनार राजानुं देवताओ पग पूजन करे छे. पर्यकनी चारे तरफना काष्टने इषा कहे छे; ए रीते पर्यकनी वाजुनां वे काष्ठ तथा ओशीका तथा पांगतना वे काष्ठनो ज्यां योग होय तेने ईपाचोग कहे छे; ए इपायोगमां काष्ट्रना मदक्षिण अग्र होय तो ते श्रेष्ठ गणाय छे अर्थात ओन्नीकावाळा काष्ट्रना अग्रभागनी साथे दक्षिण तरफना काष्ट्रनुं मुळ मेळववुं ए रीते चारे काष्ट्रने मेळववा ए शुभ लेखाय छे. एथी विपरीत क्रमे काष्ट्रनो योग थाय अथवा क्षिर:पाद काष्ट्रनो अप्रभाग एकज दिशामां होय तो ते पर्यकपर शयन करनारने भूतथी उत्पन्न थवेलो भय प्राप्त थाय छे; जे पंलगनो एक पायो अधोमुख हाय अथीत् मूळनी तरफ पायानो अप्र-भाग बनावेल होय अने काष्ट्रना अप्रभागनी तरफ पायानुं मुळ होंय एवा पलंगपर शयन करना-रना पग विकळ वनी जाय छे. जे पलंगना वे पाया अधोमुख होय तेनापर शयन करनारने अन्न पचतुं नथी अने त्रण अथवा चारे पाया अधोमुख होय तो तेनापर ज्ञायन करनारने क्रेज्ञ मृत्यु अथवा बन्धन प्राप्त थाय छे, पायानुं शिर छिद्रयुक्त होय अथवा तेमां े विवर्ण प्रन्थि होय तो ज्याधि उत्पन्न याय छ अने तेना कुंभमां प्रनिथ होय तो उदर रोग याय छे. कुंभनी नीचे पुत्र तथा स्त्री आदिथी पण शंकित रहेनारा अने दुःखतमुद्रमां हूवता राजाओंने उत्तम स्त्रीतुं आलिंगन करवुं एज कांइक सुख छे. विधाताए स्त्री शिवाय कोइ स्थळे एवुं कोइ पण रतन नथी वनान्युं के जेना श्रवणथी, स्पर्शथी, दर्शनथी अथवा स्मरणथी चित्तमां आह्नाद उप्तन्न थाय; धर्म अने अर्थतुं सेवन पण स्त्रीने माटेज छे, संतितनो अने विषय सुखनो लाभ स्त्रीथीज थाय छे, स्त्री गृहलक्ष्मी छे, एटला माटे मान अने अर्थ्यथी निरंतर तेनो सत्कार करवो जोइए. जे स्त्रीओना गुणोने एक वाजु मूकी वैराग्य मार्गथी तेना दोषोने प्रगट करे छे ते पुरुष दुष्ट छे एम समजवुं, दुष्ट पुरुषोनां वचनो पण अप्रमाणिक होय छे. एवो स्त्रीओमां कयो दोष होय छे के जे दोष पुरुषोन

जंघा होय छे, पायानी जंघामां ग्रन्थि होय तो शयन करनारनी जंघामां रोग उत्पन्न थाय छे. जंघानी नीचे आधार होय छे, ए आधारमां प्रनिथ होय तो धननो नाज्ञ थाय छे. आधारनी नीचे पायामां ख़र होय छे, ए ख़रमां ग्रन्थि होय तो अश्व आदि ख़ुरवाळां जीवथी उपाधि याय छे. दरेक इषाना तृतीयांश भागपर ग्रन्थि होय तो ते अशुभ गणाय छे. काष्ठमां निष्कुट, कोळाक्ष, सूकर नयन, वत्सनाभ, कीलक अने धुन्धुक ए रीते पद प्रकारनां छिद्र घटनी पाफक अंदरथी विस्तृत अने मुखना भागमां संकट होय ते निष्कुट कहेवाय छे. जे छिद्र मटर अथवा अडद तुल्य अने नीलवर्ण होय तो कोलाक्ष; जे अद्भ विषम, विवर्ण अने दोढ पर्व लांबुं होय ते सुकरनयनः जे छिद्र वामावर्त, भिन्न अर्थात् आरपार रन्ध्र होय अने एक पर्व छांबु होय ते वत्सनाभ, जे छिद्र कृष्णवर्ण होय ते कीळक अरे जे छिद्र कृष्णवर्ण अने भिन्न होय तेने धुन्धुक कहे छे! निष्कुट नामतुं छिद्र द्रव्यनो क्षय करे छे, कोलाक्ष नामतुं छिद्र कुळनो नाश करे छे. सुकरनयन नामतुं छिद्र श्रस्थी भय उपजाने छे, वत्सनाभ नामनुं छिद्र रोगथी भय उत्पन्न करे छे, तेमज कीळक अने धुन्युक नामनां छिद्रो पण अशुभ लेखाय छे. कीढाओए पाडेछं छिद्र पण अशुभ गणाय छे. . जे काष्ट सर्वत्र गन्थिमय होय ते कोइपण वस्तु वनाववामां ग्रुभ लेखातुं नथी. पूर्वोक्त ग्रुभ दृक्षो-ना काष्ट्रथी वनावेल पर्यकने द्युभ समजवो. वे दृक्षोना काष्ट्रथी वनावेल पर्यक अत्यंत द्युभ गणाय छे, त्रण दृक्षोना काष्ठथी वनावेळ पर्यक संताननी दृद्धि करे छे, चार दृक्षोना काष्ठथी वनावेल पर्यक धन अने उत्तम यशनी पाप्ति करावे छे, पांच द्रक्षोना काष्ट्रथी वनावेळ पर्यक पर शयन करनार मृत्युने प्राप्त. थाय छे अने छ अथवा सात वृक्षोना काष्ट्रथी बनावेळ पर्यक क्र-ळनो क्षय करे छे.

ए प्रथम न करेछ होय? अर्थात् प्रथम पुरुषोंज तमाम दोषोनुं आचरण करे छे. अने स्त्रीओ तेना पासेथी शीखे छे. पुरुषोए घृष्टताथी स्त्रीओने जीती स्त्रीओनी अपेक्षाथी पुरुष अत्रिक धृष्ट थाय छे, खरी रीते पुरुषोनी स्त्रीओमां अधिक गुण छे; धर्मज्ञास्त्रना मुख्य आचार्य श्री मरुए पण आ विषयमां कहां छे के स्त्री-ओने चन्द्रमाए शुद्धता, गन्धर्वीए सुशिक्षित वचनो अने अग्निए सर्व भक्षित्व अर्पण कर्युं छे ए-टला माटे स्त्रीओ सुवर्णनी माफक शुद्ध गणाय छे. ब्राह्मणोना पग पवित्र, गायोनी पीठ पवित्र, अजा तथा अश्वोतुं मुख पवित्र अने स्त्रीओना सर्व अंग पवित्र छेखाय छे. स्त्री एवी पवित्र छे के एना समान वीजो कोइ पदार्थ पवित्र नथी, कारण के तेने दर महिने प्राप्त थतो ऋतु तेना तमाम पापोने हरी छे छे. अनादर कराएली कुळ स्त्री जे गृहने शाप दे छे ते गृह चारे तरफथी विनष्ट थाय छे. पत्नी होय अगर माता होय, परंतु पुरुषोनी उत्पत्ति स्त्रीओथीज थाय छे. अर्थात् भार्याथी पुत्र रुपे अने मिति।थी साक्षात् पोते उत्पन्न थाय छे; पत्नी अने मातानी निन्दा करवाथी कोइनुं कल्याण थतुं नथी. स्त्रीपुरुषोना परस्पर व्युत्क्रममां अर्थात् पुरुपोने परस्त्री संगमां अने स्त्रीओने परपुरुपना संगमां सरखोज दोप लागु पडे छे. परंतु पुरुपो परस्तीना संगमां कांइ दोष देखता नथी अने स्त्रीओं परपुर्दियना संगमां दोप देखे छे एटला माटे पुरुषोधी स्त्री उत्तम छे. जे पुरुष दारातिक्रम करे अर्थात पोतानी परनीनो त्याग करी पराइ स्त्रीनो संग करे ते पुरुप गर्दभना वहिलोंभ चर्मने ओढी छ महिना पर्यंत " भिक्षांदेहि " एम कहे अर्थात् भीख मांगतो फरे त्यारे शुद्ध थाय छे. सो वर्ष वीती जाय तोपण पुरुषोनी विषयवासना निष्टत्त थती नथी, परंतु ज्ञारीरनी ज्ञाक्ति घटी जवाथी ते निष्ट्रच थाय छे अने स्त्रीओ तो धैर्यथीज निष्टत्त वने छे. निर्दोप स्त्रीओनी निम्दा करनारा पुरुषो महा पाषी गणाय छे. कामातुर थएलो पुरुप एकान्तमां स्त्री आगळ जेवां विष्ट वचन उचारे छे तेवां वचन ते पछीथी बोलतो नथी, परंतु स्त्री तो पोतानी कृतज्ञताने लीघे मृतक पतिने आलिंगन आपी आरेन प्रवेश करे छे. जे पुरुपना घरमां उत्तम स्त्री होय ते निर्धन छतां पण राजा छे एम समजवं कारण के राज्यनों सार भोजन अने उत्तम स्त्री ए वेज छे. हाथी, घोडा, रतन अने सुवर्ण आदि सामग्री तुर्णारुपी अग्निने पञ्चलित करनारां काष्ठ छे अर्थात् तेओना लाभथी तृरणा वधती जाय छे. नविन यौवनथी युक्ता, मन्दा, सुन्दरा कोमल अने स्तन्ध शन्दोनो उच्चार करती तेमज उन्नत उरोज-ाळी अंगनाना आहिंगनथी जे गुख उद्भवे छे ते सुखनो ब्रह्मलोकमां पण अभाव छे. ब्रह्म-लोकमां देवता, मुनि, सिद्ध अने चारण मान्योने मान आपे छे अने सेव्योनुं सेवन

करे छे, एथी अधिक ब्रह्मलोकमां एवं क्युं सुख छे के जे एकान्त स्थलमां अंग-नाना आलिगनथी प्राप्त न थाय ? ब्रह्माथी आरंभी कीट पर्यन्त तमाम जगत् पुरुष अने स्त्रीना योगथी वंधाएलुं छे. एमां शी लज्जा छे के ज्यां जगदीश्वर महादेवजी पण स्त्री दर्शननी लाल-साधी चतुर्भुख वन्या. (कोइएक वखते महादेवजी पार्वतीजीने अंकमां लड़ कैलासपर विराजमान हता, ते वखते तिलोत्तमा नामनी अप्सरा तेओनी प्रदक्षिणा करवा लागी, त्यारे महादेवजी पार्वती-जीना भयथी चारे तरफ मुख फेरवी ते अप्सरानुं मनोंहर रूप न जोइ शक्या, परंतु जे जे दिशा-मां ने गइ, ते ते दिशामां नूतन मुख उन्नन्न थतां गयां. ए रीते महादेवजी चतुर्मुख थया.)

राजहरपालदेवजीमां सुभग पुरुषनां सर्वोत्तम लक्षणो विराजमान हतां अने ते लक्षणोतुं तेओ यत्न पूर्वक रक्षण करता, पोते वरावर जाणता हता के सुभग पुरुप काम सवंधी सर्व सुखने उत्तम रीते प्राप्त करी शके छे. अर्थात सुभग पुरुपनी साथे रतिक्रीडा करती वेळाए स्त्रीनुं चित्त टेकाणे रहे छे. मतलब सुभग पुरुष उपर तेतुं चित्त अतुरक्त रहे छे. जेथी पूर्ण सुखनी पाप्ति थाय छे. स्त्रीतु चित्त अतुरक्त न होय तो दुर्भग पुरुषने रितमां सुखनो मात्र आभासँ थाय छे, वास्तव मुखनी पाप्ति थती नथी; रति समये स्त्री दूर उभेली होय तोपण चित्तथी जे पुरुषतुं व्यान करे छे तेना नेवोज तेने गर्भ रहे छे. जे दृक्षनुं वीज अथवा कल्डम जिमनां वाबी होय तेज दृक्ष उगे छे, अन्य द्वक्ष उगतुं नथी. अवीज रीते स्त्रीओमां फरीने पण संतानरुपे आत्माज उत्पन्न थाय छे. केवळ क्षेत्रना योगधीज तेमां कांड विशेषना अगर न्यूनता जणाइ आवे छे. जेम कोइ क्षेत्रमां वादेलां दक्ष उत्तम, कोइमां सामान्य अने कोइमां निकृष्ट उत्पन्न थाय छे, तेम स्त्री-ओमां पण समर्जा लेवुं, आत्मा मननी साथे, मन इन्द्रियनी साथे अने इन्द्रिय पो-ताना विषयनी साथे जाय छे; ए आत्माने जवानो शीघ्र ऋष एन योग छे; मनने कोइ स्थान अगम्य नथी अने ज्यां मन जाय त्यां आत्मा पण चाल्यो जाय छे. अत्यंत स्रूक्ष ए जीवात्मा हृदयनी अंदर परमान्मानी वचे स्थित छे, निरंतर अभ्यासथी चित्तने स्थिर करी हेनुं ग्रहण करवं जोडए. ज जेतुं चिन्त्वन करे छे ते तन्मय वनी जाय छे, एटला माटे स्त्री पण सुभग पुरुषनंज चिन्त्वन करे छे. दाक्षिण्य अर्थात् स्त्रीओना चित्तने अनुकूळ आचरण सुभगपणानो मुख्य हेत् छे. स्त्रीओना चित्तथी विपरीत आचरण करनारा पुरुष विद्वेषण अर्थात दुर्भग वनी जाय छे. वज्ञीकरण आदिन मांटे मंत्र, औपन अने इन्द्रजाल निगेरे कुहुक पयोगो करवाथी अनेक दोषोनी उत्पत्ति थाय

118

छे, कल्याण थतुं नथी, अर्थात् स्त्रीने वर्श करवानो मुख्य उपाय दाक्षिण्य छे, मंत्र के औषध आदि नथी। अहंकारनो त्याग करवाथी मतुष्यने सर्व विषय यह पडे छे अने अहंकारथी सर्वने दुर्भग थाय छे। अभिमानी पुरुष पोताना कार्यने कप्तथी साधी शके छे अने पिष्ट वचन वोलनार मतुष्य- तुं कार्य सहिंजमां सिद्ध थाय छे। विषय साहसत्व अर्थात् वगर विचार्य कार्य करवामां भीति अने दुष्टोए कहेलां दुवचन तेज नथी अर्थात् साहसी अने दुर्वचन वोलनार तेजस्वी गणाता नथी। जे पुरुष कार्यने समाप्त कर्या छतां पण अभिमान नथी कंतो ते खरो तेजस्वी लेखाय छे विकत्यन अर्थात् वाचाल पुरुष पण तेजस्वीनी गणनामां आवतो नथी। जे पुरुष सर्वने पिय थवा इच्छतो होय तेणे परोक्षगां सर्वनी स्तृति करवी जोइए। जे निरन्तर पराइ निन्दामां तत्पर रहे छे तेना विष अन्य मतुष्यो अनेक असत् दोपोनुं आरोपण करे छे। जे पुरुष सर्वना उपर उपकार करवामां तत्पर रहे छे तेना पर सर्व मतुष्यो अपकार करे छे; विपत्तिना वखतमां वैरी उपर उपकार करवामां तत्पर रहे छे तेना पर सर्व मतुष्यो अपकार करे छे; विपत्तिना वखतमां वैरी उपर उपकार करवायी जे यश प्राप्त थाय छे, ते अल्प पुण्यनुं फळ नथी। दुष्ट मनुष्यो गमे तेटला सज्जनोना सद्गुणोने छूपावे परंतु ते गुणो तृणना समूहथी आच्छादित करेला अग्निनी माफक दृद्धिज पामे छे। जे पराया गुणोने हणवा धारे छे ते केवळ दुर्जनतानेज प्राप्त थाय छे।

राजहरपाल देवजीए पाटडीमां राज्यनुं स्थापन कर्या बाद स्वल्प समयमांज पितभिक्ति परायण शक्तिने मखनान वंशना महोदयने दर्शावनारों गर्भ रह्यों, ते गर्भनुं सगर्भाए वर्त्तवा लाँयक सर्वोत्कृष्ट वर्त्तनथी शक्तिए संरक्षण करवा मांडयुं अने समय प्राप्त थतां सूर्यना विम्व समान तेजो- मय आकृतिवाळा कार्त्तिकेय जेवा कुमारने जन्म आप्यों, पोताना महाराजाने त्यां पाटवी कुंवरनो जन्म थतां पाटडीनी समग्र प्रजा आनंद समुद्रमां अवगाहन करवा लागी, राज मन्दिरनी रमणीय-तामां अभिष्टिद्ध करनार मांगळिक वाद्योंना मधुर निनाद गगन मंडलने गजाववा लाग्या, राजकीय पुरुषोना हृदय पण प्रसन्तताने प्रदर्शित करवा लाग्यां, आ आनंदना अवसरमा राजहरपाळदेवजीए विविध प्रकारनां पारितापकथी विम अने वन्दीजनोंने संतुष्ट कर्याः दिनप्रतिदिन कुमारनी अवस्था शुक्रपक्षना शशी समान दृद्धि पामवा लागी अने तेनुं सोढोजी ए प्रमाणे नाम राखवामां आन्धुं, त्यारपळी शक्तिने पेटे अनुक्रमे मांगुजी तथा शखेराजजी नामे वे पुत्र तथा उमादे नामनां एक पुत्रीनो जन्म थयां; शक्तिथी उत्पन्न थअला त्रणे कुमारो वाल्यावस्थामां विविध प्रकारनी क्रीडा करवा लाग्या. राजहरपाळदेवजीए तेओना संरक्षण मांटे कुलीन अने निमकहलाल मनुष्योंनी

योजना करी; जो के ते त्रणे कुमारोने खेळवा माटे जातजातनां अमृल्य जत्थावंध रमकडांओ खरीदवामां आव्यां इतां, परंतु ते जड वस्तुथी तेओने जोइये तेवो आनंद न आववाथी केटलांएक शुक, सारिका तथा गृहमयूर आदि पक्षीओंने पाळवा मांडया के जे कुमारोने प्रसन्न करवाना सवळ साधनरूप थइ पडया, ज्यारे कुमारो चालवा शीख्या त्यारे राजभुवननी अंदर तेओने आनंद आपवा माटे विविध प्रकारनां दृक्ष अने लताओथी अलंकृत एक सुंदर गृहवाटिका वनाववामां आवी अने तेनी वच्चे एक विज्ञाल तथा रमणीय होज तैयार कराव्यो अने तेमां जातजातनां रंग-वेरंगी मत्स्यो नांखवामां आव्याः तेनी साथे राज्यनी तेमज राजाना महत्वनी दृद्धि करनार शुभ लक्षण-वाळा कूमीने पण तेमां राखवामां आच्या, तेमां केटलाएक कूर्म स्फटिक अने चांदी समान ग्रुवल वर्ण-वाळा ज्याम रेखाओथी चित्रित शरीरवाळा, कलश समान कमनीय आकृतिवाळा अने सु-शोभित वंशवाळा इता, केटलाएक रक्तवर्णवाळा तेमज सर्षपनी माफक चित्रित अवय-वोथी युक्त इता, केटलाएक अंजन तथा भ्रमरनी गाफक स्याम शरीरवाळा, विन्दुओथी चित्रित, पूर्ण अंगवाळा, सर्प समान शिरवाळा, स्थूल कंटवाळा, त्रिकोण आकृतिवाळा, गुप्त छिद्रवाळा अने सुंदर वंशवाळा हता; गृहवाटिकामांविहार करती वखते मच्छकच्छनी मनोहर क्रीडाथी कुमारोना मनने प्रसन्न थतां जोइ केटळाएक परिजनोए तेओ पासे कुक्टनी आकृति तथा चेष्टा संवंधी चर्चा चलावी, जेथी त्रणे कुमारोने कुकुट दर्शननी सत्वर स्पृद्दा थइ, आ वातनी राज-हरपालदेवजीने खबर पडतां तेओए पोताना एक मबीण हज़रीने हुकम आप्यों के कुश शरीरवाळा, मन्द शब्दवाळा अने पगे लंगडा कुक्कर अञ्चभ गणाय छे माटे ते निह लेतां जेनी पांखो तथा आंगळीओ सीधी होय; मुख, नख अने चोटी ताम्रनी माफक लाल होय; शरीरनो वर्ण श्वेत होय अने जे रात्रिनी समाप्ति थतां सुंदर स्वरथी आलाप करता होय तेवा कुक्कुट खरीद करी छावो, कारण के ए ग्राम लक्षणवाळा कुकुटो राज्यनी तथा अध्वनी अभिदृद्धि करे छे. जे कुकुटनी ग्रीवा ज्ञवना जेवी आकृतिवाळी हाय, जेतुं मस्तक म्होटुं होय अने जेना शरीरनो वर्ण रक्त होय अथवा विचित्र होय तेमज जेनो देखाव सुंदर होय तेत्रा कुकुर युद्धिकेंशळ अने शुभ गणीय छे; मधु अ-थवा मञ्जूप तृत्य वर्णवाळा कुकुट पण युद्धमां विजयं मेळवे छे, माटे तेवा कुकुट पण खंतथी ख-रीद करवा, तेनी साथे राजाओने चिरकाल पर्यन्त लक्ष्मी, यश्च, विजय, वळ अने संपत्ति ज्ञाप-नारी; पृदु अने मनोहर शब्द करनारी, स्निग्ध शारीरवाळी तथा जेनां नेत्र अने मुख सुंदर होय एवी कुनकुटीओ पण छाववी के जेथी तेनो परिवार निरंतर टुद्धि पामतो रहे. आ रीते रीजेंहरं-

पालदेवजीना हुकमथी उक्त लक्षणोथी युक्त कुकुटो आन्या वाद कुमारोने क्रीडामां अधिक आ-नंद आववा लाग्यो, कोइ कोइ वखते तेओना परस्पर युद्धनुं निरीक्षण करी पोर्ते पण आवेशमां आवी युद्ध करवा उत्साह वतावता होय तेम अचानक कुदी उटता हता. ए प्रमाणे विविध वाल-चेष्टाना विनोदमां दिवसोने व्यतीत करनारा त्रणे कुमारोना अनुपम अवयवो क्षात्रीय रुधिरथी प्रफुल्लित थवा लाग्या.

मतुष्य गमे तेवा निमकहळाळ होय तोपण निमकनी शरत पाळवामां शास्त्रकारोए श्वानंत स्वेंत्कृष्ट गणेळ छे अने एथीज मतुष्यनां वत्रीश लक्षणोनी अंदर तेनां लक्षणोनी पण गणना करवामां आवी छे, एटला माटे राजहरपालदेवजीए पण रहलक्ष्मीनी दृद्धिने अर्थे केटलाएक शुभ लक्षणवाळा श्वानोनो संग्रह कराच्यो हतो. ते श्वानोना त्रण पगमां पांच पांच नख अने आगळना जमणा पगमां छ नखो हता, ओष्ट अने नासिकानो अग्र भाग ताम्र तुल्य लाल रंगना हतो, तेओ सिंहनी माफक गतिथी भूमिने सुंघता चालता हता, तेओनां नेत्र रीछ जेवा, पुच्ल अधिक वाळ-युक्त अने बन्ने कान कोमळ तथा लांचा हता, तेनी साथे राज्यनी रक्षा अर्थे केटलीएक कुक्रुरीओ पण राखवामां आवी हती के जेना त्रण पगोमां पांच पांच नख अने आगला वाम चरणमां छ नखो हता, तेना नेत्रना विहर्भागमा मिल्लकाना सुमन सरस्वी श्वेत रेखा हती तेमज शर्रारनो वर्ण पिंगल, पुच्ल बांकु अने कर्ण दीर्घ हता.

कोइएक समये राजहरपाछदेवजीना सोहाजी आदि त्रण कुमारी तथा केशरीआ चारणनो दीकरो राजमन्दिरनी समीप रहेछां विशाल चतुष्पथमां गदथी रमता हता, तेओ पोताना अंगतुं केवी रीते रक्षण करवुं ते सबंधी थोडुं घणुं ज्ञान बराबी शके तेटली अवस्थाए पहोचेला होवाथी वांडक निष्फिकर बनेला परिजनो जरा दृर उभा रही कुमारीए कराती वीडानुं अवलोकन करी रिह्या हता, तेवायां हस्तिशालामाथी लोष्टमय बन्धनोने तोडी द्वार आडी दीधेली भोगलना भूके-भूका करी महावतना अति तीत्र अंकुश्वरहारने निह गणकारतो कोटएक अपित थएलो मदोन्मच हाथी मल्यकालना मेघनी माफक गर्जना करतो विद्यत जेवा वेगथी छुट्यो, आ बखते आखा शहरमां हाहाकार थट रह्यो, त्यापारी लोको बजारमां पोतपोतानी दुकानोनां द्वार बंध करी अंदर घुसी गया; मार्गमां गमन करता केटलाएक मनुष्यो पाल्लना भागमां "भागो भागो" ए रीतना पुकारने सांभळी भयना मार्गमां सांकडी गलीओ भणी भागवा लाग्या अने केटलाएक थरथरते

देहे उन्नत अलिन्दोनो आश्रय कइ आंखोने चकरवकर करता विचारवा लाग्या के आहीं तो सरल-ताथी हाथीनी सुंहना सपाटामां सपहाइ जद्युं एम धारी फरी अलिन्द उपरथी उतरता पछडाता आम तेम दोडादोड करवा लाग्या: हाथी राजमंदिर भणी ज चाल्यो आवतो हतो अने तेनी पाछऊ जत्थावंघ कोको ज्ञोर वकोर मचावी रह्या हता. आवो महान कोळाहळ सांभळी राजक्रमारोना अंगरक्षको एकदम चौंकी उठ्या अने तेओने एकत्र करवा उतावळथी दोड्या, परंतु नविन रुधि-रथी उछळता अवयवीवाळा कुमारो तेओना हाथमां न आव्या, ज्यारे हाथी अति निकटमां आ-च्यो त्यारे अत्यंत विद्वळ हृदयथी परिजनो पुकारवा छाग्या के " हाथी गांडो थयो छे, आ तरफ आवे छे, आपने इजा करहो तो अमो सर्वस्व हारी जहां माटे हवे हडीयुं काढवी वंध करे। " परंतु गणकारे कोण ? कुमारो तो पोताना आनंदमां मस्त हता, भय द्युं कहेवाय ? ते जन्मथीज तेओना जाणवामां न इतं, तेओतो हाथीने आवतो जोइ सिंहना वाळकनी माफक निर्भयताथी सामा धस्या, तेओना अंगरक्षको वहुज गभराया अने दोडी जेवा तेओने पकडवा जाय छे तेवामां तुरतज ते त-माम उपर हाथीए इल्लो कर्यो. आ समये परम सुशोभित शक्ति राजभुवनना सातमा माळने गोखे वेटां वेटां वधी गम्मत जोतां इतां; गांढो हाथी कुमारोने अवज्य इजा करक्के, एम धारी पोते स-त्वर चतुर्भ्रज स्वरुपने धारण कर्युं अने मायाथी कनकवलयवडे कमनीय जणाता कदलीना गर्भ जेवा सुकोमळ चारे करने छंवावी त्रण करथी त्रणे कुमारोने झाली लीधा अने चतुर्थ करथी चा-रणना छोकराने टापछी मारी जेथी ते अति दूर उडी पड्यो. शक्तिना अतुल प्रभावथी हाथी श-क्तिहीन वनी गयो अने महावतो तेने वश करी हस्तिशाळामां छड़ गया. आटला वखत सधी अ-र्थात् राज हरपाळदेवजी सुधी " मखवान " अवटंकथी मार्कडेयना वंशजो ओळखाता हता, परंतु ष्यारथी सोढाजी विगेरे कुमारोने शक्तिए झाल्या त्यारथी तेओ " झाळा " ए रीते उपअवटंकथी प्रख्यात थया अने जे चारणना वाळकने शक्तिए टापली मारी हती तेना वंशजो " टापरीआ " एवी अवटंकथी आज पर्यन्त ओळखाय छे के जेओ झालाकुळना "दसोंदी" तरीकेना तमाम हकने भोगवे छे।

राज हरपालदेवजीना वंशजोनुं गोत्र मार्केडेय, वेद यजु, शाखा माध्यन्दिनी, त्रिमवर (भा-र्गव, और्व अने जामदग्न्य), कुळदेवी शक्ति, अवटंक मखवान तथा उप अवटंक झाला, इष्टदेव चतुर्भुज, हनुमान एकदंडी, भैरव केवडीओ, दसोंदी टापरीओ अने गोर मसालीओ रावळ गणाय छे.

राज हरपाळदेवजीए ज्यारे पोताना त्रणे कुमारो योग्य अवस्थाए पहोंच्या त्यारे राज्य-



ज्योतिषी आगळ उत्तम नक्षत्र, तिथि, वार आदि जोवरावी म्होटी घामधूम साथे तेओने उत्तम गुरु पासे विद्याभ्यास करवा मोकल्या, तेमां सोढाजी के जे पाटवीकुमार इता ते तीक्ष्ण बुद्धिना होवाथी स्वल्प समयमां ज केटलाएक अघरा ग्रन्थोतुं अध्ययन करी वरावर कार्यकुश्चल थया. अने मांगुजी तथा शखेराजजीए पण जोइतुं ज्ञान मेळव्युं राज हरपालदेवजीनी अवस्था दिन प्रति-दिन रुद्ध थवा लागी. तेओ पोताना स्वरुपने सारी रीते समजता हता, जेम अधम मनुष्यो रोग-ग्रस्त थइ असहा व्याधिने वेठता मृत्युवश थाय छे तेम उत्तम कोंटिना प्राणीओनुं यतुं नयी. परंतु मृत्यु सर्वने शिर छे, नाम तेनो नाश छे, प्रभुए पण जो देह घारण कर्या तो तेने पण काळना कवलरुप थवुं पडयुं, मृत्युनी महत्ता कांइ ओछी नथी, ते पोतानी सत्तानो कयारे उपयोग करहो ए आगळथी कोइ जाणी शकतुं नथी अने एथीज प्रमादी पुरुषो कर्तव्य करी शकता नथी, सांसा-रिक व्यवहारोमां रच्यापच्या रही एक क्षण पण परलंकने सुधारवाना साधनरूप श्रीहरितं व्यान धरी शकता नथी; आम अनेक मकारना तर्कवितर्क करता राज हरपालदेवजीने खबर मळ्या के मृत्युनी परीक्षा करवामां महा प्रवीण कोइ एक विदेशी वैद्य पाटडीमां आवेल छे, तुरतन पोते उक्तवैद्यराजने घणा मान साथे दरवारमां तेडाव्याः ज्यारे वैद्यराज आशीर्वचन आधी आसनपर वेटा त्यारे राज इरपाळदेवजीए तेओनी साथे केटळीएक वातचीत कर्या वाद पूछयुं के अमुक वखते मृत्युनुं आगमन थहो एम अगाउथी ही रीते जाणी शकाय ? ते कृपा करी संभळावो. त्यारे वैद्यराज वोल्या के-चरक, सुश्रुत अने वाग्भट आदि ग्रन्थोमां आर्युर्वेदनुं उत्तम रीते विवे-चन आपेछुं छे, ए ग्रन्थोने आधारे मृत्यु परीक्षानो विषय हुं आप आगळ निवेदन करुं छुं. निरोगी अने रोगी ए वन्नेने मृत्युना आगमन पहेलां भिन्न भिन्न चिह्न थाय छे. रोगीतुं आयुष्य प्रत्यक्ष, अनुमान अने आप्तोपदेश ए त्रणे प्रमाणोथी जाणी शकाय छे. आत्मा, इन्द्रि-यगण अने मन तथा इन्द्रिओना विषय ए सर्वनो अत्यंत सन्निकर्ष अर्थात एकत्र योग थवाथी जे बुद्धि प्रगट थाय छे तेने पत्यक्ष प्रमाण कहे छे. प्रथम पत्यक्ष ज्ञान पाप्त करी कार्यलिङ्गानंमान, कारणिङ्कातुमान अने कार्यकारणिङ्कानुंमान एवा त्रण प्रकारथी भूत, भविष्य अने वर्तमान ए त्रिकाल सर्वंधी अनुमान करवुं तेने अनुमान कहे छे; जेम धूम्रदर्शनथी गुप्त अग्निनुं ज्ञान थाय

क्र केटलाएक ऐतिहासिक ग्रन्थो परथी एम जणाय छे के राजहरपालदेवजी जे पारक-रना सोढानी कुंवरी राजकुंवरने परण्या हता तेनाथी नव पुत्रोनी उत्पत्ति यह हती, जेमांना आठना वंशजो अद्यापि भिन्न भिन्न स्थळे वर्तमान छे.

छे तेमां कार्य अग्न अने लिङ्ग घूम्र जेथी कार्यलिङ्गानुंगान थयुं; गर्भने जोइ पूर्वकृत मैथुननुं जे अतुमान थाय छे तेने कारण अतुमान कहे छे अने वीजने जोई थनार फळोतुं जे अनुमान कर-वामां आवे छे तेने कार्यकारणलिङ्गानुमान कहे छे. जे रजोगुण निर्मुक्त होय, तपोवल अने ज्ञानवलथी युक्त होय, त्रिकालने जाणता होय तेमज जेतुं विज्ञाद्धज्ञान निरंतर अखंडित होय एवा पुरुपोज आप्त, शिष्ट अथवा ज्ञानी छे, तेना वचनो सन्देह रहित होय छे, तेओ सत्यन वोले छे, कारणके तेओमां रजो-गुण के तमोगुण होतो नथी, एवा ऋषिओनो जे उपदेश तेने आप्तोपदेश कहे छे. शरीरनो वर्ण, स्वर, गन्ध, रस, स्पर्श, नेत्र, कर्ण, नासिका, जिह्वा, त्वचा, शरीरतुं अन्तरात्मीय वल, भक्ति, शौच, शील, आचार, त्मृति, आकृति, वल, ग्लानि, तन्द्रा, आरंभ, गौरव, लावव, आहार, आ-हारनुं परिणाम, उपाय, चिकित्सानुं फळ, रोग, रोगनुं पूर्वरूप, रोगनी पीडा, रोगनो उपद्रव, छाया, प्रतिच्छाया, स्वप्नदर्शन, दूताविकार, मार्गना उत्पात, रोगीना भिन्न भिन्न भाव अने अवस्था, औषधिना गुण, अवगुण अने रोगीना भिन्न भिन्न रोगोमां भिन्न भिन्न औषधिओतुं साफल्य अथवा नैष्फल्य ए सर्वनी उत्तम रीते प्रथम कहेला त्रण प्रमाणोथी परीक्षा करवी जोइए: ए परीक्षाओसांनी केटलीएक परीक्षा पुरुपाश्रित नथी जेमके आत्मीयवल इत्यादिः अने केटलीएक परीक्षा पुरुषाश्रित छे, जेमके क्षुधा आदिनी वाधा. जे परीक्षाओ पुरुषाश्रित नथी अर्थात ज्यां थनार मृत्युना जप-द्रवनी पोताने मतीति नथी थती त्यां तेनी परीक्षा आप्तोपदेशद्वारा करवी अने ज्यां मतीति थाय छे त्यां प्रकृति अने विकृतिद्वारा तेनी परीक्षा करवी. विरुद्ध प्रकृति थवाथी बुद्धिमान् प्रतुष्ये जाणी लेबुं के जन्मथी पडेलो स्वभाव वदलावाथी अवश्य कोइ विकृति उत्पन्न थई छे. अमुकनी वात-प्रकृति होय छे, अमुकनी पित्तपकृति होय छे अने अमुकनी कफपकृति होये छे; ते प्रकृति जाति-प्रसक्ता, क्लिंग्सक्ता, देशानुपातिनी, कालानुपातिनी, वयोनुपातिनी अने प्रत्यात्मनियता ए रीते पट् प्रकारनी छे. जेमके-

१ जातिमसक्ता (जाति-स्त्री पुरुपादि) स्त्री जातिने मसवकाळमां वातविनाशक औ-पध आपर्वुं जोइए, कारणके ते समये तेने वातनो मकोप होवानो संभव होय छे.

- २ कुळमसक्ता—कुळनी परंपराथी कुष्ट तथा मृगी आदि रोगनी उत्पत्ति थाय ते,
- ३ देशातुपातिनी-अमुक देशना मनुष्योनी प्रकृति गरम अने अमुक देशना मनुष्योनी प्रकृति शीतल होय छे.

४ काळातुपातिनी—वैशाख अने ज्येष्टने ग्रीष्मऋतु कहे छे, ए वने महिनामां वायुनो संचय थाय छे, अने ए संचित वायुनो अपाढ तथा श्रावणमां कोप थाय छे अने एवीज रीते भाद-पद अने आश्विन मासने वर्षाऋतु कहे छे. ए महिनाओमां पित्तनो संचयं थतां कार्तिक अने मार्गशिपमां कोप थाय छे. काळातुरुप प्रकृतिनो सारांश ए छे के जे ऋतुमां जेवी प्रकृति होवी जोइए तथी विपरीत थवाथी अरिष्ट थएळ छे एम समजवं.

५ वयोतुपातिनी-द्रद्धावस्थामां मनुष्यने कफपकृति याय छे ते.

६ प्रत्यात्मनियता-क्षुघां वियासा आदि.

मतुष्य मात्रनी श्चुधा पिपासा आदि प्रकृति एक सरखी ज होय छे, पोतपोतानी जाति, कुळ, देश, समय, आयु अने आत्माना कारणथी मतुष्योनी भिन्न भिन्न प्रकृतिना भाव जणाय छे.

विकृति त्रण प्रकारनी होय छे. एक छक्षणिनिषित्ता, बीजी छक्ष्यिनिष्त्ता, त्रीजी निषित्तानुरुप शरीरमां जे विकृतिनां चिह्नो सकारण विकृत यह शरीरना कोइ कोइ अवयवोमां वंधाइ जाय अने फरी एज चिह्न वखतोवखत एज स्थानमां प्राप्त थाय तेने छक्षणिनिष्त्ता विकृति कहे छे; जे विकृति निदानोक्त निषित्तोन मळती होय ते छक्ष्यिनिष्ता कहेवाय छे, अने निषित्तार्थने अनुकरण करनारी विकृतिने निषित्तानुरुपा कहे छे. कदाच ए विकृति अकारण उप्तन्न थइ होय तो ते आयुषनुं प्रमाण जाणवामां निषित्तरूप थइ पडे छे. विना कारण रोगनी उप्तित्त थवी ए वात असंभवित छे, एवीन रीते आयुनो क्षय अने मृत्युना चिह्नने अनुरूप ए निषित्तानुरुपा विकृति अन्तर्गत आयुनुं ज्ञान करावनारी गणाय छे. मनुष्योना झरीरनो वर्ण वे प्रकारनो होय छे, एक प्राकृतिक अने वीजो वैक्तारिक, तेमां "कृष्ण वर्ण " "कृष्ण श्याम " " त्याम गौर " तथा " गौर " विगेरे प्राकृतिकवर्ण गणाय छे अने " नीलश्याम " " ताम्रवर्ण " तथा हित्त अने श्वेत ए वर्षा वर्ण वैक्तारिक छे. प्रकृतिक वर्णथी भिन्न अने प्रथम कोइ वखत शरीरमां निह्न उद्भवेला वर्णोने पण वैक्तारिक समजवा जे मनुष्यना अर्थ शरीरमां प्रकृतिक वर्ण अने विकारिक वर्ण होय तथा जेनुं वामअंग अने दक्षिणअंग अथवा शरीरमां पूर्वभाग अने पश्चिमभाग तेनीज रीतनो होय अर्थात् अर्थ शरीर पाकृतिक वर्णथी अने अर्थ शरीर वैकारिक वर्णयी युक्त होय ते मनुष्य मृत्युने प्राप्त थाय छे. जे मनुष्यना मुख उपर अथवा नीचेना भागमां वर्णयी युक्त होय ते मनुष्य मृत्युने प्राप्त थाय छे. जे मनुष्यना मुख उपर अथवा नीचेना भागमां

वाम अथवा दक्षिण अंगमां तथा आगळ अथवा पाछळ वैकारिक वर्ण होय तेतुं पण मृत्यु थाय छे. एवीज रीते जेना एक अंगमां ग्लानि अने वीजा अंगमां हुई तथा एक अंगमां रौक्ष्य अने वीजा अंगमां स्निग्धता होय ते पण मरी जशे एम समजबुं. जे मनुष्यना मुखपर रंग वेरंगी झांइ देखाइ आवे अथवा तिल अने न्हानी न्हानी फोडलीओ उपडी आवे ते पण मृत्युवश वने छे. जे मनु-ष्यना नख, नेत्र, शरीर, मृत्र, विष्ठा, हाथ, पग, तथा होट आदि विकृत वर्णथी युक्त होय अने वर्ण तथा इन्द्रिय वळहीन वनी गयां होय तेतुं आयुष्य तुरतमां क्षय पामे छे; अथवा अकस्मात् भयम न थएलो विकृतवर्ण रांगीना शरीरमां उत्पन्न थाय तो अवज्य ते मृत्युने प्राप्त थाय छे. मतु-ष्यनो स्वाभाविक स्वर इंस, कौंच, नेभि, दुन्दुभि, कलविङ्क, काक अने कपोतना स्वर जेवो होय छे. एडकप्रस्त, अव्यक्त, गद् १दू, क्षाम, दीन अने अनुकीर्ण स्वर वैकारिक गणाय छे; ए रीतना वीजा स्वरो तथा अभूत विपरीत स्वरनुं अकस्मात् उचारण थइ जाय ते पण वैकारिक स्वर लेखाय छे. जे स्वरोनी प्रकृतिमां विकार थड़ जाय छे, ते स्वरोनी उत्पत्ति अनेक प्रकारे अत्यंत शीघ्रताथी थाय छे अने एक स्वर बोलबा जतां तेनी साथे अनेक स्वरनी प्रतीति थाय छे ए अमंगलसूचक छे जे मनुष्यना संपूर्ण अथवा अर्ध शारीरमां कोइ कारणथी अथवा कारण विना विकृत वर्ण दे-खाइ आवे तो तेने मृत्युनुं चिह्न मानवुं; जेम कोइ मनुष्यनुं मुख अर्ध भागमां नील, इयाम, ताम्र-वर्ण अथवा रक्त होय, कोइनुं मुख अर्ध भागमां हर्षान्वित अने अर्ध भागमां ग्लानियुक्त होय तथा कोइतुं मुख अर्ध भागमां स्निग्ध अने अर्ध भागमां शुष्क होय तो तेवा चिह्नवाळा मनुष्यने मृतक समजवो. मरनार मतुष्यना मुख उपर अनेक प्रकारना तिल, रंग वेरंगी झांइ अथवा एक रंगनी रेखा तुरतमां ज उत्पन्न थाय छे. दांत तथा नखो उपर पुष्पना जेवो आकार प्रकट थाय तेमज दांतोमां कादवना तुल्य मेल अथवा रेती जेवुं चूर्ण भराएछं जोवामां आवे तो तेने मृत्युतु लक्षण छेखवुं. वलहीन मतु-प्यना होठ, हाथ, पग, नेत्र, मूत्र, विष्टा अने नख विगेरेमां स्थाम अथवा नीलादि रंग प्रकट थाय ते मृत्दुसुचक छे. जे मनुष्यना उभय ओष्ट परिषक्व जांबु जेवा वर्णने धारण करे ते मनुष्यने मतक समजवी. जे रोगीना कंडमांथी एक स्वरनो उचार करतां अनेक स्वर निकळवा लागे ते पण मृत्युने प्राप्त थाय छे. क्षीण मनुष्यना स्वर तथा वर्णमां कोइ प्रकारनो विकार उप्तन थाय ते पण मृत्युनुंज चिह्न छे. जेम थनार फळनुं पूर्व रूप पुष्प होय छे, तेम मरनार मनुष्यनुं पूर्व रूप "अरिष्ठ" एवा नामथी ओळखाय छे. केटलाएक पुष्प एवां होय छे के जेनां फळ थतां नथी अने केटलांएक फळ पण एवां होय छे के जेनां पुष्प होतां नथी, परंतु मृत्युना पूर्व रूपमां अरिष्ट

ि एगर

अर्थात् मृत्युनो उपद्रव अवश्य पुष्पनी पेठे वर्त्तमान होय छे. पूर्वेरूप अरिष्टनी एत्पत्ति विना कदि पण मरण थतुं नथी. अरिष्टनी पाछळ अवदय मृत्यु होय छे. वैद्यवर महर्षि वाग्भट्टे पण पोतानी संहितामां विवेचन आप्युं छे के जेम फळनी उत्पत्ति पहेलां पुष्प, अग्निनी उत्पत्ति पहेलां यूम्र अने वर्षानी उत्पत्ति पहेळां वादळांओ उदय पामे छे, तेप मृत्युना आगमन पहेळां अरिष्ट उदय धया विना रहेतो नथी. ए अरिष्ट दोषोना प्रकोपथी थाय छे. तेना वे भेद छे. एक स्थायी अने बीजो अस्थायी; तेमां दोषोनी ज्ञान्ति करवाथी ज्वर आदि नामनो अस्थायी अरिष्ट ज्ञान्त थाय छे. परंतु स्थायी अरिष्टनो विकार सूक्ष्म वनी द्यारीरना आन्तरिक अंगोपांगोमां पोतानोईमभाव जमात्री **£्रिमतुष्यने प्राणरहित करे छे अर्थात् स्थायी अरिष्ट्यी अवश्य मृत्यु थाय छे. अरिष्टतुं मिथ्याज्ञान** इमेशां हानिकारक छे, अरिष्ट न होय तेने अरिष्ट जाणनारा मनुष्ये पुष्पित अरिष्टद्वारा पृत्युझान 🚂 मेळवबं जोइएं. जे मृतुष्यना देहमांथी रात्रि दिवस अनेक द्वश्च तथा छताओथी भरेका वननां वि-विध पुष्पो संगान सुगन्य छुटतो होय तेने "पुष्पित अरिष्ट" वाळो समजवो अने ते एक वर्षनी ्रिअंदर देहनो त्याग करे छे. जेना शरीरमांथी उत्तम अथवा अधम कोइएक पुष्पना सरखो गन्ब निकळे ते पण एक वर्षनी अंदर मृत्युने माप्त थाय छे. जेना देहमांथी अनेक मकारनो दुर्गन्ध छुटे तेनी पण एज गति थाय छे. जेना स्वच्छ अथवा अस्वच्छ शरीरमांथी कारण विना छगन्य अ-थवा दुर्गन्ध निकळे ते पुष्पित अरिष्टवाळो मनुष्य एक वर्षथी अधिक जीवी सकतो नथी. जेना देहमांथी चंदन, कुछ, अगर, तगर, मध्य, माल्य, मूत्र, परीप तथा शवना जेवो अथवा ए सर्वथी अतिरिक्त गन्ध कारणसर प्रकट थाय तो तेने पूर्वोक्त अनुमानद्वारा पुष्पित अरिष्टवाळो जाणी ते एक वर्षनी अंदर मरी जहां एम मानवुं मक्कतिस्थ मनुष्योना देहमां जे रस उप्तन थाय छे ते रस मरण समये वे प्रकारनो वनी जाय छे. कोइना देहपां अत्यंत माधुर्य होय छे अने कोइना देहमां अत्यंत विरसता व्यापे छे. विकृत रसने अनुमानथीज जाणी शकाय छे. मरण समये मतुष्यना देइमां वैरस्य उत्पन्न थवाथी मिसका, यूका, डांस अने मच्छर आदि दूर भागी जाय छे. ज्यारे परण समय निकटमां आवे छे त्यारे मनुष्यना देहनो रस अत्यंत मधुर बनी जाय छे. एटला माटे स्नान करावेला अने चन्दनथी चर्चेला देश पर चारे तरफथी मिसकाओ आवी वेसे छे. घणे भागे स्पर्तथी रोगीना आयुपतुं प्रमाण थर बाके छे. प्रकृतिस्थ अर्थात् रोग रहित मनु-

ष्यना हाधथी रोगीना देहनो स्पर्श कराववो. शरीरना निरंतर स्पेन्दमान अंगोतुं वन्ध धर्वु, निरं-तर उप्ण रहेनारा हाथ, पग, शिर अने छाती ,आदि अंगोतुं शितलं थंबुं; कपोल तथा जैंचा आदि पृदु अंगोतुं कठोर थवुं; ओष्ठ. मुख, हाथ तथा पग आदि स्निग्ध अंगोतुं ऋक्ष थवुं; ऐकि सरला अंगोतुं विना कारण वधघट थवुं, सन्धिओतुं संहों, भ्रंहों अने न्यवर्ने थवुं; शरीरमां मांस तथा रक्तनी न्यूनता थवी, समग्र देहतुं कठिन थवुं, प्रस्वेदतुं वंध थवुं, शरीरतुं स्तंभन थवुं तथा स्पर्शने अयोग्य अंगोमां अकारण अत्यंत विकृतिनो उद्भव इत्यादि लक्षणो आसन्न मृत्युनां सम-जवां. रोगीना पग, जांघ, छाती, स्फिक्, उदर, पांसळी, पीठनुं हाढकुं, ग्रीवा, तालु, ओष्ठ अने ललाट आदि पृथक् पृथक् अंगो प्रस्वेदयुक्त अथवा श्रीतल थइ जाय तो ते रोगीने मृतक समजवो अथवा ते थोडा समयमां मरी जहा एम मानदूं. जो पिंडिओतुं मांस अस्थिनो परित्याग करे अथवा जांवतं मांस पोतानी जांवना अस्थिने छोढी दिए अथवा छातीतुं मांस छातीना अस्थिओने तजी दिए अर्थात् उक्त स्थानोतुं मांस शुष्क थइ जाय, गुदा वाहेर निकळी जाय, द्वषण पोताना स्थानने छोडी दिए, गुह्येन्द्रिय पोताना स्थानने छोडी वांकु वळी जाय, नाभि पोताना स्थानने छोदी नीचे नमी जाय, अंस, स्तन, मणिक, हनु, नासिका, कर्ण, नेत्र, भ्रक्कटी अने शंख आदि अवयवो पोतपोताना स्थानथी सस्त, व्यस्त अथवा च्युत थइ जाय तो तेवां लक्षणवाळो पुरुष स्व-ह्य समयमांज परणने प्राप्त थाय छे. एवीज रीते श्वास, मन्या, दांत, पापण, नेत्र, केश, रोमावलि, चदर, नख अने आंगळीओनी पण परीक्षा करवी जोइए. जे रोगीनो श्वास अति दीर्घ अथवा अति मन्द होय तेने मृतक समजवो. जे मनुष्यना कंडनी नाडी फरकती वंध पडी जाय ते कदि जीवी शकतो नथी, तथा जे रोगीनां दांत श्वेत रंगना मेलथी भरेला होय अने तेना पर रेती जेवं चूर्ण जामी गयुं होय ते रोगी मृत्युने आधीन थयो छे एम मानवुं. जे रोगीनां नेत्र प्रकृतिहीन अ-र्थाद स्वभावथी विलक्षण, विकृतियुक्त, अत्यंत वहार निकलेलां, अंदरना भागमां वहुज वेसी गएकां, अत्यंत वांकां, अत्यंत अपित अथवा अश्रुधाराथी अति शिथिल वनी गएलां. निरंतर उघटेकां, निरंतर विंचाएलां अथवा वारंवार खुलतां अने वारंवार बंध थतां

१ वने इाथनी नाडी, बमें पगनी नाडी, कंट नीचेनी नाडी, नासिका नीचेनी नाडी, बमें कर्णनी नाडी अने जीहानी नाडी विगेरें फरकवानां स्थान छे. ३ सरी जवुं. ३ विस्कृत्व तुटी जवुं. ४ शिथिल थवुं.

भ्रमयुक्त दृष्टिवाळां, विपरीत दृष्टिवाळां, हीन दृष्टिवाळां, न्यस्तदृष्टिवाळां, नकुळ तथा पीत, अलात, कृष्ण, नील, ज्याम, ताम्र, हरिन्द अने ग्रुक्त आदि वैकारिक वर्ण-वाळा होय तो तेने गतायु समजवो; जो एवी दृष्टिवाळा रोगीनां पक्ष्म परस्पर चोटी गएलां होय तो पण तेंतुं मृत्युज थाय छे. जेना केश तथा छोम उखडवा मांडे अने ते शा कारणथी उखडे छे ते जाणवामां न आवे त्यारे ते मनुष्यने मृत्यु प्राप्त थहो एम समजवुं. मुच्छी अथवा वेहोंशीना वखतमां आ परीक्षा करवानी नथी. जे रोगीना पेट उपर नसो चमकती होंय अने ते नसोनो ज्याव, ताम्र, हारिद्र अथवा ग्रुक्तवर्ण होय तो ते मनुष्य मृतक समजवो. जे रोगीना नख, मांस अने रुधिर रहित होय तथा तेनो रंग पाकेळा जांबु जेवो होय तो वे रोगीने गतायू गणवो. जे रोगीनी आंगळीओना टचाका न फूटे तेने पण मृतक मानवो. जे मनुष्यरे आकाश पृथिवी जेवुं तथा पृथिवी घनयुक्त आकाश जेवी जोवामां आवे ते तुरतमां ज मरणने शरण थाय छे; आकाशनो वायु जेना जोवामां आवे, जे पासे पडेला प्रज्वलित अग्निने देखी न शके, जे निर्मळ जळनी अंदर जाळ देखे, जे स्थिर जळने चलायमान देखे, जे जागृतिमां मृतक मतुष्यने भयानक रूपवाळा राक्षसने अथवा वीजा कोई अद्भूत पदार्थने देखे तथा जे मनुष्य य-थार्थ अग्निने नील, कान्तिहीन, काळो अथवा श्वेत देखे ते सात रात्रिथी वधार वखत जीवी शकतो नथी. जे मनुष्य किरण रहित आकाशमां किरण देखे, वादळ रहित आकाशमां वादळांत्रो देखे अने वादळ विना विजळी जेना जोवामां आवे ते मनुष्य मरी जशे एम मानवुं, जे शुद्ध चन्द्र तथा शुद्ध सूर्वने नीळ वस्रथी आच्छादित करेल मृत्तिकाना पात्र तुल्य देखे, दिवसे अनुदित चन्द्रने देखे, अपि विना भूमने देखे, प्रभाहीन द्रव्यने प्रभायुक्त तथा प्रभायुक्त द्रव्यने प्रभाहीन देखे अने रा-त्रिमां अंगारने न देखे ते मनुष्यने मृतक समजवो. आयुनो क्षय थवायी मनुष्यने दरेक द्रव्य विक्व-तरुपे देखाय छे, अधीत् कांइने वदछे कांइ जोवामां आवे छे. तेमन जे विकृतवर्ण, विकृत संख्या, विनिमित्त अने औंदृश्य पदार्थने देखे तथा सन्मुख स्थित थएला पदार्थने न देखे ते मनुष्य मृत्युने प्राप्त थाय छे. जे मनुष्य शब्द विना शब्द सांभळे अने शब्द थता होय तेने विधरनी

१ जे वस्तु आंख आगळ न होय, पोताथी दूर होय छतां कहेके अमुक मनुष्य पोताना घर अथवा गाममां फलाणु काम करी रह्यों छे अथवा आवते दिवसे एवं वने के तेनं कथन सत्य थाय ए अहहप.

पेठे न सांभळे तेमज कर्णना उभय छिद्रमां आंगळीओ नांखतां ज्वाला शब्द न सांभळे तेने गतायु गणतो. जेने दुर्गन्थमां सुगन्थनी तथा सुगन्थमां दुर्गन्थनी प्रतीति थाय अथवा खुगन्थ तथा दुर्गन्थ वनेतुं हान न थाय ते यनुष्य मृत्युथी वची शकतो नथी, परंतु एक प्रवो पण रोग थाय छे के मनुष्यने सुगन्थ के दुर्गन्थ वनेतुं भान होतुं नथी छतां वलहानि के मृत्यु थतुं नथी. जे मनुष्यने सुखपाक विना खानपानमां विपरीत स्वाद आवे अथात् खाटाने वदले खारुं अने खारांने बदले गळ्युं छागे ते पण मृत्युने प्राप्त थाय छे. जे मनुष्यने छष्ण, शीत, शुष्क, स्निग्ध, मृदु अने दारुण विगरे पदार्थोना स्पर्श्यी विपरीत भावना पेदा थाय तेनुं आयु क्षीण थयुं छे एम समजनुं. जेम मनुष्यने तीत्र तप कर्या शिवाय तथा विधिवत् योगने साध्या विना र अतीन्द्रीय पदार्थोनुं झान थाय तेमज जे पुरुप स्वस्थ छता चलायमान बुद्धिने छीचे पोतानी समस्त इन्द्रिओमां वैपरीत्य देखे ते स्वल्प समयमांज यमपुर भणी प्रयाण करे छे.

## स्वप्नना सात प्रकार छे.

- १ द्रष्ट-नागृत अवस्थामा जोएल पदार्थनुं दर्शन शाय ते.
- इ श्रुत-सांभळेला पदार्थ जोवामां आवे ते.
- ३ अतुभूत-अतुभनेला पदार्थ जोवामां आवे ते.
- ४ प्रार्थित-इच्छित पदार्थ जोवामां आवे ते.
- ५ कल्पित-कल्पेका पदार्थो जोवामां आवे ते.
- ६ भाविक-आगळ उपर थनारी वात पूर्वे जोवामां आवे ते.
- ७ दोपज-वात, पित्त अने कफना कोपथी जे स्वप्न थाय ते.

आ सप्त स्वप्नोमांथी प्रथमनां पांच निष्फळ अने वाकीनां वे सफळ गणाय छे दिवसे थएछं अति न्हानुं, अति दीर्घ तथा रात्रिना प्रथम भागमां अथवा पाछला भागमां जोएछं स्वप्न हमेशां निष्फळ होय छे. जे स्वप्न जोया पछी उंघ न आवे ते तात्कालिक फळने आपनारुं छे. अमंगल स्वप्नने जोया पछी एज निद्राभां उत्तम स्वप्न देखाय तो प्रथम थएला अग्रुभ स्वप्ननुं फळ व्य-

१ जे इन्द्रिय द्वारा जे वस्तुनुं ज्ञान थवुं जोइए ते न थता तथी अतिरिक्त ज्ञान धाय तेने अतिन्द्रिय कहे छे. जेमके रुपनुं ज्ञान नेत्रथी थवुं जोइए तेने वदले शब्द सांभली कही आपवुं के वोकनारनुं रुप अमुक प्रकारनुं छे. इत्यादि.

र्थताने धारण करे छे. वात, पित्त, अने कफ ए त्रिदोपना कोपयी मनोवाही प्रवाहोने पूर्ण करी दारुण अने अदारुग एम वे प्रकारनां स्वप्न थाय छे, मनुष्यने निद्रामां मनना कारणथी ने अने-क प्रकारनां स्वप्नो जोवामां आवे छे, ते वखते सफळ थाय छे अने वखते निष्फळ पण थाय छे. जे मतुप्यतुं वळ घटतुं जतुं होय अने जेने प्रतिज्याय नामनो रोग छागु पड्यो होय एवे। माणस कदाच स्त्रीसंग करे तो तेतुं शोप नामना रागथी मृत्यु थाय छे. जे मनुष्य स्वष्नमां श्वान, उंट अथवा गर्दभ उपर चढी दक्षिण दिजा तरफ जतो होय तेनुं यक्ष्मा नामना रोगथी मृत्यु थाय छे. जे मनुष्य मरेला मनुष्यनी साथे मद्ययान करे अने जेन स्वष्नमां श्वान खेंचता होय ते माणस तुर-तन पवळ ज्वरना वेगथी मृत्युवश थाय छे. जे मतुष्य स्वच्छ आकाशने लाक्षानी माफक लाल देखे ते रैक्तिपित्तना रोगथी मृत्यु पामे छे. जे मनुष्य स्वप्नमां लाल पुष्पोनी माळाने धारण करी पोताना समग्र देहने रक्तवर्णथी रंगे अने छाछ वस्नोने धारण करी इसतो इसतो स्त्रीओने हाथे ह-राइ जाय तेनुं पण रक्तिपित्तथीज मृत्यु थाय छे. जे मतुष्यने स्वममां उदरशूल थाय, पेटे आफरो चढे, दुर्वळता प्राप्त थाय, अथवा नखो विवर्ण वनी जाय तेमतुं गुप्त नामना रोगथी मृत्यु थाय छे. स्वमनी अंदर जेमनी छातीमां कंटकनी वेल उत्यन्न थाय ते मनुष्यतुं मरण पण गुरम रोगथी थाय छे. हाथ अडाडतांज जेनी त्वचा फाटी घाव पडी जाय, ते मनुष्यनुं कुष्ट नामना रोगथी म-रण थाय छे. जे स्वप्तमां नग्न थइ देहमां घृतनुं लेपन करे अथवा प्रज्वलित नहि थएला दहनमां हवन करे अथवा पोतानी छातीमांथी उत्पन्न थएल कमलहक्षने मफुछित देखे ते मनुप्यनुं पण कु-प्रथीज मृत्यु थाय छे. जे मनुष्ये उत्तम रीते स्नान करी चन्दन आदि सुगन्धित पदाथोंथी शरीरे लेप कर्यों होय छतां तेना शरीरपर मिलका आदि जंतुओं वेसतां होय तो ते मनुष्यनुं ममेह नामना रोगथी मृत्यु थरो एम समजवुं. जे मनुष्य स्वष्नमां चांडाळनी साथे अनेक प्रकारना स्निग्ध पदार्थोंनुं भोजन करे ते पण प्रमेहथीज मृत्यु पामे छे. जेने अस्थानसंभव ध्यान, आयाम, उद्देग, मोह, अरैति अने वलहानि थाय तेनुं मृत्यु उन्मादथी निष्ने छे. जे मनुष्य भो ननथी द्वेष करे अर्थात् खाइ न शके

<sup>?</sup> मुख, कर्ण, नासिका, गुदा, मूत्रस्थान, नेत्र, तथा प्रस्तेदथी रुधिर वहे अने आखा शरीरमां घारां पढी जाय एवा रोगने रक्तिपत्त कहे छे.

इ उदरमां एक गांठ थाय छे अने तेनी पीडा अति असहा थइ पढे छे, तेमज भूख न लागे अने शारीर मुकातुं जाय तेवा रोगने गुल्म कहे छे. ३ मनने क्यांइ चेन न पढे ते.

अने जेतुं चित्त चलायमान रह्या करे एवो रउदर्द नामना रोगवाळो पण उन्मादथीज मरण पाम छे. अति क्रोधी, अति भीरु, निरंतर इसमुखो, वारंवार मूर्डित तथा पिपासायुक्त थनारो तेमज स्वप्नमां राक्षसो साथे नृत्य करनारो मनुष्य उन्मादना व्याविथी मृत्युवश थाय छे. जे मनुष्य चगर अन्धकारे अंधारुं देखे, कोइए बोळावेळ न होय छतां पोताने कोइ बोळावे छे एम धारी निद्रा-मांथी जागी उठे अने जागृत थया छतां पण नाना प्रकारना स्वरोने सांभळे ते मृगी नामना रोगथी मर्ण पामे छे. जे मतुष्य स्वप्नमां मदोन्मत्त थइ नाचवा लागे अने ते समये कोइ मृतक मतुष्य तेने मारवा छागे एतुं पण मृगी रोगथीज मृत्यु थाय छे. जागृत मतुष्यनी हतु, मन्या अने नेत्रो स्तब्ध वनी जाय अथीत् वीलक्कल हले निह त्यारे समजवुं के ते माणस धनुर्वात नामना रोगथी पीडित थइ मृत्यु पामहो. जे मनुष्य स्वप्नमां पुरी तथा मालपुआ आदि पकवात्र खाय ते पण धनुर्वीत नामना रोगथीज वमन करी मरण पामे छे. जेना शिरकेशमां वंश, गुल्म अथवा छता आदिनी मतीति थाय, जेना शिर अथवा शरीर माथे काक आदि पक्षी वेसे; स्वप्नमां जेतुं शिर मुंडाय, जेने स्वप्नमां गृघ, उल्रुक, खान अने काक आदि दुष्ट पक्षी रोके, जेने राक्षस, प्रेत, पिशाच, स्त्री, चांडाल अने असुरसमूह स्वप्नमां रोकी राखे. जे स्वप्नमां वंश, वेत्र, लता, पाश, तृण तथा कंटक आदिथी पीडित थाय अर्थात् संकटमां मुंझाइ चाल्या करे अथवा पडी जायः जे स्वप्नमां रेताळ जमीन उपर, सपेना राफडा उपर, भस्पमां, इमशानमां, देवस्थानमां, खाडामां, मूत्र तथा पुरीष आदिथी यक्त खराव जळमां, कादवमां, अथवा जल रहित कूपमां पडी जाय, जे मनुष्य स्वप्नमां नदीनी अंदर स्नान करतो करतो तणाइ जाय, जे घृत अथवा तेलतुं पान करे, जे मतुष्य स्वप्नमां श्ररीरे तेलतुं पर्दन करे, वपन करे, जुलाव लिए, जेने स्वप्नपां सुवर्ण पळे, जे स्वप्नपां कोइनी साथे युद्ध करे, वन्धन पामे, हारी जाय, पगरखां खोवे, पोता उपर धूळ अथवा पगरखांने पडतां जोवे, जेने स्वप्नमां पोताना मृतक मनुष्यो द्वारा त्राप उत्पन्न थाय, जे स्वप्नमां दांत, चन्द्रमा, सूर्य, नक्षत्र, अग्नि आदि देवता, दीपक, चक्षु अथवा पर्वत आदिने पडतां, नष्ट थता अथवा तुटी जता जोवे; जे पुरुष स्वप्ननी अंदर लाख पुष्पोना वनमां, वध भूमिमां अथवा अन्धकारमय गुफामां

१ अतरहाना प्रहारथी जेम त्वचामां छालां पढी जाय छे तेम आखा शरीरमां छालां पडी जाय अने तेमां चळ आवे, सोइ भोंकवा जेवी पीडा थाय, वमन थाय, दाह थाय अने उक्त छालां-ओ रक्तवर्ण वनी जाय तेने उदर्द-पित्ती कहे छे. २ शरीर वारंवार धनुष्यनी माफक नभी जाय, वारंवार मूर्छा आवे अने जेमां ताण थाय तेने धनुर्वात कहे छे.

प्रवेश करे; जे मतुष्य स्वप्नमां छाल पुष्पोने घारण करी खडखडाट इसे अथवा नग्न थइ दक्षिण दिशामां जाय अथवा वानरनी साथे घोर वनमां प्रवेश करे; जे पुरुष स्वप्नमां नग्न, दंडधारी, कृष्णवर्ण, अने रक्त नेत्रवाळा तथा भगवां वस्नने धारण करनार असौम्य मनुष्यने देखे अने जेने स्वप्ननी अंदर काळी पापिणी, दुराचारिणी, छांत्रा केशवाळी, छांत्रा नखवाळी, दीर्घ स्तनवाळी तथा कुत्सितमाळा अने कुत्सित वस्त्रोने धारण करनारी स्त्रीनां दर्शन थाय ते मतुष्यतुं मृत्यु थाय छे; कारण के ए वर्धा स्वप्नो दारुण गणाय छे. दारुण स्वप्नने देखी रोगी मरण पामे छे अने निरोगी रोग युक्त थाय छे. दुष्ट स्वप्नने देखी तेना दुष्ट फळथी भाग्येज बची शकाय छे. जे मनुष्यने वोलवाथी हृद्य उपर अत्यंत पीडा थाय, जम्या पछी स्वरूप समयमांज वमन थाय, कदाच भोजन करेलुं अन्न उदरमां रहे तो पण ते पचे निह, पोतानुं वळ निरंतर घटतुं जणाय, तृपा वधती जाय अने हृदयमां शुळ पेदा थायते वयारे तखत जीवी शक्तो नयी, वैद्ये एवा रोगीने त्याज्य गणवो. कारणके कोइ पण औषध एवा रोगने अटकावी शक्तुं नथी. जेने गंभीरा' नामनी हेडकी उत्पन्न थाय अने मळ निकळवाना द्वारथी रुविर वहेवा लागे तेवा रोगीने आत्रेयी आज्ञानुं स्मरण करी वैद्ये औपध आपवुं नहि, कारणके मृत्यु निकट आवे त्यारेज गंभीरानी उत्प-त्ति थाय छे. जो दुर्वळ देहवाळा मतुष्यने आफरो चढे अथवा अतिसार यह आवे तो तेतुं जीवन कठिन थइ पढे छे. जे रोंगी दुर्वळ होय अने आफरो तथा पिपासानी दृद्धिथी पीडित थतो होय ते अवज्य मरण पामे छे. जेना ज्ञारीरमां निरंतर ने महर पर्यग ज्वर रहेतो होय, ग्रुष्क खांसी दिन प्रतिदिन दृद्धि पामती होय अने मांस घटतुं जतुं होय एवा रोगीने मृतक मानवो जोइए. जे-ना मळ तथा मृत्र ग्रन्थि युक्त यह निकळतां होय अने शरीर हर वखते थंडुं पडी जतुं होय एवा मनुष्यने कदाच उदरनो रोग होय तो तेतुं शासथी पृत्यु थाय छे. जेनो कुक्षिस्थ श्वयथु हाथे अ-थवा पो उतरे ते पोताना कुटुम्विओने क्लेश आपी श्वासरोगथीन पाण रहित वने छे. जे रोगीना पुगमां सोजा होय अने ए सोजा पिंडीए तथा जाघ उपर चडे तो ते कदिपण बचवा पामतो नथी. जे मनुष्यना हाथ, पग, गुह्य अने उदर उपर सोजा चडी गया होय तथा जेना आहार, वर्ण अने वळ मन्द

१ जे हेडकी नाभि पासेथी उत्पन्न यह गंभीर शब्द करे तेने "गंभीरा" कहे छे अने तेनाथी पिपासी, ज्वर, अन्न उपर अरुचि, शोथ, कृशता, वकवाद, श्वास, अतिसार, मस्वेदनुं आधिवय, कंठमां कफनुं बोलवुं, शरीरे शीतलता माप्त थवी अने अन्तर्दाह आदि अनेक उपद्रव थाय छे।

यइ गयां होय ते रोगी त्याज्य गणाय छे. जे मनुष्यने कासनी साथे छीलो, पीळो अथवा स्नाल कफ पहतो होय, जेने सान्द्रममेहनी साथे रोगोद्गम थतो होय, सोजा चडी गया होय, खांसी तथा ज्वर पण लागु पढेल होय अने मांस सुकाइ जवाथी मात्र अस्थिओज देखातां होय पवी रोगी पण त्याज्य गणाय छे. अथीत एवा रोगीनी चिकित्सा न करवी, कारणके जेने सान्द्रवैमेहनो रोग लागु पड्यो होय ते माणस कदि पण जीवी शकतो नथी। वळहीन अने दुवेळ मनुष्यना त्रणे दो-षों कुपित यह ज्यारे कोइएक प्रकारना रोगने प्रगट करे त्यारे ते मनुष्यनं जीवन दुर्वळ छे एम जाणवुं जे दुर्वळ मनुष्यने मथम ज्वर तथा अतिसार थये होय अने पाछळथी सोजा चडे तेतुं मृत्यु पण तुरतमां थाय छे. जे अत्यंत कृत होय, जेने तुषा बहुज स्नागर्ता होय, जेनी आंखनी कीकी स्थिर थड जती होय अने जेने श्वास पण उपडी चुक्यो होय एषा पांडुरोगी तथा उदररोगीनुं जीवन दुर्रुभ छे. जे रोगीनां इनु तथा मन्या जकडाइ गयां होय, जेने तृषा वधती जती होय, जे निर्वळ होय अने जेना प्राणनी स्थिति मात्र छातीयांज होय ते रोगी त्याज्य गणाय छे. जेतुं शरीर शिथिल थइ गयुं होय, जेने कोइपण रीते चेन न पढतुं होय अन जेतुं मांस, बळ तथा आहार क्षीण थइ गयां होय ते कादि-पण मृत्युथी बची शकतो नथी. जेनं विरुद्ध कारणोथी रोग उत्पन्न थयो होय अने तेनी चिकित्सा पण विपरीत थड़ होय एवा रोगीने शीव्रताथी दृद्धि पामेलो दारुण रोग प्राण रहित करे छे. जे मनुष्यतुं वळ, ज्ञान, आरोग्य तथा मेद, मांस अने रक्त शीण थड्ड गयेल होय ते तुरतमांज मरण पामे छे. जेना शरीरमां विविध रोगो हमेशां दृद्धि पामता जता होय अने जेनो स्वभाव क्षणे क्षणे बदलतो होय तेवा रोगीना प्राण मृत्यु सहजमां हरी ले छे. जे मनुष्यने पोतानी अथवा अन्यनी छाया जावामां न आवे परंतु ए छाया सिवाय वीजी वस्तुओ जोवामां आवे ते मनुष्य चिकित्सा करवा योग्य रहेतो नथी. जे पतुष्य चन्द्रनी चांदनीमां, सूर्यना नापमां, दीपकना प्रकाशमां, जलमां, दर्पणमां अथवा एवा कोइ अन्य पदार्थीमां पोतानी छाया न देखे ते तथा जे उक्त स्थळो-मां छायाने विकृत अधीत् आडीअवळी, वांकीचुकी वे मस्तकवाळी अने हाथ तया पग आदि

१ सन्या समये पात्रमां भरेखुं मूत्र आस्त्री राखी मुकवामां आवे अने प्रभातमां तेनी जेवी स्थिति थाय तेवी रीतनुं मृत जे मनुष्यनुं होन अर्थात् डोखुं, फाटेखुं, मेखुं अने जेमां कांइ रेती जेवो भाग नीचे वेसी गयो होय तेवुं अ दुर्गिन्धयुक्त जेनुं मूत्र होय तेने सान्द्रभमेह छागु पड़्यों छे एम जाणवुं, एवा रोगीने निरंतर निर्वेद्धना वधती जाय छे.

अनयरोना वध्यय्वाळी देखे ते मनुष्य अवज्य मरण पामे छे. जे मनुष्यनी छापा छिन्नभिक्ष, भांगीतुटी, आक्कळ्याकुळ, न्हानी म्होटी, नष्टभ्रष्ट, स्थूळसूक्ष्म, वे भागमां विच्छिम, निरहीन, लांवी अथवा कोइ वीजी रीते विकृत देखाइ आवे ते मनुष्य वगर विलंबे मृत्युवज्ञ थसे एम मानवुं. नेत्र आदिना रोगने लीधे अथवा दर्पण आदि स्थानना विकारने लीध कदाचं विकृत छाया जो-वामां आवे तो ते कांइ मृत्युना कारणरूप थती नथी. जे मनुष्यने स्वप्नमां पोतानी छायानो आकार, प्रमाण, वर्ण तथा प्रभा विकृत देखाय ते पण मृत्यु पामे छे. छायानी आकृति सुप्या अने विषया ए रीते वे प्रकारनी छे तथा तेनुं प्रमाण मध्य, अल्प अने महत् ए रीते त्रण प्रकारनुं छे. जे सामान्य प्रमाण अने आकृतिने अनुसरी जल, दर्पण अथवा आतप आदिमां छाया पढे तेने प्रतिच्छाया कहे छे अने तेषां वर्ण तथा प्रभानी पण स्थिति होय छे. आकाश आदि 'पंचमहा-भूतोने अनुसरी मनुष्यनी छाया पांच प्रकारनी होय छे. द्वारण के ए पंचयहाभूतथीज शरीरनी उत्पत्ति छे, एटला माटे छायाना नाम पण एने अनुसरीनेज आपवामां आव्यां छे जेमकै:—

- १ आकाशीय छायाँ-निर्मळ, नीलवर्ण, सचिक्षण अने प्रभावाळी होय छे.
- 🎗 बांयदी छाया-रुक्ष, काळी, लाल अने मभादीन देाय छे.
- र्वे आग्नेथी छोया–विशुद्ध, लाल, कान्ति युक्त अने जोवामां मधुरी होय छे.
- ४ आंभसी छाया-शुद्ध, स्फाटिक समान निर्मळ अने स्निग्ध होय छे.
- ५ पार्थिवी छाया-स्थिर, स्तिम्ध, घन, श्रक्षण, स्याम अने श्वेत होय छे.

वायवी छाया है इा अने विताशने आपनारी होवाथी निन्दनीय छे, बाकीनी चारे छा-याओ छुखनो उदय करनारी गणाय छे.

सर्व प्रभा तैजसी होय छे अने ते रक्ता, पीता, सिता, इयावा, हरिता, पांड्रा तथा अ-सिता ए रीते सात प्रकारनी गणाय छे. तेमां जे प्रभा विकासवाळी स्निग्ध अने विस्तृत होय ते शुभ अने रुक्ष, पिछन तथा संक्षिप्त होय ते अशुभ लेखाय छे. छाया वर्णनो पराभव करे छे अने प्रभा वर्णने प्रकाशमां लावे छे. छाया समीपना भागमां देखाय छे अने प्रभा द्रथी पण देखाय छे. कोइ मनुष्य एकी वखते छायाहीन के प्रभाहीन होतो नथी, प्रभानो आश्रय करी रहेली छायाज मनुष्यना शुभाशुभ भावोने प्रकट करे छे. जे मनुष्योनी आंखोमां कमळो होय,

१ पृथ्वी, जळ, तेज, वायु अने आकाश ए पंचमहाभूत कहेवाय छे.

मुख तथा गंडस्थळ मांसथी पूर्ण होय, मन वेचेन होय अने शरीर उज्ण होय ते रोगीने[वचावबा-नो एके उपाय नथी. जे मनुष्यने शय्या उपरथी उठाइतां यूच्छी आवी जती होयं अने जे दारं-वार प्रछाए करतो होय एवो एतुष्य सात दिवसथी अधिक आयुष्य भोगवी शकतो नथी। जेने प्रतिलोसगामी अने अनुलोसगामी ए बन्ने प्रकारना रोग लागु पड्या होय तथा जेनो मेद पण दूषित थइ गयो होय ते मनुष्य पंदर दिवसथी दधारे जीवतो नथी. जे मनुष्य रोगोथी उपरुद्ध अथवा आकर्षित होय, वहुज थोडुं खाइ शकतो होय छतां मळमूत्रनी अधिक मद्यत्तिवाळों होय तो तेनी चिकित्सा कदि पण करवी निह अर्थात एवा रोगी मृत्यु पामे छे. वळनी दृद्धि करनार घृत तथा दुग्य आदि पदार्थोंनुं सेवन कयी छतां पण जेनुं वळवर्ण समेत शीणता पामतुं जाय ते मतुष्य जीवी शकतो नथी. जे रोगी दुवेल छतां प्रथम करतां वधारे भोजन करे अने तेना फल मूत्रनी प्रहत्ति अल्प होय तो तेतुं मृत्यु समजवुं. जे रोगीना कंठमां घुरघुर खब्द थतो होय ते तथा जेने श्वास, शिथिलता, अतिसार, बलहीनता, तृषा अने मुख्यमां शुष्कता होय ते सत्वर मरण पामे छे. जे रोगीनो श्वास मंद पढी गयो होय अने जे कुटिल भावधी व्याधिविद्व होय अर्थात् जेने बुरी रीते वेचेनी लागु पहेली होय तेने मृतक समजवो. जेने उर्ध्वश्वास अने कफनी अधिक-ता होय तथा जेनां वर्ण, वळ अने आहार श्लीण थइ गयां होय ते पंण जीवती रही शकतो नथी. जेनां नेत्रोनो अग्रभाग उंचो होय, जेना द्यारीरमां कंप होय तथा ुजे तृषित, निर्वर्ळ अने द्युष्क मुखवाळो होय ते पृत्युथी वची शकतो नथी, जेनां गंडस्थळ उंचा थइ गयां होय तथा जे दारुण ज्वर, कास अने शुळथी पीडित थतो होय तथा जेने अन उपर अरुचि होय ते कदि पण वचतो नधी. जेनां नेत्र, शिर अने जिहा फाटी जतां होय; अक्कटी ढळी पडी होय तथा जिहा कंटिकत थइ गई होय ते मनुष्य परण पामे छे. जेनी गुहोन्द्रिय संकोचाएली होय अने अंडकोश छटकता होय अथवा गुहोन्द्रिय छटकती होय अने अंडकोश संकुचित होय ते रोगीने मृतक मान-वो. जेतुं मांस क्षीण थतां केदळ त्वचा अने अस्थिज वांकी रहे तथा जेनो आहार पण घटी गयो होय एवो रोगी एक महिनाथी अधिक जीवी शकतो नथी. जे रोगीने पोतानी छायातुं शिर् नीचं अथवा वाक्तं देखाय अथवा छाया शिरहीन देखाय ते मतुष्य चिकित्साने योग्य रहेतो नथी। कोइ-पण प्रकारना नेत्र रोग विना जे रोगीना पलक द्रष्टिने अवरोध थाय तेवी रीते परस्पर चोटी गया होय तेने मृतपाय समजवो. जेने सोजा तथा फेफसांनो रोग होय तथा जेनी आंखना डोळा एवा फूली गया होय के नीचे उपरनी पापणो परस्पर मळी शकती न होय अने ते ढोळाओ चीपडाधी

भरेला रहेता होय तो ते मनुष्यने मृतकनी माफक मानवी. जेना शिरमां अथवा भ्रकुटीमां प्रथम कदी पण न थएल एवी मांग अथवा वर्तक एकाएक देखाइ आवे तेने पण मृतक समजवो. केशने खेंची काढतां जेना शिरमां कोइपण प्रकारनो क्लेश न थाय ते मतुष्य भल्ले रोगी होय के निरोगी होय, परंतु छ रात्रिथी अधिक जीवी शकतो नथी. जे मनुष्यना वाळ तेळ चोपडया विना स्निग्घ देखा-ता होय, ते रोगीने काळनो कोळीओ समजवो. जेना नाकनी ढांडी अति स्यूल यह गह होय अने तेना उपर सोजो न चडयो होय छतां सोजा जेर्दु माछम पडतुं होय ते रोगी वचवा पामतो नयी. जेनी जिहा अत्यंत लांबी अथवा अत्यंत टुंकी यइ जाय ते अने जेनी नासिका अत्यंत सुकाइ ग-एली होय ते मनुष्यनुं जीवन दुर्लभ जाणनुं. जेनां मुख, नासिका अने ओष्ठ अत्यंत खेत, काळां अथवा लोहित थइ जाय अथवा कोइ पण विकारने लीघे अति नीलवर्ण थइ जाय ते रोगी रोगथी मुक्त थतो नथी. जना दांत अस्थिनी माफक अकस्मात् श्वेत वनी जाय अथवा ए दांत उपर कोइ पण प्रकारतुं मंजन लगाडचा शिवाय अथवा दातण कर्या शिवाय पुष्पना जेवी आकृति जोवामां आवे तेमज जेनां दांत पंकथी संद्रत्त होय एवो रोगी वची शकतो नथी, जेनी जिह्ना स्तन्ध, निश्चेत-न, म्होटी, कंटिकत, कृष्णवर्ण, अने झुष्क थइ जाय ते रोगी अवज्य मरण पामे छे. छांवा श्वास लेनारों जे रोगी मन्द श्वास लेवा लागे अने चेष्टा रहित बनी जाय तेने त्याज्य गणवा. जे रोगीना हाय, पग, मन्या अने तालु अत्यंत ठंडा पढी जाय अथवा कठिन वनी जाय अथवा कोमळ थड जाय तेने गतायु सपजवो. जे रोगी पोतानी जंघाओंने परस्वर घसे, पगने उंचा करी पछाडे अने मुखने वारंवार वांकु करे ते पण मरण पामे छे, जे रोगी नखोने दांतथी कापे तथा नखोथी केशने खेंची काढे तेमज काष्ट्रथी पृथ्वीपर छीटा काढे ते मनुष्य रोगथी मुक्त थता नथी, जे मनुष्य जागृत होवा छतां दांतोने खाय अर्थात् दांतोने परस्पर चात्री कडकडाटी बोलावे, निष्पयोजन रुदन करे अथवा इसवा लागे अने जेने पोताना दुःखनुं भान न होय ते रोगी जीवी शकतो नथी. जे रोगी वारंवार इसती होय, उंचे अवाजे पुकार करतो होय, पगथी शब्याने महार करतो होय अने हाथ उंचा करी नासिकानां तथा कर्णनां छिद्रोनो वारंवार स्पर्श्व करतो होय ते रोगीनुं जीवन स्वल्प छे एम समजवुं. जे रोगीने पूर्वे सघळा पदार्थोमां रुचि होय अने पछीथी तेमां अरुचि उसन थाय ते गोगी पण वचतो नथी. जेनी ग्रीवा मस्तकना भारने उपाडी न शके, जेनी पीठ आत्माना भाग्नुं वहन न करी शके अने हनू मुखमां रहेली वस्तुने संभाळी न शके अर्थात् चावी न शके एवा मनुष्यने शवनुरुष समजवो मरनार मनुष्यने प्रथम एकदम ज्वरनो

~~~<del>~</del>

संताप थाय छे, तृषा वधे छे, मूर्छी आवी जाय छे, वळनी क्षीणता थाय छे अने संन्धिओ बुटता होय तेम पीढा उपजावे छे. मर्लंपक ज्वरवाळा रोगीने जो प्रभात समये पस्वेद आवतो होय तो ते रोगी जीवन दुर्छभ जाणवुं. जेना कंटमां आहार न उतरतो होय, जेनी जिहाए कंटमां प्रवेश कर्यों होय अने जेनुं वळ दिनप्रतिदिन क्षीण थतुं जतुं होय ते रोगी तुरतज मरण पामे छे. जे वन्ने प्रपाणिने इलावी मस्तकने पण इलावे अने एवुं करवाथी तेना ललाट उपर पस्वेद आवी जतो होय तो ते रोगी मृत्युने प्राप्त थाय छे. जे रोगीनां, वन्ने नेत्रो ज्याम, शिथिल अथवा हरित वर्णनां वनी जाय ते जीवी शकतो नथी. जे रोगी मृद्धित, शुष्कमुख अने व्याधिओथी संविद्व होय ते पण बचतो नथी. जे रोगीनी शिरा हरित वर्णनी होय, जेना लोमकूप संहच होय अर्थात पृथ्वी उपर जेम घास छवाइ जाय छे तेम रोमाविल छवाएली होय अने जेने खाटा पदार्थी खावानी अभिक्षिच होय तेवो रोगी पित्तना आधिक्यथी प्राण रहित थाय छे. जे मतुष्यना हाथ पग तथा मुख आदि अवयवो सुशोभित होय अने शरीर शुष्क थतुं जाय तेमज वळ घटतुं होय एवो रोगी राजयक्ष्मा नामना रोगथी मरण पामे छे. जेनी कन्धरामांथी आगनी माफक ताप निकळतो होय, जेने हेदकी उपढी होय, जे रुधरनुं वमन करतो होय, जेने आफरो चढतो होय अने जेना पढखांमां शुळ पगट थतुं होय ते पुरुष कीप नामना रोगथी मृत्यु पामे छे. शोष

[.] १ माधवनिदानमां लख्युं छे के कम्प, प्रलाप, परितापन, शीर्षपीडा, प्रौढ प्रभाववाळी पवित्रतामां तत्परता, अन्य चिन्ता, प्रज्ञानो नाश, अने विकळतापूर्वक प्रचुर प्रवाद ए वधां प्रकाप- ज्वरनां लक्षण छे. ए प्रलापन्वरवाळो पुरुप तुरतज पितृपालना पदने प्राप्त थाय छे अर्थात् विनाश पामे छे.

२ श्लोप नामना रोगमां श्वास, हाथ पगमां अशक्ति, कफतुं नीकळबुं, तालुमां शुष्कता, वमन, मन्दाग्नि, उन्मत्तता, पीनस, कास, अहिनश निद्रा, चक्षुमां श्वेतता अने मांस खावानी तथा स्त्रीसंगनी इच्छा वगेरे थाय छे; तेमज उभयं, अंसमां अभिताप, हाथपगमां दाह, सर्व अंगमां ज्वर, अवाजनुं वेसी जबुं, दाह, अतिसार, मुखथी रुधिरनुं नीकळबुं, मस्तकनुं भारे रहेबुं, अन्नथी देूप, शुष्क कास अने जटां स्वप्नोनुं जोबुं, वगेरे लक्षणो शोप रोगनां छे, तेने राजयक्ष्मा पण कहे छे. रुधिर अने मांसने शोपी जाय छे एटला माटे ते रोगनुं नाम " शोप " ए रीते प्रसिद्ध थएल छे.

भरेला रहेता होय तो ते मनुष्यने मृतकनी माफक मानवी. जेना शिरमां अथवा भ्रकुटीमां प्रथम कदी पण न थएल एवी मांग अथवा वर्तक एकाएक देखाइ आवे तेने पण मृतक समजवो. केशने खेंची काढतां जेना शिरमां कोइपण प्रकारनो क्लेश न थाय ते मतुष्य भल्ने रोगी होय के निरोगी होय, परंतु छ रात्रिथी अधिक जीवीं शकतो नथी. जे मनुष्यना वाळ तेळ चोपडया विना स्निग्ध देखा-ता होय, ते रोगीने काळनो कोळीओ समजवो. जेना नाकनी ढांडी अति स्यूल थइ गइ होय अने तेना उपर सोजो न चडयो होय छतां सोजा जेर्वु माछुम पडतुं होय ते रोगी वचवा पामतो नयी. जेनी जिहा अत्यंत लांबी अथवा अत्यंत दुंकी यह जाय ते अने जेनी नासिका अत्यंत सुकाइ ग-एली होय ते मनुष्यनुं जीवन दुर्लभ जाणवुं. जेनां मुख, नासिका अने ओष्ठ अत्यंत श्वेत, काळां अथवा लोहित थड़ जाय अथवा कोड़ पण विकारने लीघे अति नीलवर्ण थड़ जाय ते रोगी रोगथी मुक्त थतो नथी. जना दांत अस्थिनी माफक अकस्मात खेत वनी जाय अथवा ए दांत उपर कोइ पण प्रकारतुं मंजन लगाडचा शिवाय अथवा दातण कर्या शिवाय पुष्पना जेवी आकृति जीवामां आवे तेमज जेनां दांत पंकथी संदत्त होय एवो रोगी वची शकतो नथी, जेनी जिहा स्तब्ध, निश्चेत-न, म्होटी, कंटिकत, कृष्णवर्ण, अने झुष्क थइ जाय ते रोगी अवज्य मरण पामे छे. छांवा श्वास लेनारों जे रोगी मन्द श्वास लेवा लागे अने चेष्टा रहित वनी जाय तेने स्याज्य गणवो. जे रोगीना हाथ, पग, मन्या अने तालु अत्यंत ठंडा पढी जाय अथवा कठिन वनी जाय अथवा कोमळ यह जाय तेने गतायु समजवो, जे रोगी पोतानी जंघाओंने परस्पर घसे, पगने उंचा करी पछाडे अने मुखने वारंवार वांकु करे ते पण मरण पामे छे. जे रोगी नखोने दांतथी कापे तथा नखोथी केशने खेंची काढे तेमज काष्ट्रथी पृथ्वीपर छीटा काढे ते मनुष्य रोगथी मुक्त थता नथी, जे मनुष्य जागृत होवा छतां दांतोने खाय अथात् दांतोने परस्पर चावी कडकडाटी बोलावे, निष्प्रयोजन रुदन करे अथवा इसवा लागे अने जेने पोताना दुःखनुं भान न होय ते रोगी जीवी शकतो नथी. जे रोगी वारंवार इसती होय, उंचे अवाजे पुकार करतो होय, पगथी शय्याने प्रहार करतो होय अने हाथ उंचा करी नासिकानां तथा कर्णनां छिद्रोनो वारंवार स्पर्श करतो होय ते रोगीतुं जीवन स्वल्प छे एम समजवुं. जे रोगीने पूर्वे सघळा पदार्थोमां रुचि होय अने पछीथी तेमां अरुचि उप्तन्न थाय ते गोगी पण वचतो नथी। जेनी ग्रीवा मस्तकना भारने उपाडी न शके, जेनी पीठ आत्माना भाग्नुं वहन न करी शके अने हनू मुखमां रहेली वस्तुने संभाळी न शके अर्थात् चावी न शके एवा मनुष्यने शवतुल्य समजवोः मरनार मनुष्यने प्रथम एकदम उवरनो

संताप थाय छे, तृषा वधे छे, मूर्ज आवी जाय छे, वळनी क्षीणता थाय छे अने संन्धिओ तुटता होय तेम पीढा उपजावे छे. मलेंपैक ज्वरवाळा रोगीने जो प्रभात समये पस्वेद आवतो होय तो ते रोगीतुं जीवन दुर्लभ जाणवुं. जेना कंठमां आहार न उतरतो होय, जेनी जिहाए कंठमां प्रवेश कर्यो होय अने जेनुं वळ दिनप्रतिदिन क्षीण थतुं जतुं होय ते रोगी तुरतज मरण पामे छे. जे वन्ने प्रपाणिने इलावी मस्तकने पण इलावे अने एवुं करवाथी तेना ललाट उपर पस्वेद आवी जतो होय तो ते रोगी मृत्युने पाप्त थाय छे. जे रोगीनां, वन्ने नेत्रो ज्याम, शिथिल अथवा हरित वर्णनां वनी जाय ते जीवी शकतो नथी. जे रोगी मृत्छित, ग्रुष्कमुख अने व्याधिओथी संविद्व होय ते पण वचतो नथी. जे रोगीनी शिरा हरित वर्णनी होय, जेना लोमकूप संहच होय अर्थात् पृथ्वी उपर जेम घास छवाइ जाय छे तेम रोमाविल छवाएली होय अने जेने खाटा पदार्थी खावानी अभिक्षि होय तेवो रोगी पित्तना आधिक्यथी पाण रहित थाय छे. जे मनुष्यना हाथ पग तथा मुख आदि अवयवो सुशोभित होय अने जेनी कन्धरामांथी आगनी माफक वळ घटतुं होय एवो रोगी राजयक्ष्मा नामना रोगथी मरण पामे छे. जेनी कन्धरामांथी आगनी माफक ताप निकळतो होय, जेने हेदकी उपटी होय, जे रुधरनुं वमन करतो होय, जेने आफरो चढतो होय अने जेना पढखांमां ग्रुळ पगट थतुं होय ते पुरुष कीच नामना रोगथी मृत्यु पामे छे. जोप

१ माधवनिदानमां लख्युं छे के कम्प, प्रलाप, परितापन, शीर्षपीडा, प्रौढ प्रभाववाळी पवित्रतामां तत्परता, अन्य चिन्ता, प्रज्ञानो नाश, अने विकळतापूर्वक प्रचुर प्रवाद ए वधां प्रलाप-ज्वरनां लक्षण छे. ए प्रलापन्वरवाळो पुरुष तुरतज पितृपालना पदने प्राप्त थाय छे अर्थात् विनाश पामे छे.

२ श्लोप नामना रोगमां श्वास, हाथ पगमां अशक्ति, कफतुं नीकळबुं, तालुमां शुष्कता, वमन, मन्दाग्नि, जन्मत्तता, पीनस, कास, अहिनश निद्रा, चक्षुमां श्वेतता अने मांस खावानी तथा स्त्रीसंगनी इच्छा वगेरे थाय छे; तेमज उभयों, अंसमां अभिताप, हाथपगमां दाह, सर्व अंगमां ज्वर, अवाजनुं वेसी जबुं, दाह, अतिसार, मुखंथी रुधिरनुं नीकळबुं, मस्तकनुं भारे रहेबुं, अन्नथी देप, शुष्क कास अने जटां स्वप्नोनुं जोबुं, वगेरे लक्षणो शोप रोगनां छे, तेने राजयक्ष्मा पण कहे छे. रुधिर अने मांसने शोपी जाय छे एटला माटे ते रोगनुं नाम " शोप " ए रीते प्रसिद्ध थएल छे.

रोग शरीरनी पाचन आदि तमाम क्रियाओनो क्षय करे छे. एटला माटे तेने क्षय पण कहे छे; पूर्वे कोइ चन्द्र नामना राजाने ए रोग थयो इतो जेथी तेनुं राजयक्ष्मा ए रीते नाम पडेल छे. वत रोग, अपस्मार रोग, कृष्ठ रोग, ज्ञोफ रोग, उदर रोग, गुल्म रोग, मञ्जूपमेह रोग, अने राजयक्ष्मा रोग, मतुष्यना वळ तथा मांसने क्षय करनारा होवाथी असाध्य थइ पडे छे. जे मतु-ष्यने अन्य विकारो उत्पन्न थाय अर्थात एक रोग विद्यमान छतां अन्य रोगनो प्रादुर्भाव धाय तो ते रोगी जीवनने भागवी शकतो नथी. जे रोगीने प्रथम आफरो चड्यो होय, ते मटाडवाने माटे विरेचन आपवामां आवे परंतु ए विरेचनने अंते अत्यंत तृपा वधे अने फरी आफरो चढे तो ते रोगीने शव तुरुप समनवो. जे रोगी कंड, मुख, तथा हृदयनी ग्रुष्कताने छीघे जल आदि पेयं पदार्थीने पी शके निह ते मरण पामे छे. जे रोगीनो स्वर क्षीण थइ गयो होय, वळ तथा वर्ण विक्रुग थइ गयेल होय अने दिनप्रतिदिन रोग वधतो जतो होय ते पण थाय छे. जे रोगीने उर्ध्व श्वास होय, श्ररीर शीतल पडी जतुं होय, पडलांनी पांसळीओंमां शूळ थतुं होय, अने वेचेनीने लीधे जेने कोइ पण प्रकारे शांति न थती होय तेवो रोगी मरण पामे छे. तथा जे वारंवार "हाय हाय हुं मरी जइश " एवा अपशब्दनो उच्चार करे छे ते पण मृत्युने वज्ञ थाय छे. जे दुर्वळ रोगीने एकाएक रोग छोडी दिए तेतुं जीवन संश्वपात्मक होय छे. जे मनुष्यतां कफ, विष्ठा अने वीर्य जलमां डूवी जाय ते रोगी मरण पामे छे. जेना कफमां रक्त, पीत, इयाम, हरित, अने धूम्र आदि अनेक वर्ण देखाइ आवे तथा ते कफ जळनी अंदर डूबी जाय तो ते रोगी अवइय मृत्युवश थाय छे. उष्मानुगामी पित्त मनुष्यना शंख-नी अंदर प्राप्त थइ शैंखक नामना रोगने प्रगट करे छे अने त्रण दिवसनी अंदर ते मनुष्यना प्रा-णने हरी ले छे. जेना मुखमांथी वारंवार फीणवाळुं लोही निकळे अने जेनी कुक्षिमां शूळ निक-

१ दूषित थएल पित्त, रुधिर अने वायुनी दृद्धिथी कर्णनी अंदर भयंकर सोजो चढे छे अने तथी घोर पीडा, अति दाह तथा नेत्र रुधिरनी माफक रक्तवर्ण बनी जाय छे; ए सोजो वि-पनी पेठे शिरमां प्रवेश करी कंटनुं रुन्यन करे छे, जेथी श्वास पण रोकाइ जाय छे अने मनुष्यनो प्राणान्त थाय छे अर्थात् जेम विप रुपिर आदिमां प्रवेश करी मनुष्यने तुरत मारी नांखे छे, एवीज रीते आ शांख नामनो रोग पण कंठमां प्रवेश करी मनुष्यने प्राण रहित करे छे. जेने शांख नामनो रोग थाय ते त्रण दिवसथी अधिक जीवी शकतों नथी.

ळतुं होय ते रोगी मरण पामे छे. जेने वळ अने मांसनी क्षीणता, अस्थितुं देखावुं, रोगनी तीव वृद्धि अने सर्व पदार्थीमां अरुचि होय ते रोगी त्रण दिवसमां मरण पामे छे. जे रोगीने सर्व लक्षणयुक्त वी-तष्टीला नामनो रोग हृदयमां उत्पन्न थइ त्यांज घर करी रहे अने एवा रोगीने तृषानी अधिकता होय तो ते तुंरत मरी जाय छे जे मनुष्यना शरीरमां पिंडिओने शिथिल करी, नासिकाने वांकी वाळी वायु संचार करे ते तुरत प्राण रहित थाय छे. जेनी भ्रकुटि स्थानथी भ्रष्ट थइ होय अर्थात् नीची नमी गइ होय, जेने दारुण अन्तर्दाह थतो होय अने जेने हेडकी पण उपडी होय ते सत्वर मरण पामे छे. जेना रुधिर अने मांस आदि धातु क्षीण थइ जाय अने वायु कपाळमां स्थिर थइ मन्याओंने पीडित करे ते रोगी पण पंचत्वने प्राप्त थाय छे. जे रोगीना शरीरमां वायु अधोद्वारथी प्रवेश करी नाभिनी पासे पहोंची आंतरडाओमां व्याधि उपजावे ते रोगी मरण पामे छे. ने रोगीना हृदयमां वायु प्रवेश करी पुरुकना अग्रभागने नमावी दे अने रोगीने टाढ जणाय तथा आंखो फाटी गइ होय तेम स्तब्ध वनी जाय एवा रोगी शीघ्र मरणने शरण जाय छे. वळवान वायु विशेषे करी निर्वळ रोगीना अधोद्वार तथा हृदयतुं ग्रहण करी अत्यंत पीडा उपजावे त्यारे रोगीतुं सत्वर मृत्यु थशे एम समजवुं. जे रोगीना अधोद्वारने मार्गे वळवान वायु प्रवेश करी आंतरडाओमां भराइ जाय अने ते पाछो निकळे निह तथा तेवा कारणने लीधे श्वासनी उत्पत्ति थाय त्यारे तुरतज ते मरण पामे छे. ए रोग घणे भागे कुश मतुष्यने लागु पडे छे. जेना शरीरमां वायु प्रवेश करी मळ मूत्रने एवी रीते वंध करे के तेनी कोइपण रीते प्रवृत्ति न थइ शके अने एकी वखते नाभि, वस्ति तथा शिरमां शूळ उत्पन्न थाय ए रोगीतुं जीवन दुर्रुभ जाणवुं जे मनुष्यने वायुनी मवळताथी हृदय, पांसळी, कम्मर, कम्मरना सांघा तथा वस्तिमां शूळ उत्पन्न थाय, मळनी प्रष्टित विलक्कल न थाय अने दृषा वधती जाय ते रोगी तुरत मृत्युना मुखमां प्रवेश करे छे. वायुना ८४ रोगो छे, तेमांथी आजे अमुक तो काले वीनो ए रीते अनेक मकारना वायु रोगथी बेराएला मनुष्यने झाडो फाटेलो आववा लागे अने तृपानुं प्रवळ वधे तो ते वगर विलंबे मरण पामे छे. जे मनुष्यने सोजा चंचल होय अने जे

्र जे नाभि नीचे उत्पन्न थइ चारे तरफ संचार करे छे अथवा स्थिर एण रहे छे जे गोळ पत्थरना इकडा समान कठोर होय छे अने जेनी उत्पत्तिथी विष्ठा, मूत्र तिथी अधोवायुनुं रुन्धन थाय छे ए रोगने वातष्ठीला कहे छे; तेनो उर्ध्व भाग्री, कांइ लांबो अने वांको तथा उन्नत होय छे.

स्थळे सोजा होय ते स्थळनी त्वचा पातळी थइ जाय, सोजानी जगोए दाववाथी कठिनता माळूम पढे, त्वचा लाल अथवा काळा रंगनी थइ जाय, शोप स्थान शून्य (स्पर्श करतां मालूप न पडे तेवुं) वनी जाय, भिन्न भिन्न पीडा उत्पन्न थाय अर्थात् क्यांइ अधिक अने क्यांइ ओछो व्याधि थाय, रोम खडां थइ जाय, औषध कर्या विना एनी मेळे घडिमां आराम थइ जाय अने पुनः तेनो मार्दुभाव थाय, दाव्या पछी तुरतमांज पाछो उपडी आवे, दिवसे अविक होय अने रात्रिए शान्ति रहे एवा वातशोफी मनुष्यने झाडो फाटेलो आववा लागे अने तृषानी दृद्धि थाय तो तुरतज मरण पामे छे. जे मनुष्यने आमाश्यमां पीडा थती होय, तृषा वहु लागती होय अने अधोद्वारमां उग्र शूळ थतुं होय एवो रोगी वचतो नथी. वायु जे मनुष्यना पकाशयमां प्रवेश करी संज्ञाने हरी कं-उमां घुरघुर एवा शब्दने उत्पन्न करे ते रोगी मरण पामे छे. जेना दांतो उपर कीचड तथा चुना जेवी रेती जामी गइ होय, जेतुं मुख पण चूर्णक जेवुं होय, क्रुशता अने निर्वळताने छीधे जेनी काया कंपती होय, जेना शिरकेशमांथी श्वेत रेती जेवुं चूर्ण खरतुं होय, तेवुंज चूर्ण मुखपरथी खरतुं होय अथवा आखा ज्ञारीरपरथी खरतुं होय ते रोगीना प्राण तुरतज परलोक तरफ प्रयाण करे छे. जे रोगीने तृपा, श्वास, माथानो दुखावो, मोह, दुर्व-ळता, कूजन तथा मळ, मेद अने झाडानुं अधिनय, होय ते सत्वर पंचत्वने पामे छे. जे मनु-प्य कान्तिहीन, मंदाग्नि युक्त, न्याकुळ चित्तवाळो, विकृत छायावाळो, अने कुत्सित मनवाळो अर्थात् दुष्ट वार्ताओतुं चिन्तन करनारो होय ते हमेशां दुःखी रह्यां करे छे अने वीश दिवसनी अंदर मरण पामे छे. जे मनुष्यना हाथना पदार्थोतुं विल वैश्वतुं भक्षण करनारा जीवो भक्षण न करे ते मनुष्य एक वर्षनी अंदर लोकान्तरमां शरीरना भोगोनो उपभाग करे छे अर्थात मरी जाय छे. जे मनुष्य आकाश मार्गमां रहेला सप्तऋषि नामना ताराओनी वचे रहेल अरुन्धतीने बरावर ओळखतो होय छतां न देखी शके ते एक वर्ष पछी तुरतज मृत्युवश थाय छे. जे मनुष्य कांइ पण कारण विना एका एक सौन्दर्य, पुष्टता अने धनने प्राप्त थाय अथवा विना कारण ते त्रणे वस्तु-ओंने गुमावे ते एक वर्षनी अन्दर मरण पामे छे. मतलव एके कोइ मनुष्य मन्द तेजवाळी होय अने सुंदर थवा माटे ज्ञारीरे कोइ पण औपियनो छेप न कर्यो होय छतां ते स्वतः शोभायमान व-नी जाय, एवीज रीते पृष्टिकारक रसायण आदिनुं सेवन न कर्युं होय तेमज घृत तथा दुग्ध आदि पदार्थों पूर्वेथी विशेष प्रमाणमां न खाथा होय छतां स्वतः पुष्ट वनी जाय अने कांइ पण परिश्रम अगर घारणा विना हद उपरांत घननी प्राप्ति थाय अथवा कांइ पण रोग विना शोभा

बळ तथा चोरी आदिथी समग्र धन नष्ट थाय एवा मनुष्यनुं एक वर्षनी मृत्यु निपने छे. जे मतुष्यनां कोइ पण कारण विना भक्ति, शील, स्पृति, त्याग, बुद्धि अने वळ चाल्यां जाय ते छ महिनानी अंदर मरण पामे छे. जे मृतुष्यना छछाट उपर अपूर्व अर्थात् पूर्वे न होय तेवो नसोनो समूह उत्पन्न थाय तो ते पण छ महिनामां मरण पामे छे जेना ललाट पर अपूर्व चन्द्रमा जेवी अ!डी रेखानो पादुर्भाव थाय ते मतुष्य छ मासनी अंदर मृत्यु पामे छे. अरुन्यती, ध्रुव, विष्णुना त्रिपद अने मातृबंडलने हीन आयुष्यवाळो मनुष्य जोइ शकतो नथी. जीभने अरुन्यती, नासिकाना अग्रभागने ध्रुव, बन्ने भ्रुकृटिना मध्यभागने विष्णु त्रिपद अने बन्ने भ्रकुटिने मातृमंडल कहे छे. जेना शारीरमां कम्प तथा मोह होय अने जेनी चाल तथा वाणी वि-क्षिप्त अर्थात् उत्मत्तना जेवी होय ते मतुष्य एक मासनी अंदर मरण पामे छे. जेतुं वीर्य, मूत्र तथा विष्ठा जळमां ड्वी जाय अने जे पोताना इष्ट मित्रो साथे द्वेष राखवा लागे ते मनुष्य एक मा-सनी अंदर मृत्युरूपी जळमां स्नान करे छे अथीत मरी जाय छे. दाइने स्रीधे अगर विना दाहे जेना हाथ, पग अने मुख अत्यंत शुष्क थइ जाय ते पण एक महिनामां मृत्युने पात्र थाय छे. जेना ललाट, मस्तक अथवा वस्तिमां चन्द्रमा समान आडी निलवर्णनी रेखा उत्पन्न थाय ते एक महिनानी अंदर परलोक प्रयाण करे छे. जेना समग्र शरीर उपर चणोठीनी माफक शीतला उप्तच थइ तुरतमां शान्त न थाय तो ते मनुष्य सत्वर मरण पामे छे. जेनी ग्रीवामां पीडा थती होय, जिह्नामां सीजो चड्यो होय अने गळुं तथा मुख पाकी गयां होय ते शीव्रताथी प्राण रहित थाय छे. जे रोगीने भ्रम, अतिप्रलाप, दाह अने अस्थिभेद थाय तेतुं जीवन दुर्लभ जाणवुं. जे रोगी अचेतन अवस्थामां पोताना शिरकेशने पकडी खेंचे अने स्वस्थनी माफक आहार करे तथा वळ पण स्वस्थ जेवुं वतावे ते कदि पण वचतो नथी. जे रोगी आंखोनी आसपास आंगळीओथी कांइ शोधतो होय एम देखाय अने उन्मत्तनी माफक आंखो फाडी विस्मय पूर्वक जोया करे, मट-कुं मारवुं छोडी दिए अने शयन, वमन, अंग, कोष्ठ तथा कुड्यमां कांइ पण वस्तु खोवाएल न होय छतां मिथ्या शोध कर्या करे अने ए वखते मोहने माप्त थाय ते तुरत मरी जाय छे. जे रोगी अचेतन अवस्थामां विना प्रयोजन इस्या करे, होठने चाटे अने जेना हाथ, पग तथा श्वास टाढा पडी गया होय ते जीवतो रही शकतो नथी. जे पोतानी पासे वेठेला कुद्रम्वीओने बोलाव-तो होय, जेनी संज्ञा जती रही होय अने जे आंखो फाडी जुए छतां कांइ न देखी शकतो होय ते रोगी मरण पामे छे. जे मनुष्यना शरीरमां आकाश आदि पंचतत्त्वनो अयोग अथवा अतियोग

होय ते रोगी त्याज्य गणाय छे. आकाश, वायु, अग्नि, उळ अने पृथिवी ए पंच महाभूतोना शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गन्ध ए क्रमपूर्वक पांच गुण छे; अर्थात् आकाशनो गुण शब्द, वा-युनो गुण स्पर्श, अग्निनो गुण रूप, जळनो गुण रस अने पृथ्वीनो गुण गन्य छे. आकाशमां केवळ शब्दगुण छे. वायुमां शब्द अने स्पर्श, अग्निमां शब्द, स्पर्श, अने रूप. जळमां शब्द, स्पर्श, रूप अने रस, तथा पृथ्वीमां शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गन्ध ए पांचे गुण छे. परंतु एक एक भूतमां एक एक गुण प्रधान छे. जेवके आकाज्ञानो प्रधान गुण शब्द इत्यादि. जेना शरीरमां शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गन्ध ए जाणवानी शक्ति न रहे तेनामां पंचतत्त्वनो अयोग छे एम जाणवं. जे मनुष्य शब्दादि शक्ति उपरांत अनुभवी शके अथीत् सूक्ष्ममां सूक्ष्म कोइ न सांभळी शके एवा शब्दने सांभळे तेनामां पंचतत्त्वनो अतियोग छे एम समजवुं. ए अयोग तथा जन्मना स्वभाव रूप न होय अने तेतुं ज्ञान पण कोइ युक्तिद्वारा न मेळववर्बुं होय तो ते वन्ने मृत्युना कारण रुप थइ पहे छे. रोगोनी अत्यंत द्रद्धि थवाथी अने मनोवळ क्षीण थवाथी आत्मा देह संज्ञावाळा निवासस्थाननो परित्याग करे छे. आयुष्य क्षीण थवानी साथे वर्ण, स्त्रर, जटराग्निनुं वळ, वाणीनुं वळ अने मनोवळ पण श्लीण थाय छे. मृत्युनो समय समीप आवतां रोगीने वैद्य, औषध, अन्न, जळ, गुरु अने मित्र विष जेवा जणाय छे. वैद्ये एवा रोगीओना अन्न जळनो स्पर्श न करवो जोइए; कारण के असाध्यनी चिकित्सा न करवी एम पण नथी, तेना कुटुम्बीओने अगाउथी कही आपवुं के आ रोगीनो रोग असाध्य छे. कारण के " यावरकंठगतः प्राणस्तावत्तेषां चिकित्सकाः " कंठगत प्राणवाळा रोगीनी चिकित्सा करवी, परंतु असाध्य रोगी मोतथी वचतो नथी. कारण के साधक गुणोथी युक्त चिकित्साना चार पाद गतायुने माटे व्यर्थ गणाय छे. जेम द्रव्यने आश्रये गुण छे. तेम चिकित्साने आश्रये आयुष्य छे, जे रोगमां चिकित्सा निष्फळ निवडे ते रोगीनुं आयुष्य नष्ट थयुं छे एम मानवुं. वैद्य, औषध, सेवक अने रोगी ए रीते चिकित्सानां चार पाद छे. जे मनुष्यना शिर छपर गोमय जेवुं चूर्ण उत्पन्न थाय अने ते तेल चोपडवाधी दूर थइ जाय एवा एक महिनाथी अधिक जीवी शकतो नथी. जे मनुष्य वन्ने पगने परस्पर अथडावतो चाले अने तेना उभय अं-सस्थान भ्रप्ट थइ गया होय तथा विकृत रीते दोडतो होय ते मनुष्य आ लोकमां वधारे थएला जे मनुष्यनुं उरःस्थल स्नानथी अनुलिप्त करतो नथीः वास दिवस जाय अने बीजां दशां अंगो आर्द्र होय ते पंदर दिवसथी सुकाइ

आयुष्य भोगवी शकतो नथी. जे रोगीने माटे वैद्य अत्यन्त परिश्रम कर्या छतां पण औषध तैयार न करी शके ते भाग्येज जीवे छे. जे औषध अनेक वखत सफळ निवडयुं होय अने तेतुं उत्तम रीते सेवन कराव्युं होय छता रोगीने असर न करे त्यारे ते रोग अ-साध्य छे एम समजवुं. कदाच वैद्य सूपशास्त्रने आधारे रोगीने व्यंजन खावा आपे छतां एथी कांइ पण फळ प्राप्त न थाय तो ते रोगीनुं जीवन दुर्छभ थइ पडे छे. मृत्यु वखते मनुष्यनां प्राण तपा-यमान थाय छे, ज्ञान जतुं रहे छे, अंगना हाथ पग आदि अवयवो निर्वेळ वनी जाय छे, चेष्टा जती रहे छे, इन्द्रिओ निष्क्रिय थाय छे, चैतन्य जतुं रहे. सन्वसंज्ञक मन उत्प्रुक थाय छे, चित्त-मां भय प्रवेश करे छे, स्मरणशक्ति अने बुद्धि अलग जती रहे छे, लज्जा अने कान्ति भागी जाय छे, मन पापोथी व्यथित थाय छे, ओज अने तेज नष्ट थाय छे, भक्ति द्र जाय छे, कान्ति (मुखनी चेष्टा) अने प्रभा (शरीरनी शोभा) विकृत वनी जाय छे, तेमन शुक्र पाताना स्थान-थी अर्थात् समग्र शरीरमांथी निकळी जाय छे. वीर्यतुं कोइ स्थान नथी कारण के " शुक्रधरानाम सर्व प्राणिनां सर्व शारीर व्यापिनी " सातमी कळा शुक्रधरा नामनी छे ते समग्र शरीरनी अंदर रहेली छे. जेम दूवना सर्व परमाणुओमां घृत अने इश्चना सर्व विभा-गोमां निष्ट रस ग्रुप्त रीते रहें छे तेवीज रीते समग्र शरीरमां वीर्यनी स्थिति छे एटला माटे समस्त शरीर दीर्यतुं स्थान छे. केटलाएक लोको कहे छे के वीर्यतुं स्थान मस्तकमां, स्तनोमां अथवा दृष-णोमां छे ए वात असत्य छे; कारणके वीर्यनुं स्खलन थती वखते वायु उर्ध्व गती करे छे अथीत श्वास शरीरमां समाइ शकतो नथी अने आवतांज उपरथी अने उपरथी चाल्पो जाय छे. मांस अने रुचिर क्षीण थइ जाय छे; श्ररीरनी उप्णता जती रहे छे, सन्धिओ शिथिल पडी जाय छे, श्ररीर-रनो गन्ध विकृत वनी जाय छे, वर्ण अने स्वरमां अंतर पढी जाय छे. शरीरनो रस वगढी जाय छे. देहनां छिद्रो शुद्ध होवाने लीधे शिरमांथी धुमाडा निकले छे अने दारुण नामनुं चूर्ण जप्तन थाय छे. अर्थात् माथामां पापडी जेवो जमाव थाय छे अने ते वाळोनी अंदर रेतीनी माफक उडे छे तथा केशभूमि कटिन अने खडवचडी वनी जाय छे; शरीरना हालता चालता तथा स्फ्रायमान अवयवी झलाइ जाय छे. आ वधां लक्षण मरनारनां समजवां. शरीरनां शीतल, उप्ण, मृदु अने कठिन अवयवो वैपरीत्यने पामे अर्थात् शीतल अंग गरम अने गरम अंग शीतल वनी जाय इत्या-दि, नखो उपर पुष्प जेवां चिह्न प्रकट थाय, दांतोमां कीचड जेवो जमाव थाय, पलकना तथा ज्ञि-रना वाळ गुंथाइ जटा जेवा वनी जाय तेवा रोगीने अभीष्ट औपिधओ मळती नथी अने मळ्या

छतां पण पोताना वीर्यने अनुसार काम आपती नथी, परंतु उलटा अनेक मकारना विकारोने मकट करे छे. अनेक मकारनी औपधिओथी शान्ति माप्त न थाय, वळ अने ओजना नष्ट थवाथी अनेक मकारना शब्द, स्पर्श, रूप, गन्ध, चेष्टा अने विचारों उप्तन्न थाय, चिकित्सा करती वखते अनेक मकारना अग्रुभ फळनी उप्तिच्च थाय, अनेक मकारना भयंकर स्वमो देखावा छागे, दुरात्मापणुं उप्तन्न थाय, सेवकजनो विमुख वनी जाय, शवनी माफक आकृति थड जाय, मकृति नष्ट थाय, विकृति बधती जाय अने घोर उत्पातों अरिष्टनी सूचना करे ए वधां छक्षणों मरनार मनुष्यां जाणवां जे रोगीना शिर उपर काक आदि पक्षी आवीने वेसे ते मरण पामे छे. जे नेत्र रोग विना चन्द्रमाने अत्यंत सुंदर अने कलंक रहित देखे ते पण मृत्युने प्राप्त थाय छे. जे ध्रुव तथा आकाश गंगाने न जोड़ शके ते एक वर्षनी अंदर पंचत्वने प्राप्त थाय छे. आकाशमां जे घणा ताराओनो समुदाय प्रवाह जेवो जणाय छे तेने आकाशगंगा कहे छे.

काल अने अकाल मृत्युना विषयमां महर्षि चरक कहे छे के जे जे मरे छे ते काळथीज मरे छे, काळ विना कोइनुं मृत्यु थतुं नथी; कारण के काळमां छिद्रता अथवा अछिद्रता कांइ पण नथी, केमके काल स्वलक्षण स्वभाव छे अथात् छिद्र रहित छे, केटलाएक कहे छे के जे जे वस्तते मरे छे, तेज तेनो नित्य काळ छे एवीज रीते तेना संपूर्ण भाव पातेपाताना मृत्युना विषयमां नियत काळ छे, परंतु ए वात पण योग्य नथी. कारण के अकाल आहार, वचन अने कर्मनुं अनिष्ट फळ मत्यक्ष जोवामां आवे छे माटे तेथी विषयेप एज इष्ट छे, काल तथा अकालनी युक्ति ते ते अवस्थामां ते ते अथेनी सभी-क्षाथी उद्भवे छे, जेमके अमुक व्याधिना आहारनो, औषभनो, मतीकारनो अने मोक्षनो अमुक काळ अने अमुक अकाळ छे; एज युक्ति समग्र संसारमां व्याप्त छे, मेघनी दृष्टि, ज्ञीत, सूर्यनो ताप अने पुष्प तथा फळ जेम काळ अने अकाळ वन्नेमां थाय छे तेम मनुष्यना मृत्युनं पण समजवुं, केवळ काळेज मृत्यु थाय छे एम न मानवुं, जो अकाळ मरण न थाय तो तमामनी आयुष्यनं ममाण नियत होवुं जोइए अने एम थाय त्यारे हिताहितनुं ज्ञान व्यर्थ जाय अने मत्यक्ष, अनुमान तथा आप्तोपदेश पण अममाण रूप थइ पडे, परंतु आ वातमां तो सर्व शास्तो ममाणभूत छे, अने एथीन आयुष्य अने अनायुष्यनी चपल्यान याय छे. स्वरी रीते जोतां अकाल मृत्यु थतुंज नथी, एतो कहेवा मात्रज छे. समय विना माप्त यपल मृत्युने अकाल मृत्यु कहे छे.

श्वास लेवो तथा छोडवो पापणोने चवाडवी तथा वीडवी, मननी गति, एक इन्द्रियनो अन्य इन्द्रियमां संचार, पेरणा, धारणा, स्वप्न, दर्शन, पंच महा भूतोतुं ग्रहण, जमणी आंखे जोएला पदार्थोनुं डावी आंखधी ज्ञान थर्नु, इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख, पयरन, चेतना, धृति, बुद्धि, स्मृति, अहंकार अने आत्मा ए जीवननां लक्षण छे. उक्त लक्षणो मृतक मनुष्यमां देखातां नथी एटला माटे महर्षिओए ए लक्षणोने आत्मानां चिह्न कहेल छे, ए आत्माना निःसरणथी ज्ञारीर चै-तन्य रहित बनी निर्जन गृहनी पाफक पढयुं रहे छे, केवळ पंच महाभूतोनो विकार श्लेष रहे छे, एटला माटेज अमुक मनुष्य पंचत्वने प्राप्त थयो एम कहेवाय छे.

ं आ रीते मृत्य परीक्षानी सविस्तर इकीकत म्वस्थ चित्ते श्रवण कर्या पछी राजहरपाछ देवजीए वैद्यराजने घणा सन्मान पूर्वक विदाय कर्या अने पोते विचार्धिके मारा शरीरनगर उपर जरा रुपी महाराणीए वरावर साम्राज्य जमाव्युं छे अने ते थोडा वखतमां पोताना काळ रुपी युव-राजने तेनो कवजो सोंपी देशे माटे ते पहेळां हुं पण मारा युवराजने आ राज्यनी ळगाम स्वहस्ते सोंपी निरुत्त थाउं, आवो निश्रय करी सुलक्षणा शक्तिनी सलाह लड़ तुरत राज्यज्योतिषीने वोलाववामां आव्या अने उत्तम मुहूर्त जोइ वि. सं. ११८६ मां युवराज सोढाजीनो पाटडीनी गादी उपर विधिवत राज्याभिषेक कर्यों, तेथी न्हाना कुमार मांगुजीने जांबु सहित चोराशी गामो गिरासमां आप्यां अने तथी न्हाना कुमार शखेराजजीने पण वीरमगामनी पासे रहेला सचाणा सहित चोराशी गामो आप्या पाछळथी कुडुंवमां क्केश न थाय एटला माटेज राजहरपालदेवज़ीए पोतानी इयातीमांन आ उत्तम कृत्य स्वइस्तेज करी छीधुं. त्यारवाद तेओ पोताना पटराणी चक्तिने साथे राखी वानप्रस्थ अवस्थाने धारण करी ध्यान, धारणा तथा वेदान्त विचारमां दिवसोने निर्ग-मन करवा लाग्याः तेओ संसारने मृगजलनी माफक अनित्य समजता होवाथी पारमार्धिक कर्मोमा प्रदत्त थया, विषवहरी जेवी कामष्टत्तिनुं समूळ उच्छेदन करी त्रिविधि तापनुं शमन करनार आत्म-ज्ञानरुपी कलपद्यक्षने आश्रये अखंडानंद्ने अनुभववा लाग्या, कोधरुपी काळा नागने नाथी मृति शुद्ध करनार श्री कृष्णनी कृति उपर रति राखी नित्यमित निष्काम कर्म करवा लाग्या, मनने क्षोभ पमाडनार लोभरुपी पदोन्मत्त हाथीने संतोपरुपी लोहनी सांकळे वांधी सांसारिक उपाधिओथी अलग थया, मोक्ष मार्गनो द्रोह करनारा मोहथी विमुख रही अपूर्व सुखमां अविशृष्ट आयुष्यने विताववा लाग्या, महद अनर्थना मूळरूप मदने देहनगरथी हद पार करी विनोदना नदमां निम-ज्जन करवा लाग्या अने मत्सरने तो मूलधीन ज्ञान रुवी धनतुं हरण करनारा तस्कर तुल्य गणी तिरस्कारता हता. पोते योगवासिष्ट आदि उत्तम ग्रन्थोतुं अवलोकन करेलुं होवाथी मन एज संसा-रनी उत्पित्तिना हेतुरुप छे एम मानता हता, मनना निग्रह शिवाय पारमार्थिक सुखनी प्राप्ति थती





नथी, मन एवं मवळ छे के तेने म्होटा म्होटा पराक्रमीओ के ऋषि मुनिओ पण वक्ष करी शक्या नथी, ए मन गन्धर्व नगरनी माफक वास्तविक छे निहः छतां भासे छे, पोतानी स्वभाव अस्थिर होइ वीजाने पण स्थिर रहेवा देतुं नथी, कंचन अने कामिनीमां विशेष रति राखे छे, गतिमां वि-द्युतथी पण वधी जाय छे, प्रपंचमां प्रवीण अने सुखना रंचथी रहित दुर्वासना भणी दोडनारुं ए मन दर्पण पर रहेला पारदनी पेठे पल पण स्थिरताने प्राप्त थतुं नथी, लोक तथा परलाकनी कल्पना कर्योज करे छे, अजाना गलस्तनमां रहेला पयनी पेठे अविद्यमान छतां विद्यमान वनी व्योमवननें विलोकवानी इच्छा करे छे. भूलना भवन रूप स्थूल भोगमां अत्यंत रित राखनारुं, प्रतिकूल वीजने वोनारुं, सत्य रुपनो त्याग करनारुं, अने असत्यमां अनुराग धरनारुं दुर्भागी मन दुष्ट छे के तेणें मारेला राजांथी रंक पर्यन्त अनन्त जनो आज लगी योनिजालमां भ्रमण कयी करे छे. श्रीकृष्ण परमात्माए पण गीतामां कहुं छे के " मन एव मनुष्याणां, कारणं वन्ध मोक्षयोः॥" आवा प्रवळ मनने ज्ञानाग्निथी दग्ध करी राजहरपालदेवजी जीवन्मुक्तनी दशाने प्राप्त थया. तेवा-मां अचानक अनेक प्रकारना उत्पातो थवा छाग्या, ए जोइ राजहरपाछदेवजीने छेश पण क्षोभ थयो निह, तेओ जाणता हता के ए उत्पातो राजाना जीवनने अवदय हानि, छाभ अने हुप शोक विगेरेने देईना धर्म मानी सत्, चित अने आनंदमय आत्मरुप बनेला शक्तिए सहवर्तमान राज-हरपालदेवजीनी स्थितिमां लेश पण फेरफार न थयो, परंतु युवराज तथा अमात्य आदिना अन्तः-करणमां भय फेलायो, तेओए तुरत राज्यज्योतिषीने बोलाबी पृथ्वी तथा आकाश आदिमां दे-खाइ आवता विपरीत चिहो सबंधी सघळी हकीकत सांभळवानी इच्छा वतावी. त्यारे राज्यज्योति-पीए कहुं के आ जे कांइ आकाश आदिमां विपरीत चिह्नो देखाय छे ते उत्पात कहेवाय छे अने ते दिट्य, आन्तरिक्ष अने भौम ए रीते त्रण प्रकारना होय छे. ग्रह तथा नक्षत्रोना विकारने दिव्य उत्पात कहे छे, उल्का, निर्घात, पवन, परिवेष, गन्धर्वनगर अने इन्द्रधतुष आदि आन्तरिक्ष उत्पात लेखाय छे तेमज भूमि उपर चर तथा स्थिर वस्तुओमां थनारा उत्पातो भौम कहेवाय छे. भौम उत्पात ज्ञान्ति करवाथी निष्टत्त थाय छे, परंतु दिव्य उत्पात ज्ञान्ति करवाथी निष्टत्त थता नथी तेम मन्द पण थता नथी एम केटलाएक मुनिओनी मान्यता छै केटलाएक ऋषिओतुं कहेवं एवं छे के अत्यंत सुवर्ण, अन्न, गौ, अने भूमिना दान करवाथी तेमज शिवाळयमां भूमि उपर गोदोइन कर-

१ देह अनित्य होवाथी ए देहना धर्म पण अनित्य छे.

वाथी तथा करोडो होम करवाथी दिव्य उत्पातनुं पण ज्ञामन थइ शके छे. दिव्य उत्पातनुं फळ राजा, राजपुत्र, कोश, वाहन, नगर, राणी, पुरोहित अने प्रजा ए आठेने प्राप्त थाय छे. शिव-लिङ्ग, देवमूर्त्ति अने देवमन्दिर विना कारण भांगी जाय, चलायमान थाय अथवा तेने प्रस्वेद आवे, मूर्तिनां नेत्रोगांथी अश्रुपात याय अथवा मूर्ति आदि वोळी उठे तेमज वृत्य करवा लागे इत्यादि अन्यविकारो पण उत्पन्न थाय तो राजानो तथा देशनो नाश थाय छे. देवना उत्सवमां जेमां दे-वनी मूर्ति विराजमान होय ए शकटनां धुर, चक्रयुग अने ध्वज भांगी जाय, पडी जाय, उंधा वळी जाय, क्षतयुक्त थाय अथवा अटकी जाय तो देशतुं अने राजातुं अश्चभ थाय छे. ऋषि, धर्म, पितृ अने ब्रह्माथी उत्पन्न थएला उत्पाततुं फळ ब्राह्मणोने प्राप्त थाय छे. रुद्र अने इन्द्र आदि दिक्-पाळोना उत्पातथी पुराओतुं अग्रुभ थाय छे. बृहस्पति, शुक्र अने शनैश्वरना उत्पातथी पुरोहिततुं अञ्चभ थाय छे, विष्णुनी मूर्ति आदिमां कांइ उत्पात थाय तो तेतुं फळ प्रजाने प्राप्त थाय छे. कॉ-र्तिकेय अने विशाखना उत्पातनुं फळ मांडलिक राजाओने मळे छे. वेदच्यासना उत्पातनुं फळ रा-जाना मंत्रीने थाय छे. गणपतिनी प्रतिमामां कांइ उत्पात थाय तो तेतुं अनिष्ट फळ सेनापति भो-गवे छे. ब्रह्मा अने विश्वकर्मानी मूर्तिमां विकार थतां प्रजा विनाश पामे छे. देवताओना कुपार, कुमारी, स्त्री अने सेवकोनी मूर्तिमां कांइ उत्पात थाय तो ते क्रम पूर्वक राजाना कुमार, कुमारी, राणी अने सेवकोतुं अनिष्ट करे छे. एवीज रीते राक्षस, पिशाच, गुह्यक अने नागोना कुमार, कु-मारी, स्त्री तथा सेवकोमां उद्भवेको उत्पात क्रमपूर्वक राजाना कुमार, कुमारी, राणी तथा सेव-कोतुं अनिष्ट करनारो थाय छे. ए वधा उत्पातोतुं फळ आठ महिना पछी प्राप्त थाय छे. देविवका-रने जाणी राजाना पुरोहिते पवित्र थइ स्नान करी त्रण दिवस पर्यन्त उपवास करवा अने जे प्र-तिमामां उत्पात थयो होय ते प्रतिमानुं स्नान, पुष्प, अनुलेपन अने वस्त्रोथी पूजन करी मधुपर्क, अनेक प्रकारना मोदक आदि भक्ष्य पदार्थ अने विछ विधिपूर्वक समर्पण करवां तेमज देवताना मंत्र भणी अग्निमां यथाविधि स्थालिपाकतुं हवन करवुं. देवनी मूर्ति आदिमां विकार जोइ जे राजा सप्त रात्रि पर्यन्त शांति करावे, देवब्राह्मणोतुं विधिवत् पूजन अने गीत तथा तृत्य आदिनी साथे महोत्सव करे तेपज ब्राह्मणोने दक्षिणा आपे ते राजाने जत्या-ततं अनिष्ट फळ वाध करी शकतुं नथी. जे राजाना राज्यमां अग्नि वगर अग्निनी ज्वाळाओं जो-वामां आवे अने काष्ट्रधीयुक्त अग्नि पण पञ्चलित न थाय तो राजा अने देश उभय पीडा पामे छे. जल, मांस अने आर्द्र पदार्थ अकस्मात वळी जवाथी राजानो वध धाय छे. खर्ड आदि *शस्त्र*

सळगी उठे तो भयंकर युद्ध थाय छे. सैन्य, ग्राम अने नगरमां अग्नि न रहे अर्थात् वधाना घरमां आग बुझाइ जाय तो अग्निथी भय उपने छे. पासाद अर्थात देवमन्दिर अथवा राजमन्दिर, गृह, तोरण अने ध्वज आदि अग्नि वगर वळी जाय अथवा विजळी पडवाथी दुग्य वनी जाय तो छ महिना पछी परचक्र अर्थात् शत्रुसैन्यनुं आगमन थाय छे. विना अग्नि धूम्र जोवामां आवे अने दिवसे धूलि अथवा अन्धकार फेलाय तो अति भय उपने छे. रात्रिए वादळां न होय छतां ता-राओ न देखाय अथवा दिवसे ताराओ देखाय तो पण अनिष्ट थाय छे. नगर, गो आदि चतु-ष्पद, पक्षी अने मनुष्य वळतां देखाय तो भय उत्पन्न थाय छे अने जेनां शय्या, वल्ल अने वा-ळनी अन्दर धूम, अप्नि अथवा अप्निना तणखा जोवामां आवे तेतुं मृत्यु थाय छे. खङ्ग आदि शस्त्रोतुं वळी जबुं, चलायमान थबुं, शब्दायमान थबुं, कोश निर्ममन अर्थात् म्यानथी वहार निकळबुं, कंपबुं अथवा कोइ अन्य विकारनी उत्पत्ति थवाथी भयंकर युद्ध थाय छे. क्षीरद्वलना समीधने प्रज्वित करी तेमां अग्निना मंत्रो भणी श्वेत सरसव अने घृतनो होम करवाथी तेमज ब्राह्मणोने सुवर्णनी दक्षिणा आपवाथी अग्निनी विकृतिना दोषोनी ज्ञान्ति थाय छे. दक्षनी ज्ञाला अकस्मात भांगी पर्डवाथीं युद्धनो उद्योग शरु थाय छे. इस इसवा लागे तो देशनो नाश अने द्यक्ष रुदन करवा लागे तो रोगनी अत्यंत दृद्धि थाय छे. ऋतु वगर दक्ष पुष्पित थाय तो राज्यमां भेद उद्भवे छे, न्हानां द्रक्षो अत्यंत पुष्पित थाय तो वाळकोतुं मृत्यु निपने छे अने द्रक्षथी द्ध टपकवा छागे तो तमाम द्रव्यनो क्षय थाय छे. द्रक्षथी मध टपकवा छागे तो अश्व आदि वाहननो नाश, रुधिर टपके तो युद्ध, मध टपके तो रोग, तेल आदि स्नेह टपके तो दुर्भिक्षनो भय अने जळ टपके तो महान् भय उत्पन्न थाय छे. ग्रुष्क हुक्षो एकाएक अंकुरित थाय अने रोग रहित वृक्षी विना कारण शुक्क बनी जाय तो वळ तथा अन्ननो क्षय थाय छे. पडी गएछां वृक्ष पोतानी मेळे उमां थाय तो दैवथी भय उपने छे. मिसद्ध दक्षमां ऋतु वगर पुष्प तथा फळ टागेलां जो-व(मां आवे तो राजानुं मृत्यु थाय छे तथा एज दृक्षमां धूम्र निकळे अथवा अग्निनी ज्वाळा देखाइ आवे तो पण राजा मरण पामे छे. दक्ष चालवा लागे अथवा बोलवा लाग तो मनुष्योनो क्षय थाय छे. आ द्वस्विकृतिनुं फळ दश महिने मळे छे. पुष्पमाळा, गन्ध, धूप अने वस्त्रथी पूजेला दुसनी उपर छत्र राखी रुद्रना अग्यार अनुवाकोनो जप करवाथी तेमन " रुद्रेभ्य: स्वाहा " ए मंत्र भणी पडंग होम करवाथी जो राजा बाह्मणोने घृत तथा मधुयुक्त पायसान्नतुं भोजन करावे तो पण द्वक्षविकृतिनी शान्तिथाय छे. केटलाएक महर्षिओ द्वक्षविकृतिनी शान्तिमाटे

ब्राह्मणोने भूमिदान आपवातुं पण कहे छे.कमळ, यव अने घउं आदिना एक नाळमां बेत्रण कमळ आदि-खदूभवे तो तेना स्वामीनुं मरण थाय छे. तथा एक स्थानमां उभय पुष्प अथवा उभय फळ उद्भवे तो पण तेना स्वामीतुं मृत्यु समजवुं. खेतीनी अत्यंन्त द्वद्धि थाय अने एक द्वक्षमां अनेक प्रकारनां फळ फूल उत्पन्न थाय तो अवश्य शत्रुसैन्यतुं आगमन थाय छे. जेटला तल होय तेमांथी अर्ध भागतुं तेस्र निकळे अथीत् जेटलुं निकळवुं जोइए तेतुं अरधुं निकळे अथवा तलमांथी तेल विलक्तल नि-कळेज निह अने अन्नमां स्वाद न रहे तो अवस्य महान् भयनी उत्पत्ति थाय छे. विकारयुक्त पुष्प अथवा फळने गाम वाहेर फेंकी देवुं अने सोम देवतानो चरु करवो तेमज शान्तिने माटे प्रानं अथवा वकरातुं विळदान देवं, खेतिमां विकृति जोइ पथम तो ए क्षेत्र ब्राह्मणोने आपी देवं अने पछीथी ते क्षेत्रनी वच्चे भूमिदेवताओनो चरु करवो; सस्य विकृतिनो दोष निवृत्त करवा माटे महर्षिओए ए उपाय वतावेळ छे. दृष्टि न थाय अथवा बहुज दृष्टि थाय तो दुर्भिक्ष पडे छे, अने शत्रुसेनातुं आगमन याय छे. वर्षाऋतु विना अन्य ऋतुमां दृष्टि थाय तो रोगनी उत्पत्ति अने वादळ विना दृष्टि थाय तो राजातुं मरण थाय छे. गणितनी रीति प्रमाणे शिशिर आदि ऋतुतुं आगमन न थयुं होय छतां शीत उष्णनो निपर्यय थइ जाय अर्थात् शीतकाळमां उष्णता जणाय अने उष्णकाळमां शीत पढे तो छ महिनानी अंदर राज्यमां भय फेळाय छे अथवा दैवज-नित रोगयी भय उपने छे. वर्षाऋतु विना अन्य ऋतुमां अविच्छिन्न सात दिवस पर्यन्त दृष्टि थाय तो मुख्य राजा मरण पामे छे. रुधिरनी दृष्टि थाय तो युद्धः मांस, अस्थि अथवा वसा आदिनी दृष्टि थाय तो मरकी; घान्य, सुवर्ण, दृक्षनी छाल, पुष्प अथवा फळ आदिनी दृष्टि थाय तो ते नगरनी नाज्ञ थाय छे. वादळां वगर उपल पडवा लागे अथवा गर्दभ, उंट, मार्जीर तथा जम्बक आदि प्राणी विकार युक्त देखाय अने अतिष्टिष्टिमां पण छिद्र होय अधीत अति ष्टष्टि थया छतां कोइ कोइ स्थानमां बुन्द पण न पडे तो क्षेत्रोमां टीड आदिनो उपद्रव थाय छे. द्घ, घृत, मध, द्वि, रुधिर अथवा उप्णजळ वरसे तो देशनो नाश थाय छे. रुधिरनी दृष्टिथी राजाओ वच्चे युद्ध पण धाय छे. सूर्य निर्मळ छतां द्वस आदिनी छाया न पहे अथवा अवळी छाया पहे अथीत सूर्यनी तरफ छाया पडे तो देश म्होटा भयमां आवी पडे छे. वांदळांओ वगर आकाशनी अंदर दिवसे अधवा रात्रिए पूर्व अगर पश्चिममां इन्द्रधनुष देखाइ आवे तो महा दुर्भिक्ष थाय छे. दृष्टिविकृति वखते तेनी शान्ति माटे सूर्य, चन्द्र, मेघ अने वायुनो याग करवो तथा भोजनना पदार्थ, गाय

F)(2

126

अने सुवर्णतुं दान करवुं जोइए. नदी नगरनी समीपे वहेती होय अने ते दूर खसे तो नगर उज्जड वनी जाय छे. हृद्, सरोवर अने झरणां आदि जे कोइ दिश्रस धुकातां न होय ते शुष्क वनी जाय तो पण नगर शून्यताने पाप्त थाय छे. जे देशनी अंदर नदीओमां तेल आदि स्नेह, रुधिर अथवा मांस वहेवा लागे, नदी न्हानी वनी जाय, निर्मेळ न रहे अथवा विपरीत प्रवाहने घारण करे तो छ महिनामां ते देश उपर परचक्र अर्थात् शत्रुसैन्य चडी आवे छे. कुवाओना मध्य भागमां अग्निनी ज्वाळा उढे, धूम्र निकळे, कुवाओतुं जळ उवळवा लागे, अथवा कुवाना मध्य भागमांथी ं गीत अने प्रॅंजिंहेंपन जेवा शब्द संभळाय तो मतुष्योमां मरकीनो उपद्रव थाय छे. खाडो खोद्या विना जळ निकळी आवे, जळनो स्वाद तथा गन्ध वदली जाय अने तळाव तथा कूप आदि ज-काशयमा कांइ विकार उत्पन्न थाय तो महाभय उपजे छे. जळ विकृतिनी निष्टत्तिने माटे वरुणनी पूजा तथा तेना मंत्रोनो जप अने होम पण करवो जोइए, स्त्रीओना प्रसवमां विकार होय अर्थात श्वान तथा मार्जार आदि जेवी आकृतिवाळां वाळको उत्पन्न थाय, एकी वखते वे त्रण चार अ-थवा पांच वाळकोनो जन्म थाय, तेमज मसवकाल पहेलां अगर पछीथी मसव थाय तो देश अने कुळने। क्षय थाय छे. घोडी, सांढणी, भेंस, गाय अने हाथणीने एकसाये वे वचां अवतरे तो तेतुं मृत्यु थाय छै. जे स्त्रीओना प्रसवमां विकार थयो होय तेओने पोतानुं हित चाहनारा पुरुषे वीजा देशमां रजा आपवी अने विविध प्रकारना मनोरथथी ब्राह्मणोने तुप्त करी ज्ञान्ति कराववी. घोडी आदि प्राओना प्रसवमां विकार होय तो तेने तेना समुदायथी अलग करी अन्य देशमां मुकी आववां, जो तेम न करवामां आवे तो नगरना स्वामीनो अथवा पशुना युध्धनो नाश थाय छे। एक जाति-नुं पुरा पोतानी जातिने छोडी अन्य जातिनां स्त्री पुराधी संभाग करे तो अशुभ थाय छे. वे गायो परस्पर स्तनपान करे, वे वळद स्तनपान करे अथवा गोवत्सना स्तनने श्वान चुसवा लागे तो त्रण महिनामां अवरय ते स्थळे शत्रुनी सेना आवी पहोंचे छे. आ उत्पातोनी शान्ति माटे एवो लेख छे के जे पशुमां उत्पात थया होय, तेनो त्याग करवी, विवासन अर्थात तेने अन्य स्थळे मोकली आपवां, अथवा बाह्मणने दानमां आपी देवां, एथी शीघ्र द्याभ थाय छे. पशु विकृतिनी निष्टत्तिने माटे ब्राह्मणोने तृप्त करी जप तथा होम करवो जोइए अने राजाना पुरोहिते मजापत्य मंत्र भणी स्थालीपाक, पशु, अन्न अने दक्षिणा आदिथी मजापतिनुं पूजन करवुं जोइए, रय आदि यान अने अश्व आदि वाहन जोडचा वगर चाळवा लागे अथवा अश्व

आदि जोडया छतां पण न चाले तेमज रथ आदितुं चक्र पृथ्वीमां छुंची जाय अथवा भांगी जाय तो राज्यने भय थाय छे, ढोल आदि वाद्यो वगाडया विना वागवा लागे अथवा वगाडया छतां शब्द न करे अथवा ब्युत्पत्ति अर्थात् एक वाद्यमांथी अनेक मकारना शब्दो निकळवा लागे तो शत्रुर्तु आगमन अथवा राजातुं मृत्यु थाय छे. आकाशमां गीतनो शब्द अथवा ढोल आदि वाद्यनो शब्द संभळाय, चलनशील रथ आदि न चाले अने नहि चालनारां द्रक्ष आदि चालवा लागे तो मृत्यु अथवा रोगनी वृद्धि थाय छे. ढोल आदि वाद्य वगाडतां तेमांथी कोइ अन्य प्रकारनो ध्विन निकळे तो शत्रुथी पराजय थाय छे। वळद अने इळ परस्पर मळी जाय. तथा छज्जां आदि गृहना उपस्करोमां कांइ विकार जणाय अने तेमांथी शृगाळना शब्द शब्द संभळाय तो शस्त्र भय अर्थात् युद्ध थाय छे. ए वायव्य उत्पातनी शांतिने माटे राजाए सक्तुथी वायुतुं पूजन करवुं जोइए तथा पवित्र ब्राह्मणोद्वारा "आवायोः" इत्यादि पांच वैदिक ऋचाओनो जप कराववो जोइए, तेमज पायसात्र तथा दक्षिणाथी ब्राह्मणोने तृप्त करी वहु भोजनवाळा अने वहु दक्षिणावाळा होम पण करवा जोइए. नगरमां रहेनारां पक्षीओ वनमां चाल्यां जाय अ-थवा वनमां रहेनारां पक्षीओं निर्भय वनी नगरमां प्रवेश करे, दिवसे विचरनारां काक आदि पक्षी रात्रिए विचरे अथवा रात्रिए विचरनारां उल्लक आदि पक्षी दिवसे विचरे अने मृग अथवा पक्षी वने संध्या समये मंडल वांघे अथवा एकत्र थइ दिप्त दिशामां शब्द करे तो अवस्य भयनी उत्पत्ति थाय छे. इयेनपक्षी जाणे रुद्दन करतां होय तेम जणाय, शुगाल सूर्यनी तरफ मुख राखी द्वार जपर शब्द करे, राजाना महेलमां कपोत अथवा उल्लब प्रवेश करे, प्रदोष समये कुक्ट शब्द करे, हेम-न्त आदि ऋतुमां कोयल वोले अने इयेन आदि मांसभक्षक पक्षीओ आकाशमां अवळुं अर्थात अपदक्षिण मंडळ वांधी विचरण करे तो भय उपने छे. गृह, चैत्य, तोरण असे द्वार उपर पक्षी-ओतुं टोळुं वेसे; गृह आदिनी वच्चे मधमाखीओ मधपूडो वांधे अथवा गृह आदिनी वच्चे कमळ-नां पुष्प उत्पन्न थाय तो ते गृह आदिनो विनाश थाय छे. जो श्वान गृहनी अंदर अस्थि अथवा मृतक मनुष्यनां हाथ पग आदि अंग उपाडी लावे तो राजानुं मृत्यु थाय छे. मृग आदिना विका-रनी शान्तिने पाटे दक्षिणा सहित होम करवा, " देवाकपोत " इत्यादि मंत्रनो पांच ब्राह्मणो पासे जप कराववो, एक ब्राह्मण पासे "सदेवा" इत्यादि मंत्रनो जप कराववो अने ए ब्राह्मणोने गोदान आपवुं. शाकुन स्त्तनो, मंत्रनो अने अथर्वशीर्ष

जप कराववो जोइए. इन्द्रध्वज, इन्द्रकील अर्थात् द्वारनी अर्गला स्तंभ, द्वार अने एवी ज रीते कपाट, तोरण तथा ध्वज आदि भांगी जाय अथवा नीचे पढी जाय तो राजानुं मृत्यु थाय छे. वन्ने संध्यानो समय दीप्त होय, वनना मध्य भागमां अप्ति विना भूम देखाइ आवे, छिद्र विना भूमि फाटी जाय अथवा भूकंप थाय ए वधा उत्पातो भयपद गणाय छे. जे देशनो राजा पाखंड अने नास्तिकोनो भक्त होय तेमज सदाचार रहित, क्रोधी, इपाँयुक्त, क्रूर तथा जेनुं चिन छडा-इमां भागी रहेछुं होय ते देशनो नाश थाय छे. जे स्थळे वाळको शक्ष, छाकडी अथवा पत्थरने हायमां छइ परस्पर प्रहार करे, पढावी लिए वे इकडा करी नांखे अने "छेदो भेदो " इत्यादि शब्द वोळे तो तुरतज भय उपजे छे. जे गृहनी भींत उपर अंगार अथवा गेरु आदिथी भयंकर जीवोनां मृतक मतुष्योनां चित्र आळेखवामां आवे अथवा गृहनां स्त्रामीनुं ज चित्र अंगार आदिथी आळेखवामां आवे तो ते गृह तुरतज विनाश पामे छे. जे गृह मकरीना जाळां अने मकरीओथी ज्याप्त होय, बन्ने सन्ध्या वखते जे गृहनुं पूजन न थतुं होय, जे गृहमां निरन्तर कळह वर्तमान होय तेमज स्त्री पण सदा उच्छिष्ठ रहेती होय, ते गृह विनाशने प्राप्त थाय छे. जो राक्षस प्रत्यक्षपणे मतुष्योना जोवामां आवे, तो मरकीनो उपद्रव थाय छे. महा शान्तिओ करवाथी, विक्र आपवायी घणां भोजन कराववाथी तेमज इन्द्र अने इन्द्राणीनुं पूजन कराववाथी उक्त उत्पातोनी शान्ति थाय छे.

प्रथम आन्तरिक्ष उत्पातोमां उल्का, निर्धात, पवनपरिवेप, गन्धवनगर अने इन्द्रधतुष्य आदि गणाव्यां, तेमां स्वर्गनी अंदर शुभ कर्मनुं फळ भोगवी जीव भूमिपर जन्म लेवा माटे उल्का रूपे पढे छे, तेने उत्कापात कहे छे; ए उल्कानाधिष्ण्या, उल्का, अशिन, विद्युत अने तारा ए रीते पांच भेद छे. उल्कानुं तथा धिष्ण्यानुं फळ पंदर दिवसे अर्थात् एक पखवाडीए, अशिननुं फळ त्रण पखवाडीए अने विद्युत तथा तारानुं फळ छ दिवसे माप्त थाय छे. तारा तथा धिष्ण्या अर्ध फळ अने विद्युत, उल्का तथा अशिन संपूर्ण फळ आपे छे. महान शब्दथी युक्त भूमिनुं विदारण करती मनुष्य, हाथी, घोडा, मृग, पापाण, गृह, गृक्ष अने पशु उपर पडे छे तेने अशिन कहे छे. ए अशिननो आकार चक्र जेवो होय छे. जे जीवोने भय आपती तडतड शब्द करती वांकी तेमज महोटी जीवोना समृह उपर तथा काष्रआदि इन्धन उपर पडे छे, तेने विद्युत कहे छे. पातळी निश्चा सरखा पुष्टस्युक्त, पञ्चित अंगार तुल्य देदीप्यमान अने वे हाथ कांनी होय ते घिष्ण्या

कहेवाय छे ते जे स्थानथी चाले छे त्रांथी दश धतुष अर्थात चालीश हाथ पर्यंत अधिक देखाय छे. एक हाथ छांवी, खेतवर्ण, अथवा ताम्रवर्णवाळी, कमळना तन्तु समान अत्यंत पातळी अने जाणे आकाशमा खेंचाती होय तेम तिर्यकपणे उपर अथवा नीचे जाय तेने उलका कहे छे. जेतुं शिर म्होटुं होय, जे पहतां पहतां मृद्धि पामती जाय, जेतुं पुच्छ छघु होय अने जे ममाणमां एक पुरुष लांबी होय तेने पण उरका कहे छे. ए उरकाना घणा भेद छे. जे उरकाओंनुं रूप मेत अथवा मृतक मनुष्य, खर्इ आदि शख्न, गर्दभ, छंट, मगर, वानर, दाढवाळां सूकर आदि भाणि, इळ, भृग, घो, सर्प अथवा धूम्र तुल्य होय ते अग्रुभ गणाय छे, तेमज जेने वन्ने तरफ शिर होय ते उल्का पण अञ्चभ लेखाय छे. ध्वजा, मत्स्य, हाथी, पर्वत, कमल, चन्द्रमा, अन्व, गाळेली चांदी, इंस, श्रीवत्स नामतुं चिह्न, बज्र, शंख अने स्वस्तिकना तुल्य आकृतिवाळी उल्का कल्याण अने स्रभिक्ष करे छे आकाशना मध्य भागमांथी घणी उनका पडे तो राजानो तथा देशनो नाश थाय छे. उत्का आकाशमां अति भ्रमण करे तो लोकमां व्याक्तळता वधे छे. जे उत्का चन्द्र सूर्यनो स्प-ही करती अथवा चंद्र सूर्यथी निकळी पृथ्वीवर पडे अने एज वखते भूकंप थाय तो, ते उस्का शत्रु सैन्यतुं आगमन, राजभय, दुर्भिक्षभय, अने अष्टृष्टिभयेन उत्पन्न करे छे. सूर्यने अपसन्य करी अर्थात् जमणी वाज् राखी उल्का पढे तो पौर अर्थात् नगरमां रहेवावाळा राजानो नाज्ञ थाय छे. तेमज चंन्द्रने अपलव्य राखी उल्का पढे तो चढाइ करी जनारा राजानो नाज्ञ थाय छे अने सूर्यथी निकळेली उल्का चढाइ करी जनारा राजानी समीप पडे तो शुभ फळ आपे छे. श्वेत, रक्त, पीत अने कृष्ण वर्णनी उन्का क्रमपूर्वक ब्राह्मण आदि चारे वर्णोंनो नाश करे छे. जे उन्कानुं शिर पू-ध्वी साथे अथडाय ते ब्राह्मणोनो नाज्ञ करे छे. जेनी छाती पृथ्वीनो स्पर्श करे ते उल्का भन्नीओ-नो, जेनां पार्श्व भूमिनो स्पर्श करे ते उल्का वैक्योनो अने जेतुं पुच्छ भूमिनो स्पर्श करे ते उल्का शुद्रोनो नाश करे छ उत्तर, पूर्व, दक्षिण अने पश्चिम दिशामां रूक्ष अर्थात् रुखी उल्का पडे तो ब्राह्मण आदि चारे वर्णतुं अशुभ करे छे. एज उल्का सीधी, निर्मळ, अखंडित अने आकाशना अर्घा भागमां जनारी होय तो पोतपोतानी दिशा अनुसार ब्राह्मण आदि चारे वर्णनी दृद्धि करे छे. जे उल्का क्याव, अरुण, नीळ, असित, रुधिर तुल्य, अग्नि तुल्य अथवा भस्म जेवा वर्णवाळी अने रूक्ष होय; दिवसे अथवा सन्ध्या समये पढी होय अने ते वांकी तेमज खंडित होय तो शब् सैन्यथी भयनी उत्पत्ति थाय छे. उदय तथा अस्त समये जो उल्का सूर्यने ताडन करे तो पौर्नु अने चंद्रने ताडन करे तो पापी राजातुं मृत्यु थाय छे. जो उल्का पूर्वी फाल्गुनी, पुनर्वसु, धनिष्टा

अने मूळ नक्षत्रने ताडन करे तो स्त्रीओने; पुष्य, स्वाति अने श्रवणने ताडन करे तो ब्राह्मण तथा क्षत्रिओने; रोहिणी, त्रण उत्तरा, ग्रुगशिर, चित्रा, अनुराधा अने रेवतीने ताडन करे तो राजाओने त्रणपूर्वा, भरणी, मद्या, आद्यी, आश्लेपा, ज्येष्ठा अने मूळ नक्षत्रने ताडन करे तो तस्करोने; तथा अश्विनी, पुष्प, इस्त, अभिजित, कृत्तिका अने विशाखाने ताडन करे तो गीतई नृत्य आदि कळाने जाणनाराओने पीडा थाय छे. ए उल्का कोइ देवतानी मूर्ति उपर पडे तो राजाने अने देशने भय-भीत करे छे, इन्द्रनी मूर्ति उपर पडे तो केवळ राजानेज भय उपजावे छे, गृह उपर पडे तो गृहना स्वामीने पीडा करे छे. उल्का जे दिशाना स्वामी गृहने ताडन करे ते दिशाना निवासी मनुष्योने पीडा थाय छे. धान्यना खळामां उल्का पडे तो खेती करनाराओ पीडा पामे छे. प्रधान दक्ष उपर उल्का पड़े तो प्रतिष्ठित मनुष्यो पीडित थाय छे. नगरना द्वार उपर उल्का पड़े तो नगरनी क्षय थाय छे. द्वारनी अंगेळा पर उल्का पडे तो प्रजानो क्षय थाय छे. ब्रह्माना मन्दिरपर उल्कापात थाय तो ब्रासमो नाज्ञ पामे छे अने गायोना स्थानमा उस्का पडे तो ने मनुष्य घणी गायोनो स्या-मी होय ते पीडा पामे छे. उल्का पडती वखते क्ष्वेडा अर्थात युद्धनी वच्चे, वीरपुरुषो जे सिंहनाद करे छे ते, आस्फोटित अर्थात् महा पोतानी एक भुजा उपर वीजा हायना आवातथी जे शब्द करे छे ते, वाद्यना शब्द अने गीत आदिना महान शब्द थाय तो राजा अने देश भयभीत वने छे. जे उन्का आकाशमां लांवा वखत सुधी स्थिर रहे अने तेनो आकार दंड तुल्य होय तो ते राजाने भय आपे छे. जे उनका जाणे दोरीथी वांधेळी होय तेम आकाशमां छटकती जोवामां आवे अथवा जेनी आकार इन्द्रध्वज तुल्य होय ते पण राजाने भय उपजावे छे. जे उल्का ज्याथी निकळी त्यांन अवळी चाळी जाय ते श्रेष्ठीओनो क्षय करे छे. वक्र गति करनारी उल्का राजानी राणीनो नाश करे छे. उल्कातुं मुख नीचुं होय तो राजा अने उंचु होय तो बाह्मण नाश पामे छे. मयूरना पी-च्छ समान जे उत्कानी आकृति होय ते छोकनो क्षय करे छे. जे उत्कानी गति सर्प जेवी होय ते स्वीओनं अनिष्ठ करे छे. छत्र तुरुप आकृतिवाळी उरका पुरोहितनो नाश करे छे. वांसना गुरुप समान आकृतिवाळी उलका देशमा दोपने उत्पन्न करे छे. जे उलका सर्प अथवा सुकर तुल्य आकृ-तिवाळी होय अने जेमां अग्निकण जडता होय अथवा जे उल्का खंड खंड थइ जाय अने शब्द पण करे ते अञ्चभ फळ आपे छे. जे उन्का इन्द्रधनुप जेवी होय ते राज्यनो क्षय करे छे. जे उन्का उत्पन्न थइ आकाशमांज लीन थइ जाय ते मेघोनो नाश करे छे. अर्थात् दृष्टि यती नथी. पवन सन्मुख गमन करनारी, वक्र गतिवाळी अथवा जरा दूर चाली पाली फरनारी उल्का अशुभ गणा-

य छे. जे दिशामां नगर अथवा सेना उपर उल्का पडे ते दिशाथी राजाने भय उपजे छे. अने जे ्रि दिशामां देदीप्यमान उल्का पडे ते दिशापर चढाइ करनारा राजा सत्वर शत्रुओने जीती शके छे. य

पवनथी मंडलोभूत अर्थात गोळ थएलां सूर्य चन्द्रनां किरणो स्वल्प मेघयुक्त आकाशमां मितविस्वित वनी अनेक मकारनी रंगवेरंगी आकृतिवाळा देखाइ आवे तेने परिवेप कहे छे. रक्त आदि रंगना परिवेष इन्द्र आदि देवताओं करे छे अर्थात परिवेषनो रक्तवर्ण होय तो इन्द्रकृत, नी-लवर्ण होय तो यमकृत, जरा श्वेत होय तो वरुणकृत, क्योतवर्ण होय तो नैर्ऋतकृत, मेघसदशवर्ण होय तो वायुकृत, कृष्ण तथा श्वेतवर्णथी पिश्रित होय तो शिवकृत, हरितवर्ण होय तो ब्रह्मिकृत अने शुक्रवर्ण होय तो अग्निकृत परिवेष छे एम जाणवुं. कुवेरे करेलो परिवेप इयामवर्ण होय छे. एवीज रीते इन्द्र आदि अन्य देवताओ पण रक्त आदि जे गुण कह्या तेना परस्पर आश्रयथी परि-वेप करे छे अर्थात एकना रंगमां वीजानो रंग मळे छे अने एथी परिवेपमां अनेक रंग दृष्टिगोचर थाय छे. जे परिवेप वारंवार मगट थइ लय पामे छे ते पण वायुकृत होय छे अने ते अलप फळ आपे छे. शिशिर आदि छ ऋतुओमां क्रमपूर्वक चापपक्षी, मयूर, रजत, तेल, दूध, अने जल जेवा रंगनो परिवेप स्निग्ध अने अखंडित इत्तवाळो होय तो ते प्रजामां कल्याण अने सुभिक्ष करे छे. जे परिवेप अखिल आकाशमां गमन करे अथीत उदयथी आरंभी अस्त पर्यन्त सूर्य अथवा चन्द्रनी साथे रहे ते तथा जे अनेक वर्णवाळो, रुधिरतुल्य वर्णवाळो, रूक्ष, खंडित, गाडी, धतुष, अथवा शुंगाटकनी माफक त्रिकोण आकृतिवाळो होय ते परिवेष अशुभ गणाय छे. मयूरना कंठ जेवा वर्णवाळो परिवेप होय तो अत्यंत दृष्टि थाय छे. घणा रंगयुक्त परिवेप होय तो राजानुं मृत्यु थाय छे. परिवेप धूम्रवर्ण होय तो भय उपजे छे. इन्द्रधनुष जेवा वर्णवाळो अथवा अशोक द्वक्षना पुष्प समान रक्तवर्ण परिवेप होय तो युद्ध थाय छे. जे परिवेप एक रंगनो, गहेरो, निर्मळ, पोताना ऋतने अनुसरता रंगवाळो अने श्वर वादळांओथी न्याप्त होय ते शीघ्र दृष्टि करे छे अने जे परि-वेप पीतवर्ण होय तेमज जेना मध्यभागमां अति देदीप्यमान सूर्य होय ते पण शीघ्र वर्षा करे छे. दीप्त अर्थात् सूर्य तरफ मुख राखी पक्षी अने मृग परिवेपने वखते शब्द करे अने परिवेप मिलन होय तेमज अति म्होटं होय अने पातःकाळ, मध्यान्हकाळ अथवा सायंकाळनो समय होय तो भयनी उत्पत्ति थाय छे. जो परिवेप विद्युत् तथा उल्का आदिथी ताडित होय तो ग्रह्मथी राजानुं मृत्यु थाय छे. हमेगां दिवसे सूर्य तथा रात्रिए चन्द्रमा रक्तवर्ण रहे तो राजानुं मृत्यु थाय छे. उ दय अने अस्त समये सूर्य तथा चन्द्र वारंवार परिवेषयुक्त थाय तो पण राजानुं मृत्यु समजवुं.

परिवेषनां वे मंडल होय ते सेनाना स्वामीने भय उपजावे छे. वहू युद्ध करावतां नथी, त्रण मंड-लनो परिवेष होय तो युद्ध, चार मंडलनो परिवेप होय तो राजाना युवराजने भय अने पांच मंड-लनो परिवेष होय तो राजाना नगरने शत्रु घेरी ले छे. चन्द्रमाना परिवेष वच्चे भौम आदि कोइ ग्रह होय तो त्रण दिवसमां दृष्टि अथवा एक महिनानी अंदर युद्ध थाय छे. जे राजाना जन्मल-यनो स्वामी, जन्मराशिनो स्वामी, अने जन्मनक्षत्र परिवेपनी वच्चे आवी जाय तो ते राजातुं अ-द्युभ थाय छे. सूर्य चन्द्रना परिवेपनी अंदर शनैश्वर होय तो कांग आदि लघु अन्ननो लय करे छे, पवनयुक्त दृष्टि करे छे अने दृक्ष आदि स्थावर पदार्थ तेमज खेती करनाराओ नाज्ञ पामे छे, जो-परिवेपनी वच्चे मंगळ होय तो राजकुमार, सेनापित अने सेनाने व्याक्कळता प्राप्त थाय छे. तेमज अप्नि अने शस्त्रथी भय उपने छे. जो परिवेपमां बृहस्पति होय तो पुरोहित, राजाना मंत्री अने राजाने पीडा थाय छे. जो परिवेषमां बुध होय तो राजाओना मंत्री, वृक्ष आदि स्थावर अने ले-खक दृद्धि पामे छे तथा दृष्टि पण सारी थाय छे. जो परिवेषमां शुक्र होय तो चढाइ करी जनारा क्षत्रिय राजा तेमज राजानी राणी पीढा पामे छे अने दुर्भिक्ष पण थाय छे. जो परिवेपमां भूमकेतु होय तो दुर्भिक्ष, अग्नि, मरकी, राजा अने युद्धशी प्रजाने भय थाय छे. जो परिवेपमां राहु होय अर्थात् चन्द्र ग्रहण समये परिवेप होय तो गर्भने भय, रोगनी उत्पत्ति अने राजाने पण भय थाय छे. भौम आदि गृहोमांथी कोइ वे गृह सूर्य अथवा चन्द्रना परिवेप वच्चे होय तो घणां युद्धो थाय छे. जो परिवेषमां त्रण ग्रह होय तो दुर्भिक्षयी अने अदृष्टियी भय उत्पन्न थाय छे. जो परिवेषमां चार ग्रह होय तो मंत्री अने पुरोहित सहित राजा मृत्यु पामे छे. जो परिवेपमां पांच अथवा छ ग्रह होय तो प्रख्यनी माफक जगत्नी स्थिति वनी जाय छे. भौम आदि ताराग्रह अने अश्विनी आदि नक्षत्र एमांथी कोइ एकनो परिवेष अलग होय अर्थात् सूर्य चन्द्रनी साथे न होय तेमज ते परि-वेप थया पछी जो केतुनो उदय न थाय तो राजानुं मृत्यु थाय छे. जो केतुनो उदय थाय तो परि-वेपनुं फळ प्राप्त थतुं नथी परंतु केतुनुंज फळ प्राप्त थाय छे. प्रतिपदा आदि चार तिथिओमां परिवेप होय तो ब्राह्मण आदि चारे वर्णो क्रमपूर्वक पीडा पामे छे, पंचमी आदि तिथि विषे परिवेप होय तो क्रम-पूर्वक श्रेणी, नगर अने कोशानुं अशुभ थाय छे. अष्टमीने दिवसे परिवेप होय तो युवराजने तथा नवमी आदि त्रण तिथिओमा परिवेष होय तो राजाने दोपकर थइ पडे छे, द्वादशीने दिवसे परिवेश होय तो नगरने शतुओं घेरी ले छे, त्रयोदशीने दिवसे परिवेश होय तो सेनामां क्षोभ थाय छे. चतुर्दशीने दिवसे परिवेप होय तो राजानी राणीने पीडा थाय छे अने अमावास्या अथवा पूर्णिमाने दिवसे परिवेप

होय तो पण राजानेज पीडा करे छे. परिवेपमां त्रण रेखाओ होय छे. तेमां अंदरनी रेखाथी नगरमां रहेला राजानुं, वाहिरनी रेखाथी चढाइ करी जनारा राजानुं अने मध्यनी रेखाथी आक्रैन्दसारनुं ग्रुभाग्रुभ विचारनुं. जेनी रेखा रक्तवर्ण, इयामवर्ण तथा रूक्ष होय तेनो पराजय अने जेनी रेखा निर्मळ, श्वेत तथा कान्तियुक्त होय तेनो जय थाय छे.

वादळांओथी व्याप्त थएला आकाशमां पवने रोकेलां सूर्यनां किरणा धतुषने आकारे रंग वेरंगी देखाइ आवे तेने इन्द्रधतुप कहे छे. केटलाएक आचार्योतुं कहेवुं एवुं छे के अनंत-नागना कुळमां उत्वन्न थएला सपोंना श्वासथी इन्द्रधनुष वने छे. चढाइ करी जनारा राजा सामे ए इन्द्रधनुप होय तो तेनो पराजय थाय छे. ए इन्द्रयनुप अखंडित पृथ्वीनो स्पर्श करी रहेलुं, कान्तियुक्त, स्निग्ध, गहेरुं अनेक वर्णोधी युक्त अने वे भागमां स्थित चढाइ करी जनारा राजाना पृष्ठ भागमां रहेळुं होय तो शुभ फळ आपे छे अने दृष्टि पण करे छे. अग्निकोण आदि वि दिशागां इन्द्रधतुप उत्पन्न थाय तो ते दिशाना स्वामीनुं मृत्यु थाय छे. मेघरहित आकाशमां इन्द्रयतुप होय तो शस्त्रयी भय अथीत युद्ध थाय छे. पीळा रंगतुं इन्द्रधतुप होय तो आग लागे के अने नीलरंगतुं इन्द्रधतुप होय तो दुर्भिक्ष पहे छे. जळनी वच्चे इन्द्रधतुम देखाइ आवे अर्थात् इन्द्रवतुषनो अग्र भाग जळ उपर होय तो वर्षा थती नथी. जो इन्द्रधतुष भूमि उपर होय तो खेतीनो नाश थाय छे. द्रक्ष उपर होय तो प्रजामां रोग वधे छे. सर्पनी वांबी उपर होय तो शस्त्रभय थाय छे अने जो रात्रिने वखते इन्द्रधनुष द्रष्टिगोचर थाय तो राजानो मंत्री मृत्यु पामे छे. दृष्टि थती होय अने पूर्व दिशामां इन्द्रधनुष देखाइ आवे तो दृष्टि निद्वत्त थाय छे तथा दृष्टि न होय अने पूर्वमां इन्द्रधतुप देखाय तो दृष्टि थाय छे पश्चिममां इन्द्रधतुप होय तो निरंतर दृष्टि करे छे. जो रात्रि वखते इन्द्रधतुष पूर्वमां देखाय तो राजाने पीडा थाय छे. दक्षिणमां देखाय तो सेनापतितुं मृत्यु, पश्चिममां देखाय तो नायक अर्थात् प्रधानपुरुपतुं मृत्यु अने उत्तरमां देखाय तो राजाना मंत्रीनो नाज्ञ थाय छे. रात्रि समये श्वेत, रक्त, पीत अने कृष्णवर्णनुं इन्द्रधनुप देखाय तो क्रमपूर्वक चारे वर्णने पीडा करे छे. जे दिशामां रात्रि वखते इन्द्रवतुष होय ते देशनो मुख्य राजा सत्वर पंचत्वने पामे छे.

उत्तर आदि चार दिशामां गन्धर्व नगर देखाय तो त क्रमपूर्वक राजानो पुरोहित, राजा,

१ नीतिज्ञास्त्रमां वार प्रकारना राजाओ लख्या छे. तेमां एक आक्रन्दसार पण छे.

सेनापित अने युवराजनुं अशुभ करे छे. श्वेत, रक्त, पीत अने कृष्ण वर्णनुं गन्यर्वनगर क्रमपूर्वक ब्राह्मण आदि चार वर्णोनो नाश करे छे. उत्तर दिशामां गन्धर्वनगर होय तो नगरना राजानो जय थाय छे, आग्नेय आदि कोणमां होय तो वर्णसंकरोनो नाश थाय छे, शान्त दिशामां तोरण- युक्त गन्पर्व नगर होय तो विजय थाय छे. समग्र दिशाओमां निरंतर गन्धर्व नगर देखाय तो ते राजा अने देश ऊभयने भय आपे छे. धूम्र, अग्नि, अथवा इन्द्रघनुष तुल्य कान्तिवाळुं गन्पर्व- नगर होय तो चोर अने वनमां रहेनारा भील आदि मार्या जाय छे. पांडुर रंगनुं गन्धर्व नगर होय तो अशनि पढे छे अने प्रचंड पवन चाले छे. दीप्त दिशामां गन्धर्व नगर होय तो राजानुं मृत्यु थाय छे. सेनानी अगर नगरनी डावी वाजु गन्धर्व नगर होय तो शत्रुभय अने जमणी वाजु होय तो जय आपे छे. जे वखते ध्वज अने तोरणयुक्त अनेक वर्ण अने अनेक आकृतिनां गन्धर्वनगर आ-काशमां देखाइ आवे त्यारे भूमि युद्धनी वच्चे हाथी, मनुष्य, अने अश्वोना रुधिरनुं पान करे छे.

एक पवन बीजा पानथी ताडित थइ ज्यारे आकाशयी पृथ्वी पर पडे ते समये जे शब्द थाय तेने निर्यात कहे छे. ए निर्धात समये सूर्य तरफ मुख राखी पक्षी शब्द करे तो अशुभ फळनी प्राप्ति थाय छे. सूर्योदय समये अर्थात् वे घडि दिवस चड्या पर्यन्त निर्धात थाय तो राज्यना अधिकारी छोको, राजा, धनवान, छडवैयाओ, स्त्री, विणक अने वेज्याओं विनाश पामे छे. एक महर दिवस चड्या पर्यन्त निर्धात शब्द थाय तो चकरी, भेड, शूद्र अने नगरना निवासीओनो क्षय थाय छे. वे महर पर्यन्त निर्धात शब्द थाय तो राजाना सेवको अने ब्राह्मणो पीडाने माप्त थाय छे. त्रीजा महरमां निर्धात थवाथी वैद्य तथा मेघनो क्षय थाय छे. चोथा महरमां निर्धात थवाथी चौर छोको पीडा पामे छे, सूर्यास्त समये निर्धात थवाथी नीच पुरुपोनो नाश थाय छे; रात्रिना प्रथम महरमां थयेछो निर्धात खेतीनो नाश करे छे, रात्रिना बीजा महरमां थयेछो निर्धात पिशाचोना समूहने पीडा करे छे, रात्रिना त्रीजा महरमां थयेछो निर्धात पिशाचोना समूहने पीडा करे छे, रात्रिना त्रीजा महरमां थयेछो निर्धात समये करे छे अने रात्रिना चतुर्थ महरमां थयेछो निर्धात शब्द जे दिशामां जाय ते दिशानो नाश करे छे.

मूर्यनी समीपे वीजो सूर्य देखाइ आवे तेने प्रतिसूर्य कहे छे. ते प्रतिसूर्य जे ऋतुमां सूर्यनों जेवों रंग होवो जोइए तेवाज रंगनो होय तथा स्निग्य, वैदूर्यमणि तुल्य वर्णवाळो, निर्मळ अने श्वेत होय तो कल्याण तथा सुभिक्ष करे छे. पीळा रंगनो प्रतिसूर्य होय तो प्रजामां रोग उत्पन्न करे छे.

अशोकना पुष्प जेवो रक्तवर्ण पतिसूर्य होय तो शस्त्रकोप अर्थात् युद्ध थाय छे. प्रतिसूर्योनी माला जोवामां आवे तो चोरभय, रोग अने राजानुं मृत्यु थाय छे. सूर्यविम्त्रनी उत्तरे प्रतिसूर्य देखाय तो दृष्टि थाय छे, दक्षिणे देखाय तो पवन चाले छे; सूर्यविम्बनी वन्ने वाजुए वे प्रतिसूर्य होय तो राजातुं मृत्यु अने नीचे होय तो प्रजामां मरकीनो उपद्रव थाय छे.

अन्धकारनी माफक अत्यंत कृष्णवर्णवाळी धूलिथी पर्वत, भगर तथा दृक्ष आदि कांइ-पण न देखाय तेवी रीते सर्व दिशाओं आच्छादित थइ जाय तो राजानुं मृत्यु थाय छे. धूमसमूह अथवा घूलि जे दिशामां प्रथम उत्पन्न थाय अथवा जे दिशामां प्रथम निष्टत्त थाय ते दिशामां सात दिवसनी अंदर अक्टय भयनी उत्पत्ति थाय छे. धूलिरूप मेघसमूह श्वेतकर्णनो होय तो राजाना मंत्री तथा देशोने पीडा, शीघ्रयुद्ध अने अति कष्ट्यी कार्यसिद्धि थाय छे. सुर्योदय समये आकाशने आच्छादित करतो धृलिसमृह एक दिवस अथवा वे दिवस पर्यन्त दृद्धि पामे तो महान भयनी उत्पत्ति थाय छे. एक रात्रि निरन्तर धूळिनी दृद्धि थती जाय तो मुख्य राजानुं मृत्य थाय छे अने वाकीना बुद्धिमान राजाओने ग्रुभ फळ आपे छे. जे राज्यमां वे रात्रि पर्यन्त घाटी अने घणी धूलि फेलाय ते राज्यमां परचक्र प्रवेश करे छे. त्रण अथवा चार रात्रि पर्यन्त पांज्यनी दृष्टि थाय तो अन्न अने छवण आदि रसो नाश पामे छे। पांच रात्रि पर्यन्त धूछि वरसे तो राजाओनी सेनामां क्षोभ थाय छे. पांशुनी दृष्टि थइ रह्या पछी धूमकेतुना उदय आदि कांइ उत्पात न थाय तो तीत्र भय उपने छे, अर्थात अन्य उत्पात थवाथी पांग्रुदृष्टिनुं फळ प्राप्त थतुं नथी, परंतु पाछळथी थएल उत्पातनुंज फळ पाप्त थाय छे. शिशिर ऋतु विना अन्य ऋतुमां पांश-दृष्टि थाय ते इमेशां फळ रहित है।य छे,

अर्घ सूर्य अस्त पाम्या पछी ज्यां सुधी आकाशमां ताराओ स्पष्ट न देखाय त्यां सुधी स-न्ध्या अने एवीज रीते सूर्योदय पहेलां तारानी मभा मन्द यह जाय त्यांथी आरंभी सूर्योदयी पर्य-न्त प्रातः सन्ध्या गणाय छे. मृग, पक्षी, पवन, सूर्य चन्द्रना परिवेष, परिधि अर्थात् प्रतिसूर्य, प-रिघ, अभ्रष्टक्ष अर्थात् दक्षाकार मेघ, इन्द्रधतुष, गन्धर्वनगर, सूर्यनां किरणो, दंड अने रज ए सर्वनी स्निग्धता अने रंग उपरथी सन्ध्यानुं शुभाशुभ फळ समजी शकाय छे. सन्ध्या समये जो मृग वा-रंवार भयंकर शब्द बोछे तो ग्रामनो नाश थाय छे. सेनाना दक्षिण भागमां रहेलो मृग सूर्य तरफ मुख राखी महान् ज्ञाब्द करे तो सेनानो क्षय करनारो थइ पडे छे. जो मृगसमृह अथवा पवन दीप्त

अर्थात् सूर्यीभिमुख अने सैन्यना वाम भागमां स्थित होय तो युद्ध याय छे तथा दक्षिण भागमां स्थित होय अने ज्ञान्त अर्थात् सूर्याभिमुख न होय तो सैन्यनो समागम थाय छे अने मृगसमूह तथा पवन ज्ञान्त अने दीप्त ए उभयथी मिश्रित होय तो दृष्टि थाय छे. प्रातःसन्ध्या वखते मृग तथा पक्षी सूर्य तरफ मुख राखी रूक्ष शब्द करे तो देशनो नाश अने जे नगरनी दक्षिण दिशामां स्थित थइ सूर्य भणी मुख राखी मृग तथा पक्षी रूक्ष शब्द करे ते नगरने शहु स्वाधीन करी छे छे. गृह, दृक्ष अने तोरणने तोडी पाडनारो घूळ अने मृतिकाना टुकडाओने उडाड-नारो, भयंकर शब्द करनारो, रूक्ष तथा आकाशथी पक्षीओने पछाडतो प्रचंड सन्ध्या समये प्रचलित थाय तो ते सन्ध्या अशुभ गणाय छे. जे सन्ध्या मन्द पवनना ताडनथी चला-यमान पत्रवाळा द्रक्षोथीयुक्त अथवा पवनथी रहित अने जेमां शान्त दिशा भणी मुख राखी गृग तथा पक्षीओ मधुर उच्चार करता होय ते सन्ध्या शुभ लेखाय छे. सन्ध्या समये दंड, विञ्चत, मत्स्याकार मेघ, प्रतिसूर्य, सूर्य चन्द्रनो परिवेष, इन्द्रधतुष, ऐरावत अने सूर्यना किरणो ए सर्व स्निग्ध होय तो दृष्टि थाय छे. विच्छिन्न, विषम, नप्टवर्ण, विकृत, कुटिन्छ, अपस-व्य परिष्टत्त अर्थात् डावी वाजुए झुकेलां, सूक्ष्म, न्हानां, उष्णताथी रहित अने कलुप अर्थात् स्व-च्छताथी रहित सूर्यनां किरणो सन्ध्या समये देखाय तो युष्ट थाय छे. अने दृष्टि थती नथी. अन्धकार रहित आकाशमां जो दीप्तियुक्त, निर्मळ, सीयां, लांवा अने दक्षिणावर्त सूर्यना किरणो होय तो जगततुं कल्याण थाय छे. जे सूर्यना किरणो शुक्लवर्ण आकाशमां आदि, मध्य अने अंत पर्यन्त गमन करनारां अर्थात् संपूर्ण आकाशमां व्यापी रहेलां, स्निग्ध, अखंडित अने सीधां होय ते " अमोघ " किरणो कहेवाय छे अने ते वृष्टि करनारां होय छे. सन्ध्या समये जो सूर्यनां किर-णो कल्पाप, कांइक किएल अथवा साधारण किपल, विचित्र वर्ण, रक्तवर्ण, हरित अथवा शवल अने संपूर्ण आकाशमां व्यापी रहेलां होय तो वर्षा थती नथी अने सात दिवस पछी स्हेजस्हाज भयनी उत्पत्ति थाय छे, सूर्यना किरणो ताम्रवर्ण होय तो सेनापतिनुं मृत्यु, पीत अने रक्त होय तो सेनापतिने दुःख, हरित होय तो पशु अने खेतीनो नाश, धूम्रवर्ण होय तो गायोनो नाश, मजीट समान रक्तवर्ण होय तो शक्षभय अने अग्निभय, किपलवर्ण होय तो पवनयुक्त वर्षा, भस्म सदश होय तो अष्टिष्टि अने श्वेत,कृष्ण अने पीत तथा नील आदि वर्णथी मिश्रित होय तो पण अष्टिष्टिज थाय छे. दम्ध्कना पुष्प समान अति रक्तवर्ण अथवा अंजनना चूर्ण जेवी अति कृष्णवर्णनी वृळ उडी स-न्थ्या समये सूर्य तरफ जाय तो सेंकडो रोगोथी प्रजा पीडित थाय छे अने श्वेतवर्णनी धूळ उडी

सूर्य तरफ जाय तो प्रजानी दृद्धि थाय छे तथा सर्वत्र प्रजामां शान्ति फेलाय छे. सूर्यनां किरणो मेघ अने पवन मळी दंडनी आकृतिने धारण करे छे, तेने दंड कहे छे. ए दंड आग्नेय आदि चार खूणामां स्थित होय तो ब्राह्मण आदि चारे वर्णने अञ्चभ फळ आपे छे. ए दंड सूर्योदय, मध्या-न्ह अने सायंकाळे देखाइ आवे तो शस्त्रभय अने रोगनी दृद्धि करे छे. श्वेत, रक्त, पीत अने कृष्णवर्ण दंडक्रमथी ब्राह्मण आदि चारे वर्णोंनो नाश करे छे. दंडनुं मुख ने दिशा तरफ होय ते दिशा नष्ट थाय छे. सूर्यनी समीपे जे अग्र होय ते दंडनुं मूळ अने वी ी तरफ तेनुं मुख होय छे. जेनो अग्रभाग दिध सदश खेत होय ते, नीलवर्ण, सूर्यते आच्छादित करी रहेल अने आकाशना मध्यमां स्थित अभ्रतरु अर्थात् इक्षाकार मेघ अथवा पीत रंगथी रंगाएला अने अनेक मूळथीयुक्त मेघ होय ते अत्यन्त दृष्टि करे छे. जे राजा शत्रुपर चढाइ करी जतो होय अने अभ्रतरु तेनी पाछळ पाछळ चाली अकस्मात् ज्ञान्त थइ जाय तो ते राजानुं मृत्यु थाय छे. अभ्रतरु लघुन्नक्ष जेवी आकृतियुक्त होय अने ते अकस्मात् शान्त थइ जाय तो युवराजनुं तथा राजाना मंत्रीनुं मृत्यु थाय छे. नीलकमल, वैदूर्यमणि अथवा कमलना तन्तुओ समान वर्णशळी पवनथी रहित अने सूर्यना किरणोथी प्रकाशित सन्ध्या शीघ्र दृष्टि करे छे. गर्दभ तथा उष्ट्रआदि अशुभ आकृति-वाळा मेघ, गन्धवेनगर, नीहार, धृळि अने धूमयुक्त सन्ध्या वर्षाऋतुमां होय तो दृष्टिनो अभाव करे छे; एवीज सन्ध्या वर्षा विना अन्य ऋतुमां होय तो शस्त्र कोप करे छे अर्थात युद्ध थाय छे. शिशिर आदि छ ऋतुओमां सन्ध्यानो स्वाभाविक रंग क्रमपूर्वक रक्त, पीत, श्वेत, चित्र, कमलसद्दश अने रुधिरतुल्य होय छे. ऋतु अनुसार सन्ध्यानो वर्ण होय तो ग्रुभ अने अन्य ऋतुना रंगने धारण करनारी सन्ध्या होय तो ते विकृत अर्थात् अशुभ गणाय छे. शस्त्र-धारी मनुष्यनी आकृतिवाळो मेघनो इकडो जो सूर्यनी समीपे होय तो शत्रुथी भय उपजे छे. श्वेनवर्णतुं गन्धर्वनगर जो सूर्यने ढांकी दिए तो जे राजातुं नगर घेराएछं होय ते तेने फरी प्राप्त थाय छे. जो सूर्य गन्धर्वनगरतुं भेदन करे तो नगरनो नाश थाय छे अर्थात शत्र ते नगरने छूंटी केछे. ग्रुक्त वर्णना अने ग्रुक्त अन्तवाळा मेघ दक्षिण तरफरी सूर्यनुं आच्छादान करे तो दृष्टि थाय तथा वीरणनामे तृणना गुल्म सरखा अने ज्ञान्त दिशामां उत्पन्न थएला मेघ सूर्यनं दक्षिण तरफथी आच्छादन करे तो पण दृष्टि थाय छे. सूर्यना उपर जे आडी मेघनी रेखा होय तेने परिव कहे छे, ते परिव मुर्योदय समये खेनवर्ण होच तो राजाथी सैन्य विमुख थाय छे अने जो सुवर्णना सरखावर्णवाळुं परिघ होय तो सेनानी टुद्धि करनार थड पडे छे. त्रो मूर्चनी वन्ने

वाजुए प्रतिसूर्य होय अने ते सूर्यविम्वथी संयुक्त होय तो घणीज दृष्टि करे छे. जो प्रतिसूर्य सर्व दिशाओमां व्यापी रहेला होय तो जलतुं एक बुन्द पण पडतुं नथी. सन्ध्या समये ध्वज, छत्र, पर्वत हाथी तथा अश्वोना रूपने धारण करनारा मेघ होय तो राजाओनो जय थाय छे. रक्तवर्णनो मेघ होय तो युद्ध थाय छे. पलाल अर्थात् धान्यतृणना धूमसमूह तुरुय रंगना तथा स्निग्य मेघ राजाना सैन्यनी दृद्धि करे छे, लटकता वृक्ष समान आकृतिवाळा रक्तवर्णना मेघ सन्ध्या समये होय तो ग्रुभ गणाय छे अने नगरने आकारे मेघ आकाशमां सन्ध्या समये स्थित होच तो ते पण शुभ समजवा जे सन्ध्यामा सूर्यनी तरफ मुख राखी पक्षी, शिवा तथा मृग शद्ध करे अने दंड, धूलि तथा परिघ आदि देखाइ आवे तेमज निरंतर सूर्यमां कांइक विकार होय एवी सन्ध्या देशनो, राजानो अने सुभिक्षनो नाश करे छे. पातः सन्ध्या पोतातं ग्रभाग्रभ फळ एज वखते आपे छे. अने सायं सन्ध्या रात्रिए अथवा त्रण दिव-सनी अंदर फळ आपे छे. सूर्य चन्द्रनो परिवेष, धूळि अने परिघ एज समये फळ न आपे तो सान दिवसनी अंदर तेतुं ग्रुभाग्रुभ फळ मळे छे, एवीज रीते सूर्यनां अमोघ आदि किरणो, इन्द्र धतुप, विद्युत, प्रतिसूर्य, मेघ अने वायु जो एज समये फळ न आपे, तो तेतुं फळ पण सात दि-वसनी अंदर प्राप्त थाय छे. पक्षी पोताना शब्दोनुं शुभाशुभ फळ एज दिवसे अथवा आठ दिव-सनी अंदर आपे छे. अने मृगना शब्दनुं शुभाशुभ फल सात दिवसनी अंदर प्राप्त थाय छे. सन्ध्या पोतानी दीप्तिने लीधे एक योजनमां प्रकाशित थाय छे, अने एटला माटे एक योजननी अंदर सन्ध्यानुं शुभाशुभ फळ मळे छे. तिजळी पोतानी प्रभाथी छ योजन पर्यन्त प्रकाश करे छे जेथी छ योजननी अंदर तेतुं फळ पाप्त थाय छे जेथी तेतुं फळ पांच योजननी अंदर पाप्त थाय छे. केटलाएक मुनीश्वरोना कहेवा प्रमाणे उल्का पडती वखते केटला योजन पर्यन्त प्रकाश करे छे तेनो कांइ नियम नथी एटला माटे उल्कापातनुं फळ सर्वत्र अस्तित्वने भोगवे छे. जेनी प्रतिसूर्य एवी संज्ञा छे ए परिधिनी प्रभा त्रण योजन पर्यन्त देखाय छे एटला माटे त्रण योजन-मां वीज्ञ प्रतिसूर्यनुं ग्रुभाशुभ फळ प्राप्त थाय छे. परिघ पांच योजन पर्यन्त देखाय छे. जेथी तेतुं फळ पांच योजनमांज पोतानुं मावल्य जणावे छे. सूर्य चन्द्रनो परिवेष पांच अथवा छ योज-न पर्यन्त जोवामां आवे छे जेथी तेनुं फळ पण तेटला योजनमांज मळे छे, तेमज इन्द्रधनुप दश योजन पर्यन्त देखाय छे, जेथी तेनुं शुभाशुभ फळ दश योजननी अंदर पोतानुं अस्तिन्व वतावे छे.

पीतवर्णनो दिग्दाह होय तो राजाओने भय, अग्निसहश वर्णवाळो दिग्दाह होय तो

देशनो नाश तथा छाछ रंगनो दिग्दाह होय अने तेनी जमणी वाजुए वायु गित करे तो खेतीनो नाश थाय छे. जे दिग्दाह पोतानी दीप्तिथी महान् प्रकाश करे अने जेमां सूर्यनी माफक समग्र वस्तुओंनी छाया जोतामा आवे ते दिग्दाह राजाने अत्यंत भय आपनारो थइ पढे छे, रुधिर तुल्य दिग्दाहनो रंग होय। तो युद्ध थाय छे, पूर्व दिशामां दिग्दाह जोवामां आवे तो राजाओ-समेत क्षत्रीयोने पीडा थाय छे, अग्निकोणमां दिग्दाह होय तो शिल्पक अने बाळको पीडा पाम छे, दक्षिणमां दिग्दाह होय तो क्रूर पुरुषो सहित वैश्यो पीडाय छे, नैरूत्यकोणमां दिग्दाह होय तो दूत अने पुनर्भ अर्थात् जेनो वीजी वखत विवाह थाय छे एवी स्त्रीओ पीडा पामे छे. पश्चिममां दिग्दाह होय तो शुद्ध अने खेती करनाराओ पीडाने माप्त थाय छे, वायव्य कोणमां दिग्दाह होय तो चोर अने अन्यो पीडाय छे, उत्तरमां दिग्दाह होय तो बाह्मणोना मुंडा हाल थाय छे, अने इशान कोणमां दिग्दाह होय तो पाखंडी अर्थात् वेदमतने निर्ह माननारा तेमज वाणियाओने पीडा पाप्त छे. दिग्दाह समये आकाश निर्मळ होय, नक्षत्र निर्मळ होय, प्रदक्षिण पवन चाळतो होय अने दिग्दाह पण सुवर्ण सरखा स्वच्छ रंगनो होय तो पजा सहित राजानं शुभ धाय छे.

केटलाएक मुनिओं कहे छे के समुद्रना जळमां जे म्होटा म्होटा मका, मत्स्य तथा शिशुमार आदि जीव छे ते ज्यारे चलायमान थाय छे त्यारे भूकम्प थाय छे; केटलाएक मुनिओं कहे
छे के भूमिना भारथी थाकी ज्यारे दिग्गज विश्वान्ति छे छे त्यारे भूकम्प थाय छे, केटलाएक मुनिओं कहे छे के आकाशमां रहेलों वायु ज्यारे अन्य वायुथी ताढन पामी पृथ्वीपर पडे छे त्यारे
इाट्ट सहित भूकम्प थाय छे, केटलाएक मुनिओं कहे छे के शुभाशुभ कर्मथी भूकम्प थाय छे
अर्थात् धर्मनी वृद्धि होय तो शुभ फल करनारों अने पापनी दृद्धि होय तो अशुभ
फलने आपनारों भूकम्प थाय छे, केटलाएक मुनिओं एम पण कहे छे के-पूर्वे पर्वतोने
पांख हती, ए पर्वतो ज्यारे उडी आकाशयी पृथ्वीपर पडता अने पृथ्वीयी आकाश तरफ
उडता ए समये पण भूकम्प थतो. ए रीते पर्वतोना उडवाथी मकंपित थएली पृथ्वी एक
समये देवताओंनी सभामां जइ लिजित थइ ब्रह्मा आगळ प्रार्थना करवा लागी के महाराज!
आर्पे मारुं नाम अचला राख्युं छे, परंतु उडता पर्वतो मारा ए नामनी योग्यता रहेवा देता
नयी, आ खेद माराथी सहन नथी थतो. आ रीते गद् गद वाणी सहित अथरोष्टने फरकावती,
मस्तकने जरा नीचेना भागमां झुकावती अने अश्रुपात करती वर्सुधरानुं वदन विलोकी ब्रह्माए

इन्द्रने कहुं के आ पृथ्वीना कोधने निवृत्त करो, अने पर्वतोनी पांखो कापवा माटे वज्र फेंको. उक्त आज्ञानो तुरत अमल करवानुं ब्रह्मान वचन आपी इन्द्रे पृथ्वीने कहुं के हवे तुं भय राखमा, पर्वतो चलायमान थइ शकरो नहिं, परंतु वायु, अग्नि, इन्द्र अने वरुण शुभाशभ फलतुं सूचन करवा माटे दिवस तथा रात्रिना पहेला, वीजा, त्रीजा अने चोथा भागमां तने कंपित करहो; (प्रातःका-लथी वे महर पर्यन्त वायुनो, वेथी चार महर पर्यन्त अग्निनो, चार्थी छ महर पर्यन्त इन्द्रनो अने छथी आठ महर पर्यन्त वरुणनो समय होय छे.) उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, पुनर्वसु, मृगशिर अने अिवनी ए सात नक्षत्र वायु मंडलमां छे अथीत एमांथी कोइपण नक्षत्र उपर भूकमा थाय तो ते वायव्य भूकंप कहेवाय छे. वायव्य मंडलमां भूकम्प थवानी होय त्यारे सात दिवस पहे-लांथी ध्रम्रयी व्याप्त दिशाओवाळा आकाशनी वच्चे भूमिनां रजने उराडतो अने रक्षोने तोडतो प्रचंड पवन चाले छे, सूर्यनां किरणो मन्द थइ जाय छे. वायव्य भूकम्प थवाथी खेती, जळ, वन अने औपधिओनों क्षय थाय छे. प्रजामां सोजा, श्वास, उन्माद, ज्वर अने कासना रोग फेळाय छे, विणक लोको पीडाय छे, वेश्या, शस्त्रधारी, वैद्य, स्त्री, काव्य करनारा कवि, गवैयाओ,व्यापारी अने शिल्पज्ञ लोको पण पीडाने पाप्त थाय छे तेमज सौराष्ट्रक, क्रुरु, मगध, दशार्ण अने मत्स्य देशना निवासीओ पण पीडाय छे. पुष्य, कृतिका, विशाखा, भरणी, मघा, पूर्वाभादपदा अने पूर्वी फाल्गुनी ए सात नक्षत्र अग्निमंडलनां छे. ए मंडलमां भूकम्प थवानो होय ते पहेलां सात दिव-सथी तारापात, उल्कापात अने दिग्दाहथी युक्त आकाश चारे तरफ वळतुं होय तेम देखाइ आवे छे, पवन सहित अग्नि विचरण करे छे अर्थात सात दिवस आग लागे छे अने ते वखते पवन फुंके छे आग्नेय भूकम्प थवाथी मेघोनो नाश थाय छे, वाव,कूप अने तळाव आदि जळाशयो सुकाइ जाथछे; राजाओमां परस्पर वैर थायछे; दद्र,विचर्चिका,ज्वर,विसर्पिका अने पांडुरोग प्रजाने व्याक्तळ करे छे. तेजस्वी अने क्रोधी मनुष्यो पीडा पागे छे; तेमज अअमक, अंग, वाह्लीक, तंगण, कलिंग, वंग, अने द्रविड देशना रहेवाशीओ तेमन भीलोनी अनेक जातिओ पीडाय छे. अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, रोहिणी, ज्येष्ठा, जत्तरापाढा अने अनुराधा ए सात नक्षत्र इन्द्रमंडलनां छे, ए मंडलमां भूकंप थवानो होय ते पहेलां सात दिवसथी चालता पर्वतो समान शरीरवाळा, गंभीर गर्जना करता, विद्युत्थी युक्त अने महिपीना जृंगसमान, भ्रमरना समूहसमान अथवा सपसमान अति नीलवर्णना मेच जळनी दृष्टि करे छे. आ अन्द्रभूकम्प थवाथी उत्तम कुळना मनुष्यो, प्रसिद्ध पुरुष, राजाँ अने समूहनो अधिषति विनाश पापे छे. प्रजामां अतिसार, गलग्रह अने मुखरोग

फेलाय छे तेमज वमननो उपद्रव थाय छे. काज्ञी, युगंधर, पौरव, किरात, कीर, अभिसार, इलमद्र, अर्बुद, सुवास्तु तथा मालव देशना लोको पीडाय छे, अने वर्षा सारी थाय छे. रेवती, पूर्वापाढा, आर्द्रो, अश्लेषा, मूळ, उत्तराभाद्रपदा अने शतिभपक् ए सात नक्षत्र वरुण मंडलनां छे. जो ए मंडलमा भूकम्य थवानो होय तो सात दिवस अगाउथी नीलकमल, भ्रमर अने अति नीलवर्ण, काजळ समान कान्तिवाळा, मधुर ध्वनिथी गर्जना करता तेमजविद्युत्थी प्रकाशमान देहवाळा घणा मेघो जलधारारुपी अंकुरानी दृष्टि करे छे. वारुग भूकम्य थवाथी समुद्र अने नदीओना आश्रयमां रहेनाराओनो नाश थाय छे; प्रजामां वैरभाव प्रगटे छे, अति दृष्टि थाय छे, तेमज गोनर्द चेदि, कुकुर, किरात अने विदेहना निवासीओ मार्या जाय छे. भूकम्पनुं फळ छ महिनानी अंदर अने निर्घाततुं फळ वे महिनानी अंदर पाप्त थाय छे. ग्रहण तथा उल्कापात आदितुं फळ वायव्य आदि मंडलोयी जाणी शकाय छे अर्थात् ए चार मंडलोमां जे मंडलरी वन्चे उत्पात होय तेने अतुसरी शुभाश्य फळ समजी लेवं. उटका, गन्धवनगर, पांशुवृद्धिः, निर्घात, भूकम्प, दिग्दाह, प्रचंड पवन, सूर्य चन्द्रतुं ग्रहण, नक्षत्र तथा ताराओनो विकार, बादळांओ विना दृष्टि, वर्षीना अ-न्य विकार, अति दृष्टि, अग्नि विना भूमाडो थवो, अग्निना तणला उडवा, ज्वाळा उठवी, वनना मगोतुं ग्राममा आगमन, रात्रिने वखते इन्द्रधतुष, सन्ध्याना विकार, परिवेष खंड, नदीओनी विषरीन गति अने अ,काशमा तूर्य आदि वाद्योनो नाद थवो इत्यादि सर्वे उत्पात अने वीजा पण स्वभावथी विपरीत होय ते उत्पातोतुं फळ उक्त मंडलो अनुसार जाणी लेवुं, इन्द्रमंडलमां थयेलो भूकम्प वाय-व्यमंडळनी वेळामां थएल भूकम्पना फळनो अने वायन्यमंडलमां थयेलो भूक्तम्प इन्द्र मंडलनी वेळामा थएल भूकभ्पना फळनो नाश करे छे. एवीज रीते वारुण अने आग्नेय भूकम्प पण पर-स्पर फळनो नाग करनारा छे. अग्निमंडळनो भूकम्प वायव्यमंडळ वखते अने वायव्यमंडळनो भूक्तम्प अग्निमंडल वखते थाय तो मिसद्ध राजाओतुं मरण अनवा तेओ विपत्तिने आधिन वने छे तेमज दुर्भिक्ष, मस्की अने अष्टिष्यी प्रजा पीडाय छे. बारण यंडळ जो भूकम्य इन्द्रमंडल बराते अने इन्द्रमंहलनो भूकम्प वारुण मंडल दखते थाय तो लोकमां सुभिक्ष, कल्याण, वर्षा अने प्रस-न्नता वधे छे तेमज गायो घणुंज दूध आपे छे. तथा राजाओमां अन्योन्य न्यापेषा बैरनी ज्ञान्ति थाय छे. अंगस्फ़रण आदि जे उत्पातोना फळनो समय नथी कह्यो ते जो वायव्यवंडलमां थाय तो तेतुं फळ वे महिनानी अंदर मळे छे. अग्निमंडळमां थाय तो दोढ महिनानी अंदर, ऐन्द्र मंडलमां थाय तो सात दिवसनी अंदर, वारुणमंडलमा थाय तो तत्काळ पळ आपे छे. वायन्यमंडलमां

वसो योजन पर्यन्त, अग्निमंडलपां एकसो दश योजन पर्यन्त, वारुण मंडलमां एकसी ऐंसी योजन पर्यन्त अने ऐन्द्रमंडलमां एकसो साठ योजन पर्यन्त भूकम्प थाय छे. भूकम्प थइ रह्या वाद त्रीजे चोथे, सातमे, त्रीशमे, पंदरमे अथवा पीस्तालीशमे दिवसे फरी भूकम्प याय तो मुख्य राजाओनो विनाश करे छे.

आ रीते अनेक प्रकारना उत्पातो अने ए उत्पातोथी यता शुभाशुभ फळनुं राजज्यो-तिषीना मुख्यी श्रवण करी युवराज सोढाजी तथा अमात्य विगेरेना मनमां दढ निश्रय थयो के चालता उत्पातो अवश्य छत्रपतिनो क्षय करे तेवा छे. आम एक तरफ युवराज विगेरे चिन्ताथी विशेष व्याक्कळ थवा लाग्या, अने बीजी वाज शक्तिए पण राजहरपालदेवजीने सुचव्युं के हुं स-र्वत्र प्रसिद्ध थइ चूकी माटे हवे अहीं रहेवा मारी इच्छा नथी, त्यारे राजहरपालदेवजीए कहां के हुं कोइ प्रकारे आ देहे तपारो संग छोडवानो नथी. ज्यां तपो जशो त्यां हुं पण साथे आवीश. कृतसंकल्प शक्तिए क्रमार सोढाजीने आशीवीद आपी तेओनी रजा छइ पोताना पवित्र पति स-हित श्री "धामा" गाम तरफ प्रयाण कर्यु, दीकरी उमादे पण साथे सिधान्या, ए त्रणे दैवी शरीरो "धामा" गामने पादर पहोंचता पृथ्वीए वेर आपवाथी वि. सं. ११८६ ना चैत्रशुदि १३ ने दहाडे अन्तर्धान थइ गयां; जेथी ए ढोकळीया तेरशनो तहेवार आज दिवस लगी झाला तेमज मक्तवाणाने घेर थतो नथी.





अष्टाद्श तरंग.

" मनहर ["]

पाटडीए राजधानी रणमल सुधी रही, छत्रसाले मांडल वसावी मोज माणी छे. राजजेतिसिंहे राज कुवागढमांही कर्यु, हलवद राज रायधरनी कमाणी छे. राजमानिसेंहे खेड्युं बारवटुं बादशा'थी, गएलो गिरास लेवा तीखी तेग ताणी छे. कहे नथुराम सुणो अमर नरेश शाणा, पाणीवाला पूर्वजनी केवी श्रेष्ठ कहाणी छे.

राज हरपाळदेवजीना पाटवीक्चमार सोढाजी वि. सं-११८६ मां पाटडीनी गादीए वेटा, तेणे प्रजातुं उत्तम प्रकारे परिपालन करी त्रीश वर्ष पर्यन्त निर्विद्मपणे राज्यसुखनो उपभोग कर्यो वि. सं-१२१६ मां तेओनो स्वर्गवास थतां तेना कुमार दुर्जनसालजी तरूतनशीन थया, तेणे प्रचीश वर्ष पर्यन्त पाटडीनी प्रजा उपर एक सरखो अमल कर्यो. वि. सं-१२४१ मां तेओनुं परलोक प्रयाण थतां तेना कुमार झालणदेवजीए राज्यासनपर पाय धर्यो. वि. सं-१२६६ मां तेओ पंचत्वने प्राप्त ध्या त्यारे कुमार द्वारिकादासजी उर्क अर्जुनिसंहजीने पाटडीना प्रकाशमान सिंहासन पर वेसाहवामां आच्या, तेओए दानवीर वनी राजा महाराजाओमां म्होटं मान मेळच्युं अने

१-श्री झालावैशना वारोट काळुभाना चोपडामां एवो लेख छे के झालणदेवजी दुर्जनसा लजीनी ह्यातीमांज स्वर्गस्थ थवाथी तेओना कुमार द्वारिकादासजी उर्फे अर्जुनसिंहजीने गादीए वेसाडवामां आव्या हता.

त्रीश वर्षे लगी हर्षभर उत्कर्ष पामी वि. सं-१६९६ मां कैलासवास कर्यों; तेओना कुमार देवरा-जजीए पाटडीमां गादीए वेसी पचीश वर्ष पर्यन्त निरन्तर सन्त सुरभिनुं संग्क्षण करी मुयशना भंडार भर्या अने यज्ञ यागादि सत्कर्मोद्वारा अनंत ब्राह्मणोने संतुष्ट कर्याः वि. सं-१३०१ मां तेओ अ-सार संसारनो त्याग करी वैकुंठ वाटे विचर्या त्यारे तेओना कुमार दुदाजीने अमीर उमरावो तर-रफथी पाटडीनो तेजस्वी ताज पहेरावशमा आब्यो; तेओए राज मळ्या पछी एकंदर पंदर वर्ष लगी आ दुनियानी अंदर अस्तित्व भोगव्युं अने केटलांएक सुंदर देवमंदिरो वंवावी धर्मना तत्व-नी अभिदृद्धि करी अंत राजसमृद्धिने झांझवाना जळ जेवी मानी वि. सं-१३३६ मां प्राणनो परित्याग कर्योः तेना कुमार ग्रुरसिंहजी पाटडीना पाटपर पाय धरी प्रजाने पुत्रवत् पाळी तमाम उपाधिओने टाळी आनंद वैभवमां पचीज्ञ वर्ष वितावी भावि योगे वि. सं-१३६१ मां गुणना गेहरूप देहने तजी सुरछोक्तमां सिधान्याः, त्यारवाद तेओना क्रमार जांतलजी राजगादीपर विराजमान थया, तेओ स्वभावे शान्त इता तो पण प्रजाना हितअर्थे नेत्रना उपान्तने कोइ कोइ वखते रक्त करता, उमाकान्तना उपासक वनी विनोद्थी वेदमार्गमां विच-रता, एकान्तमां उत्तम बुद्धिवाळा अमात्योनी सळाइ छइ तेओना कहेवा प्रमाणे अनुसरता अने राजधर्मनी धुराने धैर्यथी धारण करी इरहपेश आश्रितननोनी उपाविओने हरता हता. ए नीति-निपुण नरपालना समयमां सुरपतिए आपनी अने सूर्यनारायणे तापनी नियमित वशीश आपी जेथी अन्ननो परिवाक मावी न शकाय तेम उत्तरोत्तर दृद्धि वामवा लाग्यो; खेती करनारां सर्पेजन सुखीयां थयां अने धनथी राज्यना खजानाओ भराइ गया; जेथी वि. सं-१३६२ मां तेओए "शांतलपुर" नामे एक छुशोभित शहेर वंधाव्युं अने पाटडीनी समग्र प्रजाने प्रेमपुरःसर त्या छइ जइ रमणीय राजधानी जमावी तथा वि. सं-१३६३ मा ए शहेरनी समीपे "शान्तळपूर" नामे म्होटुं तळाव तैयार कराव्युं अने विविध प्रकारना दृक्षीथी तेना चारे किनाराओने अलंकृत क्यों तेमन चोतरफ पाका पत्थरना मनोहर घाट नंधान्याः वर्षा ऋतुनुं आगमन थता जलनी समृद्धिथी ए सरोवर छलकात्रा लाग्युं, मकर अने मत्स्य आदि अनंत जलनंतुओए तेमां नेहथी निवास कयों; पोतानी पतिष्ठायी प्रसन्न थएल ज्ञान्तलसर पवनथी ताडन पामेला तरल तरंगरुवी करोवडे जल विनद्भवी मुक्ताफलोधी जाणे शान्तलपुरने व्हालधी वधावतुं होय तेम सह कोइ उत्पेक्षा करवा लाग्या. ने शहरनी आसपाम विशाळ जलागयो विद्यमान होय ते शहेरनी प्रजा इन्ट्रलोक्सना दैभवनी पण आकांक्षा करती नथी. श्री झालानरेग शान्तलजीना सर्वोत्कृष्ट सर्गुणोथी संतुष्ट थएली प्रजा तेओने अनेक प्रकारे आर्शार्वाद आपवा लागी. जेने परि-

णामे स्वल्प समयमांज राजशांतळजीने त्यां एक पछी एक परम पराक्रमी कुमार विजयपालजी सांगाजी अने सुरजमळजीनो जन्म थयो. ते त्रणे कुमारोए थोडो घणो विद्याच्यास करी युद्ध कुशळ थवा अर्थे शरीरना सकल अवयवोने कसरतथी केळववा मांडया, हजी मूछना कोंटा फूटया न इता, छतां तेओ पोताना वाहुवळथी भरजुवानीवाळा भडपुरुषोने चपटीमां चोळी नांखवानी हिम्मत धरावता हता. ज्यारे राजशांतलजी गढशान्तलपुरमां सुखपूर्वक राज करता हता त्यारे त्कार कर्यो. एक दिवसे कचेरीमां त्रणे कुमारो अने अमीर उपरावो सहित राजशान्तलजी वेठा हता त्यां वाघेला लूणकरणे पोताना वंशनी वडाइनो उचार कर्यो अने झालाकुळने महकरीमां जहाववा मांडयुं त्यारे केटलाएक अमीर जमरावो वोली जठया के साळा वनेवीना सबंधेन लीधे अन्योन्य स्हेज स्हाज मक्करी करो त्यांसुधी अमारे कहेवा जेवुं नथी, परंतु आम मर्यादा सुकी जो वचनवाहिनीना वेगने निह रोको तो तेनुं परिणाम विकट आवशे पोताना भाणेज अने वनेवीने अवोल वेठेला जोइने वाघेला लूणकरणे उपरावोना उपदेश उपर ध्यान आप्युं नहि अने वधारे पडतां तीत्र वचनोनी दृष्टि करवा मांडी. ते कुमार विजयपालधी सहन न थयुं, सांगाजी तथा सूरजमलजीने पण क्रोध न्याप्यो. मामाने मारवा माटे त्रणे कुमारो आसनथी अकेक हाथ इंचा उछळवा लाग्या, तेओनां रक्तनचनोमांथी प्रलयना दहन समान दाह उपजावती उष्मा निक-ळवाथी आसपास वेटेला उपरावो आक्रळन्याकुळ वनी आधा खसवा लाग्या. मामाना मस्तकने कीला मात्रधी मर्स्डी नाखवातुं सामध्ये धरावता त्रणे कुमारोए करडी नजर करी कहुं के झाला-ओना वळने झीलनारा दीकराओ तो जनुनी हवे जणहो. आ सांभळी वाघेला लूणकरणने दाइचा उपर डाम अने घा उपर छण छांटे तेवी असहा पीडा उपजी " सींदरी वळे तो पण तेनो वळ न टळे " ए ऋहेवत अनुसार कुटिल स्वभाववाळा छणकरणे मूछपर हाथ नांखी तलवार काढवानी तैयारी करवा माडी, त्यारे राजशांतलजी वोल्या के वस, हवे हद थाय छे. तलवारने म्यानमांज राखों, शं करं के तमो अमारा पिजमान वनी आव्या छो, पण जो हवे झालाओना वळनी परीक्षा करवी होय ते: पुष्कळ सेनाने साथे छइ इच्छा होय त्यारे आवजो; एकछा उपर घा करतां अमोने ज्ञरम आदे छे. वनेवीना आवा वोल सांभळी छणकरणनो जुस्सो जरा नरम तो पडयो परंत भाणे नोनी वांकी वळेली अकुटिए तेना स्वभावने गरम करवा तिरस्कारनी दृष्टिरुपी घृतनी आहुति आपी. तेणे क्रोधमां ने क्रोधमां पोताना पुरभणी प्रयाण कर्यु. राज्ञांतल्लभीए एज वत्ते

अमीर उमरावोने आज्ञा आपी के तमो सर्व तैयारीमां रहेजो अने आपणी सवळ आजयीज सज्ज थवा सूचवी देजो, कारणके छूणकरणना चहेरा उपर जती वखते जे चिह्नो जोवामां आन्यां छे ते जरुर कांइने कांइ उपाधि कर्या विना रहेशे नहि. आ वखते अखिल उपरा-वोए एकी साथे हिम्मत भरेलां वचनोनो उचार कर्यो अने पाटवीकुमार विजयपालजीए प्रलंब भुजदंड टोकी पिता सन्मुख पतिज्ञा करी के मामाना मस्तकने तो हुं मारे हाथेज छेदीज. आम अरसपरस वीरतानी वातो करता सह पोतपोताने स्थाने विदाय थया. वाघेला लूणकरण पासे झाझं सैन्य नहि होताथी तेणे वादशाहना सुवा पासे जड़ मदढ मागी अने भीमसमान भ्रजवाळा भाणेजोने भय आपत्रानी खटकथी ज्ञाहनुं जबरुं कटक छइ ज्ञान्तलपर उपर वि. सं. १३८१ मां चढाइ करी. राजशांतलजी पण पोतानी सागर सरखी सेना लड् तेना सन्मुख चाल्या. रणवाद्यो-ना गंभीर घोपयी आकाश गाजी उठयुं. आषाहना अंबुद माफक अति इयामवर्णना उन्नत हा-थीओनी हारना भारथी कमठनी पीठ कडकवा लागी अने ग्राखीरोना चहेरा उपर चोगणी कान्ति चळकवा लागी. रणांगणमां कलित कंचनी समान नृत्य करनारा तेमज लगीर लगाम खेंचवाथी मृगनी माफक चारे चरणथी कुदनारा तरल तुरगोना दावडाओनी धडवडाटीथी धरामंडल ध्रज-वा लाग्युं. वन्ने सैन्यनो समागम थतां दुज्मनोने इसवा आतुर थइ रहेली कृपाणरूपी काळी ना-गणो सटोसट म्यानरुपी राफडाओमांथी नीकळवा लागी, ते जोइ कायर पुरुपोनी काया विना अग्निए वळवा लागी. वीर पुरुषोने वंदी वंदीजनो शौर्यथी भरेला छन्दो भणवा लाग्या. अने पवळ योद्धाओं परस्पर एक वीजाने हिम्मतथी हणवा छ।ग्याः जेम वर्षानी यामिनीमां दामिनी दमकती होय तेम झाला तथा वाघेलानी चपूर्मा झालरो समान झणझणाट करती कठिन करवालो चारेकोर चमकवा लागी अने हद उपरांत वीरहाक थवा लागी; केटलांएकनां कलेजांओ क्वच साथे तडा-तड तुटी पृथ्वी उपर पडवा लाग्यां अने केटलाएकना रुधिरथी रगदोळाएल दाथ पग आदि अं-गो रणांगणमां आमतेम रहवां लाग्यां. केटलांएक कवन्धोमांथी छूटती लोहीनी पीचकारीओने योगि-नीओ पात्रमां झीलवा लागी अने केटलीएक पिशाचिनीओ पाण रहित वनी पडेला योद्धाओना आंतरडांओ खेंची पोताना छिद्रवाळां परिधानोंने खुवीथी खीछवा छागी; केटलांएक वीरपुरुपो प्रतिज्ञानी साथे शत्रुओना मस्तकने श्रीफळनी माफक हाथमां छइ रणयज्ञमा होमवा लाग्या अने घणा शूरवीरो घायल वनी घेनमां घेराएला होय तेम घडि घोडापर अने घडि मेदानमां मस्त वनी घूमवा लाग्या. वडवाइए लटकना वांद्राओनी याफक केटलाएक वीरपुरुपो हाथीओना आंतरडां-

ओने वेड हाथे झाली झुळवा लाग्या. अने नशामां चकचूर होय तेम झाटकाओनी झपाझपीमां पोताना तेमज परायानुं भान भूलवा लाग्या. केटलाएक योद्धाओं कवाडीनी माफक वैरीओना देहरूपी दृक्षने कटोकट कापवा लाग्या अने केटलाएक क्षात्र वीरो रुधिरनी अंजलिओ भरी सूर्यनारायणने अर्घ आपवा छाग्या. उभय सैन्यना अनेक छडवैयाओ छिन्नभिन्न घइ गया, अने मनमानती मुंडमाळाओं मळवाथी महादेव परिपूर्ण प्रसन्न धया. आ भयंकर युद्धथी गिद्ध आदि पक्षीओनी मनकामना सिद्ध थइ अने रक्तथी रंगाएल अंगवाला योद्धाओने वर-वा माटे नवयौवनथी सुसमृद्ध अप्सराओ प्रेमपूर्वेक प्रसिद्ध थइ जेम श्रीकृष्णे मामा कंसनो विध्वंस कर्यो हतो तेम कुमार विजयपालजीए हाथीने होहे चढेला वाघेला लूणकरणना अंस उपर असिनो प्रहार करी दृक्षनी डाळी माफक तेना जमणा हाथने हेठो पाडयो तेमज कुमार सांगाजीए तथा सुरजमळजीए पण रणभूमिमां तेने खुव रंजाडयो. अंते राजशांतळजी सेंकडो श-तुओंनो संहार करी सुरलोकमां सिधान्या अने सागोजी तथा सुरजमळजी पण छेवटे काम आन्या. वाघेला लूणकरणे शान्तलपुरने स्वाधीन करवाथी राज विजयपालजीए पाछी पाटडीमां राजधानी स्थापी. तेओने मेवपालजी, अक्षयराजजी, सारंगजी, शगरामजी अने दूदाजी नामे पांच पुत्रो थया हता. पाटडीमां राजधानी स्थाप्या पछी मात्र एक वर्ष प्रजाने अभयदान आपी राज विजयपालजी स्वर्गवासी थयाः जेथी वि. सं-१३८२ मा तेओना पाटवीकुमार मधुपालजीने पाटडीनी गादीए वेसाडवामां आव्याः तेथी न्हाना भाइ अखेराजजीने वार गाम साथे " गोरीयावाड," तेथी न्हाना सारंगजीने वार गामथी " देकावाडा, " तेथी न्हाना शगरामजीने वारगामथी " कोकथा " (ळख-तर पासे छे) अने सौथी न्हाना दुदाजीने वारगामथी गाम " वांसवा " नो गिरास आप्यो. राज मधुपाळजीने पद्मसिंहजी, केशरजी, भीमजी, मेघजी तथा जयमळजी नामे पांच कुमार थया हता. मधुपाल नीए पांच वर्ष राज्यसुख भोगवी वि. सं-१३८७ मां परलोक प्रयाण कर्धुं त्यारे तेओना क्रमार पद्मसिंहजी पाटडीना तख्तपति थया केशरजीने वारगामधी गाम "जरवला," भीमजीने वार-गामथी गाम "नगवाई," मेघनीने वारगामथी गाम " करकथल " अने जयपलजीने वारगामथी गाम " जखवाडा," नो गिरास आपवामां आव्यो राज पद्मसिंहजीना पगमां पद्म हतुं. तेओ बहुज भाग्यशाळी हता; तेओनी नव वर्षनी कारकीर्दिंगां मजाने असंतोप उपने एवं एके कार्य करवामां आन्यं न हतुं. परममतापी राज पद्मसिंहजीने उदयसिंहजी नामे एकज कुमार हता. ते घणाज डहा पणवाळा, कार्यक्रशळ अने राजनीतिनां सूक्ष्म तत्वोने समजवामां शक्तिमान थया. वि. सं-१३५६

Market Market Company and the company and the

P

मां राज पद्मसिंहजीनो स्वर्गवास थतां उदयसिंहजीए पाटडीनी गादीए वेसी दान अने दया आदि सद्गुणोथी वडिलोनी विमळ कीर्तिमां वधारो कर्यो, तेओने पृयुराजजी तथा वेगडजी नामे वे क्रमार हता, तेमां वेगडजीतुं सगपण चितोडना राणा ळाखाजीना कुंवरी चन्द्रकुंवरवा वेरे करवामां आव्युं हतुं. राज उदयसिंहजी वि. सं-१४०८ मां स्वर्गवासी थतां पाटवी क्वमार पृथीराजजी गादीए वेटा. ए वने वन्धुओ राम अने लक्ष्मण समान परस्पर सद्भाव राखता होवाथी पाटडीनी प्रजा निरंतर अवनवा आनंदने अनुभववा लागी, ज्यारे चित्तोडथी लग्नपत्रिका आवी त्यारे राज पृथीराजजीए न्हाना भाइ वेगडजीने हथेवाळे परणाववा माटे तमाम तैयारीओ करावी दीर्घदन्तवाळा हायीओने सोना रुपाना अभिनव आभरणोथी शणगारी तेओनी विशाळ पीठपर हेमनी अंवाडीओं कसावी अश्वोने पण उत्तम प्रकारना साजधी अलंकृत कर्या, रमणीय रंग वेरंगी रथोने खिनखावथी मढावी तेना घुमट माथे मनोहर सुवर्णनां इंडाओ तेपज दरेक चक्रमा मधुर ध्वनिथी मनने प्रसन्न करे तेवां कांशाना चकरडांओ नं-खान्यां, परम शोभायमान पाछखीओ, म्यानाओ, निशान अने डंका सहित वरातने चित्तोड तरफ रवाना करी, साथे केटलाएक अमीर उमरावो, भायातो, अमलदारो अने पाटडीना प्रतिष्ठित महाजनो होवाथी वरातनो ठाठ कांइ जुदोज जोवामां आवतो हतो; ज्यारे राजवेगडजीनी जुग्तिदार जान चित्तोडने पादर पहोंची त्यारे लाखाराणाए स्नेहपूर्वक सामैधुं मोकली सर्वने पुरमां पधराच्या अने रमणीय राजमहेलोमा उतारा आप्या. आ आनंदना अवसरमां लाखाराणा तरफथी लाखो रुपिया खर्चवामां आव्या हता, आखा चित्तोड शहरने ध्वजा, पताका अने दीप-माळा आदिथी शणगारवामां आव्युं हतुं. चन्द्रकुंवरवा साथे राजवेगडजीना विधिवत् विवाह थइ रह्या बाद बीजे दिवसे कछुंबो छेवा माटे डायरामां झाला तथा शिशोदिआनुं मंडळ मळ्युं त्यारे राणाजीए पूछर्युं के राजउदयसिंहजीना वे कुमारमांथी म्होटा कोण ? त्वारे झाला भायातमांथी कोइ एके जवाव आप्यों के, वे भाइमां मोटा पृथीराजजी अने न्हाना वेगडजी. ए वखते तो राणाजी कांइ न बोल्या, परंतु ज्यारे वरातने पाटडी तरफ बोळावी त्यारे पोताना विश्वामु जमरावो साथे पांच हजार स्वारो मोकली आप्या अने तेओने भलामण करी के गमे ते मकारे पृथीराजजीने गादी परथी चठाडी पाटडीनी स्वतंत्र सत्ता वेगडजीने सोंपजो. आ वातनी वेगडजीने विलक्कल खवर न हती; तेओ तो एमज समजता हता के वरातने वळाववा माटेज राणाजीए पोतानुं सैन्य साथे मोकल्युं छे. ज्यारे जान पाटडीना द्वार पासे व्यावी पहोंची त्यारे राणाना उमरावोए राजपृथीराज-

जीने कहेवराव्युं के आप जाते सामैयामां पधारशो तो अमोने घणोज संतोष थशे. चित्तोडवासीना वाक्चातुर्यथी भोळवाइ भाइने भेटवा आतुर थइ रहेळा राज पृथीराजनी त्यां पघार्या के तुरत राणाना उमरावोए तेओने कपटथी केंद्र करी लीघा अने शहरमां दाखळ थइ कि. सं-१४११ ना अरसामां वेगडजीने राजगादीए वेसाडी दीधा आधी वेगड नीने घणो खेद थयो, तेणे राणाना उमराबोने कही विंहल वन्युने केदथी मुक्त कराव्याः राज पृथीराजजीने खात्री हती के पोताने पद-भ्रष्ट कराववामां वन्यु वेगडजी कदि पण अभिनाय न आपे, परंतु राणाएज पोताना जमरावोने जक्केरी आ अन्याय आचर्यो छे एम धारी तेओए राणा साथे वारवटुं करवा मांडयुं. पाछळथी राज वेगडजीए समजावी तेओना क्रोधने ज्ञान्त कर्यो अने मान पुरःसर पाटडीमां पधरावी तावानां १२० गाम सहित "थळा" नो भोगवटो लखी आप्यो. राज पृथीराजजीनो विस्तार इजी सुबी वांटावाळा छे अने ते थळेचा झाळा कहेवाय छे. राज वेगडजीने रामसिंहजी, मेळकजी, खेंगारजी, मालजी, भाणजी, अने प्रतापजी नामे छ कुमार थया. वि. सं-१४२४ मां राज वेगडजीनो स्वर्ग-वास थतां पाटवी क्रमार रामसिइजीने पाटडीनी गादीए वेसाडवामां आव्याः तेथी न्हाना क्रमार मेरुकजीने वारगाम साथे " कुमरखाण ", खेंगारजीने वारगामथी " वणळी ", मारुजीने वार-गामथी " सोलम तथा खोडु ", भागजीने वारगामथी " कगलः " अने प्रतापजीने वारगामथी " गुरीया वावडी " नो गिरास आप्यो. राज रामसिंहजीना वेरीसाळर्जा, केशरजी, भोजराजजी, शेषमालकी, नारणजी अने लाखाजी नामे छ कुमारो थया। वि. सं-१४४१ मां राज रामसिंह-िनीए पर**ङोक प्रयाण कर्युः त्यारे पाटवी कुमार वे**रीसाळजीए पाटडीना तख्तपर पाय धारण कर्योः ^{ट्र} केशरजीने सात गामथी " गोरीयावड ", भोजराजजीने सात्र्घामथी " कलम ", शेपमालजीने िसीत गामथी " नीर्गडकुं ", नीराणजीने सात गामधी " गोवल " अने लाखाजीने सात गामधी गाम " सीतापर " गीरांसंमां मळ्यं. राज वेरीसाळजी उर्फे वीरसिंहजीने रणमळजी. रामसिंहजी. कलोजी, कर्पसिंहजी, पतापसिंहजी अने पुंजाजी नामे छ पुत्रो थया. वि. सं-१४४८ मां राज बीरसिंहजीए वैक्वंटवास कर्यों त्यारे राज रणमलजी पाटडीनी गादीए वेटा; रामसिंहजीने सात गामथी " शंखेशर " कलाजीने सात गामधी " कारेला " कमीसिंइजीने सात गामधी " कटुडा " प्रतापसिंहजीने सात गामथी गाम " कांत्रोडी " अने पुंजाजीने सात गामथी गाम "गोरीय वाड" नो गिरास आपवामां आव्यो राज रणमलसिंहजीने छत्रसाल ी, शोडसालजी अने वलदीरजी नामे त्रण कुमार थया. राज रणमलितिह्जी मारवाहमां "जालीनेर कोटहा" नामे गाम छे त्यां परण्या

जता हता ते कंकावटीने पादर थइ निकळ्या. राजवायजीए तेओनी साथे धींगाएं कर्युं अने ती-क्ष्ण तलवारोना प्रहारथी शिरवंधीओने तोवाह पाकरावी खजानो छुटी छीयो. ए खबर वोडीया न-व।वने मळतां पचास हजारनी फोज लइ कंकावटी उपर चडी आत्र्यो. राज वाघजीएे पण पोताना सैन्यने सज्ज कर्युं. अमदावादना वादशाह महमद वगडाए पण पोतानुं केटछुंएक छक्कर नवावनी मददे मोकली आप्युं; यवन सेनाए तोपो चलावी कंकावटीना गढने तोडवा मालाओंए पण गढनी अंदरथी यवनसेना उपर तीपोनो मार शरु कर्यो, ए रीतें सात दिवस पर्यंत युद्ध जारी रहुं, आठमे दिवसे राजवायकीए विचार कर्यों के आप मुआ विना स्वर्गे जवातुं नथी अने वाहुवळ विना विजयी थवातुं नथी, माटे शहरना दरवज्जाओ खुद्धा मुकी असि-युद्ध करबुं एमांज लाभ छे. एम नकी करी पोते जनानामां पधार्या अने तमाम राणीओने सूचना करी के तमो सर्व महेलना उपला माळ उपर चढी मारा निशान भणी नजर राखजो. जो ए निशान पडे तो शत्रुने हाथे मारुं मोत ययुं एम तमारे समजी लेवुं. आटलुं कही राजवायजी कंका-वटीना दरवजाओं खुछा मुकावी पोताना समस्त सुभटो राहित " हरहर महादेव " नो पुकार करता, रणमेदानमां कूदी पडया, युद्धनो आरंभ थयो, खोटो दंभ राखनारा दुक्पनो भयभीत वनी पाछले पो पलायन करवा लाग्या. कुंभकारना चक्र उपरथी मृत्तिकाना पिंड उतरे तेम रुंडथी मुंड अलग थवा लाग्यां, केटलाएक हटीला क्षात्रवीरो पोताना अमोल वाहुवळनो तोल करवा अजगर जेवी अति स्थुळ मदोन्मत्त हाथीती गुंढने असिना एकज महारथी उडाववा लाग्या अने तेने केट-स्रांएक रिक घडो अप्सरानी जंघा जाणी आस्त्रिंगवा लाग्या, केटलाएक घायल वीरोने अप्सराओ त्वराथी एक तरफ लड़ जड़ राइ तेमंज लूण उतारवा लागी अने तेओना अति उत्कंठा पूर्वक वरमाळाओं पहेराववा छागी, केटलांएक कवन्यो ओने गाढ आलिंगन आपी मस्तक कपाइ जवाना कारणने लीपे कंठथीन चुंवन करवा लाग्या अने केटलाएक ज्ञाव रुविरनी तरंगिणीयां काष्ट्रनी माफक तरवा लाग्या, केटलाएक ग्रुरवीरा योगिनीओने अप्तराओ जाणी तेओना गळामां हाथ नांखवा लाग्या अने केटलाएक त्यातुर योद्धा-ओ शतुओंना रुधिरतुं पान करी मनुष्यना मांमनो स्वाद चाखवा छाग्या. केटलाएक अन्वोनी क-पायेली कन्धरा वीरपुरुषोना कवन्ध उपर जइ पडवाथी एकी वस्वते अनेक हयग्रीव अवतारोनी मतीति थवा लागी अने वरमाळा पहेरावती वखतेज शूखीरोना शिरच्छेद थतां "हाय हवे हुं कोने वरीश" एवी अप्सराओना मनमां भ्रान्ति उपजवा लागी; केटलाएक पेन रणक्षेत्रमां कपायेली हा-

थीनी सुंहोने वाघनी माफक वगाडवा छाग्या अने मांसभक्षक पक्षीओ अणीदार चंचुओथी रणमां पहेलां वीरपुरुषोनां उरःस्थल चीरी आंतरहाओ कहाडवा लाग्यां. वावन वीर अने चोसठ योगिनीओ मन गमनां भोजन मळवाथी महोत्सवनो दिवस मानी अट्टाट्ट हास्य करवा लाग्यां अने सतीसहवर्तमान भूतपतिने वीर पुरुषोनां कलेजांओतुं नैवेद्य धरवा लाग्या. त्रण प्रहर पर्यन्त पचंड युद्ध चार्ट्य, एक पहर जेटलो दिवस अवशेष रह्यो तेवामां राजवाधजीना निशानवाळाने अत्यंत तुपा लागी, तेने गळे शोप पहयो. जीव उंडोउंडो उत्तरी जवा लाग्यो. अने आंखे अंधारा आववाथी तेनो हाय ध्रजवा लाग्यो, तेणे तुरतज निशानने वावना आगला स्थंभने आधारे उधुं मुक्यं अने पोते पाणी पीवा अंदर प्रवेश कर्यों, पाछळथी अचानक पवननो झपाटो लागतां निशान पृथ्वीपर पही गयुं के तुरतज राजमहेळना छेल्ळा माळ पर वेठेलां राजवाघ भीनां तमाम राणीओ वोली उठयां के " मुंडुं थयुं, मुंडुं थयुं; राजसाहेव रणभूमिमां पडया, हवे आपणे जीवी ह्युं क-रवं " आटलुं कहेतांज ३५० राणीओए एकी साथे राजमहेलना छेल्ला माळथी नीचे रहेला विशाळ कुवानी अंदर कुदको मार्यो. सायंकाळनो समय थतां रणक्षेत्रमां राजवायजीनो विजय थयो. जेथी तेओ घोडाने ठेकावता वचेळा वीश वाबीश सुभटो सहित शहरमां पथार्थी, त्यां तो सर्व स्थळे हाहाकार फेळाइ रह्यो हतो, पृछपरछ करतां जनानामां वनेली भयंकर विना जाणवामां आवी, राजसाइेंवे तुरतज पाछुं रणभूमि तरफ प्रयाण कर्युं अने मरवानो दढ निश्रय करी पाछा यवनोनी पाछळ पहया अने फरी कापाकापी चाली तेमां राजवाधजी पोताना छ कुंवर सहित काम आव्या, तेओ,ना पांच हजार भायातो ए युद्धमां मार्या गया, यवननी फोजमां वारहजार माणसो इतां तेमांथी एक पण वच्यो निह. आ वनाव वि० सं० १५४२ ना अरसामां वन्यो हतो. ज्यारे राजवाघजीनां ३५० राजी-ओए एकी साथे कुवामां पढी प्राणनो परित्याग कयों त्यारथी " कुवानो केर " कहेवायो अने शहेरतुं नाम पण "कंकावटी" मटी "कुवा" कहेवायुं. आ युद्धयी थोडा समय पहेलां राजवाघजीतुं सगपण गढ 'कालरी' नी अंदर साहेव कुंवरवा साथे करवामां आव्युं हतुं, हजु विवाह नहोतो थयो; संबंधनोज निश्चय थयो हतो, परंतु ज्यारे सती साहेबक्कवरवाए "क्रवानो केर" सांभळ्यो त्यारे तर-तज त राजसाहेवनी पायही मंगावी तेनी साथे पाताना वियरमांज वळी मुवा. राजवायजीने नाथोजी, मेवजी, सगरामजी, जोधाजी, अजोजी, रामसींहजी, वीरमदेवजी, गायधरजी, लाखोजी, शरतानजी, वजेराजजी तथा जगमालजी नामे बार कुंबरी हता. आदिना छ कुंवरो " कुवाना केर " वखतेज काम आव्या हता, सातमा कुंवर वीरमदेवजी वि. सं-१५४०

मां पोताने सासरे " रेवर " मिजमान वनी गया इता, त्यां " समीमुजपर " ना काठी छोकोए गायोने घेरी जेथी पोताना ससरा कानडदेवजी सहित कुमार वीरमदेवजीए काठी लोको उपर चडी र्थींगाएं कर्ये अने तेमां सप्तरो जमाइ वने काम आव्या.+ पाटवी क्रमार रायधरजी राजपदवीने धा-रण करी वि. सं-१५४२ मां "कुवा" नी गादीए वेठा. छार्खाजीने सात गामथी गाम " कडी-याणुं", शरतानजीने सात गामथी गाम "नारेचाणुं," वजेरीजजीने सात गामथी गाम "अंकेवाळी-युं" अने जगमाळजीने " धुडकोट " तथा " घांटीका " गाम गिरासमां मळ्या. राजरायघरजी गढ ''क्रवा'' मां मुखपूर्वक राज्य करवा लाग्या, एक वखते तेओ केटलाएक रजपूत सरदारो अने चारणो साथे घोडे चढी शिकारे निकळ्या; त्यां एक ससलो पोतानी दृष्टिए पडतां तेना पाछळ पूर जोसथी घोडाओ दोडाच्या. घणे दूर निकळी गया वाद ज्यारे ससलो समीपमा जणायो त्यारे रा-यधरजीए शिकार करवा भालानें सज्ज कर्यु; जेवो पोते महार करवा गया तेवो ससलो निडर वनी सामे उभो रहाो, आथी राजसाहेवना मनमां आश्चर्य उपज्युं, तेओए साथेना सरदारोने तेमज चा-रणोने पुछयुं के आ ससलो भय रहित वनी आ स्थाने आपणा सन्मुख उभो रह्यो तेनुं हुं कारण? त्यारे कोइएक चारणे वहां के-कुपानाथ ! आ वीरभूमि छे. जो आ स्थळे राजगढ अथवा दरवा-रगढ वंधाय ते। आपनामदारना महाराणीओ परम सतीत्वने पाळनारां थाय अने कुमारो पण महा-न पराक्रमी पाके एवा आ भूमिना महिमा छे. राज रायधरजी तुरत ते स्थळे निशान करावी पाछा ज्ञाहेरमा पधार्या अने त्यांथी वि. सं-१५४४ ना महा वदि १३ सोमवारे श्री इळवदमां राजधानी स्थापी, परंतु जे स्थळे ससलो उमा रह्यो हतो अने पोते निज्ञान कराव्युं हतुं ते निज्ञान सुंसाइ जवाथी दरवारगढ अन्य स्थळे वंधाव्यो अने निशानवाळी भूमिमां भावि योगे मोची लोकोने रहेवा माटे घर वांधवामां आव्या, जेथो मोचीनी केटलीएक स्त्रीओ सती थइ, जेना पाळीआओ हजी सुधी हळवदमां छे. राज रायधरजीए वि. सं-१५५० मां इळवदने पादर पोताना नामथी "रायसर" (राघवसर) नामे जबरुं तळाव वंधान्युं. तेओने अनोजी, सजोजी अने राणाजी नामे वण कुंवरो

[×] राज वावजीना कुमार वीरमदेवजीनो पाळीओ " वीरपरीनाथ " तरीके आज पण पूजाय छे, ते पाळीओ "रेवर " नी धरतीमां " आढपोदर " नामे गाम छे त्यां इन्न मोनुद छे. श लाखाजीना वंशना हाल मोरवी तथा चोटीलामां रहे छे. श वजेराजजीनो विस्तार हाल मोढ- वाणा, शवलाणा अने शदादमां वांटाखाय छे.

थया. वि. सं-१५५६ मां राज रायधरजीनो स्वर्गवास थतां तेओने अग्निसंस्कार करवा माटे म्होटा कुंवर अजोजी तथा सजोजी स्मशानभूमि सुधी गया, ते वन्ने कुमारो इंडरना अने न्हाना कुमार राणाजी " मुळीना " भाणेज थता इता. राज रायधरजीना स्वर्गवास पहेलां थोडा दिवस उपर तेओना मंदवाह संबंधी समाचारनो एक पत्र " मुळी " छखी मोकछवामां आन्यो हतो, जेथी त्यांना परमार (कुमार राणाजीना नाना लखधीरजी) आ दुःखकारक बनावने दहाडेज सुख पूछवा हळवद आव्या, तेओ चडये घोडे परवारा दरवारगढमां जोके मार्गमांज तेओने राजरायधरजी देवलोक पाम्याना खवर मळ्या निह जतां सीधा पोताना दीकरी पासे जइ पहाच्या, त्यां हृदयभेदक रोककळ थइ रही हती; रणवासमा सर्वनां नयनोमांथी वर्षानी वादळीओ समान अश्रुजळनी अस्त्वलित धाराओ चाली रही हती. परमारे पोतानां कुंबरीने धैर्य आपी कहुं के आम रुद्दन करवाथी राजसाहेव पाछा पधा-रवाना नथी, माटे जो कांइ पासे जरतुं जोर होय तो कही एटले कुमार राणाजीने गादीए वेसाडी दइए. स्वार्थमां अंध वनेलां परमार राणीए पितानां वचन उपर विश्वास लावी पोताना कवजामां नव लाखनो खजानो इता तेनी तुरत चावी काढी आपी.परमारे खजानो खोली नव लक्ष रुपिया एकी वखते लांचमां छुंटावी दीधा अने शहेरमां रहेलां तमाम दरवारी माणसोने पोताना पक्षमां मेळवी लीधा. शहेरना वधा दरवाज्ञाओं वंध कराव्या अने कुमार राणाजीने गादीए वेसाडी तेना नामनी आण फेरवी आधी. कुमार अजोजी तथा सजोजी विगेरे सर्व स्मज्ञानथी शहेरमां आवतां दरवा-नोए तेओने अंदर दाखल थवा दीधा नहि अने कहुं के अहीं तो राजराणाजीनी आण फरी चुकी. त्यारे अजाजीए राणाजीने कहेवराव्युं के वापुना दाडा सुधी अमोने हळवदमां रहेवा आपो, पछीथी अमी वीजा मुलकमां चाल्या जइशुं, छतां अंदरथी एवी जवाव मळ्यो के तेम थइ शकशे नहि. त्यारे अजोजी तथा सजोजी केटलाक माणसो सहित 'वेगडवाव ' आव्या अने त्यां सवा-मास पर्यंत रही राजराध्यरनी विधिवत उत्तरिक्या करी; त्यांथी तेओ अमदावाद जवा तैयार थया त्यारे तेओनी सावे राजना दसोंदी टापरीआ चारण रायधर तथा ज्ञाईलजी अने 'वोरही ' गामना रहीश वहीवंचा वारोट सामंतसंग उपरांत चारसो रजपूतो पोतपोतानो गिरास वगेरे छोडी चाली निकळ्या. ते पहेलां मुळीना परमार लग्वधीरे अमदावाद आवी त्यांना सुवाने वे लाख रुविञानुं नजराणुं वर्धु अने हळवदना कुमार अजाजी तथा सजाजीने पदद न आपवानुं ए सुवा पासेथी वचन मागी ली छुं, ज्यारे अजोजी तथा सजोजी अमदावाद आव्या त्यारे मुवाए तेओने

PRO

विलक्कल सहायता न आपी, जेथी ए वन्ने भाइओ जोधपुर गया, त्यांना राजा माळदेवजी वेरे तेओनां ब्हेन आपेलां हता. हळवदथी कुमार अजाजी तथा सजोजी पधार्या छे एवा खबर जोध-पुरना जनानामां जइ पहोंचता राजरायधरजीनां कुंवरी रथमां वेसी पोताना भाइने मळवा पथायो. क्कमार अजाजीए वधी वात ब्हेन पासे कही संभळावी त्यारे वाइए जवाव आप्यो के तमारा वनेवी गांदा होवाथी कोइपण प्रकारनी सहायता आपे एवो संभव नथी, परंतु आपणा जुना संबंधी चि-तोडना राणाजी छे. तेओ पासे जवाथी जरुर मदद मळशे, कुमार अजोजी तथा सजोजी त्यांथी मेवाड भूमिमां गयां अने चितोड जइ राणा रायसिंहजीने मळ्या. राणा तरफथी तेओने अति आदर सत्कार आपवामां आच्यो. थोडा दिवस पछी अजाजीए राणा पासे पोतानी संघळी हकीकत रोशन करी अने हळवदने हाथ करवा माटे सैन्यनी मदद मागी त्यारे राणाजीए कहुं के जो कोइ बीजा शत्रुए हळवद दवाव्युं होत तो हुं अवश्य तमोने पूरती सहायता आपत, परंतु त्यांतो तमारा नाना भाइ गादीए वेटा छे, माटे नाइक राजरायधरजीना कुटुम्बनी नाश कराववामां निमित्तरुप निह थाउं. जेम आप मारा सगा छो तेम ते पण मारा सगा छे, आटलुं कही राणा रायधर कीए क्रमार अजाजी तथा सजाजीने " जाडोळ " तथा " कानोड " ना वे प्रगणां आप्यां अने त्यारपछी वि० सं० १६५५ मां " सादही " तथा " देलवाडा " नी स्यासत आधी ए अजाजी तथा सजाजीना वंशजो हजी पण सादडी, देलवाडा, ताणा, जाडोल अने सूरजगढ आदि स्थळे विद्यमान छे. राजराणाजी विष् संष् १५५६ मां हळवदनी गादीए वेठा अने त्यां तेओए त्रेवीश वर्ष पर्यन्त राज भोगन्यं, तेओना कुमार मानसिंहजी महामदोन्मत्त थया. विण संण १५७९ मां दसाडाना मलेक वक्तनी साथे धींगाणुं करी ज्यारे राज राणाजी काम आव्या त्यारे मानसिंहकीए हळवदनी गादीए वेसी पोताना पितानुं वैर लेवा माटे दसाडा उपर चढाइ करी अने मलेक वकना दीकराने मार्थी, ए वातनी अमदावादना वादशाह वहादुरशाहने जाण थतां तेणे महोटी फोज मोकली मान-सिंहजी पासेथी इळवद्तुं राज्य पडावी लीवुं. राज मानसिंहजीए पोताना न्हाना भाइ वरज्ञाजी तथा उदेसिंहजीने कांइ पण गिरास आप्यो न हतो, जेथी ते वने भाइओ राज मानसिंहजी उपर वारवटे नीकळी गया इता. इळवदनो कवजो हाथथी गया वाद राजघेला मानसिंहजी कच्छमां जइ " मानकुवा " नामे गाम वसावी त्यां रहा अने वार वर्ष पर्यन्त अमदावादना वादशाह साथे वारवटुं खेडी वीरमगाम सुधीना केटलाएक प्रदेशने खेदान मेदान करी नांख्योः राज मानसिंहजी पासे एक प्रागजी नामे महा पराक्रमी रजपूत रहेतो हतो एनी निमकहलाली तथा पराक्रम उपर

प्रसन्न थएला मानसिंहजी तेने पातानी जमणी वांह वरावर जाणता हता; एक वखत राज मान-सिंहजी उपर एवी आफत आबी के तेओ वादशाहना केटळाएक सिपाहीओ साथे अचानक भेटो थइ जतां धींगाणुं करता हता, तेवामां एकदम अमदावादथी वे एकाओ वादशाही लग्नकर सहित घोडाओंने पवन वेगे दोडावता थोडा यखतमांज त्यां आवी पहोंचे एवी वकी हती, परंतु ए वया-ओने दूरथी आवता जोड़ निमकहलाल प्रागजीए राजसाहेवने सत्वर सूचना आपी दीधी, जेथी राजमानसिंहजीए पोताना सर्व साथीओ सहित घोडाओने दावी मुक्या, कोइ क्यांइ ने कोइ क्यांइ एम जेम आवे तेम नदीनाळाओमा भराइ जवाने माटे वधा जुदे जुदे रस्ते रवाना थया. राजमान-सिंहजीनो घोडो घणे द्र नीकळी गयो अने पोताना धणीने मृत्युना मुखमांथी वचाववा खातर इद उपरांत वेगथी दोडी अधवचमा अचानक परपोटानी पेठे फाटी पड्यो. आवा अडाकडीना वख-तमां पोताना नेक अश्वनो नाश थतां राजसाहेवतुं हृदय वज्र जेवुं द्रह छतां आंखमां जळजळीयां आवी गयां, तेओं दुरुमनोथी लेश पण दरता नहोता, परंतु एक पोताना साचा सह।यक अने व-खाणवा छायक वेगवाळा अश्वनो अंत थतां तेओनुं हृदय भराइ आव्युं. त्यां आसपास कापणीनो वखत होवाथी केटलाएक देव लोको पोतानी वैरीओ सहित मोळ वाढता हता तेमांथी ऐक देवे राजमानसिंहजीने ओळख्या. तेणे विचार्यु के आ इळवदनो धणी आ वखते दुःखी हाळतमां छे. तेओ पाछळ वादशाहनी वार फर्या करे छे, कदाच ए छोको अहीं आवी चडशे तो मुंडुं थशे, एम धारी तुरत ते राजसाहेव पासे आव्यो अने सलाम करी वोल्यो के खाविंद ! मारा लायक सेवा चाकरी होय तो फरमाबो राजाथी ते रंक पर्यन्तने समय ह्यं ह्यं चनत्कार वतावे छे तेनो आ एक अद्भुत चितार छे. राजमानसिंह जी बोल्या के वादशाही एकाओ अमारी पाछळ पड्या छे ते ह-मणांज अहीं आबी पहेंचिवा जोइए, जो आ वखते मारो पगक्रमी प्रागजी एकज मारी पासे होत तो अमो वे मरणीया वनी शतुओंने समशेरनो स्वाद चखाडत, परंतु अत्यारे वचवानो एके उपाय नथी, त्यारे देढ वोल्यों के जो इरकत न होय तो आ दातरई छड़ मोछ वाढवा मंडी जाओ. जो वादशाहना माणसो अंही आवी पूछपरछ करशे तो हुं जवाव आपी दृश्या. आपद् धर्मनो विचार करी राजमानसिंहजीए ढेढनी वात कबुळ राखी अने हाथमां दातरडुं लड़ मोल वाढवा मंडी गया. बारवटे निकळेला होवाधी तेओनां कपडां वहुज मेलां थइ गयां हतां, जेथी कोइना कळवामां आवे एम नहोतं. थोडीवार थड त्यां वादशाही वार आवी पहोंची, ते लोकोए ढेढने पृछवा मांडयुं के अहीं कोड नवा माणसो आवेळ छे ? त्यारे एक ढेटडी उतावळी थड वोळी उठी के-हा, आ सामे उभो

FIG

ते एक नवो माणस क्यांकथो आवेळ छे; आ वग्वते पेला समयसूचक ढेढे तुरतज तेणीने जोशथी ठोंठ छगावी कह्युं के रांड ! आ टाणे देरनी ठेकडी कराय ? मज्करी करी देरनुं मायुं कपाववा धार्धु छे के ग्रुं ? " साहेव " कांइ नथी, ए तो देरनी ठेकडी करे छे " एवं ज्यारे वादशाही लक्करने ते ढेढे सोगंद लइ कह्युं त्यारे ते रवाना थया; तेत्रामां रजपूत प्रागजी पोताना मालिकने शोधतो शोधतो त्यां आवी चड्यो. राजसाहेवे तेने वनेली वीनाथी वाकेफ कर्यों अने पोताना प्राण वचावनार ढेढने कहुं के वखत आव्ये तारा उपकारनो वदलो वाळवा हुं चुकीश नहि. प्रागजी पोताना घोडा उपर राजसाहेवने वेसाडी मानक्ववे लइ आव्यो। ए रीते पागजीए राजसाहेवने अनेक वलत मृत्युना मुखमांथी जगायी हता, जेथी राजमानासंहजी पण प्रागोजी कहे एटछाज पगळां भरता अने वारंवार कविछोकोनी पेठे प्रशंसा करता. वारवंड कर्या छतां पोतानो मनोरथ कोइरीते सफळ नहि यवाथी तेओए पागजीने कहुं के हवे अमदावाद जइ छेल्लो दाव अजमावीए ! आमे मरवुं तो छेज माटे वाद-शाहने मारी मरीए तो दुनियामां आव्या देखाइए. प्रामाजीए राजमानसिंहना ए विचारने उत्तेजन आप्युं अने वीजे दिवसे प्रभातमांज वन्ने अपदावाद तरफ खाना थया. वर्षाऋतुनो समय होवाथी झीणो झीणो वरसाद वरदया करतो हतो, मार्गमां अमुक कोशने अंतरे विश्रान्ति लेता त्रीजे दिवसे तेओ अमदावाद नजीक आवी पहोंच्या, सूर्यनारायण अस्ताचळना शिखरपर आरूढ थइ चुक्या हता; मेघली रात्रीने लीधे मार्ग न सुने तेवुं गाढतम काजळनी पेठे पृथ्वीपर पथराइ रह्युं हतुं; आकाशने आच्छादित करी रहेळा अंदुदो ए अन्धकारने अपार पुष्टि आपता हता, अतुल जलवाराथी राफडाओ घोवाइ जवाने लीघे पाणीना मवाहमां तणाइ आवेला फणी-धरो आम तेम दोडादोड करी रह्या हता ते मात्र तेओना मस्तकपर चळकता मिणयीज जाणी गकातुं हुतुं, तमराओना तीव्र स्वरथी दशे दिशाओ शब्दायमान थइ रही हती, जळ अने स्थल एकसरखां वनी गयां हतां, जोशवंध वहेता जळना घुघवाटथी सावरमतीमां पुर आव्युं होय एवी प्रतीति थती हती. राजमानसिंहजीए तथा प्रामाजीए कुळदेवीतुं स्मरण करी मरणनी भीति छोडी सावरमतीना अगाध पूरमां चणे दूर जइ घोडाओने झंपलाच्या. घोडाओ घणा केळवाएला होवाथी जळमां पढतां जराए भडक्या नहि अने तुरत तरी पेलेपार जइ पहोंच्या. ज्योर तेना दावडाओ सावरमतीना तटने ताडन करवा छाग्या त्यारे ए वने वहादुरना हृदयमां हिम्मत आवी अने काळसमान काळी रात्रिमां कार्यसिद्धि करवा माटे महानदीए मुदितम-

नथी अनुमोदन आप्युं होय एम मानी आर्द्र वस्त्रोने निचावता किल्लानी निकट आवी पहोंच्या अने कइ जगोएथी गढपर चढवानी सुगमता पडशे एने। विचार करता अहींथी सहीं आस्ते आस्ते फरता हता, तेवापां गढ उपर एक उन्नत अटारी जोवामां आवी, जेथी ते स्थळे जरावार अश्वने उभा राख्या. आ वखते दीनद्याळु परमेश्वरे ए उभयवीरने संकटना सिंधुथी तारवा माटे वारंवार विद्युत्नो प्रकाश करवा मांडयो, आसपास द्रष्टि करतां राजमानसिंहजीने खात्री थइ के आ महेल वादशाहनोज छे, माटे हवे केवी रीते कार्यसिद्धि करवी एम प्रागाजीने पूछवानी तेओ वैयारी करता हता, तेवामां ए महेळनी अटारीमां कोइ स्त्रीपुरुष वार्ताविनोद करता होय एवो अवाज सांभळवामां आच्यो, वन्नेए ए अवाज उपर वरावर ध्यान आप्युं, त्यां वादशाह अने वेगम पस्तुत समय सर्वधी प्रश्लोत्तर करी रह्यां हतां. वेगमे वादशाहने कह्यं-आहा ! आजनी रात केवी अंधारी छे ? जे प्रदेश दिवसे अति आनंद आपनारा छे ते अत्यारे केवा वीहामणा वनी गया छे ? दिवसे एकी वखते अनेक रंगने अवरेखनारी द्रष्टिने अत्यारे अनेक वखत स्टिप्टिंगर दोडावुं छुं छतां एकज रंग जोवामां आवे छे, जो आ विजळी न थती होय तो पृथ्वी अने आकाशने पारखबुं ए पण महा मुक्की रु थइ पढे. आवा अन्धकारमां कोइ पण प्राणी पोतानां स्थानने छोढी वहार निकळवा हिम्मत तो न धरे, परंतु कोइ चोर चोरी करवा निकळेळा होय अने जो नदीनां नीरमां " खळखळ " एवा शब्द न थता होय तो जरुर तेओ जळने स्थळ जाणी पग मुकतां पाणीना प्रवळ प्रवाहमां तणाइ मरे, त्यारे वादशाह वोल्या के तपारं कहेवुं खरुं छे, परंतु सहुने पोतपोतानो जीव प्यारो होय छे, वेशक चोर अने व्यभिचारी लोकोने कार्यसिद्धि करवा माटे रात्रि एक आशीर्वादरुप छे, परंतु आवी भयंकर रात्रि के जेमां पशु पक्षी पण पोत-पोताना स्थानमां भराइ वेटां छे तो पछी मनुष्य जातिनो श्रो मकद्र के वहार निकळे ? जेने मर-णनो भय न होय, अथवा तो जे असहा दुःखने लीधे जीववा करतां परवामांज लाभ मानतो होय ते कदाच आवे वस्तते आम तेम आथडतो होय तो कांइ नवाइ जेवुं न गणाय. वेगमे पूछ्युं के-एवं म्होटं दुःख कयुं हशे के जे जीवन करतां मरणना मार्गने पसंद करावे ? वादशाहे जवाव आ-प्यों के " गिरासनुं इट्युं." जे माणसनो गिरास नाय तेना जेवो दुः खी दुनियामां कोइ नधी, कारणके एक अंगुल नेटली जमीन माटे रजपूत लोको युद्धभूमिमां असंख्य मनुष्योना रुधिरनी आहति आपे छे, तेओ गिरास आगळ प्राणने कांइ गणतीयां गणवा नथी. स्वाडां जेटली जमीन जतां तेओना तपाप रोप सळगी उठे छे. आ सांभळी वेगपना दिल्लपां दया उपजी, स्त्रीओंनो

स्वभाव हमेशां कोमळ होय छे, तेणीए पोताना खार्विदने कह्युं के ज्यारे गिरास जतां रजपूत लो-कोने आटलुं वधुं दुःख उपने छे, त्यारे तमो ज्ञा माटे तेओना गिरास क्रूर वनी कवने करो छो ? वादशाहे उत्तर आप्यों के ए तो राजकर्ताओंनी रीतभात छे, परंतु अत्यारे जो कोंड गुमावेल गि-रासवाळो माणस गढनी वाहेर उभी मारा पासे अरज गुजारे तो हुं अवदय एनी आज्ञाने पूर्ण करुं. प्राप्त थएल ग्रुभ समयनो लाभ लेवा राजमानसिंहजी एकदम उचे अवाजे बोली उठ्या के जो आप दयाळु वादशाह आवुं वचन आपो छो ता हुं हलवदनो धणी अत्यंत कफोडी हालतमां आ वखते आपना महेलनी अटारी हेठळ आवी उभो छं, माटे मने मारुं राज्य पाछुं मळवुं जोइए. आ सांभळी वादशाह अने वेगम एकी साथे घोंकी उठयां. वादशाहे राज-मानसिंहजीने जवाव आप्यो के-धणी खुशीथी हुं तमोने तमारुं राज्य सुप्रीत करीश. सवारमां शहेरनी अंदर दाखल थइ आनंदनी साथे कचेरीनां आवजो. राजसाहेवे वादशाहनो योग्य वचनोथी आभार मानी सावरमतीने किनारे रहेला एक देवळमां प्रागाजी साथे भयंकर रात्रिनो अवशेष भाग वितान्यो. प्रभातमां दातणपाणी करी, कपडां वदलावी, कटिए छांवी तरवार छट-कावी, अश्वोने एज देवालयमां वांधी वरे वहादुरो वहादुरशाहनी कचेरीमां गया, त्यां सामेज उन्नत सिंहासन उपर वहादुरशाह वेंटेल हता अने आसपास अमीर उमरावो भभकावंध पोशाक पहेरी पोतपोताना दरज्जा प्रमाणे स्थानने शोभावता हता, तेवामां अचानक राजमानसिंहजीने तथा प्रागाजीने हथिआरवंध आवता जोइ तमाम दरवारीओने देहेशत ळागी, वादशाहे गम्मत जोवा मांटे वे घंडि मौन धारण कर्युं, तेना उमरावो शोरवकोर करवा छाग्या अने वादशाह सला-मतथी वारवडं कम्नारो आ इळवदनो राजा अहीं अचानक कयांथी आवी चडयो एम अरसपरस वातो करता उइकेराइ गया. राजसाहेव जेमजेम वादशाहनी निकट आववा लाग्या तेम तेम तेओना मनमां व्हेम वधतो गयो. प्रागाजी सहित राजमानसिंहजीने पकडवा ते छोको ज्यारे तत्पर थया; त्यारे वादशाहे कहुं के सबुर करो मेंज राजसाहेवने अहीं आववा फरमान आपेळ छे, हुं एनी हिम्मत अने वहादुरी उपर वहुज मसन्न थयो छुं; आटछं वोली तुरतज तेओए राजमान-सिंहजीन तथा प्रागाजीने मानपूर्वक योग्य स्थाने वेसाडया अने हळवदमां रहेल पोताना सूवा उपर रक्को लखी आप्यो, ते लड़ राजसाहेव उतारे आव्या अने सत्वर अश्वो सज्ज करी हळवद तरफ रवाना थया. हळवटमां लगभग वार वर्ष लगी वादशाही हकुमत रहेवाथी त्यांनी केटली-एक धनाढय प्रजा आजुवाजुना मुलक्षमां निवास करवा माटे निकळी गइ हती अने खेतीवाडीनी

पण इद उपरांत दुर्देशा थइ इती. राजपानासंहजी तथा प्रागाजी इळवद आन्या, अने सूचाने मळी वादशाही रुक्को वंचाच्यो, सुवाए तुरतज वादशाहना हुकमनो अमल करी हळवदमांथी थाणुं जठावी लीयुं, जेथी वि. सं. १५९४ मां फरी राजमानासंहजी इळवदनी गादीए वेठा. तेओए मागाजीने मेम पूर्वक कहुं के तमारी सेवाना वदलामां हुं जे आपुं ते थोड़ं छे, तमारी सहायताथीज मने राज्य मळ्युं छे. परंतु खजानाओ खाली होवाथी हवे राज्यनी आवादी ज्ञी रीते करवी ए सूजतुं नथी. वादशाहे तो आपणा इळवद शहेर उपरथी पोतानो हाथ उठावी लीघो, परंतु क्षुधा देवीए जमावेला जोरने तोडवा माटे आ वखते पैसानी पूरती जरुर छे, पैसा विना सैन्यनी जमा-वट शी रीते थाय ? संक्षेपमां धन विना धार्धे काम सत्वर पार पाढी शकातुं नथी, माटे तमे। गमे तेप करी आपणी धनाढय प्रजाने शोधी समजावी अहीं वसावो तो आपणे मन मान्या दाम मेळवी शकीए. प्रागजीए पोताना मालिकतुं मन वित्त विना अत्यंत विह्वल जोड़ तेओनी आज्ञा उठाववा हाटे एकदम कम्मर कसी अने ते पराया प्रदेशमां निवास करतां नंदवाणाओने जड़ मळ्या. ए नंद्वाणा लोको हळवटना मूळ वतनी हता अने तेओए राज्यना आश्रयथीज अढळक धन मेळव्युं हतं. प्रागाजीए तेओने कर्ं के राजमानसिंह जीए हळवदना राज्यनी लगाम हाथमां लीधी छे, माटे एवे तमे दथात्यां रहेवा चालो, त्यारे एक नंदवाणे जवाव आप्यो के अत्यारे राज बहुज नवली हालत-मां होवाने लीधे वखते राजसाहेव अमारी मिलकत उपर हाथ नांखे तो पछी अमारे कोना पासे जड़ फ-रियाद करवी आप जाणो छो के सत्ता आगळ शाणपण नकामुं छे. जेम पैसो वैभव आपे छे तेम माथां पण ए पैसोज कपावे छे. माटे एक पुरातन कहेवत छे के 'चेतता मुखी ते सदाय सुखी ' पाछ-ळथी पस्तावं पहे एवो राजगार नंदवाणानो दीकरो न करे. आवा स्वार्थपरायण नंदवाणा प्रत्ये प्रागाजीना अंतःकरणमां तिरस्कार उपज्योः तो पण तेणे मालिकना हित खातर सर्वने समजाववा-मांडया अने कहुं के जे मजानां सद्भाग्य होय तेनोज पैक्षो राजाना उपयोगमां आवे छे. राजानी मीतिमां निरंतर लक्ष्मी निवास करे छे; पैसो तो आज छे अने काले नथी, परंतु राजानी मीति होय तो पेढी दर पेढी आनंदनी साथे अमीराइनां सुख भोगवी ज्ञाकाय छे. पैसा करतां पाण कोटि दर्डने किम्पती गणाय छे, छतां ए पाण आपीने पण केटलाएक पुरुषो राजानी पीति संपादन करे छे: ए पीतिनो लाभ मरनारना परिवारने मळ्या विना रहेंतो नथी. तेओनुं यावच्चन्द्रदिवाकर राज्य तरफ्धी पोपण करवामां आवे छे. एवी अमूल्य राजानी मीति आगळ धनना ढगळाओ कांइ गणतरीमां नधी. तमो पण राजानी मीतिथीज तरतीमां आव्या छो. ज्यारे तमारा वापदादाए मथम हळवदमां प्रवेश कर्यो त्यारे पासे फुटीवदाम पण न हती. राजमानसिंहना वडवाओनी कृपा मेळवी पांचपैसा पाप्त कर्या अने पछी जेंने बखत राज्य उपर आपत्ति आवती तेते बखते एज पैसा धी रता हता अने अने सारो समय पाप्त थतां व्याज उपरांत इनामो पण मेळवता, एथीज आजपर्वत तमार। घरमां स्तुति करवा लायक संपत्ति टकी रही छे. माटे तमो सर्व मारुं कहुं यानी इळवद चालो, हुं तपोने कोइ गीते हरकत आववा नहि दुउं. त्यारे वीजो नंदवाणो वोल्यो के-अमे राज्यने पैसो धीरवामां पाछो पग नहि ढङ्ए, परंतु वखते राजसाहेव अमारी इच्छा विरु-द्ध जोरज्ञलमथी पैसा पडावी लेवा तत्पर थाय त्यारे अमारे शुं करवं ? जो तमो जामीनगीरी आपता हो तो अमे वधा त्यां आववा तैयार छीए, तमारा वचन उपर अमने पूरतो विश्वास छे अने तपारा कहेवा प्रमाणेज राजसाहेव करे छे ए अमाराथी अजाण्युं नथी. आ वखते प्रागाजीए तमाम नंदवाणाओने वचन आप्युं के ज्यांसुधी मारा धडपर माथुं छे त्यांसुधी तमारो वाळ वांको नहि थवा दं. आवां अभय वचन सांभळी वधा नंदवाणाओ माल मिरकत अने कुदंव कवीला सहित प्रागाजीनी साथे इळवदमां आव्या. राज मानसिंहजीए तेओने मानपूर्वक राख्या अने ए व-धानी पिल्कतना संरक्षण माटे पूरतो वंदोवस्त करी आप्यो आम अनेक प्रकारे राज तरफथी वर-दास थवा लागी, छतां निष्टुर मनना नंदवाणाओ पोतानी मेळे राज मानसिंहजीने पैसा सबंधी मदद आपवातुं एक वचन पण न वोल्या, दरवारी माणसो पगार विना दुःखी थवा लाग्या, जो-गाणनी जोगवाइ न होवाथी अश्वोतं लोही उतरवा लाग्यं, देशनी दशा दिन प्रतिदिन बहुज वग-हवा लागी, वाटिकाओ वेरान जेवी वनी गइ अने छेवटे राजधुव मां पण खोराकनी खामी आववा लागी त्यारे राज यानसिंह भीए पागाजीने कहाँ के हवे नंदवाणाने समजावों तो सार्क नाणा विना राज्यनी जन्नति कोइ रीते थवानी नथी। राजसाहेबनी आज्ञाथी प्रागाजी नंदवाणा पासे गया। अने राज्यने पैसा धीरवा माटे सर्रने एकठा करी समजान्या, छतां एकेना मनमां असर न थइ अने तेओ उल्हा प्रामानीने गळे पड्या के तमो अमने अभय वचन आपी अही लड़ आव्या ए हां आट-ला माटे ? प्रागाजीए कहुं के हा, ज्यारे नाणानी जरुर हती त्यारेज तमोने धनाट्य धारी आंही वसा-ववा उद्योग कर्यों छे, अने तमोए जोइतुं धन धीरवा माटे प्रथम वचन आपे छे, छतां आ वखने वदकी वेठा ए तमाराधीन वने. अमो रजपूत छोको वचननी खातर प्राण आपतां छेश पण विचार न करीए. हवे हुं छेवटना शब्दो कहुं छुं के राज मानसिंहजी निरुपाये जोरजुलमथी तमारी मिल्क-त छिनवी केशे अने मारे वचननी खातर धणीनी साथे धींगाणुं करवुं पडशे; माटे कोइ रीते सपजो

तो सारुं, राजा आ नरलोकना इन्वर लेखाय छे, तेनी सेवा शुद्ध मनथी करी होय तो ए अवस्य महान फळ आपे छे. आटलुं कह्या छतां राज्यने नाणां धीरवा माटे नंदवाणाओना मुखगांथी चो-रुखी "ना " निकली, त्यारे पागाजीए राज मानसिंहजी पासे जइ कहां के अन्नदाता ए क्रपण कोको कोइना समजान्या समजे तेम नथी, माटे आप तेओना घरपर इल्लो करी द्रन्यने दरवारगढमां घसही लावो, ए शिवाय एके इलान नथी। राज्यनी उन्नति अर्थे सगा भाइनो संहार करवो पढ़े तो पण एमां अपकीर्ति थवानी नथी, कारण के एतो रजपूतोनी अनादि रीत छे. माटे आप-जेम वने तेम उतावळथी कार्य सिद्धि करी लिओ अने मने वहारगाम जवानी आज्ञा दिओं. राज मानसिंहजी बोल्या के तमारे वहारगाम जवातुं ग्रुं प्रयोजन छे? प्रागाजीए उत्तर आप्यो के जे चलते ए नंदवाणाओंने अहीं निवास करवा हुं छइ आन्यो, त्यारे में तेओने वचन आपेक छे के " ज्यांसुधी मारा घडपर मायुं छे त्यांसुधी तमारो पराभव थवा निह दु " माटे मारी गेरहाजरी-मां आपे ए कार्य करी लेवातुं छे. राजमानसिंहजीने पण ए बात योग्य लागी. प्रागोजी तरतज त्यांथी पसार थइ गया अने वेश वदली ढाल तरवार सहित नंदवाणाना वासमां हाजर थया. राज मानसिंहजीए पोताना इथियार वंध पचास माणसोने रात्रीने वखते इल्लो करवा हुकम आध्यो ए वधाए नंदवाणाना वास नजीक आवी हुमलो कर्यों ते वखते प्रागाजीए तलवार खेंची पोताना मालिके मोककेल माणसो साथे धींगाणुं करवा मांहयुं अने वीरताथी वीश वावीशनां माथां घडथी जुदां करी नांख्यां, आ वखते एक माणसे राज मानसिंहजीने खवर आप्या के नंदवाणाना समु-दायमाथी एक एवो द्याचीर निकळ्यो छे के तेणे आपणां केटलांएक माणसोने कापी नांख्या अने इजी पण ए हारे एवं लागतुं नथी. आ सांभळी राजसाहेव अत्यंत क्रोधना आवेशमां घोडे चडी खुड़ी तलवारे त्यां पथार्था. पोताना धणीने हाथे मृत्यु पामी मुक्ति मेळववा आतुर थइ रहेला मागानीए प्रथम आवेळा माणसोमांथी घणाखरानो घाण वाळी राजसाहेव सन्मुख प्रयाण कर्स ने राजमाहेवे आवेशमां ने आवेशमां एक झटकाथी एने हेटो पाडी दीधो, नंदवाणाओ निर्वळ वनी गया, राज मानसिंहजीना रक्त नयनो जोइ वधा थर थर ध्रुजवा लाग्या अने नाइलाजे नेतरनी माफ-क वाळ्या वळवाने हाथ जोडी उभा रहाा. ज्यारे राजगाहेवे तेओना द्वार तोडी तमाम मिलकतने कवजे करवा अनुचरोने आज्ञा आपी त्यारे एक नंदवाणी नम्र वनी बोछी उठयो के कृपानाथ! आप कहें। तेम करवा अमी वधा तैयार छीए. राज्यने फेटलुं जोइए तेटलुं धन काढी आपवा वाप-दादाना बोलधी कबुलात आपीए छीए, माटे आप अमारा उपर क्रोधने तजी दिओ. राजमानसिं-

हजी गमे तेवी स्थितिमां हता तो पण पोताना "गौब्राह्मण प्रतिपाल " धर्मने याद करी त्यांथी तुरत पाछा फर्या मसाछोने प्रगटावी धींगाणामां काम आवेला माणसो केवी हालतमां छे ते जोवालाग्या फरतां फरतां प्राण जवानी तैयारीमां पढेला प्राणाजीने जोड भला माणस! तुं अहीं क्यांथी? प्राणाजीए जवाव आप्यो के—मारं वचन पाळवा अने धणीनुं दुःखटाळवा. आप जरा पण शोच करशो निहर मारो तो मोक्षथह खुक्यो समजो, राज्यनी सेवा वजाववाना कर्तव्यमां हुं सर्वीशे सफळ यथो छुं. आ वखते राजमानिसहणीनी आंखमांथी दहदह अश्रुनी धाराओ चालवा लागी, तेओ गद्गद् कंडे घोल्या के जो मने प्रथमधी खबर पडी होत तो हुं कदी पण आ कार्य न करता. जेणे जींदगी पर्यन्त राज्यनी शुद्ध मनथी सेवा वजावी अने जेणे आ शरीरपर आवेली अनंत आफतोने अळगी करी एवा एक निमकहलाल सरदारनो नाश करवाथी दुनिया आखी मने दोष देशे अने आ कलंककनो कालो डाध मारा समस्त कुळने चोटया विना रहेशे निहे. माटे हवे जीववा करतां परवुं एज उत्तम छे. आटलुं कही राजमानासहजी पोताना मस्तक लपर तलवार मुकबा तत्पर थया, तेवामां प्राणाजीए बुटित अवाजे कुळदेवीना अने पोताना शपथ आपी तेओने तेम करतां अटकाव्या अने कर्युं के जे लोको मूर्ख हशे ते कटाच आपनी निदा करशे; परंतु विद्वान लोको कदी पण आपना आ कृत्यने वखोडशे निहे आटलुं वोली निमकहलाल प्राणाजीए पोताना धणीने लेली वस्ततना रामराम करी मोक्ष मैळव्यो नंदवाणाओ पासेथी पोताने जोड़तां नाणां मळवाथी दिवसे दिवसे राज्यनी

१ ए संबंधी नीचे लखेलो दोहो सामान्य रीते बोलाय छे.

झालाहुंदी नोकरी, वे इयाहुंदो नेह; माने प्रागो मारीयो, कये अवगुण एह.

खरी हकीकतने नहीं समजनारा मूर्ख लोको "झालानी नोकरी वेदयाना स्नेहनी वरावर छे." एवो अर्थ करे छे. परंतु खरी हकीकत एवी छे के कोइएक विदेशी चारणे ज्ञालाना वारोटने पृछ्युं के-झालानी नोकरी ते वादशाहनी पित्रता वरावर छे. छतां राज मानहिंहजीए निमकहाल प्रागजीने मार्यो ए कया अवगुणथी? त्यारे झालाना वारोटे ज्वाव आप्यो के—

अवगण प्रागामें नहीं, प्रागी गुणभंडार; आप वचन हित इयामरो, समज लड्यो सरदार.

पागजीमां एके अवगुण नहोतो, एने राजमानासिंहजीए जाणीजोइने मार्या नथी, परंतु एज पोतानुं वचन पाळवा अने धणीनुं हित करवा मरवा तत्पर थयो हतो. स्थिति स्रुधरवा लागी. थोडां वर्षो थयां त्यां राज्य एकदम आवादी उपर आवी गयुं, जेथी राजमान-सिंहजीए सौथी पहेलां नंदवाणाओनां नाणा व्याज शीले चुकवी आप्यां, सैन्यनी जमावट पण सारी रीते थइ गइ. हाथी, घोडा, गायो, भेंसो, विगेरे जत्थावंघ खरीदवा मांड्या. ज्यारे खजानाओं तर थया, त्यारे जेणे जेणे विपत्तिना वखतमां पोताने मदद आपी हती, ते लोकोने इनाम इकरार अने जागीरो आपवामां राजमानासँइजीए अति उदारता वतावी, तेमज जे ढेढे बुद्धिवळ चापरी वादशाही दळथी पोंताने वचावी छीधा इता तेने वोलावी " चराढी " नामनुं गाम इनाममां आप्युं हळवद हाथथी छूटयुं ते अरसामां राज मानसिंहजी केटलोएक वखत '' शातलपर '' तथा '' आहेसर '' मां रह्या हता. त्यांना जाहेजाओए राजसाहे-बनी बहुज खातर वरदास करी हती, ए उपकारना बदलामां जाहेजाओ साथे दीकरीओ लेवा देवा-नो संबंध राजमानसिंह जीए पहेलबहेलोज बाध्यो हतोः ते पहेलां जाडेजानी के झालानी दीकरीओ अरसपरस आपवामां आवती नहिः तेओए विः सं-१६१८ मां एक "मानसर " नामे म्होद्धं तळाव वंधान्युं. तेओने रायसिंहजी, रामसिंहजी, तथा गोविंदजी नामे त्रण कुमारो थया इता. पोताना भाइ वरसाजी तथा उदेसिंहजी साथे राजमानसिंहजीए छेवटे सलाइसंप कर्यो इते। अने तेओंने राज्यमांथी ह भाग उदार दिले वहेंची आप्यो हतो. प्रागाजीना मरण पछी राजमानसिंहजीतं इारीर दिनप्रतिदिन क्षीण यवा छाग्युं, वि० सं० १६**२० मां तेओनो स्वर्गवास थतां पाट**वी कुमार रायसिंहजी इळवदनी गादीए विराजमान थया; तेओए पोताना न्हाना भाइ रामसिंह-जीने सात गामशी गाम " जीवा " तथा गोविंदजीने सात गामथी गाम " हेरवाछुं " जीवा-इमां आप्युं.

आ रीतें कान्यमां घणी जगोए अर्थना अनर्थ थाय छे. मूळ कर्तानो उद्देश "वे शा'हुंदो नेह " ते वादशाइनी पित्रना एवो छे, छतां हालना लेभागु लोको वेश्याहुंदो नेह " अर्थात वेश्यानो स्नेह एवो मिथ्यावाद करे छे. ते मानवा लायक नथी.

१ इजी पण ए गाम " देदचराडी " ए नामथी प्रख्यात छे.

२ राजमानसिंहजीए पोताना भाइ वरसाजी तथा उदेसिंहजीने राज्यनो ३ भाग आप्यो इतो एवो केंटळीएक जगोए ळेख छे. ए वरसाजी तथा उदेसिंहजी चावडाना भाणेज इता अने तेना वंशजो अद्यापि कोंड सतापर, कोपरणी, जेइडा मेथाण, अंकवाळीआ अने चराडवा आदि स्थळे विद्यमान् छे.



एकोनविंशत् तरंग.



" मनहर्"

आप्युं लक्ष उभयनुं दान किन इश्वरने, घोळनी धरामां गया धारण करी धृति. दीधा नथुराम डंका राजवट राखवाने, झाला कुळने दीपाव्युं करी वीरनी कृति. भालानी अणींथी हणी हालाने हराव्या पछी, दिल्ही दरवारमां प्रसारी करनी युति. परम पिनत्र रायसिंहनुं चिरित्र रुडुं, आपने सुणावुं आज अमर महीपिति.

राजरायसिंहजी वि० सं० १६६० मां श्री हळवदनी गादीए वेटा, तेओ घोळना टाकोर जसाजीना भाणेंज थता हता; तेओए पराक्रमथी आजुवाजुना मुलकने कवने करवा मांड्यो अने राज्यंनी आवक जेम जेम दृद्धि पामदा लागी, तेम तेम सैन्यने वधारवा मांड्युं. "मारबुं यातो मर्खुं " ए वे झट्द उपर तेओनी विशेष अभिरुचि हती; छतां ऋतु अनुसार भोगविल्लास भोगविल्लास पुष्कळ द्रव्यनो व्यय करता, दीर्घमूत्रीपणुं पोताने वीलकुळ पसंद न हतुं, छतां दीर्घटिष्टा महत्योनी सलाह मुजव राज्यनो कारोवार चलावता; तेओनी पकृति अत्यंत साहिसक हती, छतां झक्तिने लीधे सर्वत्र विजयी निवडना; पोते एक एवी गहन प्रतिज्ञा लीधी हती के जे स्थले जवा निश्चय थइ चुक्यो होय ते स्थले जतां गमे तेवां विष्न आवी नहे तो पण पाछो पग न भरवो. संक्षेपमां राजरायसिंहजीनां नयनो वीररसने रहेवानां अनुष आलयरुप हतां, अन्तःकरण उत्साहरुपी महने खेलवाना अखाडारुप हतुं, करनल समशेरुपी नर्तकीने तृत्य करवानी रमणीय राजभूमिरुप हतां; ललाट क्षात्र तेजसने विहार करवाना विशाल क्षेत्ररुप हतुं, मूछना छेडाओ

दृश्चिकना आंकडानी माफक निरंतर वळेला रहेता, वदन सरस्वतीना सुंदर सदनरूप हतुं, वज्रथी पण विशेष द्रवताने धारण करनारुं वक्षःस्थल प्रतिपक्षीओना मनोरथरुपी पर्वतोने दर्शनमात्रथीन विच्छित्र करवामां वरवाणवा योग्य हतुं अने भुजदंड गजसुंढनी स्पूलताना गर्वने गंजन करनार हता. आवा अतुल पराक्रमी राजरायसिंहजीना अमलमां प्रजाने कोइ पण प्रकारनो भय नहोतो. याचक वनी आवेळा अभणजनोने पण मों माग्युं आपवामां आवतुं त्यारे कविकोविदोनी केवी कदर धती हुशे ए वाचकटन्देज पोतानी मेळे विचारी छेतुं. एक वलत एवो वनाव वन्यो के सि-न्धमां न्यापार करनारा चारणो पासेथी वार महिने वेराना एक लाख रुपिआ लेवा गुजरातना वादशाहनी इच्छा थइ अने तेणे चारणोने अनेक रीते सताववानी शरुआत करी. आ वखते मा-रवाहना रहीश वारोट इसरदान त्यां आवी चड्या अने एक लाख रुपिआ अपाढी वीजने दीवसे आपवातुं वादशाहने वचन दइ तमाम चारणोने सहु सहुना रोजगार उपर चडावी दीधा वा-दशाहे इसरदानने कहुं के तमे अपादी वीजने दहाडे रुपिआ आपवा वंधाओ छो, परंतु त्यां सुधी तमारा पुत्रने अहीं वंधीवान तरीके राखवो पडशे अने जो मुद्दतसर रुपिआ निह मळे तो अमो तेने मुसलमीन वनावीद्यां. ए वात पण वारोट इसरदाने कबुल करी अने पोतानो दीकरो बादशाहने सोंपी दीयो. दिवस उपर दिवस जवा लाग्या, तेम तेम इश्वरना यक्त इसरदान वधारे व्याक्तळ थवा लाग्या, तेओए वे चार रजवाडामां फरी पोतानी उत्तम कवित्व शक्तिथो राजाओतुं मन िझव्युं. परंतु एक छक्ष रुपिआ एकटा थया नहीं, आपाढी वीन आवी के तुरत तेओ अमदावाद जइ पहेंच्या अने वादशाहने मळ्या. वादशाहे क् हुं के जो आज चंद्रोदय पहेळा एक लाख रुपिया निह चुकावो तो तमारा पुत्रने आवती काले सवारमां अमारा इस्लामी धर्मनो अंगीकार करावशुं. इसरदान अत्यंत गभराया, तेओए प्रभु पार्थ-ना करी जेथी चन्द्रनो उदयज न थयो. आथी वादशाहन: मनमां अचंबो उपज्यो, तेणे वारोटने पृछयुं के आजे चन्द्रोदय न थयो तेतुं कारणशुं ? त्यारे इसरदाने जवाव आप्यो के ज्यांसुबी आ-पने आपदा माटे एक लाख रुपिआ मने नहीं मळे त्यांसुधी चन्द्रना दर्शन थवां दुर्लभ छे; परंतु जो फरी एक मासनी वधारे मुद्दत आपता हो तो आवती काले तमोने चन्द्रना द्वीन थाय. बाद-शाहे ए वात कबुल राखी अने तृनीयान दहांडे द्वितीयानो चन्द्र देखायो। इसरदाने राजरायसिंहजी अत्यंत उदार छे एवं को इकविना मुखर्था सांभळ्यं हतं, जेथी तेओ वीजा रजवाडामां निह रोका ता सीधा इळवद आव्या अने राजरायसिंहजीने मळी वीतेली वातथी वाकेफ कयी. राजमाहेंवे

एज वखते इसरदानने अभय वचन आपी कहां के तमो निश्चित रहो. भाट, ब्राह्मण, अने चारणो-नी उपाधि अलग करवाने माटे मारा खजानाओं निरंतर खुद्धाज छे. राजरायसिंहजीनी आबी सुधा सरखी वाणी श्रवण करी इसरदानना अन्तः करणमां अपार शान्ति उपजी. नित्य नवां नवां खानपान आदिथी सन्मान पामतां वीश दिवसो एक निमिपनी माफक नीकळी गया. एकबीशमें दिवसे राजरायसिंहजीए पोताना माणसो द्वाराए इसरदानना नामथी एक छाख रुपिआ अमटावाद मोकली आप्या. मुदतने आगले दहाडे रुपिआ मळी जवाथी वादशाहे वारोट इसरदानना पुत्रने वंधनथी मुक्त कर्यों. राजरायसिंहजीए एक छाख रुपिआ उपरांत वीजा एक छाख रुपिआ-

१ एक ळाख रुपीआ आपी वादशाहना वंधनयी पोताना पुत्रने छोडाच्यो ए वखते वारोट इसरदाने राजरायसिंहजीना संवंधमां नीचे मुजब काच्यो वनाच्यां हतां.

दोहा.

काळाम्रहसुं काढीओ, वेळा दूजी वार; आयो राया संगरा, गुणहुंदाउपकार ॥ गीत. १

तरक मगर ताणी जते सहुकोए समरीओ, सर अवर नर नहकाज सीधा, करण संभारीयो नाम तामक रणा क रण, कवीराए संघ दस साद कीधा; वंदण गजेन्द्र इ वान ग्रही आवने, हेवेने मगर लेजाय हेला, धाओरे धाओ हे राण ! धरणी धरण, वाघहर सारीखी हुइ वेला. वरण अन्द्र वजपालदे वीरभद्र, राई तन देव सह देख रहीआ, मह महण मानाजत तार मूकावीआ, गजेन्द्रकर ग्रहीरीए ग्राह ग्रहीआ; पात्र पट हथ दस देस पोकारीआ, जल अने हुआ रण वोल जारां; सपोंद्द वइंकठ जाई तारे आसेवग्र, तरंडथीओ पाटडी राओ तारा ॥

गीत, २

राए संघराण रणरीये रोद्रां, छोडावीआ चारण छोगाल; वेळाजेण वेहडीओ वीभो, वेळाजेण वथको वजपाल; नो शिरपाव आपो वारोट इसरदानने संतुष्ट कर्या हता. कोइ वस्तत राजरायिसहजी घोळ जइ पोताना मामा जसाजीना मिजमान थया हता, त्यां आनंद वैभवमां केटलोएक समय व्यतित करी
एक दिवस मामो भाणेज चोपाट खेलचा वेठा, रमत वरावर जामी उपराउपर दाव लेवा लाग्या,
तेवामां दील्हीथी द्वारिका तरफ जवा निकलेली महाराज मकनभारथीनी जमात घोळने पादर आवीतेनी साथे नगारां, निशान, हाथी, घोडा, पालखी, छत्र, छडी तथा चामर घिगेरे म्होटो आइंवर
हतो, दरेक मनुष्योनां अंग विभूतिथी विलसी रह्यां हतां, सर्वना शिर उपर पिंगळी जटा छंडलाकार वेठेला सर्पनी शोभाने धारण करती हती; दादी, मुल, तथा अक्रटिपर संसेल भस्मने लीधे
युवान पण द्र्यी दृद्ध जेवा देखाता हता; कंठमां रुद्राक्षनी माळाओ अने कटिए आडवंध तथा
कोपीन शिवाय कर्युं जोवामां आवतुं नहोतुं. आवा त्यागी छतां अनुरागीनी माफक लक्ष्मी देवीना उपासक वनेला नागाओ हाथमां विविध शस्तो धारण करवाने लीधे शंकरना गणनी पेठे शोभता हता. साथे केटलाएक भगवां बस्तोधी भन्य जणाता अतीतो म्यानामां वेठेला म्हाराज मकनभारतीने चम्मर ढोळता हता, तमामे ढाल तलवार धारण करी हती. तोपो, वन्द्को अने
दारुगोळो पण जमातनी साथे जत्यावंध जोवामां आवतो हतो. कदाच कोइ साथे युद्ध करवानो प्रसंग आवी चढे तो पण जीत मेळवी शके एटली सामग्रीनो संग्रह करेलो हतो. दरेक शहेरनी समीपे पहाँचता पुरवासीओने जाण करवा माटे महाराज मकनभारथीए जमातना नगारशीने

वंज अने आसार वीरभद्र, सत्रसल हरासजस सरसाय; कडतल जो कव वारन करत, मुआहत भाखसीआ मांय; उंडे अतग बूडताईअण, साहीवांहांए काढी आसीह; दीहजण राओल ओत डगीओ, दुदाओत झुकोजण दीह; वदरे तुझतणे सींघ वधा, चारण छुटा चतर चकोर; सरवही एकी अग्थ न सींधो, जाडेजीकी न हूवो जोर; मुकावीआ तेहीज मानाओत, दुथी वरन खगादरवेस; मोदब राओ हूओ जइ मागे, नवल हूवो जइ काछ नरेंदा;

ढंको वजाववानी आज्ञा आपेछी होवाथी तेणे घ्रोळने पादर पण डंकानी यणयणाटी वोकाववा मांडी, ते सांभळी टाकोर जसाजीना कान चमक्या, तेओए रमतने तुरत पडती मुकी अने कोईएक किंकरने हुकम कर्यों के मारी हदमां नगारांनी नाद करनार कींण छे ? तुरत तपास करी, तेवामां वीना माणसे आवी खबर आप्या के ए वावानी जमात छे, छतां जसाजीनो क्रोब शान्त न थयो, लोचनोए लालाशने लेश पण न तनी, भ्रकुटिनो मरोड अने खडां थयेलां रोम चिडिभर एम-नाएम रह्यां. आ वखते राजरायसिंहजी वोल्या के मामा! ग्रुं तमे तमारी हृद्मां कोईने नगारुं वगा-डवा न आपो १ टाकोर जसाजीए जवाव आप्यो के विलक्कल नहि, राजरायसिंहनीए कहुं के क-दाच कोई आवी वगाडे तो शुं करो. जसानी वोल्या के-फोडी नांखुं. आवां अभिमानना वचन सांभळी राजरायसिंहजीने क्रोध चड्यो अने तेओ तुरत बोली उट्या के मामा ! त्यारे हवे जोइ लेजो मजा ! आ तमारो भाणेज थोडा वखतमां श्रोळनी हरमां नगारां लावी धणेणाटी वोलावशे. पछे तमा नगारांओने शी रीते फोडो छो ए जोयुं जाशे. ठाकोर जताजी पण साहसमां राजराय-सिंहजीथी उतरे तेंवा न हता, तेणे पण वज्र जेवा कठिन वचनो उच्चारवा मांड्या. आगळना रज-पूतो वातवातमां वैर वांधी संबंधीओनो घात करतां जरा पण विचारता निह अने परस्पर वाहुबळ-नी परीक्षः करवा युद्ध भूभिमां कुदी पहता ए आ उपरथी स्पष्ट समजी शकाय छे. राजरायसिंड-जी एज वखते श्रोळतुं पाणी हराम करो हळवद तरफ रवाना थया अने त्यां पहेंच्या बाद तुरव सैन्पने सज्ज करवा मांडयुं. प्रथम तो धोळके माणसो मोकछी कस्वातीनां वावन जोढी नगारां मंगाव्यां अने वीजां राज्यमां हतां तेटलां समा नमा कराव्यां. त्यारवाद साहसना सिन्युरुप असीम वळवाळा हळवदना धणीए दश हजारनुं सवळ दळ साथे लइ दैवी दमामथी श्रोळनी धरा तरफ प्रयाण कर्युं विविध रंगथी रंगेला पदोन्मत्त हायीओना झुंड उपर फरकती ध्वजाओ होळीनी जाळ समान झळकती हती. केटलाएक हाथीओ उपर सिंहना मोरावाळा सुवर्णना होदाओ मेरुप-वितनी माफक शोभता हता, केटलाएक करिवरो सुंढना अग्रभागने सर्पनी फणो समान डोलावता दृक्षोनी डाळीओने तोडवा लाग्या, केटलाएक मतंगनो पृथ्वीपर पड ते पोतानी छायाने चोतरफर्या ताहन करता दिङ्मुहनी म:फक आम तेम दोडवा लाग्या; केटलाएक हाथीना दंतोशळमां सोना रुपानां वक चको चडावेळ हतां, ते जाणे युद्धमां कोध करी वक्र गतिवाळा राहुए पूर्णिमाना चन्द्रने घेरी

लीधो होय एवी उत्मेक्षाने उपजावतां हतां. भद्र, मन्द्र, मृग अने विश्व जातिना अनेक हस्तिओ

चंचलताथी भूमिने नीची नवाववा लाग्याः तेमां केटलाएक " मकना ", " बाल ", " पोत ",

" विक ", " यूषनाथ ", "प्रभिन्न", "मैंगळ", "न्याल" अने केटलाएक मध्य यौवनवाळा इस्तिओं पण इता. छटादार गमनथी घननी घटाने लिज्जित करनारा ते तमाम इस्तिओं मस्तीमां आबी संहना अग्रभागथी जलविनदुओनी दृष्टि करता सृष्टिसौन्दर्यने पुष्टि आपवा लाग्या ए इस्तिओना आंखना गोळा,वने दांतो वनेतुं स्यान, गंडस्थल, ग्रीवा, पुच्छनो मूळ प्रदेश, छलाट, कुंभस्यलनो अधो भाग, कर्णना मूळ अने कुंभस्थलनो मध्य भाग विगेरे अवयवीने विविध रंगथी अलंकृत कर्या इता; जेथी तेनो देखाव सायंतन्व्यानी शोभातुं सर्वाशे अनुकरण करवामां विजयी निवहे एमां कांइ नवाई जेवं न हतं. केटलाएक करिवरो योवनना मावल्यथी भालाना अग्र भागने तेमज अंकुशनी तीक्ष्ण अणीने नहि गणकारता अनुल आवेशथी अंगोने उछाळी महावतोने स्थानथी भ्रष्ट करवा लाग्या अने केटलाएक गज गर्जना करता तेमज केटलाएक अन्यना तेजनी तर्जना करता होय तेम कदलीना फलनी आज्ञाए अथवा तो अत्यंत क्रोधने वश वनी आगळ पग भरवा लाग्या. साथे सर्प समान टांची केशवाळीवाळा अने नभेळी कन्धरावाळा अत्यंत शोभायमान अश्वो पृथ्वीनो स्पर्श करतां पग दाझता होय तेम भाचता गाढ जलड जेवा हस्तिओना युत्थमां चमकती चपळा पेटे चंचल चालथी चाली स्वार थएला सुभटना आन्तरिक उत्साहने उत्तेजन आपवा लाग्या. केटल एक अन्वो नखरा करनारी वेदयानी माफक वक्रगतिथी मार्गने मापवा लाग्या. पारस, कच्छ, वाहीक अने वनायु देशमां उत्पन्न थएला एव वगरना केंटलाएक अश्वो हावभाव सिंह। वृत्य करती नर्तकीनी पेटे नाचवा काग्या, केटलाएक अन्वो आवशमां आबी एक बीजाथी आगळ थवा छाग्या. केटलाएक अन्वो भूमिने वाथ भरी नालोधी अग्निकणने उपजाववा लाग्या, केटलाएक अन्दो कुलटा स्त्रीनी आढी अवकी चालती चंचल दृष्टि समान गति करी युद्धभूमि तर्फ जवा छाग्या, पोतानी छाया जोती वखते केटलाएक अश्वोना कर्ण केवडाना पर्णनी पेठे शोभवा लाग्या अने ग्रीवा नमावती वखते तेमां हाडकुं हशे के निह होय तेवा तर्क वितर्क स्वारोना मनमां थवा लाग्या. अष्टमंगल पंचभेद्र अने चैद्रावाक जातिना अनेक चंचल अश्वो उपरांत श्वेतवर्णथी सूज्ञो-भित चधुवाळा, नविन यौवनवाळा अने वेगमां वायु सरखा केटलाएक तुरगो जवाहिरयी जहेला जीन तथा पाखरने अंग उपर धारण करी राजरायसिंहजीना सैन्यने सुरपतिना दळनी माफक

१ जेना चार पग, बालडा, मददू, याल अने ललाट श्वेत होय ते अश्व " अष्टमंगल ". २ जेना चार पग अने ललाट उपर श्वेत तिलक होय ते " पंचभद्र ". १ जेनुं शारीर पीछुं अने पग तथा नेंत्र श्वेत होय ते " चक्रवाक " कहेवाय छे.

दीपाववा छाग्या केटलाएक जञ्ञानामी झाळाङ्गळमां जन्म पामेला प्रतापी सुभटो अगाउथीज खड़ना दावो खेळवा लाग्या, केटलाएक शुरवीरो होडमां पोताना अन्वने आगळ करवा माटे लगामने ढीला मेलवा लाग्या. केटलाएक अश्वो वेगथी दोडती वखते वच्चे अ,वना हाथीओ साथे टकर छइ चकर खवराववा छाग्या, केटछाएक ऋरवीरो पराइ भूमिमां पग मूकतां " आ भूमिने क्यारे स्वाधीन करीए " एवा उत्साहमां आववा लाग्या. केटलाएक सुघड स्वारी दोहते घोडे वन्द्रको फोडी लक्ष्य सिद्ध करवा माटे दृक्ष आदिने गोळीथी बींबी आनंदथी जमगवा लाग्या. अतुळ भारने छीधे वसुपतीने धारण करनार शेपना सहस्त्र शीश एकी वखते डगवा छाग्यां. आप अनेक प्रकारना कौतकथी अलौकिकपणाने पदिशत करतुं राजरायासंहजीतुं सैन्य घोळनी सरहदमां आवी पहोंच्युं. सेंकडो नगाराना गंभीर नाद्थी गगन गाजी उठयुं, धरणी भूजवा लागी. ए खबर घोळना धणी ठाकोर जसाजीने मळतां मगजने असहनताना वायुए वींटी छीयो, रोम खडां थयां, ज्रक्रुटिए धतुपतुं रुप धारण कर्यु, नयनोमां प्रज्वित क्रोधायिए निवास कर्यो अने वाहु आदि अन्य अंगो पण फरकी उठयां; तेओए तुरतज जाडेजाओना जबर सैन्यने सज्ज करी राजरायार्स-हजी सन्मुख प्रयाण कर्युं. गाढ अंबुद जेवा अथाह आइंबरने लीधे रजोगुणयी द्वाएला सत्व गुणनी माफक आकाश रजधी छवाइ गयुं, आखुं जगत् अन्धकारने आधीन धयुं. दरेक दिशाओमां श्रेपनागनी जिह्या पेठे न्हानी मोटी ध्वजाओं फरकवा लागी. पराणे शौर्य चहावी साथे छीपेला भीरु पुरुपोनी छाती यहकवा लागी. हस्तिओनी पीटार कटकावेला घंटना मनोहर नाद सैन्यनी अविच्छिन्न गतिने प्रतिद्ध करवा छाग्या. भेरी आदि रणवाद्योना अवाज वीर पुरुषोना हृदयमां विशेष उत्साह भरवा लाग्या. सुभटना कचोनी कडीओ पण वाद्यनी क बागवा छागी, अश्वनी पंक्ति पण पोताना अंगपर रहेला पाखरना सुंदर ज्ञोर श्रवण करी त्वरा-थी युद्धभूमिमा जवा अनुरागवा छागी. स्वल्प समयमां उभय सैन्यनो समागम थयो. उत्साहरूपी पूर्णचन्द्रना उदयथी वीररसनो वारिधि छलकाइ गयो. राजवंशी सुभटोने शौर्य चडाववा माटे उन-त अवाजे वन्दीजनो विविध छन्दो वोछवा लाग्या, केटलाएक योद्धाओ विजयरुरी धन मेळववा माटे एकवीजाना उरःस्थलरुपी कपाटने कृपाणरुपी कुंचीथी खोलवा लाग्या. पग्स्पर अथडाती तीक्ष्ण तलवारोमांथी झगमगता अग्निना तणखा झरवा लाग्या, महीपर मचेला पहान कोलाहलने टीधे पातालमां निवास करनारा नाग आदि हरवा लाग्या. झाला अने जाहेजाओतुं युद्ध जोवा स्पनारायणे आकाशना मध्य भागमां पोताना रमणीय रथने उभो राख्यो. सुरना समुदाये पण

विमानमां वेसी व्योमपथमां पोतानो पडाव नांख्यो जेम पुरंदर बज्जना प्रहारथी पर्वतना उन्नत शृंगने भेडी पृथ्वीपर पाडे, तेम केटलाएक सुभटे। अनहद हिम्मतथी हाथीने होते वेठल सरदारोना भालमां भालानी अणी भोंकी अचेत अवस्थाए अवनिषर पाढवा लाग्या. केटलाएक मल्लती माफक वाहु युद्ध करी प्रतिपक्षीओंने पत्थर साथे पछाडवा लाग्या. केटलाएक योद्धाओं असद्ध कोपने लीधे दंतथी ओप्टने करडता किंवन करवालो चलाबी लोप्टना टोपने तोडवा लाग्या, केंट-लाएक मतापी वीरो अतुल मराक्षपधी महोटा महोटा शूरवीरोतुं मान मोडवा लाग्याः राजराय-सिंहजीना सैन्यमां उन्नत अवाजधी गगनमंहलने गजावनार ढंकाओ वजवा लाग्या, तेने तोदवा माटे ठाकोर जसाजी अनेक उपायो योजवा लाग्याः वीरपुरुषोना अंग उपर चन्दननी माफक रुधिरतुं अनुकेषन थवा लाग्युं. ए जोइने अप्सराओना अंगमां अनंगतुं जोर वधवा लाग्युं. झाला-ओनी हाकथीज हालाओतुं वळ केटलेक अंशे हराइ गयुं, मांसना दुकडाओथी युद्धतुं मेदान भराइ गयुं; जोशभर बहेती रक्तनी वाहिनीनी अंदर वीरनरोए विदारेल करिवरना कुंभस्थलमांथी पटतां मोतीओ सरस्वतीना प्रवाहमां प्रतिविम्बित थता उद्धगण ऐंडे ओपवा छाग्याः केटलाएक रणरागी पुरपो प्रचंड पराक्रमधी गजदंतना खंड करी वक्षपंक्तिनी पेठे आकाश मार्गे उडाववा लाग्या. रोटलाएक शूरवीरो गहेरा अवाजथी सिन्धुरागने लककारवा लाग्या. केटलाएक विशाची महादेवने प्रसन्न करवा माटे रणभूविमां कपाइ पडेला मतंगजीना मस्तकीने पोताना शिरपर धरी गणपतिरुपे गमन करना लाग्या, केटळाएक अश्वो जंगनी जमावट वखते हरिणनी माफक फलंग मारवा लाग्या, केटलाएक घायल वीरो तुरग आदिना पगतळे कचराइ मरवा लाग्या, रुधिरथी खरहाएल मुखराळा भूत, नेत, आदि भयंकररुपे युद्धभूमिमां फरवा लाग्या. पराक्रमी पुरुपोना मलंबकर पवन, विद्युत् अने मन करतां पण वधारे देगधी तेगने चलाववा लाग्या, देहलाएक शुरवीरो शस्त्रो तुटी जवाने लीधे चीगइ गएला अध्य आदिना चरणोने उपाडी शत्रु सन्मुख आववा लाग्या. भयंकर कापाकापीमां कैंकनो कन्चग्याण वळी गयो; ठाकोर जमाजीना मनोरथ धूळमां मळी गयो. ज्यां त्यां घायल वीरोना घोरशोरने सांभळी मेत लोको आदी परस्पर तालीओ देवा लाग्या. शुधाना शमनधी जोरमा आवेला पिशाची "फरी आवे। समय मळशे के निह ? " एवा भयी सुभिक्षनो लाभ छेवा लाग्या. झालाञाए हालाञानी करामानने मान करी, चांसट योगिनी ओए तृत्यनी अहआन करी अने तीक्ष्ण तलवागोना महार पामना हस्तिओनी प्रचंड चीराधी दशेदिशना दिग्गत्रो हरवा लाग्याः टिमटिम नामना वाद्यने

वगाहती हाकिनीओनां मन प्रसन्न थवा लाग्यां, त्रंवकना नादनी साथे ज्यंवके तांहव अर्थे तैयारी करी, अप्सराओए युद्धवीरो साथे अपूर्व स्नेह्यी यारी करी. मृत्तिकाना विंडनी माफक हस्तिओना मस्तको भेदावां लाग्या. असंख्य सुभटोना हाथ पग आदि अवयवो पादपनी ज्ञाखा पेठे छेदावा लाग्या. जत्थावंघ खङ्गना खंड खरवा लाग्या. मृतक मतंगजना गंजपर अश्वना पुंज प्राण तजी पंडवा लाग्या. जयजयकारनो उच्चार करती योगिनीओ रुंडपरथी उदता मुंडने शीली भृतपितने भेट आपवा लागी, रुधिरनी पिचकारीओथी रसवोळ थता वीरपुरुषोना हृदयमां विशेष वीरता व्यापवा लागी. भैरवना भयंकर शब्दथी चुढेलो चेंकिवा लागी, रक्तना अथाह प्रवाहमां कीचडनी माफक मांसनी भरती थवा लागी. केटलाएक सुभटो आही आवती लोथोने ओळंगी छलंग मारी शतुओंने छुंदवा काग्या. केटकांएक कवन्धो उछळता लोहीने लीधे यन्त्रथी वनावेल कियावान पुरुषनी पेठे कूदवा लाग्या जाणे वैशाख मासमां किंग्रुकना कुसुमो खील्यां होय तेम वीरपुरुपोनी कन्थरापर मांसना खंडो प्रकाशवा लाग्या, आकाशमां उडतां सुभटना मस्त-को कालिकाए कराती कन्द्रक क्रीडा समान भासवा लाग्या. योगिनीए फेंकी दीघेळ खप्परनी मा-फिंकें अरधां कंपाएं समतको कवन्ध्रपर लटकवा लाग्यां, कापाकापी जोइ कंपायमान यता कायर जनो समीर वेगे रणभूमिमांथी सँटर्केवा लाग्या, पवनना झपाटाथी पदवी पताकाओनी पेठे शुरवी-रोनी क्षाएल शिखाओं आम तेम उडवा लागी, हाला रजपूतोनी आशारुपी होडी संगर समुद्रमां दीन वनी इववा लागी. तोपो साथे अथडातां तृटती तलवारो फण वगरना सर्पनी शोभा घरवा छागी, केटलाएक सुभटोनी मूळ सहित कपाएली नासिकाओ आश्विन मासमां खीळेळां तिलपु-ष्पनी भ्रान्ति भरवा छागी. केटलाएक योद्धाओना असहा असि प्रहारथी रक्तने वहन करता ओष्ठ मवालना पुंज जेवी अथवा परिपक विम्वफळ जेवी युति दश्गीववा लाग्या, केटलाएक वीरनरो **बीरहाकनी दृष्टि वरसाववा क्राग्या. केटलाएक योद्धाओनी अखंड दंतर्पक्ति खंडित थ**इ हीराओना खंदनी माफक खरवा लागी, रुधिरनां पुरमां तणाती ढालो सरस्वतीना जळमां तरता बच्छपोनी कान्तिनं अनुकरण करवा लागी। केटलाएक सरदारोना मुक्ताभरणो सहित कपाता कर्णो मुक्ताओ सहवर्तमान छीपनी शोभाने हरवा लाग्या. जेम जेम घाव ठरवा लाग्या तेम तेम वीरजनो अधारा-ओने बरवा माटे स्वर्गनी वाटे संचरवा छाग्या. डाकिनीओ भयंकर दांत देखाडी भीरुजनोने इरा-ववा लागी, साकिनीओं अग्नि लावी ग्रुरवीरोना शवने सलगाववा लागी. गिद्ध आदि पसीओए युद्धमां मळेला अपूर्व भक्षणथी परम तुप्तिने मगट करी. अनंत शत्रुओनो संदार कर्या बाद राजरा-

यसिंहजीए ठाकोर जसाजी सामे मृगराजनी माफक फाळ भरी। मामा भाणेज वन्नेए एकी वखते मुखपर हाथ नांख्यो, सूर्यनारायणे ए तुमुछ युद्ध जोवा माटे पाताना रथने अस्ताचछ उपर रोकी राख्यो. पन्नेए केसरीआं परिधानो पहेरेलां हतां, वन्नेना चक्षुओने वैरना विहए घेरेलां हतां; वन्ने अनुद्धप अप्तराओंने रिझाववा तत्पर थया, वन्ने रणांगणमां जयस्तंभनी पेठे अत्यंत द्रदताथी जभा रद्या. वनेए मुंडमाळना दानथी महादेवतुं दारिद्य टाळवा कम्मर कसी, वनेना हृदयमां मांसभ-क्षक प्राणीओना उपर विशेष उपकार करवानी इच्छा वसी. वन्नेए पोतपोताना शीशपर तुलसीतुं पर्ण धर्यु, बन्नेए उमंगधी गंगाजळतुं पान कर्यु, बन्नेनी बुद्धिए संसारना मोहने तृणनी माफक तजी दीधो, अद्भुत रसने उत्पन्न करवा अर्थे उभय अवनिपतिए कोइनो मत न ळीधो, राजरायसिंहजी मामाने हाथ बताववा माटे प्रथम तो तीक्ष्ण तलवारना एकज प्रहारथी तेना तुरगना पाछका वेड पग अलग कयी, अन्वनी पीठ नमतां ठाकोर जसाकी गेंदनी माफक पृथ्वीयर गवडी पड्या, तेओए अतुल बळ नजरे भाळ्या छतां तेने हराववानी हिम्मत धरी वन्ने वहादुरो छटाथी पटानी माफक खर्हिना दाचो खेळवा छाग्या, प्रकयनी मेघधारा समान असहा असिधारना प्रहारने आतपत्र तुल्य आकृतिवाळी विशाल ढालपर झीलवा लाग्या. झपाझपीमां उभयनी तलवारोना उकदे उकडा थइ गया. आकाशमार्गमां स्थिर थइ युद्रतुं अवलोकन करता आदित्य आदि देवताओना अन्तःकरण ज्ञगब्द भूपितनो जयाजय जोदा अति आतुर थया तेवामां जेम घनथी विद्युत्, नभथी द्वितीयानी चन्द्रकळा, अग्निथी ब्वाळा, व्याकरणधी शब्द, कुलटाना द्रमधी कटाक्ष, कलिन्द नामना पर्वतथी यमुना, शिक्स्यी सर्प, यमराजना मुखथी दाढ, सूर्यथी किरणो, सरोजथी पद्रपदनो समुदाय, प्रजा-पतिथी मजा, महादेवनी जटामांथी ममथ आदि गण, वराहना वदनथी दन्तयुग्म, स्तंभथी गरदन-ना केशने धुजावता नृसिंह, उदयगिरिधी आदित्यनुं ओज, पाराशरना मुखयी पुराण, अर्जुनना गांदिर नामना धनुषथी वाण, लयने जाणनार गायकना मुखयी आलाप, सत्व, रज अने तम ए इणे गुणोथी पहदादि चोबीश तत्वो, हिमिरिथी गंगना तरंग, श्रेपनागना मुख्यी जिहा, नवोढाना **एर्थी उरोज, अंजनीना उदर्थी इतुमान, वासवना कर्यी वज्र, किपळदेवना मुख्यी ज्ञाप, मेघ्यी** जलघार, श्रीकृष्णधी कामदेव, शिवना करयी त्रिशुल, अने छीपथी मुक्ता, प्रगट थाय तेम राज रायसिंहजी तथा ठाकोर जसाजी परस्पर वरछीओ काढी रणांगणमां मखयना फरवा छाग्या अने शीव्रनाथी परस्पर प्रहार करवा अनलनी पेठे चक्राकार राज रायसिंह नीए ठाकोर जसाजीना एक वे महार्थी अंगने अलकृत

आतुर थह रहेळी रंभाना आन्तिस्क आशाशिनने अंकित कर्यं, पण फरी तुरतन विक्राळ-रूप घरी मामाना मस्तकने टोप सिहत तोडी नांख्युं अने अनेक दावपेचथी टाकोर जसाजीने रणमां रोळी तेना श्रारिने चांचडनी माफक चोळी नांख्युं, जाडेनाओनुं समग्र सैन्य काम आब्युं, देवताओए जयनयकारना उच्चारथी गगनमंदळने गनाव्युं, राजरायासंहजी उपर इन्द्रआदि देनोए पुष्पनी दृष्टि करी, झाळाओनी अवशेष रहेळी सेना हळवद तरफ पाळी फरी. आ भयंकर युद्ध वि. सं. १६३७ ना अरसामां थयुं हतुं अने तेमां हाळाओनी हार थतां झाळाओनुं पाणी रखुं हतुं. घोळना टाकोर जसाजीए मरती वखते मात्र पटळोज उच्चार कर्यों के "हे साहेवघणी दुं मारी खबर छेने" आ वाक्य समीपे उभेळा कोइ एक चारणना सांभळवामां आब्युं. जो के टाकोर जसाजीए तो साहेवघणी अर्थात् इन्धर मत्ये पार्थना करी, परंतु पेळा चारणे तुरतन कच्छना राओ खेंगारजीना भाइ सातळपर तथा आडेसरना टाकोर साहेवजी आगळ जइ युद्धनी सपळी हक्तीकत संभळाच्या वाद क्खुं के घोळना घणी टाकोर जसाजी मरती वखत मात्र एटळंज चोल्या छे के राजरायसिंहजीए भळे मार्यों तथा मारा सैन्यनो संहार कर्यों, पण मारा जाडेजा छळमां सिंहरूप साहेवजी ए वैरनो वदले एने अप्या विना रहेशे नहि," आम चारणे घरना शब्दों घाळी वधारेळ वावयथी तेमज भात्मावमा सज्जड स्नेहने छीचे साहेवजीनुं छोहो तथी आव्युं अने तओए हळवदपर चढाइ करवा माटे सैन्यनो जमावट करवा मांडी.

राजगयसिंहजीए हळवदमां आवी शरद, हेमंत, शिशिर ऋतुना छ मास विविध विळासमां विताच्या, त्यारवाद वसंत ऋतुए जगत् आखामां पोतानो अमळ जमान्यो, प्रवासी पुरुपोए
पोतपोतानी प्रमदाने आपेळ मिळननो अविध पूर्ण थयो, मन्दिरो मुद्दमद जणावा लाग्यां; शीत,
मन्द अने सुगन्धी समीर विरहीनाहृदयमां विप समान न्याधि जपजाववा लाग्यो. सुभग स्वादने लीधे
भोजन भाववा लाग्यां, योगिजनोना अन्तःकरणमां जागृत थएला पंचशरे प्रवेश कर्यों, वननी अंदर
पलाश प्रफुद्धित थया, समग्र विलासनो समय समीप आन्यो, पादपना पणोंप पिळा रंगने पसंद
कर्यों, मूर्यनो ताप शरु थयो. उत्तरोत्तर वासरना प्रमाणमां दृद्धि यवा लागी. रंगवेरंगी व्हरीओ
विकाश पामी विटपने वीटावा लागी, कोकिलाओ किह्नत कंठथी तंतवगर दिगंतमां प्रसरेखा वसंतना
गुणगान गावा लागी; मनोहरनिकुजना मिह्नन्दना पुंज गुंजवा लाग्या, सिखओना
समुदायमां विविध परिहास थवा लाग्या; संयोगिनी स्त्रीओए वसंती वस्त्रोथी अगने अलंकृत करी
कंठ, कर्ण, नासिका अने हाथ, पग आदि अवयवोमां रत्नजडित आभूपणो पहेर्यां, घातकी पंचवाणे

पीडवा माटे पोषित पतिकानां हृदय घरने घेर्यो. वसंत रागनो आछाप सांभळी संतजनो पण रित-कंतने वन थया, वाग अने वननी अंदर आहे प्रहर ऋतुराजना विजयवाद्य वागी रह्यां. संत अने असंतना समुदाय उपर कामदेवरुपी महारानानी वादशाही दृढ करवा माटे वसंतरुपी मुसदीए वनवीथिनो दरबार वनावी नवपळ्वना गंठीचं।ओ तथा गुलावनी गादीओ विजावी, कील अने की-किळाओं रुपी नवा कार्क्जनोने केंटलोएक कार्यभार सींप्यो, पनझाररुपी जुना दफतरोने रद कर्यी अने जनसमाजमां प्रेमनो रुक्को वर्तावी धीरे धीरे चतुराइथी चोनेर पोतानी सवळ सत्ता स्थापी, पलाशना विस्तृत तंबूओ ताणीने पहेला वसंतरुपी वडा कारभारीए पदपद्ना शब्द मिशे आखी दुनियामां महाराजा कामदेवनी दुहाइ फेरवी दोबी, पुष्पनी महोर छापवाळो केकी, कीर अने कोकिलाना कल्लोकरुपी इजुरकोर्टनो हुकप निरहीजनोने न्याकुलतारुपी दंड देवा मांडयो, अने शीतल समीररुपी सरवेयग्द्वाराए सृष्टिना सर्व विभागोती मापणी करी. ज्यारे मनोजरुपी महाराजीए विटव अने लतारुरी चाप उपर, परागरुपी विषयी छवाएलां स्वमनरुपी शर चडान्यां त्यारे विरिक्षणी विनताओं अत्यंत व्याक्तिळ वनी पहावरुषी पावकशिखाने पकडी प्राणनो परित्याग करवा छागी, नाथना आगमननो संदेशो श्रवण करवा वहार निकळेली केटलीएक कामिनीओ र क्तथी खरहाएला नाहरना नख सरखी कान्तिवाळा किंद्युकना कुछुमोने पृथ्वीपर पहतां जोइ हरवा लागी वसंतनां आगमनधी अविन,अंवर,अनिल अने अनलनी आभामां कांइ खुदीज खुवी जणावां लागी, दशे दिशाओं शान्त थइ गई, ज्राजनतुओंनी पित कोइ जुदाज मवाहमां वही; भागी ननोना हृदयमां आनंद भरनारी अने वियोगीओने व्यथित करनारी वसंतनी छहरीओए विटए तथा बळ्डरीओना हुन्डमां नाना प्रकारना रंगने प्रगट कर्यों, सुमननो समाज विकाश पाम्यो, आकाश निर्मळ थयुं, मारुत पन्द गनिथी गमन करवा लाग्यो, तमाइना जाल लताओधी लपटाया, मधुर मोर आववाथी रसालनां इक्षोप रमणीयता धारण करी, सांज सवार चारेकोर चकोर आदि पक्षीओना मनोहर शोर संभठावा टीम्या. कंजनी मंजरी पर वेठेला मधुकरो मकरन्दनु पान करो महोन्मत्तनी माफक मुदना महोद्धिमा नेहधी न्हावा लाग्या. मनमोहनना मिलन वग्वते जेम रमणीओ रोमाचित थाय तेम तमालना तरुरपी तरुण नायक्रनो समागम थना। लल्डिक लनावर्षा ललनाओनां कलित। अह-यरे। कंटिकित थया. वसंतरुपी योद्धाओं वियोगी जनोनां हृदयने वी वा माटे भ्रमानी पक्तिमपी धनुपने हाथमां धारण करी आम्रना निवन अंकुरोरुपी तीक्ष्ण नीरनी मार ज्ञार कर्या; ज्याप-विरिहणी सुंदरीओने नदिन राग वराग्य समान, सुमननो समुद्राग दहन समान अने यह स्मद्रान

समान भासवा लाग्यां. पुष्परुपी समृद्धि पामी विगाजतां हुता, सजळ कमळ, सकाम स्त्रीओ, सुग-न्धी पवन अने रमणीय तथा सुखमय प्रदेशो सर्व स्थळे वसंतन, गौरवने प्रगट करवा छाग्यां. कमळनी कलिकाओरुपी कमनीय कमंदछने करमा धारण करनारो, किंग्रुकनां क्रुमुमोरुपी परिधान-ने पहेनारो, शिळिमुखनी श्रेणीरुप जपमाळने आठे पहर फेरवतो, आम्रना मोररुपी जटायी भन्य जणातो अने कीर, कोकिळ तथा कपोत आदि शिष्योए स्तवन करातो ऋतुराज वसंत संतनी माफक शोभवा लाग्यो, रसालनी मंजरीओरुपी मुकुटथी मनोहर जणातो, कोकिलाना नादरुपी वंसुरीने वजावतो, सुमनना समृहरूपी वनपाळाथी विराजतो, अलिनी आवल्हिरूपी छुवराळा केहावाळो, रतिपतिरुप दूतने निरंतर साथे राखनारो अने परागना पुंजरुपी पीतपटथी प्रकाशित अंगवाळो, ऋतुराज वसंत पृथ्वीपर पूज्य खवा माटे राधारमणतुं रुप धरी आव्यो. वसंतरुपी माळी वापिकाना जलोने, मणिमेखलाओने, सुंदरीना समूहने, मृगांकना माधुर्यने अने पुष्पना भारयी नम्रपणाने धारण करता आम्रतरुओने अधिक शोभा आपवा छाग्योः कसुंवी रंगयी रंगेळां वस्नो नारीओना नितंवने दीपाववा छाग्यां अने कंचूकीओ विछासिनी स्त्रीओना स्तनोने शोभाववा छागी, युवतीना कर्णोने रंगवेरंगी कळीओ, शिवनी जटा समान विराजती वेणीने विविध कुछुमो अने शरीरने प्रफुछित माळ-तीनां पुष्पोए अधिक सौन्दर्य अप्युं. द्वक्ष अने बल्लरीनां नव पह्चवरुपी पताकावाळा, कोकिलाना नादरुपी इंकावाळा, चोमेर दोडा दोड करता मोर अने पटपद्रुपी छडीदारथी छुद्योभित ऋतुराज वसंतरुपी महाराजा सुननना सैन्यनी आगेवानी कामदेवने सुनीत करी शीत, मन्द, अने सुगन्धी समीरनां वाण चळावी अनाय अवळाओनां पाण लेवा सज्ज ययो पुष्पना रसमां रोळाएलो, गंगा स्नान करी परम पवित्र घएलो, दंपतिने युख देनारो अने स्मरनी संपत्तिने वधारनारो दक्षिण दिशा तरफथी अवितो वसंतनो वायु नवोढा नारीनी माफक मन्द गतिथी मरालतुं मान उतारवा ळाग्यो. महाराज ऋतराजे पोतानां आगपन पहेळांज पत्रक्षी परवानाओ मोकळी आप्या हता, तरुवरनी छायारुपी तंबुओ तणावी राख्या इता, मोर अने चकोर आदि छडीदारोना शोरणी दिशा-ओने शब्दायमान करी हती, मधुकरना नादरुपी नगारांओथी गगनमंडळने गजावी मुक्युं हतुं. पव-नरुपी फरासने पुष्पनी सेज विछावी राखवानी आज्ञा आपेळी हती तेमज पक्षीओरुपी आरवलो-कोनी बेरख पण तरुरुपी तंबुओना संरक्षण अर्थे स्थापेली हती. शिशिर अने हिमंतनी रात्रि करतां ज्यारे वसंतनी रात्रि घटी त्यारे प्रभंजने पण पोताना रुषनुं परिवर्तन कर्युं. जाही, जुही तथा कुन्द-कुन्दनी कलिकाओंने विकाश पामती जोइ मुनिवरोनां मन पण सकाम थयां. पतिनी साचे वसनारी ममदाओं पळे पळे उत्सुकताने मगट करवा लागी; अनंगनी दृद्धिथी तरुणीओना अंगपर रहेलां वस्त्रो घिंडघडिमां तंग थवा लाग्यां, कनकनी किंटमेखलाथी विराजमान नितंववाळी तथा मुक्ताहारथी मनोहर जणाता उन्नत उरोजवाळी अंगनाओ अनंगना आधिकपथी उत्पन्न थती आळसने कींधे अंगोने मरही पुरुपोनां मनने पोता तरफ खेंचवा छ।गी. वसंतरुपी झवेरी वाग अने वनम्हपी डब्बामां परिमळरुपी पाणिधी प्रकाशमान सरसवनां प्रसूनरुपी पुखराज, मोतीयारुपी मुक्ताफळ, सेत्रतीरुपी सरस हीरा, षदरीफळरुपी पन्ना तथा कुसुभरुपी याणिक विगेरे झवेरात भरी जाणे भूमिना राजा महाराजाओने भेट आपवा आव्यो होय प्नी प्रतीति धवा लागी. कोइ कोइ वखते तोतळाता वाळकनी पेठे शीतोष्ण वायु वावा लाग्यो, कोइ कोइ वखते तरुणपणाने पामी सौरभधी इक्कावा लाग्यो, कोइ कोइ वखते भूमंडलमा अमाप तापने भरवा लाग्यो। आरीते वहुरुपीनी माफक पोतानी छवीने क्षणे क्षणे बदलाः तो वसंत अत्यंत आनंद उपजाववा लाग्यो. भावथी भरेली भामिनीओ पोतपोताना रितक वियतमनां नयनोधी नयनो मिलाववा लागी, हिंडोल राग गावा लागी, मृदंग वजाववा लागी अने अन्योन्य ताल सुरमा इसाइस थवा लागी. केटलीएक गोरीओ गुलावनी मुठी भरी मनमोहनने मारवा लागी अने सखीओना समुदायने रंगनी विच-कारीओ भरी पराळवा लागी, अनंगना तरंगमां तणाता तरुण नायको अंगनानां उरोजरुपी तुंव-टानो आश्रय प्रदी अवर्णनीय आनंदरुशी समुद्रमां तरवा लाग्या, आवा उत्तम अवसरमां कर्महीन कामिनीओना प्राणपति परदेश प्रयाण करवा लाग्याः विरहिणी वनिताओनो विनाश करवा कटिवद्ध थएल वसंतरुषी वाद गाहना मवळ दळमां सहकाररुषी शूरवोरी, मयूरनी वाणीरुषी रणवाद्य, कामरुपी सेनापति, कोकिलारुपी विरद वोलनारा वन्दीजन, किंशुकर्ना फूलरुपी शूल जपजावनारां त्रिश्ल अने विविध समीररुपी तीक्ष्ण तीरोनो माप करवो ए वहु कठिनता भरेलुं कार्य थइ पड्युं. पतझार दशाने माप्त थएला झाडोमां, किसलयथी देदीप्यमान जणाती डाळोमां, विविध पुष्पोधी मकाशी रहेला पहाडोमां, त्रिविध सभीरमां, यमुनाना तीरमां, उडता अवीरमां, पट्षद्ना पुंजमां, निर्देळ निक्कंजमां, आम्रना मोरमां, चकोरना शोरमां, गायकजनोना गानमां, योगीओना ध्यानमां, रमणीओना रागमा, वाग तथा तडागमां, सरिताना प्रवाहमां, रमणीय राहमां, छुशोभित शहरमां अने लताओनी लहेरोमां वसंत ऋतुए विनोद्यी वास कर्यो. विजय आपनारा वसंनना समयमां उद्दुगणरुपी योद्धाओं, कोकिसना नादरुपी नगारां, चकोरनी पंक्तिरुपी पंदळ, शिस्तिमुखनी श्रेणी-रप समज्ञेरो, स्मरुरुपी सेनापित अने पवनरुपी प्रधानने साथे छड़ निद्याकररुपी नरेन्द्र मानिनी

स्त्रीओना गुमानरुपी गढने तोडवा मार्ट तैयार थयो। वसंतमां खीलेकां सरसवनां क्षेत्रो सुवर्णनी विछात समान शोभवा लाग्यां, रिसकजनो सुवर्णना पलंगपर वसंती वस्नो पहेरी वेठेली निय-तमाने माधवी मद्यथी पुखराजनो प्यालो पूरी पावा काग्या अने हृदयब्रह्माना हृदयपर विहार करती सोनजुद्दीनी माळाना सुगन्धथी मगजने तर बनाबी बसंतराग गावा छाग्या. प्रमदाओ नित्य नवां नवां वस्त्रो पहेरी रसने विस्तारवा ळागी, वकुळनी सुवास वरळी समान तीक्ष्ण वनी विदारवा लागी? तुंबढाना बन्दरुपी " वीन " नामनां वाद्यने वगाडतो, कोकिलाना टौंकारुपी सप्त स्वर ने साधनो, पद्पदना शब्दरुपी सारंगी अने मोरना शोररुपी मृदंग साथे गुलावनी चंटकरेपी तालना अवाजने प्रगट करतो वसंत कलावंतनी पेठे रिसक दंवितेन रिझाववा लाग्यो. जाणे काम-देवरुपी पाराधी विम्हीनां पाणरुपी पंलीना शिकार करवा माटे एक वाण धतुपपर चढावतो होय, अन्यने एक वाजु मुकतो होय अने त्रीजुं वाण वरावर ताकीने निज्ञानपर फेंकतो होय तेम वाग अने वननी अंदर क्यांइ खीळेळां, क्यांइ निह खीळेळां अने क्यांइ अथ खीळेळां कुसुमो कोइ जुदीन रीते जनसमुदायमां आश्चर्य उपनावतां इतां. समग्र सृष्टिमां अनंगना अव्यक्ष-पणा नीचे फागनी शरुआत थइ चुकी हती, ठाम ठाम नर्भ वाक्य अने मारामारी मची रही हती, परस्पर ताळीओ आपता प्रेमी जनो परिहासमां पोतातुं पाडित्य वापरता हता अने वळथी एकवीजाने रंगमां वोळी पोने पण रसवोळ घता हता. राज रायसिंहना दरवारमां पण विविध प्रकारना रंगराग जडी रहा। हता, अमीर जमराबोना राग भरेलां नयनाने गुलाल छाटी विशेष रक्त करवानी कोशीश चाली. करमां रहेली कनकनी विचकारीमा कसुंबी रंग भरी स्नेही-ओना समुदायने भींजावती वखते राज रायसिंहजीने रणांगणमां युद्धवीरोना अंगथी निकळता रुधिरतुं स्मरण थड आब्युं. उमरावाना भाल साथे अथडाइ फडोफड फूटता कुमकुमाओ युद्ध वरवते यन्त्रनालिकाथी छुडती गोळीना पहारने छीवे वींधाएल भालमांथी निकळता मांसना लोचाओनी भ्रान्ति भरवा लाग्या. केसरीआ रंगना कुंडो आठे पहर भर्यां राखवामां आवता, तेमा जे कांइ दरवारगढ पासेथी निकळे तेने पराणे न्हवरावी थोडो घणो परिहास कर्या पछी विदायिगरि आपवामा आवती. कोड कोइ वखने राज रायसिंहजी भाषातीने भेळा करी कर्मुंबी रंगनी डोल भरी युद्धकलामां विशेष कुशल थवा माट शहेरनी समीवे रहेला वागरुपी रणमेदानमां फाग खेलता, त्यारे अथाग वळथी लाग जोइ परस्पर थता डोलचीना महार तलवारनी तीक्ष्ण धार समान तननी त्वचाने चौरी जाणे आन्तरिक रंगतुं आकर्पण करना होय तेम असहा छतां क्षात्र

मंडलना मनरुपी महासागरने शौर्यनी छोळ्योथी छलकावत्रा लाग्या. आखा इळवद शहेरमां रंगः नी रेलमछेल अने केसरनो कीच मचवाने लीधे वसंत छतां वर्णाना बहेमधी आनंइ पामी मयूरना वृन्द उन्नतवृक्षनी डाळीए चढी " मे आव मे आव " एवा उच्चार करवा लाग्या अने चाहथी कळा चढावी चित्तंन हरती ढेलोना समुदाय साथे फरवा लाग्या. राज रायासंहजीना समस्त सैन्य समेत सरदारोए, भायातवर्गे, पुरवासीओए अने दासदासीओए अनुराग पूर्वक फाग खेलतां केसरीआ रंगधी रंगाएळ वस्त्रोने हजु वदलान्यां न हतां, तेवामां कच्छ आडेसरथी आवेला कोड एक कासदे खबर आप्या के " राओ खेंगारजीना भाइ ठाकोर साहेवासिंहजी हळवदने हाथ करवा माटे चालाक योद्धाओं सहित आडेसरथी चाली चुक्या छे अने तैयारीमां रहेवा कहेवराव्युं छे." आ सांभळी राज रायसिंहजीए डोळचीने दूर फेंकी दइ तुरतज तलवार उठावी अने सैनकोने सज्ज थवा आज्ञा आपी, भायातोने भेळा करतां थोडो घणो वखत छागे, पंतु आ अरमामां ते तमाम होळी खिलवा माटे इळवदमां आवेल हता, जेमांना केटलाएक राजरायसिंह जीनी आग-ळज ७भा इता. एनां ए बल्लोधी अलंकत अंगवाळा झालाओ ढाल तरवार भाळां तथा वरछी विगेरे विविध शस्त्रोने धारण करी उत्साहधी आगळ थया. जाडेजाओ हळवदनी हट जोवा माटे अत्यत आतुरताथी घोडाओने दोडावत: हता, पांतु राज रायसिंह जीए पुष्कळ सैन्य साघे सत्वर प्रयाण कर्यु अने टाकोर साहेवसिंहजी सामे टक्कर छेवा टीकर नामना गाम नजीक वायुवेगे पहोंची पोतानो पडाव नांख्यो. खुङ्कीकृपाणे केसरीआं करी युद्ध करवा आतुर थड़ रहेल सैन्यनो देखार ज्वाळायुक्त दावानळ जेवो जणातो हतो अने एज ज्वान्तिथी राज रायसिंहजीना सैनि-कोने दूरथी जोइ जांडेजाओतुं सैन्य स्तब्ध धड गयुं; तो पण अध्वनो वेग रोकता रोकतां आगळ धसी अवार्युः आ वखते जेम अवोधएर ज्ञान, मनना निरोधपर गान, वनद्यसना दृत्दपर दावानळ, दावानलपर जल, जलपर वडवानल, पहाडपर वज्र, मातंगना झुंडपर मृगराज, शीतपर सूर्यनो ताप, अरविन्दपर चन्द्र अने चन्द्रपर राहु पोतानुं पावल्य बनाववा पयत्न करे देम जाडेजाओना समृद्दर झालाओ एकदम तुटी पहया. आ वावने वीररसे पोनानी पूर्णना मदिशान करी, वीरहा-कनी साथे तीक्ष्ण तलवारी कटिन कचोने तोडवा लागी, कोडना हाथ, कोडना पग, कोडना मस्तक, कोइनां डरःस्थल अने कोइना पृष्ट भागमाधी निकळतुं कथिर सगरमृपिने शोभाववा लाखं. शरवीरोना तन नलवाग्मां, मन परमे दग्मां, प्रनिता रदामीनुं कार्य सिद्ध करवामां अने मन्तको शंकरनी पाळाणा परोवायां, " मारो मारा " ना महान् झोरबी आकाश छवाड रहुं, बीरपु-

रुषो एक असे अनेक सुन्नदोनो शिरच्छेद करवा लाग्या, अप्सराओं आकोश मार्गमा तमासो जोवा माटे आवी पहोची, अरसपरस तालीओ आपतां काळना करालींककरो साथे श्रुधाना आवि-क्यथी किलकिलाट करती कालिकाए रणांगणमां प्रवेश कर्यो, दांतने पीसता खवीसी पण त्यां दोडता आन्या, गीध, काक अने शुगाल आदि पण उमंगथी जंगमां दाखल थया, असब कापा-कापीने लीधे लोधवर लोध पडवा लागी. ज्यारे राजरायसिंह जीए भ्रक्तटी चढावी सुजदंडने फरकान्या त्यारे हर्षावेषमां आवेछ। महादेवे युद्धभूमिमां सत्वर आवी मुख्यांथी भांग काढी नांखी, अजाथी अजंगने फेंकी दीया अने अर्थागथी गौरीने अलग कर्योः झाळाओना मारुत अने मार्तह जेवा प्रचंड पराक्रमथी केटलाएक प्रतिपक्षीओ तूळनी माफक उडवा छाग्या, केटछाएक तस्वरनी माफक नमवा लाग्या, केटलाएक तणखलांनी माफक तूटवा लाग्या, केटलाएक वादलनी माफक वींखावा लाग्या, केटलाएक अंवकारनी माफक नाश पामवा लाग्या, केटलाएक उड़गणनी माफक अद्भवय थवा लाग्या, केटलाएक चन्द्रनी माफक निस्तेज थवा लाग्या अने केटलाएक जळनी माफक शोपावा लाग्या. योगिनीओ रुधिरने घंटडे मांसना कोळीआओ गळवा छागी, उभय सेनाओ एक सरखा उत्साहथी लहवा छागी, विजयनी बूटी समान विराजनारी वीरपुरुपोनी समग्नेरोए म्यानमांथी छुटी केटलाएक योद्धाओने कूटी नांख्या, खोपरी तूटी जवाने लीधे पृथ्वीपर पडता शूरवीरोने अप्सराओं वरवानी चाहनायी चुंटी राख्या, मुंड वगरना रुंडना झुंडोना कुंडो बनावी केटलीएक विशाचिनीओ अंगूरना आसव समान रुधिरतुं पान करी कवावनी माफक मृतक सुबटोना कर्णीने तोडी तोडी खावा लागी. जत्यावंध कवन्या मळवाथी काल्किका अपार आनद पामी, मुंहनी माळाओ मळवाथी शंकर पण संतुष्ट धया. तेवामा कोइ एक योगिनी खोपरीमां श्रोणित भरी पान करवा छागी ए वखते जाणे मुगछनी मा-िनी दंत्त पंक्तिने रंगवा माटे चीनाइ प्यालामां मजीठनो रंग भरी पीती होय एवी प्रतीति थती हती, जाडेजाओनां सागर सरखां सैन्य उपर झाळाओनी समशेरी वाडवानळ समान झपटथी ल-पटवा लागी, खळ पुरुषोनी छाती थडकवा लागी, नंदी, गण, भैरव अने भूत मदोनमत्त वनी ज्यां त्यां फरवा लाग्या, ये गिनीओना युध्य पण विनोदर्थी विचरवा लाग्यां, भेत लोको नाचवा लाग्या, पिशाचो पुकारवा लाग्या. राजरायसिंहजीनी तलवार प्रलयना सूर्य समान तेजोमय किर-णोने मसारी अरुक्षी अन्धकारनो अंत करवा छागी, प्रतिम्क्षीओना कटकने कापी महाकाळने मांसना कोळी आओ आपवा लागी अने उपरा उपर मुंडनी माळाओ अर्पण करी रुद्रने रिझाववा

लागी. रणरुपी वनभूमिमा राजरायसिंहजीनी करलतिका पर चढेली ए कृपाणरुपी काळी नागण जे दुश्मनने इसनी तेना पाण तुरतमांज निकळी जता, एतुं विषम विष उतारवाने कोइ यन्त्र, मंत्र के तंत्र क्षार्थक निवडे एम नहोतुं; ए समशेरे असंख्य सुमटोना रुधिरनुं पान कर्यु छतां तेनी प्यास न टरी, एतुं उदर एटल वधुं विशाळ हतुं के केटलाएक प्रतिपक्षीओनां कलेजां तथा मस्तकोना अगणित ग्रास मळ्या छतां पेट भरायुं निह, मदोन्मत्त गजराजना आहार विना कोइ रीते एनी धुधातुं ज्ञमन यइ ज्ञके तेम नहतुं, कारण के एने काळरुपी कारीगरे वज्रना हथोडाथी घडेली हती, होपनागनी फुंकरपी धमणधी धमेळ काळकूटरुपी कोयलामां वाडवानलनुं तेज मगट करी तेमा ताबी तैयार करेटी ते तक्रवार शिवना त्रिशुल पासेथी अने विष्णुना चक्र पासेथी वैरीना विध्वसनो पाट विधिपूर्वक भणी होय पवो भास धतो हतो. दाहथी द्विगुणी, त्रिशूलथी त्रिगुणी, चक्रथी चोगणी, पविथी पांचगुणी, पावकथी पचीशगुणो, पळयनी प्रणालीयो पचाशगुणी, शेषधी शतगुणी, शापधी सहस्रगुणी, लूकथी लाखगुणी अने कालिकाथी करोडगुणी तीव्र तलवार कारूथी पण कराल शंकरना वृतीय नेत्रनी ज्वाळा होय नहि शुं ? वज्रनी वाळा होय नहि शुं ? विष्णुना चक्रनी चेळी होय नहि शुं ? शिवना त्रिशूळनी साहंळी होय नहि शुं ? तेम दरेक यो-दाओना रामा आश्रये उपजावती महाकाळनी महाराणी वळभद्रना मृसळनी मासी, प्रचंड यमदंहनी जनेता अने विपनी व्हेन समान बनी भीमसेननी गदाना गौरवतुं खंडन करती होय तेम दुः मनोने दड देवा लागी; परशुरामना कुठार करता पण विशेष कठिनताने धारण करनारी ए कुपाण अर्जुनना बाण समान अमोघ शक्तिथी प्रतिपक्षीओना प्राण हरवा लागी, वीर्प्रपोना प्रा-क्रमर्थी प्रविधी हस्तिओना समुदाय शरदनी घनघटा स्थान छिन्न भिन्न थह गयो. अं ि जितनी नदीओ चाली, रणभूमिनी अंदर रजनुं निज्ञान पण न रहुं. निष्काम युद्ध करी काम आवेला शृरवीरो इांकर स्वरुपे स्वर्ग भणी गमन करवा लाग्या. ए वखते रखेनां भूलथी तेओना भेळो पोतानो पोटीओं चाल्यो जाय प्वा भयथी भृतपतिए नन्दीतुं पुच्छ पकडी राज्युं, वीरनरोने वरवा आबाशमाधी उनरती अनंत अप्सराओने जोह गणपतिए पार्वतीने पकडी राख्या, कारणे के तमाम अप्मराञानो वर्ण गारी समान गार हतो, जेथी " खरां गाँगी " कया ए पछीथी ओळखी शकार्य एम न हतः रिधरनी नदीमा केटलाएक करिवरीना मस्तेको नणाना हता, नेमा कदाच गातानो पुत्र तणाय तो पछी ओळखरो शी रीते ? एवा भयथा पार्वतीए पण गणपनिने बरावर पकटी गान्या. टाकोर साहेदसिंह नी त्रण हजार सुभटो साथे माणगहिन थया, इळवद नग्फना दे हजार

योद्धाओं काम आव्या अने राज रायसिंहजी पण घणा घाव लागवाधी मृर्छित अवस्थाने पाप्त थइ रणभूिमां पड्या जो युद्ध वधारे वखत जारी रह्युं होत तो एके माणसने वचवानी आशा नहोती, धरणी ध्रूच्या विना रहेत निह, पेडानी माफक पहाडो तुटी पडत, जलेबीनी माफक शेषनी कुंडलीना खंडेखंड थड जात अने कमटनी पीठना पतामांनी पेठे चूरेच्या थात, एमां कांड संशय जेवुं नहोतुं. वन्ने पक्षना थोडा घणा माणमो वच्या हता, परंतु ते वधा पडेला महारनी न्यथाथो न्याकुळ होवाने छीधे पोतपोताना माछिकने उपरा उपर पडेली लोबोमांथी शोधी कहाडवा समर्थ न थया. मात्र मरण दशाने अनुभवता, पडता, आखडता आजुवाजुना गामडाओमां विश्रान्ति लेता मांडमांड स्थान भेळा थया. " राज रायसिंह भी काम आज्या " एवा शोकजनक समाचार मळतां हळवदमां हाहाकार फेझाइ रहाो, तमाम राणीओए चुडाकर्म कर्चु, रणवासमां थतं आर्तरुदन सांभळी वज्रसगान द्रढ छातीबाळा मनुष्यो पण विद्वळ वनी गया अने सर्व कोइनां नयने।पांथी चोधार अथ्रुनो प्रवाह चाल्यो. आ वनाव घोडा दिवन पञी वनवा पाम्यो इतो. परंतु रणभूमिमां तो युद्धनी पूर्णाहुति थया वाद तुरतज जत्थावंध ज्ञागाल आदि पशुओए प्रवेश करी शूरवीरोनां शवने आमतेम घसडवा मांडयां; राज रायसिंहजीनां कलेवरनो प्राणवायुए परित्याग क्यों न हतो, तेओए अत्यंत ्व्यथाने आधीन वनी रणांगणवि राजमहे-लनी अंदर पृथ्वीरुपी पर्यंकपर आळाटतां माप्त थयेली रात्रिने महा मुखीवनशी न्यतीत करी. वीजे दिवसे प्रभातमांज जे मकनभारथीनी जमात द्वारिका तरफ गएछी हती ते "नारायणसर कोटेसर " नी यात्रा करी फरी दिल्ही जवा माटे त्यां थइने निकळी, सूर्यनारायणे पोताना ते नी-मय किरणोथी सृष्टिने मकाशित करी, गीध आदि पक्षिओ युद्धभूमिमां आवी पदोच्यां अने तिक्ष्ण-चंचुओथी मृतक योद्धओनां चरःस्थत चीरी आंतरडांओ लड् आकागमां उडना लाग्यां, तेनी शोभा करतां लटकता सर्पने लइ गगनमां यथेच्छ गमन काता गरुड जेवी जणा-वाथी जमातनी अंदर उन्नत इस्तिओपर आरूढ थएला मनुष्योनी दृष्टि ते तरफ खेंचाणी. ए वखते राजरायसिंहजीए पगमां पहेरेलो सुवर्णनो तोडो सूर्यना प्रकाशने लीवे विद्युत् समान झवकवा लाग्यो, एथी ए कोइ राजवंज्ञी पुरुष छे एन निश्चय थवायी ते लोकोए म्यानामां वेटेला मकनभा-रथी आगळ जइ जोएली विना जाहेर करी. मकनभाग्यीए आज्ञा आपी के जो ए पुरुप जीवतो होय तो जरुदी अहीं उपाडी लाबो. गुरुनो हुकम थना जमातमांथी आठ दश आदमी त्यां दोड्या गया. राज रायसिंहजी वहुज गंभीर हालतमां श्वासोच्छ्वाम भरता हता, जेथी तेत्रोते निःशंक वनेला

जपातना जनो जाळवीने मकनभारधी पासे लइ आव्या. मकनभारधी जाते महान् वैद्य हता अने जत्थावंध औषधो साथे राखता, तेओए राज रायसिंहजीना दरेक घाव उपर औषध लगावी पाटा वंधाव्या अने अन्य उपचारो पण शरु कर्या, एक सुशोभित सुखपालमां मखमलनी गादी विछावी घायल राजाने घणा मानपूर्वक वेसाडवामां आव्या. मकनभारथी क्षणे क्षणे तेओनी संभाळ लेता हता. अमुक अमुक गामने अंतरे मुकाम करती जमात थोडा वखतमां दिल्ही जइ पहोंची, ए मास वे मासनी मुसाफरी दरम्यान राज रायसिंहजीना दरेक घाव मळी गया अने तमाम रीते तेओ तंदुरस्त थया. मकनभारधीना मठमां मळता तमाम सुखबैभवथी हळवदना राज्यसुखनी तेओन स्वप्ने पण स्पृहा न थती; घणा दिवसना सहवासने लीधे ए इळवदना धणी राज रायसिंहनी छे एवं मकन-भारयीना जाणवामां आच्युं इतुं जेथी तेओनो मान मरतवो पूरती रीते जळवाय एवो वंदोवस्त करवामां आच्यो इतो. भगवां वस्त्रोने धारण करनार भूपितनी भत्र मूर्ति पठना दरेक मनुष्यो करतां प्रकाशमां प्रथम पद्वीने भोगववा छाती. तेओना हृदयमां हळवद जवानी इच्छा छे के नहि ए जाणवा माटे मकनभारथी वखतीवखत प्रश्न करता, परंतु तेना प्रत्युत्तरमां " ना " शिवाय क्युं मळतुं निह. मठनी अंदर केटलाएक विद्वान साधुओ पण वसता हता, तेओना मुख्यी धर्मों पदेश अवण करतां राज रायसिंहजीए केटलोएक काळ वितान्यो; तेवामां ग्रीप्मऋनुए आखी दुनिया उपर गजव गुजारवा मांड्यो, सूर्यना तीत्र तापथी तमाम माणीओ तपायमान थयां. अत्यंत गरमीने रीधे वन तथा उपवन सळगी उठ्यां, ज्वाळा समान प्रजाळनारी खुए पण पशु पक्षीओना लोही पीवामां मणा न राखी. तळाव तथा नदीनाळांनां नीर आंधणनी माफक उछळवा लाग्यां. जाणे समुदायमां भी निकळेला बाहबानले जटराग्निनी साथे मळी तापनो भडको कर्ये। होय तेम दरेक माणीनां अंगोमां दाह उपजवा लाग्यो, महादेवे उघाढेल तृतीय लोचननी माफक सूर्यनो ताप अ-सह थइ पडयो, विरहीजनोनी हाय समान अने विरहाग्निनी लाय समान अपराहनी उप्णता दशे दिशाने दग्ध करवा इच्छती होय तेम पवनमां प्रवेश करी पिंचकोने हद उपरांत पीडवा लागी. तापनी वेदनाने कीधे समग्र रोम स्वेदने मिपे अशुपान करतां होय एवो भास थया लाग्यो, तृपातुं जोर पण दिवसे दिवसे वधवा छाग्युं, जळधी आई वरेला खसना व्यंजनो यराववार्था पण स्वेद सुकाय तेम नहोतुं, दावानळ समान डगवनारी गरमीने छीधे माणी मात्रनां गात्र बळवा लाग्यां. स्थावर तथा जंगमने सनावनारो ग्रीप्मनो सृर्य उ-दय पामतांज जीवनतुं शोपण करवा छाग्यो; तळाव, वाव अने कुवाओ जळ विना भयंकर जणा-

[487]

वा लाग्यां. भृत्रिथी आकाशने आच्छादित करतो, तमालना दृन्दने तोडतो, अन्य तह रोनी छाया ने क्षीण करतो अने उष्णतास्वी सुंढयी सह तथा सरिताना नीरनुं शोषण करतो ग्रीष्पऋतु मदो-न्मत्त हाथीनी माफक घरोघर घूपता छ.ग्यो, निर्धूम अग्नि समान छूतो स्पर्श यताज शरीरमांथी स्वेदनां बुंदो झरवा लाग्यां, जाणे अगस्त्यनी शक्तिए प्राणी मात्रना घटवरमां निवास कर्यो होय तेम कुंड, कूप, नदी, नद अने समुद्र आखामुं पान करवाथी पण तृपानुं शवन थड़ शके तेम न हतुं, केटलाएक लोको कोरा कुंभनी अंदर आगळ पाछळ भरी राखेल जळनुं पान करवा लाग्या, तो पण पापिणी प्यासतुं पावरू तिल मात्र शिथिलं न थं. मेप तथा द्वा राशिनो सूर्व जेम जेम तीव्र तापथी त्रास आपवा छाग्यो तेम तेम शीनछता पछायन करवा छागी. प्रथम तह बानामां पेटी परंतु उप्णता एनी पाछळ पडी जेथी तहखानानो त्याग करी सरोवरमां संताणी, त्यांथी कमळमां, कमळने छोडी चंदनमां, चंदनने तजी कपूरमां, कपूरनो त्याग करी चंद्रमां, चन्द्रने तजी चांदनीमां, चांदनीने छोडी शरवतमां अने शरवतने तजी ओरामां छुपाइ वेटी, त्यां पण गरमीए आबी दुःख देवा मांडयुं त्यारे शतुने हाथे मरवा करतां आपघातने उत्तम गणी विचारी शितलनाए हिमालये जइ हाड गाळ्यां वादशाहना दरवारमां तैयार करावेळ खसना वंगळाओ उपर गुळावजळ छंटावा लाग्यां, चन्दनना चहरूमां कपूरनो चूरो भेळवी अनेक प्रकारना अतरथी राज्य सुवनोने सुगन्यित करवामां आव्या, वरफनी खरीदी वधी, आमळां आदिना मुख्यानो व्यापार पण दृष्टि पाम्यो. क्मळना विछाना पर वेटेला राजा महाराजाओं ने कमळ सरखां मुखवाळी अने कमळ सरखां नयनोवाळी कामिनीओ कमळ सरखा करथी कमळानाज व्यंजन वडे वायु ढोळवा लागी. आवा उत्तम विलासवाळाञ्रोने ज्येष्ट मास जरा पण त्रास आपी शकतो नहिः केटलाएक अमीर उमरावीए वरफ शिलानी विलायत बनाबी सन्दलती सेंज उपर कंजदल पथराव्यां अने खसती ट्टीओ पर गुलावजळ छंटावी आसपास गुलावजळना फुहाराओ गोठवात्र्याः सुंदर सुरामां शरवत नांखी तेमां ओराना रसने एकमेक करी तृपाने दाटवा मांडी. केटलाएक रिक्त जनो चन्द्रवदनी चतुराना हट-यथी हृदय लगावी ग्रीत्मदी ज्वाळाधी उपजेल कप्टने नप्ट करवा लाग्या. केटलाएक सुभागी जना कचूरना चूर्णने घनसारमा घोळी तहखानाने छींपाववा लाग्या अने तेमां पुष्पनो न्हानो सरखो प्रासाद वंधावी अतर, अम्मजा तथा केसर आदि सुगन्धी पदार्थोंनी साथे ज्ञीतरु वस्तुओतुं सेदन करी ग्रीप्यना तापनी साथे कामाग्निने पण शान्त करवा लाग्या; वाटी छायामां मुलभ निद्रावाला, गुलावना संसर्गयी सुगन्बीदार वनवायुवाळा अने जेमां पाणीमां पड्या रहेवानी चाहना थाय एवा

ग्रीप्पना दिवसो परिणामे (सायंकाळे) रम्य जणावा लाग्या. चन्द्रना ज्ञीत र किरणोथी अन्यकार रहित वनेही रात्रीओ, जलयंत्रो अने शीवल तथा सुंदर चंदन तथा केसर आदिनां अनुलेपन तनना त.पने अलग करवा लाग्यां. विलासी जनो रात्रीने वखते गायनतुं उपासन करनारी नवोहाना गाह इरोजनो रपई। करी अधरोष्टने चूमता मासादना पृष्टतु (अगाशीतु) सेवन करवा लाग्या. सूक्ष्म बह्नोधी आच्छादित अंगवाळी अंगनाओ सुगन्धयी व्हेकता केशपाश्ची, विविध परिहासथी अने अनेक प्रकारना दिकासधी तरुण पतिना ताप हरवा लागी. रात्रीए स्वन्छ अगाशी पर सुख्यी स्तेलां प्यारी तथा वियतमनां सहांक मुख जोड शिशंडल प्रभात वखते फीक्कं पडवा लाग्युं. अपराह्नना प्रचंड ताएथी परितप्त धएलां अने प्यासयो पीडातां हरिणो झांझवाना जळने सत्य जळ सपत्री दोडवा लाग्या. सर्प प्रमुत्ती समी। जाय नहि अने कदाच जाय तो तेने मयूर मार्या विना रहे नहि छना सूर्यना किरणायी तपायमान अएडी बूलिमा अर्व दम्बनी रियतिने अनुभवना सर्पो अत्यंत िह्नळ वनी फणने नीची नमाबी केकीना पगनळे विश्वान्ति लेवा लाग्या, केकी पण प्रज्यलित पावक समान पतंगनी प्रभाषी संतप्त वनी पोताना मुख पर उथय पक्षने प्रसारी पगतळे पडेला सपेने संदारवानुं सामध्ये गुमावी देटा. जल नहि पळवाथी शुष्क थएल इंडवाळा करिवरो शरीरनुं मान भूली सिंहनी समी रे चालवा लाग्या, छतां तुषाथी सामध्येहीन थएला, चलित जिहाबाळा, उडती केशबाळीबाळा अने दीन मुख्यी ट्ट उपरांत टांफता सिंहो निकटमा चाल्या जना गजने विदारवानी वात विमरी गया. विभाकरना तीत तापपी व्याकुळ वनेछ वराहनां युध्यो समग्र परिवार गहिन जाणे पाता छपा प्रवेश मरवानी इन्छा राखना होय तेम मुक्ताइ गएलां सरोवरने खोदवा छाग्यां. ज्ञाल अने कुंजमां पादपना पुंजने पत्र रहित जोइ पशीओ पीडावा छाग्यां, पवननी साथे नवग्छत उडवा लाग्या, तुणना अहारो दळी गणा फेनधी खरहाएल मुखवाळी नृपाक्तल महिवीओ अनग निहाने मुख यहार बाहर्ता जळने शोधदा लागी. पंकचना पुंजने उन्देडना, मीनना कुटुंबने माग्ना अने किनोर वेटेला पारमने उटाइना वरिवरी देलितरीवरने टोळवा लागा. दिनकरना तील्ण कर्यी दाझना दाहुरो दादवदालां जलनो स्थाग करी कृदवा लक्ष्या अने फणीना फणने छत्र जाणी नेना नीचे छुरावा छत्या छतां ए दाडुरोने गर्छा जवा माटे तुपातुर सर्वी अजन वनी गया। जाके आवा डप्णकाळपा महान् मटना अभिरानि महनभाग्यी र अनेक महारना जीनापचार्ग्या केटले ह अंगे जा-रीस्ति सुखने प्राप्त कर्यु, तो पण नृपाना नापथी नपायम न चएचा नेओ झुक्त चंडयी पोनाना शिष्योंने कहेवा लाग्या के में दरेक स्थळना जळनु पान क्युं ने। पण तृपानु झपन थयुं नहि;

हवे तो जो कोइ वादशाहे खास पोता माटे सुंदर आरस पत्यरथी वंघावेछी वावनुं जळ भरी छावे तोज ग्रीष्मना भयथी मुक्त थवाय; आ वखते समग्र शिष्यो एकी साथे वोली उठ्या के गुरुमहा-राज ! ए वादशाही वावतुं जळ अलभ्य छे, कारण के त्यां वे एकाओ आठे प्रहर खडी चोकी भर्या करे छे. त्यां जीवन लेवा जतां जीवन खोइ वेसवा जेवुं छे. जेथी अमारी हिम्मत तो नथी चालतीः शिष्योनां सभय वचनोने सांभळी मकनभारथीए राज रायसिंहजीने कहुं के वीरनर! आप शिवाय मारी इच्छाने पूर्ण करनार कोइ नथी. रायसिंहजी बोल्या के खुशोथी आपनी आज्ञा जठावुं, परंतु ए वादशाही एकाओनी गाळो हुंथी सहन नहि धाय, नाहकतुं युद्ध थशे अने तेतुं परिणाम आपने वेठवुं पडरो. मकनभारथीए कह्यं के मारा खातर तमो एकसी गाळोने सहन करजो. रायसिंह नीए ए वात कबूल करी अने सुशोभित सुवर्णनी सराइ लड़ तेओ वादशाही वावनुं जळ भरवाने सिधान्या, सन्ध्यानो समय समाप्त थतां रजनीरुपी महाराणीए समग्र सृष्टिने पातानां स-त्ताना सूत्रमां परोवी, उग्र प्रतापवाळा राज रायसिंहजी पाताना कार्यमां अन्यकारने सहायभूत करी सौरभयी सुसमृद्ध थएछ विविध प्रकारनां हक्षोथी अत्वंत शैत्यने वहन करता प्रदेशमां परम रम-णीय आरसी समान मकाशता आरसना पत्थरथी उत्तम कारीगरोए निष्टत्तिने वखते निर्मेली, चांदनीना खंड समान चमकती, ग्रुक तथा सारिका आदि पक्षीओना मधुर स्वरथी शब्दायमान कमनीय किनारावाळी, विस्तृत आतपत्र समान विराजता खसना वितानथी आच्छादित शिरो भाग वाळी अने वरफथी पण विश्लेप शीतळ जळथी भरेली वादशाही वापिकामां उभय एकाओनी नजर चुकावी दाखल थया अने वहुज सावचेतीथी प्रथम तो सराइमां समाय तेटलुं जळ भरी लीवुं, त्यारवाद पोते पण यथारुचि पीधुं, जेथी हृदयमां हृद उपरांत थंडक ५३, छेवटे राज रायसिंहजीए ए उत्तम जळथी पोताना शिरःकेशने आर्द्र करी पाद मक्षालन करवा मांडयुं, आ रीतना अपमानथी आकुळ थएली वापिका जाणे मंद मंद " खळखळ" ध्वनिने धारण करता जळने मिशे आर्त रुदन करती होय एम अचानक गाजी उठी, एथी वहार उभेल बन्ने एकाओना कान चमक्या, तेओए गंभीर नादथी पूछयुं के अंदर कोण छे ? राज रायासिंहजीए विलक्कल जवाव न आप्यो, जेथी फरोने एकाओए उपर मुजव अवाज मार्यो; छनां प्रत्युत्तर न मळवाथी वहुज क्रोधायमान वनेला ए वन्ने एकाओ जेम आवे तेम अपशब्दो उचारवा लाग्या, गुरु महाराज मकन-भारथीए सो गाळो सहन करवानी आज्ञा आपेरी होवाथी राज रायसिंहजी एक अक्षर पण न बोल्या, गाळो गणता गया ने पगथीआं चडता गया, तेओ वापिकानी वहार आवी पहोंच्या तेटला

वखतमां सो गाळोनी र.माप्ति थइ चुकी. वादशाही एकाए जेवो एकसो एकमी गाळनो उच्चार क्यों तेवोज राज रायसिंहजीए अ यदनना मस्तक पर वज्जवत वामवाहुनो महार कर्यो बुटित मस्तक-वा हो ते यवन मृत्यी कापेला दृक्षनी माफक पृथ्वी पर पडी गयो अने आर्त नादनी साथे तेनो माणवायु आकाशमार्गे रही गयो. ावा पराक्रमी पुरुषना प्रचंड प्रतापथी सामध्येहीन वनेलो अन्य अको पोतानां प्राण दचादवा खातर त्यांथी भागी छूट्योः राज रायसिंहजी निर्भयपणे सिंह समान फा को भरता एटमा आदी पहोंच्या. तेओए प्रथम तो महाराज मकनभारथीने वादशाही वावना प्रकथी संतुष्ट वर्षी अने पछीधी त्यां वनेली तमाम विनाधी वावे.फ वर्षा; जे सांभळी मकनभार-थीना मतमां बादबाही एक.ना मरणथी विषरीत परिणाम प्राप्त थवानो क्षोभ थयो अने वादशाह प्रभात यताज कदेरीमां बोलावी कोण जाणे केवी शिक्षा करशे ? एवा अनेक मकारना तर्कदितर्क धवा छाग्या. छेवटे तेओ एवा निश्चय उपर आव्या के पोताना एकाना मरणने लीधे कोधायमान बहो तेना करतां विशेष राज रायासिंहजीनी व्हादुरी उपर प्रसन्न थशे, जे इशे ते सवारे जणाशे, अगाउथी कंइ पण अनुमान करवुं ए व्यर्थ छे एम धारी निद्रा देवीने आधीन थया. प्रभातना प्रथम पहरमांज एकाना मरणनी वात वादशाहना काने पढी; कोधने वदले आश्रर्य सिंधुमां निमम्न थएल वादशाहना मनमां एकाने वाम मृष्टिना एकज प्रहारथी प्राण रहित करनार वीरपुरुपने विळोकवानी आतुरता वधी, तेओए तुरतज मक्नभारधीना मटमांथी गुन्हेगारने पकडी लाववा केटलाएक सिपाहीओने मोकली आप्या. राज रायसिंहजी तथा पकनभारथी सारी रीते समजता हता के सवार थतांज वाटशा ही व चेरीमां ह जर थवुं पडशे जेथी ब्राहच मुहूर्तमां जागृत थएला ए वन्ने महान्माओ पो-त्रपाताना नित्यकर्मधी निष्टत्त थड राजकीय आमंत्रणनी राह जोइ गया हता, तेवामां वादशाहे मोकलेल माणसो मठमा आदी चडया अने मवनभारथी तथा राज रायसिंहकी वगर क्ये तेओनी साथे चार्टी निवळ्या. इवे त्यां वादशाहे एकाने मारनार वीरपुरपना वळनी विशेष परीक्षा करवा माटे कोइएक हरितने मद्यपान करावी तैयार रखाच्यो हतो, ज्यारे सिपाहीओ राजरायसिंहर्जा नथा मकनभारधी सहित वादशाही मोहोलान नजीक आव्या त्यारे वादशाहे हाथीने छुटो मृकवा फा-मान कर्युं, म चपान भी मस्त थए हो हाथी विकाळ स्वरुप भरी यमदृतनी माफ कराजमार्गमां दोडा-दोट करवा लाग्यो। मरंव छुंदथी उष्णवारिनुं दमन करतो गजने उडाटी दशे दिशाओंने भूमरित करवा था रतो है।य तेम मलयवाळना मेचनी माफक गर्जवा लाग्योः मार्गमां गमन करता दरेक

मनुष्यो ए दिवाना हाथीने दृश्यी देखी बाडा अवळा भागवा लाग्या, महाराज मकत्रभारयी पण भवभीत वन्या, तेओए राज रायसिंह जीने कहुं के महीवाल ! आ मदोन्यत हाथी हवे जह स्आप-णने हानि पहोंचाडरो, कारणके ते आवेशमां ने आवेशमां आपमा सामेन दोड्यो आवे छे. रान रायसिंहजी बोल्या के गुरु महाराज ! सामे पाछे चाळबुं ए अवारा अत्रीओतो धर्न छे, पाछा पग भरीए तो क्षत्राणीनुं दूव छजाव, आप साबु छो, जो आपने भव जेवं जगातुं होय तो भागी छुटो, जो ए हाथी मारा उपर इल्डो करहो तो हुं एना हाड केवी रीते भांगु छुं ए आप जोड लेजो. यक्तभारथीने राज रायसिंइनीना पराक्रव उपर प्रयम्यीन विश्वाम हतो. तो पग साबु स्वभावने लीने तेओए वे चार वलत शरीरना संरक्षण अर्थे रायसिंहजीने समज्री आपी, छतां तेतुं परिणाम शून्यता रुपे प्रसिद्ध थता पोते सत्वर पटायमान कर्र अने एक उन्नन अछिन्दने आश्रये सकम्प शरीरे अत्यंत भवयी अवयवीने संकोची उमा रह्या. अस्ट्रिन्द रुगी करिवरोना मदने छीला मात्रथी गलित करनार केसरी समान तिगाल वशःस्थलताळा राज रायसिंहजोरे अ-स्विलित गतिथी गमन करता जोइ गोखनां बेठेला बाइशाइ सानन्दार्थ्य पाम्या अते पीताना अ-मीर उमरावोने कहेवा लाग्या के जुओ, आ वहादुर नरतुं धैर्य जुओ; आते कोइ बीर छे के कोइ पीर छे ? आ वखते अभीर उमरावो वी जुं ह्यां वो छे ? कारणके मत्यन ममाण थतां सत्यासत्यनी कसोटो तरतमांज थई जाय छे. हद उपरात छक्तेली हाथी अ खन निकटनां आव्यो तो पण निर्भ-यताना निवासक्तव राज रावसिंहजीए पोतानी गतिने रंच पण न रोकी, परंतु ज्यारे उद्धन हस्तिए मारवा माटे मस्तकने नी चुं नमावी मोरो कर्यो त्यारे तेना गंडस्थळ उपर राज रायसिंहजीए जरा अवयवोने उछाळी दक्षिण भुजदंडथी एवी थप्यड मारी के ते मदोमत्त मातंग चिकार करतो पृथ्वीपर छोटी पड्यो, कर्णना विवर उगर अपरा आवात थतां तेना उमा चक्षुमां अन्यकार छ-वाइ गयो अने उत्थान शक्तिथी विद्दीन वनेलो तेनो देह काळमीढ पत्थरना टेकरा समान ते स्थ-ळेज टकी रह्यो. आ अद्भुत बनाव जोड बादशाहे निश्रय कर्षों के आ बहादुर कोइ देवांशी राज-पूत होवो जोइए, ए विना आवुं वाहुवळ क्यांथी होय ? राज रायसिंहजी वादशाही अरोग्वानी समीपे आवी अनमीपणे उभा रहा, महाराज मकनभारथी पण त्यां आवी पहेंच्या. वादशाहे ए वन्ने महात्माओने मानपुरःमर पाता पामे वोलाव्या अने चित्रमुवनमां राखेली गुजरात तथा काठि-आवाडना राजा महाराजाओनी छिनिओ लड़ आक्वा अनुचरने आज्ञा आपी, प्रमंगोपात वानिच-तमां कदरदान वादशाहे राज रायसिंहजीना वाहुवळ विषे वहुज तारीफ करी अने मक्रनमारथीए योग्य

शब्दोमां तेनो पत्युत्तर वाळ्यो, तेवामां पेळा अनुचरे आवी राजाओनी संख्यावंध छविओ वाद-शाह आगळ घरी; वाद्शाह दरेक छिवने राज रायसिंहजीना मुख भणी दृष्टि करी मेळववा छा-ग्याः ज्यारे हळचदना नरेशनी छिव हाथमा लीबी त्यारे तेना हृदयमां अनहद हर्ष थयो अने तेओ नामदार एकदम बोली उठ्या के हळबरना राजसाहेब तो नहीं? "हा, एज आपनो ग्रुभेच्छक " राज रायलिइ जीए चारज शब्दोगां ए व ते प्रत्युत्तर आप्यो एक तो पराक्तभी अने बळी मशंसनीय कुलमां मगट थए ह राज रायसिंह जी साथे मैत्री वांधवानो निश्चय करी दादगाहे चार मास पर्यन्त तेओने पोता पासे राख्या अने त्यारवाद म्होटी फोज साथे भित्र तरीके मान्य करेला महाराजाने हळवद जवा अनुमति आपी. रायमिंहजी वादशाहनी तथा महाराज मकनभारयीनी आजा लड हळवद आव्याः रणवासमां विधवा वेषे प्रसुम्परण आदि सित्कयाथी अवरोग आयुष्यने वितावनी तमाम राणी भोए स्वामीना आगयन संदंशी द्याप सनाचार सामळ्या, तो पण कोइए करकंकण आदि सौभाग्य चिन्होने धारण न कर्या, एयी राजरायसिंहजी नाराज न थता क्षात्र धर्मने पाळनारी पत्नीओनां कर्तव्यथी अत्यंत प्रसन्न थया; मात्र मूळीना परमारनी पुत्री के जे पोताना पत्नीनी गणनामां गणाएळ हतां तेओ समग्र सीथाग्य चिन्हथी अंगने अङंकृत करी पितने प्रसन्न करवा तत्पर थयां; ए जोइ राज रायसिंहजीने ते राणी उपर अति तिरस्कार उपज्ये। अने तेओए तुरत्वज पातानी वंशपरंपरामा फरीथी कोइ पण मूळीना परमारनी पुत्री साथे न परणे एवा पतिबंध बांच्या.

एटला वलत स्थीना राज रायिसहजी एकावन युद्धों करी चृक्या हता, छतां तेओ तुं पराक्षम अने साहत लेशमात्र ओ छु पर्यु न हतुं. तेओ छुत्वशान्तिपूर्वक राज्य करता हता तेवामां देदाओं फरी हळवद उपर चटाइ करवा तैयार थया. दूत द्वाराए युद्धना सपाचार सांभळी राज रायिसहजीए समग्र सामन्तोंने एकत्र करी कर्युंके दुव्यनों आपणी भूमिमां दाखळ न थाय ने परेलाज आपणे ए छोकोंने अटकाववा जोइए. सामंत्रोए पण एज सम्मित आपी, परंतु ए वय्वने राज्य ज्योतिपीए नम्रता पूर्वक अरज करी के—तामदार ! हाल ग्रहयुद्धनों गडवडाट चाले छे. जो पाच दिवस पठी युद्ध अर्थे प्रयाण करवामा आवे तो वयारे मारं; कारण के अल्यारे बृहस्पित नामना ग्रहे शुक्र नामनः ग्रहने जीन्यों छ अने एतुं फळ एवु छे के चढाट करी जनागा राजानों विनाहा थाया तो अन्दन्ता ! आपनु शुभ इच्छवुं ए अनक मुख्य कत्व्य छे. आ मांभळी एका- एक आध्येवहा थएछा राज रायिसहिनीए एछ बें के ग्रहयुद्ध एटले शु आ विषय ने। आनेज

me PR-m

मारे काने पडयो छे माटे ग्रहोनुं युद्ध शी रीते थाय छे अने तेनुं ग्रुं फळ छे ते संक्षेपथी कही सं-चळावो. महाराजानी आज्ञा थतां राज्य ज्योतिषी वोल्या के-नामवर !

गगनमां गमन करनारा तथा उदर उपर पोतपोतानी कक्षागां रहेली भौम आदि पांच ग्रह अत्यन्त दूर होवा छतां समताने माप्त घएला मालुम पडे अने एनो निकटना क्रमथी जे संयोग धाय तेने युद्ध कहे छे. एनो सारांश ए छे के भौम आदि ग्रहोनो परस्पर घणोज अन्तर छे, पण ज्यारे ए ग्रहो पोतपोतानी वक्षामां गमन करता करता समसूत्रमां आत्री जाय त्यारे मनुष्योने एम मालूम पडे के वन्ने ग्रह मळी गया. वस एनंज नाम युद्ध छे. पराशर आदि मुनिओए ए युद्धना भेद, उहिस्ब, अंशुमदेन अने अपसठ्य एवा चार प्रकार कहेला छे.

ज्यारे वन्ने ग्रह एकज देखाय अर्थात् उपरना ग्रहने नीचेनो ग्रह आच्छादित करे-ढांकी दिये ए युद्धतुं नाम भेद.

ज्यारे एक ग्रह वीजाग्रहविम्वना परिधि मात्रनो स्पर्श करे, परंतु ढांके निह ए युद्धनुं नाम उल्लेख.

वने ग्रहोनो स्पर्ध तो न थाय, परंतु ए एटला सभीपे आवी जाय के एक वीजाना किरणो पग्स्पर मळेला जणाय ए युद्धतुं नाम अंहामर्दन.

ग्रहोना किरणो पण न मळे, परंतु एक ग्रह वीजा ग्रहनी दक्षिणे वरावर रहे अने वीजो ग्रह उत्तरे रहे ए युद्धतुं नाम अपस्तठय.

भेद नामतुं युद्ध होय तो वर्षा न थाय अने मित्रोमां तथा उत्तम कुळोमां परस्पर विरोध जामे. उछिख नामतुं युद्ध होय तो शस्त्रथी भय थाय,
राजाओना भंत्रीओमां परस्पर भेद थाय अने दुर्भिक्ष पडे. अंद्युमर्द्न नामतुं युद्ध होय तो राजाओमां परस्पर युद्ध थाय तथा शस्त्ररोग अने श्रुधाथी मजावर्ग पीडाय. अपसन्त्य नामतुं
युद्ध होय तो पण राजाओमां परस्पर लडाइ थाय.

जे राजा शत्रुने जीतवा माटे चढाइ करी जनो होय अने तेना सहायक तरीके पाछळना भागमां जे बीजो राजा रहे तेने पार्टिणग्राह कहे छे तेमज पार्टिणग्राहनी पाछळ जे राजा र-हेलो होय तेने आकन्द कहे छे. पध्यान्हते समये सूर्य आहत्व छे, पूर्व अथात मध्यान्ह्यी पहेळां दिवस

पध्यान्हने समये सूर्य आकृत्द छे. पूर्व अथात् मध्यान्ह्यी पहेळां दिवसना तृतीयांशमां सूर्य पार होग छे अने अपर अर्थात् मध्याद पछी दिवसना नृतीयांशमां सूर्य यायी होय छे.

बुध, बृहम्पित अने श्रानेश्वर यायी छे, इन्ह्रमा, निरंतर आक्रन्द छे; केनु, मंगल राहु अने शुक्र ए चार ग्रह यायी छे. ए ग्रहों जो युद्धमां पराजय पामे तो आक्रन्द, यायी अने पौरोनो नाश करे छे अने जय पामे तो पोताना वर्गने अर्थात् आक्रन्द, यायी अथवा पौरने जय आपे छे. मतलव ले ग्रनों पराजय थाय तेना वर्गनी हानि अने जे ग्रह जय पामे तेना वर्गनी दृद्धि थाय छे.

जो युद्धमां पीरयह पीरयहने जीते तो पीरराजा पीरराजाओने जीते छे. एज रीते यायी अने आकृत्दनी जय पराजय तथा पीर अने यायीनी जय पराजय ग्रहयुद्धने अनुसार जाणी लेवी अधीत जे ग्रह जीने तेना वर्गनो जय अने जे यह हारे तेना वर्गनो पराजय थाय छे.

ले ग्रह युद्धने असते दक्षिण दिशामां रहेलो होय, रुझ होय, कंपायमान होय, बीना ग्रहनी समीपे पहोंचता पहलांन पाछो फरे अधीत् वांको धड जाय, सूक्ष्म थड जाय, बीना ग्रहथी दवाइ जाय, कोटरण प्रकारना विकारने मन धाय तेमज निष्प्रम अर्थात् विवर्ण-कान्तिहीन बनो जाय ते ग्रह पराचय पाम्यो एम तमनतुं. अने एथो विवरीत लक्षणवाळो ले ग्रह होय ते वि-जयी समनदो.

दक्षिण दिशामां रहेलो ग्रह पणनय पामे अने उत्तर दिशामां रहेलो ग्रह जीते एवा कांड खास नियम नथी को दक्षिण दिशामां रहेलो ग्रह म्होटो देखाय, स्निम्थ जणाय अने कान्तिवाळो होय नां नेने जण्युक्त जाणवी. आ अन देखक शुक्रमा होय छे बीचा ग्रह तां दक्तरमा होय त्या-रेज जय मेळवी जके हे, परतु शक्त को दक्षिणणां पण विजयतान थाय छे.

जो दर्ने ग्रह स्मागम समने किरणोथी युक्त, रहोटा तथा स्निरन होय तो एक्रोनी परस्पर शिति चार है अने एथी दिएशीन अर्थान किरणोथी हीन, मुरूप तथा रक्ष होय तो पोनामा परनो नाम करे छे.

भाम आदि णच यहोतु प्रस्प यह याय छे अने ए ग्रहो चन्द्रमानी माथ महे तो म-मागम बहेदाय है. जो एद्ध अथवा समागम राक्षणोथी स्पृष्ट न होय अथीत् युद्धमां ग्रहनां जय पराजयनो निक्षय न थाय. दते यह तुह्य स्पे रहे अने स्मागममा चन्द्रमा ग्रहनी उत्तरे अथवा दक्षिणे न घट जाय, परतु प्रहर्गा उत्तर यह गमन करे तो सृषिपरना राजाओंने एवुंज चौरहमुं

1 450

फळ कहेर्बु जोइए अर्थात् राजाओने पण युद्धमां जय पराजयनो निश्चय न थाय अने चन्द्रमाना समागमतुं फळ पण शुभ अशुभ न थतां मध्यम थाय.

जो युद्धने वखते मंगळने बृहस्पित जीने तो वर्ष्ठांक देशना निवासी, यायी अर्थात् शतु पर चढाइ करवावाळा राजा अने अग्नियो आजीविका चळावनारा मुवर्णकार आदि पीडा पामे छे. मंगळने बुच जीते तो स्र्रेसन, काँछंग अने सालबदेशना निवासोओ पीडाय छे शनैश्वर मंगळने जीते तो नगरना निवासीओनो विजय थाय छे अने प्रजावर्ग पीडाय छे तेमज शुक्र मंगळने जीते तो कोष्ठागार, म्छेच्छ तथा क्षत्रीओने संताप थाय छे.

जो मंगळ बुधने जीते तो द्रक्ष, नदी, तपस्त्री, अठमक देशना निवासीओ, राजाओ, उत्तर दिशामां रहेनाराओं अने जेणे यज्ञनी दिक्षा ग्रहण करेली होय ए ताम संतापने माप्त याय छे बृहस्पित बुधने जीते तो म्ळेच्छ, शूद्र, चोर, धनवान, नगरनिवासी अने त्रिगर्तदेश तथा पर्वतमा रहेनाराओं पीडाय छे. शनश्र बुधने जीते तो नाव चलाववावाला, लडवैया, जल्मी उत्पन्न थता द्रन्य, धनवान अने गर्भिणी स्त्रीओं ए सर्व पीडाय छे. शुक्र बुधने जीते तो अग्निकोप थाय अध्यत दुनियामां जगोजगो उपर आग लागे तथा खेती, वादल अने चढाइ करी जनारा राजाओं नाश पामे छे.

शुक्त बृहस्पितने जीते तो कुळूत, गांधार, केंक्रय, मद्र, साल्व, वतस तथा वंग नामना देश अने खेतीनो विनाश थाय छे. मंगल बृहस्पितने जीते तो मध्यदेश, राजा अने गायो पीडाय छे. शनैश्वर बृहस्पितने जीते तो आर्जुनाय, नवसाति, योधेय अने शिवि देशनां माणसो तथा ब्राह्मणो नाश पामे छे. बुब बृहस्पितने जीते तो मलेच्छ, सत्यवादी पुरुप तथा शस्त्रधारी पीडाने प्राप्त थाय छे अने मध्यदेशनो स्रय थाय छे.

बृहस्पति शुक्रने जीते तो चढाइ करनारा श्रेष्ठ राजाओं नाश पामे छे, ब्राह्मण तथा क्षित्रिओमां विरोध जामे छे, वर्षा पण थती नथी, अने कोशल, कलिंग, वंग, वत्स, मत्स्य, मध्य कळीव अने स्रसेन नामना देश महान् पीडाने पाप्त थाय छे. मंगळ शुक्रने जीते तो राजानो सेनापित मार्यो जाय अने राजाओमां परस्पर युद्ध थाय. बुद्ध शुक्रने जीते तो पर्वतमां रहेनाराओनो क्षय थाय, दुग्धनो नाश थाय अने वर्षा थोडी थाय. शनैश्वर शुक्रने जीते तो समृहमांनो प्रधान पुरुष, शस्त्रथी आजीविका चळावनारा क्षत्रीओ अने जळथी उत्पन्न थनार्रा द्रव्यो पीडा पामे छे.

गुक्त ग्रांनेश्वरने जीते तो अर्घष्टिद्धि थाय अर्थात् तमाम वस्तु किफायन भावे वेचाय, सर्प, पक्षी अने मानीपुरुपोने पीडा धाय. मगल शनैश्वरने जीते तो तंगण, आन्य्र, उड्काशी अने वार्णिक देशना निवामीजा पीडाय छे. तुप शनैश्वरने जीते तो अगदेश, विगक्त, पक्षी, पग्नु अने सर्प पीडाने माप्त पाय छे. तेमन बृहस्पिन शनैश्वरने जीने तो जे देशोमा स्त्रीओ वधारे होय ते देश तथा महिषक अने शक्त पीडा प.मे छे. आटलुं कही राज्य ज्योतिषीए वोल्कुं वंध कर्यु. राज्यासिंह जीनी याददास्त घणीज उत्तम हती. तेओए "बृहस्पिन शुक्रने जीते तो चढाइ करनारा श्रेष्ठ राजाओ नाग पाम छे" ए वाक्यतुं वरावर मनन कर्युं, परंतु पांच दिवसनी ढीलथी मित-पक्षीओ हलवदनी हदमां मवेश करे एवो संभा होवाथी "भावि हशे तेम थशे." एवा निश्चय पर आवेला राज रायसिंह जी प्रष्टदेवने समरी एज वस्तते सैन्यने सज्ज करी शत्रुओं कामे चाली निक्च्या. याटीलाना मेदानमां उथ्य पक्षनों भेटा थयो. आलाओनी अपटथी मध्म तो देदाओ दम खाइ गया, परंतु पाल्लव्यी ए लोकोए अवर्णनीय पराक्रम करी बताब्युं. शत्रुओना दळने जिल्लिक कर्या छतां हळवदना सैनिकोनी हार थतां राज रायसिंह जी पण अगणित महारोथी अचेत वनी युद्ध भूमिांज माणरहित थया.

जामना आश्रित तथा इन्दरना अनन्य भक्त वारोट इसरदान के जेणे "हरिरर काळ्य" नामनु इन्दरभक्तिनुं पुस्तक रचेछुं छ एणे राजरायसिंहजीना स्वर्गमन सबंधमां चारणी भाषानी अदर घणां गीतो बनावेटा तेमांथी जेटलां मळ्यां तेटला आ स्थळे दाखळ कर्या छे.

गीत १.

राणाहर भला जनमीओ रासा. तुज न वह भड जोध त्रसींग; जूना वेर टाळ जाडेजा. घोडी किआ हेकठा धींग; वगसे लाखो नमण वगसीयो, भले हाल हर देवांभीर; खेंचे वेर तणे कज खाधे, हालाने वगसीओ हमीर; मोहोड वीरसद खेंगो मलिया. मन वीसारी जक मुआ; हालो देवो होओ हेकठा, हालो राएथण हेक हुआ; माहो माहे वेर नह मुका, दल झाले हाला दमीआ; हाला त्रणरा मली हेकठा, एको कणी न आगमीआ; जासे नहीं दिअरडे जाते, वीसह घणा दिन रहेसे वात; राहां त्रण तणे सररासो, अणभंग राखी गिओ अखिआन.

गीत २.

खेधी लग क्षत्री खडग हथ खारा, मदही इन्द्र सभा मिलया; बीजी बार सरगपर बॅंबे, साएवरासो साफिलया; एथ कज अलाओथीकज अपल्लर, सुरनर रहीआ करी समास; कडतल राण राएधण कीधो, कलह वली दूजो कवलास; आडा अमर हुवा अनीयारा, जोध न सकी आकरी जुआ; हालो देदो होए हेकठा, हालो राएधण हेक हुआ; राएधण राज बाजेआ रुके, सघलेई संसार सुओ; मोटो जूध हुवो मालीए, हेक वली जुध सरग हुओ.

गीत ३.

आधी आधी चाओर आपे, सथरा इन्द्र किया समझाव; माना ओत हामा ओ । मळीया, इन्द्र सभा वच वेठा अव; कर झाळां गोळो घडसप काढां, धखते तेळे हाथ धरां: रायासंघ सरीखो राजा, कोए होए तो धीज करां; प्राझळती झळझंगां पेसे, तीर न खावकरां गमतोय; जजाणी कणे होए जो जायो, कडनळ सारीखो नर कोय; अकळंक माथा फूळ उतारां, पेसव मरमा कोस पीआं; मानाओत जेहडो मेमाझळ, दूजो होए तो सीसवीआं; कल पांत्रीश तणी बहु वांकल, जायो होए तो बोलो जीह; देव जकरां होए जो दोइ जो, सपोह कोए सारीखो सीह; परख रतन अणखूट पृथीपड, बेबीरातन वावन वीर; कस चाटां जो राण जसो कोइ, हिन्दु होए के होए हमीर;

रत कडवो केम सकत पूछे रुद्र, पडतां में लीधो अपड; लागुआतणा लागते लोहां, भडते राआसंग भड; आगें दोए वेला आचरीयो, मेंताए कमंध तणा रणमांय त्रीजी वार कहोते त्रितेयण, सोअण हुवो केम कडवे साय; सपरा सात गंगतट सोलह, तेम दसह वल भीमा तीर; तें तेत्रींश पीआ पात्र सकत, खाटीथीए छठे पात्र खीर; होए मन चोंक सकत सब हसीया, वलद हुए मन कीओ बचार; आलाघाव हुआ अगलूणा, ओतणलींव तणो अपगार; रतन महेस जसो गणरासो, वीसहथी धारं जणवास; ईसर तुं सब धारी अमर, कल सपेख गया कवलास.

राजरायसिंहजी वि. स. १६४० मा घाटीला पासे देदा रजपुतीनी साथे भयंकर युद्ध

१ राज रायासिंहजीना पराक्रम सबैधी वर्णन करनां की एक हिन्दी कविए दोहो बनाव्यो छे.

[&]quot; कटारी अमरेशरी, हींवारी तहवार; हाथह रायासींगरो, दिल्हीरे दरवार. "

क्यांइ क्यांई "तोगारी तलवार" एवी पण पाट हे.

करी स्वर्गे सियाव्या, तेओने छत्रपालनी, चन्द्रांसहनी तथा सूरजभागजी नामे त्रैण कुमारो हता, तेमां पाटवीक्रमार छत्रसालनी माळी शाना मी शाणा साथे वींगाणुं करतां वि. स. १६३८ मांज स्वर्गवासी थया इता, जेथी कुपार चंद्रसिंह नी शौर्यसागर विताना स्वर्गगमन पछी वि. स. १६४० मां रमणीय "राज "पदवीने धारण करी इळवदनी गादी पर विराजमान थया.



राजरायासिंह जीना परिचयमां आवेल बादशाह " अकवर " होवा जोइए एम विक्रमना सोळमा शतक उपस्थी एक रीते तिद्ध यह शके छे, परंतु बीजी वाज्य विचार करीए तो शहेन-शाह अक्वरे पोताने हाथे पोतानुं जीवनचरित्र लखेल छे तेमां झीणामांझीणी वावतो पण जोवामां आवेछे, छतां तेओने रागरापासंहजीनुं मिलन थयुं एवो लेख कयांइ द्रष्टिगोचर थतो नथी.

१ वहवाणना इतिहासमां राजरायसिंहजीने चंद्रसिंहजी तथा सरतानजी नामे वेज कुमार हता एवं दर्शाव्यं छे अने ए सरतानजीए आडेमरना ठाकोर साहेवजीने मार्था हता तथा पोते पण मरणने शरण थया हता,



विंशत् तरंग.



भूपित चन्द्रतणे भुवने, प्रकटेल वडा प्रथिराज प्रतापी; शाप थतां विचर्या सुरलोक, सिहाणी नरेशतणुं शिर कापी; शूर घया सुरतान पछी, निज गादी सुवंकपुरीमहिं स्थापी; सान महीप लगी नयुराम, अहीं अमरेश ! हकीकत आपी.

राजचन्द्रसिंहजीए विच सं० १६४० मा इळवदनी गादीए वेसी पोतानी कुळपरंपरा प्रमाणे प्रजानुं पाळन करी औदार्थ आदि सद्गुणोथी महान मुयश मेळच्यों, ए एक वहादुर नरेश हता, तेओना ळग्न लोधपुरना राठोड सूर्यभिंहनीना कुंबरी सत्यभागा साथे थयां हतां; ए सत्य- थामानी न्हानी बहेननो विवाह दादणाह अकारना णाहजादा सळीम साथे करवाणां आज्यो हतो. कहे छे के—राजचन्द्रसिंहनी तथा ज्ञाहजादो सळीम एक छग्ने जोवपुर परणा गया हता. राजचन्द्रसिंहनी तथा ज्ञाहजादो सळीम एक छग्ने जोवपुर परणा गया हता. राजचन्द्रसिंहनीनी बराते ज्ञावपुर जनां बेगडवाव गुकाम कर्यु हतुं, ए बेगटयायना आयर अरजण सोनाराए हळवदनी जदरी जानने ममनाधी रोती मिजवानी आणी अने राज चन्द्रसिंहजीना सन्य सिंहत नर्वनी पणीज सारी सरभरा करी. अरजण सोनाराने ज्ञातीन तथा ममजु माणम समजी शीमान राजरगतेने तेनी परोणागन अत्यन्त स्तेहची स्वीदारी अने नेमधी एने हेटजोएक पोजाक आपी दरानमा नाये लीको. ए विषे भाट छोतो नोचे मुजब दोहो बोले छे.

" अरजणीए अखियान, पहेळी कीधी पांचाळीये; राख्यो एकज रान, जातो चंद जमाडींओ. '

दरात को उपुर पहोंचा, इने चरी शंते स्होटा हुंतरीनो सबंद राजचरहाँनेहजी साथ थ-एटा रोवाधी हिन्दुनायना नियम सुनय मधन नेथा पोग्याबा चोटर. छतां ज्ञाह हाटा सर्छापे ए वावतमां तकरार उठावी. अंते एवो निर्णय थयो के भाळांनी अणी उपर एक नाळीएर राखवुं अने ए नाळीएरने घोडा दोडावी जे पथम लड़ छे ते पहेला पोंखाय. दिल्ही तथा हळवद तर-फथी ए वात मंजुर राखवामां आवी. एक विशाळ मेदाननी अंदर जमीनमां भाछुं खोडी तेना उपर नाळीएर मुकवामां आन्युं. नियमित स्थळेथी वन्ने पक्षना अश्वो एक साथे दोड्या, तेमां इळवदना अश्वोए हेरत पमाडे एवा वेगधी आगळ वधी श्रीफळने इस्तगत कर्यु; आथी वादशाही वरातनों मनोरथपार पड़ी शक्यो नहि. वन्ने वरात तोरणे पहोंचतां प्रथम राज चन्द्रासंहजी पोंखाया अने पछीथी शाहजादा सळीमने पोंख्या बाद अनुक्रमे पाणिग्रहणनी क्रियानो प्रारंभ करवामां आच्यो. राज चन्द्रसिंहजीए उतारो जाळववा अर्थे एक जसाजी नामना छविंड शाखाना रुद्ध रा-जपूतने राखेळा इता, अने वाकीना समग्र मनुष्योने पोतानी साथे लीधेला इता. एक स्वाभाविक नियम छे के ज्यारे कोइ माणस एक हो देठो होय त्यारे तेना हृदयमां अनेक पकारना विचार स्फुरे छे. इळवदना उतारामां होको गुटगुडावता राज्यभक्त जसाजी पण एज हालतमां आवी पड्या. पासे कोइ माणस न इतुं, जेथी मनमां ने मनमां विचारवा लाग्या के हळवदना अश्वी पाणीवाळा होवाथी शरुआतमां तो श्रीहरिए मारा माळिकनी ळाज राखी, पण हवे मूछ उंची रहेवी ए वहुज अशक्य छे; कारण के परणी रहा बाद वतनमां विदाय थती वखते बादशाही वरात तरफथी भाट चारणो वगेरेने जेटली दात आपवामां आवशे तेटली राजसाहेवथी आपी शकाशे नहिः कारण के क्यां दिल्ही अने क्यां इळबद. वळनी परीक्षामां तो हज पण पाछा हठीए तेम नथी, पण समृद्धिमां कोइ रीते एनी सरखामणी करी ज्ञाकाय तेवुं नथी. माटे वीज़ुं कांइ निह करतां आ वलते जो उताराने छूंटावी दीधो होय तो जेजेकार थइ जाय. बादशाही बरातवाळाथी एवं बनी शकशे निह, कारण के एना उतारामां तो करोडोनो माल होय, ए ज्ञिवाय ए गमे तेटलुं द्रव्य उडाडरो तो पण हळवदनी तोले नहि आवे. आ हळवद-ना जतारामां वह तो वे चार लाखनो माळ असवाव इशे. अत्यारे ए लूंटावी देवाथी जे नामना मळशे ते पछीथी करोडो रुपिआ खर्चवाथी पण मळी शके तेम नथी. मात्र वांबो एटळो छे के जो मारां आ साहस उपर महाराजा राजसाहेव नाराज थाय तो मारे मरवं पडे. घडिभर आवा तर्कवि-तर्क करी छेवटे लींवड जसाजीए दढ संकल्प कर्योके-भन्ने मारे मखुं पडे, पण मारा मालिकतुं नाम तो अमर रही जशे ? एना नाम करतां मारां माण कांइ किम्मतदार नथी. वस एज वखते जसोजी बहार निकळ्या, अने भाट चारणोने भेळा करी उन्नत अवाजे वोलवा लाग्या के—'' चाळो वाप-

ला ! चालो, आ हळवदनो उतारो लंटाय छे हालो, अमारा राजसाहेवे हुकम दीयो छे के माग-पधी वधारे मारे कांइ नथी, माटे हालो, जेने जे जोड़ए ते उपाडो, वार न लगाडो, " आ शब्दो सांभळतांज असंख्य मागण लोको त्यां आवी पहाँच्या अने उतारामां प्रवेश करी कोइ घोडा, कोइ हाथी, कोइ एंट, कोइ बळट, कोइ देटी, कोइ पटारा, कोइ पलंग, कोइ ताबदान, कोइ म्याना कोइ पालखी, कोड गाही, एम जेने जे गम्युं ते लड़ लड़ने चालवा लाग्या अने मार्गमां महोटे अवाजे " भले बाप रुविड, भले बाप र्छावड, भले हळवद भले, भले हळवद भले " एवा शोरवकोर कर-ता पोत्तपोताने स्थाने जता इता, त्यां परणेतर पूर्ण थइ रहेवाथी उतारा भणी वर्लेला हळवदना जार्नेयाओं पोतपोताना घोडा बगेरेने ओल खवाधी मागण लोकोंने अटकावी आसपास घेरी बळ्या अने कहेवा ल,रवा के-" आ अमारी मालमत्ता हमी क्यां लड् चाल्या?" आनी काइ जवाव निह आपतां मागण को को तो " भक्ते कींदर भक्ते, भक्ते हळदद भक्ते, बाव ! हळवद ते वयांइ थावं छे ? " आम बारंबार हर्षयेळा बनी बोली रहा हता. आ बात बीजा माणसोना ध्यानमां तो एकदम न बेरी, पण परम चतुर राज चन्द्रसिंहजी समजी गया के लीवड जसाजीए हलबदनी उ-तारो हूंटाबी आ बाह बाह कहेबराबी छे. तुरतज तेओ नामदारे मागण लोकोने अटकाबी उभेला पोताना माणसोने ठपको आपी सीधा उतारे जवा मृचच्युं, अने पाते पण मनथी ने मनथी दीर्य-दशीं जसाजीने धन्यवाद देता देता उतारे पथायी. जसोजी तो वन्द्रक भरीनेज वेठेळा इता, मा-लिस तरफथी अपमान थता आपघात बरवो एन तेनु छेहलुं कर्तव्य हतुं, परंतु ज्यारे तेणे श्रीमा-न् राजसोरवनां निर्मळ नयनोने पोता तरफ इसतां जोयां त्यारे तेने खात्री थइ के मारुं आ कार्य मारा एक मारिवाने सतोपकारक जणायुं छे. राजसाहेवे अध्वपस्यी नीचे उत्तरी तुरतज हाद्ध जसा-जीने धन्यवाद आप्यो अने वर्त्यु के-" आटला वधा माणसोमा तमे एकज खरा निमकहलाल अने राज्यभक्त छो. जो तमोए आ युक्ति न वापरी होन तो मारी ही नाकान हती के बादजाही बरा-तनी रपर्शामा आबी प्रख्याति पाधी शक्क ? वस नमेज इळवदनी लाज गाखी छे. " आटलुं बोली राज चन्द्रसिंत्जीए टींवड जसाजीने वेटलोक उमदा पोझाक आप्यो. वादशाही वराते भाट चार-णोने दान आपर्ता दखते अहळक द्रव्य उहाव्युं, एण नेनाथी हळवदरी तुलना ५८ श्रवी नहिः; बारण के ए दखते रण मारण रोकोना मुख्यमां " भन्ने शींदड भन्ने, भन्ने इलवड भन्ने " तवा उद्यारो जारी हता.

्डपरना अवसरनो एक परजीओ दोहो हज्ञु पण जनममुदायमां मामान्य रीने नीचे

मुजन बोछाय छे.

" जाण्युं टाणुं तें जता, करमी ग्रह केवा; पारकी पथारीए लींवड जत लेवा, जाण्युं टाणुं तें जता "

राज चन्द्रसिंह भी जोधपुर शिशाय वीजी पांच जगोए परण्या हता अने तेनाथी पृथीराज्ञी, आश्वरणजी, अररसिंह जी, अभेराजजी, राजिस्ह, राणोजी, भोजराजजी, सुरसिंह जी अने प्रतापसिंह भी नाम नव कुपारो थया. तेमां म्होटा कुमार पृथीराजजी "भड़िली " ना सर्वेयाना भाणेज थता हता. आश्वरणजी तथा अमरसिंह भी " जोधपुर " ना राठोड सूर्वसिंह भीनां कुंबरी सत्यभामाना उदस्थी जन्य पाम्या हता. अभेराजजी " शीहोरना ", राजिस्हिजी " लीलोस " ना, राणोजी तथा भोजराजजी " पेथापरमाणसा, " ना अने सूरजिसहजी तथा पता-पिसहजी "कुण " ना देश हित्र हता. मतल्य राज चन्द्रसिंह जीनां लग्न भड़िलो, जोधपुर, शीहोर, खीलोस, पेथापरमाणसा तथा कुण योरे स्थळे थयां हतां, ते ओंतुं आखुं कुटुंव निरंतर अवनवा आनंद मंगळने अनुभयतुं हतुं, परंतु दुःलपय संसारना अतिस्य वैभवोनी माप्तिथी पोताने सुखो समजनार माणीने मस्र न होय त्यांयी उपायिनो खजानो अर्पण करे छे. ए अनादि नियमानुसार स्वर्गस्य राज राजिसहारीर थ्रोळिती घरामां वावेलुं वैरवीन अंकुरित थं कुं जाननगरना जाम श्रोळ ठाकोरना कुटम्बी होवाधी तेओए एक महोदं लग्कर हळवदने कवने कग्वा माटे मोकल्युं राज चन्द्रसिंह भीए जामना लज्करनी साथे युद्ध करी विजय मेळव्यो अने पाछळथी पोतानां एक कुंबरी हतां तेनो जाम सत्ताजीना कुमार लाखाजी साथे विवाह कर्णे, जेथी वैरनी पण शानित थइ.

राजचन्द्रसिंह नी वि. सं. १६४२ मां गुजरात खाताना वादशाही सूत्रा खानअजी जकी-काने वीरमगाम मुकामे मळा हता, तेओए पोताना चोथा पुत्र अभेराजजीने 'थान 'तथा " छ वतर " सिंहत विविध गामी अत्यां हतां अने एथी न्हाना पांच कुमारीमांथी एकने सात अने वाकीनाने चौद चौद गामनो गिरास अत्यो हतो.

शी शाणीना ठाकोर अदानीने अगदावादना वादशाही स्वा साथे अणवनाव थवाथी

१ श्री झाला.वंशना वारोट काळुनीना चोपडामां अभेराजभीने सात गाम सहित थान तथा लखतर मळ्यानुं लखेल छे

तेओ पोताना कुटुंवकवीला सहित हळवदमां राज चन्द्रसिंह जीने आश्रो ताजेतर आवी रहा हता; एक वखन कुमार पृथीरा नजी अश्वास्ट बनी फरवा निकच्या हुना, फरीने पाछां वळतां तृनातुर अश्व-ने पाणी पावा गहेरनी समीवे रहेला अवाडा पासे आव्या. ए समये अदे जी पण आ। उथी आवी पोनाना अन्दने पागी पाता इता; तेओने आसपास उभेला केटलाएक पुरवाशीओए पथनथीज क्युं इतुं के कुपार पृथराजनी निकटमां अविछ अन्यना अन्य उपर चा कनो महार कर्या शिवाय रहेता नथी. छतां अद्वातीए कोइना कहेवा उपर ध्यान निह आपतां पोताना मनतुं धार्ध कर्युः नवर्योवनना आगवनधी समग्रसृष्टिना दळने तुच्छ समजनार कुमार पृथीराजजीए अदाजीना अध्व उपर चातुक उगाम्यो. अदाजीए पण पूर्भापरना विचारना परित्याग करी कुमारना हृद्यमां भ छं भेंकि-वानी द्याम भीडी ए वखते क्रमार पृथीराजजी पोता पासे कांड हथियार नहि होवाथी वधारे जोखममां उत्तरवातुं अनुचित धारी सत्वर सक्रोध आकृतिने पद्गित करी नाहेरमा सिधाव्याः स्वत् समयने अन्तरे अद्योजी पण उतारे आदी पहाँच्या. हवे अदाजीने केवी रीते पायनाल करवा एन विवारने हद्यवरमां मुख्य स्थान आपी क्रमार पृतीराजजीए माणसोने एकत्र करवा मांडयां ए वात राज चन्द्रसिंहजीना जाणवामा आवतां तेओए पृथीराजजीने पोना पासे वोलावी कधुं के "कुमार! अदोजी आपणे आश्रा आवी रहेला छे, एतुं अनिष्ट करवुं ए आपणे, धर्म नथी." छतां क्रोंधने वश वनेला पृथीराजजीए पितानां वचनतुं वजन नहि राखतां एकदम अदाजीना मुकाम उ।र हुमलो क्यों. तेवामां राज चन्द्रसिंह जी त्यां आवी चडया अने कुमारने साहस न करवा सृचन्धुं, परंतु एथी पृथीराज नीनो क्रीध अभिदृद्धि पाम्यो, तेओ तुरत न त्यांथी रिमाइ विद्याण तरफ चार्छा निकल्या. त्या पहींच्या वाद तेओए पराक्रमधी आजुराजुना प्रदेशने स्वारीन करी वि. सं. १६६० मा बहराणतुं स्वतंत्र राज्य स्थाप्यं तथा पोताना नामधी वादश हने वार्षिक पेशकशी मोक्तन्या माटी अने स्वल्प समयमांज वे हजार यो द्वाओं संस्य एकत्र वर्षे नेवामां बनाव एवा पन्यों के केटलाएक लक्करी सिपाहीओं उट आदि बाहनों उस बाहशाही स्वजानों लड जुनागहबी अमदाबाद तरफ जना हता ते बटबाणने पादर धर नी हळ्या, ए बाननी पृथीराजजीने खबा पट-तां तरतज तेओए सख्यावं र स्वागे महिन त्यां आवी पादशाही विवाही शे। साथे थींगाणुं नर्यु, अने खजानो हूंटी नी शे. ज्यारे ए समाचार बादशाहने मठशान्यारे बादशाहे पृथीराजनीतुं मध्त-

१ राजचन्द्रभिंहर्जाना अमल दरम्यान बहबाण हळबढना कबनामा हतुं एम केटलाएक इतिहासोना भाषारधी नहीं शकाय छे.

क कापी लावनारने रहोडं इनाम आपवानुं सर्व स्थळे जाहेर कराव्युं अने एक मुवाने वे इजार स्वारो साथे पृथीराजजीने परास्त करवा वढवाण तरफ खाना कर्यो. ए सूवाए पृथीराजजीना अ-द्शत वळ संवंधी केटलीएक वातो सांभळेली होवाथी तेओनी साथे मुकावलो करवानो विचार मार्गमांज मांडी वाळ्यो अने कपट क्रियाथी वीरनरने वश्च करवानो इढ निश्चय करी पोताना माण-स मारफन तेओने कहेवराव्युं के हुं खास वादशाही खंडणी उघराववा माटे निकळेळो छं, तो आप मारा उक्त कार्यमां मददगार थशो तो म्होटो उपकार मानीश. ए रीतनो सुवानो संदेशो सांभळी प्रथीराजजीए पोताना दूरद्वारा स्वाने कहेवराच्युं के-तमो द्वाथमां क्ररान छडमारी साथे कपट न करवाना ऋष्य ल्यो तो हुं खुशीथी तमोने सहायता आपवा तैयार छुं. स्वाए ए वातने स्वीकारी छीथी, परंतु साथे एटलो करार क्यों के जो पृथीराजकी प्रथम कपट करहो तो पछी हुं पण तेम करीश अने को तेओ मारी साथे निष्कपटताथी वर्तशे तो हुं पण तेओनी साथे एज रीते वर्तन करीश. आ रीते अन्योअन्य कबुलात थया वाद पृथीराजजी पोताना सैन्य सहित सामा जड सू-वाने रब्या अने अदोजी शीयाणीमां आव्या छे एवा समाचार सांभळतां ए वन्नेए प्रथम शीआ-णी उपरज हल्लो क्यों. अदाजी उपर उपाधितुं वादळुं तूटी पहयुं. कुंजर सरखा पृथीराजजी सामे पिपीलिकानी दशाने पाप्त थएला अदोजी पोताना थोडा घणा स्वारो सहित कम्मर कसी क्षात्र-धर्म प्रमाणे सन्मुख आवी उभा रह्या, तीक्ष्ण तलवारो चमकती चपळा समान म्यारमांथी निकळी अने भयंकर कापाकापी चाली; परंतु आदित्यना उग्र प्रकाश आगळ जेम दीपकनी ज्योति निस्ते-ज वनी जाय तेम स्वपक्षनो संहार थतां अदोशी वळहीन वनी गया तुरतज पृथीराजजीए तेओनुं मस्तक छेदी एक उन्नत रक्षनी डाळे लटकावी दीयुं. ए शोकजनक समाचार सांभळतांन अदाजी ना राणीने सत चढ्युं अने पोत.ना पति साथे वळी मरवा तैयार थयां, तेणे कुंकुम तथा अक्षतथी भारुने अलंकृत करी सतीने योग्य सकल गुंगारो सज्या वाद पृथीराज नीने कहेवराव्युं के मारा स्वाभीतुं मस्तक मने सुमीत करो. पृथीराजजीए सतीनी याचनानो अस्वीकार करी मत्युत्तर पाठव्यों के जो तारे धणीतुं मायुं जोइतुं होय तो में रक्षनी डाळे टांग्युं छे त्यां तुं जाते आवी लइ जा. आ रीतना अनादरथी सतीनुं हृदय अधिक संतप्त थयुं छतां अन्य उपायने अभावे ते पृथीराजजी पासे गयां. ए वखते पृथीराजजीए सती सन्मुख अदाजीने संवोधी केटलांएक अ-घटित वचनोनो इचार करवा मांड्यो, परंतु ते तरफ लक्ष निह आपतां सतीए पोताना माणेशनुं मस्तक इस्तगत वरवा व च्छो चाळ्यो अने आदेशने छीधे थरथरतां अंगोने घडि वे घडि स्थिर

राखी दृस पर चढवा मांडयुं. पृथीराजजीनो वचनपवाह चालुन हता. भावि आगळ भलभलेरा मनुष्यो पण बुद्धिवळने गुपावी वेसे छे. म्हावरो निह छतां सत्य वृतना प्रभावथी वृक्ष पर चढेली सतीए अन्तिम गाखा सूधी पहोंची स्वामीना शिरने प्राप्त कर्यु. ए वखतनो देखाव घणोज दया-जनक होइ पापाण सरखा कठिन हृदयमां पण कारुण्य प्रगटाववा सामर्थ्य धरावतो हतो, छतां पृथीराजजीना हृदयमां विश्लेष काठिन्ये वास कर्यो. स्वामीना शिर साथे विविध वाता करती ते-मज तेने हृदयथी चांपती सती हक्षधी नीचे उतरवा छागी. जो के ए पतिहतानी हित्त पतिना शिरमांज संलग्न इती, छतां तेना चरणोनी नियमसर थती गति सतीत्वनो अवर्णनीय चितार आपती हती. पतितुं मस्तक लड़ दृक्षधी नीचे उतरेली सती असहा वचनवाणानी दृष्टि वरसावता पृथीराजजी प्रत्ये बोली उटी के मने तो मारा प्राणेशनुं मस्तक प्राप्त थयुं, पण तारी स्त्री एटली वधी अभागिणी थरो के " तारी शी गति घर " ए पण नहि जाणी शके, आटलुं कही सती तो अदाजीनी साथे वटी मुनां अने पृथीराजजी पेशकसी उबराववा निकळेल बादशाही सुवा साथे चाली निकल्पा हवे जे स्थले लक्करनो पडाव नांखवानो निश्चय करवामां आच्यो हतो ते स्थले प्रथमधीज वंदोवस्त करवा सूवाए पृथीराजजीने मोकली आप्या. पृथीराजजीए त्यां जइ आसपास जळनी तंगी होवाने लीधे एक कुवा उपर पोतानो तंत्रू तणाव्यो, तेनी चारे वाजुए पोताना माणसो माटे गोटवण करी अने बादशाही लक्कर माटे जरा दूरना भागमां तंवूओ नंखाच्या. आबी पहोंच्युं, पाणीनी ताण पडवा मांडी, सवाए पृथीराजजीने पृछयुं के पाणीने माटे ज्ञो वंदोवस्त क्यों ? त्यारे पृथीराजजीए जवाव आप्यों के आ स्थळनी आजुवाजुए तपास करावतां जळ क्यांड पण जटतुं नथी, आधी लडकरी सिपादीओं आपत्तिमां आबी पडया नेओ विचारा छ सात माइल पर एक तळाव हतुं त्यां जइ जळ भरी लाववा लाग्या अने ज्यांमृबी ए स्थिते रहेवुं पडयुं त्यां सूबी सुवाना समग्र सैन्ये इद विनानी हाडमारी वेटी. तेवामा ग्वापरा कोडीया सरखा कोड एक सिपातीए स्वाने खबर आप्या के पृथीराजजीना तंवृषां एक कुवो छे, छतां " आटछामां पाणी नधी महतुं " एवं असत्य दोल्या. नपास करावतां मृत्राने ए सिपाहीनी वात सत्य जणाड, जेथी [॰] तेणे पृथीराजजीना **डक्त कर्तव्यने विश्वासघान नेमज छ**ळभेद्रप समजी लीवुं, ने छीवेला ग्रुप्यथी ु मुक्त ध्यो अने त्रितन पृथीराजर्जाने केंद्र करी उपादी गयो. पाछळथी पृथीराजजीतुं शुं थयुं प कोइना जाणवामां न आन्यं.

पृथीराजजीना सदंधमां वटी एम पण करेवामां आवे छे के श्री इटवदना गरोट गणी

सत्यभामाजी के जे जोधपुरना राटोड सूर्यसिंहजीनां कुंवरी, राज चन्द्रसिंहजीनां पत्नी अने कुमार आशकरणजी अने अमरसिंहजीनां मातुश्री हतां; तेओना अन्तःकरणमां स्वार्थष्टति उद्भवी; तेओए पोतानां न्हानां व्हेन के जेने दिल्हीना शहनशाह साथे परणाव्यां हतां तेने एक पत्र छखी जणाव्युं के-तमो अमारा हितनी खातर गमे ते प्रकारे वादशाहने समजावी अहींना पाटवी कुमार पृथीराजने तुरतमां त्यां तेडावी मारी नंखावो तो भविष्यना तमारा भाणेन आज्ञकरणनी तथा अ-मर्सिंहजी हळवदनी गादीना हकदार थइ थके. ए रीतनो पेतानां व्हेननो पत्र बांची ए बाहए वादशाहने समजाव्या अने अमदावादना सूवा उपर पृथीराजजीने सत्वर पकडी दिल्ही मोकलावी आपवा संबंधी हुकप छलाव्योः ए हुकप मळतांन स्वाए म्होटी फोन लइ हळवद उपर चढाइ करी. राज चन्द्रसिंहजीए वादशाही लहकर साथे छ मास पर्यन्त युद्ध कर्यु, उभय पक्षना केट डा-एक योद्धाओं काम आव्या. अन्ते सूबो एवी समाधानी उपर आच्यों के जो मनेपांच लाख रुपिआ मळे तो हुं अहींथी अमदावाद चारुयों जाउं. ए वात उचित जणातां राज चन्द्रसिंहजीए तेज वख-ते त्रण लाख रुपिआ सुवाने गणी आप्या अने कहुं के वाकीना वे लाख रुपीआ वनती उतावळे तमारा तरफ मोकली आपद्यं. स्वाए कहां के ए वात कबुल छे, परंतु ज्यांसुबी ए वेलाख रुविआ-तुं अमारुं लेगुं न पते त्यांसू भी तमारा पाटवी कुमार पृथोराज नी अमारी पासे रहे, तमारा तरफथी वे लाख रुपिआ मळ्या वाद अमी पृथीराजजीने पाछा हळ रद मोकली आपद्यं, राठोडराणी सत्यमामाए पाथरेली मपंचनाळथी रान चंद्रसिंहनी तदन अनाण्या हता, जेथी तेओए पोताना पाटवीकुगार पृथीराजजी के जेओ ते अस्सामां वढवाण हता तेओने त्यांथी तेडावी सुवा साथे मोकली ऑप्रा. वादशाही सुवो पृथीराजनीने पथम तो अमदावाद छइ गयो, त्यांथी तेने दिल्ही मोकलवामां आव्या अने त्याग्वाद लाहोरना किलामां तेओतुं दगाथी मृत्यु थयुं × ए वस्तते पृथीराजनी साथे एक निषकहलाल नोकर हतो; तेणे गृप्त रीते वढवाण आवी पृथीराजजीनां राणीने खबर अ.प्या के आपना खाविंदने बादशाहे दगाथी मारी नंखात्र्या छे अने वखते आपना कुपारोने पण ए लोको हानि पहींचाडे एवं अनुपान थाय छे, माटे आप अई।थी निकळी अन्य स्थळे विदाय थाओ तो वधारे सारुं. आवा ज्ञोकजनक समाचार सांभळी पृथीराज-जीना राणीनुं हृदय अपार व्यायिने वहन करवा लाग्युं, सहन न थइ शके तेवी, दुःखरुपी दहननी

[×] पृथीराजजीने दिल्ही वोलाव्या इता, त्यांथी हळवद आवता शोशण मुकामे तेओने झेर देवायुं हतुं एवं एक जुनी नोट उपरथी जणाय छे.

ज्वाळाधी तेना तमाम अंगे तपायमान ययां. आ वात ज्यारे राज चन्द्रसिंहजीने काने गइ त्यारे तेओनां हृदयमां पण असब आधात थयों. तपास करतां राठोड राणी सत्यभामाए करेलो सघलो मपंच खुट्टो पड्यो. सत्यभामाना उक्त कर्तज्य उपर तिरस्कारने मद्दर्शित करता राज चन्द्रसिंहजी अत्यन्त कोधायमान थया अने तेनुं काळुं मुख कडी पण न जोवा हृढ संकरा कर्यो. पितनो वधती जनी इतराजीथी वखते विकट पिरणाम आवशे एम धारी सत्यभामाए कुमार आशकरणजी तथा अमरसिंहजीने उन्हेंचा. आगकरणजीना हृदयमां स्हेजस्हाज पितृभक्तिनो आभास होवाथी तेओए उक्त कार्यमा अनुमति आपी निह, परंतु न्हाना कुमार अमरसिंहजीए मातानां वचनने मान आपी पोताना पिताने मारी नाख्या; अने भ्होटा भाड आशकरणने वि. सं. १६८४ मां श्री हळवडनी गादीनुं आधिपत्य अपण कर्युं.

राज आशकरणजीए अमरसिंहजीने वार नाम सिंहत "मालक्ण" अत्युं. ए पहेलां नेजीना लघुवन्यु राजिसहजीने "कुडा" तथा 'शोलडी, 'राणाजी तथा भोजराजजीने सात गा-मधी "माथक" अने सुरसिंहजीने "वेगडवन्व" नो गराम मळ्यो हतो.

ज्यारे राज पृथीराजजीना मरण समाचार मळ्या त्यारे तेओनां राणी जाडेजी के जेतुं पीयर जामनगर ताबाना गाम जाउडामां हुनुं ते भयना मार्या कुमार सरतानिसहजी, राजाजी, बलुजी तथा उद्यभाजजीने लड पीताना दियर अमेराजजीने आश्रये गढयान आव्यां. ए समा-चार एळवदमा अमरसिंहजीने मळना तेणे "पृथीराजनी पितार हमत हो तो बयने हळवदनी गादीनों हक मेळववा हिम्मत धरशे " एम धार्ग नेतुं किंद्रन कर्या गढयान उपर एक रहोटी पोज मोकली ठाकोर अभयराजजीए पृथीराजजीना राणीते कहीं के—हवे हुं आपने अहीं राग्वी हार्काश निह, कारण के हळवदना मेन्य माथे मुकायलों करी धक्ते तेटला माणिना मार्ग पामे नथी। दियरना आवा दिल्लीमी मोलां बन्ता सांमळी पृथीराजजीना राणीतुं अन्तःकरण अन्यन्त पीडायुं, परंतु नेणे केटलाक समय अगाड चोटीला आणडपाना वाटी मूर्युंगोने राग्वडी वामी बन्यु मान्य हतीन्य एक माणम मोकली पोतानी दुःखनर दशानु दिख्डीन कगट्ये. काटी मुर्युनी होनेने

१ तन्त्र मुद्ध नामना बाडीए १०० रदार सदित अगरायी त्यां प्रार्वा पृथरानजीना परिवारने मदद आपी हती एवो लेख इंग्डोझ भाषामा लखार ठ वाक्तानेरना इतिहासमां छे.

मदद आपवा माटे तुरतज पोताना सोळसो घोडेस्वार छङ् गढथान आवी पहींच्या अने तेओए कु-मार सरतानसिंहजी विगेरेने निर्विधने जांबुडे पहोंचाडी दीघा. ए वखते जामनगरमां जाम लाखाजी राज्य करता इता. कुमार सरतानासिंहजीनी छम्मर पण सोळ सत्तर वर्पनी थइ इती, जेथी जाम-साहेवे तेओने म्होटी घामधूम साथे गढ इडर सर्वंघ करी परणाव्या. कुमार सरतानसिंहजी जाम लाखाजीनी कचेरीमां वेटा इना त्यां कोइएक माणसे मक्करी करी के नागी कटार उपर थाप मारे एवो कोइ राजपूत हरो ? आ शब्दो सत्मळतांज सरतानसिंहजीने शौर्य चढ्युं; तेओए एज वखते मुख्यर हाथ नांखी नागी कटारपर जोरथी थाप मारी, जेथी धकधकाट करती निकळेली रुधिरनी धारा वडे आसननो अग्र भाग भींजाइ गयो, परंतु ते तरफ छेश पण छक्ष निह आपतां वीरताथी छवाएली मुखमुद्रा वहे मूछपर मुकेला कठिन करथी यमराजनी सहोद्री यमुना समान ज्यामवर्ण-वाळी तीक्ष्ण तलवार म्यानमांथी तुरतज खेंची कहाडी. छघुवयमां भाणेजनुं आबुं भडपणुं जोइ जाम लाखाजीने अपार संतोप उपज्यो. कचेरीमां वेडेला सर्वकोइ स्तब्ध वनी गया. ए वखते क्रमार सरता-नसिंहजी वोल्याके-हज्ज तो मोसाळमां रही उदरपूर्ति करीए छीए परंतु जो कोइ यतुर्किचित् मदद आपनार मळे तो अमारो गएल गिरास पाछो शा माटे न वळे ? जाम लाखाजीए जवाव आप्यो के-तमे जे धारो ते करी शको, एनी मने संपूर्ण खात्री थइ चूकी तमारे शी मदद जोइए छीए ? खुशीथी कहो. जामसाहेबनी पोता मत्ये अपूर्व लागणी जोइ कुमार सरतानसिंहजीए एकहजार स्वारोनी मागणी करी, ए मागणीने जाम छाखाजीए प्रसन्नता पूर्वेक मंजुर राखी. कु-मार सरतानसिंहजी केटलाएक घो डेस्वारोने साथे एइ महान् हिम्मतथी हळवद उपर व्हारवडं खे-हवा छाग्या. ए अरसामां गढां आ उपर एक वांकानेर नामनुं न्हानुं सरखुं गामहुं हतु, तेनी अं-दर वावरीया अने महीया कोको आजुवाजुना मुख्कनो माल लूटी लावी अमलचेन उडावता हता. राजकुमार सरतानसिंहजीए पण तेओनी साथे मैत्री वांधी गढीआपर रहेठाण राख्युं. " विनाहा काले विपरीत बुद्धि " ए नियमानुसार एक दिवसे वधा वावरीयाओए तथा महीयाओए मळी कुमार सरतानसिंहजीने संहारी तेओनी तमाम मील्कतने स्वाधीन करवानो संकल्प कर्यो अने तुर-तमांज तेओने गढीआपर घेरी छीधा. पामर लोकोए रचेला प्रपंचनी खबर पडतां कुमार सरतान-सिंहजीए एक घोडेस्वारने सत्वर नगर तरफ खाना कर्यों, ए माणसे जामनगर पहोंची, जाम का-खाजी आंगळ सघळी हकीकत जाहेर करी, एज वखते जामे गढवी रोडीआ राजवीर साथे एक जबरी फोज सरतानसिंहजीनी मददे मोकरी आपी. जामना सैनिकोए अत्यन्त उतावळथी

गमन करी महीका तथा गारीआना मध्य प्रदेशमां पडाव नांख्यो अने गढीआपर कये रस्तेषी चढी शकार छे तथा कड़ तरफ तोपोनो मोरचो मांडवाथी गढने तुरतमां तोडी शकाशे चगेरे वावतोनो तपास कर्या वाद सिंधावदर तरफना विशाळ मेदानमां तोपोने वसावर गोठती गढीआपर गोळाओनो मारो शक कर्यो. अचानक उद्भवेळ देवी कीप समान तोपनी गर्जना सांभळी वेवाकळा वनेला वावरीआओ अत्यन्त क्षोभ पाम्या. जामना सैनिको स्वल्प समयमाज गढने छिन्न भिन्न करी गढीआ पर चढी गया अने तेओए वावरीआओने वीणी वीणी कापवा मांडया. त्यारे तेमांना वेटलाएक कंपते शरीरे इथियार छोडी वे हाथ जोडी वोली उठ्या के अमेने न मारो, अमारो अपराध माफ करो अने अमारो खरो धणी कोण छे ए कृता करी वतावो एटले अमो तेने परे पढी अपराधनी माफी मागीए. ए वखते रोडीया गढवीए रहेम लावो वचेला दावरीआओने अभयदचन आपी कर्छुं के आजथी राज सरतानासिंहजी तमारा धणी छे. जाओ, तेओने परे पढी माफी मागो अने हमेशां हुकम ममाणे वर्तन करो. वावरीआओ रोडीआ राजवीरना वखा ममाणे राज सरतानासिंहजीने परे पढी अपराधनी माफी मागी अने तेओने पोताना मालिक तरीके मान्य राख्या.

कोड एम पण कहे छे के राजकुमार सरतानसिंह जीए जामनी मददयी निह परंतु पोताना पराज्ञम तथा खुद्धिवळथीज वांकानेर स्वाधीन कर्युं हतु. तेश्रो वहवाणथी निकळी सीधा वांकानेर आव्या. वांकानेर ए वस्ते वावरीआना कवजामां हतुं. सरनानसिंह जी तथा राजाजीए ए वावरी आ लोकोने कहेवराच्युं के अमोने तमारा गाममां रहेवा आणी त्यारे ए लोकोए चोस्ती ना वहीं. जेथी सरतान जी पोताना कुटुंव सहित वांकानेर यी थोडे दूर तंवृश्रो ताणी गया. केटलाएक दिवमो वीत्या वाद सरनान जी तथा राजाजीए वावरी जा दोकोने वहेवराच्युं के अमोरे अमुक काम प्रममे अमदावाद जवानुं छे जेथी अमारा कुटुंवने तमारा रक्षण नळे गानी जटए तो जाळवशो के केम ? त्यारे वावरी आओए वचन आप्युं के जो तमारा कुटुंव उपर काड पण आपित आवशे तो अमोरे ने जीव साटे जाळवरों. सरनान सिंह जी तथा राजाजीन एन जोहतुं हतुं, तेशो पोताना हियाग वं माणसो महित जनानाना तंश्रमें छुपाया अने एक ह दिवसनो अंतर नांकी एवी अफवा उटाटी के—गह रात्रीए कोइ हरामसोरों अमारा उपर हुक्तो करवा आव्या का, अमो अही एकला रही धर्कीए एवं नधी. आ ग्वदर दावरी आओने मळता तेशो तुरनज मरनान जीने मुनामें आव्या अने तंहमां जनान स्वादं हरों एम जाणी नसामने मुलाजा पूर्वक गटी आपर लट गया; त्या मर्बने रहेवा तंहमां जनान स्वादं हरों एम जाणी नसामने मुलाजा पूर्वक गटी आपर लट गया; त्या मर्बने रहेवा

माटे एक सार्र मकान आप्युं. वनतां सूरो क्षत्रीओए मेदिनी मेळववा माटे सामे पगले युद्ध करी जयने माप्त करवो जोइए, परंतु ते क्यारे के ज्यारे पोता पासे वधती या ओछी सैन्य विगेरे साम्प्री होय त्यारे आपित्तना वखतमां तो गमे तेवा छळमेद वगेरे उनायो योजीने पण कार्यसिद्धि करवानी छुँट छे एम धारी सरतानसिंह जी तथा राजाजीए साथेना माणसो सिहत खुड़ी समझेरे अचानक उताराथी वाहेर निकळा वावरीया तथा महीया छोकोमांना जे पुरुषो अग्रगण्य हता तेओने झपटथी कापवा मांडया। धोळे दिवसे घाड पडो होय तेम वावनीआओना शारवकोरथी गढीआनी सूमि गाजी उठी, सरतानजी तथा राजाजीनी कठिन कुपाणोए ह्या वाळक तथा द्रद्धोने अभयदान आपी घणा खरा कुटिछ जनोनो कचरघाण वाळी नांख्यो। हृदयभेदक हाहाकारथी गढीआपर रहिनारी गोरीओ पोतानी अवनितने मकट करवा छागी। आजुवाजुना मदेशमा छुंटफाट आदि घानकी कुत्यो करनार वावरीआ छोको ने गढीआना आश्रयथी निर्भय वनी सुखे जींदगी गुजारता हता, े गढीआ पर राज पृथीराजजीना कुपार सुरतानसिंह जीए वि० सं० १६७० मां पोतानी स्वतंत्र सत्ता स्थापी. *

ए समये शरद्क्तुना सुंदर दिवसो समान्ति मान्त थया हता, हृदयनी हिम्म ने तजावनार हिमंत ऋनुनो समय शीतल समोरनी सहायताथी धाममां वेठेला धीर पुरुषोने धुजाववा
लाग्यो, प्रवीण दंपितनी मित काममां मेरावा लागो, सुशोमित शय्या पर त्रयाम विना शयन करनारी स्त्रीओ भारे संकष्ट भोगववा लागी,तृणना समुदाये नवपळ्ळवने धारण कर्या, लोधनां हुशो परम प्रशंसनीय प्रकाशने प्रान्त थयां, सरो जना समूह शुष्क थवा लाग्या, विरहिणी अंगनाओनां अंतः करण उदासी
नतान वहन करवा लाग्यां, परिवनव थएल इक्षुना दंहरुषी धनुष्यने करमां धारण करी हिगंतरुषी हुशीले राजा पालारुषी पणळवाळां वाणवहे वियोगीओनां उरने वींथवा लाग्यो, दिवस लघु थयो, रजनीए दीधताने धारण करी, भामिनीओ यापिनीने एकान्तमां विताववा लागी, संयोगिणी स्त्रीओ साहिननी सुरुख शय्या विलावी विविध कीडाओ करवा लागी, आलिंगन अने चुंवननां अपधी शरीर प्रस्वेद छवाइ जतां टाढनो लेश मात्र भय न रह्यो; पीन स्तनवाळी प्रमदाओ कुचकुंभ माथे कुमकुमनो लेप निह करता, क्रोलपर कर्पूरनुं चूर्ण निह धरतां, कुन्दननी माळाने कायाथी अलग

<sup>श्र राज सरतानजीए वांकानेरनुं राज्य इ० स० १६०५ वि० स० १६६२;मा स्थाप्युं

एम पण कहेवाय छे.</sup>

करवा लागी; कोक (पती विशेष-चकवा चकवी) नां हृद्य शोकथी छवाइ गयां, दुष्ट जननी माफक क्रूर वनेला कलानिधि दीनजनो उपर तलवार समान तीक्ष्ण रिमञाने मसारतो विचरवा लाग्यो, पर्यक्तनी अंदर पतिना अंकमां पडेली ललनाओ जीवनतुं साफल्य लेखवा लागी, विर-हिणी वनिताच्या दशे दिशाओंने दुःखनय देखवा लागी, अमीर लोको आछां वस्नोने अलग करी पश्मीननां परिधानो पहेरदा लाग्या, सुधागी दंपतिना समूहमा परस्पर अत्तरना केप धना ल.ग्या, धान्यना ममुदाययी सुसमृद्ध धपेली पृथ्वीपर हरिणनां यूत्यो हर्पथी फरवा लाग्यां, क्रांच पसीनां सुंदर ज्ञान्दो सर्वत्र श्रवणे पडवा छाग्या, अगरना घूप अने मृगमदना सुगन्वयी अनंगनी रुद्धि करनारी नेमन गाढ नितंबने वारंबार विज्ञाल बख्नथी आच्छादित कर्या छनां रतिकीडाना रंगमां नम्नएणाने शात पती प्रपदाओं पवनतुं गपन न थइ हाके एवा भवननी अंदर स्वेहाळ पतिनी संगे रमण करी दिमंत काळे महद हर्पथी म्हालवा लागी; पद्मना पुंजधी प्रकाशमान, मरालना मनोहर डचारपी शब्दापपान अने दिपल वारिथी विराजनान सरोवरनी श्रेणि इपापविरहिणी स्त्रीओना ररःरघलमा शर समान सालवा लागी; नाथ माधे निरंतर वपनारी विलासिनी वनिताओ कमनीय दरमांथी वंजना वलय दहाढी नांखी रिन टाणे पनिए ममलेला उन्नन उरोजने ढांकरीं अवर्णनीय आनंद अनुभवरा लागी, हीरा तथा मुक्ताहारना भारनी अम्बीकार करती केटलीएक मुग्य वयुओ द्राक्षास्त्रना पानधी प्रमत्त वन्या छतां केलि समये मुख्यी नकारने जहारवा लागी, केटलाएक र-सिवा पुरुषो अत्तरथी तरवतर बनी वर्षकपर पोनानी वियतमाने पराणे पाडी परम्पर परिरंभणमां पार नगरने। प्यार प्रसारवा छाग्या; रनिरंगपा पतिना दर्शनथी कग्टाएळ कपोळपाळी, विगछिन कचबाळी अने रितना अमधी अमित थवाने छी रे मन्ड गितथी गमन करनी केट शिएक नवोदाओंने िरखी विरहिणी बामाओं विशेष व्याक्तळताने वहन करवा छागी, कंजना छन्दो करमाइ गयां, नि-गुजनी मजरी थोत तूर उटी गयुं, मकरन्दना विनाशधी वैगायने वे ला मयुक्तीर मीन दृत धारण वर्य, रिमने लीवे पत्रीनो मकाश हगइ गयो, शीनवी अन्यन्त अकळाएला पक्षीओ पण प्राणनो परित्याग करवा लाग्यां. मुर्या हीओना रवन नया जंपस्थलना अप्र भागमा भगण्युं शत्य गति-ए रितनः भयधी भागी वियोगीयोना अगनी आश्रव देवा छाग्द्रं, हिमंतना वायुधी वारंवार हन्ही रहेटी षियंगुलना निरही जनोना विरह दुःखने पोनाना हद्यामां याग्य करी दिवसे दिवसे पीळी पटवा लागीः तुलभीना इन्दर्श मुरोभित इरीम्बादो अनंगना इनंगमा हृष्टि कमनागे पातानी महत्तावी मित्रना नेजने मन्द रनावनागे। गुंजाना पुंजधी अपकृत आवाळो, ज्ञीतळ स्वभाववाळी अने मप्र-

रना पींछने मस्तके धारण करनारी हिमैतकाळ रमाकान्त जेवी रमणीयताने कीघे सर्वत्र पूज्य द्शाने माप्त थयो. ए हिमंतकाले वालवयमां न एवं सामर्थ्य वताच्युं के म्होटा म्होटा शूरवीरोने पण क्षणवार-मां शैत्यरुपी अमोघ श्रत्वथी शिथिल वनावी दीधा, शीतळ समीरना पार्यी समग्र सृष्टिने कंपाववा मांही त्यारे केटलाएक विरहीजनो एवी कलाना करवा लाग्या के आ हिमंतकाळ नथी, परंतु वि-क्राळ पिशाच होय एवं जणाय छे; कपळना समूह सुकाता नयी, परंतु आपणां सुखोन मुकाय छे; शरीरने सकम्प करनार शैल नथी, परंतु भयनुं आधिक्य होय एम भासे छे; कप्टबर्धक क्रींच पतीना उचार नथी, परंतु हृदयभेदक प्रतिपक्षीना शब्द होय एवी प्रतीति थाय छे. आ रीते तर्कनी तरंगिणीमां तणाता वियोगीओ वालहिमंतने राजी करवा माटे पावकरुपी रमक-डांओनी भेट आपवा लाग्या तोपण तेतुं हृदय सदय न थयुं; संयोगीओने सुख देनार अने वियोगी जनोना जीव छेनार हिमंतकाळे चन्द्रनी उन्नति करी, सूर्यनी कळामां क्षीणता धरी, वारिजना वृन्दमां उदासी भरी, समृद्धिवाळा पुरुषोने सुखनो राशि समर्पण कर्यो अने दीन जनोने दुर्घट दु:ख देवा गांडयुं; पोतानी मभुतामां पुण्यना विचारने परहरी शय्यारुपी सिं-हासन पर चढी विरही जनोने दंड देवा तत्पर थएका हिमंत अने मन्मयरुपी उभय महाराजाओ विलासनी वधाइ वखते जावकनां तिलक, नूपुररुपी गायकनां गान अने अलकरुपी चमर वडे स-सेवित वनी एकी साथे एकज रजाइनी अंदर राज्य करवा काग्या; शीतनी सत्ता दिगन्त पर्यन्त पसरेली होवाथी सूर्यनां किरणो सुखकर जणावा लाग्यां, रजनी रुपाळी अने दिवस दरिद्री जेवो देखावा लाग्यो, वायु वेगयी वावा लाग्यो, संतपुरुपोना चित्तमां चे।गुणी चंपलताए वास क्यों, सुभागी जनो गरम मसालाओ तुं सेवन करवा लाग्या; ज्यारे हिमंतकाळ भर यौवनने माप्त थयो त्यारे हमामनो तमाम दमाम निर्धक बनी गयो, केटलीएक अनाथ अवळाओ रेश-मनी रजाइमां छानी रीते छुपावा लागी, अनलनी अंगीठीने उर्खा अलग न कर्या छतां हिमना भयथी वेभान अवस्थाने अनुभवती अंगनाओ विदेशमां वर्ळुंधेला नादान ना-थने निन्दवा लागी, परस्पर सुरापानथी प्रमत्त वनेल पुण्यज्ञाळी दंपतिए चुंवन, आलिंगन अने रितरंगमां हिमंतनी रातिओने अमन्द आनन्दथी निर्ममन करी।

जो के राज सरतानसिंहजीए गढीआ उपर स्वतंत्र सत्ता जमावी ए एक रीते आनंद पा-मवा जेवुं हतुं, पांतु हिमंतमां तेओ रंच पण सुग्वने माप्त करी शक्या नहोता, कारणके मनोहर मेह-लने बदले गढीआनी अंदर जे उवाडी ओसरीवाळां भांग्यां तुट्यां गृहो हतां तेमां शीतळ समीरना आघातथी थरयरते अंगे मात्र अग्निनी सहायनाधीज आठे महर वितावता, शाल दुशालाने बदले कामळाओधी रात्रिना वखते समग्र अंगोने क्षेटी राखता, पर्लंगने वदले सींदराओथी भरे-ला वांकार्चुका खाटलामां पड्या रहेता, मखतृलना विछानाने वदले मलिन गोददीमां महामुशीवते निद्रादेवीतुं आराधन करताः; अत्तर, अरगजा तथा मृगमद आदि सुगन्धी पदार्थोनो ए म्थळे अभावज हतो, हांडी तथा झुमरने वदले जोइए त्यां छींकाओनी अंदर मृचिकानां हांडलाओं लटकतां हतां; हासासवना दर्शन पण दुर्रुभ हतां त्यां माधवी मद्य तो क्यांथीज मळी शके? ज्यां जुवार वाजरीना चक्कर, इंगळीना दहा अने साधे जाही पातळी छाशना घुंटहाओथी पेट भरी जींदगीने गुजारनारा वावरीआ जेवा जंगली लोको रहेता होय, त्यां उत्तम प्रकारना अन्ननो जत्थो कोण एकटो करी राखे? राज सन्तानसिंइजीए धीमे धीमे गढीआपर सर्व वस्तुओनो संग्रह करवा मां-ड्यो, जेम जेम आमदानीमां रुद्धि धती गइ तेम तेम तेओ राजकीय वैभवोने वधारवा लाग्या. जो के तेओना प्रचंड प्रहारयी वादरीआओ तावे थइ गया हता, तो पण तेमांना केटलाएक महीया लोको मोरवी तादाना ज्ञादुळका नामना गाममां रहेठाण राखी वारंवार वांकानेरना मुळकपर हु-मलाओ करता इता. कहे छे के-राज सरतानसिंहजीए तेओने जडमूळथी उखेडी काढवाना इरा-दाधी जुनागढनी मदद मागी, परंतु ए मागणी तहन निष्फळ थइ त्यारे जामनगर माणस मोकल्युं. जामसाहेवे कल्याणजी नामना चारण साथे वारहजार घोडेस्वारोतुं ळज्ञकर मोकली आध्यं. ए ल-इकरनी सहायतायी राज सरतानसिंहजीए शादुलका उपर चढाइ करी. महीया लोको मरणोया दनी धींनाणुं करवा तैयार धया; परंतु स्वल्प समयमा ज राज सरता निसंहजीए समशेरना सपाटाथी शादुलकाने स्वाधीन करी लीवुं अने पाणपातक हारने लीधे भयभीत बनी भागेला महीया लोको जुनागदना प्रदेशमा ३इ वस्या.

त्रिशृंलीनी माफक त्रिशृंलधी घेराएला राज सुरतानसिंहजी चालाक, पराक्रमी तेमज साहसिक होवाने लीधे महीया लोकोने मात करी एक शुळधी तो मुक्त थया; वाकीना वे शृळमां-

१ त्रिश्ट्यी-शंकर, त्रिश्टल-(शस्त्र विशेष) ने धारण करनारा अथवा विष, अग्नि अने सर्ष ए त्रण श्रुटने क्रम पूर्वक कंट, भारू अने उरास्थळमां धारण करनारा १ प्रतिपक्षी वनेला महीया लोकोने पराभव आपवो, हळवदने हाथ करवानी चिन्ना अने वांकानेरना उज्जड मुलकने आवाद बनावी तेमां हिंद्ध करवी ए त्रण शृष्ट-त्रिश्ट.

यी हळवदने हाथ करवानी चिन्तारूपी गूळ महान् मजवूत हतुं, जो के ए गूळनी जीव्रताथी जानित थाय तेम न हतो, तो पण महान् ग्रूरवीर सुरतानांसहजीए हळवदना प्रदेशमां उपरा उपर हल्लाओं करवा मांडया। एथी मनधायों लाभ तो न मळ्यो, परंतु त्यांना राजसाहेवनने एटळी तो खात्री थइ के राज सुरतानांसहजी वैरनो वदलो वाळ्या विना किद पण छोड़ शे निह, बहुज टाहने लीधे राज सुरतानांसहजीए थोड़ा वखत हळवद नरेशने हेरान करवानुं काम बंब राख्युं हतुं.

हिमंतनो अंत थतां शिशिरनो समारंभ यइ चूक्यो, धरणीपर घान्यनां क्षेत्रो खीळी नि-कळ्यां, इञ्चना समुदायथी सृष्टिए अपूर्व सीन्दर्य वारण कर्यु, कौंच पश्लीओना कळित कोळाइलथी दशे दिशाओं शब्दायमान थइ, व्योमथी हिमनी दृष्टि वरतवा लागी, प्रवासी पुरुषो पातपोताने घेर आवी पहोंच्या, तमाम ज रोए विदेशगमननी वातोने तजी दीवी, सर्व कोइ कामोदीपनना सा-धनो सजवा लाग्या; ज्ञानीओनां ज्ञान, ध्यानोओनां ध्यान अने मानीओनां मान एकी साथे छूटी गयां; मेंखेंमें छनी सेजमां विशाल दुशां छाओ ओढी शयन कर्षा छतां शीतना पावरयने छीवे मुखमांथी सीसकारा निकळवाँ लाग्या, चंदनना लेप अकारा थइ पड्या, चन्द्रना किरणी पण चित्तने भय-भोत वनाववा लाग्यां, उरमां दरद उपजावनार शरद समीरना सवाटाने लीवे हर्म्यना पृष्ठ भाग पर क्षण मात्र पण शयन करी काकाय एवं न रहां, वासरे वामन रुप धारण कर्यं, यानिनीए अति दीर्वतानी अंगीकार कर्यो, दादुर अने चार्तेक आदिना उच्चार वंग थया, मकरन्द्रनां उत्तव भा-जनो अलग थवाथी वैराग्यवान वनेकी माध्यीलताए विश्वना अतित्य वैभवोथी मनने वाळो छीदुं, ज्ञीतळ जळनी अंदर मीन आदि जन्मुओ मुंझावां लाग्या, हिनथी अफळाएळा हंसो विलासनी वातने विसरी गया, छरापानथी मदंगांती वनेकी छुभागिणी स्त्रीओ वियतमनो छातीथी छाती छ-गावी शिशिरना आठे याम उनंगथी विताववा लागी, निर्वात क्रिटीमां निवास करनारा, उष्ण द्वि-पटीने ओढनारा, घृत घटीनी साथे गर्गागरम क्षिप चटीना खानारा, निर्धृम अग्निवाळी शकटीने निरंतर सेवनारा अने नवपरिणीत वबूटीनी कटि तटीबी छपटी रहेला रहेरी नायकोने शिशिर कार्ळ परम सुखदायक थइ पड्यो, ए शिशिरनो सवळो समय राज सुरतानासँहजीए विविध सुख वैभ-वोधी वितान्यो, त्यारवाद तेओ फरी इंळवंदपर हुमलाओ करी राज अंगरेसिंइजीने ' इळवद हाथ रहेशे के नहीं " एवी शंकामां निमन्न करता, तेनी साथे वांकानेरनी आसपासना घाडपाडु काठी लोकोने मारी जेर करी तेओनां गामोने तावे करता. लगभग त्रण वर्ष पर्यन्तना सतत पयत्नथी पोतानी रीयासत ठीक देखाय तेटलो मुलक घेर करी राज सरतानसिंहजीए राजधानी योग्य एक



नवुं शहेर वसाववानो मनोरथ कर्यो।

ए अरसामां वचनसिद्धिवाळा कोइएक त्रण महात्माओं (एक मलंग फकीर, वीजो अ-तित-गुंसाइ अने त्रीजो रामानंदो साधु) भिन्न भिन्न दर्शनना होवा छतां ग्रुद्ध भेमयी साथे वि-चरता इता. फक्तीरतुं नाम महमदशाह, अतीततुं नाम दरजनपरी अने साधुतुं नाम वनमाळीदास हतुं. एर्डूबणे पूर्वाश्रममां जातिए ब्राह्मण अने एकज पिताना पुत्र हता. पूर्वना प्रवळ संस्कारने लीधे दैगाँग्येवांनं दनेलाँ ए त्रणे वन्युओ जुदा जुदा धर्मनो अंगीकार करी घेरथी चाली नीकळेळा. प्रधम तेओ अमुक ब्राह्मणने पता तरीके मानता; परंतु पछीथी परमक्रुपाळु परमेश्वरने विता तरीके मानवा लाग्दा. ए रीते मात्र वितानी अने जातिनी मान्यतामां फेर पड्यो, परंतु तेओना भ्रात्भावमां जरा पण न्यूनता जणाती न हती. एक दिवस ए त्रणे महात्माओ फरता फरता गढीआपेर रहेळा वाकानेरनी स्पज्ञानभूमियां आवी उतर्या. साथेना शिष्यो धूणी मांटे छाकडाओं छेवा निकळी पडया. ऍ वखते चोमासाना दिवसो होवाथी वरसाँद पुष्कळ वर-सतो हतो. ए यहाँन्माना, मंडलना आव्या पहेलां कोइएक सोनीनी दिकरी मरी गएली हती तेने अग्निसंस्कार करवा आवेळा माणसो वरसाद्ने ळीघे अग्निसंस्कार न करी शक्या, रात्री पडी गइ, वाँघे वरु आदि हिंगक पाणीनो वधारे भेंगे होवाथी ए स्थळे रात्रीने वखते रही शकाय एवं न हतुं; जेथी ए लोको शबने एक म्होटा द्वक्षनी डाळ साथे मजबूत बांबी मभाते अग्निसंस्कार कर-वानो निश्चय करी गढीआपर चाल्या गया. महात्माना शिज्यो काष्ट्रती शोत करता करना ए वृक्ष नजीक आन्या. ए बखते बरसाद रही गयो हतो, आकर्ति स्त्रच्छ थनां चन्द्रमाए दर्शन दीधां. हक्ष डेंपर कांइ धोर्कु घोर्कु जोवामा आवनां ए सुकाइ । गएकी ज्ञाखा हरो एम धारी तेने तोडवा मांटे महात्माना शिष्यो उपर चड्या, त्या तो ए भव छे एम धारी मंद्रेळा थोडा घणां लाकडाओ लइ पाछा बळ्या अने गुरु पामे शब सबंधी बबात करी, जेथी दयाळ अन्तःकरणवाळा ए त्रणे महात्माओं त्यां गया अने मसुनी पासे मार्थना करवा छाग्या ज्ञाव एन वखते सनीवन थयुं, सजीवन थएटी बाइ रात्री, जंगल तथा विचित्र वेपना साबुओने जोड़ रटेंचा छागीर् महात्माओए ए, वार्ने तेनां मात्राप वंगरेना नामथी वाकेफ धड़ पोवाना शिष्यो साथे गदीआपर मोकर्टी आपी. मरण पामेर्टी छोकरी साजीनरवी घेर आवतां सोनीओने आधर्य तेमज इर्प थयो पुत्रीना मुखयी महात्माओ सर्वयी चमत्कारिक वान सांभर्का सवार थतांज सोनी औए सुरतानिसहर्जी पासे ए वान करी. परम श्रद्धाळु राज सरतानिसहर्जी पोताना समग्र माणसो सहित तुरतज ए महात्माओना दर्शन करवा पधार्या, त्यां जइ त्रणेने परे पहया. मलंग फकीर शाहवावाए राजसाहेवना मस्तक पर हाथ मूकी कहां के—वेटा छत्रपति ! आनंदमां रहो. आ वाक्य सांभळतांज राज सरतानिसहजीने शाहवावा माथे विशेष श्रद्धा वेटी. कारण के पोते वहु सादा पेशाकथी घणा माणसो सहित त्यां पधार्या हता, छतां ओळखी काड्या. शाहवावाना मुखयी आशीर्वाद सांभळी राजसाहेव वेाल्या के—महाराज! छत्रपति हतो, पण हाळ तो घरधणी छुं. शाहवावाए कहां के—तुं छत्रपतिज छे, हुं तारा उपर प्रसन्न छुं. राजसाहेवे ए त्रणे महात्माओने आग्रह पूर्वक गढीआपर छइ जइ केटलाएक वखत सूधी रोक्या.

गढीआपर रहेला वांकानेरमां दिनप्रतिदिन वस्तीनो वधारो थवाने लीये टेकरीपर तळाव-तुं पाणी तमामने पुरुं न पढी शकवाना सववधी राज सरतानसिंह जीए शाहवावानी सलाहथी इ—स. १६०५, वि—सं. १६६१ मां मच्छु नदी तथा पताळीआ नामना वोंकळानी वच्चे वांका-नेर नामनुं निवन शहेर विधिवत् वसाव्युं अने राजकुटुम्बने रहेवा माटे एक दरवारगढ पण वंधाव्योः हळवदना केटलाएक लोको के जे राज सरतानसिंह जी तरफ वफादार हता ते तमाम वांकानेरमां आवी वसवा लाग्या. घणीज झडपथी शहेरनी आवादी थवा लागीः फकीर महमदशाह पण सर-तानसिंह जीना आग्रहथी गाममां दरगाह वंधावी रह्या, राज तरफथी तेओने गाम अरणीटीवामांथी अमुक गरास आपवामां आव्योः ए उपरांत महात्मा महमदशाहने गोंडल, मोरवी, राजकोट, ज्ना-गढ, जामनगर, अने भूज वगेरे स्थळेथी केटलाएक लागाओ मळवा लाग्या के जेनो अद्यापि उ-त्तरोत्तर क्रमधी थता आवता तेओना शिष्यवर्ग उपभोग करे ले. रामानंदी साधु वनमाळीदासने खीजडीयामां गरास मळ्यो, जेथी तेओ त्यां जइ रह्या, हजु पण खीजडीयामा वावावाळी पाटी एवा नामथी अमुक जमीन ओळखाय ले. त्रीजा महात्मा गुंसाइ दरजनपरीने पण राजसाहेवे अ-मुक गरास आप्यो हतो, परंतु हाल एनं कांइ नाम निज्ञान जाणवामां नथीः

राज सरतानसिंहजी जेवा जूरवीर तेवाज उदार हता, आसपासना मुळप्तमां तेओनी हाक बोळाती, देश विदेशमां तेओनो सुयश गवावा ळाग्यों काठी ळोको तो राज सरतानिहेंहजीनुं नाम सांभळतांज कंपी उठता. ए अरसामां मोरवीनुं राज्य गोरी मुसळमानोना कवजामां हतुं; त्यांना सूया नवाबखाननो कारभारी एक काळु जोशी नामे सारस्वत ब्राह्मण हतो, तेने त्यां घणीज रुष्टपुष्ट एक गाय हती. ए गायने सूवा नवाबखाने काळु जोशीनी गेरहाजरीमा तेने घेरथी छोडावी अने पोताना खावाना उपयोगमां कीधी; घेर आवेळा काळु जोशीने ए खबर मळतां तेना हृदयमां क्रोधनी ज्वाळा प्रगट थइ, एणे ओन वत्ते एवी प्रतिज्ञा करी के " ज्यांसुघी गोरी वादजाह राजगादीपर होय त्यां सुधी मारे मोरवीतुं पाणी हराम छे " ए रीते विपम प्रतिज्ञा लड् चाली नीकळेला काळु जोशीए वांकानेर आवी राज सरतानसिंहजीने कहां के चालो, तैयार धाओ, हुं आपने मोरवीनुं राज्य निर्विध्ने अपावी दुउं. राज सुरतानासंहजीने तो ए वात रुची, परंतु वीजा अमीर उपरावोए नम्रता पूर्वक अरज करी के नामदार! आपणे इलवद सर करवानी तैयारीमा छीए, त्यां वखते पांच माणस ओछां धशे तो ए खोट तुरतमां पूरी पडी शकशे निंह, माटे हाल ए वातने पहती मुको, हळवढ लीधा पछी मोस्वीनो कवजो लेवो ए कांइ म्होटी वात नधी, कारणके ए तो आपणा खडीयानुं शीरामण छे. राज सुरतानसिंहजीए उमरावोनां वच-नने मान आपी मोरवी जवातुं मांही वाळ्युं. निराश वनेलो काळु जोशी पाछो फर्यो. ए अरसामां कच्छ भूजना मूळ पुरुष जाडेजा खेंगारजी तथा साहेवजी नामना वन्ने वन्युओ अमदावादना वा-दशाह महमद्वेगहाने पातानी अवर्णनीय वहादुरीयी मसन्न करी राओनो इककावी मेळवी मार-वीनो पट्टो लड़ लड़कर सहित त्या आदी पहोंच्या. परंतु नवावखान महमदवेगडाना हुकमनो अना-दर करी लढवा तैयार थयो. ए वखते काळु जोशीए समयसूचकता वापरी शहेरना दरवाजाओ खोलावी नाख्या अने राओश्री खेंगारजी हैन्य सहित अंदर दाखल थया अने नवावखान तथा तेना छुटुंबीओने कतल करी मोरवीना मालिक वन्या. ए वखतथी मोरवीनुं राज्य जाडेजाओना बादजामां आव्युं. ×

राज सरतानसिंहजी मात्र वाकानेरनो तालुको वांधीनेज संतुष्ट न थया, रात्रि दिवस हळ-वदने सर करवानी तैयारीओ करनाज हता, तेओए ज्यांसुधी हळवद सर न थाय त्यांसृबी परणती वरटने चोधो पेरो न फरवानी प्रतिहा लीधेली हती एनो आगय ए हतो के ज्यांस्बी अपारी वा-पुती राज्यलक्ष्मी अमोने मळी नधी, त्यासूधी अमारुं परणेतर अपूर्ण छे.

राज सरतानसिंहजीने वे राणीओ हतां. एक जामनगरनां जाम जसाजीनां कुंवरी अने

[×] राज सुरतानिमहर्जी तथा राओ ग्वेंगारजीना समयमां घणो तफायन छे, एयो सम-कालिन हता एवं सिद्ध यह हावतुं नधी, एरंतु " आटकाटनो डांडीओ, सीसमनी मोइ: हळवद लेतां. मोरवी खोड़" ए पुरानन कहेवनने आयोर उपरनी हवीकन केट लेक अंगे साची होय एवं अनुमान थाय छे.

वीजा इडरना राठोड राजा वीरमदेवजोनां कुंबरी, जाम जमाजोनां कुंबरोए मानसिंहजी तथा राम-र्मर्सिहंनी नॉर्मना 'उभय कुपारने जन्म आप्यो ए जाडेनो राणी उपर राज सुरतानसिंहनीनो विशे-ूप भेमें दोवाने छींधे राठोडराणी प्रतापवा उर्फे पाणकुंवरवा वि-सं, १६७६ मां पोताने पीयर जइ हुरह्यां स्विरिवाद छगंभेग त्रण वर्ष पछो राजसाहेत्रे वातानां केटछाएक विश्वास माणसो साथे टापरी-चर्जी गढ़ेवी नाकाने इंडर्र मनांमेंणे मोकल्या, ए तमाम छोकोए इंडर पहींची त्यांना राठोड राजाने पत्र ্রিआपी कीं के-अमारी राजैंसाहेव आ वलते अनंत उपाविओमां छे, तेमां आवी गृहक्ळेश थाय ए सार्र हुँनिहि₊ इडर,नरेशे उत्तेर अप्पोि के तमारा राजसाहॆवनी अनंत उत्ताविओने अळगी करवा हुं वचन ्रिंओं एं छुं, पण एक वर्वित राजसाहेव मारे त्यां प्यारे नाका गढवीए क्युं के-आप पत्र छखी आ-ूपो तो हुं पाछो जह रोजैसाहेबने बोछाबी छाबुं, आपथी अमारे हुं बबारे छे ? इडर नरेशे पत्र हिल्ली आप्यो, जेथी,नांकी गढवी वगेरे तमामं मागता वांकानेर आव्यां. नाके एकान्तमां राजसाई-्रियने पत्र आपी कर्युं के-आपणो घणा दिवसनो इळवद सर करवा संशी मनोरथ तुरतमां फळे एम 🛂 छे, कारणके इटर नरेश पोतातुं मवळ सैन्य मददे मोकळशे तो आपणुं इच्छित तुर्तमां मळशे; [िमाटे कंइ पण विचार कर्यो विना मुर्हुत जोवरावी तैयार थाओ. राजसाहेव खुशी थया अने राज्य ्रिंच्योतिपीने वोळावी मुहूर्त जोवराव्या वाद म्होटा ठाटमाठथी गामथी जरा दूर पस्थान करी पडा-व नांख्यो. राज सुरतानसिंहजीनी इज़ुरमां एक नाका नामनो कारडीओ रजपूत हतो, ते राजसाहे-चने दारु पावानी नोकरी वजाव शे हतो. राजसाहेवे पडावमां पहींचतां दारु पीवाने। वखत थवाथी 🖆 निकाने वोळाव्यो. नाको दाँरु साथे छावतां भूछी गयो इतो एथी राजसाहेवे गुस्से थइ कर्षुं के-′∍आबी म्होटी भूल केम करी ? नाके ज़ुवानी तथा जाडी बुद्धिना सबवयी जवाव आप्यो के–वे घडि हिमोडो पीवाय तो श्री इरकत छे ? इमणा छइ आबुं छुं. आ शब्दो सांभळी राजसाहेवने विशेष क्रोध हिंच्याच्यो अने तेओए पोताना हाथमा रहेळ घोडाने हांकवाना कोरडा वती नाकाने मारवा मांडयो; विधा अमीरो आडा पड्या. नाको इलकी बुद्धिनो इतो ए अमीर उपरावो छतां तेना उपर राजसाहेबनी महेरवानी होवाने लीधे कांइपण नहि. पण आ वखते नाकानी आंख फरेली जोइ अमीरोए राजनाहेवनी आगळ अरज करी के नामदार! आ वखते नाकाने दारु छेवा मोकलशो नहि, एनी अवेजीमां वीजो जाय तो सारु. राजसाहेचे हठे भराइ कद्युं के, निह, एज जइने छइने आवे, नाको तुरतज पाणीदार घोडीपर चढी वांकानेरने वद्छे हळवद तरफ चाली निक्रव्यो इडस्थी आवेळो कागळ राजसाहेवे वांची

पातानी हाथपेटीमां मुकवा आपेलो ए नाकाना गनवामां न हताः; जेथी नाको पोताने मार मार नारने ख़ुवार करवा हिम्मतवान वन्यो हतो. वे त्रण कलाक थया छतां नाको न आव्यो, जेथी राजसाहेवे क्रं के इज़ दारु केम न आव्यो ? त्यारे अमीरोए जवाव आप्यो के, नामदार ! इवे नाकानी साथे जुदाज प्रकारनो दारु आवशे. गुस्सो उत्तरवाथी राजसाहेव वधुं समजी गया, तेओए पोतानुं हृदय वज्र जेवुं होवाथी भयभीत निह धतां कछुं के जेवो आवशे तेवो भरी पीछुं, निपकहराम नाकाए इलदद पहोंची अमरसिंहजीने इंडर नरेशनो पत्र वंचाल्यो अने कद्युं के, जो तमारुं हित इच्छता हो तो आज घडिए छन्नर छट राजसुरतानासिंहजीनी सामे प्रयाण करो, कारण के अत्यारे तेओ-ना पासे माणसो थोडा छे अने पछी जो इडरनी मदद तेओने मळी तो तमारुं इळवद हाथ रहेवुं क्ठिन छे. राज अमरासिंहजीने ए वात योग्य जणातां तेओए तुरतज फोजने तैयार करी अने वांकानेरनो इदमा आवी भीमगुडानां होर वाळ्यां. गायोतुं धण वाळतां राज सुरतानासिंहजी वार कर्यो विना रहेशे नहि एवी अमरसिंहजीने खात्री हती. तेमज धयुं. हळवदना माणसोए भीमगुडानी अंदर घासना वाडाओ इता तेमां आग लगाडी, आहीं राज सुरतानसिंहजी गगनमंडळमां दृष्टिगोचर थता धृस्रने जोइ तेनो तपास करवा स्वारोने मोकलता हता, तेवामां भीमगुडानी रैय्यते आवी पु-कार वार्यों के इळवदना माणमोए काळरना वाडा सळगावी ढोर वाळ्यां छे. ए शब्दो सांभळतांज राजसाहेवे अध्वने सज्ज करवा आज्ञा आपी. अमीर उमरावो वोल्या के आवा मांगलिक कार्यना मयाणमा उपाधि करवानी आवज्यकता नधी, कारण के ए होकी आपणी सामा आव्या नथी, चोरनी मापाक होर वाळी चाल्या जाय छे, तो जवा दो, पछीथी जोइ लड्गुं. छतां राजधर्मधी रंगाएला सुरतान(संहजीए बह्युं के, अमे गोबाह्मण प्रतिपाल कहेवाइए छीए तो अमारे प्रथम एतुं रक्षण नारवुं जोइए. राजसाहेवनी तैयारी मांगलिक काये प्रमंगे जवानी हती, जेथी सर्व कोइ दर-दागीना तेमज जरीयन बल्लोंने अंगपर धारण करी निकळेला इता, युद्धने अनुकूळ एके सामग्री न होवा छतां दरेक धणीना हुकमने माथे चटावी हळवदनी फोज पाछळ षया. माधर अने ओळ वचे सभय पक्षनो भेटो थयो. वांकानेरना माणसो स्वल्प छनां एसलोहीआ, संपीदा नेमन बहादुर होबाची आगळ वधना गया. नेओए सैनिकोने मारी कापी माथक सृथी हाकी काड्या. ए झपाझपीमा मृळीना मेपजी मराया हळवद्तुं लक्कर हार पार्मा पोताने म्थाने जतुं हतुं, तेवामां मूर्ळाना परमार सतोजी के जे हूंटफाट उपर पोतानो निर्वाह चठावता हता अने पांचमो घोटाथी

फेरो करवा निकळेळा इता ते भावियोगे इळवदनी फोज भेळा थया. राज अमरसिंहजीने परमार सताजीए पूछयुं के-क्यां प्यायी हता ? त्यारे अमरसिंहजीए जवाव आप्यो के-अमी वांका-नेरनी हदमां फेरं। करवा गया हता, त्यां घींगाणुं थनां अमारी हार थइ, घणां माणसो काम आ-व्यां अने तेमां तमारो काको सेपजी पण मराया, इवे अमे आ वखते एओने कोइ रीते पहोंची श-कीए तेम नथी जेथी पाछा जइए छीए. परमार सताजीए तेओने शौर्य चढाववा कहाँ के-मेपजी जेवा सारा माणसने मरावी वीले मोढे जतां ज्ञारमाता नयी ? पाछा वळो, चाळो, पांचसो घोडायी हुं तमारी मददमां आवुं छुं; वांकानेरवाळानुं द्युं गजुं छे; आ वखते अमरसिंहजीने " भूख्याने भातुं मळवा जेवुं थयुं " तेणे तुरतज पोतानां माणसोने पाठां वाळी वांकानेर तरफ प्रयाण कर्युं. राज मुरतानसिंहजी श्रृओने हरावी स्वस्थ चित्ते गाम माटेलमां रात्री गाळना रह्या हता, माणसो याकेलां इतां, दुइमनोने हार खाइ भागी गएला जाणी बधा निश्चित मनथी नेठेला इताः तेवामां धारवा बरतां विशेष माणसोना दमामवाळी प्रतिपक्षीनी फोजने अवती जोड़ फरी तमाम लड्या माटे तैयार थया अने नगारे घाव नांग्वी शत्रुओ सापे धस्या, भगंकर कापाकापी चाली, परंतु अं-तमां घणा ते घणा राज गुग्तानसिंहजीना सरदारो एक पछी एक पटवा लाग्या अने पोते पण घायल धवा, छतां तेओनी तीक्ष्म तल्यार दुस्पनोना दळतुं भक्षण करवा धारती होय तेम क्षुधा-तुर कालिकार्ना पेटे कूद्ती हती. गढवी नाको राज साहेवनी साथेज रणांगणयां झौबी वतावनो हतो, घणा घाव लागवायी तेतुं कलेवर घोडापरथी नीचे पडवानी तैयारीमां हतुं, तेपामां कोइएक प्रतिपक्षीए पाछळधी प्रहार करी एक घाए तेनुं माथुं उडावी दीधुं. ए नाका गढ़वीनुं माथुं घड़वी जुदुं पडयुं तो पण " वाह सुग्तान, रंग मुरतान " एवा शब्दोना उचार करतुं हतुं. राज मुग्तान-सिंह जी हद उपरांत घायल थवार्था वेशुद्ध वनी पृथ्वीपर पड्या. साथे निकळेला नगारची, शर-णाइवाळा शने भीर ढाटी शो वगेरे सर्व कोइ पेतिपोतानुं वाहुवळ वतावी काम आव्या. संग्राम रूप सुराने काउनार निमक्तहराम नाकानुं अन्तः करण एटळाथीन तुम न थयुं. ए पापी राज मुस्तान-सिंहजीनुं मस्तक छेदवाना इरादायी तेओने शोववा लाग्यो. सुवर्णना झळकता लंगस्वी ओळपी आगळ गएलो ए दुष्टराज साहेंचने मृतक पानी ने शोतुं पायुं कापवा याजा थयो, नेवामां सुम्वीर गुम्तान-सिंहजीए पोताना हाथमां पकटी राखेळी तळवार वडे महार करी ए पापीना कम्मरथी वे डकटा करी नांख्या. " राजाओ दुष्टने दंट दे छे " ए वाक्य मरतां मग्तां पण राज गुरतानिवहं नीए सन्य करी वताव्युं. इळवदनी सेना पाठी वाळी, वांकानेरना माणमोगांथी मात्र एकन केराळानो

रहीज नाका नामनो कारडीओ रजपूत वचेलो, ते वांकानेर खवर आपवा आवतो हतो, परंतु घोडी धाकेली होवायी मधम तेणे केराळे आही पोतानी माताने कमाड उघाडवा हाकल पाडी; तेनी माताए कमाड उघाढी पृछ्युं के-धणी तो कुज्ञळ छे नां ? नाकाए गद्गद् कंठे जवाव आ-प्यो के-धणी तो काम आव्या. ए सांभळी अत्यन्त क्रोधायमान बनेली नाकानी मा बोली के धणी काम आन्या तो पछी तुं अहीं जा माटे आन्यो ? धणीतुं लूण इराम कर्यु ? मारुं दूघ लजन्युं ? तारे बदले मारा पेटमां पत्थर पाक्यो होत तोपण कांइ उपयोगमां आवतः जा, तारुं काळुं मुख मने वतावीश निह. पाताना आवां कठोर वचन सांभळी नाके कह्युं के-मा ! हवे हुं शुं करुं ? घोडी बहुज घाकी गइ छे, त्यारे ए बाइए जवाव आप्यो के जो घोडी थाकी गइ होय तो आ आपणी दीजी बछेरी तयार छे के, तेना उपर सामान नांखी आपुं, नाकानी हा नानो जवाव निह लेतां वछेरीपर सामान कसी तेनी माताए कहु के जा क्षत्रीओए करवा लायक काम करी वताव. नाके कतुं के मा ! आ दछेरी मने शी रीते त्या पहोचाडशे ? वाइए प्रत्युत्तर आप्यो के-जातनां फर-जंद कदी पण कजात निवडतां नथी। जा, हूं खात्रीथी कहुं छुं के आ वछेरी तने दुइपनो भेळो करी देशे. नाको तुरतज बछेरीपर सवार धयो अने पोतानी जनेताने प्रणाम करी चाली निकळ्यों. जातवान वछेरीए कांड पण इठ निंह करतां पंखी जेवी गति करी अने दुव्यनोनी फोज हळवदथी एक गांच दर हती त्या भेटो करावी आप्योग नाको भय रहित वनी एकदम फोजमां घुस्यो, फो-जनां माणसोए जाण्यं के ए कोइ आपणो माणस हजाे. रात्रीने छीधे सर्वत्र अन्यकार पसरी रहाो हतो, निमक्तलाल नाके मध्यमां जइ पूछयुं के अमर्सिहर्जा क्या छे ? त्यारे अमर्सिहजीना कोइ-एक काण्लि याणसे अमरसिंहजीने बदले तेना कोइएक हुजुरीने बनाब्यो अने विचार्य के-जो आ परायो माणस हक्षे तो हमणा खबर पडकी. नाकाए तुरतज इनुर्गाने अमरसिंह धारी तेना एक घाए वे इकटा करी नांख्या. लझ्करमा घोंघाट मच्यो अने "दगो दगो " ए रीतना पुकार थवा लाग्या. नाकों तो पातातु काम करनीज रहारे जगभग अहार ओगणीश माणमीने मारी पीते पण काम आन्यो, ४

आ युद्ध वि० सं० १६ ७९ ना चैत्र शुद्धि १० ने सोमदारे धयुं हुनुं, नेटळाएक एम पण करे छे के मधम हळवदना लड़करनी हार घड ए वग्वने परमार मेपनी नधा अरजणजी मार्था गया, तेवामा मेपजीना भाइ धावजी वधा रणमळ जी उसी घोडा साथ काठिशावाडमार्था

अ ए नानानो पाळीओ हळवडधी एक गाउने छेटे हाल पण छे.

आवता हता त्यां तेणे पेताना भाइ मेपनीना मरण समाचार सांभळी फरी अमरसिंहनीने छडवा माटे उन्नेंथी परमार घावनीए राज छरतानसिंहनी पासे पेताना भाइ मेपजीतुं श्रव माग्युं परंतु द्वराजसाहेवे आपवानी ना कहो, जेथी भयंकर कापाकापी चाली; घावजी तथा रणमळजी छसो प्रोडा सहित मराणा अने राजछरतानिहाँ पण अनेक शत्रुओनो संहार करो सम-रशायी थया।

जे स्थळे राज सुरतानसिंहजी पोताना वहादुर लडवैयाओ सहित मराणा ते स्थले ते-ओना कीर्तिस्थंभो उमा करवामां आव्या, तेमा खुद सुरतानसिंहजीना कीर्तिस्थंभ उपर एक न्हानी सरखी देरी कराववामा आवी; के जे अद्यापि विद्यमान छे. सुरतानसिंहजीनी एक द्यूरा तरीके तेना वंशजोए स्थापना करी मसंगोपात हज्ज पण तेनुं पूजन थाय छे. दरवर्षे काळीचतुदशींने दहाडे गुरतानसिंहजीना तेमज वीजा श्रूराओना पाळी आओ उपर सिन्द्र चढाववामां आवे छे. वाकानेरना राजवंशी वरवोडीओं मुरतानजीनी देरीए दर्शने जाय छे अने त्यां रीत मुजव दाद चूकत्र्या वाद छेडाछेडी छोडे छे. ए किया करवामां कोई पण गफलत राखता नथी, कारणके ए-ओना अन्तःकरणमां एवी श्रद्धा वेसी गएली छे के जो ए किया न कराय तो वरघोडीआ यावज्जीवन मुखी थायज नहि.

राज छुरतानिसहजीनो स्वर्गवास सामळी इडरमां रहेळा राठोड राणी प्रतापक्वंवरवा सती धयां, तेनी साथे श्रीपाळी ब्राह्मण हरिशंकरनो दोकरी सूरजवाइ पण क्रमारिका अवस्थामां साली भावना अपूर्व स्नेहने छीवे वळी मुवा, के जे आज सुधी बांकानेरना दरवारमां शास्तिना हावळानी अंदर फळां रुपे पूजाय छे. सनीनो श्राप थयो के हळवदनी गादीए कोइ राजा सुख न भोगेने एटना माटे राज रायसिंहजीए श्रांगधामां राजगादी स्थापी.

राज मुरतानसिंहजीनी पशंसा करतां ए वखतना जूदा जृदा कविओए नीचे मुजव कान्यो बनावेळां छे.

दोधा.

धुंवा रव रव धुंधरी, चोदस पडे भंगाण; कटका हटका धुवके, सोहे राणो सरताण ॥ १॥

काढ कर्सुंवा केहरा, मध लहडे जुवान; हे हरियल भागा हसो, सोहे राणो सरतान ॥२॥
गीत १.

भडलख भंजीया सरताण भडते, राण त्रंवक रोड; पवग आहु धडे पडिआ, कटक झटकां कोड; बाटके छक्कड धडां वे धड, काटके केकाण; भूखियो केसरी जेम भारथ, रमे हळवद राण; झूम समरे पटा झलरख, कूत गरज कवाण; उत्तरे सरताण आगे, घोट चोटा घाण; बळळ सावळ झळळ वीजळ, खळळ चहुवळ खाळ; सरताण हाथे मेप समीयो, पड्यो अजो पोंचाळ. भड० गीत २.

सत्र सालस तुत्र वना सत साधण, आवट तारी हा असर; सरहव कथ पामले संकर. वरसे अपछर कथ वर; तुं मरते वरीआ पीथल तण, अरदलिन तलुंवता अठे; कमल कठे उपसे कमाली, कहे रंभा परणसे कठे; अंत ताहरे मानहर ओपम, फरता आरे रहिआ अफर; सजसे धमल कोणासर संकर, सज कामण रथ कोणांसर; तुं अवतार धरीस झल तीहां, नित उठीं मचवण न वहे; हंडा एण हरमाल रोपसे, गमसेरंभ कुमार ग्रहे.

राज सुरतानसिंहजीनो स्वर्गवाम धना नेओना पाटवी कुमार मानसिंहजी बांकानेरनी राज-गादीपर दिराजमान धया, नेओ रहानी उस्तरना होवाने लीचे राज्यनी समग्र कार्यभार नेओना काका राजोजी चलावता हता. ए राजाजीने " रातीदेवळी " नामे गाम गरासमां मळेलुं हतुं; राज मानिसिंहजीना मातुश्रीनी इतरांजीने लीधे राजोजी रातीदेवळीमां रह्या अने पछीथी खोडूमां जइ तेणे दरवार वांध्यो. त्यारवाद देवनी अनुकूळताथी वि. सं. १६८१ मां तेओ वहवाणना स्वतंत्र मालिक वन्या. तेओना न्हाना भाइ वर्लूजी तथा अदेभाणजीने गरासमां सरधारकुं मळेलुं हतुं. ए प्रणे भाइओ मूलीना भाणेन थता हता.

राज मानसिंहजीए उम्परलायक थइ हळवदपर हलाओ करवा मांड्या, परंतु तेओ फावी श्वया निह, तेओना लग्न "सीसांग " थएलां हतां; तेओने रायिसहजी, भीमजी, भाणजी, अग्रिसहजी, वीरमजी, वरशोजी, रतनजी, तथा हरदासजी नामे आठ क्रमार थया. वि—सं. १७०९ मां राज मानसिंह भीनो स्वर्गवास थतां तेओना पाटवी क्रमार रायिसहजी वांकानेरने टीले रह्या, भीमेसिंहजीने "कणकोट", भाणजीने "वधाशीयुं " अग्रिसहजी तथा वीरमदेवजीने खेरवा, राती देवळी तथा सरधारकानो थोडो भाग; अने वरसाजी तथा रतनजीने खेरवानो भाग गरासमा मळ्यो. सहुषी न्हाना कुमार हरदासजी निःसंतान मरण पाम्या हता.

राज मानसिंहजीना छप्च वन्यु रामसिंहजीने छुणसरीयुं तथा वोकडथं ग्रांसमा मळेछं हतुं. ए रामसिंहजीना वंशमां छठी पेटीए कछोजी तथा सबळोजी नामे वे बन्युओ घणाज बहादुर थया; ए बन्ने भाइओ ज्यारे गोंडळ ठाकोर पासे नोकरी करता हता त्यारे हादाखुमाण नामनो कोइएक काठी संख्यावंध स्वारा तथा पायदळ साथे काठियाबाडमां छुटफाट चळावी रह्यो हतो अने घोळे दिवसे घाड पाडी गामो भांगतो हतो एक बखते एणे गोंडळ ताबानुं सतापर नामे गाम भाग्युं ए समाचार गोंडळमा आवतां त्यांथी जबरी बार चढी, कोटडाथी पण केटळाएक लड-वैयाओ गोंडळना पक्षमां मळ्या; भादरकांठे उभय दळनो भेटो थयो; झाळा कळाजीए काठीओनुं महान कटक जोइ गोंडळना तथा कोटडाना माणसोने ज्ञान्त रहेवा समजाव्युं, परंतु वाधी भरेळा ए छोकोए कळाजीना कहेवा पर कांइ पण ध्यान नहि आपतां शेखीमां ने शेखीमा घोडाओने पतिपक्षीओ पाछळ मारी मृत्या हे हथीआरा काठीओ वीरहाकनी

१ बारोटना चोण्डामा एवं ल्येक्टुं छे के बलुजी तथा उरेभाणजीने पांचदुवारका ना-मतु गाम गरासमां मळ्युं हुनुं, नेना बंशजो हाल मरशास्कामा छे अने ने नीचाणी पाटीबाळा कहेवाय छे.

⁹ बारोटना चोपडामां भीमिनहने कणकोट उपगंत सरधाग्कु मळ्युं हतुं एम लखेल छे.

साधे मारवा मरवानो निश्रय करी सामा थया. समशेर अने भालांओना प्रहार पूर्वक युद्धनो आ-रंभ पतां कंपायमान वनेला कोटडाना लोको एज वखते पलायन करी गया, गोंडलीआओ पण गर्व छोढी न्हासी गया, मात्र करोजी तथा सवजोजी पोताना कुळनी टेक जाळववा माटे रणमां अडग रही शत्रुओना समुदायपर तुटी पड्या; आगरे एकइजार काठीओ फक्त वेज झालाओना बाह्र-वळथी छिन्नभिन्न यइ गया. वीरवर कछाजीए हादाखुमाण उपर समशेरनो महार कर्यो अने सब-ळाजीए तेना वावळा नामना अन्दने ठार कर्यो. झाळा रामसिंहजीना भीम अने अर्जुन जेवा पौ-होए एवी धर्मचक मचाबी के काठीओतुं कटक भयभीत वनी भागवा लाग्युं, अगणित अन्वोना धारनधी उढेली धृलिने लीधे आकाश धृसरित दनी गयुं. कलोजी तथा सबलोजी संसारनो मोह टोढी सेंकडो प्रतिपक्षीओना पध्यमां खुली कृपाणे खेलवा लाग्या, रक्षथी पर्ण खरे तेम करपद आदि अवयदोना पात पदा लाग्या. घायल जनोनां गात्रमांथी धक्षधकाट करती रुधिरनी धाराओं छूटवा लागी, षाठीओना क्वचनी कडीओ तहोतड तृहवा लागी. ''मारो मारो '' अने ''कापो कापो '' एवा शोर सांभळी जैम पोप मासनी रात्रीमां ममदा विनानो पुरुष धूजे, तेम कायरजनों कंपवा लाग्या, खरा श्रुरवीरा इता एज कलाजी सन्मुख स्पिर धर शबया, खरेखर ए बग्वते वीरवर कला नीए वांकानेरना पाणीने विश्वमां विख्यात कर्युं. ए दन्ने वन्युओए हादो, सामत, दरु अने हमीर नामना चार अग्रणी पुरुपोने मार-षानो संदारप कर्यो हतो, तेमांना त्रणने तो तुरतज यमराजना अतिथि बनाव्याः मात्र एक हादोन पायल अवस्थाए वचवा पाम्यो हतो, परंतु ते ज्यांसुधी जीव्यो त्यांसूबी कर्मुवो लेती वखते तेने कलाजीनो रंग आपतो हतो अर्थात् कसुंबो पीवा टाणे हमेशां ए एवं बोलतो के रंगछे झाला मरद कला ीने जेणे हजारो माणसो वचे हिम्मतधी प्रवेश करी मारा उपर प्रहार कर्यो

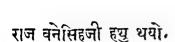
ख़ुमाणोनी आंखमा खटकी रहेला कलोजी तथा सबळोजी एज युद्धमां छेउटे काम आ-प्या रता. एना पराक्रमनी प्रशंमा करतां कवि छोकोए नीचे मुजब गीतो कहेलां छे.

गीत. १

करे ठाठ कटकांतणा कोळीए काठीए, हण्यो लड़ गामडानणो होया; वृंवीयो आवीयो गॉडले वरकतो, सतापर हावले कीयो सोथा; चही वार गोंडलरी कोटडारी पण चही. भादरे थका अनवार भाळ्या; वावले कलानुं कर्युं निहं वारियुं. चावले मोरथा पवंग चाळ्या;

वि-सं. १९६७ ना महाददी ६ ने मंगळवारे छ महाराजा वनोहिंहजी काशी तथा उत्तर हिंदुस्थान वगेरेनी यात्राए पधायो, साथे कारभारी महेता दलपतराम नजाराम वगेरे सो माणसो हतां. पंथम सीधा मुंबइ पधार्या अने त्या आठ दिवय रही सरकारमाथी शस्त्रोना परवाना मेळच्या; त्यांथी चाली नाशिक अने त्र्यवक्षमां त्रण दिवस रहा। अने केटलांएक पुण्यदान कर्या, त्यारवाद प्रयोगराज पंधार्या, माणसोने अगाउथी मोककी दारागंज मध्ये रुगनाथजीनां मंदिरमा उतारानी गोठवण करावी इती. श्रद्धाळु राज वनेसिंहजीए त्रिवेणीया स्नान करी, श्राद्ध सारी गोग्ने उमदा रोज्ञाक साथे हा ८०० रोकडा याच्या. एकहजार ब्राह्मणोने जमाड्या अने दक्षिणा आपी. प्रयागमां आठ दिवस रही काशीए पधार्या, ए वखा टाड बहुज पड़ती हती. श्रीमान राजताहेवे मिणकिणिकाना घाटपर न्हाइ विधिवत श्राद्ध सार्यु, गोर गजानन चोवाने हा, १००० रोकडा द-क्षिणाना अने उपर उपदा पोश्वाक आप्योः वे दिवस पर्यन्त ब्रह्मभोज कर्यो, ब्रालावाडी ब्राह्मणोनी -नातमां पीतळना लोशनु रहाणुं कर्यु, तथा काशीविश्वनाथनी महापूना भरी अने अन्तपूर्णी आदि अन्य देवालयोगां पण सारी रकम भेट आपी. कारभारी दलपतरापभाइए पण त्या पातानी नागरी नातने पकवान्नतुं भोजन आपी लोटातुं ल्हाणुं कर्युः ए यात्रामां सायेना सर्व माणमो संतुर ययां हता. राजसाहेब त्याधी गयाजी पधार्या. ए बखते मीठापर सूधी रेटबे हती, जेबी त्यांसूबी ट्रेन अने पछी घोडागाडीओ तथा सीगराम वंगेरे वाहनो भाडे करी गयाजी पहाँच्या त्यां गोर न्हानाभाड छोटालालनी इवेलीमां उतर्या. गयाजीमां वेदी ५० इती, तेमांथी मात्र अक्षयवटे राज वनेमिंहजीए श्राद्ध सार्यु अने वाकीना फलकूगंगा, पेतशाला तथा वौधगया वगेरे ओगणवचास वेदीमां श्राद्ध सारवा पोताना आश्रित ब्राह्मणोने आज्ञा आपी. गोरने अप्टमहादानना रा. १२०० रोकडा तथा पोज्ञाक आपी प्रसन्न कर्या, चोराज्ञी जवाडी अने त्यांथी पाछा काशीए पधारी छ दिवस रह्याः त्यारवाद वतन तरफ पाछा वळतां मुंवइमां नामदार फीटझराल्डनी मुलाकात लीबी.

राज वनिसंहजीनां एक नानांवा नाभे व्हेन हतां, तेओनां लग्न गोंडलना टाकोर पृथी-राजजी साथे करवामां आव्या हतां. राज वस्त्रनिंहजीना गजोडवाळा राणीश्री छाडुवाए पण पातानां कुंवरीश्री माजीराजवा गोंडळ टाकोर पृथीराजजीना कुमार भगवतासंहजी साथे परगाव्यां, गोंडळ स्टेट तरफथी ए वाइने विलीयाळा गाम जीवाइमा मळ्युं. वाश्री लाडुवाए त्यांज पोतानुं रहेटाण राखी वि० सं १९६७ मां कुंवरीश्री चांदावाने राजकोट टाकोर वावाजीराजवेरे परणाव्यां; अने कुंवरीश्री हरिवानो संबंध भावनगरना महाराजा श्री तस्त्रतिंहजी काये खु. महाराजा



वि० सं० १९२८ ना महा वदी ६ ने शुन्न वारे राज वने। संहजी मोतीसरना गोहेल हिर्सिहजीना पुत्री माक्कवा वरे परण्या. ए वस्ते खांडु लड़ ओं अणामां म्हेता चीमनल ल दलपनराम वगेरे,
३५० माणस, १५० घोडा, तथा हाथी १ गएलो हतो. त्यारवाद वि० सं० १९२९ मां राज वनेसिहजी वंगालानी सुसाफरी करवा पधार्या हता, ए वस्ते तेओने भोपालनां वेगम साहेवने गादीए
वेसाडवानी क्रियामां वलकत्तानी अंदर लोई नोर्थ बुके भरेला दरवारमां जवातुं आमंत्रण मर्ल्यं द्वां. जेथी तेओ नामदारे त्यां जइ हाजरी आपी हती; अने ज्यारे ए वेगमने सुवइनी अंदर कलकत्ताना नामदार वोइसराये चांट आप्यो ए वस्ते पण खु. राज वनेसिंहजी त्यां पधार्यी हता.

वि० सं० १८६८ मां मजमुदार रंगीलदास गौरीदास मारफत वच्चा जमादारने तेना भ-त्रीजा इसवभाइना मस्तक वदल जे मेसरीआ गाम वांकानेर स्टेट तरफथी आपवामां आव्युं हतुं ते तथा तेना नीचेना त्रण गाम राज वनेसिहजीनी अनुमितथी नामदार सरकारनी मंजुरी मेळवी का-रभारी दलपतराम मजारामभाइए वि० सं० १९२९ ना मागशर शुद्धि २ ने दिवसे वडोदरावाळा महेता हरिप्रसाद रगीलदास मारफत रु० ४५०००) पीरतालीश हजारमां खरीदी स्टेट दाखल कर्या.

राज वनोसिंहजीना मूळीवाळा राणी जेठीवाए वाड साहेववान। मनां कुंवरीने जन्म आप्यो. त्यारवाद ते ओ नामदारने। सदध सजनपरना जाडेजा विभाजीनां कुंवरीश्री जामवासाहेव साथे थयो. राणीओ घणां छतां छेछीवारने। सवध मात्र वशद्यि माटेज करवामां आव्यो हतो. ए सवंधनुं महेता दलपतरामभाड द्वाराए नकी थया वाद वि० सं० १९२९ ना चैत्र विद ७ ने शनिवारे छग्न निर्धार्या. वांकानेरथी खांड लड ऑंड्रण सज्जनपर गयुं. ए ऑंड्रणामां पांचसो माणस, सवावसो घोडा तथा वे हाथी गएला हता; ए तमाम पांच दिवस सज्जनपरमां रह्या अने धामधूमथी लग्ननुं काम पतावी वांकानेर आव्या.

वि० स० १९३० मां राज वनेसिंहजी जनानां सिंहत वहुचराजीनो यात्राए पधार्या, ए वखते तेओनी साथे कारभारी टलपतरामभाट वगेरे टोढसो माणसो हतां. वहुचराजीने आंगी ध-रावी, महापूजा वरी राज वनेसिंहजीए ब्रह्मभोज कर्यो अने त्यांथी सिद्धपुर पधारी श्राद्ध सार्धु. तथा पचाश मण घृत वापरी ब्राह्मणोने तृप्त कर्या. त्यांथी तेओ नामदार म्हेंाटी अंवाजीए पधार्या, ए वरवते दांतामां दिवस ७ रहा हता.

वहुचराजो, सिद्धपुर तथा अंग्राजीनी यात्राओं कर्या वाद तुरतगंज राज बेनीसहजी ज-नाना सहित प्रभासनी यात्राए पथार्या हता ए बखते राजकोट तथा गेंडिळ तरफथी तेओनी बणीज सारी सरभरा करवामां आवी हती. ए बधी यात्राओमां खु. महाराजा राज बेनीसहजीए घणां घणां पुण्यदानों करी धर्मपर अपूर्व छ।गणी बताबी हती.

वि० सं० १९३१ ना वैशाख अदि ८ ने दहाडे फैवाश्री हरिवासांहेवनां लग्न भावनगर महाराजा तख्तसिहजी वेरे थयां. ए वखते राज वनिसंहजीए तेओने वखाणवा लायक दायजो मोकलाव्यो हतो.

ए अरसामां सर्वत्र सुलेहसंप अने सुखशान्ति छवाएलां हतां. मात्र पाडलना काठी लोको मूळयीज उद्धत अने तोफानी होवाने लीधे वांकानेर स्टेटनी हकुमत तळे होवा छतां वारंवार एथी विरुद्ध दर्तता, तेनी साथे भीमघांयल वगेरे सरकारी व्हारवटीआओने आश्रय आपता. ए लोकोनी आवी गेरवर्तणुक्रने अटकाववा नामदार सरकार तरफथी ज्यारे वांकानेर स्टेटने सूचना आपवामां आबी, त्यारे महाराजा राज बनेसिहजीए ए बात उपर विशेष लक्ष आप्युं, अने ता. १ ओगष्ट सने १८७५ रविवारना रोज चार पांच आवरुदार गृहस्थेनि पाइल मोकली त्यांना मूळगराशी-आओने उद्धताइ छोडी देवा तेमन सरकारी व्हारवटीआओने पक्षमां न लेवा समजूती आपी. परंतु ए बखते ए लोकोनी आंखोमां दारुनी नशो एटली वधी व्यापी रहेली हती के तेओ न छाजे तेवा अपशन्दोनो उचार करी अविला सद्गृहस्थोनो सामे थया. ए समाचार सांभळी ता. २ ओगष्टना रोज वांकानेर स्टेटना फोजदार वगेरे त्यां पहेंची गया. आयी तो ए लोको वमणा जोशे भराया अने धीगाणाना तीर पर आव्या तेमज जोरयी शोरवक्रीर करवा लाग्या. वीजी तारीखे सवारमांथीज ए लोकोए शरावनो एटलो वधी लूटथो उपयोग कर्यो हतो के तेमांना कोइने पण सारासारनी भान रही न हती. कायदे। शुं कहेवाय ए तो समजताज न हता. एक तो केळवणी वगरना अने वळी तेमां मदिरानी मेळवणी थइ एटले उद्धताइमां पूछवुंज शुं ? वांकानेर स्टेटनी पोलीसे वहुज शान्ति पकडी हती अने काम पग सुलेहथीज लेवा घार्यु हतुं, छतां ज्यारे कोइएक प्रतिपक्षीए वन्दुकनो अचानक फेर करी वांकानेरना एक सिपाहीने वीघी

नांख्यो त्यारे फोजदार वजेशंकर भवानीशंकरे पोतानी तथा साथेन, माणसोनी सलामती माटे पा-ढलना लोकोतुं ए गेरकायदेसर वर्तन अटकावना उग्रत थनानी आवश्यकता धारी. ए तो इन्न सच्य अपसच्यनो विचार करता इता, त्या तो तलवार खेंची काठीओं कूदी पड्या; थोडीनार परस्पर झपाझपी चाली अने तेमां वन्ने तरफनां थोडां घगां माणसो घनायां तेमज मरण पाम्यां. नामदार ब्रीटीश सरकारनी शान्तिवर्थक सबल सत्ताप्रवर्तमान छतां आनो जनूनो बनाव सह कोइने आश्चर्यना सिन्धुमां निमन्न करे एवो छे. वलो पाडलना लोकोए एजन्सीमां पहेंचो रजतुं गज करवामां मगा न राखी, परंतु दीर्घ दृष्टिवाला सत्यपरायण सरकारी अमलदारो एकवन्ननो वात उपर इतनार राखो न्याय आपी दे तेना नथी. ए तो पोतानी समक्ष उमयपक्षनी रज्जआत सांमल्या उपरांत साधी पु-रावाथी जेनो गुन्हो साबीत थाय तेनेज दक्षताथी शिक्षा आपे छे. उपरना वनावमां बांकानेर स्टेट तरफथी कांइ पग गेरकायदेसर करवामां आव्युं न हतुं.

पाढलना मूल गराजीआओ तथा वांकानेर स्टेट वच्चे जे धीगाणुं थयुं ए वात साधारण न हती के जे कोइ पण छुपाबी शके. एजन्सीमां ए वावत जबरो केस चालेले। हते। अने एने। फे-सलो आपती वखते काठियावाडना श्रीयुत पोलीटीकल एजन्ट मे. जे. वी. पील साहेबे जे ठराव जाहेर कर्यो हतो ते अक्षरणः अमोए आ नीचे दाखल कर्यो छे.

ता, २ ऑगस्ट सने १८७५ सोमवारना रोज पाडलमां एकटा थएला खाचर गराशीआओ अने वांकानेर स्वस्थाननी पोलोसना वच्चे धीगाणुं थयुं ते वावतमां अमोने नीचे मुजव हकीकत मालुम पडी छे.

खाचरोनी चाल वावत—जणावे छे के पाडलना मूळ गराशीआ वांकानेर दरवारनी इकु-मतमां रहेल छतां तेना कायटासर अखत्यारना सामा उघाडी रीते अने जवरजस्तीथी केटलाक महीना थयां वर्तता हता.

आवी तेमनी हटीली वर्तणुकमां मदद करवाने माटे तेमना समा सबंधी जे वीजा गराशी-आओ हता, तेओने पाडलमां एकटा करी राखता हता अने ता. २ ऑगस्टना रोज ए गाममां गो-सल, कराडी अने गरांभडीना गराशीआओ हता, अने ते सबलामां जे लोकोना विषे आसीस्टन्ट पोलीटीकल एजन्ट साहेबनो एवो अभिमाय थयो हतो के तेओ पाडल घगो बखत जाय छे अने धींगाणु कराबबाना प्रयत्नमां मदद आपे छे, तेबा लोकोने पाडल निह जवा देवा माटे जमान लेबानुं सायला दरवारने फरमाबबामां आव्युं हतुं ते गराशीआ पण आमां सामेल हता. वळी व्हारवटीओ भीमधांघळ के जे इज पकडायो नथी, तेने पाडळमां मूळ गराजीआ तर-फथी आक्षरो मळेळो हतो अने तेमांना वे जणाए राज्यस्थानिक कोर्टना पेसीडेन्ट साहेव पासे एम जिल्हों कर्म हतुं के अमे भीमाधांघळने अमारा द्रवार मारफत रज नहि करीए.

अमोने एम पणजणाय छे के मूळगराशीआओने पोताना गरास सर्ववी कांड व्याजवी फरिद्वियाद तेमना उपरी वांकानेर दरवार सामे निह हती, अने दस्तुर मुजब टराव मेळववाने माटे पोताना
द्विरवार पासे प्रथम जद्धं जोइए तेमां कसुर कर्याना सववधो तेना हकनो निर्णय गज्यम्यानिक कोर्टने
करतां देर थइ छे. दरवार तरफथी जे हकीकत जाहेर थइ छे ते उपरथी जणाय छे के मूळ गगाओआ
मध्येना केटलाक उपर दरवार तरफथी गुन्हाना आरोप मुकेला छे. जेना इन्साफ माटे तेओ कायदा मुजब पोताथी तावे थवाने वंधाएला हता.

गया वरसमां जूदी जूदी वखते दरवारना तरफथी गराशीआओने समजाववा माटे आवरु-दार अ:दमीओने मेक्न ही तेमने व्याजवी वात पकडवानुं कहेवराव्युं हतु.

आवा वग्वत उपर अने सने १८७४ ना अक्टोवर महिनामां ते गाममां एक जाहेरनामु चोडयुं, तेमां जे छखाण कर्यु छे, ते व्याजवी अने सलाह संप भरेलुं छे अने ते जाहेरनामामां वळी गराशीआओने ताकीद आपी हती के ताहोमतदार लोकोने पकडवानी कोशीशमां सामा थवाथी जे टंटो थशे तेना तेओ जवावदार रहेशे.

दरवारना तरफथी छेवटनी विष्ट (चार वेपारीनुं पंच) धीगाणुं थवाने आगले दिवसे पाडल मोकलाववामां आबी हती, एम दरवार तरफथी कहेवामां आवे छे अने ते वावत कांइ शक लेवानुं कारण नथी के गराशीआ लोकोनुं सामा थवापणु एटले दरज्जे थयुं हतुं के पोलीसने झाडो लेवाना हकनी मनाइ करतां ते गाममां जे पोलीसनुं थाणुं हतुं ते उपर हुमलो करी तेनां हथि-आर लड़ गया.

जे हुकमो मोकलवामां आच्या हता तेमां १०० थी १२५ माणसो हता, अने तेओ मु-सलमान जमादार अने फोजदार वजेशकरना उपरीपणा नीचे तरवारो अने थोडीक वन्द्कोथी हथि-आर वंध थइ गया हता. जो गराशीआनी मददे गोसळना अने वीजां गामोना आटमीओ नहि आव्या होत तो त्यहांना गराशीआने भयभीत करवाने आटलुं लब्कर वस जणाय छे. कोणे प्रथम लटाइ शरु करी ते सावीत थइ शकतुं नथी, पण एवात साफ छे के जे लोकोने पकडवानी कोशेश कर- वामां आवी तेना सामे थवामां आच्युं हतुं. वांकानेर तरफनां माणसोने तलवार अने लाकडीथी मारवामां इसा अने तेमांना केटलाकने तलवारना जखमो छे. तेमां मुख्यत्वे करीने स्वार दादुजी अने तेना घोडाने तेना जखम छे.

वन्दुकना हथिआरवंध आटमीओनुं रेग्युलर पोलीसनुं थाणुं नजीक एमुं रहेलुं हतुं अने एम कहेवामां आव्युं छे के तेना उपरी नायकने जखमी करवामां आव्यों ते उपरथी पोलीसना आदमीओए गराजीआओ उपर वन्दुकनो मार इलाव्यों अने तुरत लडाइ वंध पढी, तेज जग्याए चार गराजीआ मरण पाम्या अने केटलाक जखमी थया, तेमांना वे आदमी पाछलथी मरी गया छे. गराजीआओ पोताना घरमां भागी गया अने केटलाकने पड़्या मूकी जे लोको शरणे थड गया तेमने केट करी पकडी लड़ जवामां आव्या.

वांकानेर तरफना तेर आदमीओने तलवार, लाकडी अने पाणाना जखमो छे, अने पाडल तरफना अगियार आदमो जखमी थया अने छ मरण वश थया.

वगर क्वायटी सीवेटीनी साथे लडाइमां गराशीआ लोकनी चडीयाती हती एम घणे टरज्जे सभवित जणाय छे, अने आखर पोलीसने वच्चे पडवुं पडयुं; तेमना उपर वन्दुकनो मार च-लाववाने कोणे हुकम आप्यो अने तेमणे केटली वखत वहार कर्या ते वात सावीत थइ शकी नथी.

वांकानेरना कारभारी टलपतराम हाजर निह हता, पण ते नजीकना गाम मेशरीए हता. परत ते वखते ए हाजर होत तो घणुं सारुं हतुं, केमके जेटले दरको मारामारी नाखुशी लायक थ-एली छे तेनो अटकाव ते कदाचित् करी शकत.

लडाइ थइ रह्या पछी कांइ लंटफाट के जोरजुलम वापर्यानुं सावीत थयुं नथी, अने वांका-नेरनुं लक्कर पाछु फरी गयुं एटले ए वात घणे दरजो असंभवित छे.

अमारो अभिषाय एवो छे के कायदासर अखत्यारनो तिरस्कार करवाने छीधे मूळगरा-शीआ तरफथी आ धीगाणुं उत्पन्न करेलुं छे अने तेम करवाना व्याजवीपणा माटे तेमना उपर कांड जुलम अने गेरइन्साफ थतो होय एम जोवामां आवतुं नथी. अमो धारीए छीए के वांकानेरना राजसाहेव तरफथी पोतानो कायदासर अखत्यार वापरतां तेनी कोशीशमां आ मारामारी थएली छे अने तेने माटे मूळगराशीआओ जवावदार छे.

अमोने एम पण जणाय छे के छोकोनी गुलेहनो वगर जरुरीआते जोग कर्या वावतनो

ठपको राजसाहेवने घटते। नथी. लडाइ थइ रह्या पठी नेमना आदमीओए लंटफाट अथवा निर्दयता वताववाने तेओ गुन्हेगार नथी.

खरी हकी कत जाणवाने माँटे आ काममां तजवीज करवामां आवी छे अने तेथी पातानी रैयत उपर राजसाहेवनी जे संपूर्ण फोजटारी हकुमत छे तेमां कांड वच्चे पडवा जेवुं वन्युं नथी. ते-मनें अखत्यारीमां हाथ घाळवानी वावत काइ हुकम आपवामां निह आवे, परंतु आवा दिलगीरी भरेला वनावना जोखमधी अलगुं रहेवाने माटे जे उपाया लेवा जोइए तेमां हवेथी राजसाहेव वेशक पोलीटीकल खातांना अधिकारीओनी सलाइ लेशे.

झालाबाडना दरवार तथा तालुकदाराने आ ठरावना खबर आसीस्टन्ट पोलीटीकल एजन्ट साहेव आपशे अने ते द्रवारो तरकथी पेताना मूळगराशीआओने समजावी खवर आपशे के काय-दासर अलत्यारनी हथियारवंध अटकाव करवाथी तेमने सजा थया वगर रहेशे नहि, अने ने कामना गुन्हेगारनी वावतमां एजन्सी वच्चे पडी शकशे नहि. "

ता० १६ ऑगस्ट, १८७५ म्रा, राजकोट.

मे. जे. वी. पील. पोलीटीकल एजन्ट काठिआवाड.

वि॰ सं॰ १९३३ मां दिल्हीनी अंदर भराएला वादशाही दरवार वखते खु. महाराजा राज वनेसिंहजीने नव ते।पनो सलामतीने। हक तेमना मानमां आपवानुं टराववामां आव्युं. ए मा-ननी यादगीरोमां राज वनेसिंहजीए वांकानेर खाते ता. १ जान्युआरी सने १८७७ ना रोज एक भन्य दुरवार भर्यो हतो; अने तेमां मी, कोन्डोए भाग लीधो हतो. ए शुभ मसंग उपर महाराजा राजसाहेवे रु० २५०००) मुसाफरी वंगली तथा वामणवार मुकामे एक धर्मशाळा वनाववामां वापर्या. त्यारवाद वि० सं० १९३६ ना पोश शुद्धि २ ने दहाडे तेओ पोताना परीक्षक तेमज ना-मटार गवर्नमेन्ट सरकार तरफथी पोताने उत्तम वन्द्क वंगरेनां इनाम अपावनार मी. टी. सी. होप एज्युकेशनल इन्सपेक्टरनी सलाहथी दरियाइ रस्ते साठ माणसना रिसाला सहित श्री जगन्नाथजीनी यात्राए पंधार्यी, त्यांथी वळतां तेओ नामदारे हिन्दुस्यानना नामदार गवर्नर जनरल लोई लीटननी मुलाकात लीधी, त्यारपं ही तेओ वीजी वार वनारस पंधार्या अने त्यांथी दिल्ही, आग्रा, लखनड, अल्हावाद तथा उत्तर हिन्दुस्थाननो घणखरा भाग जोइ मुंबइ पधार्या, त्यां तेओ नामदारे सर री-चर्डसेम्पलनी मुलाकात लीधी. ए अरसामां राजकोट मुकामे जेइम्स फरण्युशननो पण तेओने मि-

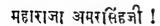
लाप थयो हतो. राजकोटथी वढवाण सूची रस्ता पर कुवाओ तथा धर्मशालाओ वंधाववा माटे राज वनेसिंहजीए एजिन्समां रु० २०००) त्रण हजार आप्या हता. तेओ एज वर्षना चैत्र शुद्धि ९ ने सोमवारे आनंदपूर्वक जगन्नाथजीनी यात्रा करी वांकानेर पधार्या. ए वखते वांकानेरमां झंझा महेताना कारभार हतो, कारणके वि० सं० १९३४ मां महेता दलपतराम प्रजाराम राजीनामुं आपी राजकोट गया हता. ए पछी गांधी करमचंद उत्तमचंदने एं जगो आपवामां आवी, एणे नत्र मास पर्यन्त कारभार कयों, त्यारवाट महेता झंझाभाइ सखीदासने मोरवीधी वोलावी राज वनेसिंहजीए कारभारी वनाच्या हता.

राज वनेसिंहजी न्यायिनपुण, उदार अने मायाछ दिलना महाराजा हता, तेओना वखतमां स्टेटनी सारी आवादी थह हती अने राज वखतिसंहजीना वखतन्नुं तमाम देणु चुकते अपाइ गयुं हतुं. दरवारगढनी अंदर कोर्टने माटे तथा दरवार भरवा माटे तेओ नामदारे एक सारी सगवडता-वाळं छुशोभित मकान वंधाव्युं, वांकानेरनो किळो के जे तहन जर्जरित वनी गयो हतो, तेना समार काममां हा. २००००) वीश हजारनी म्होटी रकम वापरी; प्रजानी तंदुरस्ती तथा छुखशान्ति अर्थे वि. सं. १९३२ मां एक हॉस्पीटल वंधावी, केटीओ के जेने अंधारी ओरडीमां एफ साथे गोंधी राखवामां आवता तेने माटे एक म्होटी तुरंग तैयार करावी, राहदारी चीलो माफ कर्यो, स्टेटमां पोलीस सीस्टम टाखल करी अने कारभारी टलपतरामभाइ द्वाराए राज्यमुं उत्तम वंधारण वांध्युं; तेमज वेपारनी पण उन्नित करी.

डपरना सुधाराओ डपरांत प्रजाने सुशिक्षित वनाववा माटे राज वनेसिहजीए केळवणी तरफ विशेष लक्ष आप्युं हतुं. प्रथम वांकानर तळपटमां छोकराओ तथा छोकरीओ माटे गुजराती निशालो खोली हती अने ए पछी गामडांओनी रैट्यतने पण प्राथमिक केळवणीनो लाभ मळे ए-टला माटे मोटां मोटां छ गामडांओनी अंदर निशालो स्थापी हती. वळी तेओ नामदारे पोताना सु-वारक हाथथी राजगढ, हरिपुर, अटेपुर, समढीआछं, सतापर अने छतर नामनां छ नवां गामो वसा-ल्यां हतां. तेओना राज्यमां पजा सर्व प्रकारे सुखी हती.

पंचाशीआना नथा राणकपरना अर्थ भाग उपरात केराळा तथा राजवडळा उपर राजवनेसिंहजीना वखतमां स्टेट तरफथी मेनेजमेन्ट वेसाडवामां आञ्यं, कारण के त्यांना भाणतोनो निःसंतान देहान्त थयो।

१ तालुका स्कूल सने १८५५ मां अने कन्याशाला सने १८७८ मां खोलवामां आवी हती.



वि. सं. १९३५ ना पोप शुदि ११ ने शनिवार सजनपरवाळां वाश्री जाम साहेवे तीथ-दा मुकामे आप नामदारने जन्म आप्यो, ए वखते आपनः पिताश्री राज बनेसिंहजी मोरवीमां विराजता हता, कारण के पोप शुदि ९ ने दहाडे त्याना टाकर श्री पायजीनी राज्याभिषेक थवा-नो हतो. ज्यारे राज बनेसिंहजी बांकानेर तरक विदाय थया त्यारे पंचाशीआ मुकामे उक्त वयामणी मळतां दादाश्री वेरुभाए महोटो जलसो करी तमामने मीटां भोजन जमाड्यां अने नामदार राज सोहेबे केटलीएक खेगान करी.

राज वनेसिंहजी एक वाहोश अने युद्धियान राजा हता, तेओनी रीतभात वहुज आक-पैक हती, जे कोइ तेओना समागममां आवता ते तेओ नामदारनी सुग्रहता तेमन उंची रीतभात जोइ अत्यंत प्रसन्न थता, एओना वखतमां श्री जडेश्वर तथा धामणीआ नामनी पाणाखाण सबंगी मोरवी साथ तकरार उठतां एजन्सीमां छडत चाली हती अने एनो फेंसलो वांकानेरना लाभमां थयो हतो. भेसरीआ वगेर गामो उपरांत वीजो पण वेटलोएक मुलक मेळवो स्टेडनी आवादी करवामां आवी हती अने एथी आमदानीमां पण दृद्धि थइ इती, सने १८६५-७६ मां नामदार श्रीन्स ओफ वेल्सनी हिन्दुस्तानमां थएली पधरामणी सबवे भराएला मेळा वखते वांकानेर स्टेडने सारुं मान मळ्युं हतुं; ए वधां कामोमां सरकारी वहारवटीआओने आश्रय आपनारा पाडळना तो-फानी काठीओने वश्च करवामां कारभारी दल्लपतराम प्रजारामे घणो श्रम लीधो हतो अने एथीज एनो कारभार पशंसापात्र थयो वतो।

खा. महाराजा वैनेसिहजीतुं शरीर प्रथम सुंदर अने मजबूत वांधातुं हतुं, परंतु पाछळधी तेवी तंदुरस्ती रही नहोती, जेथी देवयोगे वि. सं १९३७ ना जेठ शुदि १५ ने रिववारनी रात्रिए आ असार संसारनो त्याग करी तेओ स्वर्गवासी थया; त्यारे आपश्रीनी उम्मर मात्र वेज वर्षनी हती, कारभारी तरीके मोरवीवाळा महेता झुंझाभाइ सखीदास हता. मरहुम महाराजा साहेवश्री वने-सिहजीना तेरमानी क्रियाने दिवसे अर्थात् ता. २५–६–१८८१ ना रोज आपश्रीनो टीळा-मेडीए राज्याभिषेक करवामां आव्यो, ए वखते खानगी कचेरी भरवामां आवो हती अने एमां मे. आ. पोळीटीकळ एजन्ट कर्नळ एम्. ए. नटसाहेव वगेरे महाश्रयोए हाजरी आपी हती.

~_\$aa?~aa}<u>~</u>-

१ राज वखतसिंहजीनी हयातीमां श्रीमान वनेसिहजीने वावुभा कहीने वे। लाववामां आवता.



द्याविंशत् तरंग.

⁴⁴ मनहर, '

पामी जन्म आपें राज बनेसिंह जीने त्यहां, लघुवयथीज ग्राभ केळवणी लीधी छे; कहे नथुराम स्टेट मेनेजरोए मळीने, उन्नति अनेक रीतें राज्य तणी कीधी छे. हिंदुस्थान ने यूरोप आदिनी मुसाफरीए, आपना अनुभवमां दिव्य स्हाय दीधी छे; अमरनरेश! आ तरंगमांहि वर्णन ए, प्रथ्युं पूर्ण प्रेमें जेमां आपनी प्रसिद्धि छे.

श्रीमान् महाराजा अमरसिंहजी!

वृद्धिशाळी राज वनेसिंहजीना स्वर्गवास समये अप सगीर वयना होवाने छीधे नामदार सरकार तरफथी वांकानेरमा मेनेजमेन्ट थयुं, ए मेनेजमेन्टनी शरुआतमां निहयादना रहीश राज्या हिरदास विहारीदास देसाइनी एडमोनीस्ट्रेटर तरीके नीयनोक थइ, ए पहेलां तेओ बढवाण स्टेटना एडमीनीस्ट्रेटर हता; एमणे वांकानेर राज्यनी लगाम हाथमां लीधा वाद राज्यमां केटलोएक सुधारो वधारो कर्यो. प्रथम कुमारश्री खेंगारजीवाळी उतारो दुरस्त करावी तेमां पोतानुं रहेटाण राख्युं अने नामदार गर्वनमेन्ट तरफथी सेकन्ड कलास स्टेटनी सत्तानो पावर भोगववानी मंजुरी मेळवी, राज्यमां रेग्युलर सीस्टम कहाडी, दरेक गामडांओने महालवार जूदां जूदां गोठव्यां, तेमज राज्यनां तमाम खाताओने अलग अलग स्थाप्या, अने जे वाइओने जीवाइमां गामो अपाएलां हतां ए गामो खालसा करी ते ते वाइओने रोकड रकमनी मासिक जीवाइ वांधी आपी; पताळी-आनो एल तथा युरोपीअन गेस्टहालस वंगरे मकानो वंधाच्यां, रेसीडन्सी वंगलानुं काम शरू कर्युं;

तेमज पताळीआना पूळथी वजार सुधीनो, राजकोटनो, घोळेश्वरनी तथा म्होटा बगीचानी सडको वंधाववा मांडी अने पोतानुं नाम वाकानरमा कायम रहे एडळा माटे तेओए पूळ दरवाजाथी चावडी सुबीनो सडकनुं नाम "हरिदास रोड" गरूपुं के जे आज पर्यन्त एज नामथी ओळखाय छे.

रा. वा. हरिदासभाइए मात्र आठ मास वाकानेरमा एड ग्रेनोस्ट्रेटरनो हुद्दे। भेगिन्यो, ते-वामां संस्थान इंडरना दिवान तरीके तेओनी निष्ठनोक्त यना वि. मं. १९३८ ना अपाढ ग्रुदि ८ ने दहाडे अमदावादना रहीश नागर गृह्य रा. वा. चुनोळाळ साराभाइने पोतानो चार्ज सोंपी शुदि १० ने दहाडे तेओ इंडर तरफ विदाय यया. एज साळमा अर्थान् सने १८८२ ना जुलाइ मासमां राज्यनां वाइश्रीओए राज्यना खेरखरा हिनविनक रा. वा. हिन्दामभाइनी याद-गीरी खातर एक फालो भरी गर्वनंशेन्ट लोन लीची अने तेना व्याजमायी " इरिदास स्कॉलरशीप" स्थापी.

मरहुम राज वल गर्सिंहजीनां न्हानां राणो छाड़वा के जे राज वनेसिंहनी तल्तनशीन थया ए अरसामां पोताना पुत्र करणसिंहजो वर्गरेने छइ गाम वीछोयाळे रहेवा गया हता एमणे राज वनेसिंहजीना कैळासवास पछी छै।किके आवो जीबाइ माटे गरासनी मागणी करो हती, परंतु रा. वा. हरिदासभाइए गरास नहि आपनां अष्ठक वार्षिक जीवाइ वाधी आपी हती.

रा वा. चुनीलाल साराभाइए वि० सं० १९३८ मी १९४१ स्थी संस्थान वांकानेरमा स्टेट मेनेजर तरीके काम कर्यु. प्रथम तो तेणे रेसीडन्सी वंगलातुं काम पूरु करावी तेमां पोतातु रहेटाण राख्युं. त्यारवाद पांचदुवारकां तथा मच्छुनो केनाल अने रातडोआ तथा गारीडामां वंध वंधाव्या. पछीथी पताळीआना पूल आगळथी रस्ताओं कराज्या, तेमन राजकोट अने वढवाणनी सहकोतुं काम पूणे कर्यु, सीटी सरवैनी श्रष्टआत करी अने राज्यनी आवादी अर्थे केटलीएक पडतर जमीन झालावाड तथा मूळी तरफना लोकोने लावी खेडाववा मांडी तेनी साथे अमरसर, जामसर, गोकलपर, छतर, काशीपर, हमनपर, लालपा, नवुं तरकी युं, खानगर, नागलसर, विठ लगढ, जीवापर, अणंदपर, मूळसर, मोजेपलाश, वीरपर तथा लक्ष्मीपर नामनां सत्तर नवां गामो वसाव्यां

खु० महाराजा अमरसिंहजी !

ए वलते आप नामदारनी उम्भर मात्र पाच वर्षनी हती, तो पण ते दरेक गामे तोरण

वांधवा आप स्टेंट मेने नरनी साथे प्राया हता. ए किया वि० सं० १९४० मां गाजते वानते वास्तुशास्त्रना नियम मुजब थइ हती अने दरेक गामना पटेलीने आपने मुवारक हाथे पाघडोओ वंधाववामां आवी हती.

वि० सं० १९४१ मा आप नामदार मानवंतां वामा साहवनी साथे कालावड शीतला मातानी यात्राए पधार्यो. ए अरसामा स्टेट मेनेजर चुनीलाल साराभाइए केराला, राजावडला तथा पंचाशीआ वगेरेना भाषातानी स्त्रीओ के जेना धणी विनकरजंद गुजरी गया हता, तेओने राज्य तरफ्यी जीवाइ अर्थे रोकड रकम वांथी आपी, चोखा भागनी सीस्टम दाखल करी अने निमक वावतना नामदार सरकार साथे कोलकरार कर्या. वाद मोरवीनी नेरोगेज रेल्वेतुं काम शरू थयुं. एज सालमा रा. वा. चुनीलाल साराभाइने जूनागढ स्टेटना नायव दिवानती जगे। मलवाथी ते त्या दाखल घया अने तेनो चार्ज रा. वा. गणपनराव नारायणराव लाडे लीवा. ए पहेलां संस्थान वढवाणना कारभारी हता. वाकानेरमां अध्या वाद एण प्रथम पूछ दरवाजानी न नी लाइन तथा वजारती लाइन कंपनशेशन आपी वंधावो; त्यारवाद जेल, निशाल, रिसालो, पेडोक, पूल दरवाजो, निवन यूरोपीअन शेस्ट हाजस, कोर्टहाजस, जडेश्वर महादेवनो किल्लो, नानीवा कत्याला अने मोटीवा हॉस्नीटल वंगरे मकानो वंधाव्यां.

विज् सैठ १९४२ मां पंचाशीया भायात सामतसिंह नोनां कुंवरीश्री चादावाने कच्छ ते राना पाटवी कुमार दादभा साहेव साथे परणाववारां आव्यां अने एज वर्षना फालगुन वदी १ ने गुरुवारे राजकुंवरीशी वाइसाहेववानां लग्न नांदे दिना कुमारश्री छत्रसिंहजी साथे करवामां आज्या.

वि. सं. १९४३ नी शरुआतमां आपश्रीना सान्निध्यपूर्वक मुंबइना मानवंता गवर्नर लॉर्ड रे साहेबने हाथे मोटीबा होस्पीटलने खुड़ी मुक्ताववानी क्रिया करवामां आवो. त्यारवाद केराळा भायात काकाश्री कुंभाजीनां कुवरीबाशी बदुवा साहेबनां लग्न पालीताणाना ठाकोर साहेबश्री मान-सिंहजी साथे म्होटी धामधूमथी करवामां आन्यां अने नाहरसिंहजीनां कुंबरीश्री बल्लबाने गणोदना कुमार साहेब साथे परणाववामां आव्यां. एज वर्षमा नामदार महाराणी कैसरे हिन्दनी गोल्डन ज्युवीलीनो प्रसंग प्राप्त थतां वांकानेरनी अंदर महोत्सव करवामां आव्यो हतो अने एनी यादगीरी माटे पृल दरवाजा उपर एक भव्य मकान वंधावी तेमां ज्युवीली लायबेरी स्थापवामां आवी. त्यारवाद महाराणीना नहाना पुत्र दयुक ओफ कोनोटनी काठियावाहमां पहेल बहेली पथरामणी थतां

~~~~ PP ~~~~~

मोरवी रेल्वे स्टेशन उपर एक भव्य मेळावडो भरी वांकानेर स्टेट तरफथी तेओ नामदारने म्हों हुं खाणुं आपवामां आव्युं हतुं. तेमज महाराणी इयुवीळीनुं नाम तथा इयुक ओफ कोनोटना आगमननी यादगीरी अर्थे राजकोटनी अंदर जे ज्युवीळीनु मकान वांघवामां आव्युं अने कोनोट हॉळ स्थापवामां अव्यो एमां जेम वीजां स्टेटोए रकम आपी तेम वांकानेर स्टेट तरफथी पण सारी रकम आपवामां आवी हती. ए अरसामां मुंबइना नामदार गवर्नर साहेव फरी राजकोट पथायी, ए वखते मोरवी तथा राजकोट रेल्वेने खुद्धी मुकवानुं काम शरु करवामां आव्युं. ए ट्रेन मच्छु नदीना पूळ उपर थइ चाळवानी हती, जेथी त्यां आगळ नामदार गवर्नर साहेवने स्टेट तरफथी खाणुं आपवामां आव्युं हतुं अने एओने हाथे पूळनी ओपन क्रिया करवामां आवी हती। पूळनी पासे ग्वास एक विशाल शमीयाणानी अंदर म्होटी सभा भरवामां आवी हती अने तेमां आपश्री उपरात काठियावाहना पोळीटीकळ एजन्ट मी. बोटमन साहेव, मोग्वीना टाकोर साहेवश्री वाधजी, रेल्वे मेनेजर मी. व्हाइटसाहेव, राज्यना तमाम अमळदारो तथा गामना शेट साहुकारोए हाजरी आपी हती. नामदार गवर्नर साहेवे आपनी आकृति निहाळी आप भविष्यमां एक उत्तम राज्यकर्ती निवडशो एवा सद्गार कहाड्या हता. कारणके "आकृतिरेव गुणान्कथयिति" (आकृतिज गुणोने कही आपे छे) एवो सत्युरुवानो सिद्धान्त छे.

वि० सं० १९४३ ता. ४-६-१८८७ ना रोज आप नामदार राजकोट राजकुमार कॉलेजमां अभ्यास करवा पथार्था. ए वस्ते आपश्रीनी उम्मर आट वर्षनी इती, परंतु बुद्धि कुशाय्र (कुश्च. दर्भना अय्र भाग जेवी तीक्ष्ण) होवाने लीधे सहाध्यायी सर्व कुमारो करतां अभ्यासमां आप आगळ वधवा लाग्या. मुसाहिव तरीके जाढेजा मामा साहेवश्री दीपसिंहजी विभाजी आपनी साथे हता. कॉल्डेजमा दासल थया वाद वि. सं. १९५२ पर्यन्त प्रीन्सीपाल मी. मेगनोटन साहेवना हाथ नीचे आपे उत्तम केळवणी मेळवी अने पछीथी प्रीन्सीपाल वॉल्डॉम्टन साहेव द्वारा वाकीनो अभ्यास पूरो करी वि. सं. १९५३ ना भादरवा ग्रुदि १० ने दहाडे आप कॉल्डेजमांथी मुक्त थया. ए दरमीयान वि. सं. १९४५ ना कार्तिक ग्रुदि ५ ने रोज आपना दादाश्री जसवतसिंहजीनो मञ्चतरावाळां राणीश्री वाइवा उर्फे साहेवाणीमानो स्वर्गवास थतां रटेट तरफथी तेओनी उत्तम रीते उत्तर किया करवामां आवी.

वि. सं. १९४६ ता. २३ जुन सने १८९० ना रोज नामदार ब्रीटीश सरकार तरफथी

वॉयसराय एन्ड गवर्नर जनरल लॉर्ड मार्कीस ओफ लेन्डसडाउन जी. सी. एम. जी. साहेव द्वारा वांकानेर स्टेटने सीधा वारसने अभावे विन नजराणे दत्तक लेवानी सनंद मळी.

वि. सं. १९४७ ना श्रावण ग्रुदि २ ने गुरुवारे आप नापदारना प्रपितामहा राज वखत-सिंहजीनां न्हानां राणी लाडुवानो स्वर्गवास थतां तेओनी विधि पुरःसर उत्तरिक्रया करवामां आवी.

दि. सं. १९४९ मां आखा स्टेटनी रेवन्युसरवै कराववानी ऋरुआत थइ, ए काम वि. सं. १९५४ नी आखरे समाप्त थयुं इतुं अने क्षेत्रवार मापणी मुकरर करवामां आवी इती.

वि. सं. १९५० मा मेवाह देशनी अंदर रहेला गाम शाश्यपुराना शिशोदीय कुलोत्पन्न महाराजा नाहराहिं हतीनां कुंबरी श्री गुलावकुंबरवा साथे आप नामदारना सबंगनों निश्चय थतां त्यांना दिवान तेमज अमीर उमरावो चांदलों करवा अत्रे आवेळा हता, शीयाळानी ऋतु चालती हती, निवन कोर्ट हाउसना मकानमां भव्य दरवार भरवामां आव्यो हतो, ए बखते गज्यना भाग्यातो उपरात मुसदी तेमज वेपारी वर्गे हाजरी आपी हती. ए क्रिया गाजते वाजते करवागां आवी हती, कचेरीमां तेमज निशाळोमां शायपुराना महाराजा तरफथी पुष्कळ साकर बहेंचवामां आवी हती अने आता स्टेटमां हॉली हे पाळवामां आव्यो हतो. त्यारवाद वर्षानी शरूआतमां जेट शुदि १२ ने शुक्रवारे मच्छ तथा आसोइ वगेरे तमाम नदीओमां म्होडं पूर आव्यं हतुं अने एथी तळपदमां तेमज महालोमां घणीज तुकशानी थइ हती, प्रजावगेने राज्य तरफथी सारी मदद आपवामां आवी हती, अने बृहने लीधे पढी गएलो गढ तेमज मकानो वगेरेनुं समार काम कराववामां आव्यं हतुं.

वि. सं. १९५१ मां आप नामदार मानवंता वामा साहेवनी साथे श्री मभासपाटणनी यात्राए पधार्या, त्यारे स्टेट मेनेजरे आपनी सेवा वजाववा चतुरभाइ जीवाभाइ आमीनने साथे मोकल्या हता. एज वर्षमां कॉलेजनी अंदर उनाळाना वेकेशननी रजा पडतां आप नामदारे चैत्र शिद १३ ने भोम ता. २३-४-१८९५ ना रोज मुंबइ तथा महावलेश्वरनी पहेळवहेळी मुसाफरीए पधारी उक्त रजाना दिवसो परम आनंदमां एजार्था हता.

वि. सं. १९५२ ना महा वदी छ ने बुधवारे शायपुरे इथेवाळे परणवातुं नकी थतां आप नामदार चारसो माणसोना रिसाला सहित स्पेशीयल ट्रेनमां पधार्याः लग्निया शास्त्रोक्त रीते करवामां आवी. शायपुरामां चार दिवस रही वरात आनंदपूर्वक वांकानेर तरफ वली निकलीः श्रीमान शायपुराधीशे सर्वतुं उत्तम मकारे आतिथ्य कर्युं हतुंः वन्ने पक्ष तरफथी भाट, ब्राह्मण

**६५३** ]

तथा चारणो वगेरेने घणी वक्षीयो आपवामां आवी हती. ए वस्तरे क्राहियावाड, कच्छ तेमज गुज-रातना राजा महाराजा तरफथी उमदा पोशाक लड़ माणतो गांकानेर आव्या हतां ए सर्वने आप नामदार तरफथी ऐत्हाक आग्वामां आव्यो हतो अने सरभग पण सारी करवामा आवी हती ए लग्न महोत्सवमां मोग्वी तेमज तेराना महाराजाओए हाजरी आपी हती, वहवाण टाकोर साहेव पण पथायी हता. ध्रांगधा, लीवडी, भावनगर अने गांडलना महाराजाओं पवास्वाना हता, परंतु अकस्मात् भावनगरना महाराजाश्री तस्तिमिह तीनो महा ग्रुदि . ५ ने दहांड केलायवाम थता ए सर्वनो मनोरथ पार पडी शक्यो निह; अने वहवाण टाकोर साहेव पण तेओना निकटना सर्वथी होवाथी तुरतमां पोताना वतन तरफ पथारी गया. मे. पोलीटीकल एकट हन्कोक साहेव, भावतसाहेव ओडोनल, कॉलेजना घीन्सीपाल तथा वोजा ऑफीमगे वगेरे एकट्सर श्रीस युगेपीअनो आपना लग्न महोत्सवनुं आमंत्रण स्वीकारी लेडीओ सहवर्तमान वांकानेर परार्था हता, जेथी प्रस्तुत शोभामां कांइ जुदोज उमेरो थयो हतो अने ए पसंगे खुल्ले हाथे घग्रं खर्च करवामां आव्युं हतुं.

वि. सं. १९५६ ना आश्विन ग्रुदि 9 ता. १३-१०-१८९६ ना रोज आप नामदार कॉलेजमांथी स्टेट मेनेजर रा. वा. गणपतराव नारायणराव लाडनी साथे हिन्दुस्थाननी पहेली मुं-साफरीए पधार्या. मामा साहेबश्री दीपसिंहजी विभाजी तथा केटलाएक परिजनो सहित आपे वा-कानेरथी प्रयाण करी अजमेर, जयपुर, दिल्ही, आग्रा, कानपुर, लखनऊ, अल्हाबाद, बनारस, अने मुंबइनी मुसाफरी तेमज यात्रा करी ते ते देशना रीतिरवाज वंगरेनो महान् अनुभव मेळव्यो. त्यारवाद वि. सं. १९५३ ना भादरवा ग्रुदि १० ने दहाडे आप कॉलेजमांथी मुक्त थया.

भारतेश्वरी महाराणी विकटोरीआनी डायमंड ज्युवीलीनो महोत्सव ता. २१ तथा ता. २२ जुन सने १८९७ ना रोज होवाथी ते प्रसंगे वांकानेरने ध्वजा पताकाथी सुशोभित करी पुष्कळ रोशनी करवामां आवी हती, तेमज केदीओने मीढुं खाणुं आपो निशाळो वगेरेमा मीढाइ वहेंचवामां आवी हती अने हॉलीडे पाळवामा आव्यो हतो. राजकोट कोनोट हॉलमां महाराणीनी मूर्ति पघराववा सबवे दरेक स्टेटोए भरेला फाळामां आप नामहारे पण योग्य रकम भरेली हती, तेमज ज्युवीली वॉटर वर्कसमां पण सारी मदद आपी हती अने ए महोत्सवनी यादगीरी माटे " हाइमंह ज्युवीली टाइल्स फेकटरो " नुं मकान मच्छुना पूलनो पेली वाजु एकन्दर हा. १००००) दशह-जारनी महोटी रकम खर्ची वंधाव्युं हतुं.

वि. सं. १९५४ ना मागशर शुद्धि ५ ने गुरुवारे मरहुम राज वनेसिंहजीनां पाटराणी मोटीवानो स्वर्गवास थतां तेनी यथाविधि उत्तरिक्रया करवामां आवी. ए अरसामां ता. १४-११-१८९७ ना रोज राजकोट पथारेला मुंवइना नामदार गर्वनर सेन्डहर्स्ट जी. सी. आइ. इ. साहेवे कोनोट हॉलमां ता. २५ मी ए भरेला पव्लोक दरवारमा आप नामदारे हाजरी आपी हती अने ए पछी एक महीने अर्थात् ता. १६-११-१८९७ ना रोज डॉकटर दीनशाह वरजोर-जीनी साथे आप हिन्दुस्थाननी वीजी मुसाफरी अर्थे पथार्या. ए मुसाफरीनो अहेवाल डॉकटर दीनशाह वरजोर-जीनी साथे आप हिन्दुस्थाननी वीजी मुसाफरी अर्थे पथार्या. ए मुसाफरीनो अहेवाल डॉकटर दीनशाह वरजोरजी एम्, आर, नी, एस्. (सास निमनोक्तं) एल, आर, सी, पी, तरफथी महेरवान काठियावाडना पोलीटीकल एजन्ड कर्नल जे. एम्. इन्टर साहेव तरफथी नीचे मुजव रज्ञ करवामां आव्यो हतो.

जेतपुर, माहे जुन, सने १८९८

#### महेरवान साहेव!

वाकानेरना कुमार श्री अपरसिंहजी वहादुर, जेओश्रीने तेओनी मुप्ताफरीमा मार्रा संभाळ गीचे मुक्तवामा आव्या तेओश्रीनी हिंन्दुस्थाननी मुप्ताफरीनो अहेवाळ आप महेरवान आगळ मान-पूर्वक रज्ञ करवा रजा लडं छुं.

सदर मुसाफरी ता. १ माहे जान्युआरी १८९८ थी ता. २४ एपीछ १८९८ सुधी एटले के चार पास सुधी करवानुं ठरान्युं हतुं अने ते प्रमाणे राजकुपार कॉलेजना पीन्सीपाल मे. वोडींगटन साहेबे प्रोग्राम तैयार करी आपनी संमित माटे आप हजुर रज्ज करेल हतो, ते प्रोग्रामनी एक नकल आ साथे सामेल छे. (जुओ नं. १ नुं परिशिष्ट)

त्यारपछी अमने एम छाग्युं के अमारी मुसाफरीना अंतमां (एमीळ मासगां) सखत गरमी पड़े ते पहेला मुसाफरी पुरी करवाना सववथी अमोए ता. ? जान्युआरी पहेलां नीकळवातुं नहीं कर्यु, आथी आगळ तैयार करेल मोग्राममां पण ते ममाणे सबळी तारीखोमां फेरफार करवो पडयो छे.

ए रीते तैयार करेल माग्राम ममाणे पण केटलीक अनिर्वार्थ अडचणोने लीघे अमाराथी वर्नी शकायुं नधी. (१) कुमार श्री राज साहेवने मार्च मासनी आखरे इंग्लांडना प्रवास उपर जवाना खबर मळ्या हता तेथी तेओश्रीने ते पहेलां मुसाफरी पूर्ण करी लेवानो विचार हतो. (२)

केटलीक जगोना इवापाणी माफक आवे तेम न इता तथा नीमेली केटलीक जगोए मस्की है विमेरे उपद्रशे फाटी निकलेला इता, तेथी आप साहेवनी परवानगी मेलवी केटलीक जगोए जवानुं वंध राखवुं पडयुं इतुं. ( जुओ प्रोग्राम नं. ३ )

उपरना कारणोने ळीधे कांजेवरम, कोल्हापुर, मुंबई, तथा वडोदरा नामना स्थळोने पडतां मूकवामां आव्यां हतां, कांजेवरम शहेर आडमखुं आवेछुं छे अने त्यां डाक बंगळा तथा हॉटेळनी कांइ सगवड निह होवाथी त्यां जवातुं अमे बंध राख्युं, कोल्हापुर तथा तेनी आसपासना परगणामां निम्कीनो उपद्वित्त होवा सबंधनो त्यांना में पोळीटीकळ एजन्ट लाहेवनो तार्र अमने मळवाथी अमोए दित्यां जबुं वंधे राख्युं, एज कारणोने ळीधे मुंबइ तथा वडोदरा अमो गया नथी.

अयोध्यामां पण हॉटेल तथा डाकवंग ठानी सारी सगवड निह होवाधी अमी त्यां प्रोग्राम प्रिजन वे दिवस रोकाया निह, त्यां विषासना त्रण कला के जह पहोंच्या अने त्यांना धर्मस्थळो, पित्र महोटां पन्दिरो तथा ऐतिहासिक तेमज पुरातन संजोगोधी प्रख्यात स्थानो वोरे जोड रात्री-नी गाडीए पाछा काश्ची आवी पहोंच्या।

छंकामां आवेछं नुवाहा एळीया जवानं अमारा माग्राममां नहोतुं, तो पण अमोने खबर मळ्या के ते जगो जीवा लायक छे तेथी अमो त्यां गया हता. त्यां जतां गाडीमांथी वने वाजुनो देखाव, कुद्रतनो देखाव बेशक मनोरंजक जणातो हतो.

आ शिवाय मोगाममां वीजा पण केटलाक फेरफार थया छे, कारणके कोइ कोइ जगोए ओछा वधता दिवस रोकावानी जरुर पडी हती, ते सघळुं आपने रज्ज करेल डायरी ( यादी ) थी शेशन थशे

मुसाफरीना खर्चना अंदाज का. १२६००) काढवामां आव्यो हतो. परंतु खरेखकं खर्च का. ८९७१-६-६ तथा मारा पगारनी बाकी रकम का. ६००) मळी कुल खर्च का. ९५७१-६-६ थयुं छे.

आ उपस्थी जणाय छे के हा. ३०२८-९-६ नो खर्चमां बचाव ययेळे छे ते नीचेनां कारणोने लीधे.

(१) अमो मुसाफरीमां फक्त सात माणसो हता. (२) लगभग सम्बी जगोए वने त्यां सुधी अमो हॉ टेलमा तथा हाक वंगलामं उतारों करता, ज्यां अमोने जोइती सगवड पूरेपुरी मलती. (३) अमारा पहेला जे वीका कुमारश्रीओ मुसाफरी उपर निकलता तेओने ज्यारे एक जगोएथी वीजी जगोए जवातुं थतुं त्यारे ते १थळे हंगामी मुकामनी सगवड करवा माटे आगळथी माणसो मोकलवा पडता, ते मोकलवानी अमारे जरुर निह होवाथी एवं खर्च थतुं निह. ए शिवाय एक वीजी वावतथी अमोने खर्चमां बचाव थतों ते मारे जणाववुं जोइए. अमो हॉ टेलमां तथा डाकचंगलाओं मा उतारों करता, अमारी साथे माणसो घणां थोडा हतां, अने तेथी सरसामान वगरे पण वणी थोडो हतो, तेथी केटलीक जगोए अमो त्यांना महोटा मानवंता गृहस्थोनी मिजमानी पण स्वीकारी जकता

अमारा अनुभव उपरथी अमने तो एम जणाय छे के वीजे गाम जवानुं होय ते आगमच त्यां आगळ्यी हगामी मुकामनी सगवड करवा माटे माणसो मोकलवामां आवे छे तेनुं खर्च वर्तमान समये नकामुं वाजारण छे: कारण के गमे तेवी जातना मुसाफरोने दरेक गामे सारी होटेलो वगेरिमां जोइए तेवी सगवड मळी शके छे. होटेलो वगेरेना उपरी तथां व्यवस्थापको गांडी घोडा, नोक र चाकर, आदिनी जोइती सगवडो करी आपे छे. ते शिवाय कोइ हंगामी मुकाम अथवा वीजा उतारामां मुकाम करवा करतां म्होटी होटेलोमां उत्तरवाथी एक महान् लाभ ए छे के—त्यां जूदी जूदी जातना अने भिन्न भिन्न देशना संद्गृहस्थोनो समागम थाय छे, एथी तेओनी रीतभात, पोशाक तथा खानटानी वगेरेनी माहिती मळे छे. हमार श्री राजसाहेव के जेओश्रीने स्वल्प समर्यमांज युरो-मनी मुसाफरीए जवानुं छे तेमने माटे आवीं समागम तथा आवा मकारनी केळवणी घणी अगत्यंनी छे. मने कहेतां खुशी उत्तरन थाय छे के कुमारशीराजसाहेवने साढुं वर्तन, मिळनसार स्वभाव तथा चाहवा लायक सदगुणोने लीधे होटेलमां उतारो करवाथी त्यां उत्तरेलों युरोपीअन मजमानो तेमज विजा नामांकित देशी शहस्थोनो सत्वर समागम थतो अने एथी तेओश्री अत्यन्त आनंद पोमतों. तेओ वारंवार एम कहेता के "आपणे होटेलोनो जे लाम छइ शक्या तेथी मने वहुं आनट थाय छे. जो आपणे अगाउपी तैयार करावेला हंगाणी मकानमां उत्तर्या होत तो आपणने कंइक कंइक अगवड पटन अने आवो आनंद मळत नहीं "

खर्चनी हक्तीकन—कड वावतमां केटछं खर्च थयुं अने धारेल खर्च करतां ओछं खर्च धवातुं कारण शुं ? वगेरे—

```
(रेल्वे तथा आगवोटनुं भाडुं लगेन खर्च सहित.)
      धारेखुं खर्च.
                            थएत खर्च.
                                                           रिमार्क.
       ३५००
                          2202-9-18
                                                 अमी हॉटेको वगेरेमां उतरता अने
रा.
                                                 अपारी साथे विशेष सामान नहोतो
                                                 तेथी खर्च ओछं.
                      ( घोडागाडी तथा टांगा वंगरेतुं भाडुं. )
                                                           रिमार्क.
      धारेलुं खर्च.
                            धएछ खर्च.
        2060
                            490-5-8
                                                   केटलीक जगोए ओळखाणवाळा
रा.
                                                   यहस्योनी गाहीओ लेता तेथी भाइं
                                                   ओछुं खर्चवुं पडतुं.
                               ( खोराक खर्च. )
      धारेळ खर्च.
                            थएल खर्च.
                                                           रिमार्क.
        १९२ए
                          ११२६-८-९
रा.
                          (नेमाएला कामदारनो पगार.)
                                                        मुसाफरीनी मुदत ओछी
         १६००
                               600
रा.
                                                        थवाथी पगार खर्च ओछुं.
                               ( खानगी खर्च )
                            १५००
रा.
         १५००
           ( मुसाफरीनी सामग्री-साहित्य, आगळथी छोषेल सामान विगेरे. )
         9000
                            984-U-0
रा.
                        ( यात्राओन स्थळे गया तेतुं खर्च. )
                                                         कांजेदरम अमो गया नहि
                          848-12-8
         400
र्हा.
                                                         तेथी ओछं खर्च.
                          ( उतरवाना मकानतुं भाडुं. )
                                                       अमो हॉटेल्ं तथा डाक बंग-
                          १५८-8-0
         400
 रा.
```

[६4८]

लामां उतारो करता तेथी ओछुं भाडूं.

## ( वधारातुं परचुरण नैमित्तिक खर्च. )

हा. १००० १०१३-६-५

कुल हा. १२६०० ८९७१-६-६

€00-0-0

नेमाएका कामदारोने वाकी आपवानो पगार

९५७१—६—६

१२६००-०-० ९५७१-६-६

३०२८–९–६

आ प्रमाणे हांसीयामां वतान्या मुजव रु. ३०२८-९-६ नी रकम वाकी वधी तेमांथी दालार प्रान्तना पे।लीटीकल एजन्टनी परवानगीथी रु. २२३३-१३-६ नी रकम अ. सी. ज्ञा-यपुरावाळां राणीकी साहेवना शाहपुराथी वांकानेर आववाना खर्च पेटे, एक तोप खरीदी तेनी किम्मत, तथा यूरोपनी मुसाफरी माटे खास तैयार करावेल एक कोट (डगलो) नी किम्मत पेटे आप्या.

क्वल हिसाव रु. १५४६-०-० नी सिलक सहित ( जेमांथी मारा पगारना रु. ६००) आपवा वाकी छे ) वाकानेरना कारभारी साहेव रा. वा. मोतीचंद तुलसीने आपी दीधेल छे.

समग्र मुसाफरीमां अमारा सर्वनी तंदुरस्ती सारी हती, कोइने पण कोइ पण कारणशी दवा छेवानी जरुर पढ़ी न हती; एतुं कारण मने तो ए लाग्युं के अमे दरेक स्थळे सारी होटेलमां उत्तरता, ज्यां अमने सारो खोराक तथा स्वच्छ मकान वगेरेनी संपूर्ण अनुकूळता करी आपवामां आवती, आगळ जे जुमारश्रीओए मुसाफरी करेली ते करतां अमोने आ एक खास फायदो जोवामां आव्यो छे.

अमारी साथे चार नोकरो हता, तेओए दरेक वावतमां पोतानी चालचलगत तथा रीत-भात वगेरेथी अमोने पूरतो संतोप आप्यो छे, तेओ दरेक काम खंतथी मन दइने करता, कोड वखत वपोरना वे त्रण कलाक सूत्री खावानुं मळतुं निह, तो पण तेओ एक शब्द पण उतावळथी वोल्या शिवाय आनंदथी अमारी सघळी अनुकूळना जाळवता. तेओनो खास वखाणवा लायक गुण तो मने ए जोवामां आळो के तेओ तहन ममाणिक हता अने कम्कसम पण कम्ता, जेथी केटलेक अंशे खर्चमां सारो बचाव थयो छे एम कहीश तो तेमां अतिशयोक्ति नथी.

ए उपरांत अमारा सेक्रेटरी तरीके यी. रतनज्ञा वेजनजी डमरी साथे इता, तेओ खर्च वगेरेनो हिसाव राखता, खर्चमां जे बचाव थयो छ ते तेनी करकसरने छीवेज. तेओ दरेक कार्य छाद्ध मनथी करता अने पोताने गमे तेटछी तस्दी पडे तो पण अमारामांना सर्वनी सगवह साचवता, तेओए अगाज वडीयाना दरवारश्री वावावाळा काथे तेमना सेक्रेटरी तरीके हिन्दुस्थाननी मुसाफरी करी हती, तेनो तेमने अनुभव हते, ते अमोने तेना तरफथी म्होटा छाभरूप थइ पड्यो.

छेक्टे मने अन्तःकरणथी कहेवानो उपळको आवे छे अने जो के ते खुज्ञामड जेटुं जगाज्ञे, तो पण मारे कह्या बगर चालतुं नधी के कुमारश्री राजमाहेव जेटा सद्गुणी अने उमदा
कुमार मारी संभाळ तथा देखरेख नीचे हता, जेथी हुं मने घणोज भाग्यज्ञाळो समन्तुं छुं, टुंकी
गुदतमां तेमनी जोडे रहेला सहवासधी मने जे अनुभव थयो छे ते उपरथी कही आकुं छुं के—कुमारश्री राजसाहेव जेवा मायाळु अन्तःकरणना, मिल्नसार स्वभावना, विवेको अने खानदान
अमीर गृहस्थो थोडाज हज्ञो, राजकुमारने योग्य सघळी लायकात तेओश्रीमां छे, वखते वखते
वातचीतमां तेओ बांकानेरना माजी कारभारी गणपतराव लाड तरफ पोतानी आभारनी लागणी
वतावता अने कहेता के तेओए (लाड साहेवे) मने उमदा सामाजीक मंडलना संवंधमां लावी
दरेक प्रकारनी केळवणी आपी छे. मुसाफरीनी अंदर कुमारश्री राजसाहेव जे नविन जाणवानुं
मळे तेमां पूरतुं लक्ष आपी तेनुं संभाळपूर्वक रनन करता. हुं संपूर्ण उमेद राखुं छुं के कुमारश्री
राजसाहेवने जो आ प्रमाणे उमदा सामाजीक समागमनो लाभ आपवामां आवशे तो तेओ रुडा
राजकाती नीवडशे. अंग्रेजी घोरण उपर अपाएली केळवणी केवां रुडा परिणाम आपे छे, तेना कुमारश्री राजसाहेव संगीन दाखला रुप छे.

छेवट कुमारश्री राजसाहेव जेवा उत्तम राजकुमारनी देखरेख माटे मे. पोछीटीकल एजन्ट साहेवे मारी खास निमनोक करी महने हिन्दुस्ताननी मुसाफरी करवानी जे तक आपी तेन माटे तेमनो अन्तःकरण पूर्वक आभार मार्नु छु.

वाकानरना राजसाहेव खुदाविंद अपरासिंहजी वहादुरनी हिन्दुस्ताननी मुसाफ-रीना अहेवाल.

माहे हीसेम्बरनी ता. घ्रद्द मीए सांजनी गाडीमां अमो व कानेरथी निकळ्या. लाडसाहेब, केटलाक मित्रो, स्टेटना समग्र नोकरों, शहरना प्रतिष्ठित गृहस्थों तथा जनानानुं स्त्रीमंडळ अमोने बळाववा स्टेशन पर आवेल हाा. एक तरफ घोडा वस्तत माटे पोतानी प्रजानो तथा राजकुढंबनो वियोग धवानो होवाधी कुमारशीना तथा सर्वना चहेरा उपर दिलगीरी छव।एली हती, बीजी तरफ अमारे नवी मुसाफरी उपर जवानुं तेमज निवन स्थळों अने देखावों जोवानुं होवाथी अमोने आनद थतो हतो. अमो रात्रीना ११ कलाके बढवाण पहोंच्या अने त्यांथी गाडी बदलावी बी. बी. सी. आइ. रेल्वेना सल्हनमां अमो सुद्द रहा।

ता. इष्ठ हीसेम्बर—सवारना साहा छ कलाके अमीए वहवाण छोड्युं. छखदर स्टेशने त्यांना दरवार श्री गगुभा के जे कुमारश्रीना राजकुमार कॉलेजमा सहाध्यायी इता तेओ मळवाने आवेल इता. त्यांथी वीरमगाम पहोंच्या अने वीरमगामणी मेलाणा जती ट्रेनमां अमी बेटा, वपीरना पोणा बार कलाके मेलाणा पहोंच्या. त्याथी राजपूताना माळवा रेल्वेमां बेसी वार कलाके अजमेर जड़ पहोंच्या त्या प्लेग डयुटी उपरना डाकटरे अमोने तपास्या अने स्टेशन पालेना डाकवंगलामां अमीए उतारी वर्यों.

ता. २८ डीसेम्बर-अहींया कुमारश्री राजसाहेबना श्वसुर तेमने मळवा माटे खास आबेल हता, तेमनी मुलाकात लीधी.

कुमारश्री राजपाद्देव ज्यारे राजकोट राजकुमार कॉलेजमां अज्यास करता, त्यारे तेओश्री तथा बीजा कुमारश्रीओ अहींनो मेयो कॉलेजना कुमारश्रीओ साथे क्रीकेटनी रमत रमवा माटे आवेल हता.

अमो दोलतवाग तथा मैयो वॉलेजनुं मकान जोवा गया. मेयो कॉलेज ए राजकोटमां रहेची राजकुमार कॉलेज जेवी संस्था छे; परंतु राजकुमार कॉलेज करतां कांइक उतरती छे, राज- ~~FIG-~~

कुमारने रहेवा तथा जमवा वगरेनी सगवड अहांया जोइए तेनी नथी. छात्राक्य राख्यानी हेतु ए छे के केळवणी छेवा आवेला उमेदवारी एक वीजाना सब रमा आवे अने अन्योन्यना स्वभाव, वर्तन तथा आचार वगेरेमांथी कंड् ग्रहण करी शके. ए हेतुने उक्त कॉलेगनी मचलित मया अतुक्ळ नथी. नीन्यीयाल में कर्न ठलोकने अमी यठ्या, तेओथी णिलनपार मक्किना अमीर माणस छे. तेमना तरफ कॉलेजना विद्यार्थी राजकुमारी मेमनी तथा माननी लागणी बरावे छे.

ता. ३० डीसेम्बर १८९७ कानपुर-अहीया अमे चामडां कमाबवानो मोटा पाया उपर चालतो उद्योग जोयो, बाद बागमा थइने जूनी रेपोडनी (सहकारी वक्षी अने रहेबातुं मकान) तरफ गया.

ता. १ जान्युआरी १८९८ अरहावाद —कानपुरथी अमी स्वरंग समयमान अने आवी पहोंच्या अने स्टेशन पर रहेळी कोळनरनी होटेजमां उतारी कर्यो, आ हॉटेलमां सगवड घणी सारी छे, त्यां भरातो वार्षिक मेळो जोवाने अमी शाहवाग गया हता. शाहजहान तथा नूरजहाननी कवरो जो के जीण यह गयेळ छे, तो पण माचीन काळना मकानोनी विभूति तरीके निरीक्षण करवा लायक छे.

ता. २ जान्युआरी अमी आल्फ्रेड वाग जोवा गया, त्या थोर्नहील हॉल तथा मेयो मेमो-रीअल हॉलमां म्होटा पाया उपर पुस्तकालय (लायब्रेरी) तथा चमत्कारिक पदार्थोतुं संग्रह-स्थान छे.

म्यूर कॉलेन जोवा गया, ए एक विस्तृत गंनावर मकान छे, ते उपर म्होडं टावर छे अने त्यांथी समग्र शहेरनो देखाव उपर उपरथो दृष्टिगोचर थाय छे.

ता. ३ जान्युआरीए अमे त्यां गाडोनो पुछ जीवा गया. ए पूछ हाछना इजनेरी काम-नो दर्शनीय नमुनो छे.

ता. ४ थोए अमो गंगा तथा यमुना नदीओना संगम उपर आवेलो किल्लो जोवा गया, अंदरना किल्लानी आसपास फरतां अमोने त्यांथी द्रग्गोचर थतो सरिताओनो देखाव निःसंज्ञय . सौन्दैर्य युक्त जणातो हतो. अमो त्यांथी होडोमां वेसी संगमपर गया.

ता. ५ मीए अमे। अशोकनो स्तंभ तथा जमीन नोचे जामेळुं अक्षपवटनुं द्वक्ष जोवाने हुनंया. ए वटनी निकट जब नो मार्ग भूमिनी अंदर तद्दन अन्धकारमय अने भेजवाळी जमीनमां छे. अहींयां मोरे कहे बुं जोइए के—जे ह नारो हिन्दु छोको पर्नणीने दिवसे आ प्रामिन्डिने दर्शने जाय छे, तेओनी तन्दुरस्ती माटे आ अन्यकारभय भेजबाळा मार्गने उपस्थी खोदी खुछो करी नाखनो जोइए, अथवा तो ए पर्ण नगरनुं वट दक्ष ते स्थळेथी उठावी नदी किनारे कोइ खुछा भागमां मूक बुं जोइए के जेथो आ तमोमय अने श्वासनो निरोध करनारा मोंयरानी अंदर थनां चोरी तथा व्यभिचार वगेरे दुर कमीं अटके. तेन दिवसे अकवरवं म जोवाने गया, त्यांथी होडी मं देशी संगम पर आव्या, त्यारवाद अमी मोटी ननार जोवा गया अने त्या वेधवाळीतुं मकानं जोयुं, जेवांथी मात्र खगोळवेशाओनेज कंइक जाणवानुं मळी बाके छे.

ता. ६ ठीए अमो काशीए गया, पारीस होटेलमां जतारो कर्यो, त्यां अमोने घणो सारी सगवड मळी.

अमे नही किनारे फरवा नेया, त्यां न्हावा घोवा माटे वांघेळा घाट तथा सोनापुर (र्देस्व-शानभूमि ) वेगेरे जिथा

त्यारवाद रेल्वेनो पूळ जोवा गया, पूळनी वन्ने वार्जुएँ माणसोने चाळ्वाँनो पग रस्तो छे, अमो होडीमां वेसीने नदीने उपरवास दूरना घाट तरफ गया, ज्यां अमोए ते दिवसे चन्द्रग्रहण होवाथी संख्यावंध लोकोने गंगामा स्नान करतां जोयां, अने अमारामांना केटलाएक हिन्दु नोकरो ते दिवसे पाताना देहने गंगा स्नानवढे शुद्ध करवानी तक मळवाथो पाताने भाग्यशाळी समज्या.

अमा क्षोन्स कॉलेन जोवा गया, जेनो मध्य हॉल विशाळ अने सुन्द्रें छे.

ता. ११ जान्युआरीए अमोए अयोध्या आवी त्यांना धर्ममिन्दरों जोयां, आंही वानरोना मिहान यृत्थों नजरे पडे छे, तेओं छोकोंने इजानी साथे आनंद आपे छे, त्यांधी पाछा काशीए . आवीने अमो शहरना केटलाक छत्ता जोवाने गया, कुमारश्री राजसाहेव तथा तेमना हिन्दु परिजनों काशीराजनां दर्शन करवा माटे उत्स्वक होवाथी अमोए होडीमां वेसी काशीराजाना निवास तरफ जवातुं नकी कर्धु, परंतु वखत वधारे जशे एम जणावाथी ए वात मुख्तवी राखी. ए उपरांत अमोए सारनाथनां खंडरों पण जोयां, ता. १३ मीए अमो कछेक्टरने मळ्या अने वपोरे मेळमां रवाना यह ता. १४ मीना मभात समये कळकत्ते जह पहींच्या.

ता. १४ कलकता-अहीं अपोए कोन्टोनेन्डल हॉडेलमां उतारो कयों अने लगभग पंदर

दिवस रोकाया. वलते वसते अमो एडन गार्डनमा जता के ज्या वेंड वागे छे अने शहरना सारा सारा गृहस्थो आदि तेतुं अवण करवा एकटा याय है. कालिकामातापर वंगाली लोकोने अपार अद्धा छे, त्यां निरंतर छोकोनां टोलेटोलां दर्शन करवा जाव छे दुर्गापृजनना तहेशारोमा (जे वसते त्यानी कोटों शियालामा लावा समय सूरी वंघ रहे छे त्यारे) अही स्होटो मेलो भराय छे, अने अमारा सांभळवा प्रमाणे आखुं शहर पंदर दिवस पर्यन्त पूर्ण आनंदमां रहे छे. ए स्थले जवाथी वंगाली छोकोनो कालिकामाता प्रत्ये केवो इह भक्तियाव छे तेनो पूरतो ख्याल करी शकाय छे अने एज कारणथी ए स्थल खास जीया लायक छे.

त्र प्रमान्ति हैं अहींना संग्रहस्थानमां जातजातनी जोवा लायक चीजोनो संग्रह होवाथी दरेक जातिना . शोखीन सज्जनोने कंइने कंइ जाणवानुं मळं छे, आवुं संग्रहस्थान अमोए हिन्दुस्थानमा बीजे क्याइ पण जोखुं नथी. कुमारश्री राजसाहेवे जणाव्यु के—आपणे जयपुरनुं सग्रहस्थान जोखुं, पण जोवुं तो नहींजे.

बहारना एक लत्तामां-बागमां विविध मकारनां माणीओ (पशु-५क्षीओ ) नो संग्रह छे ते अवश्य दर्शनीय छे. दर रिवारे त्यां वेग्ड वागे छे अने म्तुप्योनी विशेष भीड न थाय एटछा हिमाटे त्या जनानी फी विशेष राखेली छे.

ता. १७ मी जान्युआरीए मेदान तरफ चालीने फरवा गया, ज्या अमीए महान् नामां-कित मनुष्योनी यादगीरी अर्थे वनावेल आरस तथा पीतळ वगेरेना वावलांओ जीयां.

ता. १८ मीए अमे टाउन हाँ ज जोवा गया अने त्यांथी गाडीमा वेशी शहरना केटलाक स्ताओमां फर्या तथा सन्ध्या समये एडन वाग तरफ गया

किल्लो, आर्टगेलेरी तथा म्होटो बंध वगेरे स्थळो जोवा लायक छे.

ता २० मीए अमो सरकारी टंकशाळ जोवा गया, कुमार श्री राजसाहेवने तेमां घणुं जोवातुं मळ्युं.

बीजे दीवसे अमे। डाक जोवा गया, त्यां क्रेनो (भार चडादवा उतारवाना संचा) वडे परदेशयी आवेळां वहाणोमांनो माल उतारातो हतो अने परदेश जनारां वहाणोमां जत्यावंध माल चडाववामां आवतो हतो. एक क्रेन सहुथी म्होटी हती, परंतु अमे गया ते दिवसे ते वंध राखवामां आवी हती.

अहींया यती शरतो पण घणी सारी अने जोवा लायक छे, ता. २२ मीए अमो शरतो जोवा गया; त्या अमोने उत्तम बेटक मळी इती. त्यांथी शरतना समग्र मेदाननो देखाव अत्यन्त मनोहर जणातो हतो, जे स्थळे बेन्ड वागे छे ते स्थळ शरतना मेदाननी रामीपेज छे अने ए जगो घणी सुगमता भरेली छे. ते दिवसे रात्रीना अमो बादशाही नाटकशाळामां एक उमदा नाटक कंपनीतु "दिलोजान घवानी अगत्य" ए नामनुं नाटक जोयुं.

ता. २३ मीए अमो चायना वजारमां गया, परंतु त्यां अमोने जोवा जेवुं बहु ज थोडुं ज मळ्युं.

ता. २४ मीए अमा वरकपुर जोवा गया, ए स्थळे आळीशां नामदार वायसरॉय दर रविवारे जाय छे, अमो त्यां लक्करी छावणी जोया वाद नामदार बाइसरॉयना वंगला तरफ गया.

जे वॉटर वर्को वडे आखा कलकत्ता शहरने पाणी पुरुं पाडवामां आवे छे, ते जोया वाद साजना अमी कलकत्ते आव्या.

दंगाल वेंसतुं मकान भव्य छे, ते गंजावर खातातुं काम भिन्न भिन्न कार्यालयोमां यंत्रनी माफक नियमित चाल छे. ए जोया वाद अमो वनस्पति वागो जोवा गया, ए उपवनो विस्तृत तेमज समग्र हिन्दुस्ताननी अंदर रहेला अन्य औषधिओना उपवनो करतां उत्कृष्टता घरावे छे, हुगली नदो उपवनो पुल पण जोवा लायक छे, तेना एक आगळ पडता भाग उपस्थी ए पुलनी आकृति अत्यन्त सुंदर जणाय छे अने ते जोवा जवा माटे खास परवानगी मेळववी पडे छे.

ता २८ मीए अमी कॉइलर घाट उपर गया अने त्याथी होडीमां वेसी किनाराथी जरा दूर " ओरीया " नामनी आगवीट नांगरेली हती ते तरफ गया. अमने खबर मळ्या हता के ए आगवीट रिवारे नगन्नाथपुरी तरफ चाली निकळवानी हती, परंतु तपास करतां तेना कप्तान पानेथी खबर मळ्या के आवता लुथवार सुधी ते आगवीट त्यांज रोकावानी छे. ए अपरथी अमीए मेमर्म किलवर्ननी कपनीनी "पुरी" नामनी आगवीट जगन्नाथपुरी तरफ आवता मंगळवारे जवानी होवाथी तेमा गोटवण करी, सारे भाग्ये ए आगवीट " ओरीया " करतां घणी सारी सगवडवाळी हती.

ता ३० मीए अमी दजार जीवा गया. शहरना एक राजावाद्य नामना नामांकित जमी-नदारने त्या वाकानेरनी कोइपण माणस मुनीम हतो, तेणे अमीने राजावाद्य साथे ओळखाण कराबी, अमो तेने त्यां गया, तेणे अनारुं उत्तम बकारे आतिष्य कर्यु, अने राजनाहेबनी सुमाफरी विषे तेनी साथे स्वरूप समय वातचीत थइ।

ता. ३१ मीए मध्याह पठी अमे समुद्र किनार होडोमा बेसो " पुरी " आगबोटपर आच्या, तेमां अमारो सरसामान गोठवी, अमारा चार परिजनो त्या राखी अमे पाछा होडोमां बेमी कांठे आच्या, त्यांथी घोडागाडीमा वती इडन बाग तरफ फरवा गया अने रात्रीए हॉटेलमा खाणुं लीधा पछी कांठे आबी पाठा होडीमां बेसी " पुरी " आगबोट तरफ गया अने तेमा आखी रात सुड़ रह्या, कारण के ए आगबोट सवारमां बहेकी चाळवानो हतो.

ता. १ फेब्रुआरीए पभातमां "पुरी" अगिवोट कलकत्ताथी उपही, ए वसते धूमस घणी होवाने लीधे अमो जरा दूर गया निह त्यां तो समुद्र कांठो तथा शहेर वगेरे झांखा झांखा देखानां पण बंध पड्यां. कपनान तथा बोटना बीजा ओफीसरो मायाळ हता, तेमनी साथे चांद-वली पहोंच्या पछी अमे साहासान बजे भोजन कर्यु अने त्यांथी कटक जवा माटे न्हानी आगवोट हाजर निह होवाथी रात्रीए अमोए "पुरी" आगवोटमांज शयन कर्यु.

ता. २ जीए अमो "पुरी" आगवोटमांथो उतर्या अने "गणेश" नामनी न्हानी वोटमां वेसी नहेर ओळंगी.

ता. ३ जीए प्रभातमा करक पहींच्या. मार्गमा बोटना संचानो अंदर कंइ खोटको थए होवांथी, नियमित समय करतां जरा मोडुं जवायुं. त्यांथी सात माइळ दूर बोराग स्टेशन सूधी खराव रस्ते वळदनी गाडीमां वेसो मुसाफरी करवो पडी, ए स्टेशनथी जगन्नाथपुरी तरफ जती ट्रेइन अमने बपोरना साढी त्रण कळाके मळी.

ता. ४ श्रीए अमे थोडो समय जगन्नाथपुरी शहरनी अंदर पाळखीमां वेसीने फर्या तथा सवारसांज समुद्र कांठानी शीतळ, मुखकारक अने आनंददायक हवामां चाळीने फरवा गया.

ता. ५ मीए कुमारश्री राजसाहेव तथा अमारा हिन्दु परिजनो जगन्नाथना प्रख्यात तथा पित्र मन्दिरे देवदर्शने गया. त्यां तेओए जगन्नाथजीनो एक महान् काष्टिनिर्मित रथ जोयो. ए रथ विषे जूना जमानाना धर्मिष्ठ तथा आस्तिक बुद्धिवाळा, पण खर्र जोतां ज्ञान वगरना छोकोनी एवी मान्यता छेके जगन्नाथजीना उक्त रथ नीचे कचराइ प्राणनो परित्याग करवाथी स्वर्गनी प्राप्ति थाय छे. ए रीते अनेक छोको पोतानो देह ए रथ नीचे कचराची प्राण रहित थता.

भूमि अत्यन्त रेताळ छे अने पाका रस्ता घणा थोडा छे. वपार पछी अमो कलेक्टरने मळवा गया, परंतु तेओ डीस्ट्रीक्टमां गएला होवाथी अमो तेमने मळी शक्या नहि, त्यारवाद हे- प्युटी माजीस्ट्रेटने मळवा गया, तेमणे अमोने सारो आवकार आप्यो.

आसा शहरमां एकज घोडागाडी होवाथी वीजे दिवसे पण पाछसीमां वेसो कुमारश्री राजसाहेव तथा अमारा नोकरो केटलाक देवस्थाने दर्शनार्थे गया. ता. ७ मीए अमो पाछा कटक आच्या, अहींथी मेसर्स मेकनळनी कंपनीनी न्हानी आगवोट "रंभा" मां वेसो नहेर ओळंगी ता. ८ मीए चांदवली पहोंच्या. त्यांथी "ओरीया" नापनो आगवोट पर आरूढ थइ वे दिवसनी मुसाफरी कर्या वाद ता. ११ मीना प्रभात समये अमो कलकत्ते आवी पहोंच्या.

अमारे मद्रास जवातुं होवाथी ता. १२ मीनी सवारे अमो आगवोट वगेरेनी सगवड करवा माटे मेसर्स टॉम्स कुक्कनी कंपनीने मकाने गया. त्यारवाद " डयुप्ले " नामनी आगवोट जोइ, मध्यान्ह पछी केटलीएक रमतो तथा शरतोतुं अवलोकन कर्यु, तेमां वाइसीकलनी शरत निहाळवामां अमने अति आनंद माप्त थयो.

भोजन कर्या वाद अमो मी. फॉर्डना सीनेमेटोग्राफना खेळ जोवा गया, तेमां खास करीने ज्युवीकीनो घणोज ख़ुबीदार देखाव हतो.

वीजे दिवसे कुमारश्री राजसाहेव कालिकाने मन्दिरे तथा अन्य देवालयोमां दर्शने गया। सांजने वाले अमो वांघ तरफ घोडागाडीमां वेसी फरवा गया। ता। १४ मीए अमोए मेसर्स टॉमस कुकनी कंपनीने मकाने आगवोटनी सगवड माटे जरा पूछपरछ करी, त्यारवाद टॉक्टर वेंकसने मलवा गया। पछीथी हमेशनी माफक इडनवाग तरफ फरवा गया अने खाणुं छीधा वाद वाद- शाही नाटकशाळाए प्रख्यात "कर्लहर्श " ना मजेदार खेले। जोवा गया।

ता. १५ मीए अमो आछीशां नामदार वायतरायना सेक्रेटरी राय वहादुर वद्रीदास मकी-मनां दहेरा तथा वागा जोवा गया, दहेरामां जूदीजूदी जातना पत्थरोतुं सुंदर नम्नादार नकश्ची काम छे. वाग तथा तेनी अंदरना वे विकासगृह सारी सगवडतावाळां वायेळा छे. आ सुंदर स्थ-ळनी आसपासनो प्रदेश गंदको तथा भेजवाळो होवाथी हरको इने अहीं एटछुं माछम पहे एवुं छे. वपोर पछी अमो चित्रालयमां प्रदर्शन जोवा गया, जेमां केटलांक चित्रो घणांज चित्ताकर्षक हतां. D) Ca

त्याग्वाद अमो " डयुप्ले " आगवोटमा अमारे माटे रीझर्व करेला डबुमाओ जोवा गया.

ता. १६ मीए अमारे आगरोटमा डायामन्डहार्चरमाज रोकाइ रहेवु पड्युः कारण के भरती उत्तरी गइ हती, रेतीना टेकराओं तथा खडको उपग छी छरापाणी मां अथडावानुं आगवोटने जोखम हतु. ज्यां खडको वगेरे पाणीनी सपाटी नीचे हता न्या खळासी आए चेतवणी आपवा माटे थांभळा अथवा पत्थरनी भींत चणेळी हती

समुद्र ज्ञान्त तथा पवन अनुकूळ होवायी ता. १७-१८ तथा १९ ना विवसीए आनंद्यी मुसाफरी करी. कप्तान मिलनसार स्वभावनो हतो, तेनी साथे वखतोवखत अमी नार्नाळाप करता. १९ मीए विषेत्रना चार कलाके अमी मद्रास जइ पहाँच्या. अमारी माथे बीजा केटलाक उतारुओ पण उत्तर्या, अमो कांठे उत्या वाद घोडागाडीमा वेसी थोड म्यी फरी आला, बीजे दिवसे प्रभाते एज आगबोटमां वेटा, बपोरना वार कलाके आगबोट त्यायी उपडी पवननी अनुकूळताने लीधे अमो सांजना सात कलाके पोंदीचेरी जइ पहाँच्या.

ता. इश मीए सवाग्ना दश वज्ये आगवोट गंदीचेगीयी उपडी, माजरे खाणुं छीवा वाद कप्ताने सोरटीनी रमत करी, तेमा अपने आनंद प्राप्त थयो.

ता. २२ मीए गरमी सखत जणाइ तथा लकानी नजीक आन्या ते पहेला दरियामा जरा तोफान जेवुं थयुं, सांजने वखते आगवोट जरा होलवा लागी, तेथी अमोने स्हेज वेचेनी उत्पन्न थइ पण कुमारश्री राजसाहेवने आनंद पडतो हतो.

ता. इह भीए सवारना आठ कलाके अभो कोलंबे उतर्था, न्युगाली फेस हॉटेलमां अ-मोए उतारो कर्यो, आ हॉटेल युरोपीअन शथा शमाणे चलाववामां आवे छे, अमोए अमारा प्रवासमां आवा प्रकारनी आ पहेलीज हॉटेल जोइ. रस्ताओ पहोळा, स्वच्छ अने सुंदर वांधेला छे. सांजने वस्तते अमो ब्रेक वॉटर तरफ फरवा गया.

ता. २४ मीए शेख जीवणजी दुरभाइनी नामाकित पेढीवाळा मी. तेयवजी अलीभाइए अमारे माटे हॉटेले एक घोडागाडी मोकली, तेमां वेशी अमो राणीनो बाग तथा तज आदि दृक्षोंनी बाटिका बगेरे स्थळो जोवा गया, ज्यां अमोए उष्ण प्रदेशमां उगता केटलीक तरेहना अजायवी उपजावे एवा छोडवा जोया. राजकोटवाळा वकील मो केवळराम दवेए पोताना असी ह मी. तुरभाइने अमारे माटे वनती सगवड करी आपवा लख्युं हतु. मी. लॉडसाहेवे पण एज मतलवनो पत्र

लख्यो हतो. मी. तुरभाइ लाकते वखते गाडी लड्ड अमारी पासे आव्या, तेमां वेसी अमी शरततुं मेदान तथा बीजा नेटलांक उत्तय स्थळोतुं अवलोकन करवा गया.

ता. २५ मीए प्रभातमां नास्तो कर्या पछी "माउन्ट वॉलीनीया" नामनी हॉटल जोवा गया, आ हॉटल छेक दिया किनारे बलके जमीननी अणी वधीने दियानी अंदर गयेल छे ते स्थले आवेली छे तेथी त्यानी आजुबाजुनो देखाव बहुज रिलयामणो जणाय छे. ए स्थले थी. तुरभाइए तथा मुबइना रहीश मी. दादाभाइ नामना त्रीश वर्षना जुना पारसी गृहस्थ अमारुं मारुं आतिथ्य कर्यु थी. तुरभाइ दश वर्ष पहेलां तेमना वकील केवळराम दवे साथे पोताने वतन कच्छ मांडवी तरफ जती बखते बांकानर आव्या हता, तेओ लाहसाहेबने त्यां एक दिवस रह्या हता अने कुमार श्री राजसाहेबनी पण तेमने मुलाकात थइ हती. मी. तुरभाइए अमोने अही आपेली मिन-मानी बखते अहीना लेकटेनन्ट गवर्नरना हिन्दी नकीव मी. मोहन मुदलीयर साथे पिछाण कराबी.

ता. २६ मीए सवारने वस्तते गाडीमां वेसी अमो बजारमां गया अने त्यांनी केटलीएक दुकानो जोड, त्यारवाद लेप टेनन्ट गवर्नरना आसिस्टन्ट तथा प्रदेशना सेक्नेटरीने मळवा गया. आग्यले दिवमें तेणे अमारी सगवडना माटे पूछप्रछ करेली होवाधी अमोए तेनो आभार मान्यो. वपीर पछी कीलाणीतुं प्रख्यात बुद्धतुं दहेरं जोवा जवानुं मुकरर करेलुं हतुं, परंतु वरसान्दने लीवे अगराधी त्या जड शकायुं निहः, तेने वदले छेक सांजे अमो गाडीमां वेसी थोडे सूबी फरो आच्या.

ता. २७ मीए सबारे सात वज्यानी ट्रेनमां कोलंबेथी निकल्या अने वपोरना दोढ वज्ये कांडी जह पहोंच्या. त्यां कीन्स हांटेलमां उतारों कर्यों अने वपोर पछी त्यांचु सरोवर, लीलालम मेटान. सुदर हक्षों, तळाव तथा झरणां आदिथी रिलयामणों आसपासनों मदेश जोवा गया. त्यारचाट ओरीएन्टल लायंबेरी तथा बुद्धना टहेराचुं अवलोकन कर्यु. ए दहेरामां बुद्धनी मितमा एक स्फाटिकना महान पत्थरमांथी कोतरी कांदेली छे, अने ते घणीज दर्शनीय छे. अमो सर्वने छेक अंदरना भागमां मूर्ति पासे जवा टीधा, त्यांना मुखीए अमोने टहेराने लगती टरेक वावतनी माहिती आपी. आ गुरु त्यां घणों चिद्वान गणातों हतो, ते अंग्रेजी तथा फेंच वने भाषा सारी रीने लखी वांची शकतों हतो.

ता. २८ मीए अमो त्यांनी हॉस्पीटल जोवा गया, ते घणा सारा पाया उपर चलाववामां

आवे छे. त्यारवाद अमो पेरोदीनोजा तरफ वनस्पतिनो वाटिकाओं जोवा गया, त्यांना उपरी अमिलदारे समग्र वाटिकामां अमारी साथे फरी अमोने उष्म प्रदेशमा उमता नवाइ जेवा छोडवा तथा वनस्पति वगेरे वताच्यां, रवरतुं द्वस खास जोवा लायक छे, ए वाममां एक न्हानुं म्युझीअम छे, तेमां लंकामां उत्पन्न थतां विविध काष्ठोना नम्नाओ एकत्र करेला छे. अमो चानुं वावेतर जोवा गया, परंतु कारखाना वंध होवाथी चा केवी रोते ज्दो करवाना आवे छे ने जोवानुं अमोने मली शक्युं निहा वाद अमो महान् पुस्तकालय जोवा गया, ए मकान काडोना राजाओनी कारकीर्दीमां हमामखाना तरीके वपरातुं हतुं, जुनी कचेरीमां काष्टनुं नमुनादार नक्ष्मी काम छे.

ता. १ मार्च-अमो सवारना १०-४० कलाके कांडीयी नोवारा एलीया तरफ जना नि-कल्या. ए स्थल समुद्रनी सपाटीथी पांच हजार फुट उंचुं आने दुं छे, त्यांम्यो रेल्नेनी मडक छे. मार्गनी आज्ञवाज्ञनो देखाव मनोरंजक हतो, हवा शीतल तेमज आनंददायक हती. हॅटन स्टेशन म्-क्या पछी "आदम" नामनुं जनत शिलर देलायुं. वपीरना साडात्रगे अमो नुवारा एलीया पहोंच्या. त्यांथी घोडागाडीमां वेसी ग्रान्ड हॉटले गया अने ग्वाणुं लीधा पजी अमे शरतनुं मेदान जोना गया, त्यां केटलीएक अंग्रेजी वानुओ "गोल्फ" नी रमत रमती हती. सांजने वत्वते आसपासनी टेकरीओनो मनोहर देखाव जोवा माटे अमो पेदल फरवा गया, आंहीनी हवा इंग्लांडनी माफक टंडी हती, हुंखायामां गरमीनुं माप ७० डीग्री हतुं.

ता. २ जी मार्च अमो ग्रेगरी सरीवर जोवा गया. त्यांथी क्युपोननुं जवनो दारु वनाववा-नुं कारखानुं जोइ नास्तो कर्या वाद स्क्रवनुं टोफार्म जोवा गया अने त्यां कारखानामां चालतुं चा-नुं काम जोयुं. वपोर पत्री अमो रिजयामणी " हकगाला " नामनो वाटिकाओ तरफ फरवा गया; त्यांथी सांजना पांच वज्ये पाछा आव्या. वे कलाक आराम लीधा पत्री अमो सात वज्ये चांदनीमां फरवा निकळ्या अने आठ वज्ये स्टेशनपर जइ कोलंबो जतो ट्रेनमां वेठा. ता. ३ जीए सवारना छ कलाके अमो कोलंबो जइ पहेंच्या.

अमारे अहींथी तुतीकोरीन जवातुं हतुं, एटला माटे आगवोट वगरेनो सगवड करवा अमो मेसर्स टॉमस कुकनी कंपनीने मकाने गया, त्यारवाद म्युक्षीयम तथा शहरना केटलाक लत्ता जोइ कीन्स हाउसे पण जइ आव्या.

ता. ४ मार्च सवारे कीलाणीए प्रसिद्ध बुद्धनुं दहेरं जोवा गया अने वपोर पछी वहाणे च-

हवा माटे अमो वंदरकोठे जइ पहोंच्या. मी. चुरभाइ पोतानी गाडी छइने अमोने वळाववा आवेछ हता, तेणे अमने छेछा सलाम करो, विदाय थती वखते कुमारश्री राजसाहेवे तेना तरफ पोतानी आभारनी लागणी प्रदर्शित करी अने कहां के तमारी सहायताथी तेमज लागवगने लीधेज आटला थोडा दिवसोमां सीलोननी अंदर जे जे जोवा जेवं हतुं ते सघछं अमो जोइ शक्या.

ता. ५ मार्च सवारना १०-५० कलाके अमो तृतीकोरीन आवी पहोंच्या. त्यां ब्रीटीश इन्डीया हॉ टेलमां उतारो कर्यो, त्यांना सवमेजीस्ट्रेट अमने मळ्या, एमणे अमने पूरती सगवड करी आपी, जेथी अमो स्वल्प समयनो अंटर शहेरमां जइ दहेरां तथा वाग वगीचाओ वगेरे जोवा लायक स्थळो जोइ आव्या.

ता. ६ ठीए सवारना साडानवनी ट्रेनमां अमो आंहीथी निकळ्या अने विषेत्ना २-४० कलाके मदुरा जइ पहोंच्या. त्या मुसाफरने रहेवाना वंगलामां उतारो कर्यो. अहीया अमोए एक हजार महान् स्तंभोवाळा हॉलथी सुशोभित हिन्दुनुं एक म्होडुं देवालय तथा १३५ शाखावाळुं एक महान् वटद्यक्ष जोयुं, ए सवळी शाखाओए फरीथी जमीनमां मूळ घाल्यां छे, ए वटद्यक्षनुं क्षेत्रफळ लगभग ९० फुट त्रीजीयावाळा गोळ जमीनना भागमां छे.

ता. ७ मीए अमो म्होटो महेलात तथा अमेरिकन मीश्चन हॉस्पीटल जोवा गया. त्यारवा-द उपर कहेल हिन्दु देवालयनुं फरीने अवलोकन करवा गया, ज्यां सब मेजीस्ट्रेटनी भलामणथी ते जग्याना अधिकारीए मृतिना गणगार माटे चडाववामां आवता रत्नजटित आभरणो तथा जबाहिर अमने वताव्यां. आभरणो अत्यंत किम्मती छे अने तथी आ तरफना सुवर्णकार केवा कारीगर छे ते आ नम्नाओ उपरथी स्पष्ट जणाय छे. अहीथी अमो वपोरना त्रण वज्यानी गाडीए निकल्या अने सांजना ७-३८ कलाके त्रीचीनोपोली पहोंच्या, त्यां अमोए रेल्वे हॉटेलमां उतारो कर्यो.

ता. ८ मीए सवमेजीस्ट्रेट स.थे म्होटी वजारमां थइ फॉर्टरॉकनी तलेटी सूची फरवा गया, आ टेकरीने मथाले एक म्होटुं मनोहर मन्दिर छे. आ टेकरी उपर सरकारी पताका फरके छे, ए स्थलेथी समग्र त्रीचीनापोली शहरनो देखाव उपर उपरथी दृष्टिगोचर थाय छे. मार्गमां मेजीस्ट्रेटे अमने लॉर्ड कलाइवनुं जे स्थले मुकाम हृदुं ते जगो वतावो. त्यारवाद अमो सुमसिद्ध तथा श्रेष्ट गणान तुं श्रीरंगमनुं देवालय जोवा गया, ते मदुरानां देवालयो जेवीज वांधणीनुं छे, त्यांना तोपाखानामां जडाव दागीना वगेरे जोइ अमो श्रीजम्बुकेश्वरनुं मन्दिर जोवा गया अने त्यारवाद अमोए वॉटरवन

र्कसन्तुं पण अवलोकन कर्यु. आ सघळु अमो सबमेजीस्ट्रेटनी सहायताथी बपोरना वाग पहेलां जोइ आव्या अने १-१० नी गाडीए तांजोर गया, त्यां ३-१० कलाके पहोंन्या, अने डाकवंगलामां उतारो करी त्यांना दर्शनीय स्थलो पैकी शिवालय, शिवगंगा तलाव तथा स्वार्धना शिष्य गजा शरफोजीए वंधावेलुं स्वार्धनुं देवल जोवा गया.

ता. ९ मीए राजमहेल जोयो, अन्तिम राजानी ल विधवा गणीओ ए महेलना एक विभागमां रहे छे. महेलनी अंदर वे कवेरीओ छे. लायबेरीमां पुगतन संस्कृत पुस्तकोनो तथा वीजां शास्त्री पुस्तकोनो महान संग्रह करेलो छे. ए महेलमां वे सांयावाला हाडपीजरो उभां करेलां छे. एक पिंजर पुरुपत्त छे अने वीजुं स्त्रीनुं छे. महेलनी पान्छल डावी वाजुए ज्ना किल्लानो थोडो भाग चणतां अपूर्ण रही गयो छे, त्यां अमोए एक म्होटी तोप जोइ, सांजे अमो वंवावडे पाणी चडाववानी जगो जोवा गया. त्यारवाद प्रथमथी करेली गोठवण प्रमाणे अमो स्टेगने जइ फर्स्टकलाम केरे-जमां सुइ रह्या.

ता. १० मीए सवारमां ४-४० नी गाडीए वेसी विषारना २-५५ कलाके अमी पोंटी-वेरी पहोंच्या. मार्गमां विळपुराम स्टेशने अमीए नास्तो कर्यो अने गाडी बटलावी. सरकारी रेसी-इन्ट कपतान नेपीयन कुमारश्री राजसाहेबने मळवा स्टेशनपर आवेल हता. अमीए युरोपीअन हॉटेल-मां उतारी कर्यो. सांजना अमी स्मशान, टाउनहॉल तथा वॅन्ड स्टेन्ड जीवा गया.

ता. ११ मीए पब्लीक वाग जोवा गया. सवारना दश वज्ये अंग्रेजी रेसीडेन्टे कुमारश्री राजसाहेवने मुलाकात आपी, अने पोताने त्यां खाणुं लेवानुं अमने आमंत्रण कर्यु, तेणे अमने जणाव्युं के अहीना फ्रेन्च गवर्नर विपारना त्रण वज्ये राजसाहेवनी मुलाकात लेवा आवशे. ए प्रमाणे फ्रेन्च गवर्नर अमारी पासे २-५० कलाके आव्या. नामदार गवर्नर अंग्रेजी भापा समजी शकता निह, परंतु कप्तान नेपीअननी मददथी कुमारश्री राजसाहेव साथे पंदर मीनीट सूधी तेओए वान्त्वीत करी, शहेरनो देखाव, हॉटेलनी सगवड तथा अमारी मुसाफरी वगेरेमां आनंट पडतो हतो के केम वगेरे पूछ्यं, तेमणे अमारो उत्तम रीते आदरसत्कार कर्यो. सांजरे अमेए कप्तान नेपीअनने वंगले खाणुं लीधुं, तेमां कपतान नेपीअननी श्वी तथा वीजी एक वानु मिजमाने भाग लीधो हतो.

ता. १२ मीए अमो पंपीग स्टेशन जीवा गया, त्यां माणसो हाथे काम करे छे; संचा के

"EN (G)

यंत्र कांइ नथी. सांजरे अमो अंग्रेजी प्रतिनिधि नेपीयनने वंगले फरी मुलाकात लेवा गया अने वळतां रस्तामां " इयुप्ले " तुं वावलुं तथा केटलाक स्मरण स्थंभ जोया.

ता. १३ मीए सवारे ९-४० नी गाडीमां अमो पोंदीचेरीथी निकळ्या, कपतान नेपीयने एक माणसने चीटी लखीने अमारी साथे मोकल्यो हतो, तेथी अमारे जकात माटे कंइ अटकायत के भांजगड भोगववी पडी निह. कपतान पोते अमोने स्टेशन उपर वलाववा आव्या हता. कपतान नेपीयनमां खरेखरां गृहस्थाइनां लक्षण छे. तेमनो अमारा तरफ घणो भाव हतो अने अमे पोंदीचे-रीमां रहा ते टरमीयान अमोने जे सारी सगवड तथा आनंद माप्त थयो तेने माटे अमे तेमनो अत्यन्त आभार मानीए छीए. अमे सांजना छ वाग्ये मद्रास पहोंन्या अने त्यां कॉमेरा हा-टेलमां उतारो कर्यो.

ता. १४ मीए अमो सरटॉमस मनरोतुं वावछं जोवा गया, त्यांथी नामदार गवर्नरना वंग्ला पासे थहने पीपल्स वाग जोवा गया, त्यारवाट विक्टोरीया हॉल तथा प्राणीखातुं जोयां. अहीतुं प्राणीखातुं अमोए जोएलां अन्य प्राणीखानाओं करतां घणुंज उतरतुं छे. सांजे अमे जहाज खातुं जोवा गया अने टरिया किनारे पगे चालीने फर्या.

ता. १५ मीए शीपोकवागमां फरवा गया, वाद यंत्रविद्यानी (एन्जीनीयरीग) कॉलेज तथा तेने लगती उद्योगशाला जोइ, ते वखते त्यांना एक प्रोफेसर हाजर हता, तेणे अमोने कॉलेजना सर्व विभागो वताच्या अने उद्योगशालामां थतां दरेक जातनां कामनी अमने समज्रती आपी. आ कॉलेजनी लायब्रेरीमां पुस्तको घणां तेमज किम्मती छे. त्यारवाद अमो सेनेट हाउस जोवा गया, तेना आगलना भागमां नामटार महाराणीश्रीनी उद्यवीलीना स्मारक तरीके तेमनुं वावलुं उद्धं वरेल छे. सांजे अमो रेहवे रटेशन तरफ थडने समुद्रकांटे फरवा गया.

ता. १६ मीए अमोए नवी टीवाटांडी उपस्थी कोट तथा हाइकोर्टनां मकानो जोयां. आ टीवाटाडी उपस्थी आखा मद्रास शहेरनो मनोहर देखाव उपर उपस्थी जोइ शकाय छे. अमो पचीपानी कॉल्डेज जोवा गया, त्यारवाट मेमोरीयल हॉल तथा वायवल सोसायटीनुं मकान जोया पटी म्युबीअम जोवा गया. विक्टोरीया टेकनीकल जाला तथा कॉनमेर लाय- वेरी पण जोयां.

ता. १७ मीए अमो वजार जोवा गया, न्यां कुमाग्श्री राजसाहेचे अही वनती वस्तुओना

केटलाक नमूना खरीट कर्या. त्यारवाट अमोए टीचर्स कॉलेज जोड. आवा प्रकारनी पाटगाला आखा हिद्दस्थानमां एकज छे. शिक्षगशास्त्रमां घगा माणसोने रस पडता नथी, खास केळवणीना अधिकारीओनेज आबी गाळा आकर्षे छे.

त्यारवाद अमी खेतीनुं शिक्षण आपती कॉलेज जीवा गया, खेतीना प्रयोग करवा माटेना तेने लगतां खेतरी वेगरे जीयां, आ पाठशालामां काठिशावाडना सात विद्यार्थीओ अभ्यास करे छे, तेमां घणाखरा जामनगरना हता, ए विद्यार्थाओ साथे अमी खेतर उपर फरना हता एटळामां प्री-न्सीपाल साहेव आव्या, तेमणे अमोने जोवा लायक वताव्युं. कॉलेजनुं मकान बहेरथी पांच माइल दर नदी किनारे आवेलुं छे.

ता. १८ मीए अभो माउन्ट सेन्ट टॉमस नामनी टेकरी जोवा गया, तेनी तलेटीमां लब्करी छावणीनो पडाव छे, तथा उपरना भागमां आमीनीयन देवळ छे. वपोर पठी अमो महासमां वणी सारी गणाती स्पेन्सनी दुकानो तथा वीजी साधारण जोवा लायक चीजो जोइ आव्या वाट अमोए सांजना साडाछनी ट्रेनमां माइसार जवातुं नकी कर्यु हतुं, जेथी स्टेशने गया; प्रथम पेाग्राम प्रमाणे अहीथी वेंगलीर जवातुं हतुं, पग आ फेरफार अमने ठीक लाग्या हतो अने ते ते स्थळना अधिका-रीओने ते मतलवना वखतसर खबर आपेला होवाथी कोइने कंइ अडचण पडी न हती. अमोए आकेनिम जंकशने रीफ्रेशमेन्ट रुममां नास्ती कर्यो.

ता. १९ मीए सवारना साडा छ वज्ये वेंग्लोर स्टेशने ट्रेन एक कलाक रोकाय छे, त्यां अमे चा नास्तो वगेरे लीयो. त्यारबाद वपोरना २-२६ कलाके अमी माइसोर जइ पहींच्या. गवर्नमेन्ट हाउस ( सरकारी एळचीने रहेबातुं मकान) थी अमारे माटे स्टेशन उगर एक गाडी आवेळी हती, तेमां वेसी अयो वेलींग्टन हाउसे गया. आ मक.न म्होडं अने सोइवाळुं छे. त्रण कलाक आराम ही या पछी अमे। ज्यां जुदी जुदी जातनां पाणीओ एकटा करेलां छे ए वाम, सरकारी रेक्षोडन्टनु मुकान तथा एक वजार जोवा गया.

ता. २० मीए अमी अश्वज्ञाळा (तवेछो) जोवा गया, त्यां घोडाओ घणः सारा अने संभाळ पूर्वक राखेळा छे. गाडी, घाडा तथा तेने लगता समग्र सामाननी व्यवस्था अति उत्तम छे. अहीं अमीए एक सारा नमूनानी वराळथी चालती गाडी जोइ. त्यारवाद अमी राजमेहेले गया; त्यां अमोए घणी सारी गायो जोइ, तेमांथी वे गायो खास पृजवा राखेळी छे. नामदार महाराजा

सगीर वयना होवाथी नामदार महाराणीश्री राज्य चलावतां हतां, तेनां प्राइवेट सेक्रेटरी मी. कुंती-राजने अमा मलवा गया, पण तेओश्री कंइ कामगीरीपर गएला होवाथी अमोने तेमतुं मिलन थयुं नहि. वपोर पत्री अमो कचेरी, जगमोहन महेल तथा स्टेटना हाथी वगेरे जोइ आव्यान

ता. २१ मीए एक कळाकनी सफर कर्या पछी हुं दीवान साहेवने मळवा गयो, पण तेओ तेमने मकाने न हता. वपोर पछी दिवानजी साहेवना पाइवेट सेक्रेटरी मी. के. कृष्ण आयर अमोने मळवा आव्या. त्रण वाग्ये अमो श्रीरंगपट्टम गया. त्यां अमोए महान देवळ, किछो, मसजीद, टीपुम्रळतानना वखतना सुंदर जीर्ज महेळवाळो दरियावाग, टीपुम्रळतान, तेनी माता तथा हैदर- अळी वगेरेनी कवरो, अने कर्नळवेळीना पराक्रमनो स्मरण स्तंभ वंगरे जीयां, त्यांथी पाछा अमो माइसोर आव्या.

ता. २२ मीए बपोरे घोडागाडीनी लक्तर कर्या पछी हुं दिवानजी साहेवना प्राइवेट सेक्रे-टरीने पळवा गयो; तेणे मने कहुं के महाराजा साहेव कुमार श्री राजसाहेवने सांजना पांच बज्ये सगर पेलेस (ग्रीष्मगृह) नामने बंगले मळको. त्यारवाद महाराजा साहेवना अध्यक्ष तथा वाली मी. एस. एम. फ्रेंग्रंते आ मुकरर करेल वखतना खबर आप्या. नियमित बखते अमो समरपेलेसे गया, महाराजा साहेव तथा तेमना टयुटरने मळ्या; तेमनी साथे कुमारश्री राजसाहेवनी मुसाफरीनी तथा बीजी साधारण वातचीत कर्या पछी अमो त्यांथी रजा लड़ चामुंडी हील तरप फग्वा गया, अर्थे रस्ते जतां चामुंडी मातानुं दहेरुं आव्युं, तेनां राजसाहेवे दर्शन कर्या. आ चन्नत स्थलेथी नीचेनी आजुवाजुनो मदेश घणोज रिजयाभणो देखाय छे. खाणुं लीधा वाद अमो स्टेशने गया अने वॅगलोर जती ट्रेनमा वेटा; स्टेशनपर दिवानजी साहेव तेमना सलूनमां वेटा हता त्या जइ हुं तेमने मळ्यो.

ता. २३ मीए सवारना ६-४६ कलाके अमी वॅगलोर जइ पहोंच्या. मेजरजोन्स अमीने स्टेशनपर मळ्या अने ते अमीने ग्रेमबीला (कोइ हॉटेल नं नाम जणाय छे) ए लइ गया. वपीर पछी अमी शहरनी तथा स्टेशन पासेनी बनारों जोवा गया, तथा वॅगलोर एजन तीनी दुकाने देटलीक वार्जिनवाळी घडियाळो जोइ. मुंबइवाळा ढॉकटर चॉक भी अहीं हता, तेमने हुं सांजने वखते मळ श गयो, नेणे अमने शहरमा जोवा लायक स्थळो वताववानुं कहुं.

ता. २४ मीए सवारना साहा सात वज्ये डॉकटर चॉकगी अवारे त्यां आन्या अने प्रथम अमने जेल जीवा लड गया. जेलमां बंदीवस्त सारी छे, जेलने लगती उद्योगशाळा तथा अन्य न्यवस्थाओतुं अमे अवलोकन कर्युः त्यारवाद लालवाग तथा म्युझीअम वगेरे जोवा गयाः पछीथी हुं मेः दिवानजी ,साहेव तथा मीः जोन्सने मळवा गयोः साने अमो राजमहेल तथा म्होटी लडकरी छावणीनो मुकाम जोया वाट खाणुं लड रातना नव वज्यानी ट्रेनमां वॅगलो-रथी रवाना थयाः अमारे माटे स्टेटे कृषः करी एक डच्वो रीझर्व करावेलो हतो तमां अमे मूड रह्याः

ता. २५ मीए अमी चेंपीअन स्टेशने उतर्या, त्यांना मेजीस्ट्रेट मी. रायटर स्टेशनपर मळ्या अने ते अमोने डाकवंगले लड़ गया. खाणुं लीधा वाद अमो माइसोरनी खाणो जावा गया, त्यां अमोने मेनेजर मी. हेनकॉकनी ओळखाण थइ, तेण अमारा तरफ मारो भाव वतात्रो, तेण अमोने कहुं के खाणनी अंदर जोवा जवा माटे अमुक प्रकारनाज वस्तो पहेरवां पड़शे. अमोने आ वावतनी खबर निह होवाथी तेवी जातनो पोज्ञाक साथे लेवानी अमे तजवीज करी नहोती; परंतु मी. हेनकॉके तेवां वस्तो अमने पूरां पाड्यां. खाणमां केवी रीते काम चाले छे ते विषे चार लीटी ळखवी अगत्यनी छे प्रथम पाणाओं ने केवी रीते जातवार गोठववामां आवे छे, केवी रीते तेनो भूको करवामां आवे छे, केवी रीते तेनी साथे धातुनुं मिश्रण करवामा आवे छे तथा सायेनाइड कियाओथी केवी रीते तेने स्वच्छ करी लगभग ९५ टका जेटलुं जुदुं करवामां आवे छे वगरे अमोए जोयुं. त्यारबाद अमोने लीफ्टमां वेसाडीने खाणनी अंदर तेरसों फीट त्रण मीनीटमां पहें चाड्या. आ छीफ्ट यंत्र वहे चहाववामा आवे छे, तेमा चारजणा माड वेसी ज्ञाक्या. अमो एक वीजाने अहीने वेटा हता, पण अंदरना भागमां अन्यकार एटलो वयो हतो के अमो एक वीजाने जोइ शकता नहोता. ळीफ्टमाथी अमो एक ओरडी जेवा आकारतं कोतरी काढेळुं हतुं त्यां जतर्या अने तुरत मीणवत्तीओ सळगावी त्यारवाद एक पछी एक सीडीथी त्रणसो फीट नीचे गया, सीडीना पगथीआं सांकडां तेमज गोळ लोडानी सळीओना होवाथी एक पछी एक उत्तरवुं पडयुं. खाणनुं काम शी रीते चालतुं हतुं ते अमे अही जोयुं. भार लड़ जवानी तथा लाववानी गाढी माटे अहीं पाटा नांखेल इता, पाणी कोतरवानी सारडी ए एक नवाइ जेवुं यंत्र छे अने ते हवाना दवाणथी चलाववामां आवे छे. अमो त्यांथी दीवावाळी लीफ्ट वडे वहार आव्या आ रस्तो ढाळ पहतो छे. आ रीते खाणनी अंदर चालतुं समग्र काम जोइ वहार आव्या त्यारे अमी ने चणोज परवेद थयो हतो अने ते पछी पण गर्भी जारी हती. अमे अमारां दस्रो एकदम अछग करी भी हेनकोकने मकाने गया; तेणे अमारे माटे स्नान वगेरेनी सोइ करावी राखी हती. न्हाया वाद कपडां पहेरी अमोए तेनी साथे भोजन कर्यु तेमां अमने घणोज स्वाद माऌम पडयो. मी. हेनकोकनो

उपकार मानी तेमना पासेथी रजा लीधा वाढ अमो गाडीमां वेसी साडात्रणनी ट्रेनमां वेंगलोर जवा माटे रवाना थया. ज्यां अमे सांजना ७-७ कलाके जइ पहोन्या. त्यां (वेंगलोरमां) अमोने को-ल्हापुरना मे. पोलीटीकल एजन्टनो तार मळ्यो के अही (कोल्हापुरमां) प्लेगनो उपद्रव होवाथी आववान मुलतवी राखवुं ए सलाह भरेलु छे.

ता. २६ मीए अमो स्टेशन तरफ फरवा गया अने वपोर पछी डॉक्टर चोकगीनी साथे नवी हॉरपीटल, जूनो किल्लो तथा जूनी हॉस्पीटल जोइ आव्या. वाट वतन तरफ विटाय थवा माटे खाणुं लीधा पछी दादर-मुक्टनी सांजना साडासातनी ट्रेनमां अमो चाली निकल्या.

ता. २८ भीए अमो सवारना साडापांचे दादर जइ पहोंच्या. त्यां प्लेगखाताना अधिकारीओए मात्र अमोनेज स्टेजन वहार जवानी रजा आपी, कारणके अमारी पासे वांकानेरनी सळंग टीकीटो हती. वीजा पेसेन्जरोने तपास माटे स्टेजनना कम्पाउन्डमां रोकवामां आव्या. सरदार उभर
जमाल तथा जहांगीर कावसजी कलववाळा अमोने मळ्या अने अमारे माटे खास तैयार करेला तंचुए अमोने लइ गया. अमो आखो दिवस त्यां रोकाया, मात्र वपोरना सेबेगेजन केम्प जोवा गया
हता. अमो टाटरथी रात्रीना ९-४७ नी मेल ट्रेनमां वतन तरफ रवाना थया अने ता. २९ मी
मार्चे हिन्दुस्थाननी आनदजनक मुसाफरी करी आरोग्यता पूर्वक वांकानेर आवी पहोंच्या.

अही रटेट कारभारी राववहादुर मोतीचंद तुल्सी, स्टेटना सर्व अमलदारी, शहरना दरेक कोमना श्रतिष्ठित गृहस्थो, दामासाहेव वादश्री जामवासाहेय, जनानानां राणीसाहेवो तथा आ प्रसंगे खास मलदा आवेला राजसाहेयना केटलाक मित्रो अमोने प्रेम भरेलो आवकार आपवाने स्टेशनपर आव्या हता.

आ शुभ मसगे शहेरमां भवेश करवानी अमुक समय मुकरर करेलो होवाथी अमी एक क-लाक पर्यन्त म्टेशनवाले वंगले रोकाया अने त्यारथी सरघसने आकारे सांजना ७-२० कलाके अमी सर्व राजमहेले आवी पहोच्या.

कु मारश्री राजमाहेवनी हिन्दुम्याननी मुसाफरीनो अहेवाल पूर्ण करतां पहेलां कुमारश्री राजमाहेव तथा अमारी साथेना माणसो बनी निम्नलिग्विन गृहर योनो उपकार मानुं छुं. मे. पेलिन्हिन्ल एजन्ट साहेवे ने उपयोगी सचनाओ, किरमनी सलाह नथा अमारे जोवानां स्थलो माटे अंग्रे-जी अधिकारीओ उपर भलामणना पत्रो छन्दी आपेल नेनं माटे तेओ साहेवनो उपकार मानुं छुं. ए

पत्रोवडे ते ते स्थळना अधिकारीओनी सहायताथी आटलुं वधुं जोवानुं तथा जाणवानुं वनी शक्युं छे, तेमज अमारी यात्रा आटली वधी आनंद्रायक थइ पडी छे, एवीज स्चनाओं तथा भलामणपत्रों माटे आसीस्टन्ट पोलीटीकल एजन्ट केपतान कार्नजीनों पण आभार मानुं छुं. कुमारश्री राजसाहेवने सामान्य स्चनाओं आपनार मी. वॉडीग्टननों, सर्व प्रकारनी सगवड करी आपनार मी- जी. एन् लॉडनों अने जे कोई जाणीता मित्रोए अमने मुसाफरीमां मटट आपी छे ते सर्वनों हुं उपकार मानुं छुं. "

#### महाराजा अमरसिहजी !

ए रीते आप नामटारे हिन्दुस्थाननी द्वितीय मुसाफरी करी ते टरम्यान खीजडीया भायात सुरासिहजी अपुत्र स्वर्गवासी थतां त्यां मेनेजमेन्ट वेसाडी स्टेट तम्कयी वाडने जीवाड वांबी आप-वामां आवी, अमरविलास राज्यमहेलनो पायो नंखायोः ता. १ जान्युआरीना रोज रा. वा. गण-पतराव लाड पोतानो चार्ज राजकोट स्टेटना माजी कारभारी रा. वा. मोतीचंट तुलसीभाइने सोंपी पोते राजकोट स्टेट कारभारीनी जगोए दाखल थया. आपश्रीए वतनमां प्रवार्या वाट मात्र सवा मास निष्टत्ति लइ ता. २-५-१८९८ वैशाख शुदि १३ ने भोमवारे पाछुं युरोपनी मुसाफरी अर्थे पयाण कर्युः ए वखते कम्पेनीयन तरीके मेजर एक, डी, वी, हेन्कोक साहेव तथा मी, रतनगा वेजनजी आपनी साथे हता. ता. ४ ना सुखदायफ प्रभात समये मनमोहिनी सुंबइ नगरीमां प्रवेश करी आपे एस्प्लेनेड हॉटेलमां रहेटाण राख्युं अने ता. ६ सुवीना त्रम दिवसी केटलाक स्नेहीओनी म्रलाकातमां, युरोप जेवा शीत प्रदेशनी सकर अर्थे केटलांक उष्ग बन्ना आदिनी खरीदीमां तथा आरोग्यतामां अभिद्वद्धि करनार हवाखावानां मसिद्ध स्थळोए हरवा फरवामां व्यतीत करी ता. ७ मी शनिवारे सवारमां स्टीमरपर साथेना सरसामान पहींचाडवानी व्यवस्था करी, मध्याह समये विलियम वॉटसननी कंपनीमां जइ वाकी रहेली सीलकनुं परदेशी नाणुं कराव्युं, त्यारवाट आप स्नेहीमंडल सहित एपोलो वंदरपर जइ पहोंच्या. ए वखते अनेक मुसाफरा स्टीमरनी राह जोता त्यां वेठा हता, तेवामां दूरथी स्टीमर देखाइ, अन्य मुसाफरोनी माफक आप पण मछवामां वेसी स्टीमर तरफ रवाना थया अने विदायगीरी आपवा एकत्र थएला स्नेहीजना आप नामदारनी उक्त यात्राने सुखरूप इच्छी पातपाताना गृह भणी चाली निकळ्या. अगाउथी रीझर्व्ड करावी राखेली कॅवीननी तपास कर्या वाद आप नामदार स्टीमर पर चढता अन्य मुसाफरोन्नं अवलोकन करवा स्पारहेक उपर चढ्या. स्टीवरे छगभग वपोरना त्रण वजे एपोछो वंदर छोडयुं. स्वल्य समयमां

मोहमयीनी मनोहर आकृति अदृश्य थइ. जल सिवाय कंइ पण जीवामां आवतुं न हतुं. पांचसो वीश फीट ळांवी अने वावन फीट पहोळी ए महान स्टीनरना सळून अंदरतुं फर्नीचर अत्यंत शोभायमान हतुं. केटलाक जाणीता देशो तेमज युरोपीअन मुसाफरोनी साथे विविध विनोद करता ता. ११ बुबवारनी रात्रीए आप एडन पहोच्या, अने त्यांथी आगळ वधतां लाल समुद्रमां वहुधा उष्णतानुं अधिक पावल्य होय छे, परंतु ए वखते सद्भाग्ये सुखमय शीतलता छवाइ रही हती. पेरीनीयोना किनारा पर थोडा वलत पहेळां भांगी गएळी "एस, एस, चाइना" नामनी स्टीपर जागे एक डॉकपाज पडी न होय एम आपना जोवामां आवी. ए स्टीमर कादवमां एटली वधी निमन्न थएली छे के तेने हवे कोइ पण प्रकारे वहार काढी शकाय तेम नथी। ए एमनेएम सोधीज उभी छे मात्र एक वाजुए सहेज नमेली दृष्टिगोचर थाय छे. ता. १५ मीनी प्रभाते आप जे स्टीमर पर आरूढ थया इता, ए स्टीमर स्वेझ पहोंची, अने मेडीकल ऑफीसरे तमाम मुसाफरोने तपास्या बाद आगवोट त्यांथी आगळ वधी. स्वेझनी नहेरमां बहुज धीमे धीमे गति करती ए आगवोटना अय भागमां नहेरना किनारा पर प्रकाश पाडवा एक सुशोभित सर्च-लाइट गोठवेली हती. ता. १६ मीए सवारमां पॉर्टसेड पहोंचेली स्टीमरे कोळसा लीधा. जेथी अन्य मुसाफरोनी माफक आपने त्यां थोडो वखत रोकावानुं वन्युं हतुं. स्वेझ अने पोर्टसेहना छोकोन प्लेगनो एटलो वधो भय लागनो हतो के पोता पासेनी कांइ पण वस्तुनो विक्रय करती वखते खरीद करनार मुसाफर पासेथी मळेळा पैसाने तेओ जल्थी भरेला घटनी अंदर नंग्वावता अने थोडा व-खत सुधी ए पेसाने हाथ पण लगाडना नहि. ता. १८ मीए सवारमा स्टीमर ब्रिन्डीसी जइ पहोंची. ब्रिन्डी-सीना पुरजा उपर आमतेम फरतां आरे किनारा पर रहेळां छुंदर मकानोतुं तेमज केटळीएक दुकानोतुं अव-लोकन कर्यु. ते स्थळे परवाळां वहुज वखणाय छे अने वेचाय छे. आप केटलाक दिलपसंद चेरीझ खरीदी आगवोटपर आरूढ थया. मध्य रात्रिए स्टीमर त्यांथी चाळी निकळी. मेसीनानी दर्शनीय सामुद्रधुनी वन्ने वाजुए आवेलां मोटां मोटां शुश्रोभित शहेरी, तेजोमय टेकरीओ तथा जेना मध्यभागमां सुंदर सरिताओं वही रही छे एवा शहेरोनो मनोहर देखाव आपना आनंदमां आश्चर्य साथे उमेरी करी रह्यो हतो. ज्यारे स्टीमा मेसीना शहरनी समीपेथी पसार थइ त्यारे सींद-र्यनी सरखामणीमा तेनाथी जरा उतरती वेनीकोशीओनी सामुद्रयुनी आवी. त्यांथी सीसीळीमां ए-टना नामे ज्वालामुखी पर्वत छे ते अने अन्य ज्यालामुखी पर्वत के जे अग्रापि सजीव छे ते स्टी। रनी अंदर रहेला समग्र मुसाफरोनी दृष्टिए पडता हता, परंतु तेमांथी निकळतो युम्र वादळांने लीघे

कोइना जोत्रामा न आव्यो. ता. २१ गीए सवारमां रटीपर मार्सेल्य जड पहाची. त्यांसुबीनी मुसा फरीमां स्टीमरने क्यान्न पण तोफान नडयुं न हतुं, जेबी आपश्रीण प्रथमना जाणीता तथा सहवास-ने लीधे थएल नवी विछाणवाळा युरोवीअन तेमन देशो सदगृहस्योनो साथे ए मुसाफरीना दिव-सो अत्यन्त आनंद अने मोजमजायां गाळ्याः मांसंन्सने किनारे उतर्या वाद बीलीयम बॉटसनना एक एजन्टनी देखरेख नोचे सपळो सरसामान राग्वी आप साथेना महागयो महित त्यांना दर्शनीय रथळो जोवा पर्धार्या. प्रथम " पेलेस लॉना ऑस्व " अने तेनी पाछळ आपेला उपानमां रहेल प्राणीओतुं संग्रहस्थान जोड महेलना अग्रभागमां पडता पाणीतो घणोज मनोहर देग्वाव आपे व्यान दहने जायो. जो के ए उपननमां एटला वधां माणीओ नथी, तो पण सुगन्विमय सुंदर पुष्पोधी पकाशी रहेलां विविध एक्षा तथा रोपोनी रमणीयता अने तेनी अद्भुत योजना आंखनं अवश्य आकर्षण करे एवी छे. त्यांथी आहारे १७० फीडनी उची टेकरी पर आवेला एक देवालयमां आप दाखल थया। ए देवालय " नॉटर डाम दा ला। गाई " ने नामे ओळखाय है। टेन्सीपी तलेटीए पहोंच्या बाद आप आशरे १२५ फीटनी उंचाइ सूबी तो उपर जवा माटे न्या में सवा तथा जळना वळथी चालती तेमज जेनी वांधणी जोतां आश्चर्य उपने एवा लिएटनी किंती अर्थ गया इता अने पछी देवालय पर्यन्त पो चालीने पधार्या ए देवळ परथी नीचेता भु शहेर घणुंज रमणीय जणाय छे. वने वाजुए बावेलां दक्षोथी वहुज स्रशोभि। जणाती प्रवेश केटळीएक गलीओ घणीज सुंदर छे अने महोटा रस्ताओ पर पत्थरनी लाटी पाथरेली नेहीओनी टोवोली " नामना पार्कमां फरवा जतां आपश्रीए साइकल पर चढवातुं शिक्षण लेती वे कार ओने जोया बाद " चॅटोडीफ " नामे टापु पर रहेला क्लिग्रं अवलोक्न करवानो संकल्प कयों, परंत समय थोडो होवाने लीधे आपनो ए विचार पार पडी शक्यो नहि. वपोरना सवाचारनी देनमां वेसी आप गार्सेल्सथी रवाना थया. ए ट्रेन वहु झडपथी चालती नहोती तो पण आपने एटली तो खात्री थइ के हिन्दुस्थाननी अंदर चालती ट्रेनो करतां ए घणी सारी हती.

ता. २२ मीए प्रभातमा पारीस पासेथी पसार यह छगभग साडावार वज्ये ए ट्रेन कॅले जइ पहोंची, त्यारवाद थोडी वारे रटीमर त्या आवी. आप साधेना महाज्ञायो सहित एमां विराजमान यया. जो के ए रटीमर बहुज न्हानी हती तो पण कलाके लगभग वीज्ञ माइलना येगथी गति क्रिक्ती हती. मात्र पोणा त्रण व लाव माज ए रटीमर डोवर आवी पहोंची. डोवरनी खाडीमांथी पसार थतां सिंद्भाग्ये साँगुद्र ज्ञांत होवाने लीधे ए सहेलगाह आपने घणीज सुखरूप मालूम पडी

हती. डोवरन किनारे उत्तर्या वाद आप सर्व ट्रेनमां वेसवा माटे चॅरीगक्रॉस स्टेशने पथार्या. आप जे ट्रेनमां वेटा ए फास्ट ट्रेन वपोरना साडापांच वज्ये छंडन पहोंची. मान आपवा स्टेशन पर सामा आवेछा कर्नछ हेन्कॉक, तेमना मडम साहेव तथा तेना दन्यु वगेरेने भावथी भेटी, जका-तखाताना अमलदारने साधेनो सरसामान वतावी अगाजथी उतारा माटे नियमित करी रखावेल वेरटमीनीस्टर पॅलेस हॉ टेलमा आप पथार्या. पंदर दिवसनी छावी गुसाफरीने लीवे पडेला महान श्रमतुं निवारण कावा साजना क्यांइ पण बाहेर निह निकलतां आपश्रीए स्नेहीजनोनी साथे वि-विध वार्ताविनोद कर्या वाद आराम लीधो.

ता. २३ मेथी आरंभी ता. ३ अक्टोवर मुधीनो दीर्घ समय आपे युरोपनी अंदर निवास करी आनंदनी साथे केटलोक जाणवा जोग अमूल्य अनुभव मेलल्यो. जरुआतमा सरजेइम्स पील अने तर वीलीयम ली. वॉर्नर साहेवने पळवा आप इंडीया ऑफीसे प्यायी. फीटलराल्ड साहेव त्या नहोता परंतु सरवीलीयम ली. वॉर्नरनी मुलाकातनो तथा तेमनी साथे केटलीएक वात-चीत कर्यानो लाभ आपने मल्यो. वाद जलनी अंदर रहेतां तथा उल्लागाणीओने माटे तैयार करेलुं स्त्रिम तळाव, पचास फीट इंचेथी जळनी अंदर डवकी मारती एक महम, तेटलेज इंचेथी मुख सिहत समग्र शरीरने वस्त्र्यी आच्छादित करी इ्यकी मारतो एक साहेव, झुला पर खेल करती द्वय पटमोनो दिल्ड देखाव अने ए उपरांत केटलीएक आश्चर्यजनक वस्तुओनुं अवलोकन करी आप आलेग्या पथार्या. त्यां आपने जोवानुं घणुं मल्युं तेमां पण एक मनुष्ये साइकल पर वेमी भिन्न भिन्न मकारे करी वनावेलुं चातुर्य तथा अन्य मनुष्योए करेलुं उत्तम नृत्य आपना आनंदी हटयने विशेष रुचिकर थयुं.

दीने दिवसे अर्थात् ता. २४ भीए महाराणी विक्टोरीयानी वर्षगांठ होवाथी समग्र प्रख्यात स्थळोपर वादटाओं फरवी रह्या हता. कर्नल हेनकॉक तथा मोस हेनकोकनी साथे आपश्रीए इजीप्जीयन हॉल तरफ पथारी केटलाक हाथ चालाकीना खूनीदार खेलो जोया. रात्रीए
शीनमऑफदेल्स नाटकशालामा पथारी "ला पूर्ष " नामनो खेल निहाल्यो; त्या वागतुं कर्णात्रय
वॅन्ड अने थतु रिसक तृत्य आपने यागुज पमंद पड्युं. लंडनमां रोज्ञानीने लीधे रमणीय जणाती
रात्रिमा गलीओतुं अनहद सोन्दर्य हमेशा नयनानंदजनक होय छे मध्यरात्रिए पण अनेक अश्वरथ आवजा कर्या करे छे. त्या पोलीस वंदोवस्त वहुज प्रज्ञांसापात्र छे ते एटले सुधी के उन्नत
थयेलो पोलीसनो एकज हस्त अनेक अश्वरथोंन स्थिर करवानुं सामर्थ्य धरावी शक्ते छे. त्याना

कोचमेन पण घणाज हुशियार अने नम्र होय छे. जो पोलीम वंदीवस्त एवो निष्टुर न होय तो आखा दिवसमां कोण जाणे केटलाए अकस्यात थड जाय.

ता. १५ मीए आप नायदार दर्शनी शरतो जीवा लगमग वार वज्ये वॉटम्ल्र स्टेशनेयो निकली एकते सुमारे इप्सम पहोंच्या अने त्यांयो शरतना चक्रर सुनी गाडीमा पनार्या. दर्शनी त्रीमी शरत हती; आपश्रीए पूर्व कदी निह नोएली ए शरत नोवा अर्थे लाखे। मनुष्यो एकटां थएलां हता अने त्यां शरतमां सेंकडो जातनो रमनगमन चाली रहेली हती. लोकिमिय अत्व शरतमां जीतेलो निह होवाथी लोकोए खुशालीना पोकार करवानुं वंच राष्ट्रं हतुं, तेम कोइए तालीओ पण पाडी न हती. ए शरतमा वीनो वहारनोज घोडो विजयवान थयो। शरत समाप्त थया वाद पाछा मुकामे पथारी आप ओपरामां गया, अने फॉस्टनो खेल जोयो। एमा संगीत चणुंज श्रेष्ठ हतुं, तेमांना एक एक्टरने एक नाइटना सो रुपिआ मलना हता। आखा युरोपमां ए एक्टर सर्वेत्कृष्ट गणाय छे. खेलमां सीनेरी वहुज खूबोडार हती। ए नाटकशाला पण लंडनमां नमूनारुप अने विशाल छे तेनी अंदर चित्रकाम घगुंज सुंदर छे अने वत्तोओ पण वहुज खूबीथी गोटवेली छे. खेलनुं लखाण घगुं लांबु अने वळी फेन्च भाषामां होवाथी जोके आपने जोडए तेनुं रुचिकर न थयुं तो पण जपरनी वाववोथी केट रेक अंशे आनंद तो थयोज।

ता. २६ मीए आप कर करी दुनेंमेन्ट जोवा प्रायाः प्रीन्स ऑफ वेल्वना त्रीजा इगून गार्डनो घोडानी खारीनो तमासो अने रॉयल हॉर्स आर्टीलरीनी गॅलपनी हरीफाइ ए वने खास जोवा लायक हतां. म्युझीकल डवल राइड पण ठीक हती अने रॉयल हॉर्स गार्डना ड्रेस तो घणाज सुशोभित हता. टेन्टपीगींगमां मात्र जगज हरीफो हता तेओ वे वखत प्रयत्न कर्या छतां मात्र एकज मेख उपाडी शक्या. दुनेंमेन्टमां टेन्ट पीगींगनो देखाव जो के वरावर न हतो तो पण ए सिवायनुं बोर्जु बर्धु जोवा लायक हतुं. रात्रीए एम्पायर थीएटरमां जइ आपे एक शरत जोइ. अन्वो वने तेटलुं गलप करता हता छतां नीचेनो जमीननी एवी गोठवण करी हती के तेओ जरा पण दूर जइ शकता न हता. ए देखाव घणोज निय पडे तेचो हतो अने सीनेरी एवी तो सरस रीते गोठववामां आवी हती के तेनो देखाव असल शरतना चकर जेनो जणातो हतो.

ता. २७ मीए वेस्टमीनीस्टर हॉलमां मूकेली मी, ग्लॅनस्टनना शवनी पेटी जोया वाद आप में वॉल्टन प्रधायी. अने कर्नल हेन्कॉकने घेर जह किंग्झक्रेरनी साथे टेनीसनी रमतनो आनंद लीघो;

अने त्यांची पाछुं हॉ टेल तरफ प्रयाण कर्यु. त्यां आपने मळत्रा आवेल भी. फीटझराल्ड काठिया-वाड करतां लंडनमां आपनी सारी तंदुरस्ती जोइ सानंदाश्चर्य पाम्या.

ता. २८ मीए मी. ग्लॅंडस्टननी उत्तरक्रियानुं सरघस जीवा मी. हेन्कोकने घेर अने त्यांथी ते वरावर जोइ शकायुं सस्घलमां प्रथम आमनी सभाना मेम्बरी, पछी अमीरो अने ने पछो पोताना केटलाएक निर्मा सहित मीन्स ऑफ वेल्स चाल्या आदता इता श्रीनस ऑफ देलस, श्रीनसेस ऑफ वेल्स, डयुक ऑफ यॉर्क, अने डचेस ऑफ यॉर्कने आपे ए वस्वतं प्रथमन जोयां. क्रिया पूर्ण धइ रह्या वाद ज्यारे तेओ वेस्टभीनीस्टर एवेमांथी आवता हता त्यारे आप ए सर्वने सारी रीते जोइ शक्या. जो के त्यां सेंकडो मनुष्यो एकत्र धया इतां तो एण वधुं नियमित अने चुपचाप इतुं. त्यारवाद आप अल्हे कॉर्ट एग्झीवीशन जोदा पथार्या, त्या आगवोटना केटलाक नमूना तथा बीनी पण बगी सारी चीनो हती. खतेडी शकाय तेवी स्वीच वॅक रेल्वेमां जरा सहेल कर्या वाद आप दरीयाइ तमाको जोवा गया. ए त-मासो तथा रात्रिने वजते थएली छडाइनो देखाव घगोज सरस होवाथी आपतुं हृदय हर्वथी छवाइ रहां हतं. वीजलीथी चालती नानी नानी अनवारोना नमूना पण त्यां हता. ए जोया वाद ' जायगॅन्टीक व्हील " अर्थात् एक विशाल चक्रमां एक फेरो फर्या. २८४ फीटना व्यासवाळा ए चक्रमां चाळीश गाडी अने ते दरेक गाडीमां त्रीस माणस वेसी शके तेवी सगवड हती, तेनो एक फेरो लगभग पंदर मीनीटे पुरे। थाय छे. त्यांथी लंडननो देखाव घणोज मनोहर मालुम पटे छे, परंतु जे दिवसे धुमस विशेष होय छे, ते दिवसे तमातुं कंइ पण देखातुं नथी. केट-लाक माणमोने उंचकी जरा उंचे जतुं एक कॅप्टीव वल्लत जोइ आप कर्नल हेन्कोक अने मीस फे-न्टन साथे पाछा हॉटेल पथायी. रात्रिए लीरीक थीएटरे जइ आपें डॉन कवीझोनो खेल जोयो. डॉन कवी झोनो वेश भजवनार मी. आर्थररोवर्टस बहुन हुशियार होवाथी आखा खेळतुं आपश्रीए बहुज आनंद्धी अवलोकन कर्यु.

ता ३९ मीए गोंडलना भावसिंहजी के जे आपने हॉटेलमा मळवा आव्या तेनी मुलाका-त लीधा बाद वपोरना आप माणीओना संग्रहस्यानवाळा वागमां प्यायी; अने त्यां केटलुंएक जो-वातुं हतुं ते खूब फरी फरीने जोयुं.

ता. ३० मीए आपें वेब्रीन जइ मी. कॉवेन्टोना तथा मी. हे त्कॉकना कुटुम्ब साथे वि-

विध विनोदमां केटलोक वखत विताबी छेन्टे साइकलपर लगभग १४ माइल जेटली लांनी सफर करी.

ता. ३१ मीए आप " नेजनल गॅलरी ऑफ पीकचर्य " तरफ परारी केटलांक सृष्टि मी-न्दर्यनां तेमन प्राणीओनां चित्रो जोयां, त्यांथी एम्बेन्क्रमेन्ट ( किनारे किनारे थडने जनी सडक ) पासेथी पसार थतां एक महान् वीलीयर्ड सलुन आपना जोवामा आव्युं, ए यन्द्रनना एक विज्ञाल ओरडामां आशरे वीश टेवल गोटवेलां हतां. मार्ग जतां आपे कल्यांपेटानो नीडल जोयां, ए मया-ळा तरफ अणीवाळो थतो जतो एक पत्थरनो स्तंभ छे: नेने मीनरमाथी लाववा माटे स्वास एक वहाण वांधवृं पड्युं हतुं. त्यारवाद आप ब्रीटीश म्युक्षीयम जीवा प्रार्थाः म्युक्षीअम चगुंज म्होदं अने विशाळ छे, त्यां आखो मध्याह गाळ्या छतां तेमानुं सबळुं निह, नोपण कल्यापेट्रानुं जाळबी राखेळुं शव तथा तेवांज अन्य शवो के जे घणांज जुना छता सारी स्थितिमां हतां ते, बीजी केट-लीक आश्चर्यजनक चीजो, गॅग्ना चार्टा (प्रजानुं महोटुं हकपत्र ) केटलाऊ हस्त लिखित लेखो, श्री-मद् भगवद्गीता, इस्लामी पुस्तको अने वीलीयम घी कॉकररथी आरंभी अन्यारसूबीना राजाओ-नी पुरातन सीलनो संग्रह आपें जोयो. आफ्रिकाना केटलाएक देवो त्यां जोवा जेवा हता. हिन्दनी बनावटना विशेष नमूनाओ त्यां नहोता, मात्र एक जूनुं वखतर, हथियार तथा वीजी थोडी घणी एवी सामान्य चीजो हती. रात्रीए आपें रॉयल थीएटरमा पधारी " व्हाइट हीधर, " नामनुं नाटक जोयं, एनी अंदर रसभर्ये लखाण अजायवी उपजावे एवी सीननी योजना अने इवकी मारनारना पोशाकमां समुद्रने तळे एक बीजा साथे युद्ध करता द्वय मनुष्योनो देखाव इट उपरांत बखाणवा छायक हतो.

ता. १ ली जुने आपश्रीए " रॉयल एकेडेमी ऑफ आटर्स"मां पधारी केटलांक सृष्टि सौ-न्दर्यना तेमज बीजा चित्रो जोयां; तेमां महान वस्तुओनां न्हानां स्वरुप, केटछुंक कोतर काम अने चित्रकाम खास जोवा जेवुं हतुं. पाछा हाँटेळे पधारतां त्यां राह जोइने वेठेला भी. फीटझराल्डनी आपे मुलाकात लीधी. मी. फीटझराल्ड पसन्न वदने आपने जोइती मदद आपवातुं कही चाली नीकळ्या वाद आप " मॅडमटसोड " तुं प्रदर्शन जोवा पधार्याः त्यां मीणनी तमाम आकृतिओ घ-णीज संदर अने आवेहूव हती. जमणी वाजुना ओरडामां द्वार पासेज एक मीणनी वनावेली मडम केटलीम वेंचती उभी छे, तेने जोतां ए कृत्रिम छे एवो कोइने ख्याळ पण आवतो नथी. घणा लोको तेनी समीपे जइ केटलोग मागे छे, अने तेथी अन्य मेक्षकोने अत्यन्त हास्य उपने छे. नेपो-

कीयननी गाही तथा हेस अने हयुक ऑफ वेलींग्टन तथा नेल्सनना हेस वगेरे जोया वाद आपें " चेम्बर ऑफ हॉरर्स " (कमकमाटी उपजावे ए देखाव देखाडनारो ओरडो ) मां केटलाएक खुनीओनी आकृतिओ निहाळी तेमां कोइ कोइ सुंदर चित्रो पण हतां.

ता. २ जुने आप " कॉवेन्ट मार्केट गार्डन " मां पधार्या. त्या गामडानां छोको पासेयो जत्यावंध शाकभाजी तथा फळ फुल वगेरे वेचातां लइ वेचवामा आवे छे. कॉवीज तथा कॉवी फ्ला बरधी भरेकां असंख्य गाढां त्यां उभां रहे छे. ए जोया वाद आप सेइन्ट पॉल्स केथीड्ल तरफ पथार्थाः त्यां प्रतिष्ठित पुरुषो तथा वहादुर छडवैयाओनी कवरो छे, आपे इतिहासमां वाचेछ केटलाक महान पुरुषोनी कवरो पण त्यां जोइ, देवळनो घुम्पट विशाल छ अने तेमां कोतरकाम तथा रंगकाम घणुंज उमदा करेलुं छे. मकान पण विस्तृत अने दवदवा भरेलु छे; तेणां रंगवेरंगी काचनी वारीओ अद्भुत शोभा आपे छे, त्यारवाद जमीन नीचे चालती गाडीमां वेसी आप टॉव-र ऑफ लंडन जोवा पथार्या. ए सफेद टावर जूनामां जूतुं छे अने ते एक ऐतिहासिक स्थल ग-णाय छे. त्या आपें जुनां इधियार तथा वखतरो जोयां के जे तहन स्वच्छ नेमन उत्तम रीते गोठ-देलां हतां, एं वखतरो उपरथी तेने अंगपर धारण करनाश इंग्लंडना पुरातन राजाओना भव्य कदनो रहेजे भास थाय छे. एक टादरमां जवाहिर जोवा जतां महाराणीनो वादशाही मुक्कट पण आपना जोवामां आव्यो. ए मुकुटतुं वजन आज्ञारे ३९ औंस छे. वीजा जीर्ण मुकुटो पण त्यां हता. कोहीनूरको नमूको त्यां राखवामा आवेळ छे, खरो कोहीनूर महाराणी पासे हतो. हीराथी जडित वादशाही मुकुट घणोज एशोभित तेमज दर्शनीय छे. ए उपरांत अमृहय वादशाही आभूषणो, राजदंड, आर्व, असंख्य प्रकारना बीटीश खेतावो, वादशाही केदीओने राखवानां स्थळो, केद प्राप्त थती वखते इलीआवेथ राणी जे स्थळे हरती फरती ते स्थळ तेमज बीजां पण केटलांक ऐतिहासिक रथटोतुं अवलोक्तन कर्या बाद रात्रीए आप गेइटी थीएटरे " रन अवे गर्छ " तुं नाटक जोवा पघार्या, एमातुं सगीत आएने घणुंज निय छाग्युं हतुं.

ता. ३ जी जुने आप बीटीश म्ह झीम ऑफ नॅदरल हिस्टरी (स्थावर जंगम विद्या सर्वधी बीटीश सग्रहस्थान) जोवा पथायी. ते रगड्य केनींग्रटनमां आवेल छे; तेमां दवा भरीने संभाळपू र्वत साचवी राखेलां तेमज रुचम रीते गोटवेलां गृतक पक्षीओ, धवहावनारां प्राणीओ, सर्वोत्कृष्ट-ताने प्रदर्शित करतो खनिज पदार्थसंग्रह अने विदि दृष्टिए निह चडेला भिन्न भिन्न जातिना हीरा-ओ रुपरात दीजी पणी जोवा लायक चीजो आपे जोड, शाखो विपार त्यां गाल्या लतां आखं

1 804 7

संग्रहस्थान आप जोइ शक्या नहि. ए पछी वंन्कऑफ इंग्लंड जोवा जतां एनुं काम तो आपने बहुज भारे जणायुं. भी. फीटझराल्डना भन्नामणपत्रने लीचे त्यांना सेक्रेटरीए ऑफीसना तमाम विभाग तथा अन्य खानगी विभागो पण बताच्या. ज्यां नोटे। छताती हती ए स्थळ आपे जोयुं, ए लोको बीश मीनीटमां एक हजार नाटो छावो शके छे. ज्यां सोतुं रुपुं राखवामां आवे छे ते स्थल पण आपें जोयुं, वहुज भारे सोनानी पाट्यी भरेली लगभग पंदरेक नहानी गाडीओ त्यां पडी हती. त्यांथो जोइए तेटळुं सुवर्ण टंकशाळे मोकलवामां आवे छे. त्यारवाद ज्यां जुनी नोटो राखवामां आवे छे त्यां आप पधार्या, कोइ पण नोट ज्यारे वेंकमां पाछी आवे त्यारे तेने फरी बाहेर काढ-वामां आवती नथी; परंतु तेनो एक खुणो कापीने तथा मध्य भागपा छिद्र पाडीने रद करवामां आवे छे. एवी रद करेली नोटोने पांच वर्ष पर्यन्त त्यां राखी पछीयो बाळी नांखे छे. तेमां एक नोट एवी आपना जीवामां आबी के जे ११० वर्ष पर्यन्त बाहेर फरी हती. पुरातन समयनी दशलाख पोंडनी एक नोट के जे चेकना जेवी हतो. ते नोया वाद ज्यां वेंकनी अंदर आवता दरेक सिका तोळवामां आवे छे, त्यां आप पथायी. तोळवानां यन्त्रो घणांज उत्तम छे, तेयां एवी योजना कर-वामां आवी छे के नोळाया वाद पूरना वजनना सिक्का एक खानामा पडे अने अधूरा वजनना सिका अन्य खानामां पडता जाय. ए पछी ट्रेझरी के ज्यां नवी नोटो अने सोना रुपाना सिका रा-खवामां आवे छे ए जोइ आप हॉटेले पधार्या, वॅकमां जे नोटोना नाणा अपाइ गयां हतां एवी पांच वर्षनी नोटोनी संख्या ७७७४५००० इती, जो ए नोटोनो एक उपर एक एम दगको वामां आवे तो तेलगभग ५ माइल जेंग्लो उंची थाय; जो तेना छेडाओ सांधीने मूकवामां आवे तो तेनी छंवाइ १२४२५ माइलनी थाय; ते नोटोनी मुळ किम्मत १७५०६२६६०० पैंडियी पण वधारे हती अने तेनुं वजन ९०३ टन करतां पण विशेष हतुं.

रात्रीए आप राणीना थीएटरे " जुलीयस सीझर " नो खेल जोवा पथार्था; तेमां मार्कस एन्टोनीयसतुं भाषण तथा उक्त पात्रनी वन्तत्व शक्ति ए वन्ने वखाणवा लायक इतां अने नाटकनी अन्य रचना पण रसभरित हते.

ता. ४ थी जुने आपनो विचार इटन जवानो हतो, परंतु शीतना वाहुत्यने लीघे तेमज दिवस धुमसवाळो हे।वाथी ए विचार मांडी वाळी आप साउथ केनींग्स्टनमां आवेल इन्डीया म्यु-झीअम जोवा पधार्या. त्यां अनेक प्रकारनी हिन्दी कारीगरी जोइ आपने आनंद थयो. चीन अने जापाननी समग्र गॅलेरीओ तथा खास जोवा लायक सायन्स गॅलरीतुं केटलेक अंग्रे अवलोकन करी जुदा जुदा रंगनी विजळीक नळीओ जोया वाद आप मीतीस मेकनॉटनने मळत्रा पथार्या, के जे आपना मरहुम विद्यापुरु राजकोट राजकुमार कॉलेजना प्रोन्सीयाल मी. मेकनॉटननां पत्नी थतां इतां तेमनी साथे संगीत सर्वधी, कॉलेज सर्वधी तथा काटिआवाडना केटलाक राजाओ अने राज-

कुमारो सदंथी वार्तालाप करी आप मुकामपर पधार्या.

ता. ५ मी जुने क्यु गार्डनमां पधारी आपे घणां न मनोहर पुष्प तेमज विविध प्रकारनां सुंदर रोपाओ जोया. उद्या देशना रोप उछेरवा माटे त्यां उद्या इवावा । ओरडाओ राखेळा छे. ए वगीचो रमणीय अने उत्तम योजनावाळो छे. चोमर हरियालो भूमि आंखने अपार आनंद आपे एवी छे. त्यांथी विक्टोरीया स्टेशने उत्यां वाद आप स्नेहीजनो सहित हाइड पार्कमां पधार्या, रिव वार होवाथी त्या हजारो मनुष्य आवागमन करतां हतां, आपे त्या एक कलाकपर्यन्त विराजी लंड-ननी अवनवी फेशनोनुं निहत्तिथी अवलोकन कर्युं.

ता. ६ ठी जुने मध्याह पछी आपश्रीए इम्पीरीयल इन्स्टीयपुटे पथारी महाराणीनो डाय-पंड ज्युवीलीने पसंगे तेमने मळेला उपहार हिन्द अने ब्रीटोश संस्थानो तरफषी अपाएलां मानपत्रो तथा समग्र ब्रीटीश संस्थानो अने हिन्दनी पेदाशना नमूनाओं निहाल्या. त्यां वॅन्ड वहुन सारं वागतुं हतुं. वॅन्ड स्टेन्डनी आसपासनुं स्थळ अत्यन्त सुंदर छे. रोशनी थती हशे त्यारे तो ए स्थळ अलैकिक रमणीयताने धारण करतुं होतुं जोइ (. रात्रीए " फेन्च मेइड " नो खेल जोया बाद आपे आनंदपूर्वक आराम लीधो हतो.

ता. ७ मी जुने मी. हेनकॉकनी साथे जुदा जुदा हेसची फोटा पढावी आप ग्रॅफ्टन गॅलरीए पथार्या अने त्या केटलाक चित्रो जोइ हाइडार्क तरफ गया. त्यां अवंख्य गाडी मोना
आवागमनने लीधे केटलाक श्रेष्ठ जातिना अश्वो आपना जोवामां आव्या त्यारवाद वॅन्डनुं श्रवण
करवा आप इम्बीरीयल इन्स्डीटयुटे प्यार्या अने गात्रीए गॅयल बुद्या धीएटरे जह " लायनस
मेहल " नामनो खेल जोयो. तेमां हेल्रीइवीं। भिन्न भिन्न भजनी वतावेला उभय वेश मेसकीने
छक्त करी नाखे एवा हशा. याखा इंग्लंडमां ए सर्वधी श्रेष्ठ अवटर गणाय छे, अने एथीन तेने
" नाइट " नो इन्काव आपवामा आस्यो छे.

ता. ८ मी जुने स्टीप वोटमां ग्रीनीच पर्यारी आपं रंगीत हाल तथा लडाइनां केटलांक आधर्यजनक चित्रों जीया. चाद परण अने मनवारोद्धं म्युझी,अप पण जोयुं, तेमां घणीन हिक्सपः तथी बनावेलो ट्रफाल्गरनी लडाइनो नमूनो अने आगवोटोना नमूनाओ अति उत्कृष्ट हता, ग्रीनीच-पार्कमां थइ एक न्हानी टेकरी पर आदेली ऑवझरवेटरीए जड जरा विश्रान्ति लीवा वाद आप पोष्ट अने तार ऑफीस जोवा पधार्या. भी. फीटझराल्डे अगालथी करी राखेली योजनाने लीधे त्यांना तमाम विभागो जोवाने आपने संपूर्ण लाभ मली शक्यो. आपना अनुभव मुजब तार ऑ-फीस खास जोवा लायक हती. त्या एक एवं नूतन यंत्र शोधी कहाडवामा आव्युं ले के जेनाणी एक मीनीटमां ३५० शब्दो जइ शके ले. त्या कांइ नहि तो २००० पुरुषो अने १२०० ख्रीओ काम करतां हतां.

ता. ९ मी जुने हाइडपार्कमा चोकडीनी महोटी गाडीओ जोवा आप पथार्था. प्रीन्स अने प्रीन्सेस ऑफ वेइल्सना आव्या पछी तमाम गाडीओ त्यांथी पसार यह "हर्छिंगहम" नामने स्थळे गइ. त्यारवाद आप भोजननां वासणनो सट तथा केटलोक काचनो सामान वगेरे पसंद करवा वीलीयम व्हाइटलीने त्यां पथार्था; ए एकं जवरी दुकान छे अने त्यां जोइती समग्र चीजो मळी शके छे, रात्रीए क्राइटीरीअन थीएटरे पथारी आपें "लायर्स " नामनो खेल जोयो.

ता. १० मी जुने आप टंकशाळ जोवा पथार्या, त्यां दाखल यवानी टीकीट मी. फीटझ-राल्ड साहेवे अगाउथी मेळवी आपी हती; जेथी आपें टंकशाळना दरेक विभागोमां फरी छुवर्णने गाळी तेने पाट वनाववानी पद्धति, ए पाटने ओपी तेना पर छाप मारवानी रीति, ते वखते ता-जेतर नवां शोधी कहाडेळां तोळवानां तेमज गणवानां यंत्रो, छपाता सिकाओ अने ते छापवाने एक अठवाडीआ पहेळां शोधी कहाडेळुं उत्तम यंत्र वगेरे वस्तुओनुं निगीक्षण करी होटेळे पथार्या वाद वाकीनो समय भी. फीटझराल्डनी साथे काठिआवाड संबंधी विविध वार्ता विनोदमां गाळ्यो अने एथी तेओ साहेवनी स्मरणशक्तिनो आपने सारो अनुभव थयो.

ता. ११ मी जुने आप " एवी " जोवा पर्धायां, परंतु त्यां कंइक ळग्ननी क्रिया चालती होवाथी अंदर निह जतां " टेट " नी दुकाने पर्धारी आपें एक टेनीम वॅट खरी हों, तेमनां हाथीनी वनावटनां वॅट सर्वथी श्रेष्ठ गणाय छे. त्यारवाद " रीचमंड हॉर्स हों। " जोवा जतां आपने भी कॅप्टन तथा मीलीझ फॉर्न्मनुं निल्लन थयुं. ते स्थले घोडा तथा गाडीओ घणांज स्तुतिपात्र हतां, तेमां पण टेन्डम ( एक पछी एक जोडेल घोडावाळी गाडी ) तुं सौंदर्य अजवज हतुं; अन्यो उत्तम प्रकारे केळवाएला हता अने तेने हांकवानी पद्धित पण हेरत उपजावे एवी हती। केटलाक झडपथी ट्रॉट करता जता हता. पछी थी आप अर्ब्झकोर्ट एम्झीवीशन तरफ पर्धार्यो, त्या तथाम जगोए नथ-

नने आनंद आपे एवी रोशनी करवामां आवी हती; ए स्थळे आप इलेक्ट्रफोनतुं श्रवण कर्युं, तेमां लंडन अंदर रहेली दरेक नाटक मंडलीओनां गायनो सांभळी शकाय छे, टेलीफोनना सि-द्धान्त उपरज एनी रचना करवामां आवी छे, ए स्थळे विनोददायक वॅन्ड पण वागतुं हतु.

ता. १२ मी जुने लंडननी आसपासनां गामडांनो १देश जोता जोता आप मध्याह समये मी. बुशनलने त्यां पधार्या. एमतुं घर घणुंज सुंदर छे, अने तेनी पासे एक म्होटो वगीचो छे. अश्वो पण एमने त्यां घणा उमदा हता दुनियाना जुदा जुदा भागोमां जनाती आग्वोटो मी. बुशनल-नीज होवाथी एनी गृहस्थाइ संवंधी स्हेजे ज्ञान घइ शके छे. ए महाशयरी साथे सन्ध्या समय पर्यन्त आपे खानपान तथा रमतगमतनो आनंद लीधो.

ता. १३ मी जुने आप " वीन्डसर कॅसल" जोवा पर्धार्या, भी, फीटझराल्ड साहेवे मेळवी आपेल पास वताववाधी एक मडमे ए मकानना दरेक विभागो आपने देखाड्या, महाराणीना खानगी देटकना तथा जयनना रूम सिवाय सुद्र चित्रो अने चिनाइ पारोधी ज्ञृंगारेला केटलाक भ य भागो, राजकीय प्रसंगे वपरातां अने प्रजावगेने जोवा देवामां आवतां अन्य स्थलो, पाकशाला, महाराणी अने तेना पिततुं एक मनोहर वावलुः हिन्दुस्थान, आफ्रिका अने एवा अन्य प्रदेशोमांधी मेळवेल तलवागे तथा क्वचो वगेरे वस्तुओतुं आपे अवलोकन कर्यु. ए मकानना तमाम ओरडाओ विज्ञाल अने टेपेस्ट्री (दिवाल उपर लगाडेलां कपडां पर करेल भरत कामनां चित्रो) थी शणगारेला इता. फर्नांचर घणुंज दिम्मती हतुं, परंतु ते स्थले महाराणीनी गेरहाजरी होवाथी वधुं अव्यवस्थित देखातुं हतुं, रात्रीए आप "रनअवे गर्ल " नो खेल जोवा नाटकशालाए पथार्या, ए खेल पहेली वखते जोवाथी आपने फेटलो आनंद पाप्त थयो हतो, एटलोज आनंद वीजी वखत जोता पण मळचो.

ता. १४ भी जुने आप " एवे " प्धार्या, अने त्यां राजाओनी तथा पुगतन समयना महापुरुपोनी कवरों के जेमांनी केटलीक तो १००० वर्षनी पुगणी हती ते आप जोइ, सीलींगमा घगुंज ल्यदा कोतरकाम करेलुं छ, त्यांथी आप कायदानी कोग्टें। जोवा प्रार्था, प्रथम भी. हेन-कॉकना पितृत्य के जे एक वारीस्टर छे तेने मळ्या अने तेओ साहेवे साथे आवी चेन्सरी कोर्ट, अपील कोर्ट अने बीजी केटलीएक कोर्टो आपने बताबी. ए मकान अत्यन्त विज्ञाळ छे. लींकन इन हॉळ के ज्यां कायदाना अभ्यासीओ अभ्यास करे छे ते तथा लायद्रेगीनुं पण आप अवलोकन कर्यु. त्यारवाट आप " पलावर शो " ( पुष्पनुं प्रदर्शन ) जोवा प्रार्था. त्यां भिन्न भिन्न मकारनां मु-

न्दर अने सुगन्धीपुष्यो मगजने तरवतर बनाबी दे तेबा हता. राबीण पॅलेस थीण्टरे प्रवारी अमेरीकन वायांग्राफणां आपें केटलांक सरम चित्रो तथा नृत्यतुं निरीक्षण कर्षु वारीस्टर् मी. कॉवेन्ट्री नाट्यपंडपणा आपनी साथे इता.

ता. १५ मी जुने एक गाडी ग्वरोद्यानी इन्छा थतां आप लंडननी वनावटनी केटलीक गाडीओ जोवा पथार्था, "रालीकर" नामनी गाडो आपने पसंद पडी, पगंतु एथो पण मगा वनावटनी अमेरीकन गाडीओ जोया वाद कड लेबीए निश्चय करवानुं आगळ उपर राखी आप साउथ केनींग्स्टन म्युझीअमनोगंलरी के जे मध्यम वरावर जोड शकाड नहोती ते जोवा पवार्या; त्या यंत्रोना केटलाक उत्तम नमूनाओ आपें जोना, तेमा रेल्वे एन्जीनना नमूना खास व्यान खेंचे तेवा हता. ए स्थळे घणो वखत गाल्यो तो पण अवशेष जोवानुं रही गयु त्यायो वळतां मार्ममा आपने कर्नल फेन्टननुं मिलन थयुं, रात्रीए गॅफ्टसवरी थीएटरे पधारी आपे " वेली ऑफ न्युयॉर्क " (न्युयॉर्कनी छवीछी) नामनो खेल जोयो.

ता. १६ मी जुने आप एस्कॉटरेस जोवा प्रयार्थी. रॉयल एन्कलोझर (बादशाही कुटुंबने वेसवा माटे जुदो राखेलो भाग) आगळ वेसवा माटे टीकेटोनो गोटवण भी. फीटझराल्ड साहेवे अगाज्यी करी राखेली हती; त्यां आवेला मीन्स अने भीन्सेस ऑफ वेइल्स तेमन बादनाही कुटुं-वनां वीजां माणसोनी आकृति तथा चेष्टा आप नजीकपांन वेटेला होवाथी वरावर जोइ शक्या. अने त्यांथी मीसीझ हेनकोकनी काकीने घर जइ फोटाओ लेवडाववामां तेमन वीजी रमत-गमतमां वाकीनो समय गाळ्यो.

ता. १९ मी जुने मी. फीटझराल्ड साहेवे करेली गोठवण मुजव आप वृलीच आसींनल जीवा पथार्था. त्यां केटलीक तोपो तथा ते तोपो बनाववानां यंत्रो आपना जीवामां आव्यां. दर अठवाडीए तेओ छगभग वीश लाख गोळीओ तैयार करे छे अने मुश्केलीने समये एथी पण विशेष बनावी शके छे. ४७ टननी तोपो के जे हाल बहु वपराय छे ते ए वखते त्यां बनती हती. घोडाना सामान वगेरे राखवानुं स्थळ के जे अत्यन्त सुशोभित छे ते जीया बाद " डेन्जर वीलहींग" के ज्यां दारु बनाववामां आवे छे अने जे तदन खानगी राखवामां आवे छे ते शिवायना तमाम भाग जोइ रात्रीए आप सेवॉय थीएटर " ब्युटी स्टोन" नामनो खेल जोवा पथाया.

ता. १८ भी जुने केंग्लीक अमेरीकन वनावरनी गाडीओ जोया वाद आप इटन पधार्या.

त्या मी. मीचेल के जेनी साथ मी. हेनकॉक सारी विद्याण घरावता हता तेने त्यां (कॉलेंजे) आवें टीफीन लीवुं. ए गृहस्य घणाज मायाळु होवाथी तेणे कॉलेजना तमाम विभाग आपने वताच्या. ए स्थळ हृद्यने प्रफुल्लित वनावे तेवुं हे. क्रीकेट रमवानी जगो पण घगी सरस छे, त्यां सेक्नड इलेबननो भंच जोड उतारे आव्या वाद रात्रीए आर्थे कॉनीडो ग्रीएटरे प्रधारी "लॉर्ड अने लेडी एल्जी" नामनो खेल निहाल्यो अने तेमा आपने वहुज मजा आवी.

ता. १९. भी जुने आपे वेबीन जइ ओटलॅन्डझरार्क हॉटलमां रहेटाण राख्युं अने त्यांथी साइकलपर चढी आप कर्नल हेनकॉकने घर पथायी. त्यायो नदीए जइ डॉकमांथी पसार थती होडीओ तथा लॉन्चो जोया वाद पाछा साइकलपर मी. कॉवेन्ट्रीने त्यां गया अने सारी धिते टेनीस रम्या. लडनमा श्विवारे सहुकोइ इश्वरनी वंदगी, रमत गमत अने विश्रांन्ति लेबामां वधो वखत वितावे छे, ते दिवते कांड जोवा करवानुं वनी शक्तुं नथी.

ता. २० मी जुने आपे नदीए पथारी खूब मछत्रामा रहेळ करी तथा मछत्राने केवी रीते चलावरो ए एण जीखी छी छै. त्यारवाद मी. हेनकॉकने घेर जइ वाकीनो वखत विविध प्रकारनी रमत गमतमा विनाव्यो.

ता. २१ मी जुने कर्नेळ हेनकॉकने घेर जइ आप टेनीस रम्या, तेमां केटलाक सेट बहु सरस रमाया. त्यारवाद रात्रीने समये वाइकींग करतां एक टेकरीपरथी आजुवाजुनो देखाव आपने घणोज मनोहर मालूम पडयो.

ता. २२ मी जुने आप ऑक्सफर्ड पंचार्या, त्यांथी मी. स्मीय आपने एनसोनीया अर्थात् ट्युत ऑफ यॉर्क अने बीजा माणसोने माननी डीग्रीओ अपाती हती ते जोवा तेडी गया. त्यां भाषणो वधा हॅटीन भाषामां थतां हतां, तो पण अंग्रेजी कविनाओनो आश्रय आप सारी रीते समजी शब्या. त्यारवाद एक कॉल्डेजमा अन्यास करता मी. हेनकॉकना भंगीजाने मळ्या जतां तेणे साथ आवी चेपल अने कॉल्डेजना हॉल आपने बतात्र्या कॉल्डेजो वहु जुना वखननी अने संख्यामां वाबोश जेटली हती, ते दरेकनी अंदर १०० थी १५० विद्यार्थीओ अभ्यास करता हता. पछी आपे नदीए पधारी जुदी जुदी कॉल्डेजना वंज जोया; त्यायी नदीनो भाग वणोज सुंदर जणाय छे.

ता. २३ मी जुने आप विम्बलहनमा टेनी पट्टोंमेन्ट जीवा पत्रार्था, अने त्यां केटलाक मारा खेलाडीओने जोइ आपना अन्तःकरणमां अत्यन्त आनंद ययो.

ता. २४ मी जुने हिन्दुस्थानना सेकेटरीने मळवातुं होवाथी आप छंडन पथार्या अने

सवारने। समय जुदी जुदी कंपनीओगांथी केटलोक माल खरीदवामां वितावी विपारना पोणा त्रणे हिन्दना सेक्रेटरी लॉर्ड ज्यॉर्ज हेमील्टनने मल्या अने तेमनी साथे विलायतनी मुसाफरी सवधी केटलीक वातचीत करी हाजस ऑफ नोमनसमा पथार्था. लगभग साडा त्रणे त्यां तमाम मेम्बरो हाजर थइ गया. करुआतमां तेओए अन्योन्य प्रश्लोत्तरनी धमाल मचात्री, पछी वेलमना दक्षिण भागमां कोलसानी खाणवाळाओए जे हडताल पाडी हती ते सबंधे चर्चा चाली. त्याना सुप्रसिद्ध वक्ताओनां भाषण सांभळवाथी आपने वहु आनंद थयो, ए चर्चा जोसभेर चाली रही हती; तेवामां ट्रेननो टाइम थइ जवाथी हॉटेले पहोंचवा माटे आप वोल्टन स्टेशने गया, वच्मां वोटर्ल स्टेशने मी. हेनकॉकना पितृव्यनुं आपने मिळन थयुं अने ते वोल्टन स्टेशन सुप्री साथेज आव्या.

ता. २५ मी जुने वरसादने लीधे सवारे जड शकायुं निह, वपोर पछी हार्लिंगहम तरफ पधारी आपे पोलोड्रोनेमेन्टनुं आनंदथी अवलोकन कर्युः, तेमां केटलाक खेलाडीओ घणुं सार्व काम करता इता.

ता. २६ मी जुने रविवार होवाने लीधे बीजे क्यांइ निह जतां केप्टन कोवेन्ट्रीने घेर पत्रारी टेनीस वगेरे रसीली रमत गमतमां आखो दहाडो आनदथी पसार कथों.

ता. ६७ मी जुने आप लंडन हॉस्पीटल जोवा पथायी. मी. रोवर्टे वहुज मायालुपणाथी आपने वधी जगों वतावी. ए हॉस्पीटल घणीज स्वच्छ राखवामां आवे छे. त्यां दर वर्षे लगभग वार हजार दरदीओ इस्पीतालमांज रहेवानो लाभ लेखे. विद्यानाओ घणा सुंदर अने दरेक वॉर्डमां उत्तम प्रकारनी गोठवणो राखवामां आवे छे. गरीव लोको पोताना घर करतां त्यां विशेष सुख पामे छे. वालको पण त्यां वहु आनंदमां रहे छे, तथा तेने संभालनारी वाइओ अति मायालु अने पिलनसार जीवामां आवे छे

ता. २८ मी जुने आप विंग्झक्छेर (कर्नल हेनकॉक्नुं एक गृह) पथार्था अने त्यां क्रोके रम्या; ए रमत बहु मजेदार होवाथी आपने आनंद थयों। त्यांथी मी. रटरनी गार्डन पार्टीमां जह आप केटलीक टेनीसनी रमतो रम्या. वगीचो घणो सुन्दर हतो अने तेमां खुशवोदार पुष्पो खीली रह्यां हतां. पछी पॉर्टरमथने मार्गे आवेल हट हॉटेल नामने स्थले साइकलपर फरवा जतां विज्ञाल अने स्वच्छ रस्ताओए तथा आसपासना कुदरती देखावे खास आपनुं लक्ष खेंच्युं हतुं. लगभग दश माइल जेटली साइकल पर सफर करी आप पाछा फर्या.

ता. ३९ मी जुने किंग्झक्लेर जइ आप टेनीय रम्या. अने पछीथी क्वीन्स क्रवमां थती

ऑक्सफर्डनी अने केम्ब्रीजनी कसरतो जोइ, एमां वहु गमत आवे एवं हतुं. सरतो थइ रहा। पछी छेचेट कसरतोमां ऑक्सफर्ड जोत्युं.

ता. ३० मी जुने आप क्रीस्टळ पॅलेसे प्रधार्या, अने त्यांथी नाटकशाळाए जइ "जे. पी." नामनो घणोज रमुजी खेळ जोयो. ए पछी लीफ्ट वडे लगभग वसें फीटनी उंचाइवाळा एक टा- वरने मथाळे इट आसपासनो घणोज रमणीय देखाव जोथा वाद वेटळांक चित्रो तथा वावलां पण जोयां. छेवटे आतसवाजी तेमज वाइसिकलनी मजेदार शरतोतुं अवलोकन करी मध्य रात्रिए आप मुकाम पर प्रधार्यी

ता. १ जुलाइए लॉर्डझ नामनी कीबेट रमवानी जगोए ऑक्सफर्ड केम्ब्रीन वचेनो क्रीकेट मॅच जावा आप लहन गया. मॅचनो बीजो दिवस हतो केम्ब्रीजवाळाए प्रथम दाव लइ २७३ रन क्यी हता, ऑक्सफर्डवाळानो दाव चालु हतो, तेओ केम्ब्रीजवाळाओथी आगळ वधता जता होदाथी हवे पछी शुं थशे १ एम आतुरताथी तमाम जनो जोइ रह्या हता, एक खेलाडीए सो रन क्यी अने ए वखते रननी कुल संख्या ३०० नी थइ. वधा शान्त वनी गया अने आप स्टेशन तरफ रवाना थया, ए वखते हलु ऑक्सफर्ड तरफना दाव लेवावाळा व मेम्बरो वाकी हता.

हा. इ जीए सवारनो समय विश्वान्तिमां विताबी वपोर पछी आप साज्थगुड पधार्या अने त्या टेनीस रमी पाछा होटेले आव्या.

ता. ३ जीए आखो दहाडो नदीनी अंदर विंडसर सूथी विजळीक लॉचमां सफर करी. दिवय चोख्खो होबाधी आएने वहुज गम्मन आबी, बळतां यंत्रमां काइ खोटको थइ जवाधी लॉ-चने टलेसां मारी जे स्थळेथी फरवा निवळ्ण इता ते स्थळे पहोंचाडवामां आवी.

ता. ४ धीए वेब्रीज रटेशने आप रेडींग जवा रवाना थया अने त्यां पहोंच्या पछी इंटली तथा णमर्झनी वीर्सीट वनाववानुं कार्यालय जोवा गया; त्यां तमाम काम यंत्रथी करनामां आवे छे. साजना वर्नल हेनवांकने घेर जइ आप टेनीस रम्या.

ता. ५ भीए कर्नेल हेनकॉबने त्यां टेनीस रम्या वाद साइकल पर फरवा पथायी. पाल-लथी जामनगरवाला इमारश्री लखुभा आपने मळवा माटे होटेले आव्या हता, तेनुं आपने मिलन तो धयुं, परंतु तेओनी राधे लावो वस्तत वानचीत करवानुं वनी शक्युं निह, कारण के कर्नल हेनकॉकना का काने घेर जमवानुं आमंत्रण मलेल होवाधी ए बस्तने त्यां जवानु हतुं. ता. ६ ठीए वेब्रीज स्टेंशनथी आप हैन्छो तरफ पत्राया अने त्यांथी होडीमां वेसी शरतो जोवा गया. आखी नदी न्हाना म्होटा मळ्ताओथी चीकार भराइ गइ हती, हिन्सां मारवानी जगो पण नहोती देखात घगोज सुंदर अने आनंदननक हतो, ए गृहना जेती सन्त्र होही ओने उत्तम रीते शणगारवामां आत्री हती.

ता. ७ मीए वेबीन स्टेशनेथी रवाना घड फार्नवरी स्टेगने आप उतर्या, त्यां हु-झार्स ( घोडेस्यार पल्टन ) ना एक अमलदारनुं आपने मिलन थयुं, ए अमलदार ज्यां रीन्यु यती हती ते स्थळे आपने लइ गया त्यां पहोच्या त्यारे महाराणीना स्वारोने जीतां आपे गाहीने एक वाज़ए उभी रख़ाबी, ख़रूप समय पछी बादशाही सरवस त्यां थड़ने निकळ्युं अने तेमनी बैठकना पाछला भाग तरफ गाडीने लड़ जवा आपें आजा आपी. महारागीने निकटनायी जनां जोवानो लाभ लइ गाडीमांथीज उत्तम रीते रीन्युनु अन्योकन कर्युः हयुक ऑफ कोनोटना उपरीपणा नीचे ११००० माणसोतुं लहकर त्यां एकत्र थयुं हतुं अने ए सर्वनो देखात दवदवा भरेलो दे-खातो हतो. ज्यारे रीव्यु समाप्त थइ त्यारे प्रथम महाराणीनी गाडी अने तेनी पाछळ आखुं सरवस आपनी गाही पासे थइ पुनः पसार थयुं. जेथी महाराणीना पुनरावलोकननो यथेच्छ लाभ आपने विना प्रयत्ने प्राप्त थयो. ए अन्य छोकोने ओपेरा ग्छाप वडे जोतां हतां. जो के एमने उम्पर लागेली इती, तो पण तेमनुं शरीर तंदुरस्त देखातुं इतुं. मीनस अने मीनसेस ऑफ वेइल्स बीजी गाहीमां हतां, तेओनी गाही स्टेशन तरक गइ, एन स्पेशी यह ट्रेनमां तेओए पोतानी साथे आव-दवातं आमंत्रण कर्युः परंतु लंडन जवानो विचार नहि होवाथी आप वीनी स्पेशीअल ट्रेनमां रवाना चइ वेज्ञीन स्टेशने उतरी पड्या; दिनस वहुज खर्छ हतो, जे अपलदार आपनी साथे घोडा उपर आवेल तेणे वणान मायाळ्यणाथी संभाळ लीबी हती. जो के आपनी गाडीना अ-श्वीए एकन्दर घणुं सार्ह काम कर्यु, तो पण ते बादशाही सरवसनो साथे चालवा समर्थ थइ शक्या निह, जे स्थळे रीव्यु थती हती ते स्थळे पहोंच्या पहेळां वादशाही सामितनी साथे चाळां पडरो ए रीतनो ख्याल पण आपने आव्यो नहोतो.

ता. ८ मीए आप वॉल्टन स्टेशनेथी ट्रेनमां वेनो हेस्टींग्स परार्था. त्यां स्टेशनस मी हेन-कॉकनां काकीतुं आपने मिल्लन थयुं, प्रथम एने वेर जइ तेना तरफनो आगना स्वागना स्वीकार्या वाद पछोथी आपे रॉयललॅकशन हॉटेलमां निष्टतिथी निवास कर्यो अने रात्रीए "लेडी ऑफ लायनस " नो खेल जोयो. ता. ९ मीए जे स्थेळ अ.पने सोमवारथी तरतां शीखरानी शहआत करवानी इती, ते स्थळ जोया वाद वरोर पछी आप सरकत्र जोवा पधार्या. ए वखते मी. हेनकॉकना भन्नीना साथे ह्वा. सांजे पीयर पॅवीकीयने जइ केटलीक जुदी जुदी वावनोतुं उत्ताहथी अव ठोकन कर्यु. हॉरी- ह्वांन्टलवार उपरना खेलो खास जोवा लायक हता.

ता. १० भीए आपें सायक्कपर लगभग पंदर माइल जेड़की मुसाकरों करी, भूमि खड-दचडी तेमज टेकरीओधी इंची नीची होवाने लीचे पडेला परिश्रमतुं निवारण करवा वाकीनो सम-य विश्रान्तिमां वितान्यों.

ता. ११ मीए हॅाकहर्स्ट के ने हेर्स्टांग्सथी आशोर पंदर माइळ नेटळुं दूर छे त्यां जतां आमपायना मनोहर देखावने छीवे आपने बहुज गम्मत आत्री. हॅाकहर्स्टमां मी. न्हीकसिने घेर जइ आप क्रोके रम्या. एयतुं गृह तथा वगीचो वने छुंदर छे. पछीथी सेइन्टलॅन्डई पीयर पेवीलीयने जह गाप " प्राह्वेट सेक्रेटरी" नामनी आनंददायक रमन नोइ. मार्गमां कुमारश्री छखुभा मळया इता तेने पण ए रमत नोवा आपें साथे लीधा हता.

ता. १२ पीए नहावानी जगीए जइ आपें मी. हेनकाँक पासे तरवानुं शिक्षण लेवानी ज्ञार स्थात करी. आपने जगायुं के ए काम एटछं वयुं अवरुं नथी. पहेलेज दिवसे वाथना अरधा भाग स्थी आप तरी रावपा. अने त्यांधी क्रेम्स्ट नामनी गुफाओ जोवा गया. ते विशाल छे अने तेने बहुज रवन्छ राखवामा आवे छे तेमज तेनी अंदर दीवाओ पण करवामां आवे छे. पछी आप पडी गएलो किछो जोवा पथार्या, ए एक उंची टेकरीपर आवेल होवायी सुंदर देखाय छे अने त्याथी आसपासनो देखाव पण अति आनंदमद जणाय छे. त्यांधी भी. हेनकाँकनी पिछाणवालां एक पादने त्यां पथार्या, जो के ए घर न हतां, तोपण तेमना वगीचाओमां फरी आपे आनंद लीधो. त्यारवाट एलेकझेन्डा होटेले ज्ञामार्थी लावुभा साथे भोजन करी हेस्टींग्सपीयर पॅवीलोयने पथार्थी. त्या केटलंक जोवानुं हनुं ने जोइ पाछा फरता आपने कर्नल हेनकाँकनुं मिलन थयुं.

ता. १३ मीए वरसादने छीते नवारे वाहेर नीकळी शकाय तेप न हतुं. वपोर पळी आप बॅटलएवे पधार्या, त्यां घणा पुरानन खंडेर अने जे स्थळे हेरल्ड नामे राजा मरायो हतो ए वर्डुं जोया दाद वाकीनो वखन दर्नेळ हेनकाँक तथा कुमारश्री ळखुभा साथे वार्ताविनोदमां तेम न हे-स्टीरसपीयर पॅवीलीयने जह विविध प्रकारनो गम्त्रनो जोवामां गाळ्यो. ता. १४ मीए वाथ उपर जड़ तरवानां शिक्षणनो वीजोज दिवस इतो छतां आप वाथनी पेली वाज तरी गया अने ते पछी फेरलाइट पधार्या, ए एक सुंदर स्थळ छे, कर्नल हेनकॉक अने भी. तरखडना वे पुत्र आपनी साथे इता. टेकरीपरथी नीचेनो दरीयो तथा वीजा देखावो घणाज मनोहर जणाता इता. त्यारवाद " आज्ञाक माञ्चकनी जगा " अने " टपकतो ज्ञावो " जोया वाद

एडीनवरो हॉटेले आप भी. पंडितने मळवा पथार्या. ए पंडित मुंबइथी लंडन जती वग्वते आगवीटमां आपनी साथेज हता.

ता. १५ मीए आप ब्राइटन पंधार्या अने त्यां पाणीमां रहेनारां जल जन्नुओनो संग्रह जोयो, तेमां दरीयाइ सिंह तथा केटलीक जातिनां मत्स्यो जोवा जेवां हतां. त्यांथी डेवील्स डाइक के जे डाजन्समांनो एक सारो भाग छे अने ज्यांथी आसपासनां गामडांओनो समग्र देखाव जोवा- नुं बहुज स्रगम पडे छे त्यां जइ केटलुंक सृष्टि सौन्दर्य जोया बाद रात्रीए आप " लॉर्ड बीलवरी ऑफ टीलवरी " नामनो रमुजी खेल जोयो.

ता. १६ मीए आप साउथ सी नामना स्थळ पथार्था अने त्यांथी पायर पॅबीलीयने जइ संगीतनुं श्रवण कर्यु, तथा वाकीनो वखत वेब्रीजथी आवेलां मीसीब हनकॉकनी साथे विविध वार्तीविनोदमां वितान्यो.

ता. १७ मीए चर्च तरफ जती रेजीमेन्टो जोया वाद एक स्टीमरमां आप "आइल ऑफ वाइट " पथार्या अने काउस उतरी तुरतज बीजी स्टीमरमा पाछा फर्या. ए वस्वते आसपासना दिल्लपसंद देखावो मूर्तिमान सौन्दर्यनी माफक शोभी रह्या हता. सांजना पायरे जइ आप सुरीछं वन्ह सांभळ्युं.

ता. १८ मीए आप रहेता हता ए हॉटेलनी सामेज जाहेर जग्या उपर छॉर्ड बुल्झलीनी देखरेख हेटल रीव्यु थती हती तेनुं हॉटेलपांथीज आपे अवलोकन कर्यु अने मी. हेनकॉक रॉनल हॉक्यार्ड जोवानी गोठवण करवा माटे पॉर्टस्मथमां रहेता ब्रीटीश नौका सैन्यना कमान्डर इन ची-फने एडमीरलनी ऑफीसमां मळवा गया. वपोर पछी आप पण ए ऑफीसे जइ तेना सेकेटरीने मळ्या, तेमणे वधुं हॉकयार्ड वताववा माटे लॅफ्टेनन्ट एडवर्डने आपनी साथे मोक्तल्या. डॉक्यार्डमां द्युं शुं अने केवी रीते जोवुं तेनों प्रोग्राम पण तेमणे तैयार करी राख्यो हतो. वर्कशॉप के ज्यां एक नवी लडाइनी नौका वंधाती हती ते तथा वीजी वेटलीक जगो आपे जोइ. यंत्रो चालतां हतां ते जोवामां वहु आनंद आवे एवं हतुं. त्यारवाद कमान्डरे महाराणीनी "टेरीवल" नामनी

स्टीमरना तमाम दिभागो बताच्या अने तोपो केवी गीते काम करे छे, ए वधुं सारी रीते समजान्युं. ए आगवांटनी लंबाइ ५२० फीटनी छे अने तेमा पचाश तोपनो समावेश करवामां आच्यो छे। दिवस बाढळां दिनानो होवाथी ए वधुं जोवानी बहु अनुकूळता आवी. रात्रिए नाटकशाळाए जइ "नाइट ऑफ " नामनो खेळ जोयो.

ता. १९ मीए आप ॲडमीरळनी ऑफीसे पधार्या, त्यां तेना सेक्रेटरीने मळतां ते आपने ॲ-ढमीरल सीमन पासे लइ गया. प्रथम परिचयमां ए मायाळ गृहस्थे कोइ पण प्रकारनी जोड़ती मदद आएवा जणाच्यु, तेमनी साथे थोडीवार वातचीत करी आप मी. एडवर्डनी साथे क्षींग्झस्टेर पासे हाजर रहेली स्टीमबोटमां वेसी "विकटरी" नामनी स्टीमर जोवा गया; तेमां जे जग्याए लॉर्ड नेन्यन यवाएल अने ने कॅबीनमां एमतुं मृत्यु थएल ए वने स्थळ आपें जोया. ए नौकानी अंदर वणीवार फेरफारो करवामां आच्या छे अने तेथी डयां लॉर्ड नेत्सन घायल थती वखते उभा रता ए रथळ शिवायनो वधो भाग नवोज वनी गयो छे. एक सह के जेमां १९० ठेकाणे गो-ळीओ छागेछी छे ते तथा बीकी केटलीक जुनी तोषो जोया वाद "वर्नन" नामने स्थळे पधारी अपि अनेक प्रमागना दारगोळाना नमूनाओ निहाळ्या. त्यां खलासीओने दरेक वावत समजावीने शिखदवामां आहे छे. लारवाद आपे टॉरपीडो जोइ अने ते केबी रीते वाम करे छे ए पण आपने सगजावदामां आच्युं, एनी अंदर हनाने दावी राखेली होय छे अने तेथी ते लगभग ६०० वार सुधी जइ शके छे, कदाच ते कोई पदार्थ साथे अथडाय तो एक।एक धडाको थाय छे. जमवानो वस्वत पर गएलो होवाधी आप हॉ टेले पधार्या अने पाछा मध्याह समये उक्त स्थळे आव्या; त्यां र्मा. एटवर्ड अ।पनी राह जाता उभा हता, एएनी साथे एक स्टीमवोटमां वेसी आपें व्हेळ आइ-लॅंन्ट तरफ प्रयाण कर्यु, ए टापु इन्हिम छे, त्यां प्रथम काददवाळी खपाट भूमि इती, तेमां डॉक करवा गाँट खोदी काहेली मृत्तिका पूरीने तेना टापु बनाववामां आव्यो छे. त्यां नाविकोने शिक्षण आपवा गाँट वपराती दरेक जातनी तोपो अने दारगोळो वरे.रे जोया वाद आप महाराणीनी "आ-ल्बर्ट " नामनी स्टीसर जोवा पथार्था. ते पुरातन शथा प्रमाणे वांचवामां आदी छे, एनी अंदर फेरफार करवातुं महाराणीने पसंद न हतुं; उत्तम भीते ज्ञांगारेल ए आगवीट खास दर्शनीय छे. त्यार्थः मछवामां वेसी आप साधाम्प्टन पायरे पथार्था अने पछीथी हॉटेले जड़ विश्रानित लीजी.

ता. २० भीए पाछा आप हाँक पर गया अने भी. एडवर्डने मळ्या. ए महाज्ञाये आगनो दर्शे राग्वदानु स्थळ नथा टॉकपांथी जे स्थळे पाणी वाहेर काही नांग्ववामां आवे छे ए स्थळ उप- रांत नाविको तथा तेना अपलदारोना निवासस्थान आपने वताच्या. ए निवासस्थानने माटे जीर्ण थएलां नावोने उपयोगमां ली रेला छे, ते पत्रो आग पहाराणीनो "हंटा" नामनी एक टारपीडो जावा पधार्या. ए दर कला के २८ ऑटन चारे ले अने तेना ल ते पत्रो तथा वे टारपीडो टाउन से समावेश करेलो छे. ए टेल्पीडो उपर विशेष जगा नथी अने वखते वग्वते ममुद्रना तरंगो तेना उपला भागना तृतक सूबी जइ पहोंचे छे. ए ज्यारे झडयथो चाले छे, त्यारे तेमांनो केट लीक तो बत्रीश वत्रीश नॉटस जेटली गति वरी शके छे भी. एडवर्डनो सहायताथो आप डॉकना दरेक विभागोनुं मन्पूर्ण अवलोकन कर्यु, अने एनुं एकंदर क्षेत्रकळ आशरे ३०० एकर जेटलुं आपने जणायुः सांजना देनद्वारा सॉल्झवरी पथारी आपे " व्हाइट हार्ट " नाम ते होटे छ गं आराम लोगो.

ता. ६१ मीए आप सॉल्झबेरी केथीड्ड जोवा पर्धार्या, तेनो बांग्गो उमहा गोथीक जातिनी छे, अने तेनुं टावर आशरे ४०० फीट उं छे है, त्यां छांवा समय पर थइ गएछा रहान्
पुरुषोनी कवरो पण छे. ए केथीड्ड घगुंन सुन्दर तेमज दर्शनीय छे, वपोर पछी स्टोनहेंज के जे
सॉल्झवरीथी छगभग छ माइछ छेडे छे त्यां पर्धार्या. पुरातन समयना ब्रोटन छोको ए पत्थर त्यां
केवी रीते छात्र्या हशे अने बीजा पत्थरोनी उपर एक घणोज महान् पत्थर तेमनी पासे यंत्रो न
होवा छतां तेमज यांत्रिक शास्त्रिक्शोना कांइ पण ज्ञान शिवाय केवी रीते मूकी शक्या हश्चे तेनी
समजण पहे तेम नथी, आसपास १०० माइछ सूधीना प्रदेशमां एवो पत्थर के पत्थरनी खाणो
क्यांइ शोधी जहे तेम नथी.

ता. २२ मीए आप वाथ तरफ पधारी जुना रोमन छोकोनां वंथावेछां हमामलानांओ जोयां, एने थोडा वलत पहेछां खोदवामां आव्यां हतां. रोमन छोकोए एक हजार वर्ष पूर्वे ए वांध्यां होय एम कहेवाय छे. एतुं पाणी हमेशां उष्ण रहे छे, केटलाक खिनज पदार्थोंथी मिश्रित थएल ए जळमां नहावानी डॉकटरो घग लोकोने खास सलाह आरे छे. ए हमामलातुं खोदती वस्ते रोमन लोकोना समयना सीकाओ तथा बीजो घगी चीजो मळी आवेली छे. त्यां एक मोटो पंपहम छे के ज्यां ए हमामखानांना जळतुं पान करी शकाय छे. वयोरना आप लंडन तरफ पधार्या अने पेडींग्टन थइ वेस्ट्यीनीस्टर हॉटेंग्डे जइ पहींच्या. रात्रीए आप डेली थोएटरे पधारी "श्रीक स्लेव" नामना अति आनंददायक खेलतुं अवलोकन कर्धुः

ता. २३ मीए लंडनमां खरीदवा धारेल केटलाक सरसामाननी जुरी जुरी कंपनीओमां तपास करी वॉटरलु स्टेशनथी वॉल्टन तरफ रशाना थया अने त्यांथी वाइसीकळ पर कींग्झक्लेर जइ टेनीस आदि रनत गनतमां आपे आखो दहाडो आनंदथी पसार कर्यो.

ता. २४ मीए पण सवारने। समय विश्वान्तिमां गाळ्यो अने वपोर पछी केप्टन कॉवेन्टीने घेर जइ टेनीस रम्या तथा साउथ वुड पर्यन्त वाइसीकळपर सफर करो.

ता. इप मीए साउथबुद जता मीसीत हे नकाँकना वितृत्य मी. सघरळं न्डतुं आपने मिळन धयुं, एमनी साथे पसंगोपात बातचोतमा एक एवो नवो नको निकजी आच्यो के ते सरकारने "वाली गधेडा" मोकले छे, तेण कछुं के गर्दभो मळता नधी. एनो सहुथो श्रेष्ठ जपाय ए छे के गधेडां अने खबरने साथे उछेरवां जोइए, एक सारो "वाली गर्दभ " सो पाउन्डनो मळे अने तेटलीज किम्मते पाच गर्दभीओ मळी शके, तेणे उछेरेलां केटलांक गर्दभ तथा खबरना फोटोग्राफ आपने बताच्या. तेमनी पासे एक खबर हतुं अने तेनी उंचाइ १७ हाथनी हती. खबरने उछेरवानों धंघो जाणनार माणसनी साथे वार्ताळापनो प्रतंग पास थतां आपने बहुज आनंद थयो, अने एमनुं पुस्तक बांकानेरनुं पंडक सुधारवामां अति उपयोगी थशे एम जणायुं.

ता. २६ मीए आपे नदीनी अंदर होडोमां वेसी सफर करी. वांसडा वर्डे तेने चलाववातुं शिक्षण पण लोढुं. पछी साउथवुड जइ थोडीवार टेनीस रम्या वाद हॉटेके आवी एक क्रीकेट मॅचतुं अवलेकन कर्यु अने त्यायी फरी नदीपर जइ होडीमां फर्या वाद पाछु साउथवुड तरफ प्रयाण कर्यु.

ता. २७ मी जुलाइथी ता. १ ऑगस्ट सूचीना छ दिवसो वरसादने लीधे कींग्झक्लेर तथा धाउपबुडमा विविध मकारनी रमत गमनमां विताल्या.

ता. ध जी ऑगस्टे नदीपर जइ मछवामां जरा स्हेल कर्या वाद "सेन्ट ज्योर्ज हील " नामतुं एक घगुंज मनोहर स्थळ जोवा प्यायी, ए स्यळ हुक्षाना महान समुदाय बच्चे आवेलुं छे अने त्याथी आज्वाज्ञना प्रदेशनों देग्वाव अति रमणीय तेवज आनंदजनक जणाय छे, सांजनों समय साउथवृह जह आपें शान्तिमां प्रसार कर्यो.

ता. हे जीए सरसामान पॅक करावरानो होवाथी सारि वाहेर नीकळी शकायुं निह, वपोर पड़ी "हेम्पटन कोर्ट " नामने स्थळे परार्था अने त्यां भूळवणीमां फर्या वाद आपें केटळांक मजे-टार चित्रो, पुरातन समयनी केटळींक चीन्नो अने राजा तथा राणीना पळेंगो वगेरे जोयां. ए चन्दते दादलाही कुटुंवमांतुं कोइपण त्यां रहेतु नहोतुं, परंतु पढ़नी दशाने प्राप्त धएळा महान् पुरुषोनी विधवाओने तेमांना केटलाक ओरडाओ आपवामां आव्या छे. तेनी आसपासना वगी-चाओ अत्यंत सुंदर छे. त्यांथी मीसीझ वील्कीन्सनने त्या जड माजनो समय आपे आनंदथी पसार कर्यो.

ता. '४ थीए आप मुसाफरी अंथे तैयार थया अने वॉल्टन स्टेशनेथी इन्डिया ऑफीसे जह मी. फीटझरल्ड साहेवने मळ्या. एमणे अमीरनी सभामां आपने लड़ जवा माटे एक अमळ-दारने साथे मोकल्या. ए अमळदारे त्यां अर्ल ऑफ ओनस्लो साथे आपने भेटाच्या नथा ते स्यळना तमाम विभागों वताच्या. जे जग्याए ी महाराणी निकले छे ते अने जे महान् हॉलमा महाराणीने आवकार आपवा सरघस एक छं थाय छे ए वन्ने जोया वाद पहेला चार्ट्स राजाने मारी नांखवा माटे सभाए पसार करेल बील के जेना उपर अद्यापि केटलाक सभासदोनी सहोओ वांची शकाय छे ए पण जोयुं. गौशीतला सबंथी बील के जेना लॉर्ड हेरीसे भाग लीयो हनो अने जे त्रीजी वखत बंच तुं हतुं ते साभळतां आपने वहुज आनंद आच्यो. सांजना आप वर्मी गहाम तरफ रवाना थया अने त्यां पहोंच्या वाद ग्रांड हॉटेलमां उतारो राख्या.

ता. ५ मीए मी. देनकॉक लॉर्ड मेअरनी ऑफीसे गरा अने जुदां जुटां कारखानांओं जोवानी सगदड करी आव्या. प्रथम इलेक्ट्रेप्लेट काम जोवाने आप मेसर्स एटकींगनी कंपनीमां प्रधार्या, पण त्यां तो वॅन्कना तहेवारो होवाथी एक अठवाडीयुं थयां काम वंध हतुं. तथापि शोरुम तथा कटेळीक कारीगरीना आश्चर्यननक नमुनाओं जोया वाद मेसर्स जोसफ गील्टर एन्ड तन्सेन त्यां पत्रायों. जेनाथी दुनियामां घणे भागे हाल लखवातुं काम चाले ले ए टाक त्यां जन्यावंध वने ले, जो के तेमां घणुं काम हाथतुं ले तो पण वहुज अडपथी चनाववामा आवे ले. टांको तैयार थती हती अने तेना पर जे जे काम चनतुं हतुं ते आपं नजरे जोयुं. त्यांथी रंगवेरंगी चित्रवाळा काचतुं काम जोवा आप मेसर्स जे. वी. हाईमॅननी कंपनीमां गया. साधारण काच खपर अनेक प्रकारना रंगथी केवु उमदा काम करवामां आवे ले अने तेथी तेतुं केवुं क्यान्तर थाय ले एवुं उत्साहपूर्वक अवलोकन कर्या वाद आप मेसर्स एफ. मी. ओस्लरने त्यां पधार्या, त्यां पण काचतुं काम करवामां आवे ले, परंतु उपर बहेला कारणसर ए कार्यालय वंध हतुं अने तेथी एक उमदो काम करवामां आवे ले, परंतु उपर बहेला कारणसर ए कार्यालय वंध हतुं अने तेथी एक उमदो काम करवामां अते ले काटि यावाडना वेटलाक राजकुमारो विलायतमां जइ मोजशोखमांज सघळो समय वितावे ले अने अमुन्त्य व्यवतनी कांइपण किम्मत करी शकता नथी ए केटलुं वधु शरम भरेलुं ले, दोई आपनी

वेगवती तेमज प्रशंसनीय उद्योगी प्रकृतिनुं अनुकरण करे तो अवश्य अमे काठि आवाहनां सद्भा-ग्य समज्ञां, शास्त्रमां कहुं छे के-'' यौवनं धन संपत्तिः प्रभुत्वमविवेकता, एकैकम-प्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्ट्यम् " यौवन, धन संपत्ति, प्रमुत्व अने अविवेकीपणुं ए एक एक होय तो पण महान् अनर्थना मूळ रूप छे तो पछी ज्यां ए चोकडी भेळी थाय त्यां तो द्युं न पूछ्युं अने तेमां वळी विळायत जेवो प्रदेश के ज्यां उत्तमता अने अपमता श्रीखवानां सइस्रशः साधनो इरघिंड हाजर होय छे त्यां जइ पूर्वनां सचित सारां होय अने धविष्यमा एक उत्तम राजकर्ता तरी-केनी सत्कीर्ति चलाटमां लखेळी होय तोज राजकुमारनी स्थितियां युरापनी यात्राए पधारेळा आप नामदार ( अमरसिंह जी ) जेवी सद्बुद्धि उद्भवे. मेसर्स एफ, सी, एस्बरना कार्याञ्यमा कांड काम चारुतुं नहोतुं तोपण केटळाक काचना उत्तम नमूनाओ उत्तरांत काचने केवी गीते कापवानां आवे छे वगेरे वावाोनुं आपे प्रश्लोत्तर पूर्वक अवछोकन कर्यु. जो ए कारखानुं चालनुं होत तो आपने जोवानो तथा जाणवानो घणोज काभ मळत. त्यांथी आप काउन्तील हाउसमां प्रशासी अने ए वखतना लॉर्ड मेअर वेल्ममां होवाथी थोडा वर्ष उरम्ना वर्मीगहामना कॉर्ड मेअर मी. ओ-स्डरमेन जोन्सनने मळ्या. ए सद्युद्रस्थे अत्यंत मायाळुपणाथी आपनी उत्तम प्रकारे सरभरा करी. त्यारवाद लॉर्ड मेथरनी ऑफीमनो एक कारकुन आपने टाउनहॉल, म्युनीसीयल ऑफीसनां म-कानो तथा आर्ट गेलेरी स्ताववा साथे आव्यो. आपना अनुभव प्रमाणे टाउनहॉल घणो सुन्दर छे अने तेने उत्तम रीते शणगारवामां आच्छो छे. गेलेगीमां पण वे.टगंक उमदां चित्रोतुं आर्पे अन्छो-कन कर्ः एने लगतुं एक संग्रहस्थान आर्टकॉल्डेजना विद्याधीओने माटे एक श्रेष्ठ लंस्या छे. त्यां-धी दारुगोळातुं काम जोवा आप मेस ने कीनोकनी कंपनीमां एधार्या; परंतु ए कार्यालय वंच होवा-णी आपने निराश घड पाछुं फरवुं पड्युं. एक दिवसमां अनेक स्वळो जावानी छाभ छइ साजनो समय आपें शान्तिथी पसार ऋथों.

ता. ६ टीए आप क्रयु पर्धार्य अने वर्कशॉप खाताना सेक्नेटिनी मळ्या, ए पहाश्ये आ-एने तर्नशॉप वताववा माटे एक गृहस्थेने साथे मोकल्या. मथम ज्या एन्जीन बनाववामां आवे छे ए स्थळ जोया बाद आपें स्मीधिती जोह; अने जे यंत्रवहे छोष्टना कटकाओं दिख्तथी नाधवामा आवता हता, ए कियानु एण अच्छोक्तन कर्यु. ए खरेखर जोवा जेवी अने अज्ञायदी हरकावे एवी रीत हती. त्यां छोष्ट्रमांथी गजवेळ बनाववानुं अने पांच मीनी-टना उटण लोहना एक बटकामांथी पाटा बनाववानुं काम चालनुं हतुं. आपें जोवा जेवी दरेक वा- वतो जोइ विशासना एकनी गाडीए चेस्टर तरफ प्रयाण कर्यु अने त्यां ग्रोस्पेनोर हॉटेळमां निकास कर्यों. जो के ए वखते वरसाद वासनो होवाथी आप वीजुं कांड न करी शक्या, तोपण क्रीस्टीमी-नसट्ळ जोवा पथार्या.

ता. ७ मीए आप रोमन लोकोना बखननी जुनी दिवाल के जे लगभग वे माइल जेटली लांबी अने घणीज मजबूत छे तेना उपर फर्या, त्यांथी आसपामनी मदेश जोवातुं बहुज मुगम पडे छे; त्यांथी इटनहॉल अने पार्क के ज्यां डयुक ऑफ न्युकेसल रहे छे त्यां पवार्या; पगंतु रिववार होवाने लीने ए हॉल वंध हतो. पछी हावर्डन के ज्यां मरहुम मी. ग्लॅडस्टन रहेता हता त्यां जइ मीसीस ग्लॅडस्टनने एक गाडीमां पसार थता जोयां, छेवरें डी नदीमां मच्छवानी सहेल करतां आप जेम जेम आगळ गया तेम तेम अत्यंत रमणीय स्टिप्सें।दर्य दिप्रेगोचर थतुं गयुं.

ता. ८ मीए आप मान्चेस्टर पथार्था अने त्यां म्रान्डहॉटलमां मुकाम राखी इन्डिया ऑफी-समांथी मी. हेनकॉके छखेला एक भलामणात्र उरस्थी लॉर्ड मेयर ऑफ मन्चेस्टरे मोकलेला तेना सेकेटरी के जे आपना आपमन पहेलां होटेले हानर यएला हता तेन मल्या; ए वखते क्यां क्यां जां अने छुं छुं जोंचुं एनो निश्चय कर्यो. वेशो बहुन अन्यकार जाम्यो अने छुटि शरु धइ, छता आप प्रथम वॉटसवेरहाडस जइ छुदी छुदी जातनां कपडा अने वीजी अनेक चीजोना हगलेहगला जोया. तेओ जत्थावंथ मालनो विक्रय करे छे. मांचेस्टरमां वनेल बह्नोना केटलाक उत्तम नमूना-ओ पण आर्थे जोया, अने त्यांथी आर्ट गेलेशीए जइ अनेक मकारना चित्रोंतुं अवलोकन कर्या वाद स्थल एक्म गेइन्झ नरफ मयाण कर्युः त्यां वशेरना वे बच्चा पछी घणा रुतना व्यापारीओ मेला थइ साटां करे छे त्यांथी टावरहॉ रु जह आप लॉर्ड मेयरने मळ्या. एमणे छुदा छुदा कारखानांओना भेनेजरो उपस्ता मलामण्यतो आपने लखी आप्या , यारबाद ए आखुं मकान आप जोयुं. त्यां जाहर मिजमानीओ गाटे वपराती टे गल उपर राखवानी दरेक चीजो श्रेष्ट अने खुशोभित हती. ए मकःन तैयार थतां एकंदर साडावार लाख पाउन्डतुं खर्च थएलुं छे राजीए आर्थे भीन्सेस थी-एटरे पथारी " लीटल् रे ऑफ सनजाइन " ( मकान लं एक नहानुं किरण ) नामनो खेल जोयो. एनी रचना आनंद उपनावे एनी हती.

ता. ९ मीए प्रथम आपे मेसपे जो जाडींन ऍन्ड को. नी स्वीनीन फॅक्टरीमां जइ रुमाथो सूक्ष्म तंतुओं तैयार करी तेने वस्त्र बनाबी शकाय तेवी स्थितिमां छाववानी तमाम रीति विछोकी. ए कामने माटे तेओं भीसरनुं अने घणे भागे अमेरिकानुं रु के जे अति मुछायम होय छे ते वापरे छे. हिन्दुस्थान हुं ए कामने अर्थे जोइए ते हुं सूस्य थतुं नथी तेयज तेना तंतुओ पण एडला यम दीर्घ थइ शकता नथी. एटला माटे ए रुनी वपराश त्यां यहुज ओछी छे. त्यांथी आप मेर सर्स व्हीटवर्थनी स्टील अने आपने फेक्टरी जोवा पथार्या. तेओ तोपो, वस्तरों, अने लढ़ाइनां वहाणो माटे पतरां तथा वीजी घमी चीजो वनावे छे. ब्रीटीश मवन्नेमेन्टना उपयोग माटे नकी थर एलां माप तथा तोलांओ पण त्यां वनाववायां आवे छे. एक इंचनो दशह जारमो भाग मापवाना यंत्रो पण ए कंपनीवाला पासे छे. त्यारवाद लॉर्ड मेयरना आमंत्रणने मान आपी आप टाउन हॉले पथार्या अने तेनी साथे उत्तम प्रकारना फुट वमेरे जम्या, ए वस्तते काउन्सीलना केटलाएक मेम्बरो त्या हाजर हता. ते पत्री मेमर्स आर हावर्थ कंपनीती सीनींग अने वीबीग मील जोवा जतां तेनी कृति आपने अति उत्तम जणाइ. त्यां लगभग १४०० साल उपर काम थतुं हतुं अने मात्र एनेज याटे ७०० वालाओने कामे लगाडेली हती. त्यांथी आप लॉइडज हाउस पॅक्शिंग कंपनीमां पथार्या, ए लोको परदेण साते जत्यावंध माल मोकले छे. हिन्दुस्थान तरफ घोतीयां मोकलवानी ए वस्तते योजना चाली रही हती. दुनियाना दरेक विभागो करतां मांचेस्टरमां वेपार धमधोकार चाले छे अने उद्योग व्यापार शुं चीज छे तेतुं त्यां सारी रीते भान थाय छे. तांजनो समय आपे रशुनीकल हॉलमा पथारी आनंदणी पसार कर्यो.

ता. १० भीए आप मान्चेस्टर छोडी शेफील्ड पथार्श, त्यां संझानपर लॉर्ड मेयरना सेके टरी आपनी राह जोता हता, तेनी साथे टाउन हॉल गया अने लॉर्ड मेयरने मली मोग्राम गोठन्युं. लेटी मेयरेस अने दीजा गृहस्थो पण त्या हाजर हता प्रथम मेमर्स जोन रोजसनी कंपनीमां जड आपे बेटलुक जोवा लायक जोयुं; तेमणे मात्र अरवा आंग्रसना तोलमां वार कातरो वनावेली हती. त्यां एक एवं चप्युं हतुं के जेमा तेओ दर पाच वर्षने अंतरे पाच पानां वधारनां जाय छे चप्यु- ओना हावा वगेरने साटे तेमने दरवर्षे १४०० हाथीओना दंतोशलको जहर पढे छे. त्यांथी काल नमील जोवामा थोडा वय्वत वितादी लेडी मेयरेसनी साथे आप स्युनीमिपल वील्डींग जोवा पथार्था अने त्यादी मेमर्स योकर ऍन्ड होलमना इलेक्ट्रोपेटींगने कारखाने जइ केटलुंक जोवालायक जोयुं. त्यारवाद मॅपीन्म आर्ट गॅलेरी अने आर्ट स्युझीश्रम जोड आप हॉटेले आत्र्या. लॉर्ड गेयरे ए नमाम स्पेल फरवा माटे पोतानी गाडी आपी हती, तेयना सेकेटरी नथा मी. वित्यन के जे एक महान वर्तमानका लियनि तरीते पत्रकत्तामां बीरा वर्ष पर्यन रहा हता ते पण आपनी साथेक हता. दिवस स्वन्छ होवा मे उपर कटेलां स्थलों जोवामां आपने पुष्कल आनंद माप्त थयों

ता. ११ मीए लॉर्ड मेयरना सेक्रेटरी मी. हेरीस तथा मी. विलसन गाडी लड़ आपना मुकामपर आव्या; तेपनी साथे आप मेसर्स चार्स केमीलनी कंपनीमां पथार्या; त्यां वखतरो वगेरे पोस्नादनी घणी चीजो बनती हती, ए कंपनीना आसि. मेनेजर केप्टन वोइन्टन के जे हिन्दुस्थानमां थोढो वखत रही गया हता एणे अत्यंत मायाळुपणाथी कार्याक्रयना समग्र विभाग आपने बताब्या. त्यांथी मेसर्स वीलकर्स ऑन्ड मेकसीपनुं तोप तथा वख्तर वगेरे बनाववानुं कारखानुं के जे तमाम मकारे उपर बताबेला कार्यालय जेवुंज हतुं ते जोया बाद बाकीनो वखत आपें हॉटेले आवी विश्वान्तिमां व्यतीत कर्यो.

ता. १२ मीए आप शेफीस्डथी जीडझ पथार्या अने त्यां विक्टोरिया स्टेशन होटेलमां उतर्या. स्टेशन पर मळेला डेप्युटी मेयर अने डेप्युटी टाउनक्ळार्क हॉटेले साथे आव्या अने त्यांथी आपने पोतानी गाडीमां केटलांक कार्यालयों जोवा लड़ गया. एमंशे प्रथम मेसर्स ग्रीनबुडनी कंपनीनी स्टील अने आपने मेन्युफेक्टरी बताबी; त्यां गर्वनमेन्टने माटे कारतूस बनाववामा आवे छे. ए पछी मेसर्स कीटसन एन्ड कोण नी आपने मेन्युफेक्टरी के ज्यां जे, आह, पी, रेल्वे तेमज बीजी रेल्वेओ माटे एन्जीन बनाववातुं काम चालतुं हतुं अने ज्यां तैयार थएछं नं. २१० तुं घाट एन्जीन केंद्रं काम करे छे तेनो प्रयोग चालतो हतो ए जोया वाद आपें मेसर्म फाइलर ऑन्ड कोण, मेसर्स टेलर ब्रध्सी ऑन्ड को० वगेरेनां केटलांक लोखंडना कार्यालयों पण जोयां. मेसर्स टेलर ब्रध्सी कंपनीमां रेल्वेना पाटा बनाववातुं काम चालतुं हतुं. त्यांथी मी. आल्फकुक्सनी चित्र-शाला जोइ रात्रीए आपें ग्रान्ट थीएटरे पथारी "गेग्रीझेट" नामना आनंददायक नाटकतुं अवलोकन कर्यु.

ता, १३ मीए हेप्युटी टाउनक्कार्क आपने मेसर्स लोसन कंपनीनां लोखंडनां कारखानांओ जोवा लड़ गया, त्यां हिन्दु स्थान माटे भिन्न भिन्न कार्यमां उपयोगी थता यंत्रो अने स्कू
बोल्ट बगेरे न्हानी न्हानी परंतु जोवा जेवी घणी चीजो तेयार थती हती. पछी आप वर्षनटापटना
माटीनां वासण बनाववानुं स्थळ जोवा पद्मार्था, त्यां अर्थ स्काएल मृत्तिकानी मनोहर इंटो बनती हतो
तेने भठीमां मूकतां पहेला त्रण अठवाडीआ पर्यन्त स्कावा दे छे, बीवांनी रीते पण त्या घणी
चीजो बनाववामां आवे छे अने ते तैयार थया पछो आंखने वहुज आनंद आपे छे. सांजना
आप न्युकासल पथार्या अने स्टेशन पर आवेछा भी. मेअर तथा टाउन क्वार्कने मळ्या; तथा
स्टेशन हॉटेले मुकाम राखी सुखशान्तिमां रात्री वितावी.

ता. १४ मीए रिववार होवाथी बीजे क्यांइ निह जतां आपें टाइनमथ जर वारिधिने कि-नारे दिचरण करतां करता समुद्रनी श्लीतक कहरीनो आनंद लीधो. ते स्थले अधम जरोनो महोटो जमाव धएको होवाथी वधारे बखत निह रोकातां मुकाम पर पधारी सांजनो समय नि-वृत्तिमां गाळ्यो.

ता. १५ मीए मी. मेअरनी साथे आप लॉर्ड आमर्स्टडामनां कार्यालयो जोवा पथार्या. जापान सरदार माटे त्यां वर्षाणतुं वांधकाम चालतुं हतुं अने तोपो तथा बीजुं केटलुंपक सोखंडतुं काम पण यतु रतुं, एमां आशरे १४००० मजुरो कामे लागेला हता. ए कार्यालय लगभग दोड माइल जेटलुं लांबुं के, ए कंपनी तरफथी आपवामां आवेल स्टीमलॉंचमां वेसी आप नदीनो सामी बाजुए आवेलु एक काचतुं कारखातुं जोवा गया; त्यां काचने जापवातुं तथा तेने गाळवातुं काम जोया बाद बी. बी. ॲन्ड, सी, आइ रेल्वे माटे तैयार घतां केटलांक फेनगी फानसो पण आपं जोयां. अने त्यारवाद नदीमां घोडोवार आमतेम सरेक करी, ए बखते नदीना बच्चे किनारा पर नौकातुं निर्माण करवानां अने वीजां पण असंख्य कार्यालयो दृष्टिगोचर घतां हतां. रात्रीए आपं "लेटी स्लेबी" नामनो खेल जोयो. एवन्दर एनी रचना सारी हती.

ता. १६ मीए आप न्युकेसल छोडी एडीन्बरो पथार्या, अने त्यां क्लेरंडन हॉ टेलमां रहे-टाण राख्युं, वरसादने लीधे वयांइ वाहर निकली शकाय तेम न त्तुं, जेथी होटेले मळवा आवेल बुमारश्री भावसिंहजीनी साथे केटलोक वखत वार्ताविनोदमां वितावी रात्रीए "मेकसीमेन" जोवा पथार्या.

ता. १७ मीए हु मावसिंहजीनी साथे केस छे जई आप मेरी राणीनो मुगट अने स्टेट गीझन जोयां. बहेरनो देखाव त्यांथी सारी रीते जोई शकाय तेम हतुं, परंतु धूमसवाळों दिवस होवाने कीधे ते संतोषकारक रीते जोवानुं बनी शक्युं निहः, त्यांथी आप न्यु युनीवसीटीए प्रायीः, तथा मधुझीअम हॉल के ने घणोज सुन्दर अने उत्तम मकारे शृंगारवामां आव्यो छे तेमां अनेक हाटापंजर तथा खोपरीओनुं अवलोकन करी फोर्थजीज जोवा गया, तेनी छंवाइ ८२९६ फीट, उंचाइ १५४ फीट, अने गाळो १७०० फीट छे. ए खास दर्शनीय पूलनो वधो भाग आप म्हीम लॉबमां फरी फरीने जोयो अने रात्रीए रॉयल थीएटरे जड " होन करीओ " नामनो आनंदवायक मयोग निहाळ्यो.

ता- १८ मीए आप आर्थर्स सीटे प्यार्था, टेक्सी आशरे १००० फीट उंची छे, त्यांथी शहर अने कॅसळनो देखाव घणोज मनोहर माळ्म पहे छे. जे महेळमां मॅरी क्वीन ऑफ स्कॉटस रहेतां हतां, ए हॉळीरुह पॅळेस पासेथी पसार थड मुकामे आव्या बाद ऑप सरसामान पॅक करावी एढीन्वरोथी ग्ळासगो तरफ प्रयाण कर्युं. अने त्यां पहोंच्या बाद संन्द्रळ स्टेशन-होटेळे रहेवानुं राख्युं. ग्लासगो स्टेशने सीटी चेम्बरलेननुं आपने विलन थयुं हतुं.

ता. १९ मीए आप सीटीचेम्बरक्केननी साथे पेम त जोन ग्रे अंग्ड को० नी मोठाइ नी दुकानो जोवा पथार्या, त्यां संकडो जातनी मीठाइओ जत्या मंत्र जोवामा आवती इती. त्यांथी टेम्य- कटननी कंपनीनी शेतरंजीओतुं कार्याक्रय जोवा जतां त्यां थतुं दरेक काम आपने वहुज गुचवण भरेखुं जणायुं. शेतरंजीना केटळाक श्रेष्ठ नमूनाओ निहाळी आप सीटी चेम्बरे पथार्या. अने त्यां छॉड शोवोस्ट गाममां न होवायी मेजीस्ट्रेटने मळ्या. तेणे आपनी अत्यंत आगतास्वागना करी अने ए आखुं मकान के जे घणुंज मनोहर छे ते वताच्युं. ए पछी आप मेसस जोन एन्ड एम्, पी, वेळनी कंपनीनां श्रेष्ठ माटीकामना कार्याळयो जोया बाद केळीरसीड दुं इंट बनाववातुं कार्याळय जोवा गया. त्यां दश कळाकमां आशरे ११००० इंटो तैयार करवामां आवे छे. छेबटे कोरपोरेशनना ग्यासना कारखानामांतुं डोशममॅस कारखातुं जोइ आपे सांजनो समय शान्तियुक्त विश्वान्तिमां व्यतीत कर्यो.

ता. २० मीए सर जॉन म्युर वॅरोनेटनी साथे आप डें।न जना रचाना थया. ए गृहस्य थोडां वर्ष उपर ग्लासगोना लॉर्ड मोबोस्ट हता, हिन्दुस्तान अने सिलोनना जुडा जुदा भागमां तेमनां अनेक चानां क्षेत्रे। छे, घणीवार हिन्दुस्तानमां आवेला ए महाराये आपने ए सर्वधी खनर अन्तर घणीज वारीकीथी पूळ्या; एना संतेषिकारक जनान आपी थोडीवार क्रोके रम्या वाद आप लेडी मीयुरनी साथे गाडीमां फरना पथार्या, एमना गृहनी आसपासनो मदेश अत्यंत रिल्यामणो छे. ग्वास लेडीनो वगीचो पण वहु सुन्दर छे. सांज प्रजीनो समय आपे निनित्र मकारनो रमत गमतमां निताल्यो.

ता. २१ मीए गाडीमां वेसो आसपासनी मनोहर अने कुद्रती देखाव जीता जीता लॉक अने एक्री पासे यह आप ट्रोसेक्स पधार्या. ट्रोसेक्स होटेलथी लगभग एक माइल दूर लॉक केट्रीन नामनुं सरोवर छे, त्यां जह आंपें आल्वनना टापुनो अने टेकरीओ वच्चे विराजो रहेलां सरोवरोना अद्गुत देखाव अवरेख्यो. केटलाक स्रष्टि सौन्दर्यना कुटरती देखावो वचे थइ पाछा फरतां माकीनो वखत एक वगीचानी अंदर वनमाळीनी रमणीय रचनाओने विलोकवामां विताव्यो.

ता. २२ मीए लेडी नियुर तथा तेना पुत्रोनी छेली मुलाकात लड़ आप विंडरिमयर तरफ विटाय थया. सर जोन म्युर ग्लासगो सुधी आपनी साथे इता. ए मायाळ गृहस्थे आपनुं इत्तम प्रकारे मान जालन्युं इतुं तथा ढरेक रीते संभाल लीधी इती. विंडरिमयर पहोंच्या वाद वेल्सफील्ड होटेलमां मुकाम राखी आप चालर्थने तलाव उपर मछवानी स्टेल करवा पथार्था. ए वखते आसपासनो अत्युत्तम देखाव आपना अन्तःकरणनुं चुंवक पेठे आकर्षण करी रह्यो इतो.

ता. २३ मीए केनीस्टन तरफ फरवा जतां आपतुं हृदय आनंदथी वहुज प्रफुलित वन्युं, प्रथम प्राडीथी आच्छादिन थएटा प्ररा पासे थई आप पर्वतपर चढ्या अने पछीथी तळावपर जड लांचमां खूव रहेल करी: त्यांथी पाछा फरतां दृष्टिगोचर थतो छिछसेन्द्रयेना देखाव कांइ अजवज हतो.

ता. २४ मीए आप विन्डरमीयरथी लंडन पथार्या अने त्यां वेस्टमीनीस्टर पेलेस हॉटेलमां हतर्या. जुन अने जुलाइ करतां ऑगस्टना छेल्ला दिवसोमां लंडननो देखाव तद्दन जुदोज जणातो हतो. ते दहाडे वेब्रीजथी आवेलां मीसीस हेन्काकनी साथे आपें "डेन्डी फीफ्थ" नामनो खेल जोयो.

सामान्य उद्योगणील पुरुषो वहु लांवे समये जे स्थलो जोइ शके ए स्थलोतुं मात्र पोणा प्रण मासना सनत उद्योगथी परिपूर्ण अवलोकन करी ता. २५ ऑगस्टथी ता. २९ सप्टेम्बर सूथीना १६ दहाडाओ आपे वेद्यीज, रेटेडन, माउथबुड, गील्फर्ड तथा सेफर्टन वगेरे स्थले रहेला जुना तथा नवा रनेहीओने हळ्या मळवामा. वर्जीनीया वॉटर तथा धिन्डसरपार्क वगेरे विनोदेदायक रखे रखे परवा परवामां: ऑवेल उपर सरे अने वोरिकशायर वच्चे थतो क्रीकेट मॅच जोवामां, सेन्डा- एन नामने स्थले थती केटलीएक गरनोतुं अवलोकन करवामां, वी नदी उपर मुखडायक मळवानी सहेलगाहमा, व्हार्चींग नामने स्थले घोटागाडीने लगता केटलाक सरसामानी खरीडीमां, वाट-प्रलीट नामने रखे उत्तरेरी भेळा करवामा, कीव्यक्तरेर नामने मुकामे विविध पकारनी रमत गमनमां. एवटीड नामने स्थले धण्ली भी. फीट्यरल्डनी गार्डनपार्टीनी अंटर भाग लेवामां, हिदुस्थानथी नाजेतर आवेला राजकोट राजकुनार कॉल्जना भीन्सीपाल मी. वेटिएटन साहेव साथेना विविध गर्जादिनोडना. भिन्न भिन्न वेप फोटाओं पटाववामां. आनंदजनक नेमज वोथडायक नाच्यवयोगो

42 NC

जोनामां, ज्ञानमां दृद्धि करनारां अने उत्तम क्रेखकोने हाथे क्रखाएलां पुस्तको नांचनामां, तेमज रॉयल एक्वोरीयम नामने स्थेले ज्यां राक्षसी कुटुंन के जेमांना एक मुं वजन ३६ स्टोन जेटलुं हतुं ते जोनामां, तथा जनाहिर अने वीजी केटलीक जोड़ती चीज वस्तुओ खरीदनामां नितानी ता. ३० मी सप्टेम्बरे हिंदुस्थाननी छेल्ली ट्याल करवी. त्यारनाद सरदारसिंह आपने मलना आच्या, तेनी साथे स्हेज नातचीत करी आप इन्दिया ऑफीसे पन्नार्या. बपोर पली वर्कीगहाम पेक्लेसना तवेला जोना जतां नादशाही गादीओ, केटलाक कदानर अथने तथा तेनो सरसामान आपने घणोज सुंदर जणायो. रात्रीए आपें "कीटल मीनीस्टर" नामनो खेल जोयो, एनी रचना साधारण हती.

ता. १ अक्टोम्बरे पारीस जवा माटे आप चेरींगक्रासथी रवाना थया. स्टेशनपर आपने विदायगीरीतुं मान आपवा माटे कर्नल हेनकाॅक, मीसीझ हेनकाॅक, कुमारश्री जेटीजी, सरदारास-हजी तथा मी. डाह्याभाइ वगेरे आव्या हता. खाढीमां रहेज तोफान जेवुं इतुं, सांजना पारीस पहोंची आपे "होटेल डीलाइळ ऍट द्याल वीसन" नामनी होटेलमां निवास कर्यों.

ता. २ जीए पारीसनी मुख्य मुख्य गलीओ, खास जोवा लायक नेपोलीअननी कवर तथा तेनी आसपास आग्सना पत्थरथी वांधेल समग्र स्थळ, एक इजार फीटनी डंचाइ धरावतुं इफळटावर के जेने मथाळे लीफ्ट वहे चढी आखा शहरनो सुंदर देखाव जोइ शकाय छे ते ए टावरनी आसपास इ. स. १९०० मां थनारां प्रदर्शन अर्थे आरभेलुं काम, नेपोलीअन अने रीपक्ली-कन्होनी घणीज रमजीय कवरो, नॉटरहाम केथेड्ल, तेरमा सैकामा बंधाएलुं सेइन्ट चॅपल, बोइदी बुळोनमां थइ आगळ जतां आमपासना मनोहर हक्षत्मुटायथी बींटाएलो अने जभय, महान सरो-वरे सेवन करातो एक सुंदर वगीचो वगेरे आमंददायक स्थळोनु अवलोकन कर्या वाद आप फोरी-अस दी वरंगरीझ नामने स्थळे पधार्या, त्यां वीजो घणी वावतोमां अद्युत चातुर्य धरावनारा उभय खेलादीओ साइकलपर अत्यंत अजायवी उपजाने एवा अस्ततराओ करता हता. पारीसना विशास अने रमणीय रस्ताओ सायकलनी सफर माटे खास मशंसापात्र छे, रात्रीए त्या पुष्कळ विचुदीपक करवामां आवे छे अने तेथी तेनो देखाव स्वर्ग समान सौन्दर्यने धारण करे छे.

ता. ३-१०-९८ ए पारीसना परम शोभास्पद प्रसिद्ध मार्गनी वन्ने वाजुए विराजी रहेली स्वच्छ अने सफेद मकानोनी पंक्तिनुं प्रेमथी अवलोकन करतां करतां आपें केटलीक खरी तेमन नकटी झंदेरात पण नोइ, तेमांनुं अमुक नवाहिर अत्यन्त तेनोमय हतुं. लंडनना जेटलो धूम्र पारीसमां निह होवाधी त्यांना मकानो कदी पण कालाशने धारण करतां नथी. एनो देखाव सदंव स्वच्छ अने सुशोभित मालूम पडे छे. छेवटे आप जाटींनोद एकलीमेटेनयन नामनुं स्थळ जोवा पधायी, केटलाएक सुंदर क्याराओ अने निरंतर लीला गखवामां आवता छोडोनुं संग्रह-स्थान छे अने त्या केटलांक माणीओने पण एकत्र करेलां छे. ए सर्व जोया वाद आपें मुंवइ तरफ प्रयाण कर्यु.

आप नामदारनी मुसाफरी दरमीयान वांकानेरमां राव वहादुर मोतीचंदभाइ मात्र सात मास स्टेट कारभारी तरीके काम करी सने १८९८ ना सप्टेम्बरमां जता रहा, जेथी तेनो चार्ज संभाळवा महुधाना रहीश हेप्युटी कारभारी भाइशंकर उदेरामने एजन्सी तरफथी हुकम थयो अने एणे सात मास सूत्री कारभार कर्यों ए अरसामां यूरोपनी अंदर लंडन तथा पेरीस वंगरेनुं घणा उत्साहधी अवलोकन करी, इंग्लंडना दीजा केटलाएक भागमां फरी घणो जाणवा योग्य अनुभव मेळवी ता. ११-१०-१८९८ आश्विन वदी ७ ने शनिना रोज आप नामदारतुं वांकानेर आवाग्यम थतां स्टेशन पर राजकुटंब तरफथी तेमन रैयत तरफथी अत्यंत भभकादार सामेयुं करवामां आग्युं हतुं अने वजार तथा राजमहेल वंगरेने ध्वजा पताका तथा रोशनी वंगरेथी शणगारवामां आव्यां हतां. ए दिवस दिवाळीना दिवस करतां पण विशेष महत्तावाळो देखातो हतो. उक्त खु-र्ज शालीमां भाग लेवा माटे आप नामदारनी साधेज शायपुराना महाराजा साहेवश्री नाहरसिंहजी पण पथार्यो हता.



[ ७०५ ]



## त्रिविंशत् तरंग.

+500

॥ छुत्वय <sup>भ</sup>

लायक वये लगाम, राज्यनी करमां लीघी; विधविध देशे विचरी, बुद्धिने सदेज कीघी; न्याययुक्त नथुराम, प्रजाजनने पालोछो, करी राज्य आबाद, नेहद्रगथी न्यालोछो; करी राज्य आबाद, नेहद्रगथी न्यालोछो; यौवन धन सत्ता छतां, चातुर्धथी न थया चितित, सम्राटे पद समरप्युं, के. सी. आइ, इ नुं कलित.

विलायतनी मुसाफरीएथी पधार्या वाद पांचेक पास आप केटलोएक राजकीय अनुभव केल्ल्यो, त्यारवाद "उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपेति लक्ष्मीः " ए नियमानुसार तुरतमांज नामदार गवर्नमेन्ट तरफथी काल्यावादना में पोलीटीकल एक्टर कर्नल जे. एम् इन्टर साहेवे वांकानेर पधारी ता. १८-३-१८९९ ना रोज दरवा(गढ़नी अंदर म्होटो दरवार भरी आपश्रीने वांकानेर पधारी ता. १८-३-१८९९ ना रोज दरवा(गढ़नी अंदर महोटो दरवार भरी आपश्रीने वांकानेर स्वतंत्र सत्ता सोंपी; अने में पान्त साहेव कारनेजीए हेप्युटी कार्यभारी भाइरांकर उदेराम राज्यनी स्वतंत्र सत्ता सोंपी; अने में पान्त साहेव कारनेजीए वेचावी में पोलीटीकल एजन्ट पासेनो चार्ज अर्थात् सीलक वंगरेनो हिसाब तेम राज्यकोपनी चावी में पोलीटीकल एजन्ट पासेनो समक्ष आप नामदारने सोंपी आपी. ए महोत्सवमां श्रीपान् गोंहल ठाकोर साहेव श्री साहेवनी समक्ष आप नामदारने सोंपी आपी. ए महोत्सवमां श्रीपान् गोंहल ठाकोर साहेव श्री साहेवनी समक्ष आप नामदार गर्वनं साहेवे वांची संभळात्या वाद आप एक लटादार भाषण मेन्टनो खलीतो में पोलीटीकल एजन्ट साहेवे वांची संभळात्या वाद आप एक लटादार भाषण भन्दनो खलीतो में पोलीटीकल एजन्ट साहेवे वांची संभळात्या वाद आप एक लटादार भाषण अपयी तल्तनशीन थया, ते वखते तोपोना वहार करवामां आव्या हता. त्यारवाद रजवाडाओ

आदि तरफ्यी आवेटो पोशाक स्त्रीकारवामां आच्यो हतो. ए आनंदमय दिवसे सांजना मोरवी ठाकोर साहेव श्री वार्यासहजी पण खुश्वाटीमां भाग छेत्रा वांकानेर पथार्या हता. राजकुढंवमां अने प्रजा वर्गमां परम आनंद पसरी रह्यो हतो. समग्र शहेरने रंगवेरंगी ध्यजा पताका तथा रोशानी आदिथी उत्तम प्रकारे शणगारवामां आच्युं हतुं.

आपश्रीना ए मांगलिक स्वतंत्र राज्याभिषेक महोत्सव प्रसंगे म्हारा तरफथी निम्निलिखित किवताओं निवेदन करवामां आवी हती.

॥ दोहा. ॥

वाहन जाहि विहंगको, त्रिकचा कर धर गुद्ध; वाम भागमें सालपा, सो देहें शुभ बुद्ध ॥ १ ॥

॥ कवित्तः ॥

परस आनंद भरी आज घरि पाई प्यारी, चाह भरे चखन रहेथे जिन चाय चाय ॥ किव नथुराम गुनग्राम गिनवेंके लिये, रसभरी रसना रहीथी ललचाय जाय ॥ यंत्र परतंत्रताको तूट्यो देख दोरत है, सो मन सजूर उर पूर्न हर्ष पाय पाय ॥ असर नृपालकों स्वतंत्र अवरेखि आज, मोहमंत्र वेसें मुद्दमस्त करे आय आय ॥ २ ॥

॥ सबैया ॥

दिव्य वनाय अदिव्यनकों, अनुठी छिवसों छिक छाजती है; मानुषके यह देवी दिखा, मुदसों नथुराम निवाजती है; श्रीअमरेश सुरेशहुके, गहरे गुनगानसों गाजती है; शक्रपुरीकी समस्त प्रभा, ग्रही वक्रपुरी सुविराजती है ॥ ३ ॥

अमर नृपाल पावे राज्य अधिकार पूर्न, वंकपुरी यातें भइ विविध विलासिनी ॥ किव निष्ठुराम धाम धामपें ध्वजा पताके, रोज्ञानी रसीली प्रभा परम प्रकाशिनी ॥ रंगित रँगोलीसें उमंगित अनंत द्वार, मंगल उचारे नार हृदय हुलासिनी ॥ दीपत तमाम ठाम ठासमें दिवाली दिव्य, निमक हरामानके धाममें हुताज्ञानी ॥ ४ ॥ ॥ सवैया ॥

गाजतीं घोर मृदंगनसों, सुग्रलाल घटा छहरीपुर छावत; आब ग्रलाबहुको अधिको, नथुराम मुदाम छटा भिर स्नावत; गायकिझिछि कविबरहीगन, मस्त वनी हियरे हरखावत; श्रीअमरेश स्वतंत्र भये, हम आज बसंतमें पावस पावत ॥ ५॥ ॥ कवित॥

> दूर दुःखपाद्याका कसाला करि पाय सुख, भयकी रजाई भारी फारी न्यारी किर है।। अमर नृपाल ऋतुराजको प्रताप पेखि, मंगल महान नथुराम घर घर है।।

कंपझंप सीकरन दंतध्विन डारी दूर, अनल अंगीठीकों अधमहिय धर है।। भूप भक्त संत सब बिहरे बसंत पाय, राजद्रोही राक्षसके सदन शिशिर है॥ ६॥

॥ सबैया ॥

देत प्रजाजनपंकजके गन, फूलिसुआशिष सोरभहीको; कूजि उठे किवकोकनके गन, लोक प्रसिद्ध किवत्त सुनीको; अंवक तेज भयो सब अस्त, समस्त अधर्मी उलूकअरिको; पूर्न प्रकाश भयो पुरमें, नथुराम लिख अमरेश रिवकों ॥ ७ ॥

वोिल उठे विरद सुकविन कलापी युत्थ, पाय श्रुति सवद विलाय भय साल आज ॥ कवि नथुराम दुःख धूलिमें दवेथे जिन,

भृत्य भेक सजीवभे छाइ सुखजाल आज ॥
तृषित तमाम थेजु आश्रित अनंत तरु,
जीवनद देखभये अमित निहाल आज ॥
व्याकुल प्रजाजन पपीहनको प्रानदान,

घारिस अमीको चट्ट्यो अमर नृपाल आज ॥ ८॥

॥ सर्वया ॥

प्रेमी प्रजागन पूर्न प्रकाशत, रंगवेंरंगी पुहुपन प्यारे; त्यों नथुराम नकीव मयूरन, मारत हाक हिये मुद धारे; गायक भोंरन बंदि सुकोकिल, वेहद विर्दकी वानी उचारे; श्रीअमरेश नरेश अलेकिक आज वने ऋतुराज हमारे ॥ ९ ॥

॥ कवित ॥

अमर नरेशको स्वतंत्र अधिकार आज़, भरे सुख भोंन लखि शुद्ध भक्त स्वामिके ॥ कवि नथुराम मुख मीठे दिल द्वेप भरे, वाके शिर साही भरे वोज वदनामीके ॥ धीर भरे धर्मीकों अधर्मीकों अधीर भरे, तीर भरे तनमें विविध जन वामीके ॥ हरष हुलास भूरि हितुके अवास भरे, भय अपशोस हिये निमकहरामीके ॥ १०॥

॥ सबैया ॥

तुःख दाद अरु फरियादहुको, अपवाद नहीं उर आवतेहै; नथुराम निहायत नेह छ्यो, मुख क्केश न लेश दिखावत है; भय भ्रष्टकों कष्ट है नष्ट सबे, सुख श्रेष्ठ सदा मुद छावत है; अमरेशजुको अधिकार अर्वे, जनके हियरे हरखावन है।। ११॥

॥ कविन ॥

अमर नरेशके प्रताप रिवको प्रकाश, अधम तिमिर तुंग तोर करे तिनके ॥ किव नयुराम खोज खोज खल तारनको, छिनि लेत छिनक प्रकाश गिन गिनके ॥ चुगल लवार चोरहूको जोर जार कर, करत कुहाल जा कलंकी कलाहींनके ॥ नीच निशिचरके नयन तमकीच डार, दीननकों दर्शन करात सुख दिनके ॥ १२ ॥

॥ सबैया ॥

वस्त बुलंद नरेन्द्र तुम्हे, वडवस्त ये तस्त विराजे रहो;
नथुराम प्रजाजन पालनके, उर स्थालन सुंदर साजे रहो;
अमोश अपार करी सुकृति, धारे धर्म धृति छिति छाजे रहो;
तुम गाजे रहो शठ लाजे रहो, प्रतिदिन अरिको पराजे रहो॥१३॥
॥ कवित ॥

दीननकों दान सनमान सव संतनकों,
पारितोष पंडितके भोंन भरते रहो ॥
नित्य नथुरास किव कोविदके काव्य सुनि,
अर्षि महादान अप्ट कप्ट हरते रहो ॥
श्रेष्टनको संग अंग अंग राग रंग राखि,
नेप्टनकों नित्य धरापार धरते रहो ॥
अमर नरेश है हमेंश हमरी अशिप,
कोटि जुग ऐसें राज काज करते रहो ॥ १४ ॥

।। सर्वेया ॥

तत्य अतत्य निवेरनके, हरवार विचार विचारे रहो, सुनि वात धरी द्रगके मगमें, फिर काज करी यहा धारे रहो;

नथुराम सुपात्र कुपात्रनकी, अरजी मरजींपर डारे रहो; अमरेश दिनेशकी न्हांई तुम्हे, बहुकाल प्रताप प्रसारे रहो ॥ १५॥॥॥ ॥ कवित ॥

दाननमें दुगुन विचारे विन रात दिन,
पानन पिनत्र प्रभा धरन पचे रहों ॥
किन नथुराम गानतान किनतान विच,
कानन तुम्हारे भर मानन मचे रहो ॥
धर्म मग धाननमें गोद्विज उधारनमें,
पानन सदैन शूर सुभग सचे रहो ॥
सत्यासत्य देखबेमें और प्रभु पेखनेमें,
अमर तुम्हारे सदा नयन नचे रहो ॥ १६॥

॥ सबैया ॥

छांयमें भूप हुमायुको रूप, धरो विच संगर सिंहकी देहु; टेकमें चातक बेर अहि, नथुराम निभावन सारस नेहु; पान गद्यो तजवे विच हारल, न्यायमें हंस बनो गुनगेंहु; यों अमरेश धरी बहु रूप, जीवो जुग कोटि है आशिष एहुँ॥ १७॥॥ कवित ॥

> पारथ पराक्रममें भारतमें भीम भट, भीष्म प्रन पालिबेमें कृष्ण शरणागतको।। धीरजमें धर्म शर्म कर्ममें सुभगराम, कवि नथुराम द्विजराम रोद्र रतको॥

ग्यानमें जनक कुलमानमें प्रताप भूप, दानमें करन हरिश्चंद्र सत्यवृतको ॥ यों अनेक रूपधर टेकभर राजो राज, ताज अमरेश वनि नौतम नृपनको ॥ १८॥

#### ॥ सबैया ॥

शीशिषें ताज प्रभाको समाज, दराज सु पान कृपान रहे; तख्तपें पाव सदा नरनाव, छयो जस बीच जहान रहे; नेह भरी नथुराम कहें, सु रमा बिस नित्य निधान रहे; श्रीअमरेश सदा तुम्हरे, गुनिके गनमें गुनगान रहे; ॥१९॥

## ॥ कवित्त ॥

असर नरेश देश देशमें सुवेश तेरे सुयश हमेश छिन छिनमें छके रहे।। किव नयुराम पारावार पार पेख अरि, प्रवल प्रताप थल थलमें थके रहे।। विद्या वल विविध विलास वाकचातुरीके, परम प्रकाश ग्रिन जवर जके रहे, आशिष हमारी झलरान है महान तेरे, विजय वितान धरातलकों ढके रहे॥ २०॥

# ॥ दोहा ॥

उन्निस पचवन फालगुन, सित सप्तमी ज्ञानिवार; पाये जस दिन अमरनृष, रसिक राज्य अधिकार ॥ २१ ॥ ..... De.....

ए रीते तख्तनशीन थया वाद आप नामदारे स्टेटना कारभारी तरीके नडीआदना रहीश रा. वा. नाथाभाइ अविचळदास देसाइ एल. सी. के जे भरुवना मे. क्लेक्टरसाहेबना चीटनीस-नी जगोए इता तेओने पसंद करी एजन्हीमां नाम आप्युं, अने नामदार गर्वनभेन्ट तरफथी मंजुरी मळतां उक्त महाशयने आपे वांकानेर वोलाव्या. एमणे ता. १–५–१८९९ ना रोज डे०कारभारी भाइशंकर उदेशम पासेथी सघळो चार्ज संभाळी लोघो,त्यारवाद तुरतमान अर्थात् वि—सं १९५५ ता. २२–५–१८९९ ना दहाडे राजकोटना टाकोरशी वावाजीराजना कुंवरी श्रीमती देवकुंवरवा साथे हथेवाळे परणवातुं सुहूर्त होवाथी आप सुख्य कारभारी श्रीयुत् नायाभाड अभिचलदास देशाड आदि आशरे ६०० माणसना रिसालाधी स्पेशीअल ट्रेनमां राजकोट प्रायी. ए लग्न उत्तम पका-रनी धामधमथी करवामां आव्या हतां.

वि—सं. १९५६ नो अयंकर दुष्काळ प्राप्त थता आप नामदार राज्यना तमाम खेडूतोने तथा आश्रितोने परदेशथी वळदो, गायो, घास तथा अनाज वेगरे मंगावी आपी निभाज्या अने गरीव गरवांओ माटे अनाथग्रह खोळी महान आशीर्वाद मेळव्यो. वळी मजुर वर्गने निभाज्या माटे वहसरमां जसवंतसर टेंक तथा मेसरीआमां मेसरीआ टेंक वंशाववानुं काम शरु कर्युः खूणसर, रातहीआ, चित्राखहा अने गारीहाना तळावोनुं तथा पांच दुवारकानी केनाळनुं समारकाम करा-च्युंः तळपद वांकानेरणं अमरविळास राज्यबहेळे जवा आववानी सह तो, तेमज गामनो तथा गाम बाहेरनी सहको पहोळी कराववानो मारंभ कर्यों अने गामहांओनी आवादी माटे दरेक स्थळे कु-वाओ गळाववा मांड्या. ए कामोमां एकन्दर रुपिआ त्रण चार ळाखनुं जवरुं खर्च खेड्युं हुतुं. ता. २२-२-१९०० ना रोज हेप्युटी कारभारी तरीके राजकोटना रहीश श्रीयुत् हरजीवन भवान कोटकनी निमनोक करी. एज वर्षमां श्रावणवदी १४ ता. २३-८-१९०० ना रोज शायपुरावाळां राणी-जीए महाराज कुमारश्री हरपाळसिंहनीने जन्य आप्यो. ए मांगळिक दिवसे आप नामदारे म्होटो दरवार भरी केटळाक केदीओने मुक्त कराव्या अने मिष्टान्न जमाहयुं, प्रजाए अनहद खुशाळी व-तावी अने किंव लोकोए अपपने तथा महाराज कुमारश्रीने आशीर्वाद आपी सारां इनामो मेळव्यां. ए प्रसंगे म्हारा तरफथी निम्नलिखित किवताओ निवेदन करवामां आवी हती.

॥ किवत ॥ मुद धन धामको सु मुद गज ग्रामको सु, अमित अरामको सु मुद सुखमाहहै ॥ कित तथुरास त्यों अतुप इलकावको सु, जयको जहान विच जवर उछाह है ॥ राज धरिवेको ग्रुभ काज करिवेको यह, सरव प्रसोदको सु जगत सराहेहे ॥ हिय हरखावन उपावन सु आस खास, पुत्ररत्न पानको प्रसोद पतज्ञाह है ॥ १ ॥ ॥ दोहा. ॥

प्रथमाश्रम विद्या सुफझ, तृतीय चतुर्थे त्याग; द्वितीयाश्रम फठ देव दे, पुत्रजन्म अनुराग ॥ २ ॥ आत्मा आत्मज होत है, वात कहत यह वेद; निज स्वरूप प्रागट्य लखि, क्यों न जामे भवखेद ॥ ३ ॥

॥ सबैया ॥

छावनो सोद सवे कुछसें, हिय पूर्वजकेसु प्रमोद वढावनो, ध्वांत हठादनो है गृहदींपक, त्यों नयुराम अरितनतावनो; रावनो संगलके रवको, हरवष्त हितुके हिये हरखावनो; सावनो सव्य उपावनो आनंद, देवकों दुर्लभ पुत्रको पावनो ॥४॥

॥ दोहा ॥

पुत्रजन्मको हर्ष हिय, सबकों होत समान; पर प्रगटत नृष्पुत्रमुद, अधिक अधिकतर मान ॥ ६ ॥ सरव प्रजाकों सुखद्रिय, रच्छक धरम सुराह; विश्नुअंदा अवतार यह, नामधारी नरनाह ॥ ६ ॥

## ॥ सबैया ॥

राजको होतहै जन्म जवें, सुरलोकमें वाजे वधाइके वाजे; पितृको लोक पवित्र तवें, नयुराम निहायत नेह निवाजे; ब्रह्मको लोक अशोक वने, दिये आशिरवाद उदंड अवाजे; मानुष लोकहुमें महिपालकें, जन्मतें क्यों नहि आनंद छाजे॥७॥

॥ दोहा ॥

तीन जातिके करम सव, निर्भय होत निदान; धन्य जन्म धरनीपति, जसतें भरत जहान ॥ ८ ॥

आज हमारो हृदय, अपूरवसो हुलस्यो है; शक्रपुरीको स्नेह, बक्रपुर वीच वस्यो है; अमर लोक आनंद, धरातल आई धस्यो है; कठिन कलह कुल सहित, नीचभय पाइ नश्यो है; नथुराम ग्राम घर घर प्रति, ललित वाच वाजत नये; महाराज अमरेश गृह, कलित कुमार प्रगट भये ॥९॥

॥ कवित्तः ॥

परम पवित्रताको चित्र मित्र वंश मित्र, अमर अवास अगटत, दुःख दालिगो ॥ कवि नथुराम ठाम ठाम पुरवासिनके, बेहद हृदय गेह नेहनद छलिगो ॥ आनँद अछेहको सु मेह बरखन लाग्यो, शान्तिको प्रवाह सुख सरितामें मिलिगो ॥ काले गो उठाय कष्ट दानके दिमागनसों, अरि चित्त चलिगो हरामी हिय हिझिगो ॥१०॥

॥ सर्वेषा ॥

श्रीअमरेशजुके युवराजको जन्म सुनी जन मंगल गावत; मंगल साज सजी सवहीं, नयुराम सुमंगल वाद्य वजावत; मंगल खान रु मंगल पान, जहान सुमंगल रूप जतावत; मंगल रावत मंगल छावत, मंगल मोदकी धूम मचावत ॥११॥

॥ कवित्त ॥

नृप अमरेश गृह आज युवराज जन्म,
पेखि वहे परम हुलास मन जनके ॥
कवि नथुराम दे आशीश ग्रामदेव सव,
हिय न समात है प्रमोद पितृगनके ॥
शक्ति भल भक्तको कुटुम्व वहतो विलोकि,
रच्छन करती है पिवत्र पुत्रतनके ॥
भानु निज वंस अवतंसको जनम जान,
हारे वक्रपुरपे किरन सुवरनके ॥ १२ ॥

।। छप्पन ॥

विप्रशृन्द पढि वेद, छन्द आशीश जचारे; गुनिगन गायन गात, सप्तसुर भेद सवारे; कित कीर्तिकी काव्य. लित वन्दी ललकारे; परम प्यारसों प्रजा. गरवार हि वलिहारे: अमरेश धास युवराज भो, सकल जीव आनँद सने; नयुरास शुद्ध चितसों सदा, भव्य अमित आशिप भने ॥१३॥ ॥ दोहा ॥

शुभ दिन शुभ तिथि शुभ घडि, शुभ नक्षत्र सुयोग; याद देत युवराजको, जन्म पराक्रम जोग ॥ १४ ॥

॥ कवित्त ॥

वीरतामें धीरतामें अमित उदारतामें,
प्यारमें प्रवीनतामें बुद्धिमें विसालसो ॥
किव नथुराम त्यों प्रलंब तकदीरतामें,
असल अमीरतामें शत्रुहिय सालसो ॥
अमर नृपालको अमर युवराज आज,
क्षित्रिकुत काजमें दराज हरिवालसो ॥
दानमें जहानमें उदंडता प्रचंडतामें,
हिम्मतमें किम्मतमें ह्वेगो हरपालसो ॥ १५॥
॥ सबैया॥

आप प्रताप अमाप प्रसार, हिये अरिके परिताप करेगो; त्यों नथुराम पराक्रमसो, वसुधा बहुमांति मिलाइ धरेगो; श्रीअमरेशजुको युवराज, दराज जहानहुमें जस बेगो; दानमें मानमें युद्धके तानमें, राण सचो सुलतानसो हेंगो ॥१६॥॥ अवित्त॥

असर सुवन हेगो मानमें सु मानकेसो, टेकमें महान रायसिंह महिपतसो ॥ किन तथुराम चारुतामें चन्द्रके समान, प्रवल प्रचंड प्रथिराज नरपतसो ॥ हिगो कमनीय क्षात्र कर्महुमें केसरीसो, भव्य देगतेगमें सु भारा सुविपत सो ॥ डोसा सो उदंड वडवखत वखत केसो. जग जसधारी वेगि हेगो जसवतसो ॥ १७॥

॥ सबैया ॥

यज्ञ रु याग अनंत करी, वडसाग सुवित्र असीसन लेगो त्यों नथुरास सुदीरघकाल, तमाम प्रजाप्रतिपालक ह्वेगो; कोस कुवेर समान भरी, घरी रोस अरिदलकों दुःख देगो; वक्षपुरी युवराज वडी, वसुधा कविलोकनकों वकसेगो; ॥ १८॥

> परम प्रेम आनंद, विभव विथविधके पाओ; अप्टालिद्धि नवनिधि, रासिक छितितलमें छाओ; वानि अनाथके नाथ, दान दरियाव वहावो; वारी संतनकी स्हाय, चित्त चतुरनको च्हाओ; कुशल विशाल कुटुम्बमें, शतकतुके सम सुख लहो; वाबि नधुराम असीसदे, अमर अमरसुत अमर हो ॥१९॥

वि. स. १९५७ ता ६-१ -१९०० ना रोज कठकताना वापसरोय ळॉर्ड कर्झने राजकोट मुकामे भरेला दरपारमा आ श्रीए हाजरी आपी हती. न्यारवाद नवी जनानामहेल तथा तेने त्याता किल्यानुं काम एक कराव्यु, मिडल म्कूलमा धजाने केळवणीनो विशेष लाभ व्यापना माटे ता. ८-१२-१९०० ना रोज इंग्लीझ छटुं वीरण खोल्युं, ता. १३-१-१९०१ ना रोज कंसरेहिन्द महाराणी दिवहोरीआनो स्वर्गवास थतां त्रण दिवस पर्यन्त ऑफीसो तथा किलाटो दर रायाची, तेनज हण्याद्य आदिशी महान होक प्रदर्शित कर्या. एज वर्षमां

ता. ७-३-१९०१ थी ता. २२-३-१९०१ सूघी मानवंता वामासाहेव श्रीनाय नीनी यात्रा करी हती. वाद अपाढ ग्रुदि ७ ता. ८-७-१९० . ना रोज दैवयों में कुमारश्री हरपाळासेंहजीनो शोकजनक स्वर्गनास थता राजकुटंवमा तेमज मजावर्गमां महान दिळगीरी फेळाइ, जे महाराजकुमारनो थोडा मास पहेळांज जन्म थयो हतो अने जेन माट अनेक उत्तम धाम्णाओं वांधी हती तेना परळोक प्रयाणिथी सहु कोइ स्नेहीओना हृदयमां असहा आधात थयो, ए पछी एक महिने अर्थात् श्रावण ग्रुदी ९ ने गुरुवारे आपनां मोतीसरवाळां मासाहेव श्री माजीराजवा स्वर्गवासी थयां.

वि. सं. १९५८ मां मुंबइना नामदार गर्बनर लॉर्ड नोर्थकोट जी. सी. आइ. इ. ए राजकोट मुकामे पथारी ता. २८-११-१९०१ ना रोज म्होटो दरवार भयों हतो तेमां आप नामदार हाजरी आपी हती, अने तेने बीजेज दिवसे अर्थात् ता. २९ मीए आपना आग्रहथी नामदार गर्बनर साहेब तेमज छेडी नॉर्थकोट साहेबे वांकानेर पथारी अमरविळास राज्यमहेळमां खाणुं छीं हुं हुं, ए खुशाळीना सबवथी स्टेटनी अंदर हॉळीडे पाळवामां आव्यो हतो. एम वर्षमां कळकत्ता तथा मुंबइ खाते खोळवामां आवेळा विक्टोरीआ मेमोरीअळ फंडनी अंदर आप नामदारे सारी रकत भरी साम्राज्य तरफ वफादारी वताबी हती. ता. ९-८-१९०६ ना रोज ळंडनमां नामदार शहेनशाह एडवर्ड ७ नो राज्याभिषेक थता तेओना माननी खातर आप नामदारे निशाळोमां मीठाइ वहेंची अनाथ वाळकोने तेमज केदीओने मिष्टान्न जमाडी तोयोना तथा वन्द्कोना वहार कराव्या अने अमरविळास आदि मुख्य मुख्य स्थळे भभकावंय रोशनी करावी. वळी उक्त राज्याभिषेकनी यादगीरी खातर आखा स्टेटनी अंदर एकन्दर ४१९१ जूदी जूदी जातनां हक्षो ववराव्यां के जेनी शीतळ छायानो आजे अनेक मतुष्यो लाभ लेळे.

वि. सं. १९५९ ना वैशास शुदि १४ ता . ६५-५-१९०३ ना रोज राजकोटबाळां राणीजीश्री देवकुंवरवानो शोकजनक स्वर्गवास थयो अने एथी राजकुटवमां तेमज प्रजावर्गमां महान दिल्लीरी पेदा थइ हती. त्यारवाद वर्ष आखरे वस्तीने केळवणी सवधी वधारे सगवडता मळे एटला माटे स्टेट तरफथी हाइस्कूल स्थापवामां आवी.

वि-सं. १९६० ना कार्तिक ग्रुदि ११ ता. १-११-१९०३ ना रोज स्वर्गस्य राणीश्री दे-वर्क्ववरवाना श्राद्धादि अर्थे आप नामदार मामासाहेव श्री दीपसिंहजी तथा डेप्युटी कारभारी हर-जीवन भवान कोटकने साथे छइ सिद्धपुर, मयुरां, काजी, गयाजी अने डाकोरजी वगेरेनी यात्राए पथार्या. ए वस्तते आप नामदारनो उतारो श्रीमान अयोध्या नरेज्ञ ऑनरेवळ प्रतापनारायणसिंहना

~~~·切(团

मनोहर मकानमां गोठववामां आच्यो हतो, यात्राळुओ काशीनरेशना दर्शन विना यात्राने अपूर्ण सपजे छे अने वनती महेनते तेमना दर्शननो लाभ ले छे, परंतु आपश्रीने तो श्रीमान काशी-नरेहो जोपीजी महाराज सोमनाथजीना मुखयी पशंसा सांमळी रामनगर तेडाच्या अने पोतानुं खास " नारुस " नामनुं जहाज सामे मोकरुयुं. ए सुंदर जहाजनी अंदर विराजमान थइ आप इयारे रागपुरने किनारे उतर्पा त्यारे सैनिकोए तोयोना बहारथी तथा इथिआरो नमाववा आदिथी आपने उचित मान आप्यं. काशीनरेश आपने मळो अत्यंत मसन्न थया अने आप नामदारनी रीटर्न बीझीट छेवा अयोध्या नरेशने उतारे पधार्या. ए समाचार अयोध्या पहींचतांज त्यांना महा-राजाए आपनो पत्रद्वारा अति उपकार मान्यो, अने एवा उदगार काढ्या के आजे काझीनरे-शनां पगलां धवाधी अमारो उतारो पावन थयो छे मकान तैयार थया आनेज आवो उत्तम मसंग नाप्त पतां अमे अमोने भाग्यज्ञाळी समजीए अने त्यांथी ता. ९-१२-१९०३ ना राज राजधानीमा पधार्या वाद नीळ परणावी केटलांएक पुण्यदान कर्या, तेमज तेओना स्मरणार्थे ता. १९-१-१९०४ ना रोज "देवकुंवरवा स्कॉळरशीप" नी म्यापना करी. त्यारपछी तळपदमां तेमज महाळोमां कामनी सगवडना खातर टेळीफोन दाखळ कराच्या अने दरवारगढ़नी अंदर जूनां दफतरो राखवा माटे एक भव्य मकान वंगाव्युं, के जेमां दफतरो रेग्युलर राखवामां आवे छे अने तेनी गोठवण खास आंख खेंचे तेवी छे, ए उपरांत राजकोटना स्वर्गस्थ कुमार कर्णसिंहजीनी यादगीरी माटे आप नामदारे राजकोट राजकुमार षॉलिजमां अभ्यास करता रेलीटेन्सने दर वर्षे कर्णासहजीना नामनी सुज्ञोभित छापवाळा चांद आपवानी शरुआत नरी जे अद्यापि पर्यंत अपाय छे. एज वर्षना आश्विन वदी ३ बुध ता. १६-१०-१९०४ ना रोज शायपुरावाळां राणीजी साहेवश्री गुलावकुंवरवानो स्वर्गवास थतां राज्यमां गरान शोब फेळायो.

उत्ता वर्षना चत्र मासमा आप नामदारे गिरमां पधारी एक महान् सिंहनो शिकार क्यों हतो ते प्रसंगे महें नीचे मुजद वर्षिताओं बनावी हती.

॥ दोहा ॥

ओज भरे अमरेशने, हरे हरिके प्रान, ताकों वरनत है अवें, कवि नथुराम मुजान ॥ १ ॥ ता. ७-३-१९०१ थी ता. २२-३-१९०१ सुधी मानवंता वामासाहेव श्रीनाय जीनी यात्रा करी हती. वाद अपाढ ग्रुदि ७ ता. ८-७-१९० . ना रोज दैवयोगे कुमारश्री हरपाळासंहजीनो शोकजनक स्वर्गनास यता राजकुटुंवमा तेमज मजावर्गमां महान दिलगीरी फेलाइ, ज महाराजकुमारनो थोडा मास पहेलांज जन्म थयो हतो अने जेने माट अनेक उत्तम धारणाओ बांधी हती तेना परलोक प्रयाण्यी सहु कोइ स्नेहीओना हृदयमां असहा आद्यात थयो, ए पछी एक महिने अर्थात् श्रावण ग्रुदी ९ ने गुरुवारे आपना मोतीसरवाळां मासाहेव श्री माजीराजवा स्वर्गवासी थयां.

वि. सं. १९५८ मां मुंबइना नामदार गर्बनर लॉर्ड नोर्धकोट जी. सी. आइ. इ. ए राजकोट मुकामे पथारी ता. २८-११-१९०१ ना रोज म्होटो दरवार भयों हतो तेमां आप नामदार हाजरी आपी हती, अने तेने बीजेज दिवसे अर्थात् ता. २९ मीए आपना आग्रहथी नामदार गर्बनर साहेव तेमज लेडी नॉर्थकोट साहेवे वांकानेर पथारी अमरविलास राज्यमहेल्लमां खाणुं लीखुं हतुं, ए खुशालीना सबवधी स्टेटनी अंदर हॉलीडे पाळवामां आव्यो हतो. एन वर्षमां कलकत्ता तथा मुंबइ खाते खोलवामां आवेला विक्टोरीआ मेमोरीअल फंडनी अंदर आप नामदारे सारी रकत भरी साम्राज्य तरफ बफादारी बताबी हती. ता. ९-८-१९०६ ना रोज लंडनमां नामदार शहेनशाह एडवर्ड ७ नो राज्याभिषेक थता तेओना माननी खातर आप नामदारे निशालोमां मीठाइ वहेंची अनाथ बालकोने तेमज केदीओने मिष्टान्न जमाडी तोपोना तथा बन्द्कोना बहार कराव्या अने अमरविलास आदि मुख्य मुख्य स्थले भभकावंथ रोशनी करावी. बळी उक्त राज्याभिषेकनी यादगीरी खातर आखा स्टेडनी अंदर एकन्दर ४१९१ जूदी जूदी जातनां हक्षी ववराव्यां के जेनी जीतल छायानो आजे अनेक मतुष्यो लाभ लेखे.

वि. सं. १९५९ ना वैशाख शुदि १४ ता .२५-५-१९०३ ना रोज राजकोटवाळां राणीजीश्री देवकुंवरवानो शोकजनक स्वर्गवास थयो अने एथी राजकुटुंवमां तेमज प्रजावर्गमां महान दिलगीरी पेदा थइ हती. त्यारवाद वर्ष आखरे वस्तीने केळवणी सवधी वधारे सगवडता मळे एटला माटे स्टेट तरफथी हाइस्कूल स्थापवामां आवी.

वि-सं. १९६० ना कार्तिक ग्रुदि ११ ता. १-११-१९०३ ना रोज स्वर्गस्थ राणीश्री दे-वर्ज्जवरवाना श्राद्धादि अर्थे आप नामदार मामासाहेव श्री दीपसिंहजी तथा डेप्युटी कारभारी हर-जीवन भवान कोटकने साथे लइ सिद्धपुर, मयुरां, काश्री, गयाजी अने डाकोरजी वगेरेनी यात्राए पथार्या. ए वस्तते आप नामदारनो उतारो श्रीमान अयोध्या नरेश ऑनरेवल प्रतापनारायणसिंहना मनोहर मकानमां गोठववामां आच्यो हतो, यात्राळुओ कागीनरेशना दर्शन विना यात्राने अपूर्ण समजे छे अने वनती महेनते तेमना दर्शननो छाभ छे छे, परंतु आपश्रीने तो श्रीमान काशी-नरेहो जोपीजी महाराज सोमनाथजीना मुखयी पशंसा सांमळी रामनगर तेडाच्या अने पोतानुं खास " तारुस " नामनुं जहाज सामे मोकल्युं. ए सुंदर जहाजनी अंदर विराजमान घड आप ज्यारे रामपुरने किनारे उतर्या त्यारे सैनिकोए तोयोना वहारधी तथा द्विथारो नमाववा आदिथी आपने उचित मान आप्यं. काशीनरेश आपने मळो अत्यंत प्रसन्न थया अने आप नामदारनी रीटर्न वीझीट छेवा अयोध्या नरेशने उतारे पथार्था. ए समाचार अयोध्या पहाँचरांज त्यांना महा-राजाए आपनो पत्रद्वारा अति उपकार मान्यो, अने एवा उद्गार काढ्या के आजे काशीनरे-ज्ञानां पगलां धवायी अमारो उतारो पावन थयो छे. मकान तैयार धया आजेज आवो उत्तम प्रसंग प्राप्त यतां अमे अमोने भाग्यशाळी समजीए अने त्यांथी ता. ९-१२-१९०३ ना राज राजधानीमा पधार्या बाद नीळ परणावी केटलांएक पुण्यदान कर्या, तेमज तेओना समरणार्थे ता. २९-२-१९०४ ना रोज "देवकुंवरवा स्कॉलरजीप" नी स्थापना करी. त्यारपछी तळपदमां तेमज महालोमां कामनी सगवडना खातर टेळीफोन दाखल कराच्या अने दरवारगढनी अंदर जूनां दफतरो राखवा माटे एक भव्य मकान वंगव्युं, के जेमां दफतरो रेग्युटर राखवामां आवे छे अने तेनी गोठवण खास आंख खेंचे तेती छे, ए उपरांत राजकोटना स्वर्गस्य क्रमार कर्णसिंहजीनी यादगीरी माटे आप नामदारे राजकोट राजकुमार कॅलिजमां अभ्यास करता रेलीटेन्सने दर वर्षे कर्णसिंहजीना नामनी सुशोभित छापवाळा चांद आपवानी शरुआत करी जे अद्यापि पर्यंत अपाय छे. एज वर्षना आश्विन वदी ३ बुध ता. १०० १०-१९०४ ना रोज शायपुरावाळां राणीजी साहेवश्री गुलावकुंदरवानो स्वर्गवास थतां राज्यमां महान ज्ञोक फेळायो.

उक्त वर्षना चैत्र मासमां आप नामदारे गिरमां पधारी एक महान् सिंहनो शिकार कयों हतो ते प्रसंगे म्हें नीचे मुजव कविताओं वनावी हती.

॥ दोहा ॥

ओज भरे अमरेशने, हरेहरिके प्रान, ताकों वरनत है अवें, किव नथुराम सुजान ॥ १ ॥

I82

॥ किवत्त ॥ जेसें जंभभेदी भेदी असुर अनेकनकों, बत्रके बिनाश हेतु मुदित महान है ॥ किव नथुराम तेसें तुंग अरु तेजदार, जाके जोर जाक्षिमको जानत जहान है ॥ बक्रपुर शक्त हन्ता हिंसक हजारनके, आयुधके ओकको न बनत बयान है ॥ किठन कराल माहिपाल अमरेश आज, पंचाननप्रान पर करत प्यान है ॥ २ ॥

॥ सबैया ॥

हाल चले हिंदियाहटसों, बडहाथ विरानी व्यथा हरवेकों; त्यों नथुराम उमंग भरें, मितभौन निधि जसके भरवेकों पूत अति रजपूतनकीं, अद्भूत सुधर्म धुरा धरवेकों; श्रूर गये गिरमां अमरेश, शिकार मृगाधिपको करवेकों; ॥ ३ ॥

> नगपति न्यारे न्यारे नद ओ नदीननारे, तमकी कतारें भारे भय उपजात है ॥ किव नथुराम एसो गिरिसरसात जामें, हिंसक हमेश हियमांहि हरखात है ॥ सुनिके गयंद जाकी गर्जना ग्रमानभरी, गयउ दिगन्त दोरि द्रग न दिखात है ॥ एसो मृगराज सांज समय समीप आय, दाहन दरीमें अब जोर जुत जात है ॥ ४ ॥



।' सर्वेया ॥

आपहुचें अमरेश तहां, गिरि गह्नरमें उरमें मुदलाकर; त्यों नथुराम सखा अनुसंग, विराजत है दुगुने मुदआकर; दुष्टरुपी तमतोरनकों, प्रगटे पुहुमीपर अन्य दिवाकर: धन्य पुरी यह वक्र मिले जिहि शक्र समान पति सुखभाकर ॥५॥॥ ॥ कवित ॥

> शोधिवान सामतकों संग छे उमंग भयों, राजत अभंग रंग अंग वीरताकों है ॥ किव नयुराम सिंज आयुध तमाम चट्यो, भूप अमरेश मंजु धाम धीरताको है ॥ हाकोकर कहतें दुनालींको कालो कर, जंगमें जुरेको रोम रोम जोम जाको है ॥ ताको सुनि हाको बनराज वार वार उर, शंकित है देखत भो द्वार कंदराको है ॥ ६ ॥ ॥ सबैया॥

जाहिर जोस भयों ज़बहि पति, बाहिर आय लग्यो उठि धावन; ताहि समे पतिप्रेम पगी, बनराजबधू लिंग यों समुझावन; नाथ यहे नथुरामको है, बडहाथ न दैहें फिरि यहां आवन; साची कहों रहजाओ भला, कल्लुं मानो हमारों कह्यो मनभावन ॥९॥॥॥ बित्त॥

> सिंहको सपूत पूत मेंहों मजबूत महा, मोहिकों रजादे प्रानप्यारी मुदलायकर ॥

किव नथुराम एसे आदमी अनेक आय, चातुर चले गये है मोसों डर पायकर ॥ जायकर वहां जोर जालिम जतायकर, धायकर ताकों वाहुवलसों हरायकर ॥ आयकर तेरी सोंह अवमं तिहारी पास, करिहों विलास ज्यादा जियकों जमायकर ॥ ८॥

॥ सर्वेया ॥

बालम क्यों उरमें इतनो, करतेहो वृथा अभिमान घनेरो, त्यों नखुराम मदान्धपनो, तिजकें चितमांहि हिताहित हेरो; मानव है न यहे करजोरी, कहों कल्लु मानो महामित मेरो; बासवसो वसुधापर आयके, आज दियो अमरेशने डेरो ॥ ९ ॥

॥ कवित्त ॥

गंजत है जाके गंडमंडल अखंडलमें, भोरनके पुंज मानो यामिनी अँधेरी है॥ अद्रिसे उत्तंग जाकी अमित मतंगजके, कुंभकों विदारीबेमें प्रभुता घनेरी है॥ एसे मृगराजनकों मारत निमेषमांहि, नाथ नथुरामको ये करत न देरी है॥ एसे अमरेश जेसे भूप अमरेश पास, बालम बिचारि देख कोंन गति तेरी है॥ १०॥

॥ सबैया ॥

ज्यों दशआननकों समुझायो, मँदोदरीने सियनाथ छियेतें; त्यों नथुराम ये थाकी वराकी, वनेन्द्रवधू उपदेश दियेतें; मान्यो नहीं मतवारो मृगाधिप, धायो तजी सिय आप हियेते; भावि मिटावन को है समत्थ, कहोजी असंख्य उपाय कियेतें ॥११॥

> मंजु मधु मासकी निहारी उजियारी राति, झांकी झलरान धायो धरेपं धधूकरत ॥ किव नयुराम नैन राते क्रूरतातें कर, प्रवल प्रसंजनसो भ्राजत भभूकरत ॥ जलद अषाढ केसो वीर वनराज गाढ, पुच्छको पछारि घोर शोरकों शरूकरत ॥ भोंहकों चढायकर फालको चढायकर, आयो अमरेश ढिंग हूंकरत फूंकरत ॥ १२ ॥

॥ सबैया ॥

हाक सुनि हरिनाधिपकी, थरकी विथराये सवें करहे छो; एसे समे नथुराम तहां, झलरान दुनाली ग्रही करछे छो; भोगलसे भुजवारो भयकं^र धीर धरापर केसो छकेलो हेकें अभीत अजीत महीपति, ठाढो रह्यो अमरेश अकेलो ॥१३॥

॥ कत्रित्त ॥

विकट वदनवारो, तिच्छन रदनवारो, आयो जव निकट मृगेन्द्र भरि फालकों।। नाथ नथुरामजुकें दुःसह दुनालीकर, भेद्यो इक घावतें सजीव तिहि भालकों॥ विनकें विभान पर्यों पंचानन प्रान विन, पूरन विलोकी जाके प्राक्रम विसालकों ॥ राव उमराव मिलि सकल सराहतहे, वक्रपुर शक अमरेश महिपालकों ॥ १४॥ ॥ दोहा ॥

धन्य धन्यको ता समे, ध्वनि भयो चहुँ ओर; आन लगे सव दोरिकें, अमरभूपकी ओर ॥ १६॥

।। छप्पय ।।

संवत शत उन्नीस, साठ मधु सप्तमी सुखकर;
मध्य निशा नरईश, पेखि जयप्रद ग्रह्मासर;
कहत किन नथुराम, मत्त मृगपितकों मार्यो;
धरी अमर हिय हाम, भूरि भुविको भय टार्यो;
कोंटि बरस उर हरसभर, अचल रहो अवनि परिह;
आशिरवाद अनंत यों, उचरत जनमन मुदभरहि ॥ १६॥

स्टेटनी अंदर दरवर्षे समयानुसार केट अक मांगिलिक मसंगो माप्त थाय छे; परंतु वेसतुं विक्रमान्द, खुद आपश्रीनी सालगिरा तथा विजयादशमी ए त्रण जाहेर तहेवारो तरीके म्होटी धामधूमथी उजववामां आवे छे. अन्य राज्य रजत्राडाओमां पण ए त्रण दिवसो एटलाज महत्त्वना गणाय छे.

पोरवंदरना मरहुम महाराणाश्री भाविसहजीनो म्हारापर अत्यंत प्रेम होवाथी तेमज हुं त्यांनो राजकिव होवाने छोधे उपर वतावेछा त्रण महोत्सत्र प्रसंगे कोइ कोइवार म्हारे त्यां पण हाजरी आपवी पहती, ए जणावत्रानुं कारण मात्र एटछंज छे के हवेथी दरवर्षे प्राप्त थता उक्त महोत्सव प्रसंगे म्हारा तरफथी आप नामदारने निवेदन करवामां आवेछां आशोर्वादात्मक काव्यो

उत्तरोत्तर दाखल करवानां छे, तेमां जे जे प्रसंगे काव्यनो अभाव जणाय ते ते प्रसंगे स्हारी वांकानेरमां गेरहाजरी हती एम समजवुं.

वि० सं० १९६0

वर्षगांठ महोत्सव.

"सवैया एकत्रीशा"

शुभ संवत ओंगणीश उपरे साठतणी सुखकारी साल; पोप प्रवळ हुङ्कास इरपनो, वर्णवुँ उज्वल पक्ष विशालः एकादशों आनंददायिनी दे बुधवासर बुद्धि दराजः अमर अधिपनी वर्षगांठनो मंगल दिवस महोत्म आज. वकपुरी विधविध वैभवमां शकपुरी करतां मुखरूपः निर्जर करतां नित सुख नवलां, आ पुरवासी टिए अनूपः वचन पीयुपतुं पान करावे मक्तवाणो महियोनी माज, अपर अधिपनी वर्षगांठनो मंगल दिवस महोत्सव आज. 9 ध्यजा पताका धामधाम पर अगिन रंगतणा ओपे. कनक कल्काथी सौध शिखर अमरावतीनी आभा लोपे: वंधनमालथकी वमणां दीवे द्वारे। साजी सुख साज, अमर अधिपनी वर्षगांठनो मंगल दिवस महोत्सव आज. चित्रित चित्र विचित्र थकी पुर सह जनने छागे साहं, आंगण रंगी रँगोलिवडे सह मंगल चिह्न घरे चारु; ठाम ठाम आराम अभिनव धाम धाम आनंद अवा ज, अमर महिपनी वर्पगांठनो मंगल दिवस महोत्सव आज. विविध विजयना वाजे वाजां गाजे गहेरां गुणींनां गान, साजे सद्य स्वरोनां सप्तक कंचनीं तीखां मारी तानः

ललकारे विरदोवंदी कथीं कान्यमही कीरतिनां काज,
अमर अधिपनी वर्षमांठनों मंगल दिवस महोत्सव आज.

पुरव्यापिनी गृंगार सजी मलीं मुद्रभर गाये मंगल गीत,
श्रीफल कुमक्कम अक्षत संगे धाय वधावा धारी प्रीत;
न्हाल वधारी लई वारणां दे आशिप श्यापिनी ममाज,
अमर अधिपनी वर्षगांठनों मंगल दिवस महोत्मव आज.

इस्त्र धरी छाजे सिंहासन राज अमर रहें। अमरेश,
दिव्य उदार यशस्त्री दानी विनय भरेलों धारी वेप;
रसवंतो राणों शाणों ओपे शिर पर अणमुलों ताज,
अमर अधिपनी वर्षगांठनों मंगल दिवस महोत्सव आज.

अमित वर्ष जीवे अवनि पर सुखशानित मुद्रमगळमांय,
नित नित कवि नथुरामतणां लोचन मृति जोवा ललचाय;
प्रवस्त्र प्रताप वधारे विधविध पीतें पौढ धरमनी पाज,
अमर अधिपनी वर्षगांठनों मंगल दिवस महोत्सव आज.

विजया दशमी महोत्सव.

।। छप्पय ।।

विजयी विजयादशमीं, विजयीं संवत्सर सुखकर; विजयीं वक्रपुर तख्त, विजयींपुरदर्शन दुःखहर; विजयीं वंश झलरान, विजयीं उनकार्य अधिकतर; विजयीं राज अमरेश, विजयीं स्नेहीं अह सहचर; अश्व शस्त्र समीं पूजिबो, विजयीं साज सुखधामके; विजयीं आशिरवचन है, यामें किव नयुरामके ॥ १ ॥

॥ कवित ॥

परम पिवत्र रिद्धिसिद्धिक समूहनसों, भाव धिर भूप भव्य भुवन दिपाओ तुम ॥ किव नथुराम कारे काजर पहार केसे, द्विरद अनंत रख विभव वढावो तुम ॥ तरल तुरंगम तरंगसे तरंगिनिके, नीके रख जोर शोर जगमें जमाओं तुम ॥ शस्त्रधर शूरन अनेक अमरेश राखि, विजय वितान वसुधाके अन्त छाओ तुम ॥ २ ॥

।। सबैया त

पालन खूव प्रजाको करी, नित आमद आप करी दुग्रनी; प्रिय पुत्र कलत्र सबें घरसूत्र सु पाओ पवित्र माहिपमिन; अमरेश तुम्हे अमरेश बनी, अति नीके रहो धरनीके धनी; नग्रुराम निहायत नेह बढो, यह आशिषवानी अनुप भनी;

॥ कवित्त ॥

मंडित करीके मान किव गुनी पंडितके, दान द्विज देवकों अखांडित दिया करो ॥ किव नथुराम यज्ञ याग करी राग धरी, परम प्रसन्न हुतभुककों किया करो ॥ अभिनव भूरि भव्य द्रव्यकी सुगंध देके, लाख सुर वृन्दनकी आशिष लिया करो ॥ जाहिर जिया करो जगतमें करोर जुग, नृप असरेश प्याले प्रेमके पिया करो ॥ ४ ॥

॥ सबैया ॥

राण कपाण धरी करमें, खलके दल ख्वार करेई रहो; नयुराम तमाम नीचे नरके, निसिवासर जान जरेई रहो; मखवान महा अरिमुंडनझुंडन, आपकी तेग तरेई रहो; अमरेश कुवेरकी न्हांई सदा, मुखमासों भंडार भरेई रहो॥ ५॥

।। कवित्तः।।

कुलअक्षिमानके करोर शुभ काम करि, परम प्रसिद्ध हो मुदाम मितवंतमें ॥ किव ने मुदाम दानदिया वहाय वहे, अग्र पद पाओ दानी मिहिप महंतमें ॥ रचासतकों रिसक बनायकें रिसीले भूप, नित बिकसाओं प्रभा नृपित अनंतमें ॥ नृप अमरेश क्षेश देशके हरी हमेश, सुजस पताके बांके छाओं छितिअंतमें ॥ ६ ॥

।। छप्पय ।।

धीर धर्मसम धारी, धर्म मगमें पग धिर हो; भीम भीमसम होइ, श्रष्टजनकों भय भिर हो; विजय धनञ्जय तुल्य, बेइ अरि सन्मुख लिरहो; विनय नकुल सम बहुत, राखि जगजन खुशी करिहो; संतसेव सहदेवसम, अमर करी नित अचल हो; नयुराम पंच पांडव प्रकृति, आप एक तनमें रहो ॥७॥

॥ दोहा ॥

बिधविध वाजे वाजते, रिसक राजते देशः कविकों नित्य निवाजने, अमर रहो अमरेश ॥ ८॥

वि-सं० १९६१ मां वळाना टाकोर श्री वखतासंहजीनां कुंवरी श्री फुळकुंवरवा साथे आप नामदारनो सवध थतां खाडे परणवानुं होइ वाकानेरथी ओझणुं छइ डेप्युटी कारभारी इरजी-वन भवान कोटक महा वदी ४ गुरुवार ता. १३-१-१९०५ ना रोज वळे जड पहोंच्या, अने करनतुं कार्य धामधूमथी पताबी ता. २-३ १९०५ ना रोज वाकानेर आव्याः एज रात्रिए अमरविलास राज्य-महेलमां आप मंगल फेरा फर्या अने लग्नतुं काम पूर्ण करवामा आन्युं. त्यारवाद त्रीजे दिवसे अर्थात् ता. ४-३-१९०५ ना रोज मुंबइना नामदार गवर्भर लॉर्ड लेपींग्टन जी. सी. एम. जी. जी. सी. आइ. इए राजकोट मुकामे भरेला दरवारमां आप नामदारे हाजरो आपी हती. एज सालमां समढीआळा, राजगढ तथा ज्ञोभला नामना त्रण गाम अति जीर्ण यह गएलां होवायी तेने आवाद कर्याः; तेमज जसवंतसर टेंक वंधाववाथी जडेश्वरनी यात्राए जनाराओने विकट रस्ते यह जबुं पडतुं ए अगवड दूर करवा माटे सदरहु टेंकने ितनारे किनारे हुंगर तोडावी एक नवी सडक वंधावी या-त्राळुओनो आज्ञीर्बाद मेळच्यो. ए पछी हिन्दुस्थानमां आवेळा गढ मांडाना महाराजा श्री रामम-तापसिंहजीनां कुंवरी श्री पद्मगनकुंतरवा साथे आपना सर्वथनुं नक्की थवाथी ता. ४-७-१९०५ ना रोज आप नामदार मुख्य कारभारी नाथाभाइ अविचळदास देसाइ आदि त्रणसो माणसोना रि-साला साथे ट्रेनमां पयार्था. ता. ६-७-१९०५ ना रोज वरात नहवाइ स्टेशने जइ पहोंचतां तेने लेवा माटे ख़द मांडा नरेश राममतापसिंह जी पोताना स्टाफ सहित त्यां पत्रायी हता. ता. ८-७-१९०५ ना रोज इथेवाळे परणवानी क्रिया शास्त्रोक्त रीते म्होटी धामपूर्वा थइ. वाद ता. ११-७-५ ना रोज त्यांथी खाना थइ ता. १४-७-१९०५ ना रोज वरात वांकानेर आवी पहें।ची. स्पेशीयल देन जतां आंग्रे अने वळतां अजमेर अमुक समय रोकाएली होवाथी साथेनां माणतोने ए वन्ने झहेरोनां प्रख्यात स्थळो जोवानो आप नामदारे छाभ आप्यो हतो. वर्षाऋतु चाछती होवाथी हिन्दुस्थान-

नी हरियालीए तेमज रसाल भूमिए आंखने कांइ जुदोज आनंद आप्यो हतो. ए लग्न महोत्सव प्रसंगे महारा तरफथी निम्नलिखित कविताओं निवेदन करवामां आवी हती.

॥ कवित्तः ॥

संवत उनीस हात इकहाठके अनूप, उत्तम अषाढ मास षष्टी तिथि ग्रुक्रपक्ष ॥ कवि नथुराम कामरूप नेक नामवर, महद महीपनमें दीपत महान दक्ष ॥ जाकी राजरीत अरु परम पुनीत नीत, सुजन सराहत है सब जगकी समक्ष ॥ वक्रपुरशक आज ब्याहद विनोदभर, भूप अमरेश कवि कोविदको कल्पवृक्ष ॥ १ ॥ छितिपें छल्यो है आज उद्धि अनंदकोसु, केधों अहहास भयो उदित उमेशको ॥ कवि नथुराम जन्मदिन है जयन्तको कि, राज्य अभिषेक केधों सुभग सुरेशको ॥ हरन कलेशको हमेश हरि जन्म केथों, सुखद समागम है उत्सव अशेषको ॥ सुंदर सुजान मखवान कुलभानकोकि, लग्नदिन राजे आज राज अमरेशको ॥ २ ॥ पारसकों पाय जेसें रंक जन राजी होत, जेसें हर्ष होत मिले नैन अंध नरकों ॥ कवि नथुराम हद हर्षकी रहे न जेसें,

जोपें भगवंत आय भेटे भक्तवरकों ॥ श्यामिनी सुलक्षणा सिलेतें सनमोद महा, वढत सुभागीं नर सुंदर सुघरकों ।। जाहिर जहान मध्य वरनों कहां हों वैसें, अमर महिपके विवाह अवसरकों ॥ ३ ॥ जत्तम अषाढकी सुदिव्य द्वितीयाके दिन, परम प्रमोदमय करत पयान उत ॥ किव नथुराम अमरेशकी वरात इत, पावस प्रवल स्वारी साजत सयान उत ॥ वाजत नगारे वडे गाढनादवारे इत, गाजत है घोरघन नीरके निधान उत ॥ वन्दीजन वोले इत विरद वहोत विधि, उत है पपीहनके रिसक महान रूत ॥ ४ ॥ इत छरिदाग वारवार ज्यों पुकारत त्यों, कलित कलापी उत करत कलोलें है। कवि नथुराम इत कलरव कामिनीके. झिर्छी झनकार उत अमित अमोले है।। जाचक अजाचक वने हैं इत दान पाय, उत गनदादुरके दान विच डोले है।। अवधि वरात अमरेशकी वनी है इत, उत वरपाकी सव विधि समतोले है।। ५॥ सोर और दादुर पर्णाहनके ज्ञोर करि,
छायो पट दीर्घ चहुऔर दिशि चारेकों ॥
किव नथुराम अब इन्द्रके अनुप्रहसों,
छायो है सवायो श्रेय जैसें जग सारेंको ॥
छायो जल धारसों अपार महिमंडल ओ,
जोर नम मंडलपें छायो घन कारेको ॥
एसें अमरेशकी वरातसों दराज आज,
मंडप अखंड छायो मांडा गढवारेको ॥ ६ ॥

प्रज्ञजन पादपकों करन सुपह्नवित,
दिव्य दानधारा धिर हिय हरखनकों ॥
किव नश्चराम हाम धिरकें हजारों कोश,
पंडित पपीहनके ग्रन परखनकों ॥
नरपितमंडलमें नित्य सबहीसों श्रेष्ट,
रिसक रसातलमें कीरत रखनकों ॥
पश्चिमसों आज अमरेश घनराज चढयो,
पूरव दिशापें बलधार वरखनकों ॥ ७ ॥
रमा राज्यमंदिरमें विविध बिहार करो,
गोकुलमें कामधेनु चिन्तामिन धनमें ॥
किव नश्चराम गृहवार्टिकामें कल्पवृक्ष,
बानी आय वसो तेरे विमल बदनमें ॥
दया दोड नैनमें निवास करो रेन दिन,

दान सुखदेन कर शुश्र जस जनमें ॥
कान्त कमदाको नित आयके निवास करो,
नृप मखवान अमरेश तेरे सनमें ॥ ७ ॥
वैरिनके वास नित्य करिकें उदास आप,
सुज्ञमें सुहावो आप संतत सुलेहसों ॥
किव नथुराम काम पूरि किवपंडितके,
आशिष अनंत पाओ आनंद अछेहसों ॥
वक्षपुरनाथ साथ दंपती सुसंपंत्तिसों,
वास वसे वैभव लो दूने यह देहसों ॥
राज शिरताज महाराज अमरेश एसें,
सुखमें विताओ शत शरद सनेहसों ॥ ९ ॥
उक्त वर्षमां सालगिरा महोत्सव प्रसंगे आशीर्वचन

।। छप्पय ।।

संवत शत उन्नीस, इकक्षठ हर्ष उपावन;
पोष मास सित पच्छ, महद मंगल मनभावन;
सुखदराज सरसात आज एकादशी उत्तम;
दिव्य अमर दरसात, अमरपित तुल्य अनूपम;
भासत है नथुराम यह, भव्य राजकुलभानको;
विजय वढावन जन्मदिन, महाराज मखवानको ॥ १ ॥
॥ किवित्त॥
जाके वाप दादे जादे जोरकी जमावटसों,
सादे शस्त्र धारी दंड शत्रुनकों देगये ॥

लाठीके प्रहारनसों काठीकों संहार करि, वंकपुरी नाथ यश लेगये नये नये ॥ किन नथुराम भानुवंशकी सुभव्यताकों, छितिमें छटासों भूरि छिन छिन छेने गये ॥ बखत बुलंद ताके तखत विराजे आज, अमर नरेन्द्र इन्द्रहुतें अधिके भये ॥ २ ॥

॥ सबैया ॥

जानि विभाकर बंस बिभूखन, हर्ष हिये परिपूरन पात्रतः; स्वच्छ सुकोमल कीरनसों, जियको उछरंग अभंगजतावतः; स्नेहसुधा स्त्रविकें नथुराम, सुचिन्ह सर्वे वलवंत वतावतः; सालगिरा अमरेशकों जानि, गुनी गुन गावत वाम वधावत ॥३॥

॥ कवित्त ॥

सुखप्रद सालगिरा अमर नृपालकी ये, मांगलिक महिपें महोत्सवकी मात है।। किव नयुराम राजसाहिव विराजत है, बाजत है बाय टिख मन ललचात है ठोर ठोर ।विजयके शोर चहुँओर होत, अंग शंग आज उछरंग अधिकात है।। बंकपुर नाथ बडहाथ साथ स्नेहिनके, सुरसह सुरपित वैसे सरसात है।। ४।।

।। छप्पय ॥

विजयवाद्यके घोष, जोसभर जबर जताओ; खलदलकों करि खाख, हाक अरिहियमें छाओ; प्रसरो पाइ प्रमोद, प्रवल शुभ यशके परिमल; अमरिसंह तृप आप, रहो अविनपर अविचल; एसे अनंत उत्सव सदा, श्रीहरि दे आनंद सह, नित्य नित्य नथुरामकी, सफल होहु आशीश यह ॥ ५॥ विजयादशमी महोत्सव प्रसंगे आशीर्वचन.

" गीति "

आनंदे चिर आयु, आशो जेणे धर्यो सुहिमधाम; अहनिश आशिष एवी, नेह धरीने दिए नयुराम. विजयी विजयादशमी, अमर आपनां करो सिद्ध काम; अहनिश आशिप एवी, नेह धरीने दिए नथुराम. व्हाळा वंकपुरीना, नृपति निरंतर वधो नवलनाम; अइनिश आशिष एवी, नेह धरीने दीए नधुगम. संतित सुखपद पागो, अमर आप सम उदार अभि(ाम: अहनिज्ञ आज्ञिष एवी, नेह धरीने दिए नशुराम. अमर आपनां अतिशय, गाओ गुणीजन तमाम गुणग्रामः अहथिश आशिप एदी, नेह धरीने दिए न्युराम. पांडव तुल्य पराक्रमी, वनो पूजीने ज्ञामी अमर आम; अहनिश आपिश एवी, नेह धरीने दिए नशुराम. ६ अमर्सिह अवनिमां, धर्मधुरंधर वनो विजयधामः अहनिश आशिप एवी, नेह धरीने दिए नयुराम. 9

િ ७४१ **]**



महद भूप मकवाणा, राजनीतिए घरो अमित धाम; अहनिश आशिप एवी, नेह धरीने दिए नथुराम.

ि वि-सं. १९६२ मां नापदार पीन्तऑफबेल्पनी मुंबड खाने मुलाकान लेवा ता २-११ १९०५ ना रोज वांकानेरथी नीकळी ता. ३ जीए ग्रान्टरोड स्टेकंन जह पहेंचिला आपश्रीने नामदार गवर्नमेन्ट तरफथी सलामी तेमज मान आपवामां आब्धं हतुं अने नापदार पीन्तऑफबेल्से आपनी वीझीट लीधी हती. त्यारवाद पेष श्रुदि ११ ने दहाडे आप नामदारनी वर्षगांटनो महोत्सव हो-वाथी पोरवंदरना मरहुप महाराणा श्रोभावसिंह नी, श्रांगश्राना मरहुप राजसाहेव श्रीअजीतसिंह नी, वहीया दरवार श्रीवावावाला साहेव तथा मोरवीना श्रीमान ठाकरेरसाहेव वांकानेर पथार्या हता अने एओनी हाजरीमांज नवी राजमहेलातनो पायो नांखवानी ग्रुभ किया करवामां आवी हती, एज वर्षमां ता. १४-४-१९०६ ना रोज आपनां मुळीवाळां मासाहेव श्री जेटीवा साहेवनो देहान्त थयो.

बेसता वर्ष प्रसंगे आजीर्वयन.

॥ कवित्त ॥

संवत उनीस शत बासठको वर्ष बैठि, हर्दम विशेषता दे हरष हुलासमें ॥ किव नथुराम घनपितको तमाम धनः कर है निवास तुव कोश सुखरासमें ॥ बिभव बिनोद विधविधके बढाय हेत, अहनिश आयबसे अमर विलासमें ॥ बक्रपुरनाथ तेरे माथ सदा दोनों हाथ, राखि रमानाथ ल्यावे बिजय बिकासमें ॥१॥ कुशल कलामें सुखमामें शूरवीरतामें, दानमें दिमागमें सदैव मन खस्त हो ॥ कवि नथुराम जोर जारिवेमें जालिम को, वक्रपुर नाथ तेरे शकसम हस्त हो ॥ असर नृपाल प्रतिपाल पुहुनिके वनो, पुत्रतें पवित्र गृहसूत्र सुखयस्त हो ॥ अस्त हो अरिको मन मोद मदमस्त हो सु, खलजलनिधिको अगस्त तन्दुरस्त हो ॥ २ ॥ रिद्धि सिद्धि स्वासतमें रसिकविहारी रखे, मोद अरु मंगल महान राज्यगेहमें ॥ कवि नथुराम रमापति दे रमाको वास, वुद्धि सुरग्रह देवे आनंद अछेहमें ॥ शंकर सदैव तुव शंकर वनेई रहे, अमर त्रिशूल दे भयंकरके देहमें ॥ वक्रपुरनाथशक वकसो विभव वडे, धाता धीरदाता रखे सने सुख स्नेहमें ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

निवन वरसमें निवन सुख, निवनवरसमय मोजः निवन स्नेह सुखमा निवन, हितसों पाओं हरोज ॥ ४ ॥ सालगिरा महोत्सव प्रसंगे आद्योवीद

" छन्द हरिगीत "

मुद महद मंगल वास वित्र आज वांकानेरमां, अति हरपथी जन वरसता लाखो फरे छे ल्हेरमां;

वरविजय वाद्यतणा विशेष अनुप विविध अवाज छे, शुभ वर्षगांट रसाल अमर भूषाल केरी आज छे. उर धारों अति आनंद अवला वृन्द गीतो गाय छे, परिचारिकापदमुरचिना स्थल स्थल महीं ध्वनि थाय छे: केसर कुसुंभतणा सुकुंभ अनंत मंगल साज छे, ग्रुभ वर्पगांठ रसाल अमर भूपाल केरी आज छे. 9 विधविध वितान विज्ञाल वंधनमाल संग शुंगारीआ, भलराज्य भ्रुवन कचेरीओमां दिव्य दृश्ये धारीआः देखाव देवअवासने शरमावनार दराज छे, शुभ वर्षगांठ रसाल अमर भूपाल केरी आज छे. नृपमात निर्मेळ गंगशां, निज अंग आनंद धारतां, मुक्ता सुवर्णनी म्होर वारंवार सुतपर वारतां; मुख नीरखतां क्षण क्षण मुद्दें दिल जेहतुं सुख जाज छे, ग्रुभ वर्षगांठ रसाल अमर भूपाल केरी आज छे. सर्जी स्नेहथी शणगार सोळ रमे रसिक युग राणीओ, नृप अमरइन्द्र रिझावनी जाणे उभय इन्द्राणीओ; वर वक्रपुर छुरपुर अने सहु स्नेही ग्रुर समाज छे. शुभ वर्षगांठ रसाल अमर भूपाल केरी आज छे. भल भावभूप अजीत हरि आनंद धारी आवीआ, उत्सव अमर अमरेशने गृह जाणीं जग सुख लावीं आ वह भावीआ मकवाणने जे परम धरमनी पान छे,

घरघर वजार गळीगळीमां रोशनी राजी रही, कोटिक रविनी कान्ति शान्ति आपती छाजी रही;

ग्राभ वर्पगांठ रसाल अमर भूपाल केरी आज छे.

गुणीओ कथे गुणगानमां जे कलित तृपनां काज छे,

गुभ वर्षगांठ रसाल अपर भूपाल केरी आज छे,

शातवर्ष लगी सुखिसन्युमां झीले अमर यश धारीने,

जगमांहि जोर जमावशे म्होटा अरिने मारीने;

आशीश ए नथुरामनी जेनी अमरकर लाज छे,

गुभ वर्षगांठ रसाल अपर भूपाल केरी आज छे.

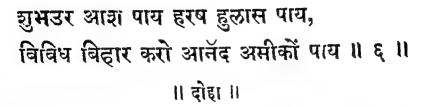
9

॥ कवित्त ॥

सुखको समंदर ओ प्रेमको पुरंदर है, बऋपुर अंदर विनोद वरसावनो ॥ कवि नथुराम अभिराम जन आरतको, ठाम ठाम संगीतके स्वर सरसावनो ॥ जस झलरानके सुजगमें जतान हारो, पथ पथ मंगल रू मोद परसावनो ॥ जनम महोत्सन ये अमर नृपालको सु अरि तरसावनो हितूकों हरसावनो ॥ १ ॥ पोरपति भाव ओ अजीत मखवान मिले, अमर नृपालको है आनंद अशेष आज ॥ पागे रस रंग अनुरागे सव नग्रजन, रोके मुद हितुनके हृदयप्रदेश आज ॥ इत उत फावसों फिरे हैं भृत्य भृत्यका सु, मंगल उचार मुख धार वरवेश आज॥ अप्ट महादानके दिनेशनके दर्शपाय, किव नयुरामकों रह्यो न कछु शेष आज ॥ २ ॥ . भावसिंह अमर अजीत भुवि पालहुको, संग देख उपमा अनुठीकी परे पिछान ॥ कवि नथुराम कूर कुमुदकों कष्ट देन, प्रेमीगन पंकजकों देश्वे दरसदान ॥ अधम उद्युकनकों अंध करिवेके लिये. हरन हजार खल उडुमा भू आसमान ।। वंदी कवि कोकके दरिद्र तम टारिवेकों, आज प्रगटे है संग भूप त्रय भासमान ॥ ३ ॥ संत सुगरीव ओ भरत सतरूघनकों, मोद धर राम अभिरामकों मिलाये जोंन ॥ कवि नयुराम क्लान्त विरही रघुवरकों, सीता सुध लायकें मिलादी धरवेग पोंन ॥ लच्छनकों बूटी ओ विभीषनकों रामचन्द्र, काज करिके महंत अंत धरि बैठे मोन ॥ जुग मखवानकों मिलायबेमें जोरदार, हनुमतबंसअवतंस विन ओर कोन ॥ ४ ॥ भावसिंह अमर अजीत नृपराज तुम, परम प्रताप पाओ पूर्न पुहुमीकों पाय ॥ कवि नथुराम मुद मंगल महान पाय, प्यारे हो प्रसिद्ध नृपतिमें नाम नीको पाय ॥ पुत्र परिवार पाय, आयुष अपार पाय, लच्छके भंडार पाय सुख सरसीकों पाय ॥



YUNRAJ SHRI TRATAPSINHJI-HOR Appare



गविसवार पन्नगधरन, उमारमन सुखएन; भाव अजित नृप अमरकी, रच्छ करो दिनरेन ॥ ६ ॥

वि. सं. १९६३ मां आप नामदारे सालगिरा महोत्सवनी खुशाली प्रसंगे ता. १-१-०७ थी गुजराती निशालोमां प्राथमिक केळवणी मफत आपवानो ठराव ता. ६६-१६-१९०६ ना रोज कर्यों. त्यारवाद पहेला चैत्र विट ०)) शुक्र ता. १६-४-१९०७ ना रोज वळावाळां श्रीमती राणीजीसाहेवे राजकुमारश्री प्रतापिक्हजीने जन्म आप्यों. ए वधामणी सांभळतांज आपश्रीए केटलाक केदीओने मुक्त कर्या, निशालोमां साकर वहेंचाबी, प्रजाए पण अपूर्व आनंद प्रदिश्तंत कर्यों अने सदरहु खुशाली सववे खेडूतो पासेथी लेवातुं पगीतुं लवाजम ता. ६९-५-१९०७ ना हुकमथी आप नामदारे माफ कर्युं. ए वर्ष आखरे हे. कारभारी हरजीवन भवान कोटकनी राजको- टस्टेटना मुख्य कारभारी तरीके निमनोक थतां तेओए वजावेली सेवाना वदलामां आपश्रीए विजयादशमीने दहाहे एक जाहेर दरवार भरी तेओने उपदा पोपाक तथा इनामनी म्होटी रकम आपी औदार्य वताच्युं अने एमनी जगोए जेतपुरनां रहीश श्रीयुत अभेचंद गोविंदजी देसाइ बी. ए. एक. एल. वीने दाखल कर्यां.

वेसता वर्ष प्रसंगे आशीर्वचन.

" माळिनी "

अधिक अधिक नित्यें, आपनुं श्रेय थाजो; अभिनव छुख साजो, रागथी आप राजो, विजय जनसमूहे, जोरथी सद्य जामो; अमर नविन वर्षे, पूर्ण आनंद पामो. प्रतिदिन प्रसरावी, भेम प्रौढो प्रजामां; महिपति मकवाणा, पग्न रेजो मजामां, दइ विविध जनोने, व्हाळ धारी विशामो;
अमर निवन वर्षे, पूर्ण आनंद पामो.
दशरथस्रत पेठे, दुष्टरन्दो विदारो;
विनय स्रत विवेकी, स्रज्ञना अर्थ सारो,
स्रभग स्रख लड्ने, व्याधिओ सर्व वामो;
अमर निवन वर्षे, पूर्ण आनंद पामो.
पति हिमतनुज्ञाना, आपने श्रेय आपो;
महद स्रयज्ञ केरा, गंकुए स्रष्टि मापो;
अभिनव ग्रुभ आशी, दे नयुराम नित्ये,
अमर निवन वर्षे, पामनो हर्ष शीते.

S

В

सालागरा महोत्सव प्रसंगे आशीर्वचनः

" शार्दूल विक्रीडित "

द्विद्धं वारिधिना विनोदमहिं दे, जे रीत शाणो शशी;
आपे छे त्यम आ अपार अमने, आनंद एकादशी,
महोटा मंगळरूप मंगळ वन्यो, प्यारो श्रुदि पोषनो;
आवी जन्म तिथि अहीं अमरनी, हेतें हजारो वनो.
श्वांकानेरतणा विश्व विजयने, पामो मति दिवसे;
रिद्धि सिद्धि सदैव राज्यगृहमां, वेगेंथी आवी वसे,
संपत्ति श्रुख शान्ति कान्ति सहुनी, व्हालेंथीं दृद्धि करी;
आनंदी अमरेशने नितमित, दीर्घायु देजो हरि.
पामो पूर्ण मताप ताप तजीने, सद्भाव उरे भरो;
कीर्ति नारीनीसंग रंग रमतां, कृत्यो रुपाळां करो,
राखो मीति हमेश नीति पथमां, आरोग्यता अंगमां;
आनंदे अमरेश वर्ष वितवो, स्नेहीतणा संगमां.

३

दीनोने वित्तदानमान गुणीने, सन्मान साधु पतिः प्रेमीने निज प्रेम केरी प्रतिमा, उदार अर्थो अति, भृत्योने उर भाव भूप भरतां, राजो रुडा रंगमां; आनंदे अमरेश वर्ष वितवो, स्नेहीतणा संगमां. रिद्धिं राज्यपृहे भरेल रसनी, सिद्धिं सुनानये रहो; स्तेहे समृद्धि दृद्धि वंश शुभनी आधि उपाधि न हो, फूकी सद्य फळो मनोरथ तरु, अत्यंत उपंगमां; आनंदे अमरेश वर्ष वितवो, स्नेही तणा संगमां. मातःकाल विषे मजानी पुरनी, रुडी रीते रक्षमां; मध्याहे ग्रुभ राजकाज रसना, रस्ता छई लक्षमां; सायंकाळ संगीत गीत सुणीने, रात्री रमो रंगमां; आनंदे अमरेश वर्ष वितवो, स्नेहीतणा संगमां. ६ कीर्तिवान ककित कृत्य करथी, कोडें करोडो करो; सिन्धुपार समस्त नाद यशना, धीरा त्वराथी धरो: जाळो जोर तमाम दुष्ट जनतुं, इषी भरी अंगमां; आनंदे अमरेश वर्ष वितवो, स्नेहीतणा संगमां; 6 नेहे न्यायअगार नित्य विचरी, ज्ञान्ति भरो सर्वने; साचाने दइ खुल सद्य इरजो, गंडूतणा गर्वने; पापी शापीं प्रपंची नीच नरने, दाटो दुःखो दंगमां; आनंदे अमरेश वर्ष वितशे, स्नेहीतणा संगमां. ओें इन्द्र समान सर्व नृपमां, व्हादुर कीर्तिवळे; पामो धारी पवित्र माल जयने, सुवैजयन्ती गळे: नेहें नाथ असत्य सत्य निरखो, धीराइना ढंगशां; आनंदे अमरेश वर्ष वितवो, स्नेहीतणा संगमां. 9

[986]

धारी छत्र पवित्र देव नृपतुं, शाणा झतायुं वनो; शान्ति कान्ति समस्त ठाम अरपी, पूरो मुदेधी मनो; पाळी दीन प्रजा सुस्नान करजो, आशीशनी गंगमां; आनंदे अमरेश वर्ष वितवो, स्नेहीतणा संगमां.

१०

वि—सं० १९६४ मां आप नामदारे मरहुम राज वखतसिंहजीना न्हाना क्रमार कर्णसिंह-जीने जे रोकढ जीवाइ आपवामां आवती हती ते वंध करी ता. ६—१—८ ना रोज जाळी तथा जेतपर गामनी खाळसा पाटी गरास तरीके आपी. वेसता वर्षने दहाडे वहुज द्वदवा भरेको दर-बार भरवामां आव्यो हतो अने ते वखते म्हारा तरफथी निम्न किखित कविताओं निवेदन करवामां आवी हती.

॥ कवित्तः ॥

भिक्षुक तथापि देत भक्तकों अभिष्ट फल, वसत स्मशान तऊ पावन परसमें ॥ किव नथुराम भयकारी भूतनाथ तऊ, दायिनी अभय रही दिव्यता दरसमें ॥ अखिलके ईश कहवावत दिगम्बर है, हालाहल पीकें नित्य रहत हरसमें ॥ चरित विचित्रवारे देहें दीर्घ आयु ईश, आपकों अमरनृप ! नृतन वरसमें ॥ १॥ राम हिग जाय माग मोदिनी महान अरु, बीज ले कुबेरसों त्यों हल हलधरको ॥ किव नथुराम कृषिकाज यमसों महीष, शृषभ तिहारों त्यों वडो त्रिश्लल घरको ॥ स्कन्द बेलरच्छकमें देउंगी पकाय रोटी,

हों तो भइ खिन्न गिन गिन घर घरकों ॥ एसी उमियाकी वानी अमित आरामप्रद, होहु हरसाल राजराना श्री अमरकों ॥ २ ॥ यमुना नदीसी सुखसानी मुद्खानि जानि, गाहत गोवत्सवृन्द संग निज मैयाकी ॥ किव नथुराम ढाढे रहत सुनीलकण्ठ, नीलतासों भ्रान्ति भरी जीवन धरैयाकी ॥ गिनके तमालपत्र आभरन काज गोपी, परिस रचत पांति बहुत बलैयांकी ॥ देवे सुखज्ञान्ति अमरेज्ञकों अनंत युग, एसी कमनीय कान्ति कोमल कन्हैयाकी ॥ ३ ॥ जाइ वलभद्रने जताइ जसुदासों वात, मात मनमोहनने आज धूळि खाई है।। कवि नथुराम कह्यो क्रश्नकों बुलाइ मात, वात यह सत्य है किं लोंनसों मिलाई है॥ मिथ्या कहि माधवने आनन उघारि करि, स्वरित त्रिझोकीकी सुदिव्यता दिखाई है॥ रच्छक तुम्हारे अमरेश ! यदुराय ऐसे, आनँदके कन्द नन्द नन्दके कन्हाई है ॥ ४ ॥ सालगिरा महोत्सव प्रसंगे आशीर्वाद.

॥कवित्त ॥ आज महाराज अमरेंशकी वरसगांठ,

भूप भोंन मध्य भूरि भव्यता भरतु है ॥ कवि नयुराम वर उत्सवसों वक्रपुर, धाम अभिरास शकपुरको धरतु है।। देत जन दच्छकों अपार मुद वार वार, विदित विपच्छनकी हामकों हरतु है ॥ आठो जाम हैकें त्रिय कामप्रद कामतर, काम कवि कोविदके पूरन करतु है ॥ १ ॥ ताजि इक स्थान जब बास करे द्रजे स्थान, तब सब लोक चाहे शुभ पल पायवो ॥ कवि नथुराम राजराना अमरेशजूकी, सालगिरा श्रेष्ठ जासों होत छेम छायवो ॥ बिसद बिसाल यह सालमें न हेगो फिर, ऐसे महामांगलिक उत्सवको आयवो ॥ दिच्छन दिशाकों छोरि आज अति आनंदसों, उचित बिचारे रवि उत्तरमें जायबो ॥ २ ॥ निज जननीके प्रतिपालक प्रसिद्ध जानि, बिनय हरिके बाल नीके दिसके दयाल।। कवि नथुराम ताकी सुखप्रद सालगिरा, उत्सव अनंतमें महंत मुदहूकी माल ॥ करि कमनीय अष्ट प्रहर प्रमोदमय, अमल अनूप निजरूप धरिकें विसाल ॥ पूरन पवित्र तिथि एकादशों संग आय,

हाजर हजूरमें रह्यों है बसुधाकों बाल ॥ ३ ॥ आज राजराना अमरेशके बरसगांठ, उत्सवपें आनँदकी वृद्धि करवेंके काज ॥ कवि नथुराम राज लाखाजी पधारे रम्य, नृप नृपदुर्गके जसीले जयके जहाज ॥ सुज्ञ शिरताज त्यों प्रसिद्ध पुन्यहूकी पाज, गरिबनिवाज यदुकुलकी सहान माज ॥ पायकें दराज युति साजी सुखसाज वह, जीवो जुग कोटि शीश धारी शुभ राजताज ॥ ४ ॥ प्रतिदिन पुत्रवत् पालन प्रजाको करी, प्रवल प्रतापी दीर्घ अ। युषकों पाओ तुम ॥ कवि नथुराम मखवानकुलभान भव्य, न्यायके निधान धीर धर्ममग धाओ तुम ॥ जवर जयन्तसें कुमारश्री प्रतापसंग, सुरपति तुल्य श्रेष्ट सुखसों सुहाओ तुम ॥ एसे जन्म उत्सव अनंत अवनिके मध्य, अमर अधिपति विनोदसों विताओ तुम ॥ ५ ॥ अमर महीपतिके जन्मगांठ उत्सवकी, आभाकों वढावन अनूप गुनके अगार ॥ कवि नथुराम आये अमित उमंग धरि, नयके निधान बावावाला उरके उदार ॥ आनँद अमंदयुत जीवनके नन्द जाकों,

ि ७५३]

वृन्द विदवानके सराहतहै बार बार ॥ काष्टिनकुळावंतस रम्य राजहंसं ताको, देवे दीर्घ आयु सुखकन्द नन्दके कुमार ॥ ६ ॥ विजयादशमी महोत्सव प्रसंगे आशीर्वचन,

॥ छन्द झुकणा ॥

अवित आनंदथी स्वारी शुभ साजीने, आज शर्मी पूजवाने पघारे; वक्रपुरशक व्हालें विराजी रहा, कान्तिमां इन्द्र करतां वधारे; नित्य नयुराम सुखधाम गुणव्रामनी, नामना पूर्ण नेमे पसारी; विजय विजयादशमी आपजो विश्वमां, भूष अमरेशने भावधारी. विनय इरिवाल छे विश्वमा वारिधि, विनयीपर व्हाल विद्यावि लासी; न्यायना नेत्रथी तेज त्रयनेत्र सम, पृथ्वीपतिमां रह्यं छे पकाशी; नित्य नशुराम अभिरामता अर्थोने, वेगथी विघ्न सर्वे विदारी; विजय विजयादशर्मी आपजो विश्वमां भूप अमरेशने भावधारी 3 क्षेमकर क्षत्रिना ग्रुभ गुणे शोभतो पुत्रपरिवार आनंद पामो; जवर गुणजाण झलराण अभिरामजो, कीर्तिवाळां करी कोटि कामो; नित्य नयुराम संतुष्ट थाओ सुखे, विबुधना व्याधिओने विदारी; विजय विजयादशमी आपजो विश्वमां. भूव अमरेशने भावधारी. यंत्रपेडे रुडा राज्यना तंत्रने, चतुर तृप चाइधारी चळावो; स्नेहींनी संग शतवर्ष शुभ सौख्यमां, वंकपुरनाथ व्हाले वितावो; नित्य नयुरापना अन्नद।ता अचल, सज्जनोने वने श्रेयकारी: विजय विजयादशामी आरजो निष्नमां, भूव अमरेशने भावतारी. 8

वि—सं० १९६५ मां आप नामदारे केटलांक विजळीक यंत्रोनी खरीदी करी अने श्री-वालकृष्ण हवेलीनो पायो नंखावी काम श्रव कराच्युं. ए पछी ठाकोरसाहेव श्रीलाखाजीराज, मा- ळीयाना पाटवी कुमार श्रीगुमानसिंहजी, तथा सोरावज्ञा कावसनी कळववाळानी साथे काजमीरनी मुसाफरीए पथार्या ता. इह एपिल १९०९ ना रोज रावल्लपींडी पहोंच्या त्यां जामासजी एन्ड कुं. मां वार दिवस पर्यन्त रही आपें काजमीर जवाना विविध मार्गोनी तेमज दर्शनीय स्थळोनी मेलवेकी माहिती मुजब रावल्लपींडीथी श्रीनगर १९६ माइल छेडं छे, ए शरीयाम रस्ते दरेक प्रकारनो व्यापार धमधोकार चाले छे, श्रीनगरथी ३४ माइलने अंतरे आवेल इस्लामाबाद सुधी काची सहक छे, रावल्लपींडी रेल्वे लाइनपर आवेलुं छे अने त्यां विज्ञाल लडकरी छावणी रहे छे; त्यांथी लाहोर १६९ माइल दूर छे, शहरनी अंदर केटलीक होटेलो तथा केटलीक महोटी दुकानो छे; तेओना मालिकोनी एवी अन्य होटेलो तथा दुकानो मरीमां पण छे अने त्यां जनारने दरिक प्रकारनी सगबह करी आपवामां आवे छे. बजाःनी अंदर पारसी लोकोनी दुकानो संख्यावंच छे. हिन्दुस्थानमां विद्यमान महान महान हाटेलोनी साथे सरखावी शकाय तेवो रावल्लपींडीना स्टेलनपर रिफेडामेन्ट रुप छे. मरहुम सर ह्वेट मेगफरसने स्थापेली एक कलव महोटा पाया उपर चाले छे, मरीनी अंदर मदिरानो व्यापार करती कंपनीनो पहान प्रासाद समग्र पंजावमां सर्वोत्कृष्टताने पद- शित करे छे. ए कंपनीनो एक प्रसिद्ध शाखा रावलपींडीमां पण छे.

पंजावमां आवनाराओने रावलपींडी मांहेनी जुदी जुदी हाँ टेलोना मेनेजरो पासेथी तेमज लाहोरमां एम. नेदुनी हाँटेलेथी जोइतो माहिती मळी शके छे. मी. एम. नेदुनी श्रीनगर तथा गुलमर्ग वगेरे स्थळोए स्थपाएली हाँटेलनी शालाओं में थी अक्टोम्बर महिना पर्यन्त चळाववामां आवे छे.

मुसाफरी करवानां वाहनो-मेळटांगी, एको, जिनिरिक्षा (छतवाळी त्यांनी एक प्रकारनो गाढी) तथा डाक गाडी वगेरे मळे छे.

मुसाफरोनो सरसामान वगेरे वळद्दनी गाडोमा, टांगामां, एक्कामां अयश उंटपर छइ ज-वामां आवे छे. उंटपर सामान मोकलशानुं खर्च घगुंज ओळुं लागे छे. वादशाहो टपाल रावल-पींडीथी श्रीनगर छुधी ३६ कलाकरा लइ जवाय] छे. दरेक टांगाओने माटे नोवे मुजव वे कायदाओं छे.

[े] १ सारथी उपरांत म्होटो उम्परेना त्रण माणसो तथा वे वाळको मळी कुछ छ माणसो वेसी शके, सातमुं वाळक होय तोपण तेने वेसाडी न शकाय.

२ एक टांगामां वधारेमां वधारे दोढ मण सामान मुकी शकाय.

ए कायदानो भंग करनारने पोलीस तरफथी सना थाय छे वर्षातरतुमां रस्ताओं काद-वथी भरेल। होबाने लीधे जेम वने तेम सामान ओछो लड़ जवा देवामां आवे छे. जो कोइ गृहस्थे टांगो स्पेशीअल वांध्यो होय तो ते गृहस्थ तथा तेनो एक नोकर मळी वे वचे त्रण मण वोनो लड़ जह शक्षाय छे. रावलपींडीथी अथदा मरीथी सामान मोकलवानी समग्र योजनाओं सरलताथी यह शके छे. मार्गमां वीलुं एवं कोइ पण स्थल नथी के ज्यां मरसामान लड़ जवाने माटे वाहन मळी शके. कदाच भाग्ययोगे खाळी एकाओं मळे, परंतु लंट तो रावलपींडीमांथीन मळी शके छे.

मुसाफरीमां सामान्य रीते रावलपींडीयी मरी पहोंचनां छ कलाक, मरीयी कोहला जनां चार कलाक, कोहलायी वारामुळा जतां चौद कलाक अने वारामुळायी श्रीनगर जलमार्गे जनां २४ थी ४८ कलाक तथा जमीन मार्गे (मेलटांगा वडे) साडाचार कलाकनो समय लागे छे.

उन्हाळाना दिवसोमां सूर्यना तापने लीधे रस्ताओं स्वच्छ होवायी मात्र १५-१६ कलाकमांज रावलपींडीथी श्रीनगर पहोंची शकाय छे मार्गमां मरी, कोहला, डोमल, धारी, उरी तथा बारामुल्ला आदि स्थळे चा पाणी तथा नास्तो वगेरे करवामां जे स्हे नस्हाज समय व्यतीत थाय तेनो पण उपर कहेला कलाकोमांज समावेश थइ जाय छे मेलगाडीना सारयी तथा अन्वो मरी, धारी तथा बारामुल्ला ए त्रण स्थळे वदलाय छे.

रावळपींडीथी सन्नीवेंक सुधी ४३०० करतां विशेष फीटनो चढाव छे.

सन्नीवेंकथी कोहला सुधी लगभग ४००० फीटनो ढोळाव छे.

कोहलाथी वारामुल्ला सुधी ९८ माइलनो अंतर छे अने आशरे ३१५० फीटनो चढाव छे.

वारामुङ्घाथी श्रीनगर पर्यन्त ३४ माइलनो अंतर छे अने ए मार्ग समुद्रनी सपाटीथी कगभग ५२५० फीट उंचो जाय छे.

रावलपीढीथी सन्नीवेंक सुधीनो मार्ग दरियानी सपाटीथी १७८७ फीटथी ६००० करतां पण विशेष फीटनी उंचाइन धारण करे छे अने ए वन्ने वचे २६ई माइलनो अन्तर छे.

रावलपींडी स्टेशने ट्रेनमांथी जतरतां मुसाफरोने टांगानुं साधन मळे छे, त्याथी टांगानो मार्ग रेखेना मार्ग नीचे थइ मरी तरफ जाय छे. दूर घणी टेकरोओ दृष्टिगोचर थाय छे. मार्गनी ढावी वाजुए एक इंटनो मिनारो छे, तेनी समीपे मी. इ. जी. हेवर्टे सने १८८९-९० मां वंधा-वेळां रावलपींडी शहेरनी अंदर पाणी पुरुं पाडवानां वांधकामो छे अने तेने लगती न्हाना इंटना स्तंभोनी हार आठ माइछ लांबी वांधेली छे. वाराकू पर्यन्त ए मार्गनी वन्ने वाजुए सीसमनां हुसो छाइ रह्यां छे. लगभग वार माइल सुधीनो मार्ग तो सपाट अने सीधो छे, ९३ माइल दूर गया पछी एक हिलस्ट्रीम जोसवंघ वहे छे, तेना उपर हालमां एक पाको पूल वांधेलो छे. १३३ माइल चालतां वाराकू नजीक जइ पहोंचाय छे, त्यां डाक वंगलो छे अने तेनी अंदर मुसाफरने सामान्य सगवह मळे छे तेना सामा पालीस चोकी छे अने तेनी आसपास लक्करने रहेवातुं स्थळ छे, वा-ु राक् छोडी एक माइल आगळ चालतां मार्ग नीची टेकरीओमां थइ जाय छे. ए टेकरीओ उपर सनीध तथा अथतोध अथवा भेकारनी नीची झाढी आवेली छे. त्यारवाद एक टेकरीने गोल फरी-ने मार्ग मंडलाकार जाय छे, त्यां त्रीजी मजल पूर्ण थाय छे अने दरेक मनुष्य तथा पशु दीठ टॉल (कर-जकात) लेवामां आवे छे. दरेक मुसाफर दीठ अरधो आनो, जीनवाळा अश्वदीठ दोढ आना, दर एकादीठ चार आना, दर इंटदीठ आठ आना अने दर टांगादीठ एक रुपियो छे. त्यांची चोथी मजल १०४६ माइलनी शरु थाय छे. १८३ माइल चाल्या पछी अत्तरनी धर्मशाला आवे छे, तेनी सामे लीकी छम एक मनहरणी वाटिका छे, त्यां मोसमने वखते फळफूळं वगेरे वेचा य छे. धर्मशाळाने एक छेढे वे ओरढीओं छे. जे मुसाफरो मजले मजले रोकाता होय तेओने माटे घणुज सारुं विश्राम स्थळ छे. २२ माइल पहोंच्या पछी एक टेकरीमांथी वहेता झरानी जमणी वाजुए रस्तो उतरे छे. ए अरो ओळंगवाने जाळीनी माफक गुंथेको काप्टनो पूळ छे ते उपर थइने 🚆 टहुओं जोगवंध जाय छे. अने त्यांथी मरी तरफ जवाना मार्गनो चढाव शरु थाय छे. प्रथम एक उन्नत धार नजरे पडे छे अने तेनी वाजुए रहेला ट्रेड वंगला सूधीनो रस्तो डावी वाजु तरफ गोळ**े** चक्कर एक ढोळावनी पास थइ अनेनासनी झाडीने अडकतो चाल्यो जाय छे. ट्रेड बंगलो समुद्रनी है सपाटीयी लगभग ४००० फीट उचो छे; तेनी अंदर दरेक प्रकारनी सगवड छे. तेनी सन्मुख डंची नीची टेकरीओ तथा जमणी वाजुए अनेनासनां हुक्षोतुं शोभायमान वन दृष्टिगोचर थाय छे, परंतु डावी वाजुए एके द्रक्ष देखातुं नथी. सायेनी टेकरी उपर व्हेरेगीरने रहेवा माटे उन्नत मिना-रो वाधेलो छे. ते खास दर्शनीय छे अने तेना उपरथी दृष्टि घणे दूर पहोंची शके छे. त्यांथी मार्ग _ जमणी वाजुए वळे छे अने मरीना दारुना कारखाना तरफ जाय छे सन्ध्या समये त्यांना मेदा-ननो देखाव उपर कहें ही धार आडी आववाधी जोइए तेवो ज्ञोभारपद थतो नथी. ट्रेड वंगलाथी है सन्नीवेंक सूधी चढाव घणो छे अर्थात् दश माइलना अंतरमां वे हजार करतां पणवधारे फीटनो चढा व छे; अने एटलाज माटे थोडे थोडे अंतरे अश्वोने वदलवा पडे छे. वाकीनी चार मजलो अनु-

[७५७]

क्रमे २६, २६, २६, ३०, माइलनी छे, मार्ग जमणी तरफ वळी वांको छुंको उक्त धार उपरना मिनारा पासे थइ जाय छे, जेम जेम दूर जनाय तेम तेम ट्रेड वंगलो झांखो झांखो देखाय छे अने आखरे ते धारनी पछवाडे आच्छादित थतो जाय छे, त्यांथी एक वीजी धार झरु थाय छे अने मार्ग वांको छुंको थइ मरीना परूपात दारुना कारखानाने घसतो चाल्यो जाय छे. त्यां जमणी वाजुए एक शोभायमान वन छे अने त्यांसुधीनो मार्ग ३२६ माइल धाय छे. दारुना कारखानाथी जरा दूर रस्ता उपर पोस्ट ऑफीस तथा तार ऑफीमनां मकानो छे, जो कोड मुसाफरने मरा रोकाया विना परवारुं चाल्या जबुं होय अने अगाउथी चा तथा नास्ता वगरेनी सगवड कराववी होय तो कोहला मुकामे तार करने जोइए, मार्गनो डावी वाजुए लक्करी मोदीखानानी वखारो छे. त्यांथी रस्ताओ एक वोजाने चीरी लुदा पडे छे, जमणी वाजुनो मार्ग पोणावे माइल सूची पाछो मरी तरफ जाय छे अने ढावी वाजुनो मार्ग परवारो कोहलाने काजमीर तरफ जाय छे, ज्यां जभय मार्ग एकत्र थाय छे त्यां आगळ सन्नीवेंक होटेल छे, ए लगभग एनीलनी ता. १५ मीथी खुली मुक्तवामां आवे छे अने त्यां अगाउथी तार अगर पत्रद्वाराए खबर आप्या होय तो खावापीवानी तमाम सगवड तैयार राखवामां आवे छे, सन, १८९०-९१-९६ मां वाराकू अने सन्नीवेंक वचेना मार्गमां घणो सुधारो करवामां आव्यो छे.

सन्नीवंकथी कोहला पर्यन्त २०॥ माइल नो अंतर तथा ४००० फीटनो ढाळाव छे. ए मार्ग सने १८८७ ना अकटोंवर मासमां खुलो मुक्तवामां आव्यो हतो. त्यारवाद तेनी वन्ने वालुए छाती समाणी पाळ बांधी सुवारो करवामां आव्यो छे. सन्नीवेकधी ए लगभग सपाट छे अने टेक्सीना पश्चिम विभागने आंटो लइ रिक्रियामणा अनेनास तथा साइकेमोर वंगेरे हक्षोमां थइ जाय छे. एवो मनोरंजक देखाव त्याथी सो माइलने छेटे मात्र उरीनी पेळो तरफ जीवामां आवे छे. चार माइल चाल्या पछी मार्ग धार नीचे थइ जाय छे, ते वारने मथाले टोपानो केम्य छे अने तेनी समीपे एक महोडं स्मशान छे. कोहला तरफ नो खरेखोर ढोळ त्यांथी शह थाय छे. चार पांच माइल सुवीनो मार्ग जंगळी अनेनाम तथा ओकना हमसमुद्दाय वचे थइ जाय छे. त्यारवाद टेक्सीओनी आज्वाज अतंष्य न्हाना न्हानां गामडांओ देखाय छे. जमणी वाजुए पीरपंजल पर्वत वंसत ऋतुमां वरफथी आच्छादित होवाने लीचे अद्युत रमणो नाने धारण करे छे. जेम जेम नीचाणपां गमन थाय छे तेम तेम हिट्यियीदा मंक्कोचानी जाय छे अने देवावो पग कंइक कंइक नीमस थता जणाय छे. ताप सखन पडे छे अने अन्यार माइल चाल्या वाद जेलम नदीनुं सरणं

रुपेरी रंगनी रेखा माफक घणे दूरथी चक्षुपये चडे छे. त्यारवाद जरा आगळ वधनां देवालनी डाक बंगलो लगभग त्रण माइल दूर डाबी वाजुए देखाय छे. त्यांथी मार्ग नेलम नदीने किनारे किनारे चाले छे. जेलमना धोधनो गहर अवाज कर्णपर अथडाय छे. डावी वाजु वळतां खानेरना घोत्रने एक पाका पूछपर थइ उछंत्री शकाय छे; ए घोष टेकरी उपर आवेला सुशोभित हूंगागळी स्थळनी पेळीपेर दोढ माइल दूर रहेळा एक पर्वतमांथी नीकळे छे. पूलनी वीजी वाजुए वांकोचुंको तेमज खडवचडो मार्ग वांधकाम खातांनी ऑफीस तरफ उंचाणमा जाय छे; त्यांथी आसपासनो देखाव घणोज मनोहर होवाथी हृदयने प्रफुद्धित वनावे छे अने एथी उन्नत मार्ग-पर चढवाना परिश्रवनो समग्र बदलो बळी रहे छे. कोइला पासेनो मार्ग लगभग सपाट छे, त्यांनो वंगलो एक न्हानी सरखी टेकरी पाछळ रहेलो होवाथी वरावर हिन्दगोचर थतो नथी. सघळो सामान मजुरो पासे उपडावी लड़ जवो पढ़े छे अने तेयी वर्षाऋतुमां मुसाफरोने विशेष हाडमारी वेठवी पडे छे. मार्गथी उंचाणमां पूल पाते नवी वजारनी अंदर पोष्टऑफीस तथा तारऑफीसनां मकानो छे. वंगलामां सगवह घणी सारी छे अने उनाळामां पुष्कळ ताप पडतो होवाथी त्यां पंखा पण राखेळा छे, त्यांथी जरा उंचाणमां आवेळ नाथीआ गळी पासे मुसाफरो वगेरेने मोदी-खातुं पुरुं पाडनार गाणस पटेटां आदि ज्ञाकपाको ववरावे छे, पीवातुं पाणी नळवडे छाववामां आवे छे. त्यायी आगळ वधवा माटे टांगा के मज़ुर कांइ पण मळतुं नथी. खाछी एकाओ वखते मळी शके, परंतु सळंग जवा माटेनी समग्र सगवड मरी अथवा रावछपींडी मुकामथीज करी छीधी होय तो मुसाफरी सुलदायक निवडे छे. मजल दरमजल विश्वानित लेना मुसाफरोने माटे टांगा तथा वळदनी गाडी करतां उंटतं वाइन वधारे सुगमता भरेखं जणाय छे.

त्रीजो तथा चोधो मार्ग कोहलाथी श्रीनगर स्वीनो छे, ए वने शहर वचे १३६ माइछ-नो अंतर छे अने चढाव ३६५० फीटनो लेखाय छे. कोहला समुद्रनी संगाटीबी २००० फीट तथा श्रीनगर ५६५० फीट उंचु आवेछं छे. ए एकसो वत्रीश माइळना अंतरमां नव मजल राख-वामां आवी छे.

पहेली मनल कोहलाथी इलाइ पर्यन्त वार माइलगा अंतरवाळी छे अने तेनो चढाव २००० थी २१८१ फीट सूबीनों छे. उत्तर कहेल वंगलाथी नीवे उत्तरतां लोडाना गडरवाळो तथा वन्ने वाजुए न्हाना कठोडावाळो पूल छे ते उपर थइने जेलम नदीने ओळंगी काश्मीर प्रदेशमां दाखल थड शकाय छे ए पूलपर चालनार मनुष्य तथा प्रग्न दीठ वेरो लेशामां आवे के. पूल ओ- ळंगी काश्मीरमां प्रवेश करतां कस्टम हाउस नजरे पडे छे अने त्यां दर टांगा दीठ हा. ? १ छइ आगळ जवा दे छे. ए सिवाय क्वेंडमीरमां वीजे क्यांड कर लेवानो रिवाज नथी, सने १८७१ मां जेलम नदी उपर एक रमणीय झुलावुल वांधेलो हतो ते १८९३ ना पूरमां तणाइ जतां १८९५ 🛴 मां फरी नवो पूल वांधवामां आव्यो छे, ए पूल एटलो वधो उंचो छे के पाणीतुं महान पूर तेनो स्पर्श करी शकतुं नथी. ए पूलएां एकंदर एकलाख अने वीशहजार रुपिआतुं खर्च थएछं छे, तेपां काइमीर महाराजाए नामदार इंग्रेजसरकारने भाग आपेलो छे. पूछ उतरतां जेलप नदीनी खीणनो नवो मार्ग चाले छे, ए प्रसिद्ध मार्ग पजाव तथा काउपीरना प्रदेशोने एकत्र करे छे अने जेलपने डावे किनारे घइने वारामुला पर्यन्त जाय छे. सने १८८० मां ए नविन यार्गतुं वांधकाम शरु थयुं इतुं अने १८९० मां ए मार्ग काव्मीरना महाराजा प्रवापसिंहजीने हाथे खुद्धो मुकायो हतो. उक्त मार्ग उपर चकोटी नामे गाम छे, त्यांथी मुसाफरोने जोवातुं घणुं मळी शके छे. ए मार्ग पर्वतमांथी कापी काढेलो छतां वहु खडवचडो होवाथी टांगाओ घणी मुङकेलीए चाली शके छे. कोइ कोइ टांगा पत्थर साथे अघटाइ भांगी पण जाय छे. ए उपरांत वाजुपर वखते बखते एवी उंडाण होय छे के नीची नजर करतां आखे तम्मर आबी जाय छे अने कोइ कोइ कटींग उपरना भाग एवा तो भयंकर रीत नभी रह्या होय छे के कदाच याथे पड़ी कचरी नां-खरो एवी मुसाफरोने देहेशत रहा करे छे. ए मार्ग वांधवामां घणां माणसोए जीदंगीनो भाग आपेळो छे. चकोटी तथा वारामुळा वचेनो मार्ग खुनी छे, आजुवाजुना जगल आदिनो देखाव साधारण छे, जेलम नदीना जोशवंध वहेता प्रवाहनो अवान मुपाफरना कर्णने वनावी दे छे. ए अवाज सिरतानी समीपे रहेलां वरसाला, डूलाइ तथा डॉमेल नामने स्थळे वहुज संभळाय छे. वारामुलाथी आगळना भागमां " कचेमा " नामनुं मेदान आवेछं छे अने पेली वा-जु शान्त रीते चाळतो नदीनो प्रवाह कर्णपिय जणाय छे. चकोटी तथा उरी पर्यन्त मेथी सप्टेम्बर मास सूधी गरमी सखत पडे छे, कोहला तथा डोमेलनी वचे २१ माइलनो अंतर छे, त्यां सवार-ना नव वाग्या सुधी टेकरीनी वाजुए छांयो रहे छे तथी प्रभातगंज प्रयाण करवुं ए प्रवासीने माटे खास आज्ञीर्वादरूप छे. डॉमेलथी आगळ मार्गनी दिशा वदलाय छे; जेथी वपोर पछी प्रगट थए-ल छायाने लीधे शान्ति पाप्त थाय छे. पूलनुं उद्घंघन कर्या वाद पोणा माइल पर्यन्तनो मार्ग वरा-वर उत्तर दिशा तरफ चाले छे. त्यांथी 🥇 माइल उपर वरसालानो वंगको छे, आखा काउमीर प्रदेशमां एवं मकान पहेल वहेलुंज वांधवामा आव्युं छे, ए स्थले गरमी वहु सखत पहे छे; तथा

जेलमना पूरनो अवाज कान साथे अथडाय छे. वरसालाथी जरा दूर पत्थरमांथी खोदी काढेली पहेलबहेलो जभीन नीचेनो मार्ग आवे छे; ए उपर एक न्हानो सरखो पूल वांधेलो छे. ३५ मा-इल चाकतां सहदेशनो उन्नत प्रदेश आवे छे. त्यांथी मकराह गंगानो वरफना शिखरवाळो महा-न् पर्वत नजरे पडे छे, ए पर्वत खगनमां किसनगंगानी खीण उपर आवेलो छे. त्यारवाद अत्तर-नो फलदूप रसाल पदेश देखाय छे, अत्तरथी अगर नदी नामना कोहला तथा वारामुला वचेना सौथी म्होटा झरण सूधी मार्ग वांकोचुको एक माइल सूधी नीचे उतरे छे. ए झरण ओळंगवाने लोढाना गहरनो पूळ बांधेको छे, ए घोवनो ज्यां जेलम साथे संगम थाय छे त्यां थतो अवाज घणा माइल सूबी संभळाय छे; त्यांथी मार्ग नदीने किनारे किनारे अडीने चाल्यो जाय छे. त्यार-वाद वचमां एक वीज़ुं झरण आवे छे. १८९१ मां ए झरामां एवं महान पूर आव्युं हतुं के तेना वेगथी जमणे किनारे चालती लोट दळवानी चकी तणाइ गइ इती. एवी चकीओ दरेक धोधने लगती वांधवामां आवे छे अने ते जळना जोर वडेज चाले छे. सने १८९१ ना अक्टोवर मासमां नामदार वॉयसराय कॉर्ड व्हॅन्डझ डाउन ए रस्ते थइ काइमीर आव्या त्यारे उक्त घोध उपर एक इंगामी पूळ मुकवामां आच्यो हतो अने त्यारपछी १८९२ ना जान्युआरीमां पाको पूछ बंधायो छे. बराबर बार माइल पूर्ण थतां डूळाइनो वंगलो आवे छे अने ते तदन नजीक गया पछीज नजरे पडे छे, तेमां उत्तम प्रकारनी सगवडो तैयार राखवामां आवे छे; ए वंगलो तथा डॉमेल अने धारीना वंगलाओं भी. एटकीन्सने वांधेला छे.

इलाइथी डॉ मेल पर्यन्त ९ माइलतुं छेटुं छे.

इलाइयी एक न्हाना नाळा उपर थइने रस्तो चाले छे, त्यार पछी वे धोधवाओ सामी वाज्यप्यी एक वीजामां भळे छे. त्यांथी दोढ माइल आगळ चालतां मूकरा नामनो महान् पर्वत नजरे पडे छे. ए पर्वत किसनगंगा नदीने जमणे किनारे अफघानी मदेशमां आवेलो छे. त्यारवाद नेनप्लख नदी खगन पर्वतमांथी निकळी जेलम नदीनो जमणी वाजुएथी संगम करे छे. ए नदी बीटीश तथा काञ्मीरना राज्यनी सरहद छे. चार माइल आगळ चाल्या पछी जेलमने सामे किनारे एक ताढतुं झाढ छे अने पांच माइल चाल्या पछी केटलीक टेकरीओ नजरे पडे छे. चाह वाह्यी जरा आगळ छटो माइल पूर्ण थतां एक खीण उपर महोटी भेखड धसी पडेली छे. त्यारवाद एक झरण उपर मजवूत लोढाना गढरनो पुल छे. सातमे माइले जेलम नदी जमणी तरफ वळे छे अने त्यां जळना जोरथी मीलो चाले छे. आठमे माइले किसनगंगानी खीण उपरनो देखा

· PSTOR

CIFU (000)

व घणोज मनोहर मालूम पडे छे. त्यांथी जरा दूर मुगळ पातशाहना समयमां वंधावेळी धर्मशाळा छे. तेनी नजीक चारे वाजुए ढळता पर्वतोनी वच्चे मुजफरावाद नामनुं शहर सुंदर वागवणीचाओथी प्रकाशी रहेलुं छे. त्यांथी एक माइळ आगळ चाळतां मार्ग नीचाणमां हाक वंगलापर्यन्त पहोंचे छे, धारी जता मुसाँकरों ते स्थळे चा नास्तो छे छे. मुजकराबादथी डॉमेळ सूबी गाडा रस्तो छे, डॉमेळबी अध माइळ दूर मुजफराबादने मार्ग किसनगंगा नदी उपर झूलापूल छे. उत्तर पश्चिमनी रेल्वे जामू तरफ ताबी स्टेशन सूधी जाय छे. ताबी नदीनो उत्तरे उदमपुर सूबी तैयार थएली सांकडा पाटावाळी सडकपर पाणीना जोरथी बीजळीक रेल्वे चाळे छे. इसन अव्दल्ली डॉमेळ सुबी तथा रावलवींडीथी डॉमेळ सुधी _ एक सरखो अंतर छे; परंतु पाछलो मार्ग वर्षमा घगां अव्याहीओं पर्यन्त वरफवी आच्छादित रहे छे.

साडापांच माइल पहोंच्या पछी एक हमेशने अंतर छे, ए मार्गमां काड विशेष जाणश जेवुं नयी. साडापांच माइल पहोंच्या पछी एक हमेशने माटे लोखं देखातुं जूनीपर नामतुं दृक्ष नजर पडे छे, तेनी समीपे टींडालीनो पूर्वे एक मजबूत किल्लो हतो, परंतु सांपत समये तो तेनी स्हेजस्हाज निशानीओं रही गएली नजरे पहे छे. ए स्थळे जेलमनो प्रवाह जोशवंध वहे छे. सामे कितारे एक भेखड उपर अनेनासनां दृक्षोनो कत्यो रिल्यामणो जणाय छे. त्यायी पेणा माइल उगर धारीनो वंगलो हृिगोचर थाय छे. तेनी सामे शीख लोकोनी वस्तीवालुं रातडीआ खडक उपर वांधेलुं हटी-याना नामनुं गामहुं छे. त्यां गरमी हदउपरांत पडती होवाथी लोको घणखारे समय जेलमनी अंदर र न्हावामां वितावे छे. दूर नदीने उपरवास दोरडाथी वाधेलो झूलापूल छे अने तेनी नीचे गाड दृक्षो नदीना वेनमां उपेला छे, तेनी पेलीपेर सर नामनुं गामहुं तथा तळाव उपर छूटी छवाइ टेकरिओ नजरे पहे छे. झूलापूल उपर थइने नदी ओळंगतां लोको चहुज भयभीत वने छे, महान पर्वतना कराड चहवामां जेओ हिम्मतवान होय छे तेओ उक्त पूलते उल्लंपवामां आंचको खाय छे, काची छातीना मनुष्योन ए पूल उपरथो आखे पाटा वांवीने अथवा झोळीमां नांखी कांइ सामाननी माफक लड़ जवामां थावे छे, वळी कहे छे के गीलगीट पासे एवोज पूल होवाथी तेने ओळंगवानी धास्तीन लीधे त्यांना घणाखरा लोको वहार नीकळ्याज नथी.

धारीथी चकोटी सूरी प्रश्न माइलनो अंतर छे. धारीनो वंगलो मुकी आगळ वधतां क्रिमानी जमणी वाजुए हाहेरनी वजार अने डावी वाजुए झुलापूल छे. त्यारवाद मार्गना मध्य भागमां एक टेकरी आवे छे. ए टेकरी वहुज जनत तथा मार्गनी वच्चोवच्च होवाथी मी. एटकी-स्तने १०० यार्ड सूबी मार्ग कोतरी कढावेलो हतो. सने १८९० सूधी माणसो ए रस्ते माल

कावता तथा लड़ जता, त्यारवाद एक जगोए अंदरनी भेखड तूरी पडवाथी ए मार्ग वंध करवामां आन्वो, हाल घणे फरी दूर टेकरोने फेरो लड़ वहु छेट जर्नु पहे छे. कोटल टेकरीनी तळेटीमां सर नामतुं गामहुं छे, त्यांथी हटीयाननो झरो आवे छे, तेना उपर लोढाना गडरनो पूल छे.
त्यांधी अर्ध माइल आगळ चालतां जेलम नदी उपरनो झूलापूल ओळंगवो पडे छे. त्यांथी अढी
माइलने छेटे एक वंगलो छे अने ते पछी नेलीनी खीणनो उंडो मार्ग आवे छे. ए उपर पण
लोढाना गडरनो पूल छे. त्यारवाद कथाइ नामतुं नालुं आवे छे अने त्यांथी मार्ग महोटा कटींग
वच्चे थड़ जाय छे. एथी आगळ नदीने जमणे किनारेथी एक महोटी भेखड १८९१ ना मार्च
मासमां नदीनी अंदर धसी पडेली छे. एथी आगळ चालतां मार्ग एक सीधी टेकरी उपर जाय
छे. ए मार्ग एकदम उंचो होवाथो केटलांक माणसो तथा वळद अने घोडा वगेरे पशुओ पडी
माण रहित थयां छे. उक्त मार्ग ओळंग्या पछी चीर नामतुं नालुं आवे छे अने त्यांथी जयकूलनो
रमणीय धोध नजरे पडे छे. पछीथी मार्ग एक उंची टेकरीनी कोर उपर थइने जाय छे अने तेनी
ढळती वाजुए आडी पाळ तरीके छाती समाणो दिवाल वांधेली छे. त्यांथी एक माइल दूर
धोलेली दिवालोवाळो वंगलो देखाय छे, तेनी सामे हिन्दुस्थानना अंग्रेजी लग्जरता नामदार
मुख्य सनापित माटे सने १८८९ मां वांधेलं काछतुं हंगामी मुकाम छे. वंगलाथी अर्ध माइलने
छेटे सने १९०९ मां वांधेला झुलापूल उपर थइने जेलम नदी ओळंगाय छे.

चक्तोटीथी उरी पर्यन्त १३ माइछनो अंतर छे. चक्तोटीथी मार्ग एकदम उंचाणमां जाय छे अने ए तेर माइछनी मजछमा टागाना अश्वोने व वखत वदछावत्रा पडे छे. ए मार्गमां सर्वथी विक्राळ अने भयंकर महोटा पर्वतीनी कोरो उपर चाछत्रुं पढे छे, ए कोर आहा काष्ट्रना कटीहा वांध्या पहेछां घणा एकाओ तथा मुसाफरो पडीने मरण पामता. चक्तोटीथी चाछतां तवारावादतुं पहेछुं नाछुं आवे छे; ए नाळां उपर सने १८९० मां कोढाना गढरनो पूछ बांधेछो छे, त्यारवाद ओपीतुं हुंगर उपरतुं सपाट मेदान आवे छे; अने ते पछी अरुसा नामतुं गामहुं देखाय छे, त्यां केटछीक भेखड धसीने नदीमां पढेछी जणाय छे; अने तेणे नदीना घणाखरा प्रवाहने रोकी दीधेछो छे. त्यांथी दोढ गाइछ स्रीनो मार्ग दादेकोट पर्यन्त उंचाणमां जाय छे. दादेकोट पासे जेछम नदी वन्ने वाछुए महोटा खडकनी खोमां थइने वहे छे. दादेकोट मूक्या पछी मार्ग घणाज उंचा अने सांकडा कटींगमां थइने जाय छे. केटछाक कटींगो मार्गथी छगभग २५० फीट उंचो छे. आटमा अने नवमा माइछ वन्ने प्रख्यात खुआडंगाना उंचा खडक जोवामां आवे छे, त्यां ४००

यार्ड सूधीनो मार्ग मजबूत खडकमां थई कांपेलो छे अने एक वाजुनो कटींग सीधो २५० फीट निचे तहन नदीना किनारा उपरज छे. त्यां नदीने सामे काठे पण तेटलोज उंचो खडक जोवामां आवे छे. घणां खडकोनी टोंच नदीना मवाह उपर तोलाई रही छे. ए उन्नत खडक मृक्या पछी मार्ग एक न्हाना कटींगमां थई खालजीना उन्नत मेदानमां निकले छे. त्यांथी मार्ग लगभग सहेलो तथा सपाट छे अने उरीनो वंगलो दृष्टिगोचर थाय छे. त्यारवाद इस्लामावादनुं नालुं आवे छे, पूल वहे नालुं ओळंग्या पछी मार्ग उरी तरफ एकडम उंचाणमां जाय छे. उरी गाम जमणी तरफ एक टेकरीनी वाजुए थोडां गृहोवालुं छे, तेनी समीपे समुद्रनी सपाटीथी १९४४५ फीट उंचुं काजी नामनुं शिखर छे. उरीनो जुनो वंगलो सने १८८५ मां भूकम्पथी अने सने १८९० मां आग लगनवाथी छिन्नभिन्न थइ गयो हतो तेने हाल दुरस्त करावी पोष्टओफीस तथा तारओफीस तरीके वापरवामां आवे छे. उरी गाम खुल्ला मेदानमां उन्नत स्थळे वसेलुं छे. छतां त्यां गरमी वहुज सखत पडे छे.

उरीधी रामपुर सूथी १३ माइलनो अंतर छे. ए मार्ग छेहा आठ माइलमां लीलोतरी राळां जंगल, रिल्यामणा पर्वतो तथा जेलम नदीना मधुर अवाजे पडता धोघवाओधी मुसाफरोने
अत्यन्त आनंददायक थइ पढे छे. उरीधी थोडे दूर गया वाद तुरतज नामदार महाराजा साहेवतुं
गेस्टहाउस देखाय छे; त्यारवाद ए मार्गनो हाजीपीरना मार्ग साथे संगम थाय छे. पछीनो मार्ग
नीचाणमां थइ नमलाना घोघ उपर पूल उल्लंघीने जाय छे. पूल उत्तर्या पछी दोढ माइल सूथीनो
मार्ग उभा अने भयंकर कराडमां थइ उंचाणमां चाले छे. एथी आगळ चालतां मुगल पातशाइना
वस्ततमां वंधापली एक धर्मशाळा आवे छे. त्यारवाद साडापांच माइल राझरावेन नामतुं थाणुं छे,
त्यांथी मार्ग तद्दन सरल होवाथी श्रमित् थएला मुसाफरोने समशीतोष्ण प्रदेशमां दृष्टिगोचर थतां
मनोहर देखावोथी पुष्कळ आनंद पाष्त थाय छे. पछीथी देवदारना हक्षसमुदायवाळो प्रदेश आ
वे छे, त्यांथी अढार माइल दूर कचाहमा सूथीनो मार्ग जंगलमां थइने नदीने किनारे किनारे जाय
छे. एक जगाए मार्गनी नजीकज जेलमनो घोघ वहे छे अने एकापर आरूढ थएला यात्राहुओने
ते घोघमांथी जडता जलकणवाळा शीतल समीरनी लहरीनो अद्भुत आनंद मळे छे. ११ माइल
पहोंच्या पछी अपुरातनी पांडुग्रहतुं मन्दिर एक मेदान माथे वांथेहुं छे. त्यांथी रामपुर वे माइल
दूर छे, ए मार्ग घणो सरल छे अने तेनी जमणी वाजुए वोनीआर नामनां नाळांसुबी भूरा तथा
काळा पत्थरनी टेकरीओ जोवामां आवे छे. आजुवाजु विराजी रहेली उन्नत टेकरीओ वच्चे एक

रमणीय मेदानमां रामपुरनो वंगलो छे, त्यांनी हवा शीतल अने माफक आवे एवी छे. ए वंगला आगळ स्टेट पोष्टओफीस छे. त्यांथी एक माइलने छेटे जेलम नदी उपरनो चोथो तथा छेलो झूलापूल देखाय छे. + बोनीआर पासेनी हुन्नरज्ञालाओ खास जोवा लायक छे. ए मकानो सने १८९० मां भी. वेइन्से वांधेला छे. त्यां काष्ठ कापवानां यंन्त्रो ४८ इंच व्यासवाला काष्ट्रना सपाट चक्रवडे चाले छे. ए चक्र पाणीना जोरवडे फरे छे अने ए पाणी वोनीआर नालामांथी पत्थरना हारवंध वांधेला स्तंथो उपर रहेला काष्ट्रना धोरीआ वडे त्यां लाववामां आवे छे. ए कार्यालयथी सरीयाम रस्ता छुधी नहानो गाहा मार्ग छे. अने त्यांना उपरी एन्जीनीयरने रहेवा माटे ए स्थले एक नहानो सरखो वंगलो पण वांधेलो छे.

रामपुर्यी वारामुछा पर्यन्त १०० माइलनो अंतर छे. ए मार्ग काडमीरनी सुंदर खीणमां जाय छे, शरुआतमा केटलाक कर्टागो चीरी चालबुं पहे छे, ते पछीनो मार्ग बोनीआरनी खीणमां धइ पीरपंजल पर्वत तरफ जाय छे. बोनीआरनां नाळांनी आजुवाजु सुंदर अनेनासनां दृक्षोवाळां जंगल तेमज रमणीय पर्वनो ६काशी रहेला छे अने गुल्पमीनी वाजुमां उन्नत तेमज सपाट भूमिवा-ळां मेदान काडमीरना सौन्दर्यतु सारी रीते भान करावे छे. त्यांथी त्रण माइल आगळ चाल्या पडी पांचीयातुं जीर्ण देवालय आवे छे. ए पछीनो मार्ग सुंदर देवदारना जंगलोमां, न्हानी टेकरी-ओनी वाजुमां, फल्टहुप दृक्षोवाळां क्षेत्रोमा तथा छुटां छवायां गामडांओबाळां मेदानमां थइ जाय छे. त्यांथी एक सांकडो रस्तो पर्वत उपर थइ २४ माइल दूर रहेला गुल्पमं तरफ गित करे छे. सरियाम रस्ते नवशेरा पहींच्या पछी एक किल्लाना खंदेर नदीने सामे किनारे नजरे पडे छे. ए किल्लो १८९५ ना मे मासमां थएला काझीरना महान् भूकम्य वखते पडी भांग्यो हतो अने तेमां २००० गृहो, ३०००० पशुओ तथा २००० मनुष्यो विनाश पाम्यां हतां. नवशेराथी वे माइल दूर् घंटामुछा नामनुं गामडुं छे, त्यांथी मार्ग नीचे उतरे छे अने तुरतज कचेहामानुं मेदान आवे छे. ए मेदानमां ढागरनां क्षेत्रो तथा जंगली चीआनां दृक्षो जत्थावंथ छे; त्यांथी एक माइल दूर शेरी नामनुं गामडुं आवे छे, अने त्यांथी मार्ग एक नीचा कटींगमां थइ वारामुछानी आ वाजुए २३ माइल पर रहेला एक सेटा सूरी जाय छे. त्यांथी आगळ चालतां जरा दूर गुलमर्गना रमणीय पर्व-

⁺ पहें छो धारी पासेनो, वीजो चकोटी पासेनो, त्रीजो उरी पासेनो अने चोथो रामपुर पासनो

~~~

तो ननरे पडे छे. एथी जरा आगळ चाळतां वारामुळा नामना सुंदर हाहेरनो सोमाडो आवे छे. भरिशयाळामां वारोमुछाथी रामपुरनी पेळी वाजु सुधी नदीनो ढावो किनारो वरफथी ढंकाएळो रहें छे; परंतु जपणा किनारा उपर तो सखत गन्मी पडती होवाने लीधे वरफ ओगळी जाय छे अने किनारो स्वच्छ रहे छे. वारामुहाना परा नजीक पहोंचतां ववे माळनां लोढानी गुंयेल जाळी-ओवाळां ग्रहो नजरे पढे छे; शीतकाळमां ए जाळीओने कागळ वडे आच्छादित करवामां आवे छे. कारणके काइनीरना अद्यापि काच नपरायों नथी. डावो वाजुए रहेळो जीवारत मुसाफरोतुं खाँसैं ध्यान खेंचे तेवी छे. एशील मासमा तेनी आसपास रहेला लीलीनां पुष्पे। ए स्थळना सौन्द-र्यने पुष्टि आपे छे. जीगारत पर्यन्त पहोंच्चा पहेलां एक चोगाननी अंदर स्वन्छ पाणीतुं तळाव, मीं अपाणीनों झरो तथा एक सुंदर चीनारनुं द्वक्ष जोवामां आवे छे. त्यारवाद नदीने जमणे कि-नारे वारामुल्ला नामनुं रमणीय शहेर तथा तेनी खोणनी आसपास भव्यताने धारण करी रहेळा भभकादार वरफना शिखरोवाळा पर्वतो दृष्टिगोचर थाय छे. शहेरनी समीपे नदी उपर देवदारना काष्ट्रना पूल बांधेलो छे. तेनी नजीक सने १८८५ मां नारा पामेल किल्लाना खंडेरा देखाय छे, तेनी आगळ पोष्छरना द्रक्ष समुदायथी विराजी रहेलो मार्ग एज तरुटन्दमां थइ डावी वाजु तरफ वळे छे अने पोष्टऑफीस पासे थइ नदी किनारा नजीक वंगला तरक जाय छे. मुसाफरो त्यां खानपान छेवा रोकाय छे. नदी मार्गे जती होडीओने माटे पण अटकवातुं एज स्टेशन छे. सने. १९०१ थी डाक बंगलाना उतारुओ माटे मीटा झराना जलतो त्यां संग्रह करी राखवामां आव्यो छे. त्यांथी पूर्व दिशा तरफ नामदार महाराजा साहे ।तुं पाचमुं गेस्ट हाउस छे.+ पूळनी नजीक रटेटतुं दवाखातुं छे. काश्मीरनी सुंदर खीण वारामुङ्घाथी शरु थाय छे. अग्निकोणमां अञ्कराहतुं देवालय सने. ७२३ थी ७६० सूधीमां वांघेढुं वीज्ञप कान्वीए शोधी कहाडयुं छे.

वारामुङ्घाथी श्रीनगर पर्यन्त ३४ माइलनो अंतर छे अने तेटलामां छ मजल योजवामां आवेल छे.

पहेली मजलमां स्वरूप समय थयां मार्गने सुधारवामां आच्यो छे. वे माइल चाल्या वाद नंगा पर्वततं १६६५६ फोट उंचु शिखर स्वष्ट रीते देखाय छे.

<sup>+</sup> पहेळुं वरसाला पासे, वीजुं डॉमेल पासे, त्रीजुं धारी पासे, चोयुं उरी पासे अने पांचमुं वारामुळा पासे.

वीजी मजलमां उत्तरे एक नीची वादळी रंगनी टेकरी नजरे पढें छे, तेना उगर ग्रुक्रुदीननी जीआरत छे, त्यारवाद वंदीपुरनी खीण अने तेनी स्हेज दक्षिणे १३००० फोट उंचुं अफरवाटनुं शिखर छे. भलगामना पर्वतमांथी हिर पर्वतनो किल्छो नजरे पढे छे. उत्तरे अहाटांगनी न्हानी टेकरी छे अने तेनी तळेटीमां मनस्वाग नामनुं सरोवर शोभी रहुं छे.

त्रीजो मजलमां मथम हावी वाजुए पालहालन नामनुं गामहुं आवे छे, त्यांथी अर्ध माइ-लने छेंटे पाटणनो रिलयामणो सुसाफरी वंगलो छे अने तेना कम्पाउन्डमां जमीननी अंदर मीठा पाणीनो झरो नीकलेलो छे. ए जल मनुष्यनी तंदुरस्तीने जालवनाई छे.

चोथि मजलमा प्रथम पीरपंजलना पर्वत नगरे पहे छे, त्यारवाद तुलसीतुं मेदान, अलीयाबादनो मार्ग, बुदिलनो मार्ग अने कोंसानी टेकरी वगेरे आवे छे. त्यांथी १२७४१ फीट उंचुं इंडवारनी खीण उपर आवेलुं छुंदर तव नामनुं शिखर द्रष्टिगोचर थाय छे. ते पछी जमणी वाजुए हिर पर्वतनो किल्लो तथा तेनी वाजुए १३००० फीट उंचो महादेव पर्वत देखाय छे. खीणना पूर्व तरफना छेडाने शनैः शनैः वंघ करता वरफवाळा पर्वतो वसंतऋतुना दिवसोमां घणोज मधुर देखाव आपे छे; परंतु ताप पडवाथो ज्यारे वरफ ओगळी जाय छे त्यारे वधी खूवी जती रहे छे.

पांचमी मजळमां दिलणे गुळमर्गना पर्वतो द्रष्टिगोचर थाय छे अने जमणी वाजुए मीरकुंड नामतुं महोद्वं गामडुं आवे छे. ए पछी नर्वळ नामनुं गामडुं ननरे पढे छे अने त्यां एक राक्षसी-कदतुं चीनारतुं दृक्ष उगेछुं छे.

छट्टी मजल चक्कथी श्रीनगर सूचीनी गणाय छे. ए मजलयां जेलम नदीनां फरी दर्शन धाय छे, मार्ग त्यांथी पारनचाँनी पर्यन्त जाय छे. ज्यारे नामदार महाराजा दर वर्षे श्रीनगरनी सुलाकात ले छे त्यारे ए पारनचाँनी पासेथी नौकापर आरुद थाय छे अने तेमने जीवा माटे वने किनारा खपर जत्थावंथ मतुष्यो एकत्र थाय छे. आगल जतां जमणी वाज उपर गोळीवहारना निज्ञानतुं स्थल, अरततुं मेदान तथा वन्हस्टन्ह वगेरे आवे छे. ते पछीनां मार्ग काष्ट्रना पूल वहे दुग्धगंगा नदीने ओळंगी जाय छे अने त्यांथी स्टेट जनाना हाँस्पीटल तथा हेडोतुं मरूपात ज्ञेतरंजीनुं

कारखातुं आवे छे. त्यारपछीनो मार्ग ढावी वाजुए म्युनीसीपल ऑफीसतुं मकान म्की एक रिल-यामणी वजारमां घइ श्रीनगर पासेना सात पूल मांहेनो पहेलो पूल ओलंगे छे अने त्यांथी वीजी वजारमां थइ मुनशीवाग तरफ चाले छे. जमणी तरफ म्होटा भागमा आवेलुं जे मकान प्रथम खी-स्तीना देवळ तरीके वपरातुं हतुं ते हाल पव्लीक वक्षेनी ऑफीस तरीके वपराय छे. दक्षिण दिशा तरफ अंग्रेज लोकोनी स्मशानभूमि छे अने पूर्व तरफ ग्लीस्तीना मिशनरीओनां मकानो छे. एथी आगळ चालतां नदीना किनारा सामे केटलीक दुकानो छे. डावी तरफ गार ऑफीस अने तेनी सामे पंजाब वेन्कींग कंपनीनां मकानो नजरे पडे छे, त्यायी गार्ग रेसीडन्सी तरफ वळे छे. पेष्ट ऑफीस मुक्या पछी रेसीडन्सीनी ऑफीसना नोकरोने रहेवानां मकानो आवे छे. पेष्ट ऑफीस सामे पोलो अने किकेटनां विशाळ मेदान छे. ते पछी सने १९०० ना एवील मासमां खोलेखं श्रीनगरनुं हॉटेलनुं मकान आवे छे. रेसीडन्सी मुक्या पछी नवो रीफेशमेन्टर्सम, लायबेरी, टेनीसकॉर्ट, मुनशीवाग तथा सोमवारवाग वगेरे एक पछी एक आवता जाय छे.

श्रीनगर एजन्सीनी एकाद कम्पनीने अगाज्यी छाती जणाव्युं होय तो वारामुछा पहाचता तुरतज तेमना तरफथी होडी वगेरे हाजर राखवामां आवे छे. हाजसवाटोनी योजना कर्नछ साटोंरीअसे सने १८८८—८९ मां करी हती. प्रथम वे होडीओना माछिक सर हावीं अने मी. केनाड
हता. मी. केनाडनी हाजसवाट हजी सूची नदीमां चाछे छे. त्यारवाद छुदी छुदी जातनी तथा
छुदा छुदा कदनी होडीओ योजवामां आवी छे. एवी घगीखरी वोटोने मनुष्यो गृह तरीके वापरे
छे. ए वेगवाळी तेमज सगवडवाळी होवा जपरांत चूछा वगेरे साधनोथी सुममृद्ध होय छे. हार्द्
ऋतुमां कोइ साधारण घर करतां ए वोटोमा गरमी ठीक रहे छे. सने १८७० थी १८८० सूचीमा
चाळती जूनी होडीओ हवे तदन वातळ थइ गई छे, छतां तेमां वारी वारणा वगेरेनी सगवडवापूर्वक सुधारो वधारो करवामां आव्यो छे, एमां मुसाफरी करवी सस्ती पडे छे अने ए कारणथी
ए वखते वखते वपराय छे. नवा मुसाफरोने जगावनुं जोइए के ए जीर्ण वोटोमां हमामखानानी के
फर्नीचर वगेरेनीकांइ पण सगवड होती नथी. भेंयतळीया जपर उधाडी काष्ट्रनी जमीन अने जपरनुं छापर्च ढळतुं तथा सामान्य होय छे. होडीना पाछला भागमां तेना माळिक पोताना कुटुम्ब सहित रहे छे, अने
ह्यारे तेमना तरफनो पवन मुसाफरो तरफ आवे छे त्यारे छसण अने हुगळीनी वास तेना ज्ञान्त मगजने
कान्त वनावी दे छे. पाकजाळा, परिजन तथा सरसमान माटे वीजी एक वे न्हानी वोटो

साथे होय छे. मुसाफरीमां पाकशाळावाळी बेाटने दोरडावती महोटी वोट साथे वांधी देवामां आवे छे अने तेमां पकावेछुं अन महोटी वोटमां छइ लेवाय छे. पुरुप, स्त्रीओ तथा वाळको ए तमाम खला-सी तरीके काप करे छे. काश्मीरनी कामिनीओ समग्र हिन्दुस्थानमां सुंदर गणाय छे. तेओ मरदोनी माफक वोटोमां खलासी तरीके महेनतमय जींदगी गाळे छे, छतां तेओना सौन्दर्यमां लेश पण वाध आवतो नथी, वलके ते वधारे सुटढ वनती होवाथी दीर्घ आयुष्य भोगववा समर्थ थइ शके छे.

श्रीनगर ए काइमीरनो राजधानीतुं शहेर छे, जामु तथा काइमीरना नकशा तरफ नजर करतां वायव्य कोणमां आछा रंगनी खडवचडी पटी चितरेली छे अने तेनी आसपास कृष्णवर्णना पर्वतोनी हारो कहाडेली छे. उपर कहेली आछा रंगनी खडवचडी पटी काइमीरनी खीणोतुं सूचन करे छे. ए स्वर्गीय अने परमानन्दमद धाम के जेतुं टॉमसमूर नामना कविए " लालारख " नामना ग्रन्थमा बहुज रसभिरत वर्णन कर्युं छे.

मी लीड्डेकरना मत प्रमाण काश्मीरनी खीण छीछरा वासणना आकारनी ८४ पाइल लांबी तथा २० थी २५ माइल पहोंळी छे. ए खीण समुद्रनी सपाटीथी ओछामां ओछी ५२०० फीटनी उंचाइ धरावे छे; तेनी चारे वाजुए जत्थावंध पर्वतो झुकी रह्या छे. दक्षिणे पीरपंजलना डुंगरों छे अने तेना ट्टाकूट तथा कोंसानाग नामना सहुषी उंचा शिखरों सागरनी सपाटीथी आशारे १५००० फीट उन्नत अकाय छे. उत्तरे हरमुख नामे पर्वत छे अने ते समुद्रनी सपाटीथी १६९०० फीट उंचो छे. पश्चिमे खगन तथा शामशिव्रायना वरफना शिखरों शोभी रह्यां छे अने पूर्वे वर्धमान खीण तथा कीष्ट्रवार उपरना भव्य पर्वतो किरतारनी अछौकिक लोलातुं भान करावे छे. खीणनी अंदर पीरपंजलना ढोलाव काला तथा भ्रुरा अनेनास नामना द्वक्षसमुद्रायथी ढंका-एला छे. शिआलामा ज्यारे पर्वत उपर वरफ जामे छे त्यारे खीणनो देखाव खरेखर मनोरंजक माल्म पडे छे.

उन्नत पर्वतोनी तलेटीमां घासवाळा मार्गो अथवा रमणीय मेदानो खास पेक्षकनुं ध्यान खेंचे तेवां छे. वधारे जाणीता वीढोमा दक्षिणे गुलमर्ग तथा नैऋत्यकोणमां युसु मेदान आवेलां छे. युसुमेदान श्रीनगरथी दृर आवेला नीलनाग नामना सरोवर उपर वहेलुं छे. आखा काजमीरमां ए सहुधी म्होटामां म्होटुं अने रमणीय वीढ छे. उत्तरे सोनामर्ग तथा पश्चिमे बूलर सरोवर उपर नाग-

मर्ग विरामी रहां छे. मेथी सप्टेम्बर माम सूबी ए मर्गोगां गाय मेंन तथा टट्ट बगेरेने पुष्कळ चारो मळे छे.

मीठा पाणीना झराओमां वर्नाग, अन्छेबळ, वावन कोकानांग तथा चछमशाही ए विश्लेष प्रसिद्ध छे. कामेळ नदो आगळ ट्रेनाम पामे ळोळाव नामनो झरो छे, जेनी अंडर भर उनाळामां पण पाणी ५६ डीग्री गरम रहे छे. ए उपरांत पेम्बोर पासे वीआनमां तथा इस्लामावाद शहेर पामे गन्धकता झरा छे.

खीणनी वन्ने वाजुए नीची टेकरीओना ढोळाव उपर टेवल लॅन्ड अर्थात् पर्वतना पासा उपरनो उन्नत सपाट प्रदेश आवेलो छे, तेमां मुख्य उत्तरे इस्लामावाद उपरनो प्रदेश के जेना पर मार्तंड नामनुं गामडु वसेलुं छे. पेम्पार तथा दक्षिण खान गेर पामे झाइनापुर तथा नानगर वगेरे छे. जे स्थले ए टेवल लॅन्ड आवेलां छे ते जमीननी भूस्तर रचना वगेरे तपामवाथी एम सावित थाय छे के काइपीरनी खीण महोटा पर्वनोनी बच्चोवच एक गंजावर सरोवरना रूपमां इती.

काइमीरनी राजधानी श्रीनगर छट्टा शतकनी शरुआतमां राजा प्रवरसेने वंघावेलुं छे. खी-णना मध्यभागमां अद्वितीय मनोहरताने प्रगट करतुं ए पुर वारामुद्धा तथा इस्लामाबाद ए वले स्थळथी ३४ माइल दूर छे अने समुद्रनी सपाटीथी ५२५० फीटनी उंचाइ बारण करे छे. तेमां बीश इजार घर तथा आशरे एक लाख अने वीश हजारनी वस्ती छे. जेलम नहीना उभय किनारा उपर बसेला ए शहेरनी लंबाइ अडी माइल जेटली छे. घरे। घणखरां लाकडानां छे अने तेथो अवारनवार आग लागवानो भय रहे छे. मयम शहेरमां घरो खीचोखीव होवाथी बहुज गंदकी रहेती अने तेथी धुरोपीअनो भाग्येज ए शहेरनी मुलाकात लेता. योडा वखत पहेलां कॉलेरा बगेरे उपद्रवी फाटी निकलवाथी शहेरना सुधारा उपर विशेष ध्यान अपायुं छे. सने १९०१ मां स्टेटनी उपननो सारो भाग शहेर सुवारा अर्थ खर्चगमां आव्यो हती.

श्रीनगरमां आवता दरेक मुमाफरोनी देखरेख माटे एक वाबु राखवामां आवे छे, ते मुसा-फरनुं नाम वेगेरे तेनी नोंधबुकपां लखी ले छे ए वाबुनुं मुकाम चीनारवागनी पाछल मेइलकार्टना तवेला पासे छे अने दरेक मुसाफ ने तेनी ऑक्तीसेथी जोडती माहिती मळी शके छे. सांप्रत समये सर अमर्रावेहजीनी एस्टेट उपर पांच मकानो गृडस्थ मुमाफरनी सगवड माटे आपवामां आवे छे; ए उपरांत दरवार तरफथी वंधावेली श्रीनगर हॉटेल सने १९०० मां एम. नेदुनी देख- रेख नीचे खोलवामा आवी छे; तेमां मुताफरोने सगवड मळो शके छे. तेमन चीनारवाग, मुनशी-वाग, सोनावर वाग, तथा नाझीमवाग, वगेरे स्थळ मुसाफरोनी सगवड पूरी पाडी झके तेवां छे. काश्मीरमां कोइ नवो मुसाफर दाखळ ययो के तुरतज तेनी पासे वेपारीओनी ठठ जामे छे अने दरेक वेपारी पोतपोताना मालनी पशंसा करी ते खरीदवानो आग्रह करे छे; तेमां मुसाफरे सावध रहेवुं अने खरीदवामां भूळ न करवी. प्रथम जीवा लायक स्थळ तख्ते इ सुलेमान समुद्रनी सपा-टीयो ६२६३ फीट उंचे छे. अर्थात् ए स्थळ श्रीनगरथी १००० फीट उन्नत होवाधी तेना उपर जभेली मनुष्य समग्र शहेरनी दिलासंद देखाव सरलनाथी जोइ शके छे. ए उपर जे जूनुं दहेरं छे ते इ० स० पूर्वे २२०मां अशोकना पुत्र जलोके वं गान्धुं कहेवाय छे. ए देवळ पाका वां प्रकाम-वाळा अष्टकोण पाया उगर वाधेछं छे अने पूर्व तरफथी पत्थरना पगयीआं वडे अंदर जवाय छे. वहारना द्वारमां दाखळ यतां पत्थरना सांकडा तथा लीसा पगथीआ पर थइने उपर चढाय छे. देवळ न्हातुं छे अने तेनी भींतो आठ फीट जाडी छे. एना उपरतुं छापरुं पत्थरना चार अप्टकोण स्तंभोवडे टेकावेटुं छे. देवळनी वचे श्याम वर्णनुं लीसुं मोटा कदनुं शिवलिंग छे, तेनो पूजारी दे-वळथी नीचे रहे छे अने जे केंड़ गृहस्य दर्शने आवे तेना पासेथी पैसा छेवानी आशाए ते हपेशां त्या हाजरज होय छे. नैऋत्य कोणमां पत्थरथी वांधेछुं तळाव छे. देवळथी वहार निकळतां कांइ अजायव सृष्टिसौन्दर्य नजरे पडे छे. सने १८५९ मां सर रीचर्ड टेम्ग्ले ए स्थळनी मुला-कात कीधी त्यारे तेणे त्यां उभां रही आजुवाजुना कुद्रतो देखावोतुं नीचे मुनव उत्तम चित्र आळखेळुं छे.

श्रीनगरधी चूळर सरोवर सूबी नेलमना प्रवाह्यी वरफ्यी साफ देखाता पीर्पंतळ पर्यत पर्यन्त सघळो प्रदेश एकी साथे नजरे पडे छे. जतर तथा पश्चिम तरफ पर्वत उपर पर्वत घगोज दिच्य देखाव आपे छे. सीटी सरोवरनी पेलोमेर उन्नत पर्वत उपर महादेवनुं त्रण टोंचवाळं शिखर छे. सिन्यनी खीण तरफ इरमुख पर्वतनुं शंक्रने आकारे शोभी रहेळुं शिखर जोवामां आवे छे. अग्निकोण तरफ पीर्पंत्रल पर्वतनी तलेटीमां काळा धुरा रंगना अनेनासनां द्वश्नेवाळो खीणो जोवामा आखी जींदगी दिहाची होय तोपण अरुचि उपने एवं नथो. पश्चिम १५७७० फीट उंचुं छंदर तावनुं शिखर, तेनी नजीक १४९५५ फीट उंचु देदामनुं शिखर अने त्यांथी पश्चिम तरफ ब्रह्माशकलना त्रण शिखरो १५००० फीट उंचा प्रकाशी रह्यां छे. त्यारवाद कोन्सानाग सरोवरनी समीपे १६००० फीट उंचा कोसरना शिखर आवेलां छे जमणी वाजुए चितापणी अने छोटीग-

~~~~

ली नामना पर्वतना मार्गनी पेळीमेर पीरपंजलतुं टूटाकूट नामनुं १५५४० फीटनी उंचाइने धारण क-रतुं शिखर नजरे पडे छे. त्यारपछी तुलसी मेदान तथा फीरोझपुरना नाळांनी उंडी खो अने कुंच तरफनो मार्ग देखाय छे. जरा पश्चिम तरफ गुलमर्गनी काळा भ्रुरा रंगनी घार पासे १३५०० फीट डंचो अपर्वाट नामनो पर्वत डंटनो पीटने आकारे उभो छे, तेनी पामे वारामुद्धानो मार्ग छे. वारामुङ्कानी समीपे बाझीन।गनो कांगरावाळो पर्वत स्पष्ट देखाय छे. त्यारवाद वादळांओनी आकृ-तिने वहन करती खगन पर्वतनी वरफवाळी पंक्ति दृष्टिगोचर थाय छे. जरा अंदर नजर करतां नी-चे मुनशीवाग, कॉटेज हॉस्पीटल, ख़ीस्तीनुं देवळ, रेसीडन्सी पोलोनुं मेदान अने पोप्लरना इस-नी पंक्तिवाळो मार्ग तेमज जमणी वाजुए मध्यमां हॉटेळ तथा चीनारवाग आदिनो देखाव अत्यन्त आनंद उपनावे एवा छे. आ रीतनु चित्र सर टेम्पले आलेख्या पली एक हॉटेल तथा एक रेशमतुं कारखातुं ए त्रण मकानी उक्त देखावमां उमेरायां छे. वारामु-ल्ला तरफनो पोप्लरना दक्षमां थड़ पश्चिमे जतो मार्ग चगा माइल मुबी सारी रीते जोड शकाय छे. ए शिवाय शहेरनी चारे वाजु भेज तथा गंदकीवाळा स्थळो के जेयी श-हेरनी हवा वगडवा संभव रहे छे ते देखाय छे. दाल सरीवर तरफ दृष्टि करतां नीरना न्हाना न्हाना चीराओ, तरतावाग, परीमहेल, निषत्पेवीलीअन तथा शालीपहार नासीमवागीना काळा भूरा रंगना झुंडो अने चीनार दक्षोना टापु वगेरे जे जे आकर्षक स्थळोतुं " लालारख " नामना ग्रन्थमां टॉमस मूर कविए वर्णन करेछं छे ते सर्व तस्ते इ सुलेवान नामने स्थळेथी प्रत्यक्ष जोड शकाय छे.

हरि पर्वतनी टेकरी उपरनो किह्यो पण जोना लायक छे. ए टेकरी शहरनो उत्तरे सरोनर उपर २५० फीटनी उंचाइए अन्य पर्नताथी अलग उभेली छे अने खीणनी पश्चिमे स्थिर रही नजर करतां ते बीश माइल दूरथी दृष्टिगोचर थाय छे. ए टेकरी उपर अकनर वादशाहे सने १५९० मां शहर उपर दान राखना माटे एक किह्यो वंधानेलो छे, त्याथी आखुं शहर एक लीली विछात जेनुं जणाय छे; कारण के दरेक गृहना छापरां उपर जुदी जुदी जातना लीला रोपाओ मूकेला होय छे. तखते इ सुलेमान वरावर अग्निकोणमां देखाय छे अने दाल सरोवर पूर्व तरफ नजरे पडे छे टेकरीनी दक्षिण वाजुए वादशाह जहागीरना धर्मगुरु अखुन गुलाहशाहनी यादगीरी अर्थे वांधेली पत्थरनी कनर छे. पश्चिम तरफना पार्श्व उपर मुसलमान लोकोमां पूनाता शाह हम-जाह उर्फे मखदुम साहेवनो रोजो छे अने उत्तर तरफ एक न्हानो खडनचडो टेकरो छे, तेमां हिन्दु

कोकोए विष्णुनुं स्थानक वनाव्युं छे.

श्रीनगर शहरनी अंदर जीवा लायक स्थलो पैकी जेलम नदीना किनारा उपर लायबेन्री तथा पोस्टओफीस वच्चे अंग्रेजी रेसीडन्सीनुं भव्य मकान छे अने तेना कम्पाउन्डनी वाडीमां चीनारनां हक्षो वावेलां छे. तेनी नजीक लायबेरी, सने १९०१ मां खोलेल रीफेशमेन्ट रुम तथा टेनीस अने वेडमोन्टन नामनी रमत रमवानां मेदान छे. होटेलनी नजीक गोल्फ रमवानुं मेदान अने ते पछी मुनशी दाग तथा सोनापुर वाग छे. होटेलनी आगळ जे मार्ग छे ते काइमीरना पटाण स्वाए सने १८०५ मां वने वाजुए ववरावेल पोप्लरना हक्षनी पंक्तिथी घणोज रमणीय जणाय छे. होटेलनी सामे पोष्ट ओफीस, टांगानुं छेल्ल स्टेशन तथा पोलो रमवानुं मेदान वगेरे छे त्यांथी नीचाणमां रमतना धाराओ घडनार सेक्नेटीनी ऑफीस तथा गीलगोट द्रान्सपोर्ट ओफीसनां मकानो छे. नदीने सामे किनारे लालमंडी नामनुं वादशाही मिजशानो वगेरेने रहेवा माटे मकान वांधेलु छे; जेमां नामदार डयुक ओफ कोनोट तथा तेमना वानुए सने १८८४ मां पोताना श्वास वखते उतारो कर्यो हतो; हालमां ए मकान स्टेट म्युझीअम तरीके वपराय छे अने ते खास जोवा लायक छे.

श्री नगरमां जुन मासथी सखत गरमी तथा मच्छर आदिनो उपद्रव शरु थतो होवाथी त्यांना वतनीओ गुलपर्ग तथा पहेलगाम वगेरे शप शीताप्ण स्थळे अथवा पोत पोतानी प्रकृतिने अनुक्ळ आवे प्वी जगोए निवास करवा जाय छे.

मुनशी वाग पासेथी चालतां सेटलमेन्ट कमीश्नरतुं मकान आवे छे, तेनी नजीक सिपाही-ओने रहेवानी वराको, एकाउन्टन्ट जनरलनो तथा स्टेट एन्जीनीअरनो वंगलो तेमज ल-श्करी अधिकारीओना वंगलाओ आवेला छे अने तेनी पाछळ स्त्रीस्ती देवळ तथा पादरीनो वंगलो आवेलो छे.

उपर कहेला स्टेट म्युझीअम पासे काश्मीरना चीफ मेडीकल ऑफीसरना वडा न्याया-धीशना वंगलाओं छे. म्युझीअम सामे जेलम नदीना जमणा किनारा उपर शेखवाम नामनुं महोटुं चोगान छे अने तेनी वचे एक मकान छे ते प्रथम मसनीद तरीके वपरातुं, त्यारवाद स्त्रीस्तीना देवल तरीके उपयोगमां आवतुं अने हालमां पब्लीक वक्स दीपार्टमेन्टनी ऑफीस तरीके वपराय छे. पूर्व तरफ मीशनरी पादरीओने रहेवानां मकानो स्टेट खर्चे वंधाएलां छे, नैरुत्यकोणमा अंग्रेज लोकोतुं स्मशान छे. एथी नीचाणमां स्टेट हॉस्मीटळ सामे काश्मीरनी हाइकोर्टनुं मकान छे; त्यांयी श्रीनगर शहेरनी शरुआत थतां पहेलां मथम सने. १८९३ ना पूर पछी नवां वांधेलो पूल आवे छे; ते ओळंग्या पछी महाराजा लाहेबनी महेलातो देखाय छे. राजमहेल पुरातन नथा आञ्चनिक समयनी वांधणी प्रमाणे वांधेलो छे अने तेनो साथे प्राइवेट सेक्रेटरीनो ऑफोनो जोइन्ट होवाथी आखुं मकान क्र्टोक्सल नामनी नहेर सूबी ळालु छे. तेना पुरातन भागमां एक महोटो द्रवारहॉल छे. त्यां दरवारी मिजनानीओ तथा महान् उत्वर आदिना मेळावडाओ थाय छे, महेलनी पासे जेलम नदीमांथो वने किनारा तरफ अकेक नहेर वहे छे. डावी वाजु जनी नहेर क्टोकूल अने जमणी वाजु जनी नहेर सुन्तोक्सल कहेवाय छे. क्टोक्सल नहेरदाग हेन्डोनां केटलाक प्रख्यात कार्यालयो तरफ जइ शकाय छे. नहेरना किनारापर सने १२०० मा सम्पूर्ण थएल महोटा मकाननी अंदर नामदार महाराजा अमरसिंहजो के. सी. एन. आई. ग्रीब्द ऋगुनां निवास करे छे.

सून्तीक्ल नहेर चिनारवाग तरफ बळे छे, ए चिनारवाग आगळ वहाणो तथा होडीओ वेगरे वांधवानी योजना करवाणा आवी छे. चिनारवाग सून्या पछी मीशन हॉस्पीट उ देखाय छे, त्यांथी अर्ध माइलने छेटे सून्तीकूल नहेर पाछी जेलम नदीने मळे छे. सुमतीकूल नहेर ना सुख तरफ पाछा फरतां जमणी वाजुए काश्मीरना पहेला सरहार रुपिंस्हजीतुं म्होटुं मकान छे, तेनी पासे ढावो वाजुए काश्मीरमां म्होटामां म्होट्टामां म्होट्टामां महोट्टामां महोटामां महोटामां महोटामां महोटामां महोटामां महोटामां महोटी मीआं वाहेवतुं मिन्दर छे. त्यांथी नीचाणमां मलीकी-चर घाट पासे एक पत्थर उपर बुधना वलानो शिला लेल छे. ते जारे पाणी ओछुं होय त्यारे साफ देखाय छे. श्रोनगरमां दरेक ग्रह वे माळना तो छेज. कोइ कोइ म्होटां मकान त्रण अथवा चार माळनां पण छे. त्यांथी आगळ ढावे किनारे हाइस्कुलतुं मकान छे. शाहहमादन मसजीद जमणे किनारे त्रीजा पूल पासे आवेली छे अने तेमां फारसी अन्नरे लखेलो एक शिलालेख छे. ए शिलालेखमां शाह हमादननी पवित्रता तथा महत्ता वगेरेतुं वर्णन करेलुं छे. काउमीरनी अन्य मसजीदो माफक ए पण सेडरना वाधकामवालुं छे अने तेना शिखर उपर सुवर्णतुं इंडुं मुकेलुं छे.

मलीकीचर घाट मूकतां, पांच मीनीटं पछी दिलावरखाननो वाग आवे छे, ए वाग हाल सरोवरनी एक ज्ञाखा उपर छे तेने विषे खास जाणवा लायक होय तो एज छे के सने १८३५ मां तेनी अंदर धुजलबीगनी तथा हेन्डरसन नामना नामांकिन मुसाफरोए जतारो कर्यो हतो. शाह हम।दन मसजीद सामे नदीना डावा किनारा पर रहेली पतर मसजीद वेगम नुरजहांए वंधा-

वेली हती, ए मकान अत्यारे एक कोठा तरीके वपराय छे, काग्णके ते स्त्रीए वंघावेलुं छे, वळी एम पण कहेवाय छ के नूरजहां सुनी पंथनी हती के निह ते विषे मुसलवानोने पूरतो शक छे. ए मकाननी पासे हाजी अहमदीलारी नामनो जूनो रोजो छे, तथा एक कवररतान छे. त्यार पछी झैनाकदल नामनो पूछ आदे छे, तेनी पासे शेख ग्रुप्तानी मसजीद छे अने तेनो नजीक पंदरमां शतकनी शरुआतमां थड गएला भैनून अवोदीन नामना काश्मीरना एक मुसलमान राजाए वं-धारेळी वादकाह नामनी मसजीद छे. ए राजाना राज्यमां तुर्कस्तानथी आनेळा वणकरोए पहेल वहेली काज्मीरी ज्ञाल बनाबी इती एम कहेबाय छे. त्यांथी लगभग आहेक मीनीट आगळ ल्या पछी प्रख्यात जुमा मसनीइ आने छे, तेनी वाहारनी भींत उपर शिळालेख छे ए उपर्यी एम जणाय छे के ते वादशाह शाहजहांए वंधावेळी छे; तेनी घुम्मट लीश फुट उंचा देवदारना महान् स्तंभा वडे टेकावेळा छे. ए स्तंभा नीचे लोग फीट उंचा पत्यस्ना रतंभ वाषेळा छे. अर्थ पत्थरना अने अर्थ काष्ट्रना मळी दरेक संभिनी उंचाइ ६० फीट जेटली छे. तेनी देखान घणोज भव्य जणाय छे. त्यांथी चार मीनीट चाल्या पछो वायव्य कोणमा पीर हाजी महमदना रोजा पासे " चाक" कुटुम्बना राजाओतुं कवरस्तान छे. " वादशाह " कवरनी पासे आवेली " महाराज गंगे " नामनी वजार सने १८९७ मां आग लगवाथी नाज्ञ पाधी हती, पण हवे तेनो घणखरो भाग सुधारी वाधवामां आव्यो छे. पांचमां पूछ पासे ''रेन्यनशाह'' नी मसजीदनुं पुरातन मकान नजरे पढे छे, तेमां पश्चिम तरफनी भींत उपर बुबना बखतनुं देवाळय छे. ए मकातनी समीपे " वाइरी " साहेवनो रोजो आवेलो छे. त्यार पछो बुलबुलशाह नामना फकीरनी यादगोरी अर्थे काष्ट्रवडे वंथावेळी वुलवुललंकर नामनी मसजीद छे, ए बुलवुलगाहे वारमा शतकमां मुसलमानी धर्मनो भचार कर्यो एम कहेवाय छे. हालमां ए मकान पडी छिन्नभिन्न थइ खंडेर जेवुं वनी गयुं छे. नायाकदल नामना छट्टा पूल पासे जमणी वाजु तरक दुद्युद्खाननी मसनीद्तुं पुरातन मकान छे. तेनी पासे काश्मीरीशालना वेपारमां अग्रेसर गणाता पंडितराज काक्कनो वंगलो छे. डावी वा-जुए सन १८८९ मां खुछी मुकेली जनाना हॉस्पीटल छे, अने तेनी देखरेख एक वानु डॉक्टर राखे छे. त्यांथी आगळ चाळतां टगीवावा उर्फे मलेकसाहेवनी जीआरत आवे छे; तेमां आठ कवर आरसनी छे.

सुफाकदल नामना सातमा अथवा छेछा पूलथी सो याई ने छेटे लखमनजीकीयारीवल नामना घाटथी आगरे दग मीनीट आगल चाल्या पछी इदगाह नामनी सुसलमान लोकोना धार्मिक तहेवारोने दिवसे मेळो भरवानी जगो आवे छे, ए जगो सवा माइल जेटली पहोळी तथा एक वागनी पेठे सपाट तेमज लीलां तृणथी छवाएली छे अने एनी आसपास उगेलां म्होटां हुक्षो सौन्दर्यमां उमेरो करी रह्यां छे. शहेरना अग्र भागमां रहेलुं ए मेटान घणुंन मनोहर छे. तेनी उत्तर
तरफना छेडा पासे पुरातन देवदारना काष्ट्रथी वांथेली अलीमसजीट छे: नेनी अंदर एक महोटा
पत्थर उपर आरवी भापामां लखेलो शिलालेख मळी आव्यो हतो, एमां एवं लखेलुं हतुं के ए
मस्जीद सने १४७१ मां सुलतान हसनवादगाहना समयमां काजो हस्ती सोनारे वांथेली छे. सुफाकदल ए छेल्लो अने सातमो पूल गणाय छे. तेनी पासे आखा शहेरनी अंदर सहुधी महोटामां महोटी
शराइ छे. हावी वाजुए शाह नैमतुलानो रोजो आवे छे; तेनी अंदर एक पत्थरपर लखेला शिलालेख उपरथी माल्म पडे छे के श्रीनगरनो सातमो पूल सने १६६४ मां सङकखाने वंयावेलो छे
अने एथीज एमुं नाम सुफाकदल राखवामां आव्युं छे.

दाल सरोवरना सवंधमां कवि टॉमसमूर लखे छे के-

" मनुष्यने पोतानी िषयाना सहवासथी अतिशय आनंद प्राप्त थाय छे, परंतु ए प्रियानी साथे काश्मीरना रमणीय दाल सरोवरमां चांदनीने समये मधुर गायन सांभळतां मुसाफरी कर- वानी होय तो आनंदनी हद न रहे. स्त्रीना सहवासथी उज्जड अरण्य पण आनंदमय लागे छे तो पछी तेनो सहवास काश्मीरना मुशोभित सरोवरमां थयो हाय तो केटलुं मुख प्राप्त थाय तेनो ख्याल मने आवी शकतो नथी."

कविनो ए अनुभव खरो छे, कारण के चांदनीना वखतमां दाल सरोवरनी ख्वी कांइ ज्दीज जणाय छे. ए सरोवर पांच माइल लांचु अने अही माइल पहोछं छे. प्रथम जांवा जनारने तेना द्वारमां प्रवेश करतांज पोते कंइ छेतरायो होय एम भासे छे. ते सरोवरनी सपाटीनो घणखरो भाग महान कदना वंश द्वक्षोथी तथा तरता जपवनोथी आच्छादित थएलो छे. ज्यां पाणी खुल्छं देखाय छे त्यां वंशद्वक्षोमांथी कापी कांढल मार्गद्वारा जवाय छे. ए सरोवरमां केटलाक झराओ तथा अन्य पर्वतना झरणो मळेलां छे, मुख्यत्वे करी डाकी गामना झरणनुं तथा आराह नदीनुं जळ एमां आवे छे. आराह नदी श्रीनगरनी इशानकोणमां आवेला डाकीगाम नामना नाळां पासे रहेल मरसार सरोवरमांथी निकले छे. जेलम नदीमां ज्यारे पूर होय छे, त्यारे लायन्नेरीना मकान पासे थइने जती तथा जेलम अने सुन्तीकूल नहेरने जोडती एक न्हानी नहेरवडे ते सरोवरमां जवाय छे. ए

मार्ग लगभग एक कलाकनो छे. नदीमां ज्यारे पूर आवे छे, त्यारे सरोवरमां दाखल थवाना दर-वजानां वारणां पाणीनां जोरथी पोतानी मेळे वंध थाय छे अने एथी सरोवर अंदरना तरता वागो तथा आसपासनी भूमि पाणी वहे भीजाती अने कादव कचरावाळी थती अटके छे. दरवज्जानी अं-दर दाखल थतां सरोवरमां जळना जभय विभाग नजरे पडे छे. डावी वाजुनो फांटो नासोमवाग तथा सालीमारवाग तरफ अने जमणी वाजुनो फांटो निषधवाग तरफ जाय छे. डावी वाजुना फांटा तरफ थोडे दूर गया पठी तेमांथी नालीमार नामनी एक नहेर डावी तरफ वळे छे. ए नहेर वादशाह झैन जलअबुटीने पंदरमां शतकमां खोदावी छे एम कहेवाय छे, तेना किनारा उपर छंदर घाट तथा विविध प्रकारनां हक्षो कांइ जुदीज शोभा जणावे छे. ए नहेरपर वांधेला केटलाक पूल परम रमणीयताने धारण करे छे. अग्रेज मुसाफर विग्नी कहे छे के "आ नहेरने निहालवाथी इटा-लीना वेनीस शहेरमां आवेली एक जुनी नहेरनी स्मृति आव्या विना रहेती नथी. ए वन्ने नहेरनां वांधकामनी ख्वी खरेखर पेक्षकने आश्चर्य पमाडे एवी छे." पण अपशोस के ज्यारे नहेरमांथी पाणी उतरी गयुं होय छे, त्यारे त्यांनी गंदकी तथा कचरो अत्यन्त ग्लानि उपजावे छे. ए नहेर एन्कर सरोवरने मळे छे.

हावी वाजुए रहेला नासीम वाग तरफ जतां सरोवरना द्वारथी एक माइल दूर काली अर नामनुं गामहुं आवे छे. त्यां केटलाक खंडरो तथा तेनी नजीक केटलाक छंदर घाट नजरे पडे छे. सरोवरनी वच्चे थडने जवानो छुटू नामनो उन्नत भार्ग वांधेलो छे. ए मार्ग नैवियर पूलनी जमणो वाजुए थइ इशीवरी नामना गामडांनी टक्षिण वाजु सूथी जाय छे; तेनी लंबाइ चार माइल जेटली छे अने जे नलोवडे शहेरनी अंटर निषधवागना होजमांथी पाणी लाववामां आवे छे, ए नळ एज मार्ग नांखेला छे. नैवियर पूलधी १०० यार्ड आगळ चालतां हसनावाद नामनुं गामडुं आवे छे. तेनी अंदर वाटशाह अकवरना वखतमां शिआपंथना मुसलमानोए वंध वेली मस्जीदनां खंडेर पड्यां छे. कहे छे के शेख मुवामीआनिसिहे ए मस्जीटने तोडी तेमांना पत्थरो वादशाही महेल सामे आवेला वसन्तवाग पासेनो घाट वांधवामां वापर्या छे. हसनावाटनी अंदर सने. १८७४ मां शीआ अने मुनी वच्चे केश थतां म्होटी कापाकापी चाली हती; त्यांथी आगळ जातां निपधवाग आवे छे. त्यांथी सरोवरनी अंदर नरता वाग नजरे पडे छे. ए वागमां घणे भागे चीभडां, तरवृच्च तथा टमेटां जत्यावंध वाववामां आवे छे. अंग्रेज मुसाफर मी. मृरक्रोफ्ट ए वनावटी तरता वागनुं नीचे मुजब वर्णन करे छे.

"काञ्मीरना सुप्रसिद्ध तरता वाग नैवियर पूळ्यी एक माइळ द्र देखाय छे, तेमां सुख्यत्वे करीने चीभडां, तरव्यूच तथा टभेटां वाववामां आवे छे. ए वागनी वनावट ए लोको एवी रीते करे छे के प्रथम सरोवरना छीछरा पाणीवाळा स्थळमां उगता रेपाओने सपाटीना त्रण फीट नीचेना भागथी कापी नांखे छे. जेथी सरोवरना तळीआ साथेनो तेनो सवंघ तृटी जाय छे; पछीथी घणखरा रोपाओने पासे पासे वावे छे अने आगरे छएक फीटनी पहोळाइवाळा अनुकूळ पडे एवा क्याराओ वांघे छे. ए रीते तरता रोपाओमांना तथा वांसना अने टर्मना मथाळानो भाग कापी उक्त क्या राओनी अंदर रोपे छे अने तेना उपर माटो वगेरे नांखे छे. ए माटी धीमे धीमे रोपाओना मूळनी अंदर जाय छे. जेथी रोपाओ दृद्धि पामवामां समर्थ थाय छे. क्याराओ जळमां तने छे, परंतु नेने पाणीमां तणाइ जता अटकाववाने तेने वन्ने छेडे जंगळी चीआओ वांप्रवामां आवे छे. एवा तरता वागो दरवर्षे वृद्धि पामे छे अने तेथो गोप्रावळ वाग पासेनो पाणीवाळो सपाट जमीननो ककडो आच्छादित थतो जाय छे. ते तरता वाग मूक्या पडी डावी वाजु इनरतवाळ (महमद पेगम्बरनो वाळ) नामनुं गामडुं नजरे पडे छे अने ए मुसळमान छोकोनी पवित्र जीआरत माटे मख्यात छे. ए जीआरतमां काचना ढांकणावाळी एक रुपानी डब्बीमां महनद पेगंगरनी टाढीनो एक वाळ राख-राखवामां आव्यो छे. ए स्थळे एक वर्षमां मुसळमानना चार मेळा भराय छे अने ते वखते सर्व छोको ए बळना दर्शन करे छे.

हजरतवाल नजीक नासीमवाग उर्फे मधुरी पवननी वाडी छे, त्यांथी सरोवरनो देखाव घ-णोज सरस जणाय छे. ए वाटिकानी अंदर वादशाह अकवरे वावेलां चीनारनां आगरे १२०० दृश छे. ए ग्रीष्म ऋतुमां मधुर छाया करे छे अने पानखर ऋतुमां रंगवेरंगी मनोरजक देखाव आपे छे. ए वागमांथी सरोवरने सामे किनारे रहेला शालोगार वागनी तथा द्र देखाता अने वरकथी आ-च डादित थएला महादेव पर्वतना रमणीय शिखरनी नीचेना पोलाणनी सुंदर देखाव नजरे पडे छे. नासीमवागनी डावी वाजुए आराह नदी सरोवर साथे संगन करे छे.

शीतकाळ व्यतीत थया पठी वरफ ओगळना मांडे छे. ते वलते दाल सरोवरनुं जळ कां-इक डोळुं देखाय छे, पण जेम जेम ताप विशेष पडतो जाय छे, तेम तेम पागी स्त्र न्छताने धारण करे छे अने तेनी अंइरना तरता वाग सम्पूर्ण द्रष्टिगोचा थाय छे.

कि टोमसमूर छखे छे के—'' जेम शरमाळ चहेरावाळी नवेढा रात्रिए पोताना पित पासे जती वखते पण पोतानुं मुख छेळी घिंड सुगी दर्पगमां जोतो जाय छे तेम ग्रीष्मऋतुनी सन्ध्या जती वखते दाल सरीवर उपर स्वभीय शोभानी समग्र कलाओ खीलावी मूके छे. ए समये सरी-वर उपरना दृशो सींसरा सूर्यना झांखा तेजमां आसपासनां धर्मस्थानको नजरे पढे छे अने ए धर्म-स्थानकोमां भिन्न भिन्न धर्मिक्रयाओ प्रमाणे थती पार्थनाओना अवाज सारी रीते संभलाय छे. मसजी-दोमांथी मुल्लांओनी वांगनो अवाज तथा हिन्दुना देवस्थानमांथी निकलतो घंटानो मयुर निनाद पव-ननी लहेरमां श्रवणपथे संचरी अत्यंत सुख आपे छे. ए सरीवरने चांद्रनीना समयमां निहाल्युं होय तो ते उपरना महेलो तथा वागो चन्द्रमाना मधुर शान्त रुपेरी तेजथी वीटाएला नजरे पढे छे. दूर पाणीना धोधवाओ खरी पडता ताराना समूह माफक चलके छे. चीनारना दृशोमांथी आवतो चुल-चुल पक्षीनो मधुर स्वर शान्त अने चलकता मार्ग उपर फरता युवान मनुष्यना जोडलांओने अपार आनंद अपे छे. ज्यारे प्रातःकाल प्रगटे छे, त्यारे धीमे धीमे फेलातो दिवसनो जादूइ प्रकाश दर-मीनीटे नवी नवी खुवी जणावे छे.

सामे किनारे बालीमार अथवा वादशाही वाग आवेलो छे, तेनी अंदर तंत्रुओं तथा जलयंत्र आदिनी मनोरजक योजना करेली छे. ए वागमां वादशाह जहांगीर वेगम नूरजहां साथे ग्रीप्मऋतुनो वखत गुजारता. सांमत समये त्यां रात्रीना भागमां कोइ कोइ वखते जाहेर मिज-मानीओनी मिजलसो भरवामां आवे छे. ए वाग पासेनी नहेरनो तथा घोषना पागीनो अम्राज अम-णेन्द्रियने आनंदमां निमम्न करे छे. त्यां संख्यावंध तंत्रुओं नांखेला होय छे अमे समम्म स्थले रंग-वेरंगी लेम्पोनी रोजनी करेली होय छे, ए रोशनी वच्चे छुटता जलयंगोनी खूबी कांइ जूदोज जगाय छे. ए वखतना देखावर्त्नुं वर्णन करवा कोइ महान किनी आवश्यकता जगाया वगा रहेती नथी.

काश्मीरनी खीणना पूर्व छेडा तरफ आवेछुं इस्लामावाद नामनुं शहेर म्होटामां म्होटुं छे. त्यां मुख्यत्वे करीने जल मार्गे जवाय छे; तेनी आजुवाज सिहा वसता हावाथी केटलाक युरोपीअनो तेमज अन्य मुसाफरो त्यां शिकार अर्थे जवा ललचाय छे. श्रीनगरना मुनशीवाग पासेथी जेलम नटीने मार्गे इस्लामावाद जतां वे दिवस लागे छे. ए शहेरनी समीपे वीएन नामनुं गाम छं छे, त्यां गंथकना झराओ छे, तेने फूकनाग कहे छे अने तेमांथी उप्र गंथकनी वास आवे छे. एक टेकरीनी दक्षिण वाजुए रहेली तलेटीमांथी थोडे थोडे अंतरे ए लग झराओ निकलेला छे; तेमानुं पाणी एक सांकडा मवाहमां वहे छे. मवाह एक फूट पहोलो तथा एक फूट उंडो छे; तेनी वने वाजुए पत्थरनी हार करेली छे. आसपास रहेल। पर्वतना पत्थरमां अप्रिपापाणनो भेग होवाथी उक्त झराना

जलमां लोह तथा गंधक मलेलां छे. जेथी ते अमुक प्रकारना टरटीओने लाभकारक थाय छे. केटलांक दरटो न्हावाथी तथा केटलांक टरटो तेनुं पाणी पीवाथी नाज पामे छे. तेनी नजीक नाग नामनो मीठा पाणीनो झरो छे अने ते एज टेकरीनी पश्चिम वाजुए रहेली टेकरीमांथी निकले छे. ए पाणी एक पत्थरथी वांधेला होजमां एक छं थाय छे अने न्यांथी आगल वहेनां उपर कहेला गंधकना झराओनां पाणीने महमद्शाहनी जीआरतना कंपाउन्डमां नीकलतुं पाणी तेने मले छे.

इस्लामाबाद पासे अनंतवाग नामनो झरो मुख्य छे, तेनी पासे एक चीनारनुं द्वत छे, तेना मूळमांथी मलीकनाग नामनो गंधकनो झरो निकले छे; तेनी जमणी वाजुए सलीकनाग नामनो बीजो झरो बहे छे. ए बन्ने झराओ एक मस्जीदना मकानमां थड एक तळावने मळे छे. डावी वाजुए सोनापोखर नामनो मीठा पाणीनो झरो छे.

इस्लामाबादथी योहे द्र अच्छेवल नामनुं गामहुं छे, तेमांथी केटलीक नहेरो थहे छे, ए गाम आसपास रहेला दृक्षोथी ढंकाएल छे, तेनी पासे केटलाक वाग तथा ग्रीब्मऋतुमां निवास कर-वा अर्थे महेलो वांधेला छे, ए अच्छेवल तेना झराने लड़ मख्यात छे. झरणतुं जठ एक टेकरोनी तळेटीमांना महोटा वेरमांथी १८ इंच उंचे अने वण फुटना घरावामां उड़के छे. ए झरानी आजु-वाजुना स्थळनुं वर्णन करतां अंग्रेजी लेखक मी. नाइट लखे छे के—" हुं ज्यारे ए जगो जोवा गयो त्यारे तेनी आसपास विविध मकारनां फळहु ग दृक्षो छोलां हतां अने दरेक दिशामां जोस-वंध बहेता जळनो गडगहतो अवाज काने पहतो हतो; तेनी साथे अतंख्य गुानारां पक्षीओनुं मधुर गान श्रवणेन्द्रियने अपूर्व आनंद आपतुं हतुं. वळी निरंतर बहेता स्वच्छ अने स्फाटिकमिण समान प्रकाशने धारण करनारां जलझरण ए स्थळने अद्वितीय रमणीयता अर्थे छे. ए सी जोतां मने तो एमज थयुं के जो क्यांइ पृथ्वीपर स्वर्ग होय तो ते एज स्थळ छे.

पीरपंजल पर्वतनी बाजुमां एलमी उर्फे पुष्पोवाळुं मेदान परम श्रोभाने धारण करी रह्यं छे. आसपास आवेलो नीचो टेकरी ओथो घरापछुं तथा अनेनासनां गाढ जंगलथी ढंकापढ़ां गुलमी आशरे सवामाइल लांबु छे, अने समुद्रनी सपाटीथी ८५०० फीट उंचाइने धारण करे छे. त्यांना इवःपाणी नियमित अने अनुकूळ आवे एवां छे. वरसाद त्यां अत्यंत वरसे छे अने ऑगस्ट मासमां भेज तथा शरदी अधिक रहें छे. शीआळामां तेना उपर वीशथी तीश फीट उंचा वरफना थर जामे छे. तेनी अंदर थहने एक

इरणुं वहे छे. सने १८९० मां अंग्रेजी रेसीडन्ट माटे त्यां एक मकान वांधेछुं छे. नामदार महाराजा साहेवे तथा राजाश्री अमरसिंहजीए पण पोताने माटे जुदां जुदां मकानो वंवावेळां छे. त्यां जनार मुसाफरोने वखते उतारा वगेरेनी सगवह मळी शकती नथी, माटे तेवा लोकोए श्रीनगर मुकामेथी तंत्रु वगेरे छइ जवा जोइए; कारणके गुलमर्गमां तंत्रु पण मळता नथी. अश्व आदि माटे इंगामी तवेळाओं त्यां रहेता सुतारो पासे तैयार करावी शकाय छे, तेवा तवेळाओनी त्यां बहुज जरुर पडे छे, कारण के त्यां वरसाद वखतोवलत हद उपरांत वरसे छे अने तेथी तवेला दिना विचारां मुंगां प्राणीओने वहु दुःख वेठवुं पडे छे. श्रीनगरना गृहस्थो दरवर्षे जुननी १४ मी तारीखथी गुलमर्गमां निवास करवानी शरुआत करे छे. श्रीनगरमां गरमी सखत पडे छे अने गुलमर्गमां माफक आवे एवी ठंडी इवा रहे छे, गुलमर्गनुं मेदान धीमेधीमे दृद्धि पामतुं गयुं छे. हाल्यां ए काज्मीरनी अंदर श्रेष्ठ गणातुं एक हवा खावातुं सुंदर स्थळ छे, त्यांना हवा पाणी सारां छे अने आसपासना पर्वत परम रनणीयताने पदर्शित करे छे. समग्र हिंदुस्थानमां कोइ स्थळे न मळी शके एवां विविध मोजमजाइनां तथा रमतगमतनां साधनो गुलमर्गमां सरलताथी माप्त थइ शके छे. मेदान एटछं तो विशाळ छे के तेषां पोलो, क्रिकेट, गोल्फ तथा टेनीस वगेरे जुदी जुदी जगोए रमवानी सगवड मळे छे; ए जपरांत नृत्य, गायकनी मंडली तथा वीजी शरतो आदि आनंदभद साधनोधी ए स्थळ सदा सुसमृद्ध रहे छे. उपर कहेल बावतनो शोख नहि धरावनारा मुसाफरो आसपासनो कुदरती देखाव, पर्वतोनी शोभा तथा घोडानी सफर आदिथी गृहनी अंदर अथवा वाहेरना भागमां जोइए तेटलो आनंद टइ शके छे. मोसममां दरवर्षे एक विस्तृत वजार खोलवामां आवे छे, अने देशी तथा विलायती दरेक वस्तुओ मुसाफरोने मळी शके छे. त्यां एक स्त्रीस्तीतुं देवळ, सारुं पुस्तकालय, टेनीसकॉर्ट तथा पोलोतुं मेदान वगेरे आवेलां छे. मर्गनी सरहद उपर मार्गो अति उत्तम प्रकारे कापी काढेला छे, अंदरना मार्ग पण मनोहर छे. रेसीडन्ही पानेथी ररते। गोळ फरीने चार माइल दूर घोवीघाट पर्यन्त जाय छे; तेनी आजुवाजुए टेकरीओ, खीणो, अनेनासनां तथा साइकेमोरनां विशाळ जंगको तथा जंगली पुष्पी आदि नजरे पहे छे. दूरना भागमां नंगा पर्वतनुं वरफवाळुं शिखर, इरमुख पर्वत तथा आखी काइमीरनी खीण दृष्टिगोचर याय छे. गुल्एर्गमांथी गटरोवडे पाणी काढी नांखवामां आवे छे तो पण स्हेजस्हाज भेज रहे छे; जेथी त्यां जइ रहेनारा टोको पोताना तंत्रुओमां जमीन उपर काप्टनां पाटीआं जडावे तो तेने भेजधी पराभव धवानो भय रहे नहि.

196

~~~ENC+

गुलमर्गधी उंचाणमां खीलनमर्ग नामनुं अन्य मेदान आवेलुं छे अने ते सागरनी सपाटीथी आज्ञारे ११००० फीट उंचुं छे. गुलमर्ग अने खीलनमर्ग वचे चार माइलने। अंतर छे, एटला अं-तरमां २००० फीटनी उंचाइए चढवुं पडे छे, तेनी समीपे उन्नन भागमा अपर्वाट नामनो पर्वत नजरे पडे छे. खीलनमर्गमां महोटी मिजमानीओ तथा जीआफनो वगेरे वारंवार करवामां आवे छे.

आ रीते रावलपींडीमां चौद दहाडा रही काव्मीर सबंबी सबली माहिती मेळच्या वाद ता. ९ मे १९०९ ना रोज वित्रमंडल सहित मोटरमां वेसी आप नामदार मरी प्यार्था अने त्यांथी टांगा भाढे करी श्रीनगर पहोच्या. त्यां उतारा माटे एक हाउसबोट तथा वे डुंगाओ राख्या. एक हुंगामां माणसो रहेतां तथा वीजामां पाकजाळा आदिनी योजना करात्री. ता. १२ मीना रीज दाल सरोवरना किनारा पर परीमहेल छे ते पासेना पर्वत पर पुष्कळ वरक होवाथी त्यां पत्रायी. ता. १३ मीए वितस्ता नदीमां नावाधी इस्लामावाद तरफ रवाना थया. हाउसवोटने गंढवा वांथी किनारे किनारे माणसो खेंची चालतां हतां. ता. १६ मीए इस्लामाबाद पहोंची आपश्रीए त्यांना गंधकना झराओ जोया अने पछीथी अच्छे । इत्याप घोडेस्वार थड मधाण कर्युः अच्छे बळ इ-स्लामावादथी छ माइल दूर छे; वादशाहीवाग तथा केटलांक जूनां मकानो जोया वाद ता. २१ मीए त्यांथी रवाना थइ ता. ३३ मीए पाछा आप श्रीनगर पंघायी. हाउसबोट चीनाग्वागमां राखेली हती. ता. २६ मीए काइमीर स्टेट तरफनी विजयानी स्वीकारी. ता. २७ मीए गुळपर्ग पद्मार्था, ए स्थळ घणुंज सुंदर छे. ता. २८ मीए अन्व पर आरूढ घइ आप ठाकोर साहेवश्री लाखाजीराज वगेरे मंडळ सहित खीळनमर्ग गया त्यारे त्यां पण वरफ पुष्कळ हतो. ए स्थळ स-मुद्रनी सपाटीथी ११००० फीट उंचुं आवेद्धं छे. ता. ३० मेना रोज आप सर्व पाछा श्रीनगर पधायी ता. ३१ मी मेप काश्वीरना महाराजा साहेवनी मुलाकात छइ ता. २ जी जुने जेलम रस्ते वारामुल्ला जवा स्वाना थया अने ता. ६ जुने त्यां पहोंच्यां. आजुवाजुनां समग्र रमणीय स्थळोतुं निरीक्षण करी ता. ७ मीए दांगा मार्गे वारामुङ्घाथी गयाण करी ता. ९ मीए रावलपींडी आव्या अने एज दिवसे त्यांथी लाहोर तरफ १० मीए कुशळता पूर्वक काश्मीरनी सफर करी ळाहोर पहोंच्या ता. ११ मीए राजकोटना नामदार ठाकोरसाहैव जुदा पडी वतन तरफ विदाय थया अने आप नामदार सीधा मुंबइ पथार्या, त्यां ता. १४ मीए पहेंची एक अठवाडी युं रहा अने ता. २१ मीए कार्यव-

शात पूना तरफ प्रयाण कर्यु, पूनामां सात दिवस रही ता. २९ मीए पाछा मुंवइ पधार्या अने ता. २ जी जुलाइना रोज त्यांथी रवाना थड ता. ३ जीए वांकानेर आवी पहोंच्या. ए वर्षना भिन्न भिन्न मांगलिक पसंगे म्हारा तरफथी नीचे मुजव आशीर्वादात्मक काव्यो निवेदन करवामां आव्यां हतां.

## वेसतुं वर्ष.

" छन्द हरिगीत "

मंगलतणा उत्सव महद्यी राजगृह राजी रहो, भूमंडले भ्राजी रहो गुण आपना गाजी रहो; पाळो प्रजाने पूर्ण भेमे हृदय राखी हर्षमां, नित्यं निवन सुख पामनो अमरेश नूतन वर्षमां. झाझो सुयश झळराण पूरा प्रेमथी प्रसरावजो, शिर शौर्यथी प्रतिपक्षीओनां नीतिवंत नमावजो; दिन दिन अधिक दिनकर सरीखी दिन्यता छहीं दर्शमां, नित्यें निवन सुख पामजो अमरेश नूतन वर्षमां. ð छो वीर वांकानेरना वासव तमे वसुधापरे, पेखी मभाकर सम मताप उलूक अधम दिलें डरें; पारसतणी प्रभुता प्रकाशो आपना करस्पशिपां, निर्ले नविन सुख पामजो अमरेश नूतन वर्षमां. Ę सद्गुणतणा सागर सुशोभित न्यायी आप नृपाल छो. वळवान वहुज विवेकवाळा विनय हरिना वाळ छो; चित राखींने नथुगम चाहें आर्यना उत्कर्पमां, नित्यं निवन सुख पामजो अमरेश नूतन वर्षमां. 8 नविन वर्षणां नविन मुद, अमरभूप अभिरामः

आपे अभिनव आयने, स्नेहें सुंदरइयाम.

## सालगिरा महोत्सव.

" कवित्त "

मंगल निनाद श्रोन श्रोनमें परत आइ. आनँदके ओघ भोन भोनमें भरत है॥ कवि नथुराम यह महिमा वखाने कोन, विप्रवृन्द आशिष अनेक उचरत है।। वक्रपुरवासी जन मनकों वनाइ मस्त. धाम अभिरास धरातलमें धरत है ॥ आज महाराज अमरेशकी वरसगांठ, मुदित महान कोटि जनकों करत है ॥ १ ॥ वंकपुर नाथ पाओ परम प्रमोद वीर, द्विज सुरभिके सदा काटिके कलेश तुस।। कवि नयुराम खल खगनके वाज वनि. पाज पुन्यह्रकी बांधो सुदके महेश तुम ॥ अरि गजराजपें महान मृगराज हेकें, कीरतके काज करो छितिके सुरेश तुम ॥ जयके जहाज महाराज सुखसाज साजि, उम्मर दराज बनो राज अमरेश तुम ॥ २ ॥

वि-सं. १९६६ ता. ७-२-१० ना रोज मांडावाळा राणीजी साहेवनो शोकजनक स्व-र्गवास थतां राजकुटुम्बमां तेमज प्रजावगमां अपार दिलगीरी फेलाइ. ए राठोडराणीना स्मरणार्थे आप नामदारे रु।. २५ नी मासिक स्कॉलरशीप स्थापी. वाद नामदार शहेनशाह एडवर्ड ७ मानी वेहेस्तनशीनीना शोकजनक समाचार ता. ७-५-१० ना रोज मळतां शिरस्ता मुजव शोक पाळ वामां आव्या. एज वर्षमां आपश्रीए वांकानेरथी राजकोट जवा आववा माटे खखाणा सुथीनी मोटर सडक वंधावी तेमज वांकानेर अने राजकोटनी सरहद वचे वने राज्यना परस्पर आन्तरिक स्नेहनी यादगीरी खातर एक वंगलो वंधाववानी शरुआत करी; अने तेतुं खर्च उभय राज्य तरफथी सम-भागे वहेंची लेवामां आव्युं. एक वीजानी सरहद्गर रहेलां राज्योमां अन्योन्य आवो स्नेह हजु-सूबी क्यांइ पण जोवामां के सांभळवाणां आव्यो नथी. परमद्याळ परमेश्वर ए स्नेह कायम राखी अन्य राजाओनां अन्तःकरणमां पण एवी स्नेहभावना स्थापे एवं कयो हतमाग्य नही इच्छे ? वळी गतवर्षमा आरंभेछं श्री वालकृष्ण हवेलीतुं काम पूर्ण धतां श्रावण श्रुदि ५ ने दिवसे म्होटी धाम-धूमथी वास्तु करवामां अव्युं अने श्रावण श्रुदि ६ ने दहाडे मानवंता वामासाहेवना ठाकोरजी श्री वालकृष्णलालजीने वाजते गाजते त्यां पधराच्या. ए मांगलिक प्रसंगे जाननगरना महाराजा जाम श्रीरणजीतिसंहकी वहादुर, राजकोटना ठाकोरसाहेव श्रीलाखाजीराज वहादुर तेमज फैवाश्री वदु-वासाहेव वगेरेए अत्यन्त आनंदथी हाजरी आपी हती.

ए वर्षमां जुदे जुदे प्रसगे म्हारा तरफथी निम्नलिखित कविताओं निवेदन करवामां आवी हती.

### विजयाद्शमी.

कवित्त.

आज दिन दिव्य कैसो विजयादशमीको है,
ठोर ठोर आनँदको उद्धि छल्यो अमाप ॥
किव नसुराम पायो मंगल उदे महान,
अहित अमंगलके अंगपें लगाई थाप ॥
वक्रपुर शक ! हम आशिष उचारत हें,
राउरो रिसक वर प्रवल वढो प्रताप ॥
विजय विसेस पाओ विविध वसुंधरापें,
उम्मर दराज महाराज अमरेश आप ॥ १ ॥

197

न्यायके निधान मतिसागर महान त्योंजु, युरुसम ज्ञानवान मोदके महेश आए॥ कवि नथुराम कामरूप सुखधाम लसो, विजय वढावन त्यों काटन कलेल आए॥ जबर जयन्तसें कुमारश्री प्रतापसंग, परम प्रभासों सने छितिके सुरेश आप॥ साजिकें सवारि चले आज समि पूजिवेकों, उम्मर दराज महाराजअमरेश आप ।। २ ॥ ऐरावतसें उतंग महद मतंगज्ञें, बैठि अप्रमेय श्रेयहुसों सरसावते ॥ कवि नयुराम तरसावते अरिगनकों, वक्रपुर बीच मुदमेह वरसावते ॥ ईश्वरके अंश झालावंशके विभाकर है, सज्जन सरोजनके हिय हरसावते ॥ सोहत अम्रनृप कुँवर प्रतापसंग, इन्द्र ओ जयन्तसी चुतिकों दरसावते ॥ ३ ॥

केहिरिसे बिन या किलें, खल मेंगड़कों बिनदेर बिदारे; त्यों नथुराम पिछानी प्रभाकर, तेज बिहीन भये रिपु तारे; सज्जनवृन्द सराहत है, अरु अग्रज आशिरवाद उचारे; श्रेय लहो अमरेश सदा, मखवान महान महिप हमारे ॥ ४ ॥

## वेसतुं वर्षः

मनहर्.

पाळी धर्मपाद्य, अधर्म तृण टाळी अने, माळी वनी खंते प्रजा वागने खिलावजो; कहे नयुराम धरी हाम करी काम रुडां, भूप भाग्यशाळी वनमाळीने रिझावजो. कंटक तर्र समान कुटिलनां कापी मूळ, विद्या करावछरीने, विगर्तेथी वावजो; अमर नरेश! दिज्य झाला कुळना दिनेश, हर्पमां हमेश वर्ष निवन वितावजो. शाणा मकवाणा सदा आपने उमंग धरी, आशिएनां वचने(थी विबुधो वधावजे!, नित्य नयुराम नरपाळ इरपाळ वंहो; विनय हरिना वाळ, श्रेयची सुहावजी, आपना कुमारश्री पतापसिंह आप पेठे: मेळवी सुपश वळ बुद्धितुं वतावजो, अमर नरेश! दिव्य झाला कुळना दिनेश. हर्पमां हमेश वर्ष नविन वितावजी. ध्यान धरी छी बुं धर्मतणुं धर्मवीरपणुं, अर्जुननी युद्धकला एकठी करी अर्ति, नकी नथुराम ग्रह्यं सुजवळ भीमतणं, जेणे करी दुष्ट दुरयोधननी संहति; श्रेष्ट अश्वविद्या संग्रहीने सहदेव तणी, नकुलनो भारुभाव मेळवी महामतिः मसुए सपेटी पांच पांडवोना सद्गुणोने, युद्धियी वनाच्या अमरेश अवनिपति.

₹

D)Ca

महद मितथी नित्य नरपित मडलमां, मवळ फतेहनी पताका फरकावजो; कहे नथुराम नेह निर्मळ निभावी नृप, आश्रितना अंतरमां आनंद उपावजो; राखी भीति नीतिपरे, मेळवजो जीत महा, भळी रीतभातथी भळा जनने भावजो; अमर नरेश! दिव्य झालाकुळना दिनेश, हर्षमां हमेश वर्ष निवन वितावजो.

8

दोहा.

पालक सुरिभे संतना, भीतें सहपरिवार, निवन वर्षमां अमर तृप, आनंद लहो अपार.

ताण २ २ - १० - १० आश्विन वदी ४ शनिवारे परम वैष्णव धर्मपरायण मानवंता वामा साहेब, वाश्री मुळीवा साहेव तथा महाराज कुंवरीश्री तख्तकुवरवा साहेव द्यज्ञी यात्रा अथं पध्या. साध्ये मामा साहेवनां म्होटां वहु तथा पुत्री सज्जनकुंवरवा, पाइवेट सेक्नेटरी मी० रतशा वेजनजो, चीफ मेहीकळ ऑफीसर मी० गजानन झीणाभाइ तथा आरव अने वडारणो वेगरे मळीने ळगभग त्रीश माणसो हतां, ताण २४ मी अकटोवरे नामदार वामा साहेव सर्व मंडळ सहित सवारात दश क्याने सुमारे मथुरा केन्टोल्मेन्ट स्टेशने कुंशळतापूर्वक पहींच्यां, त्यां अगाज्यी गाडी वगेरे सर्व वाहनोनी गोटवण करी राखी होवाथी तेमां वेसी सर्व उतारे आव्यां. उतारो वंगाळी घाट उपर पाळीताणावाळा गोर चोवा गिरधर मुरारीवाळी धर्मशाळामां राख्या हतो. तेमां जनानानी मर्यादा जळवाय एवा सुंदर जुदा जुदा विभागो छे. ता० ५ मी नवेम्बरे प्रभातमां श्रीहजचोराशी कोशना परिक्रमण अर्थे मथुराथी प्रयाण करी मानवंता वामा साहेव तथा वाश्री मूळीवा साहेव वगेरेए प्रथम विश्रामघाट उपर अत्यंत श्रद्धाथी स्नान कर्या वाद पगेपाळ चाळवुं, भूमिपरशयन करवुं, मस्तके तैळ न नाखवुं, मस्तक तेमज अन्य अंगोपर सुगन्धि अथवा एवी वीजी कशी चीज चोळीने न न्हावुं, तथा हमेशां एकश्वक्त रहेवुं अर्थात् एक वखत जमवुं इत्यादि नियमो छीधा परिक्रमामां रोज वे चार कोश पातःकाळमां चाळी वगवाळा स्थाने पडाव नांसी आसपास देवदर्शन करी मोडी रात सूधी

भगवतभजन करता अने पाछा उपाकालमां ठंडा परोरना आगळ चालतां इतां. रस्तामां यथोचित पुन्यदान करता करतां मथुराविश्रामघाटे आच्यां. आ स्थळे इन चोराशी कोशनी परिक्रमा पूरी थवाथी गोरने तेमज अन्य द्विजगणने सुदक्षिणा आपी पथम लीधेल इतथी मुक्त थयां. त्यारपछी ता. ३-१२-१९१० ना रोज सवारमां पाछा विश्रामघाट उपर पधारी श्री यमुनाजीनुं पान कर्युं. त्यां वस्त्राभूपणोथी जणगारेली सुखज्ञय्या यमुनाजीने धरावी गोरने श्रीकृत्णापण आपी पुनः विमोनो तेमज व्हाला संतोनो योग्य दान आपी सत्कार कर्यों. वळी अकेंक गाय खरीदी मानवंता वामासाहेव तथा वाश्री मूळीवासाहेवे तेमने कामधेनु तुल्य शणगारी पुरोहितने पुण्यार्थे पदानमां आपी. त्यांथी ता. ५-१६-१९१० ना रोज रात्रे रेल्वे रस्ते सर्व रवाना थइ ता. ६-१२-१९१० मंगलवारे अत्य वाग्ये अजमेर उतर्या. त्यांथी चार कोज उपर आवेला श्री पुष्करराजनां दर्शन करी रात्रे दशवागे सत्द्रनमां वेसी सुखशान्तियी यणाविधि हनयात्रा करी वीजे दिवसे एटले ता. ७-१६-१९१० बुधवारना रोज रात्रे आठवाग्ये वांकानेर पधार्यों. ते वत्वतें आपें पोताना पुरवासीओ,अमलदारों, रिसालों, पोलीस पल्टन तथा वैष्णवोनो पंडली सहित गाजते वाजते सामैयुं करी रंगवेरंगी ध्वजा पताका तथा रोशनीथी रम्यताने धारण करी रहेला वांकानेरमां पूज्य मातुश्रीनी पधरामणी करी.

आंग्ल भूमिना पाटनगर लंडनमां ता. २६-६-११ ना रोज हाहेनहाह ज्यॉर्ज धी फीपथने पोताना प्रतापी पूर्वजोनी गादीपर अभिषिक्त करवामां आव्याः ते मांगळिक दिवसे वांकानेर
तळपद तेमज तावाना सर्व गामहाओमां जाहेर तहेवार पाळवामां आव्यो हतो. निशाळो तेमज
कचेरीओ वंध राखवामां आबी हती. ते दिवसे मभातमां वादशाही सलामतीनी ३१ तोपोना
वहार करवामां आव्या हता. त्यारवाद पेरेडग्राउन्ड उपर रिसाला स्वारनी रीव्युं तथा पोलीसनी
द्वायत अने प्युडीजोयना केटलाक वहार जोवाने आप नामदारश्री अधिकारी, भायात तेमज
व्यापारी वर्ग सहित पधार्या हता. वळी आप नामदारश्रीना फरमान मुजब समस्त प्रजाप पोतपोताना मंदिरोमां इष्टवेवनी प्रार्थना करी. नामदार मिलके मुा. शहेनशाह तथा शहेनशाह वातुनुं
दीर्घायुष्य, मुखशान्ति तथा आवादी इच्लवामां आव्यां हतां. ए उक्त निमित्ते विद्यार्थीओने पण
शाळामां इन्वरप्रार्थना करावी मीटाइ वहेंचवामां आवी हती.

ए दरिमयान एजन्सीनी इदमां धंधुका पासे आवेलो खस्ता नामनो महाल के जे घणां वर्षो यया वांकानेरनी हकुमत तले छे. त्यांना लोको जे जमीन खेडता ते जमीनना तेओ ज्ञिर- जोरीथी स्वतंत्र मालिक वनवा राज्यशी विरुद्ध वर्तवा छाग्या. एथी वि. सं. १९६० ता. १९८८ ९८ १९८४ ना रोज अमदाबाद फर्स्ट्रेकलास सवजन साहेवनी कोर्टमांलडत शरुथड हती. एलडत आशरे साडात्रण वर्ष चाली, तेमां छेवेट ता. १८६८ ना रोज आप नामदारनो विजय थयो छतां मतिवक्षोओए मुंबइनी हाइकोर्टमां अपील करी. त्यारवाट कोइ सुज्ञनने तेओने समज्जती आपी के तमो ठेठ पार्लामेन्ट सुधी लडशो तोपण फावशो निह कारण के अंते साचुं ते साचुं अने खोडुं ते खोडुं छे. नाहकना नाणा शा माटे ग्रमावो छो? आधी नरम पडेला खस्ताना खेडुतोए ता. १७८१ ८२० ना रोज अपोल पाली खेंची लीघी. पछी आप नामदारे जमीन कवजे लेवा वावतना जुदा जुदा ६६ दावाओ अमदाबादनी सवजन कोर्टमां अने ३२ दावाओ धंचुकानी मामलतदारनी कोर्टमां दाखल कराच्या. ए तमाम दावाओ वि. सं. १९६७ मां आपश्रीना लाभमां थया. ए काममां तथा राज्यहक तेमज राज्योत्रि सवंभी बीजां दरेक कार्योमां मुख्य कारभारी श्रीयुत नाथाभाइ अवीचलदास देशाइए महान परिश्रम उठावी आप नामदारनी उमदा सेवा वजावी छे अने हजु वजावे छे.

शंवत १९६८ ना वेसता वर्षने दिवसे म्हारा तरफयी निम्नलिखित कविना बोलनामां आवी हती.

दोहा.

पामो पूर्ण प्रताप, अमरभूप आनंदथी, अभिनव वर्षे आप, अभिनव विभव वधारजो. सवैया.

मंगळमोद महान ग्रही, स्रविनोदथी वासर सर्व वितावो; कार्य अनंत करी कीरतिषय, श्रेष्ठ समाजतणां तन तावो; श्रीअमरेश नृपाल अतुष्म, धर्मध्वजा करमां नित्य धारो; नेह धरी नवले वर्षे. नयुरामनी आशिष आप स्विकारो। पूरण प्यारथी पाळी प्रजा, प्रजपालकतुं पद पूर्ण दिपावो; धर्म प्रकाश करी धरणीपर, ध्वांत अधर्मतुं हाल हठावो; संत सुरोनी सहाय करी, अमरेश असंत असुर सहारो; नेह धरी नवले वर्षे, नयुरामनी आशिष आप स्विकारो।

राजीं करो सहु रेंट्यतने नृष, शीतल चंद्र समा वर्नी चारु; शत्रु शिरे वनी सूर्य तपो, करवा सुख नीचतणुं सहु न्यारुं; पाछन पंडिततुं करींने, अमरेश अपंडितना मद मारो; नेह धरी नवळे वरपें, नथुरामनी आशिष आप स्विकारो. 3 एकद्रगे धरजो तृप अमृत, एकद्रगे धरजो विष व्हालाः नेक अने वदमाणस छेक, दियो निरखी नित्य अमृत हाला; गर्दभने शिर भार भरो, इय उपर जीन जडित्र सु धारो; नेइ धरी नवळे वरपें, नयुरामनी आज्ञिष आप स्वीकारो. उन्नत कोट अपार चणो, यशना अति अंबरथी अडनाराः गंग समान उमंग धरी, चलतो धरणीपर धर्मनी धाराः चित्र विचित्र चमत्कृतियुक्त, सुमेंगल सुकृतिना शणगारी. नेह धरी नवले वरपें, नयुरामनी आशिष आप स्विकारों. व्हादुर वन्दी मराल मनोहर, देश विदेश विषे विचरावा, म्वेत करी बसुधायशथी फरी, दिग्गजनां शिर न्वेत बनावो; विक्रम भोज युधिष्टिरनी कृति श्री अमरेश घडी न विसारो, नेह धरी नवले वर्षे, नयुरामनी आज्ञिप आप खिकारो. शक्रशची सम दंपती आप, मनोहर मंदिरमां सुख माणो, श्री युवराज प्रतापी पताप पहुंत जयंत समा उर आणी; सर्व कुडंबनी संग उमंगथी, वक्रपुरेश करो सुविहारी, नेह थरी नवले वरपें नयुरामनी आशिप आप स्विकारो. छांय करों किन कोनिदने शिर हेत धरी करों हाथ हुमायु, सर्व रहो मुखशान्ति महीं वनी श्री युवराज समेत श्रतायुः पूर्ण मकाशी रही रजनी दिन, श्री अपरेश मताप तमारी, नेइ धरी नवले वर्षे नयुरामनी आज्ञिप आप स्विकारी. 4



अमर कीर्ति अवनिपरें, अपरपुत्र परिवार, अमर भूपति अमर सम, जीवो वर्ष हजार.

कोरोनेशन दरवार उपर ता. ३० नवंबर १९११ ना रोज अत्रेथी योग्य रिसाला सहित नीकळी ता. २ डीसेंबर १९११ ना रोज आप नामदारश्री दिल्ही पहोंच्या. अगाउथी आसी. एन्जी-नोयर जादवजी अमुलखने केटलाक माणस साथे मोकली वॉम्बे चीफना वीजा ब्लॉकमां कॅम्पनी सर्व सगबडता करी राखवामां आबी हती; अने तेज तारीखे मलीके मुा. शहेनशाह तथा शहेनशाह वानुनी मुंब इंदरे पधरामणी थवानी होवाथी ते दिवसे अते नळपदमां जाहर तहेवार पाळवामां आव्यो हतो. तेमज ता. ७ थी ता. १२ डीसेम्बर १९११ मुबी कोरोनेशन दग्वारनी खुशालीमां जाहर तहेवार पाळवामां आव्या हता; अने तेज तारीखे मलीके मुा. शहेनशाहनी दिल्हीखाते पबरामणी थइ हती. राजा महाराजाओ सहित एक भभकादार स्वारी स्टेशन उपर गई हती तेमां आप नामदारश्रीए पण हाजरी आपी हती. मलीके मुा. शहेनशाहे करेली गार्डनपाटीं, पचीस हजार लइकरी सिपाइओनी कवायत अने पोलोडनेंमेन्ट विगरेमां भाग लइ आपश्रीए आनंद मेळव्यो हतो. ता. ९ डीसेम्बर १९११ ना रोज खास आमंत्रणयी मलीके मुा. शहेनशाहनी मुलाकातनो तथा शहेनशाही खाणानो लाभ मळ्यो हतो.

ता० १२ हीसेम्बर १९११ ना रोज जे दिवसे दरवार भरावानो हतो, ते दिवसे प्रातःकाक्रमां पोस्ट मारफत के सी. आइ इनो विताव आप नामदारश्रीने समर्पण थयाना ग्रुभ समाचार सांभळतां अभिनव आनंदनो स्वत्र प्रादुर्भाव थयो। त्यार वाद दरवारमां जइ अन्य अपतिओनी पेठे मलीके मु. शहेनशाह तथा शहेनशाह वानुनी सलामी लीधी। ते दिवस तलपदमां पण
एक महात्सव तरीके जजववामां आव्यो हतो। वपोरे वार वागे मलीके मु० शहेनशाहवानुनी तस्वीरो गामहामां तेमज तलपदमां सर्व कोइ जोइ शके तेवी रीते राखवामां आत्री हती। त्यार
पळी वादशाही ढंढेरो वांची संभळावश्रमां आव्यो हतो। ते समये वादशाही सलामनीनी १०१ तोपोना
वहार करवामां आव्या हता। सांजना त्रण वांगे तलपदमां आ। हेप्युटी कारभारी मी। अभेचंद गोवींदजी
देसाइना अध्यक्षपणा नीचे आ० एज्यु। सेक्रेटरीए तळपदनी शाळामां अल्याम करना विद्यार्थीओ
तेमज कन्याओने आशीर्वचननी कविताओ वोलाच्या वाद कोरोनेशन मेडल आपीने मीटाइ वहेंचवामां

आवी हती. गामडाओमां पण मुख्य महेताजीद्वारा सर्व व्यवस्था करवामां आवी हती. तेज रात्रिए आप नामदारश्रीने के. सी. आइ. इ. नो खिताव मळ्याना अले तारथी शुभ वर्तमान मळतां प्र- जामां आनंदनो अत्यंत आविर्भाव थयो. वीजे दिवसे ता० १३-१२-११ ना रोज डेप्युटी कार- भारी अभेचंद गोविंदजी देसाइ तरफथी अपलदार सहित प्रजा समस्तने आपश्रीने मळेळ खिता- वनी खुशाली अर्थे टीपार्टी आपवामां आवी.

ता० १४ डीसेम्बर १९११ ना रोज रात्रे सम्राट् शहेनशाहे स्वहस्ते आप नामदार-श्रीने के. सी. आइ. इनो चांद एनायत कर्यो. त्यारवाद लींवडी, लखनर, रतलाम, शाय-पुरा, जामनगर, किसनगढ, मांडा, भावनगर, ध्रांगध्रा, झालरापाटण आदि शहेरना भूपितनी भावथी मुलाकात लीधी. तेज प्रमाणे तेओने पण आप नामदारे पोतानी मुलाकातनो लाभ आ-प्यो. स्नेही राजकोट ठाकोर साहेवना समागमधी वारंवार आनंदमां दृष्टि थती हती.

ता० १६ डीसेम्बर १९११ ना रोज रवाना थड राव वहादुर नाथाभाइ अवीचछदास देगाड, मामा साहेव दीपसिंहजी विभाजी, सोरावज्ञा कावज्ञजी कल्यवाळा एजन्ट वंगरे ८५ माणसो ता. १७ मीए वारोवार वांकानेर आव्या; अने आप नामदारश्री मुंबइ पथार्या, त्यां वाणिज्यार्थे वसती आपनी शेमी प्रजाए रुपेरी दावडामां उमदा मानपत्र आपी हारतीरा वंगरेथी पोतानी राजभिक्त प्रदर्शित करी. ते स्वीकारी आप श्री ता० २९ डीसेम्बर १९११ ना रोज अत्रे पथार्थी.

संवत १९६८ ना पोप शुद ११ ने सोमवारना रोज आपश्रीना जन्ममहोत्सव प्रसंगे म्हारा तरफथी आ "श्री झालावंशवारिवि" (समस्त झालाकुळनो इतिहास) नामनो ग्रन्थ आप नामदारने अपण करवामां आव्यो तेनी कदर करीने मने रु. ३०० नुं वर्षासन करी आप्युं तेमज म्हारा शिष्य कवि केशवलाल इयामजी वारोटने रु. २५० नुं उपदुं पारितोषिक वक्षी वन्नेने झरीआन पोजाकथी आप नामदारश्रो निवाज्या त्यार वाद म्हारा तरफथी निम्न लिखित आशीर्वादात्मक कविता वोलवामां आवी हती.

छप्प य

सित एकादशी सुभग पोपकी परम प्रभामय दानी अमरकोंदेहु जगतमें विनसंशय जय वरस वरस प्रतिसरस रंगको सागर रेछत, वर्षप्रनिथ नयुराम भूपकी फिछ मुद फैछत वकपुरीमें शतवरस, शोभा एसीसनी रहो शकसरिस यहसाहिबी, बहुदिन तछक वनी रहो॥

#### कवित्त

वरन मिले न कैसें कियो जाय वरनन, दीपोत्सवीतें दिखात दिव्यतामें दोयुनी ॥ त्रिगुनी है तंतविन अक्षय तृतीया हू तें त्यों गनेस चोथतें है चित्तहर चोग्रनी ॥ कविनयुराम आठगुनी जन्मअष्टमी तें मुदप्रदमानो रामनवमीतें नो गुनी ॥ आज महाराज राजराना अमरेशजुकी, सालगिरा सोहे और उत्सवतें सोग्रनी संतहानि हरिबेमें, ढाल आसे धरिबेमे, असुरको अंत करिबेमें उतसाहिनी ॥ कार्व नयुराम सिद्धिभक्तभोंन अरिलेमें, आतुर रहत मुदउत अवगाहिनी ॥ किंकरको कोमल ओ पापीको प्रचंड छवि, जाहिर जताइ दल दुष्टनके दाहिनी ॥ रच्छक है वही दच्छ राजराना अमरकी, रेनहार बरकी संदैव सिंहवाहिनी ॥

छप्पय.

चरन चरन चतराइ, स्मरनहै सब साहितको, वरन वरनपरसदा, चहन है अपुरव चितको ॥ नित्य वसत नथुराम, कौमुदी मनहर मुखमें, अलंकार सज अमित, स्नेहसों विलसत सुखमें ॥ भूरि नायिकाभेदमें, सुज्ञ सुभट वर छत्रहै, उत्तम कवि नरपीत अमर, पूर्न प्रशंसा पात्रहै ॥

तेज दिवसे साने आपश्रीनी त्रेमाळ वस्ती तरफथी हाइस्कुलना मकानमां आप नामदारश्रीने के. सी. आइ. इ. नो खेताव मळ्यानी खुशालीमां मेळावडें। करवामां आव्यो हतों। तेमां त्रथम अमुक अमुक गृहस्थो वोली रह्या पछी महाजन समस्त तरफथी निम्न लिखित मानपत्र वांचीने चांदीनी कास्केटमां आपश्रीने ते अपण करवामां आव्युं हतुं।

गौब्राह्मण प्रतिपाळ महाराणाश्री सर अमरसिंहजी बहादुर के. सी. आइ ई.

माननीय प्रजापालक महाराजा साहेब.

ता० १२ डीसेम्बर १९११ ना रोज नराएळ दीन्ही दरवारना चिरस्मरणीय शुभ प्रसंगे हिंदना नामदार शहेनशाह वहादुर ज्योर्ज धी फीफ्थना स्वहस्ते के. सी. आइ. नो मानभर्यो खिताव जे आप नामदारे मेळच्यो छे तेने माटे आपना राज्यभक्त समस्त प्रजा वर्गने मगस्वी साथे अति आनंद थयो छे; अने अमो सर्व ते माटे आपनामदारने अंतःकरणपूर्वक अभिनंदन आपवा रजा कडए छीए.

नामदार महाराणा साहेब, आपनी उत्तम प्रकारनी राजनीति तथा कारकीदिंनी जे कदर करीने आ अपूर्व मान नामदार ब्रिटीश सरकारे आ इलकाव एनायत करीने आप्युं छे तेने माटे अत्यंत आनंद अने मगरुवीना जे भाव अमारा सौना हृदयमां उल्लेश रहा। छे; ते यितकंचित मद्राणित करवानो आ अति उत्तम अने पहेलोज मसंग अमने मल्यो छे, तेने माटे अमे अमारां अहे।- भाग्य समजीए छीए.

~~~

आवां मानपत्र जेवा एक अति नम्र प्रयत्नमां भाग्येज गणावी ज्ञाकाय एटला, अने एक ज राजकर्तानी अंइर भाग्येज जोवामां आवता अपूर्व गुणसमुदायते लीधे राज्यनांनी प्रत्येक व्य-क्तिना हृदयमां ज्ञाश्वत स्थान आप नामदारे पाप्त कर्ष्य ले तेमां सहेज पण आश्चर्यनी वात नथी.

राजकुमार कॉलेजमां उत्तम पंक्तिना कुमार गणाइ मे. मेकनॉटन साहेव जेवा पिन्तिपालोना हाथ नीचे प्राप्त करेली केलवणी हिंद तथा युरोप आदि देशोमां मुसाफरी करवाथी ते केळवणीने मलेलो ओप, तेमज आप नामदारश्रीनी सगीर वयमां राज्यनी सम्कारी देखरेखना समयमां प्राप्त करेल अनुभव—आ सर्वनो स्वाभाविक लायकातने लीवे आप नामदारे संपूर्ण सदुपयोग कर्यों छे अने तथीज ने उंची आशाओ हरकोइए प्रथमथी वावेली ते सर्वने आप नामदारे
दरेक प्रकारे परिपूर्ण करेली छे.

सत्य अने न्याय प्रत्ये प्रेम, पूर्व-पश्चिपना सद्गुणोनी संवादी एकत्रना, हाइस्कुल जेवी संस्थाथी, मोटी मोटी स्कॉलरजीपोथी तथा प्राथमिक केळवणी मफन करवानां स्तुत्य पगलायी केळवणी प्रत्ये स्पष्ट रीते जणाइ आवती दिल्ल योजी एटले के प्रजा प्रत्ये यमता एइ।आराम जता करीने राज्यने लगती दरेक वावत जाते जोवानी खायेश, जाते काम करी अयाग श्रम सहन करवानुं धैर्य, लोकोपयोगी काम पाछळ राज्यना महेसुलनो व्यय, वणकरोना तेमज अन्य उद्योगोने अमूव्य उत्तेजन, राज्य कर्ताना धर्म तथा जवाबदारीनो अति उंचो ख्याल अने गमे ते पंक्तिना माणसने गमे ते वखते जाते अरज हेवाल करवानी तक आपवानी इंतेजारी, आ अने एवा वीजा आप नामदारना अनेक अवर्णनीय नाना मोटा सद्गुणसमुहने लीधे राज्यनी आवादी अने प्रजा वर्गनी सुख समृद्धिमां अत्यार सुधी कदी न थएली जे दृद्धि थइ छे तेनी संपूर्ण कदर जे अमे भाग्येज करी शकीए ते नामदार ब्रिटीश सरकारे जाते करी वतावी छे; ए वात स्पष्ट रीते देखाइ आवे एवी छे.

जरा विशेष पडतु छंवाण करवा माटे आप नाम्दारनी क्षमा याचीने पण अमे कहेवानी रजा छइए छीए के संवत १९५६ नी सालनी अने आ वरसनी अनादृष्टिना पसंगे प्रजा सम-स्तने तेनो धको जैम ओछो लागे तेम करवा माटे जे सरलता भरी सगवडो आप नामदारे प्रजा वर्गने करी आपी छे, अने जे स्तुत्य पगलां आपे लीधेलां छे ते भायात, नोकरीयात प्रजा अने खेडुवर्ग ए सर्वनी स्थिति सुधारवा माटे एक पिता तरीकेनी जे काळजी आप धरावता आच्या छो

ते, अने छदटे जे गुण एक इन्बरी अंश गणाय छे अने जेना विना कोई पण प्रकारनी महत्तामां न्यूनताज गणाय एवो पहान गुण जे दया ते, तेमज आप नामदारनी भन्य आकृति जे आंतर गुण समुदायना प्रतिविम्ब रूप छे ते, अने छेवटे प्रजावर्गमां पिय थएला तथा राजनीति निपुण राववहादुर नाथाभाई अवीचलदास देशाई जेवा दिवानसाहेव के जेमनो अने आप नामदारनो अवि-चिल्ल योग प्रथमथी ते छेक अत्यारसुधी प्रजानी सुखशांतिनां मोटां कारण रूप छे तेमने चुंटी कहाडवानी आप नामदारनी जातनी दीर्घहिष्ट इत्यादि राजकर्ता तरीकेना आ सर्व गुण एवा छे के जेने माटे अमे जे कहीए के जे कंइ करीए ते सर्व ओछुज छे.

महाराणा साहेव, आपने जे उचा प्रकारनुं मान मळयुं छे तेने माटे अमे पुनः एकवार आप नामदारने जीगरथी मुवारकवादी आपीए छीए, अने इच्छीए छीए के, आवां अन्य विशेष मोटां मानने पात्र आप नामदार भविष्यमां पण सर्वत्र गणाओ.

छेवटे जे अगाध प्रजापेम आप नामदारे मेळव्यो छे तेनां करतां पण विशेष प्रेम मेळवी शकवा माटे आप नामटार अने आखां राज्यकुटुंवने प्रभु दीर्घायुष्य अपे, अने दिनप्रतिदिन प्रत्येक रीते आप नामटारनी दृद्धि थाय एम अमे सौ सर्व शक्तिमान, परमक्रुपाळ परमेश्वर पासे अंतःकरण पूर्वक प्रार्थना करीए छीए.

वांकानेर अमे छीए, सबत १९६८ ना पोप श्रद्ध ११ आप नामदारनी नम्र अने वफादार प्रजा.

त्यारवाट आप नामटारश्रीए प्रत्युत्तरमां नीचे प्रमाणे जणाच्युं.

अमारी व्हाली, राज्यभक्त अने वफादार प्रजा!

तमारी सरळ अने राज तरफ शुद्ध लागणीथी उभरातुं मानपत्र स्वीकारतां अमने घणो आनट थाय छे अने तेमां तमे जे शुभेच्छा वतावो छो तेने माटे अमो खरेखरा आभारी छीए.

आजकाल योग्यायोग्यनो ख्याल कर्या सिवाय नाना मोटा टरेक प्रसंगे मानपत्रो आपवानो रिवाज एटलो विधो प्रचलित थएलो जोवामां आवे छे के तेनी जे प्रथम महत्ता गणाती ते अमारा मनमांथी तो वणे भागे ओछी थड जवा पामी छे, अने तेथीज तमो विगरेनी अमने मानपत्र आपवानी आ पहेलांनी वखतोवखननी खायेशने अमाराथी स्वीकाराड नहोती अने तमने नाउमेट

करवा पड़्या हता. आ परंगे पण तमारी आ इच्छा जगातां अमारी मरजी तो तेम थवा देवानी नहोती, परंतु अमारा दिल्हीथी अत्रे आवतां अवल तमे सर्व तैयारीओ पुरी करी राखी हती, अने तमो सर्वनी ए वावतमां एटली वधी शुद्ध अने पवल भावना जणाइ के अमारा मनने आधी सं-कोच थाय ते थवा दइने पण तमने आ प्रसंगे नाउमेट न करवा ए अमने वधारे टीक लाग्युं.

तमे तमारा मानपत्रमां अमारा तरफ जे लागणीओ वतावी छे तेथी अमने जणाय छे अने आनंद थाय छे के जगत्कर्ताए अमारे माथे जे राजकर्तानी फरजो नांग्वी छे ते बजाववामां अमाराथी जे कांइ वन्युं छे तेथी तमने पूर्ण संतोप छे अने तमे मुखी छो. एक गजकर्ताने पोतानी पजा सुखी अने संतोपी होय तेनां करता वीजुं थुं आनंदकर्ता होय? राजा अने प्रजानो सबंध पिता पुत्रना जेवो छे अने तेमां मावतर पोतानी प्रजानां मुख तथा तेनी उन्नति माटे जेटलुं बनी शके तेटलुं करवा बंधाएल छे; अने अमे जे कांइ तमारे माटे करेलुं छे ते अमारी पितत्र फरजोने लइनेज करेलुं छे. अमने लागणी मात्र एटलीज थाय छे के दुकाल अने ते पत्रीना नवला बर-सोने लइने अमाराथी अमारी इच्छा प्रमाणे बनी शकतुं नथी.

छेवट अमने जणाववाने अति हर्ष थाय छे के नामदार ब्रिटीश राज्य तरफ अमारी जे प्र-माणे दृढ वफादारी छे तेज प्रमाणे तमो सर्व पण परदेशमां रहीने तेम अही पण लागणी धरावो छो. वली हालमां नामदार मलीके मु॰ शहेनशाह तथा शहेनशाहवानुना दिल्हीना कोरोनेशन द: रवारना अति अनुपम अने महान प्रसंगे ते अवसरने योग्य उत्साहथी उत्तम प्रकारथी उजववामां अमने सहाय करी वतावी आप्युं छे के आपणे पण तेओ नामदार तरफ ब्रिटीश प्रजा करतां व-फादारी तेमज लागणीमां कोइ रीते उतरीए तेम नथी. आथी अमने घणोज संतोष थयो छे, अने ट्रि धणीनी इच्छा एज प्रजानुं कर्त्तव्य एम तमे स्पष्ट वतावी तमारी राज्यभक्ति सिद्ध करी आपी छे.

तमो सर्व अमारे माटे जे शुभ इच्छाओ वतावो छो ते माटे तमारो अमे जीगरथी पुनः आभार मानीए छीए; अने सर्व शक्तिमान मधुनी पार्थना करीए छीए के ते आपण सर्वनुं रक्षण करी तमने सदा छुख आपवा अने तमारी हरेक रीते उन्नति करवा अमेन मेरी, जोइता साधनोनी अनुकूळता करी आपे.

आपश्रीनो प्रजा वात्सल्यतामय प्रत्युत्तर सांभळी सर्व कोइना अंतःकरण आनंदथी उभराइ गयां अने तालीओना अवाजधी सभाभुवन गाजी उड्युं हतुं. आ उत्तम प्रसंग उपर म्हारा हर्षोद्-गार नीचे प्रमाणे प्रदर्शित करवामां आच्या हता.

कवित.

अगानित आर्थ औ अनार्व समराट् जहां, पुन्यसों पसारि गये प्रवल प्रतापकों ॥ कवि नयुराम ऐसी हस्तिनापुरी में अब, अंग्ल सामराज्य तपे हरी सब तापकों॥ आये देश देशके नरेशन निमंत्रनसों, सुनि अमरेश ! तामें सुगुन अमापकों ॥ परत प्रवीत शे'नशाह ज्यॉर्ज पंचमने, के, सी, आई, इको इसकाब दियो आपको ॥१॥ धन्य मखवान को न जानत जहान मध्य, वडे बुद्धिमान बनेसिंहके कुमार तुम ॥ कवि नथुराम बांकानेरके नरेश बांके, अहो अमरेश ! प्रजा वत्सल उदार तुम ॥ दिल्ही दरवाग्के अवर्णनीय उत्सवपें, स्नेहसों सिधाये जन उत्तमके यार तुम ॥ भाये शें नशाके मन छाये मुद पाये महा, के, सी, आई, इको इलकाव आवदार तुम लोचनकी लालिमा ओ मूछको मरोर तेरो, देखिकें करोरग्रने दुष्टजन डरपत ॥ कवि नयुराम बुद्धिआला तुव झालापति, के, सी, आइ, इको चांद अंग्लपति अरपत॥

कितने महिप ऐसो मान गहिवेके काज. अबलों तृपातुरकीं न्हांइ उर तरपत ॥ राखि पत हिन्दके समस्त रजवारनकी, धन्य असरेश वांकानरवाले नरपत 11311 देहलीमें दिव्य वारा तारिख डिसंवरकी. हिन्दकी तवारिखमें अविचल हे गइ॥ कवि नथुराम सन उन्नीससंग्यारहकी, गहन महत्ताछिति मंडलमें छे गइ भंग बंगहको विनमद सवरद करि, लोनी साहिवींसों यश अनहद ले गइ ॥ आपको अमर ! ज्यॉर्ज पंचमकी पातशाही, ओसरपें के, सी, आइ, इको पददेगई ॥ ४ ॥ बालवयहीसों गुन उत्तमके वोयेंवीज, तरुनपनेमें वहतरूपन पाये हैं ॥ कवि नथुराम भये शाखासों समृद्ध फिर, प्रजा पालिबेतें नव पहनसों छाये है ॥ परी द्रगतापें शें नशाह ज्योर्ज पंचमकी, गौरवसें वहीं बच्छ भूरि मन भाये हैं ॥ तामें के, सी, आइ, इके रम्य इलकावरूप, अमर नरेश अब नीके फल आये है।। ५॥ शौर्य केंसरीसो कल्पतरुसो परोपकार,

समता करत न्याय सुरनदीं नीरकी॥ किन नथुराम लसे धाम तुब कामसम, सोहे जस समता गहींकें निधिछीरकी ॥ धरनीसो धेर्य ओ गभीर पन सागरसो, विक्रमसी प्रथा हरनी है पर पीरकी।। अमर नरेश एक बरनी न जावे बात, तुलना करोमें कहां तेरे तकदीरकी ॥ ६ ॥ हमें कहाकाज सत जुगको कहोमें सत्य, जामें अमरेश ! नांहि जनम तिहारों है ॥ कवि नथुराम तुम पाये जन्म जा जुगमें, वोही जुग सत्य अन्य कलि कलिबारो है।। कोऊ तुव जन्म कलिकालमें कहेतो फिर. वोही क्लिकालहमें प्रानसम प्यारो है।। पाओ दीर्घ आयु प्यारे आत्मज प्रतापसंग, हितकर ऐसो आशीर्वचन हमारो है॥ ७॥





चतुर्विशत् तरंग,

€70°0°

छप्पय.

हर सरखा हरपालदेवना द्वितीय वालक; मांग्रजी महाभाग्य, श्रया पृथ्वीना पालक; जाहिर गढजांबुनी, जबर चोराशी जमाबी; एना वंशनी राजगादी लींबडीए आवी; अमर ! हाल ए कुळमहीं, दोलतनृप दु:खहरण छे; मारे मन नथुराम सहु, झाला अमृतझरण छे.

राज हरपाळदेवजीने सोढोजी, मांगुजी, तथा सखेराजजी (शेखरोजी) नामना त्रण कुमा-र हता, तेमांना पाटवी कुमार सोढोजी पाटडीना गादीपित थया. मांगुजीने गाम जांबुनी चोराशी अने शेखराजीने सचाणा तथा चोरवडोदरा गरासमां मळ्युं. मांगुजीए वि—सं. ११८६ नी अंडर गढजांबुमां पोतानी राजधानी स्थापी. +

+ " श्रीयश्वंतजीवनचरित्र " नामना ग्रन्थमां लखे छे के " मांग्रजीए वि-सं. ९१० थो ९५१ सुधी ४१ वर्ष राज्य कर्यु." आ वावत तेओए भाटना चोपडाने आधारे लखी छे एवं जणावे छे पंतु श्री झालाकुलना वारोटना चोपडामां तो वि-सं. ११८६ थी १२०६ सुधी मांग्रजीनो समय मानेले छे. केटलाएक एम कहे छे के मांग्रजीए वीश वर्ष पर्यन्त राज्य कर्यु इतुं, केटलाएक वि-सं. ११२६ मां मांग्रजी इता एवं जणावे छे. " हिन्दराजस्थान " मां वि-सं. ११८६ मां हरपालनो स्वर्गवास थयानुं जणावे छे अने ए कदाच सत्य मानीए तो वि-सं. ११८६थी सं. १२०६ सुधी वीश वर्ष मांग्रजीए राज्य कर्यु ए हकीकत मली आवे छे; श्री यश्वंतजीवनचरित्रमां लखे छे के " मांग्रजीने एक वखत कुतुवुद्दीन वादशाह साथे लडाइमां उतरचुं पडयुं हतुं ए वेला तेओए धंयुकाना आशाभिल्लनी मददथी वादशाही लक्करने हरा-



H H The Thakore Saheb,

Limbdi

THE NATE AMONG THE COM



कहे छे के पावरमांथी आवेला केटलाएक काटी लोकोए जांवुना मदेशमां जबरी लंट च-लावी, त्यारे महान प्रतापी मांगुजीए ए सर्वनो संहार करी पोतानी प्रजाने आपित्तमांथी उगारी हती. तेओनो स्वर्गवास थतां तेमना कुमारश्री मधुपालजी उर्फे मुदोजी वि० सं० १२०६ मां गढ जांवुनी गादीए वेटा. सांभलवा प्रमाणे तेओनां लग्न जुनागढना कोइएक चुडासमा जातिना रजप्तनी कुंवरी साथे थयां हतां, तेनाथी धमलजो तथा गगाजी नामना वे कुमारनो जन्म थयो. ४ महाराज मधुपालजीना कैलासवास पजी कुमार धमलजीए गढजांवुनी राजगादीपर पाय धारण कर्यो. तेओना भाइ गगोजी भाग्यनी कसोटी करवा माटे शीरोइ तरफ गया अने त्यां "गांगागुडा" नामचुं गाम वसावी तेओए वाहुवलथी वार गामनी जागीर मेळवी; एना वंशजो " गांगाणी " कहेलाय छे.

श्रीमान् धमलजी वेरावल पाटणना राठाड राजा पालुजीनां कुवरी पद्मकुंवरवाने परण्या हता. ए वखते तेओने पालुजी तरफधी सात गाम पहेरामणी तरीके माप्त थयां. ज्यारे नेओ गढ-

च्यु हतु. '' आमां लेखकनी जबरी भूल थड लागे छे. कारण के गुंलामवंशनो पहेलो वादगाह कुतु युदीन ऐवल वि—सं. १९६२ थी १२६६ मुधी हतो. ए पहेलांना गोरी अने गजनवी कुळमां कोट इत्युदीन नामनो वाटगाह थएलो नथी.

सस्थान छीवडीना राज्यदरवारमां जे वंशावळीनो आंवो छे, तेमां जांबुनी राजधानी झाला-नरेश मांगुजीए वि—सं. ९१० मां स्थापी एवं छखेछं छे अने घणुं करी एनेज आधारे श्रीयशवंत-जीवनचरित्रमां छर्च्युं छे के मांगुजीथी ओगणीश पेढी पर्यन्त अर्थात् नाना नागजी सुधी संवत्सर छखेला छे अथवा फल्पी काढेला छे, परंतु ए पडी अर्थात् नाना खेताजीथी छखेळ संवत्सर श्री झालाबुळवारोटना चोपडाभांधी मळता आवे छे. ए वावतनी फुटनोट अमो नाना खेताजीनी इकीकत छर्वनी व्यवते आपीछे.

× श्रीयगवंतजीवनचरित्रमां गगाजीने "गांगोजी" एवं नाम आपे छे अने ते मांगुजी-ना फटाया कुमार हता एवं जगावे छे; तेमज तेमां छखे छे के गांगाजीए शीरोइ जह त्यां गांगागुडा गाम बनाव्यं अने तेना वंशजो हजी पण त्यां छे. जांबुमां राज्य करता हता त्यारे वाद्शाही फोजे त्यां आवी वारंवार अत्याचार करवा मांड्यो. धै-र्यशाळी धमलजी पोता पासे पूरत सैन्यवळ निह होवाथी गढ जांबुमांथी चाल्या गया अने वेरावळ पाटणमां जइ पोताना श्वसुर पालाजीने त्यां जइ रह्या. त्यारवाट तेओए स्वकीय सुजवळथी समुद्र-कां ठे रहेलां ४१ गामोने स्वाधीन करी वि० स० १२१७ मां "धामलेज" नामे निवन गाम बसाव्युं अने त्यां पोतानी राजधानी स्थापी. ज्यारे वादशाही लडकर जांबुथी जतुं रह्युं त्यारे धम-ळजी जांबु पधार्या. एना केटलाएक वंशजो अद्यापि समुद्रकां ठे रहेला गामडाओमां निवास करे छे. तेओ "धामलेजीया झाला" कहेवाय छे.

वि० सं० १२२७ मां श्रीमान धमलजीनो स्वर्गवास थतां, तेओना कुमार काल्रजी धामलेजनी गादीए वेटा, तेओए पांच वर्ष पर्यन्त मजानुं पुत्रवत् परिपालन करी वि० सं० १२३२ मां
कैलासवास कर्यों, त्यारे तेओना कुमार धनराजजीने धामलेजनुं आधिपत्य माप्त थयुं. एओ आट वर्ष
सूची राज्यसुखनो उत्तम मकारे उपभोग करी अक्षयधाममां सिधाच्या त्यारे अर्थात् वि० सं० १२४०
मां तेओना कुमार लाखोजी धामलेजना धणी थया. ए धर्मात्मा धरापतिए लोकिक तथा पारलोकिक
कार्यमां मद्यत्त थइ सर्वोत्कृष्ट सद्गुणोथी मजाने अपूर्व संतोप आप्यो; तथा कायमने माटे कोटी कुंदणीमां तेमज जूनी राजधानी जांबुमां रहेवानुं पसंट करी वि० सं० १२४३ मां ते स्थले राजगाटी
स्थापी. एओनी ओगणीश वर्षनी कारकीर्द्यामां राज्य तेमज मजा उपर कोइ पण मकारनी आफत
आवी न हती. वि० सं० १२५९ मां ज्यारे लाखाजीए परलोक मयाण कर्यु त्यारे तेओना कुमार
भोजराजजी जांबु तथा कोटी कुंदणीना राजा कहेवाया. ए भोजराजजीना ग्रुजदंड खलजनोना वलने
खंडन करनारा हता. महिना मंडनरूप राज हरपालदेवजीना वंशमां उत्यन्न थएला ए वीरनरने कणीसंहजी तथा मतापिसंहजी नामे वे कुमार थया. षि० सं० १२६४ मां श्रीमान भोजराजजी स्वर्गे
सिधाच्या त्यारे ज्येष्ठ कुमार कर्णीसंहजी जांबु तथा कोटीकुंदणीना तख्तपित थया अने एथी न्हाना
मतापिसंहजीने सात गामथी गाम " पराली " गरासमां मळ्युं.

शरणे आवेलाने अभयदान आपनारा श्रीमान् कर्णसिंह नीने आशकरणजी तथा रतनजी

१ धमलजीना समकालीन वादशाह गोरी सैफुदीन तथा ग्यासुदीन हता. श्रीयशवंतजी-वनचरित्रमां धमलजीना वखतमां पण " दील्हीना वादशाह कुतुबुदीन इलके गढजांबु पर हुमला कर्या हता" एवं लखेलुं छे. ए वात अमारा मानवामां आवती नथी.

नामना चे क्रमार थया. वि—सं. १२७४ मां उदारता आदि सद्गुणोया नामने अमर राखी न्यायो नृपाल कर्णसिंह नीए कैलासवास कर्यों त्यारे तेओना पाटवी पुत्र आशकरणजी जांचु तथा कोठी कुंदणीनी रमणीय राजगादीपर बेटा अने एथी न्हाना रतनजीने गरासमां सात गामथी गाम " पाणसीणा" मळ्युं.

अधम जनोने त्रास आपनाग आशकरणतीए वीश वर्ष पर्यन्त विविध विलासमां दिवसो वितात्या, छतां राज्यनो उत्कर्ष करवामां तेओ रंच पण पछात रह्या नहोता, प्रपंचनी वात तेओने विलक्कल पसंद नहोती, सत्यपर स्नेह राखनारा ए आशकरणजीनो आत्मा ज्यारे ब्रह्ममां भळी गयो त्यारे अधीत वि—सं. १२९४ मां तेओना कुमार सांगोजी गढजांत्र तथा कोठी कुंदणीना गादीपति थया, ए सागाजीने शेपमालजी (जन्मनाम सींगरामजी) तथा अखेराजजी नामे प्रतापशाळी उभय पुत्र हता. वापदादानी गाडीनी आवादी करनारा शूरवीर सांगाजीनो वि—सं. १३९६ मां स्वर्गवास थतां तेओना ज्येष्ठ कुमार शेषमालजी जांत्र तथा कोठी कुंदणीना श्रेष्ठ सिंहा सनपर आरूढ थया अने एथी नहाना अखेराजजीने पांच गामथी गाम "राहाक।" गरासमां मळ्युं.

श्रीमान् शेषमालजीना समयमां लेश पण क्रेश न हता, अजा तथा सिंहने एक घाटे जलपान करतां जोइ प्रजावर्गमा परम आनंद प्रसर्थों हतो. वि—सं. १३२५ मां ज्यारे ए नौतिवान नरेशे परलोक प्रयाण कर्यु त्यारे तेओना कुमार सार्गजीए गढजां तथा कोटी कुंदणीना राज्यासनपर वेभी रैंट्यतना मनने रंजन कर्यु. तेओने लाखाभी तथा भाराजी नामना वे कुमार थया. वि—सं. १३४२ मा मारंगजीनो स्वर्गवास थता लाखाजी वीजा गढजां तथा कोटी कुंदणीनो गादीए वेटा, तेओए चोवीश वर्ष पर्यन्त सन्त सुरभिनं संरक्षण फरी वि—सं. १३६६ मां वैकुंटवा-स कर्यो त्यारे तेओना कुमार वजेराजजी तख्तनशीन थया. दीनजनोनां दुःखने दूर करनारा विजयशाळी वीरे माळीनी माफक प्रजाहपी उपवननुं अवन करी वि—सं १३८१ मां कैलासवास कर्यों त्यारे तेओना न्यायी कुमार नागजी गढजा तथा कोटी कुंदणीना शासनकर्ना थया + तेंओए

^{+ &}quot; श्रीयश्वंत जीवन चरित्रमां लख्युं छे. के ए नागजीए सीहाणी नामे चोराश्ची गामनो तालुको पोताना राज्य साथे मेळवी दीयो हतो, जेथी तेनेअमदाबादना मुल्तान अहमदशाह माथे जवहं वैर थयुं हतुं." ए अहमदशाह पहेलो होवो जोइए, कारणके वीजो अहमदशाह विक्रमना सोळमा सेकामां थएल छे कदाच पहेलो लेखीए तो पण

राज्यासनपर विराजमान थया वाद दश वर्ष सुवी वृद्धिवळे राज्य कर्युं. तेओने उदेभाणनी तथा लाखांनी नामना वे कुमार थया। ज्यारे रेटवत माथे अपूर्व राग राखनारा नरपित नाग-जीए परलोक प्रयाण कर्युं त्यारे उदयभाणनी गढजांत्र तथा कोटी कुंदणीनी राजगादीए अभिषि-कत थया अने एओना लघुवन्यु लाखांनीने गरासमां सात गामथी गाम " शावकुं " मल्युं।

श्रीमान उँदयभाणजी महान गुणज्ञ हता, तेओए पोताना वापदादाओनी माफक अभुक वखत जांद्यमां अने अमुक वखत कोठी कुँदणीमां रहेटाण राखी प्राणनी पेटे प्रजातुं परिपाळन कर्यु हतुं. जेथी एओनी आणने समग्र प्रजा वेदवावय समान प्रमाणती हती. वि. स. १४०१ मां आनंदमूर्ति उदयभाणजीनो स्वर्गवास थतां तेओना कुमार खेताजी नखतनशीन थया अने तेओए कायम कोठी कुँदणीमां रहेवातुं राख्युं. तेओने भोजराजजी, नानाजी, दादाजी तथा भाराजी नाम चार कुमार थया. उदारहित्त वहे रैटयतने राजी राखनारा खेताजीए वि. स. १४१५ मां कैलास-वास कर्यो त्यारे कुमार भोजराजजी बीजा कोठी कुंदणीनी गादीए बेटा. एथी न्हाना नानाजीने गरासमां सात गामथी गाम "सीयाणो", दादाजीने पांच गामथी गाम "कटारी युं" अने भाराजीने चार गामथी गाम ' रळोळ ' मळ्युं.

किनिविदोने मनगमतो मोज आपनारा श्रीमान् भोजराजजी बीजाए अडसट वर्ष पर्यन्त महान खंतथी प्रजानुं लालनपालन करी ति. सं. १४८३ मां परलेक प्रयाण कर्धे, त्यारे तेओना कुमार नाना नागजीए कोठीकुंदणीना राज्यनी लगान हाथमां लइ पांत्रीश वर्ष पर्यन्त विविध प्रकारना राज्य वैभव भोगव्या अने प्रशंसनीय राजनीतिनुं अवलंबन करी प्रजाने अपूर्व संतोष आप्योः वि. सं. १५१८ मां ज्यारे तेओ स्वर्गवासी थया त्यारे तेमना कुमार खेताजी बीजा कोठीकुंदणीना राज्यसिंहासन पर वेठाः रितपित समान रमणीय आकृतिवाळा ए बीर नरनां विशाल नेत्रो राजपूतीना अभंग रंगथी निरंतर लाल रहेतां हतां, तेना भव्य भालमां विधाताए विज्ञाल नेत्रो राजपूतीना अभंग रंगथी निरंतर लाल रहेतां हतां, तेना भव्य भालमां विधाताए विज्ञानों लेख लख्नों होय एवी प्रतीति धतो हती, ए प्रतापी पुरुपनी गित सिंहममान स्तुतियान, तेमज मरोहदार मूळ मनमोहक हतो. मंक्षेपमां एवा सर्वाण सुंदर सुवड नर विधातानी मृष्टिमां

तेना वचे अने श्रीमान नागजी वचे एक सैकानो अंतर माळूप पडे छे पहेळा अहमदशाहनो सम-य वि-सं. १४६७ थी १४९९ सुधीनो गणाय छे.

१ कहे छे के उदयभाणजीए जांबुना किह्यानो जीणींद्धार कर्यो हतो.

विरलाज हहो, एक वखत एवा वनाव वन्यों के भडलीना सरवैया भीमसिंहजीनां कुंवरी सुजान-कुंवरवानुं र.ग९ण सरधारना वाघेला गोधाजी (गोढाजी) साथे यएलुं होवाथी लग्नसमारंभ थतां सरधारयी खांडुं लड़ केट ठाएक बावेला सादारी भड़ली आच्या अने धामग्रुमयी लग्न करी वतन तरफ पाछा वळती वखते डोलो साथे होवाथी सावधानी पूर्वक मनल दरमनल विश्रान्ति लेतां गाम कोटोक्कंदणीना पादर सुनी आवी पहोंच्या. ग्रीष्मऋतुनो समय होवाथी सूर्यना प्रचंड तापथी पितप्त थएला ए लोकोए त्यांज पडाव नांखी वपोरा गाळवानो निश्रय कर्यो। वाद भातभातना भोजन तैयार करावी तमाम जानैयाओ जम्या अने जरा आडेपडले थया, तेत्रामां खूत्रसुरतिना खजानारुन कोठीकुंदणीना राजा खेताँजी घोडो खेळवना खेळवना त्या आवी चड्या तेओना माधुये भरेला मुखपंडलपर वेरमां वेटेलां सुजानकुंवरती नजर खेंचाणी एज वखते ए चतुरांतुं चित्त मोहक महिपालना पिलन पाटे आतुर घगुं. चंचल अन्वपर आरूढ थयेला खेताजीनो शिरपेच सरी जतां तेना मनोहर वाळ पृष्टपर विखराइ पड्या. शोखने लीधे तेओए पोताना सघन अने सुकोमळ शिर-केशने एटलावधा नधार्थी हता के ते अगना अर्ध विभागने तहन आच्छादित करी देता. समग्र अ-वयवो तथा पोशाक्तनी अपूर्व सुंदरता उपरांत आवा अतुपम शिरकेशना अवलोकनथी मुग्ध वनेलां छुर्जानक्वंवरतुं मन स्परनी विशाळ जाळमां सपडाइ गयुं अने एज वीरनरने वरवा माटे अन्तःकरण अधीरुं थयुं; श्रीमान खेतोजी खरेखर राजवंशी छे एतो एनी कान्तिभरी कलित आकृतिज कही आपती हती, मात्र नाम टामथी वाकेफ थइ तेओनी सेवामां हाजर थवुं एटछुंन अवशेष हतुं. सुभा गिनी सजानकुंव न्वाए पोतानी एक प्रवीण दामीने ते वावतनो तपास करवा मोकली. झालानरेज खेताजीनो जात भात तथा संज्ञा चे रेथी वाकेफ थंगली दासीए आबी वाइ आगळ सपळी बीना कही बनाबी. मुजानकुंबरने हर्पनो पार रह्यो निह, तेणे तुरतज ठाकोर खेताजी उपर एक प्रेमपत्रि-

[?] बावेलानी जान, आवीं सरोवर उतरी त्या छोगाळो झाल, खेतर्जी घोडो खेलवे

२ खेतसी शिर मोळीयो, खस्यो जाणीके छुटा केश; मन वाइनुं मोही रहां, जेम चंदनने छपटे शेप.

आ दोहो तेमज आगळा पृष्ठमां लखेलो दोहो ने वखतना कोइ भाट अयवा चारणे वना-वेनो छे.

का लखी मोकली, तेमां छेवंट एवा शब्दो लख्या हता के जो आप मने निह वरो तो हुं अवस्य आत्मघात करीश. +

सरवैयाणी सुजानकुंवरवानुं स्वरूप पण स्त्रीयोना समुदायमां सर्वोपरि इतुं. पूर्णिपाना च-न्द्र समान प्रकाशी रहेक्षुं वदन, खंजनना मदनुं गंजन करनारां निर्मळ नयन, धतुष्य समान वक्र-ताने धारण करनारी भ्रकुटि, शुकचंच समान मुझोभित नासिक, प्रवाल सरखी प्रभाने वहन करनारा उभय ओष्ठ, गुलावना गर्वने गाळनारा गाल, भाग्यना भंडार सर्र्डु भन्यता भरेछं भाल, कनकनी छोप जेवा कर्णों, विषधर जेवी वेणी अने कपलनाल जेवा कपनीय कर आदि उत्तमोत्तम अवयवोधी सुसमृद्ध थएलां सुजानकुंवरव.ती वेमपत्रिका वांची ठाकोर खेताजीतुं मन तेना तरफ खेंचायुं. एज चखते तेओ तपाम बायेका सरदारोने आग्रह पूर्वक पीताना गाममां मिनमान तरीके तेडी ळाच्या. स्नेहमूर्ति सुजानकुंवरनो डोलो सीथो रणवासनी अंदर छड जवामां आच्यो. श्रीमान् खेताजी साथे वहज खानगी रीते वंधाएली सुजानकुंवरनी स्तेहगांठयी वायेला सरदारी विन वाके-फ हता: जेथी होळाने जनानामां लड़ जती वखते तेओ जरा पण शंकाशील न थया। टाकोर खे-ताजीए आवेल विजमानोती उत्तन प्रकारे उतारा तथा खानपान वगेरेथी घणीज खातर वरदास करवा मांडी; अने रात्रोने समये खानगीमां राज्यपुरोहित तथा कार्यभारी मंडलनी एक सभा वचे स्रजानकुंबरनी प्रेमपत्रिका प्रसिद्ध करी कहां के−हवे आ वावनमां तपारो शी सलाह छे? आवी स्थितिमां छन्न करी शकाय के केम? ए वावतनो खुलासो करतां राष्ट्रपुरोहिते जणा च्युं के मन अने अाणनी ऐक्यतानेज शास्त्रकारों " लग्न " एवी संज्ञा आपे छे. पुरुषना स्पर्शने निह पामेली नारी कुमारीज लेखाय छे. माटे सरवैयाणी सुजानकुंवरवानी स्वीकार करतां महाराजाने कोइ पण प्रकारे धर्म सबंधी वाध ळागवा संभव नथी. कार्यभारी मंडले तो माल एटलुंज कहुं के शरणे आवेलने अभयदान आपवुं ए क्षत्रीओनो धर्म छे. एकें निर्दोष राजवाळा महाराजाने वस्वा माटे आटली वधी आतुरता वतावे छे तो पछी एनो अनादर करने ए उचित नथी कदाच महाराजा तरफथी एनो अंगीकार

⁺ आ वावतमां भाट लोको नीचे मुजव एक दोहो वोले छे.

[&]quot; वाइए वडारण मोकली, रूप जोइ झलराण; हुं कुंवारी छत्रपति, मोही वरो मकवाण.

निह करवामां आवे तो निराश वनेली राजवाळा आत्मघात करशे ए पाप कांइ जेवुं तेवुं नथी. आत्मिकजनोनी योग्य सलाइयी संतुष्ट थएला ठाकोर खेताजो रणवासमां पवार्या अने मृगलोचनी सरवेयाणीनी मनोहारिणी मुखाकृति जोइ तेने वरवा माटे कृतसंकल थया. तेओने पोताना भुज-वलनो सपूर्ण भरोसो हतो, वायेळा तो छुं ? पण आखुं विश्व विरुद्ध थाय तदिष ए सर्वनी साथे युद्ध करवा तेओ समर्थ हता. संकल्प विकल्पनी रात्री समाप्त थइ; पगटेखं प्रभात सूर्य नारायणना पित्र किरगोधी छवाइ गयुं, जागृत थएला वाघेला सरदारो विदायगीरी लेवा रणवासना अग्र द्वारपर आवी जमा. ए वखते अदस्थी एक दासीए आवी तेओने कहूं के तमारे जब होय तो मुन्देथी जाओ, राणी सर्दैयाणी तो ठाकोर खेनाजीने वरी चुक्या छे आ शब्दो समग्र वांत्रेछा. ओना हृदयमा वाण सरखां वेषक वन्यां, एक निमिषमां वैरनाविहनो ज्वाळाओं निकळवा लागी. पोताना मालिकनी प्रमदा बीजाना घरमां वेसे ए ह्या रजपुतधी सहन थाय खरु ? एज वखते वायेलाओ खुड़ी समशेरे आगळ वध्या. रणवासना रक्षकोए तेओने अटकाव्या. तेवामां ठाकोर खेनाजीनी सचनाथी केटलाएक शस्त्रवन्य झालाओं त्यां आवी पहोंच्या, तीक्ष्ण तलवारोनी अपासपी चाली कोइनां मस्तक, कोइना हाथ अने कोइनां वक्षःस्थल विदीर्ण थतां तेमांथी धकधक करती रुबिरनी धाराओं निकळवा लागी. लोघपर लोथ पडवा लागी, अन्ते समस्त वाघेलाओं काम आन्या. मात्र सरधारनी एक वडारण वचवा पानी; तेणे पाताना वतनमा पहोंची वाघेठा गोधाजीने वनेली वीनाधी वादेफ दार्या गोधाजीना अन्तः करणमां अमहा आधात थयो अने भडलीना लखेया भीयसिंहनी यहायता मेळवी तेणे तुरतमाज कोठीकुंदणी पर चढाइ करी, महान् पराक्रमी श्रीमान् खेतीजी शौर्यशाळी झाला सुभटोनी सांध तत्रु सन्मुख आवी सभा रह्या, सभय पक्षमां रणवाद्यना गंभीर निनाट थवा लाग्या. वीरनरो मनगमती अप्सराओने वरवा माटे आतुर वनी अग्र भागना उपस्थित थया. व्यत्र वनेला वाघेला तथा सरवैयाना महान सेन्य झालाओना सवळदळ माथे झपट करी. गृष्णवर्णनी कृपाणो कुल्टानी पेठे अनेक योद्धाओना कंठमां लपटवा लागी; उलटासुलटा शख़पहारने टीवे सख्यादंध सुभयनी क्षति थवा लागी. काळ समान विकाळ स्वरूपने धारण करनारा उभय पक्षना योद्धाओं कटिन कुटार वडे वनद्वसनो विच्छेद करनार। कठिआरानी माफक भागळ सरखा प्रचंड भुजदंडथी प्रतिपक्षीओनी कायाना खंड कम्वा छाम्या, खडखड एमता भयंदार भून मेतादि रणांगणमां थावी रक्तना खप्पर भरवा लाग्या दोडादोड करती डाकि-नीओ हिम्मती जनोना इछाथी टछे चटेला घवनो संग्रह करवा लागी. आनंद पांपेली अप्तराओ।

मनमान्या वीरनरोने वरवा लागी. वैनिकोनी साथे हयनी पंक्ति पण हणावा लागी. ठाकोर खेतोजी पवल खड़ने धारण करी दुउमनोने दंड देवा छाग्या; ग्रुध्र आदि पक्षीओं मांसना म्होटा म्होटा कवल लेवा लाग्या. कालिकाना किलकिलाटयी युद्धभूमि लगाइ गइ, झालाना झपाटामां आवेला वाघेला गोधाजीनी हार गवाइ गइ. सरवैआओ पण वणे भागे समरमां शयन करी गया. भूतपति पण मनोहर मुंडना टोपलाओ भरी गया. जंगनी जमावट यतां योगिनीओनां अंगमां उमंग थयोः वाघेला तथा सरवैयाना शस्त्रपहारथी अंते खेताजीना आयुर्वळनो पण भंग थयो; अवनिमां अवतरी कोइ पण अमर रहां नथी. राजपूतीए प्राण वचाववा माटे रणभूमिनो परित्याग करवो एवं कोइ शास्त्रमां कहुं नथी+ वि. स. १५४२ मां ठाकोर खेताजी समरजायी थया. तेओने सांगोत्री, नाजीजी, भाणजी, कुंभोजी, कानजी, शवोत्री, देहळजी, करणजी, वीरमजी, भोजराजजी, अजोजी, लाखाजी, तथा रघाजी नामना तेर कुमार इताः तेमां सांगोजी तो कोठी कुंदणीना राज्यसिंहासनपर आरूढ थया अने नाजीजी तथा भाणजीने सात गामयी ''वळो-ल" तथा "पच्छम" नो गरास मळ्यो. नाजीजीनो वंश वळोळमां अने भाणजीनो वंश पच्छम-मां रह्यो. कुंभाजी तथा कानजीने सात गामधी "पाणशीणा " मळ्यं. कुंभाजीनो वंश खांडीया. अचरडा तथा खजेळीमां अने कानजीनो वंश शरवाल, झांझरकुं तथा कीयादमां रह्यो. शवाजी तथा देहळजीने सातगामधी गाम "अडवाल" नो गरास मळ्यो. शवाजीनो वंश अडवाक्रमां अने देहळ-जीनो वंश फेदरामां रह्यो. करणजी तथा वीरमजीने सातगामधी " तावी " नामतुं गाम गरासमां

+ केटला एक भाट लोको उक्त युद्धतुं वर्णन करतां कहे छे के ज्यारे खेताजीतुं मस्तक कपायुं त्यारे तेना घढे घणा वखत सुधी झुझी सेंकडो शत्रुओनो संहार कर्यो हतो. अने ए तमामने कोठीकुंदणीना द्वार पर्यन्त हांकी काट्या हता. ए सवंधी नीचे मुजब एक दोहो प्रसिद्ध छे.

> कुंदणीए कनकाना, खेळे खेत नरंद भादलीए भंगाण, शहर सरवैयातणे

१ श्री यशवंत जीवनचरित्रमां लख्युं छे के खेताजीना मृत्यु पछी तेना सांगुजी नामना बीजा कुमार गादी पर आव्या पाटवीकुमार नानाजी हता; तेनाथी राज्यनो वोजो निह उपहवायी तेणे सांगुजी पासेथी सात आठ गामनो गरास लड़ पितानुं राज्य सांगुजीने सोंपी दीधुं, सांगुजी "साथोजी" एवा नामथी पण ओळखाय छे.

मळ्युं, करणजीनो वंश तळवणी तथा देवळीआमां अने वीमरजीनो वंश वरशाणीमां रह्यों, भोज-राजजी तथा अजाजीने सातगामधी "तळसाणा " नो गरास मळ्यों, भाजराजजोंनो वंश भडवा-णामां रह्यों अने अजाजीनो वंश सीयाणीमां वीकावत छे, लाखाजी तथा रघाजीने सातगामधी "लींवही "तथा "खहोळ " नो गरास मळ्यों, लाखाजीनो वंश लींवहीमां अने रघाजीनो वंश खहोळमां रह्यों परंतु ए वज्नेना वंशजों हाल लींवहीं तथा खहोळमां वांटा खाय छे.

ठाकोर खेतांजीना कुपार सांगाजी वि-सं. १५४२ मां गादीए वेठा परंतु गोढा वाघेळा-

१ "श्री यश्वंत जीवनचरित्र" नामना प्रथमां मांगुजीथी न्हाना खेताजी सुधीना राजाओनो समय नीचेमुजव बतावेळो छे.

| | | वि-सं. | थी | वि–सं. सुधो राज्य कर्युः |
|-----|------------------|--------|-----------|--------------------------|
| १ | मागुजी | ९१० | ,, | ९५१ |
| ă | मधुपालजी | 949 | " | <i>९७</i> ० |
| 2 | धमलजी | 9.00 | " | १००२ |
| 8 | काळुजी | १००२ | 27 | १०१२ |
| ц | धनराजजी | १०१२ | 17 | १०३० |
| ६ | लाखोजी | १०३० | ?? | १०५९ |
| 9 | भोजराजनी | १०५९ | " | १०६४ |
| 6 | करणजी | १०६४ | 77 | १०८घ |
| ९ | आशकरणजी | १०८२ | " | १११८ |
| ξo | सांगोजी | १११८ | 12 | ११७ ० |
| ११ | शेषमालजी | ११७० | 29 | ११८९ |
| 15 | सारंगजी | ११८९ | 72 | १५३६ |
| ? ₹ | लाखोजी | १२३६ | 27 | १२८० |
| \$8 | वेजराजजी | १२८० | " | १३०५ |
| १५ | नागजी | १३०५ | 17 | १३ इ७ |
| १६ | उदेभा णजी | १३५७ | 19 | १३८३ |
| १७ | खेतोजी | १३८३ | •• | १४२८ |

ए गाम कुंदणीने पायमाल करी नांख्युं हतुं, त्यांथी जसदणने लूंटचा बाद सरधार जड तेणे पेता-ना कार्यभारीने नजराणा सहित अमदाबाद गोकल्योः ए कार्यभागेण सुलवान पहमदने समजाबी जांद्रमां थाणुं वेसाडवा माटे वहुज पयता कर्यो. परतु तेनी मनोस्य सफळ थयो नहि. टाकोर सांगाजीए कोठी कुंदणीना राज्यने धीरे धीरे आवाद करवा माहयुं, तेओ जाते महान् श्रुरवीर हो-वाथी पितातुं वैर वाळवानी द्रढ प्रतिज्ञा लड वायेला गोधाजीनो विनाज्ञ करवा तत्वर थया अने पांचसे। स्वार सहित तेओए सरधार तरफ प्रयाण कर्यु. ज्यारे ए वया ळींवडोथी पांच गाउ पर आवेला झोवाळा नामना भाषाती गापमा आवी पहेंच्या त्यारे ठाकोर नागां जीए जाजूना महान सैन्य साथे छांवो वखत टकी शकवातुं अशक्य यारी त्यांन थे।डा वखतने माटे रहेटाण राख्यु. आ बात बांधेला गोधाजीना जाणवामां आवतां ते वे हजार बोंडेस्वार लड सामो आव्यो. ए वखते साइस न करतां श्रीमान् सांगोजी गाम वेजीजीयाळ तरफ लोवी खाइ गया. तेवामां कुंदणी तावाना गाम धनवाणानी पटेल वीशो सेंकडो भग्वाडोने साथे लड मांगाजीनी महायताए आवी पहोंच्यो. पोताना पांचसो स्वार साथे आहारे आठ इजार भरवाडो आवी मळवाबी निर्भय वनेळा सांगाजीए अत्यन्त उत्साहपूर्वेक वाघेळानी विज्ञाल फोज साथे हल्लो कर्यो. वन्ने पक्षमां वीरहाकनी साथे युद्ध शरु थयं. हजारो हयना हणहणाटने लीवे बवा हैनिको विवा जेवा वनी गया. धूलिना समुदायथी आकाश ढंकाइ गयुं, चोमेर िद्युत समान चमकती कठिन करवाली वर्शकरुतुतुं भान कराववा लागी. कुंभकारना चाकपरथी उतरता विंडनी माफक लडवैयाओनां मस्तक घडथी अलग थवा लाग्यां. पेशकवजना प्रहारथी अनेक योद्धाओना आंतरडाओ निकजना लाग्यां. केटलाएक योद्धाओं कटारथी एक बीजाना वक्षःस्थलने विदारवा लाग्या द्रवशुजदंडवाळा भरवाडो मात्र लदना प्रहारथील शस्त्रधारी सैनिकोने भयनी भदीमां भारवा लाग्या. मारवा मरवानो संकल्प करी सावधानपणे रणभूमिमां उपस्थित थएला राजवृतो सामे पगले लडी पोतानी दिव्य जातिने दीपा-

१८ भोजराजजी बीजा १४२८

१४६६

१९ नामजी वीजा १४६६

. १५१८

२० खेतोजी वीजा १५१८

१५४२ आंहीथी वारोटना

चोपडा साथे संवत मळता आवे छे

,,

ववा छाग्या. मांस अने रुधिरनो भरावो थतां भूतमेतादिनां भयंकर युत्थ रणभूमिमां आववा छा-

ग्यां. वीर वाघेलाओं आ वखते झालाओंनी झपटने झीली शक्या नहि. चाहथी एकत्र करेल महान्

सैन्यरूपी चीचोडामां इक्षुदंड सरखी मिष्टताने धारण करनारा प्रतिपक्षीओने प्रमाणे पीली शक्या नहि, छेवट शौर्यशाळी सांगाजीए सिंहनी माफक गर्जना करी वि-काळ स्वरूप धर्यु अने वावेळा गोधाजीना हृदयमां भाळांनी तीत्र अणी भोंकी ग्रहण करेळुं " पण " सार्थक कर्युं. पराजय पामेला वाघेलाओतुं अवशेष रहेलुं सैन्य एज वलते विलराइ गयुं. विजयी सांगानीना सुपश्यी क्षितिमंडल छवाइ गयुं, धनवाणानो भरवाड वीसो घणोन कार्यक्रशळ अने बुद्धिमान हतो. तेणे जांबुमां स्थपाएला मुसलमानी थाणाने युक्ति मयुक्तिथी हांकी काढवा श्रीमान् सागाजीने सूचना करी. सांगाजीए जांबुमां जइ थाणाना मुख्य मुख्य माणसोने एक मेफल आपी; त्यारवाद ए क्रोकोना अग्रहथी पोते पण थाणा तरफनी विजवानी स्वीकारी ते दहाडे छूटथी दारुनो उपयोग धवाने छीधे घणखरा नशामां चकचूर वनी जेम आवे तेम बोछवा लाग्या, केटलाकने तो पोताना कपडातुं पण भान न रहां, ए वखते समयसूचक सांगाजीए पोताना सहायको सहित समशेर चलावी घाणाना तमाम माणसोने कापी नांख्या जो एकाद माणस पण अवशेष रह्यो होत तो ते अमदावाद जइ त्यांनां स्रुजनानने आइं अवछं समजावत अने वखते सांगाजीना राज्यमां विशेष उपाधि उपजावतः परंतु श्रीहरि सानुकूळ होवाने लीधे सरलता पूर्वक संघळी मनकामना मिद्ध थई गई. वळी सहुने विचार थयो के जते दहाडे आ वात प्रमिद्धिमां आव्या विना रहेशे नहि, माटे पाणी पहेला पाळ वं गय तो सारुं. ठा-कोर सांगाजीना मनमां एण ए वात वरावर ठभी; तेओए तुरतन महान् विचक्षण वीसा पटेलने अमदाबाद मोकली आप्यो. वीसा पटेले त्यां जइ सुलतानना तमाम अधिकारीओने विविध प्रका-रना नजराणां आप्यां अने कायमने माटे मुसलमानी थाणाओथी गाम जांबु तथा सीहाणीने मुक्त कराव्यां जेथी वि-सं. १५७२ मां श्रीपान सांगाजीए गढजांत्रमां राजगादीतं स्थापन कर्यु.+ तेओने सोहाजी तथा राणाजी नामना वे कुमार इता.

वि-सं. १५९२ मा सांगाजीनो स्वर्गवास थतां कुमार सोहोजी गढजांबुनी गादीए वेटा

⁺ श्री झाढा कुळना वारोटे अमोने आपे ही हकी कनमां एवो छेख छे के ठाकोर सांगाजीना कुमार सोहाजीए जांद्यमां वादशाही थाणुं वेठेलुं हतुं तेने कापी त्यां वि—सं. १५७२ मां पोतानी राजगादी स्थापी. धनवाणाधी ज्यारे वीसो पटेल सांगाजीने सहायना आपवा गयो त्यारे तेनी साथ कुमार सोहोजी तथा वीजो एक देशा नामनो पटेल पण हतो. ए उपरांत झीं झुवाडा ठाकोर योगराजजी के जे मोसाळ पक्षे सांगाजीना भाइ थता हता ते पण हाजर हता.

अने राणाजीने सातगामथी गाम " वीझराद " नो गरास मळचो. श्रीमान सोढाजीए सत्तावन वर्ष पर्यन्त मजानुं उत्तम मकारे पालन कर्यु. तेओना समयमां राज्यनी अंदर कोइ पण जातनो उपद्रव यवा पाम्यो न हतो. पोताना वापदादाओनो जुनी राजयानी जाबुमां अपूर्व जाहोजलाली भोग-वता टाकोर सोढाजीने आशकरणजी (आशोजी) तथा ह्नुजी नाभे वे कुमार थया हता.

वि-सं. १६४९ मां सद्गुणी सोढाजीए स्वर्गवास कर्यों त्यारे तेओना ज्येष्ठ कुमार आज्ञान करणजी जांबुना राज्यसिंहासनपर आरूढ थया अने हनुजीने सातगामथी गाम "अंकेवाळीआ" नो गिरास मळ्यो. एनो वंदा राहका तथा वोडीयामां छे.

उदार दिल्लवाला ठाकोर आशकरणजी वीजाए सोहाणीमा राजगादी स्थापी अने न्यांज तेओ तस्त्तनशीन थया. + एओने केटलाएक आशरजी पण कहे छे. ए आशरजीए वत्रीश वर्ष सूधी सीहाणीमां राज्यस्रुखनो उपभोग कर्यो. तेओने उदयराजजी, कल्याणसिंहजी, सगरामजी तथा राजाजी नामे चार कुमार हता.

+ श्री यश्वंत जीवनचरित्रमां छले छे के-सीहाणी गाम हाछ छींवडीना तावामां छे. तेना प्राचीनपणानी अनेक प्रकार प्रतीति मळे छे. प्राचीन शिलालेखो, देवाळ्यो, अने पाळीयाओं अद्यापि त्यां द्रष्टिगोचर थाय छे. तेनापर जे संवत्सरना आंकडाओं कोतरेछा छेते सं. ११०० थी १७०० सुधीना छे भांगुजीने जांचुनी चोराशी मळी ए वखते गाम सीहाणी मोजुद हुनुं अने त्यां आयरोना हुंपहां हता. कहे छे के मांगुजी पहेलां केटलाक वर्ष उपर सोहाणीवाइ नामनी कोइएक आयराणीए ए गाम वसावेछ होवाधी तेनुं नाम "सीहाणों " पड्युं. अन्य स्थळे वळी एवो लेख छे के मांगुजीथो अग्यारमी पेढीए थएला आशकरणजीए वि—सं. १६४९ मा सीहाणीमां राजगादी स्थापी, ए हकीकत वारोटना चोपडाने आधारे लखवामां आवी छे. "काठि-आवाड सर्व संग्रह " नामना ग्रन्थमा एवो लेख छे के सागाजीथी वेराजी सुधीना राजाओए गढांगुमांज राज्य कर्युं हुतुं, पण ए वात पायावगरनी छे. अदेराजजी पछी वेरोजी थया अने ते पछी चोथी पेढीए बीजा अदेराजजी उपें अदोजी थया त्यांसुधी सीहाणीमांज राजगादी रही एवं श्रीआलाइळना वारोटनो चोपडो वांदता मालुम पडे छे चळी तेमां छल्युं छे के अदेराजजी पहेला वि—सं. १६८१ मां सीहाणीमां राजधानी जमावी.

वि—सं. १६८१ मां ठाकोर आज्ञाकरणजी अक्षयधाममां सिधाच्या त्यारे तेओना पाटवी कुमार अदेराजजी उर्फे अदोजी गढ सीहाणीनी गादीए वेठा. तेओना त्रण भाइओमांथो कल्याण- सिंहजी तथा सगरामजीने पांच गामथी गाम "तळसाणा" नो गरास मळ्यो. एनो वंश कमाळपरमां छे. अने राजाजीने वे गामथी गाम "टोकराळुं" गरासमां मळ्युं.

टाकोर अदेराजजीए नव वर्ष पर्यन्त रैट्यतनुं संरक्षण करी राज्यने सुप्तमृद्ध वनान्युं. उ-दार ष्ट्रतिए अवनवा आनंद वैभवनो अनुभव करनारा अदेराजजीने वेरोजी, रघोजी, चांदोजी. सूरजमलजी तथा जेतासंहजी नामना पांच पुत्रथया. वि—सं. १६९० मां ज्यारे टाकोर अदेराजजीए कैलासवास कर्यों त्यारे तेओना पाट्वी कुमार वेरोजी सीहाणीना राज्यसिहासनपर विराजमान थया. तेओना चार वन्युओमांथी रघाजीने गाम कटारीआ, छालीआ तथा अचारहा, चांदाजीने परनाला तथा अणियाली, सूरजमलजीने गेंही अने जेतासिंहजीने "जामणखा" नो गरास मल्यों. सूरजमलजीनो वंश हाल वरवालामां छे.

वीरवर ठाकोर वेराजीए एकत्रीश वर्ष लगी राज्य कर्यु. कहे छे के तेओ गाम "काणेतर" गया हता अने त्यां तळावने किनारे पढाव नांखी पड्या हता, तेवामां काणेतरना दरवारी सिपा- हीए वि—सं. १७२१ मां तेओने दगाथी मारी नांख्या. ए वेराजीने करणसिंहजी, हरभमजी, रत-निसंहजी, जसवतिसहजी, नोंघणजी, सतोजी, वरसोजी, रामासिंहजी तथा वजेराजनी नामे नव कृमार हता.

वि—सं. १७२१ मा वेराजीए वैक्वंडवास कर्या त्यारे कुमार कर्णासंहजी सीहाणीना शास-नकर्ता थया. हरभमजीने भछगामई, चोरणीया, तथा वोरणा; रतनसिंहजीने फेदरा, रायकुं, कं-यारीआ, तथा वनाळा, जसवतसिंहजी तथा नोंघणजीने उंटडी, अडवाल, छलाई तथा दरोद; स-ताजीने भोयका, झोवाळा तथा टीमला; वरसाजीने चचाणा, तथा तराहीयुं; रामसिंहजीने वाजर-ही तथा भडवाणुं अने वजेराजजीने गाम मोजीदड गरासमां मळ्युं.

टाकोर करणसिंहजी बीजा सुशील अने समदर्शी हता, तेओनी एकोनविंशत् (ओगणीश) वर्णनी कारकीदींमा प्रजावर्गे स्नान्ति रहित सुखशान्ति भोगवी. स्वधमनिष्ठ श्रीमान कर्णसिंहजीने भोजराजजी, राजोजी, भारोजी, अखेराजजी, अमरसिंहजी, मंडलीकजी अने मीरामणजी, नामना सप्त कुमार थया. ए साते कुमार अनन्य स्नातुभावथी वर्तन करता हता. तेओमां कोइपण प्रका-

रना कुसंपे प्रवेश कर्यों न हतो. वि-सं. १७४० मां ठाकोर करणसिंह नीनो स्वर्गवास थतां पाटवी कुमार भोजराजजी बीजा सीहाणीना राज्यासनपर विराजमान थया. कुमार राजाजोने गाम ताबी, रोजाशोर तथा पराळी, भाराजोने समला तथा जणहारी, अग्वेराजजीने भथाण तथा लालीयाद, अमरसिंहजीने कारोल तथा वहेखण, मंडलीकजीने शावका तथा नाना त्राडीआ, अने मेरामणजीने खमला तथा चमारडीनो गरास मलचो.

ठाकोर भोजराजजीए राज्यनी आवादी अर्थे उत्तम प्रकारनी योजनाओं करी हती. तेओने अदोजी, सांगोजी तथा कसळोजी नामे त्रण कुमार थया. वावीश वर्ष पर्यन्त स्वतंत्रपणे राज्यमु- खने भोगवनारा श्रीमान भोजराजजी वि—सं. १७६२ मां स्वर्गवासी थया त्यारे तेओना ज्येष्ठ कु- मार अदोजी सीहाणीना राज्यसिंहासनपर आस्ट थया. कुमार सांगाजीने अंकेवाळीआ, भडीयाद तथा धोळी, अने कुमार कसळाजीने झांझरकुं तथा खाडीआ नःमनां गाम गरासमां मळ्यां.

ठाकोर अदोजी (उदयराजजी वीजा) अत्यन्त वहाद्र तेमन बुद्धिशाळी इता. घणा समय सुधी सीहाणीनुं राज्य निरुपद्रव रह्यं हतुं, परंतु अदाजीना वखतमां पाछो उपद्रव शरु थयो. पाळीयादनो खाचर नाजी वीरवा अदाजीयी वैर वांधी वारंवार उपाधिने ताजी करवा छा-ग्यो अने एकहजार स्वारतं सैन्य लड़ सिहाणीपर चढी आव्यो. तेनी साथे युद्ध करवा श्रीमान अ-दोजी सज्ज थया अने पेताना शूरवीर स्मयटो सहित सामा चाली खाचर नाजीनी नजर आगळ खड़ खेंची उभा रहाा. युद्धनी वाजीनो आरंभ थयो. अटंका अदाजीए डंकापर घाव दइ नाजीना सैन्यपर हल्लो कर्यो, खाचर लोको पण खर्न खेंची सामा घया. रणमां अडग रहेनारा झालाओ विशाळ ढाळपर शत्रुओना झाटकाओने झीली मदोन्मत्त मातंगनी पेरे मात्र करना महारथीज काठी-ओने माठी दशाए पहोंचाडवा कृतनिश्रय थया. ज्यारे अदाजीना युद्ध कुशळ योद्धाओए खाचर सैनिकोने तेतर समान गणी वाजनी समान झटपट झपटमां छेत्रा मांड्या त्यारे नाजीना वाजीनो समुदाय लाजने लीधे पातालमां पेसवा इच्छतो होय तेम नमेली पीठे पाछो हठवा लाग्यो. महा भ-यंकर धींगाणुं मच्युं. पाखर अने बखतरोनी कडीओ तडोतड तूरवा लागी, महाकाळनी विकाल सहचरी कालिका एक साथे अनेक सैनिकोना आयुष्परुपी धनने लूंटवा लागी. डभयपक्षना सेंक-हो बीर विनाश पाम्या. मांसना मनमान्या ग्रास मळवाणी ग्रध आदि पक्षीओ परम हुलास पाम्या. अंते ठाकोर अदाजीनो विजय थयो अने तेओने हाथे केद पकडाएलो खाचर नाजी सीहाणीना कारागारमांज स्वधामे पहोंची गयो. आ युद्ध वि-सं. १७८० मां थयुं हतुं.

कहे छे के एक वखत टाकोर अदेराजजी उर्फे अडोजी गाम घाघरेटी आना तळावने किनारे दोइसो स्वार सहित छावणी नाखी पडचा हता; तेवामां बढवाणना ठाकोर चन्द्रसिंहनीए गाम मे-थलीपर विजय मेलवी पोतानी राजधानी तरफ जता एज स्थले विक्रान्ति लेखानेः विचार कर्यो अने एक चारण मारफत छादणीने जरा दूर खसंडवा ठाकोर अदाजीने कहेदराव्युः अदाजीए ए वाननो अनादर कर्योः; एथी क्रोधायमान थएला चन्द्रसिंहजो तेओनी ताथे लडवा तत्पर थया. सात्रपर्मने अनुसरनारा अदाजीए एण गढजांबुथो मगावेला वनो गाडां आवी पहोंचवाथी युद्ध कर-दानी हाम भीडी. दरेक माडामा बच्चे शिरववीओ वेडेला हता; एटले अदाजीना एकंदर साडापा-चयो भनिको थया तेओए छावणीना रक्षण माटे गाडाओने गढनी माफक चोमेर गोटबी दीवां. वहबाणनी फोले श्रीमान अदाजीनी छाउणीने घेरी छेत्रानी कोशीश करी, तेबामा ते तरकथी उपराउपर बंद्को छूटवा छ।गी. बरानी वातने पडती मूकी तेओ र्गाता भी नरेशनी छावणी माथे तूटी पड्या मात्र "हा" अने "ना" ए वेज अक्षर माटे रणरागी राजपृतीए आटलुं बधुं साहम खेडचुं, अने नागी समशेरद्वारा मृत्युने मागी छेता होय तेम रणांग-णमा अनेक हैनिदोए पोतपोनाना अमूल्य रुधिरने रेड्यु. एक साधारण कारणमर जागी उठेला वेरनी ज्यळाया पतिरीआनी पेंट पडतु मृक्तनारा पाणीओ प्राणने त्यागी परलोक प्रयाण करी गया अने अदिनमा अचल नाम राखी संसार सागरने सहत्रमां तरी गया। युद्धमा हार पामेला ठाकोर चंद्रसिंहजो दहवाण तरफ विदाय थया, अने अदोजी पण सत्वर सीहाणी भेळा थइ गया. ए वरवते वहदाणना चारणोए ठाकोर अदाजीनी वहादुरीना केटलांएक गीतो बनाबी गावा मांड्या. एथी टानोर चन्द्रसिंहर्जा वहुज चीडाया अने तेओए पोताना राज्यमाथी तमाम चारणीने रजा आर्था. आ दात टाकोर अदाजीना सांभळवामां आवतां तेओ ए तुरतज उक्त चारणोने पोतानी राजधानीया बोलाबी लीधा अने तेओनी आजीविका माटे लींबडीबी चार गाउने अन्तरे रहेलं " ज्ञामही " नामनुं गाम आप्यु.

टाकोर अदाजीने वेरोजी, सतोजी, रामिंहजी तथा पृथीराजजी नामे चार कुमार थया. वि. सं. १७८४ मा श्रीमान अदाजीनो स्दर्गवाम थतां कुमार वेरोजी वीजा सीहाणीनी राजगादीए देटा. एथी न्हाना कुमार सताजीने भडवाण तथा रहजेबी; रामिंहजीने गेडी तथा भाथरीया अने पृथीराजजीने देवटीआ तथा अणिआळी नामनां गाम गरासमा मळ्यां.

टाकोर वेरोजी महान शुरवीर हता, तेओए कुंदरपदमांज वि-सं. १७८८ मां लींवडीनी

अंदर एक किञ्चावंध विशाळ राजदरवार वंधाव्यो हतो; नेओने कल्पाणसिंहजी, हरभमजी, राणोजी तथा अमरिसंहजी नामे चार कुमार थया. तेमांना पाटवीकुमार कल्याणसिंहजी कुंबरपदेज स्वर्गवासी थया. कहे छे के झालावाडमां गायकवाड दामाजीनी फोज आवतां तेनी साथेनां धींगाणामा ठाकोर वेरोजी काम आव्या. वि—सं. १८०८ मां ए शोकजनक वनाव वनवायी वैकुंठवासी वेरौजीना दितीय कुमार हरभमजीए राज्यनी लगाम हाथमां लीधी. तेओना नहाना भाइ राणाजीने तल्यसाणुं, कटारीआ तथा परनाला नामनां त्रण गाम गरासमां मळ्यां.

टाकोर हरभमजी महान प्रतापी अने पराक्रमी हता. कहे छे के तेओए वि—सं. १८१५ मां नाना सवाइनी फोज साथे वे मास पर्यन्त वहादुरीथी युद्ध कर्युं हतुं अने तेमां विजय मेळच्यो हतो, वळी वि—सं. १८२३ मां शहर श्रीवडीने फरता शेरपनाहना किल्लानुं काम शरु कर्युं हतुं. अंकेबाळीआना टाकोर वरशाजीन काटी लोको वारंबार कनडता हता. ए वात ज्यारे टाकोर हरभमजीना जाणवामां आवी, त्यारे तेओए पोताना मशंसनीय नावल्यथी काटी लोकोना सातगढने लिक्निमन करी नांख्या. जथी काटीओए जुनागढना नामदार नवावनी महायता मेळवी लीवडी-पर चढाइ करी. ए वस्तते चोटीला, आणदपर तथा भाडलाना तमाम काटीओ सामेल हता. भयं-

१ "श्री यक्षवंतजीवनचिरत्र " नामना ग्रन्थमां छेले छे के टाकोर वैरीसाछजीए (वेराजीए) वि—सं. १७८४ मां छींवडी शहरने राजधानी टरान्युं. अने ए पछी गादीए आवेला टाकोर हरभमजीए छींवडीमां पूरेपूरो निवास क्यों तथा ए शहरने खरेखरं आवाद वनान्युं. वळी एज प्रसंगे दाखल करेली फुटनोटमां तेमा कर्णोंपकर्णे सांभळेली वातनो नीचे मुजब उल्लेख करेलो छे.—"वैरीसालजीना पाटवी कुमार हरभमजीए चूडासमा रजपूतो कुंकनेथी छींवडी जीती लीखुं. परंतु वीजी तरफथी एम कहेवामां आवे छे के वेरीसालजीए छींवडी कुंबहेर वसान्युं. वि—सं. १७८४ मां तेओ सींहाणीथी लींवडी आव्या. ए वखते भोगावाने सामे कांटे मात्र आयर लोकोनां झुंवडां हतां, भोगावानी उत्तरे हाल ज्यां लींवडी शहेर छे, त्यां ए लोको, पोताना ढोरने चारता हता, ए स्थळे पांच लींवडीओ हती, ज्यारे त्यां लींवडी शहेर वसाववामां आव्युं त्यारे ते " लींवडीपा " एवा नामथी ओळखावा लाग्युं. ए शहेर वसाववाना काममां सहाय आपनार कामदार वाघडा रतनजी, वाइश्री वखतुबा अने अंकेवाळीआना खवास चरसोभाइ वणारशी हता.

कर लडाइ यह अने तेमां टाकोर हरभमजीना लघु वन्यु अमरसिंहजी काम आर्त्रा,

वि. स. १८४३ मां टाकोर हरभमजीनो स्वर्गवास थतां, तेओना कुमार हरिसिंहजी ठींवडीनी राजगादीए वेटा; तेओए प्रथम तो पोताना पिताने हाथे औरंभाएळा ठींवडीना गढेतुं हैं। जेटलु काम अधूरुं रह्युं हतुं तेने त्वराधी पूर्ण कराच्युं. त्यारवाद वि. सं. १८५६ ना आध्विन द्युदि १० ने दहाडे वरवालाने फरतो गढ वंधाववा स्वहस्ते खात मुहूर्त कर्युं. ए गढ जा. घेळा माधव हस्तक वधायो अने तेमां रुपिया १७६००० एक लाख छोतेर हजारनुं खर्च थयुं.

१ श्रीयुत झालाकुळना वारोट अमरसिंहना मरणनो संवत. १८०६ वतावे छे, परंतु ए वस्तते इरभमती गादीए पण नहोता वेटा. वळी ''श्री यशवंत जीवनचरित्र'' नामना ग्रन्थमां लखे छे के-एक वरवते हरभपनी अंवाजीनी यात्राए गया, तेवामां काठोओए लींवडीपर हल्लो कर्यो, हरभमजीना भाइ अमरसिंह नी तेनी साथे लड्या अने तेमां तेमतुं मृत्यु थयुं. ए खबर सांभळतांज हरभमजी लीं-वडी आव्या अने तेओए ज्यांसुधी भाइनुं वैर न वळे त्यांसुधी छींवडोनुं पाणी हराम करी काठी-छोकोपर चढाइ करी; मार्गमां आवेलां काठीओनां केटलाएक गामोने छूंटी तेंओनां स्त्रीपुत्रादिने केद कर्या तथा पाटोआदना काटीओए अमरसिंहजीने मारेला होवाथी त्या जइ तमामने पायमाल करी नाख्या, राने पाळोआदने उज्जड वेरान जेवुं बनावी दीखुं; त्यांनी जमीनने गर्दभद्वारा इळ दकावी खेडावी देशा मीटुं ववराच्युं ए वखते ठाकोर हरभमजी काठीओ तथा काठीआणीओ आदि आशरे ४०० माणसोने केद करी टींवडीमा लड़ आव्या अने एक जाहे। दरवार भरी तओए दधुं के जे काठीआणीओने हुं पकडी छाज्यों छुं ते मारी ब्हेनों छे. तेओने हुं मारा भाइतु वेर वाळवा माटेज आहीं लाच्यो छुं. नेमना भरथारी तथा अन्य जनी मारा विषे कदाच जूदाज विचार बांधता इज्ञे, परंतु अधर्ष भरेछं आचरण कर्त्वु ए अमारो इन्छाचार नधी अने एटछाज माटे हुं अवारी व्हेनोने करीआवर करी छोडी म्हं छु, " आटहं कही तेओए काठिआणीओने किम्मती पोशाक आपी सहुसहुने गामे गुरक्षितपणे पहोंचडाबी दीधी, अने पोते केवा नीतिवान छे तेनी सहु कोइने खात्री करावी आपी. हरभमजी एवा तो साहसिक, शौर्यवान, निहर अने धर्मिष्ट हता के पोतानी प्रजा अने पोताना राज्यना रक्षण उपरांत आसपासमां रहेला पराया तालुकाओनुं पण रक्षण करता हता तेना बदलामां ते नालुकदारो पासेथी "पाळ" लेवामां आवती हती. अवमीओ अने धाड-

शोर्यशाळी ठाकोर हरिसिंह शेए जुनागढ़नी फोजने पगार्दार तरीके नोक्सीमां राखी अने वि॰ सं॰ १८५७ मां जतवाडाना गाम वनाणाने भांग्युं, तेपन वहवागना पराक्रमी टारोह पृथी-राजजी साथे पण युद्ध कर्यु. ए बखते बन्ने पक्षना मामाओ बराजां युद्ध बंब रह्यु हतुं. विच मं० १८६४ मां ठाकोर हरिसिंहजी प्रभास गटणनी यात्राए पर्वार्या हता. ए अर्मामां कोडएक विदेशी चारणे भावनगरना महाराजा वजेमिंहजी पासे जई बात करी के आपे घणा राजाओंने नजदर्ती कर्या, परंतु वरवाळाने स्वाधीन करवातुं आक्नाधी वनी अक्यु नहिः आ सांधळी महाराजा वजे-सिंह भीए वरवाळुं सर करवानो विचार कर्यो अने अगाउथी कीवडीए सवर लखी होकस्या. वेलागा तुरतज वरवाळे गया अने त्यांना गढनो वंदोवस्त करी तेणे वया कांटाओपा नोपो मोटवी दीवी तथा दारुगोळा विगरे सगग्र सामग्रीने एकत्र करी गाखी, भावनगरना महाराजा वार हजारती फोज छड़ त्यां आवी पहोंच्या. घेलाशाए ठाकोर हिसिंह नीनी गेरहा जरीयां भावनगरनी विशाल सेना सामे वधारे वखत टकी शकवातुं अशवत धारी शान्ति पकडी अने महराजा विकासिहतीने मळी विनति करी के " वरवाळाना मालिक लींवडीना नरेग हि सिंहनी हालया पात्राए गया छै: एनी गेरहाजरीयां आवो बनाव बनना नाहक भावनगर अने छ।वडी बच्चे गहान वैर बनाचे अने एतुं परिणाम सारुं निह आवे. कोइनी उनकेरणीयी आप जेवा दाना राजाए आवं स्होटं साहस उठाववं ए योग्य नथी पछे आपनी इच्छा. महाराजा विजयसिंह तीए लांबो िचार करी बेलालाना वचनने वजनदार मान्यां अने सामो तेने पोशाक आपीने पोतानी राजवानी तरफ प्रयाण वर्द्ध.+

पाडुओ ठाकोर हरभमजीत नाम सांभळो थरथर धूजना हता. कोट पण गुन्हो बन्यानी हकीकत सांभळतां हरभमजी जात गुन्हेगारनी पाछळ पडता अने तेने पकडी योग्य शिक्षा आपता. वि. सं. १८३१ मां गायकवाड सरकार तग्फथी छींवडीपर घेरो घाळवामां आच्यो हतो; परतु ए वखते जुनागहना दिवान रणछोडजी छींबडीनी सहायताए आबी पहोंच्या, बळो ठाकोर हरभमजीनो "कांधो राठोड" नामे एक बहुन वळवान योद्धो हतो. एथो गायकवाडी छठकरने पाछा हठी सलाह करवानी फरज पडी हतो. त्यारवाद जुनागहना नवावथी रीसाएला श्रीयुत् दिवान अमरजीना भाइ दलपतरामभाइ छींबडीमां आबो रहा। तेओने श्रीमान हरभमजीए सारो आश्रय आप्यो हतो.

+ "श्री येशवंत जीवनचरित्र नामनां ग्रन्थमां" छखे छे के भावनगरना ते वेळाना महाराजाए वर-विक्री उपर घेरी घाल्यो, तेमां हरिसिहजीए तेमने हराज्या, वळी छीवडीनो गढ वांध्यानी खवर म- P3)(2

टाकोर हरिसिहजीना समयमां कर्नल वॉकर साहेवे त्रीव्युट सवंधी आंकडो सुकरर कर्यो हतो अंकडो सुकरर कर्यो हतो अंकडो सुकरर कर्यो हतो अंकडो वर्ष पर्यन्त उत्तम प्रकारना राज्यसुखनो उपभोग करी वि० सं० १८८१ मां टाकोर हरिसिहजी कैलासवासी थया. ए वखते तेओना कुमार भोजराजजी लीवडीना तख्तपित थया.

टाकोर भोजराजजी चोथा वि० सं० १८८६ मां सिद्धपुर तथा अंवाजीनी यात्राए पथार्या हता. एओना वखतमा राज्यनी स्थिति वहुज आवाट हती, इश्वर कृपाथी तेओने त्यां कुमार हरभ-मजी तथा फतेसिहजीनो जन्म थयो.

वि॰ सं॰ १८९३ ठाकोर भोजराजजी वैकुंठवासी थया त्यारे पाटवी कुमार हरभमजी वीजा छीवडीनी राजगादीए वेटा. तेओ तुं नाम दाजीराज हतुं. सद्गुगोना धामरूप ठाकोर हरभमजी ओगणीज वर्ष पर्यन्त प्रजातुं स्नेहपूर्वक सरक्षण करी वि.स. १९१२ ता.८ जान्युआरी सं.१८५६ मां निः-संतान स्वर्गवासी थया, जेथी एज वर्षे तेओना छघु वन्धु ठाकोर फतेहसिहजीए छीवडीना राज्यनी छगाम हाथमां छीधीः तेओ मोरवी तावाना गाम वेटामा परण्या हता अने ए राणी जीतुं नाम हरिवा साहेव हतुं. टावे रि फतेहसिहजी स्वभावे सरछ, स्वधमिनिष्ठ अने पुण्यकाळी हता; छतां कोइ पूर्वना वर्मसंयोगे तेओनी ज्ञारीरिक संपत्ति सारी न होवाने छीधे विश्वास मंत्रीपंडळ राज्यनो कारभार संतोषकारक रीते चलावता हता. राणीजो हरिवा साहेव पण मदा सुज्ञ अने संस्कारी हता; तेओए यगस्वी यशवतिसहजी तथा व्यवतिसदजी उक्तें उभेदिनहंकी नामना उभय कु गरने जन्म आप्यो.

श्रीमान यशदतसिंहजीनो जन्म वि. स. १९१५ ना वैशाख शुदि ६ गे सोमबारे तथा हुमारश्री उमेदसिंहजीनो जन्म वि. सं. १९१८ ना जेट बदी १२ भोमबारे थयो हतो. वि. सं. १९१८ मा टाकोर श्री फनेसिंहजीनो स्वर्णवास थनां कुमार श्री यशवनसिंहजी छींबडीनी राज-गादीए अभिषिक्त थया, ए वखने तेओनी उम्मर मात्र त्रण वर्षनी न हती. राजमाता हरिवा साहेव नीनिज्ञ अने कार्यक्राळ होवाथी नामदार ब्रिटीश सरकारे तेओश्रीने राजकान च ठाववानी स्वतंत्र सत्ता सोंपी. पाच वर्ष पर्यन्त तो ए रीने राज्यनो कारमार चाटवो. पांनु जनानानो पूर्ण मर्यादा

ळवाथी गायकवाडी सरदार विटलगव भास्कर चढी आव्यो हतो, परंतु हरिसिंहजीवुं पराक्रम तथा निटरता जोड सलाह करी पाछो चाल्यो गयो.

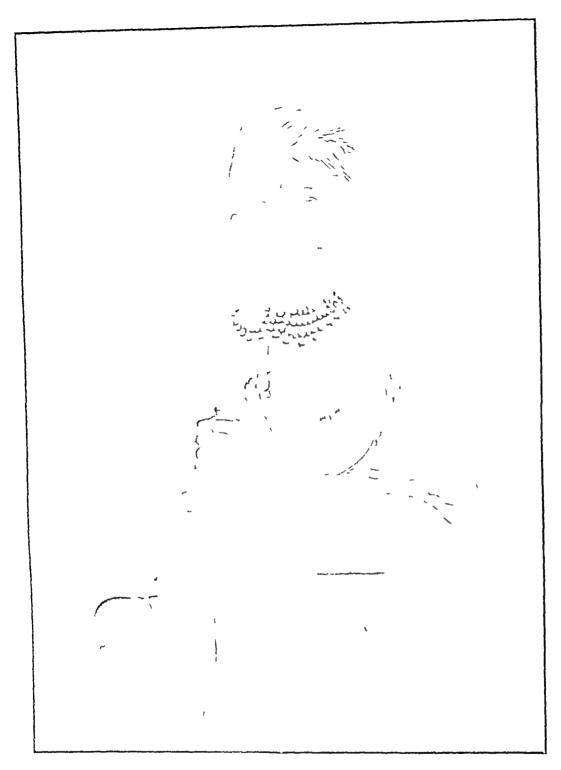
[%] वि० सं० १८६४. इ० म० १८०७-८.

जाळवनारां श्रीमती हरिवा साहेवने हाथे कदाच मजाने न्यायने वद्छे अन्याय मळे एवी आशंकाथी नामदार अंग्रेन सरकारे वि. सं. १९२३ मां ठींवडीनो राज्य कारोवार आसीस्टंट पोलीटीकल एजन्टनी देखरेख नीचे राख्यो अर्थात् राज्यपर मेनेनमेन्ट थयुं. कुमार श्री यशवंतिसंहनी तथा जमदिसंहनी वि. सं. १९६७ सने १८७१ ना फेब्रुआरी मासमां राजकोटनी राजकुमार कॉलेजमां विद्याभ्यास अर्थे दाखळ थया, ए वखते तेश्रीना मुसाहिव तरीके राणा केसरीसिहनी साथे गया हता. कुमार श्री यशवंतिसंहनीए वि. सं. १८२६ मा पोतानां मातुश्री हरिवा साहेव साथे सिद्ध-पुर, अंवानी तथा वहुचराजीनी यात्राए तथा वि. सं. १९२८ मां प्रभासपाटणनी यात्राए पथार्या हता. त्यारवाद वि. सं. १९२९ मां मुंबह जइ त्यां पथारेला कलकत्ताना नामदार वाइसरोयने मळ्या, अने ए वर्ष सिहस्थ होवाथी त्यांथी सीधा नाशिक व्यंवकनी यात्राए पथार्यो. ए वखते तेश्रीश्रीभे हजारो रुपिआतं पुण्यदान कर्धु हतुं.

कुमार श्री यशवतासंह जीनां छग्न वेला ठाकोर साहेवनां कुंबरी साहेव मों घीवा साथे तथा रुवा ठाकोर साहेवनां कुंबरी माजीराजवा साथे वि—सं. १९३० ना वैशाख बदी ११ ने मंगळवारे मोटी धामधूमथी थयां. तेओ नामदार वि—सं. १९३१ मां भारतेश्वरी राणी विक्टोरी आना कुमार (प्रीन्सओफ वेल्स) नी मुलाकात माटे मुंबई पधार्या हता. वि—सं १९३२ ता. ६ एपील सने १८७६ ने दहाडे तेओश्रीए इंग्लंडना प्रशास अर्थे प्रशाण कर्यु. ए वखते राजकुमार कॉलेजना पिन्सिपाल मी मेकनॉटन साहेब, पटेल आत्माराम जोइनाराम, वाघेला रवोभाइ, खवास नाराण तथा खवास नथु विगेरे साथे हता.

यूरोपनी तथा अमेरिकानी ग्राफित द्वारा महान् अनुभव मेळती कुपारश्री यशवंतिसहिनी इ-स. १८७६ ना अवशेवर यामनां कुशळतापूर्वक छीवडी आवी पहोंच्या. तओने वि-सं. १९३३ ता. १ आगष्ट इ-स १८७७ ना मांगिलक दिवसे झालावाड पान्तना आसीस्टंट पोलीटीकल एजन्ट मे. इन्टरसोहेबद्वारा लींवडी स्टेटनी स्वतंत्र सत्ता प्राप्त थइ. प्रजामां अपूर्व आनंद फेलायो. ए महो-स्तवमां स्नेही, सवंधी तथा मित्रवर्गे सारो भाग लीयो हतो.

ठाकोरसाहेनश्री यशदतिसहजी वालत्रयथीज धरानुरागो हता; तेओ पोतानो केटलोएक स-मय शिवपूजनमां, वेदान्त विचारमां, किन पंडितोना सगागमनां अने शास्त्र मवंशी चर्नामां व्यत्तीत करता हता. प्रजा सर्व प्रकारे छाली हती अने पोताना वर्षनिष्ठ राजाने निता तुल्य प्रमाणी नितंतर मान भरेली नजरे निहाळती हती. नामदार ठाकोरसाहेब बि—सं. १९३५ ना फागण वदी ह ने



His Lote High is a Thallore Saheb Sir Jas vantsinhie, Limbdi

रिवनारे नांदोदनरेज गोहिल गंभीरिसंहजीनां कुंत्री देवकुंत्ररवा साथे हथेवाळे परणत्रा प्रधार्य हता. अने एज वर्षना वेशाख मासनी शुद्धि ११ ने शुक्रवारे उतेळीआना दरवार दाजीराजजीनां कुंतरी वाइराजवा साथे लीवडीमांज पेंखाणा हता. ए प्रसंगे लाखो रुविआनो व्यय कावामां आव्यो हता. त्यारवाद पोताना लघुत्रन्यु जमेदिसंहने वेला तथा गहकाना कुंत्ररो साथ वि—तं. १९३६ ना वेशाख शुद्धि ८ ने सोववारे म्होटी धामधूमधी परणाव्या हता. वि—स १९३७ मां भावनगर गोंडल रेल्वेने खुल्ली मुक्तामा आवी त्यारे नामदार ठाकोरसाहेत्र श्रो जसत्रतिसहजी व्हादुरे सुंत्रइना नामदार गवर्नर साहेत्र, काठिवाडना में बालासान पोलीटीकल एजन्ट साहेत्र, केटलाएक देशी राजवंत्रीओ तथा म्होटा अमलदारो वगेरेने एकरोज उत्तम मकारनी मिजमानी आयी हती अने तेमा उदार दिलघी हनारो रुविआ उडाव्या हता. वि—सं. १९३७ मां तेओ नामदार महावलेश्वर प्रायी हता अने त्याथी वळती वखते आबुजी तथा अंवाजीनो कल्याणकारी यात्रा करी आनंद-पूर्वक राजवानीमां आवी पहोंच्या. वि—सं. १९४० मां तेओशीने मुंवइना नामदार गवर्नरसाहेवनी धारासभामा सभासद तरीके स्थापवामां आव्या.

वि॰ सं॰ १९४१ मां नामदार गवर्नर लॉर्ड रेनी मुलाकात माटे नामदार ठाकोर साहेवतुं मुन्द पथारवुं थयुं हतुं. एज वर्षे तेओ विलायत तरफ विदाय थता कलकत्ताना वाइसराय लॉर्ड रीपननी मुलाकात अर्थे वीजीवार मुंबइ पथार्या हता अने ए वर्ष सिंहस्थ होवाने लोधे त्यांथी परभारा सहकुट्टम्ब नाणिकच्यंवकनी यात्रा एण करी आच्या, ए वस्तते स्ववर्षपरायण श्रीमान ठाकोर साहेबे अनेक प्रकारनां पुण्यदानथी महान् सुयश मेळव्यो हतो.

वि० सं० १९४३ मां ज्यारे नामदार गवर्नर लॉर्ड रे साहेव काठिआवाडमां पथार्या, त्यारे श्रीमान टाकोर साहेवे तेओने लीवडी पधारवा आमंत्रण कर्यु अने पोताना निवन राज्यमहेलमां एक मशसनीय मानपत्र आप्युं. जेनो नामदार गवर्नर साहेवे सहर्प स्वीकार कर्यो. ए प्रसंगे लीवडी स्टे-टना तमाम भारातीए नामटार टाकोर साहेवना हुकमधी त्यां हाजरी आपी हती.

वि॰ सं॰ १९४२ मां भारतेष्वरी राणी वीक्टोरीयाना श्रीन्स इयुक्त ऑफ कोनोट पेतानां वानु महित राजकोट पथार्या ते वन्वते श्रीमान ठाकोर साहेवे त्यां जड देशी रजवाडाओना महान् दरवार मध्ये नामदार श्रीन्सने काटिआवाड तरफथी आपवा तयार करेलुं मानपत्र वांची संभळाव्युं एतं. एज वर्षे वदनीय महाराणी वीक्टोरीयानी ज्युविलीनो महोत्सव होवाथी काठिआवाडनां समस्त राज्यो तरफथी तेओने मुवारकवादी तथा मानपत्र आपवा माटे नामदार ठाकोर साहेव श्री जसवत-

सिंहजी वैशाख शृदि ९ ने दहाडे विलायत पधार्या. ए वखते तेओनी साथे गणा केसरीसिंहजी, कोचमेन हरिभाइ तथा मधा अने अणदा नामना वे खवास हता. विलायत पहोंच्या वाद श्रीमान टाकोर साहेव महाराणी विकटोरीयाने मलया. भाग्यजालिनी भाग्तेश्वरीए तेओने पोताना मनोहर महेलनी अंदर मिजमानी आपी अने "नाइट कमान्डर ऑफ धी इन्डीअन एम्पायर " नो मानवंतो इल्काव खहस्ते एनायत कर्यो. श्रोमान टाकोर साहेव त्यांनुं तमाम काम पूर्ण कर्या वाद त्रीजवॉटर नामना एक महान् ग्रहस्थ साथे अमेरिकामां पधार्या अने ए खंडने पश्चिम कांटे रहेला सेनफान्सी-सना वंदर सूधी मुसाफरी करी. वि० स० १९४४ ना मागगर वटी १० ने शुक्रवारे पोतानी राज-धानीमां आवी पहोंच्या. ए मुसाफरीमां आशरे एक लाख रुपिआनुं खर्च थयुं हतुं.

श्रीमान् ठाकोर साहेवश्री यश्चतंतिहंजी सन १९०७ ना एमील मासनी ता. १५ मीए कैलासवासी थया; तेओने कांइ संतित हती निह, जेथी पोताना गाडीवारम तरीके कोड योग्य नर-ने चुंटी कहाडवा तेओनी प्रथमथीज इच्छा हती. पोताना अवसान पहेलां थोडा वर्ष अगाउ ज्यारे तेओ पुनामां हता, त्यारे हालना श्रीमान टाकोरसाहेच श्री दोलतिसहजी के जेओ ते वखते जामन-गर स्टेटना इम्पीरीअल लान्सर्सना उपरी हता अने कर्नल टाटमा ए नामथी ओलखाता हता, ते-मना तरफ तेओश्रीनी दृष्टि टरी हती. ए विचार धीमे धीमे मुद्दढ थतो गयो अने पोताना अवसान समये तेओश्रीए एवी इच्छा टर्शावी के मारा वारस तरीके नामदार सरकारे कर्नल टाटमां मंजुर राखवा.

लींवडीनी राजगादी माटे अन्य वारसदारे वांधो उठाव्यो हतो, परतु मरहुम ठाकोरसाहेव सर यशवंतिसहजीनी इच्छाने मान आपीने तेमज श्रीमान् दोलतिसहजीने राजवंशी तथा सृशिक्षित गणीने नामदार सरकारे तेमनेज गादीवारस तरीके मंजुर राख्या, अने इ. स. १९०८ ना एपील मासनी ता, १४ मीए लीवडीनी राजगादीनो स्वतंत्र अधिकार सोंप्यो

श्रीमान् ठाकोरसाहेव श्री टोलतिसहजी वहादुरे तख्तनशोन थया वाद पजाने सर्व पकारे संतोप आप्यो छे, अने मरहुम ठाकोरसाहेवनी खामी जरा पण जणाववा दीधी नथी. तेओ पथम-थीज लीवडीना भायात अने गरासदारनी पंक्तिमां गणाता आव्या छे. वि. सं. १५४२ मां ज्यारे ठाकोर खेताजीनो स्वर्गवास थयो, त्यारे तेमने नाजीजी आदि तेर पुत्रो हता, पाटवीकुमार नाजीजी अंगहीन होवाथी राज्यने दुश्मनोना डरथी वचावी शके तेवा न हता, एथी वीजा कुमार भाणजीने गादीए वेसाडवा राजकीय जनो एकमत थया, परंतु राणो भाणजी दीर्घदर्शी होवाथी तेमणे कहुं

के आपणी रजपुत जातिमां म्होटाभाइनी हयाती होय त्यांमुधी न्हानाभाइने गादीए वेसाडी शकाय निहः अने तेम करीए तो नाहक भाइभाइमां क्रेज थाय, एटला माटे कोइने माछं न लागे तेम करवा मारो विचार छे; सांगाजी सहुधी न्हाना छे. एने गादीए वेसाडीए तो कोइने कहेवापणु रहेशे निह. ए वात सहुने रुची; जेथी सांगाजीने राजगादीए वेसाड्या. ए वखते राणा भाणजी के जे हालना श्रीमान ठाकोरसाहेव श्री दोन्तिसहजी वहादुरना वडवा थता हता. तेओनी उटारष्टिच विषे सर्व कोइ प्रजंसा करवा लाग्या. ठाकोरश्री सांगाजीए पोताना वडील वंधु नाजीजीने "वलले तथा राणा भाणजीने पच्छम, झोवाळं, लालीयाद तथा जणसाली नामनां चार गाम गरा-समां आप्यां के जे खेताजीनी कारकीढींने अते लखाइ गयुं छे.

राणा भाणजीने हरटासजी नामे एक पुत्र थया अने हरदासजीने त्यां पण मेपजी नामे एक पुत्र अवतर्या, ए मेपजी वहुज वहादुर हता, तेमणे हाटा नामना काठी साथे धीगाणुं करी जीत मेळवी हती. ए वावतमां कोड एक कविए नीचे मुजव टोहो वनावेळो छे.

"पाणी पच्छमीआ, चूडासर चडावीयुं; हामे हादलका, मेंगल ढाळयो मेपला."

राणा मेपजीने खेताजी नामे एक पुत्र थया, ए खेताजोना पुत्र नागजीए दामाजी गायकवाडनी फोजने पच्छमनी सीममां छंटी अने तेनो हा० २४०००) चोवीश हजा-रनो माल हाथ कर्यो. गायकवाडे राणा नागजीने कांडपण निह कहेतां ए सिंहाणी-ना भायान होवाथी त्यां मोसल मोकल्या. मोसल घणा समय मूधी सीहाणीमां पड्या रहा, तेनी मोसलाइना रुपिया पण चड्या, एथी छंटनो माल अने मोसलाइना रुपिया वस्त्र करवा राज्य उपर गायकवाड तरफथी वथारे जररजस्ती थवा लागी. टाकोर सात्यने कोइए समजाव्यु के राणो नागजी आवी म्होटी रक्षम आपणने एक साथे भरी बाके तेम नधी. माटे जे जे बखते एनां खळां तैयार थाय. ते ते बखते माणसो मोकली जबरजस्तीथी आपणे करवे करी लेवां. एम करवाथी थीरे धीरे आपणां नाणां इमल थड जजे. आ बात टाकोरमाहेवने टीव लागवाथी तेओए राणा नागजीना पच्छम नामना गाम उपर फोज मोकली घउंना खळां जन कर्या. गणा नागजीए निथ्य कर्यों के हवे गगम हाथ रहेजे निह, माटे तमाम गरास ब्राह्मण तथा चारणो वेगरेने हुटणार्पण करी अहीथी चाल्या जवुं एज उचिन छे. पछीथी व्हारवटुं खेडी वाह्यळथी रीजो गगम मेलवर्य. एम धारी तेमणे ब्राह्मणो तथा चारणोने वोलावी जमीन आपवा मांडी,

आसपासना घणा ब्राह्मणो भेळा थया इता. राणा नागनीभाइने त्यां तेमनो भाणेज मिजमान वनी आवेल इता, वस्तते मारामारी थाय अने पोताने आंगणे भाणेजनुं रुथिर रेडाय नो महा पाप लागे एवा भयथी पोताना पौत्र सजाजी (जेमलजीना पुत्र) साथे तेमने पीपलीए रवाना कर्या, पाछलथी कोइएक ब्राह्मणे आवी गरास माग्यो. राणा नागजीभाइए कहाुं के गगसनो घणी पीपलीए भाणेजने मुकवा गएल छे ते आवीने आपशे, एक दिवस तमे रोकाओ. ब्राह्मणने भ्रान्ति थड के मने गरास आपवो नथी एटला माटे व्हानुं काढे छे; माटे आ वात सीहाणीनी फोजवालाने कंहुं तो तेना तरफथी मने जरुर गरास मळशे, आम निश्चय करी ए फोजना उपरी पासे गयो अने वची वात जाहेर करी. फोजना उपरीए तेने वदलो आपवा दिलासो टड सजाजीने केट करवा माटे स्त्रारीने पीपली तरफ रवाना कर्या. सजोजी पग भाणेजने सहीसलामत घेर पहोंचाडी पाछा वळी चुक्या हता. मार्गमां फोजनो भेटो थयो, फोजवालाए तेमने तावे थवा समजाव्या, परंतु जयमलजीना पुत्र अने नागजीना पौत्र शूरवीर सजोजी धींगाणुं करवा सज्ज थया, पोते एकला हता, तो पण फोजनां घणां माणसोने कापी काम आव्या, तेमनी खांभी पच्छम तथा पीपली वचे हाल पण मोजनां घणां माणसोने कापी काम आव्या, तेमनी खांभी पच्छम तथा पीपली वचे हाल पण मोजनां घणां माणसोने कापी काम आव्या, तेमनी खांभी पच्छम तथा पीपली वचे हाल पण मोज चुत्र छे. आ खबर राणा नागजीभाइने मळतां तेओ पोताना पौत्र भीमाभाड तथा सजाजीना वालपुत्र वीसाभाइ वंगरे कुटुंव कवीलाने लइ गोंडल तरफ चाली निकळ्या. पच्छमवालाने परहटमां पहोंची गएला जाणी तेमनो तमाम गरास दरवार टाखल करवामां आव्यो.

राणा नागजीभाइए पोतानां बहेन गोंडलना टाकोरश्री कुंभाजी वेरे आपल हतां. टाकोर कुंभाजीए तेमने चोरही तथा गुंटाळुं नामनां वे गाम आपी फोजना उपरी वनाच्या. राणा नागजी तो पन्छम वगेरे गामनो गरास छोडी गोंडल गया, परंतु तेमना कोइएक खवासनी जयु नामनी दीकरीए पोताना मालिकतुं निमक हलाल करवाओं कम्मर कसी, ते असहाय होवा छतां वडोदरे जइ पहोंची अने माथे वलती सगडी लइ दामाजी गायकवाड पासे पोताना मालिक उपर गुजरेलो जुलम जाहेर कर्यो। वाइनी स्थित उपर दामाजीने दया आववायी तेमणे राणा नागजीनो गरास पाछो आपवा सीहाणी उपर हुकम लखी भोकल्यो, टाकोरसाहेवे ए वखते अनेक ब्हानां वतावी गरास पाछो आप्यो निह, जेथी जबुवाइ बीजो वार वडोदरे गई अने फरी एज स्थितिमां फरियाद करी हुकम लखाच्यो तो पण कार्यसिद्धि न गई, त्यारे ते त्रीजी वार त्यां गई अने हुकमनी साथे गायकवाडनां माणसोने पण साथे लावी। आ वखते सीहाणी नरेशे पच्छमवाळाने गरास पाछो आपवानुं वचन दइ गायकवाडी माणसोने विदायगीरी आपी, अने पाउळथी जबुवाइनो जान लेवा

माटे घाट घड्यो, तेओए जाण्युं के ज्यां सुधी जबु जीवती छे, त्यां सुधी आमने आम उपाधि कराज्या करणे, माटे एने परलोकमां पहोंचाड्या विना दामाजीनी फोजनो दरोरो सीहाणीने सुखे रहेवा देशे निह. थोडा वखत पठी ठाकोर साहेवे जबुवाडने समशेरना झटकाथी कपावी पोतानो विचार पार पाड्यो, मरतां मरतां जबुवाइए पोताना स्त्रता रुधिरमां हाथ भीजावी राणा नागजीनी डेलीए छापा मार्या अने कहाुं के ज्यां सुधी राणा नागजीनो वंशज महाराजा मांगुजीना तच्न पर निह वेसे, त्यांसुधी सीहाणी नरेशना वंशनी दृद्धि थशे निह अने त्यां लगी आ छापा पण कोइ प्रकारे सुंसाशे निह. ए जबुवाडने राणा नागजीना वंशजो एक देवी तरीके माने छे अने अ-

उपर मुजब बनाव बन्या बाद थोडे बखते राणा नागजीनो गोंडलमां स्वर्गवास थतां तेनना पुत्र भीमाजीने श्रीमान् गोंडल नरेशे सैन्यतु आधिपत्य आप्युः भीमाजीना म्होटा भाइ सजा-जीना वीसाभी, बोसाभीना रामोभी अने रामाभीना सरतानजी नामे पुत्र थयाः ए सरतानजी निर्वश गुजरी गयाः

राणा भीमाभीए गोंडलनी फोज लड़ लीवडी उपर चाळीश वर्ष पर्यन्त व्हारवहुं खेड्युं, ज्यारे एमने द्रद्धावस्था माप्त थड़, त्यारे तेमना पुत्र हरिभीने गोंडलना लब्करचुं उपरीपणुं मळ्युं. तेओ गोंडलनो फोज पैकी हसन छडीआताना टोढसो घोडा लड़ पाळीयाट आव्या, अने त्यांना हाथी खाचर मारपत लीवटी सबधी तपास कराव्यो. त्यांथी एवा समाचार मळ्या के टाकोर साहेवनो मीतिपात्र कांथो राटोट वीमार छे अने तमे गोंडळथी नीकळ्या छो, ए खवर तेमने पडी गया छे. आ सांभळी राणो हिम्भी पांच घोडेस्वार साथे लीवडी आव्या अने सीधा कांधा राटोडने घर गया. हसन वंगरे वीजा स्वारोने हुडा नामने स्थळे राख्या हता. हिस्भीए कांया राटोडने मुवाण पूछ्या वाद परस्पर ओळखाण नीकळी, नेवामां टाकोरसाहेव पण त्यां पथार्या. टाकोरसाहेवे पूछ्युं के आ नवा ममान कोण कांधाराटोडे जवाव आप्यों के ए मेमान नवानगरना छे अने वरसोडे जता आही मने खुवाण पूछ्या आजा छे. आजनो दिवस मारे त्यां रोकाशे; टाकोर नाहेव पथारी गया बाद कांधाराटोडे हिस्भीने क्युं के तमारी साथे केटचा सवार छे? राणा हिस्भीए समग्र हत्रीकत कांहर करी. कांबाराटोडे कर्युं के ए वया स्वारोने लींबडी वोलावी राजो. हिस्भीए प्रथम तो जानाकानी करी, पण पछीथी हमन वंगरे तमाम माणमोंने लींबडी वोलावता हा कही, बीजे दिवसे राणा हरीभीनी हाजरीमां श्रीमान टाकोर गाहेव कांया राटोडने

त्यां पधार्याः ए वखते कांधा राठोडे कहुं के-लाँडव, आपणे वढवाण नरेश चांदाभीनी साथै वर छे, माटे एनी साथे पन्छमवाळा के जे व्हारवटे छे तेने वढादी मारीए तो ते वेमानो एक पक्ष नाज्ञ पामशे अने तेथी आपणने लाभ थहा. ए वात ठाकोर माहेबने गमी, परंतु तेओ तुरत बोली उठ्या के पच्छमवाळा आपणा साथे व्हास्वट्टं खेडे छे अने कांइ मददे आवे ? कांघा राठोडे उत्तर आप्यों के ए तो हुं गमें ते प्रकारे एने रामजाबी कार्यकिद्धि कराबी लड़न. " बहुलाई " कही ठाकोर साहेव पोताने अवासे पथार्थाः राणो हरीभी त्यांन वेटा हता, तेओए कांधा राठोडना कहे-वाथी इसन वंगरे समग्र स्वारोने सत्वर बोळाबी ळीवा, ए बवाने राज्य तरफवी उतारा वंगरेती सगवड करी आपवामां आवी, त्यारवाद विमारीथी मुक्त वनेला कांधाराठोडने साथे लड्ड श्रीमान् ठाकोर सादेव शीहाणी देवदर्शनार्थे पथार्था. ए वात छींवडी रहेता वहवाणना ग्रप्त दूते तुरत वह-वाण पहोंची जाण करी, त्यांथी ६००) चारसो घोडेस्वार लीवडी आव्या अने निरांते लूंट चलावी तथा केटळांक वान पकड्या. ए तमामने नामनेशना गढ़िया राख्याना इरादाथी वढवाणनी फोज भोगावाने पेळे किनारे पहोंची, त बखते तेमांना कोइ कार्यक्रशळ माणसे कहां के आम र्छावडीनो माळ लइ नागनेशना गढमां जालवी शकाशे नहि माटे वहवाण जइए तो सारु आ रीते निश्चय करी वधा पछा बळ्या, ए पहेलां राणो हरीभी पोताना सनग्र स्वारी सिन्त बढवाण तरफ चाली नीकळ्या हता, तेओ एटलेसुधी आगळ वध्या के ज्यांथी वहवाणनां देवमिंडरो तथा राजभ्रवन वगेरे स्पष्ट रीते द्रष्टिगोचर थतां इतां, परंतु लीवडीनो माळ लूंटो चाली निकळेली वढवाणनी फोजनो तेओने मिलाप न थयो, जेथी वधा पाछ। फर्या अने केराळा नामना तळाव न-जीक पहेंच्या त्यां दूर्थी अश्वोना पदप्रहार वहे उहेली रजना समुदायने लीवे धूमरित वनेल आकाश तरफ द्रष्टि करी राणा हरीभीए पोताना स्वारोने सचेत करी उक्त तळावमांज यन्त्रनालि-काओने दारू गोळीथी सज्ज करवा आज्ञा आपी, जो के वढवाणना घोडेस्वारोए ए लोकोने जोया, परंतु पोताना सैनिको विशेष प्रमाणमा होवाथी तेओए अश्वोनी गतिने अटकावी नहि. अने पोरसमां आवी परस्पर वोलवा लाग्या के-लागे छे तो लींवडीना माणसो, पण कांइ इरकत नहि, वाजना झपाटा पासे विचारा तेतरनुं वळ क्यांसूधी टकवानुं? एने पण केंद्र पकडी साथे लेता जइए एटले कागगारनी कोटडीओमां भले कह्वोल कर्या करे. पिथ्याभिमान मनुष्योतुं केटलुं अहित करे छे ए आ उपरथी स्पष्ट समजी शकाय छे. वहवाणनी फोन नजीकमां आनी के तुरत राणा हरीभी वगेरे ए वीरहाकनी साथ वंदूको छोडी अने तुरतज म्यानमांथी तळवारोने खेंची

हिम्मतभर दुब्मनोना दळ उपर हह्यो कर्यो अने " इरहर महादेव " एवा उन्नत उच्च स्थी एकाएक गगनमंडळने गजावी मुक्युं, राणा हरीभी वनेरेए छोडेकी अक्रेक गोळीथी टोळे वळेली वहवाणनी फोजनां वर्वे चार चार माणसो वीधाइ गया अने आशरे वसो माणसो एकीसाथे मरणने शरण षया, फोजमां भगाण पडयुं, वाकीना वसो स्वारो प्राण वचाववा खातर लींवडीथी लूंटेला मालने तथा पकडेला वानेन पडतां मूकी पलायन करी गया. आ वखते इसन छडीआए राणा हरीभीने कह्युं के वापु! हवे कोइ पाछुंवाळीने जुए एम नधी, माटे दीघे राखो, एम कही बढवाण फोज पाछक घोडाओने मारी मूक्या अने ठेठ वढवाणना गढ सूधी गाजरमूळानी माफक मितपक्षीओने कापी पाछा वळ्या. केराळा तळावमां आवी वान छोड्यां अने लीवडीना माल साथे हाथ आवेलो के-टलोक वहवाणनो माल एण स्वाधीन करी आगळ वध्या. आ अरसामां शीहाणीथी कांधा राठोड साथे पाछा वजेला श्रीमान लीवडी नरेशे मार्गमां पोतानी रैय्यतमांना केटलांएक मुनुष्योने जोइ आ-अर्यथी पूछचु के तमो अही क्यांथी ? रैटयते जवाव आप्यो के-साहेव ! आर्पेज अमने छोडाव्या, वचाच्या अने वळी अजाण्यानी माफक आम शुं पूछो छो ? आ शब्दो सांभळी वधारे विस्मित वनेला टाकोरसाहेवे कांधाराटोडने कहां के आनो भेद मारा समजवामां आवतो नथी. त्यारे कांधा-राठोडे जणाच्यु के-कृपानाथ ! आपणी गेरहाजरीथी वाकेफ थइ वढवाणनी फोज छींवडी आवी हशे अने कांड़ लंटफाट करी आ लोकोने वान पकडी लड़ गया हशे. रैटयते कहां के-जी हा. एज वीना वनी छे, पण कोइ व्हादुर पुरुषों के जेणे अमने छोडाव्या तथा छीवडीनो वधो माल हाथ कर्यो एमणे षदवाणनी फोजने एवी तो छिन्नभिन्न, कंपायमान अने कतल करी छे के जेनुं वर्णन अमाराधी पइ शकतुं नधी. अमे खात्रीधी नजरे जोएछं कहीए छीए के वहवाणना छगभग चारसो घोडेस्वारोमांथी भाग्येज पांच पचीश वचवा पाम्या होय ? श्रीमान् ठाकोरसाहेवे यांधाराटोडने पूछ्युं के ए व्हादुर पुरुषो कोण हमे ? के जेणे आपणी रैय्यतनी रक्षा करी हींब-टीनी जती आवरने जाळवी ? कांधाराटोडे मत्युत्तर आप्यो के ए व्हादुर पुरुपो वीजा कोइ निह एण पन्छमवाळा राणो हरीभी आपणे ज्यारे सीहाणी आव्या त्यारे में तेओने लीवडी रोकी राख्या हता. एमणेज आपणा राज्यनी रक्षा करी छे. आ रीते वातचीन चाली रही छे त्यां राणो हरिभी आवी परोंच्या. श्रीमान टाकोरसाहेव तेमने प्रेमपूर्वक मळ्या अने आटरमान महित लींवडीमां लइ आ-प्या. वीजे दिवसे जातेर दरवार भरी राणा हरीभीए वजावेली राज्यसेवाना वदलामां तेमने गाम '' बलाटु '' गरास्मां आप्युं अने गायकवाडना हा. २४०००) चोवीश हजार भरी आपे तो

पच्छम बगेरे गामो पण पाछां आपवानो इन्छा वतात्री; परंतु ए वावते नाणानी एटकी बधी तंगी हती के एक सारा राज्यमांथी पण एटली रकम नीकळी श्वके तेम न इती, तो एटला रुपिआ गरासदारो पासे तो क्यांथीज होय ?

आ रीते वाहुवळथो "वळाळु" गरासमां मेळवी राणो हरीभी श्रीमान् कींवडी नरेशनी रजा छइ गोंडळ गया. त्यां तो तेमने निष्टतिए वेसवानो वावनज न मळ्या, कारण के ए वखते " जेर्नु जोर तेनी जमीन " एज दोर उपर राजपूतीना मन दोराएकां इतां, गाम घोराजी प्रथम जुनागढ़नी हुकुमतमां हुतुं परंतु गोंडळ ठाकोरे दळना वळथी तेने स्वाधीन कर्युं, फरी एना पर पोतानी सत्ता जमाववा जुनागढनी जबरी फोन आवी. गोंड बतुं लडकर पण लडवा माटे सामुं जतुं हतुं तेवामां हरीभीनो रस्तामां भेटो ययो. गोंडलनरेश क्वंभाजीने हरीभीए आ प्रमाणे अश्वारुद थयानं कारण पूछतां तेमणे उक्त वात जणावी. हरीभी साथे आवश तैयार थया. त्यारे कुंभाजीए कहुं के मामा, तमे हज़ चाल्या आवो छो तेथी घर जइ आवो तो सारुं, पण इरीभी तो आग्रहथी साथे आववा नीकळ्या. मार्गमां जे जगोए वे फांटा पडता इता ते जगोए ग्रुकन।वळीए कुंभाजीने जणान्यं के दंको गस्तो अग्रभ छे. तेथी तेपणे फेरवाळे रस्ते जवानुं कबुल कर्ये. त्यारे पोताना वाहुवळ उपर आधार राखनार हरीभीए कयुं के हुं तो दुइमनोने ने रस्तेथी अट मळी शकाय ते रस्तो शुभ समजु छुं. तमने ठीक पढे ते रस्ते जाओ. हुं तो हुंके रस्ते जश्श एम कही एकज माणस साथे लड़ चाळता थया. धाराजी पहोंची दुश्मनोनी छावणीमां एकदम प्रवेश करी, सुवाना तंबु पासे जइ कहेवराच्युं के सुवा साहेवने वोलावो. हथोहथ नवाव साहेवनो कागळ आपवानों छे. आथी सुवो वहार आव्यो के तुरतज पोताना भालाना एकज पहार वहे सूत्राने ठार क्यों. छात्रणीमां तो कोलाइल मची रहाो. दुश्मनाए जाण्युं के सेना आवी पहाँची. तेथी प्राण लइ सर्व दुरमनो नामवा लाग्या. हरोमो सुराने मारीनेज आंत न थया पण तेमनी पाछळ पड्या. छ।वणीना माणसो लगभग चार कोश पहोंच्या पछी जोयुं तो मात्र वेन माणसोने जोया तेथी हिम्मत राखी सामा थया. भारे मारामारी थइ तेनां पण पाच पंदर माणसोने मबळ पराक्रम बढे ठार करी हरीभी नाम अपर करी काम आव्या. हाल पण ते जगाए हरीभीनी खांभी छे. तेमनी मशंसा करतां कोइएक कविए कहुं छे के:--

" आगळ गोहेल सामैये ग्योतो, एम जाडा संगत जोइ; हरने हामो दोइ, एमां कीओ भलेरो भीमाउत." राणा हरीभीने वखतोजी नामे एक पुत्र हता. दहवाना काठीओए ज्यारे घोराजीमां छूंट करी ढोर वाळचां, त्यारे तेनी पाछळ गोंडळ तरफयो राणो वखतोजो चारसो घोडां छइ चड्या, जे-तपुर तथा पेढळा वचे भेटो धनां धींगाणुं धयुं अने तेमां काम आत्या. गोंडळनी फनेह थइ. ए व-खताजीना रवोभी, माळोभी, मेघोभी, पांचोभी, तथा छखोभी नामे पांच पुत्र हता.

अंग्रेजी फीजना उपरी अने कच्छ माहबीना रहेवाशी खत्री सुंदरजी शेठे भड़को भांगवा माटे गोंढळ ठाकोर पासे लक्कर माग्युं. ठाकोरसाहेवे राणा हरीभीना न्हाना पुत्र पांचाभीने तथा लखाभीने लञ्कर साथे मोकली आप्या. ए को कोए भड़लो भांगी, भागलाचरने केंद्र कर्यों; चुडा उगर चढाइ करी, चुढाना ठाकोर साहवेने केद कयी; खांडा बारना जादेजा छखाभीतुं जोर पण नेायुं. नव दिव प छडाइ चाली, खांडाधार भांगी जादेजा लग्वाभीने केद कर्या, वाद व या जोडोए आव्या, त्यां खंडणी कबूल कर-वाषी केदीओंने मुक्त कर्याः ए तमाम कार्यमां राणा पांचाभीए तथा छाताभीए बहुज व्हादुरी वतावी हती। 🚆 ए छखाभीना ब्हेन सोनवा नवानगरना जामश्री रणपछ वेरे आपेळां हतां. श्रीमती सोनवाने पेटे पातःसा- 🖫 रणीय दानदीर जामश्री विभाजीनो जन्म धयो. ज्यारे जाम विभाजी नवानगरनी गादीए विशानमा-न धया त्यारे तेओए पोताना मामा छखाभीने जामनगर बोछावी "बोडो तथा खाखरीयुं" नाम-ना वे गाम गरासमां आप्यां अने अमीर तरीके पाता पासे राख्या. ए लखाभीने इकोभी, मुळुभी, वरोभी, काळुमा तथा सामतसिंह नामे पांच पुत्र थया, तेमांना बीजा मुळुभीना हालोभी, भीमोभी तथा दादभा नामे त्रण पुत्र थया. तेमांना दादभासाहेव के जेओ सांमत समये स्व. लींवडीना ठा-कोरसाहेव श्री दोलतार्तिहजी एवा नामथी छुनसिद्ध छे, तेओ मरहून जामश्री विभाजीना द्रवारमां उछर्या अने उंचा प्रकारनी केळवणी मेळववा सपर्ध थया; जापश्री विभाजीए तेओनी उत्तप कावे-लीअत जोड़ ए वखने स्टेटमां उमा करवामा आवना इम्पीरीअल सर्वीस लडकरना उपरी तरीके निमनोक करी. उन्त कार्यमां तेओए घणी सारी आवरु मेळवी अने पोताना हाथ हेठेना छक्करने युद्ध सरघो उमदा तालीम आपी अने पाते पण जोके ए विषयतुं उत्तम ज्ञान धरावना इता, तोषण पुना, टीसा, सीमला, मधुरा अने मीरत वगेरे स्थळे जह रीतसर लडकरी परीक्षाओं पसार करी. तेमज जे जे अमळदारोना परिचयमां आव्या, तेमनो उंचो अभिषाय मेळव्यो. ज्यारे पोते पुनामां हता त्यारे कहकरी पेरेड अने कांप एक मरसाइझमां एवी तो मबीणता धरावता हता के जेथी इन्हेंप-वर्टींग ऑफीसर केप्टन फॉरवस, वोम्ने साउथ छेन्सर्सना कपान्डींग ऑफीसर कर्नळ पेगन तथा वर्नेल जोन्म एकी अवाजे तेमनी प्रशासा करवा लाग्या अने तेमना विवेकी स्वभावने लीधे पोतपो-

तानो हर्ष दर्शाववा छाग्या. श्रीमान् ठाकोरसाहेव ज्यारे जामनगर इम्पीरीअछ सवीस दूपना कमान्डींग ऑफीसर हता, त्यारे मुंबइना आगला गर्वनर ळॉर्ड हेरीसतुं नेओए खास ध्यान खेंच्युं हतुं. ज्यारे नामदार गर्नर जामनगरना वंदरपर उतर्या, त्यारे तेओए पोताना दरम्यान खु. ठाकोर साहेवनां खुव वखाण कर्यो हतां. इ. सं. १९०१ मां आस्ट्रे-कीआने फीडरळ पार्कामेन्ट आपवातुं नकी थयुं. ए वखते पातपोतानी खुशाकी तेमज संतोष जाहेर करवा माटे बीटीश लब्करनी माफक जुदां जुरां राज्योनां इन्पीरीअल सरवीस दूप्समांथी चुंटी कहाडेळा ऑफीसरोने त्यां मोकलवानो नामदार सरकारे निश्चय कयों. ३४ कमी-शन्ड ऑफीसरो अने ६६ नोन क्रीशन्ड ऑफीसरोने पसंद करवामां आव्या. खु. ठाकोर साहेव दोळतसिंइजी पण तेमांना एक इता. ए टोळी "हेल हाउसी" नामनी आगवोटमां ता. २४ मी नवेम्बरे मुंबइथी रवाना यह डीसेम्बर मासमां सीडनी वंदरे पहोंची: त्यांयी तेओ सर्व ब्रीसवेन गया अने ते वखते छाँडे छेमींग्टनने मळवानो तथा तेमनी साथे ओळखाण करदानो पसंग मळयो. जपरांत ए ट्रीप दरम्यान आरटेलीयाना पांचे विभागी, टासमानीया, न्युझीळांडना मुख्य शहेरी तथा वीजी केटलीएक जाणवा जोग जग्याओ जोवानो अने ए वधां संस्थानोना मुख्य वजीरोने तथा ळॉर्ड होपटाउनने मळवानो श्रीमान ठाकोर साहेवने प्रसन मळ्यो हतो. न्युझीळांडनी मुसाफरी दरम्यान श्रीमान टाकोर साहेव मी. सेडनना मिजवान वन्या हता अने ए प्रख्यात राज्यद्वारी पुरु-पनी कारोवारी शक्ति विषे तेमना डंक सहवास दरमियान मी. सेडनने सारी असर थइ हती. आस्ट्रेलीया तथा न्युझीलांडनी मुसाफरीमां समग्र पार्टीनी वहुज ममताथी आगतास्वागता करवामां आवी हती. त्यारवाद महाराणी विक्टोरीयातुं मृत्यु थवाथी वाकीतुं काम वंध करवामां आव्युं. एटळे आखी पार्टी हिंदुस्तान तरफ पाछी फरो जामनगरमां मरहुम जामश्री जसवतिंसहजीनी सगीरवये मेनेजमेन्ट हुतुं ते वखते उक्त स्टेटना एडमीनीस्ट्रेटर कर्नल केनेडी श्रीमान टाकोर साहेवने पोतानी जमणी बांह्य समान मानता इता. जामश्री जज्ञवंतसिंहजी जामनगरनी गादीए वेटा वाद केटळीक बांचेंतमां वांधो पढवाथी श्रीमान ठाकोर साहेवे पोतानी नोकरीतुं राजीनामुं आप्युं. ए वात सांभळतांज स्व पोरवंदरना किलभोज महाराणा श्री भावासिंहजी वहादुर तेओने पोता पासे वोकावी लीधा अने सेनाधिपतिनो मानवंतो हुद्दो आप्यो त्यारवाद तेमने थोडा वखतमां स्व स्रावहीना ठाकोरसाहेब श्री यशवतिसहजीनो अपुत्र स्वर्गवास धतां कीवडीनी राज्यगादी पाप्त थह. आ उपरथी सर्व कोइ स्पष्ट रीते समजी शकशे के राज्य मुळ्या पहेलां श्रीमान ठाकार साहेव श्री देखित-

सिंह जी वहादुरनी कारकीर्दी उज्बल्ध अने प्रख्यात छे; दुनियादारीनो तेओने उच्चतर अनुभव मलेलो छे अने असाधारण कांवलीअत, उनेह तथा ज्ञाक्ति माटे तेओ एं काएला छे तेमज तख्तन-ज्ञीन थया वाद र्वल्य समयमान प्रज्ञाना सुल अर्थे अपूर्व उत्कंटा मदिशत करी एक महान कांवल, मुधरेला अने दानबीर राज्यकर्ता तरीके मज्ञाहुर थया छे. पोताना संस्थानमां दरेक जातनी केळवणी मफत आपनानी कांटिआवादमां पहेल करनार श्रीमान टाकीर साहेवण छे. लींवडीना वेपारनी हांद्ध माटे तेटलाज उपयोगनुं एक अन्य पण्ल भरी तेओ नामदारे पोतानो कारकीर्दीने विशेष उज्वल करी छे. लींवडी तेमज आसपासनां गामोमां उंची जातनुं अने घणुं रु पाकतुं होवायो पूर्वे लींवडी झहेर रुना व्यापारनुं एक महोटुं मधक हतुं, पण पछीथी केटलाक विचलोभी व्यापारीओए रुमां भेलसेल करी दगो करवाथी लींवडीना रुनी नामनाने धको लाग्यो. तख्तन-ज्ञीन यया वाद तुरतमांज श्रीमान टाकोर साहेवनुं ध्यान ते तरफ खेंचायुं अने योग्य कानुनो पसार करवानी साथे लींवडीमां कॉटन प्रेस अने कॉटन मारकेट खोली मंद पडेला रुना व्यापारने पूर्वनी माफक पाछो सतेज कर्यो. आथी दगादुगी करनारा केटलाक व्यापारीओने नुकज्ञान थयुं. तिमज ए लोको कंइक नाराज पण थया. छतां ए सुपारो प्रजावर्गने पसंद पडयो अने एथो सर्वने पणां संतोष थयो.

श्रीमान टाकोर साहेव श्री दोलतिसह नी के अवणी प्रत्येनी उनार राज्यनीतिथी, खेडुत वर्गनी स्थित सुधारवाना प्रयासधी, व्यापारने उत्तेनन आपवाथी उद्योगी संस्थाओनो समारंभ दरवाणी तेमन पेतानी प्रजातुं दरेक रीते भल्लं करवानी उत्तम भावनाओथी मम्हुम टाकोर साहेव ते आंश्रोने पेताना बारस तरीके चुंटी कहाडवामां युद्धिशाळी तथा दीर्घदर्शी हता एवं सावित करी आप्यु छे. वळी तेमना विषे लीवडीनी प्रजाए तथा ए वखनना काठिआवाडना एजंट ट धी गवर्नर गी. पीटझराव्ड साहेवे ने उंची आशाओं वांधी हती ते वधी सफळ थवा पामी छे. तेओं नामदारने तफ्तनशीन करती वफ्ते भी. पीटझगव्ड साहेव वोल्या हता के—लीवडीनुं राज्यकुढंव पणा जुना वखतनुं छे, अने ने कारभीदींमां तमे पडवाना छो, तेमां तमने टकावी राखवा माटे तथा दोरवा माटे लीवडी राज्यकुढंवनी झळकती कारकीदीं तमारा आगळ छे. जे जग्या भरवा गाटे तमने अत्यारे नीयवामां आवे छे तेने माटे तमने वहुज सारी केळवणी मळी छे एम मारुं छे. तमने जामनगरमां केळवणी मळी छे तेमन मम्हुम विभाजी जामसाहेवना हाथ नीचे तमने घणी सारी नालीम मळी छे. ते जामसाहेवे तमने इम्पीरीअल सर्विस छेन्सर्सना उपरी

नीम्या, जे लक्कर तमेज उभुं कर्युं, जेनी व्यवस्था करी, जेने केळव्युं अने जेना कमान्हींग ऑफीसर तरींके तमे १३ वर्ष काम कर्यु, ते वखते तेमज त्यार पछी सरकारनुं घोडस्वार लक्कर तेमज देशी तथा अंग्रेजी रेजीमेन्ट साथे ट्रेनींग माटे तमे सर्वंधधरावता इता अने जे जे जुदा जुटा अमळदारोना हाथ नीचे तमे काम कर्यु तेमनो एकी अवाजे सारो मत तमे मेळच्यो छे. पांचमी रॉयळ आइरीस केन्सरना कमान्डींग ऑफीसर मरहुम कर्नळ चोझाम जे एक मख्यात ळडवैयो हतो ते मारा जाणवा प्रमाणे ऑफीसर तरीके तमारा गुणो अने तमारी वर्तणुक विषे घणोज उंचो मत धरावतो इतो अने तमे एक घणाज सरस ऑफीसर छो एम तमारा विषे छखी गयेल छे. ज्योरे इम्पीरीअल सर्वांस छेन्सर्समां इता त्यारे तमे आस्ट्रेळीया तथा न्युझीळांडनी मुळाकात ळीबी इती अने इम्पीरीअळ सर्विस छेन्सर्समांथी निकळी गया पछी पोरवंदरमां तेमज वीजे ठेकाणे कारोवारी अनुभव तमे घणोज मेळच्यो छे. तमारी कारकी दी वधी सारीज छे अने जे वधो जुदी जुदी जातनो अनुभव, तमे मेळ-व्यो छे ते तेमज करकरी ताळीमथी वरोवर नियमसर काम करवानी तेमज अमळ चळाववानी टेव पढी छे ते राज्यकर्ता तरीके तमने बहु उपयोगी थइ पडवां जोइए. राज्यकर्ता तरीके तमारुं काम सहेळुं नथी, कारणके राजाने माथे म्होटी जोखमदारीओ रहेळी होय छे तेमज तेमने फसावनारी ळाळचो घणी होय छे, पण तमारी वर्तणुक विपेना म्हारा लांवा अतुभवथी मने पूरेपूरी भरोसो छे के तमे तमारा माथे पडेली जोखमदारीओं डहापणथी वजावशो, न्यायसर राज्य करशो अने सुधरेला तेमज आगळ वधता जता कारोबारना वया फायदा तमारी रैय्यत्त भागवहो. "

मी. फोटझराल्डनुं भाषण पुरुं थया वाद श्रीमान ठाकोरसाहेव योग्य शब्दोमां छटादार भाषण आपी छींबडीना राज्यसिंहासनपर विराज्या. ए वस्तते देशी विदेशी अनेक मिजमानो आवेछा हता अने एक योग्य नरवीरनो उदय निहाळीने अत्यंत आनंद पाम्या हता. ए महोत्सव प्रसंगे महारा तरफथी निम्निक्किस्तित काव्य निवेदन करवामां आव्यां हतां.

सोरठा.

आनँद लहत अनेक, लिख सज्जनगन लक्षाविधि; रिसक राज्य आभिषेक, दोलतिसंह दिनेशको ॥ कविवः

दोलत दराज दरसावे, तिथि त्रयोदशी;

मंजु मधुमास आश पूरक अशेषको ॥
किव नष्टुराम मुद्धाम दिन मंगलको,
निम्बनगरीकी हानि हरन हमेशको ॥
संवत उन्नीस शतचोसठको चारु आज,
करन निकंदन कुठार सब क्षेत्राको ॥
डोलत सनेही सब हर्षके हिंडोरनपें,
उदय अमोल लिख दोलत दिनेशको ॥ २ ॥
मचैया.

वाद्य विजेप्रद वाजत राजत साजत साज सवे अति सुंदर;
त्यों नथुराम निरंतर निर्मल, मंगलरूप महा मुद मन्दिर;
आज छल्यो अवनि तलपें सुखनीर सन्यो शुभ श्रेय समन्दर;
निम्बपुरी सुरनयसी सोहत, दोलतिसंह प्रतापी पुरन्दर ॥ ३॥
कवित्त.

गुना गुनज न झलरान नयके निधान, साज सुरराज तुल्य सुखमय साजो आप॥ किव नथुराम अभिराम यशवंतनन्द, निल्य किव कोविद्षें नेहसों निवाजो आप॥ दोलत नृपाल द्विजधेनुप्रतिपाल दिल्य, आनंदके आलवाल भूतलमें भाजो आप॥ चखत बुलंद निम्व नगरके तखतपें, हर्पयुत वर्ष शत अवाध विराजो आप॥



ठाकुरश्री यशवंतके नंद, जताकर जोर सपरन सताकर ॥ धाकर धर्महुके पथ्यमें, नथुराम निरंतर विघ्न विदाकर; छाकर क्षेम जमाकरके जस, आनँदके उदिध गुन आकर, पाकर पूर्न प्रमोद तथो, दुनिमें नित दोलतसिंह दिवाकर ॥५॥

कवित्त

पूरन प्रतापवंत उत्तम अमाप आप,
पाये निम्बपुरीको स्वतंत्र अधिकार आज ॥
किव नयुराम गुनमाम राजताज धरि,
गरिबनिवाज करी नित्य कीरितके काज ॥
जयके जहाज बांधो पुन्यकी पुनित पाज,
निरआमिमान है महान मखवान माज ।
हर्षसों हमेश किवकोविदके होश काटि,
दोलत नरेश दिव्य दोलत लहो दराज ॥ ६ ॥

धनाक्षरीः

साहिबी महान मिली निम्व नगरीकी नीकी, तोपें तिलमात्र कियो नांहि गुनको गुमान ॥ किव नशुराम कीर्तिकेतु फहराये जग, प्रजा मन भाये किर सत्यासत्यको प्रमान ॥ रिपु तरसाये दान मेह बरसाये पुनि, हिय हरसाये हितुजनके सदा सुजान ॥ छाये सुखसंपतिसों ग्रिनमें गवाये जासों, पाये दीप्ति दूनी नृप दोलत दया निधान ॥॥॥ धनाक्षरीः

लेकें गुन रत्न आये जिनजिन आप ढिग,
किम्मत सवाइ प्राप्त कीनि सदा तिन तिन ॥
किम्मत सवाइ प्राप्त कीनि सदा तिन तिन ॥
किम्मत संग्रस वह चाहत विशेष चित्त,
सुज्ञपन राउरो सराहत है छिन छिन ॥
प्रवल प्रतापी मखवान महि मंडलमें,
नर गरवीलेकों नसाओ आप गिन गिन ॥
दोलत दिपाइ चिरकाल प्रजापाल पद,
दितीयाके इन्दु जैसो उदे पाओ दिन दिन ॥८॥
किवत.

झलक ये झालावार हूकी सव खलक में, अलक पुरीसी खास नजरमें आती है।। किव नथुराम जन आश्रितकों नित्य जाके, पत्रनकी पांति ताप तनके नसाती है।। सरस खुधाके तुल्य जाके हैं अनल्प फल, सेवककों सदा सुखदायिनी सुहाती है।। दोलत नरेश यह नींवरी तिहारी दिव्य, कायम हमारी कल्पवहरी कहाती है।।९॥ सवैया.

जाहिर श्री जसवंतको नन्दन दानहुके दरियाव वहावे,



त्यों नथुराम रटे जिहि नाम वही हिग रंच न दुःख रहावे॥ रच्छकह्ने सुरसंतनके वद दानवको तृन दंत गहावे, या कलिकालमें नींवरीके नृप दोलतसिंह दयाल कहावे॥१०॥

श्रीमान ठाकोरसाहेव श्री दोलनासँहजी वहादुरनो जन्म वि—सं. १९२४ ना अपाह विद ६ ता. ११ जुंलाइ सन १८६९ ना रोज थयो छे, तेओश्रीना पाटबी कुमार दीर्घायु दिग्विजयसिं- हजीसाहेव वि—सं. १९५२ ना चैत्र विद १३ ता. १० एबील सन १८८६ ना रोज जन्म पाम्या छे. तेओए पण पोताना पिताश्रीनी पेठे उंचा प्रकारनी केळवणी लीवी छे अने राजकोट राजकुमार कोलेजमां पूरतो अभ्यास करी हाल विजायतमां राज्यनीतिनी उत्कृष्ट केठवणी लेवा अर्थे निवास करे छे. तेंओश्रीनां लग्न स्व. इहरना राठोड राजा केसरीसिंहजीना कुंवरीश्री नंदकुंवरवा वेरेथएल छे. श्रीमान द्वाकोरसाहेवना कुढंवमां श्रीमती राणीनो श्री वालुवानाहेव वण कुमारश्रीओ नामे प्रतापसिंहजी, फतेहसिंहजी तथा घनद्यामसिंहजी अने कुंवरीश्री रपाळीवा तथा कुंवरीश्री रमणी-ककुंवरीवाँ नामनां समय पुत्रीओ छे.

कींबही संस्थानमां ४९ हक्चमती गामो छे. गइ सेन्तस प्रमाणे स्टेटनी कुळ वस्ती ३३२८७ माणसनी छे. आ सिवाय आ स्टेटना अमदावाद जीछामां आवेळां ३४ विन हक्चमती गामो छे. फटायाओने छुदे छुदे वखने अपिळा ४४ भायाती गामो छे. पाछछा वने जत्याओनो खरेखर स्टेटनांज समावेश थतो हतो अने इ. स. १८०७ मां काठियाडना दरेक संस्थानोमां अप्रेस्सर थइने आ संस्थाने नामदार ब्रोटीश सरकार साथे कोळकरार कर्या ते वखते तेमज हतुं अर्थात् एक गामडाओना वने जत्थाओ छींबडी स्टेटनो हक्जमतमां ते वखते वीन शके गणवामां आवता हता. अने कोळकरारथी ए रीतनो छींबडी स्टेटनो कवजो छे एवो नामदार सरकारे गेरेंटो आपी हती, पण त्यारपछी जीछानो हदमांहेळा गामडाओ विशे एक वनावथी इ. स. १८०२ मां अंग्रेजसरकार अने वीजा वाजीराव पेन्या वचे थएळा वसीनना कोळकरारना खरा अर्थनो ब्रीटीश सरकारे अवळो अर्थ कर्यो अने एने आधारे उक्त गामोनी हक्जमत ब्रीटीश सरकारे भारण करी अने जमीननी महेसुळनो इक्त छींबडी संस्थानने सोंप्यो. तेबीन रोते इ. सं. १८०७ मां कर्ने वोकर साहेव साथे करेळा कोळकरार वखते भायातो जपर छींबडी दरवारनी हक्जमत तथा उपरीपणा विशे प्रथमनी माफक खोटो अर्थ थयाथी तेमज त्यार पछी छींबडी दरवार तथा भायातो वचे जे खरेखरो सबंध



#

7

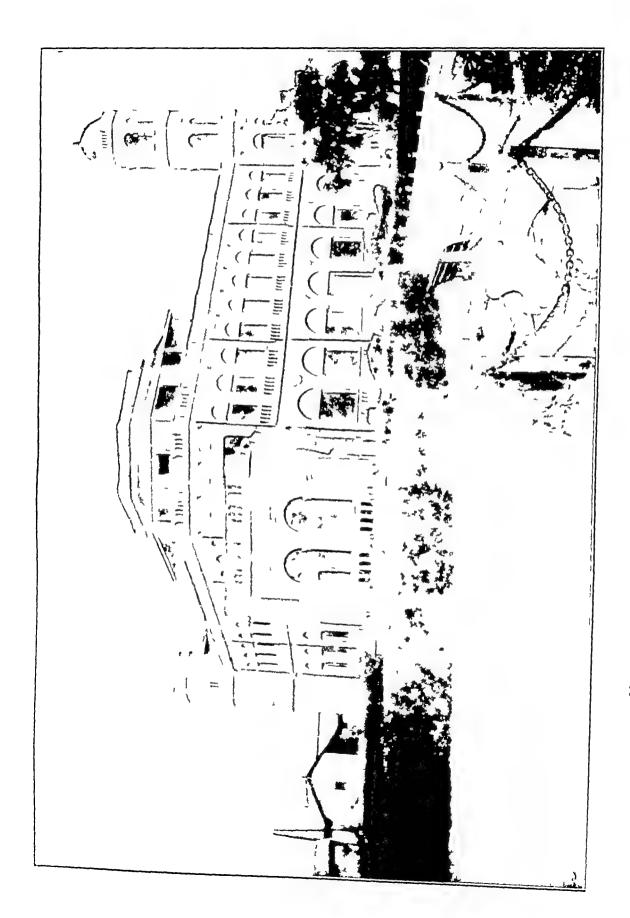
CH 1

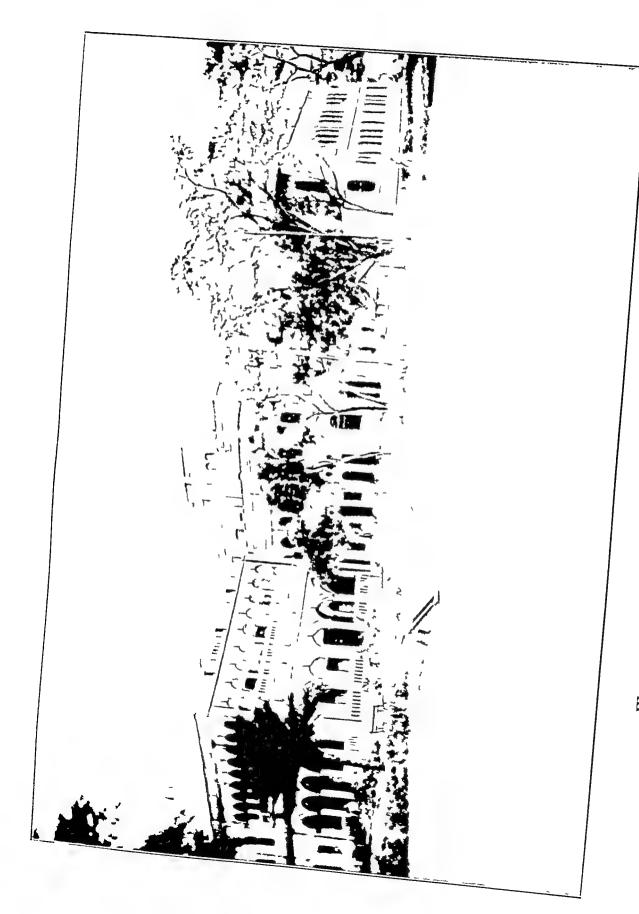
वस्ती जुमनी जोगा अर्थात्

ताहता, पण स्ते ती मां को जीनती माहित साथ

नगाना गाहेर सार्थे प्रथमती स्वारो सर्वर

Para Danie de Ci





I amb ...

The Wood-house Vegetable Market



हतों ते विषे गेर समज्जती उभी थयाथी सने १८६६ यां मरहुम ठाकोर साहेव श्री सर यज्ञावत-सिंहजीनी समीर वयमां छीवडी भायातोंने काठिआवाड एकन्सीनी हकुएत नीचे मूकवामां आव्या. उपर दतावेळा वने जत्थाओना गामा के ने व्याजवी रीते छींवडी तावानां छे ते गामो छींवडीनी हकुमतमां आवे तेम श्रीमान छींवडी नरेज्ञानो दावो छे. तेओ हमेज्ञ नामदार ब्रीटीज्ञ सरकार पासे ए प्रमाणे दावो करता रह्या छे अने आज्ञा छे के न्यायी ब्रीटीज्ञ सरकार श्रीमान छींवडी नरेज्ञाना व्याजवी हको मान्य राख्को. हकुमन माटे जे ज उपयोगी सवाळोनो फेंसको थयो नधी नेवां गामो वाद करीए तो हाळ छींवडी नरेज्ञानी हकुमत ३४४ चोरस माइक उपर छे.

श्रीमान् टाकोर साहेव श्री दोलतसिंहनी वहादुरने काठिशावाडना राजाओमां वीजा दालासनी सत्ता छे अने तेओने नव तोपोनुं मान मळे छे.

विन रक्तपती गामोनी उपज साथे लेता कींवडी संस्थाननी क्कल उपज रु. ५०००००) पांच काम्ब जेटली छे. लींवडी ए राज्यधानीतुं मुख्य शहेर छे, अने त्यां वी. जी. जे. पी. रेल्वेतुं स्टेशन छे. लींवडी स्टेटमां जोवालायक बील्डींगो पैकी राज्यमेहेल, ऑफीसतुं मकान, दिग्भवन, धावेन्द्रविलास अने बुढ हाउस शाक मारकीट छे.

छींवडीनो संक्षिप्त इतिहास.

रोळाटून.

पुण्यज्ञाळी हरपाल, सुभग पाटडीना स्वामी; रहेता पूर्ण प्रसन्न, नित्य एपर बहुनामी; दिल्यात्मा कुळदीप, थया अन्तिहित ज्यारे; सृत म्होटा सोहाजी, तस्तिपर वेटा त्यारे. मांगुर्जाने मळी, जबर गटजांद्वनी गादी; पुर चोराज्ञीनणी, करी एणे जावादी; एनोहार्ग महुपाल, तनुज तेना तपश्चारी; केणे दनी नृप्रदंग, वंद्यनी लाज वधारी. एना युगल कुमार, धमलने गणजी धारो;

धमळ थयो धर्मिष्ठ. प्रजामंडळने प्यारो: गांगो गुणगंभीर, थयो सत्वर विधि सामोः प्होंची शिरोई पास, मेळव्या द्वादश गामो. जन्मभूमिने तजी, अन्य भूमंडल भान्युं; गांगाग्रहागाम, व्हालथी त्यहां वसाव्यं: वॅध्यो विपुल विस्तार, निखिर गांगाणी नामे; अद्यापि ए स्थळे, परम प्रख्याति पामे. घवल छत्र धैर्यथी, धमलजी शिर धरवा'ताः जांबतं यक्तिथी, रोज रक्षण करता'ता; तेवामा ते स्थळे, शाहनी सेना आवी; तेणे जांबतणी, त्वरित चोराशी तजावी. वेरावळ पाटणे, पाछ राठोड मतापी: सुखद धमलना श्वसुर, एमणे हिम्मत आपी; गुणी धमल त्यां गया, रह्या मनने स्थिर राखीः सागर कां डे सरस, नेहथी छावणी नांखी. चाळीश उपर अक, गामनो जत्थो जीती, मवल पराक्रम वहे, भरी अरिने उर भीतिः नसावीने पुर नर्विन, श्रेष्ठ राज्यासन स्थाप्युं, भामलेज सुखधाम, नाम ए पुरने आप्युं. 9 भीर धवलना पुत्र, काळुजी कृपाळ कहीए, बर्मनिष्ठ धनराज, क्रमे गणतीमां ग्रहीए: कालाजीए लगाम, ए पछी करमां लीधी, पामलेज वसवानी, वातने वरजी दीधी. 6

जाळवबुं पूर जीर्ण, एम अंतरमां आन्युं, कोठी कुंदणी अने, जांबुमां राज्य जमान्युं; भोजराज भयहरण, ए पडी आव्या पाटे, कुमार एना करण, विचरता धर्मनी वाटे. आज्ञकरण ए पछी, पूर्ण आनंदी प्रमाणो, सांगोजी सुखटाइ, जांत्रुपति क्रमथी जाणो; शेपमाल, सारंग, पछी लाखाजी लेखो, वजेराज, नागजी, उदयभार्जे अवरेखो. १० ए पछी अमित उदार, गुणी खेताजी गणजो, भोजराजतुं नाम. भाव धरौ ए पछी भणजे।; नीतिवंत नागजी, ए पछी पाटें आव्या, खेताजीए खूव, शत्रुने रणे सतान्या. 88 वाघेलानी जान, भडलीए परणी आवे, छजानकुवरी साथ, पाछी सरधार सिधावे; कोठी इंदणी पास, खास विश्रान्ति लेवा, रोकाया रजपत, काळना थवा कलेवा. १२

इरिगीन.

ए समय हय खेळावता त्यां खेतज्ञी आवी चड्या;
शिरवंध सरतां एहना वरवाळ विखराइ पड्या;
ए मधुर आवृति निरखी व्यान मुजान एनुं धर्ग रही;
मनधी वरी झट भेटवानी भावना डर भरी रही.
सुदधी बहारण मोवली झळराणने समजाववा;
दखीं आणी भेमनी पित्रका धृति नेनी तुर्न तज्ञाववा;



मुजने वरो मकवाण निह तो माण छांडी रा पलकपां; मन माहरुं महिपाल मोह्यं आप केशानी अलकपां.

88

रोळाट्टत.

खेतोजी ए पत्र वांची पुरमांहि पधार्याः स्रजान केरा शद्ध, ध्यानमां सज्जड धायी; संदर ए सर्वने, नेहनी दई निज्ञानीः वरातने बोलावी, महद आपी मिनमानी. वर वामानी वेल, राखी रणवासनी अंदर. मुन्दिर मन्दिरमांहि, अन्य उतर्या एकंदरः बीजे दिवस वरात, कहे के विदाय आपो. खेतशी बोल्यो खास, मार्ग सह सीधा मार्याः १६ वाघेला कहे वेक, वाइनी लावा व्हारे, आवी दासी एक, तंतथी के'छे त्यारे: झाला नृपने वरी, स्नेइथी सरवैयाणी, आपें घड़ छे एह रसिक खेतानी राणी. 919 मिजमानो मगरूव, खुव खेतापर रूट्या, करवा जवरो जंग, क्रोधथी कूदी उठ्याः काढी तीत्र कुपाण, ए समये आखडीया; लड्या राखवा लाज, वह झाटाओ वळीया. 26 थया, मरणने शरण, अखिल वांघेळा अंते: झालानो जयनाद, दोडतो गयो दिगनते: ए रमखाणनी थई, जाण गोधाने ज्यारे; कोठी कुंदणीपरे तुर्त, चढी आव्यो त्यारे. 38

भडलीनो नृष भीम, एइनी मददे आच्यो; खेते खेंची खड़, वधाने हाथ वतात्रो; जाम्युं जवरुं युद्ध, शुद्ध क्षत्रीना जाया; सामे पगले लड्या, मूकी कायानी माया. 20 अनेक रिपुने अनव, दान मृत्युनुं देतो; स्तो रण साथरे, खूव घायल थइ खेतो; सांगो इतो समर्थ, कुँचर खेतानो करमी; एणे सद्य उतारी, भूव गोधानी गरमी. 28 कुंदणीए करी राज्य, वर्ष त्रण सूबी व्हार्छे; प्रान्ता सुभटो साथ, सिधाव्या बट झोवाने: वायेळातुं वैर, सर्वदा राखी शिरे; उभय वर्ष हर्पथी वास कीधो त्यां वीरे. वर योगराज ए संग झींझुवाडाना स्त्रामी; भातृभाव राखता, १६ मातुलनो पामी; तेणे आवी त्यहां, साचन्यो संवंध सारो; सांगाजीने कहां, आप मुज पुरे पधारो 23 त्यारी करी तुर्त, चार्टी निकळ्या सह चाँहै; बीशळ देशळ उभय, रोकवा उभा राहे; भारे ए भरवाड, पुरातन प्रधा प्रमाण; टळि टळिने टइ गया, धरापतिने धनवाणे. 38 गोधो धरी गुमान, एन वलने चटी आव्यो: उद्धि तुल्य अगाध, संगमां सेना लाच्यो;

सुत मांगाना हता, सबल सोढाजी नापे:

सत्वर वीशा माथ, थया शर्जुगण सापे.

पुर पढारीया अने, जीर्ण जांबुगढने पथ; मध्य विभागे मळ्या, वळथी यमने भरवा वथः जाम्युं जवरुं युद्ध, कैंकजन मुआ कपाई; वाघेला सह थयो, शूर गोधो रणशायी.

२६

इरिगीत.

तव वादशाही थाणुं, जूना जांबुमां वेढं हतुं; सोढाजीए संहारी सहुने, शौर्य निज की बुं छतुं; पूर्वजतणा विय पुरमहीं, फरी राजधानी करी रहा।; आज्ञाजीना अवतारथी, दिल दुउमनी केरां दह्यां. २७ ए पछीं अदाजी अवतर्या, गढ नांद्यना अवनिपतिः जेणे सीयाणीमां जमावी, राजधानी धरी रतिः एना ऊँवर वेराजीथी, राजी वनी रैयत वहु; ए पछीं कुपानिधि कर्णासंह, सराइता जेने सहू.

रोळावृत्त.

कर्णसिंहना कुँवर भोजराजा भयहारीः उदयराज ए पछी, छत्रधारी सुखकारी; एक समय ए भूप, अमुक स्वारोनी संगे; घाघरेटीए आवीं लीए, आराम उमंगे; ३९ तळाव केरे तीर, छावणी नांखी पड्या'ता; चन्द्रसिंह मेथली जीती वहवाण वळ्या'ताः एतुं मन ए स्थळे, लगीर रहेवा कलचान्युं; खसेडवा छावणीं, उदयने एणे कहान्युं.

आनाकानी करी, अदाए आघा खसवा; चन्द्रसिंदनी फोज, षंध करीं छागी धसवा; **डभय पक्षमां आग**, क्रोधनी सत्वर सळगी; तो^{पण} रह्या तमाम, वचनने नाहक वळगी. 3 8 वंश उभयनो एक, छता रणरंगे छाया; र्धांगाणे अन्योत्य, ध्वंस करवाने धाया; सींहाणीनो ज्याम, उदय मखवान अटंको; एणे रहींने अडग, विजयनो दीधो इंको. चांदानी चतुराइ, कांइ पण काम न आवी; पामी पराजय गया, सद्य बढवाण सिधावी; देरींसाळ महिपाल उदय पछी तख्ते आन्या; मागु वंशनी महद, गादीँ छींवडीँए छान्या; 33 ए पछी मळी अनुक्रमे, गुणी इरभमने गादी; निम्बपुरीनी करी, अमित एणे आवादी; शूर्वीर रणधीर, भूप हरभमजी भारे; पाळीयादना काठीं, पेखींने त्राहि पुकारे. पात्रार्थे ए गया, एक समये अंवाजी; पाछळधी प्रतिपत्ती, गर्ने धरी उठ्या गाजी: अमरसिंह ए समय, बन्धु हरभमनो विळयो: काठी लोको साथ, लाज जाळववा लिडयो. पदमातो पखवान, शहुने खुव सतावी: भंते दनी असराय, स्वर्गमां गयो सिघावी: समाचार ए सृणी, वैर हरभमने व्याण्यं: प्तोंची निम्बपुरमांहि, बटक काटीतुं काप्युं. 38

छन्द पद्धरी.

खरी दुश्मनाइनो राखी ख्याल, कर्यु पाळीयादपुर पायमाळ;
पनां अनेक पयवर्ती गाम, करी उजह छूंटी लक्ष्मी तमाम.

करीं काठिआणी शत वेद केद, मलभलां भांखीं शिक्या न भेद;
अनुजात अमरतुं वाल्चुँ वैर, वरतावीं काठिपर विविध केर.

कहीं विजय वळ्या मखवान वीर, निज राजधानीतुं पीढुं नीर;
स्यायी महान हरभम नरेश्व, लोपे न लाज कुळ केरी छेश.

३९

रिपुरमणी रूप रंभा समान, भूल्या न भूप निज रूप भान;
राखी समग्रपर भगीनों भाव, झाले कर्यों सुयशनों जमाव.

१०

सोरटा.

पहेरावी परिधान, अस्विव्याने अवनवां; दीधुँ मुक्तिनं दान, हर समान तृप हरभमे. ४१ हरभमनी सुणी हाक, धाडपाड धूजे वधा; रिपु जे आगळ रांक, प्रणमी पाळव पायरे. ४२

" रोळावृत "

गायकवाडी गहन, फोज फरती त्यां आवी;
हाती तृप हरभमे, वाहुवळ अजव वतावी;
हात पना हरिसिंह, ए पछी तख्ते आच्या;
वरवाळानां गाम, वधां आबाद वनाव्यां.
भावनगरना भूप, महद कश्कर त्यां छाव्या;
पण हरिना वळ पास, फंदमां छेश न फाव्या;
आदरेक हरभमे, काम किछानुं अधूरुं;
रह्यं हतुं ते कर्युं, प्रतापी हरिए पूरुं.
थ8 वळी शहेर वहवाण, साथ सीमाने कारण;
काठिन खदूभव्यो होश, वढ्या मदमाता वारण;

चट्ट्या उभय अवनिष, एक वीजापर चाहे: केराळापुर कने आवीं पहोंच्या उत्साहे. प्रध रह्या युद्धमां अडग, जूर चाली रिपु सामा; थया मरणने शरण, उभय महिपतिना मामा; ए तमये थइ शान्त, मचेली मारा मारी; अंग्रेजे ए पछी, विदित सत्ता विस्तारी. 88 सोरठा. षचळ राखी अभिधान, गया स्वर्ग इरिसिंहजी; ए पछीं ग्रही ग्रुभॅन्नान, भोजराज भूपति थया. " रोळाइत " ष्हाळें द्वादश वर्ष, भोगवी वैभव भारे; मोज ब्रह्ममां भळ्या, मीवपणु छोडी ज्यारे; त्यारे हरभम तृतीय, भीतधी वेठा पार्टे; संतति विण संचर्या, विदित सुरपुरनी वाटे. 86 फतेसिंहजी हता, अनुज एना उत्तम अति; मथा ममाण धया, निम्बपुरना गादीपति; जेने त्यां यशवंत, जन्म पाम्या जशघारी; भवपनि केरी भक्ति, माणधी गणता प्यारी. ४९ विद्यानी लघुवये, कलित लीघी केलवणी: एमां करीं योवने, महद नयनी मेळवणी; विचरी खुद विदेश, मेळच्यो अनुभव म्होटो: निमेडमां नपुराम जेहनो न मळे जोटो. मोरटो. एणे रही अपुत्र, कर्यो वाम कैलासमां. छलद गन्यतुं सूत्र, दोलनना करमा दई. ५१

3 (27

रोळादृत.

दानी दोलतासंह, तरूतपर वेटा त्यारे. थयुं स्पष्ट मांग्रना, वंदातुं श्रेय वधारे; मजा वर्गनी मीति, पूर्ण दोलतपर देखी, भाग्यरेख भयहरण, कींवडीपुरनी केखी. 42 स्रज्ञ नृपाले सद्य, वतावी उत्तम बुद्धि, करी प्रजाहित काज, विविध न्यापारनी दृद्धिः खरची माया खूब, पुनित केळवणी पाछळ, वधे जेथी शक विना, मजाजनतुं बुद्धिवळ केळवणीने छइ, पामीया नृपपद प्यारं, श्वक्तिमांहि सर्वदा, धीर अर्जुनसम धारुं; वचन अडग विकोर्को, विद्युधजन सदा वखाणे; छायक कृतिथी छछित, मेळव्यो यश मकवाणे. कक्ष्मी छतां, मद छोडी, साधनो श्रेष्ठ सजे छे, श्याम सतीना सुखद, जाणी भावेथी भजे छे: महद मनथी नशुराम, धरण नृपधर्मधुरीना, नीवो हर्ष इनार, मर्ज्ञ विचुमंदपुरीना.

दोहा.

दोकतनृपना दिग्विजय, पाटवी पुत्र पवित्र; स्वभावथी बहु सरल छे, महद गुणीना मित्र. प्रतापशाळी प्रताप छे, क्वंचर द्वितीय कमनीय; फतहसिंह फक्कड दिसे, नृप तनुजात तृतीय. चतुर पुत्र चोथा गणो, नाम जेतुं घनश्याम; श्रेय करो प्रभु सर्वनुं, नित्य चहे नथुराम.

and The



पंचविंशत् तरंग.



छन्द-इरिगीत.

झालातणी जे छे रियासत राजपूतानामहीं, ए रायपुर, नरवर, कुन्हाडीनी कथा कहुँ छुं अहीं; स्रुत विनयसिंह तणा सुणो अमरेश! अति आनंदथी, वार्ता विविध लघु दीर्घ झालावंश वारिधिमां प्रथी.

रायपुर.

राजहरपालदेवजी पछी सत्तरमी पेढीए थएला राज छत्रसालजी गढमांडलमां राजकरता हताः तेओने जेतिसिंह आदि तेरं कुमारो थया. तेमांना राघवदेव आदि वार भाइओने
वि. सं. १४७२ मां एकसो वीश गामधी "वाह "नो गिरास मळ्यो. ए वाहुनेज विद्वलगढ कहे
छे. राज जेतिसिंहे मांटल छोडी छुवामां राजधानी स्थापी. राघवदेवजीए वि. सं. १४८१ मां गुजरात देशने छोडी माळवा तरफ प्रयाण वर्ष्युः तेओना उपर खोखलीओ भैरव प्रसन्न हता, भैरवनाथे
तेओने वचन आप्युं हतुं के "ज्यां मारी गाडी नृटे त्यांज मुकाम करजो." राघवदेवजी चाल्या
त्यारे तेओनी साथे ७५० गोडीओ हती. तेओए आगरना तळाव पाये पडाव नांख्यो अने वीजे
दिवसे त्यांथी चाळवानी तैयारी करना हना तेवामां भैरवनाथनी गाडी भांगी पडी. जेथी त्यांज
मुकाम राखी राघवदेवजी मांहुना वाटशाह गोरी हैसेनअली आगळ गया अने वगर पगारे तेओनी
नोकरी करवा लाग्या.

१ कोइ वार कुमार हना एम पण करे छे. २ नम्बर गाज्य तरफथी मळेळा इतिहासमां १७५० गाटीओ हनी एम लखेळ छे. ३ वयांइ वयांइ हसंग अथवा होशंग एवं नाम पण नाभनवामां आवे छे.

कोइएक दिवसे वादशाह हुसेन सिंहनो शिकार करवा गाढ वनमां गएल, साथे राघवदेवजी पण हता. हाको थतां समीपे आवेला सिंह उपर वादशाहे गोळी छोडी, परंतु वा खाली जवाथी सिंह वादशाह सामे धसी आव्यो. ए वखते वीरवर राघवदेवजीए वच्चे पडी वहुज वहादुरीथी सिंहनो संहार कर्यो. पसन्न थएला वादशाहे पोताना प्राण वचाववाना वदलामा झाला राघवदेवजीने १४४४ गामै सिहत आगरनो तालुको आप्यो अने वि. सं. १५४५ मां "राव" नी पदवी आपी.

राव राघवदेवजीए वि. सं. १५५० मां आगरनी राजधानी स्थापी अने भैरवनाथतुं मन्दिर वंधान्युं, तेओने चोंडाजी तथा कहानसिहजी नामे वे कुमार थया. राघवदेवजीना स्वर्णवास पछी चोंडाजी आगरना मालिक थया; तेओनी पासे एक " चेटक " नामनो उत्तमोत्तम काठीआवाडी अन्व हतो; ए वात कोइए वादशाहने काने नांखी; वादशाह चोंडाजी पासे ए योडानी मागणी करी; परंतु तेणे चोखी ना कही; त्यारे वादशाह आगर उपर चढी आव्यो, भयंकर युद्ध थयुं अने अन्ते आगरतुं राज्य वि. सं. १५६१ मां वादशाहने हाथ गयुं. ज्यारे चोंडाजीनो स्वर्णवास थयो त्यारे तेओना रामसिंहजी नामना कुमार हता. ए अरसामां " संणेखेडी " नामना गाममां जेडो तथा सामळ नामना वे म्होटा छंटाराओ रहेता हता; तेओए राव रामसिंहजी पासे मागणी करी के तमे तमारी दीकरीना लग्न अमारी साथे करो. आ वखते रामसिंहजी आगळ वधारे माणस न होवाथी तेओए बुद्धिवळनो उपयोग कर्यों अने भीछोने सवन्य करवा माटे मिजमान तरीके पोताने त्यां वोछाळ्या, त्यारवाद ए वधाने गोठ आपती वखते दाह पाइ वेभान वनावी दीधा अने पछी एकदम कतळ करी नांख्या. ए रीते गाम सणखेडीने स्वाधीन करी राव रामसिंह एक राय-पुर नामे गाम वसाव्युं अने वि. सं. १५६४ मां त्यां पोतानी राजधानी स्थापी. ए रायपुरनी नीचे १७५ गाम हतां. राव चोंडाजीना भाइ कहानसिहजीए वि. सं. १५७० मां नरवर राज्यनी स्थापन करी.

राव रामिसंहजीने महेशदासजी, भीमजी, दुदोजी, हमीरजी, वनोजी, वाघोजी, शबोजी तथा हठीजी नामे आठ कुंबरो हता. राव रामिसंहजीना स्वर्गवास पछी म्होटा कुमार महेशदासजी रायपुरनी राजगादीए वेठा. तेओना न्हाना भाइ भीमजी वि. सं. १५७४ मां रुन्डलाइ गया अने

[?] झालाकुळना वडवा भाटनी आ उपक्त असत्य अथवा अतिशयोक्ति जणाय छे. २ नर-वर राज्य तरफथी मळेला इतिहासमां " सेमलजोटा " तथा " कुंडीखेडा " एवां नाम आपेलां छे.

तेना वंगजो "भीमावत " कहेवाया तथा वाघाजीने डावल, रावल, सावल, अने काली तलाइ नामे गामो मळ्यां जेथी ए पण सं. १५७४ मांज त्यां गया; तेना वंगजो " वाघावत " कहेवाया.*

राव महेशदासजीना परलोक प्रयाण पछी तेना कुमार जेसिंहजी (जसोजी) रायपुरनी गादीए वेटा. तेओना वीकाजी तथा कृष्णाजी नामे वे कुमार थया; तेमां म्होटा कुमार वीकाजीने "गुगाहेडे" मोकलवामां आव्या; तेओए त्यां जइ वार गाम मेळव्यां अने तेना वंशजो वीकावत कहेशाया. राव जेतिसिंहना स्वर्गनमन पछी तेओना न्हाना कुमार कृष्नाजी रायपुरना राजा वन्या. तेओने छुजोजी, छुझारजी, खानोजी, पृथीराजजी, वाघोजी तथा दयालदासजी नामे छ कृमारो थया.

राव कृष्णाजीना स्वर्गवास पड़ी पाट्वी कुमार सुजोजी वि. सं. १६०२ मां रायपुरनी राजगादीए देटा. अने एज सालमां झुझारखांनजीने गाम "भोरासी" तथा खानाजीने गाम "भोरासा" मल्युं. ए वन्नेना वराजो "कृष्णावतझाला" कहेवाया.

राव छुजाजीने नरहरदासजी तथा वलकरणजी नामे वे कुंवर थयाः सुजाजीना स्वर्गवास पृष्ठी वि. स. १६२४ मां नरहनदासजी रायपुरनो गादीए वेढा अने एज सालमां वलकरणजीने गाम " दुवल्या" मळ्युं.

राव नरहरदामजीने मानसिंहजी, राजसिंहजी तथा माधवसिंहजी नामे त्रण कुमार थया; तेमां मानिंगहजी रायपुरनी गादीए रह्या; तेओने रूपसिंहजी तथा प्रतापसिंहजी नामे वे कुंवर थया. राव मानसिंहजीना परलोक प्रयाण पछी रुपिंहजी रायपुरना राजा वन्या अने प्रतापसिंहजीनो परिवार गाम " क्षीवाहीये" गयो.

राव रपसिंहजीने पृथीमिंहजी, बेरीसालजी तथा मकनिम्हजी नामे त्रण कुंवर थया, तेमांना पाटनीकुमार पृथीसिंहजी रायपुरनी गादीए रहा. तेओने फतेसिंहजी, जगतिसंहजी, गुजाणसिंहजी, एट्रिसिंहजी, भीमिंहजी तथा जोरावर्गिसहजी नामे छ कुंवरो थया. राव पृथीसिंहजीना स्वर्गवास पछी फतेसिंहजी गह रायपुरनी गादीए देटा.

जगनसिंहने गाम " गाडीया " नथा सुजाणिंहने गाम " डीवडलेडा " गिगसमां मळ्युं.

इटाजी वेगेरेनुं शृं थयुं ए कांइ जागवामां नथी.

कोइएक दिवसे वादशाह हुसेन सिंहनो शिकार करवा गाढ वनमां गएल, साथे राघवदेवजी पण हता. हाको थतां समीपे आवेला सिंह उपर वादशाहे गोळी छोडी, परंतु घा खाली जवाथी सिंह वादशाह सामे धसी आव्यो. ए वखते वीरवर राघवदेवजीए वच्चे पडी वहुज वहादुरीथी सिंहनो संहार कर्यो. प्रसन्न थएला वादशाहे पोताना प्राण वचाववाना वदलामा झाला राघवदेवजीने १४४४ गामै सिंहत आगरनो तालुको आप्यो अने वि. सं. १५४५ मां "राव" नी पदवी आपी.

राव राघवदेवजीए वि. सं. १५५० मां आगरनी राजधानी स्थापी अने भैरवनाधनुं मिन्टर वंधाच्युं. तेओने चोंडाजी तथा कहानसिहजी नामे वे कुमार थया. राघवदेवजीना स्वर्गवास पठी चोंडाजी आगरना मालिक थया; तेओनी पासे एक "चेटक " नामनो उत्तमोत्तम काठीआवाडी अन्व हतो; ए वात कोइए वादशाहने काने नांखी; वादशाह चोंडाजी पासे ए घोंडानी मागणी करी; परंतु तेणे चोखी ना कही; त्यारे वादशाह आगर उपर चढी आव्यो, भयंकर युद्ध थयुं अने अन्ते आगरनुं राज्य वि. सं. १५६१ मां वादशाहने हाथ गयुं. ज्यारे चोंडाजीनो स्वर्गवास थयो त्यारे तेओना रामसिंहजी नामना कुमार हता. ए अरसामां " संणखेडी " नामना गाममां जेठो तथा सामळ नामना वे म्होटा छंटाराओ रहेता हता; तेओए राव रामसिंहजी पासे मागणी करी के तमे तमारी दीकरीना लग्न अमारी साथे करो. आ वखते रामसिंहजी आगळ वधारे माणस न होवाथी तेओए बुद्धिवळनो उपयोग कर्यों अने भीलोने सवन्य करवा माटे मिजमान तरीके पोताने त्यां वोलाळ्या, त्यारवाद ए वधाने गोठ आपती वखते दारु पढ़ वेभान बनावी दीधा अने पछी एकदम कतळ करी नांख्या. ए रीते गाम सणखेडीने स्वाधीन करी राव रामसिंह एक राय-पुर नामे गाम वसाच्युं अने वि. सं. १५६४ मां त्यां पोतानी राजधानी स्थापी. ए रायपुरनी नीचे १७५ गाम हतां. राव चोंडाजीना भाइ कहानसिहजीए वि. सं. १५७० मां नरवर राज्यनी स्थापना करी.

राव रागिसंहजीने महेशदासजी, भीमजी, दुदोजी, हमीरजी, वनोजी, वाघोजी, शवोजी तथा हठीजी नामे आठ कुंवरो हता. राव रामिसंहजीना स्वर्गवास पछी म्होटा कुमार महेशदासजी रायपुरनी राजगादीए वेठा. तेओना न्हाना भाइ भीमजी वि. सं. १५७४ मां रुन्डलाइ गया अने

[?] झालाकुळना वडवा भाटनी आ उर्पक्त असत्य अथवा अतिशयोक्ति जणाय छे. २ नर-वर राज्य तरफथी मळेला इतिहासमां " सेमलजोटा " तथा " कुंडीखेडा " एवां नाम आपेलां छे.

तेना वंशजो " भीमावत " कहेवाया तथा वाघाजीने डावल, रावल, सावल, अने काली तलाइ नामे गामो मळ्यां जेथी ए पण सं. १५७४ मांज त्यां गया; तेना वंशजो " वाघावत " कहेवाया.*

राव महेशदासजीना परलोक प्रयाण पछी तेना कुमार जेसिंहजी (जसोजी) रायपुरनी गादीए वेटा. तेओना वीकाजी तथा कृष्णाजी नामे वे कुमार थया; तेमां म्होटा कुमार वीकाजीने "गुगाहेडे" मोकलवामां आव्या; तेओए त्यां जइ वार गाम मेळव्यां अने तेना वंशजो वीकावत कहेवाया. राव जेतिसिंहना स्वर्गगमन पछी तेओना न्हाना कुमार कृष्नाजी रायपुरना राजा वन्या. तेओने छुजोजी, इझारजी, खानोजी, पृथीराजजी, वाघोजी तथा दयालदासजी नामे छ कुमारो थया.

राव कृष्णाजीना स्वर्गवास पछी पाटवी कुमार सुजोजी वि. सं. १६०२ मां रायपुरनी राजगादीए वेटा, अने एज सालमां झुझारखांनजीने गाम "भोरासी" तथा खानाजीने गाम "भोरासा" मळयुं, ए वन्नेना वंशजो " कृष्णावतझाला" कहेवाया.

राव सुजाजीने नरहरदासजी तथा वलकरणजी नामे वे कुंवर थया. सुजाजीना स्वर्गवास पछी वि. सं. १६२४ मां नरहनदासजी रायपुरनो गादीए वेठा अने एज सालमां वलकरणजीने गाम " दुवल्या" मळ्युं.

राव नरहरदासजीने मानसिंहजी, राजसिंहजी तथा माधवर्सिंहजी नामे त्रण कुमार थया; तेमां मानसिंहजी रायपुरनी गादीए रहा; तेओने रुपसिंहजी तथा मतापसिंहजी नामे वे कुंवर थया. राव मानसिंहजीना परलोक मयाण पछी रुपसिंहजी रायपुरना राजा वन्या अने मतापसिंहजीनो परिवार गाम " झीकडीये" गयो.

राव रुपसिंहजीने पृथीसिंहजी, वेरीसालजी तथा मकनसिंहजी नामे त्रण कुंवर थया, तेमांना पाटवीक्रमार पृथीसिंहजी रायपुरनी गाटीए रहाा. तेओने फतेसिंहजी, जगतसिंहजी, सुजाणसिंहजी, छत्रसिंहजी, भीमसिंहजी तथा जोरावरसिंहजी नामे छ कुंवरो थया. राव पृथीसिंहजीना स्वर्गवास पछी फतेसिंहजी गढ रायपुरनी गाटीए वेटा.

जगतर्सिंहने गाम " गादीया " तथा सुजाणसिंहने गाम " दीवडखेडा " गिरासमां मळ्युं.

इदाजी वंगेरेनुं थुं थयुं ए कांइ जाणवामां नथी.

राव फतेसिंहने जोधसिंहजी, सुरतानसिंहजी, भावसिंहजी तथा हरनाथसिंहजी नामे चार कुमार थया. तेमांना ज्येष्ठ कुमार जोधसिंहजी रायपुरनी गाडीए रह्या. मुरतानसिंहजीनो वंग गाम पराएळी, डावळ, कल्याणपुर, दगनाखेडी तथा चंपेळीमां अने हरनाथसिंहजीनो वंश गाम रावळमां गयो.

राव जोधिसंहने देवीसिंहजी, भूपतिसंहजी तथा केसरीसिंहजी नामे त्रण कुमार थया; तेमां देवीसिंह गढ रायपुरनी गादीए रह्यां अने भूपतिसंहजीनो वंश गाम सोयला, सोयली, हुणता तथा झरणामां गयो.

राव देवीसिंहने अभेसिंहजी तथा चेनसिंहजी नामे वे क्रमार थया. त्यारवाट अभेसिंहजीना क्वंबर शेरसिंहजी अने तेना क्रमार वलवतसिंहजी गढ रायपुरनी गाडीए विराजमान थया.

१ रायपुरना राव महेशदासजीना कुमार भीमसिंहजो ति—सं. १५७४ मां रुन्डलाइ आ-च्या अने त्यां तेओए वि—सं. १५७६ मां "भीमसर" नामे तळाव वंघाच्युं. ए भीमसिंहने नर-सिंहदास, जोधोजी तथा भारमळजी नामे त्रण कुमार थया। भीमसिंहना स्वर्गवार गछी नरसिंह-दासने रुन्डलाइनी मालिकी मळी, भारमलजीने वि—सं. १५९० मां " उरमाल " नामे गाम मळ्युं. जोधाजी वाळवयमांज मरण पाम्या।

नरसिंहदासने सुरतानसिंहजी, चन्द्रभाणजी, सदोजी तथा दोळतसिंहजी नामे चार कुमार थयाः नरसिंहदासना परलोक पयाण पछी सुरतानसिंहजी रुन्डलाइ रह्या अने दोळतसिंहजीनो परिवार गाम '' सीगोण्या " गयोः वाकीना वे भाइ वालवयमांज गुजरी गयाः

सुरतानसिंह जीना स्वर्गवास पछी तेना कुंवर नाराणदासजी रुन्डळाइना अधिपति तरीके नियत थया, ए नाराणदासजीने जगन्नाथजी, मनोहरदासजी, पृथीसिंह जो, फरशुरामजी, नगोजी, अचळदासजी, रतनजी, नारखांनजी, अमरसिंह जी तथा सामलदासजी नामे दश पुत्र थया. तेमां-थी जे जीवता रहा तेना वंश नीचे दर्शावेळ स्थळे छे.

जगन्नाथजीनो वंश " रुन्डलाइ " मां. नारखांनजी तथा फरशुरामजीनो वंश गाम " देवरी " मां नगाजीनो वंश गाम " शोनखडी " मां मनोहरदासजीनो वंश गाम " वीराखेडी " मां.

ए तमाम " भीमावत " झाला कहेवाय छे.

२ रायपुरना राव कृष्णाजीना कुंवर झुझारखानजी वि—,ं,१६०२ मां गाम "भोरासी" गया. तेओने दलपतिसंहजी नामे कुंवर थया. ए दलपतिसंहजीना जसोजी उर्फे जेशंगजी तथा मकनिंदजी नामे वे कुमार थया; तेमां जेसंगजीनो वंश भोरासीमां रह्यो अने मकनिंसहजीनो वश गाम " वणझारी " मां गयो.

जेशंगजीने नारसिंहजी, भारमलजी, कृष्णाजी तथा केसरीसिंहजी नामे चार कुमार थया। नारसिंहजी गाम "भोरासी" मां

केसरीसिंहजी तथा कृष्णाजीनो वंश गाम " बोरवा " मां.

भारमलजीनो वंश गाम " मंडाल " मां।

भारमलजीने पद्मसिंहजी तथा हिन्दुसिंहजी नामे वे कुमार थया; तेमां पद्मसिंह "मंडाल" मां रह्या अने हिन्दुसिंहजी " चांदखेडी " मां गया.

नारसिंह जीने मोणसिंह जी तथा तेजसिंह जी नामे वे कुपार थया; तेमां मोणसिंह जीनो वंद्र तो गाम "भोरासी" मां रह्यो अने तेजसिंह नो परिवार "सारगाखेडी" मां गयो.

ए तमामना वंशजो कृष्णावत झाला कहेवाय छे.

३-रायपुरना राव कृष्णाजीना कुंबर खानोजी वि. सं. १६०२ मां "भोरासा" आव्या तेने कल्याणासिंहजी नामे कुंबर, तेजखानजीने वखनसिंहजी, दोलतसिंहजी, दयाळसिंहजी तथा सुजाजी नामे चार कुमार थया.

वखतसिंहजीनो वंश "भारासा" मां. दोलतसिंहजीनो वंश "सालरी" मां. सुजाजीनो वंश "धनोदी" मां.

दयालसिंह जी वालवयेज मरणने शरण थया. वस्ततिंह जीने लालसिंह, पतोजी, जेशं-गजी, अखेसिंह जी तथा पश्चिंह जी नामे पांच कुपार थया. तेमांना लालसिंह भोरासे रह्या अने जेशंगजी गाम "धानवा" मां गया. वाकीनानुं शुं थयु ए जाणवामां नथी.

ए वधाँ "कृष्णावत झाला" कहेवाय छे.





नरवर.

ग्राभस्थान नरवरना राजा झाला राजपृत छे; तेओना पूर्वज राज छत्रसालजीनी राजधानी गुजरातनी अंदर रहेळा मांडळ वेगेरे मुळकयां हतो. ए छत्रसाळजीए वि-सं. १४७६ मा वैकुंठवास कर्यों; तेओना जेतसिंहजी तथा राघवदेवजी वगेरे वार कुंवरो हता. राज जेतसिंहजीना वंशजो हालमां हळवद धांगधातुं राज्य भागवे छे. राघवदेवजीने विद्वलगढ तथा वाद वगेरे गाम जागीरमां मळ्यां इतां; तेओए विष्ठकगढ पासे एक उत्तम तळाव वंधाव्युं के जे "राइतळाव" नामे मसहर छे. त्यारवाद तेओ गुजरातमां पाटी नामनं गाम वसःवी त्यां रहेवा लाग्या. पाटी नामनी पेतानी राज-धानीमां राघवदेवजीए कुळदेवी विसन्त मातातुं मन्दिर वंघाव्यं. अने थोडा दिवस राज कर्या वाद उक्त गाम माताजीनी सेवामा अर्थण करी दीखं. ते पछी तेओ विष्टळगढ तथा वाद्गाम पोता-ना कुंबर सूरसिंहने आपी केटलाएक सरदारोनी साथे दिल्हीना पादशाह पासे गया. थोडा दिवस त्यां रही पाछा शाजधानीमां आवेळा राघवदेवजीए माळवामां जवा इरादो कर्यो. जे वखते तेओ माळवा तरफ रवाना घया, ते वखते तेओनी साथे १७५० गाडींओ इती मतछव तेओनी तमाम रैय्यत पण साथे इती. पुरातन कागळीआओ उपरयी एम जणाय छे के जे वखते राघद-देवजो माळवा मध्ये रहेला मुकाम आगरमां आच्या, त्यारे एक गाडी के जेमां भैरवनी मूर्तिने वेसाडी हती ते गाडी तूटी गइ. भैरवनो हुकम थयो के " एज स्थळे मन्टिर वनावो अने अईांज मुकाम करो." राघवदेवजीए आगरमां मुकाम करी भैरवनाथनं भन्य मन्दिर वंघान्यं अने पोते रैय्यत सहित त्यां रहा। कहे छे के राघवदेवना इष्ट भैरव तेओने मत्यक्ष दर्शन देता हता, बाद राघवदेवजी मांडल जइ गोरीपादशाह होशंग पासे नोकर रहा। अने तेओए घणी लडाइओ।मां सामेल थइ बहुज वहाद्री वतावी: एथी प्रसन्न थएला सुलतान होशंगे तेओने आगर तावे सात परगणां एनायत कर्यो. राघवटेवजीना परलोक मयाण पछी तेना पुत्र चोंडाजी राज्यना वारस थया. राघवटेवजीना वीजा प्रवनुं नाम कहानसिंहजी हतुं. चोंडाजीए कोइ खास कारणने लीधे आगरनो परित्याग कयों. राघवदेवजीए आगरमां स्थापेला भैरवनाथ अद्यापि विद्यमान छे अने ते केवडा स्वामीना नामथी ओळखाय छे. कलाल्या नामने मुकामे चोंडाजीनो स्वर्गवास थयो. तेओना भ्राता कहानसिंहे भीलतुं

१ ए म्र्राभिंहना वंशजो हाल देश गुजरात मध्ये आवेला देदादरा अने अलीदरामां वांटा खाय छे. २ वि. सं. १५५० मां ए मन्दिर वन्धान्युं हतुं.

सेमलजोटा नामे गाम भांगी कूंडीखेडामां पडाव नांख्यो. चोंडाजीना पुत्र रामसिंहे रायपुर वसान्युं. ए काका भत्रीना वन्नेए मांहूना पाद्शाह पासे रही घणी लडाइओमां वहादुरी वतावी; जेथी पसन थएला उक्त पादशाहे रामसिहजीने १७५ गाम सहित रायपुर इलाको अने कहानसिंहजीने ८४ गाम , सिंहत नरव रनो तालुको जागीरमां आप्योश कहानसिंहजी पछी हरनाथसिंहजी, चोंडाजी, सालम-सिंहजी, रतनसिंहजी, आशकरणजी, वाघकरणजी, भारतसिहजी, डूंगरसिहजी, सांवतसिंहजी, ऌण-करणजी, बुधिसंहजी, पहाडिसंहजी अने छत्रसालजी एक पछी एक क्रमपूर्वक नरवरनी गादीए वेटा. छत्रसालजी महा पराक्रमी हता. तेओए वेदिल सवारो साथे नरवर झिरनाना वडला स्रकामे लडाइ करी. ए लडाइमां नरवरनां तेर माणसो मार्या गयां. विद्रोही लोको हार पाम्या. छत्रसालनी न पण वधारे जखमी थएला होवाने लीघेज घेर आवतांज वैकुंठवासी थया, जे जगोए लडाइ,थइ हती ते भूमि गडचर माटे नियत करवामां आवी के जे अद्यापि दस्तूर प्रमाणे गडचरमां वपराय छे. छत्रसालजीना परलोक प्रयाण पछी इमीरसिंहजी, पृथीसिंहजी, पातलसिंहजी, विसन-सिंहजी अने आशकरणजी क्रमपूर्वक नरवरना नरेश थया. जे वखते पादशाह शाहजहां तरफथी औरंगजेव साथेना मुकावलामां जोधपुरना महाराजा जसवंतसिंहजी नथा रतलामना महाराजा रतनसिंहजी उज्जेण तावे फतेहावादनी लडाइ वखते लडवा आव्या हता त्यारे नरवरना राव आशकरणजी औरंगजेव साथे हता अने एज लडाइमां तेओ काम आव्या. त्यारवाद तेओना कुमार राव मानसिंहजी नरवरमां तख्तनशीन थया. तेओना वखतमां वडलाना चहुआणोए नरवरनी सीमामां आवी युद्धना समाचार आप्या. राव मानसिंहजी एज दिवसे परणी नरवरने पादर आव्या हता, त्यां उक्त समाचार सांभळतां तेओए पोतानां नव परिणीत राणीजीने गाम वाहरना वागमां राखी तावाना सरदारो सहित युद्ध अर्थे प्रयाण कर्यु. वडला मुकामे लडाइ यइ. राव मानसिंहे चहुआ-णोनों पीछो पकडी तेओने कोडी मुकामे रोक्यां अने फरी नरवरमां न आववाना शपथ लेवरावी छोडी मृकया. त्यारवाट राजधानी तरफ पाछा वळेळा राव मानसिंहजी हद उपरांत जखमी होवाने लीधे नरवर तावाना गाम मोजे गांवडीना तळावनी पाळपर वैकुंठवासी थया; तेओनी साथे नवां टकराणी पण सती वनी वैद्धंटे गयां. ए सतीनो चवूतरो नरवरना गढनी उत्तरे सरूमातानो वाडीमां अने राव मानसिंहजीनो पाळीयो गढना पूर्वद्वार सामे अद्यापि मोजूट छे. राव मानसिंहजी

१ ए रामसिंहना वजनो अद्यापि इन्दोर तावे रायपुरमां विद्यमान छे. * वि. सं. १५७० मां नरवरमा राजधानी स्थापी.

पठी जसवतासिंहजी, तेजसिंहजी अने मोहकमिंसहजी नामे राजाओ एक पछी एक नरवरनी गादीए विराजमान थया. मोहकमिंसहजीने हठीसिंहजी तथा अमेसिंहजी नामे वे कुमार थया. मोहकमिंसहजीना स्वर्गवास पठी पाटवीकुमार हठीसिंहजी राजगाटीए वेटा. ए हठीसिंहजीने पण रतनासिंहजी तथा खुशाँछिसिहजी नामे वे कुमार थया. हटीसिहजीना परलोक प्रयाण पछी पाटवीकुमार रतनिसंहजी राजगादीए वेटा; तेओने पण वे पुत्र थया. पहेला रुगनाथिसहजी अने वीर्जा नवैलसिंहजी, रतनिसंहजीना परलोक प्रयाण पछी रुगनाथिसहजी नरवरना नरपित वन्या, एना समय सूथी राज्यनो घणो विस्तार थयो हतो; एओए नरवरमां एक मजवूत गढ वनाच्यो के जे हाल मोजूद छे. नरवरपर महोटां महोटां राज्यो तरफथी चढाइ थइ हती. ए वखतथी किन लोकोए कहेलो एक दोहो प्रसिद्ध छे के.

" दोहा "

झलता झाला मालवे, छलता नांखे छोल: आठ कटक मिल आविया, नीका रही नरोल.॥

रुगनाथिसंहजीने पण वे कुंवर हता. पहेला अचलिसहजी अने वीजा वस्तावरिसंहजी. रुगनाथिसिहजीना स्वर्गगमन पछी पाटवीकुमार अचलिसहजी नरवरनी राजगादीए वेटा अने वस्तावरिसंहजी निःसंतान मरण पाम्या. अचलिसहजीने लखमनिसंहजीने तथा नारिसंहजी नामे वे कुमार थया; तेमांना पाटवीकुमार लखमनिसंहजी पिताना स्वर्गवास पछी तस्ततनशीन थया अने ते पछी तेओना कुमार हमीरिसहजी नरवरनी राजगादीए वेटा. राव रुगनाथिसंहजीथी आरंभी राव हमीरिसंहजी पर्यन्त नरवर उपर म्होटी रियासतोचुं वधारे दवाण होवाथी राव अचलिसंहजी राव लखमनिसंहजी तथा राव हमीरिसहजीए नामदार अंग्रेज सरकारनी आधीनता स्वीकारी अने नामदार गवर्नमेन्ट साथे महेरवान पोलीटीकल एजन्ट सरजान मालकम साहेव तथा कप्तान विलियम वोरिथक साहेव वहादुर मारफत नरवरनी रक्षा वावत कोलकरार कर्या. वाट नामदार

१ ए अभेसिंहना वंशजो नरवरना भायात वर्गमां अद्यापि विद्यमान छे. २ ए खुशाल्रसिं-हना वंशजो नरवरना भायात वर्गमां अद्यापि विद्यमान छे. ३ ए नवल्रसिंहजीना वंशजो अद्यापि नरवरना भायात वर्गमां विद्यमान छे. ४ ए नाहरसिंहजीना वंशजो अद्यापि नरवरना भायात वर्गमां विद्यमान छे. ५ जे रीते माळवाना वीजां राज्योमां अंग्रेज सरकार साथे कोलकरागे करवामां आव्या हता एज रीते नरवरमां पण थयुं.

अंग्रेज सरकारे नरवरनी चारे तरफ पक्के पाये हद मुकरर करी आपी.

राव हमीरसिहजी मिति चैत्र श्रुद्धि १५ सं १९३८ ता. ३ एपील सन् १८८२ ने दहाडे वैकुंटवासी थया; तेओने सोल कुमार हता. तेमांथी चौद तो तेओनी हयातीमांज मरण पाम्या हता. मात्र रघुनायसिंहजी तथा मानसिंहजी ए वेज विद्यमान होवाथी ता. ११२ जन सन दिश्टर ना नामटार गवर्न मेन्ट सरकारना हुकम नं ४३५ मुजव पाटवीकुमार रघुनाथसिंहजी नर- वरनी राजगादीए वेटा. तेओनो वि. सं. १९५५ ता. २८ एपील सन् १८९९ मां अपुत्र स्वर्गवास धातों तेओना न्हाना भाइ मानसिंहजीने नामदार गवर्न मेन्ट सरकारना ता. ७ डीसेम्वर सन् १९०० ना हुकम नं. २५४९ मुजव ता. १३ डीसेम्बरे माळवाना पोलीटीकल एजन्ट डवल्यु एम. क्युविट साहेव वहाँदुरे नरवरनी राजगादीपर वेसाङ्या. माळवानां वीजां फालतु राज्योनी माफक नरवर पण त्यांना महेरवान पोलीटीकल एजन्टना अखत्यारमां छे.

नरवरनी राजधानी उज्जेण अने देवासने लगती छे. पूर्वे देवास ११३ माइल अने पश्चिमे **डिकोण ११** माइल जेटले द्र छे. नरवर **डिकोण**थी आवता आगरा वस्वइ रोडनी अत्यन्त निक-टमां छे. ए तालुकामां कुल वीशहजार वीघा जमीन छे, ए राज्यनी कुल आमदानी वावीशथी त्रेवीगहजार सुधीनी लेखाय छे. तेमांथी रुपिआ सातहजार क्रटुम्बीओने. देवस्थानोने वगेरेने छे. तेमज सातहजार रुपिआ गवालिअर अपाय मळेला " टांका " गाम वावत त्यां शरत मुजव भरवा पहे छे, तेमज देवासनी न्हानी न्हानी पांतिमांथी, देवासनी म्होटी पांतिमांथी, ग्वालिअरमांथी अने इन्दोरमांथी आज्ञारे हा. सवा-चारहजार नरवरना नरेशने मळे छे. सक्षेपमा नरवरनी खास आमदानी नगद हा. १३००० तेर हजारनी गणाय छे. नामदार गवर्नमेन्ट सरकार तरफथी राज मानसिंहजीने नरवर तथा तेना महा-लोनो ज्युडिशिअल अधिकार आपवामां आव्यो छे, अने म्होटा फोजदारी गुन्हाओनो फेंसलो माळवाना महेरवान पोलिटिकल एजन्टद्वारा करवामां आवे छे. रावमानसिंहजीए पोताना मुलक्रनी सर्वे करावी पेटवर्न्दीनु काम शरु कर्युं छे. ए पहेळां अनुमाने पेटवन्दी थती हती. राज मानसिंह-जीना कार्य कीशल्ययी नरवरनी आमदानीमां दृद्धि यवा संभव छे, जेतुं परिणाम आगळ उपर ज-णाहो. राजमानसिंहजी माथे नखरनी प्रजानी घणो प्रेम छे. तेओना राज्याभिषेक पछी तुरतमांज उपम उपर नवळां वर्षो आच्यां तेमा तेओए उत्तम प्रकारे पोतानी प्रजाने पाळी हती.

१ अमुक वर्षना पट्टाथी खेडून बगेरेने जमीन आपवी ते.

रावमानसिंहजीने हालमां वे राजकुमार अने एक राजकुमारी छे. म्होटा कुमार वाषू माधोसिंहजी इन्दोरनी डेली कॉलेजमां अभ्यास करें छे. काठिआवाड अंदर रहेला श्रांगश्रा राज्यमां नरवरने सादडीनी माफक बेठक मळे छे. नरवरनरेशने श्रांगश्रा राज्य तरफयी सोनानुं लगर, छडी तथा चपराश आदि मळेल छे. जेना दाखलाओ नीचे मुनव छे.

॥ श्री ॥

ध्रां. हज़र. ओ. नं. ५१ सन, १८८६ श्री मच्छक्तिपट कञ्जपसाद प्राप्तमहोदय महाराजाधिराज महारा-णाश्री मानर्सिहजी कस्य मुद्रिका

स्वस्थान श्री हळवद घ्रांगघाना महाराजाधिराज महाराणा श्री मानसिंहजी के. सी. एस. आइ ना तरफथी.

माळवा मध्ये नरवरना राणाश्री रघुनाथिंह जीने आ सनंद वसवामां आवे छे के पूर्ण त्रणसो वर्ष पहेला ज्यारे के आ राजधानी हुं मत्यक पाटहो झहेरमा हतुं, ते अरसामां आहीं ना भायात राणाश्री राघोदेवजी केटलाक माणसोनी साथ दिल्ही गया हता. त्या तेमने पोतानु पराक्रम वताववाथी दिल्ही नी वादझाहीयो माळवा देशमा आगर नामनुं राज्य संपादन थयुं. त्यारपञी छवट नरवर तालुकामां हाल तमे राज्य करो छो, ने ते झालावाळी नरवरने नामे माळवामां ओळखाय छे. थोहा वर्ष पहेला नामदार मरहुम पिता जनाव महाराजाधिराज महाराणा श्री रणवलकि सहिजी महायात्राए गएल ते वखत नरवर पथार्या हता. नरवरना तमारा दिता हमीरिसंहजीए पीनताना वहा समजी नजर न्योलावर वगेर मान आप्यु हतुं अने मरहुम महाराणासाहेवे पीतोका भायात जाणी राणाश्री हमीरिसंहजीने घोडो, चोपदार तथा वो नो पोशाक एनायत कर्यो हतो, ते दिवसची व्यस्तिगन रीते नरवरनो आ राज्य साथे वंघ पही गएलो सवन्य ताजो थयो. हाल कुमारी श्रीवाइजीलालवाना विवाह प्रसंगे तमो राणाश्री रघुन यसिंहजी पोताना माणसो साथे आहीं आवतां राज्य तरफथी कुमारश्री गोविन्दिसंहजीने नगार्क निशान सहित सामा मोकली

इस्तकवाळी आपी हती तथा खानपाननी खात्री क(वागां आवी छे तथा मुळाकाते वखतोवखत आवतां जातां वे वखत कुरव आपवामा आव्यो तथा गादळांनी वेठक आपवामां आवो छे अने अमने पोतीका वहा समजी तमो रघुनाथसिंहजीए अमोने सोनामहोर नजरन्योछावर करी तथा अमने पोताने तथा कुवर अजीतिस्हिं वगेरेने पोज्ञाक नजर कर्यों छे.

तमारी मुलाकातथी संतोप थयो छे. तमारी साथे खानपान इत्यादिनो आ राज्यना भा-यात तथा कुटुम्बी जाणी संतोप लीघो छे. अने वडी सादडी, देलवाडा इत्यादि जे आ राज्यना भायातो मेवाडमां छे तेओनी रीते मान मरतवो उपर प्रमाणे आपवामां आव्यो.

राणाश्री रघुनाथसिइजी तमोने आ राज्य तरफथी मागणी साथे पगमां पहेरवा सोतुं वक्ष-वामां आन्युं छे; तथा वीजो पोशाक आपवामां आन्यो छे, तमे आ राज्यना भायात छो अने खान-पान ए सघळो व्यवहार तमारे आ राज्यनी साथे छे. तमारी मुलाकातथी अमने पूर्ण संतोप थयो छे ते निशानी खातर तमने आ राज्य तरफथी आ सनद वक्षवामां आवे छे.

संवत १९४२ ना फाल्गुन वद ६ रविवार. ता. ५ एपील, सन् १८८६.

महाराणाश्री मानसिंहजी.

इ. प. ओ. नं. १५१

श्री मच्छक्तिपद कञ्जमसाट प्राप्तमहोदंय महाराजाधिराज महारा-णाश्री मानसिहजी कस्य मुद्रिका

स्वस्थान श्री इळवद श्रांगश्राना महाराजाधिराज महाराणा श्री सर मानसिंहजी के. सी. एस् आइ ना तरफथी.

तमो आ राज्यना भायात माळवा मध्ये नरवरना राणाश्री रघुनाथिसिंहजीने आ सनद आ-पवामां आवे छे के तमे कुमारश्री परवतिसंहजीना विवाहना श्रम मसंग उपर आही आवेल ते वस्तत तमने आ राज्य तरफथी वे चपरासो वधवामां आवी छे. आ सनद सदरहु चपरासो तमने वधवामां आवी तेनी खात्री तरीके आपवामां आवी छे. संवत १९४६ ना भादरवा शुटि २ ता. १७ आगष्ट सन् १८९० इ.

महाराणाश्री मानसिंह्जी.

मा. आ. नं. १२२

श्री मच्छक्तिपद् कञ्जपसाद पाप्तमहोदय महाराजाधिराज महारा-णाश्री मानसिंहजी कस्य मुद्रिका

स्वस्थान श्री हळवद-धांगधाना महाराजाधिराज महाराणा श्री मानसिंहजी के. सी. एस. आइ. ना तरफथी—

माळवा मध्ये नरवरना राणा श्री रचुनाथिसहजीने आ सनंद वसवामां आवे छे के तमो सं. १९४२ नी सालमां आ राज्यमां आव्या हता ते वस्तत तमने पगमां पहेरवानुं सोनुं वसवामां आव्युं हतुं अने हाल तमे तमारा भाइ मानि वहजी सिहत आंही आवतां सदरहु मानि सहजीने पण पगमा पहेरवा आ राज्य तरफथी हाल सोनु वसवामां आव्युं छे अने ते निज्ञानी खातर आ सनं-द वसवामां आवे छे.

सवत १९४९ ना आशो वद ११ शनिवार ता. ४ नवेम्बर सन १८९३ छे.

महाराणा श्री मानसिंहजी.

_{महार,}णाश्री रणमलिसंहजी

श्री सही.

महाराजाधिराज महाराणा श्री रणमलसिंहजी पान्त झालावाड स्वस्थान श्री हळवद-धागधा वी० राणा हमीरसिंहनी तथा श्री भवानीसिंहनी कुंबर जोग जत हमारी स्वारी श्री काशीवि-श्वनाथनी यात्रा करी देश जाता तमारा गांवनरवल मुकाम थाते तमारा तरफथी चाकरी-वरदास रूडी गीते थाता छडी १ वसीस करवामां आवी छे.

संवत् १९२४ ना माहा शुदि ६

कुन्हाडी.

देलवाडाना राजराणा राघँवदेवजीना ज्येष्ठ कुमार जेतिसंहजी, एथी न्हाना भीमिसंहजी अने एथी न्हाना अर्जुनिसंहजी विगरे हता. भीमिसंहजी पलायते ठाकुर मतापिसंहजीनी पुत्री साथे परण्या हता. ए प्रसंग कुन्हाडीनी प्राप्तिना कारणरूप थयो. कोटाना राव रामिसहजी भडशुंज्या मुकामनी सामे सोनेरी नारनो शिकार करवा निकलेला. राज भीमिसंहजीए त्यां जइ वहुज वहा-दुरीनी साथे ए नारनो शिकार कर्यो. एथी परम प्रसन्न थएला रावरामिसंहजीए राजभीमिसंहजीने कोटामां राख्या अने वि—सं. १७६२ मां नव गामो सिहत कुन्हाडीनी जागीर आपी. ज्यारे वाद-शाह औरंगजेवनी फोज लूंटमार करती चाली आवती हती त्यारे तेनी साथे भरतपुरनो जाट चूडा-वण एण हतो. कोटाना राव रामिसंहजीए ए लोकोना अत्याचार अटकाववा माटे राजभीमिसंहजीने सेनातुं आधिपत्य आपी रवाना कर्या. जभय सैन्यनो भेटो थतां दरामां झपाझपी चाली. केटलाएक सैनिको कपाइ मुआ अने राजभीमिसंहजी पण अन्ते काम आल्या. ए युद्ध वि—सं. १७६९ मां पयुं हतुं. राजभीमिसंहजीए आपेला मस्तकना वदलामां तेओना कुमार सरूपिसंहजीने कोटा राज्य तरफधी २३ गाम सिहत थाणादेवरीनो पट्टो आपवामां आव्यो.

राजसस्पिंहजीए कुन्हाडीनी गादीए वेटा पछी बि-सं. १७८५ मां खेतून मुकामे पटा-ण अकवरखांनी फोज साथे छडी प्राणनो परित्याग कर्यों. ए चाकरीना वदछामां कुन्हाडीने कोटा-ना राव भीमसिंहजी अने दुर्जनसिंहजी तरफथी १८ गामो सिंहत मनोहर थाणानो पट्टो मळचों. राजसस्पिंहजी गाम सुजारे शक्तावतमां परण्या हता. ए शक्तावतना भाणेज अने सस्पिंस्जीना कुमार राजरणजीतसिंहजी कुन्हाडीनी गादीए विराजमान थया. राव दुर्जनसाछजी तथा तेना कुंव-र अर्जुनसिंहजीना वखतमां हेंदरावाद तरफथी निजाम पिंडारानी फोज बुन्दी कोटा वचेना वाव-

१ झाळाकुळना वडवा वारोटे अमोने आपेळी वंशावळीयां जेतसिंहजी तथा भीपसिंहजी वगेरे देखवाडाना राजराणा तेजसिंहना कुंवरो हता एवं छखेळुं छे'

ख्या मुकामपर आवी हती, तेनी साथे वि—सं. १८०७ मां अपार पराक्रमयी युद्ध करी राजरणजी-तसिंहजी मार्या गया. ए मस्तकदानना वदळामां रिचासत क्रन्हाडीने चेवट परगणे गुंदी, माडही, आंकेडी अने रटावद ए चार गामनो वीजो पट्टो प्राप्त थयो. ए वखते राजरणजीतसिंहजीनो एके पुत्र न हतो, तेओना न्हाना भाइ दोळतसिंहजी पण न्हानी उम्मरमांज पंचत्व पाम्या हता; एटळा माटे देळवाडाथी अर्जुनसिंहजीने गोद ळेवा पड्या. राजरणजीतसिंहजीनां लग्न गाम खातोळीना हाडाने त्यां थया हता. तेओना दत्तक पुत्र देळवाडाना राजराणा जेनसिंहजीना सहुथी न्हानेरा कुंवर हता.

कुन्हाहीनी गादीए बेठेळा राज अर्जुनिसंहजी पांच स्थळे परण्या हता. तेओनो प्रथम विवाह गाम वावळ मध्ये शक्तावतोमां रावत अजवसिंहनी पुत्री साथे, बीजो विवाह राठोडोने त्यां सळाणा पासे आवेळा गाम सेल्यामां, त्रीजो विवाह पण राठोडोने त्यां मारवाडमां रहेळा गाम गूडोजनी अंदर, चोथो विवाह राणावतोने अमळे अने पांचमो विवाह शक्तावतोने ढावे थयो. त्यारवाद तेओने सरुपसिंहजी, द्वारकादासजी तथा करणसिंहजी नामे त्रण कुमार अने जीवकुंवर नामे एक कुंवरी थयां; ए कुंवरीने वेदडाना राजाजी परतापसिंहजी साथे परणाव्यां.

राजअर्जुनासंहजीना स्वर्गवास पछी कुन्हाडीनी गादीए सरुपसिंहजी वेटा. तेओना विवाह त्रण स्थळे थया हता. एक करवाह, वीजो हमीरगढ अने त्रीजो हाडाने त्यां. राजसरुपसिंहजीने रामचन्द्रजी तथा ळखमणसिंहजी नामे वे कुंवर थया. तेमां ळखमणसिंहजी उज्जेणसिमाना रणमेदानमां मायी गया अने रामचन्द्रजी राजसरुपसिंहजीना स्वर्गवास पछी कुन्हाडीनी गादीए वेटा. तेओना त्रण विवाह थया; पहेळो हाडा रामलोतजीने त्यां, वीजो मसूदाना राठोडने त्यां अने त्रीजो दारुकाना शकावतने त्यां.

राजरामचन्द्रजीने भवानीसिहजी तथा गुलावसिंहजी नामे वे कुमार अने मुलतानकुंवरवाइ तथा वदनकुंवरवाइ नामे वे राजकुमारी थयां. पहेलां कुंवरीने घनोय अने वीजांने हरीगढना महा-राजा जसवतासिंह साथे परणाव्यां.

राजरामचन्द्रजीना परलोक प्रयाण पछी भवानीसिंह जी कुन्हाडीना अधिपति वन्याः तेओना काकाए सिपाना रणमेदानमां आपेला मस्तक वदल कोटाना महाराव ग्रुमानसिंह जीए प्रसन्नतां पूर्वक वसनपुरा नामनुं गाम वि. सं. १८६३ मां आप्युं, राजभवानीसिंह जीए वि. सं. १८४२ मां

द्रीह्मणो साथे युद्धनो प्रसंग आवतां असीम वहादुरी वतावी हती. तेमज वि. सं. १८६३ मा भटवाडानी रणभूमिमा जयपुरती सेना साथे कोटातुं युद्ध थयुं, त्यारे कोटाती फोजमां राजभवानी- सिंहजी सामेल हता. कोटानी सेना विजय पामी अने जयपुरती फोज हारी. आ विजय समाचार राजभवानीसिंहजीनी आज्ञाथी कुन्हाडीना कोइएक भंगीए कोटे जइ महाराव ग्रुमानसिंहजीने संभळाव्या; ए वखते आनंदथी मस्त वनेला महारावे ए भंगोने महाराजानो इल्काव आप्यो. आजं पण ए कुन्हाडी भंगीना वंक्षजो महाराजा कहेवाय छे अने कोटाना भंगी लोकोमां मुख्य पटेल मनाय छे. ज्यारे राजराणा जालिमसिंहजी सिन्थियानी केदमां सपडाया त्यारे राजभवानीसिंहजी तेओने महान परिश्रमथी मुक्त करावी कोटे लाव्या हता. कुन्हाडीनी अदर राजभदानीसिंहजीए श्री रणलाडेरायजीतुं यनोहर मन्दिर वन्थाव्युं अने एक हवेली वन्थावी. तेओनो प्रथम विवाह राक्तावतोमां अने वीजो विवाह खातोलीमां ययो हतो; परंतु ए वे राणीमांथी एकेने संतित थइ नहि

राजभवानीसिंहजीना स्वर्गवास पछी तेओना भाइ गुलावसिंहजी कुन्हाडीनी गादीए विराह्ममान थया. तेओनो पहेलो विवाह राणावतोने अमले अने बीजो विवाह भदोडे चुंडावतोमां थयो. ज्यारे राजगुलावसिंहजी निःसंतान स्वर्गे सिधाच्या. त्यारे मायात वर्गमांथी अर्जुनसिंहजीने गोद लेवामां आव्या.

राज अर्जुनसिंह जोनी वचपणमांज झाळावाड नी रियासत कोटानी रियासतथी जुदी पडी. ते वरतते झाइवाद तुं गाम थाणादेवरी झाळावाड मां चाल्युं गयुं, त्यारवाद झाळावाड तरफथो राज-अर्जुनसिंह जीने घणा आग्रह पूर्वक वोळाववामां आव्या, परंतु तेओ इर्योम धर्मने साचवी त्यां गया निंह. ए अर्जुनसिंह जीना भाइ दुर्जनसिंह हता ते झाळरापाटणमां चाल्या गया; तेन झाळावाड ना राजराणा तरफथी कांइक जागीर अने शाहवाद नी किल्हेदारी मळी. कोटानी अंदर वळवो थयो त्यारे राजअर्जुनसिंह वहुज वहादुरी वतावी हती. तेओनो प्रथम विवाह अर्जेमर इळाके पीसांगनमां अने वीजो विवाह पीपळदे थयो. त्यारवाद तेओने एक परिणीत राणीथी रूपसिंह नामे कुंवर धया अने कुवासिणा (रखात) थी कुवर द्वारकादासजी तथा गोवरधनदासजीनो जन्म थयो.

राज अर्जुनसिंहजीना परलोक प्रयाण पछी स्त्यसिंहजी कुन्हाडीना राजा वन्या. तेओने कुंवर न हतो. मात्र एक राजकुमारी हता, तेने कोटाना महाराव शत्रुमालजी साथे परणाव्यां. राज

१ पेशवा छोको २ पोताना आश्रयदाता कोटानरेशने राजी राखवा माटे झाळावाडनो आश्रय न छेता ज्यामधर्म साचन्यो.

रूपसिंहजीना विवाह त्रण जगोए थया हता. पहेलो पूसोद, बीजो मसूदे अने त्रीजो विवाह मारवाडनी अंदर रहेला केलावे थयो हतो. तेओ वि—सं. १९३० मां कोटायी कांइ मानमंग थवाने लीधे देलवाडे पधार्या अने त्यांथी कुन्हाडी आवती वखते कुमार विजयसिंहजीने गोद लेवानो करार करता आव्या. त्यारवाद वि. सं. १९४४ मा तेओए महारावने अरज करीके कुमार विजयसिंहजीने कोटे वोलावी लीधा. कुमार विजयसिंहजी पोप मासमां कोटे पयार्या. एज सालमां राजस्पिंहजी स्वर्गवासी थया. तेओनी उत्तरक्रिया यथाविधि कुमार विजयसिंहजीए करी अने तेमां रुपिया दश हजार खरच्या. ज्यारे तेओ देलवाडामां कुंवरपदे हता, त्यारे तेओनो प्रथम विवाह गाम केळवामां राठोडोने त्यां थइ गयो हतो जनं कुन्हाडोनी गादीपर अभिपिक्त थया वाद वीजो विवाह हाडोतीनी अंदर रहेला गाम कोयलाना हाडा टाकुर अजीतसिंहने त्यां थयो. ए वन्ने राणी-ओथी कुल छ संतान थयां. जेओनां नाम नीचे मुजब छे.

- १ कुमार श्री चन्द्रसेनजी.
- २ कुमार श्री भीमसिंहजी.
- ३ कुमार श्री दलपतसिंहजी.
- ४ कुमार श्री दोलतसिंहजी.
- < कुमार श्री हिम्पतसिंहजी.
- ६ कुंवरी साहेव श्री आनन्द कुंवरवा.

कुन्हाढीना वर्त्तमान राजविजयसिंहजी विद्वान, न्यायिनपुण अने स्वभावे सरल छे. ज्यारे कोटाना महाराव जमेदिसहजी गादीए विराज्या वाद अजमेरनी राजकुमार कॉलेजमां अभ्यास करवा पथायी त्यारे राजविजयसिंहजी तेओना कम्पेनी अन तरी के नियत थया; क्रगभग त्रण वर्ष सुधी तेओए पोताना आश्रयदाता जमेदिसहजीनी जतम रीते सेवा वजावी. त्यारवाद कोटामां मेम्बर ऑफ काउन्सी-कनी जगो खाली थता राजविजयसिंहजीने त्यां वोलाववामां आव्या; तेओए काउन्सीलना मेम्बरनी जगोए दाखक थइ त्रण वर्ष पयन्त केटलांएक मशंसनीय कार्यो कर्यो. त्यारवाद महाराव जमेदिसह-जी स्वतंत्र थया. आजकाल कोटा नरेशना परम कृपापात्र राजविजयसिंहजी महाराव जमेदिसहजीनी आहा मुजब केटलांएक राजकाज करे छे.

कोटाना राजदरवारमां कुन्हाडीनी वेठक डावी वाजुए पहेली छे अने तेओने कोटाना महाराव तरफथी प्रथम दरज्जाना सरदारोने मळतुं सम्पूर्ण मान मळे छे.

राजिबजयसिंहजी सुझ, सुशील, दीर्घदर्शी अने साहित्यभेमी छे. तेओए कुन्हाहीमां रुपिआ पचाश हजार खर्ची एक सारुं मकान अने नवो तवेलो बनाव्यो छे.

रायपुरनो संक्षिप्त इतिहास.

सवैया, एकत्रीशाः

मकवाणा हरपालची मांडी वीती सोळ पेढी सुखरू र सत्तरमी पेढीपरॅ भ्राजे छत्रसाल माडलना भूप; ततुज त्रयोदश तेना तेमां ज्येष्ठ जेतसिंह गादीपतिः राघव आदि वार वन्धुने मली वाडुनी भूवृत्ति. वाड एज विहळगढ नामे वसुघामांहि हतुं विख्यात; राघवदेव महारणरागी, गया माळवे तजी गुजरात: आगर केरा तळाव आगळ पडाव नांख्यो पीत धरी: त्यांथी प्रभाते प्रजावर्गसह चालवानी तैयारी करी. 2 भांगी पडी भैरवनी गाडी तुरत सर्वजन स्तब्ध थयां; इप्ट वचनने अर्नुसरीने राघव ए स्थळमांज रह्या; मांड्रमां जइ मळ्या शाहने ढाळ अने तरवार धरी; चेतनवाळा चतुर नरे त्यां वेतनविण नोकरी करी. गया शिकारे शाह एक दिन राघवदेव इता साथे: गहन वने करी भवेश छोडी गोळी महद सावज माथे: धस्यो मत्त मृगराज शाइपर निश्चय चुकी नवाथी निशानः हणी सिंहने रायवदेवे जल्दी वचावी झाहनी जान. 8 शाहतणा दिल्पां ए समये कृतज्ञता वेगें व्यापी: राघवने गढआगर साधे रावतणी पदवी आपी:

राजधानी स्थापीने रहीया आगरमां तृप राघवदेवः भव्य नाथ भैरवतं मन्दिर त्यां तैयार कर्ये तत्वेव. रांचिवनपना चोंडाजी ने कहानसिंहजी उभय कुमार: जतां स्वर्ग राघव, चोंडाजी पाम्या आगरनो अधिकारः अन्व काठिआवादी उत्तम चींदानो चेटक नामैः मांडपतिए माग्यो पण हय आप्यो नहि चोंडे हामे. शाह चढी आव्यो आगरवर उग्र ए समे युद्ध थयुं, हार थतां चोंडानी आगर वादशाहने हाथ गयुं: चोंडाना स्रुत रामसिंहजी हता हीनवळ सैन्य विहीन, छतां बुद्धिवळ वापरी एणे " सणखेडी " कीवं स्वाधीन. त्यारबादॅ व्हाळेथी वसाव्यं रम्य रायपुर नामे गाम, राजधानी स्थापी त्यां रहीया रामसिंह धीरजनां धाम: ए पछी आत्मज महद एहना महेशदास महिंप थया, भीमसिंह भाता महेशना गाम रुन्डलाइए गया. डावळ रावळ आदि गामनो वाघाजीने मळ्यो गरास. ए सिवायना पांच वन्धुओ पाम्या वाळवयेज विनाजः भीमसिंहना वंशज भावें "भीमावत" भूमिमां भणाय, वाघाजीतुं कुळ " वाघावत " जाहिर झाळामांहि जणाय. महेशदास पछी जयसिंह जा रायपुरे रहीया राजी, वडा पुत्र एना वीकाजी क्रमार वीजा कृष्णाजी: गुगाहेडे कॅर्या रवाना वीकाजीने समजी वीर, वार गाम वळथी मेळवीयां एणे धारी अतुपम धीर. वंश्वज एना थया " वीकावत" राव जेतिसिंह स्वर्ग गया, रायपुरने तस्त साजी सुख नृप कृष्णाजी विराजी रहा।

स्जाजीआदि पद्र पुत्रो थया एइना अमित उदार, रह्यो रायपुरनी गादीपर पाटवी सूजानो परिवार. 38 भर्छ गाम " भोरासी " पाम्या गरासमां झट झुझारखान, खानाजीने खास गाम " भोरासा " मळीयुं भूतिनिधान; **एभय वन्युना वंशज विळया झाला " कृष्णावत " कहेंवाय,** सूजाजी पछी रायपुरेना गुणी नृप नरहरदास गणाय. १२ नरहरदासतणा विनाश पछी मानसिंह छेखो महिपाछ; मानसिंहना मृत्यु पछी निय रूपसिंहजी भूप रसाळ; पृथीसिंह परिपूर्ण ए पछी आनंदी निवंड्या अवनिपः फतेसिंह कहीं फतेह करता राज्य रायपुरमां कुळदीप. जोधसिंह ने देवीसिंह पछी अभेसिंह अवतारी थया; राज्य रायपुरतणुं यथाक्रम कॅयी वाद सुरपुरें गयाः शेरसिंदनी सत्ता ए पछी रायपुरे जामी सुखरूप; भाग्यशाळी नशुराम हाळ वळवंतसिंह छे त्यांना भूप. नरवरनो संक्षिप्त इतिहास.

छन्द पद्धरी.

हरपालदेवथी हर्षधारी, पेढी प्रसिद्ध सत्तर उचारी;

छखरूप भूपति छत्रसाल, वरराजधानी मांडल विशाल.

ततुजात आदि एना तपस्वी, नृप जेतिसंह निवंड्या यशस्वी;

बळवान एहना वन्यु वार, एमांहि आदि राघव उदार.

गढ विहलादिनो ग्रही गरास, हृदये अपार पाम्या हुलास;

छत स्रसिंहने आपी सर्व, झट गया माळवे धारी गर्व.

दोहा.

मांडूनो महिपति हतो, हिम्पती शाह हुसंगः राघव त्यां नीकर रहा, उरमां धारी उमंगः इष्टदेव एना हता, भयहर भैरवनाथः; राघव मूर्ति राखता, सदा इष्टनी माथः शाहे शौर्य निहाळीने, राघवतुं दिनरातः; आगर तावे आपीयां, श्रेष्ठ परगणा सातः

रोळाच्त.

राघवना सुत वडा, चतुर चोंडाजी विराजे;
कहाँनासंहजी द्वितीय, शञ्चपर शस्त्रो साजे;
रामिसंह रणरागी वाल चोंडाना विलया;
काका संगे रही, लडाई अनेक लडिया.
जोर जभयतुं जोइ, श्रेष्ठ गांडूना शाहे;
जूदी जूदी जवर, आपी जागीर उछाहे;
रायपुरे तृपराम, राव पदवी धरी राजे;
कहाँनसिंहजी कलित, सुखो नरवरमां साजे.
हिम्मतो सुत हरनाथ, कहानसिंहजींना करमी,
नरवरपुरना नाथ, धरामां उत्तम धरमी;
चोंडाजी चालाक, पछी सालम सुखदायक,
रत्नसिंह पछी आशकरण लेखाया लायक.
९ वाघकरणजी वीर, पछी भारत भयहारी,
दानी इंगरसिंह, ए पछी नृप अवतारी;

म्रुत्तकर सांवत पछी, लेखवा लूणकरणने;
बुद्धिमान बुधिसंह, चाहता चार वरणने.
एक्ट्रॉहिसंह ए पछी, प्रकट मिहपाल प्रमाणों,
एक्ट्रिसाळजी शूर, यथाक्रम जनपित जाणों;
विद्रोहीथी ळड्या, वीरवर वडला गामे,
विजय मेळॅन्या वाद, सिधान्या सर्च स्वधामे.

दोहा.

ए पछी भया अनुक्रमे, हिम्मतशाळी हमोर,
पुण्यशाळी पृथीसिंह पछी, पातलसिंह पत्रीर १२
विसनसिंह वहादूरने, आशकरण अभिरामः
नरवरना नरपति थया, समय पामी सुखधाम.
सबैया-एकत्रीशाः

श्राहनहां औरंगनी संगे जंग नमावी ळड्या ने वार,
आश्रहरण छडतां ए समये मृत्यु पामीया रणमोझार;
त्यारवाद नरवरने तख्तें थया मान मिहपाछ महान,
विद्यारवाद नरवरने तख्तें थया मान मिहपाछ महान,
समाचार युद्धना सांभळी, हामे शास्त्र उठाव्युं हाथ;
सरदारोनी साथ वेगथी विद्या तर्फ प्रयाण कॅर्यु,
चमकावी असि मान मिहपे चहुचाणोनुं मान हर्यु.
पोते पण वैद्यंठे विचर्या घोर युद्धमां खूव घवाइ,
जनपित जमवनितंह ए पछी श्रेष्ठ गुणोथी करी सवाइ;
तेजिसिंह ट्रॅप त्यारवाद, पछी महोंकमितिह प्रतापी महान,

नरवरनी निर्मळ गादीपर वेठा मुदधारी मखवान. 88 इटीसिंह ने रतनसिंह पर्छो थया राजराणा रघुनाथ. नरवरमां दृढ गढ वंधावी सुखे रहा। परिवारनी साथ: अचलसिंह ए पछी आनंदी मीतें करता परउपकार, ब्रिटीश राज्यने आधीन रहेवा स्नेह धरीने कर्यो स्विकार. लखमनसिंह पछी हेखाया नृपति निभावण कुळनी लाज, हिम्मतवान हमीरे धार्यो तेज भर्यो नरवरनो ताजः क्रमे द्वितीय रघुनाथसिंहजी थया महिंप महानमति. चिंते चाहता अतिशय एने धांगधराना धरापति. 28 धर्मनिष्ठ रघुनाथसिंहजी अपुत्र विचर्या अक्षयधाम, अतुज एइना मानसिंहजी थया सुखद नरवरना इयाम; नीति निप्रण बनी प्रजावर्गनी मीति एणे पाप्त करी, नित्य रहो नथुराम कुशळ ए धवळ छत्र शिरवरेंघरी. १९

कुन्हाडी.

रोळावृत

द्यूर सजोजी मूळ, देखवाडाना स्वामी; पेढी पांच ए पछी, मकट यह विनाश पामी; छठी पेढीए थया, जेतसिंह नृप जञ्चनामी; अनुज एहना भीम, सर्वदा सत्पथ गामी.

सँवया एकत्रीशा.

पलायता ठाकुर मतापनां पुत्रीसंग परणी भीते; भीमसिंहजी भसंग पाम्या उदयतणो उत्तम रीते; भहभुज्याना मुकाम सन्मुख सुवर्णनाहरतणो ज्ञिकार; करवा आव्या कोटाना तृप, रामिसहजी राव उदार.

भुजवळधी भीमे ए समये हण्यो नारने धारी हाम;

गुणज्ञ रावे कुन्हाडी आदि दीधां झाळाने दशगाम;

रामिसह महाँराव तरफथी, देवा दुष्टजनोने दंढ;

सेनापित वनी सद्य सिधाव्या, भीमिसह ठोकी भुजदंड.

श्वाझपीयां कापी कैकने, पोते पण पाम्या पंचत्व;

स्रुत एना श्रीस्वरूपिसहजी, वेठा गादीपरे धरी सत्व;

जइ खास खेतून मुकामे झळराणे करी अरिने जाण;

पटाण अकवरखांनी फोजसह ळडी छेवटे छांड्या प्राण.

छन्द हरिगीत.

रणरागी स्रुत रणजीत एना पाटपित शीतें थयां; अरिसंग वावल्या सुकामे युद्ध करी मायी गया; ए वाद गादी कुन्हाडीनी मखवान अर्जुनने मळी; गुणशाळी काळें छइ गया ए ब्रह्मरूपमहीं भळी.

दोहा.

पुत्र एहना गादीपित, सरुविसंह सुखकार;
रामचन्द्र नामे धया, ए पछी राज उद्दार.

भूप भवानीसिंहजी, क्रमे थया गुणकूप;
भटवाडानी भूमिमां, एनं शौर्य अनुप
संतित विण स्वर्गे गया, भोगवी विविध विछास;
पछी गुणशाळी गुलाबनी, प्रसरी परम सुवास.

ए पछी अर्जुसिंहजी, राखी प्रजापर रे'म;
करता राज्य कुन्हाढीनं, जाळवी नौतम नेम.



सोरटा.

त्यारवाद धरी ताज, राज रूपसिंहजी थया; साजी सदा सुखसाज, श्रेष्ठ काज करथी कर्या १० लाखेणी कुळ लाज, जुगतें अहर्निश जाळवी. जशनी बनी जहाज, समये २इ स्वर्गे गया. ११

छन्द पद्धरी.

नृप विजयसिंहजी विद्यमान, शोभे महान् सद्गुणनिधान, कोटा नरेशना शितिपाल, स्नेहेथी साचवे धर्म क्षात्र. १२ नम्रुराम भूप आनंदी एह, राखे सदैव सुझोथी स्नेह; मम्रु कृपाथी परिवारयुक्त, आवादी पामजो राजडक्त. १३



[૮૭૨]



षट्विंदात् तरंग.



मनहर.

स्थापी हळवदे राजधानी राज रायधरे; तेना त्रण पुत्रमां अजोजी हता अग्रणी; लघुम्नात राणाजीने आपी राजगादी आप, अनुज सजाजी साथ आव्या मरुमू भणी; सुभट शिरोमणि गणीने मेदपाटेश्वरे, जागीरे जमीन घणी सोंपी सादडी तणी, कहे नथुराम तेना वंशजोनी वात सुणो, धर्मी अमरेश वडा वंकपुरनाधणी.

श्री हळवदनी राजधानी हुं स्थापन करनारा राजरायधरजीना पाटवी कुमार अजोजी ज्यारे युवास्थाने प्राप्त थया त्यारे तेओंने परणाववा माटे मुळीना परमार पोतानी पुत्रीने छड़ हळवद आज्या, ए समये राजरायधरजी पोताना अमीर उमरावोनी हाजरीमां हसीने बोल्या के युवाननी साथे तो हरकोइ हर्षघेळा बनी पोतानो पुत्रीने परणाववा तत्पर थाय छे, परंतु हुद्धनी साथे वराववा कोइपण इच्छा करता नथी; आ शब्दो समीपे उभेळा कुमार अजाजीने काने पट्या, जो के ए शब्दो राजरायधरजीए महकरी रुपे उचारेळा हता, छतां पितृभक्तिपरायण अजाजीए एज वस्वते मुळीथी आवेळा अधिकारीओंने कही मोकळाव्युं के तमारा राजानी पुत्रीने हुं परणवानो नधी. परंतु ए राजकन्याने मावा समान मान आपवा आतुर छुं तो तुरतमांज तेना खग्न मारा पूज्य पिता साथे करशो तो तमारी अने अमारी कीर्तिमां अवहय उमेरो थहो. मुळीना अधिकारीओए पोतानुं मन धार्यु करवा युवराज अजाजीने अनेक प्रकारे समजाव्या, परंतु धर्मनिष्ट अजाजीनुं अदग अंतःकरण पोते ग्रहण करेळी प्रतिज्ञाने व्यर्थ कराववा कोइने समर्थ सम-

~~F®~~~

जतुं न हतुं; अंते मुळीना अधिकारीओ राजरायधरजीने कन्या आपवा कबुळ थया अने एज वखते तेओए युवराज अजाजी साथे एवो करार कर्यों के अमारां वाहने पेटे जो पुत्र अवतरे तो एज हळवदनी गादीना वारस थह शके, अजाजीए घणा आनंदनी साथे ए करारने स्वीकारी िताना लग्ननी तैयारी करी. राजरायधरजी परमारनी कन्याने परण्या, परमात्मानी गित गहन छे, स्वल्प समयमांज ए शाधारी राणीने गर्भ रह्यों अने कुमारनो जन्म थयो, तेतुं नाम राणक-देवजी (राणोजी) राखवामां आन्धुं वि. स. १५२० मां राजरायधरजीए अनित्य संसारने छोडी कैळासवास कर्यों त्यारे युवराज अजाजी लघुवन्यु राणाजीना हाथमां राज्यनी ळगाम सोंपी सहो-दर सजाजी साथे चौद हजारतुं लग्नर लह हळवदथी हाली निकळ्या, ए वखते कोइएक कविए उदार प्रकृतिवाळा अजाजीनी प्रशंसा करता कर्युं के

सोखा

कई बीगा घर लागे हट बन्धव लडे। राणा राणकने राज आयो मुरधर देश अजो ॥ चूंडे गढ चितोंड भड समपे लघु श्रातमे। यूं हलवद आरोह आप हात समपे अजा॥

आ इकीकत मारवादना महाराजा राव जायाजीना जाणवामा आवतां तेओए केटलाएक अमीर उमरावाने सामा मोकली पोताना साळा अजाजी तथा सजाजीने म्होटा मान सिहत जोधपुरं वोलाव्या अने एक उत्तम राजा तरीके तेओनी आगता स्वागता करी केटलाएक समय सुधी पोता पासे राख्या तथा आजीविका माटे पचाम हजारनी आमदानीवाळो अमुक भदेश आप्यो राजराणा अजाजी ए मुलकनी बुद्धि वळथी दिन भतिदिन उन्नति करी रह्या हता ते-वामां कोइएक दिवसे तेओने राव जोधाजीए कह्युं के तमारी पुत्रीनो सर्वध मारी, साथे करो त्यारे अजाजीए उत्तर आप्यो के पथम मारां व्हेनन आप साथे परणावेलां ले जेथी मारा पुत्रीनो सर्वं आप साथे धर्मशास्त्र नियम मुजव न ज थइ अके. आथी राव जोधाजीने अत्यंत माद्यं लाग्युं, परंतु तेओए भत्यक्षमां एवं एक पण चिन्ह जणाव्युं नांह, तायण महा बुद्धिशाळी राजराणा अजाजी

१ सजाजीनी संतति देखवाडा नरेशा

तेओनी आन्तरिक दृत्तिने आळखी गगा अने तरतज "झालावाड" नो त्याग करी स्वकीयरिसाला सहित मेवाड तरफ जवा तत्पर थया. आ खटपटनी शरुआतना उडता समाचार कुंभछगढमां म-हाराणा रायमलजीने प्रथमधीज मळी चुक्या हता. ज्यारे ए वात सत्य स्वरूपे प्रसिद्धिमां आवी त्यारे महाराणाणु अत्यंत त्वराधी तेओने पोनाना देशमां पधराववा माटे म्होटा म्होटा अधिकारी-ओने मोकरी आप्या. राजराणा अजाजी विगेरे हजु झालामंडथी वे लण माइक आव्या हता, त्यांज महाराणाना माणसो तेओने आवी मळ्या अने अत्यंत आग्रह पूर्वक सर्वने कुंभलगढ तेडी गया. रा-जराणा अजाजीना शौरी, धैर्य अने धर्म आदितुं अवलंबन करनारा वाक्चातुर्यथी महाराणा राय-मळजीतुं मन बहुज प्रसन्न घयुं, तेओए श्रीमान् अजाजीने राजदरवारमां प्रथम दरज्जानी वेठक अर्पण करी अने अजमेरनी राजधानी आपी अपूर्व हर्षथी हजुरमां राख्या. महाराणा तरफथी म-ळेला अतुक सत्कार वहे संतुष्ट थएला अजोजी तथा सजोजी केंटकाएक वलत सुधी कुंभलगढमां रह्या अने पोताना पुत्रीने महाराणा साथे परणावी राजधानी तरफ रवाना थया वि. सं. १५६५ मां महाराणा रायमळजीनो कैळासवास थतां तेओना पुत्र सांगाजी चितोडनी राजगादीए वेटा, त्यार-बाद दशेक वर्ष पछी अर्थात वि. सं. १५७६ मां मुहम्मदशाह सानी तथा वादशाह वावर साथे भयंकर युद्धो थयां तेमां राजराणा अजाजीए एटळी वधी वीरता वतावी के महाराणा सांगाजीए श्रीमुखे तेओनी सर्वोत्कृष्ट शब्दोषी स्तुति करी; ए वखतना राजाओमां देश:भिमान अने गुणग्रा-इकता विगेरे एवा उत्तम गुणो इता के जेना मावल्यथी तेओ सहजमां उन्नतिने प्राप्त करी शकता हता. महाराणा सांगाजीए घणीवार वावर वादशाहने केद करी कारागारथी मुक्त करेछ हतो; ए सवंधी वर्णन करतां कोइएक कविए कहेल छे के " शाहां पकड छोडवो सांगा थारे हांसा खेल इमीर इरां " टॉट साद्देव पण लखे छे के श्रीमान महाराणा सांगाजीनी साथे असी इजार घोंडे स्टार, सात प्रथम श्रेणीना राजाओ, छ राव अने रावल तथा रावत अवटंकथी अलं-कृत एकसो मतिष्टित सरदारो तेमन पांचसो हाथी रणक्षेत्रमां हाजर रहेता हता अने आबु आदिना राजाओं निरंतर महाराणाने आधीन रहेता हता मतळव तेओने पोताना स्वामी समजता हता.

सं. १५९४ मां वावर वादशाहे पचास हजारनुं सैन्य छइ मेवाड उपर चढाइ करी, ए व-खते महाराणा सांगाजी पण वे छाखनुं सैन्य छइ रणभूमिमां पधार्या अने विआना—भरतपुर तथा पीछाखाळ आदि स्थछोमां विजयवाद्य वगाडता फतेहपुर सीकरीमां यवन सेनानी सन्मुख जइ पहोंच्या, उभय सन्यमां भयंकर युद्धनो आरंभ थयो; श्रुह आतमांज महाराणानो विजय द्रष्टि-गोचर थवा छाग्यो, आवा वारीक समयमां अत्यंत विह्नळ वेनेछा वादशाहे एकान्त स्थळे जइ वि- जय अर्थे परमात्मानी प्रार्थना करी, नाना प्रकारना पुण्यदान कर्या उपरांत मद्यपानना पात्र शीले अनाथ याचकोने आपी दोवां अने एवी प्रतिज्ञा लीधी के " आग्रानो विजय थया वाद हुं राइ-दारीनो कर माफ करी दइश " वावरने गभराएल जोड तेनी सेना पण उत्साह रहित वनी गइ. आवो सूक्ष्म समय प्राप्त थतां वावर वादशाहे एक स्तुत्य राजनीतिनं कार्य कर्य अर्थात सर्व सेना-पतिओं अने सैनिकोने सन्मुख बोळाबी कहुं के मारा व्हादुर ळडवैयाओ ! आ मंसारमां जे मतु-ष्ये जन्म धारण कर्यो छे, ते एक दिवसे अवस्य मरण पामवाना. मात्र एक इन्वरतुं आ संसारमां अचळ राज्य छे. रणांगणमां पोताना धर्मने माटे प्राणनी आहुति आपवी ए शुरवीरोने मांगळिक समय छे. आपणे इश्वरने अनंत कोटि धन्यवाद आपवा जोइए के जेगे आपणने वैवर्मीओ साथे युद्ध करी प्राण तत्रवानो उत्तम अवसर आप्यो छे, युद्धमां सामे पगछे लडी मरवायी स्वर्ग मळे छे अने भीरु वनी भागवाथी नकेमां निवास करवो पडे छे. वादशाह वावरना आवां सारगर्भितवचनो सांभळतांज सर्व सैनिको एक मत थइ वोली उठ्या के ज्यां सुधी अमारा शरीरमां पाण अपाननो संवंध छे त्यां सुधी अभा रणभूमिनो त्याग कर्शुं नहि. वावर आग्रा अने शीकरीयी आगळ वथी महाराणाना सैन्य साथे युद्ध करवा लाग्यो, राजस्थानना तमाम राजाओ महाराणानी साथे मळेला हता, वीर क्षत्रीओना पवल प्रहार्थी पोताना सैनिकोन व्याक्तळ वनेला जोड़ वावर वादगाहे पहा-राणा सांगाजी आगळ एक सन्धिपत्र छखी मोकल्यो, तेमां पीलाखाछ अने विआना ए वे राज-धानीना मध्य प्रदेशमां सीमा निचत करवातुं लखेखं हतुं. ए उपरांत वाबरे महाराणाने कर आप-वानो पण स्वीकार क्यों इतो. एटछुंज निह पण ए बखते महाराणा जेम कहे तेम करी आपवा वावर उत्सुक यह रह्यो हतो, छढाइ चाछ हती, जूरवीरो विकाळ रूपथी प्रतिपक्षीओने विदारता हता अने कोनो जय थरों के कोनो पराजय थरों एनी करपना करवी विश्वेश्वर विना कोइ शक्ति-मान न इतुं, परंतु भावियोगे एक तुंवर जातिनो सेनापति राजद्रोही निवडतां महाराणातुं सैन्य पाछं हठयं. महाराणा सांगाजी पण घणाज घायल थया, जे दिवसे वावरे द्रढ प्रतिज्ञा करेली हती के कांतो महाराणाने मारे हाथे मारवा अने कांतो मारे एने हाथे मर्खु. ए वखते मेवाडना केटला-एक प्रतिष्ठित सरदारोए एकत्र यह महाराणाने रणक्षेत्रयी अन्य स्थळे मोकली आपवा तथा तेओनां प्रतिनिधि तरीके सल्वरना अधीश रावत रतनासंहजीए शत्रु सामे युद्ध करवुं एवो निश्चय कर्यो, त्यारे राव रतनासंहजीए कहुं के यारा पूर्वजोए महाराणाने राज्य सिंहासन अर्पण करेळ छे तेनो फरी अंगीकार हुं निह करी शकुं, महाराणाना प्रतिनिधि वनी हस्तिपर आरूढ थनारनी सेवा वजावनी

एन मारुं कर्तन्य छे अने प्राण जाय तो पण आपणा सैन्यनी अंदर प्रतिपक्षीओने पेसवा निह दुउं ए मारी द्रहमितज्ञा छे. आ वखते श्रीमान राजराणा अजाजी के जेओ हळवदनां सघळां राज्य-चिन्हथी स्रुशोभित होवा उपरांत महाराणाना तावेदार महिपितिओमां प्रथम दराजातुं मान भोगवता हता तेओ सछुंवर अने डुमरपुर आदिना अधीश्वरोनी अनुमितथी मेदपाटेश्वर (मेवाडनरेश—महाराणा) ना समस्त राज्य चिन्होने धारण करी अस्दिळ सन्मुख उपस्थित थया अने महाराणाने गुप्तरीते स्वल्प सैन्य सिहत मेदात देश भणी मोकळवामां आज्या. राजराणा अजाजी पोताना सेन्कहो सरदारो, वीजा केटळाएक प्रतिष्ठित सरदारो अने सैन्य सिहत असंख्य यवनोनो संहार करो स्वर्गमां सिधान्या, ए युद्धमां डुंगरपुरना अधीश रावळ उदयासहजी, सळूंवरना अधीश राव रत्न सिहजी, मारवाहना राजकुमार राटोह रायमळजी, सोनगरा रामदासजी, पॅवार गोकळदासजी (जेनी संतित हाळमां विजोळीना राजा छे), माणकचन्दजी तथा चन्द्रभाणजी चहुआण अने ए सिवाय न्हाना क्वेक सरदारो काम आज्या; राजराणा अजाजीना कुमार सिहजी तथा भाइ सजाजी अत्यंत घायळ थया, महागणाने मृत्युवश थएळा मानी वादशाह वावर युद्धभूमियी पाछो कर्यो, ए समयना कविओए राजराणा अजाजीनी प्रशंसा करतां कहुं के—

" छप्पय "

साहां सिर सांगेण, साझ चतुरंग सत्राईः
एक लाख असवार पैदलां गणत न पाई.
सझउत वव्वर साह, राड सीकरी सचावे;
सुख पोढे संग्राम, जोर पतशाह जणावे;
उण वखत सलाकर उमरा, छत्रअजा शिर साजियो;
मुरातव ले गजचढ मयन्द, यूंकडतल अग्राजियो ॥ १ ॥
उत वव्वर असपती, अठीझालो अजरायल;
उडे रीठ उण वार, घणा प्रसणा कर घायल;
पडधर सहस पचास, मेछ घर पारन मंडे;
कडतलजुद्ध कठोर, वला खगझाटक खंडे;

सझ फतेराण संग्रामरी, पख अछूतो पावियो; नव सहस सुभट छेकर नडर, सुरपुर दिसा सिधावियो ॥२॥ सोरडा.

रघू मुरातव राण, सिरधारे गजसिर चढे; काटे खल तुरकाण, ईस फते कीधी अजा ॥ ३ ॥

मेदपाटेश्वर महाराणा सांगाजीने ज्यारे रणभूमिमांथी मेवात देश तरफ छइ जवामां आन्या त्यारे तेओए एवी प्रतिज्ञा छीधी हतो के ज्यांसुधी हुं वावरने जीतुं निह त्यांसुधी मेवाड देशमां पग सुकवानो नथी. परंतु ए युद्धना वर्षनी आखरे तेओ पंचत्वने प्राप्त थया.

वि. सं. १५८६ मां स्वर्गस्य राजराणा अजाजीना क्रमार राजसिंहजी उर्फे सिंहजी राज्य-सिंहासनपर आरूढ थया, ए वखते महाराणा सांगाजी विद्यमान हता, ज्यारे तेओना क्रमार रतन-सिंहजीए महाराणातुं पद धारण कर्युं त्यारे तेओने खबर पडी के राजराणा अजाजी मारा पूच्य विताना प्रतिनिधि वनी बावर वाद्याह साथे भयंकर युद्ध करी काम आव्या छे अने सजोजी तथा 🖫 🗓 कुमार राजसिंह जी घायल थया छे ए रीतनी स्वामीभक्ति अने वीरतायी परिपूर्ण प्रसन्न थएका ए मेदपाटेश्वरे राजराणा राजसिंहजी साथे पोतानां फड़ श्रीमती रूपक्वंवरीजीनां छन्न कर्यो तथा स्वर्ग-स्थ राजराणाना स्मारक चिह्न अर्थे तेओना उत्तराधिकारीओ पासेथी तलवार वंधाइनं द्रव्य नहि छेवानी आज्ञा आपी अने राजराणा सजाजीने एक छक्ष मुद्रानी आमदानीवाळी "देखवाडा" नो रियासत अर्पण करी. महाराणा रतनसिंहजी महान् पराक्रमी हता, राज्यासन पर आरूढ थया पछी पांच वर्षनी कारकोर्दीमां तेओए मेवाड देशनी एक वोघे। जमीन पण शत्रुने हाथे जवा दीधी नहोती. वि. सं. १५५१ मां ज्यारे तेओनो स्वर्गवास थयो त्यारे तेओना न्हानाभाइ विक्रमादित्य-जी मेदबाटेश्वर वन्या. कर्नलटाँड साहेब आदि इतिहास मेमोओए लखे हुँ छे के महाराजा विक्रमा-दित्य स्वकीय वंदानी रीतभातथी साव अनिभन्न हता, तेओनो स्वभाव तथा वर्तन विगेरे उत्तम न होवाने छीधे केटलाएक वशवर्ती राजाओ पण प्रतिकूळ थइ गया हता. गुजरातना बादशाह बहादुर सुलताने मेबाड देशमां मांहोमाहे खटपट चालती जोड़ चढाइ करो; ते बखते मतापगढना राजा सुरजमलजी तथा बूंदी, झालोर अने आबू आदिना राजाओ महाराणानी सहा-यताए आवी पहोंच्या. कर्नळ टॉड साहेवना कख्या प्रमाणे प्रतिपक्षीने आधीन रही र्छेरोपना

गोळन्दाजोए जेमां वीरहाडो उपस्थित हता ए बुरजने अने ४५ हाथ दिवाळने उडाडी दीधी, जेथी ए हाडो पोताना पांच हजार सैनिको सिहत काम आव्याः तुटेळी दिवाळ पासे तुरतमांज वीर चुंडावत आवी उभा, परंतु वैरीतुं सैन्य विशेष होवाने ळीथे तेओने पाछुं हठवुं पडयुं, ए वसते राठोड जातिनी जुहारवाइ नाम राजकुमारो सैन्य सिहत विजयनाद करती किछा वाहेर निक ली अने युद्ध करी रणांगणमां काम आवीः भागजीए चित्तोडना विजय अर्थे देवीने पोताना मस्तकतुं विळदान आप्युं, अनेक शूरा क्षत्रीओं केसरीआं वस्त्र धारण करी तुटेळी दिवाळ पासे भयंकर कापा कापी चळावी काम आव्या, अने जे कोइ अवशेष रह्या हता ते तमाम किछाना कमाड खोळी, शत्रु-ओने समशेरनो स्वाद चखाडी स्वर्गमां सिधाव्या, छेवटे राजराणा राजसिंहजी तथा देवळाना सरदार ए वेज वाकी रह्या हता, तेओं पण सामें पगळे अनेक शत्रुओंनो संहार करी सुरळोकमां गया. ए युद्धनी अंदर एकंदर वत्रीश हजार क्षात्र सुभटो काम आव्या हता अने तेर हजार स्रोओ सती थइ हती, ते वखतना कविओए राजराणा राजसिंहजीनी स्तुति करतां कहुं छे के—

गीत.

गोरी साह रणराह आयो चत्रगढ सवल हिन्दवाण सूंकरण साको; सिंघ जसमाल भड वने मेवाड छल कडिछ्यां बेहु भत्रीज काको ॥ हलेहल पेदलां जाण सामुद्र हाले चले सुरताण सूं करण चालो । वडा गढ उपरां होय भीडोह वढ, जुडण खग बांदियो मोड झालो ॥ रूडे गज धाट हैं हींस भीडो हडा, ढिगढिगे ढोल चित्तोड ढाणा । सहोदर राजरो पाटवी अजासुत, राण छल ऊठिया मरण राणा ॥ वांधियो मोड चित्तोड ऊपर वेहुं, लोहघड मेल घडकाट लडिया । पोढिया ढोलिया कर्दे जकना पडी, चचो भत्रीज रथ रंभ चढिया ॥ दोहा.

सिंघ महाभड साफर्ले, भाले कौतुक भाण। ज मांडूरो पातसा, ज पाटडियो राण॥



सिंघ तुहाली सीम, खल दल लोपीजे नहीं; भारतवाला भीम, ऊभो अजमल राउउत ॥ झालो झाप भरेह, अलंगा ऊतरीयो नहीं; सिंघ उसेला हेर, जण जण मूंढे जुझियो ॥ दोहा.

सिंघ सजो राजड अजो, वेंगड झाळोवाड । तो ऊभा अजमाळ तण, नह भांगे मेवाड ॥

आ वस्तते दिल्हीपित हुमायु वंगाळ देशमां हतो, ते महाराणानो पराजय सांभळी तुरत लग्न्सर लक्ष्म चित्तोड आव्यो, वहादुर सुलतान हुमायुनुं आगमन साभळतांज गुजरात तरफ न्हासी गयो अने हुमायुष महाराणा विक्रमादित्यने फरो चित्तोडनी गादीपर वेसाड्या.

सं. १५५१ मां श्रीमान् राजराणा सिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना कुमार आसोजी राज्यासनपर विराजमान थया महाराणा विक्रमादित्ये वहादुर सुळतानथी पराजय पाम्या छतां पेताना वश्चवर्ती राजाओ साथे पूर्वनी माफक प्रतिक्र्ळ वर्तन करवा मांडयुं, जेथी वहादुरशाहे फरी वि. सं. १५९२ मां चित्तोडपर चढाइ करी; स्वथमीभिमानी क्षात्रवीरो, सरदारो अने राजाओ मेद-पाटेश्वरना सैन्यमां वगर वोळाव्ये सामेळ थया, महाभयंकर युद्ध मच्युं, तेमां कैक सरदारो काम आव्या; राजराणा आसाजीनी अवस्था ए वखते मात्र अडार वर्षनीज हती, तोपण तेओ यवनराजनी साथे युद्ध करवा सज्ज थया, तेओए अतुळ वाहुवळथी वहादुरशाह उपर सांग नामना शक्षनो महार कर्यों, ए सांग वहादुरशाहने तो न ळागी, परतु करिवरना कठिन कुंभस्थळने भेदी कपोळना भागने कायाथी भिन्न करी नाख्यो; शत्रु सैन्यना कोइएक घोडेस्वारे त्वराथी त्यां आवी आशाजी उपर तीक्ष्ण तळवारनो प्रहार कर्यों, राजराणा आशाजीए एज वखते प्राणने तजी दीधा, परंतु वीरताए तेना कळेवरनो त्याग न कर्यों, तेओए मरतां मरतां पण पोताने मारनार घोडेस्वारने कठिण कृपाण वढे प्राण रहित कर्यों. ए वखते कोइएक कविए कहेळ छे के—



दोहा.

पनरेंसे वहाणुवे, सुद फागण चढ शुद्धः चत्रकोट आसो चढे, झड पडियो भड जुद्ध ॥ सोरगः

आसा दीनो ईस, रत जोगण खप्पर भरे; सांग गयंदा सीस, तेंवाही सिंघा तणा ॥ निज कुल चाढे नीर, साम धरम खांटेलको; वर अपसर वरवीर, आसो पुहतो अमरपुर ॥

वि. सं. १५९२ मां श्रीमान् राजराणा आसाजीनो अढार वर्षनी वये स्वर्गवास थतां ते-ओना न्हाना भाइ छलतानसिंहजी राज्यासनपर विराजमान थया, महाराणा विक्रमादित्यना सम-यमां राजराणा मुलतानासहजीने चितोडथी पातानी राजधानीमां पधार्ये हज् थोडो चखत व्यतीत थया इतो तेवामा चित्तोडघी खवर मळ्या के महाराणा सांगाजीना न्हाना पृथ्वीसिंहजीनां पासवान राणीथी उत्पन्न थएठा कुमार वनवीरे महाराणा सांगाजीनो वध करी मेदपाटेश्वरनो मुकुट मस्तके धारण कर्यो छे अने क्रुटिल नीतित्राळो ए वनवीर उदयसिंह-जीनो वध करवा उद्यत थयो छे, परंतु ए वखते उदयसिंहजी एक कैची जातिनी रजपुताणीनी निमराहळाळीथी वचवा पाम्या, मतळव जे वखते वनवीरे उदयसिंहजीना नाज्ञ करवा राजमहेलनी अंदर पा मुक्यो, ते पहेलांज उक्त दासीए कुमार उदयसिंहजीने टोपलानी अंदर पर्णो वहे आच्छादित करी कोइएक वारीगरनी साथे वाहेर रवाना करी दीधा अने तेओना स्थानपर पोताना पुत्रने सुवाडयो; ज्यारे वनवीर राजसुवनमां प्रवेश करी उदयासंहजीने माटे पूछ्युं त्यारे दासीए पोनाना पुत्र तरफ इझारो कर्यो. राज्य छोभी वनवीरे दासीना पुत्रने उदयसिंहजी धारी मारी नाख्यो. दामी पोताना पुत्रने संहार करावी स्वामीना कुमार उदयसिंहजीनी रहा अर्थे तुरतज वाहेर निकळी. उदयसिंहजीने उठावी गएलो वारीगर वित्तोडणी आशरे वे त्रण गाउ दूर जइ उमो हतो, उक्त दामीए त्यां जइ पोता पासे छइ छीवा अने ए वारीनी सहायताथी ट्रगरपुर तरफ प्रयाण कर्युः मेवाड देशना वशवर्ती केटलाएक राजाओ पामे दासीए उदयसिंहजीना रक्षण अर्थे याचना करी, षरंतु वधा वनवीरना भयथी वदची गया; एथी अधिक उदासीने वहन

करती दासीए कोमलगढना अधीश आशासा पासे जइ कहुं के, आ क्रमार तमारा माळिक मेदपा-टेश्वर छे, आ वखते एना प्राणनी रक्षा करवी ए तमारुं मुख्य कर्त्तव्य छे. आमाशा दासीनी वात सांभळी भयभीत वनी उदयसिंहजींनी रक्षा माटे आनाकानी करवा लाग्या, परंतु सदभाग्यने लीधे ए वखते आसाज्ञाना माता समितिऐ सम्बति आपी के पुत्र ! स्वामीनी भक्ति करनारा ज्ञूरवीरो भय अने चिन्ताना दरियामां कदी पण डुवता नथी। आ वाळक श्रीमान् महाराणा सांगाजीना कुमार अने तमारा स्वामी छै; इश्वर इन्छा हशे तो एतुं रक्षण करवाथी सारुंज परिणाम आवशे. माताना अति आग्रहथी आसाजाए कुमार उदयसिंहजीने पोता पासे राख्या; कुमारने मृत्युना मुख्यी वचावनारी वीर दासीए विचार कर्यों के जो हुं अहीं वधारे वखत रहीश ते। वनवीर वखते आ स्थळनो पत्तो मेळवी आवी पहोंचरो, एम धारी ते तुरतन चित्तोड तरफ चाली निकळी. आ हकीकत ज्यारे राजराणा सुलतानसिंहजोना सांभळवामां आवी त्यारे तुरतज तेओ पोताना सैन्य साथे चित्तोड पधायी, त्यां स्वरूप समय स्थिति कर्या वाद सत्त्वर, केळवा, वागोर अने विजौलिया आदिना सरदारो सहित क्रमार उदयसिंहजीने शोधवा चित्तोडथी चाल्या, केटला-एक स्थळमां शोध करता करता कुंभलगढ (कोमलगढ) मां आबी पहेंचिया अने आसाशाना मुख्यी अखिल हत्तान्त सांभळी सर्व सरदारोए भेट तथा न्योछावर आदिथी उदयसिंहजीने मान आध्यं ए वात ज्यारे वनवीरना जाणवामा आवी त्यारे तेणे समग्र सरदारोने दंड देवा माटे एक महान् सैन्य मोकल्युं, आ तरफ सर्व सरदारोए एकत्र थइ वनवीरनी सेनाने परास्त न करी, परंतु वनवीरनेज राज्यथी पदभ्रष्ट करी दक्षिण देश तरफ मारी भगाड्यो अने वि. सं. १५९७ मां महा-राणा उदयसिंहजीने चित्तोडना राज्यासनपर वेसाडी सह पोतपोताना राज्य भणी रवाना थया।

मेवाह देशमां श्रीमान् महाराणा सांगाजीना स्वर्गमन पछी महाराणा विक्रमादित्यनी अनीतिनुं ए परिणाम आव्युं के चित्तोहनी राजगादीपर दासीपुत्र वनवीर वेठो अने त्रण पेढी पर्यन्त ए देशमां अमवन्ध रहेवाथी द्यूर छुभटोनी मकृतिमां केटछंएक परिवर्तन थइ गयुं. महाराणा उदयसिंहजीना सर्वथमां महाशय टॉडसाहेवे एटछे सुबी छख्युं छे के ए राजामां राज्य चछाववा जेटळा गुणो जोइए तेमांनो एक पण गुण न हतो. श्रीमान् राजराणा सुक्रतानसिंहजीए चित्तोडयी रवाना थइ पोतानी राजधानीमां पग मुक्यो त्यांज महाराणा उदयसिंहजीनो पत्र आव्यो के " दिन्हिपिति चित्तोडना विजय माटे कटिवद्ध थएछ छे अने ते स्वल्प समयमाज आवी पहोंचवा संभव छे. माटे आप सैन्य सहित सत्वर अहीं पधारो. " एज वखते राजराणाए पोतानी सेना सहित

चित्तोड तरफ प्रयाण कर्यु, सामी वाज्यथी यवनेश्वर पण म्होडं लइकर लइ आवी पहोंच्यो. दिल्ली-श्वरना आगमनथी चित्तोड छोडी अन्य स्थळे चाल्या जवानो विचार मेदपाटेश्वरना मनमां धयो; कदाच तेओए तेम वर्यु होत तो पण कांइ वांघा जेवुं न हतुं, कारण के स्वदेशनी रक्षा अर्थे अने-क क्षात्रवीरो एकठा थएला हता. यवनो साघे महा भवंकर युद्ध मच्यु, जेमां सलूंबरना राजा साइ-दासजी, रावत दूधाजी, विजोलोयाधोश, श्रीमान् राजराणा सुलतानसिंहजी झाला, इत्वरदासजी राठोड, कर्मचन्द्रजी कछशहा, ग्वालिअरना राजा तुंवर अने राठोड जयमलजी (जेनो संत-तिमां वदनौरना राजा छे) अनेरूप शत्रुओ संहार करी काम आव्या, ए रणभूमिमा वीर क्षत्रीओए आत्मभोग आप्यो एटछन नहि, परतु केटलाएक इतिहासो वांचता कबुछ करवुं पड़े छे के ते समयनी शूरी क्षत्रियाणीओए पण स्वजाति, स्वदेश अने पोतानापतिओनी पाछळ आत्मवलिदान आपेछं छे; ए वीरताने साधारण न समजवी, कारण के जेना श्रवणमात्रथी पंढने शौर्य चढे छे: आळसने उद्यम, अधीरने धैर्य अने निर्वळने वळ प्राप्त थाय छे अने भीरु जनो पण हिम्मतमां आवी स्वदेशना संरक्षण अर्थे एकदम हाथमां हथियार उठावे छे. जे समये सर्छ्वरना राजा स्वर्लोकमां सिधाच्या त्यारे आमेटाधीश तेओना स्थानपर नियत थया, ते वखते तेनी अव-स्था यात्र सोळ वर्षनी इती, तेओने सती माता तरफथी उपदेश मळ्यो के कुमार ! केसरीआं वहा धारण करो अने चितोडनी रक्षा अर्थे आत्मभोग आपो. " आमेटाधीशे एज प्रमाणे करी वताच्युं. राटोड फताजीनी माताए फताजीने तेनी स्त्री सुद्धांतनो मिलाप थवा न्होतो दीधो, कारण के स्त्रीना संसर्गथी शौर्यथी घटी जाय छे, अथवा तो स्त्री युद्ध अर्थे सज्ज थए रा स्वामीने इलकुं ओसाण आपी निरुत्साह करी नांखे छे. फताजीनां माताजीए तथा स्त्रीए युद्धना वस्त्र तथा शस्त्र धारण कर्या अने दुर्गथी नीचे उतरी दुश्मनो उपर तलवारो चलावी, अंते शौर्य भरेलां साम्र वह वन्ने संग्राममां काम आव्यां, पोतानी ह्वीओनु शौर्य तथा साहस जोइ वीर क्षत्रीओ लांवा वखत सुधी यवनोसाथे लडता रह्या, छेवटना युद्धमां समग्र सुभटोए केसरीआं परिधान पहेरी किञ्चाना कमाड खोली नांख्या अने हुअपनोना दळमां असह कापा कापी चलावी असंख्य यवनोनो संहार करी त्रीश हजार क्षात्र वीरो रणक्षेत्रमां काम आव्या, मेदपाटेम्बरना सत्तरसो प्रतिष्ठित सरदारो स्वर्गे सिधाव्या. अकवरे चित्तोड डपर विजयनी ध्वजा फरकावी अने मेवाड देश माथे एक अधिकारी योजी पोते दिल्ही तरफ म-याण कर्यु. महाराणा उदयसिंहजी चित्तोडथी निकळी पीपलिया आदि पर्वतोमां नाना प्रकारना कप्टने सहन करता ए स्थळे आव्या के जे स्थळ आ वखते मेवाड देशनुं एक मुख्य शहेर छे, मत-

लव ए स्थले महाराणा उदयर्सिहे पोताना नामथी एक नगर (उदयपुर) वसाव्युं, त्यारवाद थोडा वित्तते पछी ए राणा ४२ वर्षनी उम्मरे गोगृंदामां स्वर्गवासी थया.

वि॰ सं॰ १६२४ मां स्वर्गस्य राजराणा सुलतानर्मिहजीना कुमार मानर्सिहजी उर्फे वेटाजी राज्यासन पर विराजमान थया, ए वखते महाराणा उदयसिंहजी विद्यमान हता. सं० १६२६ मां हैदरावाद तथा लखनऊना अधीश्वरोए मेवाड उपर चढाइ करी अने आर्यभूमिना मध्य प्रदेशनो विजय करता करता उज्जयनी सुधी आवी पहोंच्या, एवा सुक्ष्म समयमां मेटपाटेश्वरे राजराणा मा-निसंहजीने पत्र लखी मोकल्यों के आपणा देश उपर हैंदरावाद तथा लखनऊना राजाओं चढी आच्या छे, माटे आप मेवाडभूमिना रक्षण माटे तेओनी साथे युद्ध करवा जजो. महाराणानो पत्र मळतांज राजराणा मानसिंहजी सैन्य सहित सज्ज थइ यवनो साथे आखड्या, भयंकर युद्ध कर्यु, अवर्णनीय भ्रजवळथी यावनी सेनाने छिन्न भिन्न करी नांखी अने महद उत्साहथी विजयवावटो फ-रकावता मेदपाटे वरनी समीपे हाजर थया, ए वखते महाराणा उदयसिंहजीए तेओनी स्वामीभक्ति, स्वदेशभक्ति, स्वजातिभक्ति, अने अमोघ शक्ति जोइ आनंद पूर्वक मसन्नता मगट करी, त्यारवाद थोडाज वखत पछी ए मेदपाटेश्वरनो स्वर्गवास थयो. वि० सं० १६२८ मां श्रीमान् महाराणा प-तापसिंहजी स्वर्गस्थ पिता उदयसिंहजीना अधिकार उपर नियत थया, तेओ पोताना पितामह म-हाराणा सांगाजीनी माफक पुरुषार्थी हता, तेओनां धेर्य अने पराक्रमथी भारतवासीओ भाग्येज अजाण्या हशे. हलदीघाटना अममेय युद्धमां परम मतापी मतापराणाए शाहजाडा सलीमने भयभीत वनावी भगाड्यो त्यारे तेओना शरीर पर सात प्रहार थइ चुक्या हता, रुधिरथी वल्लो रंगायां हतां, एवामां असंख्य शत्रुओए आवी तेओने घेरी लीधा, मतापे जाण्युं के हवे जीवननी आशा व्यर्थ छे, कारण के पोतानो एके सुभट पासे न हतो, तेवामां राजराणा मानसिंहजी तीक्ष्ण तलवार रुपी म-लयना पवनथी विकट वैरीरुपी वारिधरोने विखेरता झपटथी स्वकीय सैन्य सहित त्यां आवी पहोंच्या अने प्राणनी न्योछावरना प्रत्यक्ष प्रमाणने पदर्शित करी मेदपाटेश्वरना प्राण वचाव्याः तेओए तुर-तज महाराणाना मस्तक उपरथी मेवाडना राज्यचिह्नो उतारी पोताना शिर पर धारण कर्यो अने मुवर्णछत्रथी सुशोभित थइ रक्त वर्णनो विजयध्वज उठावी सगर्व शत्रु सैन्यमां प्रवेश कर्यो, देदीप्य-मान राज्यचिह्नो देखी प्रतिपक्षीओ एओनेज राणाजी समजी मारवा माटे चारे तरफथी जुटी पड्या, वीरवर मानसिंहजीए पोताना पवल सैनिको सहित वैरीओने विह्नळ वनावी आत्मभोग आप्यो ए महाराणा पतापे दूरथी देखी धन्यवादनो उचार कर्यो. ए अपूर्व पाणार्पणना वदलामां झालानरेश मानसिंहजीना

वंशजो अद्यापि मेवाडना राज्यिचिहोथी अलंकृत वनी मेदपाटेश्वरनी जमणी वाजुना आसन पर वि-राजमान थाय छे. कर्नल टॉड साहेव लखे छे के राजराणा मन्नाजीना वंशजो सादडीनी राजधानी अने महाराणा प्रतापिसंहजीए आपेली अनन्य दृत्तिओनो आज सुधी उपभोग करे छे; एओतुं नगारुं राजमन्दिरनां द्वार पर्यन्त पोतानी साथे ने साथे वजतुं रहे छे, एवुं सन्मान वीजा कोइने पण प्राप्त थयुं नथी, ए उपरांत एओ " राजा " एवा नामथी पण ओळखाय छे. राजराणा मान-सिंहजीनी प्रशंसा करतां कोइएक कविए कह्युं छे के—

कवित्त.

प्रेरे पतशाहदल उमंग अशेष करि, दीपे ध्वजदंड ब्रह्मंड अरि मह्नहां ॥ घेरि चहुं कोंद आन रोकि रहे रान हुको; मान सकवान तहा जुटो रण हह्नहां ॥ ढाहे करिगनको उडाये रथ बाजिनको, समर विछाये कीने साह उर सह्नहां ॥ पार कर नाहको विसार जग चाहको सु झार समसेर अगि मार मयों झह्नहां ॥

साम उवारे विच समर, शिर धार्यों ध्रम साम; वेद अह कुलधर्मकों, तें राख्यों इ तमाम ॥ सोरग्र.

आगे नृप अजमाल, सरसाटे खाटे सको; वीदा कुंवर विसाल, उत वन्दे राखी अडग ॥ तोले भुज तरवार, लार राण खल लुंविया; वणे ढाल उणवार, वीदा खाग .वढो.



दुहूं तरफ तोपांदगी, बगी खाग रणवीर; झालापर झिलया जठे, छत्र चंवर छंहगीर॥ तोप तुपक चलता तटे, हिकया अश हम गीर; झालापर झिलया जठे, छत्र चंवर छंहगीर॥ टूटो पग चेटक तणो, साम बचाय शरीर; राण मान शिर राखिया, छत्र चंवर छंहगीर॥

र जराणा मानसिंहजीनो प्रथम विवाह यरुधराधोश (मारवाडना राजा) रावचन्द्रसेनजी-नां कुंबरी साथे तथा वीजो विवाह मैनपुरीना महारावत नारसिंहजीनां कुंबरी साथे थयो हतो.

वि. सं. १६३३ मां राजराणा मानिसंहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना क्रमार देदाजी राज्या-सन पर विराज्या. जे वखते राज मानिसंहजीनो देहान्त थयो ते वखते राजकुमार देदाजी झाडो-लमां हता, त्यांथी पोताना पाटवी पुत्त अमरिसंहजीने मोकली महाराणा प्रतापिसंहजीए तेओने मान-पुरःसर पोता पासे वोलाव्या; पहेले दिवसे राजराणानी हवेलीए पधारी शोक प्रदर्शित करवा एक म्होटी सभा भरी अने वीजेज दिवसे पोताना राज्य महेलमां राजकुमार देदाजीने तलवार वंधावी तथा तेओना स्वर्गस्थ पितानी स्वदेशभक्ति तेमज युद्धपटुता विषे मुक्त कंठथी प्रशंसा कर्या वाद एज वखते राजराणाना उत्तराधिकारीओने निम्न लिखित प्रतिष्ठा अपण करी.

- १. जे जे वखते राजराणाना उत्तराधिकारी राजगादीपर नियत थाय ते ते वखते तेओने ज्यां होय त्यांथी लेवाने माटे मेदपाटेश्वरना पाटवी कुमार जाय.
 - २. राजराणाना दुंदुभि वंशपरंपरा महाराणाना राज्यमहेलपर्यन्त वाग्या करे.
 - ३. मेदपाटेश्वरे पोतानी पुत्रीनो विवाह राजराणा देदाजी साथे कर्यो.
- ४. वेसता वर्षनी सलामी वखते राजराणा गोठ आरोगीने पधारी जाय अने तेओना राज-कुमार होय तो ते ते दिवसे सैन्य सहित सलामी आपवा हाजर रहे.

महाराणा प्रतापसिंहजी संकटने वखते जे जे स्थळे जता ते ते स्थळे राजराणा देदाजी सा-थेज रहेता; छेत्रटे सिन्ध देशमां वसेळा मेदपाटेश्वरे मेवाडना जुना मंत्री मामाश्वानी मददथी युद-

नी सामग्री एकठी करी फरी मेवाडमां विजय वावटो फरकाव्यो अने वि-सं. १६५३ मां संकट वेटी वेटी शिथिल थएला शरीरनो त्याग करी स्वर्गे सिधान्या, त्यारवाद महाराजकुमार अमरसि-इजीए मेदपाटेश्वरतुं पद धारण कर्युः राजराणा देदाजी उदयपुरथी पोतानी राजधानीमां पधार्याः स्व-ल्प समय सुधी मेवाडमां सुखज्ञान्ति रही, परंतु सं. १६५६ मां पोताना पिताए वावेळ वैरना वीज-ने अंकुरित करवा जहांगीरे मेवाड उपर चढाइ करी अने मेवाडनो विध्वंस करवानी इच्छाथी ए कुटिल नीतिवाळो यवनेश्वर दिल्हीथो प्रयाण करी आमेर तथा अजमेर आदि प्रान्तोनो विजय कर-तो करतो देवारी नामना द्वारमां सैन्य सहित आवी पहोंच्यो. ए समाचार महाराणा अमरसिंहजी तरफथी मळतां राजराणा देदाजी तुरतज उदयपुर पधार्या, तेओ त्या पहोंच्या वाद सर्ळूवराधीश आदि प्रतिष्ठित सरदारो सहित म्होटुं सैन्य छइ महाराणा अमरिसहजी रणभूमिमा आवी उपस्थित थया. शुरवीर क्षात्र सुभटोए असाधारण पराक्रमथी यवनसेनाने छिन्नभिन्न करी जहांगीरने भगा-ट्यो. पराजय पामेळो जहांगीर बहुज शरमाया, तेणे पराजयथी शप्त, थएळा कळंकतुं निवारण कर-वा माटे , छखनऊना नवावना न्हाना भाइने सैन्यतुं आधिपत्य आपी फरी मेवाड उपर चडाइ करी. आ तरफथी श्रीमान् महाराणा अमरसिंहजी पण अगणित शुरा सरदारो सहित युद्धनी विविध सामग्री एकत्र करी म्होटा दमामथी गोडवाडान्तर्गत राणपुर नामना ग्राम पासे वादशाही सेना सामे आबी पर्होच्या केटळाएक दिवस अने रात्रि पर्यन्त भयंकर युद्ध चाल्युं, असंख्य सुभ-टो अने सरदारो काम आव्या. महापराक्रमी राजराणा देदाजी पण घोर रूपथी घायळ थइ स्वर्गे सिधाव्या. जो के मेदपाटेश्वरना सैनिकोनो विशेष विध्वंस थयो, परंतु परिणाम ए आव्युं के जहां-गीर पुनः पराजय पामी मेवाडधी पाछो फर्यो. ए युद्धनुं वर्णन करतां ए वखतना कोइएक कविए बहां छे के---

दोहा.

राणपुरे झगडो रचे, रिवरथ खेंच रसाल; देदा जुध जुडियो जदन, विढयो खगां विशाल ॥ शामधरम निज कुलधरम, धर उर परम सुधीर; तूं दूदा वीदातणा, विडयो जुध वडवीर ॥

श्रीमान् राजराणा देदाजीनो प्रथम विवाह मारवाडना महाराजा सूरजसिंहजीनां कुंवरी

साथे थयो हतो, तेनाथी हरदासजी, रामिसहजी तथा नरहरदासजी नामे त्रण कुमारो थया अने वीजो विवाह महाराणा प्रतापिसहजीनां कुंबरी साथे थयो हतो, तेनाथी द्यापिसहजी तथा रतनिसिंहजी नामे वे कुमारो थया वि—सं. १६६६ मां राजराणा देदाजीनो स्वर्गतास थवाथी खरी रीते पाटवी कुमार हरदासजीने राजगादीना हकदार गणी ज्ञाकाय, परंतु तेओना छघुवन्यु ज्यापिसहजी मेदपाटेश्वरना भाणेज होवाथी भेदपाटेश्वरे पोताना भाणेजने राज्यासनपर वेसाडवानी इच्छा प्रगट करी अने पोताना कथननो पृष्टि करदा एवी आज्ञा आपी के कदाच आमेर अने मारवाडना भाणेजो उदयपुरना भाणेज करता महोटा होय तोपण उदयपुरना भाणेजनेज महोटा मानवामा आवशे परंतु राजधानीना कार्यभारी, अधिकारी तथा सरदारोए मेदपाटेश्वरनी ए आज्ञानो अस्वीकार करी विनंति करोके राजकुमार हरदासजी सत्य रीते राज्यगादीना हकदार छे, तोपण मेदपाटेश्वर तेओना कथन उपर कांइ पण लक्ष निह आपतां पोताना वचननेज वळगी रह्या अने उक्त दुराग्रहने लीये एक वर्ष पर्यन्त राजराणानुं सिंहासन शुरूय रह्यं.

सं. १६६६ मां दिल्हीपित जहांगीरना शाहजादा परवीजे मेवाड देश उपर चढाइ करी ते वाबतनी राजकुमार हरदासजीने मेदपाटेश्वर तरफथी माल सूचना करवामां आवी हती, तेना सामे उपस्थित थवानी आज्ञा न्होती आवी, तोपण वीरवर हरदासजी एज वखते वादशाही सैन्य साथे युद्ध करवा चाळी निकळ्या, हजु महाराणानुं सैन्य आव्युं नहतुं ते पहेळां तो हरदासजीए भयंकर युद्ध करी यवनसेनाने पाळी हठाडी अने परवीज पराजय पामी दिल्ही तरफ जतो रह्यों ए समाचार ज्यारे महाराणा अमरिसंहजीने मळ्या त्यारे तेओए अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक राजकुमार हरदासजीने " झाडोळ " उपरांत " कानोड " नी रिसायत अर्पण करी अने आम दरवारमा तेओनी स्वामीमिक्त तथा वीरता विषे मुक्त कंठे मशंसा करी. राजराणा हरदासजीए पण मेदपाटेश्वरनी आन्तरिक इच्छाने जाणीने तेमज भ्रातृभावना वात्सल्यने ळीचे पोताना छप्च वन्यु श्यामासंहजीने " झाडोळ " नी रिसायत आपी के जे हाळ पण मेवाडनी वत्रीश रिसायतोमानी एक प्रतिष्ठित रिसायत छे.

ज्यारे महाराणा अमरासिंहजीए मेवाड ७पर चढाइ करी आवेळा झाहजादा ख़र्रम पासे माफी मागी त्यारे सिन्ध कराववामां राजराणा हरदासजी सामेळ हता, पाछळथी तेओ दिल्ही प-धारेळा, फरी दिल्हीथी ज्यारे जदेपुर आव्या त्यारे कोइपण गुप्त कारणथी मेदपाटेश्वर तेओना उपर अमसन्त्र थया. मेदपाटेश्वरनी अमसन्त्रता जाणी राजराणा हरदासजी जदयपुरथी रवाना थई कानोड पधार्या, तेओना पाटवीपुत्र राजसिंहजीनां स्नम्न महाराणा अमरासिंहजीनां कुंत्ररी वेरे थएल हतां. एटलान माटे ए कुमारने राजराणा साथे जवा मेदपाटेश्वरे आज्ञा न आपी. राजराणा हरदासजी स्वल्प समय कानोडमां रही दिल्ही पथायी, ए समाचार सांभळी महाराणा वधारे अ-प्रसन्न थया, एटलुंन नहीं पण राजकुमार रायसिंह नीने कानोडनी गादीए वैसाडवा उद्यत थया, परंतु धर्मज राजकुमार रायसिंहजीए तेओने सविनय प्रार्थना करी के मारा पिता कानोड राज्यना अधीश्वर छे. तेओनी हयातीमां हुं राज्यासनपर पाय धरुं ए धर्म अने नीतिथी विरुद्धज गणाय. जो आप मारा उपर प्रसन्न थया हो तो आप मने वीजी रिसायत आपी शकवा समर्थ छो. राजसिंह जीनां आवां वचनो सांभळी महाराणाए तेओने हाथखरची माटे वार्षि कर. ५००००) पचास इजार आपवा हुकम फरमाव्यो. वि. सं १६७७ मां दिल्होनी अंदर द्रोह शरु थयो. म्होटी खटपट जागी, खटपटी मंडलना अग्रणीनुं पत्र शाहनादा शाह. जहांए स्वीकार्य हतुं, जहांगीरे तेने पक्रडवा माट एक म्होटी फीज तैयार करेली, परंत ते वखते शादजहां दिल्हीथी भागी उदयपुरमां महाराणा अमरसिंहजीने आश्रये आवी रह्योः राजराणा हर-दासजी दिल्ही पहेंच्या बाद बादशाहना समीपवर्ती सभासदोनी माफक रहेवा छाग्या. दृष्ट राज-द्रोही ओए वे वखत वादशाहनी तथ करवा ज्यम कर्यी, परंतु ए वेय वखते राजराणा हरदासजीए अपूर्व वहादुरीथी यवनेश्वरना माण वचाव्याः वादशाह श्रीमान् हरदासजीनी उक्त राज्यभिक्षियी अत्यंत परान्न थया अने तेओनी साथे पाघडो वदल भातुभाव वांध्यो तेमन निम्न लिखित प्रतिष्ठा अर्पण करी. मथम तो ए के वादशाही दरवारमा मथम दरज्जानी वेठक, वीजुं समग्र भारतवर्षमां पिंड थाल वजाववानी आज्ञा, त्रीजुं अरुण वर्णना शिरोभागवाळो वादशाही तंत्रू अने चोथुं हमेशां स्वारीने माटे इन्द्रवाहन तथा ए उपरांत एक मणिजडेल तलवार अने वीजी केटलीएक विस्मती चीजो आपी, तेमज स्वकीय दरवारमां सघळा छहीदारोने हुकम आप्यो के अमारा दर-बारमां भाइ इरदासजीनो इच्छा थाय त्यारे आववा देवा, कदीपण अटकायत करवी नहि. थोडो वखत वीत्या वाद दिल्ही खरे राजराणा हम्दासजीने कह्युं के ज्यारे महाराणा आप उपर अति मसन धाय त्यारे शुं आपे ? इरदासजी वोल्या के पोताने जमवानी याळीमांथी एक दूनो त्यारे वादशाहे कहुं के अमी पण आवती काळे आपने दूनो आपीछुं, जो के राजराणा हरदासनी नीति अने भविष्यने जाणी शके तेवा हता, तो पण यवने वरनी ए आज्ञा सांभळी अत्यंत चिन्तातुर यया, पोते पदो निश्चय करी लीघों के चादकाह मने पोतानो उच्छिष्ट भोजननो दुनो अपिशे अने ू यवनतुं एढं खावं ए तो महान् अधर्म गणाय. कदाच वादशाह अजीढं भोजन आरोगाववा हर करे तो तेओनी साथे युद्ध करी स्वधर्मनो रक्षा करवानो हट संकल्प कर्यो अने वीजे टिवसे दरवार टाणे सैन्यने युद्धनी सामग्रीथी सज्ज करी पोते वादशाह पासे पधार्या; परंतु वादशाहनी कांइ एवी इच्छा न हती, तेणे तो एक कुळीन ब्राह्मणना हाथथी मिठाइ मंगावी तथा वीश ळाख रुपिआनी आमदानीवाळा मन्दसोर राज्यनो पट्टो ळखीने वन्ने चीज एक दूनामां राखी राजराणा हरदासजीने आपी, श्रीमान् हरदासजीए तेनो सिवनय स्वीकार कर्यो अने वादशाहनी आन्तरिक मीति तथा उदारतानी पशंसा करी, ते समयना कोइएक कविए कहेळ छे के—

" छप्पय ["]

भगवागल रणजीत, हौदाजुत दुरद वडाला; रण बाजो समशेर, घण्ट वाजत घडियाला; बले इन्द्र विवाण, अगन रूडा ऐराकी; दीधी पटे दसोर, और बैठकां सरांकी; कढत साक्षात चघता तिलक, दे ड्योडी अप्पल दुवा; हरिदासराण जहंगीरशाह, पाग बदल बंधव हुवा.

ए रीते दीर्घकाल पर्यन्त पूर्ण योग्यता अने मानपूर्वक राजराणा हरदासजी वादशाह जहांगीरनी पासे रह्या. ज्यास्थी मेदपाटेश्वरे राजद्रोही श्वाहजादा ख़ुरमने आश्रय आप्यो त्यारथी वादश्वाह तेओना उपर अमसन्न हता, एनं परिणाम ए आव्युं के दिल्हीश्वरे मेवाड उपर चढाइ करवा
सेनाने आज्ञा आपी. ए खवर सांमळी राजराणा हरिदासजीए मेवाड तरफ जवा यवनेश्वर आगळ
रजा मागी, परंतु जहांगीरे जवाव आप्यो के आ वखते आपने मेवाड जवा माटे रजा मळशे निह,
त्यारे फरी हरिदासजीए विनित करी के आ वखते महाराणा उपर आपित छे, एओनी सेवा वजाववी ए मारुं मुख्य कर्तव्य छे. जो हुं आवे समये एनी सेवामां हाजर न याउं तो स्वज्ञातिमां तथा
महान पुरुषोमां मारी निन्दा थाय अने राज्यभिक्तमां पण खामी जणाय. आटळुं आटळुं कह्या छतां
जहांगीरे त्या जवानी चोखी ना कही त्यारे श्रीमान राजराणा वीश्चळाखनी आमदानीवाळो मन्दसोरनी राजधानीनो पट्टो बादशाहने पाछो आपी मेवाडमां आववा उद्यत थया, एओनी राज्यभक्ति सवंधी यवनेश्वरे मुक्तकंठे प्रशंसा करी अने कहां के आप निःसंदेह बनी स्वदेश्वमां गमन करो,

परंतु आपना परिवारमांथो कोइएकने अपारी पासे राखी जाओ, वादशाहनी आवी आहा थतां राजराणा हरिदासजी पोताना न्हाना भाइ नाहरदासजीने तेओ पासे राखी मेवाड तरें पधार्या वादशाही फोज दिल्हीथो रवाना घइ मेवाड मध्ये हरडे नामना ग्रामना आवी हती त्या राजराणा हरदासजी पण अत्यंत उतावळथी आवी पहींच्या मेदपाटेश्वरे मोकछेळुं सैन्य हज्ज चाल्युं आवतुं हतुं, ते पहेळा तो स्वामीभक्त हरदासजी वादशाही सेना साथ भयंकर युद्ध करी घोररूपे घायळ थया हता महाराणानी सेना आवी पहींचतां फरी युद्ध शरु घयुं अने तेमा यवनसेना पराजय पामी राजस्थानना इतिहासमां लखेळुं छे के " ज्यारे राज्यभक्ति तथा वीरताना मावस्थवहे राजराणा हरिदासजी घायळ थयानी मेदपाटेश्वरने स्वना मळी त्यारे पोते रणक्षेत्रमां पथार्या अने ते-ओनां दर्शन थताज श्रोपान हरदासजी स्वर्गना निधावी गया महाराणाने एवा वीरनरना स्वर्गनमनधी अत्यंत श्रोक थयो कोइएक कविए राजराणा हरदासजीनो मशंसा करतां कर्छुं छे के न

" इडप्पय "

वदल खुर्रम साहसूं, राणरे शरण हु आये;
करी रीस पतसाह, फोज भेजण फरमाये;
सुणे हुकम हरिदास, सामध्रम आद संभारे;
पटो नजरकर प्रथम, फेर मुख वचन उचारे;
करसीख जाय दिवाणको, हुकम सीसपर धारहूं
करआय फोज हंता कलह, पल जस वोल उवारहूं॥
सीख नही पतशाह, अनुज हरिदास रखेउत;
दसहजार ले दुह, थान अजमेर आये थित;
शाह चमूंपर सुपँह, विडंग हांकले महावत;
जत्रकत्र करींज दीन, वगहु तोलिक पेखलत;
कर फते राण करणेसरी, काट कलम सरहर करे;
उजाले लूण दूजो अजो, अलजस हाका जवरे॥
कानोडनां प्रसिद्ध स्थलो जोतां खात्री थाय छे के ए जगोए केटलाएक कालपर्यन्त झाला-

वंशे राज्य कर्यु हतुं. जेतुं नाम पूर्वे हरमन्दिर अने हालमां गोपालमंदिर छे ते तथा रामपुरा ग्रा-ममां पूर्वे बनावेछुं मातातुं मन्दिर ए वन्ने कानोडना माचीन राज्यकर्ता वीरनरेश झालाओनां मत्युँक्ष स्मारक चिन्ह छे. राजराणा हरदासजीनां लग्न भीडर, देवगढ, कोटारिया, कोटा अने वने-ढाना अधीशोनी पुत्रीओ साथे थयां हतां.

वि. स. १६७९ मां श्रीमान राजराणा हरदासजीनो स्वर्गवास थतां राजक्रमार रायर्सि-हजीए राजराणानुं पद धारण कर्युं. महाराणा कर्णसिंहजीए तेओने उटयपुर वोलावी तलवार वं-धावी अने झालावंशे वजावेली राज्यभक्तिनी घणीज प्रशंसा करी एक लक्षनी आमटानीवाळं वडी सादडी तुं राज्य समर्पण कर्धु, ते उपरांत तेओना पूर्वजोए प्राप्त करेल तथा स्वर्गस्य राजराणा इर-दासजीए वादशाह पासेथी मेळवेळ मान, प्रतिष्ठा अने राजन्हि विगेरे वंगपरंपरा भागववानी आजा आपी. रॉजिराणा रायसिंहजी पोताना पिता तेमज पितामहनी माफक महान पराक्रमी अने तेजस्वी इता. पूर्वे राजराणा हरदासजी ज्यारे मेदपाटेश्वर तरफथी राजमंत्री वनी वाटगाह जहांगीर पासे रिह्या हता, ए अरसामां जहांगीरे राजकुमार रायसिंहजीने मळवानी उत्सुकता वतावी हती. राज-राणा हरदासजीए कहां के ए क्रमारनी प्रकृति सहनशील नथी, कदाच हुं एओने अही वोलावं तो आप अपसन्न तो निह थाओ ? जहांगीरे जवाव आप्यो के आप निःसंटेह रहो. अमो क्रमारनी मकृति तथा दोषो उपर ध्यान देशुं नहि. वादशाहनुं आवुं फरमान थतां राजराणा हरटासजीए मेदपाटेश्वरनी सेवामां एक विनयपत्र लख्यो, एनो आशय ए हतो के '' दिव्हीश्वरना अंतःकरणमां क्रमार रायसिंहजीने जोवानी घणीज इच्छा छे तो आप तेने अनुग्रहपूर्वक दिल्ही आवव। माटे आज्ञा आपशो." हरदासजीनो पत्र वांची महाराणाए रायसिंहजीने दिव्ही जवानी परवानगी आपी. रायसिंहजीए दिल्ही आवी नूरजहां वाटिकामां निवास कर्यो त्यां वाटिकाना रक्षके पोतानी आज्ञानुं पुज्य पिताश्रीना निवासस्थाने पधार्या. राजराणा हरदासजी कुमारना आगमनथी अत्यंत प्रसन्न थया. वीजेज दिवसे कुमार रायसिंहजी वादशाह जहांगीरनी मुलाकाते पवार्यी, तेओनुं राजदरवा-रमां पहेल वहेळुंज पथारवानुं होवाथी छडीदारे कर्बुं के आपने वादशाहना फरमान सिवाय राज-दरवारमां दाखल थवा देवामां आवशे नहि, छडीद।र आम वोलते। हतो एटलामांतो राजकुमार रायसिंहजीए तेने एक एवी थप्पड मारी के ए थप्पड लागतांज छडीद।र यमपुरीमां सिधावी गयो. ए वखते कोइएक कविए कहुं छे के-



" दोहा "

कुण झाला सम वड करे, वीरमरंद अणवार; हाथल राया सिंगरी, दिल्ही तणे दरवार ॥ कटारी अमरेशरी, इन्दारी तलवार; हाथल रायासिंगरी दिल्हींतणे दरवार ॥ तें वाहीं हरदासतण, आम खाल विचआय; हादल राया सिंगरी, सारी जगत सराय ॥

रायसिंहजीनी आवी रौद्रमयी प्रकृतिन्नं श्रवण करी छेशपण माठुं न लगाडतां यवने वरे तेओने एकमास पर्यन्त पोता पासे राख्या अने मान तथा मतिष्ठापूर्वक केटलांएक वस्नाभरण आप्यां. रायसिंहजीए अरज करी वादगाह जहांगीर पासेथी त्रण लक्षनी आमदानीवाळो मेवाडनो जे पदेश अजमेरना सुवाए दवाच्यो इतो ए पाछो मेदपाटेश्वरने मळे एवो पत्र सुवा उपर लखावी लान्या. सं. १६७८ ना कोइएक मासमां महाराणाने " केसरी सिंहनो शिकार अमुक स्थळे छे" एवा समाचार मळ्या, एज वखते एओ,पोताना अखिल उपरावोने एकत्र करी शिकारे पथार्था. इमार रायसिंहजीना सेवक पासे एक कादा नामनुं शख्न हतुं तेने जोइ कोठारीयानरेशे इसीने मेदपाटेश्वर पासे पार्थना करी के रायसिंहजी आ क्वादाथी सिंहनो संहार करके; महाराणाए गंभी-रता पूर्वक जवाव आप्यो के एमां नवाइ शी ? क्षत्रीओ सर्व कांइ करवा समर्थ छे, तेओ कवादाथी सिहनो वध करे एमां आश्चर्य पामवा जेवुं नधी." ज्यारे महाराणा सामान्य वनमांथी महावनमां पघार्या त्यारे जंगली जनोए सिंहने जागृत करवा माटे उन्नत अनाजे होकारो कर्यो एज वखते एक पंचानन राजक-मार रायसिंहजी पासे थइ निकळ्यो, तेओए असाधारण पराक्रनथी ए सिंह उपर क्वादानो प्रहार कर्यो, एकज महारथी खास रहित बनेलो सिंह पंचत्वने माप्त थयो, ए जोइ मेदपाटेश्वर रापसि-हजी उपर अत्यन्त मसन्न थया अने मितिष्टिन सरदारों समक्ष तेओए राजराणा अजाजीयी आरंभी रायभिंहजी पर्यत झालाओना असाधारण शौर्य सर्वधी संक्षिप्त हत्तांत कही संभळान्युं अने एज समये कुमार रायासंहजीने वंशपरंपरा निम्निकिखित मतिष्टा अर्पण करी.

- १ वडी साद्दीना कुमार जे बखते राजदरवारमां आवशे त्यारे तेओने सोळ उपरावोनी समान वेठक मळशे.
 - २ राजराणानी मुजरो नकीवद्वारा थती रहेशे.
- ३ राजदरवारथी विदाय थती वखते सोळ उपरादोनी माफक राजराणाने पण वीड आ-पवामां आवशे, अने अन्तिम विदायगीरी वखते सादडीना कुषारने पण मोळ उपरावोनी पेठे शिरपाव देवामां आवशे.
 - ४ अमरबहुद्धा अर्थात हमेशांने माटे राजराणाने अन्व आपवामां आवशे.

राजराणा रायसिंहजीए राजगादो पर विराजमान थया पछी विद्युद्ध राज्यभक्तिवडे ूमहाराणाने राजी राख्या अने तेओना प्रतिनिधि तरीके दीर्घ काळ पयन्त पोते दिल्हो दरवारमा रह्या. वि० सं० १६८३ मा वादशाह जहांगीर वेहेरननशीन यतां शाहजादा खुरेम उपें शाहजहाए दिल्हीना तत्क्तपर पाय धारण कयों: ज्यारे खुर्रम पाताना पितानी इतराजी पामी महाराणाने आश्रये आवी रह्या इता त्यारेज तेओए वीरता अने पराक्रय आदि सद्गुणोथो सुझोभित श्रीमान् रायसिंहजीने पोताना िय पित्र बनाव्या हता. मस्तक पर बादशाही मुक्कट यारण कयी पछी ए मित्रने प्रतिष्ठापूर्वक म्होटा नान सिहत स्वराज्यना मुख्य सभासदोमा नियत कयी. राजराणा रायसिंहजीए पण राजसभामां सर्वोत्कृष्ट कार्यो करी शाहजहाने अपूर्व संतोप आप्यो, एतुं परिणाम ए आन्धं के जहांगीर अने हरदासजी माफक शाहजहां तथा रायसिंहजी पावडीवदछ भाइ थया; श्रीमान् रायसिंहजीए ज्ञाह ख़र्रम पासे दश मास पर्यन्त रह्यावाद सादडी जवा माटे आज्ञा मागी त्यारे शाहजहांए तेओने केटलांएक किम्पती वस्न, तथा अलंकारो आपो प्रसन्नतापूर्वक विदाय क्या, अने पात कहां के हुं आपने मळवा माटे सादडी आवीश. वित्र शाहजहाना अपूर्व स्नेहयी आनंद पामेला राजराणा रायसिंहजी सादहीमां पधार्या अने आवनार अतिथिना आतिथ्य माटे नाना प्रकारनी अनेक सामग्रीओ एकत्र करावी वि० सं० १६८४ मां वादशाह खुर्रमनी स्वारी सादहीमां पधारी त्यारे राजराणा रायसिंहजीए तेओनुं उत्तमोत्तम आतिध्य कर्यु, स्वागत अने मिजमानीना सर्वोत्कृष्ट पवन्धथी पसन्न थएला खुरेमे तेओने वंशपरंपरा वादशाही दरवाजी तथा वादशाही निशान उपरांत राज्यमहेळ माथे सदाने माटे सुवर्ण कळश मुकवानो हक आप्यो. शाह-जहां थोडो चलत सादडीमां रही उदयपुर गया अने त्यां पण वधारे वलत नहि रोकातां दिन्ही भणी रवाना थया.

वि. सं. १६८४ मां राजराणा रायसिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना कुमार सुलतान-सिंहनी वीजा राजगादीए वेठा, ए पण पोताना पिता तथा पितामहनी माफक असाधारण वीर, तेजस्वी अने युद्धकुराळ हता, तेओ राज्यासनपर विराजमान थया त्यारे मेवाड देशमां सर्व प्रकारे छुखशान्ति हती; ज्यारथी जाहजहांए दिल्ही खरतुं पद धारण कर्यु त्यारथी मेदपाटे खरना अधिकारमां कांइपण खळेळ पहोंचाडवामां आव्यं न हतु. महाराणा कर्णासहजी पछी जगत्सिहजी मेदपाटेश्वर इन्या. वि. स. १७१० मां महाराणा जगत्तिंहजीनो कैलासवास थतां तेजोना कुमार राजसिंहजी पेवाडना महिपित वन्या, ए वस्तते राजराणा सुलतानसिंहजीए पूर्वजोना पराक्रमोतुं स्परण करी बादशाही सीमामां आवे छं मालपुरा नामनु नाम छुंट्युं. ए समाचार दिल्हीना सभा-सटोए शाहजहांने आपीने पेदपाटेश्वरने एओनी उद्धताइनो वदलो देवा अरज करी, त्यारे शाह-जहाए मात्र एटछंन ऋषु के-काइ निह, इशे ए तो मारा भत्रीजानी मूर्वता छे. त्यारवाद जे समये औरंगजेवे पातानी क्रुटिल नीतिना प्रभावयी जाहजहांने केदमां नांख्या त्यारे जाहजहांए मेदपाटेश्वरनी मदद मागी. गहाराणा प्रतापसिंहजीना वखतनी वीरताए फरी जन्म लीघो. महाराणा राजिसहजीए शाहजहाना पद्मगां रही औरंगजेव साथे घणा भयंकर युद्धो कर्यो. मुगळ मात्र औरंगजेव तरफ हता. रूपनगढाधीशनी पुत्री साथे वळात्कारे परणवानी संकल्प करी तेने उपाडी लाववा माटे वे हजार घोडेस्वारो मोकल्या, ए खबर महाराजा राजसिंहजीने मळतां तेओ तुरत देश तथा धर्मनी रक्षा करवा तत्पर थया अने शुभ मुहूर्त जोइ चुनंदा वीरोने साथे छइ अर्वछी पर्वत परधी उतरी रूपनगढमां पहोंच्या. त्यां यवनसेना साथे युद्ध करी विजय मेळव्यो अने राजकुमारीने पोतानी राजधानीमा लड् आव्या श्रीमान् राजराणा सुलतानसिंहजी माळपुरा तथा रूपनगढना विजय पछी सादडी पधाया, पाछळथी पाताना सैन्यनो पराजय सांभळी क्रोधायिथी भन्वित पएलो औरंगजेव म्होटी फोज लड़ मेवाड उपर चढी आव्यो; महाराणा राजसिंहजीए पत्रद्वाराए वधा खबर आधी राजराणा सुलतानसिंह जीने बहुज शीव्रताथी उदयपुर बोलाव्याः एज वखते छुळतानसिंह जी मेद्रपाटेश्वरनी सेवामां जइ पहें।च्या. सज्ज थएला क्षात्रवीरोए धर्मना रक्षण माटे रणयज्ञमां शाणनी आहुति आपवानो दृढ संकल्प कर्यों. भयंकर कापाकापी चाली, असंख्य योदाओ क्याइ मुक्ता, ववनोनो पराजय कर्यो, औरंगजेव भागी छुट्यो, ए युद्धमां सुलतानसिंहजीए अनेक यवनोनो अंत करी मेदपाटेश्वरना सैन्य नायकतुं पद ज्ञोभाव्युं अने छेवटे प्रचंड प्रहारोधी छेदाएल शरीरनो परित्याग करी समरांगणमां स्वर्गवास कयों.

वि. स. १७३७ मां राजराणा सुलतानसिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना क्रमार चन्द्र-सेनजी राज्यासनपर विराजमान थया. मेदपाटे बरना कुमार जयसिंहजी तेओने उदयपुरमां लाववा माटे सादडी पधार्या हता; महाराणा राजसिंहजीए राजराणानी हवेलीए पघारी प्रथम शोकपद-र्शिणी सभा भरी अने पछीथी चन्द्रसेनजीने प्राचीन रीति प्रमाणे तलवार वंधावी: त्यारवाद थो-डेज वस्तते मेदपाटेश्वर तरफथी आज्ञा मळी के मांडलपुरतरफ यवनेश्वरनी सेना अनेक प्रकारना उपद्रवो करी रही छे माटे आप एओना विजय अर्थे पधारो. स्वामीना फरमानथी राजराणा चन्द्र-सेनजी स्वकीय सैन्य सहित सज्ज थया. हवे एवं वन्यं के देवारीथी पराजय पामेली वादशाही फोजे चित्तोडना किल्लापरथी नीचे उतरी पडाव नांख्यो, ए स्थळे यवनेश्वरे पोताना पुत्र मोअज्ञमने लख्युं के " तमो शीवाजी साथे लड्बुं छोडी जल्दी अहीं आवो. " वढनोरना अधीश रावत सांव लदासजीए चित्तोड अने अजमेरना मध्य मार्गने रोकी टीधो. क्षात्र दलतुं वल असह जाणी औरंग-जेव अजमेर तरफ चाल्यो गयो. एगे चालती वखते आजम तथा अकवरने आज्ञा करी के आपणी वीजी फोज आवे त्यांसुधी युद्धनो आरंभ करशो नहि, औरंगजेवे अजमेर पहोच्या वाट रावत सांवलदासजीने हराववा माटे वार हजारनी फोज तेमज अपरिमित युद्ध सामग्री एकत्र करी पोताना पुत्रो पासे मोकली. राजराणा चन्द्रसेनजी तथा गोपीनाथजी राठोडे नामना स्थळ उपर वादशाही सैन्य साथे मुकावलो कर्यो, महा भयंकर युद्ध मन्युं, क्षात्र सुभटोए धचंड सुजदंडथी करेला तीक्ष्ण असिना असहा गहार वडे पराजय पामेली यवन सेना अजमेर तरफ पळायन करी गइ; विजयना सपाचार सांभळी मेदपाटेश्वरना मनगां अवर्णनीय आनंद थयो. कर्नल टॉडसाइवे लख्युं छे के " क्षात्रवीरा पातानी मक्किथी मतिकूल यह औरंगजे-वना अत्याचारोनो वदलो लेवा कटिबद्ध थया, परम पराक्रमी दवालशाह नामना मंत्रीए उदयपुरथी प्रयाण करी मालवा नथा नर्मदा किनारे रहेला भानत सारंगपुर, देवास, सरोंज, उज्जेण अने चंदे-री आदि प्रसिद्ध रयानोने छुंटी केटलाएक किल्लाओं कवजे कर्या. " अन्य इतिहासपेमीओ उक्त वृत्तांतनं एवी रीते प्रतिपादन करे छे के गृहस्थ लोको पोतपोताना घरनो परित्याग करी मात्र माण लड़ दनमां चाल्या गया. ए चढाइमां औरंगजेबनी माफक क्षत्रीओए पण यवनना धर्म उपर आक्रमण कर्यु, काजीओने पकडी पकडी दाढी मूछ विगेरे मुंडाववां मांड्यां, कुरानोने कुवा-मां फेंकी दीधां अने अगणित पैसा तेमज वस्ताभरण मालवामांथी छंटी लीधा. उक्त विजयधी उत्साहमां आवेला दयालगाहे चित्तोडनी समीपे मेदपाटेश्वरना राजकुमार जयसिंहजीनी मुलाकात

लीघी, जयसिंहजीए वानसीना अधीश गंगासिंहजी, सलूंत्ररना अधीश रतनसिंहजी, सादहीनरेश राजराणा चन्द्रसिंह नी, वेदळाना अशीश चौहाण सवळसिंहजी अने विजीलीना अधीश पंतार वेरी-सालजी विगेरे प्रतिष्टित सरदारों तथा मंत्री दयालशाहनी सहायताथी औरंगजेवना पुत्र आजम साथे अवर्णनीय युद्ध कर्युः; आजम पराजय पामी रणतभैवर नामने स्थळे भागी गयो. राजराणा चन्द्रसिंहजीए बहुज बहादुरी बताबी, महाराणाना कुमार जयसिंहजीए तेओनी मुक्तकंठे प्रशंसा करी. आ मिवाय मेदपाटेश्वरे अत्याचारी अने अन्यायी औरंगजेव साथे घणा युद्धो कर्या हतां, दरेक युद्धमां राजराणा चन्द्रसेनजी हाजर इता अने तमाम वखते मेदपाटेश्वरने विजय मळ्यो हतो. वि-सं. १६३७ मां महाराणा राजसिंहजीनो स्वर्गवास थतां राजक्रवार जयसिंहजीए मेदपाटेश्वरतुं पद धारण कर्यु. तेओना वखतमां सिरोहीनरेश महाराव जयसिंहनी राजविद्रोह करी मेवाडथो जुदा पड्या, ए पराजय आपवा माटे मेदपाटेश्वरे राजराणा चन्द्रसेनजीने अन्य उमरावो साधे सिरोहीपर चढाइ करवातुं लख्युं. ए वखते साद्दीमां राजकुमार सिंहजीनां छग्न थवानां इतां. ज्यारे ए राजकुमार महाराणानी पासे पथार्या त्यारे यहाराणाए प्रथमतो तेओना अजाजी,मानसिंहजी तथा इरदासजी विगेरे पूर्वजोनी राज्यभक्ति विषे प्रशंसा करी अने पछी कहुं के "सांप्रत समये सिरोहीनरेश अमाराथी प्रतिकूल वर्ते छे,तेओने परास्त करवा समग्र सैन्य सज्ज थयुं छे,जो आपने देवांगना साथे वरवानी स्पृद्दा होय तो रणक्षेत्रमां पथारो अने सांसारिक लग्ननी स्पृद्दा होय तो पाछा सादडी पधारो " मेदपाटेश्वरना मुखारविन्दथी उक्त वचनोतुं श्रवण करतांज कुमारसिंहजी सेना-नायक बनी सिरोद्दीना विजयांचें सिधाच्या अने त्यां उद्दोच्या वाद महाराव जयसिंहजी साथे महा भयंकर युद्ध करी काम आव्या. कुमारनी आवी अद्भुत वीरतानुं श्रवण करी मेद्रपाटेश्वर तेमज राजराणा साहेब अत्यन्त मसन्न पया; परंतु स्वल्प समय पछी ए पराक्तमी पुत्रना स्वर्गगमनने कीथे राजराणा चन्द्रसेनजीने चित्तभ्रम जेवुं थइ गयुं हतुं; तेओ घणे भागे सादहीमां निवास करता नहीं, सादडी अने उदयपुर बच्चेना मार्गमांज आवागमन कया करता अर्थात् आश्विन शुदि. १० ने दहाडे मेदपाटेम्बरनी मुलाकात लइ एकादशीने दिवसे उदयपुरथी खाना यता अने आस्ते आस्ते प्रयाण करी छ महिने साद्दी पहोचता; त्यां मात्र एक दिवस रही पोताना राज द्रवारमां दसेराना रीति रिवाजने संपूर्ण करी बीजेज दिवसे पाछुं सादढीथी प्रयाण करी छ पहिने अर्थात् आियन शुदि १० ने दहांहे उदयपुर पहोंची जता. एक वखन कोइएक सरदारे उपहासयुक्त मेदपाटेप्यरने अरज करीके वडी सादडीना राजराणा साहेव चार प्रहर पर्यंत पण आपनी

सेवामां हाजर रहेता नथी अने अमारे तो निरंतर हाजर रहेवं पडे छे त्यारे महा-" एतो सर्देव अनारीज सेवा कर्या करे छे. "" आप्यो के शंकाशील मेदपाटेश्वरे एक दहाडो राजराणा चन्द्रसेनजीने पूल्युं के आप सादडी अने उदयपुर वच्चेना मार्गमां आटलो वधे। काल केन वितावो छो ? त्यारे राजरागाए जवाव आप्यो के नाम-वर! "राजपुत्र अने अन्य तो निरंतर केम्ब्टन करवायोज दलवलप्रक रही शके छे. जो मारा कथनमां आपने शंका रहेती होय तो परीक्षा करी जुत्री, "परोक्षाती मोकी पण आबी महत्री हतो. अर्थात् मेवाड मध्यना भूमट, जवास, पानरू अने मेदपुरा आदि स्थानोना जमीनदारोए राज-विद्रोह करवा मांड्यो, तेओना दमनार्थे महारागाए राजराणा चन्द्रसेनजीने आज्ञां आपी एज वलने रे तेओ स्वकीय सैन्यने सज्ज करी तरत उक्त स्थानो तरफ पर्यार्थ अने अद्वितीय पराक्रमथी राज-द्रोहीने योग्य शिक्षा आप्या वाद अखिळ प्रान्तोमां विजयना डंका वगाडी उदयपुर आव्याः ए वखते महाराणा जयसिंहजी अत्यंत प्रसन्न थया. वि. सं. १७४३ मां वादगाह औरंगजेवनी कुर्मार अकवर मेवाडने स्वाधीन करवा माटे दक्षिण हैदरावाद तरफथी चाल्यो आवतो हतो, ए समाचार महाराणाने मळ्या त्यारे तेओए राजराणा चन्द्रसेनजीने स्वहस्ते पत्र छखी जणाच्युं के "अकवर ए तरफ आवे छे: एना अत्याचारोथी मेवाडनी रक्षा करो, जो ए पीतिभावयी पाछी न फरे तो युद्ध करवं. " चन्द्रसेनजीए महाराणानो पत्र वांची एज वखते जे तरफयी अकवर सैन्य सहित आवतो हतो ते तरफ प्रयाण कर्यु. उज्जेण नामना घाटा उपर उभय सैन्यनो भेटो थयो, ए स्थळे परम पराक्रमी झाळानरेशे रोम खडां थाय एवं युद्ध कर्ये अने यवनक्रमार अकवरने पराजय आपी पोते सादडी पथार्था. ए युद्धोनुं वर्णन करतां कोइएक कविए कहुं छे के

५६ इडप्पय "

सतधारी चन्द्रसेण, सामकारज जुड समहर; के बेडा जुध किया, खगां खडकी दख यख्खड; सुत जेठो सिंघेण, सको सुरलोक सिघायो; आप बरे नह अप्छरा, परव अधको बद पायो; कीरतने दोलो कुंवर, सुतन अनुज चन्द्रसेणरा।

PRA

वरवीरधीर रजवटबहद, जपे सुजस जगजेणरा ॥ "सोरग "

पेखे वरवा नाह, अम्बर सूं जुध बिच अणड; खपगा केवा नाह, चन्दारी खग चाखनें।। अप्छर उमाहेह, वरचन्दा नरवरणनू; गण थटदल गाहेह, इन्दा सुभ जीवत हुओ।। वाहालो बलदेत, दुठ वाधकर दोरडो; वो सींघो अखडेत, पुंहतो अपछर परणवा।।

" निसाणी "

कुलदींपक सीघो कुंवर, धृत रजवट छाया; दूठ वांथकर दोरडो, उदयापुर आया ॥ सिरोहीघाटे सजाय, असपत उभगाया; सुन खवर नृपजयिसंहजी, श्रीमुखफरमाया ॥ काम सामध्रम करणन्ं, वृद आदि बणाया; अप्छर वरिया आवसो, सज फोज सवाया ॥ कुंवरसिंह चन्द्रसेणरे, उर हर्ष उमाया; ये वीरादां उमराव वी माहवगांया ॥ वरवा काज सुरत्री रिव जांगीर घुराया; उडी झाट खग कोरणी रण ठाठ रखाया ॥ साथ जीत सर ईशको सुकरासम पाया; कणगड खग्यां अधरसूं सुरलोक सिधाया ॥

कुंमरपदे सिंघो कुंमर परवेहो पाया; सूरबीर पर सामधम सब जगत सराया॥ पुर अजवाडा करणतळा कवि सुजस कहाया॥

वेगूंना अधीश, जसवतिसहजी, आसीनना अधीश ठाकुर माघोसिहजी, आमोदना अधी-श्र ठाकुर रघुनायसिंहजी, धामनोतरना अबीश ठाकुर जोगदासजी, आमेराधीश रावत रघुनायसिंहजी, भींढराधीश महाराज भीषमिसिंहजी, पीष्कोदाधीश ठाकुर रघुनायसिंहजी, वांसवाडाबीश महारावळ कुशळसिंहजी, अने हमोरगढाधीश रावत जयवंतिसहजीनां कुंवरी श्रो साथे क्रमपूर्वक राजराणा चन्द्रसेनजीनां लग्न थयां हतां, तेमां वांसवाडावाळां राणोसाहेवथी कुमार कीरतिसहजी, दौळतिसहजी, गुळावसिंहजी, तथा छत्रसिंहजीनो जन्म थयो अने कानोडवाळां राणीजीसाहेवथी कुमार सिंहजी तथा अमानसिंहजीए जन्म छीधो.

वि—सं. १७६० मां राजराणा चन्द्रसेन जीनो कैळासवास थतां तेओना पाटवी कुमार की-रतसिंहजी साददीनो राजगादीपर विराजमान थया, तेओनां लग्न निम्नलिखित राजाओं नी कुंव-रीओ साथे थएल इतां.

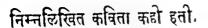
- १ विजोक्तियाधीश रावत विक्रमादित्य गी.
- २ वांसीयाधीश रावत सांवलदासजी.
- ३ खुणावाडाधीश ठाकुर तेजसिंहजी.
- ४ पोसीनाधीश ठाकुर सुनानसिंहजी.
- ५ वमोरीना अधीश सगतावत मुक्कन्ददासजी।
- ६ बुन्दीना अधीरा महाराव अनिरुद्धासिंहजी हाडा.
- ७ रायपुराना अधीश ठाकुर फतेसिंहनी

तेमां रायपुरवाळां राणीजीसाहेवथी कुमार रायसिंहजी तथा नाथजीनो जन्म थयो. तेमां नाथजीने तेओना काका दोळतासिंहजीए दत्तक ळीथा हता. राजराणा चन्द्रसिंहजीना स्वर्गवास पछी त्रीजेज दिवसे राजद्रोही डुंगरपुर तथा बांसवाहाना अधीशोने दंड देवा माटे मेदपाटेश्वर तरफ्यी आज्ञा मळतां राजराणा कीरतिसहजी उदयपुर आव्या अने पोताना न्हाना भाह दोळतिसिंहजी सहित डुंगरपुर तथा वांसवाह जह महाराणाना विजयवाद्य वगाड्यां अने त्यांथी भूमिकर

लइ मेदपाटेश्वरनी सेवामां अर्पण कर्यो. ए वस्तते मेदपाटेश्वरे अत्यंत प्रसन्न थइ साठहनार मुद्रानी आमदानीवाळां "ताणा " विगेरे ग्राम राजराणाने इनाममां आपवा आझा करी, त्यारे राजराणा कीरतिसहनीए महाराणाने सिवनय प्रार्थना करी के मारा अधिकारमां तो प्रथमधीज सादडीनुं राज्य छे, माटे ताणा विगेरे ग्राम मारा लघुवन्यु दोलतिसहनीने मळे तो वधारे सारुं. आ वस्तते महाराणाण राजराणानी वीरता, उदारता, भ्रातृभाव, निष्कपट व्यवहार तथा निस्पृहता आदि सद्गुणोन्नो मुक्तकंठे प्रशंसा करी अने तेओश्रीना न्हाना भाइ दोलतिसहनीने साठहजारनी आमदानीवाळी "ताणा" नी रियासत आपी.

वि-सं. १७५६ मां महाराणा अमरसिंहजीए उदयपुरना राज्यसिंहासनपर पाय धारण करतांज राजराणा कोरतसिंहजोनी सहायताधो प्रधम तो डुंगग्पुर तथा वांसवाडाना राजद्रोही अधी-शोने आधीन क्यी, परंतु दिल्होश्वरनी सहायताधी ए वन्ने राज्य पाछां उदयपुरथी जुदां पडी गयां. वि—सं. १७६५ मां आमेराधीश सवाइ जयसिंहजी तथा मरुधराधीश अजीतसिंहजी के जेनां राज्य दिल्ही भरं ददाव्यां इतां, तेओ पुनः राज्यमाप्ति माटे मेदपाटेश्वर पासे आव्या, मेदपाटेश्वरे तेओनो उत्तम रीते आिरिध्य सत्दार कर्यो, परस्पर सवन्ध सुदृढ रहेवा माटे केटलाएक सन्धिपत्रो धया वाद पोतानां पुत्रीनो आमेराधोग कथे तथा भगिनीनो मरुपराधीश साथे विवाह कर्योः ए वखते केट-लाफ करारो करवाया बाव्याः तेमां महाराणाए एवो करार कराव्यो के " अमारी भगिनीनो पुत्र अथवा पुत्रीनो पुर पाटवी राजकुमार न होय तोपण ते गादीपर वेसवानो हक धरावी शकशे" परं-तु आमेर अने पारवाडना अधीशोए दिलगीरीनी साथ एकरारनो अस्त्रिकार कर्यो, छता मेदपाटे-म्बरे अमसन निर्ध यतां ए उभय अवनिपतिनां राज्यो दिल्ही नर पासेथी पाछां अपाची दीधां. ए तमाम कार्योमां राज्राणा कीरनसिंह जी विद्यमान इता. वि-सं १७६७मां श्रीमान महागणा अमर-सिंह भीनो कैलामबार यहा महामसिंहजी बीजाए उदयपुरना राज्यासनने अलंकृत कर्यु. दिल्हीना वहादुरबाहना नगयधी राज्यासनमा दंपरोगे निवाम कर्यो हतो, परंतु आ अरसामां विशेष आंत-रिक एपाधिओ उत्पन्न यदानो अवकाश नहोतो, अर्थात् वहादुरज्ञाह पछी जहादारज्ञाहने फरुक-शियरे नेयद अवदुष्टा अने हुसेनअलीखां आदिनी सहायताथी मारी नंखाव्यो, जैपुर अने जोध-पुरना नरेशोए ए दखेडामां हस्ताक्षेप करी मनमान्यो ळाभ मेळव्यो, महाराणा संग्रामसिंहनीनी मकृति राप्यनी उम्रति करवानी अभेक्षाबाळी अने स्वतंत्रतामाधान्य हती; वि-सं. १७८० मां तेओनी म्बर्गवास यतां श्रीमान् जगतिमहर्जीए मेदपाटेश्वरतुं पद धारण कर्युं. ए वखते राजराणा कीस्तास-

इजी सादढीथी उदयपुर पथार्या, भेदपाटेश्वरे दुर्छी नामना ग्राम समीपे मरुधराधीज्ञ तथा आमेरा-धीशने मळी अन्योन्य सहायता आपवा माटे फरीन कोळकरार कर्या, परंतु ए कोड लांवा वखत सुधी पाळी शक्या नहि. दिल्हीमां वारंवार वादशाहोना वदलवाथी तेमज वध थवाथी भाग्यशाळी मरेठाओए वहादुरीथी दिल्हीना राज्यने स्वाबीन करी लीवुं अने भरतभूमिना समग्र भूपतिओने पोताना आधिपत्य नीचे स्थापी वधा पासेथी कर छेवा मांड्यो, ए वखते मेदपाटेश्वरे पण दरवर्षे खंडणीना एक छाख अने साठहजार रुपी आ आपवादं कबुछ कर्यु. ए तमाम कार्योमां राजराणा कीरतिसहजीए आगळ पहतो भाग छीथो हतो, तेओ नामदारे उदयपुरथी सादहो प्यारी तुरतज छाखो रुनिअः खरची एक ब्रह्मपुरीमां तथा वीजी राजस्थानना मुख्य द्वार सामे वापी वंबाववातुं काम शरु कराच्युं अने ते तैयार थतां महाराणा जगतसिंहजीने तथा श्रीमती महाराणी जीसाहेबने सादडोमां पधरावी अपूर्व आतिथ्य कर्धुः ए उत्सवमां भेवाडना घणाखरा प्रतिष्ठित सरदारो प्रधार्या हता. उक्त कार्यथी निवृत्त थया बाद राज्यप्रहेळ वंधाववानो समारंभ कर्योः तेतुं काम घणे भागे तैयार थइ गयुं हतुं तेवामां वि-सं. १८०० नी शरुआतमांज राजराणा कीरतसिंहजोए स्वर्गवास कर्योः जेथी तेओना पाटवीक्रमार द्वितीय रायसिंहजी सादडीना राज्यासनपर विराजमान थयाः त्यारवाद प्राचीन रीति प्रमाणे उदयपुर पथायी, महाराणा जगतिहिंहजीए प्रथम राजराणानी हवे-कीए पधारी शोक पदर्शित कर्यों अने ते पछी नूतन राजराणाने तळवार वंबावी. कोइएक वखते राजराणा रायसिंहजी मदेपाटश्वर पासे वेठ। इता, विविध वातो चाली रही इती तेवामां मेदपाटेश्वरे कह्यं के आमेराधीश जयसिंहनी अहीं आववाना छे तो आप जेम अमारो एक हाथयी मुजरो करो छो तेम करशोनां ? त्यारे राजराणाए सविनय जवाव आप्यो के अमारा पूर्वजो आपना तथा दिल्ही श्वरना राज्यासन सिवाय कोइनी नीचे वेसता नथी, परंतु आमेराधीश एक तो आपना बनेवी अने वळी अतिथिनी माफक आई पथारे छे एटला माटे आप हार्दिक इच्छाथी अनुराध करशो तो हुं तेओनो एक आंगळीथी मुजरो करी छड्झा. ज्यारे आमेराधीश उदयपुर प्यायी, त्यारे राजराणा रायसिंहजीए एज प्रमाणे तेओनी मुशाकात लीधी. आमेराधीशे मेदपाटेश्वरनी मुलाकात लीधा वाद पूछ्युं के आ सरदार कोण छे ? त्यारे मेदपाटेश्वरे राजराणा रायासँहजी तरफ संकेत करो कहां के " ए झाला सरदार छे. एओना पराक्रमी पूर्वजोए इळवदथी मेवाडमां आवी अमारी बहुज उत्तम रीते सेवाओ वजावी छे. " मेदपाटेश्वरना मुखधी राजराणानी पशंसा सांभळी आमेराधीशने अ-सीम आनंद प्राप्त थयो. आमेरायी सनी मुलाकात वखते आडापाडखांजी नामना को इएक कविए



गीतः

झोका लीजिये वनेही वातां वंका शुद्धापणे झाला; अखियाता अंका वधू राखवा उदाेत्॥ रायसिंघ जोसिंघ सूं मिलन्ता मुरजी राखे; दाखे दवां गिरांहृतां नरंभी दसोत्॥ १॥ कीरतेसतणां रायजदा धनो आंटाकोट. दोहू वातां आवादां वचाणां दसूं देश। करंतां जुहार गाढ धारे पती कुरंगा सूं, नरंसी अपार करे कवेशां नरेश ॥ २ ॥ पाटरी गरव्वे वंश सांवलो उदोत पाट. वरां पूरवन्ने थकां रहे राजी वाप, धारियां अमोघ जेम मिले छत्रधारियांसूं; भोमरुपी होय करे सुपातां मणाप॥ ३॥ सोभाग चढाऊं कणा रयंम्मा उजास सारे. शीतलता तेजमही वने हिन्द्रशाह। अंवणा कपणों चन्द्र विजा पृथीसारे उगो, उगो सम्वणां कपणों सूर ज्युं अथाह ॥ ४ ॥

आमेराधीश जयासंहजी उदयपुग्थी पोतानी राजधानीमां पथार्यावाद तुरतज स्वर्गवासो थया, तेओना उत्तराधिकारी माधवामेंहजी के जे उदयपुरना भाणेज थता हता, तेओने आमेरना मितिष्टित कार्यभारीओए राज्यासनपर न वेसाहनां तेओना ज्येष्ठ वन्यु इन्बरीसिंहजीने राजगादीए वेसाङ्या ए हत्तान्त ज्यारे महाराणा जगनसिंहजीना जाणवामां आव्युं, त्यारे तेओए अत्यंत कोपायमान थइ जयपुर उपर चढाइ करी, परंतु इन्बरीसिंहजीए

मरेठाओनी मदद्यी मेवाडने पराजित कर्यु, पराजय पामेळा मेद्रपाटेश्वरे मरेठाओने सैन्यन्ययना चोसठछाख रुपिआ आपी फरी जयपुरपर चढाइ करी, इश्वरीसिंहजी होळकरनी सेनातुं आगमन सांभळी विप खाइ मृत्युने शाप्त थया अने माधवासिंहजीने राजगादी मळी. मेदपाटेश्वरे राज्यना खजानामां रुपिआ न होवाने छीधे पोतानुं रामपुरा नामनुं परगणुं होलकरने हमेशांने माटे आपी दीयुं: तेओए जयपुरशी उदयपुर पथार्था बाद एक दिवसे राजराणा रायसिंहजी तथा भींडराधीश महाराज ख़ुशालिंहजीने आज्ञा आपी के शाहपुराधीण राजा उम्मेदसिंहजी अमारी सेवामां उपस्थित थता नथी माटे आप वन्ने सरदारो मध्यस्य वनी एओने यक्ति प्रयक्तिथी बोलाबी लाबो. त्यारे ए वने अवनिपति बोल्या के जी बाद ए शाहपुराधीगनी आगळना अखिळ अपराधनी क्षमा आपना प्रतिज्ञा करो तो अमी एत्रोने अही बोलाबी लाबीए. मेदपाटेश्वरे ते वातनो तुरतज्ञ स्वीकार कर्यो. सं. १८०७ ना कोइएक मासमां ज्ञाहपुराधीश उम्मे-दसिंहजी उदचपुर आव्या. ते वखते महाराणा जगनिंहजीए लीपेली प्रतिज्ञानों भंग क्यों अने एक क्षणमां त्रण वखत दुन्दुभिना नाद करावी, उम्मेटासंहने परास्त करवा माटे उन्नत गयंद-पर आरूढ थया. राजराणा राय!संहजोए तथा भींडराधीशे ए समाचार सांभळी प्रथम तो ज्ञाहपुराधीज्ञने सचेत कर्या अने पछीथी ए वन्ने सरदारो अवारूढ थड पोत्रपोताना सैन्य सहित मेदपाटेश्वरनी पासे जड़ पहोंच्या अने तेओने सविनय प्रार्थना करी के आप आपनी पतिज्ञातुं पाळन निहं करतां शाहपुराधीशने संहारवा समुद्यत यथा छो ए कदिपण वनवातुं नथी; कारण के ए अमारा पत्रपर विश्वास गाखी उदयपुर आव्या छे एटला माटे अमे एना पक्षपाती छोए छतां आपनो निश्चय फरी शके तेम न होय तो मथम अमारो संहार करी पछीथी एना उपर चढाइ करो। उभय सम्दारोनां उक्त वचनो सांभळी अत्यंत कोपायमान थएला मेद-पाटेश्वर राजभवनमां पधारी गयाः राजराणा रायसिंह नी तथा भींडराधीश महाराज खुशाळास-हजी शाहपुराधीशने देवारी नामनी धारनी वाहेर मूकी आव्या, ने वोल्या के हवे आप निर्भय वनी स्वराज्यमां गमन करो. आपने अहीं सूधी पहोंचाडवानी अवारी प्रतिज्ञा पूर्ण थइ. त्यांथी उदयपुर आवेळा ए वन्ने सरदारोए मेदपाटेश्वर पासे आवी पार्थना करी के हवे जो आपनी आज्ञा होय तो ज्ञाहपुराधीशने जीती आवीए, परतु क्रोधायमान थएला मेदपाटेश्वरे कांइपण उत्तर आप्यो नहि. महाराणानी अपसन्नता जोइ भींडराधीश विगेरे केटलाएक उपरावोए पोतपोतानी राजधानी तरफ प्रयाण कर्यु, पण राजराणा रायसिंहजी तो उदयपुरमांज रह्या. थोडा वखत

पछी हट्टु नामना मराठाए आठइजार सुभटो सहित देवल्याना पहाडी मार्गद्वाराए मेवा-हमां मनेश क्यों अने दरियावद, वांसी तथा कानोड आदि मुख्य शहेरोने लूंटी छी-धाना सयाचार मळतां महाराणा जगतसिंहजीए राजराणा रायसिंहजीने पाता तरफथी कोइपण जातनी सेना विगरेनी सहायता न आपतां हुकम कयों के आप शीघ्रताथी हदू सामे प्रयाण करो. स्वामीनो आहातुं श्रवण करतांज राजराणा उदयपुरथी चाळी निकळ्या अने हितानामक गामनां मेदानमां हट्ट्नी सामे जइ पहोंच्या, पोतानी साथे मात्र चारसो सुभट हता, साथेना कार्यभारी तथा सरदारोए राजराणाने सविनय अरज करी के आपणा करतां प्रतिपक्षीनुं सैन्य अधिक छे माटे आप एकज दिवस सादढी पधारो अने त्यांथी सैन्यने एकत्र कर्या वाद युद्रनो आरंभ करो. त्यारे राजराणाए जवाद आप्यो के शहूना सन्मुख आव्या पछी भागवुं, चारवा जवुं, अथवा भयभीत थवुं ए सत्रीओनो धर्म नथी. रणभीरु अनापुत्रनां नामयी ओळखाय छे. एओने सत्रीनी संज्ञा अ-पायज निह, तमो सर्वे पातःकाल धतां युद्धार्थे रणागणमां उपस्थित थाओ. प्रभात समय राजराणाना सैनिकोए पतांत उभय सैन्यनो समागा घयो. भयंकर कापाकापी चाली. यरेटाओ साथे दार कलाक पर्यन्त रोम खडां थाय एवं युद्ध कर्यु, तेवामां ताणाधीश राजनाथजी के जे राजराणाना छघुवन्यु धता इता, तेओ ए उक्त युद्धना समाचार सांभ-ळी स्वकीय सैन्य सहित जत्वर युद्धभूमिमां आवी पहोंच्या. मळूंवरना निवासी चुंडावत न्हारसिंहजी पचीस स्वागे सहित कोइएक गाम नरफ जता हता ते पण राजराणानी सहायता माटे रोकाया. पारी भयकर युद्ध शरु थयुं. ताणानरेश राजनाथजी घणा शत्रुओनो संहार करी सुरळोकमां विधाव्या. राजराणाना तमग्र छभटो प्रतिपक्षीना पाचहजार सैनिकोनो विध्वंस करी कपाइ मुआ. मात्र राजराणा पचीश घोडेस्वारो सहित दचवा पाम्या हनाः तेवामा मींडगधीश महाराज खुशाल-सिंह जी चारसो घो हेस्दार एइ आवी पहोंच्या आत्रवीरोए कठिन कुपाणो चळावी पराठाओं नं मान उतार्यः अने पराजय पामेला प्रतिपक्षीओं पलायन करी गयाः ए वखनना युद्धनुं वर्णन करतां कोइएक कविए निम्नलिखित गीत कहेलुं छे.

" गीत. "

तण्डे जोगिनी महेश सण्डे उमण्डे पुरी वैताल, घुमण्डे प्रचण्डे थंडे उमंडे असाढः आडे झण्डे रोप ठण्डे सुजा इण्डे तोल आम, राय सिंघ गनीमासूं मण्डे तोड राढ. खतंगी क़राट झाट वगी राठ रीत खग्गे, जंगी पाट प्रेतां काली अनाट जुवाण; सतारो हजार आठ लोह लाठ आहे सझ्झे; रासारा तीनसे साठ नमीजे अराण. 11 2 11 श्रोण चण्डी पियाला नवाला ग्रिध भक्के मांस. दुन्दुभी न साला ताला मुसाला जै दीठ; दुझाला बैताला थाला संघाला दक्खणी दल्ला, रुकभाला जंगाला गेडाला मातो रीठ. 11 3 11 वराला कराला झाला अतालोव छूटे वाण, तई खेत्रपाला मण्डे बैताला तामास; मदाला दंताला काला नेजाला सुंडाला माथे, बांधे चाला कितां वाला आछटे वाणास. 11 8 11 सिंघी नाद रोडे धूंस घमोडे अढंगा सैल, धजां गजांही अरोडे घोडे सार धीर: शत्रुवां मरोडे कन्ध अरोडे दूसरो सिंह, जंगी होदा तोडे मोडे छाकिया जंजीर. 4 11 प्रेत भूतां वाजे डाक काल दूतां हाक पीरां, ताबृतां सितारो मडे हाहूड तमाम; कटारां खंजरां छदां दुधारा कमरा कुंता, सूर धीरा रजपूतां घुमायो संग्राम. 11

रथां परी जुथां माल अमरी समरथां राडे, लुथ वथा होवे ईश मथा सुर लेण; भारथां रचायो कत्थां पत्थां जेम वाघ झुरे, श्रीहत्थां आछटे खग्गां द्रजो चन्द्रसेण. 11 9 11 गड्डां गीध भक्के मांस उडेके अतालां मेह. कणाला पखाला झाला सेलाणां क्ररन्दः संगाडा छोगाडा शाडा भडाला ऊधमे सार, दंताला त्रिम्वाला खावे मदाणां दुरन्द. 11 & 11 भडके दुवासां सेल तमासा सदेखे भाण, अच्छरां हुलःसां वासां नारदा उवास; रानहो भरोंसो जैसो जानता गरीठ रासा, उभय पाशां वागां तासा तोलियो अकास. कायरां चमकें धकें हके के ही नके कन्ध, भहकें भभकें हकें न हकें न त्रीठ; रोसमें भभके छके झालां सुं गनीमा रोडें, रटके सटके वागी हके जुधके रीठ. 11 90 11 ऊघडे जरन्दा चण्डी खडी खडी ख्याल अक्रें, रत्थपां चडी झडाझडी वदे सुरारंभ; सांकडी वाजतां घडी वाकडी वजाई सार, पखां छडाछडी किया झाले अडीखंभ. 11 88 11 ताजे श्रोण मारे चण्डी आसमानी छाजे तीख,

जागे श्रोण वारन्गानू वरे सुराजाम;
ओटयां झडूसाना धजां रायिसंघ ऊमो,
देख तोरो भाजे अरी अग्राजे दमाम. ॥१२॥
लग्गे लोह अग्गे पुर मरहटां जमी तें लोटे,
धडके करीते रेजा गजां नेजां ढाल;
आपहीतें पान ऐसो खलाढलां खाय ऊमो,
खत्री जुद्ध वहेता आयो वठीसुं खुसाल. ॥१३॥
पोषे श्रोण धाराचण्डी आमखां अहारा पंख.
तिण्ड जेजे कारां होवे सादडी तखत्त;
लागवां हजारां भाजे आवियो धगारां लागो,
बाजत नगारां ऐसो सादडीं वगत्त. ॥१४॥

संवत १८०८ मां महाराणा जगतसिंहजीनो कैळासवास थतां द्वितीय प्रतापसिंहजीए उदयपुरना राज्यासनने अळंकृत कर्युं. तेओना समयमां मेवाडनी अंदर मरेठाओनी कुटिळ नीतिना कारणथी अनेक प्रकारनां उपद्रवो उत्पन्न थया. महाराणा प्रतापसिंहजीए मात्र त्रणन वर्ष राज्य कर्युं. स्वर्गस्य महाराणा जगतसिंहजी राजगादीए वेठा पछो तुरतमांज कोइ कारणथी राजराणा रायसिंहजी उपर अपसन्न थया हता. जेथी राजराणा पोताना राज्यनो परित्याग करी हुंगरपुर नामनी राजधानीमां पथारी गया हता. हुंगरपुरना राजाए तेओनो अत्यंत आदरसत्कार कर्यो हतो. त्यारवाद थोडेज वस्तते मेवाड मध्यना थोराइ तथा सरांगा आदिपाळना भीळपींणाओए राजविद्रीह कर्यों हतो. राजराणा रायसिंहजीए मेदपाटेश्वरनी आज्ञा मेळच्या सिवाय त्यां जइ राजद्रोहीओतुं दमन कर्युं हतुं. ज्यारे मेदपाटेश्वरे उक्त विद्रोह शमननां समाचार सांभळ्या त्यारे म्होटा ठाठपाठथी प्रतिष्ठापूर्वक राजराणा साहेवने उदयपुर वोळाच्या हता अने तेओनी मुक्तकंठे प्रशंसा कर्या वाद केटळाएक वस्ताभरण अर्पण करी सादडी जवानी आज्ञा आपी हती. संवत १८१० मां श्रीमान महाराणा द्वितीय प्रतापिंहजीनो देहांत थतां द्वितीय राजसिंहजी मेदपाटेश्वर वन्या, तेओए मरेठा-ओना अत्याचारोने छीये अत्यंत व्यथित अवस्थाए केवळ सात वर्ष पर्यन्त महा मुशीवते राज्य

कर्यु. वि. सं. १८१७ मां तेओनो अपुत्र स्वर्गवास थतां तेओना काका महाराणा अरसीजी उद-यपुरना राज्यासन उपर विराजमान थया. त्यारवाद थोडेज वखते अर्थात् वि. सं. १८१८ नी शरुआतमां राजराणा रायसिंहजीए स्वर्गवास कर्यो. तेओश्रीनां लग्न निम्निकिखित राजाओनी कुंचरीओ साथे थएल हतां.

(१) देवगढना अधीश चुंडावत राव संग्रामिहंजी. (२) आमेटना अधीश चुंडावत राव केसरीसिंहजी. (३) वीजोळीना अधीश पंवार राव सवाइ मान्धाता. (४) घाणेराव ठाकोर राठोड दुन्डसिंहजी. (५) विनोताना राव इटसिंहजी सगतावत. (६) शाहपुराधीश राजाधिराज उमेद-सिंहजी राणावत. (७) माणचा ठाकोर वरुतावरसिंहजी.

तेमां देदगढवाळां राणीजी साहेवथी राजकुमार जालमसिंहजीनों तथा माणचाना राणीजी माहेवथी पाटवीकुमार सुलतानसिंहजीनो जन्म ययो हतो।

वि. सं. १८१८ मां राजराणा रायसिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना पाटवीकुमार श्रीमान हतीय गुलतानसिंहनी साददीना राज्यासनपर विराजमान थया ए वखते मेवाड दे-शमां नाना प्रकारना उपद्रवीनो आरंभ थर चुक्यो हतो. महाराणा अप्रतन्त्र थयेका घणाखरा सरदारोए माधवराव सिंधीयाने पोतानी रोळाच्यो. संवत १८२५ मां मेवाहनी अने सिंघीआ माध्यरावनी सेना वच्चे भयंकर युद्ध मन्युं, लो के मेवाडना उत्सादी सैनिकीए माधवरावने हराच्यो परंत ए युद्धमां मेराहने वधारे हानि वेठवी पढी सल्हवरना अधीश राव पहाडसिंहनी तथा झाह-पुराधीश राजा उमेदसिंहजी रणांगणमा काम आन्या, वनेडाधीश राजा रायसिंहजो घोरहपे पायल थया अने झाला जालमसिंहजी (जेना वंशजो झालरापाटणमां राज्य करे छे ते) मरे-टाओंने राषे केंद्र पकडाया, माप्त थएला पराजयपी लज्जित बनेला माधवराव सिंधीआए अपरि-मित सैन्यने एकत्र करी मेवाड उपर चडाइ करी. महाराणा अरसीजीना अनुचित वर्तनथी 'चुंडा-षत तथा सगनावतोना परस्पर विरोधने छीधे मेवाडना केटलाएक सरदारो देखनुं रक्षण करवा पाट रणभृतिमां राजर न धया, तोषण मेवाद देशनी केटळीएक सेना, सरदारी अने सीघी मुमकणनो माध्वराव माथे युद्ध करवा मज्ज यया, अंगने रोपांचित करे एवं युद्ध थयं. राज-राणा मुक्कतान(संहजी तथा देळवाडाधीश गज कल्याणसिंहजी घणा घायक थया, राजराजाना

श्रीर उपर नानां मोटां छगभग चोरासी जलां थया हता, देळवाडाधोशने तो तेना सेवको रणांगणमांथी उपाही गया; परंतु राजराणा सुछतानसिंहजी समग्र सैन्यनो संहार थइ जवाथी मरेटाओने हाथ आवी गया. अने वे वर्ष पर्यन्त तेओने सिंधीआ पासे रहेवुं पटयुं. मेदपाटेश्वर तरफथी एओने वोछाववा माटे कोइपण जातनो इछाज छेवामां न आच्यो. सादडीना कार्यभारीओएज अत्याचारी मराठओने वे छाख रुपीआ आपी पोताना माछिकने मुक्त कराच्या. मेवाह अपार
हानि वेटयां छतां मरेटाओने जोती शकी नहि. मेदपाटेश्वरे माधवराव सिंधीआने सेना व्ययना
चोसटछाख रुपीआ आपी पोतानो छेढो छोडाच्यो. तेमां तेत्रीशळाख रुपीआ तो आभूपणादि
वेची रोकहा आप्या अने वाकीनो रकमने वदछे निमच, जावध, जणे अने मोरवन आदि प्रान्तो
गीरोनी पेटे आप्या; अने गोहवाह नामतुं परगणुं मरुवराधोश महाराजा विजयसिंहजी तरफथी
क्वित्रणहजार घोडेस्वारोनी सहायता आपवा वदछे पोताने मळ्युं. राजराणा मुछतानसिंहजी जेवा
वीर अने नीतिनिपुण गणाता तेवाज उदार प्रकृतिना हता. तेओनो प्रथम विवाह वेदछाधोश
रावत रामचंद्रजी चौहानना कुंवरी साथे थयो ए वखते तेओए त्रणछाख रुपिआ माट चारणोने
त्यागमां आप्या; अने तेरसो उंट तथा सत्तरसो घोडा किवओने इनाममां वेंची आप्यां. त्यारे
कोइ एक कविए कहां के—

दोहा.

आधी गादी बेदलो, आधी गादी राण, सादडी सुलतान झाला, दूसरो दीवाण;

अन्य कविए कहां छे के.

दोहा.

तेरेसे टोडर दीया, सत्तरेसे केकाण; द्रव्य लडी देवे रयो, सादडी सुलतान.

कोइएक वखते केसरीसिंहनो शिकार करवा पथारेल राजराणा सुलतानसिंहजीए सरदारो, कार्यभारीओ अने कविषेडलने साठहजार रुगीआनुं पारितोषिक आप्धुं हतुं. प्रृत्ते राजराँणा एक दिवस उदयपुरमां एक छप्च अश्वपर आरूढें यह पोतानी हवेलीयी राजभ्रवन तरफ पंचारता हता त्यारे कोइएक मतुष्ये शंका करी के राजराणा लघु अन्य उपर शामाटे स्वार थया हशे ? ए वात पोताना जाणवामां आवतां वीजे दिवसे हवेलीयी राजमहेल जतां सुधीमां तेओए वसो अन्य द्वार-पालोने दानमां आपी दीधा. लद्वपुराना कोइएक चिताराए सादहीना राज्यमहेलमां मयुरतुं एक मनोहर चित्र बनावी तेमां उत्तम मीनाकारीतुं काम कर्धु ते जोइ मसन्न थयेला राजराणाए देवदां अने स्वयंपुरा नामनां गामनो अर्थ भाग चिताराने इनाममां आपी दीथो. तेओना वखतमां सादही राज्यनी वार्षिक आमदानी त्रणलाख रुपिआनी हती. सात हाथो अने त्रणसें अरवी घोडा अन्यालयमां कल्लोल करता हता तथा दुंदुंभी अने पताकायुक्त तावाना वार जागीरदारें। स्वारी वखते सेवामां हाजर थता हता ए महान उदार महपतिए सादहीनी दक्षिण दिशा तरफ चार गाउने छेटे एक छंदर सरीवर अने एक देदीप्पएान दुर्ग प्रजानां संरक्षण अर्थे बनाव्यो. तथा वेदलावाळां राणीजीसाहेव फतेहकुंबरीजीए वि—सं. १८३६ मां सादहीनी सभीपे उत्तरमां एक निर्मल कुंडतुं निभीण कराव्युं, जे वतेमानकालमा तेओना स्मारक चिन्ह तरीके दृष्टिगोचर थाय छे. वि—सं. १८३५ मां राजराणा गुलतानासहजीए सादहीनी दक्षिण पर्वतना शिखर उपर मुलतानगढ नामनो एक गुंदर किलो तैयार कराववा मांख्यो; परंतु ते अपूर्ण रही जवाने लोधे अद्यापि खंडेरोरूपे विषयमान छे.

राजराणा छुलतानसिंह जीनां लग निम्नलिखित राजाओनी कुंवरीओ साथे थयां हतां.

- १ भणायनरेश राठोड नाहरसिंहजी.
- २ वगमना राव माधवसिंहजी चूंढावत.
- ३ हमीरगढना राव माळदेवजी राणावत.
- ४ गढ भेंसरोडना राव छालसिंहजी चूंडावत.
- ५ अटानाना राव नाहरसिंहजी चूंढावत.
- ६ वेदलाना राव रामचन्द्रजी चहुआण.
- ७ सेलानाना महाराज उदयसिंहजी राठोड.
- ८ तलवाहाना टाकुर मालमासिंहजी राठोह.
- ९ भदेसरना राव दुल्हाभेंहजी चूंढावत.
- १० आमेटना राव रोडिनिइजी.

तेमां मात्र आमेटवाळां राणीजीयी राजकुमार चन्दनसिंहजीनो जन्म थयो. वि-सं. १८३९ ... थी १८५४ सुधीमां राजराणा सुलतानसिंहजीए मेवाड देशमां मरेठाओए मचावेल महान उपद्रव व्यवते महाराणा अरसीजी, महाराणा हमीरसिंहजी अने महाराणा भीमसिंहजीनी वीना कोइयी न वनी शके तेवी सेवा वजावी वि-सं. १८५५ मां कैलासवास कर्यो.

वि. सं. १८५५ मां राजराणा सुकतानसिंहजीनो कैलासवास थतां तेओना कुमार चंदन-, सिंहजी साद्वहीना राज्यासनपर विराजमान थया ए वखते तेओनी उम्मर मात्र नव वर्षनीज हती: ध्विमरेठाओए सादही मान्तमां नाना मकारना उपद्रव तथा अत्याचारोनी शरुआत करी, पीडा पा-📕 मेळी प्रजा प्राण कड अन्य स्थेळे पलायन करी गइ, सादही तात्रानां केटलांएक गामी तइन उज्जड वनी गर्या. मरेठाओना वारंवार आक्रमणथी अत्यंत व्यथित थएळा राजराणा। चन्दनसिंहनी पहा-दिहोंनी अंदर वसवा छाग्या. मरेठाओए वे वखत सादही उपर स्वकीय सत्ता जमावी हती अने अ-चुमुक समय सुधी त्यां राजं पण कर्युं इतुं, ए अनुचित वनावनुं कारण केवळ राजराणा चन्द्रसिइनी-नी वाल्यावस्थाज हतीः महाराणा भीमसिंहजी पण मरेठाओना भयथी संमृढ होवाने छीथे साद-दीने कोइ पण प्रकारनी सहायता आपी शक्या नहीं, ज्यारे चन्दनसिंह त्रीए युवायस्थाने प्राप्त थर स्वकीय राज्य तरफ दृष्टि करी त्यारे तेओना हृदयमां स्वर्गस्थ राजराणा अजाजी तथा मानसिंह-जीनी माफक स्वदेश रक्षाना भावनो आविभीव थयो अने तुरतज असाधारण वीरता तेमज पवी-णताना प्रभावथी मरेठाओने साद्दीमांथी मारी काढ्या. परंतु दीर्घकाळ पर्यन्त मरेठाओर उपरा-उपर चढाइ करवाने लीधे सादहोनी आमदानी आगळ करतां घणी ओछी थइ गइ. त्रण लाख रुपीआनी वार्षीक आवक रही. वि. सं. १८६५ मां अमीरखां नामना धाडपाडु यवने मरेठाओनी साथे मळी मेवाह देशनां केटलाएक भागोमां छंटफाट चलावी: परंतु त्यारवाद थोडेज वलते इस्ट इंदीआ कंपनीतुं समग्र भारतवर्षमां साम्राज्य जामवायी सर्वत्र सुख ज्ञानित जणावा छागी, संवत १८७४, इ. स. १८१८ ना जानेवारीनी १६ मी तारीले उक्त कंपनीए स्वरक्षित अन्य देशी रजवाहाओनी साथे करेका संधीपत्रनी माफक मैवाह साथे पण संधीपत्र कर्यो. ए कार्यमां तया अन्य उपद्रवोमां मेदपाटेश्वरनी ग्रुद्ध दिले सेवा बजावी राजराणा चंदनसिंह जी सादही पधार्याः अने त्यां आव्या बाद तुरतमां न तेओनो स्वर्गवास थयो.

श्रीमान् राजराणा चंदनसिंहजीना लग्न निम्नं लिखित मतिष्ठित राजाओनी पुत्रीओ साथे थयां इतां.

- १ कानोडना अधीश रावत जालमसिंहजी सारंगदेव.
- २ उदयपुर इवेळीवाळा महाराज बहादुरसिंहजी राणावत.
- ३ वस्वोरना अधीश ठाकोर केसरीसिंहजी चूंडावत.
- ४ रामपुराना राव चमनसिंहजी.

ए चारे ठेकाणानां राणीजीने कांइपण संतित थइ न हती। राजराणा चंदनसिंहजी शूर-धीर, स्त्रामीभक्त, धैर्यवान, उदार अने दयाळ हता। ए वखतना कोइएक कविए तेओश्रीना यशनुं वर्णन करतां छल्छुं छे के—

छन्द पद्धरी.

ग्वालेरपति इन्दोरनाथ, सूवा सभी शमशेरसाथ; इत फोज मरहटांकी अपार, विध विध घर लूटत करी विकार ॥१॥ चनणेश वये वालक सुजान, सब कियो मंत्र मन्त्री सआन; ग्वालेरपतिको अनुगताम, निज बुद्धिमान भडतक्कु नाम ॥ २ ॥ वहे जामदार कहके बुलाय, चित्त आज फोज डर मिस्यो चाह; कर डेरो जहां विस्तार कीध, लखी सर्व हाकिमी खोस लीध ॥३॥ चनणेश कल्यो यह समाचार, वनी वैठो मालिक है विचार; तद तक्कु कहायो बचन जोर, सुनी भयो चनणसी आग सोर ॥ ४॥ 🖫 षय है किशोर तउ छत्रि वाल, कुपि उठ्यों भूप कोधा कराल; इत तकु बुलाइ फोज एम, कायम करील गढ देर केम ॥ ५॥ सुनी गूढ मन्त्रीके समाचार, विधकरण तक्कको किय विचार; छितधीश कसे आवध छतीस, वणी चले सुभट ज़े द्वेणवास ॥६॥ करि कोप तक्क ते जुद्ध कीध, इक रह्यो नहीं परभंड अविधि; सुनी जुद्ध तक्कु भाग्यो संभार, है अन्त अनीति मध्यहार ॥ ७॥

[598]

करि चाकर लायें हैं कृपाल, सो वैठो अरि वै परमसाल; कम सुभट जान जिह जोर कीध,देवीस क्षत्रि मिलि सजा दीध ॥८॥ गो तक्कु भूप ग्वालेर द्वार, सुन करी आप पति पै पुकार; सिंध्या कोषित भो यह सुनंत, तहां अयुत सुभट भेजे तुरन्त ॥९॥ दिन तीन जुद्ध भो अति दुसार, वै मुग्न मरहटां द्वेहजार; लहीं फोज बुलाइ मुदित केर, गिरवास कियो नृप समय हेर ॥१०॥ मरहटां अमलकर गढ मँझार, चनणेश समय लखि फिर सँभार; शतपंच सुभट दरारात निषाद, मिल क्रोध उग्रसर लुपि मृजाद ॥११॥ कनकाग्नि जनतनके अंग बीच, क्रापि कयों भूपतहँ कलह कीच; अरि मार किये सब छार ओक,मुरि गये मरहटां मांग मोक ॥१२॥ आपनो लियो आसेर आप, पोरषरू शामध्रमको प्रतापः यह रीति बार के जुद्ध जीत, राखी नृप आदूवंशरीत ॥ १३ ॥ सम्पतरु विपती एकसार, पती इन्दु दुतियाके आकार; कै आप बांहबल जुद्ध कीध लिंग स्वारय जीवन ओट लीध ॥१४॥ गजपुरी अराजक बिचलगोम, जहां रखी भूमी नृप आप भोम.॥

राजराणा चंदनसिंह जीनो देहान्त थती. वखते सादहीनी दशा अत्यंत शोचनीय हती. अंवाजी, चाळाराव आदि गरेठाओना अपरिमित अत्याचारोथी तेमज नवाव अमीरखा आदि लूंटाराओनी ॡंटफाटने लीधे दुर्दशाने माप्त थयेळी सादही तरफ द्रष्टि करतां कोमळ मकृतिना मनुष्योने अश्रुपात धतो हतो. आवक तहन ओळी थइ गइ हती. राजगणा चंदनसिंह जीने कंइ पण संतान न होवाना कारणने लीधे कुंढलाधीशना वंशमांथी मकोडाना ठाकोर दोळतसिंह जी सादहीना केटलाएक सरदारोनो संमतिथी राज्यासनपर आस्त्रह थया. ए वखते घणाखरा खुशामती आ अने खाउकण सेवकोने तो संतोष माप्त थयो, परंतु माचीन सरदारों अने अन्तः पुरना निमकहळाळ

ने करोथी ए सहन थइ शक्युं निह, ताणा, झाडोळ अने कुंडळा के जे सादडीना समीपवर्तीं भा-यातो हता; तेमां कोइने एकथी वधारे राजकुमार न हता, के जेने सादडीना राज्या-सन उपर वेमाडी जकाय, तोपण श्रीमती राणीजीसाहेवे तथा मितिष्ठित सरदारोए साटोळाना रावजी साद्देवने वोटावी एक दत्तक छेवा माटे खानगी सभा भरी एवो निश्चय कर्यों के दे-लवाडाधीश राज कल्याणसिंहजीना वे क्रमार छे, तेमांथी एकने सादडीना सन इपर वेमाइवा. ए वात ज्यारे द्रढ थइ त्यारे केटलाएक सरदारो देलवाडा गया, अने राज कल्याणार्विद्दजी पासेधी नेथोना नाना कुमारने सादडोना राज्याननपर नियत करवानी परवानगी मेळच्या पछी महाराणा भीमसिंहजी आगळ जइ अरज गुजारी के देळवाडाना नाना कुमार कीरत-सिंहजीन सादहीनी गादीए लेवानो अमोए तथा राजराणा चंदनमिंहजीना राणीनो साहेवे निश्चय कर्यों छे तो आप तओने उदयपुर लाववा माटे पाचीन रीति प्रमाणे महाराज कुमार अमरसिंहजी-ने देळवांढ पधारवानी आज्ञा आपो, महाराणानी आज्ञाथी कुमार अमरसिंहजी देळवांडे पधार्या अने ट्रामार कीरतसिंहजीने उदयपुर लाच्या, तथा " सहिं लियोंकी वाडी " नामनुं स्थळ के ज वर्तमान पेदपाटेश्वरनी द्रष्टिए अपूर्व शोभाने धारण करी रह्यं छे तेमा उतारो आप्यो, श्रीमान् महाराणा भीमांसहजी प्राचीन रीतिने अनुसरी स्वर्गस्य महाराणानो ज्ञोक जाहेर करवा उक्त स्थळे पधार्या अने बीजे दिवले आबी राजराणा कीरतसिंहजीने तलवार वंधाववानी क्रिया करी. त्यार-पाद द्वितीय राज्यराणा कीरतसिंहजीए तुरतमांज सादडीना सरदार सलूंबराधीश, कुरावडाधीश तथा साटोलाधीरा के जे पोताना भातुर पक्षमां इता तेओना सैन्यनी सहायताथी सादडी तरफ भयाण वर्त्यु. कृत्रिम राजराणा दोळतसिंहजीए ए ममाचार मांभळतांज राज्यचिह्ननो परित्याग करी " मकोटा " नो मार्ग माप्यो, जेथो राजराणा कीरतसिंहजी कांइ पण उपाधि सिवाय वि. सं. १८७४ मां सादरीना राज्यासनपर विराजमान थया. कृत्रिम राजराणा दोलनसिंहजीए मात्र छ सिर्ता सादटीतुं राज्यमुख भोगव्युं, परंतु तेओनी राज्यकाजमां तेमज दशधी अनिभन्नता होवाने लीपे आसपासना सरदारोए सादही नादाना केटलाएक गाम पचावी पाड्यां, व्रणलाखने वद्ले राय्यनी आवदा नदहजारनी यह गइ. राज्यना जीवनरुप आमदानीना क्षयने छीचे राजराणा कीर-म्बिंहजी पर करज वधी गर्य द वन्वते योग्य कार्यभागीओनो अभाव हतो, प्रतिष्टित अने बुद्धि-मान सरदारो रणभृमिमां काम आवी गया इता, पोतानी अवस्था मात्र दश वर्षनी इती, नाणांनी तंगीने लीधे केटळांएक गामोने क्टांतर आपी खंटणीना रिपया भरवामां आवता हता.

श्रीमान राजराणा कीरतसिंहजीनो पथम विवाह वेदलाबीश रावत केसरीसिंहजीनां कुंव-री साथ तथा वीजो विवाह वांसोना राव अजीतसिंह जी सग्तावतनां कुंबरी साथे थयो. तेमां वेद-कावाळा राणीजीथी वि-सं. १८८६ ना फागणवदी १३ ने रिववारे राजकुपार श्रिवसिंहजीनो, वि-सं. १८८८ ना भादरवावदी २ ने दहाडे कुमार फैनेसिंहजीनो, संवत १८९२ ना पोषवदी १२ ने दिवसे कुमारं जयसिंहजीनो अने वि-सं. १८९५ ना चैत्रवदी ४ ने दहाडे कुमार उमेद-सिंहजीनो जन्म थयो तथा एज राणीजीथी प्रथम चमनकुंबर, द्वितीय रुपकुंबर अने तृतीय दोछत-कुंबर नामे पुत्रीओए जन्म ळीधो. तेमां प्रथम कुंबरोना छप्न वि-सं. १९०४ मां वेगमें ठाकोरना कुमार माधवसिंहजी साथे थयां अने ए वि-सं. १९१७ मां पोताना पतिनों स्वर्गवाम थतां तेओ-नी साथे सती थयां. द्वितीय बाइसाहेब रूपकुंबरनां लग्न वि-सं. १९०८ मां कानोडाधीश रावत उमेदसिंहजी साथे थयां इतां अने त्रीजा बाइसाहेव दोळतक्कंवरनो विवाह मेदपाटेश्वर श्रीमान् महा-राणा शंभ्रसिंहजी साथे करवामां आव्यो हतो. संवत १९०७ मां श्रीमती राणीजी चौहाणीजीना द्रव्यथी कुंडनी समीपे एक मंदिर तथा धर्मशाळा वनाववामां आवी. मंदिरतुं नाम " कीरत शृंगार-विद्वारीजी "राखवामां आव्यं, अने एना वास्तु महोत्यव वखते मेवाडना मोटा मोटा प्रतिष्ठित सरदारो सादहीमां उपस्थित थया इता. संवत १८८५ ना महाराणा भीमसिंहनो कैकासवास थतां तेओना क्र-मार जवानसिंहजीए मेदपाटेश्वरतं पद धारण कर्यु, ए वखते राज्यनो खजानो तहन खाळी होवा जपरांत राज्य माथे वीज्ञाळाख रुपीआतं करज हतं. वि. सं. १८९३ मां राजराणा कीरतसिंहजी विजयादशमीना प्रसंग उपर उदयपुर प्रधायी. तेत्रोनी स्वारीना अश्वनी मेदपाटेश्वरे मुक्तकंठे प्रशंसा करी. पोताना स्वामीनी आंतरिक इच्छाने समजी गएळा राजराणाए ए अन्व महाराणानी सेवामां अर्पण कर्यो ते वखते महाराजा जवानसिंहजीए राजराणा पासेथी खंडणी तरीके लेबामां रुपीआ १८०० मांथी रुपीआ आठतो निरंतरने माटे माफ कर्या. वि. तं. १८९५ मां ए मेद-पाटेश्वरनो स्वर्गवास थतां वागोरथी दत्तक आवेला सरदारसिंहजीए महाराणातुं पद घारण करी उदयपुरना राज्यासनने अछंकृत कर्यु.

तेणे पात्र चारज वर्ष राज्य कर्यु. संवत १८९९ मां तेओनो स्वर्गवास थतां तेओना लघ-पन्यु सरुपसिंहजी मेदपाटेश्वर बन्या. संवत १९१४ इ. स. १८५७ मां भारतीय गवर्नमेंटना हिंदु

१ कुमार फतोसिंइजी देळवाडाधीश राजराणा वैरीसाळजीनो अपुत्र वि—सं. १९१२ मां देहांत थतां तेओना दत्तक वनी देळवाडानी गादीए बेठा.

तया मुसद्भगन संनिकोए महा भयंकर बळवो कयों. हजारो युरोपीअनो तेओना हायथी मराया, तेमज घायल थया. ए वखते जेटला युरोपोअनो उदयपुर तथा सादढीमां आव्या इता, तेओतुं उ-द्वितम रीते रक्षण करवामां आर्ट्यु इतुं. एज वर्षना कोइएक मासमां राजराणा कीरतसिंहजीने मेदपा-टेम्बरे लखेली पत्र मळ्यों ए पत्रनो आशय ए इतो के " मेवाडना पोलोडीकल एजंट केपटन शोर साहेदनी मंमितिधी निमन्देहा नामना परगणानो निजय करना माटे जदयपुरथी सैन्य मोकलनामां ुआन्युं छे, अने ए सेनाना नायकन्नुं पद कोटनगोर साहेवेन स्वीकार्यु छे. एटला माटे आप पण रणांगणमां जइ तेओने सदायता आपशो. " राजराणा कीरतसिंहजीनी खुद्धावस्था होवाने छीधे तेओना राजक्रपार शीवसिंहजी, जयसिंहजी तथा उमेदसिंहजी सेना सहित निमलहेडाने जीतवा माटे जह पढोंच्या; अने शोर साहेवना सहायक वनी प्रचंड पराक्रमथी स्वरूप समयमांज दिजय मेळच्यो. त्रण दर्प पर्यन्त महान् शौर्यनी साथे निमवहेडामां मेदपाटेश्वरनो विजयवावटो फरकाच्यो, भारतवर्षनी राजविद्रोह शान्त वयां उतां भारतीय गवर्नमेन्टे कोण जाणे क्या कार-णधी अथवा केवी नीतिने आधारे निषबहेडानुं परगगुं मेद्रपाटेश्वरना अधिकारमांथी छीनवी लड प्रण वर्षना कर सहित टोंकना नवावसाहेव वजीरुदौछाने पाछुं अपावी दीधुं. संवत १९२२ ना भादरवा बदी ६ ने दिवसे राजराणा कीरतासंहजीनो कैळासवास थतां तेओना पाटवीक्रमार शीव-ुिसिएजी सादडीना राष्यासनपर विराजमान थया. स्वर्गस्थ राजराणा परम बैष्णव, सहनशी छ, तथा द्याळ स्वभावना रता. तेओनी प्रशंसा करतां कोइएक कविए कहेल छे के-

" कवित्त "

मनको महेश शेष सुमरण द्योस निसा, प्रजापित पालवेमें पृथुके समानको ॥ सत्य धर्म शीलता समाधि इप्ट समरनमें, जनक समान जोग भोगके विधानको ॥ देखके प्रताप सुरराजके विभा समाज, जानत जहान प्रभा भूप तन आनको ॥ कीरत नृपाल प्रतिपाल कवि विप्रनको, दानको दधीच जती गोरखसे ज्ञानको ॥ कृतिम राजराणा दोलतासिंहजी सादडीथी चाल्या गया पछी तुरतमांज तेओना पुत्र संग्रा-यसिंहजी तथा प्यारिंसिंहजी राजराणा कीरतिंहजीनी पासे आव्या हता. श्रीमान् कीरतिंहजीए देविनो अपूर्व आदर सत्कार कर्या वाद एकने चाहसेडी अने वीजाने लालपुरा नामनुं गाम आप्युं हितुं के जेनो उपभोग अद्यापि तेना संतानो करे छे.

্রিক্র ্বালর্যাণা शीवर्सिहजीनी अवस्था राज्यासनपर विराजमान थती वखते छगभग वार वर्षनी इती. तेओने सर्व रीते योग्य जाणी, वि. सं. १९०८ मां स्वर्गस्य राजराणा कीरतर्सिंइजीए समग्र राजकारोवार सोंपी दीधो हतो. ए वखते राज्यनी दुर्दशा हतो तोपण प्रविगता अने वैर्यथी प्राणी-मात्रना कष्टोतुं निवारण करी राज्यराणा शीवसिंहजीए देश विदेशमांथी प्रजानो संग्रह कर्यो अने पोताना राज्यमां केटलाएक नवां गामो वसाव्यां. हजारो क्रुवा खोदावी पृथ्वीनुं सिंचन कराव्युं जेथी थोडाज वखतमां राज्यनी आवक नवहजारनी इती तेने वदले एक लाखनो थइ गइ. डाक्क तथा छंटारा लोकोए रहेवा माटे पर्वतनी अंदर विविध स्थाने। वनावी राख्यां इतां. राजराणा शीव-सिंहजी निरंतर पोताना लधुवन्धु सहित घोडे चडी पहाडो तेमज राज्यनां नानां नानां गामामां रात्रि दिवस सफर कर्या करता. तेओनां तेजस्वी शरीरनो प्रचंड प्रभाव जोड डाक्क तथा छंटारा सादडीनी सीमानो परित्याग करी अन्य स्थळे पलायन करी गया. अने जे अवशेष रह्या इता, ते-ओने योग्य शिक्षा आपी वंदीवान वनाववामां आव्या. राजराणाना ए उत्तम प्रवंधने जोइ प्रजा मुक्त कंठे पशंसा करवा लागी. तेओनो पथम विवाह सैलाणाना महाराजा तक्तसिंहजीनां पुत्री एजन-कुंवर शाथे थयो हतो. त्यारवाद वि. सं. १९०९ ना फागग विद २ ने दिवसे तेओ मोटी धाम-धुम साथे कानोडना अधीश राव अजीतर्सिंहजीनां पुत्री रुपकुंवरने परण्या अने एक महिना पछी अर्थात चैत्र विद २ ने दहाडे थाणाना राव गंभीरसिंहजीनां प्रत्री रुपकुंवर साथे तेओनां लग्नथयां। त्यारवाद तुरतमांज पोते उदयपुर पधार्या, श्रीमान् महाराणा सरुपसिंहजीए तेओनी योग्यता तथा सद्गुणोने निहाळ्या वाद पोतानी पासे रहेवा आज्ञा आपी; अने राजराणाने वंशपरंपरा माटे पूर्वना मेदपाटेश्वर तरफथी आपवामां आवेल मतिष्ठानुं मीतिपूर्वक परिपालन कर्युं. श्रीमान् शीवसिंहजीनी सेवाओथी अत्यंत संतुष्ट थए ा महाराणा सरुपसिंहजीए तेओने गुंदलपुर, हनुमंतीया, सैमीलीया, करमला, तथा लवासीया आदि गामो के जे राज्यऋणने बदले पोताने त्यां गोरवी हतां ते ऋणना रुपीया लीधा सिवाय पार्जा आपी दीधां, निमबहेडाना विजय वखते कोटनहोर साहेवे राजराणा शीवर्सि-हजीनी युद्धपढुता जोइ पसन्नता पूर्वक कर्युं इतुं के "सादडो राज्यनां जेटळां गामो निमवहेढाना परगणां

नीचे दबायेटां छे, ते निरंतरने माटे आपना अधिकारमां रहे पटला माटे हुं आपने एक लेख लखी आएं हुं " परंतु ए वखते ए वातने। अस्विकार करी श्रीमान् शीविसहनीए शोर साहवने कहुं के " जो निमबहेडा हुं परगणुं मेदपाटेश्वरना अधिकारमा पाप्त थशे तो तेओ एनी मेळे पोताना करकमल्थी जिमारा गामो अमने अपण करने. " कोटनशोरसाहेवे शीविसहनीनी वीरता अने योग्यता माटे मेदपाटेश्वर माथे छुंदर शब्दोमां एक पत्र लखी मोकल्यो हतो. ज्यारे शीविसहनी उदयपुर पथायी त्यारे महाराणा सरूणविहनी समक्ष शोटनशोरसाहेवे तेओनी घणीन प्रश्नाम करी हती. प्रसन्न थएला मेदपाटेश्वरे एन वखने राजराणा कीरतिसहनी उपर पत्र लखी कुमारनो योग्यता सर्वधी पोतानो हपे तगट कर्यो हतो अने आमरा, वस्त्रोस तथा रेखा आदि गामो ने राज्यना ऋणने वदेले गी-रवी हतां ने फरी साइडीने उगर दामे नोंपवामां आव्यां हतां. निमबहेडाना युद्धनुं वर्णन करतां बोरएक कविए निस्निलखित सोरटाओं कहेला छे.

योरठा

उडी झाट खग ओक, राहत्रहुं झगडो रचै।
झ्ट खडा असझोक करण प्रते कीतातणां ॥ १ ॥
राण लखें फुरसाण, सुकरां कीरतिसंहरें ।
आप अजा अवसाण, हें लेनो नीमवाहिडो ॥ २ ॥
सुण परमाण सकाज, कुलदीपक सेवो कुंवर ।
उस लियो जुध आज, पिता हुकमपित धामपर ॥३॥
सेवो जसो सधीर, उमेवो रजवट अडग ।
बरहाई बरवीर, भ्राता त्रिसंडे भुंडज ॥ १ ॥
उत वीपणा अपार, कवजै गढ तोपाकनें ।
उड़ी रीट उणवार गोला गोली गयणगज ॥ ५ ॥
असमर सचौ अनूप, तोफाजर दिन रात त्रय ।
सेवै गरुण सरूप. कर महिण विपधर कलम ॥ ६ ॥

मेघ चमू सम मार, कर कत्तह लीधो किलो । आदूघर आचार, सो बद अज वाणे सवा ॥ ७ ॥ सुनी खबर सारूप, करी फतह सेवे कुंवर । जुधरे रथधर जूप, कलह कलण वाहर कहें ॥ ८ ॥ श्रीमुख हुकम सुणाय, शोरसाहेवप्रति वचन सुण । मेदपाटधर मांहि सामधरम भण सादडी ॥ ९ ॥

श्रीमान् राजराणा शिवसिंहजी हमेशां प्रजाना हितमां अद्यत्त रहेता, तेश्रोए राज्यपासा-दोथी थोडे दूर पूर्व तथा उत्तर दिशामां आवेल एक महान् तळाव के जेनो वंध वर्षाकाळे सदैव छिन्नभिन्न थइ जतो तेनो फरीथो वि. सं. १९१७मां एवो मजबूत वंध वंधाव्यो के जे अद्यापि शिथिक थवा पाम्यो नथी. एज संवतमां राजधानीनी दक्षिण तरफना पर्वतोमां "झरना" नामना नाळांनी समीपं श्विवसागर नामे एक सुशोभित तळाव तैयार कराव्युं अने एघी अखिल प्रजाने असीम आनंद प्राप्त थयो. वि. सं. १९१९ मां नाहराना दरीखाना उपर त्रण पाळनी पहेळात व-नावी अने ते संपूर्ण थवां एक महान् उत्सव कर्यों, ए उत्सवमां देळवाडा, कान्होड, वान्सी, कुएडा, साटोळा, अठाना, ताणा, आकोळा तथा लूंणदा आदिना अधीश्वरो अतिथि वनी आव्या इता. राजराणा शिवसिंहजीए तेओना आतिध्यमां उदार दिल्थी हजारो रुपिया खर्च्या हता. वि. सं. १९२२ना भादरवा वद ६ना दहाडे धर्ममृतिं राजराणा कीरतसिंहजीनो कैळासवास थतां शोकसमुद्रमां गरकाव थएला श्रीमान् शिवसिंहजीए शोकसूचक वस्तो धारण कर्यो अने मंत्रीमंडलना अत्यंत आग्रहथी चार पास पछी अर्थात् मागशर शुदि १५ शनिवारे सादहीना राज्यासनपर विराजी पजा वर्गने ममोद आप्यो. मेदपाटेश्वरने राजकुमार न होवाथी वि. सं. १९२३ मां गजसिंहजी सादडी पधार्या अने श्रीमान् शिवसिंहजीने उदयपुर पधरावी गया. महाराणा शंभ्रुसिंहजीए पहेळे दिवसे सादढीनी हवेळीए पधारी स्वर्गस्थ राजराणा सबंधी ज्ञोक पदर्शित कर्यो अने बीजे दिवसे फरी, ए स्थळे आवी नूतन राजराणाने विधिवत् तळवार वंधावी त्यारवाद वि. सं. १९२७ मां ज्यारे अजमेरनी अंदर लॉर्ड मेयोए आम दरबार भर्यो त्यारे महाराणा शंधुसिंहजी त्यां पधार्या हता तथा राजराणा श्विवसिंहजीने पण साथे छइ गया इता. अजमेरयी आन्या वाद मेदपाटेश्वर पासेथी तीर्ययात्राए

जवानी आहा छइ राजराणा शिवसिंहजी प्रयाग काशी, गया, जगन्नाथ तथा वर्ज विगेरेनी यात्रा करी सात महिने साइडीमां पक्षार्या. वि सं. १९२८ ना माघ श्रुदि १३ ने दहाडे कानोठवाळां राणीजी माहेबे पुष्कळ द्रयना व्यय करो राज्यना मुख्य द्वार पासे एक धर्मशाळा तथा एक मनो- हर मन्दिर बनाव्युं अने तथा श्री रामचंद्रजो, छक्ष्मणजी तथा जानकीजीनी सुशोभित मूर्तिओ स्थापी. उक्त प्रतिमाश्रीनी पितृशा वग्वतं गोगूदा, कानोड अने देखवाडाना अधीश्वरो सादडीमां पधार्या हता. वि. मं. १२३१ मां श्रीमान् महाराणा शंसुसिंहजीनो स्वर्गवास ध्याना शोकजनक समाचार मळता राजराणा शिवसिंहजी अत्यंत दिळगोर थया. कारणके स्वर्गस्थ महाराणा परम सुशील प्रकृतिना, राजकाजमा निपुण तेपज पोताना बन्हेबो थना हता तेश्रोना अपछ द्रम्यान मेदाह देशमां कंह पण उपह्रव थवा पास्यो न हतो; तेश्रो पाछळ वागोरनरेश शिकतिमहंजीना कुमार राजनामिंहजी मेदपाटेश्वर बन्या। शक्तिसिंहजी महाराणा शंसुसिंहजीना पितृच्य थवा हता.

राजराणा शिविभिंहजीने संति निह यवाना कारणथी तैआए वि सं. १९३२ मां पो-नाना न्हाना भाइ यहाराज नयभिंहजीने दत्तक लीधा अने तेओने राज्यनां घणाग्वमां कार्यो सुप्रीत कर्यो अने पोते अवशेष आयुष्यनं पारमार्थिक कार्योमां न्यतीत करवा लाग्याः

दि. स. १९६३ मां राजमंदिरधी पूर्व दिशा तरफ घणा द्रव्यनो व्यय करी चतुर्श्वजना-पहुं मंदिर बनाव्यु, ए मंदिरनी समीपे एक धर्मशाळा तथा एक वापिका तैयार करावी. एज वर्षमां तैलानापाळा राणीजी साहेय तरफाधी श्रीकृष्ण चंद्रनुं मंदिर तथा एक धर्मशाळा अने महाराज डमेदिसिंटजी नरफारी श्री हारिकाधीशनुं मंदिर तैयार कराववामां आव्युं. मात्र शुद्धि पंचमीने दिवसे ए श्रणे मंदिरोनी एक साथे मिनष्टा धडः; नेमज मंदन १९३३ नी आवरे कानोडवाळा राणीजी साहेये साहटीधी एक गाड द्र कानोडना मार्गमां एक बाव बनावी. ए तमाम उत्सवोमां कानोड, हांसी अने देलवाटा आदिना अधीखरीए भाग लीधो हतो. श्रीमान राजराणा शीवसिंहजीए चतु-र्श्जनाथना मदिरनी मितिष्टा दखेते किकोविडोने हजारो रिपयानुं दान आप्युं हतुं अने चणा म-विष्ठित सरदारोने तथा वार्यभारीओने आगरे चालीश ग्राम डनाममां ब्हेंची आप्यां हतां. तेओना एषु ष्ट्यु महाराज जयासिंहजी नथा उमेडिसिंहजी एग महा ग्रुमील धर्मनिष्ट अने पराक्रमी हता.

पत्रश्रीनायजीना महोत्मद बन्दते कवित्रोए राजराणा शीर्वामहजीनी उदारता तथा धर्म-नेष्टिकण विषे नीचे मुलद दर्णन वरेलुं छे. दोहा.

आग्न इशहगग्रह शिश १९३३, सम्वत जान हु सो'य।
माघशुक्ल तिथि छठ शनी, जग मंदिर स्थिति जोय॥ १॥
उत्र भाद्रपद जोगिशिव, कोणुव कर्ण रुमीन,
रस घटिका पुण सात पुण, कृपासिंधु स्थित कीन॥ २॥
छन्द शोटक.

द्विजराज महूरत शुद्धदियो । कर मन्त्र महोत्सव काजकीयो ॥ कवि विप्र बुलाय सुनूतिकते । जिनदानिदये गजवाजिते ॥ कुल भ्रात सजे नृप उच्छवकुं । सकुटुम्बबुलाविलये सवकूं ॥ निज सानुज आपफतो नृपति । पुन आय उमेदकॉनोडपति ॥ सगतावत रावत मानसही । महाराज भुणास सुवाघमहीं ॥ शशिवंश बु देवियसिंह सरै। कुलतां विच यज्ञ अनेक करे। दिधिसिंह गम्भीर हंसी दरसे। जग आप जहां तख्तें छजसें॥ दुलहो मधुसूदन देख दिपै। थरुता शिव सानिज हाथ घरे।। जस राज रु जात उमेद जसा । तनुपे निज रायसिंह तसा ॥ और जािेंक सिंह उजाग रहें। सुरताण महा बुधिसागरहें॥ धन आदि बढो पुनिया घरको । शुभथान बनाय प्रमेश्वरको ॥ त्रिभवेश महेश गुणेश तहा। जगदम्ब रावि हनुमन्त जहां॥ जिनके गुण गावत शेष जसा ॥ सुरथापन सप्त किये सपसां ॥ कवि आय सुदेश विदेशनके निज देवित दुःख हरे मनके॥ विधि इंग्रजन भोजन नैकवने गन विप्र सम्बन्धी जिसाय घर्ने ॥ द्विज कोटिक हाटक दान दियो । भुवमें जयकार उचार भयो ॥ पचलाखरु द्रव्य जु दीध प्रथी। रुस रीत उछाह सुदासरथी॥ रचि केवल एक सुरोप रह्यो। कलिमें यज्ञ पूरण आप कियो। कहि सादुल चातुर यहै कविता। रह्यो अम्बर चन्दजिते रविता॥३॥ दोहाः

दाम खरच किय लाख है, सुत कीरत शिवराज आलय त्रय वापी सचव, कीने रुचि सव काज ॥ ४ ॥ सुर भूसुर पंडित सुकवि, आमे जज्ञ उदार । विधि आशिष दे तृप्त है, पुन स्वस्थान पधार ॥ ६ ॥

विन्तः. १९६५ मा श्रीमान् महाराणा सज्जनासिंह जी स्वदेश यात्रां करवा उदयपुरधी निक्ति वांटणा, कानोड तथा वासी आदि स्थळे धइ मागसरशुद पाचमने दहाडे वडीसादडी पथार्या, राजराणा शोबासिंह जोए तेओ वुं उत्तन रीते आतिय्य कर्युः तेओ नो अपूर्व स्वामी भिक्तियी प्रसन्न यएला मेदपाटे प्रेरं सादडीना राजतंत्रनो गुक्त कंटे एशंमा करी अने त्यां वे दिवस विविध विनोद क्या दाद साटोलाने मार्गे षह छोटी मादडी तरफ प्रयाण कर्युः संवत् १९३९ ना मांच मासमां पोताना नाना भाह देलवाडा नरेश राजराणा फतेसिंह जीना पुत्रीनो विवाह होवाथी श्रीमान् राजराणा शीबसिंह जी त्या पर्धायाः, परंतु तेओने प्रयम्थी ज खासी तथा पार्षश्र्वा शान्य निहे, दिनम् तिदिन हिंद्ध पामता व्यापिने लीधे मायशुदि चोधने दिवसे तेओ नामदारनो केलासवास थयोः

धीमान् शीविस्क्रीना शदनी दहनिकया देखवाडाधी त्रण माइछने अंतरे एकिछिंगतीमां पर अने अने ए रथळे तेओना मतापी पुत्र राजकुमार रायिस्क्रिनीए पधारी संगेमरमरनो एक सुंदर कृतरो ईधाव्यो के ने यावत् चंद्रदिवाकर राजराणा शीविस्क्रिनीना स्मारक चिन्द्र तरीके अस्तित्व भोगवशे.

वि. स. १९३९ मा विवाना स्वर्गणमन पठो राजकुमार रायसिंहनी त्रीजाए राज्यासनपर विराजमान घर सादरीनी प्रजातुं संरक्षण करवा मांट्युं. नेओनो जन्म वि. सं. १९१६ मां ययो रतो. बाह्यदययीज संस्कृत विद्यातुं अध्ययन करी तेओ नामदारे उत्तम प्रकारनी योग्यता मेळवी हती अने राजकाजमां निपुण थवा माटे मनुस्मृति आदि राजनैतिक ग्रन्थोतुं पण अच्छी रीते अव-छोकन कर्यु इतुं. वर्णा अपना धर्मनुं शिक्षण तो शरुआतमां न संपादन करी छीवुं इतुं. स्वर्गस्य राज राणा शीवसिंहजीए वि. स. १९३२ मां उक्त राजकुमारने महातुभाव जाणी मोटा ठाठमाठयी रा-जनी पंदवी अर्पण करी हती. तथा वि सं. १९३३ मां क्रशवडना रावत रतनसिंहजीनां क्रंबरी साथे तेओनां मोटी धामधूम साथे छग्न कर्यो हतां अने छेबटे तेओने संवत १९३५ मां न्यायाभ्रव-ननो अधिकार आप्यो हतो. ए अधिकार गाप्त थतांज श्रीमान रायमिंहजी प्रमिनीय न्याय प्रदानथी पितानी प्रसन्नता मेळवी एज वर्षमां मारनाड तावे भादराजनना ठाकोर संग्रामिंहजीना कुंवरी साथे परण्या तथा एक राजक्रमारपासाद निर्माण करांवी तेने राजनिवास नाम आप्युं. वि. सं. १९३७ मां उदयपुरथी दक्षिण दिशा तरफना पहाडोमां निवास करनारी भील आहि जातिओए भयंकर रुपे राजविद्रोह करी केटलांएक राज्यना मनुष्योने मारी नांख्या ए समाचार सांमळतां मेदपाटेश्वरे कवि राजा श्यामळदासजी, पोताना मामा मानसिंहजी तथा मी. लोनर्गनने सेनानायक बनावी ऋषभदेवजी तरफ मोकल्याः अने भीलोगां मवल राजविद्रोहनो संभव समजी पोताना प्रतिष्ठित सर-दारोने सेना सहित उदयपुरमां हाजर थवाने माटे हुकम छ खी मोकल्या. ए हुकम साद्डीमां पण आव्यो, परंतु ए वखते राजराणा शीवसिंहजी अस्वस्थ होवाने छीधे राजकुमार राय सिंहजी, पोताना ळघुवन्धु सुळतानिवहजी तथा पितृच्य महाराज उमेदिनिह नी सहित चारसो सुभटोने साथे लइ चैत्र शुदि सातमने दहाडे उदयपुर तरफ प्याण कर्यु. त्यां पहोंच्या वाद श्री-मान् राजकुमार रायसिंहजीए मेदपाटेश्वरने सिवनय पार्थना करी के " हं तथा मारा पितृत्य सैन्य सहित रणक्षेत्रमां जवा तैयार छीए. आप हुकम आपो ते स्थळे हाजर थइए. " परन्तु मेवाडनी सेना तथा भीलोनी वचे केटलाएक वखत सुधी संधिपत्र थवानो संभव जाणी मेद्रपाटेश्वरे तेओने उदयपुरमां रहेवानी आज्ञा आपी. त्यारवाद एक महिना पछी पडूनापालना भीलोए फरी राज-विद्रोह कर्योना समाचार सांभळी मेदपाटेश्वरे राजकुमार रायसिंहजीने उक्त राजविद्रोहीओर्नुं दमन कर्रवांनी आज्ञा आपी.

संवत १९३७ ना वैद्याख शुदि ७ ने दिवसे श्रीमान राजकुमार रायसिंहनी अश्वास्टढ यह पधारवानी तैयारीमां इता, तेवामां मेदपाटेश्वर तरफथी द्वारपाळे आवी अरज करी के पहूनापाळना भीळोए राज्यनी आज्ञानो स्वीकार कर्यो छे, माटे इवे आपे पधारवानी जरुर नथी. मेदपाटेश्वरे तेओनो उत्साह तथा पराक्रम जोइ श्रीमान रायसिंहजीने

एक अन्य तथा घणाज किंमती आभूषण अने तेमना लघुवन्युने तथा तेमना विदृच्य महाराज उमेदिसहजीने घणोज किंमती पोषाक आप्यो स्वल्यसमय पछो श्रीमान् राजकुमार रायासहिं मेद्दारेश्वरनी आहा छइ सादडी पधार्या आ वर्षमां क्ररावडनां श्रीमती राणीजीसाहेचे पुत्रीने जन्म आप्यो संवत १९३९ ना माधशुदि ४ ने दिवसे राजराणा जीविसहजीनो स्वर्गवास घतां कुमार रायभिंहजी राज्यासनपर विराजमान थया. राज्यासन उपर वेमतांज श्रीमान राजराणा रायसिंहजीए मृजवा, पारज्ञोलीयह, करमाला, ग्रंदलपुर, आकोदडा अने सादढी नामना छ जिल्लाओमां जुदां जुदां न्यायमिद्दर स्थाप्यां तेमज एक सदर मेजीस्ट्रेट, दिवानी केमोना चुकादा माटे मुन्सफ, डाकू जातिओनी देखरेख राखवा माटे इन्सपेक्टर तथा शहेर्दनी संभाल माटे कोटवाल अने पोलीसो नियत कर्या, ए तमामनुं काम तपासवा माटे एक खास-पेजीनी कचेरी तयार करावी; ए उपरांत माल-विभाग तथा पृथ्वी—कर वक्षल करवानो प्रवंध यने राज्यकोपनी आवक जावक राखवानो तथा तपासवानो उत्तम मक्तरे प्रवन्ध कर्यो।

आजकाल केटलाएक राजाओ कार्यभारीओना रमकडां रूप वनी राज्यनो समग्र भार मंत्रीओ माथे नाखी दे छे अने पोते विषयानंदमां निमन्न वनी मजा सुखी छे के दुःखी तेनो तपास एण करता नथी; परंतु राजराणा रायासिंहजीतो परम नीतिङ्ग, स्वर्धम रक्षक, मजापालक अने गंभीर महानिवाला हता; तेओ निरंतर मभातमां चार वजे जाग्रतथइ पोणापांच वज्या सुबीमां शारीरिक शुद्धि अर्थे कराती आवश्यक कियाओधी निष्टत्त थइ जता, पोणापांचथी सात वज्या सुबी नित्य नियममा महत्त थता तेमां मथम सगुण इज्ञानी उपासना करी पछी विधिपूर्वक पंच महायज्ञ करता, सातथी नव वज्या सुधीमां आमदरवारमां विराजता. ते वखते समग्र सरदारो तथा कार्यभारीओ हाजर रहेता; अने पोते न्यायाधीश वनी मजाने न्याय आपता तेमज दिवानी, फोजदारी खासपेज्ञी, गिरदावली, कोटवाली अने जीहाधीशोनी अपीलो सांभळी तथा तेओना कार्यनुं निर्माक्षण करी योग्य हुकम फरमावता नीचेनी अदालनमां जेने वरावर न्याय न मळचो होय अथवा के अत्यंत व्याधि ग्रस्त होय तेओने अरजदार तरीके ए वखते पोता पासे आवजानो छुट आपवामां आवती हती; अरजदारनी अरज उपर पोते पुरेपुरुं लक्ष आपी योग्य फेंसलो आपता. नव वज्या पछी चनुर्श्वजनाधजीने मन्दिरे दर्शनार्थे प्यारता अने त्याथी पाठा वळनी वखते निरंतर अस्वतालानुं निरीक्षण करता, त्यार बाद न्हाना भाहओं तथा प्रनिष्टित सरदारो सहित सवा दश सहा सुधी भोजन करता, त्यार बाद नहाना भाहओं तथा पुत्री अन्तःपुरमां प्यारी माताओना

दर्शननो लाभ लेता, अग्यारथी साडावार वच्या सुधी अमात्य मंडलो साथे राज्यना अन्तरंग कार्योनो विचार करता, साडावारथी वे वज्या सुधी शयन करता, वेथी चार वज्या पर्यन्त माल विभागना अखिल कार्योतुं अवलोकन करता, चारथी पांच वज्या मुधी वायु सेवनार्थ (हवा खात्रा) प्रभारता, ए वखते कदाच सिंह आदि हिंसक जीवोना समाचार मळी जाय तो शिकारे पण प्रभारता; जो के केटलाएक आन्तरिक ज्याविओने लीधे तेओतुं शरीर पण दुर्वल हतुं तो पण शिकारे जतां कोइ कोइ चखते अथ वगर पवंत आदि विकट स्थळोमां दश गाउ सुधीनी मजलकरी शकता हता. सात वजे हवा खाइ पाले आमदरवारमां प्रधारता, ए वखते पण सरदारो, सचिव तथा कार्यभारी मंहळ हाजर रहेतुं. पोते संगीतिविद्याना अनुभवी होवाथी दोढ कलाक पर्यंत दरवारमां विराजी गायन सांभळया करता. साढा आठथी सवा नव वज्या सुधी लघु स्नाताओ तथा प्रतिष्ठित सरदारो साथे भोजन करता अने त्यारवाद लगभग दश वजे श्यनसुवनमां प्रधारता.

वि.सं. १९४० मां भादराजनवाळा राणीजी साहेत्रे राजञ्जमारने जन्म आप्यो परंतु दैव-योगे लण महिना पछी तेनो स्वर्गवास थयो.

PART with since whenever with the

एज वर्षमां श्रीमान् महाराणा सज्जनसिंहजीए महाराज गजासिंहजी द्वारा श्रीमान् रायसि-हजीने उदयपुर वोळावी स्वर्गस्थ राजराणानो शोक प्रदाशित कर्यो हतो अने तळवार वंघावी हती.

वि. सं. १९४३ मां श्रीमान् राजराणा रायासंहजी सहकुट्डव जगदीशनी यात्राए पथार्या अने एज वर्षमां श्रीमती माजी साहेव चहुवाणीजी वेदलावाळा तथा पितृन्य महाराज उमेदिसंहजी अने फैवा साहेव रुपकुंवरवा के जेना लग्न श्रीमान् महाराणा शंभुसिंहजी साथे थयां हता तेओनो देहांत थयो तेमां धर्मात्मा पितृत्र्य महाराज उमेदिसंहजीना स्वर्गवासथी राजराणा रायसिंहजीने विधारे दिलगिरी थइ हती. तेओए संवत १९४३ मां कुशळगढना राव जोरावरसिंहजीनो कुंवरीनो पाणिग्रहण कया. संवत १९४६ मां उदयपुरमां एक उत्तम राजमन्दिर बनावी तेमां महाराणा फतेहिसिंहजीनी पधरामणी करी. संवत १९४७ मां स्वकीय सालगिरानो महोत्सव प्राप्त थतां सरदारो, कार्यभारीओ, तथा किंवकोविदोने अनेक प्रकारना वस्त्राभूषणो आपी अत्यंत उदारता वतावी. सं. १८४८ मां अन्तःपुरनी अंदर एक भव्य महेलात बंधावी महान् उत्सव कर्थो. (ए उत्सवमां कानोडना अधीश राव न्हारसिंहजी के जे राजराणा रायसिंहजीना फड्वःना दीकरा भाइ थता हता तेओ पधार्या हता.) वि. सं. १९५० मां मोटा तळावनी समीपे हजारो रुपिआ खरची एक उत्तम वगीचो बनाव्यो. ए वगीचानी अंदर एक वाव, राज्यमहेल, होज तथा पुद्दारा विगेरे तैयार कराव्यां

एज वर्षमां राजधानीथी दक्षिण दिशाना पहादोनी पासे एक आखेटस्थान तैयार करान्युं. अने त्यां अन्तःपुर सिहत पधारी सिंहनो शिकार कर्यों. ते दहाहे पण सरदारो तथा कार्यभारीओने घणां किंपती वस्ताभरण इनाममां आप्यां. वि. सं. १९५१ मां सर्वोत्कृष्ट रायधुवन नामे राज्यमिट वंधान्यों. वि. सं. १९५२ मां पोताना पुत्री नवलकुंवरवानो तिवाह मारवाह मध्ये कुचावणना भंवरजो न्हारसिंह जी साथे मोटी धामधूमथी कर्यों अने पहित जनोने अनेक प्रकारनां पारितोषिक आप्यां. सं १९५४ मां शरीरनी अंदर न्याधिनी शरुआत थवाथी केटलाएक उत्तम वैद्योने वोल्लावी त्रण मास पर्यन्त चिकित्सा करावी, परंतु दरद दिनमितिदिन दृद्धि पामतुं गयुं, अने अंते इन्यन्यासिंगां एकरुप वनी प्राणनो परित्याग कर्यों. कोइएक चलकीगांगकी नामना कविष राजराणा गयसिंहजीना स्वर्गवासना शोकजनक समये नीचेमुजन कवित्त कहेलुं छे.

कवित.

धनको न रोनो धरा धामको न रोनो धिग, साचहीको रोनो शिवराजके मुजानको; सत्यशील सुंदर सुभाव दासपालनको, विरद निवाहन हार वीरपन वानाको; रोनो जग कोमल सुभाव या कृपालुताको, सत्य सत्य भाषूं रोनो सत्य अवसानाको; कृकर और सूकर भरेंगें पेट भूतलमें, पेटको न रोनो पर रोनो राजरानाको. ॥ १॥

राजराणा रायानिंहजीन। छपु यन्तु महाराज मुलतानसिंहजी परम विवेकी, राजकाजमां नियुण अने रपृहारित हता. मधम तेओने पोतानुं राज्यासन अर्थण करवा माटे राजराणा रायसिंहजीए पोताना अमात्यमहल्ये आहा आपी, परतु वैराग्यवान महाराज मुलतानसिंहजीए ए वातनो असिवकार करवाधी तेओना कुमार टुल्हिमिंहजीने राजराणा रायसिंहजीना स्वर्गणमन पहेलां एक दिवसे दत्तक लेदामा आव्या हता. तेओनो जन्म वि० सं० १०४० ना आपाद मुदि ४ ने दिवसे पयो रतो. सवत १९५४ ना लेट मुदि ११ ने दिवसे राजराणा रायसिंहजीनो कलासवास थतां

तेओ सादहीना राज्यासन पर विराजमान थया, ए वखते तेओश्रीनी अवस्या छगभग पंदर वर्षनी होवाने लीधे राज्यनो सघळो कारोवार महाराज सुलतानसिंहजी तथा महाराज चत्रसिंहजी अने मंत्री महतासितारामजी डॉक्टर ए त्रणे मळी चलावता हता, राजराणा दुल्हसिंहजीने वाल्य वयथीज संस्कृत विद्यानुं शिक्षण मळवाने लीधे तेओ महा धर्मनिष्ठ, नीतिज्ञ अने प्रजानुं पालन करवामां प्रशंसनीय थया. तेओए साधु महात्माओने निवास करवा माटे एक कृष्णवाटिका नामे उत्तम स्थळ तैयार कराच्युं. वि० सं० १९५४ ना श्रावण शुद ८ ने दहाहे स्वर्गस्य राजराणा रायासिंहजीना स्मारकचिन्ह माटे एक रायपरोपकारिणी नामे सभा तथा रायऔपधालयनी स्थापना करवामां आवी हती. तथा मर्हुम महिपतिए प्राणान्त समये करेली आज्ञानुसार श्रीमद् भगवद् गीतानी एक हजार पत छपावी साधुमहात्मा तेमज जिज्ञासुओने विनामूल्ये आपी हती.

महाराणा संगना वखतमां वावर वादशाह साथे थएला भयंकर युद्धमां सादडीना मूळ पुरुष अजोजी मार्या गया अने तेओना भाइ सजोजी अत्यंत यायल थया. महाराणा संगना स्वर्गनास पछी ज्यारे राणा रतनसिंह मेवाडनी राजगादीए वेटा त्यारे तेओए शूरवीर सजाजीने तेमने वजावेली अमूल्य सेवाना वदलामां वाार्षके एक लाख मुद्रानी आमदानीवाळी " देलवाडा " नी रिसायत आपी. ए सजाजीना स्वर्गवास पछी सरतानसिंहजी, रायसिंहजी, वैरीसालजी, कल्याण-सिंहजी, फतेसिंहजी अने तेजसिंहजी एक पछी एक क्रमपूर्वक देलवाडाना अधिपति थया.

तेजसिंहजीने जेतसिंहजी, भीमसिंहजी, अर्जुनसिंहजी, राघविनहजी तथा कृष्णसिंहजी नामे पांच कुमार थया तेमांना पाटवी कुमार जेतसिंहजी पोताना पिता तेजसिंहजीना परछोक प्रयाण पछी देखवाडानी राजगादीए वेठा; तेओने कल्याणसिंहजी तथा छत्रसाळजी नामे वे कुंवर थया.

महाराज जेतिसिंहना स्वर्गवास पछी कुमार कल्याणसिंहजी देलवाहाना अधीश्वर वन्याः तेओने राघवदेवजी तथा रामसिंहजी नामे वे कुमार थयाः

महाराज कल्याणासिंहजीना परछोक श्वाण पछी राघवदेवजी देखवाडानी राजगादीए विराजभान थया. ए पछी तेओना कुमार मानसिंहजी देखवाडाना उत्तराधिकारी थया. ए मानसिंहजीना कुमार हाळ देखवाडानी गादी उपर छे. +

⁺ देलवाडा सबन्धी विश्वेप इकीकत नहिं मळवाथी मात्र तेनी वंशावळी संक्षेपे आंही दाखल करेली छे.

सादडीनो संक्षिप्त इतिहास.

सोरठो.

पराक्रमी इरपाल, पछीं वावींशमी पेढींए; निय गोद्विजमितपाल, राज रायधरजी धयाः छन्द पद्धरीः

दिन एक धारी परिपूर्ण प्यार, थइ सुभग अन्व उपर सवार;
सुभटोनी संग करवा शिकार, निकळ्या नरेश नियमानुसार.
शक्यने निद्याळतां सद्य शूर, दोडावीं अन्व पहोंच्या सुदूर;
सन्मुख थएल शश जेह स्थान, त्यां नेह्यारी करीयुं निशान.
ए वीर भृषिपर धारी व्हाल, पठींथी वसावीयुं पुर विशाळ;
अभिधान एतुँ हळवह आपीं, शुभ राजधानी पोतानी स्थापीं अ
सुत आदि रायधरना अजाजीं, सद्गुणीं गणाय वीजा सजाजीं;
एडरनरेश केरा अजेय, ए भाग्यशाळीं द्वय भागिनेय.
परमार मृळीना भीत धारी, कुळवान जाणी देवा कुमारी;
आव्या त्वराधों करता तपास, श्रीराज रायधरजीनी पास.
६
सोरठों.

पेखी सहु परमार, अनुप रूप अजमान्ननं; तुर्व थया तैयार, चाहे करना चांदलो. सदंध ए मुखदेण, दंधाया पहेंलां वळे; नया रायधर देण, अणबटतां उपहाममय.

छन्द्र पद्धरी.

अवरेखीं सब नजरे युवान, दे कोड धारी कन्यानुं दान; एण हुद्र मंग करवा विवार, उरमां न नोड गावे उछाह. आ शब्द सामळीने अजाजी, समज्या जरूर पळळ्या पिताजी; आळ्या उतावळे निज अवास, निश्चय अतिथि वनीया निराशः १०

छन्द छप्पय.

समजान्या बहु रीत, शीत घारी परमारे;
करी न बात कबूल, कांइ पण एनी कुमारे;
जलटा बोल्या एम, ए समे बीर अजाजी;
पुत्री तमारां थाय, आजधी मारां माजी;
त्यागी तंत मुज तातसह, कुमारीना बीचा करो;
करेशो तेम करीश हुं, दिलमां लेश नहिं हरो।
हुन्द मोतीदाम.

हवे धरी हाम कहे परमार, करो झट आप अजाजी करार; कदी प्रसंवे अम पुत्री कुमार, वने हळवहतणो हकदार. १२ करे सहु बात कबूळ अजाजी, थया वर ठाठथी दृद्ध पिताजी; प्रमारीतणो ग्रही हेतथी हाथ, भलां प्रस्व भोगवता नरनाय. १३

छन्द छप्पय,

प्रामारीपर रहे, रायधरजी वहु राजी;
प्रगच्यो एथी पुत्त, नाम राख्युं राणाजी;
काळे लइ कैलासवास कीथो तृप राये;
यज्ञानामी अजमाल, धर्मने मारग धाये;
राज्यगादी राणाजीने, अर्पण करी उत्साहयी;
सजाजीने साथे लई, चाली निकळ्या चाहयी.

१४

राव जोधोर्जी मरुदेशना महिपति, जबर नृप रायधरना जमाइ;

PS C

वात एणे अजाजी सर्वधी सुणी, वीर दृन्दे वखाणी वडाइ; परिजनो पाठवी तुर्त नेडावीया, आवीया जोधपुरमां अजाजी; मांखी महराणने राखी निजधाममां,धाय राठोड महिपाल राजी. १५ छन्द छप्पय.

> अज्ञाजीने ए समय, देश जोधे वहु दीघो, त्यहां अनुज सह अजे, कोडधी निवास कीधो; मनहर झालामंड, सर्व एने संवोधे, कन्या हेवा काज, जबर इट छीधो जोधे; अजो कहे थुभ शाखनी, आज्ञा केम उथापीए; फड डिपर भतरीजीने, अमे कटी नहि आपीए. १६ कर्यो न जाहिर क्रोध, जवर नरपति जोधाए, तदपि भाळी मन भग्न, एतुँ झलराण अजाए; इश्वरने। इतवार, हृदयमां सज्जड स्थाप्यो, मुकी ब्रालामंड, मार्ग वीजो घट माप्यो; राणा रायपरे छुणी, कुंभलगढमां ए कथा, आश्रय आपी अजाजीने, पाँची पुनित कुळनी पया. 30 आप्यु पुर अजमेर, तुर्त राणे ए टाणे, रही हज़रमां रोज, मोज मकवाणी माणे; पुत्रीने परणावी, श्रेष्ट रागाजी संगे, गौरव मेळवी गया, अजो अजमेर उमंगे; ध्यारे राणो रायधर. कवल यया महाँकाळना, तव दल्छि सांगो दन्या, महद नाय मेवाडना. 36 छन्द द्रूलगा.

एक रादर दींजो मानी महमहमा, युद्धने काज रणक्षेत्र आव्या; मगराणे पणा शत्रुने ममरमां, नीत्र नव्याग्यी खुव वाव्या; 129 C

आ शब्द सांभळीने अजाजी, समज्या जरूर पळळ्या पिताजी; आळ्या उतावळे निज अवास, निश्चय अतिथि वनीया निराशः १० छन्द छप्पयः

समजाच्या वहु रीत, शीत घारी परमारे;
करी न वात कबूछ, कांइ पण एनी कुमारे;
जलटा वोल्या एम, ए समे वीर अजाजी;
पुत्री तमारां थाय, आजधी मारां माजी;
त्यागी तंत मुज तातसह, कुमारीना वीवा करो;
कहेशो तेम करीश हुं, दिल्लमां लेश नहिं हरो।
हिन्द मोतीदाम.

हवे धरी हाम कहे परमार, करो झट आप अजाजी करार; कदी प्रसवे अम पुत्री कुमार, वने हळवहतणो हकदार. १५ करे सहु चात कबूळ अजाजी, घया वर टाटघी दृद्ध पिताजीं; प्रमारीतणो ग्रही हेतथी हाथ, भळां छुख भोगवता नरनाय. १३

छन्द छप्पय.

प्रामारीपर रहे, रायधरजी वहु राजी;
प्रगच्चो एथी पुल, नाम राख्युं राणाजी;
काळे छइ कैलासवास कीधो चप राये;
यज्ञानामी अजमाल, धर्मने मारग धाये;
राज्यगादी राणाजीने, अर्पण करी उत्साहयी;
सजाजीने साथे र्छ, चाली निकळ्या चाह्यी.
१४

राव जोधोजी मरुदेशना महिपति, जनर तृप रायधरना जमाइ;

वात एणे अजाजी सर्वधी सुणी, वीर दृन्दे वखाणी वडाइ; परिजनो पाठवी तुर्त नेहावीया, आवीया जोधपुरमां अजाजी; झांखी झळराणने राखीं निजधाममां,धाय राठोड महिपाळ राजी. १५ छन्ट छप्पय.

> अजाजीने ए समय, देश जोधे वहु दीघो, त्यहां अनुज सह अजे, कोडथी निवास कीथो; मनहर झालामंड, सर्व एने संवोधे, कन्या हेवा काज, जबर इट छीधो जोधे; अजो कहे शुभ शास्त्रनी, आज्ञा केम उथापीए; फड उपर भतरीजींने, अमे कटी नहि आपीए. १६ कर्यो न जाहिर क्रोध, जवर नरपति जोधाए, तदपि भाळी मन भग्न, एतुँ झलराण अजाए; इश्वरनो इतवार, हृदयमां सज्जड स्थाप्यो, मृकी हालागंड, मार्ग वीजो झट माप्यो; राणा रायपरे छुणी, इंभलगढमां ए कथा, आश्रय आपी अजाजींने, पाँठी पुनितकुळनी मया. 30 आप्यु पुर अजमेर, तुर्त राणे ए टाणे, रही हज़्रमां रोज, मोज मकवाणी माणे; पुत्रीने परणावी, श्रेष्ठ राणाजी संगे, गौरव मेळवी गया. अजो अजमेर उमंगे; ध्यारे राणी रायधर, कवल थया महाँकाळना, तब दलिष्ठ सांगो धन्या, महद नाथ मेवाडना. 96 छन्द झुलगा.

एक रादर दीं जो मानी महमहना, युद्धने कान गणक्षेत्र आच्या; मंगराणे पणा सञ्जने ममरमां, नीव्र नलवारथी मृत वाच्या;

POJEZ

ए समे राज अजमालनी व्हादुरी, पेखीं राणे प्रशंसा करी त्यां, हारीं वावर गयो सज्ज पाछो थयो, घोर घमसाण जाग्युं फरी त्यां. १९ अडग यवनो, डग्या श्रूर शिशोदिआ, संगराणो घवाया शरीरे, अन्य स्थळमांहि एने उपाडी गया, धार्यु नृप चिह्न अजमाल घीरे; गज चढी गर्व वावरतणो गाळीने, श्रूरक्षणमां थया समरशायी; सिंहजी स्रत, सहोदर सजाजी गया, गृह भणी घोर युद्धे घवाइ. २० छन्द पद्धरी.

सुणतां अजाजीनो स्वर्गवास, सांगे असीम थइने उदास;
करीं सिंहजीनी झट सारवार, भावेथीं सोंपीयो राज्यभार. २१
ए वाद संग जातां स्वधाम, सुखदाइ रत्न मेवॉड क्याम;
करीं एकिलंग मस्रेने प्रणाम, ले हाथ राज्यकेरी लगाम. २१
झलराण सिहजी साथ स्नेह, नृप रत्निसंह राखे अछेह;
पीतें अजानी सेवा पिछाणी, वळीं जाति श्रेष्ठ झालानीं जाणीं.२३
पितुभगिनी सिंह साथे वरावी, वळतां सजाजीनी यादीं आवी;
गणीं अर्थलक्षनी आमदानी, दे राज्य देलवाडामुँ दानी. २४
देखाडी शत्रुने वळ दराज, करी पांच वर्ष प्रीतेंथी राज;
हरीं रत्निसंह राणे हुलास, कीधो त्वराथीं कैलासवास. २५
छन्द झलणा.

विक्रमादित्य अनुजात एना वडा, वळथीं मेवाडने तख्त वेठा; जागी खटपट जवर सकल सरदारसह, नव रह्या कोइना कांइ नेठा; शाह वहाद्र सुलतान गुजरातनो, पेखीं मेवाडमां पोल पेठो; लाज कारण लड्या केक रणमां पड्या, छे नहीं मृत्युथी कोइ छेटो. १६ सेंकडो शत्रुने छेदीं समशेरथी, समरमां सिंह झलराण सूतो; हारद्रग हेरी राणानी रणभूमिमां, दिन्हींभणी दोडीया यवन द्तो; सवळ हुमायुद्धं सांभळी आगमन, भयधीं स्रकतान वहाद्र भा मदद मळवाथीं राणानीना हृदयमां, जबर आनंद ए समय जाग्यो. २७ छन्द छण्य.

सिंह धतां स्वर्गस्य, एहनो कुमार आसो,
राजे राज्यासने, वीरतानो द्रह वासो;
चरते नृप विक्रमात, वहू पितकूळ वधाधी,
तोपण ग्रुभट समस्त, घया ग्रुखदुःखना साथी;
सेना सजी वहाद्र फरीं, चढी आज्यो चितोडपर;
आशो झालो ए समय, जाहेर लहियो जोरभर.
२८
हााट चपरे सांग, फॅर्की आवेगयी आहो;
कारिवरतणुं कपोल, नृटतां वहार्द्र त्रासे;
पाछळणी प्रतिपक्षी, एक ए समये आज्यो,
आशापर असीतणो, चोंपधी मार चलाव्यो;
अटार वर्पनी लम्मरे, हणी तेग हणनारने,
आशो गुरपुर संच्यों, समरे वर्री गुरनारने.

सोरटा.

निधय निःसंतान, अन्त यतां आशाजीनोः; शूर अनुज गुलतान, भावधार्गे भूपति धया. ३० छन्द छप्यय.

मेदपाट महिपाल. विक्रमादित्य विवादी. दामीं पुत्र दनदीर. प्रही ए पाउट गादी, स्टब्सिंह ए पड़ी. नस्त देटा नक्यानी: r Teg

मकवाणे मुदयकी, वजावी सेवा सारी; साजी सवळदळ अकवरे, जव चित्तोडने सर कर्युं, तव मुरताने शौर्यथी, ळडी प्राणधन परहर्युं.

सोखा.

स्वर्ग जतां सुळतान, मानसिंह महिपति थया; महद वंश मखवान, वसुधामां विख्यात छे.

39

छन्द झूछणा.

खदयराणा तणुं आयुवळ तूटतां, पुत्र एनो मतापी मताप, मीतथी वेसी मेवाडना तख्तपर, छापी ग्रुभ क्षत्रीवट केरी छाप; वैरी अकवर वडो आवीं वहु आखड्यो, तदपि अनमी रह्यो एहराणो, संगमां मान मखवान सरखा सुभट, जंगमां जीत निःशंक जाणो. ३३

छन्द पद्धरी.

छइँ संग शूर सैनिक असीम, जे समय शाहजादो सछीम;
चाहेंथी आवीयो करों चढाइ, मची इछदीघाट मांहे छढाइ. ३४
समशेर सांग वरछी कटार, उपराँत अन्य आयुध अपार;
धरी हाथ शूर धिसया समग्र, मखवान मान ए मांहि अग्र. ३५
चाछी मतापनी असि मचंड, ए समय ध्रुजीयुं ब्रह्मअंड;
कछवाह मान अभिमान धारी, सेनापितनी पदवी स्वींकारी. ३६
आपे सछीमने अति सहाय, धमसाण मांहि अगणित घवाय;
हयज्ञत्य साथ हेमर हणाय, तन रक्त वाहिनीमां तणाय. ३७
सोरठा.

घवाइ रणमां घोर, प्रताप दूर पधारतां; जाहिर धारी जोर, झाळो झपट करी रह्यो. ३८

झूम्यो रणमोजार, मकवाणो घरी मस्तकेः
छत्र चँवर छत्वकार, महद देश्वमेवाडनां ३९

यवन सन्य सिन्धुने, मध्यो भुजवळधी माने, जवर जाति बीळानी, दीपावी मस्तक दाने; प्राणापण ए पुनित, दूरधी राणे देख्युं, प्रताप रणमां पड्यो, एम यवनोए छेख्युं. 80 देवाजी दुःख इरणः कुँवर झालाना करमी, तातपान सम थया, धरणीमां पूरा धरमी; पाछळ यवनो पड्या, वखो बहु प्रताप वेठे, देदो करतो दोडी, श्यामसेवा पितु पेठे. 88 बूट्या त्वरितं प्रताप, महद मकवाणा माथे; परणावी निजपुत्रीं, शूर देदाजी साथे; सादटीना क्षितिपाल; रणे रिपुने रंजाडे, एळवदना एकदार, मान पाम्या मेवाडे. 82 मब्ल मतापी मताप, धतां परलोक मवासी, गण अमरने अधिप, निखिळ मेवाड निवासी; जोर धरी जहांगीर, एइ ममये चडी आव्योः राणपुरे राणाधी, महद मंत्राम मचात्री. सट देवो झबराण, युद्धमां आवी चटींआ, र्देची कटिण कृपाण, यदन साथे आखडींआ; शोर्य वडे समरमा, अमरने विजय अवावी. सादही पनि दह शीद्य, स्वर्गमां गया सियावी. SS पुत्र एरना पाच, वहा हरदाम बखाणो,

रामसिंह नरहिर, इयाम पछीं रत्न प्रमाणो;
शाहपुत्र परवीज, सवळ दळ सज्ज करीने,
मेदपाट पर चड्यो, हृदयमां हाम घरीने.
रणरागी रजपूत. टाम वेटा न टरीने.
ते वखते तोफान, जागतां फरी फरीने;
हता राज हरदास, पिता सम महा प्रतापी,
एणे सन्मुख आवीं, हार यवनोने आपी.

छन्द झूळणा.

वात ए सांभळी अमर राणो थया, राज हरदास पर पूर्ण राजी, किंकत कानोड झाडोल्नां राज्य द्वय, आपीयां भाकीने भक्ति ताजी; भन्य निज वन्यु भाणेज राणाजीना, रयामने स्नेहथी ए प्रसंगे, प्राम झाडोल्जनी राजधानी रुडी, आपीं हरदास झाले उमंगे.

रोळा वृत्त.

शाहपुत्र निज सैन्य सज्ज करीं आव्यो समरे,
खुरेम पासे पाफीं, मार्गी महाँराणा अमरे;
हामधरी हरदास, ए समे सत्वर आव्या,
सिन्ध कराव्या वाद, स्नेहथी दिल्हीं सिधाव्या.
अर्थ के समये झळराण, आवीया फरी जदयपुर,
निरख्युं तव नाराज, अपर राणाजीनुं जर;
कह्या विना कानोड, गयो मकवाणो गर्वे,
पर्छीयी दिल्हीं पधारीं, सिद्ध करीं मनकृति सर्वे.

छन्द झूलणा.

पाटवी पुत्र हरदासना रायहरि, जवर राणाजी केरा जमाइ, आपवा गादी कानोडनी एहने, अमरराणे कहाुं चित्त च्हाइ;

राय पिनुभक्त राणाजी आगळ कहे, तात ज्यांसधों होये हयात, त्यांक्रमी वेर्डुना हुं कदी तख्तपर, ज्यर्थ करशो नहीं पूर्वी वात. ५० रोळा इत्त.

माहिर खटपट जागों दिल्हों अंदर दुं:खकारी,

हांगीरनो जीव. जवानी हती तैयारी;

हरदासे हर बच्च, एनीं आपत्ति टाळी,

शाहे अति सुख रूप, भिक्त झाळानी भाळी.

प्रीतें पाघडी वदक, बन्युता एथी वांधी,

हरता निन हरदाम, विविध जहाँगीरना व्याधि;

पन्दसोर पनहरण, स्नेहधी आप्युं शाहे,

छप्तवीशनो ळेख, मद्य झाळो कर साहे.

प्रुर्शनने ए समय, आशरो राणे आप्यो,

ए कारण अति क्रोध, शाहने हद्देये व्याप्यो;

मेवांट भोकल्युं, यवन दळ अश्विळ हरवा,

धया सज्ज हरदास स्वाभीनी मेवा करवा.

पन्द-उप्पय.

आपी निह अतुमित, जवानी जब जहाँगीरे,
तब द्याली हरदास, दोल वे वोल्या धीरे;
सामे पगले चाली, अमे मक्तवाणा मरीए,
कुळपरंपरामुजव, स्वामीनी सेवा करीए,
लालचमां लपटाइने, बालुं मुख करवा धकी,
मरबं लचम मानीए तन कायम रहें ना टकी.
भार करे हरदास! आप नाहक हट छोड़ो,
वैभव आदा वरजी हुं खी धावा निह दोड़ो;

इरदासे ए समय, क्रोंधने जाहिर कीघी, मन्दसोरनो महद, केल छड़ फेंकी दीधो; रणांगणे राणाजीतुं, दित करवा अति होंशयी, पराक्रमी जइ प्होंचीया, सद्य सेंकडो कोशघी.

छन्द झुछणा.

TATOT.

हाम धरी गाम इरहे महीं छावणी, नांखीने मस्त प्रतिपक्षी महाके, उदयपुरतं अनिक आवतां आगमच, झाटॅक्या यवनने खुव झाळे; घोररूपे घवाएक घमसाणमां, राज हरदासने जोइ राणे, स्वामीभक्तिनी स्वमुखे मशंसा करी, शूर स्वर्गे गयो एज टाणे. राज इरदास पछी रायसिंहे धरी, पदवी श्री राजराणानी शीते, महद मेवाडतुं हित हमेशां करी, चाँहीयुं श्रेयराणातुँ चित्तेः शाह ख़र्रम थतां राय दिल्ही जतां, जनक सम उभयनो पेम जाम्यो, पाघढी बदल ए पण थया वन्युओ, उदय परिपूर्ण झलराण पाम्यो. समयने अनुसरी राय स्वर्गे जतां, पुत्र सुळतान एना मतापी, साददीना छुशोभित सिंहासने, राजता रंकने इष्ट भाषी; कर्णराणा पछी जन्तसिंहे धर्यो, मुकुट मेवाडनो मोदधारी, गादी राणानी पछी राजिसहे ग्रही, शौर्यथी मेळवी ख्याति सारी.

रोळाइच.

हतो ज्ञाह औरंग, ए समे तुंद मिजाजी, दर एनो दिखमांहि, राखता नहि राणाजी: श्चाइजहाँनी स्हाय, हिन्दुपति हमेश करता, यवनातुं अभिमान, इाम धारीने इरता. रूपनगढमां एक, रम्य इती राजक्रमारी, करे ज्ञाह औरंग, तुर्त वरवा तैयारी;

बाच्या यदन अनेक, छाज क्षत्रीनी छेवा, परोच्या हिन्दुपति, दंह दुश्मनने देवा. ₹0 शॉर्वजाळी सुलतान, सादही पुरनो स्त्रामी, न्ह्यो युद्धमां अडग, सैन्य नायकपद पामी; षाच्यो त्यां औरंग, सैन्य जवहं लड्ड साथे, ह़टी पडीयो तुरत मेदपाटेश्वर माथे. **4**? रहे शीश अनेक, दहा सम वन्ने दल्मां, दनी यवन वळहीन, पराजय पाम्या पछमां; अनंतना आयुनो खनानो साथे खुट्यो, मांढ मांड औरंग ए समे भागी छूट्यो. ६२ सरी संकडो घाव, राजराणो रणरागी, ग्ररपुरमां संचर्यो, सिंह गुलतान मुभागी; चन्द्रसेन चालाक, पुत्र एहना ममाणी, अनदद नित एपरे, गम्बता प्रीति राणी.

छन्द इस्गीत.

औरंग ग्रुत आजम सदट, दळ पवनतुं छइ आवींयो,

ित्दुपितनो हुन्म पातां, सद्य चन्द्र सिमावींयो;

मखदान रण मेडानमां, तन शत्रुओनां तावीने,

पाम्यो मितिष्टा पूर्ण, पाछो उदयपुरमां आवींने.

ए दाद राणा राजिसिंहे नास केलासे क्यों,

मेनाहनो मनहर मुझट हीर घीर जयसिंहे घर्यों;

ए समय राव निगोहींनो, विद्रोहना पद्यमा नत्रो,

अभिमान एतुं उनारना, चिच चन्द्रने राणे चिश्रो.

६५

ए हुन्म मादहों आवडां. दिर चन्द्रमेने घारीयो,

ते समय थातों इती तनुजना छग्ननी तैयारीओ;
तंजी परणवुं सर्जो सैन्य स्नुत झाछातणो झट सज थयो,
बरळाटडानो वेषधारी, सिंइजी समरे गयो.
ग्रहीं आधिपत्य अनीकनुं, राणाजीने राजी कर्या,
भयभीत अरिने सिंइजीए, सिंइसमगाजी कर्या;
सिरोहीना महाराव साथे जंग जबर जमावीयो,
रणक्षेत्रमां खळने खपावी, शूर स्वर्ग सिधावीयो
स्णीं बात सादंडी भूपना, चित्तमां वडो विभ्रम थयो,
रहीं सर्व मननी मन विषे, गुणी स्नुत अचानक गुम थयो;
पछीं सादंडीयों उदयपुरने उदयपुरथी सादंडी,
जातां गुजारे जींदगीं, स्नुत मरणने स्मरी इर घटिः
दोहा.

अकवर द्वृत औरंगनो, उचारी मुख अल्लाह; वश्च करवा मेवाहने, चढा आन्यो घरी चाह. यवनोने अटकाववा, रचवाने रमखाण; हिन्दुपतिना हुकमथी, झपलायो झलराण.

छन्द झ्लणा.

आर्यने यवनमां जोरथी जामीं युं, घोर घमसाण उज्जेण घाटे, शूर झलराण संग्राममां शत्रुने, झाटके झाटकाने झपाटे; त्रस्त मदमस्त यवनो तणा अस्तथी, शाहजादो गयो शेह पामी, राजचांदो वळ्या राजधानी भणी, समय आव्ये थया स्वर्गगामी. ७१ ताज तेजें भयों राजराणा तणे। कीर्तिसिंहे, धर्यो शीश कोडे, साददीनो विश्व श्यामधर्मी वहो, द्रोहींना दमनने काज दोढे; शांसवाहे जह त्रास बरतावतो, छाय रिपुना रुदामां छगाहे; रयांयों इंगरपुराधीरा पर तूटीने, विजयना वाद्य झाळो बगाहे. अञ् राजों घर एहने आपीं राणाजीए, तुर्त ताणा तणी राजधानी, किन्तु ए कीतिंसिंहे स्वींकारी निहें, महद मनमांहि संतोप मानी; भ्रात दोळत भळा, एहने आपवा, अरज राणाजीं आगळ गुजारी, कथन मकवानतुं मान्य राज्युं महा, मेदपाटेश्वरे मोद धारी.

जतां स्वर्गवास जयमिंह, अमर राणो अवतारी,

प्रीतें वेटा पाट, विश्वमां यस विस्तारी;

प्रखदायक संग्राम, ए पछी तस्तें आन्या,

जगतसिंह जरानामीं, भछा गुणीं जनने भान्या.

ऐश्वें स्वरंस दजावीं, चार राणानी चोहे,

गुणीं अस चांदो गयो, रम्य सुरपुरनी राहे;

रायसिंह ए पछी, साददीपुरना ज्ञासक,

पाग्या दहूँ मख्याति, वीरया वैरीविनाज्ञक

छन्द सुरुणा.

राग धरी रह महाराष्ट्र मेबाहमा, चो नरफ हूंट रहीयो चळावी, बार्षा राणो बहे राय शाला बने. मद्य उत्पात ए द्यो श्रमावी; दीधी निह रायका रंचपण रायने, नदिष मग्बदान द्रृह टेक घारी, सज्ज नत्वर थया बाहु मन्मुख गया, सुजबळे गावी विश्वास भारी. ७६ स्वल्प निज सभट दल महद महाराष्ट्तुं. अपट नोपण करे खुव झाळो, पादच बर्री दूर, नजी टोपने कोपनी, घारी हनी मात्र त्यवार हाळो; देलपाटेधी दल सम्म लह ए मने, नाथकी वन्यु नेहेची आव्या, देगयो राज हरपादाना बंदाले. हुना मैनिकोने हटाव्या. समरक्षायी यया निमिषमां नाथजी, छेवटे हट्ट महाराष्ट्र हायों,
मेळवी विजय मखवान निज नप्रमां, आवतां कोविंदे यद्या उचायों;
जगतराणो गया स्वर्गमां जगरंतजी, पदवी राणानी घारी मतापे,
रोष करी दोष विण राजराणापरे, छाप ए क्रुटिक नीतिनी छापे.
राग झकराण इंगरपुरे जइ रह्या, हेरी इतराजी हिन्द्पितनी,
खवर पढती नथी कोइने खककमां, गहन तकदीर केरी गतिनी;
पेखींने पोळ मेवाहमांहे फरी, जोर विद्रोहीओए जमान्युं,
मेळॅच्या विण हुकम मेदपाटेशनो, शौर्यथी वंह झाके भ्रमान्युं.
रोळाहत.

समाचार ए सुणी, मुक्तकंठे महाराणे, रायसिंहनी करी, पशंसा बुद्धि प्रमाणे; पुष्कळ दइ पोषाक, साददी जावा सुखयी, आपी शुभ अनुमर्ति महाराणे निजमुखयी. छन्द पद्धरी.

यातां मताप परलोकवासीं, पछी राजसिंह रहीं आ मकाशीं; विचर्या अपुत्र ए स्वर्गवाट, बेटा पछींथी अरसी जी पाट. <१ बीजा मतापना बन्धु एह, सरदार संग राखे न स्नेह; मेवादनाथ अरसी अभागीं, जबरी उपाधि सर्वत्र जागीं. <२ करीं काम पूर्ण मनमां तमाम, झळराण राय जातां स्वधाम; बेटा दृतीय सुकतान तख्त, जुग्तेथीं जोइ वारीक वख्त. <३ राणाथीं कैंक सुभटो रिसाय, उर सिन्धियानीं इच्छे सहाय; करवा मुदेशी मेवाद हाथ, माधव महिप निज सैन्य साथ. <४ बाच्यो त्वराथीं करीने चटाइ, मेवादी जूर सहु सज्ज थाय; छाच्या न भीति मनमां छगीर, धर्माभिमानी मखवान भीर. <४

रतों सिन्धिआनों सेना अपार, पामे शों रीत मेवादों पार। सो पण भरी नहीं पाछीं पानी, ए शुद्ध द्घ केरी निशानी. ८६

रोळाइत.

सभय पक्षमां युद्ध, जोरघी सत्तर जाम्युं, सैन्य सिन्धिया तणु, पराजय पल्लमां पाम्युं; साद्दीपति छल्तान, घोर रणमांहि घवाया, कर्या माधवे केद, जूर झालो सपढाया। क्ष्मी नाधवे केद, जूर झालो सपढाया। क्ष्मी जीत अपावी, युद्धमां आगळ चाली, क्ष्मों छूटवा काज, खजानो घरनो खाली; क्षीधी निंह संभाळ, रंच पण पनी राणे, एतां करे छल्तान, भिक्त कुळमथा प्रमाणे। दि राणा ः रसी पछी, हिन्दुपति हमीर राजे, भीपिष्ट भयदारी, ते पछी तस्त विराजे; ए सर्वने अनन्य, भावथी नित्य भजीने, गया स्त्री गुल्तान, विश्व माया वरजीने।

छन्द इसिगीन.

ए राद चंदनसिंद्जीए, गार्दी सादहीनी ग्रही, रय राज इद्धि दिशाल, कुळनी चाल व्हाल धरी वही; गराराष्ट्र सुभयोए मळी, दहीं सादही स्वाधीन करी, चत्राह्मी त्य चंदने करी, हाथ निज नगरी फरी. गस्तदान मिंदि युदान यानां, हाम अस्नि हठी ग्रह, मेदारमां महाराष्ट्र तरफनी, महद्र भीति मटी गह; परी पाय चंदनने मजा, पीरिन दशा पळ्टी गह, तो एण अमित हहायों देशनी, जामदानीं पटी गह.

९ ७

दोहा.

अमल थतां अंग्रेजनो, हरॅख्युं हिंदुस्तान; ग्रान्त थयां सघळे स्थळे, त्वरित वया तोफान.

92

छन्द हरिगीत.

संतान विण मखवान चंदन, स्वर्गमांहि सिधावीआ. प बाद वंदनयोग्य कीरतसिंह तख्ते आवींआः भयहरण राणा भीम पछीं, जाहिर जवान जणाय छे. ते पछीं सुभागी हिन्दुपति, सरदारसिंह गणाय छे. सरदार पछीं राणा स्वरुपतुँ, नाम भाद धरी भणो, जाग्यो इतो ए समय बळवो, सबळ सत्तावनतणोः राणाजीतं फरमान शिरपर, सद्य झाळे स्थापीने, अंग्रेजतुं रक्षण कर्युं, आश्रय अतुपम आपीने. 88 वळी शौर्यथी स्वाधीन करवा, नीम वेहेंडा परगणुं, थयुँ सज्ज केप्टन शोर साथे, सैन्य राणाजीतणुं: ब्रद्धत्वथी झलराण कीरतसिंह सादडीए रह्या. शिवसिंह आदि कुमार एना, शोरनी संगे गया. भ्रजवळथीँ रिपुने आपीँ भय, जय मेळवी जुगते बळ्या, काळे छइ झछराण कीरतसिंह ब्रह्ममहीं भळ्याः स्रत पाटवी शिवासिंह एना, पाट वेटा शीतथी, आवाद झट एणे कर्युं निज राज्यने द्युभ रीतथी. ९ ६ शिवसिंहनी सेवा थकी, राणा स्वरूपे राजी थरू, नेहे निकटमां राखीया, गुंदलपुरादिक ग्राम दहः ए बाद राणे वास कैछासे कर्यो काळे छइ, मेवाडनी गादी महद्, तृप शंभ्रना करमां गइ. ९७

छन्द झूळणा.

माददोनाय शिवसिंहजीए सदा, मेळवी स्वामों सेवाथों सिद्धि, धर्मने अनुसरी धाम चारे तणो, कळित यात्राओं कोडेथों कोधी; द्रांभ राणो गया स्वर्गमां जे समे, व्याधि किव कोविदोना विदारी, ए समे टाटधी मिंह सज्जन धया, नाथ मेवाडना नेह धारी. ९८ संतित दह नहीं राज शिवसिंहने, पुत्र लघु वन्युना गोढ ळीधा, रम्य ए रायने छेखीं लायक महा, राजनां काज सहु सोंपी दीधां; आयु अदशेप एरमार्धना पंथमां, गाळों शिवसिंह स्वर्गे सिधाच्या, राष्य गादी कडो रायगिंह ग्रही, राजनोतियों सहुने रिझाच्या. ९९ दोहा.

> सादहींने सिंहामने, रायसिंह झळराण; यहाराज मेबादना, जाहिर सज्जन जाण. रोळाटच.

१००

सज्जन पर्टी ग्रुखक्तप, गृप फनह भयहारी, खदयपुरना अधिप, ध्यानमा लेनो धारी; दर्तमान विद्रान, विस्तमा बहु बन्दगाये, सेदा एको दजादी, रिवद मक्तवाणा राये. अति उत्तम अभ्याम. खाम संम्हतनो की यो, निज अनुभवनो लाभ, दाही रैट्यनने दी यो; मनुस्तृतिहं मनन. मोदधी वर्गे मक्तवाणे, राया अनीति हरिएा, नीव बुद्धिने वाणे.

२०१

१०२

दोहा.

ए पर्टी अध्याममा, जना राय झलराण, इन्हिन्द दुःग्वहर यया, माद्दीनाय मुजाण, १०३



नित्य कवि नधुराम दे, आश्वीर्वाद अपारः भछं करो तृप दुलहतुं, भवानीना भरयारः

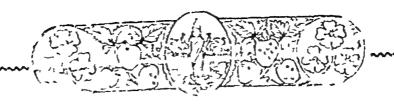
808

देखाडानी अति संक्षिप्त वंशावळी.

घनाक्षरी.

वही सादहीना मूळ महिप अजोजी थया, अतुज सजोजी एना परम प्रतापवान; कहे नधुराम तख्त पाम्या देळवाहातणुं, पछी राज रायसिंहे मेळव्युं महान मान; क्रमे वैरीसाळने कल्याण पछी फतेसिंह, तेजसिंह वाद जेतसिंहजी तपोनिघान; दितीय कल्याण, देव राघवने मानसिंह, दानी देळवाहाना महिप दश बुद्धिमान.





सप्तविंशत् तरंग.

" मनहर. "

राज रायिसंहथी प्रतापिसंह सूधी अष्ट,
भूप हळवदे स्पष्ट सत्ता भोगवी गया;
कहे नथुराम चळवान् रायिसंह बीजा,
धांगधरे राजधानी स्थापी सुखयी रह्या.

ए पछी अनुक्रमे नुभागी घनश्याम सुधी,
अष्ट महिपाल हरपालने कुळे थया;
सुणो अमरेश पित वंकपुरना प्रतापी,
विविध प्रवाहवेगे झालावंशना वह्या.

राज ररपालदेवजी पती पदीशमी पेटीए थएटा परम पराक्रमी राज रायासिंहजीए वि. सं. १८२० पी १६४० राघी रजवटना रमणीय राज्यासनने अटंकृत करी केळासवास कर्यो; तेओ नीचे बताळा एनद चार स्थें परण्या हता.

- ६ नदानगर तादे गाम सीलोसना जाडेजा रजपूननी पृत्री साथे.
- २ माणनाना राजा अखेराज गंगेवनां पूत्री जीवजीवा माये.
- र दीकानेरना राटोह राममिंहजी ब ल्याणिसहजीना पुत्री देवहुंबरवा साथे.
- १ दादना चहुआण राजाना इंदरी माथे.

ए चारे गणीजोमाधी खीलोमबाडां डाडेजी राणीना उदम्यी चन्द्रसिंहनी तथा छत्रसाछ-णी नामे दे हमार तथा लखनाजीवा नामे एक इंबरीनो जन्म थयो हनो। छत्रमाजीबानां छप्र नवानगरना जाम जसाजी साथे करवामां आव्यां इतां. कुमार छत्रसालजी माळीआ पासे मचेला भयंकर मामलामां मार्या गया इता.

राजरायसिंहजीना पाट्वीकुमार चन्द्रसिंहजी वि. सं. १६४० मां हळवडनी गादीए वेठा. तेओए सीथा पासे एक "चन्द्रसर" नामे सुशोभित तळाव वंधाच्युं, तेमज थान पासे व्हेती महा नदीमां एक चन्दासर नामनो एक उत्तम वंध वधाव्योः तेओ जोधपुरना राठोड राजा मूर्रासिंहजीनी पुत्री सत्यभामाने परण्या हता. ए सत्यभामानो एक व्हेननां छप्र दिल्हीना वाद्यशाह जहांगीर साथे थयां हतां. राज चन्द्रसिंहजीए पोताना छप्न महोत्सवनी खुशाळीमां कोइएक राठोडने वेजल्य पुर नामे गाम आप्युं हतुं.

कोइ एक समये राज चन्द्रसिंहजीनां वहेन लखनाजीवा पोताना स्वामी जाम जसाजी साथे शतरंजनी वाजी खेलता हता. तेमां जामनी जीत थइ, जेथी ते वारंवार पोतानी वडाइ गावा लाग्या. आथी ग्रस्से थएलां लखमाजीवाए जामने कह्युं के आम शतरंजनी रमतमां विजय मेळ-वी शामाटे नकामा पोरसाइ जाओ छो? काष्ट्रना पादशाहने मात करवो एमां शी म्होटी वात? पण जो आप मारा भाइ चन्द्रसिंहजीने जीतो तो हुं आपना पराक्रमने प्रशंसनीय गणुं. पोतानी अर्घोगनाना आवां वीररसथी भरेलां वाक्यो सांभळी जाम जसाजीए हळवद उपर एक मोटी फोज मोकली, परंतु ए लोको राजचन्द्रसिंहजीने मात करवामां पछात पड्या. छेवटे जाम जसाजीए नागर शंकरदासनी सहायताथी राजचंद्रसिंहजीने पकडावी नवानगरमां दाखल कर्या अने स्वल्य समयमांज पाछा तेओने छोडी मुक्या.

राजचन्द्रसिंहजीने पृथीराजजी, आशकरणजी, अमरसिंहजी अभेसिंहजी, रामसिंहजी अने राणाजी नामना छ कुमार हता. तेमां पृथीराजजी भडळीना सरवैया रावना भाणेज थता हता. आशकरणजी तथा अमरसिंहजीनो जोधपुरवाळां राठोडराणीथी जन्म थयो हतो, अभेराजजी शिहोरना, रायसिंहजी खीळोसना अने राणोजी पेथापर माणसाना दौहित्र थता

१ श्री झाला कुळना वारोट पोताना चोपडामां राजचन्द्रसिंहजीना नव कुमार हता एवं जणावे छे अने ध्रांगधाना इतिहासमां निह गणेला त्रण कुमारनां भोजराजजी, सूरिसंहजी तथा मतापिसंहजी एवां नामो वतावे छे. तेनी साथे भोजराजजी " माणसा " ना अने सूरिसंहजी तथा मतापिसंहजी " कुण " ना भाणेज हता एम कहे छे.

हता. हवे हळवदनी गादीना खरा हकदार पाटवो कुमार पृथीराजजी हता, छतां आशकरणजी तथा अमर्रासेंहजीए पोतानो हेतु पार पाडवा माटे अमदावादना सूवानी सहायता मागी. सूवाए युक्तिमयुक्तियी पृथीराजने पकडी केद कर्या वाद अग्रुक वखते तेओ स्वर्गनी राहे संचर्या.*

राजचन्द्रसिंहजीना चोथा पुत्र अभेसिंहजीने "थान" तथा " लखतर " पांचमा पुत्र रामसिंहजीने " इडा " अने छहा पुत्र राणाजीने " माथक " नामे गाम गिरासमां मळ्युं हतुं.

वि. सं. १६८४ मां राजचन्द्रसिंहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना द्वितीय कुमार आश्व करणजी हळवदनी गादीए वेटा, तेओए पोताना न्हाना भाइ अमर्रासेहजोने वार गामो सिहत गाम
माछवण आप्टुं. ए वल्ले वन्धुओ एकज स्थळे (गाजणीआने त्यां) परण्या हता. आश्व करणजीनां
राणी म्होटी ब्हेन अने अमर्रासेहजीनां राणी न्हानी ब्हेन थतां हतां. एक वस्तते म्होटी
ब्हेनने मळवा न्हानी वेन माळवणथी हळवद आव्यां त्यारे न्हानी ब्हेनने म्होटी ब्हेने
म्हेणुं मार्यु के तमो तो पितृचातंक छो; जेथी तमारुं मुख जोवुं ए उचित नथी. आवां
तिरस्कारयुक्त वचन सांभळी न्हानी ब्हेन सत्वर स्वकीय रयने सज्ज करावी माळवण
तरफ खाना थयां अने त्यां पहोंच्या वाट तेणे पोताना पियतम पासे म्होटी ब्हेने मारेळ मेणां
तरंथी सघळी हकीकत कही संभळावी; एथी कुमार अमर्रासेह विचार कर्यों के वात तो खरी,
पिताने मार्यानुं कळंक मारा पर चढ्युं अने राज्यमुख म्होटा भाइने मळ्युं ए शा कामनुं ? आम
अनेक तर्कवितर्क करता क्रोधमांने क्रोधमां तेओ अश्वास्ट थइ हळवद आव्या अने जे स्थळे राजआश्वकरणजी स्नान करता हता, त्यां जइ तेओने भाळांना असत्य महारथी अचेत करी पोते वि.
सं. १६९० मां हळवदनी गादी हस्तगत करी.

ष्यारे पृथीराजना कुमार राजसरतानसिंहजीए वांकानेर वसाव्या वाद इळवदपर वारंवार हुमला करवा मांडया; त्यारे अमरसिंहजी पोतानी सरहदनुं संरक्षण करवा मांडे माथक आव्या; ए वखते तेओना मददगार बनेला मुळीना परमार तथा केटलाएक काठी लोको वांकानेर तावाना कोइएक गाम (भीमगुडा) मांथी ढोरोने हांकी गया. ए समाचार सांभळतांज राजसरतानजीए

^{*} पृथीराज सवंधी इकीकत वांकानेरना इतिहासमां सविस्तर वर्णवेली ले.

१ कहे छे के कुमार अमर्सिंहजीए पोताना पिता राजचंद्रसिंहजी ए मारी म्होटा भाइ आश्वकरणजीने हळबदनी गाढीए वेसाडया हता. अमोए ए वात वांकानेरना इतिहासमां दाखल करेली छे.

तेओनी पाछळ जइ पोतानां पशुओने स्वाधीन कर्या, परंतु राजअनरसिंहजोनां माणसो तथा मुळीना परमार वगेरे एकत्र थइ राजसरतानजीनां सैन्य उपर तुटी पडया; भीमगुडा तथा ओळ पासे भयंकर युद्ध मच्युं; तेमां राजसरतानजी मार्या गया; जेथी हाल पण ए जगो " सरतानजी उं रण " ए नामथी ओळखाय छे. त्यां एक न्हानी सरखी देरी वांघेली छे तथा युद्धमां पंचत्वने माप्त थएला वीरपुरुषोना पाळीया छे.

राजअमरसिंहजी गाजगीया भाणाजी अखेराजनां कुंवरी क्यामवा तया जांडेजा अछीयाजी भाराजीनां प्रत्री ताजकुंवरवाने परण्या हता; तेओने एक मेघराजजी नामे कुमार थया.

वि. सं. १७०१ मां राजअमरसिंहजीनो स्वर्गवास थतां, तेओना क्रमार मेघराजजी हळवदनी राजगादीए बेठा; तेओ महान धर्मात्मा अने पुण्यशाळी हता; तेओए सिद्धपुर, नर्मदा, द्वारिका, तथा सोमनाथपाटण आदि स्थळे यात्रा करी असंख्य ब्राह्मणोने भोजन तथा दक्षिणाथी संतुष्ट कर्या हता. तेओ नव राणीओ परण्या हता.

- १ रतनकुंवरवा, ते जांडेजा खेंगारजी रमळाजीनां कुंवरी के जेनाथी कुमार गजार्सहजीनो जन्म थयो।
- २ ळीळाजीवा, ते जाडेजा मेरामणजी विभाजीनां कुंवरी,
- ३ यशकुंवरवा, ते साणंदना वांघेला राजाजी वजेराजनां पुत्री.
- ४ इयामकुंवरवा, ते साणदना वाघेला राजाजी वजेराजनां पुत्री.
- ५ हेमजीवा, ते गारीयाधरना गोहेल राणाजीनां पुत्री
- ६ छाडुवा, ते जाडेजा अभेराजनां पुत्री.
- ७ रयामकुंवरवा, ते गांगडना वाघेला मुळजी देशळजीनां पुत्री.
- ८ रुपाळीवा, ते चुडासमा प्रतापजी रासळजीनां पुत्री.
- ९ देवकुंवरवा, ते वांकलना वाघेला गर्जासंहजी सुलतानसिंहजीनां पुत्री.

वि. सं. १७१७ मां राज मेघराजजीनो स्वर्गवास थतां कुमार गर्जासंहजी हळवदनी गा-दीए वेटा. तेओए द्वादश वर्ष पर्यन्त राज्यस्रखनो उपभोग कर्यो; तेओना समयमां सर्वत्र सुखशा-न्ति हती. तेओनां वागड देशमां आवेळा गाम आडेसरवाळां राणीजीथी कुमार चन्द्रसिंहजीनो जन्म थयो; ए चन्द्रसिंहजीने पण आडेसर परणाववामां आच्या. महाराजा गर्जासिंहजीना वीजा कुमार जसवंतिसिंहजीने माळवण तथा वीजां केटळांएक गाम गिरासमां मळ्यां हतां. पाटवीकुमार चन्द्र- सिंहजीने आगकरणजी नामे कुमार थया. परंतु ए वाप वेटा वन्नेने वीठा गढवी नामना कोइएक

राजगणिसंहजीना तृतीय कुमारतुं नाम जगोभाइ इतुं, तेने " सुसवाव " नामतुं गाम गि-

वि. सं. १७२९ मां राजगजिसहजीनो कैलासवास थतां तेओनां वीजा कुमार जसवंत-सिंहजी इलवदनी गादीए वेटा; तेओना म्होटाभाइ चन्द्रसिंहजी (जेने चारणे मारी नांख्या हता ते) ने आशकरणजी नामना कुमार उपरांत एक झींझवा नामे पुत्री पण हतां; कुमार अजितर्सिंह तेना छ्य जोधपुरना राठोड जसवंतर्सिंहजीना आन्यां इतां. वि. सं १७२७ मां राठोड राजा जसवंतिसहजी वादशाह तरफथी गुज-रातना सुवेदारनी जगोए दाखळ थया इता. तेओए पोताना पुत्रवधू (चंद्रसिंहजीनां पुत्री) नी अरलधी इळवदना राजा जमवंतसिंहजी उपर हुमलो कर्यो झाला जसवं-तिसंहे इळवदतुं राज्य हस्तगत करी वावी नजरअलोखानने जागीर तरीके एनायत कर्धः नजरअलीखांए त्यां छ वर्ष पर्यन्त सत्ता भोगवी त्यारवाद वांकानेरना वीरवर राज-चंद्रसिंहजीए वाबीने इळवदमांथी हांकी काढी त्रण वर्ष पर्यन्त त्यांनी स्वतंत्र राज्यसत्ता भोगवी. पाछुं इळवद त्यांना मूळ राजा जसवंतिसहजीना हाथमां गयुं. तेओने वि. सं. १७३८ मां षादशाह औरंगजेवे सनंदधी हळवदनी गादी तथा त्यांना मीठाना अगरनो कवजो नकी करी आएो. वि. रां. १७७१ मां जोधपुरना महाराजा अजीतसिंहजी गुजरातना मुवेदार वन्या; वेओए एक महोटं लक्कर लढ़ हळवद तरफ प्रयाण कर्यु अने त्या पहोंच्या वाद राज जसवंतसिंहजीने खंटणी आपदानी फरज पाडी. राठोड राजा अजीतसिंहजी त्यांथी नवानगर तरफ रवाना थया. राज जसवंतिसहजी तेना पाछळ गया अने तेओए जाम तमाचीना मददगार वनी अजीतिसहना लरकरने हेरान कर्य; तो पण अजीतसिंहजीए जाम तमाचीने खंडणी पेटे त्रण लाख रुपिआ तथा पचीरा बच्छी घोटा आपवानी फरज पाडी. त्यारवाद द्वारिकानी यात्रा करी राठोड अजीत-सिंहजी पाछ। अमदावाद आवी पहोंच्या तेओनां राणी झाछीजी (चन्द्रसिंहजीनां पुत्री) इळवदना राजा जमवंतसिंह तरफ अत्यंत द्वेप तथा वैमनी लागणी घरावतां हतां. ेवामा गुजरातमायी राटोड अजीनसिंहनीनी वदछी थह, तेथी तेओ कोहपण रीते अथ-वा कोरपण बरानाथी काठिआवाडमां छक्कर मोकली शके एवं रहां नहि एटला माटे

एओनां राणीजीए हरकोइ प्रपंचथी हळवदना राजा जसवतासंहजीने मारी नांग्ववानो निश्रय करी पांच राजपूतोने साधु वेषे त्यां मोकली आप्या. ए साधुओ-राजपूतो इळवदमां आवी राजश्वर तळावने किनारे केटळोक वखत रह्या. एक दिवसे राज जसवतासहजी सुखपाळमां वेमी थोडा घणा अनुचरो सहित ए रस्ते फरवा जता हता, साधु वेषे सज्ज यह रहेळा राजपूतो तेशोना उपर एक-दम तूटी पड्या; तेमांनो एक राजपूत काम आव्यो अने वाकीना चार न्हासी गया; परंत राज जसवतिसहजी ए छोकोना पथम प्रहारथीज पंचत्वने पाप्त थया। तेओए हळवदमां एक म्होटो म्हें छ वंधाच्यो हतो. तेओना चार कुमारोमांथी पाटनीकुमार मतापसिंह जी बिननं. १७७४ मा तल्तन-शीन थया. बीजा कुमार मानासंहजीने माळवण विगेरे गाम, त्रो मा कुमार मेयराजजीन माळगीया-द तथा अजाल विगेरे गाम अने चोषा कुमार आमाभाइने घवाणु तथा वेळाळु वगेरे गाम गिरासमां मळ्या. वि-सं. १७७१ मां सुवो दाउदखानपत्री काठिआवाडनी सफर करतां करतां इळवदमां आवी पहें।च्यो अने त्यां थोडो वखत रही ते राज जसवत-सिंह नीनां कुंबरीने परण्योः ए अरसामां नवानगरना जाम हर गोळ नी ए पोताना ओरमान भाइ जाम रायसिंहजीने मारी त्यांनी राजगादीने पचावी पाडो. कोइएक दासोपुत्री जाम रायसिंहजीना बाळपुत्र तमाचीने पेटीमां संताडी कच्छ तरक लड़ गइ अने भूजना राव साथे परणावेलां इळवद नरेश प्रतापर्सिंहजीना ब्हेन बाइ रत्नात्रीने आश्रये जइ रही. थोडा वखत पछी रत्नाजीवाए पोताना भाइ प्रतापसिंहजीने पत्र छख्यों के आपना एक पुत्रोंने गुनरातना सुवा सर बुउंद्खान उर्फे मुवा-रीझडलपुरक साथे तथा बोजां कुंबरीने एथी नोचेना हुदेदार बादशाहो छङकरना उपरो सङावर महमद्खान वावी साथे परणावो अने ए उभय यवन सरदारोनी सहायता मेळवो. इळ बदनरेश प्रतापसिंहजोए ब्हेनना वचन प्रमाणे वने पुत्रीओनां लग्न कर्या अने सर बुलंदलान नया सजावत महम्मदखाननी सहायताथी जाम हरधोळजोने नवानगरनो गादोपरथी उठाहो मृक्या अने ते जगो-ए जाम तमाचीने वेसाड्या.

जूनागढना दिवान रणओडभाइए पाताना ''तवारीख-इ सारिठ" नामना पुस्तक्षमां छह्युं छ के जाम तमाचीए हळवदना राजने हडीयाणां नामनुं परगणुं आप्युं अने चरखडी, त्राक्कडा तथा

१ ए महेल घणां वर्षे व्यतीत थवाथी जीण वनी गयो हतो तेने जसवतिहिं नी पत्री सातमी पेढीए थएला गज रणमलसिंहजीए केटलाएक सुधारा वधारा साथे फर्ग वंधाव्यो हतो पर्वे महेलनी अंदरना शिकालेख उपरथी जाणी शकाय छे.

द्यां नापना त्रण गामहां सलावत साथे परणावेळो पुत्रोने आप्यां. त्यारवाद ए त्रण गामो सळा-वतखानना पुत्रो ग्रेरसमानखान तथा दिलीरखांने गोंडलना राणा कुंभाजीने वेचाण आप्यां.

राजश्री प्रतापसिंहजीने रायसिंहजी, कलाभाइ तथा वजाभाइ नामे त्रण कुमारो हता.
तैमांना कलाभाइने वावली तथा माणेकवाला अने वजाभाइने वेगडवाव गिरासमां मळ्यां.

वि० सं० १७८६ मां राज प्रतापसिंहनो स्वर्गवास थतां पाटवी रायसिंहजी वीजा श्री हळददनी गादिए विराजमान थया, तेओए एज वर्षे धांगधाने फरतो कोट वंधावी वर्ष दरिमयान अमुक मास त्यांन रहेवातुं मुकरर कर्युं हतुं, अने वाटावदर पासे नदोने किनारे " रायासिंहपुर" नामतुं एक नवुं गाम वसान्युं हतुं. ए रांजा बहुज बुद्धिमान हता; तेओए भायातोने गरास तरीके अपाती जमीनमां घटाडो करवा विचार कर्यों; एथी तेओना द्वितीय कुमार शेषाभाइ के जे घणाज नाहिसक अने स्वभावे चंचळ हता तेनी आगेवानी हेठळ वीजा वधा कुमारोए राज्य साथे वारवंद्र खेडवा मांढ्युं; म्होटा कुमार गजर्मिंहजी पण गुप्तरीते एओने मदद आपत्रा ळाग्या ए वावत ज्यारे राज रायसिंहजीना जाणवामां आवी त्यारे तेओने घणोज खेद थयोः जेना छाभ माटे तेओ अन्य कुमारोना गरासिंगां यटाडो करवा धारता हता, एज पाटवी कुमार सामा पक्षमां सामेछ थवाथी रा-परिंहजीए तुरतज पोताना तमाम पुत्रोने वोछावी प्रेषुरो गरास आपी दीधोः

राज रायसिंहजीने गजासिंहजी, शेपाभाइ, मेरुजी, अजाभाइ, कमळाभाइ, नयुभाइ, अने असाभाइ नामे सात पुत्रो हता.

वि० स० १८०१ मां रायसिंहजीनो कैलासवास थतां पाटवी कुमार गजिसहजी हळवदनी हैंगादीए देठा होषाभाइ तथा मेरुजीने मायक तथा तेनी आसपासनां गामडांओ गरासमां मळ्यां. अजाभाइने भलगामह तथा शापकरं, कसळाभाइने धनालु तथा चराडवा अने नथुभाइ तथा आसा-भारने सरा तथा पला नामनां गाम गरासमां मळ्या; परंतु ए वने भाइआंने काइ संतिन निर्हि होवाने कीथे तेओनो गरास फरी राज्यमां दाखळ थयो.

शेषाभाइए पोताने पायकमां ने गराम हतो ते मृको वारवर्ड करवा मांडयुं अने भ्रांगन्ना पासेधी नारीचाणा नामनुं गाम लीवुं; त्यारवाद तेणे राज गनसिंह नीनी सहायताथी खबड जा- विना काटीओने जीती तेओनुं सायला नामे गाम स्वाधीन कर्युं तथा आजुवाजुनां गामडांओने जीती सायलामां पोतानी राजधानी स्थापी.

राज गजसिंहजी महीकांठामां आवेटा गाम वरसोहाना चावडा गणानी पुत्री जीजीवाने

परण्या इता, तेनाथी एक जसवंतिसंहजी नामना क्रमारनों जन्म थयोः गनसिंहजी पासे शेषाभाइनुं एटछं वधुं चळण इतुं के ते कहे एटछंज गजिसहजी करता इता. तेओ शेषाभाइनी सूचना प्रमाणे ध्रांगध्रामां अने थोडो वखत इळवदमां रहेता; तेओना राणी जीजीवां साहसिक दियर शेषाभाइना भयथी क्रमार जसवंतिसंहजीने कह पोताने पियर (वरसोडे) चाल्या गयां.

वि. सं. १८०९ मां मराठाओए अमदावादने स्वाधीन कर्युं, तेना पासेयी यवन सरदार मोमीनखांए फरी एकवार अमदावादने छीनवी छीयुं, तो पण छेवरे वि. सं. १८१८ मां गायकवाड तथा पेशवानी सत्ता गुजरातमां सर्वोपिर यती गइ. ए वखते श्रेपाभाइए इळवदनी राजगादीने स्वाधीन करवाना हेतुथी घणां माणसोने एकठां करी राज गजसिंहजीने पराभव पमाडवानी पेरवी करी; परंतु पोताना छघु वन्युना पपंचथी वाकेफ थएछा गजसिंहजी वगरविळंवे वावळीना राणा कर्छाभाइ पासे जइ पहोंच्या, अने तेओनी मददथी पाछुं इळवदतुं राज्य पोते इस्तगत कर्युं, श्रेपाभाइए घांगधानो कवजो छीधो अने छडाइनी तैयारी करी. ए समाचार राणी जीजीवाने मळतां ते पोताना कुमार जसवतिसहजीने छइ वरसोडेथी सीथे आव्यां अने घोळका तथा वीरमगामना कस्वातीओनी मदद मेळवी शेषाभाइ पासेयी धांगधानो कवजो छेवा कोशीश करी, परंतु तेमां ते फाव्यां निंड. ए अरसामां पेशवानो सरदार भगवंतराव खंडणी उघराववा माटे झाछावाडमां आवेछ हतो. तेनी तथा राधनपुरना वावीनी मददथी राणी जीजीवाए शेषाभाइने धांगधामांथी न्हसाडी मूक्या अने पेशवा सरदार भगवंतरावने खंडणी तथा नजराणुं आप्युं. त्यारथी आरंभी राज गजिसिहना परछोकप्रयाण पर्यन्त राणी जीजीवा तथा कुमार जसवतिसहजीए धांगधा तथा सीथानो वहीवट चळाळ्यो अने गजिसिहजीए इळवदमां राज्य कर्युं. वज्ने अरधोअरघ खंडणी आपता.

वि० सं० १८१५ मां मराठा सरदार सदाशिव गमचंद्र लक्कर लइ धांगधा उपर चढी आव्यो ए वसते हळवदणी राज गजिसहजीए एक लक्कर धांगधानी मददे मोकल्युं. मरेटाओने तो वन्ने पक्ष सरसा हता, जेथी तेओए रात्रीने वसते एक दुकडी हळवद पर हल्ली करवा मोकली. गजिसहजी थोडीवार झगढो कर्या पछी तावे थया. तेओने मराठा मरदार सदाशिवे १२०००० रुपिआ दंडना लइ मुक्त कर्या. वि० सं० १८३८ मां राज गजिसहजीए कैलासवास कर्यो. तेओने मात पुत्रो हता.

- १ जसवतिसहजी पाटवी कुमार होवाथी हळवदनी गादीए बेठा.
- २ दाजीभाइ, तेने गाम इसानपुर तथा कढीयाणु गरासमां मळ्यां.

ह रवाजी, तेने पंचालमां आवेळ रायसंगपुरनो अर्ध भाग मळ्यो।

४ देशळजी, ते भावनगरनां राजकुंबरीथी जन्मेला इता, तेओने दाघोळीयुं नामे गाम गरासमां मळ्युं.

५ जेटी जी, ते गांफ गामना चुहासमा राणानी भिगनीने उदरे उत्पन्न थएका इता, तेने गाम दीघळीयुं गरासमां मळ्युं.

६ दावनी, तेने रायसंगपुरनो अर्थ भाग मळ्यो.

७ दादाजी, ते भादरवानरेशनी भगिनीथी जन्मेला इता, तेने गरासमां घणाद ना-

गजितिहजीने एक आछुवा नामे क्वेंचरी इतां अने तेना छग्न नवानगरना जाम जसाजी साथे कर्या इता.

राज जसवंतासंहजी घणे भागे ध्रांगधामां निवास करता हता; तेओए त्यांज पातानी रा-जधानी जमावी, त्यारथी हळवद ध्रांगधाना झाळाओानुं मुख्य शहेर ध्रांगधाज मनाय छे.

केटलाक काठी लोको घ्रांगघाना कोइएक गामहामांथी होरोने हांकी गया. ए वात शेषा-भार्ने काने जतां ते तुरतज काठी पाछळ थया अने ए लोको साथे थींगाणुं करी होरोने पाछा बाळी लाव्या, तेमां पोते पण घायल थया; तेओने वहादुरीना वदलामां राज जसवतसिंहजीए लीया नामतुं गाम इनाममां आप्युं. वळी सरधारना काठीओ गाम जमरहाना होरोने हांकी गया, ए वख-ते पण राज जसवंतसिंहजीए एक लक्कर सरधार उपर मोकली आप्युं.

स्वर्गस्य राज गजिसहजीना वस्ततमां राज्यना मोखासदारोए राज्यनी जमीन उपर पगेपेसारो वर्यो इतो, जसवतिमहर्जाए तेओने यथोचित ज्ञिक्षा आपी. ए अरसामां नवानगरनी अंदर
दिवानपदे नियत थएछो मेरामण स्ववास संपूर्ण राज्यसचा भोगवतो इतो, जाम जसाजी तो
माद्र नामनाज राजा इता, तेने नेरु खवास बहुज दावमां राखतो एथी नवानगरनी मजा तेनापर
दि रुपरांत नाराज थइ; तेनुं कासळ काढवा माटे खीरसराना रणमळजी वगेरे जाडेजाओए कच्छ
भूजना सेनापित जमादार फतेमहमदनी मदद मागी. वि—सं १८५४ मां फतेहमइमद म्होटी फोज
साथे रणने रस्तेयी हालारमां दाख्यल थयो. ए बखते राज जसवनसिंहजी पोतानुं लक्कर लह ज्यां
जामनगरनुं लक्कर पहाद नांग्वी पहयुं हतुं त्यां आवी पहाँच्यो, तेओए चेमांथी एकेनो पक्ष

१ रायसंगपुर अथवा रासंगपुर.

कर्यों निह. जमादार फतेहमहमदे पडधरी नामना गाम पासे युद्ध करी नवानगरना छइकरने हरान्युं; त्यारवाद ते खंभाळीआनी आजुवाजुना मुळकमां छुंटफाट चळावी कच्छमां चा- ल्यो गयो अने वि. सं. १८५७ मां फरी ते हाळार उपर चढी आन्यो. आ वस्तते मेरु खवासे जूनागढना नवाव हामदखाननी मदद मेळवो मोरवी तावे घेनसरा नामना गामडा नजीक पडाव नांख्यो. वन्ने तरफनां छइकरो छडवा तैयार थयां, परंतु राजजसवंतसिंहजीए बच्चे पडी सळाह संप करान्यो, जेथो जमादार फतेहमहमद कच्छ तरफ पाछो फर्यों फरी वि. सं. १८५४ मां कच्छना राव तथा जमादार फतेहमहमद म्होटी फोज छइ हाळारमां आन्या अने तेओए न्यानगरने फरतो घरो घाल्यो. परंतु तेमां तेओ फाव्या निह. अंते घेरो उठावी छेवो पड्यो कारणके ए वस्तते पण्डे जसवंतसिंहजीए वच्चे पडी वन्ने पक्षतुं समाधान कर्युं अने ए काम वदळ तेओने नवानगर स्टेट तरफथी फछा नामनुं गाम आपवामां आन्युं.

राज जसवतसिंहजीने णंच राणीओ हतां, तेमांना पढेळां राणी चंदुवा, ते पेयापुरना वाघेळा अदेसिंहजीनां पुत्रो हता, तेणे वे पुत्र तथा एक पुत्रीने जन्म आप्योः पढेळा कुमार राय-सिंहजी जसवतसिंहजी पळी गादीना हकदार गणाया अने वीजा कुमार काकोभाइ वाल्यंवयमांज गुजरी गया. राजकुमारी ताजवाने जयपुरना महाराजा साथे परणाव्यां. वीजी राणी जीजीवा, ते कच्छ शापुरना जाढेजा मेघाजीनां पुत्री हतां, तेने पण सांगाजी तथा जेसंगजी नामे वे पुत्र थया. ए वजेने गरासमां गाम रासंगपुर मळ्युं. त्रीजां राणी वाजीवा, ते कच्छमां आवेळा धमळकाना जाढेजा माळाजीनां पुत्री हतां, तेने पण अदाभाइ तथा सूराभाइ नामे वे पुत्र थयाः ए वजेने वावढी नामनुं गाम गरासमां मळ्युं. चोथां राणी रतनकुंवरवा, ते भाळमां आवेळा गाम उतेळी-याना वाघेळानां पुत्री हतां; तेने पण सांगाभाइ तथा राणाभाइ नामे वे पुत्र थयाः ए वजेने रायपुरं नामनुं गाम गरासमां मळ्युं. पांचमां राणो आळुवा, ते गांगडना भगवतसिंहजीनो पुत्री हतां, ते- जे नाथी मात्र एक रुपाळीवा नामनां कुंवरीए जन्म ळीधो. ए रुपाळीवाने उदयपुरना महाराणा भीम-सिंह वेरे परणाव्यां.

वि. सं. १८५७ मां राज जसवतिसहजीनो स्वर्गवास थतां तेओना पाटवीकुमार रायिस-हजीए हळवदना राज्यामनने अलंकृत कर्युः; तेओना वखतमां कांइ जाणवा योग्य बनाव वन्या नथीः; तेओए मात्र त्रणज वर्ष राज्य कर्युः, तेओनां वे स्थळे लग्न थयां हतां. तेमांना मुख्य राणी मोतीवा साणंद टाकोरनां पुत्री हतां. तेणे अमरिसहजी तथा जीजीभाइ नामना वे कुमारने जन्म आप्यो. जीजीभाइने रावळीयावदर नामतुं गाम गरासमां मळ्युं हतुं, पण ते निःसंनान स्वर्गवासी थवाथी ते गाम पाछुं दरवारमां दाखळ थयुं. वीजां राणी प्राणवा वरसोडाना राजपुत्री हतां, तेनाथी जन्मेळा कुमार वजाभाइने सोळडी नामतुं गाम गरासमां मळ्युं, पण पाछळथी तेओ वोनवारस गुजरी जतां तेनो गरास राजमां गयो.

दि. सं. १८६० मां राज रायसिंहनो कैळासवास थतां तेओना पाटवीक्चपार अमरसिंहनी तल्वनशीन थया, त्यारवाद त्रीजे चोथे वर्षे अर्थात् वि. सं १८६३ मां वढोदरानी अंदर रहेळा अंग्रेजी रेसीडन्ट कर्नळ वॉकर तथा गायकवाड सरकारना प्रतिनिधि तरी-के प्रसिद्ध थएळा वावाजी आपाजी ए वलेए मळी काठिआवाडनां देशी राज्यो पासेथी छेवाती खंटणी सदंधी कायमी तिर्णय कर्यों अर्थात् क्ये दरे खंडणो छेवी ते सबंधी टराव कर्यों. ए वसते धागधा राज्यना प्रदेश वहवाणनी गादी साथेना कजीआने छींथे तेमज जाट तथा मीयाणा छोको-ए चटावेछी छूंटफाटने छींथे तदन कंगाळ तथा वेरान सरखी स्थितिमां हनो, परंतु ज्यारे वि—सं. १८७६ मां काठिआवाडनी अंदर एजन्सी खातुं स्थपायुं त्यारथी धांगधा राज्यनी स्थिति सारी यती गह अने मुळक धीमे धीमे वस्तीवाळो यतो गयो. वि—सं. १८७० नी शकआतमां राज अमरसिंहजीए छींझवाटा तर कर्यु अने तेनो वे वर्ष पर्यन्त पोते वहीवट कर्यो. पण तेओ चडेळी खंडणी सरकारने आपवा शक्तिमान न होवाथी वि—सं. १८७६ मां तेओना पासेथी गायकवाड सरकारे छींख्वाटा पटावी छीछ अने विटळराव देवाजीने त्यांनां वहीवटदार तरीके नीम्या. त्यारपछी मेजर वेलेनटाइनना कारभारमां ए गामनो जमीन वि—सं. १८७६ सुयी गणोते आपवामां आवती. ते वि—सं. १८७७ ना अंतमां अमदावादना कलेकटरने सोंपी देवामां आवी. ते वखतयी झींझवाडा एक छुवोज तालुको गणाय छे.

राज अमरसिंहजीने छ राणीओ हतां.

१ देदया, ते गांगडना राणानी पुत्री हतां, तेणे वे पुत्र तथा वे पुत्रीने जन्म आप्यो. गरोटा पुत्र रणमछ्जी गादीना इकदार गणाया. एथी न्हाना छयुभाने गरासमां गाम चराहवा मळ्युं, अने गरोटां कुंबरी दाजीराजनो बच्छना राव देशळजी साथे तथा न्हानां कुंबरी जसुवानो नदानगरना कुमार अजाजी साथे विवाह कर्यों.

प्रशाहरा, ते बेटना वाघेटा मोकाजीनां पुत्री हतां, तेनाथी एक रुपाळीवा नामे कुंवरीनो जन्म थयो अने तेने कच्छना राओ देशळजी वेरे परणाच्यां. ३ वखतुवा, ते पाळीताणाना गोहेळ उन्नडजीनां पुत्री हतां; तेनाथी वाइसाहेव नामनां एक कुंवरीनो जन्म थयो अने तेने नवानगरना जाम रणमळणी वेर परणाव्यां.

8 रामवा, ते अमदावाद पासे आवेळ गाम कुणाना वाघलानी पुत्री हतां, तेणे एक तेजी-बा नामनां कुंवरीने जन्म आप्यो. ए तेजीवानां छग्न नवानगरना जाम विभाजी साथे थयां.

५ राबा, ते माळीआना जाडेजा डोसाजीनां पुत्रो हतां तेणे पण एक वोनजीवा नामे कुंदरीने जन्म आप्यो. ए बोनजीवाने पोरवंदरना राणा विकमातजी वेरे परणाव्यां.

६ बाइवा, ते साणंद ठाकोरनां पुत्रो हतां, तेने कांइ पण संतति थइ नहि.

राज अमरसिंह जीए श्रांगधामां एक रामजीतुं मन्दिर वंघान्युं. वि—सं. १८७६ मां कच्छ तावे वागहना कोळी तथा सिन्धि कोको रणने ओळंगी धांगधा राज्यना उत्तर तरेकिंना प्रदेशे उपर तूटी पट्या अने छूंटफाट चळावी पाछा गया, एथी राज अमरसिंह जीए सरहद उपरनां गॉमें- ढांओमां थाणां वेसाड्यां अने पोताने थएळ नुकशान कच्छना राव पासेथी अपाववा नामदार अंग्रेज सरकारने अरज करी. कच्छना राओ पोतानी कोळी तथा सिन्धि जातिनी प्रजाने काञ्चमां राखवा अशक्त होवाथी नामदार अंग्रेज सरकारे मेककडोंने कश्कर साथे मोकल्यो. मेककडों प्रथम हळवदमां तथा मोरवी तावे घाटीलामां थोडा वखत रह्या पछी कच्छमां गयो. अने त्यांना राओने मळी तेणे तेओनी प्रजाप श्रांगधा राज्यन करेली नुकशानी वदळ वे लाख रुपिआ आपवानी फरज पाडी अने ए रकपमांथी धांगधाना भाषाती गामहांओने थएळ नुकशान वदळ अमुक हिस्सो आपी वाकीनी रकम धांगधा दरवारने सोंपी दीधी. धांगधा स्टेटने ढोरढांखर तथा खेतीना ओजार सवंधी थएळी नुकशानी मेककडोंए जे दरे चुकवी ते दर इ. सं. १८६८ वि—सं. १९२४ ना दरनी साथे सरखावतां नीचे मुजब छे.

| ढोर अथवा ओजारतुं नाम. | मेककढाऐं चुकावेली किम्मत. | वि. सं.१९२४ मां उपजती
किम्मतः |
|-----------------------|---------------------------|----------------------------------|
| घोंदा | रु, १०० | रु, २०० |
| टहु (न्हानुं घोडुं) | ,, १२ | " ३० |
| उंट | ,, ५० | ,, <0 |
| गाडं | ب, بره | ,, co |

| इ ळ | " | 4 | " | ξο |
|-------------|----|-----|----|----|
| चळद | 77 | ३० | ** | ७५ |
| गाय | " | १२ | ** | २५ |
| भॅ स | ,, | ३० | " | ५० |
| घेदुं | " | २ | " | 3 |
| गर्धेई | ** | \$8 | " | २५ |

राज अमरसिंहजीए अमरापुर तथा हामपुर नामनां वे नवां गामडां वसाव्यां. वि० सं० १८९९ मां तेओनो स्वर्गवास थतां राजकुमार रणमलसिंहजी वनीश वर्षनी लम्मरे इ० स० १८४३ ना एशिलनी ता० ९ मीए तख्तनशीन थया. तेओए धांगधाना किल्लानुं समारकाम करान्धुं, सीधा तथा लगरहामां नवा किल्ला बंधाव्या, हळवदनी म्होटा महेळ फरीथी चणान्यो, सीथा आगळ रहेला चंद्रतर तळावमां सुधारो करान्यो अने धांगधा आगळ एक रणमलसर नामनुं नवुं तळाव खोदावी वंधाल्युं, राज रणमलसिंहजी राजकाजमां बहुज कुशळ हता, तेओए संस्कृत, फारसी, लड्डे तथा गुजराती भाषानुं उत्तम रीते झान मेळवेलुं हेतुं, तेनी साथे तेओ किव पण हता. हाल्यवयधीज तेओने सिंहना शिकारना शोख हतो. तेओए धांगधानी हदमां सिंहनो शिकार कर्यो हतो. वि० सं० १८८६ मां महेरवान एक्टींग पोलीटीकल एजन्ट केल्टन वीलसननी साथे तेमज वेल्टन क्रंबनी साथे सफर करवा निकलेला राज रणमलसिंहजीए केल्लाएक सिंहनो वहादुरीधी शिकार वर्यो हतो. तेओ क्यारे तख्तनशीन यया, त्यारे राज्य लगर ऋण हतुं; ते तेओए योग्य वरवसरपी भरी आप्युं. पोताना भायातो तथा धीजा मोखासदारो साथे संप राखवामां तथा राज्यनी द्रव्यक तथा सैन्यवळ वगेरे संपत्तिओ केळववामां तेओए एटलुं वधुं लहापण देखाद्युं वे तेओलुं नाम आखा काठिआवाहमां एक थेष्ट राज्यकर्ता तरीके प्रसिद्ध थयुं. वि० सं० १९०२

१ एमनी बनावेटो एक हिन्दी अने बीजो चारणी भाषानो दोहा पशहूर छे.
कनक कनकतें चाएनी, मादकता अधिकाय;
वे खाये चिंढ जात हैं, वे पाये चिंढ जात. ॥
मत दीधे माने नहीं, कमतें मत कोळाय;
अवळे अखरे अवतर्या, एने सवळा केम सेवाय. ॥

मां तेओए एक रणमलपुर नामे नवुंगाम वसान्युं. वि. सं. १९०३ मां तेओ कच्छ वागडमां गाम छा-कडीआ नजीक राओं देशळजीने मळ्या. वि. सं. १९०६ मां तेओने राजकोट मध्ये वहारवटीया वीधा माणीकना मुकर्दमानी मे॰ पोलीटीकल एजन्ट कर्नल लेंग पासे चालती तपासमां आसेसर तरीके वेठक मळी इती. वि. सं. १९०७ मां राज रणमलसिंहजीए रेवाकांठामां आवेल वाना व घेला जालिमसिंहजीनां कुंवरी रुपाळीवा साथे पोताना पाटवीकुमार मानसिंहजीनां धामधू-मथी लग्न कर्यो तेमज वीजी वखत धोळना भायात खीजडीयाना जाडेजा सांगाजीनां पुत्री जीजीवा <u>ृँसाथे कुमार्र मानसिंहजीने परणाव्या. वि. सं. १९१० मां कच्छमां नाराणसर कोटेश्वरनी यात्राए</u> **ं**पधारेला राजरणमलर्सिंहजीने फरी कच्छना राओनी मुलाकात थइ. ते वखते तेओए राओश्रीना ृिपाट्वीक्रुमार प्रागमलजी साथे पोतानां आछुवा तथा कृष्णक्वंवरवा नामनां उभय राजकुमारीनो संवं-ध कर्यो अने त्यांथी धांगधा आव्या वाद तुरतज कुंवरीश्री आछुवानां लग्ननो महान् समारंभ कर्यो तथा पोतानां त्रीजां कुंवरी वाइवाने इंडरना महाराजा जसवतर्सिंहजी वेरे परणाव्यां. एज वर्षमां कुमारश्री मानसिंहजीनां राणी रुपाळीवाने पुत्रनो पसव थयो. तेनुं नाम जसवतसिंहजी राखवामां आन्युं. एज वर्षे राजरणमलर्सिंहजीए ध्रांगधाना वायन्यकोणमां आशरे त्रण माइल दूर राजपुर नामनुं नवुं गामडुं वसान्युं. वि. सं. १९११ मां श्रांगश्रानी अंदर वैष्णवनी हवेलीनो पायो नांख्यो. ए मकान वि. सं. १९१४ मां तैयार थयुं. ए अरसामां राजरणमलर्सिंहजी सोमनाथपाटण, गिर-नार तथा तुल्जीक्याम वगेरे प्रख्यात स्थलोनी यात्रा करी आव्या. गिरनार जती वखते तेओने जुनागढना नवावसाहेव महोवतखांनजीनी मुलाकात थइ हती. वि. सं. १९१९ मां ज्यारे तेओ नाशिकनी यात्राए पथार्या त्यारे मुंबइमां रोकाया हता, त्यां तेओने नामदार गवर्नर जनरल सर बार्टलफेरनो मिलाप थयो इतो. ए पसंगे कुमार मानसिंहजी साथे हता. इ. स. १८६३ नी श-रुआतमां कर्नल कीटींग काठिआवाडना मे. पोलीटीकल एजन्ट नीमाया; तेओनी भलामणथी नाम-दार अंग्रेज सरकारे के. सी. एस. आइ. नो मानभर्यो इल्काव आप्यो. नामदार कर्नल कीटींगे वि. सं. १९२२ इ. स. १८६६ ना डीसेम्बरनी २२ मी तारीखे वढवाण मुकामे दरवार भरी झा-छावाडना मुख्य राजाओ समक्ष उक्त इल्कावनो राजरणमलसिंहजी उपर अभिषेक कर्यो. वि. सं. १९२३ मां राजरणमल्लिंहजी बनारस, श्रीनाथद्वारा, पुष्करजी, क्यामलाजी, गोकुल, मथुरा तथा मयाग वगेरेनी यात्राए पधार्या अने आनंदपूर्वक ए तमाम स्थळनी यात्रा करी वि. सं. १९२४ मां पाछा राजधानीमां आवी पहोंच्याः जे वर्षमां वनारस वगेरेनी यात्राए निकळ्या, तेज वर्षे तेओए

गिष्ठा तथा घांटीका नामे वे नवां गामडां वसाव्यां हतां अने एज सालमां कुमार मानसिंहजी राज-रणमलिंहजीना प्रतिनिधि तरीके भरुचना प्रदर्शनमां गया तथा नामदार गवर्नर जनरल लॉर्ड मेयोना आगमन प्रसंगे मुंबई पधार्या. वि. सं. १९२५ ई. स. १८६९ ना ऑकटो-वर मासनी ता. १६ मीए राजरणमलिंहजीए कैलासवास कर्यो. तेओं राज्यकर्ता वरीके हुं दहापण अनुपम हतुं. नामदार अंग्रेज सरकार तरफथी काठिआवादमां के. सी, एस. आह्ना हल्काव हुं मान मेळवनार राजरणमलिंहजी प्रथम गणाय छे. तेओने त्रण राणीओ हतां.

१ वाइसाहेब, राजकोटनां ठाकोर भाभाजीनां पुत्री हतां, तेने रघुनांथार्सिंहजी नामनीं एक कुंबरी थयां. रघुनाथार्सिंहजीने हामापुर नामनुं गाम गरासमां मेंच्युं.

२ वाइसाहेब, ते गींडळंना ठाकोर मोतीभाइनां पुत्री हतां, तेनाथी एकं वाइवा नामनां हुंबरीनो जन्म थयो.

३ वाइराजवा उर्फे व्रजकुंबरवा, ते नवानगरना भाषात जाडेजा राष्ट्रभाइनां पुत्री हतां, तेने यानिस्हिजो, मेरामणिजी, हरिसिंहजी तथा प्रतापसिंहजी नामे चार कुमार थयां प्रतापसिंहजीने भारद नामन्नु गाम गरासमां मळ्युं.

वि.स. १९२५ मां श्रांगश्चानी राजगादीए विराजमान थएला राजमानसिंहजीए वि.सं. १९२६ मां चुनवालमां आवेलां बहुचराजोनी तथा महीकांठामां आवेलां अंवाजीनी यात्रा करी अने पोताना राज्यमां गुजराती तथा अंग्रेजी निशालो स्थापी. एक अंग्रेजी निशाल तथा कन्याशाला तळपदमां खोली, तेमज टीवर, मेथाण, मालवण, माथक, चराडवा, भराडा अने कोंढ वंगरे गामोमां गुजराती निशालो स्थापी. मंगलपुर. मेरुपुर, तथा मानपुर नामनां त्रण नवां गाम वसाव्यां. एज वर्षमां नामवर इयुक्त ऑफ एडीनवरो इन्दुस्थानमां आत्रा, ते मसंगपर महाराजा मानसिंहजी मुंबह गया अने ए मुलाकातनी यादगीरी माटे तेओए राजकोट सदरमां का. १५००० पंदरहजारने खचें एक धर्मशाला वि. सं. १९२६ इ. स. १८७० ना डीसेम्बर मासमां मुबहना नाम-दार गदर्नर मर सेम्र फीटझेराल्ड राजकोट मुक्तामे पद्यार्थी ते वखते भराएला दरवारमां महाराजा मानसिंहजीए हाजरी आवी हती. वि. सं. १९२७ मा नेओना पाटबीकुमार जसवंतिमहजीनां प्रथम स्वर राजकोटना टाक्तीर मेरामणजीनां इंवरी वाजीराजवा माथे थयां अने वीजां लग्न भादरवाना

वाघेळा तख्तसिंहजीनां पुत्री माजीराजवा साथे थयां. वि. सं. १९२८ मां ळॉर्ड नॉर्थ<u>व</u>्रक मुंबइ पथायी ते प्रसंगे तेओने मान आपवा महाराजा मानसिंहनी मुंबई गया हता. एज वर्षे पाटबीक्रमार जसवतिसंहजीनां त्रीजां लग्न धरमपुरना राजा नारायणदेवजीनां वहेन खुतालकुंवरवा साथे थयां. जसवतसिंहजीनां वीजां राणी पाजीराजवाए अनीतिभिद्रजी नामना कुमारने जन्म आप्योः राज मान-सिंहजीए वि. सं. १९२८ मां मालणीयाद तथा सुसवावमां गुजराती निशाळो स्थापी, श्रांगब्रा नभीक इरिपुर नामनुं गामडुं वसान्युं तथा तळपदमां एक पुस्तकज्ञाळा खोळी. वि. सं. १९२९ मां नामदार गवर्नर जनरल लॉर्ड नॉर्थव्रुके भोषाळनी वेगमना अगिषेक पसंगे सुंबइमां दरवार भर्यों ते वखते पण राज मानसिंहजी मुंबइ अधार्या हता. एज वर्षमां तेओए सरवाळ नामना गाममां गुजराती निज्ञाळ स्थापी. वि सं. १९३१ मां मुंबइना नामद्दार गवर्नर सरफीळीप वोडहाउसे राजकोट पधारी दरवार भयों. ते प्रसंगे राज मानसिंहजीए हाजरी आपो हती. एज वर्षमां प्रवासे निकळेला नामदार शहेनशाहना वडा पुत्र ज्यारे हिन्दुस्थानमां आवी पहींच्या स्यारे तेओने मान आपवा माटे मुंबइमां एक दरवार भरायो हतो ए प्रसंगे राज मानसिंहजी पण त्यां पथार्यो इता अने ए मुलाकातनी यादगीरीमां तेओए राजधानीमां आव्या वाद एक औषधालय वंधान्युं, तथा वावळी, धमाणा, कुडा, धवाळा अने रासींगपुरमां गुजराती निशाळो स्थापी. तेमज वि. सं. १९३२ मां धांगधाथी हळवद सुधो एक जाहेर रस्तो वंधाववातुं काम शरु करान्युं अने कुवा तथा उमरहामां गुजराती निशालो स्थापी. वि. सं. १९३३ इ. स. १८७७ ना जान्युआरीनी १ तारीखे ज्यारे दिल्हीमां दरवार भरायो, त्यारे राज मानसिंहजी विमारीना सववयी त्यां जइ शक्या नहोता; तोपण तेओने ए पसंगे नामदार अंग्रेन सरकार तरफथी के सी. एस् आइ. नो इल्काव तथा चार तोपोतुं विशेष मान एनायत करवामां आव्युं अने तेओना मुख्य कार-भारी आजम मकनजी धनजीने राव वहादुरनो खिताब मळ्यो. त्यारवाद मे मासमां राज मान-सिंहजी महावळेश्वर पधार्या अने त्यांथी वळती वखते तेओए मुंबइमां नामदार गवर्नर सर रीचर्ड टेम्पलनो मुलाकात लीधी. इ. स. १८७७ नी आखरे नामदार उक्त गवर्नर जनरले काठियावाडमां पधारी भावनगर मुकामे दरवार भर्यो त्यारे राज मानसिंहजी त्यां पधार्यो इता. ए प्रसंगे नामदार गवर्न रे राज मानसिंहजीने वावटो राखवानुं मान आप्युं. वि० सं० १८३४ इ० स० १८७८ ना जान्युआरीनी ? तारीखे महेरवान पोळीटीकल एजन्ट मी. पीळे राजकोट मुकामे दरवार भरी राज मानसिंहजीने तथा नवानगरना जाम विभाजीने के सी. एस. आइनो इल्काव अर्पण कर्यो. एज

वर्षमां राज मानसिंहजोए पोतानां द्वंबरीश्री राजकुंबरवाने रतळामना महाराजा रणजीतसिंहजी साथे हथेबाळे परणाच्या. दुष्काळना पंजामांधी गरीव ळोकोने जगारवा अर्थे तेओए पुष्कळ द्र-च्यने च्यय कर्यो हतो अने एज वर्षमां अर्थात् सं० १९३४ मां देवळीया, बांटाबदर, गुजरखंडी तथा देवचराही नामनां गामहांओमा गुजराती गाळाओ स्थापी. तेओने कुमार जसवतसिंहजी उपरात सज्जनसिंहजी तथा नटवरसिंहजी नामना पुत्र तथा वाकुंबरवा नामे पुत्री थयां हतां. राज मानसिंहजीना दरवारमा तेओना भाइ प्रतापसिंहजी, तेमना मामा भावसिंहजी, मुख्य कारभारी मकनजी धनजी तथा हेप्युटी कारभारी पोपट अंवागम प्रधान पुरुषो हना. राज मानसिंहजी हिन्दी तेमज गुजराती भाषानी कविना घणीज सारी बनावता.

" पाजी राजी ना रहे, को टिक किये उपाय; ज्युं ज्युं सेवा कीजीयं, त्यों त्यों रोस भराय.॥

था दोही राज मानसिंहजीनी बनावेळी छे.

राज मानसिंहजीना पाटवी कुमार जसवतिमहजीने अजीतिसहजी उपरांत भवानीसिंहजी नामे कुंवर थया. जसवतिहिंडजी कुंवरपदेज स्वर्गवासी थया हता.

राज मानासिंहजीना कैलासवास पछी वि. सं. १९५७ ना मागशर शुदि २ ने दहाडे तेओना पीत्र अजीतसिंह भ्रांगभ्रानी राजगादीए वेटा. तेओने त्या वि. सं. १९४४ मां जेट शुदि २ ने दहाडे राजकुमार पनस्यामसिंहजीनो जन्म थयो हतो.

वि. सं. १९६७ ना महा शुदि १० ने सोमवारे अजीतसिंहजीनुं परछोक प्रधाण धतां श्रीमान् धनज्यामसिंहजीए राजसाहेवनी पदवी धारण करी, तेओना छघुवन्यु भवानीसिंहजीने गरासमां गजेळा नामनुं गाम मळ्यु.

धांगधानो संक्षिप्त इतिहास.

दोहा.

पुण्यद्वाळी हरपालधी, पेटी ख्वीन प्रमाण; रायभिंह राजा घया, जगजाहिर गुणजाण.

१ वहे छे ने महाराजा मानसिंहजीए रू. ७००००० मात झाखने खर्चे वदवाण केम्पथी भागभा पर्यन्त भीटरगह्न रेटवे वंधावी छे. ए कार्यनी वि. सं. १९५४ मां ग्रह आत करवामां आवी हती.

ए पछी तख्ते आवींया, चन्द्रसिंह धरी चाह; थया एइना ठाठथी, विधविध स्थळे विवाह.

ą

छन्द झूलणा.

चतुर तृप चन्द्रने आलये अवनर्या, पकट पद पुत्र पृथीराज आदि, विहल बन्धु तणो ध्वंस श्रवणे धरी, आशकरणे ग्रही तुर्त गादी; अमर अति शूर एना सहोदर छतां, राज्य हळवदतणुं हाथ करवा, सज थया भ्रातने सद्य संहारवा, पापनी राखी ना लेश परवा.

छंद रोला.

महद बन्धुने मारी, अपर गादी पर आज्या, भीतें निज परिवार, **ल्हेरी** हळवदमां काव्याः वांकानेर वसावों, सबळ नरपति झुलताने, तात सवंधी वात, धैर्यथी राखी ध्याने. इळवदपर इरवख्त, चोंपथी करी चढाइ, अमरतणी आंखमां, झेरनी मसरी झांइः संभाळवा सरहद, एह माथकमां आन्या, भीमगुहानां ढोर, वैरभावेथी वळाच्यां. मुणी वात सुरतान, दुइमनो पाछळ दोड्या, हदनां पशु करी हाथ, रणे रिपुओने रोळ्याः वंकपुरीना वडा, राज पर भराइ रोषे, काठीने परमार, पक्ष हळवदनो पोषे. भीमगुढानी भूमि, सुभग ओळनी समीपे, तीखी तेग चळाची, महद सुरतान महीप; सही शकायो नहीं, प्रथम आवेग अमर्थी, सद्य सिधावी गया, सुभट टाइ संग समस्थी. 9

पाछळघो परमार, अन्य त्यां आवी चहीया,
भार एहनी साथ, वेगधी पाछा वळीया;
सदळ राज छुरतान, परे सहु त्टी पढीया,
मच्यो महद संग्राम, उभय झाला आखडीया.
सामे पगले छही, महिप छुरतान मराया,
अमरसिंह ए समय, मेळवी जय मलकाया;
धतां एहनो अन्त, प्रवर हळवदने पाटे,
मेघराज महिपाल, विचरीया धर्मनी वाटे.
पाषा करी अनेक, दान विभोने दोधा,
कुळनो लाज वधारी, कान अनि उत्तम कीधां;
ए पछीं अमित उदार, साधनो सुखनां माजे,
ग्रुणशाळी गजसिंह, छत्रपति थइने छाजे.

छन्द घूलणा.

चन्द्र, जसवंत, जगमाल, त्रय वालके, राज गर्जासंह गृह जन्म लीघो, चन्द्रनो छत सिंदत सद्य संहार करी, गढवीं वीठे महा गजव कीघो; प्ररण जे समय गर्जासंहजीए कर्यों, प्राण तर्जी स्वर्गनो राह सीघो, आपीं छसवाव जगमालने ए समय, गजपाटे जमे पाय दीघो. ११ छन्द पद्धरी.

राठोड राज जमवंत जाण, आत्मज अजीत एना प्रमाण; गजदाल चन्द्र केग जमाह, झट वेर वाळवा मज्ज थाय. १२ गुजरातमांहि स्दानुँ स्थान, मरधर महिष पाम्या महान; ए समय पुत्रवर्षे केरी वाणी, करी श्रवण कोध उरमांहि आणी. १३ हाबा जमाजी पर धार्गे धीर, विचर्या त्वरायी राठोड वीर; तजी हाम टाम हळवद नरेटा, दोड्या मभीत वनी अन्य देश. १४

275

छन्द झूळणा.

हाथ हळवद करी नजरअळी वावींने, आध्य भावेंथी राठोड भूपे, वंकपुरना विश्व चन्द्रसिंहे चढी, नजरने नाखींयो कप्टकूपे; भोगवी भुजवळे सवळ सत्ता त्यहां, पूर्ण त्रय वर्ष पर्यन्त मीतें, शाह आँरंगनी स्हायताथी मळ्युं, राज्य जसवंतने सीधी रीते.

छन्द इस्गितः

राठोड राज अजीत जब गुजरातना सूवा थया,
तब महद छइकर संग छइ हळबद भणी गर्ने गया;
हळबदनरेशे शाही खंडणीं, आपवा स्वीकारींयुं,
त्यांथी अजीते जामनगर भणी जवा निरधारींयुं.
थरी हाम झट झळराण आवों मळ्या तमाचो जामने,
दळ बादशाही खळभळ्युं, संकोची रणसंग्रामने;
हेरान थइ पाछा हठ्या, हळबदनरेशनी हाकथी,
ताबे तमाची थया तद्वि हरी बादशाही दिमाकयी.

दोहा.

निज राणीनी वाणीथी, अजीत जक्केराइ;
इणवा इळवद नाथने, सत्वर सावध थाय.
अजीतनी आज्ञा थतां, साधुवेष तनसाहि;
पांच सुभट जइ प्होचीया, छळथी इळवदमांहि.
राजेश्वर सरने तटे, सही ज्ञीतने धूप;
समय निहाळे साधुओ, आसन नांखी अनूप.
२०
रोळाइच.

राज जसो ए सह, एक दिन आवी चटींगा,

शस्त्रधारी साधुओ, ते परे तूटी पढीया; वेपधारी वैरीओ, प्रथमना पवळ महारे, न्हासी गया करी नाश, अवनिपतिनो ए वारे. **२**१ जता स्वर्ग जसवंत, पाटपर मताप आन्या, मजावर्गने पाळी, स्वर्गने पंध सिधाव्याः रायसिंह ए पछी, थया इळवदना राजा, छुगते जाळवी राखी, महद क्रळ केरी माजा. धांगधा पुर तणो, कोट तैयार कराच्यो, निशदिन त्यहा निवास, भन्य तृपतिने भान्योः पना पाटवी पुत्र, गुणी गनसिंह गणाये, शेपोभाइ शूर, द्वितीय स्रत जबर जणाये. साइसथी समशेर, एमणे हाथ उठावी, खबढ काठीने मारी, पृथ्वी पळमांहि पढावी: बढिल बन्धुनी स्हाय, पामीने वध्या मतापी, राजधानों म्मणीय, सायछापुरमां स्थापी. शेपाजीपर स्नेह, राज गजसिंहजी राखे, तो पण शेषोभाइ, भूपतुं भृंहुं भाखे; ष्यारे एणे जाळ, फन्दनी वहु फेलाबी, त्यारे तृप गजसिंह, रहा वावळीए आवी. २५ पावळीनाथे वहु, ए समे आश्रय आप्यो, रळवदमां फरीं हुकम, राज गजसिंहे स्थाप्योः रोषे करीं स्वाधीन, घरा धांगधा केरी, बनी बेटो बळवान, बहिल बन्युनो वैरी. 24

राधनपुरना वार्वी, तेम पेशवा गतापी,

उभये आवी त्यहां, शेह शेषाने आपी;

जीजीवा राणींष, उभय आश्रयदाताने,
अप्यी नगद अनेक, वेश नगराणा व्हाने.

अत जसवंतनो साथ, वास धांगधरे कीधो,

खंडणींतणो अवेज, सदा समभागे दीधो;

महद मराठातणुं, जोर प पाछळ जाम्युं,

इळवदतुं दळ पथी, पराभव लहतां पाम्युं.

२८

छन्द इरिगीत

गजिंसहजी स्वर्गे गया, जसवंत राजपदे रह्या, सहुसंग संपी चालता दिल राखता निशदिन दया; एना वडा स्रुत रायसिंह, वखाणवा लायक हता, पद राजतुं पामी प्रजाने, पीतथी नित पालता.

दोहा.

स्वल्प समय मुख भोगवी, बांधी पुण्यनी पाज; बस्या जई वैकुंठमां, रायिसह महाराज. अमरिसहजी एहना, पाटवीपुत्र पवित्र; श्रीतें बेठा तस्त्तपर, महद गुणीना मित्र. रोळाव्रत्त.

२९

मीयाणाए मळी, सबळ जाटोनी संगे,
हूंट चलाबी हती, धाडपाडुने ढंगे;
बळी पूर्वतुं वैर, विदित वढवाणनीं जोडे,
छंछेडेको साप, सो जुगे ढंस न छोडे.
धांगधरानी घरा, बनी गइ जंगक जेवी,

राज्यकोषधी रही, द्रॅ श्रो लक्ष्मीदेवी; अंग्रेने ए समय, खोटी एजन्सी खातुं, शान्त कॅर्स्च सर्वतुं, त्वराधी रुधिर तातुं. ₹₹ काळे छइ नृष अपर, सिधान्या अक्षय धामे, ए पर्छो आच्या पाट, राज रणमलनी नामे; गिरा श्रेष्ठ गिर्वाण, भण्या'ता भूपति भावे, गुजरातीतुं ज्ञान, सदा उत्तम सरसावे. 32 फारसीने उर्दनो, कलित अभ्यास क्यें।' तो, राज्यपरे ऋणभार, इतो ए सर्व इयों' तो; रणमलने ग्रुभराह, पसंद हमेश पड्यो' तो के. सीं, एस, आइनो, महद इल्काव मळ्यो' तो. ३५ ए पछी मान महिए, वडा विद्वान वखाणो, दीनोने दृह दान, थया जगजाहिर जाणो; एना सुत यश्वंत, पाटवी स्वर्ग सिधाव्या, एथी पौत्र अजीत, ते पछी तख्ते आच्या. ३६ सुत एना घनश्याम, राजपदवी धरी राजे. राजनीतिने दळे, साधनो सुखनां साजे: विटायतें करी वास, खुव बुद्धिने खिलावी, प्रतुं अनुपम हान, शोधी चातुर्पनी चाती. १७ स्वल्य समयमां छुझ, पूर्ण पाम्या प्रख्याति, दार्ही उन्नित देखीं, टरे स्नेहीनी छातीः यणुं जीवो घनंडयाम, हाम हैयामां धारी. नित्य कवि नयुराम, एइ आशीश अमारी.





अष्टाविंशत् तरंग.

with how

एकत्रीशा-संवैया.

चन्द्रसिंहना कुमार चोथा अभयसिंह उत्साही थया, गरासमां लखतरनी गादी मळतां त्यां सहकुदुम्ब रह्या; वर्तमान नृप कर्ण लगी थइ एकादश पेढी एनी, श्रवण करो नृप अमर ! उमंगे तवारीख कहुँ हुं तेनी.

राज हरपाळदेव नीथी सत्यावीशमी पेढीए झाळावंशविभाकर श्री हळवदना तख्नपित राज चन्द्रसिंहजी थया; तेओने पृथीराजजी, आशकरणजी, अमरसिंहजी, अभयसिंहजी, रायसिं-हजी अने राणाजी नामना छ कुमारो हता. तेमांना चोथा कुमार अभयसिंहजीने थान तथा छख-तर गरासमां मळ्यां. जेथी तेओए वि. सं. १६८२ मां पोतानी जुदी राजधानी स्थापी.× तेओ

[×] थान लखतर राज्यना इतिहासमां एवं कखेळुं छे के अभयसिंहजीने गरासमां मात्र एक लखतर मळ्युं हतुं अने त्यां तेओए इ. स. १६०३ वि. सं. १६५९-६० मां जूदी गादी स्थापी. अभयसिंहजी युद्धवीर हता; पोताने गरास मळ्या छतां तेओ राज्य हळवद-धांगधामांज रहेता. तेवामां सिंधना शूरा शराइ लोको धांगधापर चढी आव्या. अभयसिंहजीए तेओने परास्त क्यी. त्यारवाद प्रसंगोपात तेओ थान तरफ शिकारे गया. थाननो प्रदेश भयानक जंगळ जेवो हतो. त्यां एक तळावने किनारे नागदेवता वासुकीनी जगो पर कोइएक तपस्ती ध्यानमां निमन्त वनी वेठेला हता. अभयसिंहजीए अत्यंत श्रद्धापूर्वक एनां दर्शन करी जरा आधासन कर्यु, एथी प्रसन्न थएला योगीराजे तेओने आशीर्वाद आपी उज्जड वनी गयेला थानना स्थानने वसाववानी मलामण करी. अभयसिंहजीने चमत्कार जोवानी इच्छा थतां योगीराजे वासुकी नागनी प्रार्थना करी. वासुकीए प्रत्यक्ष थइ टाकोर अभयसिंहजीने तेना मनोरथनी सिद्धि माटे वचन आप्युं. वाद अभिसिंहजीए हळवद आवी त्यांना तल्वपित पासे थाननी मागणी करी. हळवदना राजाए सिंधना

पांच राणीओ परण्या इता. तेमांनां पहेलां हुंगरपुरना शिशोदीआ महाराणाश्री आशकरणजीनां कुंचरी रुपनकुंचरवा के जेनाथी राजकुमार विनयराजजीनो जन्म थयो, वीजां मेतलीना वारैया करसनजी शाईलजीनां कुंचरी जाहकुंवरवा, त्रीजां गांगडना वाघेला अरजणजी गोपालजीनां कुंचरी अमरकुंचरवा, चोथां मृलीना परमार चासकजी लखधीरजीनां कुंवरी रुपकुंवरवा अने पाचमां सर्वया होथीजी भूपतासंहर्जी दाटावाळानां कुंवरी फुलजीवा हतां.

वि—सं. १६९५ मां टाकोर अभयसिंह जीनो स्त्रगीवास थतां कुमार विजयराजजी थान करवतरना गादीपित थया. तेओ इंगरपुरना महाराजा शिशोदिआ आशकरणजीना भाणेज अने वेण्णव संप्रदायना अनन्य अनुयायी हता. तेओए पोताना मामा पासेथी प्रभुशी रणछोडरायजीनी मनोहर मृत्तिं लह लखतरमां पधराबी अने तैयार करावेला एक मन्दिरनी अंदर तेनी श्रद्धापूर्वक रधापना करी. वि—सं. १७१४ मां काटिआवाडनी अंदर फेलाएला भयंकर दुष्काळ वखते पोतानी प्रजाने तेमज वहारणामधी आवेला माणसोने पेटपूरतुं अन्न आपी ढाकोर विजयराजनीए महान सुयश मेळव्यो हतो. तेओ प्रथम सेलजना जाडेजा हाजाजी रणमळजीनां कुंबरी नागाजीवाने परण्या अने तेनाथी शेषमालजी, कानजी तथा रायधरजी नामना त्रण कुवारनो जन्म थयो. तेओनां वीजां राणी फताजीवा, ते जाढेजा वीराजी खेवाजीनां पुत्री हतां अने तेणे कुवार कल्याणसिंहजी तथा करमिसिहजीने जन्म आप्यो. त्रीजां राणी ळाडकुंबरवा, ते साढ खाखरावाळा गोहिल नोधण्यो पृथीराजजीनां पुत्री हतां, तेनाथी कुमार लक्ष्मणजी, सामतिसहजी तथा सकाजीनो जन्म थयो. चोथां राणी रंभुजीवा, ने श्रोळना जाडेजा श्री अजाजी विभाजीनां कुंबरी हतां, तेणे जाख-जीवा नामना कुवरीने जन्म आप्यो अने पांचमां राणी खीरसराना जाडेजा हरधोळजीनां कुंबरी राजकुंवरवाणो कुमार असेराजजी, करीआजी तथा रतनंजीनो जन्म थयो.

वि. सं. १७२१ मां टाकोर विजयराजजीए वैकुंडवास कयों त्यारे तेओना पाटवीकुमार होपगाटजी तरुवनशीन थया. कुमार ग्रक्तोजी, कानजी नथा स्थमणजी निर्वश गुजरी गया. कुमार

सराह लोकोनी चटार्थी धामधानुं रक्षण कर्यांनी खुद्यात्रीना वदलामां अभयसिंहनीनी उक्त माग-णी मंजुर राग्दी, नेथी दि-मं, १६१७ मा थान तथा तेनी नीचे रहेलां २४ गामोनी स्वतंत्रता टाकोर अभेनिंहर्जाने माम थट, ए मदेश महान पवित्र "देवकापंचाळ" एवा नामथी ओळखाय छे.

१ भी झालाङ्काउना दारोटना चोपडामां " जगोजी " पत्रुं नाम आपेलुं छे.

करमासिंहजी तथा कल्याणासिंहजीने वि. सं. १७२१ मां गाम "मोहवाणुं", कशीआजी तथा अखे-राजजीने गाम " शबळाणुं " अने मेरुजी तथा आपाजीने गाम " गोवळ " गरासमां एळयुं. ×

ठाकोर शेपपालजीनां लग्न छ ठेकाणे थयां हतां. तेमांनां पहेलां राणी खीरसराना जाडेजा विभाजी तमाचीजीनां कुंचरी अमरकुंचरवा के जेनाथी कुमार गोपालसिंहजी, जेसंगजी तथा सगरा-मजी उपरांत कुंचरीश्री बहुवानो जन्म थयो हतो. बीजां राणी जाडेजा करणजी लाखाजीनां कुंचरी कालाजीवा, त्रीजां राणी उदेपुरना शिशोदिआ राणा सवलसिंहजी मतापसिंहजीनां कुंचरी सुरजकुंचरवा, चोथां राणी देवचराडीना वाघेला भाणजी अखेराजजीनां कुंचरी सरतानकुंचरवा, पांचमां राणी खीरसराना जाडेजा रावळजी लाखाजीनां कुंचरी लीलाजीवा के जेनाथी कुमार रणमल्जी तथा केशवदासजी उपरांत कुंवरीश्री सोनावानो जन्म थयोः अने लहां राणी वाघेला भोजाजी हत्जीनां कुंवरीश्री भामनाजीवा हतां. टाकोर शेपमालजीना वखतमां राज्यनी स्थित आवाद तथा मजा सर्व प्रकार सुखी हती. वि. सं. १७५२ मां तेओनो स्वर्गवास थतां पाटवीकुमार गोपालसिंहजी गादीनशीन थया। एज वर्षे तेओना भाइ रणमलजी तथा जेसंगजीने "पटेडा" नो अर्थभाग अने सगरामजी तथा केशवदासजीने पण " पेटडा" नो अर्थभाग गरासमां मळ्यो। ए पेटडा नीचे रावळीआणी, तर्णेतर तथा हांशीआ नामे त्रण गाम हतां.

ठाकोर गोपाळसिंहजी अनुक्रमे नव स्थळे परण्या हता, तेमांनां पहेळां राणी जाडेजा राय-धरजी पचाणजीनां कुंवरी फुळजीवा के जेनाथी पाटवीकुमार करणसिंहजी उपरांत कुमार वीकाजी तथा कुवरीश्री ताजकुंवरवा तेमज कमजीवानो जन्म थयो. वीजां राणी मूळीना परमार राजमळजी रामाजीनां कुंवरीश्री पद्माजीवा के जेणे कुमार चांदाजीने जन्म आप्यो. त्रीजां राणी उदयपुरना

⁺ बजेराज जीना ११ पुत्रोमांथी पाटवी गादीए वेटा, त्रण निर्देश गुजर्या, वेन "मोहवाणुं" तथा वेने 'शावलाणुं' मळ्युं ए रीते कुळ आट कुमार थया. वाकीना त्रण (सामतसिंहजी, रायधरजो अने रतनजी) रह्या. तेमांथी मेरुजी तथा आपाजीने गाम "गोवळ" मळ्युं एवुं लखतरना इतिहासमां ळखेळुं छे. तो ते कांडसमां आपेळा त्रण कुमारोमांना वे कुमारोनां उपनाम होवा जोइए तो पण एक कुमारनुं नाम वधारे छे तेनुं द्युं थयुं ए खुलासो क्यांइ जोवामां आवतो नथी. श्रीझालाकुळना वारोट तो अग्यार कुमारमांथी कल्याणजीने "मोहवाणुं", करमिंहजीने "गोवळ" अने अखेराजजी तथा कशीआजीने "शवळाणुं" मळ्यानुं लखे छे. वाकीना कुंवरोनुं द्युं ए कांइ लखता नथी.

त्रिशोदिआ सरदारासंह्जी सवलसिंहजीना कुंबरी सर्दुंजीवा के जेनाथी कुमार कराळाजीनो जन्म थयो. चोथां राणी वायेला गोपाळजी नाषाजीनां कुंबरी अमरकुंबरवा के जेणे कुमार भगवतसिंहजीन जन्म आप्यो. पांचमां राणी मुळीना परमार खेंगारजी जेमलजीनां कुंबरी कीसनकुंबरवा. एटां राणी जाडेजा मेघाजीनां कुंबरी हरखकुंबरवा के जेनाथी कुमार हठीसिंहजीनो जन्म थयो. सातमां राणी भडीआदना चुडासमा भीमजी भोजाजीनां कुंबरी जसकुंबरवा के जेणे कुंबरीश्री प्राणकुंबरवाने जन्म आप्यो. आठमां राणी सांदखाखराना गोहेल जसाजी अदाजीनां कुंबरी भामनाजी के जेनाथी कुंबरीश्री राहकुंबरवा जन्मयां, तथा नवमा राणी जाडेजा कलाजी हीरजीनां कुंबरी कमाजीवा हतां अने तेनाथी केमरकुंबरवा नामे कुंबरीनो जन्म थयो.

वि. सं. १७७० मां टाकोर गोपालसिंहजी गोलोकवासी थया त्यारे पाटवीकुमार करणविरजीए थान लखतरना राज्यनी लगाम हाथमां लीधी. एज वर्षमां तेओना लघुवन्यु चांदाजीने
गाम " साक्तर " तथा वीकाजी अने हटीसिंहजीने गाम " लस्खडीया " गरासमां मळ्युं. कुमार
कसळाजी तथा भगवतसिंहजीने गरास मल्यानुं क्यांइ जोवामां आवतुं नथी, जेथी अनुमान थाय
छे के ए वन्ने भाइओ न्हानी लम्मरे गुजरी गया हक्षे.

टाकोर करणसिंहजी बहुज बळवान हता, तेओए श्रांगश्रा तावानां वासवा, वासण तथा करवाणळ वगेरे गामोने वाहुवळे म्वाधीन करी पोताना गज्यमां व गरो कर्यो हतो अने थान लखतरपर चही आवेला अन्य राज्यना योद्धाओंने हराज्या हता. वि. मं. ' ७०४ मां श्रांगश्राना भाणेज जाम नगाचीने गादीए निह जेसवा देतां तेओना वाका हरधोळजीए जामनगरनी राज्यसत्ता पोताने राण करी. ए वसते हळवद श्रागश्राना महाराजा राज प्रतापसिंहजी पोताना भाणेजनो पक्ष करवा अमदावादना मुगलाह खुदा शेरवूलंडखान तथा वावी सल्लापन महमदखाननी सहायता मेळवी नदानगर पथार्या, ए वस्ते गहान पणक्रमो थान लखनरना ठाकोर करणसिंहजी पण साथे हता. तेओए हरधोळजीने हाथ वतादीने पोताना भाणेज तमाचीने जामनगरना तस्त्वपर वेसाडी दीधा अने न्यारवाइ ए विजयशाळी दीर लखनर आव्या.

टाकोर करणिंहजीने दार राणोओं इतां, नेपांनां पहेला राणी गांगडना वाचेला कर-

१ ज्यारें टाकोर गोपालमिंहजीनो स्वर्गवाम यत्रो त्यारे राणी सद्जीवा सती धयां इतां, एमनी देशं गामने पादर आधमणी दाजुए तळावपर छे.

करमासिंहजी तथा कल्याणसिंहजीने वि. सं. १७२१ मां गाम "मोहवाणुं", कशीआजी तथा अखे-राजजीने गाम " शबळाणुं " अने मेरुजी तथा आपाजीने गाम " गोवळ " गरासमां एळयुं. ×

वाकोर शेषमाळजीनां छम छ ठेकाणे थयां इतां. तेमांनां पहेळां राणी खीरसराना जांडेजा विभाजी तमाचीजीनां कुंवरी अमरकुंवरवा के जेनाथी कुमार गोपाळसिंइजी, जेसंगजी तथा सगरामजी उपरांत कुंवरीश्री वहुवानो जन्म थयो इतो. बीजां राणी जांडेजा करणजी छाखाजीनां कुंवरी काळाजीवा, त्रीजां राणी उदेपुरना शिशोदिआ राणा सवळसिंहजी मतापसिंहजीनां कुंवरी मुरजकुंवरवा, चोथां राणी देवचराडीना वाघेळा भाणजी अखेराजजीनां कुंवरी सरतानकुंवरवा, पांचमां राणी खीरसराना जांडेजा रावळजी छाखाजीनां कुंवरी छीळाजीवा के जेनाथी कुमार रणमळजी तथा केशवदासजी उपरांत कुंवरीश्री सोनावानों जन्म थयोः अने छहां राणी वाघेळा भोजाजी हतुजीनां कुंवरीश्री भामनाजीवा हतां. टाकोर शेषमाळजीना वखतमां राज्यनी स्थिति आवाद तथा पजा सर्व पकारे मुखी हती. वि. सं. १७५६ मां तेओनो स्वर्गवास थतां पाटवीकुमार गोपाळ-सिंहजी गादीनशीन थया। एज वर्षे तेओना भाइ रणमळजी तथा जेसंगजीने "पढेडा" नो अर्थ-भाग अने सगरामजी तथा केशवदासजीने पण " वेढडा" नो अर्थभाग गरासमां मळ्यो। ए पेढडा नीचे रावळीआणी, तरणेतर तथा हांशीआ नामे तण गाम हतां.

ठाकोर गोपाळसिंहजी अनुक्रमे नव स्थळे परण्या हता, तेमांनां पहेळां राणी जाडेजा राय-घरजी पचाणजीनां कुंबरी फुळजीवा के जेनाथी पाटवीक्कमार करणसिंहजी उपरांत कुपार वीकाजी तथा कुबरीश्री ताजकुंबरवा तेमज कमजीवानो जन्म थयो. बीजां राणी मूळीना परमार राजमळजी रामाजीनां कुंबरीश्री पद्माजीवा के जेणे कुमार चांदाजीने जन्म आप्यो. बीजां राणी उदयपुरना

⁺ बजेराज जीना ११ पुत्रोमांथी पाटवी गादीए वेटा, त्रण निर्देश गुजर्या, वेन "मोढवाणुं" तथा वेने 'शवलाणुं' मळ्युं ए रीते कुळ आठ कुमार थया. वाकीना त्रण (सामतसिंहजी, रायधरजो अने रतनजी) रह्या. तेमांथी मेरुजी तथा आपाजीने गाम "गोवळ" मळ्युं एवुं लखतरना इतिहासमां ळखेळुं छे. तो ते कांडसमां आवेळा त्रण कुमारोमांना वे कुमारोनां उपनाम होवा जोइए तो पण एक कुमारनुं नाम वधारे छे तेनुं शुं थयुं ए खुलासो क्यांइ जोवामां आवतो नथी. श्रीझालाकुळना बारोट तो अग्यार कुमारमांथी कल्याणजीने "मोढवाणुं", करमसिंहजीने "गोवळ" अने अखेराजजी तथा कशीआजीने "शवळाणुं" मळ्यानुं लखे छे. वाकीना कुंवरोनुं शुं थयुं ए कांइ लखता नथी.

श्विशोदिआ सरदारसिंहजी सवळिसिंहजीना कुंबरी सदुंजीवा के जेनाथी कुपार कराळाजीनो जन्म थयो. चोथां राणी वाघेळा गोपाळजी नाथाजीनां कुंबरी अमरकुंबरवा के जेण कुमार भगवतिसंह-जीने जन्म आप्यो. पांचमां राणी मुळीना परमार खेंगारजी जेमळजीनां कुंबरी कीसनकुंबरवा. छट्टां राणी जाडेजा मेघाजीनां कुंबरी हरखकुंबरवा के जेनाथी कुमार हठीसिंहजीनो जन्म थयो. सातमां राणी भडीआदना चुडासमा भीमजी भोजाजीनां कुंबरी जसकुंबरवा के जेणे कुंबरीश्री माणकुंबरवाने जन्म आप्यो. आठमां राणी सांढखाखराना गोहेळ जसाजी अदाजीनां कुंबरी भामनाजी के जेनाथी कुंबरीश्री राहकुंबरवा जन्मयां, तथा नवमां राणी जाडेजा कळाजी हीरजीनां कुंबरी कमाजीवा हतां अने तेनाथी केसरकुंबरवा नामे कुंबरीनो जन्म थयो.

वि. सं. १७७० मां ठाकोर गोपाळासंहजी गोलोकवासी यया त्यारे पाटवीकुमार करण-सिंहजीए थान ळखतरना राज्यनी ळगाम हायमां लीधी. एज वर्षमां तेओना ळघुवन्यु चांदाजीने गाम " साक्तर " तथा वीकाजी अने हठीसिंहजीने गाम " लरखडीया " गरासमां मळ्युं. कुमार कसळाजी तथा भगवतसिंहजीने गरास मळ्यानुं क्यांइ जोवामां आवतुं नथी, जेथी अनुमान याय छे के ए क्ने भाइओ न्हानी उम्मरे गुजरी गया हशे.

ठाकोर करणसिंह जी बहुज बळवान हता, तेओए धांगध्रा तावानां वांसवा, वासण तथा करकथळ वगेरे गामोने वाहुवळे स्वाधीन करी पोताना राज्यमां वधारो कर्यो हतो अने थान छखतरपर चढी आवेळा अन्य राज्यना योद्धाओंने हराज्या हता. वि. सं. १७७४ मां ध्रांगध्राना भाणेज जाम तमाचीने गादीए निह बेसवा देतां तेओना काका हरधोळजीए जामनगरनी राज्यसत्ता पोताने राध्य करी. ए वखते हळवद ध्रांगधाना महाराजा राज प्रतापसिंह जी पोताना भाणेजनो पक्ष करवा अमदाबादना मुगळाइ खूबा शेरवूळंदखान तथा वावी सळापत महमदखाननी सहायता मेळवी नवानगर पधार्या, ए वखते महान पराक्रमी थान छखतरना ठाकोर करणसिंह जी पण साथे हता. तेओए हरधोळजीने हाथ वतावीने पोताना भाणेज तमाचीने जायनगरना तख्तपर वेसाडी दीधा अने त्यारवाद ए विजयशाळी वीर छखतर आज्या.

टाकोर करणसिंहजीने वार राणोओ हतां, तेमांनां पहेलां राणी गांगडना वाघेला कर-

१ ज्यारें ठाकोर गोपालसिंहजीनो स्वर्गवास थयो त्यारे राणी सदुजीवा सती थयां इतां, एमनी देरी गामने पादर आधमणी वाजुए तळावपर छे.

णजी गोपालजीनां कुंबरी पोपाजीय के जेनाथी पाटवी कुमार अभेसिंहजी तथा कुंबरीश्री जीजीवानो जन्म थयो. ए जीजीवाने उद्वपुरना महाराणा संग्रामिंह जी ताथे परणाव्यां हतां. वीजां राणी
गोहिल सुलतानसिंहजी अभेसिंहजीनां कुंबरी लीला जीवा, त्रीजां राणी वाघेला भेमजी भावाजीनां
कुंबरी लालाजीवा, चोथां राणी जाढेजा भेरजी आशाजीनां कुंबरी मघाजीवा, पांचमां राणी वररोहाना चावहाना वल्लभद्रजी इश्वरदासजीनां कुंबरी लीलाजीवा, लहां राणी चुडासमा भीमजी
भोजाजीनां कुंबरी पदमाजीवा के जेनाथी कुमार पुंजाजी तथा अदाजीनो जन्म थयो, सातमां राणी
गेतलीना बारेंचा सुरासिंहजी हावाजीनां कुंबरी राहकुंबरवा के जेणे कुमार जीवाजी तथा अलेराजजी
चपरांत कुंबरीश्री आछुवाने जन्म आप्यो; ए आछुवानां लग्न मोरवीना जाडेजा अलीयाजी साये
करवामां आव्यां. आठमां राणी चंडीसरना रावळ वीरभाणजी चन्द्रभाणजीनां कुंबरी लीलाजीवा
के जेनाथी कुमार रघाजीनो जन्म थयोः नवमां राणी जाडेजा भाणजी रावाजीनां कुंबरी सोनाजीवा के जेणे कुमार मोहजी, तमाचीजी तथा वमजीने जन्म आप्योः दशमां राणी अल्याना
राठोड राथभाणजी अंदरजीनां कुंबरी अदीवा के जेनाथी कुमार सुलाजीनो जन्म थयोः अग्यारमां राणी कथकोटना देदा भीमजी सुलुजीनां कुंबरी लाहकुंबरवा के जेणे कुमार मुलुजीने जन्म
आप्यो अने वारमां राणी मोणपरना गोधारी रामजी अदाजीनां कुंबरी रुपाजीवा के जेनाथी
लेसंगजी नामना कुमारनो जन्म थयोः.+

वि. सं. १७९७ मां ठाकोर करणसिंह जीनो स्वर्गवास थतां पाटवी कुमार अभयसिंह जी थान छखतरना राजतरूत पर वेठा. तेओना न्हाना भाइओमाथी अदाजी, पुंजाजी, मोडजी तथा छाखाजीने गाम केशरीआ, मालीका अने ढांकी; वमजीने कारेछा तथा मुळुजीने सदाद अरहं. परिते वि. सं. १७९४ मां करणसिंह जीनी ह्यातीमांज गरास मळी गयो हतो.

कहे छे के ठाकोर अभयसिंहजीना वलतमां जूनागढनुं छहकर जोरतछत्री नामनो नवीं कर उघराववा निकळेछुं ते फरतुं फरतुं थान आवी पहोंच्युं. अभयसिंहजीए उक्त कर आपवानी चोक्ली ना कही, जेथी जूनागढनी फोजे छूंटफाट शरु करी अने गढ थानना दरवज्जामांथी छु॰

⁺ श्री झालाकुळना वारोटना चोपडामां ठाकोर करणसिंहजीना कुमार ११ ना नामो नीचे मुजव छे. अभेराजजी, रघोजी, पुंजोजी, अदोजी, मोटजी, वामणीओजी, जीवणजी, मुळुजी, लाखोजी, सुजोजी अने मुळवोजी.

शोभित आरकाना पत्थरो उखेडी जूनागढ उपाडी गया. आधी ठाकोर अभयसिंहजीए अत्यन्त क्रोधायमान वनी जूनागढ साथे वारवंड खेडवा मांडयुं. ते एटले सूधी के एक वखत मारवा मर-वानो निश्रय करी तेओ शस्त्रवंध गुप्त वेशे नवाव साहेवना महेलमां दाखल थया अने शयतभ्रवनमां निष्टित्तिथी सूतेळा नवावनी छाती पर चढी वेठा, वाद तेओने खंगरनी अणीथी जागृत करी जीव लेवानो भय वताच्यो. आश्चर्यने प्राप्त थएला नवावसाहेव ठाकोर अभयसिंहनी हिम्पत पर आफरीन वनी तथा तेओने आर्बु साहस खेडवानो सवव पूठी गढथानना दरवज्जानी कमानना आर-काना पत्थरो त्यां पहोंचाडी आपवा वचन आप्युं. एज वखते अभयसिंहजी अगाउयी सज्ज करावी राखेळा अन्वपर आरूढ यह पोताना राज्यमां आत्री पहोंच्या. त्यारवाद नवावश्रीए आपेळ वचन मुजत्र पत्थरोने थानमां पहींचता कर्या अने दरवाजानी अंदर जेम हता तेम गोठवी दीवा. दाद अभयसिंहजीनी मागणीयी ख़ुद नवावसाहेवे पोताने हाथे ए पत्थरोपर चुनानो वाटो आप्यो. आ प्रसंगे नामदार नवावसाहेवनी तेमन तेओना लद्दकरनी ठाकोर अभवसिंहनीए अति उत्तम प्रकारे आगतास्वागता करी इती. ज्यारे नवावसाहेव तरफथी थएला अपमाननो वदलो बळ्यो त्यारेज वीरक्र अभयसिंहजी संतुष्ट थया, तेओनां छन्न छ स्थळे थयां इतां. पहेलां राणी गांगडना वाघेळा सगरामजी नारणजीना कुंवरी अजवकुंवरवा के जेनाथी पाटवीकुमार रायधरजी तथा फटा-या इरधोळजो अने रायवजीनो जन्म थयो. वीजां राणी वरसोडाना चावडा सुमराजी दलाजीनां कुंवरी चांपाजीवा, त्रीजां राणी मोधरना महिडा मुळजो जयमळजीनां कुंवरी आनंदकुंवरवा, चोथां राणी जाडेजा सदाकुंवरवा के जेनाथी कुमार कज़ीयाजीनो जन्म थयो. पांचमां राणी गांगडना वा-घेला सुजाणसिंहजी रामसिंहजीनां कुंवरी सदाकुंबरवा अने छट्टां राणो भडीयादना चुडासमा कंथ-डजी भोजाजीनां कुंदरी करणीजीवा इतां के जेणे कुपार साहेवजी तथा कुंदरीश्री अमर्कुंदरवाने जन्म आप्यो हतो. ए अमरकुंवरवानो विवाह उदयपुर मेवाडना महाराणा जगतासिंहजी साथे कर्यो

वि॰ सं॰ १८६५ मां ठाकोर अभयसिंह जी स्वर्गवासी थतां तेओना पाटवीकुमार रायध-रजी धान लखतरनी राजगादीए वेटा. एज वर्षे तेओना थाइ हरधोळजी तथा रायवजीने गाम "कलम", साहेवजीने अरधुं "सदाद" तथा कज्ञीआजीने गाम "कहु " गरासमां मळ्युं.

हतो अने तेनाथी अरशीजी नामना कुपारनो जन्म थयो हतो, के जे महाराणा जगतसिंहजीना

पाटवी गुमार प्रतापास इजी तथा तेना कुमार राजिस इजी पछी उदयपुरनी राजगादीए वेठा इता.

टाकोर रायधरजीनां लग्न आठ ठेकाणे धयां इतां. तेमांनां पहेलां राणी खारकीयाना जा-

हेजा आसाजी रणमछजीनां कुंबरी रुपकुंबरवा के जेनाथी सगरामजी तथा चांदाजी नामे वे कुमार तथा अदीवा नामनां कुंबरीनो जन्म थयो. ए अदीवानां छप्र मोरवीना जाडेजा पचाणजी साथे कर्यी हतां. वीजां राणी देदा खेताजी मांडणजीनां कुंबरी सुजानकुंबरवा के जेणे कुंबरीश्री वाजीवा तथा सदुवाने जन्म आप्यो. सदुवाने पण मोरवीना जाडेजा पचाणजी साथे परणाव्यां हतां. तीजां राणी अछीयाना राठोड गयसिहजी राणाजीनां कुंबरी अदीवा, चोथां राणी राणा चांदाजी अभेराजजीनां कुंबरी छाडकुंबरवा के जेनाथी फहवा नामना कुंबरीनो जन्म थयो. ए फहवानां छप्र राजकोटना ठाकोरसाहेब साथे थयां हतां. पांचमां राणी परवडीना चुडासमा मेरुजी रायमळजीनां कुंबरी राजकुंबरवा के जेणे कुमार अखेराजजी तथा कुंबरीश्री जीजीवाने जन्म आप्यो. ए जीजीवाने राजकोट ठाकोरसा पाटवीकुमार वावाजीराज साथे परणाव्यां हतां. छट्टां राणी वटवाणनां गाजणीया कल्याणजी धीगाजीनां कुंबरी अदीवा, सातमां राणी पछेगामना रावळ वाछाजीनां छुंबरी वखतकुंबरीवा अने आठमां राणी जाडेजा कुंभाजी विभाजीना कुंबरी रतनकुंवरवा इतां के जेनाथी कुमार गोडजीनों जन्म थयो उतो.

ठाकोर रायधरजीना वखतमां कोळी छोकोए वंड उठाव्युं इतुं, ए वळवाखोरोने रायधर-जीए समग्रेरनो स्वाद चखाडी श्रान्त कर्या हता. तेओना स्वर्गवास पछी कुपार सगरामजी तख्तन-शीन थया. तेओना भाइओमांथी गोडजीने गाम "ओळक" तथा अखेराजजीने गाम "इंगोडी" गरासमां मळ्युं.+

सगरामजीनां छम्न चार स्थळे थयां हतां; तेओनां पहेळां राणी मुळीना परमार शेशमा-लजी कल्याणजीनां कुंबरी फुलजीवा हतां अने तेनाथी फड़वा तथा अमजीवा नामे वे राजकुमारी-नो जन्म थयो हतां. बीजां राणी वहवाणना गाजणीया सांगाजी नाथाजीनां कुबरीने अनुपकुंबरवा हतां अने तेणे एक जीजीवा नामनां कुंबरीने जन्म आप्यो हतों के जेनां छम्न कच्छ देशमां तेराना जाहेजा ऊवेरजी साथे थयां हतां. त्रीजां राणी रोझकाना चुहासमा मुळुजीनां कुंबरी रायबा तथा चोथां राणी अळवाना राठोड वादरजी अरजणजीनां कुंबरी सदुबा हता. ए वन्ने राणीओने कांई संतति थइ न हतीं.

१ श्री झालाकुळना वारोटना चोपडामां सगरामजी कुंवरपदे स्वर्गवासी थया इता एम इस्तेलुं छे. + ए गरास वि. सं. १९३६ मां अपायो हतो.

वि. सं. १८५४ मां सगरामजीनो अपुत्र स्वर्गवास थतां तेओना भाइ चांदाजी (चन्द्र।सिंहजी) थान लखतरना गादीपति थया. तेओ वहवाणना गाजणीया भेमजी जेतिसिंहजीनां कुंवरी
अमरकुंवरवाने अळवाना राठोड अदाजी रामाजीनां कुंवरी वदनकुंवरवाने, पेथापुरना वाघेला
भगाजी खेमाजीनां कुंवरी साहेवकुंवरवाने, खरडना चुडासमा मेघराजजी जेतिसिंहजीनां कुंवरी
दगुजीवाने तथा ळीवोद्राना वाघेला वादरजी फतोसिंहजीना कुंवरी खुमानवाने परण्या; परंतु ए
पांचे राणीओमांथी एकेने कांइ संतान न थयुं. छेवटे छहां राणी पीहरवाना वाघेला जसकरणजी
हमेदिसिंहजीनां कुंवरी वाजीवाने परण्या हता, तेनाथी कुमार पृथीराजजीनो जन्म थयो.

ठाकोर चन्द्रासंहजीना स्वर्गवास पछी वि. सं. १८६९ मां उम्मरलायक थएला कुमार पृथीराजजी थान लखतरनी गादीए वेठा. ज्यारे ए सगीर वयना हता, त्यारे एओना मातुश्री बाजीनाए दश्च वर्ष पर्यन्त दृढतापूर्वक राज्यनो तमाम कारोवार चलाच्यो हतो, ए जपरथी सिद्ध पाय छे के ठाकोर चन्द्रसिंहनो स्वर्गवास वि. सं. १८५९ मा थयो होवो जोइए. ज्यारे पृथीराजजी नहानी उम्मरना हता, त्यारे आजुवाजुनां राज्यो लखतरने स्वाधीन करवानी लालसाथी उपराज्य हुए हुलो करता हता, जेथी एक जबरी लागवगवाळा हीरजी नामना खवासने लखतरनो राज्य कारभार सोंपवामां आच्यो; एणे एक वर्ष सुधी तो राज्यनी सारो सेवा वजावी, पण वीजे वर्षे एनी बुद्धिमां फेरफार यह गयो अने राज्यने पदावी पाहवा माटे ए अनेक प्रकारना यत्न करवा लाग्यो.

टाकोर चन्द्रसिंहजीना समयमांज मुगललोको तद्दन पहती दशाए पहोंची चुक्या हता, मराटाओ तुं मावल्य दिवसे दिवसे वधतुं जतुं हतुं, काठियावाह मांहेना दरेक राज्यो पासेथी मरा-ठाओ पेशकसी तथा जूनागढना नवाव जोरतलवी लेवा निकलता, परंतु वधा राजाओ तरफथी ए रक्षम सुलेह शान्तिपूर्वक वसुल थह होय एवो मसंग जवलेज जोवामां आवे छे, कारण के ते वखतना राजपूत राजाओ वहादुर, उत्साही अने युद्धकुशल हता। परंतु ज्यारे टाकोर पृथीगज-जी लग्वतरनी गादीपर आन्या त्यारथी जमानामां जवग विपर्ययनी शहआत थह होय एवं जणाय छे.

हीरजी ख़वासना कारभारथी कंटाळी गएछा ठाकोर पृथीराजजी नामदार गायकवाड सरकारना आश्रय अर्थे वडोदरे पथार्या. श्रीमान गायकवाड सरकार गोविन्दरावनां राणी श्रीमती गेनाबाइने ठाकोर पृथीराजजी व्हेन कही वोटावता एम केटलाएकतुं कहेवुं छे. नामदार गायकवाड सरकारे छवा वावाजी आपाजो के जेने काठियावाडनी खंडणी उघराववा माटे नियत करेला इता,

तेने ठाकोर पृथीराजजीनी सहायताए मोकली आप्या. ए वखते लखतरतुं गज्य हीरजी खवासना देणामां दवाएलुं हतुं; जेथी वावाजीए प्रथम तो हीरजी खवासनी लेणी रक्षम चुकते हिसावे चुक्ती तेने थान लखतरमांथी हदपार कर्यों अने त्यारवाद लखतर स्टेट उपर नामदार गायकवाड सरकार तरफथी धीरेली रक्षम वसुल थता सुधी ए तालुकाने वि. मं १८६२ मां गायकवाडी जप्तीना वहीवट तले राखवामां आव्यो. ए अरसामां नामदार अंग्रेज सरकारे गुजरातना घणाखरा प्रदेशमा पोतानी हकुमत जमावी दीधी हती; तो पण पेशवा तथा गायकवाडनां लडकरो आसपासनां देशी राज्यनी अंदर दरवर्षे पेशकसी उचराववा निकलता; अने एथी क्यांइ क्यांइ युद्धनो प्रसंग पण आवी पहतो, सुलेहनो भंग थवाथी वखते ब्रिटीश प्रजाने पण विपत्ति वेठवी पडती. आवां अनेक कारणोने लक्षमां लइ नामदार कर्नल वॉकर के जे ते वखते वडोदराना रेसीडन्ट हता, तेओए पोतानी दरमीयानगीरीथी दरेक राज्यनी वार्षिक पेशकसीनो आंकडो पाडी आपवानी दरखास्त करी. ए दरखास्त नामदार गायकवाड तथा पेशवा सरकार तरफथी अमदावाद खाते नियत व्यल्ला सूवा भगवंतरावे स्वीकारी; एथी मे. कर्नलवॉकर काठियावाड खाताना सूवा वावाजी आपाजीनी साथे प्रथम झालावाडमा आव्या. अने एणे जे कायमी वंदोवस्त कर्यों ते अद्यापि '' कर्नलवॉकरनो वंदोवस्त " एवी संज्ञायी ओळखाय छे.

प्रथम झाळावाड वीरमगामना तावामां हतुं, तेथी पेशकसोनी रकम पण त्यांज भरवामां आवती. ळखतर तथा थान ए वे जुदाजुदा ताळुका गणाता. थाननी पेशकसी ळश्कर द्वाराए छेवामां आवती, परंतु नामदार वॉकर साहेवे राज्यना ए वने विभागने एकत्र गणी जोरतळ्वीनी रकम सहित एकंदर हा. ७३५१ संस्थान ळखतरमांथी छेवानो ठराव कर्यो. ए वखते ळखतर माये गायकवाडी जप्ती हती अने त्यांनो वहीवट वावाजी आपाजीनां माणसोने हाथ हतो. जते दहाडे गायकवाडे जे पेश्चवाना भागनी पेशकसीनो इजारो राख्यो हतो तेनी मुद्दन पूरी थह गइ जेथी गायकवाडनो वहीवट समाप्त थयो अने पेशवाना अधिकारीओ पेशकसीनो जुदी उघराणी करवा ळाज्या. नामदार अंग्रेजसरकारने इ. स. १८१८ मां थएळी ट्रीटी मुजब पेशवाइ हक प्राप्त थवाथी पेशकसी उघराववानुं काम ब्रीटीश अमळदारोने हाथ गयुं. ए वखते ठाकोर पृथीराजजी देणायी मुक्त थइ गया हता, जेथी तेओए पोतानुं राज्य पाछुं मेळववा नामदार गायकवाडसरकारने अरज करी. गायकवाडसरकारे छखतरमांथी जप्ती उठावी छेवानो हुकम फरमान्यो. ए हुकमने आधारे ठाकोर पृथीराजजीने थान तथा ळखतरनो तालुको पाछो मळ्यो; परंतु बाबाजी आपाजीनां माण-

सोए वांड, लीलापुर अने कीशोल वर्गरे आठ गामोनो कवनो छोड़्यो निह, नेथी ठाकोर पृथीरा-जनीए नामदार गायकवाडसरकार हज़र उपराजपर अरजीओ मोफलवा मांडी. तेवामा इ. स. १८२० मां गायकवाड पोतानी पेशकसी जघराववानो हक नामदार ब्रीटीश सरकारने द्रीटीनी रुए सोंपी आपवाधी आखा काठिआवाडमां अंग्रेन सरकारनो अमल शरु थयो अने इ. स. १८२२ मां एजन्सी खातानी स्थापना थइ. तथा मे. पोलीटीकल एजन्ट नामना एक ब्रीटीश अमलदार काठिआवाड खाते नीमाया. तेओनी कोर्टमां ठाकोर पृथीराजजीए पोताना हक संबंधी लडत जारी राखी. परंतु दैवयोगे एतुं परिणाम जोया विनाज वि० सं० १८९१ मां ठाकोर पृथीराजजीनो स्वर्गवास थयो तेओना पहेलां राणी मुळीना परमार काकाजी जसाजीनां कुंबरी मतापकुंवरवाथी कुमार जालिमसिंहजी, अमेसिंहजी, भूपमालजी तथा वजेराजजीनो जन्म थयो हतो. +अने त्रोजां राणी चराडीना गाजणीया मानाजीनां कुंबरी केशावाने कांइ संतित न हती.

टाकोर पृथीराजजी पछी वि. सं. १८९१ मां श्रीमान् वजेराजजीनो थान छखतरनी राजगादीपर अभिषेक थयो, तेओनां छग्न त्रम स्थळे थयां, तेमाना पहेछा राणी छींवडाना गोडिछ अजुभाइ लाखाजीना कुंवरी रुपाळीवा के जेनाथी कुमार अखेराजजी तथा करणसिंहजी अने कुंवरीश्री जीजीवानो जन्म थयो. वीजा राणी वळाना गोहिछ हरभमजीतां कुंवरी माजीवा अने श्रीजां राणी कुणाना महीडा वावाजीनां कुंवरी सुरजकुंवरवा हतां. ए वन्नेने कांइ संतित हती नहि.

ठाकोर विजयराजजी गादीए वेठा पछी एकादश वर्ष पर्यन्त राज्य छुखनो उपभोग करी वि० सं० १५०० इ० स० १८४६ ना जुन मासनी ता. १५ मीए पोतानी पाछळ मात्र छ मासनी वपना एक कुमारने मूकी वैकुंडवासी थया.

वि० सं० १९०२ ना जेठवदी ६ ने दहाडे कुपार कर्णसिंह जीनो मात्र छ मिहनानी उ-म्मरे धान लखनरनी राजगादीए अभिषेक करवायां आन्यो तेओनो जन्म थान मध्ये इ० स० १८४६ ना जान्युआरीनी ता. १० मीने दिवसे थयो हतो.

ए वाळवयना ठाकोरसाहेवने छइ राजमाता श्री रूपाळीवा थानथी छखतर रहेवा पथार्था. ए वखते कार्यभारनी अन्यवस्थाने छीधे राज्यनी तेमज तावानां गामोनी स्थिति तहन नवळी वनी

⁺ श्री झालाकुळना वारोटना चोपडानी अंदर पृथीराजजीना कुमार जालिमसिंहजी, दादोबी उर्फे वजेराजजी तथा श्रेपमाळजी ए रीते जण नामो आपेलां छे.

गइ हती. भाषातो, खेडूतो तथा अन्य राजपूतो राज्यनी केटलीएक भूमिने दवावी वेठा हता. ए भूमि राजमाता श्री रुपालीवाए लडत शारी करी जेने परिणामे इ० स० १८४९ मां लीलापुर तथा इ० स० १८५९ मां कीशोल अने रुपावटी वगेरे गामो संस्थान लखतरने सोंपी देवामां आव्या. मात्र एक वांडना कवजा वावतनी लडत चालु रही.

योग्य अवस्थाए पहोंचेळा ठाकोर श्री कर्णसिंह जीए वि० सं० १९२६ मां स्वतंत्रपणे राज्यनो कार्यभार चळाववा मांड्यो अने वाड वावतनी तकरारने म्होटा पायापर ळावो मूकी. राज्यने सुसमृद्ध वनावनार तथा राज्य वहीवटनी केटळीएक उमदा पद्धतिओने प्रचळित करनार राज्याताश्री रुपाळीवा राज्यनी ळगाम पोताना सुपुत्रने मोंपी वि. मं. १९३३ मां स्वर्गवासी थयां. ए वखते ठाकोर साहेवश्री कर्णसिंहजीनी युवावस्था हती. तेओए राजकाजनो उत्तम रीने अनुभव मेळवेळो होवाथी राज्यनी आमदानीमां दिनप्रतिदिन दृद्धि थवा लागो अने प्रजा पण सर्व प्रकारे सुखचेनमां दिवसो गुजारवा लागी

नामदार ब्रीटीश सरकारे देशी रजवाडाओमां हमेशा सुलेह शान्ति सचवाय एवा इरा-दाथी दरेक राज्यनी सीमा नकी करवा माटे एक कमीटी नीमी, तेनी साथे ब्रीटीश राज्य साथे क्या क्या संस्थानना सीमाडाओ मळे छे एनी पण चोखवट करवा अन्य कमीटीने योजी.

ठाकोरश्री कर्णसिंहजीए ए उभय कपीटीओ द्वारा वीजां राज्योनी माफक पोताना राज्यनी सीमा सबंधी चोख करी छीधी. त्यारवाद तावाना भायातो तेमज मूळ गरासीआओना इक मुकरर करवा माटे काटियावाडनां समग्र राज्योनी सम्मित थतां राज्यस्थानिक कोर्टनी स्थापना करवामां आवी, ए वखते भायाती तथा मूळ गराशोआनी सोमानो मुलेह शान्तिथी फडचो थया वाद दरेक कना इकनी नोंध थइ, के जेनो हालमां "इकपत्रक " एवा नामथी सहु कोइ व्यवहार करे छे. एज अरसामां श्रीमान ठाकोर साहेवे खालसा गामोनी सावै करावी दरेक स्थळे वीघोटीनो वहीवट शरू कयों तथा राज्यनी स्थिति तपासवा माटे दरेक गामोमां जाते गया अने खेडूतवर्गनी खुशी प्रमाणे वीघोटीना आंकडा मुकरर करी आप्या. खेतीवाडीमां मुधारो थवाथी राजा तथा प्रजा वस्त्रेने लाभ थयो. मे. कर्नलवॉकरना वंदोवस्त वखने थान लखतरनी आमदानी छा. २५००० नी अंकाइ हती, परंतु हाल ए संस्थाननी आवक आशरे हा. १००००० एक खाखनी लेखाय छे. श्रीमान ठाकोर साहेवश्री कर्णसिंहजीए खेतीवाडीनी विशेष आवादी अर्थे केटलेक स्थळे जळना बंध बंधाव्या तेमज संस्थान लखतर तावानो प्रदेश के ज्यां पीवाई पाणी पण महा मुक्केलीए मळे

छे त्यां ठामठाम कुवाओं तथा तळावो खोदाव्यां, तथा खुद छखतरमां मोतीसर अने सरधरा ना-मनां वे म्होटां तळावो हा ५०००० ने खर्चे तैयार कराव्यां, तेमां तळाव मोतीसरनी अंदर आरा हवारा वंधावी प्रजा माटे अपूर्व सुखतुं साधन करी आप्युं, ए हपरांत प्रजावर्गमां विद्यानी दृद्धि धाय एटछा माटे गुजराती निशाळों, शारीरिक संपत्तिना संरक्षण माटे एक सार्वजनिक होस्पीटछ अने कोइ पण अनीतिनो भोग न थइ पढे एटछा माटे इन्साफी कोटोंनी स्टेट तरफथी स्थापना करवामां आवी; छतां अन्तिम अपोल श्रीमान ठाकोर साहेव जाते सांभळे छे अने योग्य इन्साफ आपे छे. तेमज हमेशां सवारना दश वाग्याथी सांजना पांच सुधी नियमित राज्यनुं कामकाज करे छे. स्टेटना प्रमाणमां रैटयतना संरक्षणने माटे पोळीस वगेरेनो वंदोवस्त प्रशंसापात्र छे.

नामदार ठाकोरसाहेवश्री कर्णासिंहजी गुजराती तथा व्रजमापानुं सारुं ज्ञान धरावे छे.

पोते विद्याविलासी होवाने लीधे काव्य उपर विशेष अभिरुचि राखे छे अने मन, वचन तथा कर्ममां पवित्र रही वैज्जव संप्रदायना अनुयायी होवाथी निगंतर प्रभुसेवापरायण रहे छे. तेओश्रीना टरवारमां मान्यवर बद्धभी संप्रदायनी पद्धित मुजव प्रभुश्री रणछोडजी महाराजनी सेवा थया करे छे. तेना नेक, सामग्री तथा उत्सव वैभवनुं तमाम खर्च स्टेट उपर छे. परंतु ए खर्चनों विशेष भार राज्यने उठाववो न पडे एटला माटे तेओश्रीए महाराजश्री रणछोडिनी एकत्र थएली सीलीकमांथी गाम मालीकानो बांटो मूळ गराशीआ पासेथी वेचाण लीधेलो छे. एनी उपज हाल राज्यनी तीजोरीमां श्रीरणछोडजी महाराजने नामे जमा थाय छे. अने वर्ष आखरे थएलुं खर्च बाद करतां वधेली ए रकम ए खाताना ट्रस्टीओने राज्य तरफथी सोंपी आपवामां आवे छे. तेनी साथे प्रगणानी जे जकात उपजे छे, ते उपर सेंकडे अढी टका अने लखतर शहेरनी जकातमाधी पण अमुक लागों श्री श्वालोडजी महाराजनी सेवा अर्थे नांखवामां आव्यो छे, जेथी ए खातांनां खर्चनो विशेष बोजो राज्यकोपपर रहेतो नथी.

राज्यमां खेतीवाडीनी तेमज मजानी जेम जेम आवादी थती गंइ तेम तेम वेपार पण अनुक्रमे वधवा लाग्यो. रुनी पेदाश वधतां दरवारश्रीनी सहायताथी सारा पाया उपर एक जीनींग
फेक्टरी स्थापवामा आवी. एथी वेपारीवर्गने सारो लाभ मळवा लाग्यो. पूर्वे लखतरनी स्थिति
एक साधारण गामडां जेवी हती, ते आस्ते आस्ते सुधरतां सुधरतां शहेर वनी गयुं, वस्तीनो वधारो थयो. बजार तथा रस्ताओनी साथे ठाम ठाम पाकी वांधणीनां गृहो वंधाइ गयां. श्रीमान्
टाकोरसाहेबे रुपिआ एकलाखने खर्चे ए शहेरने फरतो एक मजबूत किल्लो वंधाव्यो. तेमज रुपिआ

पांत्रीशहजारने खर्चे थानमां एक विशाल राज्यमहेल तैयार कराळा. तेओ पूरेपूरा धर्मचूरत ले, छतां अन्य धर्मनो कदी पण अनादर करता नथी. तेओए लखतरमां मुसलमान तथा जैनना देवाल-योमां मदद आपेली छे, तेमज वि. सं. १९३६ मां रुपिआ दशहजारने खर्चे एक शिवमन्दिर वंधा-वी तेमां महादेव कर्णेश्वरनी स्थापना करावेली छे अने स्थामीनारायण मंप्रदायवाळाओंने पण एवी-ज सीते सहायता आपेली छे. तेओ दरेक धर्मना आचार्योने रारखुं मान आपे छे. आयी त्यांनी हिन्दु तथा मुसलमान ए बन्ने कोम नामदार ठाकोरसाहेबने पोताना पितातुलय प्रमाणे छे. उंकामां तेओंनी राजनीति निर्विदाद वखाणवा लायक छे; वि. स. १९५१ मां थान तथा लखतरनी प्रजा, खेतीवाली अने राज्यकोपनी स्थित वहुज आवाद वनी गइ.

श्रीमान् ठाकोरश्री कर्णसिंहजीनो पथम विवाह वेलाना जाडेजा फळजी अभेसिंहनां कुंबरी जामवा साथे, वीजो विवाह दरेडना गोहेळ कुशळासिंह पत्ताभाइनां कुंबरी वाजीवा साथे, त्रीजो विवाह मेलाना जाडेजा भूपतिसह सामतिसिंहना कुंबरी फड़वा साथे, चोथो विवाह छींबडाना गोहिल प्रतापसिंहजी अजाभाइनां कुंबरी घनुवा साथे, पांचमो विवाह मुळीना परमार कळाभाइ जीवाभाइनां कुंबरी अज्जुवा साथे, छहे। विवाह छींबडाना गोहिल प्रतापसिंहजीना कुंबरी रामवा साथे, अने सातमो विवाह थरादना वाघेळा बनाजी करणजीनां कुंबरी राजुवा साथे थयो. तेमांना चारनो स्वर्गवास थयो. मात्र राणी रामवा साहेव, राजुवा साहेव तथा फइवा साहेव ए तण हाल हयाती भोगवे छे. तेमांना राणीश्री रामवा साहेव कुमार वळवीरसिंहजी, मानसिंहजी तथा भगवतिहंहजी उपरांत कुंबरीश्री सुंदरवा तथा माजीराजवाने जन्म आपेलो छे. राजकुमारी सुंदरवा माहेवने पोरवंदरना दानवीर मरहुम महाराणाश्री भावसिंहजी साथे परणाच्यां हतां, हाल ए वाइश्री हयात नथी. एओनां मातुशी रामवा साहेव पण वि. सं. १९५९ ना भादरवा सुदि ११ ने दिवसे वैकुंउवासी थयां.

पाटवीकुमार वलवीरसिंहजीनो जन्म वि. सं. १९२७ ना पोप सुदि ११ ने दिवमे थएको छे

श्रीमान् ठाकोरश्री कर्णसिंह जी किश्वोरवपमां पोतानां मातुश्री रुपाळीवा साहेब साथे वि. सं. १९१८ मां काशीनी यात्राए पगरस्ते पधार्या इता. ए वखते ते ओनी साथे ५०० माणतो, ६० अन्व, ४ रथ, २ सीग्राम अने २ मीयाना हता. पुष्करजी, मथुरांजी, मागराज, उज्जेण तथा रेवाजीनी यात्राओं कर्या वाद नामदार ठाकोर साहेब उदयपुर, झालरापाटण, कोटा तथा वढोदराना

महाराजाओनी, मुलाकात छेता छेता वि. सं. १९१९ घां पाछा छखतर पधार्या तेओए वि. सं. १९३६ मां झाडखंडी वेजनाथ, पागराज, काशी, मशुरां वगेरेनी यात्रा करी. पाछा वि. सं. १९३८ मां तेओ मशुरां, हरद्वार कुरुक्षेत्र तथा काशीनो यात्रा करी आव्या, एमां आशरे रु. १०००० खर्च पशुं हतुं. तेओ नामदार चोधीवार अर्थात् वि. सं. १९५२ ना महा द्युदि क्सोमवार ता. ३-१-१८९६ ने दिवसे छगभग सो माणसो सहित चार धामनी यात्रा अर्थे पधार्या. ए छांवी मुदतना प्रवास दरभीयान राज्यना वंदोवस्त माटे तेओश्रीए ए वखतना में पोछीटीकछ एजन्ट हन्टर साहेवने मळी एक राज्यव्यवस्थापक काउन्सोछ नीमी, तेमां प्रेसीडन्ट तरीके संस्थान छांवडीना मरहुप ठाकोर साहेवश्री सर जनवतासिंहजीने नीम्या अने मेम्बरो तरिके संस्थान छखतरना मुख्य कारभारी मी. मगनलाछ त्रिभुवनदास, न्याय खाताना अधिकारी. मी. रुगनाथ खुशालभाइ, भायातो तरफथी राणाओं केपरीसिंहजी दाजीभाइ कारेला भायात, खेडून अने पटेळवंगे तरफथी पटेल कानजी छाळजी तथा वेपरी अने पाजनवंग तरफथी

शेठ रायचंदभाइनी योजना करी. राज्यना चाछ कामकाजनी सत्ता मुख्य कारभारीने तथा सर्वो-

परि सत्ता लींबडीना मरहूम ठाकोर साहेबने सींपवानो ठराव कर्यो अने ते में इन्टर साहेबने हाथे

यंजुर कराव्योः

श्रीमान् ठाकोर कर्णसिंहनी चारे धाँमनी यात्राञ्जोमा छाखी रुपिआना पुण्य दान करी ता. २६-३-१८९७ ना रोज छखतर पथार्या. तेओश्रीए पोताना तेर मास अने त्रेवोश दिवस पर्यन्तना दीर्घ परास दरमीयान राज्यनो वहीचट संतोपकारक रीते चाछेछो जोइ एक जाहिर दर- पार भर्यो अने व्यवस्थापक मेम्बरोन आशरे हा. ५००) नी किम्मतनो पोशाक आपी यात्रामां साथे आवेछा अधिकारिओने नेमज अंगरक्षकोने यथायोग्य इनाम वहेंची आप्यां. तेओतुं जोवन- चरित्र यमुनाना जळ समान निर्मळ तेमज पवित्र छे, तेओश्रीए वि. सं. १९५३ मां यात्राएथी पधारी राज्यनी छगाम हाथमा छीथा चाद पोतानां स्वर्गस्थ कुंबरी श्री सुंदरवाना स्मरणार्थे हा. १०००० दशहजार खर्ची एक संदर देवाछय वंधाव्युं अने तेमां वि. सं. १९५४ ना वैश्वास विद ७ ने दहाडे महाछक्ष्मी, महासरस्वती तथा महाकाळीनी मूर्तिओनुं यथाविधि श्रद्धापूर्वक स्थापन

१ ए चारे धामनी यात्रानो अहेवाळ धान लखतर राज्यना अतिहासिक वृतान्तमां सिव-स्तर छपायेल छे. चार धामनी यात्राए जवानी उत्कंटा धरावनारने ए पुस्तक घणुंज उपयोगी यर पहे प्वृं छे.

कर्यु तेमज तेना कायमी निभाव उपरांत एक पाठशाळा खोळी ब्राह्मणोना वाळकोने पर्कर्मनुं शिक्षण आपवा माटे हा. १०००० दशहजारनी वीजी रकम काढी.

वि—सं. २९५६ ना भयंकर दुष्काळ वखते श्रीमान् ठाकोरसाहेवे पोतानी प्रजाने निभा-ववा माटे ठाम ठाम कुवा तथा तळाव खोदाववातुं काम शरु कर्युं; संस्थान ळखतरनी समीपे एक मोतीसर नामे गहन तळाव खोदाव्युं अने तेमां पाणी लाववा रा. २५००० पचीशहजारने खर्चे सरधरा नामतुं म्होदुं तळाव खोदावी तैयार कराव्युं.

दैवो कोपथी कगाल बनी गएला कृषिवलोने तगावो आपी तेमन भायातो तथा मुळ गराज्ञीआओने नाणां धीर्या. ए वखते एकंदर रुपिआ एकलाखयी वघारे रकम राज्यकोषमांयी काटवी पढ़ी हती. वि. स. १९५७-५८ मां पण नवळी स्थितिमां निमय थएला कृषिवलोने वळद, वीज तथा अन्न विगेगे आपी टकावी राखवामां वीना वेलाख रुपिआतुं खर्च वेठयुं हतुं. त्रणवर्ष पर्यन्त नामनी पण उपन राज्यमां जमा थइ नहोती, छतां राज्यवहोवटना तेमन राज्यकुद्धम्वनां नियमित खर्चमां लेशा पण न्यूनता न करी. गत वर्षोमां तेओ नामदारे पोतानी मशंमनीय देखरेख नीचे राजकारोबार चलावेलो हतो, जेथी राज्यने करने नाणा लेवानी आवश्यक्ता न जणाइ जो के ए वखत बहुज वारीक हतो, तोपण थान तावे महादेव विनेत्रेश्वरना प्राचीन देवाळयनो जीणोंद्धार करवानी इच्छा थतां तेओश्रीए रु. ५०००० पचाशहजारने खर्चे असल कोतरणीना कामवाळुं नमुनेदार देवाळय बंधाववा मांडयुं अने तेनी देखरेख माटे रु. १५० ना पगारथी इन्जीनोयर मी. गजानन्द गोपाळनी नीमनोक करी. ज्यारे उक्त देवाळयना जीणोंद्धारनुं काम सम्पूर्ण थयुं, त्यारे श्रीमान् टाकोरसाहेवे वि. सं. १९५८ ना श्रावणञ्चिद्द ५ ने दहाडे प्रासादमितष्ठा करी अने एज स्थळे सहस्त्वचंदी करावी महान सुयन्न मेळव्यो

पाटनी कुमारश्री वळनीरसिंहजी, कुमारश्री मानसिंहजी तथा भगवतसिंहजी उम्मरलायक थया, जेथी योग्य राज्यकन्याओं साथे तेओना लग्न करवा श्रीमान् ठाकोरसाहेवनी हित्त थइ, परंतु उपराउपर नवळां वर्षों आनवाने लोधे लग्न महोत्सवमां खर्चवा धारेली म्होटी रकमनो संग्रह राज्यकोपमां न होवाने लीधे तेमज राज्य माथे करज करी एवा शुभ प्रसंगने साचववानुं पोताने अयोग्य जणातां ए वात वंघ राखी हती। छेवटे वि—सं. १९५९ ना महा शुदि ४ ने रिववारे पाटवीकुमारश्री वळवीरसिंहनां लग्न धरमपुरना सूर्यवंशी

महाराणाश्री मोहनदेवजीनां व्हेन सुरजकुंवरवा साथे तथा मुळीना पमारवंश्नीय ठाकोरश्रो हिम्मत-सिंइजीनां व्हेन बाइसाहेव साथे म्होटी धामधूमथी कर्या. तेने वोजे दिवसे अर्थात् महा शुदि ५ ने सोमवारे कुमार मानसिंह जीनां छप्र रोझकाना तालुकदार चुडासमाश्री देवीसिंह जीनां कुंवरी तखत-कुंवरवा साथे तथा कुमारश्री भगवंतसिंहजीनां लग्न थरादना वाघेला पृथीराजजीनां कुंवरी वाकुंव-रवा साथे करदामां आन्यां. ए ग्रुभ प्रसंगे संस्थान लींवडीना मरहुम ठाकोरसाहेवश्री सर जसवंत-सिंहजी पोताना कुदुम्ब सिंहत पथायी हता. तेमज धांगधा, पोरवंदर, वढवाण, वळा, ळाठी, पा-कीताणा, ळींबडा, देळा तथा नडीआद वगेर संस्थानो तरफथी भायातो, कार्यभारीओ, तालुक-दारो अने शेठ शाहुकारीए आवी पोशाको दइ छइ छप्र महोत्सवनी शोभामां वृद्धि करी हती. ए वस्तते राजारजवादाना माणसो उपरांत भाट, चारण, भांड तथा गवैयाओ वगेरे मळी एकंदर दश-हजार माणसो एकत्र थयां इतां, ए तमामने पंदर दिवस पर्यन्त राज्य तरफथी, भातभा-तनां भोजन आपवामां आच्यां इतां अने मागणवर्गने मस्तक दीठ हा. १॥ तथा कविवर्गने सह सहुनी योग्यता प्रमाणे इनामो आपी श्रीमान् ठाकोरसाहेवे सत्कीविंने संपादन करी. ए मांगलिक पसंगे लीवडीना मरहम ठाकोरसाहेव सर जसवंतसिंह जीए मागणोने मस्तक दीठ अकेक रुपियो आप्यो हतो. ए ग्रुभ मसंगमां महेरवान झाळावाड मान्तना पोळीटीकळ एजन्ट केप्टन वीकसाहेवे पोताना कचेरीमंडक सहित भाग लीघो हतो. श्रीमान् ठाकोरसाहेवश्री कर्णसि-इजीए ए प्रसंगनी ख़ुशालीमां प्रजावर्गनो एक दरवार भरी वि. सं. १९५६ नी तमाम महेसु इ तेमज १९५७ नी महेसुलनो चतुर्थीश माफ कर्यो. ए रकम एकंदर हा. ७५००० हजारनी थड़ हती. नामदार ठाकोरसाहेवनी आवी महान उदारताथी मजा अत्यन्त संतोष पामी.

ए रीते छप्र कार्य संतोपकारक रीते समाप्त थया वाद श्रीमान् टाकोरसाहेवे वि. सं. ४९५९ ना चैत्रश्चिद्द ११ ने दिवसे फटाया कुमारश्री मानसिंह जीने गाम "गांगह" तथा कुमारश्री भगवतिसंह जीने गाम "वड छा" गरासमां आप्युं नि भायाती सिरस्ते हक्षपत्रकोमां पोते तथा वन्ने कुमारसाहेवोए में झाछावाड मान्तना पोछीटीकळ एजन्ट केप्टन वीळसाहेव रुवरु हस्ताक्षर कर्याः हाछमां संस्थान धान छखतरनी मजा आवाद छे, राज्यकोपनो स्थिति सारी छे, वितीवाही पण जोहतां साधनो मळवाने छीधे सारी हाळतमां छे अने खेडूवर्ग पण वहुज खुशीमां छे. ए सच्छं मान दीर्घदर्शी वर्तमान श्रीमान् टाकोरसाहेव श्री कर्णसिंह जी वहादुरने घटे छे.

छखतरनो संक्षिप्त इतिहास.

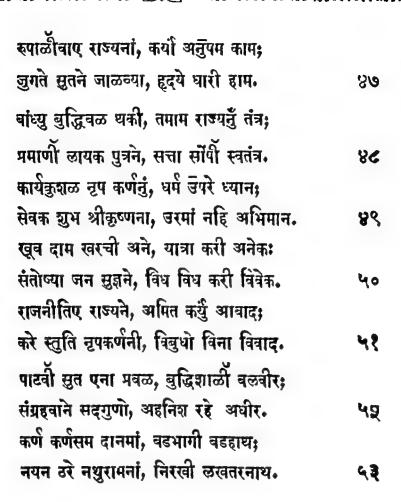
दोहा. /

| पेढी राज हरपालयी, सुखकर सत्यावीश; | |
|---------------------------------------------|-----|
| चतुर चन्द्र चाहे थया, उत्तम हळवदइश्रा. | ź |
| अभयसिंहजी एहना, किछत चतुर्थ कुमार; | |
| त्वरित थान छखतर तणा, भळा वन्या भरयार. | २ |
| इता बहु ए हिम्मती, रम्य जमाव्युं राज; | |
| समये छइ स्वर्गे गया, करी वीरनां काज- | ₹ |
| ए पछीं तख्ते आवीया, विजयराज विद्वानः; | |
| भक्त राय रणछोडना, गाता इरिगुणगान. | 8 |
| दानी डुंगरपुरतणा, आज्ञकरण अधिपाळ; | |
| मातुक विजय तणा महद्, सेवे दीन दयाल. | 84 |
| त्यांथी राय रणछोडनी, मनइर मृति मगावी; | |
| विजय महीवे व्हाळथी, पुर अन्दर पधरावी. | Ę |
| नमुनदार मन्दिर नविन, त्वरित करावी तैयार; | |
| सुन्दर प्रतिमा इयामनी, स्थापी महा सुखकार. | છ |
| आपी रैय्यत आदिने, सहु रीते संतोषः | |
| विजय गया वैकुंठमां, कीर्तिना भरी कोष. | ć |
| विडिळ पुत्र ए विजयना, शेषमालजी शूरः | |
| प्रीते बेठा तख्तपर, निर्मळ धारी नूर. | 9 |
| पुत्र पहना पाटवी, गुणशाळी गोपाछ; | |
| तख्तनशीन ते पछी थया, गौबासण प्रतिपात. | १० |
| पूर्ण करीने प्रेमथी, आश्रित जननी आशः | |
| गोपाले गोलोकमां, नेरे कर्यो निवास. | 7.7 |

मतापी एना पुत्रमां, आदि कर्ण उदार; गादीपति वनी आपता, हरदम अरिने हार. १म धरणी धांगधरातणी, दवावता दिनरातः करी द्वद्धि निज राज्यनी, वात एइ विख्यात. 15 अन्य राज्यना योधने, मारी अनहद मारः **प्रीतें** जाम तमाचीपर, अमित कयी उपकार. \$8 भय फेटाव्यो भुजबळे, ठाकोरे सहु ठामः समय आवता संचर्या, ए पण अक्षय धाम. 24 क्टेंबर वडा चृप कर्णना, द्वितीय अभय दातार; व्रहीं छखतरनी गादींने, पाम्या सुयश अपार. १६ जुनागढों टइकर जवर, उरमां धरी अभिमानः जोरतलवीं उघराववा, आवीं चढ्युं गढ धान. १७ अभये ए कर आपवा, सत्वर "ना" सँमळावी: यवनोष् गढधानमां, चाइन छुंट चळावीं. 26 द्वार तोढी दरवारतुं, भरी वैरनो भारः परम सुशोभित पत्यरो, गया उठावी गमार. १९ अभयनृषे ए समयथी, विदित जमावी विरोधः खूव व्हारवटुँ खेडीयुं, करी यवनपर क्रोध. २० मरतां छगी मुके नहि, तजे न कुळनी टेक; एत्तम झाटा अभयतुं, सुणजो साहस एक. 22 परहरी दर प्राणान्तनो, वळी ढांकी निज वेश: निरखीं निवास नवावनी, पल्यां कयों मवेश. इ२ शयनध्वनमां शान्तिषी, निद्रा छीए नवाबः

याचे चढी उरःस्थले, जाहिर अभय जनान. 23 जागृत करीने जानपर, खंजर खेंच्युं खास; नवाव नभ्र वनी कहे, नहि करशो मुज नाश. २४ शिदने करवां संज थया, आवुं साहस आप; अधिक अजायव थाउं छुं, पेखी अभयं प्रताप. व्रष अभवे कारण ए समे, जणावीं युं घरी जोर; वचन छड़ विचरण कर्यु, कलित थानगढ कोर. इ६ जाणीं नत्रावे जुग्तिथी, राजपूतनी रीतः अदम आरकाना अखिल, पहोँचाड्या धरी मीत. २७ ए रीते अपमाननो, वाळी वदछो वीरः अभय अहर्निश राखता, निजकुळ केरं नीर. 96 समय पामीने स्वर्गमां, गया अभय गुणवानः पुत्र रायधर पाटवी, महीपति वॅन्या महान. 28 कोळी लोकोए कठिन, वळे उठाव्युं वंड; रायधरे कर असि धरी, दीधो खळने दंडः ₹0 थया सुखद सगरामजी, ते पछी तख्तनशीन; संतति विण स्वर्गे गया, वजावी यज्ञतुं वीन. **₹** ₹ कीधी कर उधुबन्धुए, कखतरतणी छगाम; चन्द्रसिंहजी चतुर ए, समये गया स्वधाम. 32 आनंदी सुत एहना, परमस्रशील पृथीराज; इता उम्मरे बाल अति, तद्पि धर्यो शिरताज. ₹₹ मात वार्जीवाए महद, हदयें धारी हर्ष; क्यी राज्यनां काज सहु, दृढताथी दृश वर्षे. ३४ संपदभर सिंहासने, निरखी बाछ नरेश;

राज्य आजुवाजुँ तणां, हल्ला करे हमेश. 36 हतो ए समे हिम्मती, खवास हीरजी खास; कार्यभारी बाए कॅर्यो, तेने इरवा त्रास. ₹ एक वर्ष एणे करी, सेवा राज्यनी श्रेष्ट; जतां समय जाति मुजव, निवड्यो हीरजी नेष्ट. 90 मीते राज्य पचाववा, युक्ति रची अनेकः पायरी जाळ प्रपंचनी, छक्यो हीरजी छेक. 16 मुगलोनी माठी दशा, चमकी चारे कोर; महद मराठाओ तणुं, जाहिर जाम्युं जोर. 39 योवन अति आनंदनद, पाम्या तृप पृथीराजः देरी कृत्य दीरातणां, नकी थया नाराज. 80 गुणींअल गायकवाडनी, सहाय लही सुखकार; कर्यो पतावी करज झट, हीराने हदपार. 83 छखतरथी पततां छगी, वहोदरातुं वित्तः वहींवट गायकवाडना, नोकर करता नित्य. प्तर माप्त थयुं पृथीराजने, ऋण अदा धतां राज्य; निश्रय त्यां नजरे पहयुं, सुखद अंग्ल साम्राज्य. 83 पूर्यीराजे परलोक्तमां, गमन कर्यु तजी गर्वः विकोकों नरपित विजयने, सुखी धयां जन सर्व. 88 विजयराज स्वर्गे वस्या, शोके हृद्य छवाय: कुमार कर्णनी ए समे, लघु उम्मर लेखाय. 88 विदित मास पर्नी वये, कर्ण भूप कहेवायः मृखद राज्य मिहासने, पवित्र धारी पाय. 84







एकोनत्रिंशत् तरंग.

(Fortigo

श्री

" छप्पय• "

वांकानेरे वंशवर्ही सुरताने वावी. राजाजीए राजधानी वढवाण जमावी; वालिसिंह लिंग थया, त्यहां भूमिपति द्वादश, अमर! आपलिंग अहीं, तख्तपति थया त्रयोदश; श्रवण करो नृप स्नेहथी, विदित कथा वढवाणनी; नित्य गाय नथुराम कवि, महद कीर्ति मकवाणनी.

श्री इळवदना राज्यकर्ना राज चन्द्रसिंइजीने पृथीराजजी, आश्राकरणजी तथा अमरसिंइजी वंगेरे कुमार हता, तेमांना आश्राकरणजीए पोताना ज्येष्ठवन्छ पृथीराजजीने प्रपंचनी जाळमां फसावी इळवदनी गादीने इस्तगत करी. पृथीराजजीए वि. सं. १६६० मां वढवाणनं जुदुं राज्य स्थाप्यं, परंतु ए ज्यारे कपटीजनोना कुकृत्यथी काळना कवळ थया, त्यारे तेओनां राणी कुमार सरतानजी तथा राजाजीने छर जांबुढे गयां. जामनगरना जामनी सहायताथी पृथीराजजीना पराक्रमी कुमार सरतानजीए वाहुबळथी बावरीआ लोकोने जेर करी गढीआपर अमल जमाव्यो अने वांकानेर नामनं हाहेर वसावी त्यां पोतानी राजधानी स्थापी. तेओना स्वर्गवास पछी कुमार मानसिंहजी बांकानेरनी गादीए विराजमान थया, त्यारे तेओनी उम्मर न्हानी हतो, एटलामाटे एमना काका राजोजी प्रतिनिधि तरीके राज्यनं तमाम कामकाज करता हता. ए वात कारभारीने पसंद पढी निह,

जेथी तेणे राजाजीने कोइ पण मकारे दूपित करी राज्यमांथी अलग करवानी यत्न आरंभ्यो. एणे एक वाज राजाजीने एवा खबर आप्या के "आपने आवज्यक राजकीय काम मसंगे वहारमाम मोकल्याना छे. माटे शक्ष अल्लथी सज्ज थड आप प्रभानमां राज मानसिंहजीनां मानुश्री पामे प्रभारतो." अने वीजी वाज स्वर्गस्थ सरतानसिंहजीनां राणीजोने एवु समजाव्युं के "राजोजी राज मानसिंहजीने मारी वांकानेरनी गादोने पचावी पाडवा इच्छे छे अने एटजाज माटे ते आवतोकाले स्हवारमां आप पासे आवशे "बीजे दोवसे प्रभातमां राजोजी हियामा बांगे दरवारमां हाजर यया. राज मानसिंहजीनां मानुश्रीए कारभारीना कथनने सत्य समजो राजाजीने पामेना ओरडामांथी कांइ चीज छड़ आववा आज्ञा आपी. राजोजी ओरडामां दाखल थया के तुरतज राजमाताए कमाड वंध करी सांकळ चढावी दीधी अने "दगो दगो "एप पुकारो उठ्यां. आ वखते राज्यनी समय श्विरवंधी एकत्र थड़ राजाजीपर हल्लो करवामां आगळ वधी तेवामां वाळ राजा मानविंडजी के जे समान वयना श्विशुओ साथे गेंद्री कोडा करवामां आगळ वधी तेवामां वाळ राजा मानविंडजी के जे समान वयना श्विशुओ साथे गेंद्री कोडा करता हता ते त्यां आवो पर्शेच्या अने तुरतज ओर- हानी सांकळ खवाडी पेताना पितृच्य राजाजीनो गोइमा वेसी गया. राजाजी पण नेओने वातस लय वताववा छाग्या कारभारीनो प्रथंच खुल्लो पड्यो. अने ते एकाएक प्राण बचाववा खातर त्यांथी पलायन करी गयो.

त्यारवाद राजलटपटथी कंटाळी गएछा राजाजीए वांकानेर पासेतुं गाम रातीदेवळी के जे पोताने गरासमां माप्त थएछं हुनुं त्यां जह निवास कर्यो; परंतु ए न्हाना सरखा गामडामां वयारे वखत रहेवातुं पसंद निह पडतां तेओ खोडुमां आव्या अने त्यां एक महेळ वंघावी आनंदपूर्वक रहेवा छाग्या. आजीविका माटे अन्य साधन निह होवाथी आजुवाजुना मदेशमांथो जोइए तेटळी माळमत्ता छूंटी छावता. ए रीते स्वरूप समय व्यतीत थया वाद वढवाणमां वादशाहो फोज आवी, ए वखते कोइएक आयर जातिनो पटेळ वढवाणनो स्वतंत्र माळिक वनी सत्ता चळावतो हतो. वादशाही सेनापतिए तेना पासे खंडणीना चढेळा रु. ४००००० चारळाखनी उघराणी करी, त्यारे आयर पटेळे उत्तर वाळ्यो के वढवाणनो खरो माळिक तो खोडुमां रहे छे. एना पासे पेशकसीनी उघराणी करो. आ उपस्थी वादशाही ठरकरनो एक इकडीए खोडु जइ राजाजोने कवजे कर्याः त्यांथी तेओने अमदावाद छइ जवामां आच्या. वादशाही स्वाए ज्यारे पेशकसीनी चढेळो रकम भरी आपवा राजाजीने दवाण कर्युं त्यारे तेओए कत्तुं के " वढवाणनो खरो माळिक छुं छुं. परंतु हाळ केटळोएक समय थयां ए संस्थाननो उपभोग अन्यजन करे छे, एण जो ए पाछुं मने सुपीत

P)(4

करवामां आवे तो हुं खल्प समयमांज प्रेपूरी पेशकसी भरी आयुं. " आ वखते अमदावादना स्वा ने तया त्यांना कारभारीओने राजाजीए केटलाएक उत्तम अन्यों भेठ तरीके आप्या; जेथी ए लो-कोए एज वखते राजाजीने एक सनंद तथा सहायताने माटे अमुक सेना आपी. राजाजीए वढवाण आवी आहीर पटेलने केद कर्यों अने तेना पासेघी चारलाख रुपिआ वसुल करी अमदावादना वादशाही खजानामां भरी आप्या. त्यारवाद तेओए जीवितपर्यन्त संस्थान वढवाणनो खतंत्रवणे उपभोग कर्यो.

राजोजी इहरना राठोड राजा विरमदेवना कुटुम्बी शिवदासजीनां पुत्री श्यामकुंवरने परण्या हता, ए वाइ राठोडमां एवा नामधी प्रसिद्ध थया ज्यारे वि. सं. १६९९ मां श्रीमान राजा- जीनो स्वर्गवास थयो, त्यारे राठोडराणी श्याकुंवरवा सतो थयां, एनो पाळीयो अद्यापि हाडीमानी जन्यामां अस्तित्व भोगवे छे.

राजाजीने सवलसिंहजी, उदेसिंहजी, भावसिंहजी, उर्फे जालिमिंदजी, जेतसिंहजी, तथा अदेसिंहजी नामना पाच कुपार हता. तेमांना सवलसिंहजी वि. सं १६९९ मां वढवाणनी राज-गादीए वंठा, तेओए केटला वर्ष राज्य कर्यु एनो निश्चय यह शकतो नथी. अणीदरा गामनी वाव-मा वि. सं. १७२१ नो शिलालेख छै, तेमां राज सवलसिंहजीनं नाम लखेलुं छे. तेथी न्हाना भावसिंहजीने चार गामथी गाम खोडु, जेतसिंहजीने वहोद, वाघेला, वापोद्ध तथा रुपावटी अने अदेसिंहजीने गाम छत्रीआलुं गरासमां मळ्युं.

वि.सं. १६९९ थी आरंभी सं. १७६२ सूबीमां सवळसिंहजी, उदेसिंहजी तथा भगवतसिंहजी ए ज्ञण पुरप एक पछी एक वहवाणनी गादीए वेटा. ए त्रणेए क्यांथी क्यांसुधी राज्य कर्यु ए कळी शकातुं नथी. भगवनसिंहजीने संग्रामसिंहजी, अगरसिंहजी तथा रामसिंहजी नामना त्रण कुमार हता.

राजाजीना हतीय कुमार भावसिंह जीने न्हानी उम्मरमांज गृहकळहना कारणसर तेमने मोसाळ (इडर) छइ जवामां आव्या हता. ज्यारे ए भावसिंह जी उम्मरछायक थया, त्यारे सावर-गढना राजाए पोतानी पुत्रीनो तेओनी साथे उद्वाह कर्यो. एनाथी महान् मतापी कुमार माधवसिंह जीनो जन्म थयो. ए माधवसिंह जीए बुन्दीनरेंशनी सेवा बजावी नानतानी जागीर

१ माधवींसहजीना पात्र जालमसिंहजी बुद्धिवळ अने वहादुरीथी कोटा राज्यमां करण-कारण यह पड्या. जेने परिणामे तेना वंशजोने कोटाना राज्य तरफथी झालरापाटणतुं राज्य माप्त यपुं के जे अद्यापि तेओना करजामां छे.

मेळवी अने त्यारवाद तेओ कोटानरेशना कृपापात्र वनी सेनापितना मानवंना हुद्दापर स्थित थया. तेओने मदनसिंहजी, अर्जुनसिंहजो, अमेसिंहजी, मानसिंहजी, अगरसिंहजो, भीमसिंहजी, करणसिंहजी तथा सामतिसिंहजी नामना आठ कुमार हता. तेमांना अर्जुनसिंहजी तथा अमेसिंहजी कोटानुं ट्रक्कर ट्र वढवाण आव्या अने दरवारी महेलमां रहेला पोताना काका भगवितसिंहजीने मारी राज्यने हस्तगत कर्यु तथा तेना कुमार संग्रामसिंहजी वगेरेने आजीविका माटे ल्रुडा नामनुं गाम आप्युं, जे अधापि तेना वंशजोना तावामां ले.

वि. सं. १७६२ मां अर्जुनसिंहजी वहवाणनी राजगादीना अधिपति थया, तेना भाइ अगरिसंहजी अपुत्र गुजरी गया तथा मोनिसंहजी वगेरे चार भाइओ स्वल्प समय वीत्यावाद कोटेथी वहवाण आन्या. ए वस्ते ठाकोर अर्जुनसिंहजीए झमर, झापोदर, वरशाणी, भालाळा, खारवा, देह:दरा अने मेमका नामनां सात गाम मोनिसिंहजीने तथा खमीशाणा नामनुं एक गाम भीमिसिंहजीने गरासमां आप्युं. भीमिसिंहजी आत्मघात करी ज्यारे पालोक्तमां गया, त्यारे तेनुं गाम खमीशाणा वि. सं. १७६७ मां महादेव भीमनाथनी जगोमा धमीदा नरीके अर्थण करवामां आन्युं. अद्यापि ए गाम भीमनाथना महंतना कद्यजामां छे.

करणसिंहजी ृंकायम अर्जुनसिंहजीनी साथेज रह्या अने वांकानेरनी मददे जता तेओ मराया त्यारे वांकानेर तरफथी वढवाणने "नागनेश " नामनं गाम आपशामा आव्यं.

वि. सं १७६३ मां अर्जुनसिंह जी तथा अभेसिंह जी वच्चे वढवाणना मुलकनी वहेचण थह. तेओना पुरे। हिते चीठीओ लखी; तेमां अर्जुनसिंह जीनो सूचनाथी वन्ने चीठीओमां 'चुडा' ळ लेखं हतुं. चीठीओ नांस्वो के तुरतज अर्जुनसिंह जी एक चीठी उपाडो गळी गया. अभेसिंह जोने आवेखी चीठीमा चुडा ळ लेखं हतुं. जेथी तेओने वार गाम सहित चुडानी मालिकी मळी. वढवाण नीचे पण वार गामोज हतां. कहे छे के ए वखते वढवाण करतां चुडानी आमदानी विशेष होवाधी वन्ने चीठी-आमां चुडा ळ खाववानो पपंच अभेसिंह जीएज कर्यों हतो. सामतिंह जी तेओनी साथेज रहा अने पाछळथी तेने कोइएक काठीए कुंड लानी हदमां मारो नांख्यां. चुडाना आधुनिक राजा जोरावर सिंह जी अभेसिंह जीना वंशमां उत्पन्न थएळा छे.

ठाकोर अर्जुनसिंहजीए वि. सं. १७६३ थी १७९५ सूची वढवाणतुं राज्य कर्यु, तेओ हाहाश्री अमरसिंहजीनां पुत्री देवकुंवरवाने परण्या हता. ज्यारे अर्जुनसिंहजी स्वर्गवासी यया, त्यारे तेनी साथे हाहीराणी पण सती थयां हतां. ए हाडीमाना पाळीआ उपरना शिला बेखमां संवत १७९५ ना श्रावण विद ५ ने गुरुवार छखेछो छे. पूर्वे थइ गएला सती राठे।डमाना पाळीओ पण एज स्थळे छे. ए जगो हाडीमानी कहेवाय छे. राजाजी पछी जे जे गजाओ वढवाणनी गादीए वेसी स्वर्गे सिधाव्या, ते तमामनी त्यां देरीयो छे अने एज स्थले त्याना मृतक राजाओने अग्निसं- स्कार आपवामा आवे छे.

अर्जुनसिंह जीनी इयातीमां तेओना पाटवी क्रपार सवळसिंह जी के जे नागनेशमां निवास करता इता, तेओए वि. सं. १७९० मां राणपुर माथे हुमलो करी ए गामने स्वाधीन कर्यु तथा त्यां वादशाही थाणुं वेसाढी दीयुं. राणपुरनी रैयत गायकवाड दामाजी पासे फरीयादे गइ. ए वखते अर्जुनसिंहजीए क्वमार सवलसिंहजीना अनुचित कृत्य तरफ अरुचि वतावी थाणानां माणसोने नागनेश बोलाबी लीया. छतां राणपरनी प्रजा शान्त न थइ, तेओने चढाइना खर्च माटे अमुक रकम आपवातुं कबुळ करी नागनेशपर हुमली करवा दामाजीने आग्रह कर्यो. दामाजीए वि. सं. १७८२ मां श्रीशहजारनी फोन तथा तोपलाना सहित नागनेशपर चढाइ करी अने किछाथो छगभग पां-च वो वारने छेटे पहाब नांख्यो. ए व खते सवळ सिंहजी पासे शस्त्र वांधी सज्ज थएला राजपूत तथा भावर जातिना सिन्धि मळी एकन्दर पंदरसो माणमो हता. लडाइ शरू थइ. गायकवाडी फोजमांथी तोपना गोळाओ छूटवा लाग्या. नागनेशना किल्ला उपर पण तोपी गोठवाइ गइ अने गायकवाडी सैन्यपर तेनो मार शरु थयो. आगरे एक मास पर्यन्त ए रीते युद्ध थयुं, परंतु किल्लाने बाह पण इजा पहोंची नहि. छेवटे दामाजीए किल्लापर्यन्त एक भौंयरुं खोदान्युं अने तेना इशान-कोण तरफना कोठा नीचे छुरंग तैयार करावी तेमा दारु भर्यो; अने पीतानुं छइकर पाछुं वळे छे एवु जारेर करवा माटे ढंको बजाववानी हुकम आप्यो ढंकानी नाद सांभळतांज नागनेशना ज-त्यावध लोको गायकवाडी फोजने जोवा किछ।पर चड्या; ए वखते केटलांएक माणसो इशानको-णना कोटा उपर पण आबी उभां इतां. तेवामां अचानक गेवी अवाज साथे सुरंग फुटी किछानी इज्ञान दिशा तरफनो भाग तूटी पड्यो. घणा याणसो छिन्नभिन थइ गयां. गायकवाडी छइकरे नागनेशमां दाखर यह सबळसिंहजीना महेलने घेरी छीधो. शिरवंधी लोको तेना सामे लडवा त-त्पर एया, परंतु मितपक्षीओतुं दळ ममाणमां वधारे पहतुं होवाथी सवळसिंह नी पोतानी मेळेज दुरमनोने तांचे घया। गायकवाढी लक्कर तेओने वडोदरे लड़ गयुं वडोदरा संग्कारे सोनगढना बिद्धामा त्रण वर्ष पर्यन्त सबळिसिंहजीने केंद्र राख्या हता. ज्यारे अर्जुनिसिंहजी देव यया, त्यारे दृद्दाणयी केटटाएक गृहस्यो तथा अधिकारीओ दामाजी पासे गया अने तेना मनतुं समाधान

करी सबळसिंहजीने छोडावी छाव्या.

सांभळवा प्रमाणे ज्यारे गायाकवाड दामाजीए नागनेश जीत्युं, तेज वखते तेओने त्यां पुत्रनो जन्म थयाना शुभ समाचार आच्या. पाते नागनेशमां फतेइ मेळवी एटला माटे पोताना पुत्रतुं नाम पण एणे फतेसिंह राख्युं.

वि. सं. १७९५ मां सवळसिंहजी वहवाणनी गादीए वेटा, तेओना न्हाना भाइ मदारसिंहजीने वणा, वाकरथळी तथा घणाद; मानाभाइने द्यरेज तथा डवा; रामाभाइने खेरोळी तथा
वाहला; अने कशीयाजीने गुंदीयाळा तथा वाळा नामनां गामो गरासमां मळ्यां. कशीओजी एक
वीर पुरुष हता, तेओनो भाणेज जामनगरनी गादीनो हकदार हतो. तेने तुरतमां राज्यलक्ष्मी प्राप्त
थाय एटला माटे कशीयाजीए जामनगर जह जामसाहेवने मारी नांख्या, परंतु पालळथी कांइ
कारणसर तेओना भाणेजने गादी न मळी जेथी तेओ जीव लइ त्यांथी तुरतज चाल्या गया.
त्यारथी अर्थात् वि. सं. १८०० % थी वहवाण अने जामनगर वच्चे जवरुं वैर वंघायुं. एक वीजाए
एक वीजाना गामनुं पाणी पीवाना शपथ लीधा+. छेवटे वि. सं. १९१८ मां ज्यारे वहवाणना
टाकोर राजसिंहजी द्वारिकानी यात्राए पधार्या, त्यारे कारभारी आजम दुर्लभजी मूळशंकरना
पयरनथी ए अपैयो बुट्यो अने संवत् १९२१ मां राजसिंहजीए जाम विभाजी साथे पोतानां कुंवरी
वखतुवाने परणाच्यां.

वहवाणना राज्यकर्ता सवळांसहजीना काका मोनसिंहजी के जे गाम खारवामां निवास करता इता; तेना वहापुत्र बनेसिंहजी बहुज वळवान इता. कहे छे के ते भरेळ पखाळवाळा पोठी-आना शरीरमांथी एक घाए तीरने सोंसरुं काढी देता इता. तेना पासे पुष्कळ द्रव्य इतुं. ए सवळिसिंहजीना अत्यन्त प्रीतिपात्र इता, परंतु राज्यना केटळाएक अधिकारीओए इषीने छीधे सवळिसिंहजीने एवुं समजान्युं के "वळवान बनेसिंहजी आपनी राजसत्ता छीनवी छेश्चे माटे तेनो कांइ घाट घडाय तो सारुं" ए राज्यखटपटने परिणामे बनेसिंहजीने दरवारगढनी अंदर मारी नांखवामां आन्या, अने तेना वंश्वजो पासेथी खारवा, मेमका तथा देडादरा नामनां त्रण गामो पडावी राज्य

[%] १८०० नो संवत् वढवाणना इतिहासकारे अनुमाने आपेळो छे. कारण के ए जगोए एणे "घणु करीने" एवो शन्द वापयों छे.

⁺ ग्राम्य भाषामां एने अपैयो कहे छे.

साथ मेळवी देवामां आव्यां, बाकीनां चार गामोनो अधिकार मोनसिंह जीना वंश जो अद्यांपि भोगवे छे. सांभळवा प्रमाणे बनेसिंह जीने मारवा माटे सवळ सिंह जीए हुक प न्होतो अत्योः परंतु तेमां तेनी चगपणेशी तो हतीन मरण पामेळा बनेसिंह जी सुरधन थया, जुना महेळमां जे स्यळे तेनो संहार करवामां आव्यो हतो ते स्थळे तेनो शय्या पूजातो हतोः परंतु ज्यारे महेळ अत्यन्त जीर्ण थइ गयो, त्यारे वि. सं. १९३८ मां तेने पाडो एक गोखनी अंदर सुरधन बनोसिंह जीने वेमाह दामां आव्या. ए अद्यापि सुरधन तरीके पूजाय छे.

वि. सं. १८२१ ना पोश वदी ६ ने दहाडे सवळिसहजीनो स्वर्गवास घतां, तेओना पाटवीकुमारचन्द्रसिंहजी उर्फे चांदोभाइ वहवाणनी राजगादीए वेठा; तेओने लाखाजी तया पाता-भाइ नामे वे भाइओ हता. तेमां लाखाजीने वडोद, उवल तथा कारीआणी अने पाताभाइने राजपर, अणीदरा तथा सैकडा नामनां गामो गरासमां मळ्या. प्रथम "सैकडा" एक उज्जड टींबो हतो, परंतु हालमां ए स्थळे करणिसहजीए "करणगढ" नामनुं गाम वसावेलुं छे.

चन्द्रसिंहजी डफें चांदोभाइ पहान् पराक्रमी हता; तेओए आजुवाजुना राजाओ साथे तेमज गायकवादना सूवा साथे घणी छडाइओ करी हती. कहें छे के—एक वस्तत मेमकानो कोई छुवाणो पोठीओ भरी झाछरनो विक्रय करवा माटे भारूमां धंयुक्ता पासे रहेला गाम रोझकामां गयो, ते वस्ते त्यांना चुडासमा मेपजीए मरकरी खातर ए खुवाणाने पूछ्युं के—" तारा झाला ज्ञा भावे वेचाय छे? छुवाणे उत्तर आप्यो के "सोभालीए एक झालो" आ ज्ञाब्दो सांभळतांज अत्यन्त क्रोधायमान थएला मेपजीए पोठीओ तथा झालर पडावी खुवाणाने बहुज छपटाच्यो अने एज चस्ते रोझकामांथी रजा आपी. उक्त छुवाणाए वहवाण आवी चन्द्रसिंहजी आगळ फरियाद करी चन्द्रसिंहजीए तेने पोठीआ तथा झालरना पेसा आपी मेपजीनो मेद उतारवा हह संकल्प कर्यो अने तेना मोरजीया नामना गाम माथे चहाइ करवा वेहजार स्वार तथा पायदळ साथे चालो निक्र्या। मोरजीयाना लोको म्होटी आफतमां आवी पच्चा. चन्द्रसिंहजीए त्यां पहेंच्या वाद लूंट चलावी अने परना बाटवळा समेन गाडामां घाली तेओ वहवाण पाछा वळ्या. तेनामां ए वात मेपजीना पुत्र लाग्वाभाइ तथा रामाभाइए पोताना वनेवी छींवहीना ठाकोर हरभमनीने काने नांखी. हरभमजी

भादमा रहेनाराने भालीआ कही छुगणाए पेपजीने बहु मारो जवाव आप्यो. वजुरी
 करनारा पाणसमां पण तार्विक शक्ति होय छे.

195----

पांचसो स्वार तथा आठसो पायदळ सहित तेओने सहायता आपवा तत्पर थया ए वखते पेशकसी उघराववा माटे काठिआवाडमां आवेळा गायकवाडना सूवा भगवानभाइ छींवडीमां हता, ते पण हरभमजीनी साथे सज्ज थया. ळींवढीवां यो निकळेळुं महान छक्कर सूर्यास्त समये भादर नदीना विशाल पुलिन पर आवी पहोंच्युं; सामेथी चन्द्रसिंह जी पण फोज लड़ चाल्या आवता हता. तेओए लींबडीना लक्करथी जरा दूर पढाव नांख्या, अने पाते मोरशोयामां करेली लंड प्रसिद्ध न थाय तथा ते माल पाछी भितपक्षीओने हाथ न जाय एटलामाटे नमाम गाडाओने तुरतमां सळगावी देवानी आज्ञा आणी. ए कार्य थइ रह्या वाद चन्द्रसिंह जीए समग्र सैनिकोने एकत्र करो कशुं के हजु नागनेश जवानो मार्ग खुळे। छे, पंतु एम करवाथी आपणो मितिष्ठामां हानि पहींचशे. माटे शुत्रुओ साथे युद्ध करवा रणमेदानमां प्रवेश करवी एन उत्तम छे. छतां जैने जीववानी इच्छा होय तेने नागनेश जवानी अतुपति आपवामां आवे छे. " आ वखते सघळा सैनिको एक अवाने वोली चट्या के " अमो प्राणना प्रयाण पर्यन्त ठाकोरनी आज्ञा उठाववा उत्स्रक छीए." सैनिकोनो आवो उत्कृष्ट जवाब सांभळी चन्द्रसिंहजीए गोरंभा नामना अत्रव जमादारने छीवडोना छक्करपर हमछो करवा हकम आप्यो अने पोते चुटासमा उपर चढाइ करी जनादार गोरंभाना तावामां एकइजार आरबो इता, ते तमाम लींबडीना लहकर साथे वहादुरीयी लड्या. घणा घवाया तया मराया तो पण अंते ए लोको शत्रुओनी ते पोने घतडी ठाकीर चन्द्रसिंहजी पासे लड़ आत्रा. लीवडी नरेश इरभन्जो रणभूनिमांथी पछायन करी गया. चुडासमानो आगेवान के जे ठाकोर चन्द्रसिंहजीनो साळो थतो हतो ते पण रणमां पड्यो. आयी तमाम शतिवक्षी मो पाछा हठ्या अने भाग्या. युद्धनी समा-प्ति थइ,ए वखते गायकवाडना सूबा भगवानभाइए चन्द्रतिहजीने पोताना द्र मारफत कहेवरान्युं के ''आपना आरवो जे तोपो उपादो लान्या छे ते नाम द्वार गायकवादस (कारनी छे,ते अमोने पाछी आपो.'' चन्द्रसिंहजीए पोताना गाणसोनो भूल जणावी ताेेेे भगवानभाइने सेंंगे आवी. भगवानभाइ त्यायी वहोदरे गया अने चन्द्रसिंहजी नागनेश थइ वढशण पधार्या. तेओना काकामानोभाइ के जेने गाम दुधरेज तथा द्वता गरासमां मळ्यां इतां; ते जमादार गोरंभा वगेरे आरवोने कच्छ-भ्रुजयी तेही छाच्या हता. ए छोकोनो पगार घणा महिनाना चढी गयो हतो, छतां राज्य तरफथो ज्यारे तेओने जवाव न मळ्यो त्यारे ते वधा मानाभाइने गळे पड्या. मानाभाइए जमादार गोरंभाने कहुं के-" तमो सर्व भ्रज चालो, त्यां हुं तमारी पगार चुकतो आपोश. " आरवी मानाभाइनो साथे चाल्या, अने वांकानेर सुधी आवो पहोंच्या. त्यां वळो तमाम आरबोए पगार माटे पुकार उठाव्यो.

जमादार गोरंभारे गभराइ पानाभाइ पासे नाणां भाग्यां. ए वखते मानाभाइए गाळा चावना मांट्या. आरवोनो वयारे सतावणीथो आक्तळव्याकुळ वनेला गोरंभाए वांकानेर पासे वहेता पता-ळीआना उढाधोमां पढी आत्मघात कर्यो. एथो निराश धएला आरवलाको जुरे जुरे स्थळे जना रह्या अने मानोभाइ वढवाण आव्या. ए वखतना कोइएक चारणे नोचे मुनव दोहो वनावी माना-भाइने उपालंभ आपेल ले.

" पाणीमां पडतां, करमी कांइ करवुं हतुं; गोरंभो गळतां; मरवुंतुं तारे मानडा "

ए मानाजीने हडीसिंह, मोडजी तथा सुजाजी वगेरे चार पुत्र हता. ए चारे दुधरेजनां होरोने वाळी जता दुज्यनोनी पाछळ वारे चढ्या हता. शत्रुळोकोए ए चारेनो गाम सीथामां संहार कर्यो. वि. सं. १८४४ ना महा वदी ३ ने रोज धींगाणामां काम आवेळा ए चारे भाइ-ओना पाळीआ हाळ पण हाडीमानी जग्यामां मोजुद छे. ए पाळीयायरना शिळाळेखमां वांचतां प्रणनां नाम उपर मुजब चोखां ळखेळां छे, पण चोथातुं नाम अत्यंत अस्पष्ट होवाने ळीचे वांची शकातुं नथी.

चन्द्रसिंह जी उर्फे चांदाभाइने त्यां वि. सं. १८१५ना महावदी ४ने दिवसे कुमार पृथीराज जी राज जीनो जन्म थयो हतो. वि. सं. १८३४ मां चांदाभाइनो स्वर्गवास थतां कुमार पृथीराज जी ओगणीश वर्षनी उम्मरे बढवाण नो राज गादीए वेटा. तेने घणाखरा छोको प्याभाइ कहेता तथा कविज नो का ज्यां "पीथल " एवा नामधी संबोधता. प्याभाइनो हजुरमां राजपूत, सिपाहो अने काटी ए कण जातिना मळी एकंदर एक हजार माण मो साथे छइ प्योभाइ चारे दाजु चढाइ करता, गामो भागता अने आजुवाजुना मरेश ने छूंटी अरण्य समान बनावी देता. एक वग्वते तेओ सात में स्वार सिहत अमदावाद सुनी जइ पहोंच्या अने सावरमतीने किनारे धोती आए धोइ स्कवेटां सेंकडो वस्र वढशाणमां छइ आव्या. सांभळवा ममाणे ए एटळा वधा सळवान हता के तेओ ने नाम सांभळतां ज गुजरातो छोको धूजी उटता, तेओं ने केटळाएक "पणेभाइ जागडो " पण बहेता अने ए नामनो उचार करता कदन करतुं न्हानुं बाळक पण छातुं रही जातुं. आ उपरथी ए केवा वहादुर हता तेनो तोळ थइ शके छे. पयोभाइ बीजीवार अमदावाद गया अने तेओ र वडोदराना वचा जमादारना भाणेजनी वरात पर हछा कर्यो. जेथी उभय पस बच्चे युद्ध पयुं. तेमा वचा जमादारनो भाणेज काम आव्यो, एयी वरात वीखराइ गई अने

तेनो ढंको निज्ञान विगेरे सामान छूंटी पृथीराजजी बढवाण पथार्था. तेनी प्रशंसामां कोइएक कविए नीचे मुजब दोहो बनावेलो छे.

" नळकंठो नाशी मरे, साभरकांठा सोत; दिल्ली लगी देहोत, पाळ भरे तने पीथला "

छींवडीना ठाकोर हरभमनो पछो तेना कुमार हरिसिंहनी तख्तनशीन थया त्यारे तेणे पोताना पितातुं वैर छेवा माटे वि. सं. १८५७ मां पांचसो स्वार तथा वमो पायदळते साथे छइ वढवाणपर चढाइ करो. अने एक इकडी खारी नहीए तथा बीजो इकडी केराळानी तछावडी उपर राखी वढनाणमां जाण करवा माटे पचीश स्वारोने मोकळी अप्पा. ए स्वारोए शहेरना द्वार सूरी पहोंची कोश्एक खेडूपर हळो कर्यों अने स्हेनस्यान तोफान मचावां तेवामां रोन फरी शहेरणं आवता वढवाणना चौद स्वारो छींबढीना स्वारो पाउळ केराळा छगी दोड्या गया. ए बात ज्यारे पृथीराजजींने काने पढी त्यारे तेओ त्रणसो स्वार अने बसो पायदळ छइ एकदम केराळे जइ पहोंच्या तळाव पासे तळवारो काढी वढवाण तथा छींबढीना छाकरो छडवा छाग्यां तेमां पथाम.इनो जीत थइ. हार पामेळा हिसिंहजीना मामा परवडीना चुडासमा रामोभाइ तथा छाखोभाइ काम आव्या बीजुं युद्ध खारी नदी पासे थयुं, तेमां पथाभाइना मामा शेरभाइ समरशायो थया. ए शेरभाइ पेथापरना वाघेळा हता, ते अफीणना केफमां गरकाव होवायो तेने तेनो अन्य शतुना सैन्यमां खेंचो गयो ए खबर न रही. छींबढीना ठाकोर हिसिंहजीए ए शेरभाइने समरस्यो श्रवापर श्रवाम कराच्यां. उभय पक्षना मामाओ मार्या जवाने छीधे म्होटो कोळाहळ मच्यो अने वन्ने सेनाओ पोतपोनतानी राजधानी तरफ पाछी वळी.

एक वखत लींबडीना वरवाळा नामे महालनी सेना वढवाण तावाना गाम नागनेशमां आवो हती. ए वखते नागनेशमां लक्ष्मरी माणस हा नर न हतां, तो पण त्यांना लोकोए वहादुरी-धी पोतानो वचाव कयों हतो.

वि. सं. १८६१ मां वळी घ्रांगधा साथे युद्ध थयुं हतुं. ते एटला माटे के वढवाणतुं याणुं खोडुमां अने घ्रांगधातुं थाणुं गाम गुजरवेदी रहेतुं. तेवामां वक्तरीइहनो तहेवार आव्योः गुजरवेदीनां अमुक सिपाहीओ खोडुमां आवो एक भरवाडतुं वक्तरुं वगर किम्मते उपाडी गयाः भरवांड खोडुना थाणामां फरियाद करी, जेथी त्यांना शिरवंधीओए गुजरवेदी जह धींगाणुं कर्युं अने वक्कं पाछुं लावी भरवाहने सोंपी दीधुं, ए बात सांभळी धांगधाना राज अमरसिंहजीए वहवाणना ठाकोर पृथीराजजी साथ लहवानो निश्चय क्यों, अने तेना तावामां गाम लहुडा तथा वेलावदर माथे चढाइ करवा एक सैन्यने रवाना कर्युं; परंतु ए वखते पथाभाइनी जीत थइ, त्यार-वाद तेओ परस्पर एक बीजानी हदमां लूंटफाट चलाववा लाग्या, जेथी छभय राज्यनां अनेक गामो अरण्यनी माफक उज्जह बनी गया. ए वखते मात्र वहवाण, नागनेश अने खोडुमांज घणे भागे लोकोए रहेवानुं राख्युं हतुं.

ध्रागध्रानरंशे गायक सडनी सेनाने सहायक ए बोळावी, परंतु तेतुं प्रमाण धारवा करतां वहुज आंछुं होदाधी तेओए दहवाणना भायाती गाम वणा पासे मुकाम राखी ए गामपर हह्यों करवानो संकल्प कर्यो; तेवामां बहवाण भी लग्जिती लोको आवी पहोंच्या, वणाना गराशीआओ तेओनी साध मळी ध्रांगधानी फोज सामे थया अने लख्या. लगभग एक मास पर्यन्त लडाइ चाली, परंतु ध्रांगधाने गताना माणसो वणामां भवेश करी शक्या नहि. एटली मुद्तमां नामदार गायकवाह सरकार तरफथी एक म्होटी फोज ध्रांगधानी सहायताए आवी पहोंची, जेथी वणाना गराशीआओ पोनपोतानां घरवार छोडी एकदम बहवाण भेळा थइ गया.

ध्रांगध्रानग्शे लींवही, वाकानेर, चुहा तथा सायलाना राजाओ पासे सहायता मानी एती, तेमा वांकानेर सिवायना त्रणे राजाए पोतपोताना तरफथी मदद मोकली आपी. ए रीते एकत्र थएल लगभग चालीशहजार माणसोए वि—सं. १८६१ मां वहताण शहेरने घेरो लोंबुं, अने चारे तरफथी तोपोनो मारो चलाल्यो. ए वखते त्यांनो गढ हालना जेवो मजबूत न हतो; जेथी गोलाओ लगगां जे जे भाग तृटी पहतो ते ते भागने तुरतज मृतिका तथा पत्थरथी दुरस्तं करावी टाकोर पृथीराजजी तोपोनाज महार वहे प्रतिपक्षीओने पाला हटावता हता. अनंत उपायो कर्या छतां धांगधातुं सैन्य वहवाणमा प्रवेश करी शक्युं नहि. लगभग दोह मास पर्यन्त घेरो रह्यो, अन्ते भाट चारणोए वचे पही सलाहसप कराल्यो. वधाए साथे वसी कसुंवा पीधा अने वहवाण, लीं- हटी तथा धांगधा वचेना वेरनी पूर्णीहित धइ.

वि—सं. १८६२ ना महा वदी १० ने दिवमे पृथीराजजी उफें पर्याभाइए परलोक मयाण कर्य, ते वरवते तेओना मात्र एकज कुमार जालिममिंहजी के जेनी उम्मर सवा वर्षनी हती, तेओने परवाणनी राजगादीए बेसाडवामां आव्या. जालिममिंहजी न्हानी उम्मरना होवाने लीचे तेना मानुश्री दाहराजवा के जेने वटवाणनी प्रजा "वामा " कही वोलावनी तेणे राज्यनी लगाम हा-

थमां छइ न्याय पुरःसर प्रजातुं पालन करवा मांडयुं.

वि-सं. १८६४ मां नामदार व्रीटीश सरकार तरफथी वडोदराना पोछीटीकक रेसीडन्ट किनेलवॉकरनी मारफत जे ठराव जाहेर थयो, तेने परिणामे काठिआवाडमां दरसाल खंडणी उपराववा अर्थे सैन्य सहित पेशवा तथा गायकवाडना स्वाओतुं आगमन वंध थयुं. तेमज काठिआवा- इंडना राजाओ पण परस्पर युद्ध करता अटकी गया.

श्रीयुत् कर्नलवॉकर साहेवे करेला टराव मुजव रा. २८६३७-८-८ वहवाद स्टेटे नाम-दार अंग्रेज सरकारने आपवा जोइए, परंतु ए रकममांथी सीवील स्टेशनना भाडाना रा. २२५० मुजरे लड़ वाकीनां नाणां हाल सरकारी तीजोरोमां वहवाण स्टेट तरफथी जमा आपवामां आवे ले.

आ उपरांत वढवाण स्टेटनां जे गामो अमदावाद जील्ला नीचे छे, तेनी खंडणी इलायदी आपवामां आवे छे.

आ रीते गज्यपर अचानक आबी पडता उपद्रवोनी शान्ति यवाने छीघे कार्यकुशळ वाइ-राजवा (वामा) ए प्रथम संस्थान वढवाणनी स्थिति सुधारवा तग्फ लक्ष आप्युं. इंट्रकरी माण-सोने कमी कर्या. आगळना उपद्रवोथी उज्जड वनी गएलां गामोने आवाद करी शहरना किल्लाने समोनमो करान्यो. तथा चुडासमा साथेना वैरतु समाधान करवा भीमनायनी जग्यामा कसुंवा कढान्या अने वच्चा जमादारना भाणेजना मस्तक वदल जेतापरनो वांटो आपी तेनी साथे पण सकाहसंप कर्यो.

वि-सं. १८८३ ना चैत्र विद ११ ने दिवसे जालिमसिंहजीए केळासवास कर्यो. सांभ-ळवा प्रमाणे ए उदारिक ना राजाए पोतानी एकवीश वर्षनी जींदगी आनंद वैभवमां वितावी हती अने राज्यतुं तमाम कामकाज तेओना मातुश्रीए कर्युं हतुं.

जालिमसिंहजीने पण राजिसहजी नामना मात्र एकज कुमार हता, तेनो जन्म वि. सं. १८८२ ना फाल्गुन विद इ ने दहाडे थयो हतो. ए पण पोताना पितानी माफक अत्यंत न्हानी उम्मेरे अर्थात् वि. सं. १८८३ ना वैशाख शुदि ८ ने रोज तज्तनश्चीन थया; एनां मातुश्रीतुं नाम वाजीराजवा हतुं. वि. सं. १८८८ पर्यन्त राजिसहजीनां दादीमा वाइ राजवाए निर्विष्नपणे

१ पेशवानी पेशकसीना रा. २५९२२-८-० ॥ जुनागढनी जोरतलबीना रा. २६२८ अने अमदाबादनी सुखडीना रा. ८८-०-८ मळी कुछ रा. २८६३७-८-८ याय छे.

राज्यसत्ता भोगवी. त्यारवाद साम्च बहु वचे क्वेशनुं वीज रोपायुं.

पाजीराजनुं पीअर छाठी पासेना गाम वाळुकहमां हतुं, जेथी वाइराजवाए तेने कुमार राजिसहणी साथ मानता पूर्ण करवा त्या मोकली आप्यां साथे राज्यना भायातो, कार्यभारीओ तथा शिरवंथीओने पण मोकल्या हता. मानता पूर्ण करी वाळुकहथो चाली निकळेळां वाजोराजवा ज्यारे लाठीमां आव्यां त्यारे तेणे पीयर तरफनां माणसोनी सळाहथी साथेनां माणसोने पोताना एसमां मेळवी वाइराजवा पासेथी राज्यनी लगाम छीनवी लेवानो द्रव संकल्य कर्यों. अने त्यांथी तेओ सीधां नागनेश आव्यां त्यारवाद तेणे वाइराजवानां माणसोने तावे करवा माटे केटलाएक शिरवंधीओने वहवाण मोकली आप्याः ए लोको वाइराजवानी आहा मुजव वाइराजवानां वधां माणसोने केद करी नागनेशमां लइ आव्याः ए वखते नागनेशनां समजु लोकोए वाइराजवाने समज्ञावी वाइराजवाना कारभारी सिवाय वीजां तमाम माणसोने केदमांथी मुक्त कराव्याः आ वात ज्यारे वाइराजवानां जाणवामां आवी, त्यारे तेओ राजिसहजीनां चार सावकी माताओ सिहत धांग्नधे पधार्यों अने वाजीराजवाए राजिन्हिजी सिहत वहवाणमां आवी राज्यनी लगाम हाथमां लोधी.

वि० सं० १८७४ मां पेशवाहुं प्रावच्य तृहतां गुजरात तथा काहिआवाहमां नामदार अंथ्रेज सरकारनी सर्शेत्छ्छ सत्ता जामी; जेथी वि० सं० १८७६ मां राजकोटनी अंदर ब्रीटीश छावणी स्थवाह अने त्यां एक पोलीटीकळ एजन्ट नामदार ब्रीटीश सरकारना प्रतिनिधि तरीके नियत थया. आस्ते आस्ते में पोलीटीकळ एजन्टना अधिकारपर आवेला पुरुपोए देशी राज्योमां अंदर अदरना झगडाओने ज्ञान्त कर्या अने दरेक राज्य पानेथी भिन्न भिन्न पेशकशी वस्त्र कर-वा माटी. दरमीयान वाहराजवाइए पोनाना हक वावन में पोलीटीकळ एजन्ट पासे अरजी ळ-खाबी मोकली, परंतु कायदा तरफ दृष्टि करनां कवजो अत्यन्त वळवान् गणाय छे. तेओए लग-भग एक वर्ष अने सात महिना पर्यन्त एजन्सीमा ळडत चलावी छतां फावी शक्युं निह. वाहराज-वा प्रथम आट मास पर्यन्त धांगधामा रही, पछीधी राजकोट रहेवा आत्या हता, परंतु ज्यारे के-सनो खुकादो पोताना गेरलाभमा थयो, त्यारे तेओए पाछां धांगधे आवी केटलाएक पगारदार सि-पारीओनो संग्रह कर्यो तथा बढवाणना घणखरा भाषातोने पण पोताना पक्षमां मेळवी लीधा त्या-रबाद तेओ धागधाणी चाली वि० सं० १८८९ ना आध्विन विद ७ ने दहाहे पाछली रात्रीना कण वात्याने छुमारे बढवाण आवी पहाँच्या अने शहरनी उत्तरे रहेला घोळीपोळ नामना द्वारने तोटी गाममां दाखल पया। एवखते वटवाणना कस्वानी जिरवंधीओने घणा मास थयां राज्य तर- फथी पगार मळ्यो नहोतो. तेओने वाइराजवा गुप्त रीते मदद आपी निभाव्ये जतां हतां. जेथी ए छोको वाइराजवानी सेवा वजाववा सज्ज थया; तेनी साथे रैट्यत पण म्होटे भागे तेना पक्षमां मळी गइ. एटले तेओने दरवारगढनी अंदर दाखल थतां कोइ पण प्रकारनी अवरोध नड्यो नहि. ए वखते में. पोछीटीकलए नन्ट तरफ्यी बहवाणमां नीपाएला ज-प्तीदारे मध्यस्थ रही समाधान कर्युः राजिंद्दं जोने वाइराजवानी देखरेख नीचे योंपवामां आव्या अने बाइराजवानी सलामती माटे अमुक शिरवंत्रीओने योजवामां आच्या वाइराजवाना आगमनथी वाजीराजवाने वहवाण छोडवं पडयं, तेओ प्रथम लाडीमां अने पछीथी लीवडीमां रही पोतातं जीवन गा-ळवा छाग्यां. तेओए राजसिंहजीनां वाली तरी केनो इक मेळववा एजन्सीमां लडत चळावी, परंतु परि-णाम शुन्य आब्दं. छेवटे वि. सं. १८९५ मां एवी ठराव करवामां आव्यो के "राजिमहजी योग्य जम्मरे पहोंच्या पर्यन्त तमाम राजतंत्र वाइराजवानी सत्तामां रहे तथा वाजीराजवाने जीवाडमां त्रण गामो आपवां के जेनो ते पोतानी हयाती पर्यन्त उपभोग करी शके, अने वढवाणना राजद्रवार मांहेना तेमना ओरडानी अंदर आबी निवास करे." आ करार मासु अने बहु वनेए स्वीकार्यो अने एज रीते वर्तन कर्युः एथी कायमनो क्लेश नष्ट थयो. वि. मं. १९०७ ना फाल्गुन शुद्धि १५ ने दहाडे वाइराजवा स्वर्गवामी थयां. ए वस्वते राजसिंहजीनी उम्मर २? वर्षनी हती; तेओने चन्द्र-सिंहजी, केसरीसिंहजी, वेचरसिंहजी तथा माधवासिंहजी नामे चार कुमार थया. त्यारवाद थोडे दिवसे तेमनां मातुश्री न्हानीबानो देहान्त थयो. त्यांसुधी वाइराजवा तथा वाजीराजवा वचे वैरनी शान्ति न्होती थइ. जेथी नामदार अंग्रेजसरकारे कुमार चन्द्रसिंह जीने कोइ पण प्रकारनी इजा न पहोंचे एटला माटे राजसिंहजीना सावकी माता बोनजीवा साथे नागनेश मोकली आप्याः नागने-शमां निवास करी कुमार चन्द्रासिंहजीए गुजराती, फारशी तथा अंग्रेजीनी उत्तम केळवणी मेळवी अने वि. सं. १९१६ मां तेओ ज्यारे लायक जम्मरना थया त्यारे वहवाणमां रहेवा आव्या त्यारवाद त्रण वर्षे अथीत वि. सं. १९१९ ना कार्तिक वदि १२ ने दहाडे कुमार चन्द्रसिंहजी कुंवरपदे पंच-त्वने माप्त थया. तेओने दाजीराज उर्फे पृथीसिंहजी तथा काळुभा उर्फे वालसिंहजी नामना वे कुमार हता. दाजीराजनो जन्म वि. सं. १९१७ ना पोश वदि ३ ने दिवसे अने वालसिंहजीनो जन्म वि. सं. १९१९ ना महा श्रुदि ९ ने दिवसे थयो हतो.

ठाकोर राजसिंहजीना बीजा कुमार केसरीसिंहजीने वि. सं. १९२५ मां मेमका तथा वाघेला नामनां वे गाम गरासमां मळ्यां. तेने एक वखतासिंहजी नामे कुमार थया के जेने वि. सं. १९३१ मां झाळरापाटणना राजराणा पृथीसिंहजीनो अपुत्र देहान्त थतां दत्तक केवामां आव्या. ए रीते वन्वतिसंहजी " जाळिमसिंहजी " एवं नाम धारण करी झाळरापाटणनी राजगादीए वेटा. परंतु ज्यारे केसरीसिंहजी वि. सं. १९३५ ना आश्विन शुदि ३ ने दहाडे स्वर्गवासी थया त्यारे तेना गरासनां वन्ने गामो दरवार दाखळ थयां अने तेमनां वहुने राज्य तरफथी अमुक जीवाइ वांधी आपवामां आवी.

केसरीसिंहजीथी न्हाना वहेचरासिंहजीने पण एज सालमां कोठीआ तथा कडडा नामनां वे गाम गरासमां मळ्यां अने एथी न्हाना माधवासिंहजीने स्टेट तरफथी जीवाइ वांधी आपवामां आदी, एओए राजकोट राजकुमार कॉलेजमां अभ्यास कर्यो हतो.

वि. सं. १९२० इ. स. १८६४ ना जान्युआरी मासनी ता. ७ मीए नामदार ब्रीटीश सरकार तथा बढवाण स्टेट बच्चे थएल ट्रीटी मुजब बढवाणनी हदमां शहेरना वायव्य कोण तरफ चार माइक्टने अंतरे नामदार अंग्रेज सरकारे सिविल्स्टेशननी स्थापना करी छे, अने त्यां कायमने माटे एक मे. आसीस्टन्ट पोलीटीकल एजन्ट रहे छे. ए जगो बढवाणनी हदमां होवाथी तेतुं भाई दर वर्षे रु. २२५० नामदार ब्रिटीश सरकार बढवाण स्टेटने आपे छे.

चन्द्रसिंहजीना कुमार दाजीराजजी तथा वालसिंहजी राजकोट राजकुमार कॉल्डेजमां अभ्यास करता हता. ए दरभीयान वि. सं. १९३१ ना ज्येष्ठ विद ०)) ने दहाहे टाकोर राजिसिंहजी ४९ वर्षनी जम्मरे स्वर्गवासी धतां, तेओनां पौत्र दाजीराजजी सं. १९३१ ना अपाट द्युदि १२ ने दिवसे बढवाणनी गादीए वेटा. तेओ सगीर वयना होवाधी त्यांना कारभारी नाम-दार अंग्रेज सरकारनी देखरेख नीचे राज्यतुं तमाम कामकाज करवा लाग्या. दाजीराजजीए इ. स. १८७९ ना सप्टेम्बरनी ता. ३५ मीए राजकुमार कॉल्डेजमांथी निकली ता. १८ मी नवेम्बरे रिन्दुस्थाननी मुसापरी हार करी ए बखते तेओनी साथे मी. जमग्रेदजी जनवाला हता. तेओ पाछा इ. सं. १८८० ना मे मासनी ता. १८ मीए बढवाणमां आवी पहोंच्या अने एज महिनानी ता. २७ मीधी स्टेट कारभारीनी साथे जोइन्ट वनी राजकाज करवा लाग्या. छेवटे वि. सं. १९३७ ना अपाट विद २ ने बुपदारे तेओनो स्वत्त्र राज्याभिषेक थयो.

टाकोर दाजीराजजी तथा मीन्स काछुमा उर्फे वालसिंहजी वि० सं० १९३९ ना चैत्र शदि १३ ने शुक्रवारे महेरवान गोहिल्वाड मान्तना आसीस्टन्ट पोलीटीकल एजन्ट मी. एफ. एच. वारहन साहेव साथे यूरोपनी मुसाफरीए पधार्या; अने इंग्लांड, फ्रान्स तथा यूरोपना अन्य विभागोतुं निरीक्षण करी वि० सं० १९४० ना कार्तिक वद १४ ने ब्रुधवारे मुंवइ आवी पहोंच्या. अने त्यांथी कळकत्तामां भराएछं प्रदर्शन जोइ मागशर विद ४ ने रविवारे पोतानी राजधानीमां दाखल थया.

वि० सं० १९४१ ना वैज्ञास वदी ६ ने मंगळवारे ठाकोर दाजीराजजीनो छाओछाद स्व-गैवास थतां तेओना भाइ काळुभा उर्फे वाळसिंहजी जेठ छुदि ३ ने रिववारे वदवाणनी राजगा-दीए वेठा. तेओए इ० स० १८७३ थी १८८२ ना एपीळ मासनी ता० २० मी पर्यन्त काठि-आवाह राजकुमार कॉलेजमां इंग्लीश अभ्यास कर्यो हतो अने कॉलेज छोड्या पछी दाजीराजजी-ना वस्ततमां स्टेटना रेवन्यु तथा ज्युहिशियळखातामां काम करी अनुभव मेळव्यो हतो. तेमज पो-लीस सुपी. तरीके पण अमुक वस्तत काम कर्यु हतुं. गादीए वेठा पछी स्टेट कारभारीनी साथे जोइन्टपणे राजकाज करता वाळसिंहजीने वि० सं० १९४२ ना कार्तिक द्युदि १३ ने द्युक्रवारे संस्थान वहवाणनो स्वतंत्र अधिकार मळ्यो हतो.

वढवाणनो संक्षिप्त इतिहास.

सवैया एकत्रीशा.

वांकानेर वसावों गादों त्यां गुणीं अक झरताने स्थापी,
रातों देवळी राजाजीने आजीं विका अर्थे आपी;
जतां स्वर्ग झरतान झभागी मानसिंह महिपाक थया,
खटपटथी कंटाळीं खास राजोजी रातों देवळी रह्या.
परम मतापीं पिता पृथीराजनीं राजधानीं वढवाण रसाक,
आयर एक बनी वेठों तो नेह धरी त्यांनों नरपाक;
राजोजी खोर्डमां रहेवा मीते आच्या सहपरिवार,
छूंटी आसपासना कोकने दिन्य बनान्यो त्यां दरवार.
बादश्वाहीं छदकर ए समये वेग धरी आन्युं वढवाण,
चढेक खंडणीं चुकाववाने जल्दीं करी आयरने जाण;

कहेवा काग्यो कायर धइने आयर उरनी हारी हाम, खरो धणी खोड़िमां रहे छे, देशे ए खंडणीना दाम. एयों करी उघराणी फोर्जे, प्होंची खोड़ राजानी पास, आप्यो उत्तर राजाजीए अंतरमां धरीं उंडी आशः घणी हं छतां घणी मुदतथी आवक त्यांनी आयर खाय, जो मुजने ए पाछुं मळे तो सत्वर सघळो फडचो थाय. बादशाही अधिकारी वधाए राजाजीने सींप्युं राज, केद करी आहिरने एणे कर्यु सफळ निज मनतुं काजः सवळसिंह सुत एना आदि, उदयसिंह वीजा उर आण, भावसिंह त्रीना भयहारी, जेतसिंहनी चोधा जाण. रेंडर नृपना आश्रयमां लघुवये भाव झलराण रह्या, दखत आवतां वंग्नज एना भाग्यशाळी भूवाळ थया; द्दाल झालरापाटण केरुं राज्य भोगवे भाव धरी, कोटाना महाँरावनी सेवा कलित सेंकडो वर्ध करी. राजाजी पछीं राजगादीए सवळसिंह वेटा सखदाय, मरद वन्धने मारी गर्वथी उदयसिंह अवनीप गणाय; ए पछी छत एना आनंदी भगवतसिंह थया भूपाल. ए बखते कोटेथी आन्या भाव पौत्र लड़ सैन्य विज्ञाल. अर्जुन तेमन अभय नामना उभय वन्युए वळ धारी, मारी भगवतने वहवाणनी गादी मेळवी गुणकारी: साथ हतुं ए समये चूडा, व्हेंचणी वखते थया विभाग, अर्जुनने बहबाण आवीयुं, चूहा भ्रात अभयने भाग. अर्जुनसिंहजीना सुत आदि सवळसिंह अति शुर हता, निवास करता नागनेशमां मोजीटा मगस्दर इताः

राणपुरे रंजाड कर्याथी गुस्से गायकवाड थया, सबळिसहने स्वाधीन करवा दळ छड़ने दामाजी गया. झींक एनी झालाए झीली एक मास लगी त्रास तजी. शरण थयो छेवट शत्रुतुं जोर यहा जाछिम समजी: अर्जुन जातां अक्षयधामे तूटी क्वंचरनी हाथ कडी, सवळसिंहने पुर वढवाणनी मान भरेली गादी मळो. पाटवीं पुत्र पराक्रमीं एना चन्द्रसिंहजी चतुरसुजाण, नरपति वनी एणे निज नामनी अखिल स्थळे फेलाबी आणः गाम रोझके गयो छवाणो वासीपुर वढवाण तणो, झाळरनो विक्रय करवाने भरी पोठीए भार घणो. मेपजीए महकरीं मां पूछयुं, झालो वेच्यो शा भावे ? कहे छवाणो सॉ भालीयानो नेक एक झालो आवे; क्रोधित थइ मेपनोए काढ्यो छंटी छवाणाने हदव्हार. सुणी बात ए चन्द्रसिंह जी वैर वाळवा घया तैयार. १२ महद सैन्य सजी मोरशीयापर चाह धरीने तुर्त चड्या, चूंथी गादी ए चुडासमानी वेगे सहु वढवाण वळ्या; जमाइ मेपजीना जोरावर इरभम निम्बपुरीना नाथ, सहाय करवा आव्या सत्वर गायकवाडी सुवा साध. भीडमचावी भादर कांठे भूप चन्द्रनी भाळे राह, एवामां त्यां आबी चांदे दुश्मनमां फेळाव्यो दाहः प्रथम माल मोरशीया केरो सत्वर नांख्या सळगावी, तूटी पड्या ते पछी अरि उपर अति आवेशमंहि आवी. १४ हार पामी भाग्या हरभमजी, चुडासमा चकदाइ गया, अनेक आरव चन्द्रसिंहना समरशायीं क्षणमांहि थया;

विजय मेळवी वळ्या विनोदे निजपुरभणी वढवाण नरेश, मन्य एजाआराम भोगवो गया स्वर्ग हर्णो हानि हमेश. १४ पृचीराज स्नत पाटवीं एना पूर्ण पराक्रमशाळी थया, ग्रहण करी बढवाणनी गादी वेगे अमदाबाद गया; सावरकांठे शौर्य जणावी, नळकंठे पण कर्या निशान, पथोभाइ जांगडो मतापी, अवनिमां च्याप्युं अभिधान. १६ इरभम छत इरिसिंह आवीया पावन निम्बपुरीने पाट, वीर चढ्या बढवाण डेंपरे पृषीराजनो घडवा घाट; एभय भूप केराळा आगळ, लाग जोइ लडवा लाग्या, परतां मातुल उभय पक्षनां भय पामी सर्वे भाग्या. 20 त्यारवाद श्रांगध्रा साथे करी पृथीराजे तकरार, राज अमर ए समये रूट्या तुर्त धया छडवा तैयार; प्रपप दणाने पायमाल करी वेगे अरि आच्या बढवाण. घडिमां घेरी लीयो गढने पृथीराजनां केवा प्राण. 36 दोढ मास लगि लड्या, डर्या निह पराक्रमी ठाक्कर पृथीराज, भाट चारणोए भेळा घड कर्यु ए समे उत्तम काजः समाधान करवा समजान्युं उभय भूपने त्यागी तंत, पाइ परस्पर पाणी अमळतुं वैरभावनो आण्यो अंत. १९ लींवडी, चूडा अने सायला राज अमरना अनुयायी, भेटी परस्पर मीति भावधी, रह्या हृदयमां हरखाइ; पडी धया परलोकमवासी पृथीराज वहवाणपति, जाहिर सुन जाडिमिँह एना हता उम्मरे वाल अति. वाटीं पणे सह काज राज्यनां वाइराजवा करतां 'तां, कार्यकुदाळ जालिपनां जननो हानि प्रजानी हणतां'तां;

अमळ थयो अंग्रेन तणो सहु स्थळे परम शान्ति पसरी, स्वल्प जींदगी जालिपसिंहे मोजशोखमां पूर्ण करी. २१ राजसिंह सत एना रुढा न्हानी उम्मरे थया नरेजा. बुद्धिबळेथी बाइराजवा करे राजनां काज हमेश: सगीर नरपति राजसिंहना वाजीराजवा मात हतां. खाळी खजानो थयो राज्यनो साम्न बहुमां क्रेश यतां. राजसिंहना पुत्र पाटवी चन्द्रसिंह चाळाक थया, नागनेश रही भणीगणीने योग्य वये वढवाण गयाः विविध मकारनी विद्या केरुं गर्व तजी मेळवीयं ज्ञान. मान पामीया महिमंडलमां धर्म कर्ममां राखी ध्यान. पृथीसिंह स्रुत पाटवी एना द्वितीय नामधरी दाजीराज, केळवणी पामी करता'ता निश्चदिन कीर्ति भरेकां काजः राजसिंह पंचत्व पामतां शिरेराजनो ताज धरी, दाजीराजे बन्ध बालसह यूरोप आदिनी सफर करी. स्वल्प समय करी राज्य सिधाव्या सुरपुरमां ए निःसंतान, बालसिंह ऋघुवन्धु एना पाम्या शुभ महिपतिनुं मानः पाळी पजाने काळें छइ रही अपुत्र ए पण पाम्या अंत, नेह धरी नधुराम वन्या तृप जाहिर इक मेळवीं जसवंत.





त्रिंशत् तरंग.

(T) (T)

छन्द इस्गित.

करवा कसोटी भाग्यनी राजाजीना सुत सज थया, ए भावसुत माधव महा अधिकारी बनी कोटे रहा।; निज बुद्धिवळथी जालिमे जे रीत लाभ लीधो घणो, अमरेश! कहुं इतिहास ए प्रिय झालरापाटणतणो.

राज चन्द्रसिंहजीना कुमार पृथीराजना सरतानजी तथा राजोजी नामे वे कुमार इता, तेमांथी सरतानजी वांकानेरना मृळपुरुप अने राजोजी चढवाणना मृळपुरुप गणाया; राजोजी इढ-रना राटोढ राजा राव वीरमदेवना कुडम्ची शिवदासजीनी पुत्री श्यामकुंवर साथे परण्या इता. तेओने सवळसिंहजी, खदेसिंहजी, भावसिंहजी, तथा जेतसिंहजी नामे चार कुमार थया. राजाजीना खर्गवास पछी सवळसिंहजी वढवाणनी गादीए वेटा; त्यारवाद कुमार खदेसिंहे पोताना म्होटाभाइ संवळसिंहने मारी राजगादीपर स्वतंत्र सत्ता जमावी; सहुधी न्हाना भाइ जेतसिंहने अमुक गरास मळ्यो.

राजा उदेसिंहने भगवतिमह नामे क्रमार थयो. ए वधाए वि. सं. १६९९ थी १७६२ छुधी ब्रामानुसार राज्य वर्धि +

? सवळसिंद जीना वंशजो हाळ खोडुमां वांटो खाय छे. २ जेतिसहना वंश्वजो हाळ रुपा-बटीमां वांटो खाय छे. + केटलाएक एम कहे छे के राजाजीने सवळसिंह जी तथा भावसिंह जी नामे वे कुमार इता. तेमां सबळसिंह जी सं. १६९९ मां वहवाणनी गादीए बेटा अने भावसिंह जीने बार गामशी "सोह " नो गरास मळ्यो.

गृहमां जागृत थएला कोइ पण कलहने लीधे कुमार भावसिंहजीने मोसाल लड़ जवामां आव्या, ए वसते तेओनी उम्मर मात्र त्रण वर्षनीज हती. इंडरनरेशमां एवी शक्ति न हती के ते पेताना भाणेजने वहवाणनुं राज्य अपावी शक्ते; परंतु तेओनी साथे वित्रता धरावनारों माळवानी अंदर रहेला सावरगढनो राजा एक सगये त्यां आत्री चळ्यो. इंडरनरेशे पेताना भाणेज भावसिंह सबंधी तेओने केटलीएक भलावण करी. सावरगढनो राजा ए वस्तते दिल्हीपतिनो कुपापात्र हतो. तेणे दिल्हीना वादशाहनी सहायता मेळवी वहवाणनुं राज्य कुमार भावसिंहने अपाववानुं वचन आप्युं, वाल्यवयमां पण भावसिंहना भव्य गुणों जोइ संतुष्ट यएलो सावरगढनो राजा वि. सं. १७०० मां तेओनी राजधानीमां तेही गयो. थोडो वस्तत त्यां रह्या वाद तेणे दिल्ही जइ झाला-कुमार भावसिंह सबंधी सघळी वात वादशाह आगळ कही संभळावी. भावसिंहजी खरी रीते गादी ना हकदार न होवाने लीधे तेने सहायता आपवानी वादशाहे चोखों ना कही. घडरनरेशने पोते आपेछं वचन निंह पळी शक्तवाथी शरमाएला सावरगढनरेशे कुमान भावसिंहजी साथे पोतानी प्रत्रीने परणावी अने तेओने केटलोएक गरास आपी पोतानी राजशानीमांज राख्या.

सावरगढमां स्वस्थपणे वलत वितावनारा भावसिंडजीने त्यां माधवसिंड नामे कुमारनो जन्म थयो; तेओनी जम्मर साथे बुद्धि तथा पराक्रम पण वधतां गयां. झाळा भावसिंहजी सावरगढमांज स्वर्गवासी थया. त्यारवाद माधवसिंहजीए सावरगढना राजानी नारी रीते सेवा करी अने पराक्रमथी आजुवाजुनो केटळोएक प्रदेश प्राप्त करी उक्त राजधानीमां मेळवो दीयो, जेथो तेओना इउपर सावरगढना राजानो स्नेह दिवसे दिवसे वधवा छाग्यो; एथी राजसणीना मनमां एवी शंका थइ के "वस्तते विजयी माधवसिंह मारा पुत्र पासेथी राजगादी पढावो छेशे " आ वात झाळा माधवसिंहना सांभळवामां आवी; तेओ तुरतज सावरगढमांथी चाल्या जवानो संकल्प करी राजा पासे पोताना पांचसो स्वारो सिंहत रजा छवा गया; राजाए रहेवानो अति आग्रह कयों, छतां झाळा माधवसिंह रह्या निह अने त्यांथी बुन्दी जइ राज्यनी नोकरीमां दाखळ थया. तेओए वहादुरी अने निमकहळाळीथी बुन्दीनेरश शत्रुसाळनी सेवा वजावी अने वाहुवळथी केटळोएक मुळक स्वाधीन करी कि माधवसिंहजीने आहारे एक ळाखनी आगदानी वाळो " नानता " नो कि आग्रो आप्यो अने ज्यारे पोतानो अन्तिम समय प्राप्त थयो त्यारे राजकुमार भावसिंहजीनी अवस्था न्हानी होवाने की तेतुं कांई महान बुद्धिशाळी माधवसिंहजीना हाथमां सोंप्युं त्यारवाद तेणे आ असार

संसारथी विदायगीरी कोधी. माघवसिंहजीए केटलाएक वर्ष पर्यन्त बुन्दीनरेशना प्रतिनिवि तरीके राजकाज कर्युः

कोइएक वस्ते बुन्दीनां राणीजीए माधवासंहजो उपर नाराज थइ तेओने पराभव पमाहवा माटे राज्यना सैनिकोने आङ्का आपी. सैनिको राजमातानो आङ्का शिरःस्थापन करो छडवा
सज्ज थया. ए छोकोनी साथे मुकावको करवा माधवासंह जो के सर्व रीते समर्थ हता, छतां पोताना माछिकनी सेना सामे थइ निमकहरामनुं करुंक निह वोरतां तेओ तुरतज बुन्दीनो त्याग
करी कोटा तरफ रवाना थया. कीटाना राव भीमांसह सामे गया अने म्होटा मान सिहत तेओने
पोतानी राजधानीमां छइ आव्या. थोडा वस्तत पछी झाळा माधवासंहने कोटाना राजाए सेनापित
हनाव्या. माधवासहे छांवा वस्तत सूची कोटानरेज्ञानी सेवा वजावी अने साडासातसो गाम सिहत
होरगहनो किछो तथा वीजो केटकोएक प्रदेश जीती राव भीमसिंहना चरणकमळमां समर्पण कर्यो.

झाला माधवसिंहजी एक महान् वीरपुरुप हता. तेओए कोइ मसंगे मेत्राहना महाराणा साथे युद्ध कर्यु होय एवं नीचेना गीत उपरथी जणाय छे.

" अरमही ऐसे लहरूप आवीयो, केहेतो झालो कठे कठे, भलके भारे कठीडो भांगो, एहु माधव संग अठे; मेवाडा सामो मकवाणो, खगवाहोरण अडग खरो, बोलासमो वेधीओ बाणे, हरराजे अरसाम हरो; भाउ तणे केआ सत्रभूका, उडवे सूकालोह अथाह, बाह बाह राओ राण बखाणे, गाढां गरजीतो गजगाह."

महात्मा टॉड साद्देव छखे छे के सौराष्ट्र देशनी अंदर रहेला झालावाडमां हळवद नामे शरिरना सामान्य शक्तिवाळा सामन्तना वंश्वमा उत्पन्न थएला भावसिंहे न्हानी उम्मरमां पोताना सब्भाग्यनी परीक्षा करवा माटे केटलाएक विश्वास सेवको महिन पितृभूमिनो परित्याग करी वि-देश यात्रा आरंभी. ए समये बादशाह औरंगजेवना पुत्रो दिल्हीना सिद्दासननी प्राप्ति माटे मांहो-मांहे विद्देपी बनी ळहवा तत्पर थइ रह्मा हता. अनेक स्थळोना अनेक सरदारोए पोतपोताना भा-ग्यनी कमोटी करवा माटे जेम अमुक अमुक श्वाहजादानो पक्त स्वीकार्यो हतो, तेम झाळा भावसिंह पण एक शाहजादाना पक्षमां मळ्या. जे समये महाराज भीमिसिंह कोटाना राजिमहासने वेती वे सैंट्यद मंत्रीओनी सहायताथी पोताना पराक्रमने फेळावी रह्या हता. ते समये झाळा भावसिंहना पुत्र माधवसिंह कोटामां आच्या. जो के ए वस्तते तेओनो, साथे मात्र पच्चीशज घोडेस्वार हता तो पण महाराज भीमिसिंह तेओने माननीय झाळावंशमां जन्मेळा जाणो उत्तम रीते आदरसत्कार आप्यो अने पछोथो तेओनो साथे मित्रता वांधी एटळुंज निंह, पण पोताना कुमार अर्जुननी साथे माधवसिंहनो भिगनीनां छत्र करी तओने पोताना सबंधी बनाव्या अने थे। हा दिवस पछी एमने "नानता" नी जागिर आपो कोटानी समस्त सेनाना अवियति बनाव्या. कोटानरेश जे किछाना महेळोमां निवास करता, ते किछानुं अध्यक्षपद झाळा माथवसिंहनेज मळतुं. माधवसिंह कोटाना राज्यमां महान शक्ति अने सन्मान मेळव्युं.

ज्यारे माधविसहिनो स्वर्गवास थयो त्यारे तेओना आठ कुमारमाथी महोटा मदनसिंह कोटा ना फोजदार वन्या, तेओ हिम्मतिमह तथा पृथोसिंह नामे वे पुत्र थया. हिम्मतिमहेने कांइ सं-तित यह निह, पृथ्वीसिंहने जालपिंह तथा शिवसिंह नामे वे पुत्र थया, जालिवसिंहना पुत्र माध-विसह अने माधविसहिना पुत्र नानालाल (मदनसिंह वीजा) झालावाड अर्थात् " झालरापाटण" ना पहेला राजा थया.

राजपूतोना राज्योमां पवो रिवाज छे के प्रधान मंत्री, दीवान तथा प्रधान सेनापित आ-दिना पदपर जे नियत थया होय ते पद तेनी वंशपंपरानेज मळे छे. ए नियमने अनुपरी झाछा मदनसिंहना परलोक प्रयाण पछी तेना पुत्र झाला हिम्मतिसिंह कोटाना सेनापित वन्या + कहे छे के तेओए सं. १७९५ मां नाहरगढनो किल्ला जीती कोटाना राज्यमां मेळ्यो दोधो अने त्यारवाद सं. १८०० मां जयपुरनरेश तथा मराठाओं तरफथी कोटाने घेरो धालवा गं आव्यो त्यारे हिम्म-तिसिंहनी वहादुरीथीज कोठानुं राज्य वच्युं हतु.

कोटाना महाराव दुर्गनसालने सिंहना शिकारनो घणोज शोख इतो, ते पातानी राणीओने

⁺ कर्नल टॉडसाइने पोतानी टिपणीमां लख्युं छे. सं. १७९५ मां जे समये वाजीराव हाडोतीमां थइ हिन्दुस्थानपर अधिकार करवा आव्यो ते समये झाला हिम्प्रनिष्ट कोटा राज्यना फोजदार हता. एज वर्षमां तेने त्यां शिवसिंहनो तथा तेने वीजे वर्षे अर्थात् सं. १७९६ मां जालिम-सिंहनो जन्म थयो. १ ए घरो त्रण महिनाप्यन्त रह्यो हतो.

साथे टइ शिकार खेळवा जता, वीरांगनाओ मंचपर वैसो उत्तर रीते वन्द्क मारती, तेओंने मंचतुं सर्वोपरि स्यान आपवामां आवतुं. ज्यारे शिकारी छोको व्याघ्र आदिने घेरी मंच तरफ छइ आवता त्यारे ीरनारीओ तेनो वन्द्कनी गोळीओघी वध करतो.

कोटाना इतिहासमा लख्युं छे के एक दिवस शिकार खेलती वखते फोजदार झाला हिम्मतिसंह शिकार खेलवाना मच नीचे पृथ्वीपर उमा इता, तेवामां एक व्याघ्र सैनिकोधी अने शिकारीओथी अत्यन्त क्रोधायमान धइ विक्राल मुखने फाढतो त्यां आवी पहोंच्यो; पांतु राजा दुर्जनमाले ए वखने पण कोइने गोली छोडवानी आज्ञा आपी निह राजानी आज्ञा सिवाय ए व्याघ्र उपर गोली छाडवातु काइए साहस न कर्युं. लाग जोइ विकट आकृतिवाला वाघ्र महावेगथी हिम्पतिसंह उपर आक्रमण कर्युं; त्यारे तेओए ढालधी पोतानो रक्षा करी तुरतज वाघनो सामे हेकहो यायों अने तलवारना तीक्षण बहारधी तेना मस्तकना उभयानंड करी नांख्या राव दुर्जन-याल तथा सामन्तसमाज झाला हिम्पतिसंहतु असीम साहस जोइ तेओनी वीरताने वस्ता-णवा लाग्या.

पूर्वे मराटाओं ने साथेना युद्धमां मशंमनीय पराक्रम करनारा महाराव किशोरसिंह वि. सं. १७४२ मां अरकाटगढ नामना किल्लानो अधिकार मेळवती वखते मार्या गया; तेने वसनासिंह, रामसिंह नथा एरनाथसिंह नामे त्रण पुत्रो हना. खरो रीते कोटानो राजगादीना इकदार वीमन-सिंह गणाय, परंतु ते विनानो अ क्षा प्रमाणे मरेटाओं साथेना युद्धमां उपस्थित निर्ध थवाने लोधे तेनो राजगादीनो हक नाबूद करवामां आव्यो हतो. किशोरसिंहना परण पछो महाराव गमिन्ह बोटानी गादीए बेटा विमनसिंहने "आणता" नामनु स्थान मळ्युं हतुं. तेना पुत्र पृथीसिंह थया, पृथीसिंहना पुत्र अभीतिमह अने अजोतिसिंहना छत्रसाल, गुमानसिंह तथा राजसिंह नामे इण पुत्र थया.

अनि म अवस्थाने माप्त थएला अपुत्र महाराव दुर्जनसाले आणताना सामन्त विसनिसंह-ना पात्र हृद्ध अजीतिसंह दिद्यमान छना प्रपात्र छत्रमालने गोड लीधा वाद स्वर्गवास कर्यो. जो के दुर्जनमाले छत्रमालने पोताना पुत्र तथा दोट नी राजगादीना भविष्यत् उत्तराधिकारी तरीके फारेर वर्रो; सामन्त्रमाञ्च पण ए दातमां सम्मति आपी; परंतु ज्यारे दुर्जनमाल वेकुंठवामी प्रया, त्यारं पोजदार झाला हिम्पनिसंह पोतानी प्रवल शक्तिथी ए व्यवस्थाने व्यर्थ करी दीधी; ए वखते आणताना दृद्ध राजा अजीतसिंह जीवता हता. हिम्मतिसिंह झालाए ए अजीतिसिंहनो पक्ष छइ सर्व सामन्तो सन्मुख कहुं के—" पुत्रने राजितळक थाय अने विता तावेदार प्रजानी पेठे तेनी आज्ञानुं पाळन करे एवं कदी वनी शकतुं नथी. ए वात स्त्रभावे विपरीत छे." कोनी हिम्मत छे के झाला हिम्मतिसिंह सामुं जडवुं उठावी शके ? कोइथी कांइ थड शक्युं नहि. हिम्मतिसिंह दृद्ध राजा अजीतिसिंहने कोटाना सिंहासनपर मुशोभित कर्या. ए अजीतिसिंह मात्र अडीवर्ष राज्य कर्युं; एनी ह्यातीमांज झाला हिम्मतिसिंह परलोकप्रयाण कर्युं.

महाराव अजितिसँहनो स्वर्गवास थतां तेना कुमार छत्रसाछ कोटानी गादीए वेटा अने फोजदारतुं पद झाला हिम्मतिसँहना भत्रीजा जािछमिसँहने मळ्युं. ए वसने तेओनी उम्मर एकवीश वर्षनी हती. अवद्क्षीना आक्रमणथी मराटा वीरोने तेज रहित तथा उत्साहहीन वनी गएछा जोइ आमेरना राजा कळवाहा माधवाँसह वि. सं. १८१७ मां पोतानी समस्त सेनाने सज्ज करी समस्त हाटाओने स्वाधीन करवा उद्यत थया अने उनियारा, छास्तेरी तथा पाळीघाट वेगेरे स्थानोपर विजय मेळवता मेळवता कोटापर चटी आव्या. जाितअभिमानने जाळववा माटे हाटाओ पण हिम्मतथी आगळ वध्या. भटवाटा नामना स्थानमां व्यूह रचना थवा छागी. कच्छनाहातुं सैन्य म्होटी संख्यामां हतुं, परंतु तेओना अश्व धाकी गया हता. हाडाओ मात्र पांचसोज हता, परंतु ते तमाम घोटस्वार, तथा घोटाओ पण तेज होवाने ळीघे विजयनी अभिक्रापाथी कळवाहाना सैन्यमां कूदी पटया; कळवाहा छोकोए हाटाओना मथम आक्रमणने स्हेजे सहन करी पोताना व्यूहने बीखावा दीधो निहे. कळवाहा माथवाँसँहे तुरतज रणक्षेत्रमां नवी सेना उभी करी. घोडेस्वारोनो अने पायदळनो भेटो थवा रक्तनी नदी चाळो निकळी, युद्धे भयंकर स्वरूप धारण कर्युं; त्यारे झाळा हिम्मतिसँहना पोष्य (गोद क्रीधेळा) पुत्र वीरवर युवान जाळिमसिँहे घोडायी पैदळरूपे पोतानी सेना सिहत असीम साहस अने वीरतापूर्वक शत्रुओ उपर आक्रमण कर्युं. जाळिमसिँहना जीवननी प्रसिद्धि थवानो आ पहेळो अवसर हता.

आ समये महाराष्ट्रनेता मल्हारराव होल्करनो पढाव भटवाडाक्षेत्रनी समीपेज पडयो हतो; परंतु पाणीपतना युद्ध पछी ए एटळो वधो निर्वळ वनी गयो हतो के ते कोइ रीते वेमांथी एकने पण सहायता आपी शक्यो निह, ज्यारे कछवाहा माधवासिंहनी जीतना चिन्हो जणावा छाग्यां, त्यारे बुद्धिमान जालिमसिंहे घोडेस्वार घइ अत्यंत त्वराथी होल्करना पढावमां भवेश कर्यो अने होल्कर पासे माधना करी के " जो आप युद्ध करवा न इच्छता हो तो एकवार आपनी फोज छइ मा शुभ योगे माधवसिंहना ढेराने छूंटी छीओ." मरहाररावे जालिमसिंहनी आ वातने प्रेमपू-र्वक मान्य राखी. मरेठाओनुं आक्रमण यतांज कछवाहानुं सैन्य भय पामी रणभूमिथी भागी गयुं. मा पखते कछवाहानी पचरंगी पताका कोटानी सेनाने हाथ आवी गइ. कोटाना कविए झाला जाकिमसिंहनी वीरताना घणां कान्यो वनावेलां छे; तेमां एक स्थळे छएयुं छे.

"जङ्ग भटवाडारो जीतनारो जालिंम झाला रङ्ग एक रङ्ग चढा, रङ्ग पँच रङ्गका."

आनो अर्थ ए छे के भटवाडाना युद्धमां जालिमसिंहना सौभाग्यनो उदय थयो; ए रणक्षेत्रमां एमणे एक रंगधी रंगाएका रही पचरंग पताकाने दावी दीधी अर्थात् आमेरनी राज-पताका रुधिरथी रंगाइ गइ.

ज समये नादिरशाह भारतनो विजय करवा आन्यो, ए समये दिन्हीना सिंहासनपर महम्मदशाह अने कोटाना सिंहासनपर महाराव दुर्जनसाळ वेटा झाळा जाळिमसिंहना जन्मथी आरभी
कमानुसार पांच राजाओं कोटाना सिंहासनपर वेटा अने छट्टा राजाना राज्याभिषेक पर्यन्त जाळिमिंगिटजी जीवता हता. ए छ राजाओमांना एक राजा महाराव किशोरसिंहे ळगभग पचाश वर्ष
पर्यन्त राज्य कर्यु. जो के जाळिमसिंह एक आंखहीन हता, तो पण भटवाडाना रणक्षेत्रमां तेओए
सहुची परेळा जेवी असीम नीतिक्रता अने वीरता वतावी तेवीज तेनी राजनैतिक दृष्टि छांवा वखत
सुधी एवीन एवी बनी रही.

थोडा वरवत पछी महाराव छत्रसाल नी स्वर्गवासी यतां गुमानासँहनी कोटानी गादीए देवा. त्यारवाद अमुक दिवम पछी जालिमाँमें अधिक शक्ति अने प्रमुता देवाडवाथी ते महाराव गुमानिमहिनी आंखोमां खटकवा लाग्या. गुमानिमहि झाला जालिमाँमें उपर एटला वया कोवाय-मान पया के तेणे तेओना मिपतामह मायवाँसहने पोताना पूर्वज महाराव भीमिने आपेली नानिकानी जागीर छीनवी लीधी. ए समये कोटानो राजवश बुन्होना आधीन मामन्तोए शामन कराता

१ जे वर्षमां नादिरशाहे भारतपर आक्रमण कर्यु, एन वर्षमां जाछिपसिंहनो जन्म धयो अने अबदावलीना आक्रमण समये तेओए राजनैतिक रंगभृषिमां प्रथम प्रवेश कर्यो.

२ नानतानो प्रदेश चम्बल नदीने किनारे छे अने ए हालपण झाला कुळना तावामां छे.

देशक्षे गणातो हतो. महाराज ग्रमानसिंहे फोजदारनी पदनी तथा नानतानी जागीर जालिपसिंहना मामा वाकडोत (वाळावत) जातिना भूपतिसहने आपी दीधी.

झाळा जालिमसिंहे ए अपमान स्थान कोटाना गज्यने छोदी अन्य स्थले जवानी इच्छा करी, भटवाडानी लढाइथी आमेरतुं राज्यद्वार तेने माटे प्रथमथीज वंघ हुतुः मारवाड राज्यने प्रथम-थीज तेओए निरुपयोगी मानेछं इतुं. आ वखते तेओना जातिवन्द्र मेवाडना महाराणानी समा-मां मुख्य सरदारतुं मान भोगवता इता. मेवाडना सामन्तो उभय दळमां विभक्त थया, तेमांतुं एक दक्र राणा अरिसिंहना पक्षमां मळ्युं अने वीज़ुं दल कुत्रिम राणाना पक्षमां मळी राणा अरिसिंहने सिंहासनपर बेसवामां अवरोध करतुं हुतुं. मेवाडना प्रथम श्रेणिना सोळ सामन्तोमांना देलवाडाना झाला सरदारे राणा अरिसिंहनो पक्ष लइ तन मेबाडना सिंहासनपर वेसाडी दोघा झाला सामन्तो-नी सहायताथी पिताना सिंहासनने पामेळा राणा अश्सिंह तेओनी प्रवळ शक्ति तथा प्रताप विरुद्ध कदी पण थया नहि झाला सामन्तोए राणाना शरीरनी रक्षा माटे वेतनभोगी विजातीय सैनिकोने नियुक्त कर्यो. झाळा सरदार महाराणानो मत ळीघा सिवाय पातानीज इच्छा प्रमाणे शक्तिसंपन्न मनुष्योने जागिर आपता इता. राणा अरिसिंहे पातानी खास जमीन तथा विद्वेषी मनुष्योना तावामां रहेळी जागीरा छीनवी राज्यनी साथे मेळवी दीधी. जेथी राज्यनी आवक अत्यन्त दृद्धि पामी. झाळा सामन्तोनी इच्छामां अवरोध करवा अथवातो तेओने आपत्तिरुप थवा कोइ हाम भीडी श-क्या नहि. आ अरसामां कोटानां फोजदार पदथी अछग कराएछा झाछा जाळिमसिंह पोताना भाग्यनी परीक्षा करवा माटे मेवाडमां आन्या. महाराणा अरिसिंहने जालिमसिंहनी वीरता अने नीति-निपुणता सबंधी प्रथमथीज सूचना मळी गइ इतो. तेथी तेओए आवतांवेंतज तेओने मानसहित पोता पासे राख्या. थोढाज वखतमां उत्तमोत्तम सद्गुणोथी झाळा जाळिमसिंह महाराणाना पीतिपात्र अने विश्वासभाजन थइ पड्या. महाराणा अरिसिंह झाला सामन्तोमां रमकडां रुप वनी रह्या हता, परंतु कोइ प्रकारे तेओना हाथथी पोतानो उद्धार न यवाथो मनमानेमनमां विष्ण वेदनाने पण अ-नुभवता इता, तेवामां जालिमसिंइजीनुं आगमन थयुं. मणाराणाए वेओने तमाम रीते योग्य जाणी पोताना उद्धारनो भार सींप्यो. जालिमसिंहे तुरतज चातुर्य, साहस, नीतिनिपुणता अने वीरताथी सामन्तोपर आक्रमण करी पहाराणा अरिसिंहने आपत्तिना मुखथी वाहेर काट्या. ए युद्धमां अन्य झाळा सापन्तोए पोतानां पाण तजी दीघां. महाराणाए जालिमसिंहनी सहायताथी सम्पूर्ण स्वा-धीनता मेळवी पोतानी प्रभुताथी सामन्तोना अन्यायनो उच्छेद कर्यो, अने सहायक जालिमसिंहने

" राजराणा " नी उपाधि तथा मेवाहनी दक्षिण सीमाताळो चित्रखाडिया (जनेरखेडा) नामनो **१दे**श पुरस्कारमां आप्यो**. ए समये झाळा जालिमिन मेवादना द्वितीयश्रेणीना** थया, परंतु तेओना वंशधर के जे सिंहासनना अभिलापी हता. तेना पक्षमां मळेला केटलाएक सामन्तो महाराणाना वथ माटे यत्न करवा लाग्या. पुनः विद्वेपनो अग्नि प्रज्वलित थयो. विद्रोही सामन्तोष मराठाओनी सहायताथी कृत्रिम राणाने मेवाडना सिंहासनपर वेसाडवा उद्योग आदर्थो. झाला जालिमसिंहनी सम्मतिथी राणा असिंसेंहे एक म्होद्धं सैन्य एकत्र करी बिद्रोही सामन्ती तथा पराठाओंनी साथे युद्ध कर्युः + जे समये जय छाभनी आशा उद्भवो एज समये दुर्भाग्यने छीधे शतुओनी जीत धतां झाला जालिमभिंह घायळ अवस्थाए मरेठाओने हाथ आवी गया. सुविख्यात महाराष्ट्र सेनापति अंवाजी इंगळियाना पिता ज्यंवकरावे तेओने केद करी छीया. छेवटे ए ज्यंवक-राव साये गाढ मित्रता वांधी जाळिमसिंह मुक्त थया अने ज्यारे पूरेपूरी आरोग्यता प्राप्त थइ, त्यारे तेओए निश्रय कर्यों के छप्तमताप राणाने तावे रही भाग्यना उदयनी इच्छा राखवी ए व्यर्थ छे. पुरलाज माटे तेओ, वधारे वस्वत उदयपुरमां निह रहेतां पोताना भविष्यद् भाग्यना सहचर पंडित रालाजी बङ्खालनी साथे फरी कोटामां आच्या. बुकायनीनी लडाइमां घणीखरी महाराष्ट्र सेनाना मायी जवाथी तेनो अधिपित होल्कर मल्हारराव अत्यन्त साहसहीन यह गयो हतो, तो पण विज-यनी अभिलापाधी तेणे द्रोटाने तावे करवा माटे प्रयाण कर्यु. आपत्तिने उतावळथी सन्मुख आ-वती जोइ महाराव गुमानिमंह पोताना पक्षने निर्वळ घारी होल्कर साथे सन्धि करवानो निश्चय कर्यों अने एटला माटे फोजदार भूपतसिंहने मल्हाररावना हेरामां मोकल्या, परंतु ए कार्यसिद्धि करी शक्या निट.

राजनैतिक घनघोर वादळवृन्दयी छवाएला कोटा राज्यना भाग्यस्पी आकाशने निर्मळ बनाववा माटे झाला जालिमसिंह जो के कोटामां आवी पहेंच्या हना, परंतु एमना मत्ये हजी महा-राव गुमानिम्हनो गुस्सो जरा पण ओछो थयो नहोतो. तेओने अपराधनी क्षमा आपवामां न आही, राजसभामां जवा आववा माटे पण मंजुरी न मळी. अपराधनी क्षमा आपवी तो एक बाजु रही, परंतु महागव गुमानिसिंहे तेओने कवजे करी लीधा.

मराटाओए कोटानी दक्षिण मीमाए आवी बुकायनी पदशेना किल्लाने घेरी लीघो. हाडा

⁺ आ युद्धनी दात राणाना (उदयपुरना) इनिहासमां अमोए स्पष्टताची छरी छे.

सामन्त माधवर्सिंह चारसो सैनिको सहित शत्रुओ सामे थया अने वहुज वहादुरीथी छड्या; पण विजयने पाप्त करी शक्या निह. ए वखते मरेठाओए बुकायनीने स्वाघीन करी सुकेत नामना किछाने घेर्यो. महाराव ग्रमानार्सेंह माथे आवी महान् विपत्ति आवी पडतां झाळा जाळिमार्सिंह वगर बोलाव्ये तेओना पासे जइ पहींच्या अने धीरे घीरे तेओए पातानी तमाम इकीकतथी महाराव ग्रमानर्सिंहने वाकेफ कर्या. हवे ग्रमानर्सिंहने वरावर खात्री यह के-" एकळा जाळिमर्सिंहनांज भुजवल्थी तथा राजनीतिथी भटवाडानी छडाइमां हाडाओनी सेनाए जीत मेळवी हती. एनीज राज-नीतिद्वाराए आमेरनरेशनी स्वाधीनतारुपी सांकळ्यी कोटान्नं राज्य छांवा वखतने माटे मक्त थवा पाम्युं इतुं, अने जे होल्कर मल्हारराव आजे कोटाने स्वाधीन करवा माटे वीररूपे आगळ वधी रह्यों छे, एन होल्करनी सहायताथी जालिमर्सिह राज्यकोटानुं रक्षण करी चूक्या छे. " तुरतज जालिमसिंहने तेना तमाम अपराधनी क्षमा आपी होल्कर साथे सन्धि स्थापवाद्वं काम सोंप्यं. जालिमसिंहे महाराष्ट्रीओना डेरामां दाखल यह अने मरहाररावनी मुलाकात लीघो, अने सन्वि सबन्धी वातचीत करतां संतोषकारक फळनी प्राप्ति करी महाराव ग्रुमानसिंह तरफथी छ छाख रुपिआ मळतां कोटाने छोडी चाल्या जवानुं होलकर मल्हाररावे वचन आप्युं. झाला जालिमिसंह-द्वारा ए कोटाना रक्षण सवन्धी कार्यने सिद्ध थएछं जोइ फरी तेओनुं फोजदारनुं पद आप्युं. तेनी साथे छीनवी लीधेली जागिर पण प्रसन्नता पूर्वक तेओए पाछी आपो. सन्धि स्थापनमां अस-मर्थ बनेला भूपतर्सिंहने उक्त पदथी तथा जागीरथी अलग करवामां आव्या. जे समये जालिमसिंहजी फरी फोजदारना पद्पर नियत थया, त्यारवाद अमुक वखत पछी रोगे ग्रस।एळा महाराव ग्रमान-सिंहे जीवननी आशा छोडी पोताना दश वर्षना कुमार उमेदर्सिहने सर्व सामन्तो सन्मुख कोटानुं संरक्षण करनार झाला जालिमार्सिइनी गोदमां वेसाडी दीधा अने वधानी रुवरुमां ए जालिमसिंइनी उमेदसिंहना प्रतिनिधि तरीके योजना करी.

ति. सं. १८२७ मां महाराव गुमानसिंहतुं मृत्यु यतां उम्मेदसिंह कोटानी गादीए बेटा. राजपूत जातिमां निरंतरने माटे एवे। नियम छ के ज्यारे कोइ नवीन राजा राजसिंहासनपर बेसे, त्यारे तेने तुरतज दिग्विजय अर्थे गयाण करवुं पडे छ अने ते युद्धभूमिनां विजय मेळवी अभिषे-कनी क्रियाने पूर्ण करे छे. ए प्राचीन नियमने अनुसरी महाराव उम्मेदसिंहे पोतानों सेना सिंहत नरवर राजवंशीय केळवाडाना स्वामी साथे युद्ध करी उक्त मदेशने कोटा राज्यमां मेळवी दोघो. ए काम शास्त्रा जालिमसिंहे उम्मेदसिंहना प्रतिनिधि तरीके बहुज वखाणवा क्यायक कर्युं. त्यारबाद

अमुक समय पछी तेओ विपत्तिमां यावी पट्या. क्ट राजनीतिने जाणनारा जाळिपसिंह एक उंचा दरज्ञाना इता अने एथीज तेओनी मवल शक्तिए यावज्ञीवन यथार्थ परिचय आप्यो. तेओ स्वर्गस्य महाराव गुमानिमहना विश्वास मित्र तरीके मनाता इता, परन्तु कोटाना सामन्त्रोनो पेम तेओना उपर विलक्षल न हतो. राजकीय माणसनी दृष्टिमां पण तेओ खटकता हुना.

जािक्रमिस्हितो खरेखरो होहो फोजदार अधीत सेनापितनो हतो; जे किञ्चामां महाराव हम्मेद्सिह रहेता ए किञ्चातुं अध्यक्षपणुं तेओ भोगवता हता. राज्यना शासनिवभागमां हस्तक्षेप करवो ए तेना हुद्दाधी विपरीत हतुं. दिवानी कामकाजमां दाखळ करवानो तेओने विळक्कळ हक न हतो. महाराज ग्रुमानिसहिना चखतमां एक नोतिनिपुण अखेराज नामे दोवान हता. तेणे कोटाना राज्यनी अनेक प्रकार जन्नित करी हती. महाराव ग्रुमानिसहिना मरण प्रजी तुरतमां ए अखेराजने अन्यायथी मारी नांखवामां आज्ञा. त्यारवाद झाळा जाळिमिसह सेनापितना अधिकार उपरांत शामनिवभाग (दिवानी) नो अधिकार प्राप्त करवा ज्ञ्चत थया. ए वखते तेओना विरोधीओ जो के वहु थोडा हता, तोपण ए विषम विषत्तिओने दूर कर्या विना पोतानी अभिकार पृणे करी शवया नहि.

महाराय गुमानसिंहना मरण पछी झालाजालिमिनिह राजमितिनिध रूपे मिसद थया त्यारे समर तथा शासन विभागना समग्र अधिकारने स्वाधीन करवा उद्यत छया त्यारे विरोधी सामन्तो बोली उठ्या के " स्वर्गस्थ महाराव गुमानसिंह जालिमिनिहने आहला अधिकार आप्या नथी." ए सामन्तोमां महाराज स्वरूपसिंह तथा बाङ्क डोत (बालावत) भूपतिसिंह पण हता. ए उपरांत महाराव उम्मेदिसिंहना दूधभाइ यशकर्ण पण जालिमिनिहना सामा पक्षमां हता. परंतु ए यशकर्णेहारा एज चतुर जालिमिनिहे महाराज स्वरूपसिंहने मारी नंसाव्या. भूपतिसिंह माण वह भाग्यो. न्यायिनपुण झाला जालिमिनिहे बांदाथीज वांदाने उम्बेडो काड्यो. ए जोइ राज्यनां तमाम माणसो दरने लीधे दवाइ गयां. महाराज स्वरूपिनिह, धाभाइ पोकर्ण अने बाङ्क डोतना सामन्त ए अणे जालिमिनिहना मधान शत्रु हता. जालिमिनिहे पथमतो यशकर्णने हस्तागत बरी एना मारफतज पोताना उदेशने पूर्ण कर्यो अने त्यारवाद तेने पण देशनिकाल कर्यो. ए जोइ अन्य शत्रुसमुदाय पण अनिष्ठनी आर्शकार्यी खटाट करतां अटकी गयो. अपमान पामेला यशकर्ण जरपुरमां जइ पाणस्याग कर्यो बोदाना केटलाएक सामन्तो पोतपोतानी जागिर छोडी भागी गया अने जयपुर तथा जोधपुरना राजाओनो आश्रार लड झाला जालिमिनिहने दंढ देवा

P)Cq

तत्पर धया, परंतु ए अरसामां मराठाओ तमाम रजवाहामां अनेक प्रकारना उपद्रव मचावी रहा, जेथी कोइए जालिमसिंह सामे जवा हाम भीडी निह. कार्यक्रशळ जालिमसिंह जयपुर तथा जोध-पुरना राजाओना कोटाना विरोधी सामन्तोने आश्रय न आपवा स्चट्युं. निराधार सामन्तो निराध वनी विदेशमां रखडता रहवता प्राणत्याग करवा लाग्या. केटलाएक कोटामां आवी पोतानी जागीरो पाछी आपवा माटे जालिमसिंहने कहेवा लाग्या. जालिमसिंह द्या लावी ए लोकोने आजीविका अधे थोडी थाडी जमीन आपी अने वाकीनी जागीरो खालसा करी. कोटानो उद्धत सामन्तसमाज एकदम जालिमसिंहने वश थयो निह.

जालिमसिंह विरुद्ध वीजीवार पट्यन्त्रजालनो विस्तार थयो. ए पहला करतां अत्य-न्त मबळ अने दुर्भेच हतो. एतुं नेतापद आधुन देशना सामन्त देवसिंहे ग्रहण कर्युः, तेणे घगा रुपिया खरची पोताना किञ्चाने युद्धनी सामग्रोथी सज्ज कर्यो अने समस्त विद्रोही सामन्तोने ए किछामां भेळा करी झाला जालिमसिंह साथे शत्रुता वांबी. आ अरसामा वादशाहीपताप हीन-त्वने प्राप्त थयो हतो, मराठाओं चारे बाजु ठूंटफाट चलावता हता, तेओनी साथे एक प्रौंसेज नाम-नो पठाण बीर मळेलो इतो. झाला जालिमासिंहे कोटानी सेनाथी विद्रोहो सामन्तोने जीतवातुं अशक्य धारी ए कार्यमां पटाणवीर मौसेजने मेर्यो. मौसेजे लक्ष्मीनी लालसाथी तुरतज आधुन-पर घेरो घाल्यो। किल्लानो अंदर रहेला कोटानां सामन्तोए वहार निकळी युद्ध कर्युः परंतु तेओ जय मेळवी शक्या नहि. मौसेजे आथूनना किछापर घणां छांवा वखत सथौ घेरो राख्या. कि-छानी अंदर खावानी चीनो खळास थइ गइ त्यारे तपाम सामन्तो पाण वचाववानी चेष्टा करवा काम्या. छेवटे जाकिमसिंहनी सम्मतिथी मौसेने घेरेका सामन्तोने सुखपूनक किछायी वाहर निकळवा दोधा. निराज्ञा वनेला ए विद्रोहीओ अन्य राज्यने आश्रये जड़ रह्या; तेओना मुख्य नेताए विदेशमां वसी दुःखथी प्राणने तजी दीया. महा निपुण झाला जालिमासिंहे आ रीते वीजा पह्यन्त्रने पण छिन्नभिन्न करी नांख्यो. त्यारवाद केटलाएक वर्षे पछी आधूनवाळा देवसि-हना पुत्रोए विदेशयो कोटामां आवी जालिमासिंह पासे पोतानुं निरपरावीपणुं मगट कर्यु अने आश्रय नाम्यो. न्याय निपुण जालिमसिंहे हृदयमां दया लाशी तेओने पंदर हजार रुपियानी आ-षदानीवाळो " नामोलिया" नामनो प्रदेश आप्यो अने सामान्य तथा इलका दरज्जाना जे $\frac{\pi}{2}$ सामन्तो विद्रोही षया हता, तेओने पण क्षमापूर्वक राज्यमां रहेवानी परवानगी आपी; परंतु कार्य-

१ आधून प्रदेशनी आमदानी वार्षिक साठ हजार रुपियानी हती.

चतुर जािकमिं ए छोकोनी शक्ति तथा भूमिने एटछी वधी घटाडी दोधी के तेओ फरीने कोइ मकारतुं अनिष्ट करवा उद्यत घइ शके निह.

वि. सं. १८५६ मां कोटाना तमाम सामन्तो के जेओनी जागीरी खालसा थएली हती तेओए सामन्त वहादुरसिंहना अध्यक्षपणा नीचे एकत्र यह झाला जालिमसिंह तथा तेना मित्र लाजीने मारवानी युक्ति रची; आ कार्य अत्यन्त ग्रप्त रीते करवामां आव्युं हतुं; तमाम सामन्तो कार्यसिद्धिने अर्थे दरवारमां दाखल थया; एवामां तेओनी प्रपंचजाल जालिमसिंहना जाणवामां जावी गइ. जालिमसिंहे पोतानी रक्षा भाटे एज क्षणे घोडेस्वारनी दुकडी बोलावी लीधी. तेओना लपर सामन्तोए आक्रमण कर्यु के तुरतज घोडेस्वारोए तलवारो काढी. सामन्तो भयभीत बनी भारया. मोहमेननो मालिक वहादुरसिंह चंवल नदीने किनारे रहेला हाडा जातिना कुलदेव केशवराय-जीना मन्दिरमां जइ भरायो. तेणे जाण्यु के प्राचीन रीतिने अनुसरी केशवरायजीना आश्रयमां आवेला मने कोइ केद करनार नथी. परंतु प्रतापी झाला जालिमे मन्दिरनी पुरातन प्रथापर पग मूकी परादुरसिंहने केद कराव्यो अने एज वखते मारी नंखाच्यो. भागेला सामन्तोमांथी पण ए वखते गेटलाएक पकडाया हता.

केटलाएक हुं बहे छुं एम छ के, जालिमिसिंह मोहसेनना सामन्त बहादुरिसहिनो वय केवल पोताना स्वार्यमतेज कर्यो न हतो. एमां महाराव उम्मेदिसिंहनो स्वार्य पण समाएलो हतो. कारण के व्हादुरिसिंहनी इच्छा राव उम्मेदिसिंहने पारी तेना न्हाना भाइने कोटानी राजगादी आपवानी हती. ए समय कोटाना राजपित्वारमां महाराव उम्मेदिसिंहना काका राजिमिंह अने गोवर्यनिसिंह तथा गो-पालिसिंह नामे वे भाइ जीवता हता. ज्यारे आधुनना मामन्त देविसिंह विद्रोही यनी जालिमिसिंहने मारवानो उद्योग वर्षो हतो त्यारे गोवर्धनिसिंह तथा गोपालिसिंह पण राज्यिसिंहासनना अभिलापी दनी एमा लामेल पया हता. झाला जालिमिसिंह ए वने भाइने केट करो लीधा हता; तेमां रिटा गोवर्धनिसिंह दण वर्ष केटना रही नरण पाम्या अने गोपालिसिंह पण पण दिवस केट मोगवी परियोक क्याण कर्यु. कोटानरेयाना काका राजिसिंह कोइ खटणटमां भाग लेना निह, जेथी तेओना तरफ जालिमिसिंह नजर पण नांग्दना निह.

यार्नल टॉडमाहेब पण लांचे छे के जालियांमहिनी शक्ति हटाववा माटे नेमज नेना जीवनने नष्ट पारवा माटे विरोधी जनीए अटार बन्दन उद्योग कर्यो। परंतु ने नमाममांथी बुद्धिवळने लीवे जालिय-निंद पदी गया। एए दादने एसे दनाव बन्यों के न्हाना राजकुनारनी मानाए जालियांमहिने राज- महेलमां वोलाव्या. जालिमसिंह राजमाताना वोलाववाथी तेना महेलना समीपवर्ती गृहमां जह पर्होंच्या. ए समये घणी राजपूत वीरांगनाओए नागी तलवारो साथे अने बल्लोअल्लोथी सज्ज यह तुरतज आक्रमण कर्यु अने तुरतज जालिमसिंहने वांथी केद करी लीवा. राजपूत रमणीओनां वीरचरित्रथी जालिमसिंह वरावर वाकेफगार हता; जेथी तेओए जीवननी आगा लोडी दीवी. राजपूत ताणीओ तेओनां मुख्य मुख्य जीवनचरित्र सवन्धी पश्लो करवा लागी. ए ल्लीवर्गनो एवो इरादो हतो के पश्लनो उत्तर आपती वलते अचानक एने मारी नांखशुं. तेवामां भाग्ययोगे पटराणीनी प्रधान दासी महाकालीनी मूर्ति धारण करी त्यां आवी; तेणीए जालिमसिंहने अनेक तिरस्कार अने कटु-वचनोथी थिकारी वलपूर्वक वधी राजपूताणीओने क्रमानुसार त्यांथी द्र करी. आ रीते उक्त दासीनां चातुर्यथीज जालिमसिंह जीवता रहाा.

इतिहासवेत्ता महात्मा टॉडसाहेव छखे छे के—आछा जालिमसिंह विरुद्ध क्रमानुसार जेटली खटपट रचाइ, तेमां शत्रुनो एके मनोरथ सफळ थयो निंह, जो ए वखते जालिमसिंहनी जगोए वीजो कोइ उद्धत आदमी होत तो जरुर ते विद्रोहीओने वथारे हेरान कर्या सिवाय रहेत निंह, परंतु प्रतापी जालिमना मनमां एखुं कृत्य करवानी कटी पण इच्छा न थइ, तेओ हम्मेशां एक सुरक्षित विशाल गृहमां शयन करता हता, तेओना रक्षको अत्यंत चतुर हता. ए रक्षकोने जालिमसिंह तरफथी पुरता पगार उपरांत पोशाक पण आपवामां आवता. तमाम विभागोपर तीक्ष्ण दृष्टिथी जोनारा सावधान जालिमसिंह कोइनो पूरो विश्वास करता निंह, न्यायनिपुणता अने विलक्षणताथो तेओ राज्यना दरेक विभागोपर दृष्टि राखता हता, एथी चारे तरफ अत्याचार, उपद्रव, राजनैतिक गोटाळो, खटपट तथा म्होटां महोटां युद्धो थयां छतां अर्ध शतक पर्यन्त पोताना प्रवल्ल पतापथी अने अतुल शक्तिथी ए महानुभावे राजशकाज कर्यु, खरी रीते महाराज राणा जालिमसिंहज कोटाना धणी हता. महाराव उमेदिसिंह तेओना हा-धमां रमकडां रूप वनी राजसिंहासन पर वेटा हता. जालिमसिंह पोतानी राजनैतिक उंची अभिलापा पूर्ण करवा माटे कोटा राज्यनी धन, संपत्ति अने सेनानी शान्ति ए सर्वने नष्ट करी नांख्यां.

वि. सं. १८२१ मां ज्यारे मेवाडना महाराणा साथे पोतानी वातचीत यह त्यारथी आ-रंभो वि. सं. १८५६ सूधीमां कोटामां जेवो अधिकार जमाव्यो हतो तेवोज अधिकार मेवाडपर जमाववा माटे राजराणा जालिमासिंह अनेक मकारनी चेष्टा करी रह्या हता. तेओए कोटा राज्यना खिडू वर्ग पर जे कर नांख्या हता, ते वि. सं. १८४० मां दृद्धि पामेला अत्याचार तथा उपद्रवने हीषे निर्धन बनेला कृषिवलो आपवा असमर्थ थया. जालिमसिंहना अनुचरो कर वस्ल करवा जती वखते कृषिवलोने निर्धन जोइ तेओनां हळ तथा वळद वगेरे करने वदले उपाडी जवा लाग्या. तमाम कृषिवलो जीवननी आशा छोडी वेठा, केटलाएक भूखे मरवा लाग्या अने केटलाएक भागी गया; परंतु ए अरसामां चारे तरफथी रजवाडानी अंदर आपित्तनो समुद्र उल्टेलो होवाथी तेओने कोइए आधार न आप्यो. जालिमसिंहे तमाम खेडुतोनी वापुकी जमीन तथा खेतीनां समस्त साधन छीनवी लीघां हतां. खेडु लोकोए बीजो एके उपाय न स्जतां झाला जालिमसिंहनुं दासत्व स्वीकार्यु अने तेओना तरफथी अमुक्त पगार लड़ खेड करवा मांडो. आ रीते जालिमसिंहनं दासत्व स्वीकार्यु अने तेओना तरफथी अमुक्त पगार लड़ खेड करवा मांडो. आ रीते जालिमसिंहने महाराव—एमेटसिंहना तमाम क्षेत्रोनुं अन्वर्य स्वाधीन करी थोडो वखत निह खेडा-एला क्षेत्रोमां फरी कृषिकार्य घर करान्युं अने पोते कृषिवलपितना पदपर अधिष्ठित थया.

जो के दीर्घदर्शी जालिमिसिंह मेवाडपर पोतानी सत्ता प्रसारवा माटे अनेक चेष्टाओ करी हती अने एज उद्देशथी तेणे कोटानी उपर कहा प्रमाणे दशा करी दीधी; परंतु अन्ते एक भयंकर घटनाए तेओनी उच्च अभिलापामां विष्न नांख्युं. महाराष्ट्रनेता इंगलिया वशनी साथ जालिमिसिं- हनी गाढ मित्रता हती. ए इंगलियाना वंशज वालारावने महाराणाए केद करी उदयपुरना कारा-गारमां राख्या हता; एनो उद्धार करवा माटे जालिमिसिंह त्यां गया, ए वखते महाराणा तेओना उपर अत्यंत गुस्से थया. आथी महाराणाने हस्तगत करी मेवाडपर आविष्टय जमाववानुं आशा- वृक्ष प्राला जालिमिसिंहना इदयवागमांथी एकदम मूळ सहित उखडी गयुं. अने त्यारेज तेओने खबर पडी के स्वार्थनी सिद्धि माटे पोते कोटानरेशनुं केटलुं अहित कर्यु छे, ए अहितनुं निवारण करवा माटे तेओ सावधानपणे तुरतज नवीन अनुष्टान करवामां प्रदत्त यया.

वि. सं. १८५६ मां मोसेन (मोहसेन) ना सामन्त वहादुरसिंहद्वाराए खटपट जाग्या पहेलां जालिमसिंहे किल्लाना महेलमां निवास कर्यों हतो. परंतु. सं. १८६० मां वालारावने परतो मृत्री मेवाहधी पाला कोटे आवतां ए महेलमां निह रहेतां अन्य स्थले रहेवानी इच्ला करी. ए समये झीटीश सेनाए एकटी थएली मराठाओनी फोजना विक्रम तथा पराक्रमनी जडमां एक जबरों आयात कर्यों अने मरेटाओनी सत्ता नीचे रहेला केटलाएक देशोने लीनवी लीथा; त्यारे मरेटाओ द्वरतज अनेक विभागे वहेंचाइ भारत वर्षना यगालग मान्तोमां पहोंची लूंटमार अने अत्याचार करवा लाग्या. झाला जालिमसिंह पोनाना नीच चुित्वल्यी समजी गया के आ वखने राजधानीना मरेलोमां निवास न करनां जे स्थल पर मरेटाओना आक्रमणनी संभावना ले, त्यांज

अथवा तेनी समीपे रहेवुं उचित छे. आम घारी तेओए कोटा राज्यमां पोताना अनुचरोने साथे छइ फरवा मांडयुं; देशनी दुर्दशा वरावर तेओना जोवामां आवी. उच्च पदनी अभिलापायी पोतेज कोटानी पायमाली करी हती. राज्यपर आपित्त आवी पडतां धनहीन प्रजा शी रीते सहायता आपी शकशे ? ए विचार अगत्यनो थइ पड्यो. प्रजामां फेलाएला राजनैतिक रोगतुं निदान करवानी कांइ जरुर नहती. कारण के ए रोगना कारण रूप पोतेज हता. हवेतो झटपट अनेक प्रकार मां आपिध द्वाराएज इलाज करवानुं वाकी हतुं; माटे प्रथमतो एज कार्यमां प्रवृत्त थवानो निश्य करी माला जालमिंह गागरोलना अभेच किलानी समीपे एक स्थायी हेरो स्थापी त्यांज रहेवा लाग्या. तेओने आ रीते सामान्य भावथी रहेता जोइ वीजा सामन्तो तथा राजपुरुषो पण ए रीते रहेवा लाग्या अने एज हेराओमां तमाम राजकाज थवा लाग्यां.

कार्यकुशळ जालियसिंह जे स्थळे हेरी नांख्यो हतो ए स्थान तेओना राजनैतिक उद्देशनी साधना अर्थे सम्पूर्ण उपयोगी हतुं. दक्षिण तरफथी कोटाना राज्यमां दाखल थवाना जे वे मुख्य मार्ग छे, तेनी वचेज जालिमनां हेरानी जमानट थइ हती. कोटा तावाना जे देशोमां किन भील जाति निवास करे छे, ए स्थानो पण एनी समीपेज हतां. तेनी साथे शेरगढ तथा गागरोळ नामना वे मजबूत किल्लाओ नजीक होवाने लीधे स्वकीय रक्षातुं पण विशेष सुगमता भरेलुं यइ पदयुं. वीर-वर जालिमसिंहे पोतानी समग्र धनसंपत्ति तथा संग्रामनो सामग्री गढ गागरोळमां राखी अने संक्षेपमां सामर्थ्य प्रमाण ए उभय किल्लाओने अभेद्य वनाववामां कांइ कसर राखी नहि. त्यारवाद तु-रतमांज एक नवीन लहकर भेळुं करी तेने अंग्रेजी रीति प्रमाण युद्धनी शिक्षा आपना मांडी. ए लहकर जे मान्तमां शत्रुओ आवता, त्यां सत्वर पहोंची जतुं. राजधानीना राजमहेलोमां रहेवाथी जे काम वह विलंबे थइ शकतां, ते आहो सरलताथी थवा लाग्यां.

साका जालिपसिंहे अत्यार सूनी राजनैतिक पद् यन्त्र (खटपट) रूपी सागरना पवळ तरंगोमां तणाइ पोताना जीवनने राज्यभूमिनी अवस्था जोवामां योज्युं न हतुं; हवे ते वाबत तपास करवानो तेओने उत्तम अवसर मळ्यो; तेओए दरेक गामना पटेळोने वोळावी पत्येक पटेळना कव-जामां केटली जमीन छे ? केटला कृपिवलो कर आदि आपे छे ? केवी रीतना उपायथीकर ळेवामां आवे छे ? कृपिवलोनी स्थिति केवी छे ? आमदानी केटली छे ? तथा राज्यनी सरहद क्यां सुधी छे ? वगेरे हकीकतथी वाकेफ थई समस्त राज्यमां केटला खे कटली खेती छे ? अने केटलो राजकर आववा संभव छे ए वधी वावतनो एक खादो तैयार करी राज्यना दरेक गामोमां

पोते फरवा निकल्या. ए वखते तेओए दरेक गामनी भूमिनो माप करावी तेमां कह कई खेती नदीथी धाय छे ? कई कई खेनी वर्षा उपर आधार राखे छे ? कह कई भूमिमां खेती सरक्र-तायी थाय छे ? कह कई भूमिमां खेती कठिनताधी थाय छे ? कह कई भूमि पहाडी छे ? अने कह कई भूमिमा पशु आदिने चराववामां आवे छे ? विगेरे विचार करी स्वतंत्र रूपे भूमिना विभाग पाड्या, वीतेला केटलाएक वर्षोंनो हिसाव तपासी भूमिनी एकंदर केटली आवक यती हतो तेना अनुमाने आंकडाओ मूकी एक एक विभागनो अलग अलग हिसाव कर्यों, अने पाचीन रोति प्रमाणे प्रजा पामेथी करमां धान्य आदि उत्पन्न अना न नहि लेतां रोकडा रुपिआ (वोघोटी) लेतानो ठगव कर्यों.

न्यायिनपुण जालिमसिंहे आ रीते भूमिनो कर नियत करी छेन्नटे ए करने उघरावनारा पटेल लोकोने तेनी महेनतना बदलामां कांइ लाभ आपनानो विचार करी मत्येक पटेलना तावानी जमीन पर दर बीघे दोढ आना लेखे कर लेनानो निश्चय कर्यो; के जे सामान्य प्रजाना कर करतां घणोज ओछो हतो. आयी आनंद पामेला पटेलो पोतपोताना पद पर प्रतिष्ठित थना माटे उतावला थया अने जालिमसिंहने नजराणा तरीके कोइए दश अने कोइए बीश्च ए रीते पचास रजार रुपिआ आप्या. झाला जालिमसिंहजीए एज युक्तियी नजराणामां दश लाख रुपिया मेल प्या अने पोताना शून्य राज्यभंडारमां भरी दीधा. आ रीतनी नवीन न्यनस्थाथी राज्यने घणोज लाभ थयो अने खेहतो पण खुशो थया. संवत १८६७ सुधो ए व्यवस्था कायम मही.

जालिमासिंह जीए पटेलोने पोताना पक्षमां लड़ लगभग चार हनार सांती घर खेडनां कर्या अने एनी आमदानीमाथी बीना वलद तथा रेल्डू विगरेनुं खंर्च काढता दर वर्षे बीश लाख रुपिया जिटलो लाभ मेलवा मांड्यो. दीर्घदर्शी जालिम खेती उत्तरांत नेपार पण करता; सोंघे भावे जरूर प्रादंध अनान खरीदी मोंघे भावे वेची नांखतां वि. स. १८६० मां दुष्काल तथा युद्ध आदि खपद्रवने कीधे ज्यारे राजपूतानो घणग्वरो भाग उनड वनी गयो हतो, त्यारे झाला जालिमसिंह- एजीए आहारे एक करोड रुपिआना धान्यनो विक्रय दार्यो हतो.

कोटातुं राष्य जो के हिंदुस्थानना मध्य भागमां रहेलुं छे, तेमज तेनी आजुवाजु घणा राजाओना तथा छुंटाराओनां एसकर फरनां हतां; परंतु ज्यांग्रियी जालिमिंह कोटाना फीज-दार बरेवाया त्यां ग्रियी बोह पण कोटाना द्वारमां भवेश वरी शक्या नहि.

वि. स. १८४० मां जालिममिंहना पोनाना आश्वरे त्रणमो चारसी इळ इतां, परंतु

केटलाएक वर्षों पछी तेनी संख्या आठसोनी थइ इती. ज्यारे जालिमासिंहे पटेलोनी अनुकूळता प्रमाणे नवीन कृषिपणाली स्थापी त्यारे हळनी संख्या एक हजार छसोनी हती. महात्मा टॉट साहेव छसे छ के सन. १८२१ मां जालिमासिंहनी निज व्यक्तिगत संपत्ति रूपे चार हजार हळ चालतां हतां, अने एमा सोळ हजार वळद योजवामां आव्या हता. आयी जालिमासिंहे कृषि-विभागमां केवो श्रेष्ठ जपाय कर्यों हतो ए सहजमां समजी शकाय एवं छे. जालिमासिंहना निजव्य-किंगत हळ अने बळदो सिवाय खुद कोटानरेशना तथा भायात वर्गना मळी एक हजार हळ अने चार हजार वळद कृषिकार्यमां योजाएका हता.

विस्तृत कृषिकार्यने छीघे राजराणा जालिमसिंहे रजवाडाओमां महान् कीर्ति मेळवी हती. अने तेओने कृषिद्वाराए पुष्कळ धन प्राप्त थयुं हतुं. जे वखते राजपूतानानां मुख्य मुख्य राज्यो महाराष्ट्रीओना अभ्युद्य अने उप्तीडनथो एकी साथे उन्नितना उच शिखरथी अवनितनी अन्याध जालमां पड्यां हतां ते वखते मात्र एक राजराणा जालिमसिंहनोज चनुराइयी कोटानुं राज्य आवाद रहेवा पाम्युं हतुं. तेओना सवळ शासनथो जो के धन धान्यनी रक्षा उत्तम रीते यह हती, परंतु राज्यना संभ्रांत सामंतोधी आरंभी एक किन्छ पंक्तिना कृषिवळ पयन्त कोइ पण तेना पर राजी न हता; कारण के जेनुं हाथ आवे तेनुं पचावी पाडवानी इच्छाए जालिमसिंहना हृदयमां हद उपरांत जोर जमावेखुं हतुं; प्राचीन रीतिनी तेओ विलक्ष्तळ परवा राखता निहः; जे कर आपवामां असमर्थ जणाय, तेनी जमोनने तुरतज तावे करी लेवामां आवती. धीरे धीरे तेओए समस्त सूमि पर पोतानो अधिकार जमावी दीथो. आथी तमाम छोको तेना तरफ विरक्त यह गया. त्यांना खेडू वर्गने पोतपोतानी जमीन गिरवी राखवानो तथा वेचवानो हक परंपराथी माप्त थएलो हतो, परंतु राजराणा जालिमसिंहनी शासनपद्धतिथो तेओ एक खरीदेला गुलामनी माफक कृषिकार्य करवा लाग्या. मराठाओना उत्रह्वथो भागो छुटेला कृषिवलो अन्य स्थळे आश्रय न मळवाथी कोटामां राजराणा जालिमसिंहनीनीचे आवी रह्या हता.

हाडोतीमां बुन्दी, कोटा अने झालरापाटण ए त्रण राज्य मुख्य गणाय छे. त्यांना कृषि-क्षेत्रनी माटी माळवानी माटी समान उपजाड अने कठिन छे. मात्र हळथीज ए क्षेत्रनी पीठ (पाटी) ने विदीर्ण करवी ए अत्यन्त कष्टसाध्य छे. एटला माटे राजराणा जालिमसिंहे कोकनद देशमां चालती रीति प्रमाणे वे हळोनो एक साथे व्यवहार कर्यो हतो. पहाडोमां हळ निह हाळवाथी त्यांनी जमीनने कोदाळीथी खोदावी खेडना उपयोगमां लीधी हती, जमीननो एक डकडो पण खिद विना खाली न्होतो राख्यो. तेओए पोताना भिय स्थान झालरापाटणमाथो, खुद कीटामांथी आसपासना पजारोमांथी तेमज मारवाडमांथी घणा वळदो खरीचा इता अने जे जे स्थळे वेत वस्तणाता ते ते स्थळे माणसो मोकलो खरीदी खेतीना काममा योज्या इता. मारवाडना वळदो रेतियाळ मदेशमां भार वहन करवा माटे उपयोगी होवा छतां कोटाना क्षेत्रोमां ते काम करी शक्या निह, जेथी जालिमासिंहे तेनो त्याग करी दीघो हतो. खेतीनो दर वर्षे वे वखत पाक थतो हतो. प्रत्येक हळधी एकलो वीघा अमीन खेडवामां आवती; ए हिसावे ४००० चार हनार हळोथी एकी वखते ४०००० चार छाख वीघा खेडतां वे वखतना मळी ८०००० आठ छाख वीघा वर्षात् आशरे त्रण छाख एकर जमीन खेडाती हती. दरेक विच सातथी दश मण घडं अने पांचथी सात मण सूथी वाजरो निपजचो जोइए; परंतु कोटाना कृषि क्षेत्रनी मृतिका जोइए तबी उत्तम न होवायी ओछामां ओछा एक वीघे चार मण घडंनी उत्पित्त मानोए तो आठ छाख वीघामांथी प्रतीय लाख मण घडं तथा वाजरो नीपजे. एनी किम्मतनो निश्चय करतां कहेवुं जोइए के जे वर्षे धान्यनी घणी पेदास होय छे ए वर्षे राजपूतानामां एक मानी घडंनी किम्मत १० रुपिआ होय छे. वीजा वर्णेमां जो के अटार रुपिये एकमानी घडं वेचाय छे पण सरेरास चार रुपिआनो नाव मणनां दर वर्षे वत्रीश लाख रुपियानी आपदानी छेखी शकाय छे.

कर्नेट टोट साहेर करते छे के. राजराणा जान्तिपाँमहने कृषिकार्यमां नोचे मुजद खर्च थतुं हतुं. बळद आदि पशुओने माटे खोराक, कृषिवलोने पगार, क्षेत्रनी स्वच्छता अने इळ आदि

समार काममां . वीज खरीदवामां .

रु, ६००००

F. 800000

दळद आदि नकामा धइ जानां वीका खरीदवामां परखरण खर्चना

₹, ८००००

₹. 20000

कुळ. ११०००००

राजराणा जालिमसिंहजीने खेतीयी जेटली आमदानी थनो हनो तेना त्रीजा अंश जेटलुं खर्च डपरना आकडाओथी मालूम पडे छे. ने औए कोटानी धजा माथे एटला बया कर नांख्या

[ं] राजपूरानामां ४३ होरनो १ मण १२ मणनी १ मानी अने १०० मानीनो १ म-नारा धार छे.

हता के जेनो सरवाळो दरवर्षे रु. २५००००० लाख थतो हतो. वळी वि. सं. १८६५ मां कोटाथी बहारगाम मोकलाता धान्य उपर एक मानी दीठ दोढ रुपिआ लेखे कर प्रचलित कर्यो. आथी प्रजामां वैमनस्य घणुंज वधी गयुं. संक्षेपमां राजराणा जालिमसिंह कोटानी प्रजा तथा सामन्तश्रेणी उपर एटली वधी सत्ता जमानी हती के कदी तेओने इच्छा थाय के मारे अत्यारे एकलाख रुपिआ जोइए तो एज वखते कर उघरावनारा पटेलो गमे तेम करी इच्छित रक्षमने एकटी करी आपता, परंतु ज्यारे राजा तथा प्रजाने समदृष्टिथी जोनार अंग्रेजसरकारनुं जोर जामवा लाखुं त्यारे जालिमसिंह जाण्युं के प्रजापर वधारे जुलम गुजारवाथी वखते बीटीशमवर्नमेन्ट नाराज यशे तो परिणाम सारुं निह आवे एटला माटे करने एकदम ओछा करी नांख्या. कृपिवल तथा क्रयवि-क्रय करनारा माणसो पासेथी उचित कर लेवानी योजना करी. त्यारे पण करनो सरवाळो पांच लाख क्रियानो थतो हतो.

राजराणा जालिमींसहने पोताना क्षेत्रोमांथी दरवर्षे पंदरलाख रुपिआनी पेदाश थती हती उपरांत तेओना कुटुम्बी, स्वजन तथा कोटा राज्यना क्षेत्रोमांथी पांचलाख रुपिआ मळता हता. ए रीते बीशलाख रुपिआनी आमदानी वहे तेओ पोतातुं घरखर्च चलावता हता.

एम न जाणवुं के राजराणा जालिमसिंह कोटा राज्यना कृषिकार्यमांन पोतानो सघलो वस्तत वितावता होय ? ए कार्य तो एनां कार्योमांना एक अंशरूप हतुं. तेओए जे भावयी राज्य-शासन कर्युं तेमां भवळ्वाक्ति अने विशेष सावधानपणानी जरुर हती. वीशहजार सेनानी स्टिंग, तेने पालन उपरांत शिक्षण आपवुं, किल्लाओनी सावधानी, अस्त्र आदिनो संग्रह, ए रीते युद्धिव-भागना दरेक विषयमां दृष्टि राखवी, राजकीयं जनोनो अनेक ग्रप्त वार्ताओ सांभळवी, तेओने योग्य जवाब आपवा विगेरे कार्योमां समयने व्यतीत करनारा जालिमसिंह वणजवेपार पण करता हता, उपरांत अनेक प्रकारना फळवान हक्षोनी खेती पण तेओए करावता मांडी हती; हवे तेओनी साथ कोनी तुलना करवी ? साहित्य, न्याय अने ऐतिहासिक प्रराणोना श्रवणमां तेओ पोतानो केटलो-एक वखत गाळता. कोटाना अनाजनो भाव एनो मरजी मुजब वधवर थतो. ज्यारे गवर्नमेन्ट सरकारे माळवामां अफीणनी खेती करावी त्यारे जालिमसिंह एटला म्होटा जत्थामां अफीणनी खरीदी करी हती के तेओ पोतानी इच्छा मुजब अकीणना भावमां वधवर करी शकता. तेओए को-टामां अनेक स्थळे वागवगीचाओ वनाव्या अने तेमां नियनता विविव प्रकारना फळ मूळ आजु-वाजुना वजारोमां वेची नाणा नियजाववा मांड्यां. स्वरक्षित वनथी संग्रहित घएला काष्टो सामान्य

प्रजाना उपयोग माटे वेची नांखवामां आवतां.

कोइ बाबतमां कोई माणस छूटी न शके एवा इरादाधी दीर्घदर्शी जालिमसिंहे जुदी जुदी जातना करो स्थाप्या इता. जे विधवा पुनर्विवाह करे ते कर आपे. जे सन्यासी भिक्षावृत्तिथी पीनतानुं जोवन व्यतीत करे तेने माथे पण कर नाखवामां आव्यो इतो; गिरिनी गुफा तेमन बीजे जे स्थळे सन्यासीओ रहेता त्यां जालिमना जासूमो पहोंची जता अने तेओए भिक्षावृत्तिथी मेळवेळा धनपर कर चोटाडी आवता. ए रीते एक वर्ष पर्यन्त सन्यासीओ प्रत्ये वर्तणुक राखवामां आवी, पछीपी केटलाएक मित्रोना कहेवाथी जालिमसिंहजीए तेओने करथी मुक्त कर्या. झाळा जालिम-सिंहे प्राहू काहनार उपर पण कर नांख्यो इतो. जेना सबंधमां कोटाना भाटोए अनेक व्यक्त व्यं जक गीतो इनाव्यां. पाछळथी तेना पुत्र माधवसिंहे ए निन्दित करोने काढी नांख्या इता.

एक बखते कोई मिसद्ध किवए जालिमिस पासे जई तेनी मशंसानुं गीत संभळान्युं, जालिमिसि संतुष्ट निह धतां कहुं के "किव लोको केवल निध्या वर्णन करे छे, जो साचुं वर्णन करे तो कांइक लांभळवानी इच्छा थाय." किवए जवाव आप्यो के "वजारमां सत्यनो आदर बहुज थोढो थाय छे. जो आपने सत्य सांभळवानी इच्छा होय तो ए पण मने आवडे छे" तुरतज तेणे माफी मागी जालिमना जीवनचरित्र सबंधो गीतो गावा मांड्या. ए सांभळी जालिमिसि एटला वथा गुरसे थया के तेणे किवना वाददादाने राज्य तरफथी आपवामां आवेलो गिरास एकदम जप्त करी लीधो अने ते दिवसधी कोई किवने पोता पासे आववा दोधो निह.

साभळवा प्रमाण राजराणा जालिमिंहजी वीजी य्री वावनमां शास्त्रोक्त हिन्दु धर्मानुतार वर्तन राखता हता, परंतु राजनेतिक व्यवहारमां ब्राह्मण आदि उच्च वर्ण उपर कदी पण
ररेम राखता निह. ज्यारे कोटानो शामनभार राजराणा जालिमिंहने मोंपवामां आज्यो त्यारे
कोटातुं राज्य न्टाना स्केलमां हतुं. खजानो ग्वाली हतो, राज्यपर प्रजीस लाख रुपियानुं देणुं हतुं
अने ह्ट्या पूट्या विल्लाओमां पूरती युद्धनी मामग्री पण नहोती युद्धिमान् जालिमिंसहे महाराष्ट्रीअोना यळपी वेटलाएक किल्लानो लद्धान करी कोटामा मेळवी दीवा अने भांग्या तृच्या भागोने
समानमा करावी तेमां तोषो गोटवी दीपी. कोटामां प्रथम चार हजार घोडेम्बाग्नुं सन्य हतुं. जालिमिनिहे दोजा मोळ हजार मनिको वयार्था अने एक्सो नोषो एकटी वरी. ए उपरांत सामन्तोने
तावे एण पणी मेना हती.

PMG

राजराणा जालिप्रसिंहनी शासनपणाली घणे मागे भेदनीतिपर चर्चारे आयार राखती हती. पोताना ताचाना अिकारीजनों के दरवारी लोको एक वोजा साथे मळी वातचीत करी शकता नहिं, दरेक उपर तेओनी एटली वधी सत्ता वेसी गई हती के उंकामां नेओ लाकडोंने वले सहुने वांदरानों पेठे नचावता हता. रजवाडामां एवो कोई राजा न हती अथवा लूंटाराओनों एवो कोई नेता न हतो के जेणे हरेक कार्यमां राजाणा जालिपसिंहनी सलाह न लोबी होय अथवा एओनी सलाह प्रमाणे न कर्यु होय? दरेक राज्यमां एओए पोतानों एक एक दूत राखेलों हतो; ज्यां स्वार्थ सिद्धि जेवुं जणाय त्यां तेओ तुरतन पहींची जता. एओए कोटाना राजसिंहासन पर आरूड थएला राजाथी आरंभी पिंडारी दलना नेता पर्यन्त सहुनी साथे पिता, काका तथा आन्तानों सबन्ध बांधी दीधो हतो. संक्षेपमां पोताना राजनैतिक कार्यने सिद्ध करवा माटे तेओ अनेक प्रकारना उपाय करी चूक्या हता.

स्वभावे क्रूर, क्रोधी अने अहंकारी कहेवाता जाळमसिंह वखत प्रमाणे वर्त्तन करनारा हता. वखते सरल, वखते ज्ञान्त अने वखते निरिभमानी पण वनी जता. वि० सं० १८६२ मां ज्यारे जोधपुरना राज्य साथे बीजा राजाओए झगडो मचान्यो त्यारे जालमसिंह पासे त्रण राज्य तरफंघी मदद मांगवामां आवी हती. त्रणेने एकी वखते सहायता आपवानुं अशक्य धारी जाल-मसिंह बधा पासे दूत मोंकली आप्या अने युक्ति प्रयुक्तिथी कोइने मादुं न लागे तेम समजावी ए-केने मदद आपी नहि.

वि॰ सं॰ १८५९ मां ब्रिटीश गवर्नमेन्ट साथे राजराणा जालिमसिंहनो प्रथम समागम तथा सम्बन्ध थयो हतो. महात्मा टाँड साहेब लखे छे के—होन्कर उपर आक्रमण करवा माटे ह्यारे जनरल मॉनसन एक ब्रिटीश सेनाने साथे लइ मध्यभारत तरफ गया त्यारे जालिमसिंहे अंग्रेजोना सामर्थ्यने अजेय जाणी तेओनी सेनाए कोटाराज्यमां मवेश कर्यों के तुरतज सर्वनी उत्तम मकारे सरभरा करवा माटे अनेक अनुचरोने योजी दीधा; परंतु दुर्भाग्यने लीधे युद्धभूमिमां ज्यारे ब्रिटीश सेनानो पराजय थयो त्यारे तेमनुं तमाम दळ भाग्युं. ए वखते जनरल मॉनसने प्रथमनी पेठे कोटाराज्यमां थइ चाल्या जवा माटे जालिमसिंह पासे प्रार्थना करी. जालिमसिंहे ज्वान आप्यों के "अमारा शान्तिपूर्ण राज्यमां तमारी लिक्नभिन्न सेनाना आगमनथी अराजकता उप-जवा संभव छे, माटे आप सैन्य सिंहत अमारा राज्यनी सीमापर रोकाओ, त्यां तमाम जातनो वं-दोचस्त करवा तेमज श्रवुओधी आपने पराभव निह पामवा देवा हुं सैन्य सिंहत हाजर रहीश. क-

दाच ए क्वुओ मारापर आक्रमण करहे तो हुं एकलो एओनी साथे युद्ध करीक." जनरत्न मा-नसने आ बात न मानी, तेणे सीधा पोवाना उपरी जनरल छेकनी पासे जइ हार सबन्धी सवळी रकीकत करी संभळावी अने जालिमसिंहनी चशमपोशीयीन ए हार थयातुं जणाव्युं. जनरल ले-के मानसनना कथनपर विश्वास राखी जालिमसिंह उपर घणा वखत सूत्री वैमनस्य राख्युं. परंतु जालिममिंद तर्न निर्दोष इता, तेओए मानसनना जाननी सलामती माटे विशेष चेष्टा करी इती. प्योनी आज्ञानुसार मुकुन्दरानी घाटीथी कोयलाना सामन्त लखन महाराष्ट्रीय दलनी गति रो-क्या माटे सेन्य सहित मार्या गया. ए पत्यक्ष उदाहरण आजपयेन्त विद्यमान छे. कोयळाना सा-मन्त्रनी माफक जालिमसिंहना बीजा सैनिकोए पण जनरल मानसनना भागवा वखते मराठाओनी साथे युद्ध कर्यु हतुं. तेमां वश्नी सेनाधिपति मराठाओने हाथे केद पकडायो. होल्करे तेना पासेयी दशलाख रुपियातुं खत लखादी लीधु अने छोडती वखते तेने सूचना आपी के जो दशलाख रु-पिआ अमने निह मले तो कोटाना समस्त राज्यनो तकवार तथा तोपोना मुख्यी विध्वंस करवामां आवशे. पराजय पामेला वसीए जालिमसिंह पासे जड़ दशलाखना खत सबंधी वात करी जाजि-मसिंटे ए रुपिशा राज्य तरफधी आपवानी ना कही वक्षीने होलकर पासे जवा कर्युं× जालिमसिंह-ना उक्त व्यवदारथी होस्कर भय बताबीनेज ज्ञान्त न रह्यो; थोडा बखतमांज तेणे कोटानी अत्य-न्त समीपे देरा नांख्या. एथी जाकिमसिंह जरापण भयभीत न थया. तेओए जाहेरना कोट उपर तमाम तोपोन तैयार रखावी सैन्यने सज्ज धवा आज्ञा आपी अने गोळाओनी दृष्टि शरु करी तथा पहाढी लोको पण नेओनी ग्रप्त आज्ञानसार होल्करना देशना पाछका भागपर आक्रमण करवा समस्त द्रव्यने छूंटवा तथा पतिपक्षीओने आहारप्राप्तिमां अवरोबस्त थवा तत्वर धया. होलकरे दक्षीना एस्ताक्षरवाळो दश्रद्याख रुपिआनो छेख फरी जाडिमसिंह पामे मोकछी आप्यो; जाडिम-भिरे तेनो अस्तोदार कर्यो. युद्धनी वान अनिर्वाच्य थइ पडी. वन्ने पक्षनां मंत्रीओ होलका तथा जालिमसिंदनी परस्पर साक्षात्कार करवा उद्यत थया. होक्करनो विश्वास निह करनारा जालिम-सिरे नौकाद्वाराए चम्बल नदीना मध्यभागमां स्थित यह युद्ध अथवा सन्ति सबन्बी मस्ताव कर-षानी हा करी. होल्करे ए बात कष्टुल करी. तुरनज वीश वीश शस्त्रवारीओयी सज्ज करेली वे नीकामां रोहकर तथा जालिमसिंह जुदा जुदा बेटा. आ वाबते जे विश्वामवान करे नेनापर आ-

[×] वर्नस्टॉह साहेद पोनानी टीकामा सक्षे छे के अपमानधी अत्यन्त दुःखी वनेला वसीए दिपपानवरे आत्मधान वर्षों होय एवं अतुमान थाय छे.

क्रमण करवा तटस्य सेना तैयार राखवामां आवी हती. नौकाओ नदीना मध्यभागमां स्थिर थतां एकाक्षनी व्रवादित श्रव्य थह ते पहेळां होलकरे जालिमसिंहने काका अने जालिमसिंह होळकरने भत्रीना कही संबोध्या हता. छेवटे त्रणळाख रुपिआ ळइ होल्कर चाळतो थयो अने कोटातुं राज्य जालिमसिंहना बुद्धिवळथी सुरक्षित रहुं.

अंग्रेज सरकारे सिन्धिया तथा होटकर साथे युद्ध करी ज्यारे विजय मेळच्यो, त्यारे जाि लिमिस सिन्धिया पासे पंचमहाल नामनो देश अने होटकर पासेथी डिग, पिडाबा इत्यादि चार
जीला जमामां लड़ लीधा ए देश ब्रीटीश गवन मेन्टे एकी बखते पोताना विजय बखते कोटाना
अधीश्वरने आपी दीधा जालिमिस है, सिन्धिया नथा होटकर माथे हमेशां मळता रहेता एटलुंज
नहि, परंतु तेना मन्त्रीओ शुं शुं चेष्टा करे छे, ए जाणवा माटे तेणे पोताना ग्रप्त दूतोंने योज्या
हता ते उपरांत तेओ केटलाएक महाराष्ट्र पंडितोंने पोतानी पासे योग्य पगारयी नियुक्त करी ए
जातिनुं राजनैतिक ज्ञान पण मेळवता हता छंडारा अमीरखांने रहेवा माटे तेओए शेरगढनो किलो
आपी संतुष्ट कर्यों हतो; जेथी बीजां राज्योमा उपदवनो दृद्धि बखते कोटानुं राज्य आवाद रहुं हतुं.

पिंडारी नामना छंगराओनुं दळ पण जालिवसिंड तरक अत्यन्त सद्भाव राखतुं इतुं; तेओना नेताओए कोइ दिरस कोटा राज्यनुं अनिष्ट कर्युं न इतुं. ए लोक जालिमसिंह द्वारा जागीर मेळवी कोटामां निवास करता इता. एना प्रख्यात नेता कमोरखांने वि. सं. १८६३ मा ज्यारे सिन्धिआए बदीवान बनावी ज्यारे ग्वालिअरना किल्लानी रक्षा करी, त्यारे जालिमसिंहजी ए करीमखांने छोडाववा माटे मात्र पुष्कळ नाणां आपीनेज ज्ञान्त नहोता थया, परंतु तेना भविष्यना सञ्चरित्र माटे साक्षीभूत पण थया इता.

शरणागतनुं प्रतिपाछन करवुं ए राजपूत जातिनो परम धर्म छे. राजपूतोए शरणे आवेळा शञ्चने पण तन, मन तथा धनथी आश्रय आपी तेओनुं रक्षण करेळुं छे. मारवाह, तथा मेवाह वन्तेरे राज्यना मुख्य मुख्य सामन्तो तथा माननीय मनुष्यो कोटामां जाळिमसिंहने शरणे आवता, तेओने जाळिम तरफथी आश्रय मळतो एटळुज निहे, परंतु तेओनी गएळी जागिर करतां विशेष आमदानीवाळी जागीरो पण आपवामां आवती. आधी जाळिमसिंहनी नामना घणीज वधी गई.

^{*} महाशाय टॉडसाहेवे आहीं जालिमिनिहने अंग तथा होत्करने एक आंखवाळो समजी वसे अद्भूत पुरुषमां "एकाक्ष" शद्धनो उपयोग करेल छे.

तेओ पोताने दारणे आवेळा सामन्ताने तेना स्वामी साथ युक्तिमयुक्तिथी मेळ करावी आपता; ए कारणने छीये तेओ सामान्य प्रजामां " ज्ञान्तिस्थापक " तेमज "मध्यस्य" एवा नामथी प्रख्यात ध्या. काटा जेवा साधारण भूखंडमां सत्ता भोगवनारा राजराणा जालिमसिंह विपत्तिमां पडेला सटु कोइने आश्रय आपवा तथा सरळतापूर्वक तेओनुं पाळन करवामा समर्थ इता, एवं इतिहास ध्यरपी सिद्ध धाय छे.

पालिमभिंह आटला बया सत्तावान छतां पोताना मालिक महाराव उमेदसिंहतुं केवुं सारुं मान जाळवता ए नीचेना लेख उपरथी समजी शकाय तेवुं छे.

कोइ अन्य राजनो दत्त आच्यो होय तो ते सीधो महाराव उमेदसिंह पासे जाय अने त्यां पोतानी ओळखाण आपी जवाब मेळवी शके, परंतु जवाब तो जे जालिमसिंहे लख्यो होय एज टमेदसिंह आपे. कोइ अन्य राजनो सामन्त शरणे आच्यो होय तो ते महारावने मळी प्राधना करे. पण एने केवी रीतनो अने केटलो आश्रय आपवो एतो जालिमसिंह नकी करे, एज प्रमाणे आप-पामां आवे. पोताना पुत्रोए वधारे जागीर प्राप्त करवानी मागणी करी अने महारावनी मरजी विना जालियभिंदे रवीकारी एवं कदी पण वन्यं नहोतुं. इहेग्मां वेचावा आवेला सारा सारा अश्वोने जालिमसिंह श्रीतपूर्वक खरीदताः परंतु नेमायी चुनदा घोडाओ महाराजा तया महाराजकुमारने भेट करवातु कोइ वरवत चूकता नहि, मतलब तेओ मालिकतु मानभग करीने मनधार्य करता नहि, परंतु रम्मानपूर्वेक तेशोने शरी राजी कार्यमिद्धि करी लेता. राज सबंबी कागळीआओ, महोरो तथा राजिदिहो पहेळनी अंदर महाराव उमेडिन्डना माणमोनी देखाख नीचे गखवामां आवनाः परंत जालिमसिंहनी अतुमित शिवाय तेनो कोड उपयोग करी जकता निह. एक वखत महाराव उम्मेदिन हुमार किशोरसिंह तथा राजराणा जात्मिसिंहना कुमार मायवसिंह पोतपोताना अ-र्वने शिक्षण आपवा एक क्षेत्रनी अंदर जह चडेला, त्यां मायविमहे राजकुमार किशोरिमहेंनु काइ अपगान वर्गुः ए वान साभळनांज न्यायनिषुण जालिमासिह पोनाना पुत्र माधवने कोटामाथी रजा आपी नानताना विद्यामा मोकली आप्यो पहाराव उम्मेदासँहे एम नहि करवा तेओने घणी रीते समजाव्याः परंतु जालिमे माधवने धना आधी नहिः

दोहण्ड समये राजराणा जानिमसिंह महेनमा वेटा देटा राजरीय देवमन्टिरमां पूजन । बरता हता; त्या महागव डम्मेडासिंहना कुमार आदी चक्या; नेओने खबर न हती के जालिमसिंह पूजन करे छे. शीतकाळने ळीथे मन्दिरनी जमीन भेजवाळी वनी गइ इती. जालिमसिंहे टाढने छीथे कांधपर ओढेळी रजाइ तुरतज नीचे विछावी महाराज कुमारने वेसाड्या अने पूजन करवा कहां. कुमार थोडो वखत त्यां वेसी चाल्या गया. वाद अनुचरे जाण्युं के कुमारना पगतळे कचरा-एळी रजाइ इवे राजराणा ओढशे निहे, परंतु ए एनी मान्यता खोटो पडी. जालिमसिंहे तुरतज उक्त रजाइ अनुचर पासेथी ळइ अंगपर ओढी ळीधी अने कहां के " आजे कुमारना चरणस्पर्शयी मारी गजाइ पवित्र थइ " आ रीतनो नम्न अने राजभक्त अधिकारी पातानुं प्रवळ आधिपत्य विस्तारे एमां शी नवाइ ? जालिमसिंह जेवा चतुर अने नीतिनिपुण पुरुष विश्वमां विरला हशे.

राजराणा जाळिपसिंह नोकरो तथा कारभारीओने कसोटी कर्या वाद राजकाजमां योजता हता; तेओ वातचीत उपरथी मतुष्यनो मनोभाव जाणी छेता, अने योग्य नोकरो तया काग्भा-रीओनी साथे मित्रनी माफक वर्तन राखता, जेथी तेओतुं कांइ अनिष्ठ करी शकता निह. प्रसंगो-पात् नोकरोने छूटे हाथे पैसा आपनारा जाळिपसिंहना वखतमां राजनो कोंइ पण माणस इच्छाअनुसार, बळथी के अन्यायथी धन मेळवी शकतो नथी. पटाण तथा महाराष्ट्र पंडित ए वल्ने जाति उपर तेओने अपूर्व विश्वास तथा प्रेम हतो. कोटानी अंदर युद्ध सवंधी कार्य पटाणोने अने राजनितक कार्य महाराष्ट्र पंडितोने सोंपवामां आव्युं हतुं. राजराणा जाळिपसिंह पोतानी जातिना माग-सोने कोइ कार्यमां योजता निह. एना शासनना छेवटने ममये मात्र एक शक्तावत संपदायनो विसनसिंह नामे राजपूत कोटानी फोजदारी पर नियुक्त हतो. दळेळखां अने महारावखां नामना वे माणस जाळिपसिंहना पूर्ण विश्वासपात्र कामगरा अने मित्र हता. दळेळखांए कोटानो विराद किछो बनाव्यो. आग्राना किछा शिवाय भारत वर्षमां एनी वरावरी करी शके एवे पके किछो नथी. झाळरापाटण नामनुं अत्यन्त रमणीय शहेर पण दळेळखानुं ज वनावेछुं छे. ए उपरात कोटा राज्यना केटळाएक किछाओनुं काम एनेन हाथे थयुं हतुं. जाळिमसिंह दळेळखांने प्यार करती वखते कहेता के " तारा पहेळां हुं मरी जांच तो सार्ह " महारावखां कोटाना पायदळ ळहकरना अधिपति हता; तेणे उत्तम गिक्षणधी सेनाने अत्यंत युद्धकुशळ बनावी हती+

⁺ कर्नल टॉड साहेबे आ स्थळे टोकामां छल्पुं छे के अमारा तावामांजालिमसिंहे महा-रावखांना आधिपत्य नीचे एक सेना दळे आठ दिवसमां हाडोती साथे मळेळा होल्करना तावाना तमाम देशो स्वाधीन करी ळीधा हता; अने एज सैनिकोए जानमाल कामना तावानी फोज साथे मळी " सौदी " किल्लानी दिवालने उल्लंघी विशेष वीरता बतावी हती.

वि. सं. १८७३ मां भारत वर्षना गवर्नर जनरळ मार्विवस ऑफ हेिंग्से विंडारी लोको साथे ळदाइ करवानी जाहेरात काढी. तेमां तमाम राजपूत राजाओए सामेळ थवातुं स्वीकार्यु अने ब्रीटीश गवर्नमेंट द्वारा सन्धिवन्धनमां वंधाइ अंग्रेज सरकारने कर आपवातुं कञ्चल कर्युः राज-राणा जालिमिसेंहे ए कार्यमां पहेळ करी हती. इ. स. १८१७ ना डीसेम्बरनो छत्रीसमी तारीले कोटा राज्य साथे ब्रीटीश गवर्नमेन्टनो सन्धिपत्र दिन्हीमां तैयार थयो अने तेनो इ. स. १८१८ ना जान्युआरी नी २६ मी तारीले महेरवान गवर्नर जनरळे ऊचर नामने मुकामे स्वीकार कर्यों. कोटाना महाराव सिन्धिया, होल्कर, पँवार अने पेशवाने जे कर आपता ते अंग्रेज सरकारने आपवा तैयार थया. त्यारपी कोटाना भाग्यचक्रमां परिवर्तन थयुं.

"सन्धिवन्धनमां आवद्ध पएळा उभय पक्ष आ वातनो स्वीकार करे छे के-कोटा रा-. जना अधीश्वर महाराजा उम्मेदिसिंहना भयाण पठी कोटानुं राज्य एओना ज्येष्ठ पुत्र अने उत्तरा-! पिकारी महाराज किशोरिसिंहने मळशे अने नेना स्वर्गवाम पठी नेओना वंग्रजो उत्तरोत्तर क्रमथी- ए राज्यने ब्लांबा वखन सूथी भोगवता रहेशे अने कोटा राज्यना समस्त विभागोनुं ग्रासनमामध्ये हैं। राजराणा जालिमसिंहना हाथमांत्र रहेशे, अने एना परलोकप्रयाण पठी एना म्होटा पुत्र कुमार है

[?] ए मन्धिपत्रमां जुदी जुदी अग्यार करेमी दाख्य करेखी है.

माधवसिंह अने ए माधवसिंह पद्मी एना वंशजो उत्तराधिकारीक्रमयी उक्त शासनसामध्ये

दिरही.

२० फेब्रुआरी स. १८१८ इस्वी

(इस्ताक्षर) सी. टी. मेटकाफ महाराव राजा उमेदिसह वहादुर राजराणा जान्तिमसिंह महाराज शिवदानसिंह पूलचंद गोविन्टराम

आ कल्पनो गवर्नर जनरले एज वर्षनी ता. ? मार्चे ळखनऊ मुकामे स्वीकार कर्यो हतो.

(इस्ताक्षर) जे. आडाम.

गवर्नर जनरकना सेक्रेटरी.

वि. सं. १८७५ पर्यन्त कोटामां सर्व प्रकारे शान्ति रहो; त्यारवाद महाराव उमेद्सिंहनो स्वर्गवास थयो त्यारे तेओना कुमार किशोरिसंहनी अवस्था ए वखते पीस्ताळीश्च वर्षनी हती दिसनिसंह तेनाधी त्रण वर्षे न्हाना हता. ए वल्ने वन्युओं सरल अने श्रद्धाळ होवायी राजराणा जालिमिस्हना अधिकारमां अवरोधरूप थया निह, परंतु त्रीजा कुमार पृथीराज के जेनी उम्मर त्रीश वरसथी कांइक ओछी हती तेणे जालिमिसहना हाथयी पोतानो तथा पोताना वंश्वनो उद्धार करवा संकल्प कर्यो. दरेक राजकुमारने वार्षिक पचीश पचीश हजार रुपीआनो आमदानीवाळी जागीर मळेळी हती.

राजराणा जाकिमसिंहने माधवसिंह तथा गोवर्धनदास नामना वे पुत्र इता, माधवसिंहनो जन्म विवाहिता स्त्रीथी अने गोवर्धनदासनो जन्म रखात स्त्रीयी थएछो इतो. महाराव उम्मेदसिंह माधवसिंहने वाल्यवयथीज श्रेष्ठ समजता हता, परंतु ते आळ्छ अने अभिमानी निवदवायी जालिमसिंह तेना करतां गोवर्धनदासने वधारे चाहता हता. आ अरसामां माधवसिंह ४६ वर्षनी अवस्थाए पहोंचेळा हता. ज्यारे जालिमसिंहे महेळमां निवास करवानुं छोडी कोटाराज्यमां अमण करवाने माटे गागरोळ नामना किळानी समीपे छावणी नांखी हती त्यारे कोटानो ज्ञासनभार तेओना कुमार माधवसिंहने सोंपवामां आच्यो हतो. समस्त सेनाने पगार आदि आपवानुं काम पण एने हाथ हतुं. पुष्कळ पैसा हाथमां आववाथी माधवने मद चळ्यो; तेणे उक्त धनमांथी केटळाएक सुंदर बगीचाओ बनाव्या, उक्तम घोडाओ खरीचा अने नळिवहार माटे जुदीजुदी

जातनी नींकाओं तैयार करावी; ए जोइ कोटाना राजकुमार सर्व प्रकारे पोतानी। हीनता समजवा लाग्या. माधवसिंह रमेशा एवा उमदा पोशाक पहेरवा मांड्या के महाराव

हम्मेदसिंह एण एवां उत्तन वस्न नहोता पहेरता. राजराणा जाकिमसिंह पोताना पुत्र माधवने विलामी अने ग्वचील जोइ निरंतर उपदेश आपता, परंतु ए उपदेशतुं फल कांइ एण मल्युं नहि. ए

वस्तते गोवर्धनदासनी उम्पर छन्त्रीश वर्षनी हती. ते बुद्धिमान अने चंचल हता; राजपरिवार
साथे नेओनो स्नेह तथा भक्तिभाव जोइ राजकुमारोए तेनी साथे मित्रता वांधी हती. राजकुमार

एघीपिंह तथा गोवर्धनदासनो चरित्र समान होवाथी ए वन्नेने वधारे वसती हती. जालिमसिंह पोताना पीतिपात्र पुत्र गोवर्धनदासने वस्रलाती खाताना मुख्य अधिकारीनी जगो आपी. माधवसिंह

मूलथीज एनी माथे चेर अने कलह करता हता. महात्मा टाँडसाहेव लखे छे के जालिमसिंहे चतुर
अनं राजनोतिह होवा छतां पोताना वन्ने पुत्रोने रीत प्रमाणे शिक्षण आप्युं न हतुं. एथी पिणामे
तथाने घणुंज दुःख भोगववुं पहयुं.

र. सं. १८१९ ना नवेम्बरनी ता. २१ मीए महाराव उम्मेदसिंहजीनी शोकजनक स्वर्ग्रिवाय प्रयो त्यारे राजराणा जाळियिविह गागरोणना देरामां हता. तेओए युवराज किशोरसिंहने कोटानी गादीपर अभिषिक्त करवा तथा महाराव उमेदिमहिनी शास्त्रोक्त उत्तरिक्रया कराववा तुरतज
राजधानी तरफ क्व कर्युं अने महेरवान पोळीटांकल एनन्ट टांडसाहेबने महारावना मृत्यु समाचार
राजधानी तरफ क्व कर्युं अने महेरवान पोळीटांकल एनन्ट टांडसाहेबने महारावना मृत्यु समाचार
राजधानी तरफ क्व कर्युं अने महेरवान पोळीटांकल एनन्ट टांडसाहेबने महारावना मृत्यु समाचार
राजधानी तरफ क्व कर्यां पुष्वीमिंह तथा गोवर्थनदासे राजराणा जालियिविह तथा माधवासिंह विरुद्ध
थए युवराज विशोरसिंहने समजाव्या के—सन १८१७ ना नवेम्बरमां अप्रेन सरकार साथे थए छा
राज्यपत्रकी अदर चोखुं रुखेलुं छे के " महाराव उम्मेदिमहिना वंशको कोटाना स्वनंत्र माछिक
रे '' एता बोटा उपर जाडिमसिंहनुं वंशपरंपरा शासनमामर्थ्य वंशपरंपरा कायम राखनानी कल्ल
पाउळपी टेनरवामा आदी डे. केथी जालिमसिंहनुं शासनमामर्थ्य वंशपरंपरा कायम राखनानी कल्ल
पाउळपी टेनरवामा आदी डे. केथी जालिमसिंह करारे कोटा नजीक आवी पर्शेन्या त्यारे तेक्षाने राजधानीकी बहर दाखर थवा दीवा नहि. जालिमसिंह कोटापी एक माइल दूर मुकाम
गावी पोळीटीकल एजन्टने रवस आप्ता एकन्टे तुरवज त्या आवी पर्यंत (ख्टपट) चलावनारा
प्राचीमिंह तथा गावर्थनदासने अलग रावा युवयान विद्योगमिंहने केहवाल्युं. किजोरसिंहे ए वात
पहुर बरी नि. त्यारे नेब्योने वाहमां लेवा राजराणा जिन्यमिंह चारे वाहुयी राजधानीने वेगी

लीधी. थोडा दिवस एमनेएम राजधानी घेराएली रहेवाथी मुंबवणमां आवी पडेला मुख्य कुपार किशोरसिंह चारसो स्वार सहित वाहेर निकळ्या, तेमां पृथ्वोसिंह, गोवर्वनदास तथा वीजा सर-दारो पण सामेळ इता. ए वधाने जरा दूर गएळा जाणो महेरवान पोळोडीकळ एजन्ट त्यां जह पहींच्या अने तमामने भय तथा समजुती आपी तेओए शान्त कर्या. कुपार किशोरसिंह माटे एक खास घोटो मगाववामां आव्यो अने तेना पर तेओने वेसाडो राज्यानीभेळा कर्या, अने तुरतज राज्याभिषेकनी किया करी नजर न्योछावर तथा पोशाक छीया दीया, तेमन मायवसिंहने कोटानी फोजदारीपर कायम राखी पोशाक अपान्यो तथा खटपटपां सामेळ यएळा गोवर्वनदासने नजर-केद राखवा दिल्ही मोकळी आप्यो अने तेनी आजीविका माटे अमुक रकम बांधी आपो. गोवर्धन-दासे त्यां वेठां वेठां पहाराव किक्नोरिसिंह साथे कागळपत्रनो व्यवहार जाँरी राख्यो अने पह्यंत्रना वीजने झुष्क थवा दीधुं नहि. तेणे वि. सं. १८७७-७८ मा माळवा मध्ये आवेळा जांद्रुआना रा-जानी रखात राणीयी उत्पन्न थएली कन्याने परणवा जवानी आज्ञा मागी. सरकार तरफथी तेने पर-वानगी आपवामां आवी. तेओ जांबुआमां अव्या के तुरतन कोटामां तोफान जाग्युं; महाराव किशोर-सिंहनी सलाइयी कोटानी सेनाए राजराणा जािंकपसिंह उपर आक्रमण कर्युं. ए अटकाववाने वहाने किशोरसिंह तथा पृथ्वीसिंह पण त्यां जइ पहोंच्या. पंतु कोइ रीते जाळिमसिं-इने जीती शकाय तेम न होवाथो किशोरसिंहे बुन्दो जइ सहायता मागी, परंतु अंग्रेज सरकारे बुन्दीना राजाने करवी मोकल्युं के "कोटाना महाराव किशोरसिंहने कोइपण प्रकारनी मदद आपंत्री नहि. " तेनी साथे गोवर्धनदास महाराव किशोरसिंहने न मळी शके ए-टला माटे कार्यक्रशळ जालिमिसहे बुन्दी अने जांबुआ वचे एक सेनाने नियत करी महाराव किशोरसिंह पोताना माणसो सहित बुन्दोयो हुन्दावन जइ पहोंच्यान जांबुआमांथी दिल्ही जवा निकळेळो गोवर्धनदास तेओने त्या मळ्यो वने जणाए केट-कीएक ग्रप्त वार्ता कर्या बाद छेवरे कोटापर चढाई करवानो निश्चय कर्यो. तेओए पोताने अंग्रेन स-रकार तरफथी कोटानो स्वतंत्र हक पाप्त थयो छे तथा पोतानी साथे दिल्हीना खजानचीना माणस तथा केटकाएक पटावाळाओं छे एवं सामान्य मतुष्योमां प्रसिद्ध कर्युः, जेथो मार्गमां घणां माणसो तेओनी साथे मळी गयां. ए रीते त्रण इजार माणसो सहित महाराव किशोरसिंह कोटानी समीपे

१ इ० स० १८२० ना आगस्ट मासनी १७ मी तारीखे कोटानी गादीए महाराव कि-शोरसिंहनो महोटी भामधूमनी साथ राज्याभिषेक थयो हतो.

आवी पहोंच्या. आ वखते जालिपसिंहना अंगत माणसो पण किशोरसिंहना पक्षमां जइ मळ्या. त्यारे जाळिमधी बोली जवायुं के " मारुं वस्त्र पण महारुं नथी " एवामां तेओए सहायताए बोलाबेलुं मरकारी लक्कर त्यां आवी पहोच्युं. ए ळक्करनी साथे मळेली जालिममिंहनी सेना महाराव किजोरिसिंह साथे लहवा आगळ वधी. पोलोटोक्रल एनन्ट मी. टॉड साहेवे युद्ध न थाय नो नारुं एवा इरादाधी किञारसिंहने समाधान करवा कहेवराव्युं; त्यारे तेओना तरफयी एवी जवाव मळ्यों के " आवर विना जीवन अने अधिकार विना राज्य काइ उपयोगनुं नथी, माटे कांनी परशुं अने कांती अमारा वडवाओए पळवेला समस्त अधिकारने पुनः नाप्त करशुं." छेत्रटे-अनिवार्य युद्ध शरु घयुं. धोडा वखतमां महाराव किशोरिसंह पशजय पाम्या; एतुं कारण ए इतु के तेना पक्षमां जे मफती आ माणसो मळ्या इना, ते तुरतज भागी गया मात्र पोनाना चारसो रवारो युद्ध भूनिमां अडग रह्या, तेओनी साधे महाराव किशोरिंमह अरथा माइल उपर विश्रान्ति लेवा उभा; तेवामां सरकारी लडकर तेओना उपर धसी आव्युं. हाडा रजपूतीए हद उपरांत वडा-दुरी बताबी. अंग्रेज लब्कर हार पामी पाछं इठयु. महाराव किशोरसिंहना न्हानाभाइ पृथ्वीसिंह अ-सह आधातथी मार्या गया. उक्त विजयथी संतृष्ट थएला महारात्र किशोरासिंह जीनाथ द्वारा तरफ जॅता रता; त्यांथी महेरवान पोलीटीकल एजन्टे तेओने नवा कोलकरार साथे कोटानी गादीपर नियत कर्या. ए दखते राजराणा जालिमसिंहे महेरवान पोलीटो कल एजन्टनी साथे सामा जड महा-राव विशोरसिंहने मीने आप्यु हतुं. किशोरसिंहे महात्मा टॉड साहेवना कहेवाथी फरी फोजटार तथा राजमंत्री माधवर्सिं साथे मित्रता वांधी एथी वृद्ध राजगणा जालिगर्सिंह संतुष्ट थया. ए व-खते महाराव विद्योर्रासेंट्ने केटलाएक स्वतंत्र हक मळी चुक्या हना. ज्यारे राजराणा जालिमार्ने-रजी ८५ वर्षनी उम्मरे पहोंच्या, त्यारे आलस्य थुं कहेवाय ए जाणना नहोता. तेओने शिकारनो पणोज शोख हतो. ज्यारे तेओ द्रष्टिहीन अवस्थाए अन्वार चहवा अममर्थ थया त्यारे पाळाबीमां बेसी शिकारे जता; ए वस्ते हजारी भाणमी तेओनी सेवामां हाजर रहेना. हृद्ध जालिवामिंह ए दपानी साथे अनेक प्रकारना हास्यविनोट करना अने एक बीजानी बातने आनन्द पूर्वक सांभळता. भिकारत कार्य समाप्त थया दाइ तेओं मेंकडो मेककोनी माथे मयन वनमां वेसी भोजन करना अने त्यांज पृषिविभाग, शान्तिरक्षाविभाग, समर्विभाग, वाणित्य तथा नीति आदि अने क गाय वार्ष करता हता. जे समये दाणो उपर दाणोनी मदल दर्पा थनी हनी ने समये एक पीप-व्यती नीचे देटेला जालिमामिर विचारपूर्वक अपगवीने टट देना हना. आप आखो दहाडो मृग-

C)(C

यामां वीतावता छतां तेनी पासे पुराणनो पाठ अने धर्म सबंधी गीतो गवातां इतां; तेओ तमाम कार्य करवानो अवसर मेळ्वी शकता. तेओनी द्रष्टि एकज वखते नष्ट थइ गइ छतां कोइ तेने भुः छावो खबरावी शक्युं निह. एनी मगजशक्ति एटली वधी तीत्र इती के ते इरकोइ चीजने हाथमां लइ सारी अथवा नरसी कही शकता इता.

महात्मा टॉड साहेबे लख्युं छे के-" देशना जे स्थानपर कोइ काले धान्य उपजावना संभव न होय ए स्थाने धान्य उपजाववामां जे मनुष्य समर्थ होय ए धन्यवादने योग्य लेखाय छे." जो ए कहेवुं साचुं छे तो पछी जेणे कोटा राज्यना जे जे स्थळमां तृण पण न्होतुं उगतुं त्यां अनेक मकारना स्वादिष्ट फळ मूळथी सुसमृद्ध वृक्षोते े उठेर्यो अने राजधानीनी चारे वाजुना कठिन पर्व-तोपर माटी नंखावी सिंहल तथा पश्चिम महासागरना द्वीपोथी मंगावेलां अनेक प्रकारनां वृक्षे। वावी उत्तम फळनी प्राप्ति करा राजराणा जालिमसिंह पशंसापात्र केम न थाय ? राजराणा जालिम-सिंहना बागमां काबूलना शेव, मारवाहना सुप्रसिद्ध काँगाना वागना अनार (दाडिम), सिलह-टनी तमाम जातनी नारंगी, माँउ गामना आंवा अने राजप्रतानाना समस्त मुख्य मुख्य फळी उप-रांत दक्षिणनी स्वर्ण कदली पर्यन्त चीजो मळती इती. ए वगीचाओ तथा वृक्षोमां जलदान माटे जालिमसिंहे पर्वतोना वक्षःस्थलने विदीर्ण करी विशाल क्रवाओ खोदाच्या इता. एक एक क्रुवो खोदाववामां त्रोश त्रीश इजार रुपिआन्नं खर्च थयुं हतुं. जालिमसिंह पोताना मित्रोने पण ए रीतनी सलाह आपता हता; ए उपरांत तेओ रसायण शास्त्रमां पण सारी रीते प्रसिद्धि पाम्या इता: तेओए जाते गुलाव, केतकी तथा केवडा आदिनां अतर तैयार करी सामान्य रीते वपराता अतर सामे विजय मेळच्यो हतो. उपरांत काश्मीरमांथी ऊन वणवानां यंत्रो मगावी त्यांना वणकरोने पण कोटामां तेडावो लीधा अने उत्तम मकारना साल दुशालाओ तैयार कगन्यां. पोताना बुद्धि-वळथी तळवार आदि अनेक प्रकारनां अस्नो वनाववामां पण जालिमसिंहे प्रशंसा प्राप्त करी हतो.

राजाराणा जालिमसिंहे पोतानी युवावस्थामां एक " जेडी" जातिना मल्लोनुं दळ एक छुं. कर्युं हतुं. वार्पिक खर्च रु. ५०००० पचास हजार थतुं. ए मल्लोए दरेक राज्यना पहेलवानोने कु-स्तीमां मात कर्या हता. ए अरसामां जे कोइ सारो पहेलवान त्यां आवो चडतो तेने जालिमसिंहजी पोता पासे राखी लेता. तेओ पहेलवानोनुं वाहुबळ जोता एट छुंज निहः परंतु व्याद्यनखनां नवीन पकारे अस्त वनावी तेओने हाथे वंधावता अने पछी रक्तपात थाय एवी रीते युद्ध लडावता. एक वखते बुन्दीना वीरवर महाराज उमेदसिंह द्वारिकानी यात्राएथी पाठा बळती वखते कोटामां आव्या.

प समये जालिमसिंह अलाहामां बेठा हता अने वाघनखने धारण करनारा दोर्घ आकारवाळापहेल-वानोनुं युद्ध चालतुं हतुं. महाराज उमेदसिंहना अचानक आगमनथी ए युद्ध वंध रहुं. तोपणकोधा-यमान धएला हद्ध महाराज उमेदसिंह जालिमसिंहने तिरस्कारपूर्वक कहां के. " आम रक्तपात कराबी अहलक नाणां उहावो छो ए करतां ज्ञातिवन्धुओने तेमज गरीवगरवांओने आश्रय आप-वामां धननो ज्यय करता हो तो केंद्रं सारुं? राजराणा जालिमसिंहे महाराज उमेदसिंहना उक्त कथन उपर कांइ एण ध्यान आप्युं निह. जेथी युन्दीना महाराजने वहुज क्रोध चड्यो. तेओए हरतज हालने पृथ्वीपर राखी तेमां अंगपर धारण करेलां तलवार, वन्द्क, छरी तथा रणकुठार आदि तमाम अख्रोने मृत्यां अने तथाम पहेलवानोने बोलाबीने कहां के एवं। त्यो वहादुर छे के एक हायथी आ हालने उपाही लीए पहेलवानोए एक पछी एक भागल वरी यत्न करी जोयो, छतां कोइयो इत्तर उपही निह. अन्ते ताट वर्षनी उम्परे पहें।चेला महाराज उम्मेदिसिंह एक हायवती ए ढालने उपाही लीघी अने घणा वत्वन सुधी तेओ एमना एम उमा ग्ह्या. समस्त हाडाओ पोताना जाति-इत्तरुं आनुं असीम सामर्थ्य जोइ अत्यन्त आनन्द पाम्या, अने पहेलवानो लज्ञाने लीघे नीचुं जोइ रहाा. न्यारथी जालियसिंह ए जोख नहन छोडी दीधो.

राजराणा जालिमिंहे पोताना परलोकमयाणनी छेडी घडि पर्यन्त कोटानी शासनशक्तिने छोडी निह, तेश्रो इ. स. १८६२ जुन, ता. २५ मीए स्वर्गवामी थया + महाराव किशोगिंसहे जालिमिंदिने आपेला वचन प्रमाणे तेश्रोना पुत्र माधविन्हनो कारभार कायम राख्यो.

ह स. १८२८ सं. १८८४ मां महाराव किज्ञोरिमहनो अपुत्र म्वर्गवास थतां तेत्रोना न्हाना भाइ पृथ्वीसिंहना पुत्र रामसिंह कोटानी राजगादीए वेटा. त्यारवाट थोहेज दिवसे राजराणा माधविस्तो केलामवास धना तेओना पुत्र मटनिम्ह वीजा कोटाराज्यना मंत्रीयद्वर नियन थया. परंतु महाराव रामसिंह साथे तेओने दरादा दन्युं निह. वि. मं. १८९० मां ए वन्ने वचे वादिविधाद एणो वधी गयो. महाराव रामसिंह नामडार अग्रेज मरकारने अरज दारी राजराणा मदनिस्ति रिने कोटामाधी हूर वरदानो यत्न आद्यों छेवटे इ. स. १८३८ मां नामदार अग्रेज सरकार वचे परी राजराणा मदनिस्ति वापडा वादिन आद्यों छेवटे इ. स. १८३८ मां नामदार अग्रेज सरकार वचे परी राजराणा मदनिस्ति वापिक उपज दार लाखनी आमटानीवाळा चाँइहाट, सकेन, चोन्महला. (पचवाड. अवहार. डिग. गंगराड,) झालरापाटन, रमचवा,

⁺ कोइ बरी इ. स. १८२४ मा जालिमिस्तुं मृत्यु थयुं एम जणांव छे.

कोटडाभटा, सुरेश, रखाई, मनोहरथाना, फूलबडोद, चाचुरणी, कंकुरनी, छीपाबडोद, शेरगढनो कांइक पूर्वांश, परवन, निवाजनो पूर्वांश अने शाहवाद नामनां १७ परगणां कोटा राज्य तरफशी अपावी तेना वंशपरंपराने माटे नियत थएको कोटा राज्यशासन सबन्धी समस्त इक रद कर्यों राजराणा मदनिंदे पोतानं जुदुं राज्य स्थाप्युं; राजधानी "झालरापाटण" मां राखी अने पोताना देशने "झालाबाड" एवं नाम आप्युं, नामदार अंग्रेज सरकारे कोटा राज्य पर नियत करेकी खंडणीमांथी अंशो इनार रुपिशा ओछ। कर्या अने ए रुपिशा झालरापाटणना राजराणा पासेथी लेवानो टराव कर्यों.

इ. स. १८४५ वि. सं. १९०१ मां राजराणा मदनसिंहनो स्वर्गवास यतां तेओना कु-मार पृथ्वीसिंह झालरापाटणनी राजगादीए वेटा. तेओए इ. स. १८५७ ना वळवामा नामदार अंग्रेजसरकारने अमूल्य सहायता आपी हती. इ. स. १८६४ मां तेओने नेकनामदार ब्रीटीशसर-कार तरफथी झालावाडनी राजगादी माटे वगर नजराणे दत्तक लेवानी सनंद मळी हती.

इ. स. १८७७ मां भारतेश्वरी महाराणी विक्टोरीयाए " कैसरेहिन्ह " तुं परम माननीय पद धारण कर्युं ते वखते दिल्हीमां म्होटा दमामथी दरवार भरायो हतो. ए प्रसंगे राजराणा पृथ्वीसिंह त्यां पिधार्या हता; तेओने नामदार अंग्रेज सरकार तरफथी वादशाही वावटो एनायत करवातुं सुनिश्चित थतां ते पाछळथी लक्करी टाठमाट साथे तेओनी राजयानीमां पहोंचा- हवामां आव्यो.

राजराणा पृथ्वीसिंहने संतान निह होवाने छीधे तेओए वि. सं. १९२९ मां वढवाणना राजा राजसिंहना पौत्र अर्थात केसरीसिंहना कुमार वखतिसिंहने दत्तक छीथा; ए वखतिसिंह वि. सं. १९३४ मां राजराणा पृथ्वीसिंहनो स्वर्गवास थतां जालिमसिंह नाम धारण करी झालरापाटणनी राजगादीए वेटा. तेओए इ. स. १८८७ मां भारतेश्वरी महाराणी विक्टोरीयानी " ज्युवीली " ना महोत्सव मसंगे जत्तम मकारे राज्यभक्ति बतावी हती. ते शोश्रीने नामदार ब्रिटीश सरकारे पदभ्रष्ट क्यों छे तेथी हाल काशीपुरीमां निवास करी इश्वरभजनमां आयुष्य निर्ममन करे छे. सांमतसमये झालरापाटणना तष्त्तपर नामदार राजरामा श्री भवानीसिंहजी बहादुर विराजे छे. जेओ श्री पोताना उत्तम गुणोवडे मजानुं पालन करे छे.

झालावाह (झालरापाटण) ना राजराणाने बीटीश छावणीमां जती वखते पंदर तोपे। नं मान आपवामां आवे छे.

झालरापाटणनो संक्षिप्त इतिहास.

रेखता.

वहबाणना विवेकी, राजोजी मुळराजा, वनो दानी दीपता'ता, मखत्रान वंशमाजा; तेना कुमार त्रीजा, श्रीभावरंग भीना, भाणेज भारयशाळी, इंडर महीवितना. अनुकुछ देव एना, जोतां सदा जणाये, मोसाळमां जईने, वय वालधी वस्या ए; भावे भणी गणीने, रमणीय भाव राने, योंचन लही उमगे, मुखडां अपूर्व साने. राठोढराज करा, वियिनत्र मेमी पुरा, दिन एक त्यांही आच्या, मानरनरेश झूग; मखवान भाव माथे, पडी दृष्टि सर्व पहेली, नेहे निहाळी एणे, छवी शायथो भंग्ली. भाणेजना भटामा, चाँह मित चटावी, ईंडर मंहिपतिए, स्थिति मित्रेन खुणावी: सावरनरेश संगे, लड़ भावने मियाच्या, निज राजधानी मांहिः आनंदयारी आव्याः ए दाद भाव एना, जुगत बन्या जमाइ, सावरगटे सुग्देथी, कर्गे भृषिनी कपाटः माधव हामार एना, वर युद्धना विहान, मोनाळनी मुदेंथी, नेवा दलावीं मारी.

565

मिएितिनो माधवपरे, मन्तर दाध्यो स्नेटः

राणीजीनां हृदयमां, इर्था वधी अछेड. ६
रखे मारी मुज पुत्रने, माधव थाय मिडिंप;
वात प्होंची ए विगतधी, झट झळराण समीप. ७
रजा लइ राजाजीनी, माधवसिंह महान;
स्वार संग लइ पंच शत, बुन्दी गया वळवान. ८
बुन्दीमां वळथी कयों, दाखल बीजो देश;
माधवपर महारावनं, वधतं हेत हमेश. ९

"छप्पय. "

एक छक्षनो ए समे, गढ नानता गणायः

माथवने दइ पान सह, राव राजी वहु थाय

निरखी निमकहलाल, मरण समये महाँरावे, सत्ता सोंपी सर्व, भला माधवने भावे; राजपुत्रनी हती, ए समें लघु अवस्या, करी माधवे कलित, वहा राज्यनी व्यवस्था; प्रतिनिधि वनी तृप पुत्रना, झालो जगजाहेर थया, राजमातुनी रीसथी, गुणझाळी कोटे गया.

रेखता.

भुजवळथीं भीम पासे, मखवान मान पाम्या,
सेनापित बनीने, कीर्ति अपार काम्या;
शौर्येथीं श्वेर दुर्गे, सत्ता महान स्थापी,
महारावने मुदेशी, ए भूमि सर्व आपी।
ए वाद पुत्र एना, भयहारी श्रेयकारी,
मळीं मदनसिंहजीने, कोटानी फोजदारी;

23

ए पण वितानी वेटे, पाम्या घणी प्रसिद्धिः कुळनी प्रधा प्रमाण, कोटानी भक्ति कीधी. 33 हिम्पत थया इठीला, आदि कुमार एना, पितुमरण बाद शीते, संभाळी सर्व सेना; महारावने रिझाच्या, अस्तिं गुमान गाळी, उत्साही बन्धु एना, पृथीसिंह पुण्यशाळी. १४ जाकिमसिंह जनम्या, एने त्यहां उमंगे, रहेंना सटा छुखेथी, शिवसिंह वंबु संगे; जयपुरनी फोज जोहें, मळीने चक्क्या मराठा, टिम्मतनो हाम हेरी, निश्चय तमाम नाटा. हित राज्यतु इमेशां, कींशल्पधी करीने, स्वर्गे गया सुभागी, वर कीर्तिने वरीने; पछी जालिमें प्रमोदें, ए स्थानने स्वीकारी, सत्ता स्वतंत्र धारी, स्थिति राज्यनी स्थारी. १६ दोहा भटवाडामां भुजरळे, राख्यो झाले रंग; कछवादाने कृटिया, जदर मचावी जंग. 90 राष्ट्रय पताका रिपु नणी, हिम्मनथी करी हाय: जीत मेळवी जानिमे, दक्षियायी भर्गे वाथ. ? एक आग्दर्भा हीन ए. रना छना हुझिआर; दह समय छींग दनी रही, जालियनी जयकार. 99 हुवम जरी हाले नहीं बोटाविनो क्यांय: लियनी आहा मुल्य. बाज राष्ट्रयना थाय. 20

सर्वोपरी सत्ता धरी, मान छहे मखवान: तेवामां तंते थया, गादीवित गुमान. 9? मञ्जता जालिमनी पवळ, खटकी हृदये खास; छिनच्या रावे क्षणपहीं, एनो गाम गिरास व्र मातुल जालिपना महा, वालावत वलवान; स्थाप्या एने स्नेहथी, सेनापतिने स्थान. 23 कर्यो त्याग कोटा तणो, अपित गणी अपमानः जालिम मेवाडें जइ, म्होडं पाम्या मान. २४ अरसी राणानो अमळ, डनमगतो देखाय: दिनमतिदिन चिद्रोहनी, ज्वाळा व नती जाय. २५ सद्गुण जालिपना सुणो, उन्नतिनी करीँ आशः अरसीराणे एहने, शीर्ते राख्या पास. 98 " दरप्य भ

शूर जालिमे सद्य, सकल विद्रोह शमान्यो, अरसीनो अधिकार, जुक्तिथी वधे जमान्यो; शिथिल धया सरदार, जोर जालिमनुं जोई, कैक कपाई मुआ, तंतथीं लडीने तोई; आपी अरसीए तुरत, जालिमने ए जोतधी, पदवीं राजराणा तणी, पुरस्कार सह मीतथी.

रेखता.

सामन्त सर्व पाछा, राणाधी खूब रुट्या,
महाराष्ट्रथी मळीने, अति धारी तुर्त उट्या;
कृतिम महिपतिने मेवाड देश देवा,
कीधां अनंत यत्नो, अरसीनी जान छेवा.

20

जाकिमनी सम्मतिथी राजी थएछ राणे, कीधी महान सेना, एकत्र एन टाणे; **डत्साद धारी युद्धे, सहु श्लोंर्येथी छवाया,** दुर्भाग्यधी परतु जालिम घणा घत्रायाः 29 भय पामी तर्त भाग्या, अशिमेंहनी अभागी, विद्वेपनी वधारे, ज्वाळा प्रसिद्ध जागी; पकडाइ जबुपंजे, झट चातुरीथी झाले, करी पित्र शत्रुओने, लीधी विदाय व्हाले. 30 सुप्रमतापराणा, अरसीनों आग छोडी, आव्या त्वरायी कोटे, जालिम तंत तोडी; आदर जरी न आप्यो, एने गुमान भूपे. त्या होलकरनी सेना, आवी विराट मपे. 33 मल्हारराव केरु, दळ जाग्दार देखी, निज सैनिकोनी संख्या, छेखापई। न छेखी; शाणा गुमानसिंह, युद्धे न जाणी निद्धि, अरि संग योजनाओं. सन्तिनी सद्य दीती. 39 दोहा. मेनापतिने मोंपीयुं, कलिन मन्यितुं कानः वन्धुं न दालादनधीं ए, थया गव नाराज. 33 गट हुवायनीनो गहन, सत्दर करो स्वाबीन: मस्त मराहाओ बन्धा. हाहाओ बळहीन. **\$8**

र्जा निवट जाटिम बहै, फिनर न करही बाह.

34

आपत्ति सिर आदनं. गया नव गभगहः

सर्वोपरी सत्ता धरी, मान लहे मखवान; तेवामां तंते थया, गादीवित ग्रमान. 9? मश्चता जालिमनी मवल, खटकी हृदये खास; छिनव्या रावे क्षणमहीं, एनो गाम गिरास. 92 मात्रल जालिमना महा, वालावत वलवान; स्थाप्या एने स्नेहथी, सेनापतिने स्थान. 23 कर्यो त्याग कोटा तणो, अमित गणी अपमानः जालिम मेवाडें जइ, म्होटं पाम्या मान. २४ अरसी राणानो अमळ, डगमगतो देखाय: दिनमतिदिन विद्रोहनी, ज्वाळा वयती जाय. २५ सद्गुण जालियना सुणो, उन्नतिनी करीँ आशः अरसीराणे एहने. शीतें राख्या पास. व्रध् " इत्राच्य भ

शूर जालिमे सद्य, सकल विद्रोह शमान्यो, अरसीनो अधिकार, जित्तिथी वधे जमान्यो; शिथिल धया सरदार, जोर जालिमनुं जोई, कैंक कपाई मुआ, तंतथीं लडीने तोई; आपी अरसीए तुरत, जालिमने ए जोतधी, पदवीं राजराणा तणी, पुरस्कार सह पीतथी।

रेखता.

सामन्त सर्व पाछा, राणायाँ खूब रुठ्या,
महाराष्ट्रथी मळीने, अप्ति धारी तुर्त उठ्या;
कृत्रिम महिपतिने मेवाड देश देवा,
कीधां अनंत यत्नो, अरसीनी जान छेवा.

२८

जाकियनी सम्मतिथी राजी थएछ राणे, कीधी महान सेना, एकत्र एज टाणे; उत्साह धारी युद्धे, सहु श्रौर्यथी छवाया, दुर्भीग्यथी परंतु जालिम घणा घवायाः 29 भय पामी तुर्त भाग्या, अरिसिंहजी अभागी, विद्वेषनी वधारे, ज्वाळा प्रसिद्ध जागी; पकडाइ शत्रुपंजे, झट चातुरीथी झाले, करी पित्र शत्रुओने, छीधी विदाय व्हाले. 30 ञ्चप्तपतापराणा, अरसीनी आग्न छोडी, आव्या त्वराथी कोटे, जालिम तंत तोडी; आदर जरी न आप्यो, एने गुमान भूपे, त्यां होलकरनी सेना, आवी विराट रूपे. 39 मल्हारराव केरुं, दळ जीरदार देखी, निज सैनिकोनी संख्या, छेखामहीं न छेखी: शाणा गुमानसिंहे, युद्धे न जाणी सिद्धि, अरि संग योजनाओ, सन्धिनी सद्य कीधी. 39

दोहा.

सेनापतिने सोंपोंयुं, कलित सन्धितुं काजः वन्युं न वालावतथी ए, धया राव नाराज. 33 गढ बुकायनीना गहन, सत्वर करो स्वाचीनः मस्त मराठाओं वन्या, हाहाओं वळहीन. ३४ आपत्ति शिर आवनां, गया नव गभराइ: जई निकट जालिप कहे, फिकर न करशो कांइ. 34

द्वंथीं मराठा होलकर, सदैव राखे स्नेहः करवं ग्लभ कोटातणुं अधिक न जाणे एह. ₽₽ जाणे जाल्यिसिंहना, गुण महाराव गुमान; उक्त कार्यमां योजीया, महद आपीने मान. 919 मळ्या होलकरने सदे, जालिम जुक्तिवानः मुखदायक सन्धितणुं, कर्यु सफळ सह काज. 36 झट रावे झलराणने, दई भूमिनुं दान; फोजदारतं पद फरी, आप्यं तर्जी अभिमान. 36 लघु वयना निज वालने, गुमान राग ग्रसित; गुणी जालिमनी गोदमां अर्था थया अभीत. 80 गया स्वर्गमां जे समे, गुणनिधि राव गुमानः प्रतिनिधि बाळभूपालना, मान्य थया मखवान. 83 नरवर रूप वंशीथीं लडी, राखीं पुरातन रीत; कवज केलवाडा कर्यु, लही जाकिमे जीत. 85 " दृष्य " ज्ञासन केरुं सर्व, काज मकवाणो करता. कोटाना सामन्त, बनी, विद्वेषी विचरताः राजकीय जन हृदय, खूव जालिम खटकता, वांधी विचार विरुद्ध, प्रजाजन शीश पटकता, अनेक खटपट आदरी, सहुए मळी छळवळ सहित; पण प्रतापीँ जालिम रहा, भेदनीतिथी भय रहित.

निश्चित्व अपार नेहे, झाले ममत्व मानी, विध्विध रीतें वधारी, कोटानी आमदानी;

THE STATE OF THE S

रेखता.

अधिकार पामी उंचो, सहुपर चलावी सत्ता; चित्तथी कदी न चूक्या, महाँरावनी महत्ता. 88 त्रिय समयने विछाणी, करता गतिमतिथी, करी घरनी खुव खेती, धन मेळच्युं धृतिधी; घडि सिन्धियानी संगे, मळी एकमेक धाता, महाराट्र साथ मैत्री, करी क्षेपथी छवाता. ४५ वहु हेत होळकरथी, वांधी सुकाज साधे, वळी समय पामी सारो, वळवान वैर वांधेः युक्ति प्रयुक्तिओथी, विघ्नो तमाम वाम्या, अंग्रेजना अमलमां, परिपूर्ण मान पाम्या. 86 मरतां कगी न एने, अविनाशों याद आन्या, पच्चार्शी वर्ष पूरां, व्यवसायमां विताव्यां; आत्मज महान एना, माधव हता मनस्वी, राजे किशोर रुँडा, तृप आसने यशस्त्री. 80 एणे उदार चित्ते, कोटातुँ कारभारुं, माघव करे मुदेथी, सोंप्युं विचारी सारुं, वह माधवे बजाबी, स्नेहेथी राज्यसेवा, काळे लइ थया ए, महाकाळना कलेवा. दोहा. माधव पहेलां मृत्युवश, थया अपुत्र किशोर; रामरावतुं ए पछी, जाहिर जाम्युं जोर. ४९ माधवसुत मंत्री पदे, मदनसिंह मखवान; भोगवता सत्ता भली, गहेरं धारी ज्ञान. अणवनाव ए उभयमां, प्रसर्यो पारावार: न्हाल धरी वच्चे पड्या, सद्यविटीश सरकार.

कर्या अलग कोटा थकी, प्रगणांओ प्रत्यक्ष; सत्तरनी आवक सुभग, लेखी द्वादश लक्ष. ५५ झट अर्पी झलराणने, पार पाडीँ तकरार; नामदार सरकारनो, उभयपरे उपकार. ५३ " छप्पय."

मकवाणे मनहरम, झालरापाटण झांखी,
महद वांधिया महेल, राजगादी त्यां राखी;
झालावाड वसावीं, मदन महिपाल विराजे;
पछी भूप पृथीसिंह, भन्य छिव धरीने भ्राजे.
वंड समे भ्रजदंडथी, अमित द्दाम धारी चरे;
आश्रय दइ अंग्रेजने, वचावींया ए व्हादुरे.

, वचावाया ए व्हादुर. सवैया एकत्रोज्ञा

कर्छ राजराणा पृथींसिंह, रहीं अपुत्र परछोकें प्रयाण, वस्ततिह बढवाणथी आव्या दक्तक स्नुत बनो परम सुजाण; जालिम नाम धरी जग जाहेर काप्यां निज रैयतनां कृष्ट, पण कंइ कारणसर सरकारे पाछळथी कीधा पदभ्रष्ट. काशीं निवास करी कोडे ए गुणीअळ आयुप गाळे छे, हाळ भवानीसिंह भूपति प्रजा वर्गने पाळे छे; उदारता आदि गुण उत्तम धारण करीने धर्मनिधान, स्वल्प समयनी अंदर सारुं महिमंडळमां पाम्या मान. रहो झाळरापाटण मांहे अचळ सदा झळराणतुं राज, भूप भवानीसिंह पामजो दिन मितिदिन आयुष्य दराज; आत्मिक जन सह सदैव एने सुंदरवर सुख्नां स्थापे, नेहधरी नशुराम निरंतर ए रीते आशिप आपे.

५५

५६

40



The Thakore Saheb Shri Vakhatsinhji Saheb, C S I, Savla (Kathiawai)

| • | | |
|---|--|--|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |



एकत्रिंशत् तरंग.



" मनहर["]

हळवदना फटाया शूरा शेषमाल हता, तेओए स्वतंत्र राज्य सायलानुं स्थाप्युं छे; कहे नथुराम एणे अनहद बाहु बळे, कैक काठीओना कुळ केरुं मूळ काप्युं छे; हाल एना वंशमां छे तख्त पोते वख्तसिंह, जेणे दीर्घ आयुषने मोद धरी माप्युं छे. झाला वंशवारिधिमां आपना कुटुंबीओने, अमर नरेश अमे योग्य स्थान आप्युं छे.

स्वस्थान श्रांगश्रा राज्यना महाराजा रायिसंहजी वीजाना पाटवी कुमार गजासेंहजी श्रांग-धानी राज गादीए रहा अने तेथी न्हाना कुमार मेरामणजी उर्फे मेरुजी तथा शेपमालजीने "माथक" नामनुं गाम गरासमां मळ्युं. शेपमालजी महान श्रुरवीर अने साहिसक हता; तेओए पोताना म्होटा भाइ मेरुजी साथे कांइ अणवनाव थवाथी माथकनो गरास मुकी दीधो, अने श्रांगश्रा उपर वहार-वटे निकळ्या; जेथी श्रांगश्राना नामटार राजसाहेवे तेओने नारीचणा नामनुं गाम स्वतंत्र उप-भोग करवा आप्युं.

शेषमालजी हळवडमां पोताना ज्येष्ट वन्यु राज गजासिंहजीनी हजुरमां रहेता हता. गज-सिंहजी निर्चल होवाने लीघे शेषमालजीए हळवदनी गादी पचावो पाडवानो यत्न करवा मांड्यो. ए गुप्तवात राज गजासिंहजीना जाणवामां आवतां तेओ तुरतज वावलीना राणा कलाभाइ पासे जइ पदोच्या अने तेओनी सहायता मेळवी शेषमालजी पासेथी तेओए हळवदने हस्तगत कर्यु. शेषमा- लजी इळवदमांथी निकळ्या ए वखते श्रांगश्रामां राज गर्जासंहजीनां राणी जीजीवा तथा क्रुमार जसवतासिंहजी रुडी रीते राजतंत्र चलावता हता. तेवामां राणी जीजीवाने पीताने पीयर (वरसोडे) जवातुं थयुं. ए तकनो लाभ लइ श्रेपगालजी श्रांगश्राना थणी थइ वेठा. ए वात राणो जीजीवाना जाणवामां आवतां तेओए काठियावाडमां पेशकसी उघरावचा आवेल पेशवा सरकारनां लक्करनी तेमज राधनपुरना वावीनी अने सायलाना काठी लोकोनो सहायता मेळवी श्रांगश्राने घेरो घाल्यों; ए घेरो लांबी मुदत सूथी रह्यों. ज्यारे तेना साम्रं टकी शक्तवानुं सामर्थ्य न रह्यं त्यारे श्रेपमालजीए श्रांगश्रानो कवजो छोडी दीधो; परंतु जे काठि लोको जीजोवानी मददमां रहो पोतापर हल्लो करवामां सामेल हता, तेओने दंड देवाना इरादाथी श्र्यीर श्रेपमालजीए वि. सं. १८०७ मां ए लोको पर चढाइ करी अने मचंड वाहुवलथी मितपक्षीओने परास्त करी तेना सायला नामना गाममां पोतानी सवल सत्ता स्थापी. तेमज दुश्मनो दक्षिण तरफथी पोताना मटेशमां टाखल थइ अत्याचार न करी शके एवा हेतुथी तेओए त्यांज किल्लो वंशावी राजधानी जमावी अने आजुवा- जना मुलकने पण स्वाधीन करी लीधो अने वि. सं. १८०९ मां ६६ वर्षनी अवस्थाए सायली राजगादीए वेठा.

आ रीते श्र्वीर शेषमाळजीए स्वकीय वाहुवळथी नारीचाणा नामे गाम मेळच्युं. प्रवळ पेशवा सरकार तथा बहादुर बाबीना छक्कर सामे एकले हाथे टकर झीली अने सायलानो स्वतंत्र तालुको बांध्यो. स्वल्प समयमांज शेषमाळजीए अनुपम शौर्यथी उत्तम लाभ मेळच्यो; भाट चारणो तेनी वीरताना बखाण करवा लाग्या. अहीं जणाववानी आवश्यक्ता छे के कोइएक चारणे कोटडा सांगाणीना तालुकदार जसाजी पासे शेषमालजीनी वीरताना बखाण कर्या त्यारे जसाजीए शेषमालजी तरफ तिरस्कार बतावी कहुं के "ए ससलाथी श्रं थाय?" आ बात गोंडलना टाकोर कुंमाजीने काने जतां तेओए शेषमालजीने बोलावी उक्केर्या. शेपमालजीए कहुं के "तमो कोटडानी वार न करो तो हुंज जसाने जोइ लउं "कुंमाजीए बचन आप्युं के हुं कोटडाने कोइ पण मकारनी मदद निह आयुं. आ अरसामां जसाजीए कोटडामांथी खुमाणोने काटी मुक्या हता, ए खुमाणो तथा आणंदपुर अने भीमोराना काठीओनी मटद मेळवी वि. सं. १८२१ मां शेषमालजीए कोटडा पर चढाइ करी, ए बातनी जसाजीने जाण थतां ते लक्कर लड़ सामा आव्या अने कोटडाथी आठ माइल दूर राजपीपळा नामना गाम पासे महा भयंकर युद्ध थयुं; तेमां जसाजी तथा सरतानजी काम आव्या अने शुरवीर शेपमालजी विजय मेळवी पाछा आव्या.

त्यारवाद शेषमालजीने भ्रांगभ्रा साथे अणवनाव छे एम धारो काठी लोकोए भ्रांगभ्राना होर वाल्यां. ए वातनी शेषमालजीने जाण थतां तेओए भ्रांगभ्राना संदेशानी राह निह जोतां का-ठीओ पाल्ल जइ धीगाणुं कर्युं. तेमां पोते घणाज घायल थया छतां काठी लोकोने हरावो होरने हस्तगत कर्या अने एज वखते भ्रांगभ्रे मोकली आप्यां. शेषमालजीना उक्त कार्यथी प्रसन्न थएला राज गजिसंहजीए तेओने "लीया" नामनुं गाम पारितोपिक तरीके आप्युं.

वीरवर शेशमालजी जामनगरना महाराजा जामसाहेवनां कुंवरी साथे परण्या हता. एवं कहेवाय छे के जामनगरथी कोइएक ब्राह्मण धांगधे जतो हतो, शेषमालजी धांगधेथी वळतां सीध-सर नामना स्थळ आगळ वडनी छायाए वेठेला हता. तेओए पेला ब्राह्मणने जोइ पूळ्युं के "महाराज! क्यां जाओ छो ? ब्राह्मणे प्रत्युत्तर आप्यों के धांगधाना राजकुमार साथे जामजादी तुं सगपण करवा जाउं छुं. आ वखते शेषमालजीए पोते धांगधाना राजकुमार छे एवं प्रतिपादन करी ब्राह्मण पासेधी माळा विगेरे मांगलिक द्रव्यों लीधां अने विश्वने विदायगीरो आपी. वाद ज्यारे तेओनां लग्न थयां त्यारे जामनगरथी पुष्कळ मालमत्ता मळी अने तेमांथी तेओए सायलानो गढ वंधाव्यो.

शेपमालनी एवा पराक्रमी हता के तेओना राज्य सामे कोइ दृष्टिपात पण करी शकता निह. ए वीरनरे वि. सं. १८५० यां कैलासवास कर्यो. ते वखते तेओना काकोभाइ उर्फे विकमाति सिंहनी, वजोभाइ, जीजीभाइ दादोभाइ तथा कलाभाइ नामना पांच कुमार हता. शेषमालनी पोतानी ह्यातीमांन कुमार जीजीभाइ, दादाभाइ तथा कलाभाइ ए त्रण वच्चे गाम "लीया" अने वजाभाइ तथा विकमातिसंहजीना फटाया कुमार जेठीभाइ तथा अलुभाइ ए त्रण वच्चे गाम "नारीचाणा" गरासमां आपता गया हता.

वि. सं. १८५० मां ठाकोर विकमातिसंहजी सायलानी गादीए वेटा, तेओने मदारिसंहजी हर्फे वखतिसंहजी नामना एक पाट्नी कुमार तथा हटीभाइ, जेटीभाइ अने अलुभाइ नामे त्रण फटाया कुमार हता. ज्यारे विकमातिसंहजी तख्तनशीन थया त्यारे तेओनी उम्मर आशरे ४४ वर्षनी हती. वि. सं. १८५४ मां काटिआवाडनी अंटर पेशकसी उचरावना माटे गायकवाड सरकारना सेनापित शिवराम गादीं लेटकर आव्युं हतुं. ते फरतुं फरतुं सायले आव्युं. वीकमातिसंहजीए खंडणी आपवानी ना कही, जेथी युद्ध थयुं, लगभग एक मास पर्यन्त लडाइ चाली तेमां वडोटराना लडकरानुं कांइ वळ्युं निह. तेना सेनापित शिवराम गादींए भेदुनी सलाहथी सायलाना महाल सराने

हाथ करवा प्रयाण कर्यु. वीकमातिसंहजीए तेना णळळ माणसो मोकल्यां अने जमावंधीनो आंकडो मुकरर करी आप्यो, जेथी लडाइ वंध थइ. तेओए पोताना देशनी सारी रीते आवादी करी हती तथा शहेरमां एक मुशोभित महेलात वंधावी हती.

वि. सं. १८६९ मां वीकमातिसंहजीनो वैकुंठवास थतां तेओना पाटवोक्कमार मदारासंहजी पहेला सायलानी राजगादीए वेटा, एओए मात्र एकज वर्ष राज्य कर्यु. तेओ ४४ वर्षनी वये त- खतनशीन थया हता. तेओना आतोजी, वाबोजी उर्फे शेषमालजी, चांदोजो, भारोजी तथा राय- सिंहजी नामे पांच कुमार हता. वि. सं. १८७० मां मदारासिंहजीए परलोक प्रयाण कर्यु. त्यारे तेना कुमार आतोभाइ सायलानी राजगादीए वेटा. अने चांदोजी, भारोजी रायसिंहजी तथा वीक- मातिसेंहजीना पुत्र हटीभाइ ए चारे वच्चे खाटडी नामनं गाम गरासमां मळ्युं.

वि. सं. १८९३ मां आताभाइनो निःसंतान स्वर्गवास थतां तेओना वन्यु वावोजी उर्फे शेप-पमालजी बीजा बत्रीश वर्षनी उम्मरे सायलानी गादीए वेटा. तेओने केसरीसिंह तथा हरिसिंहजी नामे वे कुमार थया. तेमां हरिसिंहजीने आयाडेरीवाला गरासमां मळ्युं. परंतु पाउलथी तेओ निर्वश गुजरी जवाथी तेनो गरास दरवार दाखल थयो.

वि. सं. १८९५ मां शेषमालजीनो स्वर्गवास थतां कुमार केसरीसिहजी सायलानी राजगादीए वेठा. ते वखते तेओनी जम्मर पंदर वर्षनी हता. तेओ बुद्धिशाळी, विवेकी तेमज राजकाजमां
कुश्चल हता. तेओना वखतमां रेवन्युखातानी रीतिमां तथा, खेतीवाडीमां घणो सुघारो थयो हतो.
तेओए पोतानी कुंवरीओने लाखो रुपिआनो व्यय करी म्होटां राज्योमां वराव्यां हतां. कुंवरी वाइसाहेववाने नवानगरना दानवीर जामविभाजी साथे, कुंवरी माजीवाने पोरवंदरना राजकुमार माधवासिंहजी साथे, कुंवरी केसांवा तथा वाइराजवाने राजकोटना ठाकोर साहेवश्री वावाजीराज साथे
अने कुंवरी हमजीवाने मोरवोना ठाकोर श्रो वाघजी साथे परणाव्यां हतां. ए केसरीसिंहजीना वखतमां १८८६ मां लीया वावतनो तकरार उठतां न्हाना भाइ म्होटा भाइ वचे म्होद्धं वहारवढुं थयुं
हतुं. ए पण ठाकोर केसरीसिंहने हाथेज पार पडेळुं हतुं. ए ठाकोर अनन्य शिवभक्त हता, तेओए
सायला तळपदनो जीर्ण थइ गएलो पश्चिम तरफनो किछो पडावी नवो वंधाव्यो तथा गामनी आ-

[?] कहे छे के वीकमातसिंहजीए वि. सं १८५१ मां यहालसरामां दरवारगढ अने वि. सं. १८५९ मां गाम फरतो गढ वंधाव्यो हतो.



Kumar Shri Madarsinhji Saheb, Heir-Apparent—Sayla

| • | | |
|---|--|--|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

PRA

थमणी दिशाए तळावना कांठा उपर एक काशीविश्वनाथनुं दिन्य देवालय वंधान्युं, तेमां चार धर्मशालाओं करावी, अने वच्चेना चोकमां पत्थरनी लादी नंखावी मन्दिरने विशेष शोभायमान व-नान्युं. तेमज डोलीयामां एक मुसाफरी वंगलों वंधान्यों.

वि. सं. १९३७ मां ठाकोर केसरीसिंहजीनो स्वर्गवास धतां तेओना कुमार पतापसिंहजी उर्फे वखतसिंहजो तख्तनशीन थया. तेओ हालना सुधरेला घोरणार राज्यनो कार्यभार चलावे छे: तेओने पदारसिंहजी, कल्पाणसिंहजी, पेरुभा, देवुभा, वजुभा तथा भतुभा नामे छ कुमार थया छे. ते तमामने समायातुसार सारी केळवणी आपवामां आवे छे पाटवीकुमार मदारसिंहजीए कींग कॉलेजमां अने वाकीना पांच वन्युओए वढवाण गराशीआ कॉलेजमां पातपोताना दरज्जाने छाजती केळश्णी मेळवेळो छे. जेने परिणामे हालमां पाटवोक्कमारे राज्यना लगभग समग्रकारभारनी वोजो उठावी लीधो छे, कुमार कल्याणसिंहनी एकटींग कारभारी तरीके काम चलावे छे, कुमार मेरुमा राजकोट तथा जामनगर स्टेटमां कंपेनीयन तरीके काम करी जाम जसाजीना ए. डी. सो. नो मा-नवंती होहो भोगनी चुक्या छे, कुपार वजुभा राजकोट कींग कॉलेनमां वींग मास्तरतं काम करे छे. कुमार भावसिंहजीए थोडा वर्ष सायलामां पोळोस सुनी. तुं काप कर्या बाद वडोदरामां ल-इकरी केळवणी लीबेली छे, अने कुमार देवीसिंहजी हाल पोलीस सुपी. तरीके काम करे छे. श्रीयुत् टाकोर वखतसिंहजीए जमानाने ओळखी पोताना क्वबरोने योग्य केळवणी आपी एतं ए परिणाम छे. तेओए पोताना राज्यमां दरवारगढ सामे एक कन्याज्ञाळा वंधावी छे तथा ज्ञाहेर वहार लोकोपयोगी एक पब्लीक गार्डन बनावी छे तेमज राजगढमा पण कचेरीतुं मकान घणुं सारुं बना-व्युं छे अने तळपदमां छोकोपयोगी एक चरीटेवळ डीस्पेन्सरी वंशावी छे, तथा चोरवीरा अने सरा वगेरेमा वंगलाओ बनावी गामोने सुधार्या छे.

वखतने ओळखनारा ठाकोर वखतसिंहजीए पोताने हाथेज सचळा कुमारोने निम्मिछिखिन गरास वहेंची आप्यो छे.

कुमार कल्याणसिंहजी तथा वजुभाने "भगोइ" नथा "धाराडुंगरी". कुमार मेरुभाने "हडाळा "तथा "सोरीभडा. "

कुमार देवुभाने तथा भावुभाने गाम "राणोपाट "तथा "खाखराथल".

ए तमाम गामोमां ठाकोर चखतसिंहजीए कुमारोने रहेवा माटे स्टेटने खर्चे किछावंध वंग-राओ बंधावी आप्या छेतथा पोताना पिताने पगले चाली कुंबरी श्री मोटावासाहेवने कच्छना महा-

राओ श्री खेंखारजी साथे तथा वीजां कुंवरीने वांसदाना महाराजासाहेव साथे महोटी वामवूमधी परणाव्यां छे अने तेमां लाखो रुपिआतुं खर्च कर्युं छे.

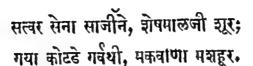
पाटवीकुमार मदारसिंहजीने करणसिंहजी, कनकसिंहजी, मानुभा तथा दींपुभा नामना चार कुमार छे.

कल्याणसिंहजीने माधुभा तथा चंदुभा नामे वे क्रमार छे. देवीसिंहने नटवरसिंहजी तथा चन्द्रसिंहजी नामना वे क्रमार छे. चजुभाने मतापसिंह, फतेसिंह तथा तख्तुभा नामना त्रण क्रमार छे.

सायला.

रोळावृत्त.

पांत्रीज्ञामी पेढीए, महिप हरपालयी मांडी,
थया गुणी गर्जासंह, सत्रीवट कदी न छांडी;
ध्रांगध्रातुं राज्य, भोगवे भाव धरीने,
धर्म धुरंधर धीर, आपता भीति अस्नि.
शे शेषमालजी हता, वन्यु एना वहु ज्ञूरा,
साहस केरा सिन्धु, प्रतापी पूरेपूरा;
एणे असि धरी अमित, दुःग्व काठीने दीखुं,
चोषे करी चढाइ, सायला स्वाधीन कीखुं.
दोहा.
सांगाणीने कोट्डे, आज्यो चारण एक;
शेषमालनी स्तुतितणा, उचयों शब्द अनेक.
तिरस्कार पूर्वक तुग्त, इर्ष धरी जरमांय;
दोपी जसाजीए कहुं, ससलाधी शुं थाय.
शोंडलमां ए वात गइ, कुंभाजीने कान;
शेषमालने सूचन्युं, आम थयुं अपमान.



रोळाइत.

राजपीपळा पास, महद संग्राम मचाव्यो, कंय कोटडातणो, काम ए समये आव्यो: विजय मेळवी वळ्या, सायलानाथ सुखेथी, निकळ्यो जय जयकार, महद बन्दीओ मुखेथी. मुद्रह गह सायले, बहु खरचे वंधावी, शेषमाळ लहीं समयॅ, स्वर्गमां गया सिधावी; वडा पुत्र विकपात, एहना अति उमंगी, पुरुत वये अहीं पाट, राजता रणना रंगी.

6

दोहा.

शिवाराम गादींतणुं, अनीक धारी आशः सत्वर आन्युं सायले, खंडणी लेवा खास. एक पास लगी पहथी लड्या वीरविकमातः सरापरे शत्रु जतां, करी अंत कबुळात. १० विजयी विक्रमाते कर्यु, परलोक्तमां प्रयाणः आदि ततुज एना थया, गादीपति गुणजाण. 88 मदारसिंह जी मनहरण, नरपतिनु शुभ नाम; अल्प समय करी राज्य ए, धीर गया सुरधाम. ?? पुत्र पाटवी एहना, उत्तम आता भाइ; तुरत आवीया तत्त्वपर, क्षितिमां कोतिं छवाइ. 83

राळावृत्त.

सुखदायक सायलं, द्वक्ष उन्नतितुं वावी,
आताभाइ अपुत्र, स्वर्गमां गया सिधावी;
ए पर्ली एना अनुत्र, शेपमाले ग्रही गादी,
किलत देशनी करी, अमित रीते आवादी.
सेसिरिरिंह कुमार, वडा एहना वखाणो,
कर्या धर्मनां काज, आज लगि छे अँघाणो;
चतुरपणे चिरकाल, चाहथी राज्य चलाव्युं,
निर्मेळ कुळने नित्य, दीर्घ दृष्टियी दिपाव्यु.
१६

आत्मज एना ए पछी, परम सुभागी वतापः
स्वामी सायळाना धया, छापी सुयशनी छाप.
वस्तिसिंहजी नामवर, धारण करी धरी धर्मः
सुधरेळा धोरणपरे, करे राज्यनां कर्म.
अापे छे आनंदथी, सुशोने सन्मानः
दीर्घायुँ दिनदिन बनो. माननीय मस्वशन.
पामीने युवराज पद, मुद्रभर सिंहमदारः
वहन करे छे व्हाळधी, भव्य राज्यनो भार.
रे९
तस्त सायळाने तपो, वस्तिसिंह विद्वानः
नेह धरी नथुराम कवि, गाय सदा गुणगान.





H II IIII IHANORI SAHII JORAWIRSINHII, CHUDA

| • | | |
|---|--|--|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |



द्रात्रिंशत् तरंग.

A PROPERTY

चूडा.

छन्द इरिगीत.

चूडा. थळा, ने रामपर, वळी मेघपर वखणायें छे, अजमेरीया झाला अदेपरना रहीश गणाय छे;

नथुराम निजकुळनी कथा सुणी जबर यशथी जामजो, किंकी अमरेश ! उदय अपार सहपरिवार प्रतिदिन पामजो.

वहवाणना मुख्य राज्यकर्ता राजाजीने भावासँहजी नामे कुमार हता. ए भावसिंहजीने अत्यन्त न्हानी अवस्थाए इहर छइ जवामां आव्या अने ज्यारे तेओ उम्मरलायक थया त्यारे साव रगहना राजाए तेओनी साथे पोतानी पुत्रीने परणाव्यां. एनाथी कुमारे माधवसिंहजीनो जन्म थयो. ए माधवसिंहजीए बुन्ही तथा कोटाना महाराजाओनी सेवा वजावी महान पितृष्टा मेळ्बी, तेओने मदनासिंहजी, अर्जुनसिंहजी, नथा अभेसिंहजीए वहवाण आवी पोताना पितृष्य भगवतसिंहजीने मारी नांख्या अने त्यांनी राजगादीने इस्तगत करी. ए वस्तते वह गण तथा चूडा नीचे वार वार गांमी हतां अने ए चोवीशी एकज गणाती हती. ज्यारे ए वस्ते भाइओ वचे गरासनी वेचण थइ त्यारे अर्जुनसिंहजीना भागमां वहवाण अने अभेसिंहजीना भागमां चुडा आर्च्युं.

टाकोर अभेसिंहजीए वि. सं. १७६३ मां चुढामां राजगादी स्थापी, तेओने रायसिंहजी, डमेदिसिंहजी तथा राजसिंहजी नामना त्रण कुमार थया. वि. सं. १८०६ मां ठाकोर अभेसिंहजी स्वर्गवामी थया त्यारे तेओना पाटवोक्तमार रायसिंहजी चुढानी गाडोए वेठा. कुमार उम्मेदिसिंहजीने "मेर्गकुं" तथा रायसिंहजीने "भेशजाळ" नामनुं गाम गरासमां मळ्युं.

रणरितक टाकोर रायसिंहजी चुढे राज्य करता हना ए वखने काठी छोकोए त्यांना पद्मश्रोने वाळ्यां; टाकोर रायमिंहजी वारे चड्या, जबरुं धींगाणुं धयुं. रक्तनी प्यासी तळवारो

१ भेपकुं छुट्य दाद उमेदसिंहजीने चुडा नरफधी करमड नामनुं गाम मळयुं हतुं.

महाकाळनी ज्ञक्ति माफक रणांगण रुपी रंगभूमिपर नृत्य करती अनेक योद्धाओने अचेत वनाववा लागी अने पोतानी तीक्ष्ण धारारुपी भज्बिलत पावकिशिखामां तेजस्वी नरोना सुवर्ण सरखां शरी-रने ताववा लागी, काठीओनों कचरघाण वळी गयो; ठाकोर रायसिंहजीने पण मोक्षनों मार्ग मळी गयो. ए वखते तेओनी साथे राणावत, सजोजो, वायेला जीवणजी अने झाला कशळोजी पण काम आव्या. श्रीमान रायसिंहजीए दश वर्ष राज्य कर्यु; तेओने गजसिंहजी, कशलिंहजी, वेरोजी तथा पृथीराजजी नामे चार कुमार हता.

वि. सं. १८१६ मां काठी छोको साथे धींगाणुं थतां ठाकोर रायसिंहजीए परळोक प्रयाण कर्यु त्यारे पाटवी कुमार गजिसेंहजी चुडानी गादीए वेठा. कज्ञळसिंहजी तथा पृथीराजजी निःसं-तान स्वर्गवासी थया. वेराजीने गाम " भीणपर " नो गरान मळ्यो.

ठाकोर गजासंहजीए वीश वर्ष पर्यन्त चुडानी मजानुं लालन पालन कर्युं; तेओने हठी-सिंहजी, भावसिंहजी, दोलतासंहजो, अभेसिंहजी तथा वखतासिंहजी नामे पांच पुत्र थया। वि. सं. १८३६ मां गाम चाशका मध्ये काठी लोको साथे धींगाणुं थतां गुणज्ञ ठाकोर गजासि-हजी काम आव्या; जेथी ज्येष्ठ कुमार हठीसिंहजीए चुडाना राज्यनी लगाम हाथमां लीघी। तेओना भाइ भावसिंहजी तथा दोलतसिंहजी निर्वेश गुजरो गया। अनेसिंहजीने गाम "भहकवा" तथा वखतसिंहजीने " वेळावदर" गरासमां मळ्युं.

ठाकोर इटीसिंइजी बहुन डिम्मतवाळा इता, तेओने अभेसिंहजी, नाहरांसइजी तथा रत-नसिंइजी नामना त्रण क्रमार थया. ठाकोर इटोसिंइजीनो कैलासवास थतां क्रमार अभेसिंहजी चुडानी गादीए बेटा. नाहरसिंइजोने गाम चाचका तथा रतनसिंइजीने गाम वाणीयावदरनो गरास मळ्यो.

ठाकोर अभेसिंहजीना वखतमां राज्य तेमज गजानी स्थिति आवाद हती, तेओने रायसिंहजी तथा उमेदिसिंहजी नामना वे कुमार थया श्रीमान अभेसिंहजीनो स्वर्णवास थतां कुमार रायसिंहजीने चुडानी गादी मळी. तेओए कुशळतापूर्वक राजकाज करी कुळनी

१ कोइ स्थळे भवाजी एवं नाम आपेछ छे.

२ उमेदसिंहजीले गरास मळ्यो होय एवं जणातुं नथी; जेथी तेओ निःसंतान गुजरो गया हशे एवं अनुमान थाय छे.



His Lite Highness Thakor, Saheb Midhavsinhji, Chuda



ळाज वधारी अने प्रीति पुरःसर रैय्यतनुं संरक्षण करी राज्यनी स्थिति सुवारी; तेओने वहेचरसिं-इजी तथा वखतासिंहजी नामे वे कुमार थया.

वि. सं. १९१० मां रायसिंहजी स्वर्गवासी थया त्यारे कुमार वहेचरसिंहजो चुडानी गादीए वेठा अन वरवतसिंहजीने गरासमां गाम झींझावदर मळ्युं. ठाकोर वहेचरसिंहजीना कुमार माधविद्दजी अने तेना कुमार जुवानसिंहजी थया. माधविसहजी तो कुंवरपदेज गुजरी गया; जेथी ठाकोर वहेचरसिंहजीनो स्वर्गवाय थतां तेओना पौत्र जोरावरसिंह्जी चुडानी गार्दाए वेठा.

थळा

राज हरपालदेवजीची वारमी पेढीए यएला राजपद्मसिंहजीना कुमार उदेसिंहजी वि. स. १३९६ मां पाटडीनी मादीए देठा, तेओंने पृथीराजजी तथा वेगडजी नामना वे कुमार थया. देगहजीतुं सगपण चितोडना महाराणा लक्ष्मणसिंह (लाखा) जीना कुनरी साथे थयुं हतुं. पाट-ढीथी रुपेवाळे परणवा माटे कुमार वेगडजीनी जान चित्तोड जइ पहेंची. म्होटी धामधूम साथे लम्बिया समाप्त घया वाद लाखाराणाए पाटडोना मधान पुरुपोने पूछ्युं के राज पद्मासिंहजीना वें द्वासार छे, तेगांथी पाटवी कोण ? ए वखते जानैयाओए जणाव्युं के पाटवी कुंवरतो पृथीराजजी है. आ सामळी राणा तीए वरातने विदाय करती वखते पोताना पांच हजार स्वारोने पाटडी मो-कल्या अने पृथीराजजीने प्रपंचधी पद्भ्रष्ट करी कुमार वेगडजीने वि. सं १४११ मां पाटडीना तरूतपति वनाव्याः पाटवी कुमार पृथीराजजीए वहारवटुं खेडवा मांडयुं अने स्वरूप समयमां ज वाहु-इळधी पाटडीना राज्यमां महान् खळभळाट मचावी दीधो. राज वेगडजीए म्होटा भाइने मनावी एकसोबीश गामथी " धळा " नामनु पग्गणुं अर्पण कर्युं. जेथी पराक्रमी पृथीराजे घळामा पो-तानी राजधानी स्थापी. तेओने भीपसिंहजी नामे क्रमार थया. ए भीपमिंहजी पृथीराजजीना पर-लोर मयाण पहो घळाना अधिपनि थया. तेओने त्यां मालजी, ज्ञामजी, कानजी, मुळुजी तथा सारंगजी नामना पाच कुमारोए जन्म लीघो. ज्यारे श्रीमान् भीमासंहजी स्वर्गवासी धया त्यारे म्होटा हुमार मालकीने थळानी मालिकी मळी; एथी न्हाना कुमार शामजी सात गामयी घुदु-एंग-पर, दानजीने तात गामथी हवाग्रं, मुळुजीने वातगामत्री गोळी अने सारगजीने सातगामथी पर्ळे-हाना गराम माप्त थयो जरे दिवने पळेंटा उज्जड धवाधी धांगधामा भळी गर्द, जेथी सारंगजीना दशको राल भागभामां बाटाबाळा छे.

ठाकोर माळजी पछी अमरसिंहजी, मूळराजजो रायासिंहजी, कृष्णसिंहजी, रामसिंहजी अने कानो ए छ पुरुषो क्रमपूर्वक थळाना तष्टतपित थया. ठाकोर कानाजोने त्यां कलोजी तथा भाराजी नामना वे क्रमार जन्म्या. भारोजी निःसंतान गुजरो गया अने कलोजो थळाना सालिक थया. ठाकोर कलाजोना कुषार हरिसिंहजी अने तेना कुषार भीपसिंहजीए क्रमानुसार थळाना अधिपति थइ उत्तम कृति करी.

ठाकोह भीमसिंहजीने मालजी, भाणजी, मेपजी, झीगरामजी, कलोजी, देवोजी, जैमलजी, हदोजी तथा झारोजी नामना नव पुत्र यया. तेमां मालजीनो वंश तो थळामां रहो के जे हाल त्यां वांटावाळा छे. भाणजीने गाम " हुमाणुं, " मेपजीने "चराही", झीगरामजीने "गंजेळा", कल्लाजीने "गाळा, " देवाजीने " मालवण, " जैमलजी " पीलुडी " (एना वंशनो हाल थानमां वांटो छे अने वाघपरामां जमीन छे.) हदाजीने " वशहवा, " अने झागाजीने गाम करहोल तथा पीपळीनो गरास मळ्यो. ए वधा थळेचा झाला कहेवाय छे.

रामपर-मेघपर.

राज हरपाळदेवजीथी सत्तरमी पेढीए थएला राज रणमलासंहनीने छत्रसालजी, शोडसा-लजी तथा वनवीरजी नामना त्रण कुमार हता. तेमांना पाट्यीकुमार छत्रसालजी ति. सं. १४६४ मां गढमांडलनी गादीए वेटा. सोडसालजीने वार गामथी कलाडा, दसाडा, पांदला तथा पंचास-रने। गरास मळ्यो अने वनवीरैजीने गरासमां तरमणीया तथा झींझुवाडानी चोवशी मळी. शोड-

१ वनवीरजीना कुमार कुंभोजी अने तेना कुमार योगराजजी यया, ए योगराजजीने त्यां मेळाजी, मेळगजी तथा अजाजो नामना त्रण कुमारोए जन्म लीघो, तेमांथी मेळाजी तथा मेळगजीना वंशजो गाम तरमणीयाना झाला अने अजाजीना वंशजो गाम झींझवाडाना कोळी ठाकरडा कहेवाय छे. एक वखते राजमाहेव अंवाजी पथार्या त्यारे झींझवाडाना ठाकोर अजोजी साथे हता. त्यांथी पाछा वळती वखते शिकारे निकळेळा अजाजीने अत्यन्त तृपा लागी. जेथी तेणे पासेना गाममां जह एक सारुं घर शोध्युं, परंतु ए वखते घरनो मालिक हाजर न होवाथी पेताने हाथेज पाणी भरी पीवा मांडयु, तेवामां घरघणी त्यां आवी चड्यो. अजाजीए पाणी पीघा पछो तेने पूछयुं के आ घर कोनु छे ? त्यारे घरधणीए कह्युं के कोळीनुं, आ सांभळी अजाजीने खेद थयो. तेणे तुरतज राजसाहेव पासे ए वात जाहेर करी. राजसाहेव तेओनी साथे खानपाननो

सालजीना कुपार नाभोजी अने नाभाजीना कुपार आशोजी तथा देवोजी थया, आशाजीनो वि-स्तार गाम कलवाडा तथा दसाडामां अने देवाजीनो विस्तार पांदला तथा पंचासरमां रह्यो।

कहे छे के आशोजी तथा देवोजी ए वन्ने वन्युओं मोरवीमां गोरी वादशाहनी नोकरी क-रवा आव्या. वादशाहे झाला राजपूरोना प्रवक्त पराक्रमोनी वातो सांभळेली होवाथी ए वने व-न्युओने योग्य नोकरी आपी. त्यारवार्दे पटाना अतुपम दावथी पृथ्वीमा पंकाएळो कोइएक पटाण त्या आवी चड्यो, अने वादशाहनी अनुमतिथी मोरवोमां जेंग्ला पटाना रमतीआल हता तेनों साथे लड़्यो, परंतु कोइ पण एने परास्त करवा समर्थ थइ शक्या नहि. अनुक्रमे एक पछी एक कडतां ज्यारे तमामनी हार थइ त्यारे झाला आशानीए पठाणने परास्त करवातुं वीडुं झील्युं. रा-ज्यपहेलना अग्र भागमां अखाडो तैयार करवामां आव्यो हतो, गुणज्ञ गोरी वादशाह गे¹खमां वेठा वेठा शौर्ययी उछळता आशाजीना अंगोतुं एक टकथी अवलोकन करी रहा इता. मतुष्योनी महा-न मेदिनी मची हती. तमासो कांइ जेवो तेवो न हतो, खासो खेळाडी आज्ञो झाळो ज्यारे पठाण सामा अखाडामां उतर्या त्यारे तपामने जाण थइ के आतो एकवी नाना माण उपर आवी वनी छे. आशाजीना छटादार पटामां महाकाळनो वासो हतो. ए दिन्यचश्च विना देखी शकाय तेम न हतुं, पटाण पण घणोज पवीण हतो. छतां आञ्चाजीना प्रताप रुपी आदित्य आगळ तेनी कळा श्लीण थदा लागी. विविध दावने विस्तारतो प्रकारना क्ररंगनी वडाण **ज्यारे** कूदवा काग्यो त्यारे आज्ञाजीए केसरीना रूपने धारण कर्यु वन्ने परस्पर आक्रमण बरवा लाग्या. उभयना पटाओ जोशभर अथडातां अग्निना झगरगता कण झरवा लाग्या. झा-लानी वेचार झपटथीन कमेहीण पठाणनो मद मीणनी माफक गळी गयो अने ते अजानवाह आ-शाजीना शौर्यरुपी अनलनी जाञ्चल्यमान ज्वाळामां पतंगीयानी पेठे अचानक पढी गयोः पठाणने परास्त थएलो जोइ गोरी वादशाह सानंदाश्वर्य वोली उठ्यो के "माग, आशाझाळा! माग. हुतारी बहादुरी जोइ हेरत पाम्यो छुं, प्रसन्न थयो छुं. आशाजीए कहुं के अमी क्षत्रीओने पृथ्वी सिनाय एके चीज प्यारी होतो नथी। माटे एक दिवमनी अंदर जेटला गाममां अध्व फेरवो अकेक हाथना रमाल दाधी आवुं तेटलां गामो आपें अमोने आपवां. वादशाहे ए वात एवी शरते कवुल करी के

व्यवहार वंय करों. त्यारवाद अजाजीए वारवडं करी वीशा वार गामथी झींझुवाडाने स्वाधीन कर्युं अने कोळी छोकोमां दीकरीओ छेवादेवानो सवंय वांध्यो, जेथो एना वंशजो कोळी ठाकरडा कहेवाया.



" अश्व एकनोएक होवो जोइए तथा मसाल वखते तमारे मोरवीमां हाजर यह अमारी सकाम केवी जोइए. आशाजीए ए प्रमाणे करवानी हा कही वीजेज दिवसे प्रभातमां विद्युतसमान वेगवाळा अध पर आरूढ थइ चतुर्श्वजतुं स्मरण करता कार्यसिद्धि अर्थे चाळी निकळ्या अने चाळाकीथी एक पछी एक गामने चोरे रुपाळ बांधता आगळ बध्याः सन्ध्या समय पहेळांज चोराजी गामने चोरे रुमाल वांधी तेओ चारण लोकोन। नेश निकट आवी पहोंच्या. + पोते तो क्षया तथा तृषाने मांडमांड सहन करी शक्या: परंतु तृपातुर अश्व पाणी विना अत्यंत पीडावा छाग्यो, तेने पासेनी नदीमां पाणी पावा छइ गया. पाणी पीरह्या वाद तुर्तज ते तेजस्वी तुरंगमे प्राणने तजी आशाजीनी संघळी आज्ञा नष्ट थइ. ते म्कान मुखमुद्रा वढे करपर कपोलने टेकावी भाविनो विचार नहि करतां भाग्यदेवीने उपार्छभ आपवा लाग्या. तेवामां चा-रणना नेशमांथी केसरवाइ नामनी चारणीआणी त्यां आवी चडी. आशाजीने इच्छित आपवा साक्षात शक्ति आव्यां होय एम ए वाइए गंभीर स्वर्धी कहुं के " भाइ! आम चिन्तातर धवातं झूं कारण छे ? जो कहेज़ो, तो एनं निवारण थइ जशे " आशाजीए उंडो निश्वास नांखी उत्तर आप्यों के " बाइ! बीज़ं कांड़ निह, मात्र जेना प्रतापथी हूं आजे चोराशी गाम कमायो ए मारो आत्माराम अश्व मने एकाएक असहाय बनावी परमेश्वरना दरवारमां पहोंची गयो. मारी करी क-माणी एळे गइ. इवे हुं मसाल वखते मोरवीमां पहोंची गोरीवादश्चाहनी सलाम करी शकुं तेम नथी अने ए करारनो भंग थवाथी चोराज्ञी गामनी राज्यछक्ष्मीने कोइ रीते वरी ज्ञकुं तेम नथी." केसरवाइ बोल्पां के " बाप ! गभराओं छो ज्ञा माटे ? चाळो अमारा नेज्ञमां, मारे त्यां एक ए-कथी चढे तेवा पांच अन्व छे, तेपांथी पसंद पडे ते लड़ मसाल वसते मोरबीमां हाजर थड़ जाओ. आशाजी हुज केसरवाइना स्वरूपने ओळखी शक्या नहोता, जेथी तेणे शंकाशील मनथी कहुं के ब्हेन ! तमारा पांच तो ह्यं पण पचाज्ञा हजार अश्वने एकठा करो तो पण आ मारा मृतक अश्वने तोले आबी शकशे नहि. कारणके एज घोडे होरबीना गढमां दाखल थइ बादशाहनी सलाम लेवाय तो मारी मनकामना सिद्ध थाय. प्रथमथीज ए ज्ञारतरूपी सूत्रमां मने बांधी छीधो छे. इवे विचार करवा व्यर्थ छे, थवातुं थयुं. आशाजीना कर्मण अवळां, नहि तो कार्यसिद्धिने किनारे पहोंचेछं वाजि रुपी वहाण मने दुःख दिखामां शामाटे डुवाहे ? पटानी रमतमां पटाणने परास्त कर्यो त्यारे में जाण्युं के पासा तो पावार पडी चूक्या; वातनीवातमां प्रभातथी आरंभी अ-

⁺ ज्यां हाल टंकारा नामनुं गाम छे. त्यां ए वखते चारण कोकोनों नेश हतो.

त्यारस्थी चोराशी गाममां फरी रुपाळ वंधाइ गया त्यारे निश्चय थयो के तमाम कांकरीओ पण पाकी गरः जो आ वाजिना मरणरूप कांकरी प्रियक्षी विधाताए खडी न करी होत तो वाजी कदी पण वगडत निह, परंतु पूर्वना कोइ क्रकमें वाकी रही गयां हशे, एथी आशो महान् अन्तराय आशी नड़्यों केसरवाइए कहुं के, भाइ! आम निराश न थतां चालो अमारा नेशमां, हुं तमोने आवोज अन्व आपीश. " पुण्यात्मा प्राणी अन्यना अन्तः करणमां केशी सरलताथो श्रद्धा वेसाडी शके छे तेना दाखलारूप केसरवाइ आशाजीने नेशमां लड़ आव्यां अने तेतुं खानपान आदियी आतिथ्य कर्या वाद पोताना पांचे अन्व वतात्या. आशाजीए केसरवाइनो उपकार मानी कहुं के आमांथी एके अन्व मारा कामनो नथी. " केसरवाइए एज वखते पोतानी लोबडी (ओढवानो धावली) एक अन्वना उपर ओढाडी दीधी अने थोडी वार पछी पाछी उतारी लीधी. तेशमां एनो आकार तथा रंग आशाजीना अन्व जेशेज वनी गयो. आवो अद्युत चमत्कार जोइ आश्चर्य पामे ला आशाजीए केसरवाइने शक्तिरूप गणी वंदन कर्यु. केसरवाइए तेओने आशीर्वाद आपी त्यांथी विदाय कर्या. विनष्ट यएकी आशा पुनः सजीवन थतां आनंद पामेला आशोजी शक्तिए समेंखा अन्वर यारू वायुवेगे मोरवीगढमां जइ पहोंच्या अने सीधा गोरी वादशाहना दरवारमां दाखल थइ मसाल वखतनी सलाम लीधी. पसन्न धएला वादशाहे एक वखते अन्वना चरणधी चिन्दित धएली रामपर तथा मेधपरनी चोराशी झाला आशाजीने आपी दीधी.

आशाजीए रामप्रमां पोतानी राजधानी जमावी अने जेना प्रतापथी पोते धारेल कार्यमां फतेइमंद थया ए केसरवाइने मान पुरःसर त्यां तेडावी कपडां तरीके पाच गाम आप्यां.

आशाजीने शार्र्लजी, भोजोजी, कलोजी तथा भाणजी नामे चार कुमार थया. तेमां शा-र्र्लजी तो रामपरनी गादीए रहाा. कलोजी निर्वश गुजरी गया, भोजाजीने गाम लजाइ अने भा-णजीने गाम खीजडीयुं तथा नेकनाम गरासमां एळ्युं.

पुंजाजीना रामसिंहजी अने रामसिंहजीना भावसिंहजी, कळोजी तथा हमीरजी नामे जण

१ भागजीने वनुजी तथा पुंजाजी नामना वे पुत्र थया; तेमां कनुजीनो वंश खीजडीए रह्यो अने पुंजाजीने गाम बनाळीयुं तथा राजपर गरासमां मळ्यां.

कतु जीना पुत्र वजेराजजी अने तेना दुदोजी तथा हरिदासजी नामे वे पुत्र थया, तेमां दुदाजीनों वंश खीजहीए रहा अने हरिदासने गरासमां गाम नेकनाम मळ्युं.

शार्दूळजीने जोघोजी, सतोजी तथा वनेसिंहजी नामना त्रण क्रवार थया. तेमांना पाटवी-कुमार जोघोजी रामपरनी गादीए रहा, एतुं उपनाम वसनजी हतुं. सताजीने रतनपर, रे।याछ तथा नजीतपर अने वनेसिंहजीने शक्ततुं सनाळुं गरासमां मळयुं.

जोधाजीने महेशजी, कांथडजी, डुंगरजी, जगोजी, तथा नायाजी नामना पांच पुत्र यया. तेमांना महेशजीनुं अकाळ मृत्यु थतां कांथडजीने रामपरनी मालिको मळी. तेना भोजोजी, रघोजी तथा जसाजी नामे त्रण पुत्र थया. तेमांना भोजोजी रामपरथी मेघपर आव्या अने जसाजीने नहानी रामपरनो गरास मळ्यो.

भोजाजीने भाणजी तथा इमीरजी नामना वे पुत्र थया; तेमां भाणजीनो वंश हाल मेव-परमां छे अने इमीरजीनो वंश म्होटी रामपरमां छे. ए सर्व मेवपरीआ आला कहेवाय छे.

रामपर तथा मैघपरनी चोराज्ञी मेळवनार झाळा आज्ञाजीना लघु वन्यु देवाजीने प्रथमयीज पांदला तथा पंचासर नामनां गाम गरासमां मळेलां इतां. त्यारवाद तेणे ज्ञादुलकांनी चोवीज्ञी वांधी. ए देवाजीना सारंगजी, सारंगजीना सोढाजी अने सोढाजीना घोघोजी, सांगोजो, होथीजी, महासिंहजी, देवोजी, डुंगरजी, कलोजी, कुंभोजी, रामसिंहजी तथा पवाजी नामना दश पुत्र थया. तेमांना घोघोजी ज्ञादुलके रह्या. डुंगरजी निर्वेश गुजरी गया अने वाकीना आठ वन्युओने नीचे मुजव गरास मळ्यो.

- १—सांगाजीने पंचासरनो अर्ध भाग तथा नारणकुं. एना वंश नो हाल पंचासर तथा रवापरमां रहे छे.
- श्—होथीजीने पंचासरनो अर्थ भागः एना वंशजो हाल पचासरमां रहे छे अने ते हा-थाणी कहेवाय छे.
 - ३-- महासिंहजीने गाम खाखराछं।
 - ४-देवाजीने गाम फगाशीआ.
 - ५-कळाजीने गाम वावडी.
 - ६--कुंभाजोने गाम गोडपर.

पुत्र थया. तेमां भावसिंहजी तथा इमीरजीनो वंश वनाळीये रह्यो अने कलाजीने गाप राजपरने। गरास मळ्यो.

७—रामसिंहनी उर्फे परवतसिंहनीने कोठारीआ. एना वंशनो हाल रवापरमां गिरासदार छे.

८-पवाजीने गाम सजनपर, एना वंशजो पण रवापरमां छे.

सांगाजीना पुत्र सोदोजी अने सोदाजीना रायमळजी, द्देशीनी, जन्नडजी, रूपसिंहजी, हाकोजी तथा धींगाजी नामना छ पुत्र थया.

रायमळजीने नांयोजी तथा नवघणजी नामे वे पुत्र थया, तेमां नांयाजीनो वंश पंचासरमां रह्यो अने नवघणजीने गाम खेवाळीयं मळ्यं.

नांयाजीने जोधाजी तथा वसनाजी नामना वे पुत्र थया; तेमा जोधाजीनो वंश पंचासरमां रह्यो अने वसनाजीने गाम केराळानो गरास मळ्यो.

अजमेर अथवा अदेपर.

राज इरपालदेवजीथी वीशमी पेढीए थएला राज वणतीरजीने भोमसिंहजी, अजोजी, रामसिंहजी, प्रतापजी, पुंजोजी तथा लाखाजी नामना छ कुमार इता. तेमांना भोमसिंहजी वि-सं. १५१६ मां गढ कुवानी गादीए वेठा अने अजाजीने गाम वाळा तथा दुवानो गरास मळ्यो. ए अजाजीए वि-सं. १५३० मां वाहुवळथी अडसीवाळानो अन्त करी अंजमेरनो चोवीशी स्वाधीन करी, अने त्यां पोतानी राजधानी स्थापी.

अजाजीने सदळोजी, सांगोजी उर्फे सगरामजी तथा कल्याणजी नामना त्रण पुत थया. तेमां सदळोजी अजमेरमां रह्या, सगरामजीने गाम कछावडी मळ्युं अने कल्याणजीने वाछासण तथा घुनहा नामनां वे गाम गरासमा मल्या, एनो विस्तार हाल जांबुढीआमां छे.

सबळाजीना कुमार मोकाजी, मोकाजीना खेंगारजी, खेंगारजीना रायमळ जी अने रायमळ-जीना जमोजी, रामसिंहती, सदोजी तथा अदेसिंहती नामना चार क्रमार थया, तेमां जसाजीनो विस्तार अजमेर के जे हाळ उदेपुर एवा नागथी ओळखाय छे त्यां अने रानसिंहजीनो विस्तार वीवळी आमां छे. ए तमाम अजमेरीया आला कहेवाय छे.

१ ए अजमेर रास उदेपुर अथवा अदेपर एवा नावधी ओळलाय छे अने ते मोर्ची नावे छे. बहे छे के ए गाम नदीना पृश्मां तणायुं हुनुं, जेथी हाळ तेने टेकरी माथे दमावगमा जान्युं छे.



चूडा.

रोळावृत्त.

वडुं शहर बढवाण, मुख्य राजोजी महिपति, भावसिंह भयहरण, तनुज तेना उत्तम अति; मनहर माधवसिंह, पुत्र भावना प्रमाणो, माधवना स्रुत मदन, जबर आनंदी जाणो. अर्जुन तेमज अभय, पुत्र एहना प्रतापी, वश कीखुं बढवाण, शीश भगवतनुं कापी; अभयसिंहने भाग, ए समे चूडा आन्युं, एणे धरी आनंद, जूदुं निज राज्य जमान्युं. दोहा.

गया अभय गोळोकमां, समय पामी मुखरूपः
रायसिंह रूडा थया, ए पछी भूप अनूपः
धींगाणे समशेर घरीं, काठीने दइ कष्टः
रायसिंह रणरागीए मुयश मेळच्यो स्पष्टः
सवैया-एकत्रीद्याः

एज युद्धमां प्राण आपी तृप रायसिंहजी स्वर्ग गया,
ए पछी पुर चूडानी गादीए गुणी भूप गजसिंह थया;
ए पण काठीसंग लडीने रणसंग्रामे आच्या काम,
हाम धरी ए पछी हठीसिंहे लीधी हाथ राज्यनी लगाम.
अभयसिंह वीजा ए पाछळ थया गादीपित गुणशाळी,
कॅर्यु राज्य आबाद एमणे पीतें रैटयतने पाळी;
चूडाना ठाकोर चाहथी वहेंचरसिंह बन्या ए बाद,
लक्ष मकारे एणे लीधो सुभग राज्यसुख केरो स्वाद.

सोखा.

बहेंचर तृपना वाल, माधवसिंह उदार अति; गया छोडीं जगजाल, क्वंचरपदे कैलासमां. सवैया-एकत्रीशा.

9

माधवसिंह तणा स्रुत शाणा विनोदधी करी विद्याभ्यास, जोरावरसिंह महीपति जाहिर विविध भोगवे विभव विलास; महद वंश मखवाननी शाखा चूडामां रहेजो चिरकाछ, करो सफळ आशिष नशुरामनी नित्य व्हाल धारी व्रजलाल. ८

थळा.

सवैया एकत्रीशाः

मक्तवाणा हरपाळधीं मांडी पेढीं तेरमी पर मत्यक्ष,

इदपसिंह अवनीप धया, ए हता दानीं दिलकेरा दक्ष;

एने त्यां आनंद धरीने, शत्रुनों करवा संहार,

एधीराज, वेगडजी नामें उभय पुत्र पाम्या अवतार.

हाखाराणानी ततुजाथी वेगडजीना धया विवाह,

जमाइतुं हित करवा जाहिर राणे आपी मदद अथाह;

पाटवीने पदभ्रष्ट करावी, अर्प्यु वेगडजीने राज,

पाटडीपर पृथीराजे कीद्यं व्हारवटं दिल्यां धरीं दाझ.

वेगडजीए विडल वन्द्यने मनावीं हेत हृदय स्थाप्युं,

गाम एकसो वीश सिंहन शुभ थळा तणुं प्रगणुं आप्युं,

जृदुं राज्य जमावीं पाटपर वेटा मक्तवाणा पृथीरान,

भूपित भीम थया ए पाछळ विदित व्यारी कुळनी काज.

नाम मॉलाजी नृपित केरं भीमसिंहजी पृछी भणाय,

अमरिसंह ए पछी अनतारी गादीना हकदार गणाय; मूळराज ने रायिसंहजी अनुक्रमे अनतीप थया, कृष्णिसंह पछी रामिसंहजी ठाठमाठणी थळे रहाा. कानाजी ने कलाजीए पण थळे यथाकम राज्य कर्यु, हरिसिंहे धरी हपे हमेशां संकट द्विज सुरिमेनुं हर्यु; भीमिसंह पछीं मालजीं आदि हाळ खंतथी नांटा खाय, तमाम ए झळराण थळेचा, किन नग्रराम सदा कहेनाय.

X

रामपर-मेघपर

छन्द हरिगीत.

पेढी अढार प्रमाणतां हर अंश तृप हरपाळथी,
मांडळ महीप बनी विराने छत्रपालनों व्हालची;
श्रीशोडसाळनों अनुन एना रहीं हमेश हुळासमां,
श्रीते कलाडा आदि पाम्पा गाम चार गरातमां.
१ ए शोडसालतणा सबळ सुत भव्य नाभोजी भणो,
नाभाजीना आशोजों ने देवोजों द्वय आत्मन गणो;
आशोजों रहीं आ अनुन सहित निवास मोरवींमां करी,
गणीं श्रूर गोरी वादशाहें आपों चाहथीं चाकरी.
१ पट्टातणों खेळाडीं एक पटाण मोरवीं आवीयो,
करीं शाह केरीं सळाम एणे महद धंय मचावींयो;
ले जोरवाळा जन हता ते लड़ करे पट्टो लड्या,
पण हारीं सर्व पटाणथी मेदानमां पाछा पड्या.
१ एसमय आशाना हृदयमां शौधे गजव चढी गयुं;

भरी फाळ करी विक्राळ मुख उँभा अखाडे आवींने, कीधो परास्त पठाणने झट दावमांहि दवावींने. संवैया एकत्रीशा.

आज्ञाजीनं वळ अवरेखी शाह अति संतुष्ट थया, माग माग आशा ! तुं इच्छित एवी वाणीं उचारी रह्या; आशाशीए कहुं ए सभे एक दिने जइ जे जे गाम, अश्व चढी हुं रुपाल बांधु द्यो ए गामनुं मने इनाम. करीं वात ए कबूळ शाहे किंतु शरत एमां एवी, एज अन्वयी मसाल वखते मिजकसमां हाजरी देवी: ए करारने स्वीकारी सत्वर गृहभणी विचर्या करी व्हाळे. मभातमांहे प्रयाण कीधुं अन्व चढी आशे झाले. तुरगतणा चरणोर्थी त्वराए करी चिन्हित चोराशी गाम, वळ्या वीर मखवान विनोर्दे, क्षुधा तृषाथीं न हार्या हाम; पण जल पीतां अश्व अचानक मारगमां मृत्य पाम्यो। करी कवाणी एके जातां आज्ञो जवर दुःखे जाम्यो. चारणी देवी केसरवाइ एज समे त्यां आवी चड्यां; एनों कृपायी आज्ञाजीनां फरी सर्व मनकाम फळ्यां: नियमित समये पातशाहनी सकाम झकराणे लीधी. सनंद पुर चोराशीनी झट ज्ञाहे झाळाने दीधी.

Ę

मनहरः
आशा झळराणना सपूत थया शार्द्ळजी,
शार्द्छने गृहे ज्येष्ट जोघो अवतरीया;
जोधास्त्रत कांयडने कांथडना भोज वीजा,
वास करी मेघपरे स्वर्गमा विचरीया;
नेकनाम, खीजहोयं, मनाळं, नशीतपर,
इत्यादि स्थळोमां एना भाषातो उतरीया;

P) Cq

भोज स्रुत भाणजीनो वंश हाल वांटा खाय, मानो नधुराम एने झाला मेघपरीयाः

शादुलकुं.

छप्पय.

आज्ञाजीना अनुज, दीर्घवाहु देवोजी,
मोरवीए मुद पानी रम्य मेळवता राजी;
पाछळथी नथुराम, समय ग्रुभ एणे सांधी,
शादुळकानी सरस, वळे चोवीशी वांधी;
ए पछी थया अनुक्रमे, सार्ग सोढो रायमळ,
नांयो, ने जोधो निख्लि, वंशज देवाना विमळ.

अजमेर.

छप्पय.

एकवीशमी पेढी, गुणी हरपाळथी गणजो, राज्य क्ववे स्रखरूप, भीम भूमिपति भणजो; एना अनुज अजाजी, हता हिम्मतवाळा वहु, हार्या एनं शौर्य हेरी, अहसीवाळा सहु; अजे स्थापी अजमेरमां, राजधानी शुभ रीतथी, दिज सुरभिनं दोहीने, पाळन करता भीतथी. दोहा.

ए समये अजमेरनां, चारु गाम चोवीश, भावें भोगवता अजो, धर्मनिष्ठ धरणीशः ए पछी सबळोजी अने, मैकोजी क्रमवार; खुबीदार खेंगारजी, इता पछी इकदारः जबर रायमल ने जसो, सुखदंधराना श्याम; ए झाळा अजमेरीया निरखी ल्यो नधुरामः

8

त्रयसिंशत् तरंग.



घनाक्षरी.

यात्रा द्वारिकानी तेम खात-मुर्त हाइस्कुलनुं कुमारोना जन्म विद्युद्दीपे म्हेल कीधा व्याप्तः; कहे नयुराम पाश्चिमात्य युद्धमां पधार्थाः,ं आप अमरेश! आंग्लराज्यना बनीने आप्तः; तत्त्व कुंबरीनो लग्न महोत्सव वर्णवीने झालावंश्वारिधिनो धन्य आ करं समाप्तः, आरोग्यतायुक्त दीर्घ आयुष्य कुटुंब सह, प्रभुनी कृपाधी धन्नो आपने सदेव प्राप्तः

प्रजापिय महाराजा अमरसिंहजी !

न्ताना मोटा वत्रीण नरंगोमां आपना वर्ष गौर्यादि सद्गुण समन्वित पूर्वजोनां तथा भायातोनां चरित्रो वर्णवी आपश्रीनां पवित्र जन्मचरित्रमां नेकनामदार सम्राद्धशी शहेनशाह पंचम ज्योजना दिन्हीने पायतस्त्रे थएला राज्याभिषेक प्रसंगे आपश्रीने मळेला के. सी. आह. हना हलकादने लग् राजकुट्टम्बमां तेमज प्रजावर्गमां छवाएल आनंदमां भाग लेतां मं आगोर्यचन आप्या बाद आज पर्यन्तनुं अर्थात् दी. कुंपरीश्री तस्त्रकुंवरया साहेवनां लग्न महोत्सवसुधीनुं हत्तांन आ स्पसंहारस्य लखदा निश्चित करेल तेत्रीणमा नरंगमां आपश्रीने संभगदिया स्वित थारं हो.

ह. स. १०१२ ना अवटोदर मासमां भगवद्भितितपरायण गंगास्वरुप, नामदार दामासाहेदनी इच्छाने सानुद्दुळ दनी आप डी. कुंबरीश्रो तल्जवुंदरमा महिन जामनगर थड़ दिरपाह मार्ग बोटमां दिराजी द्वारिकानी पात्राए पथार्या. मानिपनानी सेवा भाग्यशाळीथीज दनी शक् हे. एमनी सेदा साथे उश्वरनी सेवाना लाभ लेवा प्रेमपूर्वक श्री द्वारिकाधीशनां दर्शन पर्म आपश्रीए अपूर्व पुण्यनो संचय कर्यों के जे उनरोत्तर जीवनमां आपने जयदाता वने एमां के आध्ये जेतुं नथी. सालगिरा.

आनंदना उद्धिमहीं झलराण मुद्यी झीलजो, वरऋतु वसंततणा अनुप उद्यान पेठे खीलजो; करी कलित कार्यो कीर्तिना जयकार जवर मचावजो, सुखरूप सालगिरा अमित अमरेश आप वितावजो.

कर कल्पतरुनी छांयथी, इच्छित सरवने आपजो, सबळी सुयशनी सांकळे, महिपाल धरणी मापजो; दइ स्नेहीने सुखसंपॅति, तीखा अरिने तावजो, सुखरुप सालगिरा अमित अमरेश आप वितावजो.

द्वितीयातणा द्विजराज पेठे, विविध दृद्धि पामजो, आरोग्य रहीने अंग, आधि उपाधि व्याधि वामजो; गोद्धिज अने संतो तणा धरी स्नेह क्लेश समावजो, सुखरूप सालगिरा, अभित अमरेश आप वितावजो.

ग्रुम अमरवर्छरी तुल्य, वेलिवंशनी वधती रहो, अवतंसविने अधिपना इलकाव नित नवला प्रहो. गहरा ग्रुणोना गीतथी, गंभीर गगन गजावजो, सुखरूप सालगिरा अमित अमरेश आप वितावजो.

सुप्रतापशाळी प्रतापसह, आनंदमां अहनिश रहो, हो सफल सर्व मनोरथो, चित्तमां चतुरनृप जे चहो पूरण प्रजापतिपाल बनि, भारे प्रजाने भावजो; सुखरुप सालगिरा अभित, अमरेश आप वितावजो.

नित्यहर्ष हास्य डूँछासथी, विहरो कुटुम्बी संगमां,

कोडो वरष कायम रही, रमजो रिसक नृप रंगमां; नयुराम सेवक आषनो, धरी नेह नित्य निभावजो, सुखरूप सालगिरा अमित, अमरेश आप वितावजो.

आधुनिक जमानामां केळवणी ए एक उन्नतिना उत्तम मार्ग छे, विद्यानी प्रगतिने दिनप्रतिदिन उत्तेजित करवामां निमित्तरूप थता आप सरखा नरेश्वरो प्रजानो आन्तरिक आणिवर्गिट मेळववामां फतेहमंद थवाज जोइए, वांकानेरमां हाइस्कुळनुं मकान तेमज कम्पाउन्ड विस्तृत होवा छतां तेथी पण विशेष हवा प्रकाश अने सगवडवाळी विद्याशाळा बनाववानी इच्छा थतां इ. स. १९१३ ना एपील मासनी त्रीजी तारीखे ए वखतना भळा गवर्नरनी पादगीरी खातर काटियावाडना नामदार एजन्ट हु धी गवर्नर मे. स्लेडन साहेवने मुवारक हाथे आपश्रीए जीनपराना एक विशाळ मेटानमां " सर ज्योज सीडनहाम क्रार्क हाइस्कुळ " ना पाया नंखाववानी मांगलिक क्रिया करावी प्रजाहितनां उमदा कार्योमां उमेरो कर्यो. त्यारचाद लगभग टोटेक मास पछी अर्थात् ता० ३०-५-१९१३ ना रोज द्वितीय कुमारश्री चन्द्रभानुसिंहनो जन्म थयो, उन्त दिवस आखा शहेरमां एक महान उत्सवनी माफक उज्वामां आच्यो. त्यारपछी वेसता वर्षने दिवसे म्हारा तरफथी नीचे प्रमाणे आशिवदि आपवामां आच्यो.

नूतन वर्ष.

छन्दश्लणा.

विविध सुखशान्तिमां विविध दिन वितवो,
रात्रिओ सरव रसस्प थाओ
प्रहर घटिपल विपल, अमित सुख अनुभवो,
दुःखद त्रय ताप सहु दूर जाओ;
रिष्ठि अने सिष्ठिनो सुखद समुदाय शुभ,
ज्योतिमय राजनिधिमांहि जामो,
अभिनवा वर्षमां अभिनवा हर्पथी,
अभिनवा विभव अमरेश पामो.

अंग आरोग्य अहिनश रहो आपनुं, रिसक युवराज आरोग्य रहेजो, आप्तजन आपना अखिल आरोग्य रही, लिलत आनंदप्रद ल्हाव लेजो; आपना प्रवल सुप्रतापथी पृथ्वीमां, वैरीओ हरघडी हाम वामो, अभिनवा वर्षमा अभिनवा हर्षथी, अभिनवा विभव अमरेश पामो.

3

छत्रधर क्षत्रिना छत्र वनी शोभजो, विजय ध्वनि वीर सर्वत्र व्यापो, चुगलने चोर चांपो सदा चरणतल, सु कवि जपता रहे सुयश जापो; वक्र तजी वक्रता वक्रपुरीना पति, आपना चरणमां शीश नामो, अभिनवा वर्षमां अभिनवा हर्षथी, अभिनवा विभव अमरेश पामो.

8

ओपजो अवनिमां इन्द्रसम अहरनिक कोपजो कृपण ने कूर माथे; जोर जालिम ज्ठाओना जाळजो, शूर शर सत्यनुं धारी हाथे; संत सुरभितणा सद्य रक्षा करो, दुष्टनां दिलमहीं आपी डामो; अभिनवा वर्षमां अभिनवा हर्षथी अभिनवा विभव अमरेश पामो.

ч

दिव्य दिग्दंतींना श्वेत मस्तक करो, कित कीर्तितणों रंग छांटी; वश करो वाल बृद्धों अने युवकने, विश्वमां व्हाल मीठाई वांटी; वंदिना मुख्यकी विरद वोलावजो, दृढ करी धर्मनां कोटि कामो, अभिनवा वर्षमां अभिनवा हर्षथी, अभिनवा विभव अमरेश पामो.

ε

ज्यां लगी सृष्टि स्रष्टा रचे स्नेहथी, ज्यां लगी विष्णु प्रीतेथी पोषे; ज्यां लगी सुरसरी अलग अघने करे, ज्यां लगी वरुणने विन्ह शोषे; त्यांलगी अचल रहो नाथ नयुरामना, सफल करी हृदयनी सर्व हामो; ऑभनवा वर्षमां अभिनवा हर्पथी, अभिनवा विभव अमरेश पामो.



मन्दात्रान्ता,

दानी दीपो. निवन वरपे, श्रेमधी श्रेय पामी, रही रीतें, किलन कृतिथी, जग्तमां कीर्ति जामी;

वृत्ति व्हाळं, विविध वधती, राखींने धर्मराहे, रे'जो नित्ये, अमर नृपति, आप आनंदमांहे. पाम्या कीर्ति, द्विजसुरिभने, प्रेमथी नित्य पाळी, पूरेपूरा प्रवलभुवने भूप छो भाग्यशाळी. नीति रीति, सुजन सघळा, स्नेहधारी सराहे, रे'जो नित्ये, अमर नृपति आप आनंदमांहे. झालावंशे, महद महिमा आपनो जोइ आजे, स्नेहीकेरां, हृद्य हरखे, वैरीनां वृन्द लाजे; वन्दीलोको, विरदवदता, चित्तमां श्रेय चाहे, रे'जो नित्ये अमर नृपति, आप आनंदमांहे.

गीति

अ नयुरामनी आशिष, अमर भूपति दीप्तियुक्त देहे; सहकुटुंव सुखमांहे, निवन वर्ष आ वितावजो नेहे.

नूतनवर्ष.

घनाच्चरी.

परम अनंदकों उडातेरहो आठोंयाम, धरपें बडाते रहो धीर धनधाम नितः; विविध विहार करो वासवसमान वीर, अबानेपें पाते रहो अमित अराम नितः; जाहिर जमाओ जगतीपें जोर जशहुको, करसों करीके कोटि, कीरतके काम नितः; अभिनव शब्द युक्त अभिनव अब्दमें दे, अभिनव अमर असीस नयुराम नित. खोटे करो खलकों सवल हुकम सोटेमार, चीरडारो चावुकतें चोरनके चाम नित; लंपट लवारहुकों रोज लोटपोट कर, दीनकों उगारो देदे दाननमें दाम नित; करके परिच्छा कवि पंडितके पुंजनकी, व्हादुर वसाते रहो गुनिनके ग्राम नित, अभिनव शब्दयुक्त अभिनव अब्दमेंदे अभिनव असर असीस नशुराम नित. कॅवर प्रताप और चारु चन्द्रभानु।सिंह, रिसक कुमार सह सुदलो मुदाम नित; न्याय नीतिहुसों प्रीत, पूरन प्रसिष्ठकर. ठीक ठकराइकों दिपाओ ठामठाम नित; करते रहेंगे अरि प्रवल प्रनाम पेखी, वलकें वलाहककों वक्रपुर इयामनितः अभिनव शब्दयुक्त अभिनव अब्दमेंदे

सालगिरा.

अभिनव असर असीत नथुराम नित.

हरिगीत.

आनंदना उद्धिमही झलराण मुद्रथी झीलजो, हर ऋतु वसंत्रतणा अनुप उद्यानपेटे खीलजो; हरी कलित कार्यो कीर्निना जयकार जवर मचावजो, सुखरूप सालगिरा अमित अमरेज आप वितावजो. हर कल्पतरुनी छांयथी, इच्छित सरवने आपजो, सबळी सुयशनी सांकळे महिपाल धरणी मापजो: दइ स्नेहीने सुखसंपंत्ति तीखा अरिने तावजो. सुखरूप सालगिरा अमित अमरेश आप वितावजी. द्वितीयातणा द्विजराजपेठे विविध वृद्धि पामजो, आरोग्य रहीने अंग आधि उपाधि व्याधि वामजोः गो द्विज अने संतोतणा धरी स्नेह क्लेश समावजो, सुखरुप सालगिरा अमित अमरेश आप वितावजो. शुभ अमरवछरी तुल्य वेलि वंशनी वधती रहो, अवतंस वनीन अधिपना इलकाव नित्य नवला यहोः गहरा गुणोना गीतथी गंभीर गगन गजावजो, सुखरूप सालगिरा अमित अमरेश आप वितावजो. सुप्रतापशाळी प्रताप सह आनंदमां अहिनश रहो। हो सफल सर्व मनोरथो, चित्तमां चतुरनृप जें चहो; पूरण प्रजा प्रतिपाल बनि, भारे प्रजाने भावजो, सुखरूप सालगिरा अमित अमरेश आप वितावजो. नित्य हर्षहास्य हुझासथी, विहरो कुटुम्बी संगमां, क्रोडो वरष कायम रही रमजो रसिकनृप रंगमां, नथुराम सेवक आपनो, धरी नेह नित्य निभावजो, सुखर्रेंप सालगिरा अमित अमरेश आप वितावजो.

इ. स. १९१५ नी शरुआतमांज ग्रुख्य कारभारी मे. नाथाभाइ अविचलदास देसा-इने वर्षारंभना मांगलिक प्रसंगे नामदार ब्रीटीश सरकार तरफथी " राववहादुर " नो इल्काब एनायत करवामां आच्यो, ए मान खरेखर आपनेज घटे छे, कारण के आपश्रीए गुणक्कताथी एवा बाहोश माणसने प्रधानपदे नियत कर्या के जेनी नामदार सरकारे पण कदर बुजी, पुत्रने मान प्राप्त थाय एमां पितानी अने सेवकने मान मळे एमां स्वामीनी शोभा वधे छे ए मान्यताने नामंजुर करवा कोइपण नकारनो उच्चार करनारज नंथी. एज वर्षनी ता. १७ फेब्रुआरीना रोज आपश्रीए " अमरविलास " पेलेसमां एक महान द्वदबाभर्यो दरवार भरी राजमहालयना दरेक विभागमां वीजळीनी वत्तीओ चाल करवानुं यंत्रालय कच्छना नेकनामदार मीरजां महाराओ खेंगारजी सवाइवहादुर के। सी. एस आइ ने मुवारक हाये खोलान्युं,

ते समये म्हारा तरफथी निम्न लिखित कविता निवेदन करवामां आवी छन्द मनोहर.

आज ऋतुराजकी अवाइसों उमंगभर,
गार्जे उठी मंगल वधाइ गामगामसों;
किव नखुराम त्यों धमार गानहुसों द्रढ,
मोदप्रद मंगल प्रकाइयो धाम धामसें.
कोकिला मधु तडाग वाग वन उपवन,
मंगल प्रगट करे अति अभिरामसों;
नृपति खेंगारको मिलन अमरेशजुने,
मान लीयो महद वो मंगल तमामसों

छन्द घनाचरी.

आपकों खेंगार भूप आज अमरेशजुने,
श्रमित किये हे सोच कर मनमें महानः
किव नथुराम सत्य पूर्वज तुम्हारे सोम,
तिमिर निवारी करे पुहुमी प्रकाशमान,
कारी निशिहुकों उजीयारी करी देत आय.
ध्वांत अरि नाम वाको जानत सबें जहानः
विद्युत चिराग प्रगटाये हे तुम्हारे कर,
शशिकुलहुकों यह सहज स्वभाव जान.
अमरनिवास भोंन आज अल्वेलो वन्यो,
ध्योतिकी जलुसें छइ अवनीतें आसमानः

[१८५३]

कवि नथुराम महाराव श्रीखेंगार संग. अमर तृपाल राजे परम प्रकाशमान; सजन कुमुद फूले संग कविकंज फूले, पुनित प्रभाको जान्यो परत नही प्रमान. तिमिरको ताप कहा आनंदको माप कहा, आय मिले संग जहां भव्य राशि भासमान. सुयश शशिकों सद्य सीसपें चढाय लीनो, सबल वहाइ दान सुरसरिधार आज. कवि नथुराम गर्व गरल गले दुरायो, वरप्रद ओरनते अमित उदार आज. गुणीगण आसपास आय मंडराय रहे, दासनकों दिव्य फलदाता देनहार आज. भ्रष्टकों भयंकर क्षयंकर खळोंके खास. शंकर समान शोभे नृपति खेंगार आज. माननीय महद खेंगारओ अमर सदा, अचल बिराजो पाट उभय नृपाल तुम्. कवि नथुराम कोटि वरस विलास करो, संपत समस्तसों सुहाओ प्रजापाल तुम; बचन हमारो बेद बचन विचार कर, शक सम छाजो छिति शत्रुनके साल तुम. बुद्धिके विशाल तुम प्रेम आलवाल तुम, क्ररनके काल तुम दीनके दयाल तुम.

एज अरसामां न्यायपरायण नामदार ब्रीटीश सरकारने जर्मनोना अत्याचारयी अत्यंत पोडातां बेल्जीयम आदि न्हानां राज्योनी सहायता अर्थे युद्धभूमिमां उतरवानी आव-इयकता जणाइ, धन अने जनसमुदायनुं जोर होय तोज युद्धमां विजयलक्ष्मीने वरी शकाय छे ए वात सर्वविदित होवाथी नामदार अंग्रेज सरकारे पण ए उभय वस्तुनी प्राप्ति अर्थे पोतानी सत्ता हेटल रहेल समग्र राज्योने मूचना आपी. जेमना उत्तम राजतंत्रने प्रतापे अनेक वर्षी गुलगान्तिमां विताववा हिन्दनो राजवर्ग तथा प्रजावर्ग समर्थ थयो ए साम्राज्यपर आपत्तिनुं वादळ आवतां कयो इतभाग्य तेमां सहायभृत थवा सज्ज न थाय ? केटलाएक राजाओए तो धन संबंधी मदद आपीनेज पोताना कर्तव्यनी पूर्णाहुति करी त्यारे केटलाएक वहादुर नरेगो धन अने जन वन्तेनी मदद उपरांत जाते युद्धमां जवा कटिवद्ध थया, ज्यारे केटलाएकने फरजीआत त्यां जवा जरुर पडी त्यारे आपश्रीए स्वेच्छाधीज त्यां जइ पहोंचवा निश्रय कर्यो, जोके ए कार्य आपना कुलगौरवने योग्यज इतुं, तोपण आपश्रीनो उक्त निश्रय प्रनिद्धिमां आवतां आपनी राजभक्त प्रजानां मन अत्यंत विद्वळ वनी गयां, एनं कारण आपना प्रत्ये प्रजानो विशुद्ध प्रेम, अने तेमां पण वाहुवळनी कसोटी करावनार हाथोहाथना युद्धमां एक वीर राजवंशी माटे प्रजा एटली वधी चिन्ताय्रस्त न थाय, कारणके तेवे प्रसंगे आप सरखा वळवान नरेशनो पराभव थवानी आकांक्षा भाग्ये ज उद्भवे छे, परंतु पाश्चिमात्य रणभृमि के ज्यां गेवी गोळाओनो रातदिवस वरसादज वरस्या करे अर्थात् यंत्रयुद्ध थाय अने ज्यां वाहुवळनी किम्मत जरा पण न अंकाय त्यां पोताना मालिकने जवानी इच्छा थाय त्यारे प्रजाना मनमां विद्वलता केम न जणाय ? तलपद वांकानेरनी प्रजा, अमलदारी रनेरी संवंधीओ तो आपश्रीना उक्त निश्रयने अनुमोदन आपवा समर्थ न थया, परंत्र दरेक गामटाना पटेलीआओ पण बांकानेर आवी वे हाथ जोडी आपने कहेवा लाग्या के आप लडा-रमां पथारवानी वात सुकी दीओ अने एने वटले सरकारने नाणां आपवां जोइए तो खुशीथी आपो. अमे वथा अमारी वच्चे वर्षनी उपज आप उपरथी ओळघोळ करी नांखशुं, तेम छतां आपने लटाइमां पथारवं तोय तो अमने पण साथे लीओ, अमारो धणी लडाइमां जाय अने अमे घेर बेटा ररीए ए तो नहींज बने. आटलुंबोलनां एसहुनां हृदयभराइ आव्यां, आपश्रीए तेओने यह यह समजाव्या अने,कर्य जे नामदार सरकार कांट मने त्यां वोलावता नथी, पण हुं मारी इच्छाधीन साम्राज्य तरफनी मारी असाधारण लागणीने लीचे युद्धमां जवाना उत्साहने अटकावी भवतो नथी: तमो सर्व निश्चिन्त रहो, मारं त्यां जह अमुक कार्योमां सरकारने सहायभृत थवानुं हे तेम छनां कडाच एवा समय प्राप्त थाय के दृश्मननी भेटो थयो तो ए दसते अमारा राजपृतना धर्म प्रमाणे जे दनने ते करी बनावशुं, ज्यारे ए रीतनो आपनो अडग दिचार जोयो न्यारे आपनी मुनाफरी नफळ अने नुम्बरप इच्छवा माटे राजकुढुंव, अमळदारो वया प्रजावर्ग नरफयी आपने जुटी जुटी चा पार्टीओ आपवामां आवी अने मानवंता वामा मारे आपशीने आशीर्वाट आपदा साथे में पण नीने मुजव कविनामां आशीर्वाट आप्यो.



वन्धु श्रीवलरामना, राग धरीने रोज; अमर आपशे आपने, मुद मंगलनी मोज.

आ वखत देश युरोपमां विम्रहतणां वादळ चड्यां, ए समय पामी थे सवळ अन्योन्य मांहे आखड्या; करवा ब्रीटींशनी पक्ष, दक्ष प्रसारवा सुप्रतापने, आशीश जननी जामवानी अमर फळशे आपने. सुखप्रद थरो दिनयामिनी सिन्धु वनी जारो सरी, सुखथी पधारो शुभ थशे झलराण कुलना केसरी; जलयान हयरथ सम वनी नहि प्रकटशे परितापने; आशीष जननी जामवानी अमर फळशे आपने. स्थलमहिं पल पल पास रहेशे प्रौढ पीताम्वरधरण, ग्रुभ विष्नहर सहु विघ्ननो विध्वंस करहो सुखकरण; महिपो अखिलमां आपना मोहन वधारे मापने, आशीश जननी जामबानी अमर फळशे आपने. करी बंध अक्ष विपक्षना जय आपने प्रभु आपरो, अर्पण करीने उन्नति सहु कष्टनी जड कापशे; अर्जुन सदृश रहे आगळे धरी चत्रभुज शरचापने, आशीरा जननी जामबानी अमर फळरो आपने. सह शस्त्र अस्त्र प्रहारथी अविनाशी अळगा राखरो, आरोग्य आपी अंगमां विभु दयाद्रष्टें दाखरो; हरपाल सम हिम्मत प्रकटजो छापवा यश छ।पने, आशीश जननी जामवानी अमर फळशे आपने.

देखाडी दिव्य पराक्रमो भल छत्रपतिने भावजो, धरी तीव्र वेग त्वराधकी आनंदी व्हेला आवजो; आहीं अमे स्नेही सरव जपशुं विजयना जापने, आशीश जननी जामवानी अमर फळशे आपने.

दोहरा.

कोटि वरस लगी कोडथी, आपी विभव अपार; अमर राखरो आपने. कृपा करी किरतार.

छे सुखद पंचम ज्यॉर्जनुं साम्राज्य भारत वर्षमां, उद्यत थयो अरि हानि करवा एमना उत्कर्षमां; जइ आप जंगे जर्मनोने तीत्र वळथी तावजो, जयशोर करती जोरथी, अमरेश व्हेला आवजो. हरपालदेवनी शक्तिओं ज्यम स्हाय संकटमां करी, ए रीत जंगे आपनी, रक्षा करे जगदीश्वरी; झलराण झट युद्धे बिटिशनी विजयवहरी वावजो; जयशोर करता जोरथी अमरेश व्हेला आवजो. अहीं धी प्रयाण थतां वधावे सर्व आज्ञीवेचनथी, मखवान मन्दरअचलसम अरिसिन्धुने नांखो मथी; वनी प्रवळ पूर्वजनो सुयज्ञ, परदेशमां प्रसरावजो, जयशोर करता जोरथी अमरेश व्हेला आवजो. वर मेडपाटनी माट वहु झलराण रणमांही लड्या, जेना विजयध्वज आज लगी उत्तंग आकारो अहया; ए रीन मेवा ज्यॉर्जनी बळधारी आप बजावजो, जयज्ञोर करता जोरयी अमरेश व्हेला आवजो.

छे क्षत्रिओनो धर्म युद्धे धैर्यथी पग धारवो, उत्साहथी आगळ वधीने महद रिपुने मारवो; ए सूत्रनुं करीं स्मरण रणमां फांकडा नृप फावजो, जयशोर करता जोरथी अमरेश व्हेला आवजो. जाहिर वफादारी तमारी ताज तरफ तणाय छे, श्री राजराणा उदयनुं ए भट्य चिह्न भणाय छे; सम्राद्थी लहीं मान सारं स्नेहनद छलकावजो. जयशोर करता जोरथी अमरेश व्हेला आवजो. स्रत विनयसिंहतणा विवेकी विवुध तेमज वीर छों, वळि धर्मानिष्ठ धरापति सागर समा गंभीर छो; श्री जामवा माताजीने दैवी गुणोथी दिपावजी, जयशोर करता जोरथी अमरेश व्हेला आवजो. कुळदेवताओ सफळ करशे युद्धयात्रा आपनी, कीर्तिगवारो कितमुखे मखवान म्होटा मापनी; नथुरामना उरमां पुनर्दर्शनथी हर्ष उपावजो, जयशोर करता जोरथी अमरेश व्हेला आवजो.

आपश्रीए युद्धमां स्वेच्छाए सर्वीस ऑफर करी त्यारे कुमारश्री शिवसिंहजीए वांकानेर तरफथी तेमज कुमारश्री कृष्णचन्द्रसिंहजीए भावनगर तरफथी नामदार सरकारने कंइपण
सहायभूत थवा पोतानी द्रढ इच्छा वतावी अने ए वन्ने क्षात्रकुमारो आपश्रीनी साथेज रवाना
थवा सज्ज थया, आपे आपना स्टाफ तरीके चीफ मेडीकल ऑफीसर डॉ॰ गजानन श्रीणाभाइ
माहीमतुरा एल॰ आर॰ सी॰ पी॰ तथा इजुरी चकु खवासने साथे लइ पंच त्यां परमेश्वर ए
न्याये ता॰ ११-११-१५ ना रोज वांकानेरथी प्रयाण कर्युं, न्यायी राजाओ प्रजाने केवा प्रिय
होय छे ए दाखलो दुनियाने बताववा माटे परमात्माए जाणे केम उक्त प्रसंग उपस्थित कर्यो
होय ? तेम वांकानेरनी प्रजाना हृदयमां ए वखते एटलुं तो लागी आव्युं के जेनुं वर्णनः करतां
अन्य राज्योनी प्रजाने कदाच अतिश्चयोक्ति जेवुं जणाय, परंतु हुं खात्रीपूर्वक कहुं छुं के जेने
आप सरखा राजानी रेंच्यत वनी रहेवानुं सद्भाग्य प्राप्त थएलुं होय ते तो तेवे प्रसंगे तेवी
लागणीनो अनुभव करे ए सर्वथा योग्यज छे॰

प्रयाण समये अश्रुपात ए एक प्रकारनुं अपश्रुकन गणातुं होवाथी आपनी प्रजाए हद-यने मजनुत राखी आपनी मुसाफरी निर्विघ्न अने सफल निवडवा माटे आप सर्वने विजय-सूचक पुष्पहार पहेराच्या, प्रजावर्गनो अख्ट आशीर्वाट मेळवी वांकानेरथी रवाना थड़ मुंबइ सूची पहोंचतां वहवाण, वीरमगाम, अमदावाद अने सुरत इत्यादि स्थले उद्योग अर्थे निवास करती आपनी राज्यभक्त प्रजाए एज रीते पुष्पष्टिथी आपनी युद्धयात्राने सफल उच्छी तेमज मुंबइमां रहेनी प्रजा तरफथी तेमज अन्य अनेक सुप्रतिष्टित सद्गृहस्थी तरफथी पण अपूर्व मान प्राप्त थयुं.

आप जे अरसामां आगवोटनी अंदर विराजी फ्रान्स तरफ पधार्या ते वखते जर्मनोनी जलान्तः संचारिणी जालिय नौकाओना भयधी समस्त वारिधि व्याप्त इतो, छतां कर्तव्यमांज जेनी एकिनिष्ठा छे एवा द्रद्यतिज्ञ पुरुपनी परमात्मा रक्षा करे छे तेम आपने पण मार्गमां कोइ पण प्रकारनुं विद्य न नडचुं, आपश्रीए प्रथम मार्सेल्समां अने पछीथी युद्धभूमिने पश्चिम मोखरे लगभग आठेक मास निर्गमन कर्या, तेमां चार मास मार्सेल्समां वाइस कमान्डर साथे रही नामदार गरकारने जोइती सहायता आपी, त्यारवाद आपश्रीए ता. १४ मी मार्च सने १९१६ ना रोज लंडन पथारी नामदार शहेनशाइ पंचम ज्यॉर्ज तथा मानवंता शहेनशाहवानु मेरीनी मुलाकातनुं मान मेळव्युं.

आपश्रीनी उक्त ग्रुसाफरी दरमीआन इरहमेश शुद्ध हृदयथी आपनुं हित चाहनारी प्रजा आपनी नंदुरस्ती अने आपना पुनः वांकानेर पथारवा सबंधी समाचार सांभळवा निरं-तर इन्तेजार रहेती अने आपना कल्याण अर्थ मसुमार्थना आदि करवामां कोडपण वेटरकार रधं नहतु, जेने परिणामे ना. १२-७-१९६ ना रोज आपश्री ज्यारे मुंबइकिनारे संपूर्ण तदरस्ती साथे पथार्याना ता. १३ मीए तार द्वारा शुभ समाचार मळ्या त्यारे आपनी प्रजा-मांना आवालहरू सत्कोहने अन्य तमाम उत्सवो करतां विशेष आनंदनी प्राप्ति थइ: कोइपण पुत्र पिता उपर एटलो स्नेह नहि यरावनो होय के जेटलो प्रेम आपनी प्रजानो आपना उपर ए वरवते द्रष्टिगोचर धयो हतो, आप वे दिवस मुंबद्दमां विश्रान्ति छइ स्नेहीसवंधीओने मळी मानपानपूर्वक ता. १५ मीए वांकानेर पथार्या त्यारे मथमनी माफक दरेक स्टेशनोए अने दांकानेर जंकराने आपनी समस्त प्रजाए हाजरी आपी हर्पाश्रुरुपी मुक्ताथी आपने वधावी लीया: ए दखतना देखादनुं वर्णन करतां आजे पण मारुं शरीर मरोम थाय छे अने नेत्रमां आनंदनां अप भराय है, धन्य है आप जैवा धरणीपितने के जैओए एक गोवाळनी माफक पृथ्वीरपी धेनुनुं दृथ (सन्व) प्रजारुपी बत्सने परिपूर्ण पुष्टि मळे त्यांसुधी आप्या बाढ अविश्वित पोताना उपयोगमां हेवानी प्रशंसनीय प्रधा राखेली है. एम तो वांकानेरने आप-श्रीना राज्याभिषेदायी आरंभी आजनुयीना दरेक मांगलिक मसंगोए गुंगारवामां आवेलुं, परत भा वखननो गुंगार कोह अर्छोक्तिकन हतो; आपश्रीनी युद्धयात्रा सफल थड अने आप संपूर्ण तंदुरस्ती साथे पोताना शहेरमां पथार्या ए कांड साधारण आनंदनी वात नथी, जे लोको आपश्रीना प्रयाण समये देह तथा दान आदिने ओलघोळ करवा आतुर वनी रहाा हता ते आपनां पुनर्दर्शनथी अवर्णनीय आनंद अनुभवे एमां कांड आश्रय जेवुं नज होय. मारे कहेबुं जोइए के पोतानां गजां उपरवट खर्च करी रैय्यते ए वखते आपनां तरफ विश्रद्ध लागणी प्रकट करी हती. जे राजा अने रैय्यत वच्चे एवो विश्रद्ध प्रेम सर्वटा जागृत होय एना जेवां भाग्यशाली वीजां कोण होइ शके, कांतो प्रजा वत्सल पद रामे पाप्त कर्युं अने कांतो आपे.

आपश्रीनां उक्त आगमन महोत्सव प्रसंगे में निम्नलिखिन काव्यमां आशीर्वाट आप्यो हतो.

छन्द झ्लगाः

अमर नृप इन्द्रकेरं थतां आगमन, स्नेहसरिता छली चालीं पूरे, कविग्रणीमयूर पंडितपपीहा सहु, निकट आव्या हता जेह दूरे; वक्रपुरीनी प्रजाविश्व बनी पञ्चवित, प्रेमीना पिंडमां प्राण लाव्या, आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या. हद विना हर्षनो आज उत्कर्ष छे, स्पर्श पारसतणो जाणी पाम्या, मोद मंगल मल्या एक स्थानकमहीं, जवर सुखिसन्धुमां सर्व जाम्याः विरहनी रात्रि गई अमर रवि उगतां स्नेहीओं विविध पुष्पें वधाव्या, आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्रार्थी आव्या. प्रबल झलराणनी कुलप्रथा पाळवा, आंग्लअधिपतितणी पक्ष लीधी, अटपटे अवसरे स्नेहंथी संचरी, धीरता वीरता प्रकट कीधी; श्रमथी साहस भयी अमित उद्योग करी, बहु स्थले की तिंकुसुमो विछाव्यां, आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या. हो'नहाहिततणी भक्तिनी भव्यता, अखिलने हैर आरे।पवाने; सत्यना संगमां अभय वनी एकला, अडग उभा रह्या ओपवाने, तनथीं मनथी अने धनथीं सेवा करी, भूरि गुणो शौर्यतादिथीं भाव्या;

आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या. देहनी गेहनी सर्व दरकार तजी, राज्यना काज सह अलग छोडी, समयनी विषमता नहीं विचारी जरा, द्रढ रह्या वचनपर जीव जोडी; क्षत्रिने योग्य कार्यो कर्यां कोडथी, स्नेह-तरु सुभटने हृदय वाव्यां, आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमरनूप युद्धयात्राधी आव्या. चित्तचाहक चकोरोतणा चेंापथी, सुखीं कर्या मुख सुधाधर वतावी, तीव दर्शनतणां जे तृपाळु हतां, तृप्त करीयां त्वरित अत्र आवी; मिलननी औषधी आपी आनंदथी, हृदयना विरहरोगो हठाव्या, आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युष्यात्राथी आव्या. विजयनां शीत गाये सहु गुणींजनो, वंदी व्हादुरीतणा विरद वोले, वेदना मंत्र उचारता अति घणा, महद मुदधारी मळीं विप्र टोळे; जपर जयदारना घोपथीं गगनपट, ध्वनित करी हृदय हितुनां हसाव्यां, आज आनंद आनंद छे अखिल स्यल, अमर नृप युद्धयात्रार्थी आव्या. आजनो हर्ष वर्णन करे व्हालधी, शेप तोये घणुं शेप रहेशे, तो पही केम करी एक आनन धकी, काव्यथी आज कवि कोई कहेशे; रंक नधुरावनां शुन्य भुवनो वधां, व्हालथी विश्वपतिओं वसाव्यां. आज आनंद आनंद हे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या.

आपश्री युन्ध्भिममां विशेष वाहत रोकाइ नामदार ब्रीटीश सम्कारने वनती सहायता आपवा हातसंवाहप ध्या हता. परन्तु दी. बंबरीश्री ताहत बंबरवा साहेव योग्य उम्मरे पहोंचेलां होदाथी तेमनो सदंध तथा लग्न तुरतमां करवानी आपश्रीने आवश्यक्ता जणाड, कन्यादान नार्धक त्यारे गणाय हे के ज्यारे योग्य वर साथे हम्निमलाप कराववामां आवे, कन्यादाननी महिमा शाहमां सर्वोत्हिष्ट गणवामां आव्यो हे, कारणके मातृक्तणथी मुक्त थवाने माटे सर्व दान करतां वन्यादान प्रथम दर्ज्ञानुं लेकाय हे, उक्त कन्यादाननुं पुष्य प्राप्त करवा भाग्य-

संपूर्ण तंदुरस्ती साथे पोताना शहेरमां पथार्या ए कांड साधारण आनंदनी वात नथी, जे लोको आपश्रीना प्रयाण समये देह तथा दान आदिने ओळघोळ करवा आतुर वनी रहा हता ते आपनां पुनर्दर्शनथी अवर्णनीय आनंद अनुभवे एमां कांड आश्रय जेंचुं नज होय. मारे कहेंचुं जोइए के पोतानां गजां उपरवट खर्च करी रैय्यते ए वखते आपनां तरफ विशुद्ध लागणी पकट करी हती. जे राजा अने रैय्यत वच्चे एवो विशुद्ध प्रेम सर्वदा जागृत होय एना जेवां भाग्यशाळी वीजां कोण होइ शके, कांतो प्रजा वत्सल एट रामे प्राप्त कर्युं अने कांतो आपे.

आपश्रीनां उक्त आगमन महोत्सव प्रसंगे में निम्नलिखिन कान्यमां आशीर्वाट आप्यो हतो.

छन्द स्लगाः

अमर नृप इन्द्रकेरं थतां आगमन, स्नेहसरिता छली चालीं पूरे, कविग्रणीमयूर पंडितपपीहा सहु, निकट आव्या हता जेह दूरे; वक्रपुरीनी प्रजाविह बनी पहावित, प्रेमीना पिंडमां प्राण लाव्या, आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्रार्थी आव्या. हद विना हर्षनो आज उत्कर्ष छे, स्पर्श पारसतणो जाणी पाम्या, मोद मंगल मळ्या एक स्थानकमहीं, जवर सुखिसन्धुमां सर्व जाम्याः विरहनी रात्रि गई अमर रवि उगतां स्नेहीओं विविध पुष्पें वधाव्या, आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या. प्रबल झलराणनी कुलप्रथा पाळवा, आंग्लअधिपतितणी पक्ष लीधी. अटपटे अवसरे स्नेहंथी संचरी, धीरता वीरता प्रकट कीधी; श्रमथी साहस भयी अमित उद्योग करी, बहु स्थले कीर्तिकुसुमो विछाव्यां, आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्रार्थी आव्या. हो'नहााहततणी भक्तिनी भव्यता, अखिलने उर आरे।पवाने; सत्यना संगमां अभय वनी एकला, अडग उभा रहा। ओपवाने, तनथीं मनथी अने धनथीं सेवा करी, भूरि गुणो शौर्यतादिथीं भाव्या;

आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या. देहनी गेहनी सर्व दरकार तजी, राज्यना काज सह अलग छोडी, समयनी विषमता नहीं विचारी जरा, द्रढ रह्या वचनपर जीव जोडी: क्षत्रिने योग्य कार्यो कर्या कोडथी, स्नेह-तरु सुभटने हृदय वाव्यां, आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमरनृप युद्धयात्राधी आव्या. चित्तचाहक चकोरोतणा चेंापथी, सुखी कर्या मुख सुधाधर वतावी, तीव दर्शनतणां जे तृषाळु हतां, तृप्त करीयां त्वरित अत्र आवी; मिलननी औषधी आपी आनंदथी, हृदयना विरहरोगो हठाव्या, आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या. विजयनां गीत गाये सहु गुणीजनो, बंदी व्हादुरीतणा विरद वोले, वेदना मंत्र उचारता अति घणा, महद मुदधारी मळी विप्र टोळे; जवर जयकारना घोषथी गगनपट, ध्वनित करी हृदय हितुनां हसाव्यां, आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्रार्थी आव्या. आजनो हर्ष वर्णन करे व्हालथी, शेष तोये घणुं शेष रहेशे, तो पछी केम करी एक आनन थकी, काव्यथी आज कवि कोई कहेरो; रंक नथुरामनां शुन्य भुवनो वधां, व्हालथी विश्वपतिओं वसाव्यां. आज आनंद आनंद छे अखिल स्थल, अमर नृप युद्धयात्राथी आव्या.

आपश्री युद्धभूमिमां विशेष वखत रोकाइ नामदार ब्रीटीश सरकारने वनती सहायता आपवा कृतसंकलप व्याप हता, परन्तु दी कुंवरीश्री तख्तकुंवरवा साहेव योग्य उम्मरे पहोंचेलां होवायी तेमनो सवंध तथा लग्न तुरतमां करवानी आपश्रीने आवश्यक्ता जणाइ, कन्यादान सार्थक त्यारे गणाय छे के ज्यारे योग्य वर साथे हस्तमिलाप कराववामां आवे, कन्यादाननो मिहमा शास्त्रमां सर्वोत्कृष्ट गणवामां आव्यो छे, कारणके मातृऋणथी मुक्त थवाने माटे सर्व दान करतां कन्यादान प्रथम दरज्ञानुं लेखाय छे, उक्त कन्यादाननुं पुण्य प्राप्त करवा भाग्य-

शाळी थवुं ए साधारण वात नथी। आपश्रीए प्रयाण पहेलांज कुंवरीसाहेवना सवंध माटे योजना करी राखेली होदाथी आप फान्स तरफ पधार्या वाद लगभग अही मासे आपनी सूचना सुजब बांकानेर स्टेटना सुख्य कारभारी राववहादुर नाथाभाइ अविचलदास देसाइए सारा स्टाफ साथे ओरीस्सा प्रान्तमां आवेला मयूरभंज राज्यना नामदार महाराजाश्री पूर्णचन्द्रसिंह भंजदेवना पवित्र करकमलमां दी। कुंवरीश्री तख्तकुंवरवा साहेवना सवंधनुं श्रीफल ता। २७-१-१६ ना रोज राजरीति सुजव अर्पण कर्यु, सवंधनी समस्त क्रिया बारिपदा नामनी राजधानीमां एक महान् दरवार भरी शास्त्रोक्त प्रकारे करवामां आवी हती।

ता. ११-८-१९१६ ना रोज दी. कुंबरीश्री तख्तकुंबरवा साहेवने चुंदडी ओहाडवा माटे मयूरभंजना महाराजाश्रीना काकाश्री मे. रावतरायजी साहेव वगेरे अमीरजमरावो आवी पहाँचतां "अमरिवलास" राज्यना महेलना अंढरना कम्पाउन्डमां एक म्होटो समीआणो छमो करवामां आव्यो अने त्यां सवारना अग्यार वज्ये एक दबदबाभर्यो दरवार भरवामां आव्यो, ए वखते मिजमानोमां मे. रावतरायजी साहेव तथा तेनी सायेना डेप्युटेशनमां आवेलां राजकीय जनो उपरांत कच्छ देशान्तगैत तेराना कुमारश्री टादुभा साहेव, वलाना पाटवीकुमारश्री गंभीरसिंहजी साहेव तथा तेमना लघुवन्धु कुमारश्री प्रतापसिंहजी, श्रांगश्राना कुमारश्री नटवर्सिंहजी, पंचाशीआना कुमारश्री केसरीसिंहजी, सींधावढरना कुमारश्री रणमलसिंहजी, जालीना कुमारश्री मानसिंहजी तथा शिवसिंहजी वगेरे भायातो तथा स्टेटना तमाम ऑफीसरों अने गामना समग्र सद्गृहस्थो हाजर थया हता.

चुंदही आदि वस्त्रालंकारनी महोटी छावो प्रथम हाइस्कुलना मकानमां मुशोभित रीते गोदवी मयूरभंज स्टेटना माणसोए उपाही अने त्यांयी स्वारीना आकारमां वाजतेगाजते केराला दरवाजेथी पूल दरवाजे थइ अमरविलास पहोंचतां उक्त छावोने विधिपुरःसर वधान्या वाद समीआणानी अंदर भराएला दरवार समक्ष ए सर्व चीजो आपनी नजरे करवामां आवी त्यांथी दी. कुंवरीश्री तख्तकुंवरवा साहेवने विधिपूर्वक क्रिया करावी चुंदही ओढाडवामां आवी अने त्यारपछी कचेरीनी अंदर समयोचित भाषणो थयां. ते समये म्हारा तरफथी नीचे प्रमाणे शब्दोमां हर्ष प्रदर्शित करवामां आव्यो.

मंगलं भगवान् विष्णुर्मगलं गरुडध्वजः मंगलं पुंडरीकाक्षो मंगलायतनं हरिः॥

कवित्त.

पूरवतें आये परिपूरन बढाय प्यार, सुखद श्रीदामचन्द्र भ्राता रामचन्द्रके। कवि नथुराम शाखा कलित कुशामहकी, भंजकुलसूषन है व्याघ अरिवृन्दके ॥ जाहिर जिनोंके यह जगसरसीके वीच, परम प्रकाशे कंज सुयश अमंदके। वक्रपुर आज शक्रपुरकी धरें है शोसा, देखी पितरव्य पूर्नचंदजु नरेंदके ॥ वक्रपुरवासी जन पुनित पुरैनी रूप, पुर्नचंद पेख छटादार वन छाजेंगे। कवि नथुराम अंजकुलके महान भट, रिसक अमर झलरान ढिग राजेंगे॥ गाजेंगे गॅभीर गान वाजेंगे विविध वाद्य, नृपति निवाजेंगे लवार जन लाजेंगे। साजेंगे सनेही सुख भ्राजेंगे भुवन जब, दोउ भासमान एक आसन विराजेंगे ॥ पारस ओ चिन्तामनी छीरशर्कराको योग, स्वर्नरत्न योग जैसें सुखद जहानकों। कवि नयुराम जेसो मकर प्रयाग योग, विश्वनाथ दर्शन ओ सुरसरि स्नानको ॥ चन्द्रपूर्णिमाको योग षष्टी ओ महोदयको, वृन्दावनवास ओ कलिन्दी जलपानको। मोरभंज झाळावार वारीपदा बक्रपुर, आछो भयो योग कच्छवाहा झलरानको ॥

दोहा.

इश्वर उत्तम योग यह, अविचल राखहों आप; प्रेम परस्परको बढा, आनंद देहु अमाप ॥ आवेला सर्व सभ्योने साकर वर्हेचवामां आवी; त्यारवाट अत्तरगुलावथी तर्वतर बनेका सर्व कोको पुष्पहारथी कंटप्रदेशने शोभावता अने गजराथी हाथने डोलावता भानंद-पूर्वक पोतपोताने स्थाने पहींच्या.

नृतन वर्षाभिनंदन.

बालयुवाने वृद्धजनोसह चित्तमां नित्ये च्हाये छे, दिनमणि सरखां दर्श आपनां दुःखटाळण देखाये छे; मकवाणा कुळना मंडनसणि द्विज सुरिसना दुःख हरी, नविन वर्षमां अमर नविन सुख अनुभवजो आनंद धरी. तरुतनशीन थया पछी तुर्तज वरुत बुलंद गणाया छो. जनपतिना मंडळमां जाहिर प्रशंसनीय जणाया छो: चन्द्रवद्नथी सुधा वचनना झरण सदा सुखभरण झरी, नविन वरषमां असर नविन सुख अनुभवजो आनंद धरी. प्रजापाळ वृत्त पाळनार छो टाळनार छो सघळा तंत. गाळनार छो दिन गम्मतमां खरी हृदयमां राखी खंत; विस्तार्थों यश दिगन्तसुधी विजय लक्ष्मीने वीर वरी, नविन वरषमां अमर नविन सुख अनुभवजो आनंद धरी. माळी माफक राज्यवागने शाणा नित्य सुधारो छो, पाळी कुळनुं विरद प्रतापी ठीक हृदयने ठारो छो; शूळ उपावी शठना उरमां नीचोने निर्मूळ करी, नविन वरषमां अमर नविन सुख अनुभवजो आनंद धरी. वऋपुरीना शक सलुणा, पृथ्वीमां पंकाया छो, सुखवैभवथी आ दुनियामां इन्द्रतुल्य अंकाया छो;

जे छळ कपट करे तेना तन उपर फेरवी तीव छरी, नवीन वरषमां असर नविन सुख अनुभवजो आनंद धरी. उत्तम कृतिथी आप थया छो केशवनी करणाना पात्र, इच्छे छे शुभ सदा आपनुं पूर्णप्रेमधी प्राणी मात्र; दया दान आदिमां दाखवी विविध वीरता फरी फरी, नविन वरषमां अमर नविन सुख अनुभवजो आनंद धरी, वंदनीय कृत्यो करनारां पुष्पकुंवरवा पटराणी, अहनिश श्री युवराज प्रतापनी विनोददायक छे वाणी; कवि कोविदनां कष्ट नष्ट करीं भीति श्रष्टने हृदयभरी, नदिन वरषमां अमर नविन सुख अनुभवजो आनंद धरी. प्रतिदिन प्रौढ सुप्रीति प्रजानी महद नीतिथी मेळवी छे, किन नथुराम बळी रैय्यतने किलत रीतिथी केळवी छे; नित्य आपनो प्रताप निरखी अस्त पामजो अखिल अरि; नविन वरषमां अमर नविन सुख अनुभवजो आनंद धरी. सालगिरा.

आजे अमित आनंदप्रद एकादशी अभिराम छे, यह सुखभरण यहवार गरवो, स्नेहीने सुखधाम छे;

विळ पोप मास पवित्र भासे चारुता नभचन्द्रनी;

सुखरुप सालगिरा विराजे श्री अमर नरइन्द्रनी. विश्वे विशेष विनोदमय आ वक्रपुर वरताय छे,

आशीर्वचन उचारता कविकोविदो गुण गाय छे;

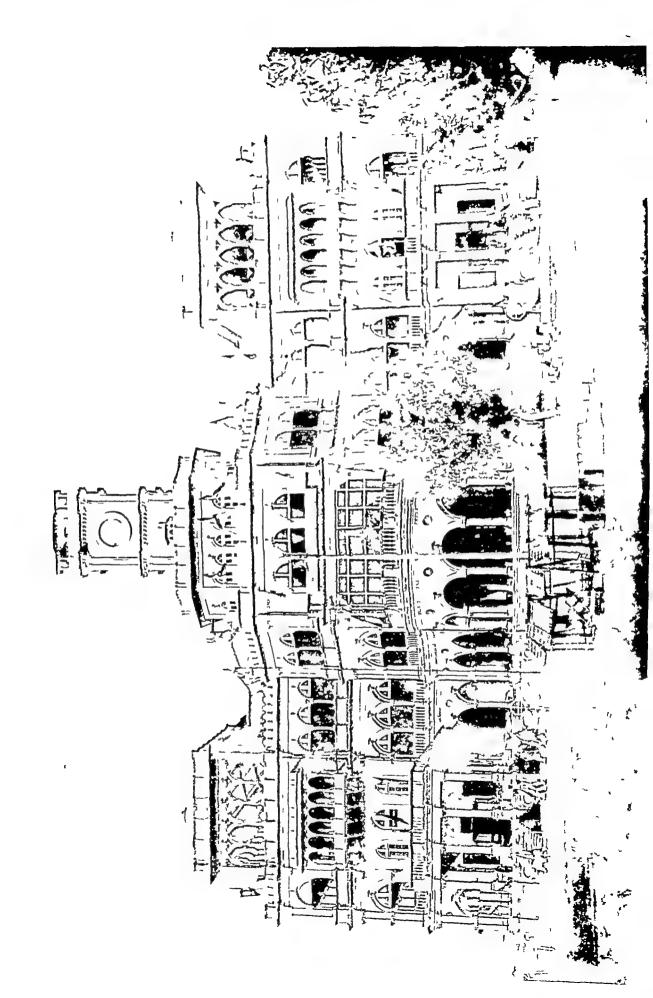
दीपे विजय देनार वाणी विष्रकेरा वृन्दनी,

सुखरूप सालगिरा विराजे श्री अमर नरइन्द्रनी.

आनंददायक आजनो उत्सव महद उर धारी आ,

परिजन सहित सहु स्नेहीओ अति प्रेम घारी पधारीआ; पुरजन प्रवल उत्साहथी संतुष्ट विन साचे मने, आशीश अगणित अरपतां झलराणमणिग्रणगेहने. मर्मज्ञ महिपति धर्मना धींगी ध्वजा करमां धरी, हरी हानिओ हितुजनतणी मंडार शुभ यशना भरी; करी अवन उत्तमनुं अहर्निश दुष्टना दलने दहो, ध्रुवसम सदा धरणीपरें श्रीअमरनृप अविचल रहो. वनीं मुकुटमणि महिपालना मखवान अति अभिरामजो, प्रतिदिन प्रतापकुमार सहित अपार आयुप पामजो; आशिश नवल नद्यरामकेरी लक्षविधि वैभव लहो, ध्रुवसम सदा धरणीपरें श्रीअमरनृप अविचल रहो.

मान महान महानथी मेळवी अयणी उत्तममां वनी राजो, वारण वैरीमहीं बनी व्याघगुणीनृप गाढ ध्वनि करी गाजो; नेह धरी नयुराम कहे भळ भूपित मंडलमां अति भावो, सालगिरा सुखरूप अनंत वडे विभवे अमरेश वितावो. प्रेम-पीयूष प्रजाजनने पृथिवीपर पाइ करो अजरामर, आप बनी अमरेश अहोनिश उत्तम राज करो अम उपर; श्रीयुवराज जयंत समेत लीयो नयुराम कहे ग्राभ नहावो, सालगिरा सुखरूप अनंत वडे विभवे अमरेश वितावो. वासवतुल्य विहार करी जगवी जगमां जबरा जयकारो, भाव धरी उर भूसुरना सुखदायक आशीरवाद स्वीकारो; प्रेम करी परमारथथी नथुराम कहे क्षितिमां यश छावो, सालगिरा सुखरूप अनंत वडे विभवे अमरेश वितावो.



-16



छे न अरि हजी आ अविनमहीं उद्भव ना अरिनो फरी थाशे, श्रीझलराण अजातअरि कही आपतणा गुणीओ गुण गाशे; कोड धरी नयुराम कहे वह वाद्य सदा जयनां वगडावो, सालगिरा सुखरूप अनंत वडे विभवे अमरेश वितावो. याग करो अनुराग धरी वडभाग सदा सुरवृन्द रीझावो, हर्ष धरी घृत होमी अपार सुगंध सहु जगमां सरसावो; कीरितगंग प्रीते प्रकटी नयुराम कहे हितुने न्हवरावो, सालगिरा सुखरूप अनंत वडे विभवे अमरेश वितावो. राजी रहो रसवंत हमेश सुराजि रितकनी आगळ राखी, शिक्त सदाय सहाय करे परिपूरण अमृत दृष्टिथी दाखी; आशिष ए नयुरामतणी मुदमंगळनी नित्य धूम मचावो, सालगिरा सुखरूप अनंत वडे विभवे अमरेश वितावो.

थोडा दिवस पछी मयूरभंज स्टेटना मानीता मिजमानो रवाना थया अने आपश्रीए इंबरीवाना छयनी तैयारीओ कराववा मांडी; बरातने तेमज अन्य राज्योना परोणाओने उतारा आपवा माटे स्टेटनां समग्र मकानोने दुरस्त करावी म्होटा वगीचावाळा वंगलामां केटलोएक भाग वथारवामां आव्यो, अने अमरविलास सामे तैयार करावेली म्होटी महेलात नुं ता २-१२-१९१६ ना रोज विधिपुरः सर वास्तु करावी तेने महाराजा जामश्री रणजीत-सिंहजी वहादुर साथेनी मित्रताने यावचंद्रदिवाकर याद राखवा खातर "रणजीतविलास ए एवं नाम आपवामां आव्यं; अने तेनी वाजुना वंगलामां पण सारो सुधारो वधारो करी तेने " खेंगारभुवन " एवं नाम आप्यं.

ता. १२-१२-१६ ना रोज आपश्रीए म्होटी धामधूमनी साथे दी. युवराज कुमारश्री मतापिसहजीने विद्याभ्यास करवा माटे राजकोट राजकुमार कॉलेजमां दाखल कर्या. कुशाग्र युद्धिवाला कुमारश्रीए गुजराजी भाषानुं जोइतुं ज्ञान मथमथीज मेळवेलुं होवाथी राजभाषा के जेनुं शिक्षण आजकाल वहुज जरुरनुं छे ते मेळववा अहींथी राजकोट पथारवा वखते लेशपण निरुत्साह मदिशत कर्यों निहः, निहतो एटली न्हानी जम्मरे गृहस्थनां वालको पण माता-पिताथी द्र रही न शके तो पछी राजकुमारो तो शी रीतेज रहे, परंतु "सिंहनां बालक पण सिंहज होय छे" ए न्याये क्षात्रकुमारो विद्या जेवो उत्तमखजानो मेळववा मातपिताना वियो-

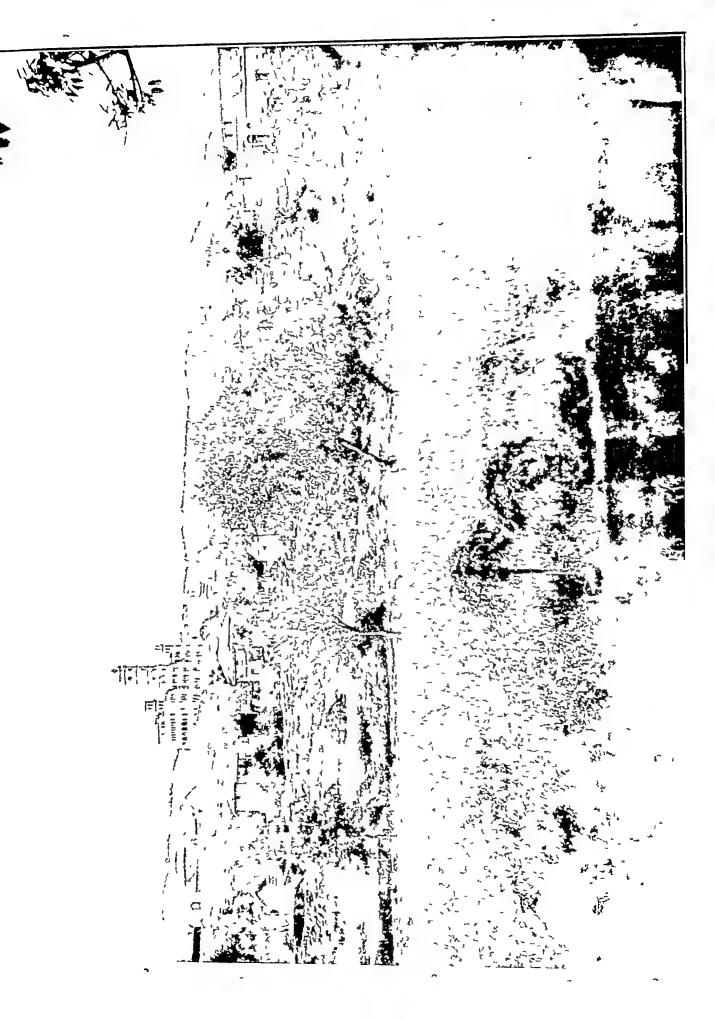
गथी विद्वल वनेज निह, दिवसे दिवसे कुमारश्री अभ्यासमां आगळ वधवा लाग्या अने आज्ञा छे के हजुपण तेओ उत्तम प्रकारनुं ज्ञान प्राप्त करी आपश्रीनी माफक बुद्धि तेमज वल्मां सर्वी-त्कृष्ट वनी दीर्घायु भोगववा समर्थ थाय एवी परमकृपाळ परमात्मा प्रत्ये मारी सतत प्रार्थना छे.

सने १९१७ ना माहे जान्युआरीनी ता. २७ मीए डी. कुंवरीश्री तस्तकुंवरवासाहेवनां लग्ननो दिवस निश्चित करेलो होवाथी मयूरभंज स्टेटना नामटार महाराजा पूर्णचन्द्रभंजदेवजी म्होटी वरातसहित हथेवाळे परणवा पथार्या, उक्त दिवसे वांकानेर नोवत, नगारां, शरणाइ, तथा वॅन्डना मधुर अवाजपूर्वक महिलाओना मांगलिक गीतथी गाजी रहाँ हतं, वरातने म्हाटा बगीचावाळा बंगळामां उतारो आपवामां आव्यो अने खानपान वगेरेना उत्तम प्रवंधयी इष्ट-जनो अत्यंत संतुष्ट थयाः रात्रीए विधिपुरः सर लग्नक्रिया करवामां आवी, आपश्रीनी कार-कीर्दीमां उक्त लग्न प्रथमनुं होवाथी याचको वगेरेने सारी रीते संतोपवामां आव्या, आकाशमां मेघराजे अने भूमिपर आपे दाननी एवी तो रेलमछेल करी मुकी के ए वखते शान्ति अने आनंद सिवाय बीजुं कंइपण जोवामां आच्युं नहि. श्रांगश्राना नामटार महाराजा राजसाहेव श्री घनश्यामसिंहजी वहादुर, राजकोटना नामदार टाकोरसाहेव श्री लाखाजीराज वहादुर, वढवाण तथा लाठीना नामदार ठाकोर साहेबो, पोरवंदरना नामटार महाराणा श्री नटवरसिंहजी साहेव वहादुर, शायपुरामेवाडना श्रीमान महाराज कुमार श्री उमेटसिंहजी साहेव, वळाना युवरानश्री गंभीरसिंहजी, गोंडलना युवराजश्री भोजराजजी नथा तेमनां राणीसाहेव अने ए उपरांत एजन्सीना न्हाना म्होटा अमलदारोए दी. कुंवरीसाहेवना लग्न प्रसंगे वांकानेर प्यारी शोभामां दृष्टि करी; जेनुं विस्तारपूर्वक वर्णन निम्न लिखित "श्री तख्तकुंवरी विवाहवर्णन" कान्यमां में प्रसिद्ध करेलं छे.

दोहा.

प्रथम बंदुं ग्रह प्रानके, पदपंकज सुखरूपः फिरि बंदों कर जोरिके, इश्वर चरन अन्प्र.

पितुकुल परम पवित्र, देव झलराना दाता; मातुल शूर शिशोद, पुहुमी पटपर प्रख्याता. जनक अमर अवतंस, अमर नरपाल अनूपम, गुलाबकुंवरीं मात शुद्ध सतीं सावित्री सम; ऐसें तख्तकुमारीके, वर विवाहकी रसभरी, करें काव्य नथुराम कवि, स्तेहसहित सारद स्मरी.



| • | | |
|---|--|--|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

दोहा.

सवंत् त्रय ऋषि निधिशशि, माघ मास मनोहारीः शुक्कपक्ष पंचमी शनी, परिनय तख्तकुमारी.

सबैया.

उत्तम ओसरके सुवलाहक, पूरवकी दिशि जोरसों जागे, मंगल गीतकी गर्जनसों, बढते प्रतिद्योस रहे रस पागे; पंडित बंदि मयूर पपीहकों, अर्पन हेत समें मुख मागे, बक्रपुरीमें बड़े नयुराम वो नेहके बुंदसों वर्षन लागे.

> आज बऋपुरमें अनोखी छिब छाय रही, गाय रही गोरी गीत मिलकें मृदंगसों. कवि नथुराम कहै पूर्न मुद पाय रही, हिय हुलसाय रही स्नेहिनके संगसों; अधिक अन्हाय रही स्नेह सरसीके मध्य, तख्तकुंवरीके परिनयके प्रसंगसों: मंगल जताय रही धीर तिज धाय रही. च्हाय रही चारु नित उरके उमंगसों. अवीर गुलाल और रोरीकी करोरी विधि, घूम रही गहरी घटायें आज घर घर; कवि नथुराम कहे भावसों भिजावे तन, सेवती गुलावके सुगंधी जल भर भर; अमर नरेश भोंन उत्सव विवाहहुको, श्न्द्रधनु रूपकों रँगोली रही धर धर; आज वऋपुरमें वसंत विच पावस है, विप्र केकी आशिश दे उंचे हाथ कर कर.

सवैया.

चांदिनसी चमकी रहि है अति, कान्ति कलित दिवार दराँकी, स्यों नथुराम सुराहनमें, भइ भीर सुवाहन और नरोंकी; नम्र समग्र निनादित नौतम, जाचक जुथ्थ रहे मग रोकी, षारी रहे गुनि तस्तकुमारीको वऋपुरीमें विवाह विलोकी.

कवित्त.

कंचन कलसहुसों मंडित मनोहर है, पंडित प्रशंसा करें कहांलों सुकाव्य कर; किव नथुराम कहें निधिको निवास जहां, समृद्धि सुरेशकी भरी है अति भावभर; जथके जहाज और नयके निवास रूप, बेठें रावराने जामें आसन उत्तंग पर; अमर नरेशके रसीले राजभोंन राजे, अधिकाधिक पायके विवाहको प्रसंग वर.

कवित्त•

मधुर मृदंग बाजै सरस सरंगी वाजै, चारु चंग बाजै बाजै आमित उपंग आज; किव नथुराम कहै कित कवाछैं गाजै गाढ ग्रिन लोगनकी कर स्वरसंग आज, सुभग श्रंगार सजी नर्तकी अनंत नाचै, राचै रावराने देखी अभिनय अंग आज, गानकी घटायें गेंरी तानकी छटायें छाजै, तख्तकुंवरीके परिनयको प्रसंग आज.

सवैया.

तख्तकुमारीं हुको लगनोत्सव दिव्य खुबी दुनिमें दरसावत, भावत खूब भलेजनकों, नथुराम सदा हितुकों हरसाबत;

लाबत लाभ करोरविधि अमरेशहुको छितिमें यश छावत, गावत श्री झलरानहुके गुन मंगल मोद महान मचावत. कवित्तः

> पूरन प्रमोदसों तमाम परिचारिकायें सहित श्रंगार देखें। विविध विळासभर; कवि नथुराम हरवख्त हितु लोग देखों, अंवर अमोल धर सुंदर सुवासभर; तख्तकुंवरी के परिनयको प्रसंग पाय, अमर नृपाल देखों हृदय हुलासभर; आयनेकी आवसों अनंत आफताब जैसें देखों भव्य राजभेांन परम प्रकाशभर रोशनीकी राजी वडे जोरसों विराजी रही, पाजी तमपुंजकों प्रजारी धूरिमें धरन; कवि नथुराम छुपिजात छपाधीश जरा, मुखकों वताय पाय अधिक अनादरन; अमर निवास पास जाहिर जरेह रहे, विद्युत् चिराग परिपूरन प्रभाभरनः तरुतकुंवरीको वकपुरमें विवाह आज, देखिवेकों आये मानो निशिमें दिवाकरन. मोतिनकी झालेरें झझुमी है जलूस भरी. जाहिर जरीके परदेसों छवि छाबत है; कवि नथुराम हांडी झूमर अनंत बिधि, फव्यो फरनीचरसों मन ललचावत है; तष्तकुंवरीको लग्न मंडप ललित अति, गौरव भर्यों है जहां गोरी गीत गावत है;

सीसेको समस्त काम ठयो ठाम ठाम यातें, एक के अनेक प्रतिविंवन वतावत है. पूरव वंगालतें अपूरव उमंग भर, चले कच्छवाहे ज्यें घटायें चले घनकी; किव नथुराम रंग वेरँगी वसन वारी, शोभत है श्रेनी संग शूरे सुभटनकी; वंदिनके वृन्द वडे विरद उचारे याकी, रचना बनी है मोर चातकीरवनकी; इन्द्रकी बरात जैसी आवत उमड आज, सुंदर बरात रामचन्द्रके सुवनकी.

इत है बराती उत पुष्प भाति भाति खिले, अम्रणी श्रीदाम इत उत रितकंत है. कि ने ने सुराम इत विध विध वाद्य वजे, उतं मधु मालिकाके रव रसवंत है. इत अगवानी करे अमर सहित सेन उत कीर कोकिलाको लक्कर लसंत है; इत देव असी पूर्णचन्द्रसिंह दुलहा है, उत बनबाटिकामें बनरा वसंत है.

सवैया.

बकपुरी बडभाग बनी, अनुराग भरे हिय खूब हुलासत, नेह बढे नथुराम निरन्तर अन्तर वाहिरके तम नासत; तारे समान तमाम वरानिन भव्य प्रभाभर वामिष भासत, आजे अपूरब आनंद है तिथि पंचमी पूरनचन्द्र प्रकासत. बारीपदा अरु बकपुरी, गिनवे लगे एकसी सज्जन सुंदर, अंतर अल्प लखात नहि, दिशि पूरव पिच्छमके उर अंदर जैसे मिले हिर ओ हर हेतसों, जैसे मिले कैलासर मंदर,
तैसे मिले नयुराम कहे झलरान कुशावह स्नेहसमंदर—
स्वानको पनकी मान महानको रोज निहारी सरासर राहत;
त्यों नथुराम निहारी के नौतम, श्री अमरेशको चोयनि चाहत;
मोजमजा मिजमानी बिलोको के, आनंदसागरमें अबगाहत;
बारीपदाकों विसारी वरातिन, वक्रपुरीकों समस्त सराहत.

हीरे के हजारो आभरनसों अलंकृत है, मोतिनकी मालायें अनंत प्रभाधारी धरः वसन जरीके निके अंग अंम ओपत है. स्रोगं सुमननकी धरी सुगंध वारी वर. कवि नथुराम बडभाग आवै ब्याहबेकों, रामचन्द्र सुवन सुगजकी सवारी करः उपमा अनोठी अबिलोक वेतें आवतहै. उदे भयो पूर्नचन्द मानो घटाकारीपर. सोंहर सिंधाये लग्नमंडपमें स्नेहधर. वरसनमानसों बराती बैठें पोरी आय; कवि नयुराम उमे पच्छके अमौले यन, गायवेकों लागी उमे पच्छनकी गोरी आय; झोरी ले युलालकी कुमारिकावें भोरी भोरी, डारी वे कों लागे वार वार दोरी दोरी आय, जनकपुरी सी जमावट भरी जोरदार, व्याहवेकों वैठे जब अमर किशोरी आय. पूज्य भावनासों वर विनय चढाय कर, मानसों बुलाये रामचन्द्रजुके नन्द्कों;

[३१०३]

सह युवराज धर आनंद अमंदकों;
विप्रन के वृन्द और सूरज अगनि हुको,
साखि राखि सहित समस्तश्रुति छन्दकों,
चांदनीसें तष्तकुंवरीकों वर वष्त पाय,
अपि देत अमर नृपाल पूर्नचन्दकों.
साजी साजी श्रेष्ट गजराज अक्वाजी दिये,
अप्नकी स्वनं साजी सुरिमनकी आवसव;
किव नथुराम कोटि कंचनके आभूषन,
हीरा लाल पन्ना मुक्तामिनसों जरावसव;
वस्त्र शस्त्र दासी दास बाहन विविध जाती,
दिये अमरेशने बढाय चित्तचाव सव;
सुज्ञताइ श्रेष्ठताइ मुख मधि मिष्टताइ,
तष्तकुंवरीकों अपें एते असवाव सव.

दोहा.

मात पिता मन है मुदित, द्वयकर धरोंके शीश; वर कन्याकों दे विविध, शुध उरसों आशीष.

सबैया•

बिझ बिदाकर संपति पाकर, चाहसों स्नेहिनके चित्त चोरी, नित्य रहो नथुराम सुखी वसुधा तलके सुविनोद बटोरी; पाय बिजे पुहुमीपर पूरन, मान विपच्छनके सब मोरी; रोज रसें भरीओ सुयशें भरीं, जीवों जुगोजुग सुंदर जोरी दोडा.

पूर्नचन्द्र अरु अमरके, अखिल कुटुंबकों ईशः प्रेम छेंम अरु हेमकी, बडी करो बकसीसः ता. २८-२-१७ ना रोज मुख्य कारभारी राव वहादुर नाथाभाइ अविचलदास देसाइए पोतानो चार्ज छोडतां आपश्रीए एक म्होटो द्रवार भरी तेमनी सेवानी कदर चुझी अने उक्त पद उपर ए वखतना डेप्युटी कारभारी श्रीयुत देवशंकर जयकृण्ण टवेने नियत कर्या तेमज तेमने राजरीति प्रमाणे पोशाक आप्यो.

सने १९१८ नी शरुआतमां नामदार ब्रीटीश सरकार तरफथी युद्धभूमिमां वजावेली हयुटी वदल आपश्राने महान मानसूचक "ऑनररी केप्टन" नो हुदो तथा अंगत वे तोपोनुं मान वधारी एकंदर अन्यार तोपनुं मान आपवामां आव्युः, तेमज कुमारश्री शिवसिंहजी के जेओ युद्धमां आपश्रीनी साथे पथार्या हता तेओने "ऑनररी सेकन्ड लेफटेनन्ट" नो हुदो बक्षवामां आव्यो, डॉक्टर गजानन झीणाभाइ माहीमतुरा एल, आर, सी, पीने पण "ऑनररी सेकन्ड लेफटेनन्ट" नो हुदो अने खवास चकु ने "नायक" ना हुद्दाथी निवान् जवामां आव्या पोताना महाराजाने आ रोतनुं उत्तम मान मळतां अत्यंत प्रसन्न थएली प्रजाए चार दिवसो जत्सवनी माफक उजव्या, पहेले दिवसे मानवंता नामटार वामा साहेब तरफथी श्री "रणजीन विलास" पेलेसमां चापार्टी आपवामां आवी, तेमां पुरुष वर्ग तथा स्त्रीवर्गं माटे भिन्न भिन्न गोठवण करवामां आवी हती, एज रीते वीजे दिवसे पण मानवंता मुळीवा साहेब तरफथी, त्रीजे दिवसे अमलदारो तरफथी अने चोथे दिवसे महाजन तरफथी चापार्टीना मेलावडाओ करवामां आव्या; तेमां आपश्रीए प्रजावर्गनी साथे खानपानमां भाग लइ राजाप्रजा वचेना गाढ पेमनुं प्रतिपादन करी आप्युं दरेक मेलावडामां उत्तम प्रकारनां खानपान अने गानताननी योजना करवामां आवी हती.

ता. २२-१-१८ वि. सं. १९७४ ना पोप शुदि ११ मंगलवारे आपश्रीना वर्षगांट महोत्सव प्रसंगे नामदार सरकार तरफथी मळेला माननी खुशालीमां आपश्रीए ब्राह्मणवेरो (ब्राह्मण पासेथी लेवातो कर), तेमज खेह्तो पासेथी वाही उपर लेवातो आवननोकर कायमने माटे माफ कर्यो, पांजरापोळमां सारी रकमनुं घास आपवा फरमाव्युं, केटलाएक निमकहलाल नोकरोना पगारमां वधारो कर्यों अने मोंगवारी सवव न्हाना पगारवालाओने पण अकेक रुपिओ वधारी आपवा फरमान कर्युं, त्यारवाद सर्व सभासदोने साकर वहेंचवामां आवी ए प्रसंगना आनंदमां भाग लेवा राजकोटना नेक नामदार टाकोर साहेवश्री लाखा-जीराज वहादुर तथा वळाना युवराज कुमारश्री गंभीरसिंहजी वगेरे पधार्या हता. अने में निम्नलिखित कवितामां आशीर्वाद आप्यो हतो.

सालगिरा•

कवित.

वंस हरपालके में जाके हर पालक है,

असो नरपालक विराजे वंकपुरको ॥
किव नयुराम जाको श्रेय करिवेके काज,
रहतहै अज आदि समुदाय सुरको ॥
कंसमें कुटिलपें कन्हैयासो कलानिधान,
धीरवर धरपें धरैया धर्मधुरको ॥
राज अमरेशकी जयंतिको प्रसंग पाइ,
कोन विध आनंद वताऊं आज उरको ॥
पोष महा निरदोष अर्ह, दिन पावन पूर्व इकादशीको है;
आनँदमें नथुराम सरूप, रमाधव उद्भव अष्टमीको है;
बंकपुरीमें चहेवलिवो सुर, तो फिर क्यों मनुजात न मोहे;
दीपक उत्सवीतें दुगुनी यह, सालगिरा अमरेशकी सोहे.

प्रीतसों पधारि यह मांगलिक ओसरपें, लाखाजी महीपने विनोदकों वढायो है।। कवि नधुराम भेट मंगलकी देवे काज, मंगलको योग देवने ही दिखलायों है।। मंगल प्रभातमें प्रसारिकें सुवर्नकर, भासमान आसमानमें प्रकाश पायो है।। सालगिरा उत्सवपें स्नेहीके समाज मध्य, राज अमरेश सुरपतिसो सुहायो है.

मंगलसूचक राजके राहपें, रंग दुरंगीध्वजा फहरानी; मंगल धाम लसे नथुराम, सुमंगल याम घरि ठहरानी; डोलतहें पुरबासी बिनोदमें, बोलत कोविदमंगल बानी; श्री अमरेशकी सालगिरा सबभांति विराजत मंगलसानी. युरोपिय युद्धमें बिशुद्ध छत्र पनवारे, अमर सिधारे उतसाह उर आनिकें। किव नथुराम पद केप्टनको ऑनररी,
दियो ज्योर्ज पंचमने कदर पिछानिकें ॥
अवके वरस वह मान कियो कायम त्यों,
विनयके नन्दनको विनय वखानिकें ॥
बक्रपुरके लिये दरजा देखि अवलको,
जावें वलिहारी हम राज उदे जानिको ॥
मंडन भूपतिमंडलके, जयपाओ सदानयसिंह दुलारे;
छाओ महा सुखसंपदसों, नथुराम प्रजाजनके अति प्यारे;
गाओ भली गुनगाथें निरंतर, श्रीमखवानहुकी गुनी सारे;
दिव्य दुनीके दिवाकरसे चिरजीव रहो अमरेश हमारे ॥
होहा

कुलपरिपाटीके उचित, काटि प्रजाके क्लेश; धरनीपें ध्रुवसे रहो, अचल राज अमरेश.



संगीतशास्त्री गगापतराव गोपाळराव वरवे कृत विविधविषयक ग्रंथ.

(1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) - (1) -

| 2000 - Contraction of the contra | | | | | |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--|--|--|
| नाम | किंमत. | नाम- | | | |
| १ योगदिवाकर. १ नादलहरी. ३ श्रुतिस्वर सिन्द्रान्त. ४ संगितनी महत्ता ५ गायनवादन पाठमाळा. ६ नवसंहिता. (सस्ता साहित्य माटे) ७ लिलतगीत विनोदिनी. ८ स्तरंगिणी. ९ गीतलहरी. १० स्त्रीगीतावली. (थाय हें) ११ गायनशास्त्र प्रवेशिका. १२ स्वर राग तरंगिणी. १३ राग सिन्द्रान्त केसरी. १४ हिंदुस्थानी संगीतनी सुधा अने उन्नतिनी विचारणा. १५ संगीतामृत. १६ विज्ञान मकरंद. १७ विश्व चमत्कार. १८ श्री गीतायोग गान के । श्रीगीता रहस्य रंजनी. | किंमत.
इ. १
इ. १
इ. ०।
इ. १।
इ. १।
इ. ०। | नामः २१ नैसर्गिक धमैस्वरुपः २२ अर्वाचीन सुधारणा अने अघोगतिः २३ गायनवाटन पाठमाळा पुस्तक २ः २४ ॐकार पट अथवा नादब्रह्म चक्रः गुजराती पत्रहारा प्रकाशितः २५ नजरे जोएलं जापानः २६ किलकाल अने महाभारतः २७ भारतवर्षिय संगीत शास्त्रना ग्रंथोः २८ चीननो प्रवासः गुजरात शाळापत्र द्वारा प्रकाशितः २९ जगतनी भिन्न भिन्न भाषाः ३० रंग विषे पाठः ३१ खरता ताराः गुजरात वर्ना क्युलर सोसाइटी द्वारा प्रकाशितः ३२ संगीतना सप्तस्वरः ३३ हिंदनी खनिज संपत्तिः | | | |
| १९ जीव ब्रह्म मीमांसाः
(लखेलां तैयार छे)
२० समावि स्वरुपः |) | ३४ अनादि काळथी चालती आवेली
प्राणिज सृष्टिः | | | |
| | | | | | |

गायन वादन कला अने शास्त्रतुं शहआतना अभ्यासीओने शिक्षकनी सहायता विना साचुं शिक्षण आपी शके एवं हिंदुस्थाननी कोइ पण भाषामां प्रथमथीज रचाएछं पुस्तक.

्रि_{विस्त} गायन वादन पाठमाला.

पोस्टेज. [.] ५. ०-=-०

मोटा करनां ८०० पानां, ४०० गायनो नोटेशन, साथे, ७६ कविओनां काव्यो २०० राहो, १५० रागदारीनां गायनो वाजींत्रोनी गाइडो, चित्रो अने ११ ग्रंथो एकज ग्रंथमां

तंबुरो, सितार, दिलस्वा, हारमोनियम, फिडल अने तवला ए छ वार्जीत्रोनी गाइहो तेमज—

नाद, स्वर, ताळ, वादनकळा, राग, छंद, वगेरे शास्त्रो, युरोपियन संगितनी माहिती, नोटेशन अने प्रत्यक्ष पयोगो उपरथी आ ग्रंथ रचवामां आवेस्रो से.

समग्र ग्रंथ शास्त्रविचार (थीअरी) अभ्यास (पेकटीस) अने संगीतो (सोंग्स) ए त्रण विभागमां वहेची नाखी तेमां दरेक विषय सुवोध रीते समजावेलो हे.

१ अक्षर छंदगान, २ मात्रा जातिगान, ३ पिंगल-गणेश, ४ गीत विनोट (पोप्युलर सोंग्स), ५ लिलतगीत विनोदिनी (स्त्री निपयक संगीतो) अने ६ गुजराती वांचन मालामांनी किवताओं मुं संगीतलेखन ए छ ग्रंथो आवी गया छे अने जेमां लगभग ४०० संगीतो सरगम, ताल, मात्रा, वगेरे (नोटेशन सहित आपेलां छे, हिदुस्थाननी कोइ पण भाषामां संगीतना व्यवहार अभ्यास माटे आ एकज खरो ग्रंथ छे.

नीचेने शिरनामे लखी पुस्तक मंगावी ल्यो. 🗹 गणपतराव गोपाळराव वावे.

(संगीतशास्त्री)

गायनशास्त्र शाळा—कालवादेवी, ग्रुंबइ.

る場合

સ્વ૰ જામનગણના સ્વર્ગસ્થ શજ્યકાંવે બાશેટ શ્યામજી જેસંગ, કૃત પુસ્તકો.

| | | | | કિંમત. રૂ. |
|-----------------|------------------------------|---|-----|------------|
| अन्योक्ति विलास | (હિન્દી ભાષામાં ટીકા સાથે) | • | • • | 0-0-5 |
| चपदेश वावनी. | (ગુજરાતી ડીકા સાથે) | • | | 0-8-0 |
| वैराग्य शतक. | (ગુજરાતી ટીકા સાથે) . | | | 0-6-0 |

સ્**વ∘ જામનગરના રાજ્યક**િવ કેશવલાલ શ્યામછ બારોટ કૃત્ત.

િક મત. રૂ.

(આ પુસ્તકમાં શુદ્ધ ગુજરાતી ભાષામાં લખાએલ જ્ઞાન, વૈરાગ્ય તથા સામાન્ય નીતિનાં વિવિધ પ્રકારના છંદા ગજલાે તેમજ

કેશવ કાવ્ય, ભાગ ૧

રાગામાં કાવ્યા ખનાવવામાં આવ્યાં છે.)

कठिण शब्दोनो कोष.

अकलित-जाणी न शकाय एव. श्वर्क-सूरज, श्राकडानुं वृत्त. श्रंक-खोळो, निशानी, श्रांकहो. श्रंकोल-वृत्त विशेष. श्रगम्या-गमन करवा योग्य नहि ते. श्रगर-वृत्त विशेष, खुशवोदार पदार्थ. श्रंगस्फुरण-शरीरनुं फरकनुं. अर्गला-आगळीयो. श्रंगार-श्रंगारा, धखधखता कोयला. श्रमिजीवी-सोनी, लुहार वगेरे कारीगरो. श्राप्तिमन्थ-श्ररणीनं झाड. श्रप्रज-वहिल वन्धु. श्वंगीठी-सगडी. श्रंगूर-द्राच श्रवर-चलायमान न थाय ए. घ्यचल-चलायमान न थाय ए, पर्वतः श्रर्चन-पूजा. श्रज-वकरो, कामदेव. श्रजकर्ण-वकराना कान. श्रजन-श्राजण, काळी गळीनुं झाड. श्रजनमा- जेने जनम धारण करवो पडतो नयी ते. सद्र.

श्रजर-वृद्धावस्था जेने प्राप्त थती नथी ते. श्रजरामर-वृद्धावस्था तथा मृत्यु रिहत, परमेश्वर. श्रजा-वकरी, शाळ श्रजीर-श्रांगणु, चोक. श्रजेय-न जीताय तेवुं श्रटन-मुसाफरी. श्रटाटृहास्य-खडखड हसवुं ते. श्रंड-शिखर, श्रंग. श्रंडीरक-पत्ति विशेप. श्रतशी-श्रळशी. श्रातिक्रमग्-उल्लंघन करवुं ते. म्रातिमुक्तक-वृत्त विशेष. श्रातिरिक्त-भित्र. श्रतीन्द्रय-ज्ञानइन्द्रियोथी श्रगोचर. श्रतल-जेनी तुलना न थाय तेवं, घगुंज. श्रत्युल्वण-वहु जाडा. **अदन–खा**वुं. श्रद्वितीय-जेनो हरीफ कोइ नथी ए. श्रदेव-राज्ञस. श्रदृश्य-देखाय नहि ते. श्रधर-नीचलो होठ, पाताल, श्रधम. श्रधःपुष्पी—गोजिह्ना. श्रधोगति-खराव हालत. अधिवासन-यज्ञ शरु कर्या पहेलां मृर्तिनी प्रतिष्ठा करवी ते. श्राधिदैव-सौथी मोटा देव. श्रिधिष्ठाता-प्रमुखपदे विराजता देव. श्रधोद्वार-नीचलुं वारणं. श्चाध्यत्त-उपरी. श्रध्यर्ध-दोहः अध्याय-प्रकर्ण. श्रनंग-कामदेव, पंचवाण, श्रनन्य-श्राभित्र.

श्रनमीपर्ग-स्वतंत्रपर्गे.

श्रनवस्थिति-श्रास्थिरता, दुराचरण.

श्रनल-श्रग्नि

श्रनादि—जेनी शरुश्रातज होय नहि ते. श्रनायासे—विना प्रयत्ते.

श्रनार–दाडमनुं वृत्त, दाहम.

श्रानेल-पवन.

श्रनुकम्पा-द्या.

श्रनुकीर्ण-फेलाएला.

श्रनुप्रह-उपकार, कृपा, महेरवानी.

श्रनुज-न्हानो भाई, लघु बन्धु.

श्रनुजीवी-नोकर.

श्रमुद्ति-उदय पामेल नहि तेवं

श्रतुदिन-श्रहर्निश, हमेशां

श्रनुद्दन्द्द-उपरथी नहि खेंचाएला.

श्रनुनाद-ध्वनि, पहघो.

श्रनुभूत-श्रनुभवेलुं.

अनुमात-अनुमोदन, टेको.

श्रनुरक्त-प्रीतिवाळुं

श्रनुराग-प्रीति.

श्रनुरुप-ना जेवुं.

श्चनुत्तेपन-चदनादि सुगंधि शरीरे चोपडवी ते.

श्रनुलोम--न्यवस्थापूर्वक, नियमित.

श्रमुवाक -वेदनो एक भाग, रुग्वेद श्रथवा

यजुर्वेद संहिता.

श्रतुष्टान-होम, जप, हवन वगेरे विधिपूर्वक कर्ममां प्रवृत्त थतुं ते.

श्चनूक-पूर्वजन्म, शील, स्वभाव.

श्चपस्मार-व्याधि विशेष.

श्रपूप-पूडला.

श्रपेत्ता-श्राशा इच्छा.

श्रवीर-श्रवील.

श्राभिनिवेश-कूटवुं ते.

श्रमोघ-कदापि व्यर्थ न जाय एवं, सफल.

श्रमानुषीय-दैवी

श्चंवर-श्चाकाश.

श्रयाल-केशवाळी.

श्रर-श्रारो.

श्ररविन्द-कमळ.

श्रारिष्ठ-श्रारिठां, श्रारिठांनुं वृत्त, मरण्चिन्ह.

श्ररण-लाल.

श्रलात-वळतुं लाकडुं

श्रालिन्द-श्रोटलो.

श्रल्पसर-तलावडी.

श्रवन-रत्तरा

श्रवाल-हार, समुदाय.

श्रव्यक्त-समजाय नहि ते, विष्णु, महादेव,

श्रात्मा.

अविशय-वाकी रहेल.

श्रमहा-सहन न थइ शके ते.

श्रंस-खंभो

असौम्य-दुष्ट प्रकृतिवाळो.

श्रस्वालित-टपके नहि ते

अशानि-वज्र, वीजळी.

म्रास्थि-हाडका.

अश्मक-देश विशेष. दिस्तिण्मा आ देश छे.

श्रश्ववारो-घोडेस्वार.

अश्मंतक -श्रापटानुं झाह.

अश्वकर्ण-सालनुं माड, सर्जवृत्त.

श्राकर-खाग्र.

श्राकुंचित-उपरथी संकोचाएलुं.

श्राऋंदन-रडवुं ते.

श्राख्यायिका वास्तविक अथवा कल्पित कथा.

आगम-वेद श्रुति

श्चागामी-भविष्यना

श्रांगिक-श्रग सवंवी शरीर संबधी

आग्निध्र-होम करवातुं स्थळ.

श्राग्नेयी-श्रग्नि दिशा

श्राघात-फटको. घा.

श्राच्छादन–ढांकण. श्राच्छादित-ढांकेलं. श्राजीविका-नोकरी, धंधो, श्रादर-मान, श्रादिख-सूर्यनारायण, फलादेश कहेनार. श्राटविक-वनमां रहेवावाळा. श्राहबर-शोभा, ष्यादक-दाणा भरवातु माप छे. घातप-सूर्यनो तडको, सूर्य, श्रातपत्र-छत्री. श्राताम्र-त्रांवा जेवुं लाल, श्रातिथ्य-मेमानागरी. श्रात्मजा-दीकरी. श्रात्मऋाघा-पोताना वखाए करवा ते. आन्तरित्त-पृथ्वी श्रने श्राकाश वच्चेनुं श्रदृश्य. ञ्चादेश-हुकम. श्राधिपत्य-श्रधिपतिपग्रु. श्रानक-एक जातनो ढोल. श्चाप-जळ. श्रापगा-नदी. श्रापत्ति-दुख. श्रापद्-श्रापत्ति. श्रापस-परस्पर, श्राप्तोपदेश-सगां सवंधीनी शिखामण. श्राप्तजन-सगांव्हालां. श्राभा-तेज, शोभा, श्राभादार-तेजदार. श्रामदानी-कमाणी. श्रामत्रण-तेडु. श्राम्र-श्रावो.

श्रामाराय-श्रामस्यान.

श्रायाम-विस्तार.

श्रायुध–हथिश्रार.

ŧ

ष्ट्रायुर्वेद-वैदकशास्त्र. श्रायुदीय-श्रायुष्य श्रापे एवं. श्रालय-घर मंदिर. श्रालाप-श्रवाज. श्रावरण-विघ्न, श्रडचण, श्रावाहन-पूजा वखते देवने बोलाववा ते श्रावेश-काम क्रोध वगेरेनो जुस्सो श्राववो ते श्राशय–हेत श्राश्वासन-वचनो वडे घीरज श्रापवी ते आश्रतोष शीघ्र प्रसन्न याय एवा शंकर श्रासन्न-प्राप्त श्रासक्त-तल्लीन श्रास्कोटित-हाथ ठोकवाथी थतो श्रवाज श्रास्फोत-वृत्त विशेष श्रासव-श्रक, मद्य श्राह्मादकारक-न्र्यानद् आपे एवं इंगित-संज्ञा, इच्छा, चेष्टित इगुर-वृत्त्विशेष इन्दिरा-लच्मी, कमला इन्दु-चंद्र, वृत्त्विशेष इन्द्रगोप-गोकळगाय इन्द्रजाल-गारुडविद्या इन्द्रतरु-श्रर्जुन साद्दी इन्द्रध्वज-भादरवा शुद १२ ने दिवसे चढावेल वावटो इन्धन-लाकडां, बळतण इभ-हाथी ईषा-इंस इप्टि-यज्ञ, होम इत्तरा-जोव ते इच्च-शेरडी इच्चरस-शेरडीनो रस उस-प्रागळ कहेवामां आवेलं

खम-क्रोधी, विशाळ उच्छिष्ट-एठुं, अजीठुं उच्छेदन-कापी नांखवुं ते उडुगण-तारानो समुदाय उत्कट-मदोन्मत्त, श्रद्दंकारी उत्कृष्ट-उत्तम उत्कोश-कुरर पत्ती. रडवुं ते उत्पल-नीलकमल उत्पात-धरतीकंप के उल्कापात थवाना चिह्न देखाय ते

उत्तराभिमुख-उत्तर दिशा तरफ मुख राखीने उत्तरीय-श्रगवस्त्र उत्तुंग-घर्णो उंचो उत्सादन-नाश उदय-घगुं उंचुं, भयंकर उदारधी-मोटा मनवाळो **जन्दिर-उंदर** उद्दीपन-प्रकाश करवो ते **उदुम्बर—उंबरो** उद्देग-भय, शोक **उद्भट—उत्तम** उद्यान-वाग, बगीचो उद्वाद-विवाह उन्नत—उंचुं उन्मत्त-मद्मस्त, गांडो उन्मार्गगामी-खराब चालवाळो उन्मान-वजन उन्माद-गाडापणुं उन्मीलन-नेत्र के पुष्पतुं उघडवुं उपकरण-साधन, हथित्रार उपचार-सेवा, पूजा, हथिश्रार

उपघात-नाश, श्रपमान, फटको

उपद्रव–दुःख, पीडा

उपधान-उच्छीर्पक, श्रोशीक्रं उपनिपद्-वेदनो एक भाग उपभोग-माण्वुं ते, सभोग, घ्रंगसुख **उपल-रेती, कांकरा, वरफना दुकडा** ऊपलव्धि-प्राप्ति, मेळववुं ते उपस्थ-शिष्तु, जननेन्द्रिय उपस्कर-साधन उपादान-हेतु उपान्त-छेडो उपासना-पूजा, सेवा जमापति−शंकर उल्लूखल-खाडणीयो, खांडणी उशीर-वाळो बष्ट्र–उट उष्मा-गरमी ऊर्ण-उननां ऋचा-ऋग्वेदना मंत्रो ऋण-देगु ऋतुराज-वसंत ऋजुत्व-सरलता एक्सुक-एक टंक भोजन करनार एकायिचत-एक विषयमां जेनुं वित्त चोंटयुं होय ते

एडकप्रस्त—मेंडो प्रहण करेलो होय ते एव—कलंक एरंड—एरडानुं माड ऐश्वर्य—प्रताप, प्रभुता, इश्वरनी शाकि ऐश्वर्यवान समृद्धिवाळो, प्रतापी श्रोज—तेज, प्रकाश श्रोषधिश्रो—दवाश्रो कंकर—पाणो, काकरो ककुभ—श्रर्जुन, सादडो ककुभवट-श्रर्जुन फंघी-कांसकी कच-श्रंवोडो कंचनी-वारागना, नायका कच्छप-काचवो कंचुकी-चोळी कचूर-सुगन्धी कन्दविशेष कंज -कमळ कवच-वखतर फटक-लश्कर कंटक-कांटो कंटकारीका-रींगणीनुं माड. फटाच-अपांग दरीन, आंखथी सूचववुं ते कदि-केड कटिवद्ध-तत्पर, तैयार कट्ट-कडवा कटोरास्त्रो-प्याला कठाय-मोढे कर्णिकार-पारींगानुं माड फगोर-वृत्तविशेष कदली-केळनु काड कदलीकाड-केळनी डाळ कदव-वृत्ताविशेष फंद-शाक कदरा-गुफा कंदूक-दडो फर्दमालिप्त-काद्वथी लींपाएलं कनीनिका-कनिप्रिका कपाल-कपाळ कपि-वादरो कपित्थ-कळथीनु माड कर्पिजल-चातकपत्ती कपिशीर्प-कांगरा

कपोत-पारेवं कपोतपालि-कवूतरखानुं, काष्टनां सिंह्मुख कबाडी-कजीयाखोर कबन्ध-मस्तक विनानुं शरीर कर्बुर-काबरचित्रो, श्रवलख कंबु~शंख कमठ-काचवो कमनीय-मोह पमाडे एवं कमलनयनी-कमळ जेवी आंखोवाळी खी कमलपूजा-मस्तक कापीने पूजामां चढाववुं ते कमलाकान्त-विष्णु कर-हाथ, किरण करतल-हथेळी कर्दमलिप्त-गाराथी खरडाएल कर्णिकार-पारीगानं काड करवाल-तलवार करामात-युक्ति, कळा करार-कवूलात, निरांत कराल–भयंकर करायिका-बकपत्तीनी स्त्री करिवर-श्रेष्ट हाथी करिणी-हाथणी करिवृन्द -हाथीत्रोनु टोळुं करीर-केरडानुं भाड कलगी-छोगुं, फूमकुं कलधौत-सोनु रुपु वगेरे धातुनी वनावेली चीज कलहिंपया -मेनापची, क्लेशी कलानिधि-चंद्र कलापी-मोर कलावंत-गायक कलिकाञ्चो-कळीञ्चो कलिंग-देश विशेष कलुप-काद्ववाळुं, गंदु

Ţ

कलेवर-देह, शरीर कल्क-विष्णुनो दशमो घ्यवतार, पाप, गर्व, कीचड कल्माष-पीत, श्वेत श्रने काळा रंगथी मिश्रित कवल-कोळीश्रो कळाकोविद-विद्वान् , पंडित, कळामां कुशळ कत्ता-काख काकेन्दु-काकरेंभुरणी काकोदम्बरिका-काळो उबरो कांचनवृत्त-सप्तपर्ण, सातपडो काच्छिक-काछीत्रो, शाक वेचनार कान्ति-शोभा, प्रभा, सौन्दर्य कापालिक-शिवभक्त काम खाव्या-मार्या गया कामातुर-कामने वश थएल कारडव-कागडाना जेवुं पत्ती काय-काया, शरीर कारुक-कारीगर कारोवार-कारभार, वहीवट कालपुरुष-ज्योतिःशास्त्र कालकुट-समुद्र मन्थन करती वखते झेर नी-कळयुं ते काव्यकोविद-काव्यमां कुराळ काश-दाभडो काशाय-त्रांवा जेवो रंग काश्मरी-शिवणीतुं माड कास-उधरस किन्नरो-कूबेरना दूतो किलकारी-तीणी वूम, चीस, चिंचीयारी किसलयो-कुंपळां किंशक-केसुडांनुं भाड कीचक-कादव, पोलो वांस कीट-कीडो कीर-पोपट, काश्मीरदेशनुं नाम छे

कुकुट-कुकढो कंचित-वांको कुजर-हाथी कुटिल-खराय, दुराचारी क़टि-श्रोरडी कुतृहल-नवाइ, श्राश्चर्य कुन्त-भाला कुठार-कुहाडी कुत्सित-खराव, निन्दनीय क्रन्दन-सोनं क्रन्द-डोलर कुन्दर-देवदार युच्चनो निर्यास क़देश-खराव देश क्रपथ्य-शरीरमां रोग उत्पन्न करे तेवा पदार्थी क्रपात्र—खराव माणस कुंभी-घडो कुमकुम-कंकु कुमकुमाश्री-चादलाश्री क्रमार्गी-खराव मार्गे चालनार कुरर-प्यावडी कुरवक-रातो कोरेटो कुलदीपक-कुळने उन्नतिमां लावनार कुर्विद-वणकर, तंतुवाय कुष्ठ-वनस्पति विशेष. कोढ,कोठा कुसुमायुद्ध-कामदेव कुहुक–कोकिलपची कुहर-छिद्र कुठ-कुंठित यइ गएल, मंदमाति क्रिक्स्थ-काखमां रहेल कूजन-पिच विशेष कूटपुरी-करायिका, वगली कूप-कूवो कूर्म-काचबो

कृकलास-सरट, काकीडो कृकाटिका-घाटी, कठ कृतकृत्य-पुण्यना काम करवाथी जेनु जीवनुं सफळ थयुं छे ते

कृतज्ञता-निमकहलाली, वफादारी कृतन्नी-श्रनुपकारी कृतनिश्चय-द्रढ ठराव कृत्रिम-वनावटी

कृपण्-लोभी

कृपणता-लोभ

कृपाण-तलवार

कृमित्रो-कीहास्रो

कृपीवल-देडुत

कृष्ण-काळो

कृष्णश्याम-काळा छतां सुदर

कुश-दुवळो

केकी-मोर, मयूर

केकर-त्रासी श्राखवाळो, काणो

केदार-वद्रिकेदार नामनु स्थान, क्यारडो, चेत्र

केन्द्र-गोळनु मध्यविन्दु, वातनो मर्मभाग

केसरि-सिंह

केशमद्न-वाळमा तेल नाखवुं ते केशाकर्पण-वाळतुं खेंचावुं ते केवर्त-ढीमर, लुचो, कपटी

कोक-चकवा, चकवी, रितशास्त्र

कोटर-माळो

कोद्रव-कोदरा नामनुं धान्य

कोपीन-लगोटी

कोविद-विद्वान्

कोविदार-केरडांनु भाड

कोप्टक-कोठो

कोष्टागार-कोठार, श्रनाज भरवातुं घर कोशाध्यत्त-खजानानो उपरी, कुवेर

कौलिक-वर्णकर क्रूर प्रह-रवि श्रमे मगळ

भूर महन्ताम अग कवच–वखतर

खटक-काकरीनी पेठे रही रहीने खुंच्या करे ते

रूडकीद्वार-वारी

खर्ड-तरवार, कृपाण

खगुधारी-जेगो तरवार धारण करेली छे ते

खदिर-खेरनु भाड

खर-गधेडो

खवीस-ऋधोगतिने पामेलो पिशाच

खळ-दुष्ट, हरामखोर

खजन-पद्मी विशेप

खडवृष्टि-वरसादनां चूटां इवाया भापटां

खानिक-खाणमाथी नीकळता पदार्थो

खुर-खरी

खेटक-शिकार, ढाल

खेद-शोक, दिलगीरी

गज-हाथी

गद्गद् कठे-भराइ आवेला हृद्ये

गद्यात्मक-जेनुं लखाण गद्यमांज होय ते

गन्धर्व-स्वर्गना गवैयानी एक जात

गर्भस्राव-गर्भनुं पडी जवु

गम-समजग्

गम्या-संभोग करवा योग्य स्ती

गयंद-हाथी

गरुडवेगा-गरुडपद्यीना जेवा वेगवाळी

गलमन्थि-गळे गांठ होय छे ते

ग्लानि-शोक, खेद

गवली-गोवाळीस्रो

गवाच-गोखलो

गव्युति-वे कोश

गहन-न कळी शकाय एवुं

गहुं–घउं



गह्नरदुर्ग-गुफाश्रोनो किल्लो गात्र-शरीर, श्रंग गाथास्रो-कथास्रो, वार्तास्रो गांसची-पगना नाळा गाईपत्यादि - अभिहोत्रनो अप्रि वगेरे पाह-मोटी माछली, मत्स्य प्राह्य-प्रहुण करवा योग्य गिरिदुर्ग-पर्वतनो वनेलो किल्लो गिरिकार्शिका-वनमोगरो प्रीवा-डोक मीष्म-उन्हाळो गंजा-चणोठी गुडुची-गुळवेल नामनी वनस्पति गुण-फायदो, रज्ज गुप्त-छातुं, खानगी गुंमज-घुमट, घटाटोप गुल्फ-घुंटगा, घुंटी गुल्म-पेटमां गोळो चडे छे ते गुह-पहाडनुं पोलाण, कार्तिकेयस्वामी गुद्यांग-शिश्रु, उपस्थेन्द्रिय गुह्यवात-खानगी वात गूलर-उमरडानुं भाड गेंद-दहो गृहगोधिका-ढेडगरोळी गृहवाटिका - घररुपी वाडी गोकुळ-दश हजार गायोनुं टोळु गोद-खोळो गोनर्द-पतंजितमुनिनुं स्थान गोमय-छाए गोमुख-गायनुं मुख, गायना श्राकारनुं वाद्य गोमेदक-पुखराज, पीळा रंगनो हीरो गोरस-गायनुं दूध दहीं वंगरे रस

गोविषाण-गायनुं शींगङ गोप्र-गाय बांधवानी वाहो गोप्रि-संभाषण गी-गाय गौरव-मोटाइ, प्रतिष्ठा घट--घटो घटा-छाया, समूह घन-वादळं घनसार-कपूर घमसाग्-कापाकापी श्रती होत्र तेर्बु घोर युद्ध घुमंड-गर्व, ऋहंकार घृत-घी घोप-श्रवाज, गोवाळीयातुं रहेठाए। फुंपडा घारोन्द्रय-संघवानी इन्द्रिय, नासिका चक्र-पेंडुं, राज्य चक्रवाक-चक्रवाचक्रवी चिकत-आअर्थ पामेल, व्हावहं वनी गएल चंचु-चांच चटक-शोभा, फूलनी कळी उघडती वखते थतो

चंडा—दुष्ट स्त्री
चतुरंगिणी—हाथी घोडा रथ श्रने पायदळवाळुं सैन्य
चतुष्पद—चार पगवाळां जानवर
चतुष्पथ—चार रस्तावाळुं मकान
चन्द्रकान्त—चन्द्रना जेवी कान्तिवाळो
चन्द्रहास—तलवार
चपला—वीजळो, तलवार
चम्—सैन्य,
चर—राज्यदूत, वातमीदार
चरणारिवन्द—कमलना जेवा चरण
चय—संग्रह, ढगलो
चहल—कांप, कादव

चाटुकारक-प्रिय चाप-वारा चामर-वायु ढोळवानी चमरी चामीकर-सुवर्ग, सोतुं चारु-सुंदर, सुशोभित चाव-चावी, कुंची चाष-नीलकंठ पत्ती चिकित्सा-गुग्गदोष पारखवानी शाक्ति चिकार-हाथीत्रोनो आर्तनाद चिवुक-चावखो चूर्णक-चूरण, भूकी चित्राम-चित्रकाम चूलिका-चूलो चेटक-चाकर, दास चेदि-शिशुपालनो देश चेष्टा-ठठ्ठामरकरी, चाळा च्यवन-ऋषितुं नाम हो चोतरा-श्रोटा छत्रपति-राजा छन्र-छन्री छत्रा-मधुरिका छुदा-होंग, कपट, निमित्त छलता-कापट्य, दुष्टपरातुं छाग-वकरो छाडता-तजी देता द्याच-द्यापरं छिकर-एक जातना मृगनुं नाम छे छिपकली-गरोळी जंग-युद्ध जंगम-एक ठेकाणेथी वीजे ठेकाणे लइ जइ शकाय एवं जघा-साथळ

जर्जर-जीर्ग, छेक घरहुं

जन्नु-हाथ अने डोक जोडनार, हाडकुं जनक-वनावनार, मिथिलेश, पिता जनलोक-संसार जनाधिप-राजा जनुनी-जुस्सावाळो माण्स जपा-वनस्पति विशेष जंबुफल-जांबु जयंतिका-टोडी जया-वैजयंती, थोर ज्योतिर्गणो-सूर्य चंद्र विगेरे तेजोमय प्रहोना समुदाय ज्योतिरस-रत्न विशेष ज्योतिरोणे-सोळ ऋत्विजो जे यज्ञमां सोमव-क्षीतिर्षोम-सोळ ऋत्विजो जे यज्ञमां सोमव-

जनेता-मा जंबुक-शियाळ जंबीर-धोळो मरवो जर-पैसो जरा-घडपण जरायुज-मनुष्य श्राने पशु बगेरे प्राशी जलचर-पाणीमां चालनारां प्राणी जलद-वादळं जलादेशा-पश्चिम जलधर-वादळुं, सागर जलनत्त्र-पूर्वाषाढा, शतभिषक जलसुहूर्त-वारुण जलयंत्र-फ़हारो जलाशय-तळाव जव-धान्य विशेष जहाज-वावटो ज्वर-ताव व्वालायो-सळगता श्रमिनी शिखाश्रो जातिस्मर-पूर्वजन्मनी यादीवाळो

जानु—साधळ जामा-पहेरवानां घणा घेरवाळां कडीयां वगेरे जाल-जाळुं, समुदाय जाली–जुलम जाहक-विलाडो जीव-प्राण, पैसो जीवक-वृत्त विशेष जीवन-जीदगानी. जळ जीवनमुक्त-ब्रह्मज्ञानी जीवा-हरणदोडी नामनो वेलो ज्गुन्नी-झळहळी रहेली ज्योतिष्मति-मालकांकरण डमरु-वाद्य विशेष डोम्ब-नीच जातिनो मनुष्य तर्क-विचार तर्कतरंग-विचाररुपी मोजुं तक-छाश तगर-एक जातनी श्रीपधि तर्जना-तिरस्कार तर्जनी-श्रंगुठा पासेनी श्रांगळी तंत्रक-मारण, जारण, मोहन वगेरेनी एक विद्या जागानार

तंत्री-व्यवस्था करनार
तंत-हठ, ममत
तद्रुप-तन्मय, तेमां तल्लीन थइ जवुं ते
तनु-शरीर
तनुज-दीकरो
तपश्चर्या-वनमां रही तप आचरवु ते.
तपोधन-तपरुप धन जेनुं छे ते पुरुप
तम-श्रंधारं
तरंग-मोजुं, विचार
तरंगिणी-नदी
तरल-चंचळ

तलप्रन्थि—तलना जेवडी गांठ
तस्कर—चोर
त्वचा—चामडी
त्वरा—उतावळ
त्रस्त—त्रास पामेल, भयथी व्हावरो वनेल
तच्कर्भ—सुतारनं काम
तचा—सुतार
तांवृल—पानसोपारी वगेरे
तामस—उप्र, ताम्र, लाल
तारीफ—वलाण
तावदान—पालखी
त्रायमाण—रच्चण करनार
त्रिकालदर्शी—त्रणे कालनी वातो जाणनार,
त्रिकालक्

त्रिगुणात्मक-त्रणे गुणवाळुं त्रितंतु-त्रण तांतणा त्रिपुट-त्रणवाना, त्रण पट त्रियामा-रात्रि तिक्त-तीखा तिमिरवृत्त-वृत्त विशेष तिर्यक्-पेटे चालनारां प्राणी तिंदुक-टेंभुंरणीनुं झाड तिर्यगगत-श्राडा त्रिशूल-शिवजीनुं आयुध त्रिवता-श्वेत नसोत्तर तीर्थोटन-पवित्र स्थानमा फरवु तुफंग-तोप तुरग-घोडो तुरी-घोडो, श्रश्व तुर्य-चार, सर्व न्यापी ईश्वर तुर्यावस्था-श्रात्मानी चोथी श्रवस्था तुष–छोडां तुषार-छांटा, टीपां भाकळ तुष्टि-संतोष, रुप्ति त्ल-रु, उनेल अनाजनी छोड तृषातुर-तृषित, तरस्यो तोमर-छेक जातनुं इथिश्रार, भालुं तोषारखानं-तेज़री त्रंवक-त्रांसा, वाद्य विशेष ज्यवक-महादेव द्ग्ध-वळीगएलुं दंडपारुष्य-राज्यना सात प्रकारना शासनमानुं एक दंतली-न्हाना दात दंतोशळ-हाथीना बहार नीकळेला दांत द्ती-जपाळातु माड दर्दूर-दादर दृद्र-चामडीनो रोग द्दन्द्र-जोडुं, वे माण्सोनुं युद्ध द्धिवर्ण-द्धींना जेवो रंग दंपती-स्त्री पुरुपतुं जोडुं दम दिलासा-श्राश्वासन द्मकती-चमकती द्मन-निप्रह द्रगाइ-कवर द्रमायो-पगार दराज-मोटं दक्-श्रांख द्रव्यनमार-मिण्नु नाम छे दुष्टा-जोनार, श्रात्मा द्यार्द्र-द्याथी जेनु हृद्य पीगळेलुं हे ते द्यानिधि-द्यानो भंडार दल-पड, लश्कर द्वी-कडबी

दळता-नाश करता
द्विणायन-कर्क संक्रान्तिथी मकर संक्रान्ति
सुघीनो समय
द्विणावर्त-जमणी तरफ वळतुं होय ते
दात-विवाह प्रसंगे भाट चारणोने श्रपातां
इनाम
दादर-देडकां

दादुर–देडकां द्वादशी-बारस दाम-पैसा, रज्जु, दोरडुं दामिनी-रात्री दारा-स्री दारातिक्रमण-परस्री साथे व्यभिचार दारुण-उप्र, भयंकर द्रावित-पातळुं करेलुं दावाग्नि-वननो श्राग्नि द्वार-बारग्रां दाचिण्य-प्रमाणिकपणुं, सुजनता दिग्दाह-दिशास्त्रो एनी मेळे सळगती देखाय ते दिग्पाल-दिशानुं रत्त्रण करनार दिगंत-दिशास्त्रोना छेडा हिरागता-बमगापणुं द्विजराज-चंद्र, ब्राह्मण् द्विपट्टी-दुपट्टो, खेश दिनकर-सूर्य द्विरद-हाथी दिन्य-स्वर्गीय, श्रलौिकक दिवाचर-सूर्य दीर्घसूत्री-मुलतवी राखवानी टेववाळो दीपन-प्रदीप्त करवुं, श्राप्ति पेदा करवी ते दीपमालिका-दीपोत्सव, दीवानी रोशनी दुर्ग-किल्लो दुर्दिन-खराव दिवस

दुर्दशा-खराव दुशा

दुर्भग-कमनशीववाळो, श्रभागी दुर्भिच्-दुकाळ दुलकी-शरीर हलावीने गति करवी ते द्वी-एक जातनुं घास दुर्विद्ध-खराव रीते वीधाएलुं दुशाला-शाल दुष्कर-श्रघरं दुष्टात्मा-खराव माण्स दुःस्वप्त-खराव स्वप्त दूषगा-दोष, श्रपराध द्षित-अपराधमां आवेल द्यूत-जुगार देदीप्यमान–भळहळतुं देवपुर-श्रमरापुरी, इन्द्रापुरी देवप्रासाद-देवनो महेल देवर-धर्णानो न्हानोभाइ, देर देवांगना-देवतानी स्त्री, श्रप्सरा, परी देवाधिदेव-देवतास्रोनो देव, परमेश्वर देहेशत-वीक द्वैध-वैर, विरोध दैवजनित्-भाग्यवशात् दैवज्ञ-नशीवमां शुं शुं छे ते नाएानार दोलायमान-जेनी बुद्धि भमती होय ते दोपारोपण-कोइने माथे आळ चढाववुं ते दोहन-दोहवुं ते द्रोण-एक जातनुं माप छे दौहिन्र-दीकरीनो दीकरो धन्वी-धनुष्य धारण करनार धनु-धनुष्य धनुष्यकुन्त-मालुं धर्मधुरंधर-घणोज धर्मिष्ठ धर्मभ्रष्ट-धर्मना नियमो न पाळतो होय ते धर्मज्ञ-धर्मने जाएानार

धरणीपति-राजा धरा~पृथ्वी धव-धराी धवल-धोळं ध्वज-धजा, वावटो ध्वजापात-वावटानुं पढी जवुं ध्वनि-श्रवाज ध्वंस-नाश ध्वांच-गृह, घर, भूत, पिशाच घात्री-दूघ पानारी स्त्री धान्यक-एक जातनं श्रनाज धाम-घर धारणवृद्धि-तोलन करवानी राक्ति धिष्एया-उल्का ध्ररंधर-म्होटा, महान धुरा-धोंसरी, (राज्यनी) लगाम धूर्त-धूतारो धूम-धूमाडो धृलि-धृळ धूसर-धूसरित रग, वदामी रंग धृति-धीरज धेन-गाय नकुळ−नोळीयुं नक्तमाल-करंजानुं माड नगीना-जडाव दागीना नन्दातिथित्रो-पडवे, छठ, अने अगीत्रारस नामनी चर्ण तिथियो नप्तृक-चटक पत्ती, चकला. नरदुर्ग-माणसोनो किल्लो नरलोक-दुनिया, पृथ्वी नरेश-राजा नल-तृण विशेष

नलिनाच-कमळना जेवी आंखोवाळो

नलिनी-कुमुदिनी नवनीत-माखण नवमालिका-मालती नाभि-डुटी नाभिभाग-चक्र, पैडानो वचलो भाग नालिका-कमळनो समूह, कमळनू मूळीयुं नाव-होडी नासरन्ध्र-नसकोरुं नासिका-नाक नाहर-सिंह निकप-कसोटी निकदन-नाश निकास-पेदाश निकृष्ट-हलक् निकुज-क्रीडा करवाने वनावेल लता मंडप निगह-(वंधननी) वेडी निगम-वेद निप्रह-दमन, दावमां राखवुं ते निर्घन्ध-गाठ विनातुं निग्द-गुद्ध, छुपाएला निर्घात-आधात, फटको निचुल-कडवो लींवडो निच्ल-वीणा, श्राच्छादन वस्न निर्जन-उज्जड नितंब-केडनी पाछळनी भाग नित्यसत्र-सदावृत निदध्यास-जाणेली वस्तुनु इमेशां चिंतन करवुं ते निदान-कारण, निमित्त निधान-भडार निधिपाल-भडारनो रस्तक, कुवेर निर्धृम-धृमाडा रहित निपात-मृत्यु

निम्ब-लीवडो

निमग्न-तल्लीन निमज्जन-डुवकी मारवी ते निम्न-नीचुं निमीण-सर्जीत निमीलिका-नरमाळी नामनी श्रीपधिनुं नाम छे निमीस-मांस रहित नियत-निमीण करेल नियन्ता-सारथी, नियमन करनार, स्वामी निरंकुश-दाव वगरनुं निरखन-सारी पेठे तपासीने जोवुं ते निरंजन-श्रज्ञानरुपी श्रंधकार विनाना एवा परमात्सा

निरपेस-श्राशा विनान। निरवद्य-निंदवा योग्य नहीं निरवयव-जेना भाग न पडी शके ते निरालस्य-श्रालस विनानो निराहार-श्राहार विनानो भूख्यो निराकार-श्राकार रहित परमेश्वर निरामय-रोग विनान निरूपण-वर्णन करवू ते निरुपद्रव-पीडा विनातं निरुपाय-लाचार, उपाय रहित निरोध-श्रटकाव, प्रतिवंध निग्रन्थ-भिखारी निवाज-वन्नीस निवार-एक जातनं घान्य छे निवारण-श्रटकावव ते निर्वात-पवन रहित निर्विकार-विकार रहित एवा परमेश्वर निर्विप-झेर विनान निव्यंसनी-जेने कोइ जातनी कुटेव न होय ते निष्कंटक-काटा वगरनु, उपाधि विनानु निष्ठुर-कठोर वोलवावाळो माणस

निष्परिम्रह-कांइ मह्ण नथी करतो एवो वेरागी निषाद-राज्ञस निःसार-सार विनानु निसिद्ध-धर्मशास्त्रमां जे काम करवानी मना करेली होय ते

नीहार-वरफ नीप-कळंवानुं भाड, नील श्रशोक नीराजन-श्रारित नूतन-नवा नूपुर-पगमां पहेरवानुं श्राभूषण् नेक-सारुं, उत्तम नेति-श्रकळ, श्रनंत नेमी-यृत्त विशेष नेमिभाग-पैडानो घरावो नेश-भरवाडने वगडामां तेनां ढोर साथे रहे-वानी जगा, श्राण्वाळां दांत

वानी जगा, श्राण्वाळां दांव नैष्ठिक-श्रास्था पूवक ब्रह्मचर्य पाळनार नौका-लश्करी वहाण पक्व-पाकुं पंक-कादव

पंक्ति-हार पचगव्य-गायथी उप्तन्न थएल दूघ, दही, घी, मृतर, छाएा

म्तर, छाण
पंचशर-कामदेव
पचाग्नि-चारपास धुणी अने उपर सूर्यनो ताप
पचानन-सिंह
पटक-पछाडवुं ते, भीक
पटीर-चदन, श्रीषघ विशेष
पणव-वाद्य विशेष
पण्य-वाद्य विशेष
पर्णपुट-पाननो पडीयो
प्रत्याहार-चित्त वगेरे पांच इन्द्रियने खेवीने
स्यममा राखवी ते

पत-श्रावर

पतमार-पानखर ऋत पताका-वावटो पित-नीतिथी भ्रष्ट थएल, वंठेल पत्री-भाड, पत्ती पथ-रस्तो पथ्य-हितकारक पक्वाशय-उद्र, पेट पथिक-रस्ते चालनार पदगाख्य-कविताना रुपमां लखेली वार्ता पद्म-कमल पद्मजा–लच्मी पत्रगी-सर्पिगी पनस–फएसनुं भाड पपीहा-मोर पय:पान-द्घ पीवुं ते, धाववु ते पयाल-पराळ पयोनिधि-सागर पयोद-वादळं परचक्र-परराज्य, दुश्मन राजानो अमल परम-मोद्र पर्व-मांगलिक दिवस, भाग, प्रकरण परशु–कुहाडी पराग-पुष्परज, सुगंध परागपुंज-घणीज सुगंध पराभव-हार, नाश परास्त-फेंकेलो पलक-आंख वध थइ उघडे एटलो वखत पलाद-मांस पलाश—खाखरानुं काड परिक्रमण-प्रदक्तिणा फरवी ते परिकर-नोकर, चाकर वगेरे आश्रित परिजनो-परिवार, कुटुंव कवीलो इत्यादि परित्याग-सर्वनो त्याग करवो ते

परिताप-दुःख
परिताप-सतोष शान्ति ,
परिधान-वस्त्र
परिधान-वस्त्र
परिधान-वस्त्र
परिपाक-खूव पाकेलुं होय ते
परिमल-सुगध
परिरभण-म्रालिंगन करवुं ते
परिवर्तिन-चक्रना म्राकारनी पेठे गोळ फरनार
परिवेप-कुडाळु, चंद्र, सूर्यनी म्रासपास उडतो
गोळ प्रकाश

परिहास—मरकरी
परुषक—भोंयधामणीतु काड
परोत्त—पाछळथी
पर्यक—पत्नंग, शय्या
पवि—वज्ञ
पश्चक—चतुष्पद प्राणी, पासळी
पत्त्व्छेद—पाखनुं भागी जबु ते
पत्तान्तर्गत—पाखनी श्रंदर श्रावेल
पत्तम—पांख, पांपण
प्रकाशात्मक—श्रजवाळुं करवानो जेनो स्वभाव
छे एवुं

प्रकोष्ट-पोंचो
प्रचढ-उप्र
प्रजल्पन-बढवढाट करवो ते
प्रचुर-घराषु
प्रणव-श्रोंकार
प्रणव-श्रोंकार
प्रणवमय-श्रोंकार स्वरूप
प्रदेशिनी-श्रगुठा पासेनी श्रांगळी
प्रत्यचा-धनुपनी टोरी
प्रत्यावर्त-फरीने श्रावतु ते
प्रत्युपकार-सामो वदलो
प्रत्यालीढ-डादो पग पाद्यळ राखी जमगो पग
श्रागळ धरवो ते

पतंग-पतगीयो, सूर्य प्रतिध्वानि-पडघो प्रतिपदा-पडवे प्रतिपत्तित्रो-शत्रुत्रो, दुश्मनो प्रतिवंधक-श्रवरोध करनार प्रतिभानवान-कांतिवाळो, तेजस्वी प्रतिमा-मूर्ति प्रतिलोम-उलदु, जाति विरुद्ध, चांडाल प्रतिष्टा-श्रावर, कीर्ति प्रतिसहार-संज्ञेपमा आण्वं ते प्रतिहार-द्वारपाळ प्रतीति-विश्वास प्रतीकार-उपाय प्रवध-श्लोक वगेरेनी रचना प्रभजन-पवन प्रभा-कान्ति, तेज प्रमथ-शिवजीना गण्. घोडा प्रमत्त-मदोन्भत्त, मस्त प्रमादी-गाफल प्रमुक्त कंठे-लावे रागे, छूटा कंठे प्रस्टक-श्राति वधी गयेल होय ते प्रलय-सृष्टिनो नाश, महामारी प्रलंब-घणाज लोवा प्रवर्षण-वर्षा ऋत प्रवाल-परवाळा प्रयास-मुसाफरी करवी ते प्रशस्त-वखणाएल, प्रख्यात प्रशासा-वखाण, स्तुति प्रसृत-फृल, पुष्प प्रस्तुत-वर्णन करेल होय ते प्रस्वेद युक्त-परसेवावाळूं प्रचालन-धोव ते

प्रचेपण विधि-फेंकवानो विधि प्रार्थित-जेने श्ररज गुजारेल होय ते पाखर-सोना रुपानी बनावेली घोडा नाखवानी झूल.

पाखंड-होंग पांगळी-ल्ली, बुट्टी पाटल-लाल रंग, लोश्रतुं भाड पाठा-पहाडना मूळ नामनी वनस्पति पांडु-पांडवना पिता पांडुर-पीळो रंग पातकी-पापी, दुष्ट पाद्प-भाड पानकपणा-श्रमररस, गुड श्रावलवाणु वर्गरे पान्थ-पथिक, मुसाफर पापम्रह-शनि, राहु, केतु पापाचरण-पापकर्म करवु ते पायजामा-सुरवाल

पायसान्न-खीर, दूधपाक पायु-मूळ द्वार पारगामी-प्रविण हुशियार माणस पारंगत-पार पामेलो, विद्या परिपूर्ण भरोलो पाराधि-शिकारी पारावत-आरामानी कवृतर

पारिकर्म-कारागर पारितोषिक-इनाम श्रापवुं ते

पावक-श्रमि पावस-चोमासं

पांसुवृष्टि-धूळनो वरसाद

प्रादुर्भाव–देखाबु ते

प्राणाधान-गर्भ राखवो ते

प्रान्त-छेडो

प्रायश्चित-पापनु निवारण करवा मारु जे कर्म

प्रासाद-महेल प्रासादपृष्ट-श्रगाशी पिंगल-घुवड पन्ती, पीळु पिंगलिका-पद्मीनुं नाम छे पिटक-लाकडानी पेटी **पिड-शरीर**, मरवाळो विडिका-शरीरनो मासवाळो भाग पिंढार-पेंढीनुं भाड पिपासा-पाणी पीवानी इच्छा, तरम पिपीलिका-कीडी वियूप-अमृत, सुधा प्रियतमा-व्हाली स्त्री प्रियंवद-मीठु मीठु वोलनार पीन-जाडु, पुष्ट पीनस-रोगनु नाम छे पुज-ढगलो पुरवाहवाचन-विवाहादि शुभ कर्मोमा जे मंत्रो

वोलाय छे ते.

पुत्राग-कमळ, जायफळ पुरदुर-इद्र

पुरश्चरग्-कार्यसिद्धि करवा माटे स्त्रागळथी जे जप करवो ते.

पुरिप-मूत्र, विष्ठा आदि पुरोहित—गोर

पुलक-रुंबाडुं

पुलिन-किनारो

पूजनीय-पूजन करवा योग्य

पूर्वोक्त-आगळ कहेवाइ गएल

पृपत्-मूगनी एक जात छे

पेचिका-घूड पत्तीनी मादा

पेदल-पायदल, पगे चालनार

पेय-पीवा योग्य पदार्थी पेशकसी-खंडणी

प्रेचक-जोनार पोतकी-एक जातनु पत्ती पौर-शहरमा रहेनार प्रापित-परदेश गएल प्रौढ-पाकी उमरतु, वुद्धिमान प्यावा-परव प्लच्च-पीपळो प्रोथ-नाकनो वचलो माग प्रत्याहार-इद्रियद्मन प्राकार-किल्ला फणीधर-सर्प फागिनी-गोफग फरस-छोवध चोक फरास-पथारी पाथरवी, सामान गोठववी, दीवा करवा वगेरे जे काम करे छे ते चाकर

फलदार्या-फल श्रापनार फलादेश-फळनो हेतु फेन-फीएए फेंटपची-पचीनी जात छे वकस्थलो-बगला श्रादि पचीश्रो रहेवाने माटी-नो बेट श्रथवा टींबो होय छे.

वकुल-बोरसळीतु माड वदयो-खराव गंध वदरी-बोरडीतु माड वन्दी-चारणी वन्धमाल-तोरण वन्धुजीव-वपोरीयातु माड वरात-जान वरीनी-पापण वलाध्यच्च-सेनापति वहार-खुशवो विह्लोम-बहारना वाळ

व्रह्मनाडी-सुपुम्ना नाडी ब्रह्ममारी-ब्राह्मणोमा मरिएरप, श्रेष्ट-वहुशुत-घर्ण अवण करेल होय ते, विद्वान. वाजी-रमत, जींदगानी वानी-वाणी, चीज, वस्तु. वालचन्द्रमा-द्वितीयानी चन्द्र वाष्म-वराळ, श्रांस वाहु-हाथ बाहुयुद्ध-कुस्ती ब्राह्मी-सोमवेली विम्व-किरण, प्रकाश, छवि. विरद-पण, प्रतिज्ञा विल-दर, राफडो विद्यात-पथारी **बीजपुर–वीजोरा** वोन-वीगा वेरख-नगारु, डको अने मुंडावाळी आरवनी दकडी भग्नचित्त-निराश भद्रा-नागरमोथ भद्रासन-राजाने वेसवानुं श्रासन भयार्त-भयथी दुःखी भल्लातक-भिलामानु काड भववाध-संसाररूपी विव्र भप-कृतरो, भपक भाषपत्ती-गोठामानो कुकडो भाजन-पात्र, ठेकागु भाडिक-व्यापारनी माल भानु-सूर्य भारद्वाज-पद्मी विशेष, ऋषिनु नाम छे भार्या-स्त्री भागी-भारगी

भालचन्द्र-शिवजी

भिट्ट-एक प्रकारनो थर छे तेमा गोखलाओ ध्यावे छे जेमां मूर्तियो स्थापन कराय छे

भीर-वीकण भुजा हाथ भुवलोंक-पाताळ भूमंडल-पृथ्वीनो गोळो भूलोक-पृथ्वी भृत्य-नोकर, चाकर भृगार-सारी भू-भँवर भेदन-चीरवुं, कापवुं ते भेरी-वाद्य विशेष भोका-भोगवनार भोजनशाला-रसोडु भोजनपत्र-एक जातना माडनी अन्तरछाल, एना उपर मंत्र लखीने मादळी-यामा राखे छै.

भौतिक-पंचमहाभूत सबंधी
भौम-पृथ्वी सबंधी
भ्रमर-भमरो
मकरन्द-फूलनो रस, मध
मकर-प्-मगरमच्छ
मकरी-मगरी
मकट-वांदरो
मकंटिका-नेवाळी नामनी वनस्पति
मखतूल-मखमल, रेशमी भीणु वस्त्र
मग-शाकद्वितीय त्राह्मण
मंजरी-मांजर, भाडनो मोर
मज्जा-जेमांथी वीर्थ उत्पत्र याय छ ते धातु
मंडूक-देडकु
माण्वन्ध-पहोंचा
मिण्क-पहोंचानी कळाइनो भाग

मिएमोपान-रत्नजडित्र निसर्गी मत्कृण-मांकड मत्स्य-माछ्ल मतंग-हाथी, मतंगज मंत्री-प्रधान, सलाहकार मद्-उन्माद, लाकटापग्र मदन-कामदेव, रतिपति महिका-बटमोगरानुं माड मर्दन—तैलादि स्निग्ध पदार्थ चोळवा ते मन्टार-एक जातनुं स्वर्गनु फूलमाड, पारिजातक मदिरा–दारु मधु~मध मधुकर-भगरो मधुनिलय-मधपूडो मधुप-भ्रमर, भमरो मधूक-महुडातुं माड छे मनःशिला-पर्वतनी कोइ धातुनुं नाम हे मनभावन-पति, धर्णी मन्मथ-कामदेव, मदन मनोज-उपलो शब्द जुत्रो मनोभव-मदन, कामदेव मन्या-देह उपर देखाती नसो मयूख-किरण मयूर-मोर मरकत-पन्ना मराल-राता पग श्रने राती चाचवाळो हम मर्कटिका-मांकडी मसक-माखण, खुशामत महलोंक-सूर्य चंद्र ज्या छे ए दुनिया महानील-रत्निशेष, नीलमाि महिष-पाडो महिषी-भेंस महोन-भीणा

मित्तका–माखी मार्जन-लोध्र वृत्त, पाणी छाटी पवित्र करवुं ते मार्जार-विलाडो माधवी-एक जातनी लता मानपुर:सर-आद्र सहित मानिनीश्रो-र्छाश्रो मार-कामदेव, छानग मालूर-विलीनुं भाड माल्य-पुष्पना हार गजरा वगेरे माप-पांच चर्णाठीतुं वचन, श्रडद मापपर्णी-एक जातनी वनस्पति, जंगली श्रहद मांसल-मासवाळी भाग मित-मापसर, माफक मिथुन-स्त्री पुरुषतु जोड, सभोग मीन-माछलं मीसरी-खाड मुक्तकठे-बीले मोढे, मोकळे सादे मुक्ता-मोती मुकुर-श्ररीसो मुकुलित-जरा उघडेलु (फूल) सुद्र-मग मुंज-ए नामनु घास मुंडन-हजामत, वपन मुंड-माथुं मुद्रा-वॉटी मुद-स्थानद मुनीश-मोटा मुनि मुमुनु-त्रा ससाररुपी वधनमाथी छृटवानी इच्छा राखनार मुष्टि- मुठी

मुसाहिव-साथी, मोत्रती

मुस्ता-मोध

मूवा-मोरवेल मूपक-उंदर मृगराज-सिंह मृगांक-चढ़ मृगमद-कस्तुरी मृगशावक-मृगनु वच्चुं मृजा-पचमहाभूतमयी शरीरनी छाया मृगाल-सुगंधि घास, कमळना तांतणा मृतिका-माटी मृदु-कोमळ, सुवाळु मेचक-मयुर पचीनी कठ जेवु काळुं मेद-शरीरमा रहेली एक धातु मेधावी-बुद्धिशाळी मेनफळ-मीढोळ, मदनफळ मोका-संजोग, वखत मोदक-लाडु मोदमदांकिनी-आनद आपनारी स्त्री मौन-मुंगु रहेवु मौलि-मुकुट यंत्र-तोप यथामति-वुद्धि प्रमाणे यवक-जव नामनु वान्य यशस्वी–कीर्तिमान यप्रि-लाकडी यदमा-द्यरोग याग-यज्ञ यान-वाहन यामिनी-रात्रि यायी-गमन करनार यावधनद्रदिवाकर-ऱ्या लगी चंद्र स्त्रने सूरज तपे त्या सुधी युग्म-जोड़

युगल-वे, जोड़ं

यवाते-स्त्री यूका-जू युप-यज्ञमां ज्या पशु बाधवामा आवे छे ते थाभलो योग-संयोग, मिलाप ध्यान, योगपरायण-इश्वरना ध्यानमां तल्लीन योगवित्-योगने जाग्रनार योधवृप-जोरावर वळद रक्त-लोही श्रोणित रक्तशालिनी-एक जातनुं भाड रंगकर-रंगारो रंगभूमि-ज्यां लडाइ चालती होय ते मेदान रंगोली-जमीन उपर काढेल चित्र रजत-रुपूं रजक-धोवी रजक-मन रंजन करनार, उत्तेजक रजनी-रात्रि रणरागी-लडवानी प्रेम धरावनार रतिकंत-मदन, कामदेव रात-कामदेवनी स्त्री रतिपति-रतिराज, कामदेव रत्नि-मूठ, मुठी रंभा-कदली, केळतुं माड, अपसरा रला-कलहकारिका रव-श्रवाज रवैया-रिवाज, चालती श्रावेली रीत रशिम-किरण रसना-जीभ रस-पारद, सीसुं रसात्मक-जेमां रस होय ते रसाल-ष्टांबो राजकोशातक-म्होटां तुरीया राजि–हार

राजिता-शमीनं भाड राजिव–रातु कमळ रात्रिचर-रात्रिए फरवावाळा राजस रिपु-शत्रु रीर-राड, वम रुको-दुंकी चिट्ठी रुखी-मुकाइ गएली, कीकी म्ड−यड रुटन-रडवु ने रुष्ट-शिव, शिवजीनुं भयकर स्वरुप, श्रागि-श्रारनी संज्ञा रुविर-लाही रुवाव-रोफ भपको डोळ रुच-कठोर, स्नेह वगर्नु रेखा-लीटी रेणु-रज, वूळ रोगार्त-रोगथी पीडाञ्रेल रोम-वाळ रोमक्प-जे काणामां वाळ उगे छे ते रन्ध्र रोमथ-पशुत्रोनां वागोळवाथी थतां फीए रोमश:-वाळवाळा रोमांच-शरीरना रुवाटां उभां थइ जाय ते रोहित-लाल रग रोहितकवृत्त-रोहीडानु माड रौद्र-भयकर, विशाळ रौद्य-कठोरपणुं, निस्नेहीपणु, लुखस, निःरसता. लंक-केड

लक-कंड लकुच-एक जातनु माड लगर-स्नीनुं पगनु घरेगाु लय-नाश लर-(हारनीं) सेर ललाट-कपाळ, भाल लवा-एक जातना पद्मीश्रो
लदमणा-जास्वंदीनुं भाड
लाजा-तादुळ वनस्पतिविशेष
लाठी-जाडी लाकडी
लावी-सर्पनी फेण
लालाश्रो-शोखीन पुरुषो
लालित्य-सौन्दर्य मनोहरपणु
लालिमा-रताश लालसुरखी
लाचा-लांख
लिचा-लींख
लुप्त-लोप थएल डखडी गएल
लोकपाल-राजा, सूर्य, चद्र श्राम्न, वायु, यम,

लोचन-नेत्र लोबवृत्त-धोळु ऋने रातुं वे प्रकारतु होय छे. लोम-वाळ लोमाच-हवाटा उभां थइ जवां ते लोमशी-लोमडी लोप्ठ-लोखंड. लोह् लोहकण-छरा लोहित-लोहीना रगवाळा लोहपत्र-लोढानां पतरा लोळ-कान उपरनो भाग लौकिक-न्या संसारमां प्रसिद्ध होय एवं वका-बोलनार. भाषण करनार वक-वाक वक्त्र-मोढु मुख वच-पोपट. वनस्पति विशेष वचनामृत-श्रमृत जेवा वचनो वजुल-श्रशोक वृत्त वञ्र-इन्द्रनुं हथित्रार वर्जित-तजी दीधेलुं वर्तुलाकार–गोळाकार

वदन-प्रणाम करवा ते वदनीय-पगे लागवा योग्य वधःस्थान-फांसीए चडाववानुं ठेकार्एं, वनवीथि-वनना रस्ता वनराज-सिंह वनना राजा वसन-उलटी व्यस्त- जुदुं पाडेलुं व्यजन-शाक, पंखो, अथाग्रा, गुद्यांग, निशानी व्यक्त-इन्द्रिय याह्य जगत वर–वरदान. श्रेष्ट वरक-सोना रुपाना छेक मीणा पाना वरजी--तजीदइने वरत्रा-ढोर वांधवातुं दोरडुं वरागना-नायिकाः श्रप्सरा वरागी-श्रेष्ट श्रंगवाळी स्त्री वर्धमान-माटीनुं वासण वरुणक-वायवणीतुं भाड वलयनाद-हाथमां पहेरवाना कंकण्थी थतो

विल-पेटमा विक्रिया श्रथवा करचली पडे छे ते वल्कल-माडनी छाल वल्मीक स्थागु-शाखा विनाना न्हाना माड वल्लरी-वेल लता वल्ल-कडवा वाल. वालनुं वजन ब्ल्लभ-प्यारो. ब्हालो. पति वंश-पीठनी हृही, वांस वशीकरण-तावे करवा माटे मंत्र जंत्र वपट्कार-यज्ञ समय वषट् मंत्रनुं उच्चारण क-रनार

वसंतलातिका-वसंत ऋतुमां उगती वेल वसन-वस्न लुगडां वस्नगोपन-लुगडांनुं रत्त्रण करवु ते वसा-चरवी वसीलो-वग श्रोळखाण वसुमित-पृथ्वी वस्त-गर्भस्थान, मृत्रस्थान वहि-श्रिप्त वद्याःस्थल-छाती वृश्चिक-वीछी वराह-सुवर वाक्-वाणी वाटिका-वाडी वांच्छित-जे इच्छेलुं होय ते वाडवानल-पाणीनो श्राम्न वात्सल्यता-प्रेम वादित्र-नगरां तुरी, शंख इत्यादि वगाड-

वाना वाद्य वानप्रस्थ-चार श्राश्रममांनो त्रीजो श्राश्रम वानीर-भींडीतं भाड वापी-वाव वापिका-वाव वाम-डावुं वामरन्त्र-डावु नसकोरुं वामार्वत-डावी तरफ वळतुं वामाञ्चो-स्रीञ्जो व्याप्त-बहार फेलाएल च्याघ्रपदा-वेहकळी नामनी वनस्पति व्यायाम-कसरत वारिज-कमळ वारिधर-वादळुं वारिधि-समुद्र दरियो वाराही-डुकरी कन्द विशेष वारुग-पाणी वालखिलय-पार्वतीजीना विवाह समये उत्पन्न थएल ऋपिश्रो

वासव-इन्द्र
वासित-वासवाळुं गन्यवाळुं
वास्तव-खरी रीते
विक-तरतमां वीत्राएल गायनुं दुध
विकट-श्रघर
विकटता-मुश्केली
विकत्थन-खोटां वर्याण करवां ते
विकळता-गभरामण
विकंकत-पद्मीनुं नाम छे. वेहकळी नामनी वनस्पति
विकृत वर्ण-लालने वदले काळो
विकत सर्ग-जेना स्थतःकरण काम कोय इट्यादि पड

शतुत्रोथी विकार पामेला छे एवा मनुष्यो जेमां छे एवी दुनिया विकृत सख्या-एकने वदले वे चार विजातीय-अन्य जातिनु विघट्टन-अथडायु विचारप्रस्त-चितातुरः विचारमा तल्लीन विच्छिन्न-त्रदेलां विच्छेद-काप विजया-मांग विटप-वडनुं माड विदंवना-दुःग्व मुरकेली विडग-चतुर होशिआर वावडींग नामनी व-नस्पति.

वितान-मूर्ष, पापी, दुराचरणी तंबु
विदारनारा-टाळनाराः मटाडनारा
विदारवा-टाळवाः मटाडवा
विदिशास्रो-स्त्रन्य दिशास्रो
विदूपी-विद्वान स्त्री भणेली स्त्री
विदेशगमन-परदेश जबु ते
विदेह-मैथिल देश

वितस्ति-वेंत

विद्यमान-हयात विद्याधरी-वजीरी विद्यालयो-निशाळो कोलेजो विद्युत्-वीजळी विद्रम-परवाळा विद्वेपग्-भर करव ते विधान-शास्त्र प्रमाणे जे कर्म करवां ते विधि-क्रिया करवानी-रीत विध्वंस-नाश संहार विनय-विवेक विनष्ट-नाश पामेल विपत्-श्रापदा दुःख विपर्यय-उलटाप्यां पराभव विपरीत-उल्दू विपल-एक पळनो साठमो भाग विप्रवर्य-श्रेष्ट त्राह्मण विव्रध-देवता देव विभक्त-भाग पढेला, वहेचाएलुं विभाकर-सृर्य विभीतक-वहेडानुं माड विमलक-चोख्खुं करनार विमुक्त-छूटो थऐलो विमुख-पराइमुख, विरुद्ध, प्रतिकुल वियोग-विरह. जुदा पर्डंबुं ते विरचन-ऋोक, भींत, काची वगेरेने रचना करबी ते विरत्त-थोडा. छुटक छुटक विरहीजनो-स्तेहीस्रोयी जे दूर होय ते विराजमान-शोभायमान. सुंदर विराम-श्रत्त, छेवट समावि विरुत-स्थाकोश रदन

विरुप-भयकर स्वरुप

विरोब-दुश्मनावट वेर

विरोधी जनो-दुश्मनो शत्रुत्रो विलत्त्रणता-लोक संप्रदायथी तद्दन जुदाज प्र-कारनुं होवुं ते विलाप-रोतां रोतां वोलवं ते विलास-गीत, नृत्य अने स्त्री आदिना उपभोग करवाथी सुखं मेळववुं ते विलासी-विलास भोगवनार पुरुष विलासिनी-विलास भोगववावाळी स्नी, रमणी विलुप्त-हरण करेलुं विलोकतां-जोतां विवर-गुफा. बस्रोल. छिट्ट विवासन-परदेश वसत्रं ते विशद-साफ. स्वच्छ. चोरुख़ं विशाख-कार्निक स्वामी, निशान मारवानुं ठेकागु विशालाच-मोटी श्रांखवाळो. गरुह. महादेवजी विश्रान्ति-श्राराम, थाकखावो ते विश्व-दुनिया विश्वभरक-एक प्रकारना जीव विश्वेश्वरी-जगदंबा. माताजी. श्राद्यशिक पद्म-चारिणी विशाद्धि-निर्मळता स्वच्छता विषम-सरखुं नहीं ते. श्रघरुं. कप्टसाध्य विष्णुकान्त-काळी गोकर्णी, वाराही विसर्जन-त्याग विह्वळ-श्राकुळ व्याकुळ विहार-क्रीडा. श्रहींथी तही फरवुं ते विद्दीन-रहित विनाना निराळा विचित्र-फेंकेलु विखेरेलुं वित्तेप-मननु एककाम उपरथी उठी जवुं ते. श्रट शव हरकत

विज्ञप्ति-श्ररज. विनति, प्रार्थना

विज्ञता-कैवल्य ज्ञानवाळा होवुं ते व्युत्कम-उलटो कम वृक-वरु वेतस-वेत्र, नेतर वेध-उंडाई वेर-शत्रुवट वैदूर्य मारा-प्रातःकालना सूर्यना जेवो जेनो रंग छे एवो मारी, पन्ना वैद्यवर–उत्तम वैद्य वैरस्य-रस विनानुं होवुं ते. निरस-लुख शकट-गाड् शकटी-सगडी शक्ति-सांग वरछी शख-(मनुष्यनो) कान-कपाळनुं हाडकुं शंखपुष्पी-शाखवेल, संखाहली शत-सो शतव्नी-सो माणसनी घात करनार तोप शतपत्र-कमळ मोर सारस पिन शतावरी-वनस्पति विशेष छे शपथ-सोगन शव-मुडदु, लास शब्दात्मक-जेमां शब्द थाय एवा पदार्थी शमी-खीजडानुं भाड शर-वाण शरकांड-बाणनी लाकडी शरट-सरडो एक जातनु भाड शराव-कोडीयुं पात्र शल्यक-शेह शवल-बहुरंगी, विचित्र, श्वेत श्रने कृष्ण रंगथी मिश्रित शश-ससलुं शशव्न-ससलांने मारनार शस्त्र-हथित्रार श्रायुध

शस्त्रकोप-लडाइ सळगी उठवी ते शस्त्रज्ञ-हथित्रार केम वापरवां ते जाणनार शाक-भाजी. द्वीपनु नाम छे. मागनु फाड शाक्य-रक्तपट शाकुन-शकुन अथवा प्रश्न सर्ववी शाकुनिक -शकुन शाम्य माग्रानार शांतात्मा-शांत चित्तवाळो शायी-मृतेलो शारिवा-अनंत मूळी वनस्पति शार्द्ल-सिंह, छंदनु नाम छे शाल्माल-शेमळो शावक-वच्च शासन-श्रमल हुकम शास्त्रज्ञता-शास्त्रनुं जाग्पपण् शिखा-चोटली शिथिल-ठंडी शिरकेश-माथाना वाळ शिरवंदी-शहेरना वचाव माटे राखेलु लम्बर शिरा-रक्त वाहिनी रग, नस शिरोमाण-माथा उपरनो माण, वधामा श्रेष्ट शिसशास्त्र-कारीगीरी उपर लखाएलु पुस्तक शिरोरुह-माथाना वाळ शिला-पत्थर शि लिसुख-वाण-भमरो शिवा-पार्वतीजी. हरडेनुं भाड शिसपा-सीसमनं भाड शीव-जल्दी, तूर्ण शीत-ठंडु शीतधूप-टाढ अने ताप शिर-माथुं शुक-पोपट श्राक्ति-इपि शक-वीर्ये. वारतुं नाम छे

शुक्तपत्त-अजवाळीयुं पखवाढीयुं
शुक्तवर्ग-धोळो रंग
शुचि-पिवत्र
शुभ्र-सफेद, घोळु
शुश्रुषा-सेवा, नोकरी
शृगाल-शिआल
शृंग-शिंगडु
शृंगाटक-पाणीमां उप्तत्र थएल वेल, शिंगडुं,
त्रण शिखरवाळो पर्वत

शृगार-सण्गार शेफालिका-रान निर्गुडी शेह-शाह, राजा, वीक शैल-पर्वत शैलराज-मोटो पर्वत शोकामि-दिलगीरीरुपी अमि शोर-श्रवाज श्रोणिव-लोही शीच-तन, मन तथा गृह शुद्ध करवुं ते शौंडिक-कलाल, दारु वेचनार शौर्य-बहादुरी, पराक्रम रमश्र-दाढी रयाम-काळो, पति, धणी ग्यामा-नसोतर, काळी ध्रो, गळीना छोड, रात्रि, यमुना नदी श्याव-धृसर रग, वदामी रंग

रयाव-ध्सर रग, वदामी रंग रयेन-वाज पत्ती श्रमित-थाकी गएल श्रीकृष्णनी कृति-गीता श्रीपिणिका-कायफळ, कुंभीनुं भाड

श्रीवत्स–विष्णुनी छाती उपरनी एक निशानी श्रीवृत्त-पीपळानुं भाड, बीलीनुं भाड श्रुवा-मरवो श्रीवास-सरल वृत्तनो गुंद श्रेगी-पंगत, पंक्ति श्रेष्टी-धनपति, शाहकारो श्रोणि-मार्ग श्रोशिमंडळ-मार्ग श्रोत्र-कान श्योनाक-दीडानुं माड ऋथ-ढीला, पोचा पडी गएला ऋाघनीय-वखाएवा लायक श्रेष्म-सळेखम श्रेष्मातक-माइनुं नाम छे षट्रस-मधुर, कटु, कवाय, आम्लक ज्ञार श्रने तिक एवा छ रसो

षण-सेवा, पूजा, खंड

षोडशांस-सोळमो भाग

संकीर्ण-प्रसरेला, विस्तार पामेला

सक्तु-साथवो

सख्यभाव-मैत्री

सग-वे नदीश्रोनो मेळाप

संगम-वे नदीश्रोनो मेळाप

संगम-सगर, युद्ध

सघन-जाडुं

सचर-चाले तेवुं, श्रस्थिर

सचिक्यण-चिक्रणुं

सचिव-प्रधान, मित्र



सज्ज-तैयार सर्जवृत्त-श्रर्जुनसादडातुं भाड, जेनां पान घोडाना कान जेवां होय छे.

सजातिय-एक जातिनं संतप्त-खूब तपेलो संतानहीन-छोकरां विनानो, वांभीष्रो सत्त्व-पराक्रम सत्वर-एकदम सत्र-सदावृत सातपत्र-सातवणतं भाड सदन-घर सदस्य-सभामां वेसनार, सभासद संदिग्ध-संशयवाळं सदैव-हमेशां सद्गुणसपन्न-सारा गुणवाळो सद्म-धर सद्योमरण-तुरतमां थनारु मृत्य सद्योग्रष्टि-मट थाय एवो वरसाद सन्नत-सारी रीते नमेलं सनातन-सदोदित, श्राविनाशी, श्रनादि काळनुं सन्निध-नजीक, पासे सपत्-पैसो, वैभव सपत्नी-शोक

सप्तिष्ट्री-सात ऋषित्री, श्राकाशमां ए नामना

ताराच्यो उगे छे ते

स्पंदमान-टपकतां, फरकतां स्वस्तिक-साधीत्रों सफरी-मोटी माञ्जली समम-समस्त, अस्तिल, सर्वे समंगा-मजीठ संमति-श्रनुमोदन, श्रनुमति समदर्शा-समानभावधी जोनार ममर-युद्ध समसूत्र उत्तर-वरोवर उत्तर ममशेर-तरवार, कृपाण समीर-वाय, पवन, अनिल, मानत समीचा-द्रष्टि, समज संयम-निप्रह संयोग-वे वस्तुत्रोत जोडावुं ने सरट-कृकलास, काकीडो सरल-देवदारत भाड सर-तळाव सरमी-तळावडी सरसिज-कमळ सराजाम-सामान सराहता-बखाएता सरिता-नदी सरोज-कमळ संलग्न-सारी रीते जोडाएला सल्लकी-वनस्पतिनं नाम छे सलाक-सूयो सलिल-पाणी संवर्तक श्राप्त-मसुद्रनो श्राप्त संवाद-सवाल जवाववडे जे वातचीत थाय ते सवाहन-भार लई जवो ते, जुलमधी हरण करी जवुं ते

सवृत्त-संकृचित सर्पप -वृत्त विशेष, सर्सव

सहकार-श्रांबे। सहत-खूव ताडन करवामा आवेला सहति-समुदाय सहदेवी-श्रियगुलता, महावला सहा-शेवती, गुलाव सहास-इसतु, दांत काढतु सहति-त्रलात्कारथी हरण करी जबु ते सळ-करचली स्तनी-धली स्थपति-कारीगर स्यागुत्व-इशत्व स्थालीपाक-एक प्रकारनी चरु स्फिच-केटनी पाछ्ळनो भाग, नितंब स्फुलिंग-श्राप्तिकण स्वतः-पोतानी मेळे स्वरगाख्य-स्वरथी गवातुं गायन स्रश-टपकवु ते, खाली थवुं ते स्रस्त-जुदा पाडेला, निराळा करेला साक-सागनु भाड सार-चरवी सिका-रेती सिन्दुवार-निर्गुंडी सिंहद्वार-दरवाजा सीकर-जलविन्दु सीवनी-वृपण्यी मूळद्वार सुधीनी वचली नाडी सुखपाल-म्यानो, श्रवाही सुधाकर-चंद्र सुभग-सर्वने त्रिय सारा भाग्यवाळी

सुभित्त–सुनाळ

सुमन-फूल सुरपति-इन्द्र सुरभि-गाय सुवर्णकार-सोनी सुवर्णवृत्त-धतुरानुं भाड सुपिर-छिद्र सुशिचित-सारी रीते केळवाएला स्करिका-इक्करकन्द सुम-लोभीये। सुिकणी-श्रोष्ठाना छेडा सौरभ-सुगंध ह्न-हडपची, नखला हय-घोडो हयग्रीव-घोडानी होक इरित-हळदर, हळदरना जेवो रंग हरिताल-हरताळ हरिद्र-हळद्र हर्म्य-हवेली हलवो-शीरो इस्त-हाथ हस्ती-हाथी हारित-हरियल पनी हारीत-कचूतर, पारेवुं, ठग, लवाडी हालाहल-भेर हिमगिरि-हिमालय हिमवारि-माकळना टीपां हुतद्रव्य-श्रग्निमां होमेली चीज हुताशन-होमेलु खानार ऋग्नि इदयभेदक-श्रतःकरण चीरी नांखे एवी हृदयवल्लभ-धगी पति
हृदयवल्लभा-भायी, प्यारीः
हृदयान्तिः हृदयअद्रश्यी जोनार, आत्मा
हृस्व-दुंकु
हेमंत-ऋतुनुं नाम क्षे
चिति-नाश, संहार, विनाश
चाम-अशस्त्र, कमजार
चितिपाल-पृथ्वीनी राजा, नृपति
चीग-हृश, दुवळो पढी गएलो
चीर-द्ध

च्चित्रच्च-उद्यरानुं माड, द्धवाळां भाड

चीरसागर-सात समुद्रमाथी एक दूधनो समुद्र चीरिका-वृच्चं नाम छे, खीर, दुधी चुद्र-इलकं चुधा-भूख चुधालु-भूखाळवो चुर-अखो, मजेयो, गोखकनामनी वनस्पित चुरक-गोखरां माड चेत्रज्ञ-सेडुत, श्रात्मा चेमा-वृच्चं नाम छे चीद्र-मध, पाणी, वृच्चं नाम छे. चेवडा-वनस्पति विशेष, मोडानो अवाज, विष









काका राजोजी चलावता हता. ए राजाजीने " रातीदेवळी " नामे गाम गरासमां मळेलुं हतुं; राज मिनिसिंहजीना मातुश्रीनी इतराजीने लीधे राजोजी रातीदेवळीमां रह्या अने पछीयी खोडूमां जइ तेणे दरवार वांध्यो. त्यारवाद देवनी अनुकूळताथी वि. सं. १६८१ मां तेओ वहवाणना स्वतंत्र मालिक वन्या. तेओना न्हाना भाइ वर्लुजी तथा अदेभाणजीने गरासमा सम्वारकुं मळेलुं हतुं. ए त्रणे भाइओ मूळीना भाणेन धता हता.

राज मानसिंह जीए उम्परलायक थइ हळवदपर हलाओ करवा माड्या, परंतु तेओं फावी शक्या निह, तेओना लग्न "सीसाग " थएलां हतां; तेओने रायिसहजी, भीमजी, भाणजी, अग्रिसहजी, वीरमजी, वरशोजी, रतनजी, तथा हरदासजी नामे आठ कुमार थया. वि—सं. १७०२ मां राज मानसिंह जीनो स्वर्गवास थतां तेओना पाटवी कुमार रायिसहजी वांकानेरने टीले रह्या, भीमेंसिंह जीने "कणकोट", भाणजीने "वधाशीयुं " अगरसिंह जी तथा वीरमदेवजीने खेरवा, राती देवळी तथा सरधारकानो थोडो भाग; अने वरसाजी तथा रतनजीने खेरवानो भाग गरासमां मळ्यो. सहुयी न्हाना कुमार हरदासजी निःसंतान मरण पाम्या हता.

राज मानसिंहजीना छष्ठ वन्यु रामसिंहजीने लूणसरीयुं तथा वोकडथं ग्रासमा मळे छं हतुं. ए रामसिंहजीना वंशमां छटी पेढीए कलोजी तथा सबळोजी नामे वे वन्युओ घणाज वहादुर थया; ए वन्ने भाइओ ज्यारे गोंडल ठाकोर पासे नोकरी करता हता त्यारे हादाखुमाण नामनो कोइएक काठी संख्यावंध स्वारा तथा पायदळ साथे काठियावाडमां लूटफाट चळावी रह्यो हतो अने घोळे दिवसे घाड पाडी गामो भांगतो हतो. एक वस्तते एणे गोंडल तावातुं सतापर नामे गाम भांग्युं ए समाचार गोंडलमां आवतां त्यांथी जवरी वार चढी, कोटडाथी पण केटलाएक लड-वैयाओ गोंडलना पक्षमा मळ्या; भादरकांठे उभय दळनो भेटो थयो; झाला कलाजीए काठीओतुं महान कटक जोइ गोंडलना तथा कोटडाना माणसोने शान्त रहेवा समजान्युं, परंतु वाथी भरेला ए लोकोए कलाजीना कहेवा पर कांइ पण ध्यान निह आपतां शेखीमां ने शेखीमां घोडाओने पतिपक्षीओ पाछळ मारी मूच्या. हे हथीआरा काठीओ वीरहाकनी

१ बारोटना चोपडामां एवं लखेलं छे के वलुजी तथा उरेभाणजीने पांचदुवारका ना-मतुं गाम गरासमां मळ्युं हतुं, तेना वंशजो हाल सरधारकामां छे अने ते नीचाणी पाटीवाळा कहेवाय छे.

य बारोटना चोपडामां भीमसिंहने कणकोट उपरांत सरधारकुं मळ्युं हतुं एम ळखेळ छे.

साधे मारवा मरवानो निश्रय करी सामा थया समशेर अने भालांओना महार पूर्वक युद्धनो आ-रंभ पतां कंपायमान बनेटा कोटडाना टोको एज बखते पटायन करी गया, गोंडलीआओ पण गर्व छोढी न्हासी गया, मात्र कलोजी तथा सबकोजी पोताना कुळनी टेक जाळववा माटे रणमां अडग रही शत्रुओना समुदायपर तुटी पच्चा; आशरे एकइनार काठीओ फक्त वेन झालाओना वाह्र-षळथी छिन्नभिन्न यह गया. बीरवर कळाजीए हादाखुमाण उपर समशेरनो पहार कर्यो अने सब-ळाजीए तेना दावळा नामना अश्वने ठार कर्यो. झाला रामसिंहजीना भीम अने अर्जुन जेवा पी-होए एवी ध्रमचक मचाबी के काठीओतुं कटक भयभीत वनी भागवा लाग्यं. अगणित अन्वोना धारनधी उढेली घृलिने लीधे आकाश धृसगित वनी गयुं. कलोजी तथा सबलोजी संसारनो मोह छोटी सेंबटो प्रतिपक्षीओना मध्यमां खुद्धी कृपाणे खेलवा लाग्या, दृक्षयी पर्ण खरे तेम करपद आदि अंदयदोना पात पदा लाग्या. घायल जनोनां गात्रमांथी धक्षधकाट करती रुधिरनी धाराओं छूटवा लागी, हाटीओना क्वचनी कडीओ तहोतड तृहवा लागी. "मारो मारो " अने "कापो कापो " एवा शोर सांभळी जेम पोप मासनी रात्रीमां प्रमदा विनानो पुरुष धूजे, तेम कायरजनों कंपवा छाग्या, खरा शुरवीरा इता एज कळाजी सन्मुख स्थिर धइ ज्ञवया, खरेखर ए बखते बीरवर कळाजीए बांकानेरना पाणीने विश्वमां विख्यात कर्यु. ए बन्ने बन्धुओए हादो, सामत, वरु अने हमीर नामना चार अग्रणी पुरुषोने मार-षानो संबल्प कर्यो हतो, तेमांना त्रणने तो तुरतज यमराजना अतिथि बनान्याः मात्र एक हादोन पायल अवस्थाए पचवा पाम्यो हतो, परंतु ते ज्यांसुधी मीन्यो न्यांसूबी कसूंबो लेती वस्वते तेने कलाजीनो रंग आपतो हतो अर्थात् कसुंबो पीवा टाणे हमेशां ए एवं बोलतो के रंगछे झाला मर्द कला ीने जेणे इनारी माणसी बचे हिम्मतधी मेंबेश करी मारा उपर महार कर्यों

खुमाणोनी आंखमा खटकी रहेला कलोजी तथा सबळोजी एज युद्धमां छेउटे काम आ-ज्या रता. एना पराक्रमनी प्रशंसा करता कवि छोकोए नीचे मुजब गीतो कहेलां छे.

गीन. १

वरे ठाठ कटकांतणा कोळीए काठीए. हण्यो छड़ गामडानणो होया; वृंवीयो आवीयो गोंडले वरकतो, सतापर हावले कीयो सोथा; चडी वार गोंडलरी कोटडारी पण चडी. भादरे चका अनवार भाळ्या; वावले कलानुं कर्युं निहं वारियुं. चावले मोरथा पवंग चाळ्या: वळ्या काठी भाला हथा वांकडा, बीर हकाडका ठोर लागी; कोटडातणा नर गीआ खेपट करी, भूर गोंडलीआतणी भागी; सनसुख हलाव्ये गीयो सांगा सतण झींक भालां दई वाई झटक्यां; वकर हादासरे कले घा वाळीयो, वावळो सवळे कीयो वटका; धमचक मचाइ एसी झाला धणी, हेमरा दळां सरदार हणीया; पांडवा सरीखा रामरा पोतरा, भीम अरजण जसा भणीया; खतरी पूरा हता तकोरीआ खळे, आवगो वंकपर वेण आदो; मरद माटीपणे कलाने मोरथी, हजीं रंग कसुंवे दीए हादो ॥

खळ खुमा साथ माचीयो खेखट, दळ आडो मकवाण दीयो; केता सवे सदा मत कळीयो, इ गोंडळीयो पोवार गीयो; कामो वगत पडीदो कोमां, बोळ अबोळा साहव राम; झटके रमण अटकीया झाळा, इ हाळा भाग्या ळूणहराम; माणासवर समो दघ मातो, खातो डळा समळरत खाळ; सेहसागण पोतो सरदारे, कटकासर वातो करमाळ; इघरमांझ हतो इ एकज, होय तो किद मेडते होय; खशीयें कयुं बाबरीए खुमे, कळीया जसो न मळीयो कोय; परचळ पोखण सकत प्रखपूरी, मेर सवरकर कंठ प्रमाण; पाडे प्रसण पछे रण पडीयो, इ रंग परीयां चाडें झळराण.

गीत. ३

रण आयो खत ठेकी रमवा, भात्रीजा भेळा त्रहुं भाइ; पाळवंधु बरके रजपूतों, भोयों मांडी बडी भवाइ; पूगो घट घट अशो करे पग, वेंश भजाड्यो भोगवी वार; कलीये गोला धणी कटकरा, चारहजार वचेथी चार; लोह सतान सरे रंग लाग्यो, सजडे खेल्यो अशो सधीर; भाले झलवे रूप भेचक्या, हादो सामत वरू हमीर; अधपत चार नजरमां आणे, घायक कले बांधींयो घर; वत लेवा पाछो दळ वचे, सांगातणे पाडीयो शेर; फरें घाळ जेम पाळ फुदडी, प्रसणण करेन मीटपरी; खशीये कयुं वावरीये खुमे, जें कलीये एसी रमत करी; वटी गया मुंगळांवाळा, लाना ढोलक रया छपी; भाग्यो नहीं साथीयां भेळों, खेळो पडमां रयो खपी.





एकविंशत् तरंग.

गीति.

रायसिंह विजिथी, विनयसिंह लगि समग्र वृतान्त; स्नेहें अमर! सुणावुं, विदित वक्रपुरीतणा कलितकान्त!

राज रायसिंहजीए वि-सं. १७०९ मां तस्त्तनज्ञीन घया पछी हळवद छेवा माटे वजो श्रम कर्यों, पण ते सार्थक थयो निह, तेओ अलवर परण्या हता, तेनाथी कुमार चन्द्रसिंहजी उफें चांदोजी तथा वेराजी नामना वे कुमारनी उत्पत्ति थइ. वि-सं. १८३५ मां राज रायसिंहजीनो कैलासवास थतां पाटवी कुमार चन्द्रसिंहजी राज गादीपर अभिपिक्त थया अने वेराजीने कोठा-रीआ नामनुं गाम गरासमां मळ्युं.

राज चन्द्र(संहजी उर्फे चांदाजीए वांकानेरना राज्यासने विराजमान थया वाद एक वर्षनी अंदर एक म्होटुं लक्कर एकछुं कर्यु अने वारंवार हळवदपर हुमलाओ करवा माड्या. तेओ जाते घणाज वहादुर अने हिम्मतवान हता. ए अरसामां हळवदनी गादीए राज जसवतिसंहजी राज्य करता हता, अने जोधपुरना महाराजा जसवतिसंहजी दिल्हीना वादशाह तरफथी गुजरातना सूवा वनी आव्या के जे वांकानेरना राज चन्द्र(संहजीना जामातृ थता हता, नेओए पोतानां राणी झाली-जीना कहेवाथी हळवद उपर चढाइ करी. ए वखते राज जसवतिसंहजी वाराही तरफ वंचते करी गया. राठोड जसवतिसंहे हळवदनुं राज्य हस्तगत करी वावी नजरअलीखानने जागीरमां आपी दिखि. ए वावीए छ वर्ष पर्यन्त हळवदमां हञ्जमत भोगत्री, त्यारवाद वीरवर चन्द्रसिंहजीए वावी नजरअलीखानने हरावी हळवद हाथ कर्यु अने त्यां त्रण वर्ष पर्यन्त स्वतंत्र सत्ता चलावी. वि—सं. १९३८ मां राज जसवदिसंहजीए वादशाह तरफथी हळवद तथा तेने लगता भीठाना अगरनी सनंद मेळवी अने राज चन्द्रसिंहजी साथे युद्ध करी हळवदनो कवजो हाथ कर्यो. परंतु चन्द्रसिंहजी-ए हळवदनी वळगण जारी राखी जीवतां सूधी राज जसवतिसंहजीने सुखे सुवा दीधा नहि. ए

अद्वितीय पराक्रमी पुरुप इता, एणे असछ वाहुवळधी पोताना मुलकनी अभिष्टद्धि करी. कोइएक वखते कच्छ देशान्तर्गत वेंध प्रगणाना इरभमजी नामे शावल जातिना रजपूते वांकानेरीआमां प्रवेश करी लींबाला नामतुं गाम भांग्युं. ए सगाचार साभलतांज राज चन्द्रसिंहजीए तेनी पाछल पढी वांकानेरधी आशरे दोढ गाउ उपर आशोड तथा मच्छु नदीना संगम स्थले धींगाणुं कर्युः झालाना झाटकाओधी हरभमजी झाटकीआना समग्र रंतिनको भरणने शरण थया अने ए पण घायलें अदस्थाए राज चन्द्रसिंहजीने पगे पढी अपराधनो माफी मागवा लाग्यो शरणागतने अभियदान आपवुं ए क्षत्रीओनो धर्म छे. ए धर्मानुसार राज चन्द्रसिंहजीए पण हरभणजीने अपराधनी क्षमा आपी जीवतो जवा दीधो ए प्रसंगे की इएक कविए नीचे मुजव गीन कहेलुं छे.

गीत. १

चन्द्रसेन हमोरण वंधे चाला, वेकरमाला वाटकीया; झालातणा सपेखी झाटक, झाटकीये कर झाटकीया; रासाओत हाजाओत रूके, राम चडीआ माझी समराथ; वळीओ कडतल दलां वखेरे, हरभमजीओ खंखेरी हाथ; झालावाड मोहाड झूवतो, घणुं मचवतो राहाड घणी; सामावाडे सेहेडीओ सामो, धाड मरावे धाड धणी; वांकानेरतणी दस वहवा, कटक न काछीराहो कसे; जोध जुवाण वढावे जाडो, घाण कढावी पाण घसे.

राज चन्द्रसिंहजी जेवा पराक्रमी हता तेवाज उदार अने प्रजापिय हना; राजसी नामना गहरीए एओनी प्रश्नमा करतां क्ष्यु छे के.

मीन. २

वडे टोर वांकानेर कवी देवा वडंग, भामणे प्राक्रम धरा भाओ; चंद राए संगरो खलां वल चृरवा. अभनवो राण नरनान आओ; सकव उछाह घर घर प्रजा परम नख. प्रनण दुख अनंखन गलांप्राजी; पाट राएसंगरे सलां झल प्रगटीयो, मानहर चंदहर जसो माझी; धेवे सहे दुअण सीमाडीआ धूजीआ, पूजीआ खरा अहेनांण वणपार, ुुुपथाओत वेर करवा नवा प्रहोणा, वलीतांए आवीओ वीजीआइवार;

- त्या । राज चन्द्रसिंहजो जाडेजामां तेमज मागंद्र परण्या हता, तेओने पृथीराजजी, केसरीसिंहजी, वरसोजी तथा तेजोजी नामना चार कुमार अने जनुमा, लखमाजीवा, राजुवा, तथा अनुपवा नामना चार पुत्रीओ हतां. तेमां जनुवानां लग्न प्रमानायात्या जाम रायसिंहजी साथे, लखमाजीवाना लग्न जाम लाखाजी साथे अने राजुवा तथा अनुपवानां लग्न कच्छ मुजना राओ देशलजी साथे हमहोटी धामधूमथी करवामां आव्यां हतां.
 - वि—सं. १७७७ मां राज चन्द्रसिंहनोनो स्वीवास थतां तेओना पाटवी कुपार पृथीराजजी स्के सतानजी वांकानेरनी रागगादीए वेडा. कुनार केनरीसिंहनोने वगनारुं, वरसाजीने हुआ अने तेजाजीने घीयावड नामनुं गाम गरासमां मळ्युं.
- ुं ु राज पृथीराजनीए सप्तर्य पर्यन्त राज्य सुखती उपभोग करी वि~तं. १७८४ मां निःसं-चितान कैलासवास कर्यो त्यारे तेथीन। लघु वन्यु केसरीसिंहजी वांकानेरनी गादीए वेटा. ए वखते किहएक चारणे नीचे मुजब दोहो वनावी केसरीसिंहजीने संभळाव्यो हतो.

करम तारं केहडा, उनाळे लीलुं;

🖂 📉 🚅 वणझारानो गराराओ, एने वांकानेरतुं टीळुं.

- ्त्रं राज पृथीराजजीना कारज उपर जामनगरथी जाम तमाचीना माणसी आवेल हतां, तेओनो विचार वरसाजीने वांकानेरनी गादीए वेसाडवानी हतो, परंतु वहवाणथी ठाकोर केसरीसिंहजीनी मदद आवी पहेंचिवाथी नगरवाळानो विचार पार पडी शक्यो नहि. राज केसरीसिंहजीए ए उपका-द्धरना वदलामां वहवाणने वार गाम सहित पोतानुं नागनेश प्रगणुं वि—सं. १७९३ मां आप्युं हतुं.
- राज केसरीसिंहजीना छयु वन्यु वरसोजी के जेने हुवा नामनुं गाम वांकानेर तरफथी ग-द्धारासमां मूळ्युं हतुं, एना पौत्र गजिसेंहजी महान भक्त अने किन थया, एणे निष्णुप्रकाद्या नामे एक ग्रन्थ रचेलो छे, ए अद्यापि हस्तिलिखित छे. छपाइ मिसद्ध थयो नथी. ए ग्रन्थनी एकन्दर सोळ कला छे, तेमां रामावतार तथा कृष्णावतारनी लीलाओ वर्णवेली छे, शिवजीनो विवाह लखे-

हो है, बुद्धावतार तथा किन्त अपतारनी भविष्यत् इकीकत आपेही हे अने बहुभक्क संबंधी पण वर्णन करेल हे; ए उपरान केटलीक वैराग्यनी कविताओ पण तेमां रचेही हो. दोहा, सवैया, सी-रटा विगेरे ६४५० छन्द्रीथी प्रथेलो ए ग्रन्थ (विष्णुमकाण) बुद्धिने विश्रद्ध कर्नार अने आनंद हपजावे तेवो हो. श्रीमान् गर्जासंहजीए ए ग्रन्थ रच्यो ने बखते झालाओना राज्यमां निम्नलिखित महाराजाओ राज्य कर्ता हता एवं ए ग्रन्थमा लखेल हे.

- १. बांकानेर-महाराजा गजसाहेव श्री चन्द्रसिंहजी उर्फे डोसाजी.
- २. इळवड-महाराजा राजस हेव श्री अमर्गसेंहजी.
- ३. लींवडी-श्रीमान् टाकोरलाहेव श्री हिन्सिंहजी.
- ४. लखतर-श्रीमान् टाकोर् श्री पृथीगजजी.
- ५, बहवाण-श्रीमान् टाकोरसहिव श्री जालिमसिंहजी.
- ६. सायला-श्रीमान् टाकोर श्री वस्वनितंहजी.
- ७. तादटी-श्रीमान राजगणाश्री चन्द्रविंहजी.
- ८, प्राठोल-श्रीमान् ठाकोर् श्री दोलतरिंहजी.
- ९. देलदाटा-श्रीमान् टाकोर श्री कल्याणार्मेंडजी.
- १०. गोघुटा-श्रीमान् टाकोर श्री मोहकमर्सिंहजी.

राज वेत्यरीतिहजीना अग्रलमां प्रजा अत्यन्त सुनी हती, शत्रुओ उत्तुं मायुं करवा हाम भीटी शयाना निः ए उटार दिल्या राजानी प्रशासा करनां ए उत्यनना कवित्रीए घणां काव्यो रचेलां हे. तेमांना प्रण गीतो नीचे एजर हे.

धीत. १

वंह दाए केसा मरत अभेत्रच वयुना, अंदर हर लगो मोहे न ओहे; जंध जागे नीओं त्रीआ पोहण करे. पराण जगे त्री कंध पोहे: गटलदां हींहुओं असर लागो गजर. अषाडे चडे फरे न के आवे; धमक नालां तणे चंदरे धूजवा. नारीआं पंपोले पलंग नावे; परजवी राजवी खान मोहटोपणां, डाढ वोहे नको काढ दावे; वाढ दीनो धमक पाखरां वाजते, अब लरे वाजीते टाढ आवे.

गीत. २

हेक जूनां थीए नवा दूजा करे, रूक थोडें भडे तमण रेसो; प्रगट ऊंबरडातणो तल पालटों, कला नत नवनवी करे केसो; सात्रवां काल ओनाड दूजो सतो, तवां कोण सामो चडे तो?; एक वेहेर करे बीआंपोआंजसे, वेर चंदतणो नत नवां वोरे; धणी वंकनेररो मेर जैवडधडे, धुपटे करपडां दीह धोले; माण हालातणुं नमषमां मोडीयुं, खाग धोडे बीआं मदा खोले.

गीत. ३

वहें नारही डोळती नागला रांनवच, झुझ मुकी प्रसणथीआ झरडो; साद काढी नको गाढ बोली सके, केंसरी संघरो अमल करडो; त्रजड मोहें दुथ चन्द्रसेनरे टालीओ, सुथ कीधो सत्रांहए साले; कनकचा सोल सणगार सज कामनी, हेकली वेकली रान हाले; घणा आनंद मंगल वरतीआ घर घर, वसी सवसीधरा रामवारो; धींग रासाहरा भोए वेरी धबे, सराए वार संसार सारो; एपरनां गीता उपरथी निक्व थाय छे के राज केसरीसिंहजी महान् मतापी तेमज पराक्रमी हता, तेओए हालाओनी साथे युद्ध कर्यु होय एवं अनुमान थाय छे, कारणके ए लोको तेओना हक्तमां विघ्नरूप थया हता.

राज केसरीसिंहजी सीसांग परण्या इता, तेओने भागजी नामे एक कुमार तथा लाइया नामनां एक इंबरी पयां हतां. इंबरी श्री लाइबाने नवानगरना जाम लाखाजी साथे परणाव्या बाद वि—मं. १८०५ मां राज केसरीसिंहजीनो केलासवास धतां हुमार भारोजी राजपटवीने धारण करी पांजानेरना तत्व्नपर विराजमान थया. ए एक महान समर्थ लडवैया हता. एनामां आलस्य तो पिल-कुल इतुल निह, आटे पहर उत्पाहधी तेओ पोताना मुलकने वधार्येज जता हता; कहे छे के तेओए एळवड पर चहाइ उत्ती एक कवन विजय मेळच्यो हतो. परंतु लांबो वखत तेमना कवजामां रही गवयु निः जसदण पासेना छुटायटा तथा कोठी हुद्गीना काठीओए वांकानेर तावानां गाम मरीका. कोटी तथा जे धुएनमां हुंट चलावो अने त्यांथी घणा होर लड गया. ए बखते काटी, जाट अने वीजी कोममा पाताना विजयनी निशानी तरीके होर लड जवानो रिवाज पचलित हतो: अने ले राजाना मुल्कमांथी ए रीते होर छइ जवामां आवे ते राजानी कीर्ति कछिकत गणाती एटला माटे राज भाराजीए पातानी मजामां पश्जानी करेली चोरीयी पातानी सत्तानुं तेमज म-तिष्टातुं अपगान यएलु समजी ज्यांतुधी ए चोगएलां पशु पाठां न मळे अने ज्यांमुयी जनुत्रोने प्रेष्री सजा न अपाय त्यास्थी बांकानेरमां टाव्वल नहि थवानी दृढ मितज्ञा करी; परंतु ए मितज्ञा पूर्ण वारवा माटे जोहण तेटल सैन्य पोना पाने नहि होवायी जनागदना दियान अमरजीनी महायता मेळववा माटे पाताला कारभारी गुगाराम हरिरामने मोकली आप्या. गुगाराम दिवान अगुरजीना सजाितय तथा सदधी तादाने तीये धारेल काम सरलताथी पार पहुंग, जनागृहथी आवेला पांच जार शिरवधीओने साथे एह राज भारोजी दार्शकोना गामटांको भागवामां नेगन पोतानी मि-ल्यात पाली मेळववामां फानहमद थया. अजानदाहु भागजीए भालानी अणीयी काटीओनां कलेजां-ओंने एवा क्यायमान कर्या के ए लोको फरीधी बांस्केरनी हटमां मकेल करवा हिम्मन धरी रचया निर्. ए बावतना कोहण्या चारणे कहा है के-

> भालो धारो भारमल. अडीयो आभजके: देरी दीधा दने. नो रुटे देहरराउन ॥

राज भारोजी चोर अने द्दाराओनो पराजय करी तेमना पर धाक वेसाडवामां नहु मवीण हता, काठीओ तो एतुं नाम सांभळतांज सो सो गाउ भागी जता ए नीचेना दोहा उपरथी सिद्ध थाय छे.

> तोळे भय त्राठां, काठां केहरराउत, एना घोडे चप गाठां, ते भाठां न मटे भारमल.

राजभारोजी घगाज उग्रभागी हता, तेओए वांकानेरने फरतो गढ वधान्यो, शहरनी स्थिति छुयारी, ब्राह्मगोने गरास आप्या, देवनन्दिरो वंबान्यां अने गामडाओनी पण आवादी करी, महान उदार दिल्ला महीपतिर भाट चारणो विगेरे याचकवर्णने अनेक प्रकारनां टान आपी म्होटी नामना मेळ्यो. परोणागतमां अत्यन्त पंकाएला राज भारोजी संख्यावंध गरीवगरवांओने निरंतर अनदान आपता, एओना दरवारनां मेनानगतीनो रोटलो एनडो म्होटो थतो के जे वे त्रण माणसोने पूरेपूरी दिशे आपी शकतो; ए बलतनां एक साधारण करेवत हुई के " भारा साइ रोट अने छंभा साइ कोट " वांकानेरना राज भाराजीनो रोटलो अने गोंडल ठाकोर छंभाजीना किल्लाओ एकी साथ प्रशंसाने पात्र थया हता, काठिआवाडनां तो थं, पण आखा हिन्दुस्थानमां ए वात मशहूर हती.

राजकोटना ठाकोर वावाजीराजे राज गराजीनो महिमा घटे अने पोतानो यश वधे एवा हेतुथी चार माणसी खाइ शके एवी अकेक रोटलो तैयार करावी चारण लोकोनी परोणागत शरु करी. मिजमान वनेला चारणो ठाकोर वावाजीराजनी हाजरीमां थाळीनी अंदर आवेलो रोटलो जोइ वोलो छेठ्या के-ओहो हो हो, कांइ भारासाइ रोटलो वन्यो छे नां ? आ सांभळी ठाकोर वावाजीराजने बहुज ग्रुस्सो चड्यो, एणे चारणोने कगुं के, में भाराजी करतां चोगणो वजनदार रोटलो तैयार करांच्या छतां भारासाइ भारासाइ कर्या करो छो ते तमे एनामां एटलुं वधुं शुं भाळ्यु छे? आटला दिवस एणे काठीओ जेवी वोडीयुं माथेज हाथ कर्या छे, ए हल्ल शीगाळीयुंमां चर्या नथी. जो तमारे जोखुं होय तो जाओ, भाराजीने जइ करें। के, राजकोटीआनी जेटली जमीनमां तमारा घोडाना पग पडे तेटली भूमि ब्राह्मगोने आपवा वावाजीराज वंधाय छे. चारणोने तो एज जोइतुं हतुं, कारण के वेनी लडाइमां त्रीजाने लाभ ए कहेवत कांइ ए लोकोथी अजाण्युं नहोतुं. एज वखते एमांनो एक चॉरण राजकोटथी चाली निकळ्यो अने वांकानेर आवी राजभाराजीने मळ्यो. राजभाराजीए एनुं

उत्तम प्रकारे आतिथ्य कर्षुः, खाइपी स्वस्य वनेला चारणे वावाजीराजना वधा वील राज भाराजीने फही संभळाच्या. भाराजीए एज वलते छजडंड ठाकी मुख्यर हात्र नांख्ये। तथा घे।डाओ माथे सा-मन नांखवा आज्ञा अ.पी; अने तल बांकानेरना आगरे चालीश पचाश बाह्मगोने साथे लइ राज-कोट तरफ उपाण कर्न, पत्र छोत्र ना पानीयी पुढि पानेला ए वलतता ब्राह्मणो मजबूत बांधाना अने शुग्वीर हता. तेओ हम्बवत राजग हेवती साथे रणभूतिमां हाजर रहेताः आ वाबते तो एओना लाभ माटेज राज भाराजीए मयाण करेलु इतु, बांकानेरना अखे। वायुवेगे दोडता दे।डता राजकोटी-अने वीधी सपाटामां टेट सम्धार मूर्या जट पहोंच्या. राज भाराजीए सरधार तावानुं गाम साजडी-आली मारी क्षेटलीएक माल टूट्यं, अने त्या श्री सीधा राजकीट आवी आजी नदीने सामे किनारे हभा रही जेणे ठाजी,रवावाजीन दे क पेताने संभक्तव्या इता एज चारगनी साथे त्यां कहेवराव्युं के-" टाकोर ! यरद हो ने। साना अवे। विक्रहे माजडीआलो गान भांगी आत्वा राजकोटीआमां अनो घं,हा फरवी आच्या छीए, म हे नारेए करेला बोल मयाने ए बनी जनीन बाह्मगरेने आपी दीओ. बारमणी पण अत्रे सारिज होता अल्या जिए, कारण के तगारा बाल्यगो ए गरास भोगवी शकशे निध् अने अपारा ब्राम्मी के गरारा मायामां मारो आनंदयी गरालको उपमोग करको. " राज भाराजीनो आहे। पार्च भरेलो पहेपो, पार्की ठ.कोर पाद जीराज वे घडि स्तब्य वनी गया, सामा आयवानी तो हिन्मत शानीज ५ हे. एतु अभिनान एक निनिपनाग उत्तरी गर्युः; एगे अपराधनी मापी मागी राज भाराजीने पेला प्रेरा प्रस्ताना जो नेजें,नी परेगानन करो. ए प्रसंगे की-रएक चारणे नीचे एजन होते का के क

भारो दांदे केट, इ वीजाधी वंधाय नीहः सोहे सम्बन्ध हेट, पण वावाजी वोले नहिः

एक भीरोकी साणद ह ोतो एकी साथ नया में टर टकोर सुभावीनां द्वारी कनकानी-पा घेरे परण्या एता. ने के किया गर्मी को लाय की जो दक्षण नया सरनादकी उर्के सामन-गिंग्रजी नामना पार स्वरोग र गर्मिन का नामना एक स्वरोग क्रम लीयो हतो. हुंबरी श्री पाकीराजवानी एक मोर्ग्याना का साथ करवानां अच्यां.

प्यारे गज भारोजो गड के व विज्ञानी देश सेकाण्या हता. त्यारे बांशनिस्मां पाटरी

१ राज भारातीने स्वास्त स्व पंचता एत हात एवं बारेटन चेत्रदानां लये हुं है.

कुमार रायसिंहजीने तेना हलकी वृदिना सलाहकारोए आहु अवलुं समजावी राज सारेनने बहेरमां दाखल नहि थवा देवा माटे उच्केर्या. कुमार रायसिंहजीए राज्य करनानी उच्लाशी चारसो आखने नोकर राख्या अने ज्यारे राज भारोजी राजकोट्यी वांकानेर आव्या. त्यारे तेओने बहेरनी अंदर पेसवा न दीधा. योग्य उम्मरे पहोंचेला कुमारने राज्य चलाववामां समर्थ समजी नेमज पुत्र माथे केंग करवानु अनुचित धारी राज भारोजी सीधा पचाजीए प्रार्था.

युवराज रायसिंहजी उर्फे वायजी साणद परण्या हता. तेओन केसरीसिंहजी नामना एक कुमार अने नानीवा. तेजीवा. फलजीवा, वरवतुवा. राजुवा तथा अदीवा नामनां छ कुंवरी थयां हतां; तेमांना नानीवाने कच्छ वेराजे आप्यां, तेजीवान कच्छ ग्रजना राओश्री रायधरजीसाथे परणाव्यां, फुलजीवानां लग्न नवानगरना जामश्री जसाजी साथे कर्याः वरवतुवाने मोरवीना टाकोर जीआजी वेरे, राजुवाने वांहीए जांडेजामां अने अटीवाने माळीए परणाव्या हतां.

पंचाशीआमां निवास कर्ये एक वर्ष पूर्ण थता वि० सं० १८४० मां राज भाराजीए कैलासवास कर्यो; पाट्वी कुमार रायसिंहजी तेओना पहेलां थोडेज वयते स्वर्णवासी थण्ला होवाथी कुमार केसरीसिंहजी पोताना दादाने आसने विराजमान थया; तेओना काका लाखाजी तथा जी-वर्णजीने राज भाराजीए अम्रुक गरास आपेलो हतो, परंतु ए वन्ने विनवारस गुजरी जवाथी तेओनो गरास पाछो दरवार ढाखल थयो; एमना लघु वन्धु सामतसिंहजीने गरासमां अरणीटीवा नामनुं गाम मळ्युं हतुं.

र्कहें के राज भाराजीने अभे सिंहजी तथा वाघजी नामना वे ओरमान भाइ हता, तेओने जाली तथा जेतपरडा नामे गामो जीवाइमां अपायां हतां; तेमां वाघजीनो निःसंतान देहान्त थतां जाली गाम दरवार दाखल थयुं.

राज भाराजीनी पशंसाना जूदाजूदा कविओए घणां कान्यो रचेलां छे, तेमांनां थेडां अत्रे दाखल करीए छीए.

१ जीवणजीने जीवाइमां गाम तीथवा आप्युं हतुं एम वारोटना चोपडामां लखेलुं छे.

२ वळी एक जगोए एवो छेख छे के वाघजी तथा अमेसिंहजी राज रायसिंहजीना पुत्र अने केसरोसिंहजीना भाइ थता हता, एओने गाम जाली तथा जेतपरईं गरासमां मळ्युं हतुं, परंतु अभयसिंहजी विनवारस गूजरी जतां जाली गाम दरवारमां टाखल थयुं.

गीत. १

ृंभृपतीआं रूप लदेवंत भारा, सारा सकवी कहे सही; मिख धारा कोणं जोड मीढीएं, नख धारा कोए जोड नहीं, कल छाती सतलक के साणी, नमख अजाणी बात नथी; बदन जोड कोण करां बखाणी, को नख जोडी नथी कथी, थरपत आश्रण हराचन्द घर, तु नत कवीआं दलीवतडे; जोडी कमलतणी कोण जोडां, जोडी नखही नको जडे.

था गीतनी अंटर राज भाराजीना शरीरनी लावण्यतानुं वर्णन छे, कविए सदेवंतनी उपमा आपी एथाना अस्तिल अगोइं रावेंत्कृष्ट सौन्दर्य बतावेल छे.

गीत. इ

,, पीवे संघ अजा एक तट पाणी, हेम सांकला महे हलो; कीधो धर वंकनेरतंणी कोए, भारों भालें, सुध भलो; बाघ बाकरी सिजील पीए बल, भमो केनकहथ कीआं भेओ; दस देसां एला तहे दाखे, वेसावाले सवाकेओ; पंचमख छाली नीर पीए पण, सजसो त्रण भालो प्रजसार; भारो चांदाहरों भोगदे. वारो रामनणो इणवार.

आ गीतनी अंदर तेमनी राजनीति महधी वर्णन छे. श्री गमचंद्रना ममर्येमां जेम प्रजा निर्भयपणे आनंद मंगामा दिवसी गुजारती हती अने मिह नेया चंद्रींग एक चाटे,पाणी पीतां रतां तेम राज मिर्जिना व्हिनेसां एण सेदल नधा निर्वेळ एक स्थळे भेला थया छतां मवेळ निर्वेळने पीरी शासतां नहि.

सीन ह

वागे हकतार आभसुं वागे. आगे ए कडनस एतेनाण; दागे सत्रांलेअण जन दजटे. जागे भारामाल जुआण;

धड भांजे प्रसणां घणघाए, चड चड चले वांधीआं चाल; केसा सतण अनड कीरत कज, भड सोचे निह लील मुआल; बोहोरे नेअण अरीहर वेहेंडे, घरे अरांपड वए घर; पोहोरे भलप खडो हर पीथल, न करे निद्रह नेणे नर.

आ गीतनी अंदर राज भारोजी कीर्ति मेळववामां केवा उत्युक्त अने केवी वीरतायी विश्व-मां विख्यात थया तेतुं वर्णन छे.

गीत ४

अत दन दन सजस करे घर उथंड, दन दन अथवहो दिए दता; भडजा दन दन कसे भारमल, छत्रपत दन दन झुझ छता; प्रसंधां दन दन करे पाटपत, पात्रां दन दन वर्षे प्रवा; साहण दन दन सजे संघसत, दन दन खलसर करे दवा; कीरत दन दन करे छुंबर एक, चाओ अधक दन मोज चडे; हेमर दन दन कसे चंदहर, घड दन दन सत्रतणी घडे.

आ गीतनी अंदर राज भारोजी दिवसे दिवसे याचकोने दान देता, सुयशनी दृद्धि कर-ता, खळजनोने खंखेरता, युद्ध अर्थे अश्वोने सज्ज राखता अने शत्रुओनो संहार करवा माटे दिवसे दिवसे घाट घड्याज करता वगेरे वावतो वर्णवेली छे.

गीत. ५

भजे साहाआ ताग खग खत्रीचा आभरण, सुअण गण वसाअण घणुसारा खागने तागची आज मोटा खत्री, भूप थारे भुजे बाजभारा, वडा दातार झुझार बेठए वेधां, लीलघण प्रथी वाखाण लहीए, केसाउत देसपत उजाले मान कुल, सरम रजपूत हथ तुझ सोहिए, हरा चन्द्रसेन दसेदस थारा होवे, सेगडपित वखाण साचा, वडंग किवआं देअण वधोसण वेरीआं, आज खत्र महातम तुझ आंचा.

आ गीतनी अदर राज भाराजीए क्षात्र क्वळनी मर्गादा केवा उत्तम गकारे जाळवी स्ती एनुं वर्णन छे.

गीत. ६

कल अवचल राजतवांरो कडतल, आछी मोज वरीसण आजः काज सरेजण राज कवीआं, राज घणुं धीए महाराज, भूणां रूप सरोमण भारा, भारा भारे लाज जज, सजसां काज केसा उत सारा, सो कविआं आपे वाजसज, मेरखपाल सकाज भारमल, भारां मखजग लील भवाल, शड जत दीए भारमल भला, नाए उनल झल गोत्र गोआल॥ आ गीत्नी बंदा राज नागेनी उत्तर कियोने गणारेला असी आपता एथी कविए एनं राज्य कलिशुगगां अदिचल रहे एने आझीवीद आपेको है.

गीत. 9

शारा आठसा उद्द समा रारा सड़े नको भड़े, रोति आभा देखे जट धारा रूप; शारा लूं सिनारा में न सामा आवे न को भड़ें, भारा सामा सर्धारा हारे गीआ भूप; साला नाथे मीसाडीआ नामा ने गन को झाले, नमाड़े सीमाडाजाडा गुजरो सो नाथ; देखाडीआ झाले हाथ दामा माहृ नाथ दलें, हाला साथे भड़े झाले देखाडीआ हाथ; दलीदला केस उन चड़े घोड़े रेमदेणं, भड़े स्वाक्ताउन जामका खंबार: केआ घरे जर सर राज दले जन काटी. धणी झाळावाड हूका राजे घाडे घाड; राजसूं न बंधे दाउ जामराउ चडे रखे, राजसूं भडंते वाउ हारे गेउ राड ॥

आ गीतनी अंदर राज भाराजीए अद्भूत वीरतायी दक्षिणीओने हरावी दामाजी गाय-कवाडने हाथ देखाड्यो, सरधारना अधिपति ठाकोर वात्राजीने जेह आपी, हालाओने हराव्या तेमज काठीओने, जतने, जामने अने कच्छना राओने पण भयभीत प्रनाला वगेरे वानती वर्णवेळी छे.

गीत. ड

भज शारा धन अतल बलभारा, डारा अरिआ दसे दसा, तागे खागे दोए अतारा, पात्र हजारां करण पसा; ए हथ समथ धनकेसाउत, साहू साहां दहण सथे, गेमर मूलतणा गढवाडां, हेमर लाभे तुझ हथे; प्राणां जोर सतारे प्राझा, प्रसणां सेहेरे सोर पडे; पाणो तूबाले पाटरीआ, झाण झाण केकाण जडे; कर गेसते लेआ तल केवी, झाला कुण थारी जोडीक, हरचांदा करहे हीलोहल, किव आंजण लाभे कोडीक ॥

आ गीतनी अंदर राज भाराजीए जेना वळनी तुलना न थइ शके एवा जे हाथथी ह-जारोनां दान आप्यां अने हजारो शत्रुओनां मूळ काप्यां ए समर्थ हाथने कविए धन्यंवाद आपेल छे.

गीत. ९

वढण ढाल मांडे अवस भूप केणी वरे, चरे पल हाथीआं खलो चारो; खाग हथ पंच लांव चाले खाखरे, भाखरे वसे लंकाल भारो; कलाकरवान वा भूखिओ प्राक्रमी, जभीपत वीआ तन सके जाकी; सत्रां गज भांजवा केसरी समो श्रम, हुंगरे केहरी रहे डाकी, रोज सीमाडीआं फडक न मटे रुदे, धडक लागे पोहा देस श्रूजे, चंदहर मेंअंदगत गयंद अरिआं चरे, गरवरेधीओ दिनरात ग्रुजे.

था गीतनी अंटर पांच इजार छांबी तळवारने धारण करनार परम पराक्रमी राज भाराजी-ना दाहुबळथी सीमाटीआओ केटा धृजता अने शत्रुओ केवा कंपता इत्यादि वर्णन छे.

गीत. १०

गजभांजण ढाल ढाल गजपतीआं, साल सलांनन फरे सोहाल; हालगो दार्द कवांसु हाले, माल वरीसण भार हमाल; बांकानेर पधोरण बांका, बांकमोहा सज बांक मछंद; कवसु बांका बोल न काढे, चालण बंक कलाधर चंद; सींग खडाक नांखे सींगाला, सतण केसरीसींग त्रसींग; पात्रां हथ बोडिंग देअणपो, धींगा सरे ओखलण धींग.

आ गीत एवी मतल्बनुं छे के वांकानरना वाक्टा नरेश राज भाराजीनुं कोइ कविओ हुएं दोलता न एता. अमित, उदारताने लीधे एओना चोमेर पस्वाणज थनां इता.

गीत ११

एकां थर थणे उथणे एकां. कडतल नन नत करे कला; अर हरतणी पेअंपे अवला. भारा थारा हाथ भला; भारथ पारथ जेम अभंगभड़. जडए राखण वान जग; महरतणी वखाणे राणी. केसा ओत थारा करग; झूझवराल सदेवंन झाला, मोडण खंगे अगंचा माण; वेरीतणी वखाणे वनिना. पीथलहरा नुंआरा पाण.

आमा एण राज भाराजीनी नीरना नथा अगमादुर्यनु पर्यन छं.

गीत. १२

प्रजा हुइ घर घर सखी दखी नह कोएपर, हेडवें केआ सत्रहणां हेठे; वापहोबाप झल भारमल अतल बल, वापरी गादीए आप बेठे; अतरदस दखणदस उगमण आथमण, अरीहर उगरां न को आरो; वणंते तखत चांदाहरा वीरवर, वरतीओ घरोघर रामवारो; सकवी भागा दलद्र हुआ राजीसेअण,वेरीए कीआगरे जंगल वासा; घरा सोवन फले फलीसह धूंबडा, राजते वंकपर वेआरासा; चाकरे संघरा भलां वेठो चडे, नरां सणगार पोह वखत नीले; वरण नव दुण आसीसदे वीरवर, तरणज्यम आरमल तपे टीले.

आ गीतनी अंदर राज भाराजीना वखतमां मजा केवी सुखी हती, पृथ्वीपर केवो पाक थतो इतो, कवीओनां दारिद्र केवी रीते द्र थयां इतां अने दुउमनो भय पामी केवी रीते भागता इता वगेरे वर्णवेळ छे.

प्रजा सखी थे घरोघर सेअण सख पामीआं, जगमां देअण जसरात जायो; वंकपरसे धणी आज मोटे वखत, अभंग भड भारमल तखत आयो; सेअल छूले कनक सको जाणी सही, नहीं अरि ऊगर्या तणो नेठो; वापहोबाप केसर सत्तण अतल बल, वापरी गादीए भलां वेठो; धरा आनंद उछाह वधीआ धमल, वदे कोए प्रसणनह वेण वांदा; हरो चांदा छतो हमीरे हिन्दवे, चाकले आवीओ हरो चांदा.

आ गीतमां पण उपरनोज भाव छे, परंतु रचनार जूदो कवि जणाय छे. गीनः १४

जडे साहणां पाखरां जोप जुआणां जुसाणां जडे, पडे वीज जेम सत्रां करेवा अखेम; अडे कडे चडे झल सींधवा रहे अधाह, ओढीओ सांजीयो तहें भड़े भारे एम; वाहरां जाहरां काज केसरीसंघरे वाह, पाहरां धाहरां धकी तेडी आहे धाट; साहरां नगारां खरां सवारां देवाडे भारे, वरीआं प्रजरां नरां नाहरां दो वाट; वडालां भजालां सजे राओ तालां स्रवीर, कांधालां धडालां खलां ऊपरे केकाण, धारालां ढालालां धींग भालालांर चाड धके, जालां जालां वेरी दींआं पंचालां जोधाण, वेरहरां वाटे सरी काटे सीस खगां वर राण, माटे अवझाटे खाटे तोरंगाणां झाण. धाटे धाटे वानां थीए चंदहरानणी धर, थोटीओ जुजवी वाटे कीओ रामाआण.

था निर्माण अंग्रहे मर्ग नगहिल के प्रशेष कर कर महिली स्थान कराइ को की है असे देशों ए अंग्रहे मर्ग नगहिल के नेतृ वर्णन के

रीन १७

रसे हर तें देख अभीतम राजा. जोए एहडो भाग्य कीओ, जांज जदेर दलारो जांकी रणकुं झवके अजां रीओ, भारामलतें खाग बहे भल. लोधा दखणीनणा लीआ, पेजन खुअत दाल जीहावे हे पडंनरे ओदृक हीआ, केसा जनण बलह नें कहने. दण दलनर कई दणादणी,



गीत. १२

प्रजा हुइ घर घर सखी दखी नह कोएपर, हेडवें केआ सत्रहणां हेठे; बापहोबाप झल भारमल अतल बल, वापरी गादीए आप बेठे; अतरदस दखणदस उगमण आथमण, अरीहर उगरां न को आरो; वणंते तखत चांदाहा। वीरवर, वरतीओ घरोघर रामवारो; सकवी भागा दलद्र हुआ राजीसेअण,वेरीए कीआगरे जंगल वासा; धरा सोवन फले फलीसह धूंबडा, राजते वंकपर वेआरासा; चाकरे संघरा भलां बेठो चडे, नरां सणगार पोह वखत नीले; वरण नव दुण आसीसदे वीरवर, तरणज्यम आरमल तपे टीले.

आ गीतनी अंदर राज भाराजीना वखतमा मजा केवी गुग्बी हती, पृथ्वीपर केवी पाक थतो हतो, कवीओनां दारिद्र केवी रीते दूर थयां हतां अने दुइमनो भय पामी केवी रीते भागता हता वगेरे वर्णवेळ छे.

चीत₊ ४३

प्रजा सखी थे घरोघर सेअण सख पामीआं, जगमां देअण जसरात जायो; वंकपरसे धणी आज मोटे वखत, अभंग भड भारमल तखत आयो; सेअल छूले कनक सको जाणी सही, नहीं अरि ऊगर्या तणो नेठो; वापहोबाप केसर सत्तण अतल वल, वापरी गादीए भलां वेठो; धरा आनंद ऊछाह वधीआ धमल, वदे कोए प्रसणनह वेण वांदा; हरो चांदा छतो हमीरे हिन्दवे, चाकले आवीओ हरो चांदा.

> आ गीतमां पण उपरतोज भाव छे, परंतु रचनार जूदो कवि जणाय छे. गीनः १४

जडे साहणां पाखरां जोप जुआणां जुसाणां जडे, पडे वीज जेम सत्रां करेवा अखेम; अहे कहे चहे झल सींधवा रहे अथाह, ओढीओ सांजीयो तहें भहे भारे एम; वाहरां जाहरां काज केसरीसंघरे वाह, षाहरां थाहरां धकी तेडी आहे धाट; भाहरां वगारां खरां सवारां देवाडे भारे, वेरीआं प्रजरां नरां नाहरां दो वाट; वडालां भजालां सजे राओ तालां सूरवीर, कांधालां धडालां खलां ऊपरे केकाण, धारालां डालालां धींग भालालांरे चाड धके, जालां जालां वेरी दीआं पंचालां जोधाण, वेरहरां वाटे सरी काटे सीस खगां वर राण, झाटे अवझाटे खाटे तोरंगाणां झाण, थाटे थाटे वातां थीए चंदहरातणी थरू, ओढीओ जुजवी वाटे कीओ रामाआण,

आ गीनदी जंदर राज याराजीए कोड ओढ़ा नापना शत्रुनी साथे भयंकर छडाइ करेडी छै धने तेमां ए ओड़ाने मार्ग भगाडेल छे ततु वर्णन छे.

गीत. १५

रसे हर तें देख अभीनम रासा, कोए एहडो भारथ कीओ, सांज सवेर दलांरो सांसी. रणकुं झवके अजां रीओ, भारामलतें खाग यहे भल, लोथा दखणीतणा लीआ, वेसत सुअत वाल वीहावे, हे पडंतरे ओदूक हीआ, केसा सतण कलह तें कहते, घण दलसर कई घणाघणी, जलरा साछ जेही भड जालम, दज फडके एम कहे दणी, प वार्ता कहेसे एम आगें, रणकुरे सर रेस रीओ, साहू लगें लगें पतसाहां, थारो जस ते अचल थीओ.

आ गीतनी अंदर राज भारोजी सांज सवार खड़ ने धारण करी शावुओना समुदायनी साथे निरंतर युद्ध करता अने तेमां विजय मेळवता एनो यश पातशाही सूथी पहोंची गयो हतो अने एना नामयी वेसतां तथा शयन करतां वाळकोने एनां मावापो ब्हीवरावतां हता, वेगरे भाव कविए वर्णवेको छे.

गीत. १६

झूले वीटेउ केव झांक झमालें, गण वन्दीजण गाऊं, पाटरीआ उमे भुज पारा, भारा वेस भजाऊं गले त्रंबा गल गाज अगाजें, वाजे जेव वजाया; जोध अभंग लगे जमवारा, रामते रंग रचाया; पाखर घूघर घोर पडगह, सोर पवाड सवाडां; माथे पांउ दीआ मकवाणा, वेर हरां रजवाडां; हेमर खेला कीध हलबल, सार झल झल सेला, थारा खेल सखेला ठाकर, ऊरां खेल अखेलां, नुरवा वांकानेर नरेसर, खेल खत्रवट खासा, कारणरूप केआ कैसालत, मासां बार तमासा, आंग सुआंग रहु झल आऊं, रीझहु इसहेराणे, पम सुआंग कणी नह आवे, देस हुते दुनिआणे.

आ गांतनी अंदर रणवाद्यना निनादनी साथे उत्तम प्रकारना अश्वपर आरूढ थएका राज भारोजी बारे मोसे लडाइरुपी तमासा करता, बीजा रजवाँडाओनी साथे वैरने हमेशां की छंजें राखता, छतां तेओनी भूमिनो एक दुकडो पण कोइ लड़ शक्यों नहि ए रीततुं, वर्णन छे.



गीत. १७

भज धुडे लाग सदेवंत भारा, चकचारा मले चाक चडे, राणा धाह पडे दोए राहां, पत साहां लगे धाह पडे; करमालां घुडे केसाउत, दल रुद्रा अण दंड वडीआ, जोगण परे ताला रहे जडीआ, आठे पोर न उघडीआ; हाला धने थारा चांदाहर, झाला सार अवार झली, डाकमडोल आगरूं दिसे, दिसे हालकलोल दली; तरू आरे वाधा त्रेवडीआ, छे वडीआ ते वंस छत्री, तलपापडे लागीं तरकाणां, खुरसाणां वांकडा खत्री ॥ आमां पण राज भाराजीनी वीरतातुंज वर्णन छे.

गीत. १८

कनक मेरु आगें रित सूर आगें कला, सरस वेदां अगे भेद सारो, एम दूजातणा चाऊं तुज आगले, भूपरा रूप दियाउ भारा; लगे घर जेम कूवेर आगेल्छी, लाह हणमंतरी अगा लागे, राएआ माजना नेम आवे रहे, एमचांदा हरा तुज आगे, माणवुं जेहवुं इन्द्र आगे मेअण, जाणवु अगे सहदेव जेहा, केसउत तुज आचार जोते क्रमी, अनेरांतणा आचार एहा, गागरी सागरां अगे झाला गयंद, हाथ हर अगे जूदां न होते, पुहुवींद दूजा सवे वार फीकी पडी, जोध थारी घडी एक जोते।।

आ गीतनी अंदर मेरु पासे कनकनो ककडो, वेद पासे बीजा शास्त्रोनो भेद, कुवेर पासे बीजा धनवान, प्रत्यना अग्नि पासे दृतुमाने लंकामां लगाडेली आग, सूर्य आगळ चन्द्रकळा अने सागर आगळ गागर जेम कांद्र गणतीमां नथी, तेम राज भाराजीनी एक घडि जोतां बीजा रा-जाओनी बात फीकी फच जेवी लागे छे एम कविए वर्णवेल छे.



गीत. १९

कामणे कंथना कहे एस कवेसर, कांइ फरे अनेकारे, जारे लाव हजारीजां गम, झाला राउ जुहारे, ईहणे एम फरंगणे आखे, फरे कसूअन फेरे, आछी भाते मले आसाउआं, काछी वांकानेरे, जुज उदंड केआ जगभारे, केदी नाऊं न केसे, अले केसाउत खेग उडंतां, देखंतां मझ देसे, सेहे सीखामण देदे सारी, नाहां भेजत नारी, हर चन्द्रसेन केआ हजारी, पाणी जू पणहारी.

आ गीतनी अंदर जेणे पोताना उइंडग्रुज दान देवामां छंवावेळा छे एवा राज भाराजीनी सळामे जवा माटे याचकनी स्त्रीओ पोताना पतिने भेरणा करे छे.

राज भाराजीनी प्रशंसाना आवां देनाच्यो अनेक छे, विस्तार भयथी अत्रे छखवातुं मोक्कफ राख्युं छे; आ उपरथी एटछं सिद्ध थइ शके छे के ए महीपति महान उदार, श्रुरवीर तेमज प्रजा- पिय हता. एओए पोतानां जाढें जी राणी कनकाजी माटे दरवारगढनी अंदर एक सुन्दर महेळ तैयार कराच्यो हतो के जे अद्यापि "कनकाजीवानो महेछ" एवा नामथी ओळखाय छे. ए महेछ मच्छु नदीने किनारे अने दरवारगढना दरवज्ञानी अंदर प्रवेश करतां सामेज दृष्टिगीचर थाय छे.

राज भाराजीना पौत्र केसरीसिंहजीए विण सं० १८४० मां राजगादीपर विराजमान थइ मात्र त्रण वर्ष राज मोगच्युं, तेओ साणद परण्या हता अने ए साणंदवाळां वाइयी कुमार चन्द्रसिंहजी उर्फे डोसाजीनो जन्म विण सं० १८३५ ना आश्विन वदी ९ ने बुधवारे थयो हती.

वि० सं० १८४३मां राज केसरीलिंडजी २नो कैलासवास थतां चन्द्रसिंडजी उर्फे डोसाजी आठ वर्षनी उम्मरे वांकानेरना राज्या पनपर विराजमान थया। वालवयथीज एना अंगनो वांघो मजबूत हतो; परंतु पंगे जरा खोट हती. एओ ज्यारे उम्मर छायक थया त्यारे केंद्रि, उतेळीयुं, गोंडल अने आडेसर ए चारे स्थळे परण्या. तेमां आडेसरवाळां राणी खपाळीवाथी वि० सं०

१८६२ ना वैशाख विद १४ ने शनिवारे कुपारश्री वखतासिंहजोनो जन्म थयो.

राज डोसानी महान् शूर्वीर हता, तेओना वलतमां चार तेमज धाडपाडु छोको वांका-नेरनी हदमां धांघछ करवा हिम्मन धरी शकता निह अने कदाच कोइ एवो गुन्हों करता तो राज डोसाजी पोतानी प्रजाने थएछ तुकशाननुं सखत वैर छेता. पोडाओनो तेओने घगोज शोख हतो; शिरवंधी होकोनी सारी जमावट करी हती.

एक वखत रामपरडाना छावा तथा हापा करपडा नामना काठी ओए वांकानेरनी इदमां प्रवे-श करी हुंट करी हती, एथी राज डोसाजीए तेना पर क्रोधायमान थई चढाई करी अने रामपरडा गाम हूंटीने खेदान मेदान करी नांख्युं; तथा पाताना जयिन्ह तरीके त्यांथी- सारामां सारी वत्रीश ताजण घोडीओ लइ पाछा वांकानेर पधार्याः रामपरडाना काठीओ ए वखने धांगधानी इकुमतमां हता. एथी त्यांना राज जसवतिहं जीए पोताना आश्रिवने थएल तुक्तशानतुं वैर लेवा जामनी ते-मज जूनागढना नवावनी मदद मागी. छात्रा करपडाए जामने तथा नत्रावने भेट आपत्रा माटेज ए ताज-णोने एकठी करी हती के जे राज होसाजी वळात्कारथी छइ गया. आ उपरांत तेओ हालारमांथी शींगाळी अने दसेथी केटळीएक माणकी घोडीओ हरी छान्या हना एथी वमणा कोपायमान वनेला जामे तुरतज पेरुखनासने धांगधानी मददे मोकली आप्यो अने नवाव अहमदखोन पण जबरुं सैन्य राज जसवतसिंह जीनी सहायताए मोकरपुं, ए रीते जाम, नवाव अने श्रांगश्रानां लक्करोए मूळी वांका-नेरने घेरी लीयुं. राज डोसांजीए अवर्णनीय वहादुरीयो बाहेरनो वचाव कर्षो, घेरो घणा समय सूरी रहा छतां तेओ तावे थया नहि. आग्वरे घेरे। घाछनाराओए कंटाळी राज डोसाजीने सलाह संप करवा कहेवराव्युं. श्रांगश्राना राज जमवतसिंह नीए छावा करपडावाळी ताजगा पाछी मळे तो चाल्या जवानी प्रतिज्ञा करी; परतु गन डोसाजीए ए वातनो अनादर कर्यो, जेथी जवरुं धींगाणुं थयुं उभय पक्षना योद्धाओं वावल थया तेमन कराइ मुत्रा तो पण कांइ चोक न परि-णाम न आच्युं. वावी तथा जामनुं लड़कर जीतनो असंभव जाणी पाछुं वळ्युं एटले श्रांगश्रानी फोज पण पछायन करी गइ. आ प्रमंगते पुष्टि आपे एवं एक गीन ए वखतना कोइएक चारणे वनावेलुं छे. घणी शोध करतां ए आहुं गीततो हाथ न आन्युं, परंतु तेनी छेल्ली एक छीटी नीचे मुजव छे.

" वावी जाम जसो त्रण वाथा, (पण) डोहे घोडा नको दीआ.

वळी एक बीजो पण सोरटो छे के-

हलवद ने हालार, त्रीजो गढजूनो मळयो, ताणीने तेजाण, दोरी न आणी डोहले.

ए रीते ज्यारे वाकानेरने घेरो घालवामां आव्यो हतो, त्यारे वोग शेठ आदमनी तथा शाह झवेर वर्लमे पोतानी संघळी दोलत राज होसाजीने अर्पण करी हती अने एथीज तेओ एकत्र थएलां त्रण राज्योनां लब्कर साथे टक्कर झीली शक्या हता.

वाबी, जाम अने घ्रांगघानी फोजो वांकानेरपर चढाइ करी बीले मुखे पाछी बळ्या बाद कोइ म्होटा राजाओ राज डोसाजीने छेडता नहि, परंतु काठीओ के जे चोरी अने हूंट माथेज पोतानो निर्वाह चळावता हता ने वारंवार वांकानेरनी हदमां आवी हाथ मारी जता, एथी राज डोसाजीए काठीओनो उच्छेद करवा माटे वरावर कम्पर कसी अने अनेकवार तेओने मारी मारी जेर कर्या तोपण ए छोकोए जातिस्वभाव न छोड्यो. सुदामडाने। काठी नाजो धांयछ एक वखत वांकोनर मिजमान वनी आव्यो हतो ते कसुंवापाणी पीधा वाद मिजमानी लीघा वाद राजसाहे वनी रजा छइ गाम वाहेर निकळ्यो, त्यां पाणी भरवा निकळेळी कोइ स्त्रीना दागीनापर झाँट मारी भा-ग्यो. ए वात सांभळतांज राज डोसाजी एकळा घोडे चढी तेरी पाछळ पड्या. जोत जोतामां तेओ ना-जाना घोडा नजीक जइ पहें च्या,पण भयभीत वेनला नाजाए घोडाने एवो मारी मृक्यो हतो के राजसाहेव-ना अने एना घोडा वचे थोडो अंतर रहे जतो, ते ठेठ गाम कुवाडवाने झांपे भेळा थया, जेवो नाजो झांपामां दाखळ थतो हतो तेवोज राज डोसाजीए तेना वांसामां एवो डा-मणनो प्रहार कर्यों के ते वेहोश वनी घोडापरथी नीचे जइ पड्यो. राज डोसाजीनी एक एवी प्र-तिज्ञा हती के ते भागेला दुउमन साथे भालांनों के तलवारनों कदी पण महार करता नहि, एने मारवा माटे तेओए एक छोढानुं डामण तैयार करावेछं इतुं. तेओए अश्वारथी नीचे उतरी नाजा-तां तपाम हथीआरो पडावी लीयां अने अमित थएला पोतःना अन्य तरफ दृष्टि करवा गया, तेवामां मृत्युना मुखथी वचेलो नाजो चारणोना अवासमां जइ भरायो. राज डोसाजीए त्यां जइ नाजाने सोंपी आपवा चारणोने कहुं, परंतु चारणोए जवाव आप्यों के अमारां माथां कापवां होय तो का-पी लीओ; पण अमो शरणागतने आपने हवाले नहि करीए. चारणोपर हाथ करवो ए क्षात्र धर्मथी विरुद्ध होवाने छीधे निरुपाय वनी राज डोसोजी गामने चोरे आवी वेठा अने त्यां कछुंवो काढी

चारणोद्वारा अभयदान आपी नाजाने कहरान्युं के—चाल हवे, तारा जेवो कोण थाया नाजोधांध-ल चोरे आवी राजसाहेवने परे पढ्यो अने अपराधनी माफी मार्गी. राज ढोसाजीए तेने कछंवो पाइ तेनां हथिआर पाछां सोंपी आप्यां अने वहां के—जो वहांदुरनो दीकरो हो तो फरी पण वां-कानेरनी हदतां आवी ख़िशीधी लूंट करी जजे. हाथ आवेला दुश्मनने जीवतो जवा दीयो ए राज दोसाजीना दिलावर दिलनी सावीती करी आपे छे. नाजाधांधलने तो ह्यां, पण एवा अनेक काठीओने राज दोसाजीए शिक्षा करेली छे अने शिक्षा कर्या वाद एओने जपाढी रमाडी विदाय-गीरी आपती वखते उपर शुजव वचनो कहेलां छे. तेओनी वहांदुरीनुं वयान करतां कोइ कविए कहां छे के—

भाग्याने भालो हणी कडतल करे न केर; जबरा करीआ जेर, डामण मारी डोहले.

आ रीते आठे प्रहर राज ढोंसाजी ज्यारे शत्रुओंने छुंदवा लाम्या, त्यारे कंपायमान बनेला काठीओं स्वप्ने पण वांकानेर तरफ आववानी स्पृहा करता निहः थोडा दिवस पोताना राज्यमां ज्यारे शान्ति जोवामां आवी त्यारे खानगी कचेरी भरी वेठेला राज ढोंसाजी बोल्या के—काठां इ-मणां केम देखातां नथी ? ए बखते त्यां वेठेला एक चारणे जवाव आप्यो के—

हाके खाइ हार, कंपे वांधा काठीआं, तें डोहा दातार, डामणथी कामण कयीं.

भाननी पूंछडी छेवट सूची वक्तताने छोडती नथी, तेम कुटिल स्वभावना काठी नाजा धां-थढ़े फरी वाकानेरनी इदनां ढोर वाळ्यां, ए वैरना वदलामां राज डोसाजीए तेतुं सुदामहा नामतुं भाम लूटयुं.

कोइएक वखते जतवाडाना जत लोको काठिआवाडनी अंदर फेरो करवा निकलेला ते पाडा फरतां रात्रीने समये लूणसरने पादर आल्या, त्यां केटलाएक परदेशी गाडांवाळाओ पण रात्रि गाळवा रोवाएला इता. शीआळानी ऋतु होवाने लीधे शीत अने क्षुधायी संकष्ट पापता जत लोकोए गाडांवाळाओ पासेथी पाणकोरांनी जाडी पछेडीओ तथा लोटनी कोथळीओ पडावी पोवा-रां गण्यां. पोतानी हदमां बनेला ए गुन्हानी वीना सांभळतां राज डोसाजी वारे चड्या अने ठेठ भोगावे भेळा घइ ए वधा जतोने जानधी मारी नाख्या. वांकानेरना शिरवंधीओ इन्न थान सुधी

पण न्होता पहोंच्या त्यां तो राज डासाजी अञ्जाने प्राणान्तनी समाण पहोंचाडो पाछा फर्याह तेओ देयतना संरक्षण अर्थे, पोताना अमूट्य प्राणती लेश पण दरकार राज्या निह. एमोने पोर ताना सुज्ञवलनो एटलो वशो भरोसो हतो के—हाकल पड़काने प्रानंत संकडो अनुओ पाछल पोता एकला चाली निकलता; अने शिरवंधी लोकोतो ते पत्री अर्थात ज्यारे दरपारगढ़नी पेहेली दोढीए आरच मकराणीओनी बेठकपर राखेल नगारा उपर इंको देशातो त्यारेम लहना नेपार चताः परंतु एटला चलतमा तो सामान्य नळवाला अर्थात् काठी जेवा शतु समुद्रापने मारी जेर करी राजमाहेब पाछा बळी आवताः मात्र सबल शतुओं, सायेना युद्धमांन तेओ शिरवंधी शीना साह, व्यनी अरेशा राखता। हता. एओ महोटा गुन्हेगारीनेज मारता एम न हतुं, परंतु एक साधारणना सानारण नजीवी चोरी करनारने पण पूरेपूरी शिक्षा आपता. एओना मनपा निरंतर एमन रहा करनुं के मारा राज्यमांथी मात्र एक शेरडीनो सांठो छइ जनार पण जो जीवतो जाय तो मार्च नान लजाय. धन्य छ एवा राजाओने के जेना राज्यमां कोईथी रैट्यतनो वाळ वाको यह शकतो नहि. ज्यारे राज डोसाजीए जत छोकोने मार्यो त्यारे कोइ चारणे नीचे मुज्य एक दोहो बनावेलो छे.

जतवाडेथी जत चड्या, लीघो लूणसरनो माल, एनी डोहे खेंची खाल, भोगावे भेळा थइ

राज डांसाजीने एक वांतता कोइ अतितिना निलाप थयो हतो, ए अतीत कोण अने क्यांना हता ए जाणवामां आन्धुं नथी, पांतु एना अद्भुत चमत्कारथी आधीन वनेला राज डांसाजीए तेने गुरु तरीके मान्य राख्या ए गुरुए पाताना राजवंशी आस्तिक शिष्यने एक भगवो रुपाल तथा एक न्हांनो सुरखो धोको आपी आशीर्वाद दी ये हतो के बेटा ! आ रुपाल तथा धोको तुं निरंतर साथेज राखने, तने कोई पण पराजय आपी शकशे नहिः राज डांसाजीए जीवतां सूधी ए गुरुती मसादीने साथे राखी सर्वज विजय मेळच्यो हतो.

जाण्युं के देव वचवुं मुद्देक्छा छे, नेघी ते इकाएक भागी गाम रेशमी आना चीरणों ने आश्रये छुपायों, राज ढोसाजीए भीनोरा भाग्युं अने पोताना विजय चिन्हें तरीके त्यांना किछानां क्षमाढं वांकानेर छइ आव्या के ने अद्यापि दरवारगढनी अंदरनी दोढीए दाख्छ करे छो हिष्टिगोचर थाय छे. ए वखते कोइएक चारणे कहे छे के:—

भल गढा भीमोरातणों फोजा न पढे फेर, वारे वांकानर, त्यां डंको दीधा डोहले.

भीमोरा भाग्या पछी राज होताजी पग लेता लेता रेशमीए जह पहोंच्या, परंतु त्यांना चारणोए पण कुवाडवाना चारणोनी माफक आशरे आवेला नाजा खाचरने सोंप्यो नहि, नाजो त्यांयी गुप्त रीते न्हासी नगर भेळो थइ गयो अने राज डोंसाजी वांकानेर प्रार्था.

नाजो खाचर भागीने नगर तो गयो, परंतु त्यांप तेना हृदयमां रात्रि दिवय राज डोसा-जीनो भय रहा करतो. एणे मेरु खवासना पगमां पढी कहुं हतुं के हवे मने आपना शरणमांज राखी, निभावों, अथवा तो वाकानेरतुं वैर पार पडावों। कारण के राज डोसी जि मने कदी पण जीवतो छोडशे नहि, हाथमां अने पगमां वेढी पहेरावी मने वगर मोते मोरी नांखशे. जो मने आवी खवरत्रोत तो हुं धांकानेरनी हदमां जातज नहि। नाजा खाचरनां उक्त वाक्यों तेने कोंही चारणे नीचे सुजद पद्यमा गोठव्यां छे.

नाजो भागीने नगर गीओ, सेरु खंबासना पगमां पड्यो, कांतो मने आंही निभावो, कांतो कजीओ पार पडावो, जरूर लेशे मने जीवतो झाली, कांतो नांखरा जीवथी मारी, हाथमां डहकलां पगमां वेडी, न्होती दीठी राज डोहानी मेडी.

नाजो खाचर विका राजाओंने जोई सबळ अने अपूर्वीर बनतों, विरेतु ज्यारे राज होसाजी हंको देता त्यारे ते घणे दूर भागी जतो एवा आज्ञयनो एक दोही मळेलो छे ते नीचे मुजन छे:—

> सबळ बने छे शूर, निरखी नरपेट नाजीओ, (पण) देखी भागे दूर, डंका दे जब डोहलो.'

वि० सं० १८६३ मां वडोदराथी गायकवाद सरकारना दिवान वापानी आपानी कर्नछ चिंकरनी साथे मुल्कगीरीना नकी आंकदाओ ठरावघाने माटे काठिआवाडमां आव्या इता. तेओए जेम बीजां राख्योगी खंडणीनी चोकस रकम ठरावी तेम वांकानेरनुं पण थयुं इतुं.

राज दोसाजी वि० सं० १८६८ मां वढवाणना ठाकोर पृथीराजजीनी साथे अमदावाद सरफ फेरो मारवा गया इता; त्यांथी खूव इाथ मार्या वाद वतन तरफ पाछा वळतां तेओने मार्गमां क्ष्या जमादारनां माणसो रूळ्यां, तेओनी साथे वातवातमां धींगाणुं थइ पढ्युं, घणां माणसो मरायां, तेना भेळो वचा जमादारनो भत्रीजो—जमाद इसवभाइ इतो ते पण काम आव्यो, अने पनी साथेनो तमाम माळ वांकानेर तथा वढवाणनी फोजे ळूंटी छीधोः त्यारवाद वचा जमादारे नामदार गायकवाद सरकारनी मददथी पोतानां माणमोने जे नुक्तशान थयुं इनुं ते भरो आपवानी तथा पोताना भत्रीजा इसवभाइना खून वदळ मेसरीआ गाम आपवानी राज दोसाजीने फरज पाढी.

राज दोसाजी लगभग सुरतानिसहजी जेवाज पराक्रमी हता, तेओ एक पणे जरा छंगडा हो बाधी किविलोको तेने हनुमाननी जपमा आपता. काठीओ तो पनुं बाहुबळ जोड़ बाहि बाहि करता; छतां तेओ दिस्नना एवा दयाळ हता के एक बखत एओए आणंदपुरना खाचर रवाजी के जेने गोंडळना ठा-कोर कनुभाइए केद कर्या हता तेने केदमांथी मुक्त कराव्यानुं मान मेळव्युं हतुं. ए बखतना किविश् ओए राज दोसाजीनी बहादूरीनां नीचे मुजब काव्यो बनावेलां छे.

दोहो.

केहररो केहर बन्यो, फोरी भरतो फाळ, काठीवरणनो काळ, दिनया उपर डोहलो, वडहथ वांकानेरीआ, थारुं जगत वधामां जाण, खाचर वाळा खुमाण, दांते तृणले डोहला, भीमोरा भांगी कींओ, मार इसवरो मोत, आडो उदध न होत, तो लंकाभांगत लंगडो. गीत.

कर ढाल त्राजु आणीआ केवी, कर डांडी करमाल करी. सेल पांगरा घाट सचोडा, वगतें जोख्या वरी वरी, करमीचंद भला तें कीधा, घमसाणे वेपार घणा, धंडे चडावीं कैंक नर ढीबीआ, तें लड़ केसरीसिंघ तणा. काठीवरण तो सांधणे कीधा, खतरीराज दलाल खरा, जदतल वध्या त्यांलग जोख्या, हद थाने रासंगहरा.

आ गीतनी अंदर राज चन्द्रमिंह जी डफें डोसाजीने तोल करनारा वाणीआनी उपमा आपी किवए कहा के ढाल रुपी त्राजवां, तलवार रुपी दांडी, अने भालां रुपी पांगराने हाथमां धारण करी हे—करमी चंद! (करमी चंद ए वाणी आतुं नाम अने करमी एवा चंद्रसिंह जी डफें डोसाजी!) तें घमसाण (रणांगण) मां घणा वेप:र कर्या, जदा जूदा तमाम शत्रुओंने जोख्या अर्थात् मार्या हे केसरीसिंह जीना पुत्र! केट उएक नरने तो तें धडे चडादीनेज ढीवी गाख्या अन काटी वरणने तो सांधणना उपयोगमांज कीधा. ए वेपारमां क्षत्री राजाओं तारा दलाल हता. जोखनी अंदर ज्यास्थी दुउमनो जव अने तलभार अवशेष हता त्यांस्थी तें जोख्या अर्थात् हण्या. माटे हे राय-सिंह जीना पाँत्र डोसाजी! तने तो हद छे.

हों हे के आहेसर तरफथी नियमसर जमावंधी निह मळतां कच्छना राओसाहेंवे त्यां तोषो माही. भुजना लश्करे आहेमरने घेरी लहाइ शरू करी. ए वस्तते आहेमरना ठाफोरे केटला-एक इंट बांकानेर मोकली पोताना जमाइ राज होसा जीने मददे बोलाच्या. राज होसोजी एकहजा-र जिरवंधीओं सिहन त्या पर्धाया; परंतु ए पहेलां भुजनी फोने आहेसरनो गढ तोही पाहयो हतो, तो पण राज होसाजीए बच्चे पही चढेली जमावंधी राओसाहेबने चुकबी आपी अने आहेसर तथा भुज बच्चे सुलेह संप कराबवामां फतेहमंदी मेळवी. आहेसरमां ए प्रसंगे तेओ लगभग वे मास लगी रोकाया हता.

राज हो साजी ए कुमार बखतासिंह जीने वि-सं. १८७९ ना अपाह सुदि ६ ने दहाडे मीर

158

वीना यदुवंशी ठाकोर जीवाजीना कुपरो बाजीराजवा सापे हथेबाळे परणाच्या > ए वस्ते तेओ जाने सेंकडो माण में सिंहत महोटा आडंबरथी जान जोडो मोग्बी पपार्या हता अने त्या खुले हाथे ब्राह्मण आदिने अनेक प्रकारना दान आयी तेओए महोटी नामना मेळवी हतो, तेमज भाट के चारणोंने किम्मती पोपाक उपरात लगभग जणनो अन्व तमा उंटो आपी बहुज उदारता वताबी हती.

राज डोसाजीनो हाय हद उपरात लावा होवाथी गज्यमा पैमा सबंबो तंगी ग्वा करती अने एने परिणामे जे पुरुष राज्यने पैमो घोरे अथवा बीरावे नेने ज्ञारमारी बनाववानी जरुर पडी हती. जेमके राषठका, शेठ मूळजी, सबोठहा, मोनजीशा, अवेर बेलाणी तथा बोरा हंमराज बगेरे- िए राज डोसाजीना बखतमां अमुक अमुक समय बांकानेरतुं कारमारुं कयुं हतुं.

किया राज डोसाजीने कुनार वलनसिंहजी उपरात वनेराजजी तमा जालिनिनिह जी नामना वे कि कुमार थया हता; तेमांना वजेराजजीने गाम खोजडी मुं तथा वणझारुं अने जालिनिनिह जीने केराळा तथा राजवर्डली नामनां गाम गरासमां मळ्यां. पाछळथी कुमार वजेराजजी विनवारस गुजरी जतां तेओनो गरास दरवार दाखल थये.

राज डोसाजी श्रञ्जुओने शिक्षा करती वखते जेवी क्रूरता वायरना एवीज याचक वर्ग मत्ये तेमज शरणे आवेळा अथवा नमेळा दुश्मन मत्ये उदारता वतावनाः धर्म उपर तेओनो धणीज जास्या हती. जत्थावंध माणसो सहित तेओए द्वारिकानी वेवार यात्राओं करी हतो अने तेमां स्वहस्ते ळाखों रुपिआ पुण्यदानमां वापयी हताः ए पुण्यशाळी पृथ्वोपतिनी हयातीमांज कुमार वखतसिंहजीनां मोरवीवाळां जाडेजी राणी वाजीराजवाए वि—सं. १८८० ना पोशशुदी १ ने शुक्रवारे कुमार जनस्वतिसंहजीने जनम आप्योः ए वाजीराजवाने जसवतिसंहजी उपरांत दानसिंहजी, वेरोजी, खेंगा-रजी अने देवोजी नामना चार कुमार तथा वाइसाववा, मोंधीवा, हाजुवा अने अदीवा नामनां चान कुंबरी मळी कुळ आठ संतान थया हतां. ज्यारे राज डोसोजी द्वारिकानी यात्राए पधार्यो हता

⁺ राजपूत राजाओमां परणवानी थे रीत छे एक हथेवाळे अने वीजी खांडे, तेमां वरराजा जाते परणवा जाय ए लग्न ''हथेवाळे" तथा कन्माने त्या वर तरफथी तलबाग अथवा खांडुं जाय अने ए खांडा साथे कन्यानां लग्न करवामां आवे तेने '' खांडे परणवुं " कहें छे. हथेवाळे परणवाथी वधारे मुशीवती अने खर्च थाय छे. कारणके तेमां वरराजा पोताना मित्रमंडळ सहित जाते परणवा पधारे छे. खांडा करतां ए रीति घणेन थोडे भागे वपराम छे.

त्यारे तेओनी साथे वामा, मोटी बाइ तथा दीकरा दीकरीओ मळी एकंदर पांचसो माणे ने, सो जुत अने अहीसा घोडा इता; तेओ नानदारे द्वास्कामा गोमती स्नान करी चोराशी जमाडी तेमन श्री द्वारिकानाथजीना मंदिरपर ध्वजा चढावी अने त्यांना गोरने सामान शोखे अश्व एक, पोतानो समग्र पोशाक, हेम गदी पचाशना आभूतम तथा रुशनो तोडो एक दक्षिणामां आप्यो हतो. नळतां जाम साहेवे खंभाळीआ सूथी सामा माणमो मोक्तरी राज डोसाजीने नगर पपराव्या अने वेठक उठक-मां कांइ पण तकावत निह राखतां जन नानी अंदर वामा साहेव तथा वाइसाववा वेगेरेने उतारो आप्यो. जामसोहेव करेली उत्तम प्रकारनी सरभराथी राज डोसोजी प्रसन थया अने तेओनी मागणीधी श्रीमान बखति इजीनां पुत्री बाइसाहेबबानो सबंग त्याना राजकुमार अजा-. उर्फे गगजीभा साथे कर्यो. त्यारवाद आनंद पूर्वेक वांकानेर जसवतसिंहजीनां जाडे ना जेसिंह जी **नां** कुमार श्री ऌग्न लमाइना अदीवा वेरे तथा वाइसाहे याना छम्न जामनगरना कुमारश्री अजाजी वेरे महोटी धामधू-मथी कर्या. पेते एवा शोखीन इता के ए अर्यामां रेटवेतुं साधन नहि होवा छतां पौत्रना लग्न महोत्सव प्रसंगे अमदावादधी रंगवेरंगी चित्रविचत्र फुलवाडीओ मगावी हती अने चार दिवस पर्यन्त टाटमाटथी जूदी जूदी रीते वरणागीओ फेरवी इती. कुंवरी श्री वाइसाहेववाने घणोज उत्तम दायजो आपी नगर वोळाव्यां इतां अने तेओनी साथे कायम रहेवा माटे त्रीश माणसो आप्यां हतां. कान सर्वधी केटळुंएक काम शाह झवेर वेलाणी तेमज ठकर मेघा वीरजीनी देखरेख नीचे थयुं इतुं. ए लग्न प्रसंगे मोरवीना ठाकोर पृथीराजजीए महेता मुसदीओ तया केटलाएक माणसो सहित पोतानुं जनानु मोकल्युं हतु, जेमां इंसकुंबर तथा प्राणकुंबर नामनी तेओनी वे रखात राणीओ हती. ए वन्नेने ठाकोरसाहेने कहुं हतुं के-जो मारां व्हेन वाजीराजना उभां थह तमाने मळे तो तेओने ुएक क्टॉंख कोरीनी उपजवाळुं एक गाम अवाट आपवा मारी विचार छे अने तोज हुं विवाइ व-. खते आवीश निहते। निह आवं. ए खवर वाजीराजवाने मळतां तेओए कहां के " मारे गाम ्रजोड्तुं नथी, हुं टाकोर जीआजीनो दीकरी रखातने कदो पण उभी धइने मळनार नथी. " इआतुं नाम राजपूताणी के जेणे पोतानी मितिष्ठा जाळववा हजारो रुपिआनी हांसलने विकारी काढी. एथी टाक्तोरसाहेव न आव्या. मोरवीथी आवेष्ठा माणमी गाणेजने मोसाळामां हायी तथा पेश्चाक आपी चारी निकळ्या. बढबाणधी जनाना सहिन बाइश्री बांचेलीमा अहीसो माणस लड आव्यां हतां तथा मोरबी टाकोरना भाइ मक्कभा पण पवार्या इता. विवाह घणोज वखाणवा लायक धयो इतो. जामनगरथी महेता गंगाराम तथा भावसार मोनाभाइना मुखीपणा हेटळ साडा जणसो माणसो तथा हाथी घोडाओ सहित आवेळुं आंझणुं आठ दिवस वाकानेर रोकायुं हतुं. राजसाहेन तरफणी तेमज जामसाहेव तरफथी ब्राह्मण, भाट तथा चारणोने सारी रकमो मळी हती.

वि० सं० १८९५ ना फाल्गुन ग्रुदि ८ ने दिवसे राज डोसाजीनो स्वर्गवास यतां श्रीमान वरातिसहजी वांकानेरना राज्यासनपर विराजमान थया. ए अरसामां काठि आवाडनी अंदर
नामदार ब्रीटीश सरकारनी स्वळ सत्ता दिनमितिदिन ग्रुद्धि पाम्ये जती हती. जेथी ए प्रान्तना
राज्यकर्ताओए मुखवर्षक ज्ञान्तिना आक्षीर्वादांने ओळखो ढांटमारनी मथानो परित्याग करवा
प्रयत्न कर्यों. एथी एओनो छडायक ज्ञुस्तो नरम पच्चो अने तेओने दीर्घ ममय पर्यन्त प्रष्टिताली
छडायक जींदगी भोगववा फरज पढी न हती. एक वखत एवा आच्यो के तेओ पोतानुं सर्व वळ
अंदरनो राज्यकारभार मुवारवाने वापरी शक्या, परंतु ए जातनुं काम समजवाने अशक्त होवाथी
तेओ कारभारी छोको जेम दोरवे तेम दोराता. ए वखतना राजाओ सारा छडवेंया हता, परंतु
राजकाजमां एटछा वधा कुझळ न हता; तेम ए वावत स्हेछाइथी समजी शक्वाने तेओ समर्थ
पण न थया; एथी मात्र मोजशोखमांज पोतानुं अमूल्य जीवन विताववा छाग्या. काठिआवाडमां
सेंकडे पोणोसो टका ताछकदारोए तेमज महान राज्यकर्ताओए पोतपोतानी जींदगी एक रिते
पसार करेछी छे.

राज वस्तिसहजी शान्तिने इच्छनारा अने निसालस हृदयना महाराजा हता, तेओनो बीजो विवाह कच्छ देशनी अंदर आवेला वांढीआ नामने गामे थयो. ए वाइतुं नाम वाइराजवा हतुं. एनाथी कुमार श्रो दीपसिंहजीनो जन्म थयो. श्रीजीवार तेओ मुळीए परण्या ए वाइनुं नाम चांदवा हतुं, एने कांइ संतित थइ नहीं.

राज वस्ततिसह नीए पाटवी कुमार जसवतिसह नीने वीजीवार मधुतरे जाडेजा वस्ततिसह-जीनां दीकरी वाइवा साथे तथा त्री नी वार गाम रोझेकान। चुडाममानी कन्या हीरजीवा साथे धामधूमथी परणाच्या. लजाइवाळां राणीश्री अदीवाए विष् सं० १८९९ ना चैत्र द्युदि ६ ने भो-मवारे राजकुमार वनिसह नीने जन्म आप्यो अने मधुतरावाळां राणीश्री वाइवाथी कुंवरीश्री नानां-वानो जन्म थयो।

१ मधुतरा कच्छ वागडमां छे. २ राझेका लींवडी पासे छे.

श्रीमान जसवतासँइजी वि० सं० १९०० ना श्रावण शुदि १२ ने दिवसे पोताना पितानी इयातीमांज मात्र वीज्ञा वर्षतुं अल्प आयुष्य भोगवी स्वर्गवासी थया.

राज वरवतसिंहजीना वर्वतमां वाइएक नागावावा नामनायोगी वांकानेरमां आव्या हता, तेओना अपूर्व चमत्कार जोइ राज बखतसिंइजीए तेने गुरु मान्या अने आग्रहपूर्वक वांकानेरमां राख्या. ए महात्मा त्रिकाटदशीं, वचनसिद्धिवाळा तेमज घणा वखाणवा ळायक त्यागी हनाः तेना उपर राजसाहेवनो एटलो वधो प्रेम इतो के तेओ नामदार तेने केटलांक उत्तम वस्त्रो तेमज साल दुशाळाओं आपता, परतु नागोवावों ते तमाम पोता पासे जे कोइ साधु संत आवता तेने आपी देता अने पोते तो निरंतर दिगंवर दशामाज दिवसो वितावता, मात्र ज्यारे दरवारमां आवता त्यारे पग सूबी लांबो एक भगवो झन्वो पहेरता. महाराजा राजसाहेवे तेओने चडवा माटे एक उत्तम घोडी आपी, ए नागावावाए फरवा जवाने मिपे घोडे दूर निकळी कोइएक परे पाळा साधुने आपी दीधी. आ रीते अनेक वस्तुओ महाराजा राजसाहेव तेने आपता, छतां ते तो हमेशां त्यागीने त्यागीज रहेता. आथी नामदार राजसाहैवना कामदार वोरा इंसराज नागावावा उपर घणोज द्वेष राखता अने एथीज एणे उक्त महात्मानां खोटां छिद्रो जोवा पोतानां अमुक माणसोने योज्यां इतां. नागोवावो एक दादा खवास नामना माणसनी स्त्री पुरवाइने धर्मनी माता मानी तेने त्यां दररोज जता अने मातानी पेठे प्यार करी तेने धावता हता. पुरवाइ पण तेने पोताना पुत्र पेठे मानी धवरावती. जो के ए वाइ पुरुत उम्मरनी होवाथी एनुं धावण स्नुकाइ गएछं हतुं, तो पण जाणे तुरतमां ज वाळक जन्म्युं होय तेम धावणनी शेंडो छूटती हती. आ वनावने वोरा इंसराने जूदा रुपमां गोठवी नामदार राजसाहेव हज़र जाहेर कर्युं के तमारो गुरु पुरवाइ खवासणनी साथे चाले छे. जो के ए बात राजसाहेबना मानवामां न आबी, तो पण विशेष खात्री अर्थे तेओ नामदारे पोताना प्रतिष्टित अने विश्वास माणसोने ए बनाव नजरे जोवा सूचना करी. फरी एक दिवसे ज्यारे नागो यावो धावता इता, त्यारे नापदार राजसाहेवनां माणसोए छुपीने जोयुं तो नागोवावो मात्र छ महिनाना बाळक जेवडाज पुरवाइना खोळामां पड्या पड्या धावता हता, आ अपूर्व वनावनी श्रीपान राजसाहेवने खबर मळतां तेओनी भक्ति नागावावा साथे वधारे दृढ थइ.

वि० सं० १९०१ ना अरसामां महाराजा राज वखिल्सिंह जी ज्यारे द्वारिकानी यात्राए पथार्या त्यारे नानोवावो पण साथे हता, वळता सहु जामनगरना महाराजा जाम विभाजीना मि-जनान वन्या। महाराजा जामसाहेबने महान धर्मिनष्ट जोड प्रसन्न थएळा नागावावाए तेओने

कर्युं के " हुं तारे त्यां जन्म लड्ग." महागना जामे घणीज नम्रनाथी गणाम करी कर्युं के " मारां एवां भाग्य क्यांथी के आप मारे त्यां जन्म लीओ ?" कवेरीमां वेडेला तवाम माणलोए ए वखते पत्यक्ष नहि वोज्ञां नागवावानी वातने हमी कडाडी; परंतु महाराजा जामपाहेवने ए महा-त्माना वचन उपर दढ विश्वाम वेसी गयो. महाराजा राज वावन सिंह नी तथा नागीवावी वगरे वांकानर आव्या. त्यारवाद थोडां वर्ष पछी नागवावाए पोताना तपनी पर्णाद्वती करी घमा ब्राह्मणीने तेमन साधु-संतोने जमाड्या अने पोतानी पापाणमृतिं पोतानी हा जरीपाज कडी आओ पासे तैयार करावी एक मकान चणाववा मांडयुं. ए पछी ज्यारे तेओ अग्निमत्रेश करवा तैयार थया त्यारे महाराजा राजवाहेवे तेओने तेम करतां अटकाच्या, परंतु पाछळथो कोइ न नाणे नेय चुनानी भट्टो करवाने मित्रे एक म्होटी खाइ खोडावी अने तेमां छाणां लाकडां पूरावो योडा घ गां सुखडना काष्ठो प ग नं वाव्यां; एनो अंदर ब्राह्मण जमाडवाने मिषे अगाउथी मगावी राखेळा घृतना कुडळाओ रेडी अग्निने प्रज्वित कर्यो अने तेशा रात्रीना वार वागताने सुपारे एक महोटा छरायी पानानुं महतक पानाने हाथे छेरी होम्युं, पजीयी ए महात्मातं धह पण जाज्वरूपमानं अग्निनो ज्वाळामां जइ पडवं. ए वातनी महाराजा राजसाहे-बने जाण थतां तेओने महान् खेद थयो. नागो वात्रो जीवित हुताशन प्रवेश कर्या पहेलां एक चीठी छखी गया इता के-" इते हुं महाराजा जामसाहे अने त्यां जन्म ऋइश, मारुं नाम धनराशि जपर रहेशे, मारो विचार पूर्ण राज्य करवानो हतो, परंतु अपि मने अग्नि मनेश करतां अटकाव्यो अने मारा मनोरथमां एक वर्षतुं विघ्न नांरुयुं, एथी हवे हुं पूर्ण राज्य निह करी शक्तं; मारी अन्तिम अवस्था योगी जेवां आचरणमांज व्यतीत थरो. " ए चीही वांची महाराजा राजसाहेवने वयारे अपशोस थयो. जे दिवसे नागावावाए जीवित हुताशन पवेश कर्यों तेन दिवसे जाम विभाजीनां राणी म्होटां धनवाइने गर्भ रहा। अने पूर्ण मास थतां वि-सं. १९१३ ना कार्तिक वदी ६ ने दहा-हे पुत्र अवतर्या अने तेतुं नाम भीवसिंहजी उर्फे काळुना राख्यायां आव्युं. आ वानने पुष्टि आप-नार भुटान्त नामना भविष्यमकाशक पुरातन ग्रन्थमां छखेछं छे के-" वि-सं. १९०१ मां कोइ एक धैर्यवान राजा भेख छेशे अने ने निर्वाणपदने पानी सदाकाळ नय रहेशे. वचनमां रिद्धिसि-द्भिवाळो अने त्रिकालद्शीं ए महात्मा जाम विभाजी पासे आवी केटकीएक आगम वार्ता कही अंतमां कहेंग्रे के तारा जेवा धर्पीष्ट राजाने घेर पुत्र वनी आववा मारी इच्छा छे, जामनगरनी गा-दीनो भूपाळ बनवा तेर वर्ष पछी कार्तिक वदि ६ ने दहाडे तारे त्यां जन्म छड्झ. "

वळी एज ग्रन्थमां अमुक पेरीग्राफने अंतरे लखेलुं छ के-" वि-सं. १९१३ मां उपर

कहेल नागो वांकानेरमां जीवित हुताशनमवेश करशे, अने एज सालमां विभाजामने घेर पुत्र ज-नमशे, तेतुं नाम धनराशिए धारण करावाशे. "

राज वस्तिसहजीना वस्तिमा वोरा इंसराजे लगभग वीश वर्ष कारभार कयों, परंतु राज्य माथे धएलुं करज तेनायी कापी शक्यां निहः कारण के राजकुदंव विशाल होवाने लोधे विवाहवा-जन वगेरे कार्योगं प्रतिष्ठानी स्वानर लाखोनी लक्ष्मोनो न्यय करवो पहतो हतो. वि—सं. १९०५ मां राज वस्तिसहजीए पोताना फटाया कुमार दानिसहजीने खाजदीयुं तथा वणझारं, वेराजीने पंचाशीआ तथा राणेकपरनो अर्थ भाग, खेंगारजीने सींधावदर तथा कालावडीनो अर्थभाग, देवी सिंहजीने पंचाशीआ तथा राणकपरनो अर्थभाग, अने दीपसिंहजीने सींधावदर तथा कालावडीनो अर्थभाग गरासमां आप्योः

राज वस्तिसंहजी पण पोताना पितानी माफक भक्त तेपज स्वध्मेनिष्ट हता. वि—सं. १९०७ मां तेओ जनाना सिहत प्रभासपाटणनी यात्राए प्यार्था, त्यारे वामासाहेव श्री रुपाळीवा, वजेराजजीना वहु जवळवा तथा जाळिमसिंहजीना वहु वाइराजवा वगेरे साडापांचसो माणसो साच्ये हतां. रेस्वेतुं साधन निह होवाधी त्रणसो घोडा, सवासो ज्ञत अने पांच रथ साथे लीधेळां हतां. वांकानेरथी प्रयाण कर्या वाद तेओ गोंडळमां चार दिवस रोकाया हता अने त्यांथी घोराजी पथा-यां, ए वस्तते गोंडळना कारभारी केटळाएक स्वारो सिहत त्यांस्पी सरभरा करवा माटे साथे गया हता. धोराजीमां वे दिवस रह्या वाद प्रभास जइपहोंचेळा महाराजा वस्तिसिंहजीए सरस्वती नदीने किनारे तंत्रुओ तणावी सात नारायणवळी करी श्राद्ध कर्यु, गोरने वेहजार मुद्रा दक्षिणा आपी, चोराशी जमाडी, त्यांथी पीपळे पाणी नामवा पवार्या, त्यां एक रात्री रही पाळा प्रभास पथार्या, त्यां जृतागढना माणसो तेडे आवेळां होवाधी सर्व जृतागढ गया. त्यां आठ दिवस रोकाया, वया गिरनार उपर चढ्या अने दामोदर कुंडमां न्हायाः राज वस्तिसंहजीए ए तीधिस्थळोमां अनेक प्रकारनां पुण्यदान कर्याः प्रभासपी वळतां तेओश्रीने वेरावळमां छावणी नांस्ती पढेळा काठिआवाढना मे. पोळीटीकळ एजन्ट कर्नळ ळेंगसोहेवनी मुळाकात थइ हती.

आ उपरांत राज वखतिसंहजीए वे वखत द्वारिकानी यात्राओं पण करी हती. वि—सं. १९०८ ना आपाढ शुदि ९ ने दहांढे कुंचरी श्री हाजुवाने राजकोटना ठाकोर श्री मेरामणजी साथे परणाच्यां. ए संवंध महेता अनंतजी हध थयो हतो. वोरा इंसराजना मुखीयणा हेठळ दोढसो माणसो बाइने वोळाववा गयां हता. राजकोट्या ऑझगामां पारेम्व छाळजी वाँगे अदीसो माणसो

आव्यां इता अने ए सर्वने स्वागत सहित उत्तम प्रकारनो पोपाक आपवामां आव्या इतो.

वि-सं. १९०९ ना अपाढ शुदि ९ ने दिवसे राज वखतिसंहजी पोते चोधीवार कच्छ देशान्तर्गत गाम गजोडना कुंवरी श्री ळाडुवा साथे परण्या. ए वखते मुखी वोरा मवनी तथा म्हे-ता जीवणराम ओंझणुं लड् त्यां गया हता

वि—सं. १९११ ना महाशुदि ३ ने शुक्रवारे राज वय्वतसिंहजीए कुंबरी श्री मोंघीबाने नवा-नगरना जान विभाजी साथे तथा कुंबरी श्री अदीवाने कच्छश्चनना राओ श्री देशळजीना भाइ हमीर-के जेने पाछळथो तेरा नामनो तालुको (सेकन्डकलाम) स्टेटगरा पमा मळेलो छे, तेनी साथे म्होटी धामवूप-थी परणाव्यां. ए वखते नगरथी तथा भुजथी खांडु लइने वे ऑझणां आव्यां, तेमां न-गर तरफथी महेता देवचंद तथा महेता माणशंकर वगेरे पांचसो माणम, वमो घोढा तथा एक हाथी अने भुज तरफथी कायस्य राघवजीभाइ तथा लधा राघवजी वगेरे विमा माणम, पो-णोसो घोढा अने दश उंट आव्या हता. राज वखतिसहजीए खानपान आदिथी सर्वने संतुष्ट करी किम्मती पोशाक आप्यो हतो.

त्यारवाद वे वर्षे अर्थात् वि० सं० १९१३ ना मार्गशीर्ष मासमां एवो कळह जाम्यो के जे राज वस्वतिसहजीनी सुस्तमय अने ठांवी कारकीर्दीमां एकज वस्वत वनता पाम्यो हतो. पाडळ अने सरोडी वच्चेनी वीडी वांकानेर अने थाननी सरहद उपर होवाथी जो वांकानेरवाळा वाढे तो थानना हकने वांघो आवे अने थानवाळा वाढे तो वांकानेरना हकने वांघो आवे एटळा माटे घणा वर्षो थयां एमनी एम पडी हती, जेथी वांकानेर अने थानने आटळा दिवस स्त्री जोख-ममां उत्तरतुं पढ्युं नहीतुं, पण ज्यारे थानना पांच यळेचा झाळाओ तथा दश मकराणी मानजी सिपाहीना मुखीपणा हेठळ ळगभग वसो मजूरने ठइ बीडीमां दाखळ घया अने वाढ शरु कर्यों, त्यारे सरहदनी संभाळ राखनारा वांकानेर तरफना माणसे राज वखतिसहजीने खवर आप्या के "याननां माणसोए निडरपणे वीडीने वाढवा मांडी छे" महाराजा राजसाहेवे एज वस्तते सुंदरजी रावळ अने शेरु गोरीना मुखीपणा हेठळ पंदर घोडस्वार तथा पंदर घोळकीया (सुमना) ने त्यां मोकळी आप्या. ए ळोकोए पथम सेस्तरहीना पटेळ सवा घोरीयाने तथा एक राजगर ब्राह्मणने वीडीमां मोकळी थानना माणसोने कहेराच्युं के—" आनुं परिणाम सार्च निह आवे, माटे तमो वाढ वंघ राखों, अने आव्या छो ए रस्ते चाल्या जाओ. " छतां ममतने छीधे कोइए मान्युं निह थान तरफना कोइएक मकराणीए वांकानेरना घोडाओ तरफ वन्दूकनो फेर कर्यों ए गोळी

सुंदरजी रावळनी घोढीना इनामां लागी अने पेटने अहकती चाली गइ, आथी वांकानेरनां माणसो तुरतज सामा गया अने मारामारी चाली. ए वालते खड वाढवा आवेला वसो माणसो तथा
मक्तराणीओ एकदम भागी गया, मात्र पांच घळेचा झालाओज ग्रुद्ध राजपूत होवाने लीचे
धींगाणामा अहग रह्या अने एक पछी एक पाचे मार्या गया. मानजी सिपाही पण घणोज घायल
थयो. वांकानेर तरफना 9 घोडा, हेरीसीटी, वाघजी खोखर, नण्ण गोरी, रामो खवास तथा वनेसिंह देदो वगेरे वेटलांक माणसो घवायां. घान तरफना पांच घोडां तथा केटलांएक हथियारो कवजे
करो वांकानेरवाला पाछा ब्ल्या लारवाद आशरे छ सात महीने मे. लांगसाहेव राजकोटथी वांकानेर पधार्या अने गाम जांबुडीए सुकाम राखी, महाराजा राजसाहेवने समजावी तेओ नामदार थाननां घोडा तथा हथिकारो पाहा अण्यां. ए धींगाणुं वस्याणीधार उपर थएलुं हतु.

श्रीमान राजसाई वश्री वस्तताई हजीए दिए सं० १९६५ ना वैशास वदी १० ने शुक्रवारे पोताना पौत्र श्रीमान दनेसिंह जीने मोरदी ठावोरश्री रदाजीनां कुंवरी साथे हथेवाळे परणाच्या वोरा इंस्ताज तथा महेता मानशंवर वगेरे सातसो माणसोथी जान जोडी पोते जाते त्या पधार्या इता अने लग्नक्रिया समाप्त थया वाद भाट चारणोने सवासो घोडा तथा पदर उंट आपी महान औंटार्य वताच्युं हतुं तथा पसो पप पुष्कळ खच्यों हतो.

राज वखत।संहजीनां गजोडवाळां राणीश्री लाडुवाए माजीराजवा, हरिवा तथा चांदावा नामना त्रण कुंवरी ओने अने करणसिंहजी नामना एक कुंवरने जन्म आप्यो.

विण सण १९१६ मां राजखट्यट शरू थड़. कुमारश्री दीयसिंहजी वगेरेने गरास मळेलो रोवा छतां तेओ येतातुं वेटलुएक खर्च राज्यमाथी लेता, एथी राज्य माथे ऋणनो पार रह्यो निह. राज वखनामहजीए नामदार अंग्रेज सरकारनी परवानगीथी वाकानेर तलपद शिवायनां तमाम गामो आणदजो अमरजीने दश वपने पट्टे इजारे आण्वानो कागळीओ तैयार कर्यो अने तेमां श्री-मान वनेसिंहजीने सही वरवा कहां. राजकुमार वनेसिंहजीए एवातनो इनकार करी पोताना दादाने विनित करी के राज्यने इजारे आपवा करता कार्यभारी तरीकेना समग्र हक आपमने सोंपी आपो, हुं स्वल्प समयमा मने इन्दरे आपेल बुद्धिवलधी राज्यने ऋण रहित करी आपीश, परंतु ए वात राज वरवतसिंहजीए लक्षमां न लीधी. राजकुमार वनेसिंहजी व्हिद्ध कावन्ह रचायुं, नेओ कार्यकुशक

[?] ए बाइने सह मोटाया कही दोलावता.

माणसनी रालाह्यी गुप्तरीते मोर्ची जइ पहोंच्या. ए बखिन गज्यना गय्यी तेजोनी साथ जवा कोइनी हिस्मत न चाली. माउ एक तेमना हजुरीए राथि जवा हिस्मन भीटी हनी. पोताना श्वसुर ठाकोर, रवाजीने सघ ही हक्तीकतथी वाकेफ करी तेजोनी सलाह मुजा महेता झुंझाभाइ मखीदासनो साथ राजकोट प्रचार्या. त्यां गया बाद तेजोए जीवणराम घेलाभाइ महेनाने वकील करी पोताना दारा पोतानी मण्जी विरुद्ध रटेटनी जपननी कांडपण व्यवस्था न करी शके एवा मतलबनी एक अरजी एजन्सीमा टाखल करी नामदार सरकार तरफथी स्टेटने इजारे सूकवा सबंधी परवानगी निंड मळता राज बखनिलंहजोनो मनोरच पार पडयो निंह राजकुमार बनेसिंहजी पाछा मोरवी प्रार्था अने त्यां लगभग चारेक मास ग्वा तेवामा वि० मं० १९१७ ना मागशर द्युदि २ ने दहाडे राज बखनिलंहजीनो स्वर्गवास थता श्रीमान बनेमिंहजीए मोरवीची तुरत बांकानेर पथारी राज्यनी लगान हायए। लीबी. ए बखते राज्यशर देणुं वणु होवाथी पैसा सबंधी स्थित वणीज नवळी हती.

विण सं० १९१७ मां तैष्त्रनशीन थएला राज वनेसिंहजीए प्रथम तो राजकुटुंबमां वि-क्षेपनां बीज रोपनार जूना कारभारी वारा इंपराजने रुक्तमद आपी महेता जीवणराम घेलाभाइने कार्यभार सोंप्यो. स्टेटनां गामडांओ इजारे आपवानी प्रथाने बंच करी, स्टेटनी पैसा संबंधी हिम्मति सुधारवा उपर विशेष ध्यान आप्युं, न्यायनी अदालनो स्थापी अने नोकर वर्ग प्रजाने पीडे निह् तेमज तेना पासेथी गेरकायदे पैमा न कहावे वंगरे वाबनोमा वरावर सावचेती राखी राज्यनी आ-वादी करवा मांडी; तेओए गुर्जर भाषानो उत्तनरीते अभ्यास करेलो हतो अने एनी धोरणवार परीक्षा ए वखतना एज्युकेशनल इन्स्येक्टर भी. टी. सी. होपे लीधेली हती.

ति—सं. १९१९ मां राज वनिसंहजी घोळना ठाकोर जेसंगजीनां कुंबरी सुंदरवा साथे परण्या. महा वदी १ ने बुनवारने दहांडे लग्न निरधारेलां होवाथी वांकानेरथी खांडुं लड् ऑझणुं घोळ गयुं हतुं. ए ऑझणामां माडात्रणसो मागस तथा एकसोदश घोडांओ हतां. ए सर्वनी आठ दिवस पर्यंत घोळ ठाकोरे उत्तम प्रकारे सरभरा करी हनी अने दीकरीने वखाणवा लायक दायजो खाट्यो हतां. कपु महेता वगेरे सो माणसो त्यांथी वाइने वोळाववा माटे वांकानेर सुधी आव्या हता. ए वाइ घणाज विद्वान अने चतुर हतां तथा राज वनेसिंह नीने प्रसंगोपात केटलीएक जमदा

[!] राज वनिसंहजी तख्त नशीन थया त्यारे मोरवीथी ठा तोर रवाजी त्रणसे। माणसो छ इ इंझा महेता साथे वाकानेर पथार्था हता.



His highness 11ch rin Shi Bur inni Buh our, les Ru Suh o of Mun ores

सलाइ आपतां. त्यारवाद वि—सं. १९२२ ना मागगर वदी १ ने रविवारे मुळीना परमार वखत-सिंहजीनां दीकरी जेठीवा साथे परण्या अने एज लग्ने गवरीदडनां जाडेजा प्रतापसिंहजीनां कुंबरी वाजीराजवा साथे पोंखाणाः

ए अरसामां कारभारी जीवणराम घेलाभाइपर अरुचि थता राज वनेसिंहजीए जामनगरथी स्वादीआ कीपाशंकर प्राणजीवनने वोलावी कारभार सोंप्यों। पण ए आशरे एक मास वांकानेर-मां रही जामनगर जता रहा।, जेथी फरी जीवणराम घेलाभाइने ए जगो आपवामां आवी; एणे वि-सं. १९२४ सूधी कारभार कर्यों हतो.

राज वनेसिंहजीए वि—सं. १९२२ मां मुंबइधी पुना सूधीनी मुमाफरी करी अने त्यांधी तेओ नाशिक व्यंवकनी यात्राए प्रश्रायों. ए वखत दरम्यान तेओए मुंबइना ए दखतना गवर्नर मर वेटलफेरीनी मुलाकात लीधी हती अने एना तरफधी मळेल मानने लीचे घणाज मसन्न धया हना.

वि—सं. १९२५ ना कार्तिक शुदि ११ ने दहाडे राज वनेसिंह नी जनाना सहित पांचसों माणसोनो म्होटो संघ कहाडी घारिकानी यात्राए प्रभायी; जामनगरनी हदमां प्रवेश करतां ए त-पामनी जाम श्री विभाजी तरफथी उत्तम रीते खातर वरदास करवामां आवी. राज वनेसिंहजी द्वारिकानां अनेक प्रकारना पुण्य दान करी वळतां जामसाहेवना आग्रहथी जामनगर प्रधायों अने त्यां चोतीश दहाडा रोकाया. चाळनी वखते जाम श्री विभाजीए राज वनेसिंहजीने मोतीनी माळा तथा पोशाक अने जनानामां सर्वने जगीअन कपडां तेमज साथेनां तमाम माणसोने पोशाक आप्यो हतो. राज वनेसिंहजी नगरथी निकळी जामनी हदमां दरेक स्थळे उत्तम प्रकारनी मिजमानी छेता श्रीळ प्रधार्या श्रोळना ठाकोर साहेवे पोताना जमाइने वे दिवस आग्रहपूर्वक रोक्या अने त्यांथी तमाम निर्विचने वांकानेर आवी पहोंच्या. ए यात्रामां राज वनेसिंहजी हा. ६०००) छ हजारनी किम्मतनो खास एक हाथी खरीदी साथे छइ गया हता.

वि—सं. १९२६ मां मुंबइना नामदार गवर्नर राइट ओनरेवल बीलीयम रोवर्ट सीमोरवीसी फीटझराल्डे राजकोट मुकामे भरेला दरवारमां राज बनेसिंहजीए हाजरी आपी हती. कारभारी जीवणरा मंघेलाभाइने रजा आप्या बाद तेओश्रीए राजकोटना रहिश्च महेता दलपतराम मजारामने वि—सं. १९२६ ना भाद्रपद मासमां कारभार सोंप्यो हतो; ए दलपतरामभाइए शुद्ध हृदयथी राज्यनी सेवा बजावी स्टेटनी अंदर घणो सुधारो वधारो कर्यो.